भूमिका

इस संसारचक्रमें परमात्माने कर्म करनेके लिये मनुष्योंको स्वतंत्र बनाया है परन्तु वास्तवमें स्वतंत्र वेही हैं जिनके कर्म शुभ हैं और अशुभ कर्मवाले अनेकप्रकारके उपद्रवोंके आधीन और दास बनकर समयको बिताते हैं और अनेक प्रकारकी शारीरिक व्याधियोंमें ग्रस्त होकर नियत समयसे पहिलेही संसारको त्याग देते हैं। इन अशुभ कर्मके फल व्याधिरूप शत्रुसे शरीरकी रक्षा अवश्यमेव कर्तव्य है। किसी विद्वान् डाक्टरने कहा है कि अस्वस्थ बादशाहका जीवन स्वस्थ श्रमजीवीसे बुरा होता है इससे यह उत्तम है कि जैसे बने वैसेही शरीरकी रक्षा करना योग्य है क्योंकि " आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि "॥

यद्यपि हमारे यहां चिकित्साके अखिल भंडारमें ऐसे २ आयुर्वेदके ग्रन्थ हैं कि जिनमें ऐसी कोई बात नहीं छोडी गई है कि जिससे किसी दूसरे ग्रन्थकी आवश्यकता हो परन्तु आजकल इस भारतवर्षमें लक्षों मनुष्य ऐसे हैं जो सैकडों वर्षसे यूनानी चिकित्सा करते आये हैं उनकी ऐसी प्रकृति बदल गई है कि वहीं इलाज उनके अनुकूल हो गया है और सर्वमान्य आयुर्वैदिक चिकित्सासे भागते हैं इससे हमने इस ग्रन्थका भाषामें अनुवाद कराके छापा है कि उर्दू फारसी न पढे हुओंकोभी उपयोगी हो।

जिस प्रकारसे हमारे यहां चरक सुश्रुतादि ग्रन्थ हैं उसी तरह यह ग्रंथभी यूनानी चिकित्सामें सर्व श्रेष्ठ गिना जाता है इस ग्रंथमें रोगोंके लक्षण, उनकी उत्पत्तिके हेतु, उनके निदानकी प्रणाली बहुतही अच्छी दी गई है। इस कहनेमेंभी अत्युक्ति न होगी कि इसमें एस न गूढ विषयभी दिये गये हैं जो अन्य ग्रन्थोंमें देखनेकोभी नहीं हैं प्रत्येक रोगकी चिकित्साके अनेकानेक नुसखेभी साथ साथ दिये गये हैं।

आशा है कि सज्जनगण इसे ग्रहणकरके हमारापरिश्रम सफल करेंगे।

पुस्तक मिलनेका पता

किसनलाल द्वारकाप्रसाद बंबई भूषण छापखाना मथुरा	श्यामलाल अग्रवाल श्याम काशी प्रेस मथुरा

भूमिका

इस संसारचक्रमें परमात्माने कर्म करनेके लिये मनुष्योंको स्व-तंत्रबनाया है परन्तु वास्तवमें स्वतंत्र वेही हैं जिनके कर्म शुभ हैं और अशुभ कर्मवाले अनेकप्रकारके उपद्रवोंके आधीन और दास बनकर समयको बिताते हैं और अनेक प्रकारकी शारीरिक व्याधियोंमें ग्रस्त होकर नियत समयसे पहिलेही संसारको त्याग देते हैं। इन अशुभ कर्मके फल व्याधिरूप शत्रुसे शरीरकी रक्षा अवश्यमेव कर्तव्य है। किसी विद्वान् डाक्टरने कहा है कि अस्वस्थ बादशाहका जीवन स्वस्थ श्रमजीवीसे बुरा होता है इससे यह उत्तम है कि जैसे बने वैसेही शरीरकी रक्षा करना योग्य है क्योंकि " आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि " ॥

यद्यपि हमारे यहां चिकित्साके अखिल भंडारमें ऐसे २ आयुर्वेदके ग्रन्थ हैं कि जिनमें ऐसी कोई बात नहीं छोडी गई है कि जिससे किसी दूसरे ग्रन्थकी आवश्यकता हो परन्तु आजकल इस भारतवर्षमें लाखों मनुष्य ऐसे हैं जो सैकडों वर्षसे यूनानी चिकित्सा करते आये हैं उनकी ऐसी प्रकृति बदल गई है कि वही इलाज उनके अनुकूल हो गया है और सर्वमान्य आयुर्वेदिक चिकित्सासे भागते हैं इससे हमने इस ग्रन्थका भाषामें अनुवाद कराके छापा है कि उर्दू फारसी न पढे हुओंकोभी उपयोगी हो।

जिस प्रकारसे हमारे यहां चरक सुश्रुतादि ग्रन्थ हैं उसी तरह यह ग्रंथभी यूनानी चिकित्सामें सर्वश्रेष्ठ गिना जाता है इस ग्रन्थमें रोगोंके लक्षण, उनकी उत्पत्तिके हेतु, उनके निदानकी प्रणाली बहुतही अच्छी दी गई है। इस कहनेमेंभी अत्युक्ति न होगी कि इसमें एक २ गूढ विषयभी दिये गये हैं जो अन्य ग्रन्थोंमें देखनेकोभी नहीं हैं प्रत्येक रोगकी चिकित्साके अनेकानेक नुसखेभी साथ साथ दिये गये हैं।

आशा है कि सज्जनजन इसे ग्रहणकरके हमारापरिश्रम सफल करेंगे।

पुस्तक मिलनेका पता

किसनलाल द्वारकाप्रसाद मुंबई भूषण छापखाना मथुरा	श्यामलाल अग्रवाल श्याम काशी प्रेस मथुरा

अथतिब्बअकबरके उतरार्द्ध की अनुक्रमणिका

❀ इत्यनुक्रमणिका ❀

॥ इत्यनुक्रमणिका ॥

पट्ठे निकलते है और मस्तिष्क का पिछला भाग अगले भाग की अपेक्षा कठोर है इसलिये चलने फिरने वाले पट्ठों की उगने की जगहहै और मस्तिष्क अगले भाग से सिरके पीछे के भाग तक चौडाई म तीन भागों में बांटा गया है जिनमें से प्रत्येक भागको बतनी दिमाग (दिमाग का पर्दा) कहते हैं इन तीनों पर्दों में से अगला पर्दा बहुत चौडा है बीच वाले पर्दे के नीचे थोडी पोल है जिसे झरना कहते हे दिमाग का मल आदि वहां इकट्ठा होकर तालू में गिरता है और लम्बाई में सपूर्ण मस्तिष्क दिमाग के प्रथम पर्दे तक दो भागों में विभक्त है ॥

(मस्तिष्क के अवयवों की आकृति)

आधार

प्रत्येक भाग की झिल्लियां और पोल सब जुदी२ हैं और जहां कहीं इस पुस्तक में बतनेशरीफा का वर्णन है उनसे इन्हीं तीनों पर्दो का आशय ग्रहण किया गया है जैसा कि मक्ते की बीमारी मे वर्णन किया जायगा और हराम मगज शरीर का एक अवयव है जो भेजे की भी सूरत का है और उसके पीछे पूछ की तरह लगा हुआ है तथा गर्दन और पीठ की गुरियों (अस्थि-शृंखला) के भीतर डुबी * तक उतरता चला आया है) और भेजे की तरह हरामगज के भी लम्बाई में दो भाग हैं परन्तु ऐसे मिले हुए हैं कि दोनों भागों की एक दूसरे से जुदाई मालूम नहीं हो सकती है केवल थोडा अन्तर बहुत ध्यान देने से मालूम होता है और हराममग्ज की झिल्ली के तीन पर्दे है) जानना चाहिये कि परमात्मा ने हराममग्ज के साम्हने से प्रत्येक ओर

* पीठ की हड्डी की वह नोक जो दोनों नितंबों के बीच में होती है । इस हड्डी ... है ।

पट्ठे निकलते है और मस्तिष्क का पिछला भाग अगले भाग की अपेक्षा कठोर है इसलिये चलने फिरने वाले पट्ठों की उगनें की जगहहै और मस्तिष्क अगले भाग से सिरके पीछे के भाग तक चौडाई म तीन भागों में बांटा गया है जिनमें से प्रत्येक भागको बतनी दिमाग (दिमाग का पर्दा) कहते हैं इन तीनों पर्दों में से अगला पर्दा बहुत चौडा है बीच वाले पर्दे के नीचे थोडी पोल है जिसे झरना कहते हे दिमाग का मल आदि वहां इकट्ठा होकर तालू में गिरता है और लम्बाई में सम्पूर्ण मस्तिष्क दिमाग के प्रथम पर्दे तक दो भागों में विभक्त है ॥

(मस्तिष्क के अवयवों की आकृति)

प्रत्येक भाग की झिल्लियां और पाल भन्न जुदीर हैं और जहां पर्दा इस पुस्तक में बतनेशरीफा का वर्णन है उनमे इन्हीं तीन्हों पर्दा का आशय ग्रहण किया गया है जैसा कि मस्ते की बीमारी में वर्णन किया जायगा और हराम मग्ज शरीर का एक अवयव है जो भेजे की भी गुप्त पा है और उसके पीछ पुछ की तरह लगा हुआ है तथा गर्दन और पीठ की गुरियों (अस्थि-शृंखला) के भीतर डुबी * तक उतरता चला आया है) और भेजे की तरह हराममग्ज के भी लम्बाई में दो भाग हैं परन्तु ऐसे मिले हुए हैं कि दोनों भागों की एक दूसरे से जुदाई मालूम नहीं हो सकती है फक्त थोडा अन्तर बहुत ध्यान देने से मालूम होता है और हराममग्ज की झिल्ली के तीन पर्दे है) जानना चाहिये कि परमात्मा ने हराममग्ज के साम्हने से प्रत्येक जोड

* पीठ की हड्डी की वह नोक जो दोनों निर्तबों के बीच में होती है। इस दुमची हड्डी भी कहते है।

है वहाँ गुण और नाम इस भागके भी हो जैसे हड्डी, इसके कुल टुकड़ोंकी आपस में एकसी सूरत है और प्रत्येक टुकडे को भी हड्डी कहेंगे और प्रत्येक टुकडे पर भी पूरी हड्डी की उपमा प्रगट होगी इन अयौगिक अंगों के १० भेद है ॥ और प्रत्येक का नाम अलग २ वर्णन कियाजाता है (१) अज्म अर्थात् हड्डी (२) गजरूफ अर्थात कच्ची हड्डी (३) असब अर्थात पट्ठा (४) अजला अर्थात करेली (५) वतर अर्थात् करेली के दोनों सिरों का पट्ठा (६) रिबात अर्थात् जोड़ों का बन्धन जो हड्डी के भीतर से छन करके नर्म और सफेद पट्ठे की सी सूरत का निकलता है और हड्डी के जोड़ों को बांधता है (७) शिरयान अर्थात् कूदने और हर्केत करनेवाली रग (८) वरीद अर्थात रुधिर बहने वाली रगें (९) गिशा अथात् झिल्ली । अयौगिक अंगों के ये नौ भेद तो वीर्य से उत्पन्न होते हैं दसवां भेद लहम अर्थात गोश्त है परन्तु शहम अर्थात चर्बी और समीन अथात् नर्म और पिलपिली चर्बी जो मांस के तन्तुओं में होतीहै जिसको हिन्दुस्तान के कसाई रियाज कहते है य ह दोनों मांस के ही भेदसे हैं सो मांस और यह दोनों रुधिर से उत्पन्न होतेहै और बाल और नख शरीरके रुधिर आदि निकम्मे मैल से उत्पन्न होतेहैं जैसा कि बडे विद्वान हकीमों ने इसकी परीक्षा की है । और त्वचा झिल्ली, मांस और रगों से संयुक्त है यद्यपि अदला अर्थात् करेली पट्ठे के रेशे और बारीक बन्धन और जोड़ोंके बंधन के अंतरों से और उनके भीतर २ गोश्त के रेशे भरे है परन्तु हकीम लोग करेलियों को यौगिक अंग में गिनतहै और यौगिक अयौगिक के विरुद्ध है अर्थात यौगिक वे अंग है जिनके भाग आपस में एक सूरत के न हों और जिनके किसी एक भाग पर सब की उपमा और नाम न आसके जैसे हाथ पैर–सिर–कान आदि कि जो हाथ की खाल या हड्डी नो-चलीजायतो वह हाथकी तरह न होगी और न उनका नाम हाथ होगा न हाथ की उपमा उस पर ठीक होगी और यौगिक अंगों को फारसी में आजायआलिया भी कहते है यदि ईश्वर चाहेगा तो प्रत्येक अयौगिक और यौगिक अंगोंका अपने २ स्थान पर वर्णन कियाजायगा ।

सूचना ।

किताब के अन्त में कठिन शब्दों की तरफ और उन प्रसिद्ध गुणों की रीतियों की तरफ जो अपने २ स्थान पर वर्णन की गई है जैसे माजून और गालियो आदि और बता दियागया है कि अमुक शब्द अमुक विषय में वर्ण-

है वहाँ गुण और नाम इस भागके भी हो जैसे हड्डी, इसके कुल टुकड़ोंकी आपस में एकसी सूरत है और प्रत्येक टुकडे को भी हड्डी कहेंगे और प्रत्येक टुकडे पर भी पूरी हड्डी की उपमा प्रगट होगी इन अयौगिक अंगों के १० भेद हैं ॥ और प्रत्येक का नाम अलग २ वर्णन कियाजाता है (१) अज्म अर्थात् हड्डी (२) गजरूफ अर्थात कड़ी हड्डी (३) असब अर्थात पट्ठा (४) अजला अर्थात करेली (५) वतर अर्थात् करेली के दोनों सिरों का पट्ठा (६) रिबात अर्थात् जोड़ों का बन्धन जो हड्डी के भीतर से छन करके नर्म और सफेद पट्ठे की सी सूरत का निकलता है और हड्डी के जोड़ों को बांधता है (७) शिरयान अर्थात् कूदने और हर्कत करनेवाली रग (८) वरीद अर्थात रुधिर बहने वाली रगें (९) गिशा अर्थात् झिल्ली । अयौगिक अंगो के ये नौ भेद तो वीर्य से उत्पन्न होते हैं दसवां भेद लहम अर्थात गोश्त है परन्तु शहम अर्थात चर्बी और समीन अर्थात् नर्म और पिलपिली चर्बी जो मांस के तन्तुओं में होतीहै जिसको हिन्दुस्तान के कसाई रियाज कहते हैं यह दोनों मांस के ही भेदसे हैं सो मांस और यह दोनों रुधिर से उत्पन्न होतेहैं और बाल और नख शरीरके रुधिर आदि निकम्मे मैल से उत्पन्न होतेहैं जैसा कि बड़े विद्वान हकीमों ने इसकी परीक्षा की है । और त्वचा झिल्ली, मांस और रगों से संयुक्त है यद्यपि अदला अर्थात् करेली पट्ठे के रेशे और शारीरिक बन्धन और जोड़ोंके बंधन के अंतरों से और उनके भीतर २ गोश्त के रेशे भरे हैं परन्तु हकीम लोग करेलियों को यौगिक अंग में गिनतेहैं और यौगिक अयौगिक के विरुद्ध है अर्थात यौगिक वे अंग हैं जिनके भाग आपस में एक सूरत के न हों और जिनके किसी एक भाग पर सब की उपमा और नाम न आसके जैसे हाथ पैर-सिर-कान आदि कि जो हाथ की खाल या हड्डी नोंचलीजायगी वह हाथकी तरह न होगी और न उनका नाम हाथ होगा न हाथकी उपमा उस पर ठीक होगी और यौगिक अंगों को फारसी में आजायआलिया भी कहते हैं यदि ईश्वर चाहेगा तो प्रत्येक अयौगिक और यौगिक अंगोंका अपने २ स्थान पर वर्णन कियाजायगा ।

सूचना ।

किताब के अन्त में कठिन शब्दों की तरफ और उन प्रसिद्ध नुसखों की रीतियों की तरफ जो अपने २ स्थान पर वर्णन की गई हैं जैसे माजून और मालियां आदि और बता दियागया है कि अमुक शब्द अमुक विषय में वर्ण-

में आवे उतना मिलावे और इस बातका भी ध्यान रहे कि सिरका बहुत पुराना न हो और गुलरोगन भी धूप में बनाया हुआ हो आग पर बनाया हुआ न हो और १ बरस का पुराना हो गया हो और गुलाब भी बहुत सुगन्धित हो और उसका प्रमाण यह है कि सिरका तेल से अधिक होवे । (सूचना) इस रीति से तालुपर दवा लगाने और रखने का यह कारण है कि यहां की हड्डी कुछ नर्म और पतली है यहां पर एक सन्धि भी है अर्थात् सिरकी खोपड़ी की दोनों हड्डिया का जोड़ आरी के दांतों के सदृश है जिसको (दराज़ अकलीली) कहते हैं इन्ही दोनों कारणों से दवा का प्रभाव यहां पर जल्दी पहुंच जाता है ॥

गुलरोगन बनाने की रीति

गुलाब के फूल की पखड़ियां काचके पात्र में भर कर एक दिन उसको धूप में रखदे दूसरे दिन उस में धोयी हुई तिली का तेल डाल कर फिर पांच दिन धूप में रक्खे जब फूलों की सुगन्ध उस में अच्छी तरह आजाय तब गुलरोगन अर्थात गुलाब के फूलों का तेल तैयार हो जाता है और कभी तेल में फूलों को औटाकर भी बना लेते है परन्तु पहली रीति अच्छी है इसी तरह चमेली नरगिस तुलसी और बाबना आदि के फूलों और बूटियों का तेल भी बनता है ॥

इस रोग में ठंडी और तर (आर्द्र) वस्तु लाभदायक हैं जैसे मुजव्विरा (*) अर्थात वह शोरबा जो जौ, मूंग, पीया, पालक, ताजी धनिये अथवा बादाम के रस से बनाया गया हो, अथवा वह जो मसूर की दाल, सिरका चीनी और बादाम के रस से बनाया गया हो । दूसरा सिर के दर्द का यह है कि किसी भीतरी कारण से गर्मी सिर में पहुंच जाय जैसे मेथी, मिर्च, आदि गर्म वस्तुओं के खाने से अथवा मद्य, खजूर, जानवरों की तिल्ली और प्याज आदि दिमाग (मस्तिष्क) का हानिकारक वस्तुओं के सेवन करने से ॥

॥ उक्त रोगों का लक्षण ॥

गरम और हानिकारक वस्तुओंके खानेसे यह रोग उत्पन्न होता है इस

(*) मुजव्विरा उस शोर्बे वा यूष को कहते हैं जो केवल वनस्पतियों से बनता है और जिस में मांस नहीं डाला जाता है ।

में आवे उतना मिलावे और इस बातका भी ध्यान रहे कि सिरका बहुत पुराना न हो और गुलरोगन भी धूप में बनाया हुआ हो आग पर बनाया हुआ न हो और १ बरस का पुराना हो गया हो और गुलाब भी बहुत सुगन्धित हो और उसका प्रमाण यह है कि सिरका तेल से अधिक होवे । (सूचना) इस रीति से तालुपर दवा लगाने और रखने का यह कारण है कि यहां की हड्डी कुछ नर्म और पतली है यहां पर एक सन्धि भी है अर्थात् सिरकी खोप-ड़ी की दोनों हड्डिया का जोड आरी के दांतों के सदृश है जिसको (दराज़-अकलीली) कहते हैं इन्हीं दोनों कारणों से दवा का प्रभाव यहां पर जल्दी पहुच जाता है ॥

गुलरोगन बनाने की रीति

गुलाब के फूल की पखड़ियां काचके पात्र में भर कर एक दिन उसको धूप में रखदे दूसरे दिन उस में धोयी हुई तिली का तेल डालकर फिर चार दिन धूप में रक्खे जब फूलों की सुगन्ध उस में अच्छी तरह आजाय तब गुलरोगन अर्थात गुलाब के फूलों का तेल तैयार हो जाता है और कभी तेल में फूलों को औटाकर भी बना लते है परन्तु पहली रीति अच्छी है इसी तरह चमेली नरगिस तुलसी और बाबूना आदि के फूलों और बूटियों का तल भी बनता है ॥

इस रोग में ठढी और तर (आर्द्र) वस्तु लाभदायक हैं जैसे मुजव्विरा (*) अर्थात वह शोरबा जो जौ, मूंग, पीपा, पालक, ताजी धनिया अथवा बादाम के रस से बनाया गया हो, अथवा वह जो मसूर की दाल, सिरका चीनी और बादाम के रस से बनाया गया हो । दूसरा सिर के दर्द का यह है कि किसी भीतरी कारण से गर्मी सिर में पहुच जाय जैसे मेथी, मिर्च, आदि गर्म वस्तुओं के खाने से अथवा मद्य, खजूर, जानवरों की तिल्ली और प्याज आदि दिमाग (मस्तिष्क) का हानिकारक वस्तुओं क सेवन करने से ॥

॥ उक्त रोगों का लक्षण ॥

गरम और हानिकारक वस्तुओंके खानेसे यह रोग उत्पन्न होता है इस

(*) मुजव्विरा उस सोर्बे या यूष को कहते है जो [illegible] से बनता है और उस में माँस नहीं डाला जाता है ।

किया, (एक किस्म का गोंद) रसौत, गुलाब के फूल, नीलोफर और मामीसा एक प्रकार की बूटी और काहू के बीज इन सबको लेकर पीस डाले और ईसबगोल के लुआब में मिला कर टिकिया बनालेवे यह टिकिया बहुधा हरे धनिये के पानी में घोल कर लेप की जाती है ।

॥ उक्त सिर के दर्द में पथ्य ॥

जौ का शोरवा और वह शोरवा जो मूग, घीया, ककडी, पालक, और हरे धनिये से बनाया गया हो और जो खांसी आदि कोई उपद्रव न हो तो इमली या खट्टे अनार या नैशक अर्थात् आलू बालू से खट्टा करके शोरवे को पीवें यह अधिक लाभदायक है ॥

(सूचना) जानना चाहिये कि कुल गर्म बीमारियों के लिये जौ का दलिया अधिक लाभ दायक है क्योंकि ठंडा भी है और दोषों को पकाकर निकाल देने के योग्य कर देता है और दोषों की जली हुई कीट को निकालता है और आमाशय को पाक करता है अगों और रगों मे जल्द दौड जाता है और स्वादिष्ट तथा समपथ्य है और प्यास को बुझाता है इन सब गुणों के होने पर भी बुरे दोषों को नहीं उभारता है और आमाशय में भारापन और अफरा भी पैदा नहीं करता है । विशेष करके जब जौ अच्छे हों और जौ की पहचान यह है कि जौ पकने पर खूब फूल जाय और फूलकर फट जावें और उन में किसी प्रकार की दुर्गन्ध न आवे और उसका लुआबदार पानी ललाई लिये हुए निकाले तथा जौओं का बहुत मोटा होना भी अच्छेपनका चिन्हहै बहुधा इसके पकाने की यह रीति है कि अच्छे जौओं को छडकर उनकी भुसी उतार [illegible] मीठे तथा स्वच्छ पानी में मन्दी मन्दी अग्निपर [illegible] और पकाता [illegible] झाग उतारता जाय जब खूब पक जाय तो उ[illegible] छान कर [illegible] और कोई कोई यह कहते हैं कि पहले उबाल [illegible] दर्व अ[illegible] डालके फिर खूब पकावें, और कोई कोई [illegible] पक[illegible] सेक लना अच्छा है [illegible] का [illegible] में [illegible] डालना चाहिये । [illegible] कि ज[illegible] गना [illegible] चाहिये । और कोई व[illegible]

किया, (एक किस्म का गोंद) रसौत, गुलाब के फूल, नीलोफर और मामीसा एक प्रकार की बूटी और काहू के बीज इन सबको लेकर पीस डाले और ईसबगोल के लुआब में मिला कर टिकिया बनालेवे यह टिकिया बहुधा हरे धनिये के पानी में घोल कर लेप की जाती है।

॥ उक्त सिर के दर्द में पथ्य ॥

जौ का शोरबा और वह शोरबा जो मूंग, घीया, ककड़ी, पालक, और हरे धनिये से बनाया गया हो और जो खांसी आदि कोई उपद्रव न हो तो इमली या खट्टे अनार या नैशृक अर्थात् आलू बालू से खट्टा करके शोरबे को पीवें यह अधिक लाभदायक है ॥

(सूचना) जानना चाहिये कि कुल गर्म बीमारियों के लिये जौ का दलिया अधिक लाभ दायक है क्योंकि ठंडा भी है और दोषों को पकाकर निकाल देने के योग्य कर देता है और दोषों की जली हुई कीट को निकालता है और आमाशय को पाक करता है अंगों और रगों में जल्द दौड़ जाता है और स्वादिष्ट तथा समपथ्य है और प्यास को बुझाता है इन सब गुणों के होने पर भी बुरे दोषों को नहीं उभारता है और आमाशय में भारापन और अफरा भी पैदा नहीं करता है। विशेष करके जब जौ अच्छे हों और जौ की पहचान यह है कि जौ पकने पर खूब फूल जाय और फूलकर फट जावें और उन में किसी प्रकार की दुर्गन्ध न आवे और उसका लुआबदार पानी ललाई लिये हुए निकाले तथा जौओं का बहुत मोटा होना भी अच्छेपनका चिन्हहै बहुधा इसके पकाने की यह रीति है कि अच्छे जौओं को छड़कर उनकी भुसी उतार[illegible] मीठे तथा स्वच्छ पानी में मन्दी मन्दी अग्निपर [illegible] और पकाता [illegible] झाग उतारता जाय जब खूब पक जाय तो उ[illegible] छान कर [illegible] और कोई कोई यह कहते हैं कि पहले उबाल[illegible] दर्व अ[illegible] डालके फिर खूब पकावें, और कोई कोई [illegible] पक[illegible] सेक लेना अच्छा है। [illegible] का [illegible] में [illegible] डालना चाहिये। वि[illegible] कि जौ [illegible] गना [illegible] चाहिये। और कोई व[illegible] [illegible] च[illegible]

होना तथा भौचक्का पागलपन होजाना और ज्ञानेन्द्रियों का नष्ट होना भी इस सिरके दर्द के चिन्हों में से है इसी कारण से इस सिरके दर्द का उन्मादजशिरो रोग भी नाम है।

॥ उक्त रोग की चिकित्सा ॥

शिरमे गर्मी पहुचाने के लिये तकमीद अर्थात् (गरम पोटली से सेक) और इन्किबाब अर्थात भफारादें और हम्माम की गरम जगह में थोडी देर रक्खे और साधारण रीति से स्नान भी करै और उष्ण प्रभाव वाले तेल जैसे सौसन का तल वा चमेली का तेल वा दौना मरुआ का तेल शिरपर मलै और अबर मुर्दा (स्पज) या ऊनी कपडों को इन्ही ऊपर वर्णन किये हुये तेलों में तर करके चाद पर रखना सब से उत्तम ह ॥ और बनफशा, लिहसौडा, खितमी के बीज, अलसी के बीज, अंजीर और तुरञबीन के काढे से उदर के मल को नर्म करके विबन्ध को दूरकर और एक दो दस्त करादेवे और खाने में इसरीति से कमीकरै जैसे चने का पानी या तीतर या बटेर के शोरवे में जीरा और दालचीनी मिलाकर देवे।

। तकमीद अर्थात् सैककी विधि ।

देह में गर्मी पहुचाने का नाम तकमीद है इसके दो भेद है एक तर और दूसरी खुश्क ॥ तकमीद तर अर्थात् तर सिकताव यह है कि किसी जानवर का फुकना जिसमें पेशाब रहता है अच्छी तरह साफ करके उसमें गर्म पानी या दवाओं का गरम२पानी अर्थात् काढा भरके रोग वाले अगपर रक्खै जब ठडा होजाय तब हटा लेवे अथवा कपडा या स्पज गर्मपानी या दवाके काढेमें तर करके अगपर रक्खे इस तरह का सिक्ताव अधिक बलवान होता है और खुश्क तकमीद अर्थात् सूखा सिकताब यह है कि कोई कपडे स सेककर गोला या पत्थर आदि आग पर सेक२ कर अंग को सेके अथवा सुश्क दवा को गर्म करके और कपडे की पोटली में बांध कर अग्नि पर सेंक२ कर अगपर रक्खे। जो दवाइयां इस सिरके दर्द के सिकाव म या और ठंडी बीमारियों में वर्तीजाती हैं वह नमक, गेहू वा किसी और नाज की भूसी, बाजरा और रेत है। चाहे इन सबको मिलाकर वा अलग अलग काम में लावैं ॥ इनकबाब अर्थात् भपारा यह है कि गर्म पानी की भाफ पर या किसी दवा के काढे की भाफ पर अथवा या किसी दवा की धूनी पर जो आग में डालकर उठाई हो अथवा किसी गर्म पत्थर आदि पर पानी या दवा डालकर भाफ ब-

होना तथा भौचक्का पागलपन होजाना और ज्ञानेन्द्रियों का नष्ट होना भी इस सिरके दर्द के चिन्हों में से है इसी कारण से इस सिरके दर्द का उन्मादजशिरो रोग भी नाम है।

॥ उक्त रोग की चिकित्सा ॥

शिरमे गर्मी पहुचाने के लिये तकमीद अर्थात् (गरम पोटली से सेक) और इन्किबाव अर्थात भफारादें और हम्माम की गरम जगह में थोड़ी देर रक्खै और साधारण रीति से स्नान भी करै और उष्ण प्रभाव वाले तेल जैसे सौसन का तल वा चमेली का तेल वा दौना मरुआ का तेल शिरपर मलै और अबर मुर्दा (स्पज) या ऊनी कपड़ों को इन्ही ऊपर वर्णन किये हुये तेलों में तर करके चाद पर रखना सब से उत्तम है ॥ और बनफशा, लिहसौडा, खितमी के बीज, अलसी के बीज, अंजीर और तुरजबीन के काढे से उदर के मल को नर्म करके विबन्ध को दूरकर और एक दो दस्त करादेवे और खाने में इसरीति से कमीकरै जैसे चने का पानी या तीतर या बटेर के शोरवे में जीरा और दालचीनी मिलाकर देवे।

। तकमीद अर्थात् सेककी विधि ।

देह में गर्मी पहुचाने का नाम तकमीद है इसके दो भेद है एक तर और दूसरी खुश्क ॥ तकमीद तर अर्थात् तर सिकताव यह है कि किसी जानवर का फुकना जिसमें पेशाब रहता है अच्छी तरह साफ करके उसमें गर्म पानी या दवाओं का गरम२पानी अर्थात् काढा भरके रोग वाले अगपर रक्खै जब ठंढा होजाय तब हटा लेवे अथवा कपडा या स्पज गर्मपानी या दवाके काढेमें तर करके अगपर रक्खै इस तरह का सिक्ताव अधिक बलवान होता है और खुश्क तकमीद अर्थात् सूखा सिकताव यह है कि कोई कपडे से सेककर गोला या पत्थर आदि आग पर सेक२ कर अंग को सेके अथवा खुश्क दवा को गर्म करके और कपडे की पोटली में बांध कर अग्नि पर सेंक२ कर अगपर रक्खै। जो दवाइयां इस सिरके दर्द के सिकाव में या और ठंढी बीमारियों में वर्तीजाती हैं वह नमक, गेहू वा किसी और नाज की भूसी, बाजरा और रेत है। चाहे इन सबको मिलाकर वा अलग अलग काम में लावैं ॥ इनकबाव अर्थात् भपारा यह है कि गर्म पानी की भाफ पर या किसी दवा के काढे की भाफ पर अथवा या किसी दवा की धूनी पर जो आग में डालकर उठाई हो अथवा किसी गर्म पत्थर आदि पर पानी या दवा डालकर भाफ उ-

होना तथा भौचक्का पागलपा होजाना और ज्ञानेन्द्रियों का नष्ट होना भी इस सिरके दर्द के चिन्हों में से है इसी कारण से इस सिरके दर्द का उन्मादजशिगे रोग भी नाम है।

॥ उक्त रोग की चिकित्सा ॥

शिरमें गर्मी पहुचाने के लिये तकमीद अर्थात् (गरम पोटली से सेक) और इन्किबाव अर्थात भफारादें और हम्माम की गरम जगह में थोडी देर रक्खै और साधारण रीति से स्नान भी करै और उष्ण प्रभाव वाले तेल जैसे सौसन का तल वा चमेली का तेल वा दौना मरुआ का तेल शिरपर मलै और अबर मुर्दा (स्पज) या ऊनी कपडों को इन्ही ऊपर वर्णन किये हुये तेलों में तर करके चांद पर रखना सब से उत्तम है ॥ और बनफशा, ल्हिसौडा, खितमी के बीज, अलसी के बीज, अजीर और तुरजवीन के काढे से उदर के मल को नर्म करके विबन्ध को दूरकरै और एक दो दस्त करादेवे और खाने में इसरीति से कमीकरै जैसे चने का पानी या तीतर या बटेर के शोरवे में जीरा और दालचीनी मिलाकर देवे।

। तकमीद अर्थात् सेककी विधि ।

देह में गर्मी पहुचाने का नाम तकमीद है इसके दो भेद है एक तर और दूसरी खुश्क ॥ तकमीद तर अर्थात् तर सिक्ताव यह है कि किसी जानवर का फुकना जिसमें पेशाब रहता है अच्छी तरह साफ करके उसमें गर्म पानी या दवाओं का गरम२पानी अर्थात् काढा भरके रोग वाले अगपर रक्खै जब ठढा होजाय तब हटा लेवे अथवा [illegible] करके अगपर रक्खै इस
रस अपने स्वरूप को छोडकर रुधिर पित्त वात और [illegible]
करता है अर्थात् अब रससे दोष बनजाता है यही दूसरा पचाव हुआ ॥ अब ये दोष आपस में उचित प्रमाण से मिल घुलकर जिगर से निकलकर रगों में होतेहुए उन अवयवों की ओर चले जिन २ अवयवों के वे अंश हैं ॥ इन रगोंकी गर्मी और उसकी प्रकृतिके कारण से जो कुछ पकाव होताहै और दोष उस अङ्ग के स्वभाव को ग्रहण करलेते हैं जिसकी वे पुष्टि करेंगे यह तीसरा पचाव है फिर दोष उचित प्रमाण से अङ्गो में पहुचते हैं तब अङ्ग उस में अपनी शक्ति और प्रकृति से कार्य्य करना आरम्भ करते है और निष्फल मलआदि को दूर करके शेष को अपना भाग और अपनीसी सूरत का बना लेते हैं यह चौथा

होना तथा भौचक्का पागलपना होजाना और ज्ञानेन्द्रियों का नष्ट होना भी इस सिरके दर्द के चिन्हों में से है इसी कारण से इस सिरके दर्द का उन्मादजशिगे रोग भी नाम है।

॥ उक्त रोग की चिकित्सा ॥

शिरमें गर्मी पहुचाने के लिये तकमीद अर्थात् (गरम पोटली से सेक) और इन्किबाव अर्थात भफारादें और हम्माम की गरम जगह में थोडी देर रक्खै और साधारण रीति से स्नान भी करै और उष्ण प्रभाव वाले तेल जैसे सौसन का तल वा चमेली का तेल वा दौना मरुआ का तेल शिरपर मलै और अवर मुर्दा (स्पज) या ऊनी कपडों को इन्ही ऊपर वर्णन किये हुये तेलों में तर करके चांद पर रखना सब से उत्तम है ॥ और बनफशा, ल्हिसौडा, सितमी के बीज, अलसी के बीज, अजीर और तुरजबीन के काढे से उदर के मल को नर्म करके विबन्ध को दूरकरै और एक दो दस्त करादेवे और खाने में इसरीति से कमीकरै जैसे चने का पानी या तीतर या बटेर के शोरवे में जीरा और दालचीनी मिलाकर देवे।

। तकमीद अर्थात सेककी विधि ।

देह में गर्मी पहुचाने का नाम तकमीद है इसके दो भेद है एक तर और दूसरी खुश्क ॥ तकमीद तर अर्थात् तर सिक्ताव यह है कि किसी जानवर का फुकना जिसमें पेशाब रहता है अच्छी तरह साफ करके उसमें गर्म पानी या दवाओं का गरम२पानी अर्थात् काढा भरके रोग वाले अगपर रक्खै जब ठंढा होजाय तब हटा लेवे अथवा [illegible] स्पज गर्मपानी [illegible] करके अगपर रक्खे इस
रस अपने स्वरूप को छोडकर रुधिर पित्त बात और [illegible]
करता है अर्थात् अब रससे दोप बनजाता है यही दूसरा पचाव हुआ ॥ अब ये दोष आपस में उचित प्रमाण से मिल झुलकर जिगर से निकलकर रगों में होतेहुए उन अवयवों की ओर चले जिन २ अवयवों के वे अश हैं ॥ इन र-गोंकी गर्मी और उसकी प्रकृतिके कारण से जो कुछ पकाव होताहै और दोष उस अङ्ग के स्वभाव को ग्रहण करलेते हैं जिसकी वे पुष्टि करेंगे यह तीसरा पचाव है फिर दोप उचित प्रमाण से अङ्गों में पहुचते हैं तब अङ्ग उस में अपनी शक्ति और प्रकृति से कार्य्य करना आरम्भ करते है और निष्फल मलआदि को दूर करके शेष को अपना भाग और अपनीसी सूरत का बना लेते हैं यह चौथा

डासा मिश्री मिलाकर खुले मुह की शीशी में डाल कर हर घडी हला हला कर सूंघे और इस शीशी को नाक के समीप रक्खें (पथ्यका वर्णन) खटाई मिले हुए झोल कि जिस में आलू या पीले आलू या इमली या नारंगी का पानी या अंगूर का पानी या खट्टे अनार के पानी की खटाई पडी हुई हो और थोडसा बूरा भी मिलादें और शोरवा (झोल वा यूष) चाहे पालक का चाहे मसूड की दाल आदिका हो सब लाभदायक हैं और जो खांसी हो तो किसी प्रकार की खटाई न डाले केवल बेखटाई का रसीला द्रव्य या जौका दलिया खाना उचित है ।

पित्तज सिर दर्द का वर्णन ।

दूसरा सिर का दर्द पित्त के दोष से उत्पन्न होता है उसका लक्षण यह है कि सिर के छूने से गर्मी मालूम हो नाक में खुश्की मालम हो और नथने भी खुश्क हों और मुखका स्वाद कडवा मालम हो और नींद न आती हो और प्यास अधिक हो और नाडी तेज चलती हो और पेशाब पीला और साफ हो और चहरे पर पिलाई झलकती हो ॥ (चिकित्सा) इसरोग में पित्त के दोष का पाक करने के लिये लिखा हुआ जुलाबदेवे यथा पीली हर्डे काबुली हर्डे, आलूबुखारा, मुनक्का बेदाने की, उन्नाब, मुलहटी-इमली बनफ़शा-और लिहसोडे को औटा कर उसमें तुरंजबीन और अमलतास मिलाकर पिलावै और तुरंज बीन के बदले शीरखिश्त हो तो सब से अच्छा है जुलाब तथा दोष के पक जाने के पीछे प्रकृति को सामान्यावस्था पर लाने के लिये लेप, सऊत और नस्य लखा आदि ठंडी वस्तुओं का प्रयोग करे और इनके सिवाय और ठंडे उपाय जिनका वर्णन रुधिरज सिरके दर्द में होचुका है काम में लावे और गेहूं की भुसी, खितमी तथा बनफ़शा पानी में औटाकर गुन गुने से पाशोया अर्थात् भफारा देवें (पाशोया की रीति) उचित दवाओं को पानी में औटाकर ठंडा करलें जब आधा गर्म रहजाय तब बीमार को ऊचे पर पांव लटका कर विठावे और उसके पांव किसी बडी नाद में रक्खे और बीमार के पिछाडी तकिया लगावें जिसमें वह पीठ की ओर झुका हुआ तकिया लगा कर बैठे और उस के मुख की तरफ कोई दृढ कपडा पर्दे की तरह तान लेवें जिससे काढ़े की भाफ उसके मुंह को न लगे नहीं तो पागल हो जाने और दिमाग के बिगड़ जाने का भय है फिर दो आदमी दो लोटों से सम धार बां

डासा मिर्को मिलाकर खुले मुह की शीशी में डाल कर हर घडी हला हला कर सूंघे और इस शीशी को नाक के समीप रक्खें (पथ्यका वर्णन) खटाई मिले हुए झोल कि जिस में आलू या पीले आलू या इमली या नारंगी का पानी या अंगूर का पानी या खट्टे अनार के पानी की खटाई पडी हुई हो और थोडसा चूंग भी मिलादें और शोरबा (झोल वा यूप) चाहे पालक का चाहे मसूड की दाल आदिका हो सब लाभदायक हैं और जो खांसी हो तो किसी प्रकार की खटाई न डाले केवल बेखटाई का रसीला द्रव्य या जौका दलिया खाना उचित है ।

पित्तज सिर दर्द का वर्णन ।

दूसरा सिर का दर्द पित्त के दोष से उत्पन्न होता है उसका लक्षण यह है कि सिर के छूने से गर्मी मालूम हो नाक में खुश्की मालूम हो और नथने भी खुश्क हों और मुखका स्वाद कडवा मालूम हो और नींद न आती हो और प्यास अधिक हो और नाडी तेज चलती हो और पेशाब पीला और साफ हो और चहरे पर पिलाई झलकती हो ॥ (चिकित्सा) इसरोग में पित्त के दोष का पाक करने के लिये लिखा हुआ जुलाबदेवे यथा पीली हर्डे काबुली हर्डे, आलूबुखारा, मुनक्का बेदाने की, उन्नाब, मुलहटी-इमली बनफ़शा-और लिहसौडे को औटा कर उसमें तुरंजबीन और अमलतास मिलाकर पिलावै और तुरंज बीन के बदले शीरखिश्त हो तो सब से अच्छा है जुलाब तथा दोष के पक जाने के पीछे प्रकृति को सामान्यावस्था पर लाने के लिये लेप, सऊत और नस्य लखा आदि ठंडी वस्तुओं का प्रयोग करे और इनके सिवाय और ठंडे उपाय जिनका वर्णन रुधिरज सिरके दर्द में होचुका है काम में लावे और गेहूं की भुसी, खितमी तथा बनफ़शा पानी में औटाकर गुन गुने से पाशोया अर्थात् भफारा देवें (पाशोया की रीति) उचित दवाओं को पानी में औटाकर ठंडा करलें जब आधा गर्म रहजाय तब बीमार को ऊचे पर पांव लटका कर बिठावे और उसके पांव किसी बड़ी नाद में रक्खे और बीमार के पिछाडी तकिया लगावें जिसमें वह पीठ की ओर झुका हुआ तकिया लगा कर बैठ और उस के मुख की तरफ कोई दृढ कपडा पर्दे की तरह तान लेवे जिससे काढे की भाफ उसके मुंह को न लगे नहीं तो पागल हो जाने और दिमाग के बिगड़ जाने का भय है फिर दो आदमी दो लोटों से सम धार बांध

ड्रामा सिर्का मिलाकर खुले मुह की शीशी में डाल कर हर घडी हला हला कर सूघे और इस शीशी को नाक के समीप रक्खे (पथ्यका वर्णन) खटाई मिले हुए झोल कि जिस में आलू या पीले आलू या इमली या नारंगी का पानी या अंगूर का पानी या खट्ट अनार के पानी की खटाई पडी हुई हो और थोडमा चूग घी मिलादें और शोरबा (झोल या यूष) चाहे पालक का चाहे मसूर की दाल आदिका हो सब लाभदायक हैं और जो खांसी हो तो किसी प्रकार की खटाई न डाले केवल बेखटाई का रसीला द्रव्य या जौका दलिया खाना उचित है।

पित्तज सिर दर्द का वर्णन।

दूसरा सिर का दर्द पित्त के दोष से उत्पन्न होता है उसको लक्षण यह है कि सिर के छूने से गर्मी मालूम हो नाक में खुश्की मालूम हो और नथने [illegible] हों और मुखका स्वाद कडवा मालम हो और नींद न आती हो जी [illegible] और नाडी तेज चलती हो और पेशाब पीला और साफ [illegible] रात का खावें क्योंकि [illegible] पित्त के दोष नाम हुब्बेशबियार रक्खागया है क्योंकि [शब] रात को कहते है तथा सिर स्वच्छ करने के लिये याग्ज और शिकञ्जबीन या गई और अकरकरा औ[illegible] दानांमरुआ और सआतर इनको शहद और काजी में मिलाकर कुल्ले [गण्डू[illegible] पाविधि] करें और जब सिरके दोष दूर हो जाय तब प्रकृति का स्वाभावि[illegible] अवस्था पर लाने के लिये वह लेप और तरेडे और सूघने की चीजें और [illegible] काव अमल में लावे जिनका वर्णन ठढ से उत्पन्न हुए सिरके साधारण दर्द [illegible] हो चुका है और बाबना और सोये के बीज और नाखूना औटा करके उस[illegible] सिर धोवें और तुतली, बाबूना, दोना मरुआ और पोदीना इनका काढा और [illegible] गर्मी पहुचाने वाले तेल नाक और कान में डालें और [illegible] का उपाय करें इस रोग में छींक लाने की दो रीति [illegible] और फरफयून का [एक घासका दूध है] [illegible] बेदस्तर मे पीसकर नाक में टपकावें। दूसरे यह कि [illegible] के [illegible] बेदस्तर बारीक पीसकर एक पोटली में बांध [illegible] पोटली को सूघा छींक आवे[illegible]

डामा सिर्का मिलाकर खुले मुह की शीशी में डाल कर हर घडी हला हला कर सूघे और इस शीशी को नाक के समीप रक्खे (पथ्यका वर्णन) खटाई मिले हुए झोल कि जिस में आलू या पीले आलू या इमली या नारंगी का पानी या अंगूर का पानी या खट्ट अनार के पानी की खटाई पडी हुई हो और थोडसा चूग घी मिलादें और शोरबा (झोल वा यूंप) चाहै पालक का चाहै मसूर की दाल आदिका हो सब लाभदायक हैं और जा खांसी हो तो किसी प्रकार की खटाई न डालें केवल बेखटाई का रसीला द्रव्य या जौंका दलिया खाना उचित है।

पित्तज सिर दर्द का वर्णन।

दूसरा सिर का दर्द पित्त के दोष से उत्पन्न होता है उसका लक्षण यह है कि सिर के छूने से गर्मी मालूम हो नाक में खुश्की मालूम हो और नथने [illegible] हों और मुखका स्वाद कडवा मालम हो और नींद न आती हो औ [illegible] और नाडी तेज चलती हो और पेशाब पीला और साफ [illegible] रात का खावें क्योंकि [illegible] रात [illegible] संयोग में पित्त के दोष नाम हुब्बेशविधार रक्खागया है क्योंकि [शव] रात को कहते है तथा सिर स्वच्छ करने के लिये याग्ज और शिकञ्जबीन या गई और अकरकरा औ[illegible] दानांमरुआ और सआतर इनको शहद और काजी में मिलाकर कुल्ले [गण्डूषविधि] करें और जब सिरके दोष दूर हो जाय तब प्रकृति का स्वाभावि[illegible] अवस्था पर लाने के लिये वह लेप और तरेडे और सूघने की चीजें और [illegible] काव अमल में लावे जिनका वर्णन ठढ से उत्पन्न हुए सिरके साधारण दर्द [illegible] हो चुका है और बाबना और सोये के बीज और नाखूना औटा करके उस[illegible] सिर गेवें और तुलसी, बाबूना, दोना मरुआ और पोदीना इनका काढा और गर्मी पहुचाने वाले तेल नाक और कान में डालें और [illegible] का उपाय करें इस रोग में छींक लाने की दो रीति [illegible] और फरफयून का [एक घासका दूध है] [illegible] बेदस्तर में पीसकर नाक में टपकावें। दूसरे यह कि [illegible] के पानी बेदस्तर बारीक पीसकर एक पोटली में बांध [illegible] पोटली को सूघ छींक आवें

रा इरमनी, गावजवां, चुकन्दर के पत्ते, गेंहू की भुसी इन सब को पानी में औटाकर सिर पर डालें और धोवें और नरगिस का फूल और कस्तूरी और अंबर तथा और ऐसी ही वस्तु सूंघें और नर्म तेल जैसे बाबूना का तेल, नरगिस का तेल, दोनामरुआ का तेल, इनको ऐसे ठंढे तेलों के साथ मिलाकर जैसे बनफ्शा का तेल सिर पर मलें और यदि प्राकृतिक बात सिरके दर्द का कारण हो तो वह वस्तु जो गर्मी का प्रभाव कम रखती है और सर्दी की ओर झुकी हुई है प्रकृति को अपनी दशा पर लाने के लिये प्रयोग करें और जो वादी जली हुई तलछटसी है तो गर्म दवाओं को सर्वथा प्रयोग न करें सर्द तर ओषधियां प्रकृति के सम्हालने के लिये काम में लावें इस सिर के दर्द में उचित पथ्य यह है कि अंडा अधभुना, मुर्गी, तीतर, बटेर जो कि चने की दाल के साथ पके होवें लाभदायक हैं और खाना खाने के एक घडी उपरांत पचाव के लिये कोई ऐसी जवारिश देजो न गरम हो न शीतल और प्रसन्न कारक हो और खाना खाने के उपरांत बाइं करवट से थोडी देर अवश्य लेटें। क्योंकि इस तरह लेटने से जिगर आमाशय की ओर आरूढ होजाता है और यह काम पूरे पचाव के लिये बहुत सहायक है और इस बीमारी में मिहनत और परिश्रम सर्वथा छोड देवे नहीं तो जितनी तरी दवा और पथ्य के द्वारा पहुँचाई जायगी वह सब मिहनत और परिश्रम से पचजायगी, ऐसा करने से उस चिकित्सा का कुछ भी लाभ न होगा। जो वादी बहुत गाढी है तो गिजा भी उसी की तरह तर देनी चाहिये इन सब बातों का ध्यान बुद्धिमान् हकीम की सम्मति पर निर्भर है जैसा जैसा मुनासिब देखे वैसाही करे ॥

पांचवें रीही दर्द का वर्णन।

वह सिर का दर्द जो अधिक रियाह (वादी) से उत्पन्न हो इसका यह लक्षण है कि यह दर्द जगह २ हटता रहता है और सिर में [illegible] होता है परन्तु साथही इसके सिर में बोझ [illegible] हो [illegible] ऐसा सनसनाहट मालूम हो कि कान बज रहे [illegible]) [illegible] कि गलीज रीह अर्थात् गाढीवादी जो सिर में [illegible] उसके लिये शीरा इरमनी बरन्जा[illegible] मार [illegible] दोनामरुआ और सोंफ इनको [illegible] औटा[illegible] हरी तुलसी और हरा दोना [illegible]

रा इरमनी, गावजवां, चुकदर के पत्ते, गेंहू की भुसी इन सब को पानी में औटाकर सिर पर डालें और धोवें और नर गिस का फूल और कस्तूरी और अंबर तथा और ऐसी ही वस्तु सूंघें और नर्म तेल जैसे बाबूना का तेल, नरगिस का तल, दोनामरुआ का तेल, इनको ऐसे ठंढे तेलों के साथ मिलाकर जैसे बनफ़्शा का तेल सिर पर मलें और यदि प्राकृतिक वात सिरके दर्द का कारण हो तो वह वस्तु जो गर्मी का प्रभाव कम रखती है और सर्दी की ओर झुकी हुई है प्रकृति को अपनी दशा पर लाने के लिये प्रयोग करें और जो बादी जली हुई तलछटसी है तो गर्म दवाओं को सर्वथा प्रयोग न करें सर्द तर ओषधियां प्रकृति के सम्हालने के लिये काम में लावें इस सिर के दर्द में उचित पथ्य यह है कि अंडा अधभुना, मुर्गी, तीतर, बटेर जो कि चने की दाल के साथ पके होवें लाभदायक हैं और खाना खाने के एक घडी उपरांत पचाव के लिये कोई ऐसी जवारिश देवे जो न गरम हो न शीतल और प्रसन्न कारक हो और खाना खाने के उपरांत बाइं करवट से थोडी देर अवश्य लेटें। क्योंकि इस तरह लेटने से जिगर आमाशय की ओर आरूढ होजाता है और यह काम पूरे पचाव के लिये बहुत सहायक है और इस बीमारी में मिहनत और परिश्रम सर्वथा छोड देवे नहीं तो जितनी तरी दवा और पथ्य के द्वारा पहुँचाई जायगी वह सब मिहनत और परिश्रम से पचजायगी, ऐसा करने से उस चिकित्सा का कुछ भी लाभ न होगा। जो बादी बहुत गाढी है तो गिजा भी उसी की तरह तर देनी चाहिये इन सब बातों का ध्यान बुद्धिमान् हकीम की सम्मति पर निर्भर है जैसा जैसा मुनासिब देखे वैसाही करे ॥

पांचवें रीही दर्द का वर्णन।

वह सिर का दर्द जो अधिक रिआह (बादी) से उत्पन्न हो इसका यह लक्षण है कि यह दर्द जगह २ हटता रहता है और सिर में [illegible] होता है परन्तु साथही इसके सिर में बोझ [illegible] हो औ[illegible] ऐसा सनसनाहट मालूम हो कि कान बज रहे [illegible]) [illegible] कि गलीज रीह अर्थात् गाढीबादी जो सिर में [illegible] उसके [illegible] लिये शीरा इरमनी बरन्जा[illegible] मार[illegible] दोनामरुआ और सोंफ इनको [illegible] औटा[illegible] हरी तुलसी और हरा दोन[illegible]

रा इरमनी, गावजवां, चुकदर के पत्ते, गेंहू की भुसी इन सब को पानी में औंटाकर सिर पर डालें और धोवें और नर गिस का फूल और कस्तूरी और अंबर तथा और ऐसी ही वस्तु सूघें और नर्म तेल जैसे बाबूना का तेल, नरगिस का तेल, दोनामरुआ का तेल, इनको ऐसे ठंडे तेलों के साथ मिलाकर जैसे बनफ्शा का तेल सिर पर मलें और यदि प्राकृतिक वात सिरके दर्द का कारण हो तो वह वस्तु जो गर्मी का प्रभाव कम रखती है और सर्दी की ओर झुकी हुई है प्रकृति को अपनी दशा पर लाने के लिये प्रयोग करें और जो बादी जली हुई तलछटसी है तो गर्म दवाओं को सर्वथा प्रयोग न करें सर्द तर औषधियां प्रकृति के सम्हालने के लिये काम में लावें इस सिर के दर्द में उचित पथ्य यह है कि अंडा अधभुना, मुर्गी, तीतर, बटेर जो कि चने की दाल के साथ पके होवें लाभदायक हैं और खाना खाने के एक घड़ी उपरांत पचाव के लिये कोई ऐसी जवारिश देजो न गरम हो न शीतल और प्रसन्न कारक हो और खाना खाने के उपरांत बांई करवट से थोडी देर अवश्य लेटें। क्योंकि इस तरह लेटने से जिगर आमाशय की ओर आरूढ होजाता है और यह काम पूरे पचाव के लिये बहुत सहायक है और इस बीमारी में मिहनत और परिश्रम सर्वथा छोड देवे नहीं तो जितनी तरी दवा और पथ्य के द्वारा पहुँचाई जायगी वह सब मिहनत और परिश्रम से पचजायगी, ऐसा करने से उस चिकित्सा का कुछ भी लाभ न होगा। जो बादी बहुत गाढी है तो गिजा भी उसी की तरह तर देनी चाहिये इन सब बातों का ध्यान बुद्धिमान् हकीम की सम्मति पर निर्भर है जैसा जैसा मुनासिब देखे वैसाही करे ॥

पांचवें रीही दर्द का वर्णन।

वह सिर का दर्द जो अधिक रियाह (बादी) से उत्पन्न हो इसका यह लक्षण है कि यह दर्द जगह २ हटता रहता है और सिर में खिचाव मालूम होता है परंतु साथही इसके सिर में बोझ न मालूम हो और कानों में ऐसा सनसनाहट मालूम हो कि कान बज रहे हैं। (इलाज) इसका यह है कि गलीज रीह अर्थात् गाढीबादी जो सिर में बंद होगई हैं उसके नष्ट करने के लिये शीरा इरमनी बरन्जास्फ (कदा मार नाम की एक घास है), सआतर, दोनामरुआ और सौंफ इनको पानी में औंटाकर गुनगुना सिर पर डालें और हरी तुलसी और हरा दोनामरुआ और सौंफ सूघें और काली मिर्च तथा

रा इरमनी, गावजवां, चुकदर के पत्ते, गेंहू की भुसी इन सब को पानी में औं-टाकर सिर पर डालें और धोवें और नरगिस का फूल और कस्तूरी और अबर तथा और ऐसी ही वस्तु सूंघें और नर्म तेल जैसे वाबूना का तेल, नरगिस का तेल, दोनामरुआ का तेल, इनको ऐसे ठंडे तेलों के साथ मिलाकर जैसे बनफ्शा का तेल सिर पर मलें और यदि प्राकृतिक वात सिरके दर्द का कारण हो तो वह वस्तु जो गर्मी का प्रभाव कम रखती है और सर्दी की ओर झुकी हुई है प्रकृति को अपनी दशा पर लाने के लिये प्रयोग करें और जो बादी जली हुई तलछटसी है तो गर्म दवाओं को सर्वथा प्रयोग न करें सर्द तर औषधियां प्रकृति के सम्हालने के लिये काम में लावें इस सिर के दर्द में उचित पथ्य यह है कि अंडा अधभुना, मुर्गी, तीतर, बटेर जो कि चने की दाल के साथ पके होवें लाभदायक हैं और खाना खाने के एक घड़ी उपरांत पचाव के लिये कोई ऐसी जवारिश देजो न गरम हो न शीतल और प्रसन्न कारक हो और खाना खाने के उपरांत बाईं करवट से थोडी देर अवश्य लेटें। क्योंकि इस त-रह लटने से जिगर आमाशय की ओर आरूढ होजाता है और यह काम पर पचाव के लिये बहुत सहायक है और इस बीमारी में मिहनत और परिश्रम सर्व-था छोड देवे नहा तो जितनी तरी दवा और पथ्य के द्वारा पहुँचाई जायगी वह सब मिहनत और परिश्रम से पचजायगी, ऐसा करने से उस चिकित्सा का कुछ भी लाभ न होगा। जो बादी बहुत गाढी है तो गिजा भी उसी की तरह तर देनी चाहिये इन सब बातों का ध्यान बुद्धिमान् हकीम की सम्मति पर निर्भर है जैसा जैसा मुनासिब देखे वैसाही करे ॥

पांचवें रीही दर्द का वर्णन ।

वह सिर का दर्द जो अधिक रियाह (बादी) से उत्पन्न हो इसका यह लक्षण है कि यह दर्द जगह २ हटता रहता है और सिर में खिचाव मालूम हो-ता है परंतु साथही इसके सिर में बोझ न मालूम हो और कानों में ऐसा सनसनाहट मालूम हो कि कान बज रहे हैं । (इलाज) इसका यह है कि गलीज रीह अर्थात् गाढीबादी जो सिर में बंद होगई हैं उसके नष्ट करने के लिये शीरा इरमनी बरन्जास्फ (कदा मार नाम की एक घास है), सआतर, दोनामरुआ और सौंफ इनको पानी में औंटाकर गुनगुना सिर पर डालें और हरी तुलसी और हरा दोनामरुआ और सौंफ सूंघें और काली मिर्च तथा

है। आंखें पीली होजाती है, मुंहका स्वाद कड़ुआ मालूम होता है, आमाशय में ऐंठा और मरोड़ा होने लगता है और प्यास अधिक बढ़जाती है तथा दर्द म उस समय रुकावट मालूम होती है जब रमन के द्वारा पित्त निकल जाताहै(इलाज) इस का यह है कि पहले शिकजबीन और गर्म पानी से वमन करावें उस क पीछे आमाशय की गर्मी बुझाने और थामने के लिये उचित उपाय करें इसके साथ ही सिर और आमाशय दोनों अगों को बल देनेवाली दवाओं से शक्ति पहुंचावें सिर को बल पहुचा नेवाली दवायें तो ऊपर पित्त के सिर दर्द में वर्णन हो चुकी है आमाशय में बलकारक औषध रुब्ब होती है। ये कब्ज करती है, जैसे–बिही का रुब्ब, खजूर के गूदे का रुब्ब, कील मेवे के रुब्ब, य है। और जो सर्दी पहुचाना और विवन्ध करना इन दोनों की अधिक आवश्यका हो, तो वसलोचन गुलाव के फूल, गिलि इरमनी, इनको बारीक पीसकर इन्हीं रुब्बों में मिलालेवें ॥

'रुब्ब' उस औषध को कहते हैं जा किसी द्रव्य का पानी निचोड़ कर बिना कुछ मिलाये हुए इतना औटाया जावे कि चौथाई रहजाय और कुछ गाढा होजाय और कभी आधा या चौथाई रहजाने के पीछे बराबर का कद घोलकर फिरऔटाते है जब कुछ गाढा होजाय तब "रुब्ब" तयार होजाता है।

जो आमाशय म अधिकतर कफ इकट्ठा होगया है तो उसका लक्षण यह है कि आमाशय म अफरा मालूम हो और पहले अजीर्ण का होना और मुंह मे कुआब का भरना, उबकाइयों का अधिक आना ये लक्षण होते है और जब वमन के साथ कफ निकल जाता है तब शान्ति होती है इस रोग में खट्टी डकार भी आती है। (इलाज) इस का यह है कि साय के बीज और मूली के बीज और मेथी इनको पानी में औटाकर और शिकजबीन डालकर वमन करावे परन्तु शिकजबीन शहद की और सिर्के की बनी हुई हो फिर अयारिज की गोलियों के द्वारा दस्त के मार्ग से कफ का निकालें और कफ के निकाल ने के पीछ आमाशय में उत्तम उपाय और गर्म जवारिशों से बल पहुचावें॥

यदि वादी से उत्पन्न हुआ दोष आमाशय म इकट्ठा होगया है तो उस का लक्षण यह है कि आमाशय में जलन होती है भूख बहुत लगती है और वमन के द्वारा वातज दोष के निकालने से आराम होता है (इलाज) इस का इलाज यह है कि पहले दोष को पकाकर निकलने के योग्य बनावें इसके लिये अफ्तमून आदि का काढ़ा मुख्य है और दोष के पकनपर उसे जुलाब म निकाल देवें इस म वादी को निकालने वाला जुलाब देवे।

है। आंखें पीली होजाती है, मुंहका स्वाद कडुआ मालूम होता है, आमाशय में ऐंठा और मरोडा होने लगता है और प्यास अधिक बढ जाती है तथा दर्द म उम समय रुकावट मालूम होती है जब वमन के द्वारा पित्त निकल जाताहै(इलाज) इस का यह है कि पहले शिकजवीन और गर्म पानी से वमन करावें उम क पीछे आमाशय की गर्मी बुझाने और थामने के लिये उचित उपाय करे इनके साथ ही सिर और आमाशय दोनों अंगों को बल देनेवाली दवाओं से शक्ति पहुंचावें सिर को बल पहुचा नेवाली दवायें तो ऊपर पित्त के सिरदर्द में वर्णन हो चुकी है आमाशय में बलकारक औषध रुब्ब होती है। ये कब्ज करती है, जैसे–बिही का रुब्ब, खजूर के गुदे का रुब्ब, कील मेवे के रुब्ब, य है। और जो सर्दी पहुचाना और विवन्ध करना इन दोनों की अधिक आवश्यका हो, तो वसलोचन गुलाव के फूल, गिलि इरमनी, इनको वारीक पीसकर इन्हीं रुब्बों में मिलालेवें ॥

'रुब्ब' उस औषध को कहते हैं जो किसी द्रव्य का पानी निचोड कर बिना कुछ मिलाये हुए इतना औटाया जावे कि चौथाई रहजाय और कुछ गाढा होजाय और कभी आधा या चौथाई रहजाने के पीछे बराबर का कद घोलकर फिरऔटाते है जब कुछ गाढा होजाय तव "रुब्ब" तयार होजाता है।

जो आमाशय म अधिकतर कफ इकट्ठा होगया है तो उसका लक्षण यह है कि आमाशय म अफरा मालूम हो और पहले अजीर्ण का होना और मुह मे लुआब का भरना, उबकाइयों का अधिक आना ये लक्षण होते है और जब वमन के साथ कफ निकल जाता है तब शान्ति होती है इस रोग में खट्टी डकार भी आती है। (इलाज) इस का यह है कि साय के बीज और मूली के बीज और मेथी इनको पानी में औटाकर और शिकजवीन डालकर वमन करावे परन्तु शिकजवीन शहद की और सिके की बनी हुई हो फिर अया-रिज की गोलियों के द्वारा दस्त के मार्ग से कफ को निकाले और कफ के निकाल ने के पीछ आमाशय में उत्तम उपाय और गर्म जवारिशों से बल पहुचावें॥

यदि वादी से उत्पन्न हुआ दोप आमाशय म इकट्ठा होगया है तो उस का लक्षण यह है कि आमाशय में जलन होती है भूख बहुत लगती है और वमन के द्वारा वातज दोप के निकालने से आराम होता है (इलाज) इस का इला-ज यह है कि पहले दोष को पकाकर निकलने के योग्य बनावे इसके लिये अफ्तमून आदि का काढा मुख्य है और दोष के पकनेपर उसे जुलाब स नि-काल देवें इस म वादी को निकालने वाला जुलाब देवें।

है कि पहले आमाशय में दर्द मालूम हो उसके उपरांत सिर में दर्द मालूम हो और सदा आमाशय में दर्द होने से सिर में भी दर्द उत्पन्न हो और बादी के भोजनों से आमाशय और सिरके दर्दों मे अधिक कष्ट हो और दर्द एक जगह ठहरा न रहे जगह २ फिरता हुआ मालूम हो और सिरका दर्द खोपडी से आरंभ हो यह अंत का चिन्ह आमाशय से संबंध रखनेवाले कुल सिरके दर्दों में होता है और कारण इसका यह है कि चांद आमाशय की सीध में है (इलाज) इसका यह है कि आमाशय के अफरे को खोने का उपाय करै और उस रिआह अर्थात् बादी के माद्दे को जो कफ है निकाल देवे और आमाशय को कफ से रहित करे इसके पीछे आमाशय और दिमाग को बल पहुचावें और कफ के निकालने के लिये वही औषधें देवें जो कफ के वर्णन में ऊपर कही गई है और रिआह के निकालने और आमाशय और दिमाग को बल पहुचाने के लिये जवारिश कम्मूनी अर्थात् जीरे की, और पोदीना की जवारिश तथा ऐसी ही और वस्तु खानेको देवे बहुधा ऐसा भी होता है कि आमाशय को शक्ति पहुचाने और रिआह के निकल जाने से सिर और आमाशय का दर्द जाता रहता है मल के निकालने की आवश्यकता नहीं पडती ॥

यह उस समय होगा जब कि आमाशय में रिआहका उत्पन्न होना किसी बादी की वस्तु या दवा के खाने से हो और जो कफ से रिआह पैदा होगी तो अवश्य माद्दे का निकालना उचित होगा नहीं तो केवल निकालना और पुष्टताई काफी न होगी और जो आमाशय के मुह की निर्बलता सिर के दर्द का कारण है तो इसका चिन्ह यह है कि खाली पेट में और प्रात,काल का साफ उठते समय सिर में अधिक दर्द हो (इलाज) उसका यह है कि प्रति दिन प्रात काल के समय सोने से उठकर थोडे से ग्रास खजूर के पानी में या रीवास (एक घास है जिसका फल लाल होता है) के पानी में या गोल सिमाक (तुतरंग एक पेड का फल मसूर के बराबर) के पानी या अनार दाने के पानी में रोटी भिगावकर खाले इन दवाओं को पानी में भिगो दें जब पानी में खटाई आजाय तो पानी छान ले और उसमें रोटी भिगोवे और यह बात प्रगट है कि यह कब्ज करने वाली दवाइयां जो ऊपर वर्णन की गई है अर्थात् खजूर, रीवास, गोल सिमाक, और अनारदाना, यह सब आमाशय को पुष्ट करते हैं और भाफ को ठहराते और चढने से रोकते हैं और पित्तको उखाडते है और जब आमाशय के मुह की निर्बलता के साथ ही आमाशय की प्रकृति ठंढी होजाय तो इस प्रकार की खटाइयों में रोटी भिगोने के पीछे अनीसून

है कि पहले आमाशय में दर्द मालूम हो उसके उपरात सिर में दर्द मालूम हो और सदा आमाशय मे दर्द होने से सिर में भी दर्द उत्पन्न हो और वादी के भोजनों से आमाशय और सिरके दर्दों मे अधिक कष्ट हो और दर्द एक जगह ठहरा न रहे जगह २ फिरता हुआ मालूम हो और सिरका दर्द खोपडी से आरंभ हो यह अत का चिन्ह आमाशय से सबध रखनेवाले कुल सिरके दर्दों में होता है और कारण इसका यह है कि चांद आमाशय की सीध में है (इलाज) इसका यह है कि आमाशय के अफरे को खोने का उपाय करे और उस रिआह अर्थात् वादी के माद्दे को जो कफ है निकाल देवे और आमाशय को कफ से रहित करे इसके पीछे आमाशय और दिमाग को वलपहुचावें और कफ के निकालने के लिये वही औषधें देवें जो कफ के वर्णन में ऊपर कही गई है और रिआह के निकालने और आमाशय और दिमाग को वल पहुचाने के लिये जवारिश कम्मूनी अर्थात् जीरे की, और पोदीना की जवारिश तथा ऐसी ही और वस्तु खानेको देवे बहुधा ऐसा भी होता है कि आमाशय को शक्ति पहुचाने और रिआह के निकल जाने से सिर और आमाशय का दर्द जाता रहता है मल के निकालने की आवश्यकता नहीं पडती ॥

यह उस समय होगा जब कि आमाशय में रिआहका उत्पन्न होना किसी बादी की वस्तु या दवा के खाने से हो और जो कफ से रिआह पैदा होंगी तो अवश्य माद्दे का निकालना उचित होगा नहीं तो केवल निकालना और पुष्टताई काफी न होगी और जो आमाशय के मुह की निर्बलता सिर के दर्द का कारण है तो इसका चिन्ह यह है कि खाली पेट में और प्रात,काल का साफ उठते समय सिर में अधिक दर्द हो (इलाज) उसका यह है कि प्रति दिन प्रात काल के समय सोने से उठकर थोडे से ग्रास खजूर के पानी में या रीबास (एकघास है जिसका फूल लाल होता है) के पानी में या गोल सिमाक (तुलरग एक पेड का फल मसूड के बराबर) के पानी या अनार दाने के पानी में रोटी भिगाकर खाले इन दवाओं को पानी में भिगो दें जब पानी में खटाई आजाय तो पानी छान ले और उसमे रोटी भिगोवे और यह वात प्रगट है कि यह कब्ज करने वाली दवाइयां जो ऊपर वर्णन की गई है अर्थात् खजूर, रीबास, गोल सिमाक, और अनारदाना, यह सब आमाशय को पुष्ट करते हैं और भाफ को ठहराते और चढने से रोकते हैं और पित्तको उखाडते है और जब आमाशय के मुह की निर्बलता के साथ ही आमाशय की प्रकृति ठंढी होजाय तो इस प्रकार की खटाइयों में रोटी भिगोने के पीछे अनीसून

हिस्से में दर्द होता है पीठ के सयोग से जो सिर का दर्द और गुर्दे के सयोग से जो सिर का दर्द होता है उन में केवल इतना अतर है कि गुर्दे के सिर के दर्द में तो सिर के अतके हिस्से में दर्द होगा और पीठ के सिर के दर्द में उससे भी पीछे विल्कुल अत में अर्थात् गुद्दी के पास होगा और जो पिंडलियों या पैरों या हाथों के सयोग से सिर में दर्द हो तो उसका चिन्ह यह है कि बीमार को ऐसा मालूम हो कि कोई चीज चींटी की तरह रेंगती हुई इन्ही अ-गों से ऊपर को चढती चली जाती है इन सब सयोगिक सिर के दर्द के लिये जो (चिन्ह) सामान्य है तथा प्रधान २ प्रत्येक अगके सयोग में प्रगट कर दिया है वह यह है कि जिस अग के सयोग से सिर में दर्द हुआ है पहले उसी में कष्ट और रोग उत्पन्न होवे उसके पीछे सिर में दर्द आरम्भ हो (इलाज) इसका यह है कि जो पैरों और पिंडलियों के सयोग से सिर में दर्द है तो सा-फिन (पैर के टखने के ऊपर की रग) की फसद खोलें और पिंडलियों पर सींगियां लगवावें और इस्तमखीकून की गोलियों से देहका मल निकाल देवें ॥

इस्तमखीकूनकी गोलियों की विधि ।

यह है कि तुर्बुद, सोंखला (एक जड स्याही और सफेदी लिए हुए नसेल की तरह है) और एलुआ, कालादाना, गारीकून ये सब एक २ भाग और पीली हरडका छिलका और बिस्फायज यह दोनों आधे भाग और कमूनियां इन्द्रायण का गूदा यह दोनों तिहाई भाग इन सब को कुटछानके सौंफ के पानी में चने के बराबर गोलियां बनावें और ३ ॥ माशे से ७ माशे तक उचित रीति से काम में लावें और ऐसेही किताब " इलाम तुलिजारब " और कि-ताब " करावादीन कादरी " में वर्णन कियागया है ॥

सिरके दर्द की अधिकता के समय पैरों को जांघ के कोनों से टखना तक किसी पट्टी से कस दवें और पैरों के तलुओं में खैरा का तेल मलें और जो वह पाशोया अर्थात् भफारा जो पित्तके सिरदर्द में वर्णन कियागया है प्रयोग किया जाय तो बहुत अच्छा है जिसमें ऊपर के जवड से नीचे की ओर भाफ के परमाणु लौट जाय और जो हाथों के सयोग [illegible] हो तो पहले सब दर्द को साफ करने के लिये इस्तमख[illegible] करे और उस अग के किसी जगह से भा[illegible]

हिस्से में दर्द होता है पीठ के सयोग से जो सिर का दर्द और गुर्दे के सयोग से जो सिर का दर्द होता है उन में केवल इतना अतर है कि गुर्दे के सिर के दर्द में तो सिर के अतके हिस्से में दर्द होगा और पीठ के सिर के दर्द में उससे भी पीछे बिल्कुल अत में अर्थात् गुद्दी के पास होगा और जो पिंडलियों या पैरों या हाथों के सयोग से सिर में दर्द हो तो उसका चिन्ह यह है कि बीमार को ऐसा मालूम हो कि कोई चीज चींटी की तरह रेंगती हुई इन्ही अ- गों से ऊपर को चढती चली जाती है इन सब सयोगिक सिर के दर्द के लिये जो (चिन्ह) सामान्य है तथा प्रधान २ प्रत्येक अगके सयोग में प्रगट कर दिया है वह यह है कि जिस अग के सयोग से सिर में दर्द हुआ है पहले उसी में कष्ट और रोग उत्पन्न होवे उसके पीछे सिर में दर्द आरम्भ हो (इलाज) इसका यह है कि जो पैरों और पिंडलियों के सयोग से सिर में दर्द है तो सा- फिन (पैर के टखने के ऊपर की रग) की फसद खोलें और पिंडलियों पर सींगियां लगवावें और इस्तमखीकून की गोलियों से देहका मल निकाल देवें ॥

इस्तमखीकूनकी गोलियों की विधि ।

यह है कि तुर्बुद, सोवला (एक जड स्याही और सफेदी लिए हुए नरसल की तरह है) और एलुआ, कालादाना, गारीकून ये सब एक २ भाग और पीली हरडका छिलका और बिसफायज यह दोना आधे भाग और कसमूनियां इन्द्रायण का गदा यह दोना तिहाई भाग इन सब को कूटछानके सौफ के पानी में चने के बराबर गोलियां बनावें और ३ ॥ माशे से ७ माशे तक उचित रीति से काम में लावें और ऐसेही किताब " इलाम तुत्तिजारव " और कि- ताब " करावादीन कादरी " में वर्णन कियागया है ॥

सिरके दर्द की अधिकता के समय पैरों को जांघ के कोनों से टखना तक किसी पट्टी से कस देवें और पैरों के तलुओं में खैरा का तेल मलें और जो वह पाशोया अर्थात् भफारा जो पित्तके सिरदर्द में वर्णन कियागया है प्रयोग किया जाय तो बहुत अच्छा है जिससे ऊपर के जवड से नीचे की ओर भाफ के परमाणु लोट जाय और जो हाथों के सयोग से [illegible] हो तो पहले सब दर्द को साफ करने के लिये इस्तमख[illegible] कर और उस अग के कि लिस जगह से भाफ[illegible]

कि दिमाग को मालूम हो जल्दी से उसका प्रभाव मान जाय यह प्रभाव म-स्तिष्क की ज्ञानशक्ति के बलवान् होने का कारण हो मस्तिष्क के कामों में किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न होने से यह बात नहीं होती है क्योंकि सोच विचार और स्मरणशक्ति आदि-मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य इसमें आरोग्य और उत्तम रहते हैं इस दशा में मस्तिष्क के स्वच्छ होने के कारण से आंखों में ढीढ़ें और कान आदि में मैल और नथनों में नासिकामल और तरी आदि कुछ नहीं होती हैं [इलाज] इसका यह है कि मस्तिष्क की ज्ञान शक्ति फ नष्ट करने का उपाय करें वह उपाय यह है कि कलेपाये जौके साथ पकाकर खावें और जो पचानेवाली शक्ति निर्बल होतो ठंडे २ साग जैसे काहू और खुर्फा और केवल हरे धनिये का साग खावे और जब कभी ऐसा भी हो कि इन उपायों से भी ज्ञानशक्तियां भ्रष्ट न हों और नशीली तथा सुन्न करनेवली दवाओं के काम में लाने की आवश्यकता पढे जिससे उनके द्वारा दिमाग की हिस [ज्ञान] सुस्त और गाढी होजाय तो इस काम के लिये शर्बत या खशखश का शीरा या उसके समान जो चीज नशीली और सुस्त करने वाली हो और जिनको जी भी चाहता हो तो लाभदायक है और उचित है कि फलूनियां की आवश्यकता पड़े ।

फलूनियां का वर्णन ।

फलूनियां एक माजून है जिसको फयलफन या अफीलन नामी हकीम तरतूसी रूमी न दर्दों के ठहराने के लिए बनाई है फिर और २ हकीमोंने उसमें दवाइयां घटावढा के वहुत से भेद उसके करदिये जैसे किताब कराबादीनों में बहुत से नुस्खे लिखे हैं उनमें से एक नुस्खा फलूनियाय फारसी का है जो सिवाय और दर्दों के इस दर्द के लिये मुख्य है वह यहां पर लिखाजाता है कपूर ९ रत्ती नरकचूर और दरूनज अकरबी और मोती विन विंधे-कस्तूरी प्रत्येक १॥ माशे, जुन्देबेदस्तर ३॥ माशे, फरफयून [एक घास का दूध है] और बालछड़, अकरकरा-प्रत्येक ८ माशे केसर १७॥ माशे, अफीम-गिल मख्तूम प्रत्येक ३५ माशे, सफेद मिर्च और देसी अजमायन प्रत्येक ७० माशे इन सब को कूटकर आग बराबर के शहद में मिलाकर छ महिने रहने द उसके पीछे ३॥ माशे प्रति दिन सेवन करे हकीम शेखअली सैनाने ७ माशे मरमकी भी इस में बढाई है यह नुस्खा कराबादीन सफाई से लिखागया है ॥

कि दिमाग को मालूम हो जल्दी से उसका प्रभाव मान जाय यह प्रभाव म-स्तिष्क की ज्ञानशक्ति के बलवान् होने का कारण हो मस्तिष्क के कामों में किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न होने से यह बात नहीं होती है क्योंकि सोच विचार और स्मरणशक्ति आदि-मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य इसमें आरोग्य और उत्तम रहते हैं इस दशा में मस्तिष्क के स्वच्छ होने के कारण से आंखो में ढीढ़ें और कान आदि में मैल और नथनों में नासिकामल और तरी आदि कुछ नहीं होती हैं [इलाज] इसका यह है कि मस्तिष्क की ज्ञान शक्ति के नष्ट करने का उपाय करें वह उपाय यह है कि कलेपाये जौके साथ पकाकर खावें और जो पचानेवाली शक्ति निर्बल होतो ठंडे २ साग जैसे काहू और खुर्फा और केवल हरे धनिये का साग खावे और जब कभी ऐसा भी हो कि इन उपायो से भी ज्ञानशक्तियां भ्रष्ट न हों और नशीली तथा सुन्न करनेवली दवाओं के काम में लाने की आवश्यकता पडे जिससे उनके द्वारा दिमाग की हिस [ज्ञान] सुस्त और गाढी होजाय तो इस काम के लिये शर्बत या खशखश का शीरा या उसके समान जो चीज नशीली और सुस्त करने वाली हो और जिनको जी भी चाहता हो तो लाभदायक है और उचित है कि फलूनियां की आवश्यकता पडे ।

फलूनियां का वर्णन ।

फलूनियां एक माजून है जिसको फयलफून या अफीलन नामी हकीम तरतूसी रूमी ने दर्दों के ठहराने के लिए बनाई है फिर और २ हकीमोंने इसमें दवाइयां घटावढा के बहुत से भेद इसके करदिये जैसे किताब कराबादीनों में बहुत से नुस्खे लिखे हैं उनमें से एक नुस्खा फलूनियाय फारसी का है जो सिवाय और दर्दों के इस दर्द के लिये मुख्य है वह यहां पर लिखाजाता है कपूर ९ रत्ती नरकचूर और दरूनज अकरबी और मोती बिन बिंधे-कस्तूरी प्रत्येक १॥ माशे, जुन्देबेदस्तर ३॥ माशे, फरफयून [एक घास का दूध है] और वालछड़, अकरकरा-प्रत्येक ८ माशे केसर १७॥ माशे, अफीम-गिल मख्तूम प्रत्येक ३५ माशे, सफेद मिर्च और देमी अजमायन प्रत्येक ७० माशे इन सब को कूटकर और बराबर के शहद में मिलाकर छ महीने रहने दे उसके पीछे ३॥ माशे प्रति दिन सेवन करे हकीम शेखअली रैनाने ७ माशे मरमकी भी इस मे बढाई है यह नुस्खा कराबादीन सफाई से लिखागया है ॥

तो खिचाव सिर के पीछे मालूम होगा और जो दिमाग का पिछला भाग निर्बल है तो आगे की तरफ खिचावट मालूम होगी बहुधा दिमाग की कृशता और खिचावट और सिमटने से सक्त और मौत का भी भय होता है क्यों कि दिमाग शरीर का वह प्रधान अंग है जिसपर मनुष्य का जीवन निर्भर है उसमें यह तीनों दशाएं अन्त दर्जे की निर्बलता उत्पन्न करदेती हैं जिसका फल सक्ता है या मौत है इसका (इलाज) यह है कि सिर को शक्ति पहुंचावे जो पट्ठों की जड़ है और जहां से सब शरीर में पट्ठे पहुंचे हैं और उसकी शक्ति के लिये कद्दू के तेल में जुन्देबेदस्तर मिलाकरके मलें और बकरी का गोश्त सुगंधित मसाला डालकर खिलावें इसके सिवाय और अच्छे २ स्वादिष्ट और सुगंधित और मुअतदिल भोजन खिलावें और सुंघावें इस प्रकार सब भेदों में चिकित्सा का फल उस समय प्रगटहोगा जब इलाज करने के समय सम्भोग और सब स्वाभाविक कर्मों से अपनी रक्षा करता रहे नहीं तो लाभ के बदले अर्द्धाङ्ग इस्तरखा अर्थात् अवयवों का ढीला होजाना तशन्नुज अर्थात् बांइटे आना आदि रोगों के पैदा होजाने का भय है यहां तक कि मरजाने का भी भय है।

मद्यपान से उत्पन्न सिरके दर्दका दसवां भेद।

जानना चाहिये कि बिना किसी दूसरे द्रव्य के मिलाये केवल ऐसे मद्य को जो पुराना और थोड़ा गाढ़ा या जिसमें थोड़े परमाणु मिट्टी आदिक हों पीने से जो नशा उत्पन्न होता है वह सिर के दर्द का कारण होता है क्योंकि मद्य के पचाने पर जो उसका फोक आमाशय में रह जाता है उस से अधिक निकम्मे भाफ के परमाणु उठकर दिमाग की तरफ चढ़ते हैं और दिमाग में दर्द और भारापन उत्पन्न करते हैं इस लिये ज्ञानेन्द्रिया और मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य अर्थात् विचार ध्यान स्मरण शक्ति, आदि में उपद्रव उत्पन्न होते है और उसी को खुमार भी कहते हैं इस का चिन्ह यह है कि शराब पीने के उपरांत सिर दर्द उत्पन्न हो और जो आमाशय में फोक के साथ रतूबत भी हो तो सिर में भारापन अधिक मालूम होगा। विशेष करके जब सिर की प्रकृति भी सर्द और तर होगी और जो शराब के फोक के साथ पित्त भी मिला होगा तो वमन और उबकाई की अधिकता होगी॥ ऐसा देखा गया है कि एक मद्यप को उबकाई आई और उसने वमन की तो उस

तौ खिचाव सिर के पीछे मालूम होगा और जो दिमाग का पिछला भाग निर्बल है तौ आगे की तरफ खिचावट मालूम होगी बहुधा दिमाग की कष्टता और खिचावट और सिमटने से सक्त और मौत का भी भय होता है क्यों कि दिमाग शरीर का वह प्रधान अंग है जिसपर मनुष्य का जीवन निर्भर है उसमें यह तीनों दशाएं अंत दर्जे की निर्बलता उत्पन्न करदेती हैं जिसका फल सक्ता है या मौत है इसका (इलाज) यह है कि सिर को शक्ति पहुंचावे जो पट्ठों की जड है और जहां से सब शरीर में पट्ठे पहुचे हैं और उसकी शक्ति के लिये कुठ के तेल में जुन्देवेदस्तर मिलाकरके मलें और बकरी का गोश्त सुगंधित मसाला डालकर खिलावें इसके सिवाय और अच्छे २ स्वादिष्ट और सुगंधित और मुअतदिल भोजन खिलावें और सुघावें इस प्रकार सब भेदों में चिकित्सा का फल उस समय प्रगटहोगा जब इलाज करने के समय सम्भोग और सब स्वाभाविक कर्मों से अपनी रक्षा करता रहे नहींतौ लाभ के बदले अर्द्धाङ्ग इस्तरखा अर्थात् अवयवों का ढीला होजाना तशन्नुज अर्थात् बांइटे आना आदि रोगों के पैदा होजाने का भय है यहां तक कि मरजाने का भी भय है।

मद्यपान से उत्पन्न सिरके दर्दका दसवा भेद।

जानना चाहिये कि बिना किसी दूसरे द्रव्य के मिलाये केवल ऐसे मद्य को जो पुराना और थोडा गाढा या जिसमें थोडे परमाणु मिट्टी आदिक हों पीने से जो नशा उत्पन्न होता है वह सिर के दर्द का कारण होता है क्योंकि मद्य के पचाने पर जो उसका फोक आमाशय में रह जाता है उस से अधिक निकम्मे भाफ के परमाणु उठकर दिमाग की तरफ चढते हैं और दिमाग में दर्द और भारापन उत्पन्न करते हैं इस लिये ज्ञानेन्द्रियों और मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य अर्थात् विचार ध्यान स्मरण शक्ति, आदि में उपद्रव उत्पन्न होते है और उसी को खुमार भी कहते हैं इस का चिन्ह यह है कि शराब पीने के उपरांत सिर दर्द उत्पन्न हो और जो आमाशय में फोक के साथ रतूबत भी हो तो सिर में भारापन अधिक मालूम होगा। विशेष करके जब सिर की प्रकृति भी सर्द और तर होगी और जो शराब के फोक के साथ पित्त भी मिला होगा तो वमन और उबकाई की अधिकता होगी ॥ ऐसा देखा गया है कि एक मद्यप को उबकाई आई और उसने वमन की तो उस

घाट देवे इस से उत्तम कुछ नहीं है । विशेष करके जो इस में कुछ थोडासा नीबू का पानी और खजूर का पानी और थोडासा नमक डालले तो यह बेनशे की शराब बहुत उत्तम पथ्य है और सिर को शक्ति पहुंचाने के लिए रोग के आरम्भ में सिर्का और गुलरोगन और गुलाब मिलाकर सिर पर लगावें और रोग के अतमें बाबूना का तेल और सोसन का तेल गुनगुना करके मले और भाफ के परमाणुओं के खींचने के लिये प्रत्येक दशा में चाहे रोग का आरम्भ हो चाहे अत हो बाबूना और बनफ्शा और नमक औटा करके मफारा देते रहें और दोनों पैर खूब मले जाय ॥ हकीम राजीने कहा है कि एक आदमी के सिर म दर्द था कि उसके दोनों पैर एक रात दिन बराबर खूब मलेगये इससे सिरका दर्द जाता रहा और वह अच्छा होगया ।

ग्यारहवां भेद चोट और धमकवाले सर के दर्द का वर्णन

यह सिर का दर्द कई प्रकार से होता है एक यह कि सिर की खोपडी पर जो पर्दा मढा हुआ है उसमें चोट या धमक के लगने से किसी प्रकार का कष्ट पहुचगया हो और इसी कारण से सिर में दर्द होने लगा हो दूसरे यह चोट या धमक से भेजे में या किसी पर्दे में सूजन होगई है इस कारण से सिर में दर्द उत्पन्न होगया तीसरे यह कि भेजा या सिर की खोपडी के भीतर का कोई पर्दा या बाहरवाला पर्दा जो सिर की खोपडी पर लिपटा हुआ है फटगया हो इस कारण से सिर में दर्द है चौथ यह कि कोई सिर की हड्डी टूट गई हो जिसके कारण से सिर में दर्द मालूम होता है क्योंकि हड्डी टूट जाने के कारण से सिर के सब पर्दे तनजाते है और खिचजाते है उसी कारण से दर्द मालूम होता है पांचवें यह कि चोट और धमक के कारण से सिरका भेजा अपनी जगह से हिलगया हो उसके कारण से सिर में दर्द होने लगा हो बहुधा वह चोट और धमक जिससे सिरका भेजा हिलकर अपनी जगह से हट जाता है बिना मारे नहीं छोडती (इलाज) इसका यह है कि जो चोट और धमक सिर पर इस तरह पहुची है कि कोइ हड्डी या पर्दा झिल्ली या दूग फटा नहीं है और न किसी स्थान पर सूजजाने का भय है तो तत्काल फसद सेरू या फसद हफ्तअदाम की खोलें परन्तु पहिले इस बात को ध्यान देकर देखलें कि कोई कारण फसद के खोलन का वर्जित तो नहीं है और दर्द थामने के लिये और ठंडक तथा बल पहुचाने के लिये मूरद की टहनियां

घाट देवै इस से उत्तम कुछ नहीं है । विशेष करके जो इस में कुछ थोडासा नीबू का पानी और सजर का पानी और थोडासा नमक डालले तो यह बेनशे की शराब बहुत उत्तम पथ्य है और सिर को शक्ति पहुचाने के लिए रोग के आरम्भ में सिर्का और गुलरोगन और गुलाब मिलाकर सिर पर लगावें और रोग के अतमें बाबूना का तेल और सोसन का तेल गुनगुना करके मले और भाफ के परमाणुओं के खींचने के लिये प्रत्येक दशा में चाहे रोग का आरम्भ हो चाहे अत हो बाबूना और बनफ्शा और नमक औटा करके भफारा देते रहें और दोनों पैर खूब मले जाय ॥ हकीम राजीने कहा है कि एक आदमी के सिर म दर्द था कि उसके दोनों पैर एक रात दिन बराबर खूब मलेगये इससे सिरका दर्द जाता रहा और वह अच्छा होगया ।

ग्यारहवां भेद चोट और धमकवाले सर के दर्द का वर्णन

यह सिर का दर्द कई प्रकार से होता है एक यह कि सिर की खोपडी पर जो पर्दा मढा हुआ है उसमें चोट या धमक के लगने से किसी प्रकार का कष्ट पहुचगया हो और इसी कारण से सिर में दर्द होने लगा हो दूसरे यह चोट या धमक से भेजे में या किसी पर्दे में सूजन होगई है इस कारण से सिर में दर्द उत्पन्न होगया तीसरे यह कि भेजा या सिर की खोपडी क भीतर का कोई पर्दा या बाहरवाला पर्दा जो सिर की खोपडी पर लिपटा हुआ है फटगया हो इस कारण से सिर में दर्द है चौथे यह कि कोई सिर की हड्डी टूट गई हो जिसके कारण से सिर में दर्द मालूम होता है क्योंकि हड्डी टूट जाने के कारण से सिर के सब पर्दे तनजाते हैं और खिचजाते हैं उसी कारण से दर्द मालूम होता है पांचवें यह कि चोट और धमक के कारण से सिरका भेजा अपनी जगह से हिलगया हो उसके कारण से सिर में दर्द होने लगा हो बहुधा वह चोट और धमक जिससे सिरका भेजा हिलकर अपनी जगह से हट जाता है बिना मारे नहीं छोडती (इलाज) इसका यह है कि जो चोट और धमक सिर पर इस तरह पहुची है कि कोई हड्डी या पर्दा झिल्ली या रग फटा नहीं है और न किसी स्थान पर सूजजाने का भय है तो तत्काल फसद सरेरू या फसद हफ्तअदाम की खोलें परन्तु पहिले इस बात को ध्यान देकर देखलें कि कोई कारण फसद के खोलने का वर्जित तो नहीं है और दर्द थामने के लिये और ठंडक तथा बल पहुचाने के लिये मुरद की टहनियां

पहुचता है इसका इलाज वही है कि जिसका वर्णन कर दिया गया है और यदि ईश्वर ने चाहा तो हड्डी टूट जाने का इलाज किताव के अंत में वर्णन किया जायगा।

बारहवां भेद उस सिरदर्द के वर्णन में जिसका नाम बैजा या खोदा है।

यह ऐसा सिरदर्द है जो बडी कठिनता से जाता है और इसमें बड़ाभारी कष्ट होता है जब कि यह दर्द टोप की तरह सम्पूर्ण सिरके भागों को घेरे होता है जैसे सिरपर दर्द का एक टोप पहना दियागया है इसलिये इस सिरदर्द को बैजा और खोदा कहते है क्योंकि इसका अर्थ टोप का है इस सिरदर्द के प्रधान हेतु और कारण में हकीमों का मत विरुद्ध है। परंतु शेखबूअली सेना का इसदर्द के विषय में यह मत है कि यह ऐसा दर्द है जो सब सिर के भागों को घेर लेता है और एकसा बराबर होता रहता है। यह दर्द रुक रुक कर नहीं होता है बहुत दिनों तक लगातार रहता है और इसमें एक थोडे से कारणसे भी घडी २ में कष्ट बढता और उभरता है यहां तक कि उस दर्द वाले को शब्द, प्रकाश और लोगों का मेल झोल भी बुरा लगने लगता है किन्तु अकेला अंधेरे में आराम से सिर लटकाये हुये पडा रहना अच्छा मालूम हो और घडी २ उस को ऐसा मालूम होने लगता है कि कोई सिरको हथोडे से फोडता है या सिर अधिक कष्ट से खिंचा जाता हे और सिर फटापडता है इस सिरदर्द के छ कारण हैं एक यह कि गाढे और दृढ भाफ के परमाणु किसी प्रकार के निकम्मे दोष से उठकर दिमाग में उस झिल्ली के नीचे आकर बन्द होजाय जो सिर की खोपडी के ऊपर लिपटी हुई है या उन झिल्लियों के नीचे आकर बंद होजाय जो सिर की खोपडी के भीतर हैं और भेजा उनमें लिपटाहुआहै वे दोष जिन से भाफ के परमाणु उठकर दिमाग में बन्द होगये हैं यह चाहे सिरही में हों या और किसी अंग में हों। (दूसरे) यह कि चाहे निकम्मे और बुरे दोष उन्हीं जगहों में घुसकर बंद होजाय जिनका वर्णन होचुका है। (तीसरे) यह कि रुधिर से उत्पन्न हुई सरसामी सूजन मुख्य दिमाग में उत्पन्न होजाय। (चौथे) दिमाग में पित्त की सूजन होजाने के कारण से यह सिर दर्द उत्पन्न हो। (पांचवें) यह कि सर्दी से सिर के भीतर के भागों में सू-

× बैजा उस सिर के दर्द को कहते हैं जो सब शरीर में रहता है।

+ खोदा वह है जिस में ऐसा मालूम हो कि सिर पर दर्द का टोप कस दिया है।

पहुचता है इसका इलाज वही है कि जिसका वर्णन कर दिया गया है और यदि ईश्वर ने चाहा तो हड्डी टूट जाने का इलाज किताव के अंत में वर्णन किया जायगा।

बारहवां भेद उस सिरदर्द के वर्णन में जिसका नाम बैजा या ख़ोदा है।

यह ऐसा सिरदर्द है जो बडी कठिनता से जाता है और इसमें बड़ाभारी कष्ट होता है जब कि यह दर्द टोप की तरह सम्पूर्ण सिरके भागों को घेरे होता है जैसे सिरपर दर्द का एक टोप पहना दियागया है इसलिये इस सिरदर्द को बैजा और खोदा कहते है क्योंकि इसका अर्थ टोप का है इस सिरदर्द के प्रधान हेतु और कारण में हकीमों का मत विरुद्ध है। परंतु शेखबूअली सेना का इसदर्द के विषय में यह मत है कि यह ऐसा दर्द है जो सब सिर के भागों को घेर लेता है और एकसा बरावर होता रहता है। यह दर्द रुक रुक कर नहीं होता है बहुत दिनों तक लगातार रहता है और इसमें एक थोडे से कारणसे भी घडी २ में कष्ट बढता और उभरता है यहां तक कि उस दर्द वाले को शब्द, प्रकाश और लोगों का मेल झोल भी बुरा लगने लगता है किन्तु अकेला अंधेरे में आराम से सिर लटकाये हुये पडा रहना अच्छा मालूम हो और घडी २ उस को ऐसा मालूम होने लगता है कि कोई सिरको हथोडे से फोडता है या सिर अधिक कष्ट से खिंचा जाता है और सिर फटापडता है इस सिरदर्द के छ कारण हैं एक यह कि गाढे और दृढ भाफ के परमाणु किसी प्रकार के निकम्मे दोष से उठकर दिमाग में उस झिल्ली के नीचे आकर बन्द होजाय जो सिर की खोपडी के ऊपर लिपटी हुई है या उन झिल्लियों के नीचे आकर बंद होजांय जो सिर की खोपडी के भीतर हैं और भेजा उनमें लिपटाहोरहे वे दोष जिन से भाफ के परमाणु उठकर दिमाग में बन्द होगये हैं यह चाहे सिरही में हों या और किसी अंग में हों। (दूसरे) यह कि चाहे निकम्मे और बुरे दोष उन्हीं जगहों में घुसकर बंद होजांय जिनका वर्णन होचुका है। (तीसरे) यह कि रुधिर से उत्पन्न हुई सरसामी सूजन मुख्य दिमाग में उत्पन्न होजाय। (चौथे) दिमाग में पित्त की सूजन होजाने के कारण से यह सिर दर्द उत्पन्न हो। (पांचवें) यह कि सर्दी से सिर के भीतर के भागों में सू-

---

× बैजा उस सिर के दर्द को कहते हैं जो सब शरीर में रहता है।

+ खोदा वह है जिस में ऐसा मालूम हो कि सिर पर दर्द का टोप रख दिया है।

तेरहवां भेद बौहरानी सिर दर्द के बर्णन में ।

यह दर्द बौहरान के दिन उत्पन्न होजाता है पहले नहीं होता नहीं तो वह आर्जीमकार का सिर दर्द हो जायगा । यह बौहरानी सिर दर्द बहुधा ता उन्हीं रोगों के बौहरान में होता है जो गर्म और मलके सडजाने से उत्पन्न होते हैं इस का लक्षण यह है कि जो बौहरान के दिन नियत हैं जैसे पांचवां और सातवां और ग्याग्हवा दिन इनमें सिरका दर्द हो और कभी बौहरानी सिरदर्द का यह भी चिन्ह होता है कि पेशाव सफेद और पतला हो ।

(इलाज) इसका यह है कि मलके दूर करने के लिये प्रकृति की सहायता करे परन्तु यह बात अच्छी तरह देख लेवे कि मल किस ओर झुका हुआ है और प्रकृति का झुकाव किस ओर है जैसे जो सिर दर्द के साथ जी मिचलावे और सांस उलटी चलती हो और घूमती मालूम होती हो तो जानलेवे कि प्रकृति मल को वमन के द्वारा निकालना चाहती है और दोष भी वमन के द्वारा निकलने के लिये तयार है तो शिक्जबीन और गर्म पानी पिलाकर अथवा शिकजबीन मुलहटी और ककडी की जड और चुकदर के काढे में घोल कर पिला देवे और उसी समय वमन करादेवे और जो सिर दर्द के साथ पट में गुडगुडाहट और अफरा हो और पेट की खाल जलती हो और घबराहट हो तो जान लेना चाहिये कि मल दस्तों के द्वारा निकलने के लिये तयार है और प्रकृति भी मल को दस्तों के द्वारा निकालना चाहती है ऐसी दशामें नीचे की दवा से कोष्ठ को नर्म करे । जैसे आलूबुखारा, उन्नाव, लिहसौडे, बेदानेकी मुनक्का, इमली और शीरखिश्त भिगो कर और स्वच्छ करके पिलावे अथवा आलू बुखारे का शर्बत वा इमली का शर्बत वा दुगाग सिने हुए गुलाब का शर्बत ठंडे पानी में घोल के पिलावे ॥ और कोष्ठ के नर्म करने के लिये उन्नाव, लिहसौडा, आलू, चुकदरे के पत्ते, जौ का घाट, नीलोफर, बनफशा और आलू बालू इनको औटा कर और उसमें तुरंजबीन और तिली का तेल डाल कर अमल देदे । पिलाव नहीं तो सब से अच्छा हो क्योंकि जुल्लाब पिलाने की दशामें बौहरान के कष्ट और घबराहनी के सिवाय दवा की क्रिया और प्रभाव से कष्ट और बेचैनी अधिक होगी और दवा का अमल देने की दशामें दवा के असर का कष्ट और घबराहट बहुतही कम होगा क्योंकि अमल में तो दवा आंतों ही में से लौट आती है, तो वह अधिक चढती है और न अधिक असर करती है ॥ इन सब

तेरहवां भेद बौहरानी सिर दर्द के वर्णन में ।

यह दर्द बौहरान के दिन उत्पन्न होजाता है पहले नहीं होता नहीं तो वह आर्जीमकार का सिर दर्द हो जायगा । यह बौहरानी सिर दर्द बहुधा तो उन्हीं रोगों के बौहरान में होता है जो गर्म और मलके सड़जाने से उत्पन्न होते हैं इस का लक्षण यह है कि जो बौहरान के दिन नियत हैं जैसे पांचवां और सातवां और ग्यारहवां दिन इनमें सिरका दर्द हो और कभी बौहरानी सिरदर्द का यह भी चिन्ह होता है कि पेशाब सफेद और पतला हो ।

(इलाज) इसका यह है कि मलके दूर करने के लिये प्रकृति की सहायता करे परन्तु यह बात अच्छी तरह देख लेवे कि मल किस ओर झुका हुआ है और प्रकृति का झुकाव किस ओर है जैसे जो सिर दर्द के साथ जी मिचलावे और सांस उलटी चलती हो और घुमती मालूम होती हो तो जानलेवे कि प्रकृति मल को वमन के द्वारा निकालना चाहती है और दोष भी वमन के द्वारा निकलने के लिये तयार है तो शिकजबीन और गर्म पानी पिलाकर अथवा शिकजबीन मुलहटी और ककडी की जड और चुकदर के काढे में घोल कर पिला देवे और उसी समय वमन करादेवे और जो सिर दर्द के साथ पट में गुड़गुड़ाहट और अफरा हो और पेट की खाल जलती हो और घबराहट हो तो जान लेना चाहिये कि मल दस्तों के द्वारा निकलने के लिये तयार है और प्रकृति भी मल को दस्तों के द्वारा निकालना चाहती है ऐसी दशामें नीचे की दवा से कोष्ठ को नर्म करे । जैसे आलूबुखारा, उन्नाव, लिहसोड़े, बेदानेकी मुनक्का, इमली और शीरेखिश्त भिगो कर और स्वच्छ करके पिलावे अथवा आलू बुखारे का शर्बत वा इमली का शर्बत वा तुरंज लिये हुए गुलाब का शर्बत ठंडे पानी में घोल के पिलावे ॥ और कोष्ठ के नर्म करने के लिये उन्नाब, लिहसोड़ा, आलू, चुकदरे के पत्ते, जौ का घाट, नीलोफर, बनफशा और आलू बालू इनको औटा कर और उसमें तुरंजबीन और तिली का तेल डाल कर अमल देदे । पिलाव नहीं तो सब से अच्छा हो क्योंकि जुल्लाब पिलाने की दशामें बौहरान के कष्ट और घबरा नी के सिवाय दवा की क्रिया और प्रभाव से कष्ट और बेचैनी अधिक होगी और दवा का अमल देने की दशामें दवा के असर का कष्ट और घबराहट बहुतही कम होगा क्योंकि अमल में तो दवा आंतों ही में से लौट आती है, तो वह अधिक चढती है और न अधिक असर करती है ॥ इन सब

तेरहवां भेद बौहरानी सिर दर्द के वर्णन में।

यह दर्द बौहरान के दिन उत्पन्न होजाता है पहले नहीं होता नहीं तो वह आर्जीप्रकार का सिर दर्द हो जायगा। यह बौहरानी सिर दर्द बहुधा तो उन्हीं रोगों के बौहरान में होता है जो गर्म और मलके सडजाने से उत्पन्न होते हैं इस का लक्षण यह है कि जो बौहरान के दिन नियत हैं जैसे पांचवां और सातवा और ग्यारहवां दिन इनमें सिरका दर्द हो और कभी बौहरानी सिरदर्द का यह भी चिन्ह होता है कि पेशाब सफेद और पतला हो।

(इलाज) इसका यह है कि मलके दूर करने के लिये प्रकृति की सहायता करे परन्तु यह बात अच्छी तरह देख लेवे कि मल किस ओर झुका हुआ है और प्रकृति का झुकाव किस ओर है जैसे जो सिर दर्द के साथ जी मिचलावे और सांस उलटी चलती हो और घूमती मालूम होती हो तो जानलेवे कि प्रकृति मल को वमन के द्वारा निकालना चाहती है और दोष भी वमन के द्वारा निकलने के लिये तयार है तो शिकञ्जबीन और गर्म पानी पिलाकर अथवा शिकञ्जबीन मुलहटी और ककडी की जड और चुकन्दर के काढे में घोल कर पिला देवे और उसी समय वमन करादेवे और जो सिर दर्द के साथ पेट में गुडगुडाहट और अफरा हो और पेट की खाल जलती हो और घबराहट हो तो जान लेना चाहिये कि मल दस्त के द्वारा निकलने के लिये तयार है और प्रकृति भी मल को दस्तों के द्वारा निकालना चाहती है ऐसी दशामें नीचे की दवा से कोष्ठ को नर्म करे। जैसे आलूबुखारा, उन्नाव, लिहसौड़, बेदानेकी मुनक्का, इमली और शीरखिश्त भिगो कर और स्वच्छ करके पिलावें अथवा आलू बुखारे का शर्बत वा इमली का शर्बत वा [illegible] हुए गुलाब का शर्बत ठंडे पानी में घोल के [illegible] क्योंकि इन वस्तुओं से नर्म करने के लिये उन्नाव, लिहसौडा, [illegible] गाढ़े, दृढ और भारी होते हैं और [illegible] कारण से उसको भी भारी और बोझल कर देते हैं और कभी ऐसा भी होता है कि इन वस्तुओं के भाफ के परमाणु दिमाग में पहुंचकर उसको दबाते हैं और इसके कारण से दिमाग में एठन उत्पन्न होती है और सिरकी वह झिल्ली सिमटने लगती है जो भेजे के ऊपर लिपटी है और इस दशा में बडे भय का संदेह है।

पन्द्रहवां भेद सिर दर्द सुद्दी के वर्णन में

यह दर्द सिर के भीतर दोषों के इकठ्ठे होजाने के कारण उनमें गांठ

तेरहवां भेद बौहरानी सिर दर्द के वर्णन में।

यह दर्द बौहरान के दिन उत्पन्न होजाता है पहले नहीं होता नहीं तो वह आर्जीमिकार का सिर दर्द हो जायगा। यह बौहरानी सिर दर्द बहुधा तो उन्हीं रोगों के बौहरान में होता है जो गर्म और मलके सड़जाने से उत्पन्न होते हैं इस का लक्षण यह है कि जो बौहरान के दिन नियत हैं जैसे पांचवां और सातवां और ग्यारहवां दिन इनमें सिरका दर्द हो और कभी बौहरानी सिरदर्द का यह भी चिन्ह होता है कि पेशाब सफेद और पतला हो।

(इलाज) इसका यह है कि मलके दूर करने के लिये प्रकृति की सहायता करे परन्तु यह बात अच्छी तरह देख लेवे कि मल किस ओर झुका हुआ है और प्रकृति का झुकाव किस ओर है जैसे जो सिर दर्द के साथ जी मिचलावे और सांस उलटी चलती हो और घूमती मालूम होती हो तो जानलेवे कि प्रकृति मल को वमन के द्वारा निकालना चाहती है और दोष भी वमन के द्वारा निकलने के लिये तयार है तो शिकञ्जबीन और गर्म पानी पिलाकर अथवा शिकञ्जबीन मुलहटी और ककड़ी की जड़ और चुकन्दर के काढे में घोल कर पिला देवे और उसी समय वमन करादेवे और जो सिर दर्द के साथ पेट में गुड़गुड़ाहट और अफरा हो और पेट की खाल जलती हो और घबराहट हो तो जान लेना चाहिये कि मल दस्तों के द्वारा निकलने के लिये तयार है और प्रकृति भी मल को दस्तों के द्वारा निकालना चाहती है ऐसी दशामें नीचे की दवा से कोष्ठ को नर्म करे। जैसे आलूबुखारा, उन्नाव, लिहसौढ़े, बेदानेकी मुनक्का, इमली और शीरखिश्त भिगो कर और स्वच्छ करके पिलावे अथवा आलू बुखारे का शर्बत वा इमली का शर्बत वा [illegible] हुए गुलाब का शर्बत ठंडे पानी में घोल के [illegible] क्योंकि इन वस्तुओं [illegible] नर्म करने के लिये उन्नाव, लिहसौढ़ा, [illegible] गाढ़े, दृढ़ और भारी होते हैं और [illegible] दिमाग में पहुंच [illegible] कारण से उसको भी भारी और बोझल कर देते हैं और कभी ऐसा भी होता है कि इन वस्तुओं के भाफ के परमाणु दिमाग में पहुंचकर उसको दबाते हैं और इसके कारण से दिमाग में एठन उत्पन्न होती है और सिरकी वह झिल्ली सिमटने लगती है जो भेजे के ऊपर लिपटी है और इस दशा में बड़े भय का संदेह है।

पन्द्रहवां भेद सिर दर्द सुद्दी के वर्णन में

यह दर्द सिर के भीतर दोषों के इकट्ठे होजाने के कारण उनमें गाढ़

और दूसरी दवाऐं कि जो कीड़ों के मारने में मुख्य हैं जैसे शफ़्तालू के पत्र का पानी और शहतूत की जड़ का पानी और अफ़सतीन और दिरमना का पका हुआ पानी नाक में डाले और फिर दिमाग की सफाई करें इस के पीछे जो नाक में दुर्गन्ध रह जाय उस की दुरुस्ती उन वस्तुओं से करें जो नाक की दुर्गन्ध के वर्णन में कही जायगी।

सत्रहवां भेद सुदायतज़ौज़ई के वर्णन में।

यह दर्द दिमाग की हर्कत अर्थात् सचालना से पैदा होता है क्योंकि इस दिमाग के हिलने के दो कारण है एक सख्त हिलाना या बहुत मजा या खेल जो स्त्री के आलिंगनादि करने से उत्पन्न हो क्योंकि अधिक मजा दिमाग को हिलादेता है दूसरे कोई कष्ट सिर को ऐसा पहुंचे जो उसको हिलादे जैसे चोट और धमक और टक्कर॥ और दिमाग का हिलजाना वह है कि उसके जोड़ो में अंतर आजाय और किसी २ जोड़ की दशा बदल जाय और दिमाग एक तर्फ से खिंचजाय और दूसरी तरफ ढीला होजाय, या कभी हिलने की अधिकता से कोई पर्दा फट जाय और दिमाग का कोई भाग बिखर जाय इस दशा में रोगी के अच्छे होने की आशा नहीं रहती है। इस का लक्षण यह है कि दिमाग के हिलने के ऊपर कहे हुए हेतुओं का पाया जाना जैसे खेल कूद और स्त्री के साथ आलिङ्गनादि करना और चोट आदि का लगाना और यह कि उन पट्ठों और रगों में कि जो दिमाग के ओरपास है खिंचावट आजाय और एक ऐसी दशा होजाय कि आंखों के सामने अंधेरा सा छाजाय और रोगी भौंचक्कासा रहजाय और यह भी सम्भव है कि सक्ता होजाय और कभी ऐसा होता है कि सब प्रकार की गंध सूंघने में एकसी ही मालूम हो। (इलाज) मल को सिर से नीचे की ओर फेरने के लिये बासलीक या सरेरू की फस्त खोलें और कोष्ठ को नर्म करे और ज्वर के समय मुलायम दवाओं के अमल से या अमलतास और कासनी का शीरा पिलाकर हुकना करे और जिस समय ज्वर न हो तब तीक्ष्ण दवाओं के हुकने से और कोकाया की गोली देकर कोष्ठ को नर्म करे पीछे प्रकृति को अपनी दशा पर लावे और सिर को बल पहुंचावे और जो ज्वर के साथ सूजन भी हो तो चंदन सुपारी और गिले अरमनी, जरावन्द, चाही, जौका आटा और बाकले के आटे का लेप करें और ज्वर न हो और सिर में सूजन भी न हो तो गुलनार और अनार की छाल और गुलाब के फूल और आस

और दूसरी दवाऐ कि जो कीड़ों के मारने में मुख्य हैं जैसे शफ़तालू के पत्त का पानी और शहतूत की जड़ का पानी और अफ़सतीन और दिरमना का पका हुआ पानी नाक में डाले और फिर दिमाग की सफाई करें इस के पीछे जो नाक में दुर्गन्ध रह जाय उस की दुरुस्ती उन वस्तुओं से करें जो नाक की दुर्गन्ध के वर्णन में कही जायगी।

सत्रहवां भेद सुदायतज़ौज़ई के वर्णन में।

यह दर्द दिमाग की हर्कत अर्थात् सचालना से पैदा होता है क्योंकि इस दिमाग के हिलने के दो कारण है एक सख्त हिलाना या बहुत मजा या खेल जो स्त्री के आलिंगनादि करने से उत्पन्न हो क्योंकि अधिक मजा दिमाग को हिलादेता है दूसरे कोई कष्ट सिर को ऐसा पहुचे जो उसको हिलादे जैसे चोट और धमक और टक्कर॥ और दिमाग का हिलजाना यह है कि उसके जोड़ो में अतर आजाय और किसी २ जोड़ की दशा बदल जाय और दिमाग एक तर्फ से खिचजाय और दूसरी तरफ ढीला होजाय, या कभी हिलने की अधिकता से कोई पर्दा फट जाय और दिमाग का कोई भाग बिखर जाय इस दशा में रोगी के अच्छे होने की आशा नहीं रहती है। इस का लक्षण यह है कि दिमाग के हिलने के ऊपर कहे हुए हेतुओं का पाया जाना जैसे खेल कूद और स्त्री के साथ आलिङ्गनादि करना और चोट आदि का लगाना और यह कि उन पट्ठों और रगों में कि जो दिमाग के और पास है खिंचावट आजाय और एक ऐसी दशा होजाय कि आंखों के सामने अंधेरा सा छाजाय और रोगी भौंचक्कासा रहजाय और यह भी सम्भव है कि सक्ता होजाय और कभी ऐसा होता है कि सब प्रकार की गंध सूंघने में एकसी ही मालूम हो। (इलाज) मल को सिर से नीचे की ओर फेरने के लिये बासलीक या सरेरू की फस्त खोलें और कोष्ठ को नर्म करे और ज्वर के समय मुलायम दवाओं के अमल से या अमलतास और कासनी का शीरा पिला कर हुकना करे और जिस समय ज्वर न हो तब तीक्ष्ण दवाओं के हुकने से और कोकाया की गोली देकर कोष्ठ को नर्म करे पीछे प्रकृति को अपनी दशा पर लावे और सिर को बल पहुचावे और जो ज्वर के साथ सूजन भी हो तो चंदन सुपारी और गिले अरमनी, जरावन्द, काही, जौका आटा और बाकले के आटे का लेप करें और ज्वर न हो और सिर में सूजन भी न हो तो गुलनार और अनार की छाल और गुलाब के फूल और आस

और दूसरी दवाऐं कि जो कीडों के मारने में मुख्य हैं जैसे शफ्तालू के पत्त का पानी और शहतूत की जड का पानी और अफसतीन और दिरमना का पका हुआ पानी नाक में डालै और फिर दिमाग की सफाई करें इस के पीछे जो नाक में दुर्गन्ध रह जाय उस की दुरुस्ती उन वस्तुओं से करे जो नाक की दुर्गन्ध के वर्णन में कही जायगी ।

सत्रहवां भेद सुदायतज़ौज़ई के वर्णन में ।

यह दर्द दिमाग की हर्कत अर्थात् सचालना से पैदा होता है क्योंकि इस दिमाग के हिलने के दो कारण हैं एक सख्त हिलाना या वहुत मजा या सख जो स्त्री के आलिंगनादि करने से उत्पन्न हो क्योंकि अधिक मजा दिमाग को हिलादेता है दूसरे कोई कष्ट सिर का ऐसा पहुचे जो उसको हिलादे जैस चोट और धमक और टक्कर ॥ और दिमाग का हिलजाना वह है कि उसके जोडो में अतर आजाय और किसी २ जोड की दशा बदल जाय और दि माग एक तर्फ से खिंचजाय और दूसरी तरफ ढीला होजाय, या कभी हि [illegible] जाय और दिमाग का कोई भाग विस [illegible] नहीं रहती है । इस का [illegible] हेतुओं का पाया जा- [illegible] और चाट आदि [illegible] दिमाग के आर पास [illegible] अधंग [illegible] सत्ता [illegible]

तदबीर लाभदी [illegible] कानों के पीछे हैं उनमें से जो कुछ [illegible] काट डालें क्योंकि भाफ के परमाणु के चढने का [illegible] के पीछे उसे इसलिये दग्ध कर देवे कि जिससे रुधिर [illegible] य क्योंकि शिरियान का घाव कठिनता से मिटता है जान [illegible] ानके नीचे की रगों के काटडालने से आगे को सतान नहीं [illegible] वीर्य के उत्पन्न होने के वर्णन में इसका वर्णन किया जायगा ।

दूसरा प्रकरण ।

सरसाम का वर्णन ।

इसका यह अर्थ है कि दिमाग या खोपडी के भीतर के दोनों पर्दों में [illegible] उत्पन्न होजावे और उन दोनों पर्दों में से एक का नाम [illegible] पर्द का नाम लय्यन है अब चाहे सूजन एक पर्दे में हो चाहे [illegible] हो या किसी २ जगह दोनों में या एक में किसी २ जगह [illegible] पर्दों में सूजन उस जगह होती है कि जहां दिमाग [illegible] [illegible] है या बीच की तरफ को झुका हुआ है और [illegible] [illegible] परन्तु किसी किसी ने सरसा [illegible]

और दूसरी दवाऐं कि जो कीडों के मारने में मुख्य हैं जैसे शफ्तालू के पत्त का पानी और शहतूत की जड का पानी और अफसतीन और दिरमना का पका हुआ पानी नाक में डाले और फिर दिमाग की सफाई करें इस के पीछे जो नाक में दुर्गन्ध रह जाय उस की दुरुस्ती उन बस्तुओं से करे जो नाक की दुर्गन्ध के वर्णन में कही जायगी ।

सत्रहवां भेद सुदायतज़ौज़ई के वर्णन में ।

यह दर्द दिमाग की हर्कत अर्थात् सचालना से पैदा होता है क्योंकि इस दिमाग के हिलने के दो कारण हैं एक सख्त हिलाना या बहुत मजा या सख जो स्त्री के आलिंगनादि करने से उत्पन्न हो क्योंकि अधिक मजा दिमाग को हिलादेता है दूसरे कोई कष्ट सिर का ऐसा पहुचे जो उसको हिलादे जैसे चोट और धमक और टक्कर ॥ और दिमाग का हिलजाना वह है कि उसके जोडो में अतर आजाय और किसी २ जोड की दशा बदल जाय और दिमाग एक तर्फ से खिंचजाय और दूसरी तरफ ढीला होजाय, या कभी हिलने की अधिकता से कोई [illegible] जाय और दिमाग का कोई भाग विल[illegible] [illegible] नहीं रहती है । इस का [illegible] रेतुओं का पाया जा- [illegible] और चाट आदि [illegible] दिमाग के आस पास [illegible] अंधेग [illegible] सत्ता [illegible]

तदबीर लाभदी [illegible] जो कुछ [illegible]
कानों के पीछे हैं उनमें से जो [illegible] के परमाणु के चढने को [illegible] रुधिर
फाट डालें क्योंकि भाफ के परमाणु के चढने को देवे कि जिससे
के पीछे उसे इसलिये दग्ध कर देवे कि जिससे रुधिर [illegible] कठिनता से मिटता है जान[illegible]
प क्योंकि शिरियान का घाव कठिनता से मिटता है सन्तान नहीं
ानके नीचे की रगों के फाटडालने से आगे को सन्तान नहीं
ीयें के उत्पन्न होने के वर्णन में इसका वर्णन किया जायगा ।

दूसरा प्रकरण ।

सरसाम का वर्णन ।

इसका यह अर्थ है कि दिमाग या खोपडी के भीतर के दोनों पर्दों में [illegible] लिए [illegible]
उत्पन्न होजावे और उन दोनों पर्दों में से एक का नाम [illegible] के [illegible]
पद का नाम [illegible] है और चाहे सूजन एक पर्दे में हो चाहे दोनों [illegible] [illegible] इस
हो या किसी २ जगह दोनों में या एक में किसी २ जगह पर्दों के [illegible] स किया
पर्दों में सूजन उस जगह होती है कि जहां दिमाग [illegible] है
हुआ है या बीच की तरफ को झुका हुआ है और [illegible]
[illegible] गर्म हो या ठंडी परन्तु [illegible] सरसाम [illegible]

कठोर और मन्शारी (आरी कीसी) हो और खास खोपडी में दर्द मालूम हो और जो झिल्ली कि जिस का नाम लय्यन है और भेजे से लगी हुई है सूज जाय तो उसका चिन्ह यह है कि नाडी कठोर और लहर दार हो और दर्द झिल्ली की सूजन की दशा में बहुत होता है। विशेष करके नर्म झिल्ली की सूजन में और जब झिल्लियां और दिमाग दोनों सूज जांय तो बीमार नहीं बच सका क्योंकि कष्ट सब सिर में होता है। और दिमाग के अगले भाग के सूज जाने का यह चिन्ह है कि बीमार आंखें खुली रक्खे और आंखों के आगे इस तरह हाथ हिलावे जैसे मक्खियों को हटाता है या पकडता है और कपडे और दीवार पर हाथ मले और जो दिमाग के बीच में सूजन हो तो उसका चिन्ह यह है कि बीमार बेहोशी की ऐसी बातें बहुत करे और कभी बिना इच्छा ही थोडा २ पेशाब निकलजाय और ज्ञान न रहे और सिर के पिछली तरफ सूजन होजाने का यह (चिन्ह) है कि जो कहे सो भूल जाय जैसे पेशाब करने के लिये पेशाब का बर्तन मांगे और जब वह साम्हने आवे तब भूल जाय और जब कि दिमाग के सब भागों में सूजन हो तब ये सब चिन्ह इकट्ठे मालूम हों॥ क्योंकि दोष और उत्पन्न होने के स्थानान्तर के कारण सरसाम के भिन्न भिन्न नाम हैं इसलिये प्रत्येक प्रकार के सरसाम का वर्णन भिन्न भिन्न किया जाता है॥

पहला भेद करानीतुस सरसाम का वर्णन।

यह शब्द यूनानी है इसका अर्थ व्यर्थ बकना है। इस रोग का बेहूदा बकना अर्थात् व्यर्थ प्रलाप विशेष करके होता है इसलिये इस रोग का यह नाम रक्खा गया खूनी सरसाम का यह (चिन्ह) है कि ज्वर हमेशा आवे और सिरमें बोझ और घनघनाहट मालूम हो और आंखों में और मुह पर लाली हो और बहकी २ बातें कम करे जीभ में खुरखुरापन होजाय और नाडी बडी हो और आंसुओं का बहना बहुत बुरा चिन्ह है मुख्यकर एक आंख से (इलाज) आरंभ में तीन दिन तक सरेरू की और दूसरी रगों की आवश्यकतानुसार फसद खोलें और फसदमें खून बीमार की शक्ति के अनुसार निकालें और पिंडलियों पर पछने लगावें और सन्निपत को मेवाओं के काढे से शर्बत आलू और शर्बत इमली से ... इस काढ़ा का शर्बत में तुरंजबीन मिलाले तो सब से ... लिये हम ... हुकना जिसमें अमलतास का गूदा यो...

कठोर और मन्शारी (आरी कीसी) हो और खास खोपडी में दर्द मालूम हो और जो झिल्ली कि जिस का नाम लय्यन है और भेजे से लगी हुई है सूज जाय तो उसका चिन्ह यह है कि नाडी कठोर और लहर दार हो और दर्द झिल्ली की सूजन की दशा में बहुत होता है । विशेष करके नर्म झिल्ली की सूजन में और जब झिल्लियां और दिमाग दोनों सूज जांय तो बीमार नहीं बच सक्ता क्योंकि कष्ट सब सिर में होता है । और दिमाग के अगले भाग के सूज जाने का यह चिन्ह है कि बीमार आंखें खुली रक्खे और आंखों के आगे इस तरह हाथ हिलावे जैसे मक्खियों को हटाता है या पकडता है और कपडे और दीवार पर हाथ मले और जो दिमाग के बीच में सूजन हो तो उसका चिन्ह यह है कि बीमार बेहोशी की ऐसी बातें बहुत करे और कभी बिना इच्छा ही थोडा २ पेशाब निकलजाय और ज्ञान न रहे और सिर के पिछली तरफ सूजन होजाने का यह (चिन्ह) है कि जो कहे सो भूल जाय जैसे पेशाब करने के लिये पेशाब का बर्तन मांगे और जब वह साम्हने आवे तब भूल जाय और जब कि दिमाग के सब भागों में सूजन हो तब ये सब चिन्ह इकट्ठे मालूम हों ॥ क्योंकि दोष और उत्पन्न होने के स्थानान्तर के कारण सरसाम के भिन्न भिन्न नाम हैं इसलिये प्रत्येक प्रकार के सरसाम का वर्णन भिन्न भिन्न किया जाता है ॥

पहला भेद करानीतुस सरसाम का वर्णन ।

यह शब्द यूनानी है इसका अर्थ व्यर्थ बकना है । इस रोग का बेहूदा बकना अर्थात् व्यर्थ प्रलाप विशेष करके होता है इसलिये इस रोग का यह नाम रक्खा गया खूनी सरसाम का यह (चिन्ह) है कि ज्वर हमेशा आवे और सिरमें बोझ और घनघनाहट मालूम हो और आंखों में और मुह पर लाली हो और बहकी २ बातें कम कर करे जीभ में खुरखुरापन होजाय और नाडी बडी हो और आंसुओं का बहना बहुत बुरा चिन्ह है मुख्यकर एक आंख से (इलाज) आरम्भ में तीन दिन तक सरेरू की और दूसरी रगों की आवश्यकतानुसार फसद खोलें और फसदमें खून बीमार की शक्ति के अनुसार निकालें और पिंडलियों पर पछने लगावें और सन्निपत को मेवाओं के काढे से शर्बत आलू और शर्बत इमली से [illegible] इस काढ़ या शर्बत में तुरंजबीन मिलाले तो सब से [illegible] लिये हम

कर बिना औटाये पीकर कोष्ट को गर्म करै जिससे मल फूल कर निकलने के योग्य हो जाय और नर्म जुलाव लाभदायक है। तरी और सर्दी पहुचान के लिये खट्टे मीठे अनार का पानी और गुलाब और कद्दू का पानी और तर बूंज का पानी पीवें सिर्का और गुलरोगन और कद्दू के छिलके और ककड़ी, मकोय के दाने, वेद सिर पर रक्खै (अथवा) बनफशा का तेल, कद्दू और नीलोफर को बर्फ में ठंडा करके सिर पर मलते रहें। (अथवा) बन फशा, कद्दू, नीलोफर, और खितमी इन को औटाकर इस का पानी सिर पर गिरावे ॥ और जो रोगी को बिल्कुल नींद न आती हो तो काहू के बीज और खशखश के छिलके और थोडासा बाबूना तरेडे की दवाओं में मिलालेवें अथवा शर्बत खशखाश पीने की दवा में मिलालेवें प्रत्येक दशा में उक्त वस्तुओं से सर्दी और तरी पहुचाने का बहुत ध्यान रक्खै और खाने पीने में खामी के होने न होने और प्यास की अधिकता का ध्यान अवश्य रक्खै और इस प्रकार के सरसाम मे सर्दी और तरी की अधिकता का भय न करना चाहिये परन्तु यह बात रुधिर के सरसाम से विरुद्ध है जिसम सर्दी और तरी अधिक न पहुचावे ॥ (सूचना) तरेडे में बाबूना, खशखाश के दुरुस्त करने के लिये है किसी लाभ के लिये नहीं है इसी कारण से इसे काम डालते हैं जिससे यह हानि न पहुचावे और खशखाश को दुरुस्त कर देवे क्योंकि बाबूना गर्म है और गर्म तरेडे मे मिलाया जाता है जैसा कि ऊपर कई जगह मालूम होचुका है ॥

मेवों के पानी निकालने की रीति।

यह है कि अनार के दाने मलकर पानी निकालले और ककडी को कूट कर निचोडलें और तर्बूज को चाकू से काट कर और उस की नोक स उस के भीतर कोंचा देकर निचोडें और कद्दू के पानी के निकालने की यह रीति है कि मीठा नर्म कद्दू लेकर जौके आटे मे लपेट कर चूल्हे या भट्टी म रख देवे जब आटा पक जाय तो निकाललेवे और साफ करके निचोडलेवे। कोई२ केवल आटे के खमीर पर मिट्टी भी लेस देते हैं परन्तु जौका आटा सब से उत्तम है खेसांदे का यह अर्थ है कि दवाओं को पानी में भिगावें और उस पानी को बिना औटाये पी लेवे।

तीसरा भेद सौदावाले सरसाम के वर्णन में

इस का चिन्ह यह है कि बकना और गिर गिड़ाना, डरना, रोना, [illegible]

कर बिना औटाये पीकर कोष्ट को गर्म करै जिससे मल फूल कर निकलने के योग्य हो जाय और नर्म जुलाव लाभदायक है । तरी और सर्दी पहुचाने के लिये खट्टे मीठे अनार का पानी और गुलाब और कद्दू का पानी और तर्बूज़ का पानी पीवें सिर्का और गुलरोगन और कद्दू के छिलके और ककड़ी मकोय के दाने, बेद सिर पर रक्खै (अथवा) बनफ़शा का तेल, कद्दू और नीलोफर को बर्फ में ठंढा करके सिर पर मलते रहै । (अथवा) बनफ़शा, कद्दू, नीलोफर, और खितमी इन को औटाकर इस का पानी सिर पर गिरावै ॥ और जो रोगी को बिल्कुल नींद न आती हो तो फाडू के बीज और खशखश के छिलके और थोडासा बाबूना तरेडे की दवाओं में मिलालेवें अथवा शर्बत खशखाश पीने की दवा में मिलालेवें प्रत्येक दशा में उक्त वस्तुओं से सर्दी और तरी पहुचाने का बहुत ध्यान रक्खे और खाने पीने में खामी के होने न होने और प्यास की अधिकता का ध्यान अवश्य रक्खै और इस प्रकार के सरसाम मे सर्दी और तरी की अधिकता का भय न करना चाहिये परन्तु यह बात रुधिर के सरसाम से विरुद्ध है जिसम सर्दी और तरी अधिक न पहुचावे ॥ (सूचना) तरेडे में बाबूना, खशखाश के दुरुस्त करने के लिये है किसी लाभ के लिये नहीं है इसी कारण से इसे काम डालते हैं जिससे वह हानि न पहुचावे और खशखाश को दुरुस्त कर देवे क्योंकि बाबूना गर्म है और गर्म तरेडे मे मिलाया जाता है जैसा कि ऊपर कई जगह मालूम होचुका है ॥

मेवों के पानी निकालने की रीति ।

यह है कि अनार के दाने मलकर पानी निकालले और ककडी को कूट कर निचोडलें और तर्बूज़ को चाकू से फाड कर और उस की नोंक से उस के भीतर कोंचा देकर निचोडें और कद्दू के पानी के निकालने की यह रीति है कि मीठा नर्म कद्दू लेकर जौके आटे मे लपेट कर चूल्हे या भट्टी मे रख देवे जब आटा पक जाय तो निकाललेवे और साफ करके निचोड लेवे । कोई केवल आटे के खमीर पर मिट्टी भी स्दाग देते हैं परन्तु जौका आटा सब से उत्तम है ऐसादे का यह अर्थ है कि दवाओं को पानी में भिगावें और उस पानी को बिना औटाए पी लेवें ।

तीसरा भेद सौदावाले सरसाम के वर्णन में

इस का चिन्ह यह है कि बकना और गिरना गिडाना, डरना, रोना,

नर्म हुकने की विधि ।

अकलीमून, छोटीहरड, बडीहरड, सनाय, शाहतरा, बादरंजबोया, गाव-
ज़ुबाँ, मुनक्कावेदाना, बिस्फायज, जौ मकशर (विना छिलके) इन सबको पका कर छान लेवे, इसमें लालखांड, अमलतास का पानी, मीठे बादाम का तेल मिलाकर हुकना करे ।

बहुधा हकीम लोग कहते हैं कि किसी हुकने में चाहे वह उष्णता हो चाहे हरारत हो हरड न मिलानी चाहिये, परन्तु हकीम जैसे शेखबूअली सेना, हकीम शरीफ खाँ आदि यह कहते हैं कि तीसरे चौथे दिन हुकने में कुछ हरडों के उस समय डाल देने में ऐसे हानि नहीं है जब उसकी बडी भारी आवश्यकता समझी जावे । क्योंकि हरड निचोड करती है, इससे पतला मल तो निकलजाता है परन्तु गाढा और भी कठोर होजाता है उसकी हानि तो प्रगटही है ।

चौथाभेद कफके सरसाम का वर्णन ।

इस सरसाम को अर्बी भाषा में लीसरगुस कहते हैं इसका नाम इसके हेतु पर रक्खागया है इस रोग में रोगी कही हुई बातको भूलजाता है और रोग का दोष दिमाग के भागों में स्थित रहता है और कभी भेजे में भी इस तरह स्थित होजाता है कि सब मल वहां चलाजाता है परन्तु झिल्लियों में कभी नहीं घुसता जैसा कि ऊपर लिखचुके हैं इसका लक्षण यह है कि सदा हलका ज्वर बना रहता है ज्ञान इन्द्रियों में भारीपन और जिह्वामें सफेदी आजाती है जम्भाई बहुत आती हैं बुद्धि में अन्तर पडजाता है कठिनता से बोलता है पलकों को खोलने मूंदने और बातें करने से थकावट होती है कठिनता से उत्तर देता है क्षण क्षण में जगता सोता है परन्तु तन्द्रा अधिक रहती है ।

कफ के सरसाम की चिकित्सा ।

सौंफकी जड,अजमोद के बीज, अनीसून, मुनक्का वेदाना, अजखर की-जड, और उस्त खदूस, इन को पानी में औटाकर शहत का गुलकंद और शहत की सिकंजबीन डाल कर देवे और पकने के पीछे गोली, उचित हुकना, सयाफ़ (वर्ती) से देह को स्वच्छ करे और सिरका, गुलाब, और रोगनगुल इनका आरम्भ में दो दिन तक सिरपै लेप करे और दो दिन पीछे ऊपरवाले लेप में थोडासा जुन्दवेदस्तर और मिला देवे जिस समय रोग परिणाम को पहुंचे उस समय मुहल्लिल (नष्ट करनेवाली) वस्तु को समय पकका गंधने वाली न लगावे जैसे जुन्दवेदस्तर। (अथवा) मरजंजोश,

नर्म हुकने की विधि ।

अकलीमून, छोटीहरड़, बड़ीहरड़, सनाय, शाहतरा, बादरंजबोया, गावजुबां, मुनक्कावेदाना, बिस्फायज, जौ मकशर (बिना छिलके) इन सबको पकाकर छान लेवे, इसमें लालखांड, अमलतास का पानी, मीठे बादाम का तेल मिलाकर हुकना करे ।

बहुधा हकीम लोग कहते हैं कि किसी हुकने में चाहे वह लय्यनरा हो चाहे हाद्दा हो हरड़ न मिलानी चाहिये, परन्तु हकीम जैसे शेखबूअली सेना, हकीम शरीफ खां आदि यह कहते हैं कि तीसरे चौथे दिन हुकने में कुछ हरड़ों के उस समय डाल देने में ऐसे हानि नहीं है जब उसकी बड़ी भारी आवश्यकता समझी जावे । क्योंकि हरड़ निचोड़ करती है, इससे पतला मल तो निकलजाता है परन्तु गाढा और भी कठोर होजाता है उसकी हानि तो प्रगटही है ।

चौथाभेद कफके सरसाम का बर्णन ।

इस सरसाम को अर्बी भाषा में लीसुरगुस कहते हैं इसका नाम इसके हेतु पर रक्खागया है इस रोग में रोगी कही हुई बातको भूलजाता है और रोग का दोष दिमाग के मार्गों में स्थित रहता है और कभी भेजे में भी इस तरह स्थित होजाता है कि सब मल वहां चलाजाता है परन्तु झिल्लियों में कभी नहीं घुसता जैसा कि ऊपर लिखचुके हैं इसका लक्षण यह है कि सदा हलका ज्वर बना रहता है ज्ञान इन्द्रियों में भारीपन और जिह्वामें सफेदी आजाती है जम्हाई बहुत आती हैं बुद्धि में अन्तर पड़जाता है कठिनता से बोलता है पलकों को खोलने मूंदने और बातें करने से थकावट होती है कठिनता से उत्तर देता है क्षण क्षण में जगता सोता है परन्तु तन्द्रा अधिक रहती है ।

कफ के सरसाम की चिकित्सा ।

सोंफकी जड़,अजमोद के बीज, अनीसून, मुनक्का बेदाना, अजखर की जड़, और उस्त खद्दूस, इन को पानी में औटाकर शहद का गुलकन्द और शहद की शिकञ्जबीन डाल कर देवे और पकने के पीछे गोली, उचित हुकना, सयाफ (बत्ती) से देह को स्वच्छ करे और सिरका, गुलाब, और रोगनगुल इनका आरम्भ में दो दिन तक सिरपै लेप करे और दो दिन पीछे ऊपरवाले लेप में थोड़ासा मुन्दबेदस्तर और मिला देवे जिस समय रोग परिणाम को पहुचे उस समय मुहल्लिल (नाश करनेवाली) वस्तु हो लगावे मलका गलाने वाली न लगावे जैसे मुन्दबेदस्तर।(अथवा)अफतमा,

नर्म हुकने की विधि ।

अकलीमून, छोटीहरड़, बड़ीहरड़, सनाय, शाहतरा, बादरंजबोया, गावजुवां, मुनक्कावेदाना, विस्फायज, जौ मकशर (बिना छिलके) इन सबको पका कर छान लेवे, इसमें लालखांड, अमलतास का पानी, मीठे बादाम का तेल मिलाकर हुकना करे ।

बहुधा हकीम लोग कहते हैं कि किसी हुकने में चाहे वह लय्यना हो चाहे हादा हो हरड़ न मिलानी चाहिये, परन्तु हकीम जैसे शेखबूअली सेना, हकीम शरीफ़ खां आदि यह कहते है कि तीसरे चौथे दिन हुकने में कुछ हरड़ों के उस समय डाल देने में ऐसे हानि नहीं है जब उसकी बड़ी भारी आवश्यकता समझी जावै । क्योंकि हरड़ निचोड़ करती है, इससे पतला मल तो निकलजाता है परन्तु गाढ़ा और भी कठोर होजाता है उसकी हानि तो प्रगटही है ।

चौथाभेद कफके सरसाम का वर्णन ।

इस सरसाम को अर्बी भाषा में लीसुरगुस कहते हैं इसका नाम इसके हेतु पर रक्खागया है इस रोग में रोगी कही हुई बातको भूलजाता है और रोग का दोष दिमाग के मार्गों में स्थित रहता है और कभी भेजे में भी इस तरह स्थित होजाता है कि सब मल वहां चलाजाता है परन्तु झिल्लियों में कभी नहीं घुसता जैसा कि ऊपर लिखचुके हैं इसका लक्षण यह है कि सदा हलका ज्वर बना रहता है ज्ञान इन्द्रियों में भारापन और जिह्वामें सफ़ेदी आजाती है जम्भाई बहुत आती हैं बुद्धि में अन्तर पड़जाता है कठिनता से बोलता है पलकों को खोलने मूदने और बातें करने से थकावट होती है कठिनता से उत्तर देता है क्षण क्षण में जगता सोता है परन्तु तन्द्रा अधिक रहती है ।

कफ के सरसाम की चिकित्सा ।

सौंफकी जड़,अजमोद के बीज, अनीसून, मुनक्का बेदाना, अजखर की जड़, और उस्त ख़द्दूस, इन को पानी में औटाकर शहत का गुलकन्द और शहत की शिकंजबीन डाल कर देवे और पकने के पीछे गोली, उचित हुकना, सपाफ (बत्ती) से देह को स्वच्छ करे और सिरका, गुलाब, और रोगनगुल इनका आरम्भ में दो दिन तक सिरपै लेप करे और दो दिन पीछे ऊपरवाले लेप में थोड़ासा जुन्दबेदस्तर और मिला देवे जिस समय रोग परिणाम को पहुंचे उस समय मुहल्लिल (नष्ट करनेवाली) वस्तु को लगावे मलको रोकने वाली न लगावे जैसे जुन्दबेदस्तर।(अथवा)मकरफ़रा,

नर्म हुकने की विधि ।

अकलीमून, छोटीहरड, बडीहरड, सनाय, शाहतरा, बादरंजबोया, गावजुबां, मुनकावेदाना, विस्फायज, जौ मकशूर (बिना छिलके) इन सबको पका कर छान लेवे, इसमें लालखांड, अमलतास का पानी, मीठे बादाम का तेल मिलाकर हुकना करे ।

बहुधा हकीम लोग कहते हैं कि किसी हुकने में चाहे वह लय्यना हो चाहे हाद हो हरड न मिलानी चाहिये, परन्तु हकीम जैसे शेखबूअली सेना, हकीम शरीफ खां आदि यह कहते हैं कि तीसरे चौथे दिन हुकने में कुछ हरडों के उस समय डाल देने में ऐसे हानि नहीं है जब उसकी बडी भारी आवश्यकता समझी जावे । क्योंकि हरड निचोड करती है, इससे पतला मल तो निकलजाता है परन्तु गाढा और भी कठोर होजाता है उसकी हानि तो प्रगटही है ।

चौथाभेद कफके सरसाम का वर्णन ।

इस सरसाम को अर्बी भाषा में लीसुरगुस कहते हैं इसका नाम इसके हेतु पर रक्खागया है इस रोग में रोगी कही हुई बातको भूलजाता है और रोग का दोष दिमाग के मार्गों में स्थित रहता है और कभी भेजे में भी इस तरह स्थित होजाता है कि सब मल वहां चलाजाता है परन्तु झिल्लियों में कभी नहीं घुसता जैसा कि ऊपर लिखचुके हैं इसका लक्षण यह है कि सदा हलका ज्वर बना रहता है ज्ञान इन्द्रियों में भारापन और जिह्वामें सफेदी आजाती है जम्भाई बहुत आती हैं बुद्धि में अन्तर पडजाता है कठिनता से बोलता है पलकों को खोलने मूदने और बातें करने से थकावट होती है कठिनता से उत्तर देता है क्षण क्षण में जगता सोता है परन्तु तन्द्रा अधिक रहती है ।

कफ के सरसाम की चिकित्सा ।

सोंफकी जड,अजमोद के बीज, अनीसून, मुनक्का वेदाना, अजखर की जड, और उस्त खद्दूस, इन को पानी में ओटाकर शहत का गुलकन्द और शहत की शिकंजबीन डाल कर देवे और पकने के पीछे गोली, उचित हुकना, सपाफ (बत्ती) से देह को स्वच्छ करे और सिरका, गुलाब, और रोगनगुल इनका आरम्भ में दो दिन तक सिरपै लेप करे और दो दिन पीछे ऊपरवाले लेप में थोडासा जुन्दबेदस्तर और मिला देवे जिस समय रोग परिणाम को पहुचे उस समय मुहल्लिल (नष्ट करनेवाली) वस्तु को लगावे मलको रोकने वाली न लगावे जैसे जुन्दबेदस्तर।(अथवा)अकरकरा,

छमरे का वर्णन।

इस प्रकार के सरसाम में रोगी को ऐसा मालूम होता है कि जैसे सिर में आग जलती है। तथा बेचैनी, मुख की खाल ठंडी होजाती है,पीला पड़जाता है। मुख की खाल के ठंडा होने का कारण यह है कि प्रकृति कष्ट को दूर करने के लिये भीतर की ओर झुकती है और उस के पीछे ही रुधिर भी भीतर जाने के लिये उस के साथ होलेता है, इस कारण से गर्मी दूर होजाती है और हाथ लगाने से जगह ठंडी मालूम होती है और उचित है कि दाद दिमाग में होजाय उसका चिन्ह जमरे के चिन्ह के समीप है और दिमाग में खुजली होती है (इलाज) फसद रग सराड (मध्यमा उंगली से कोहनी के ऊपर की रग) और माथे की रग और नाकके सिरे की रग और जीभ की रग जिनमें दो रगें जीभ के ऊपर और दो जीभ के नीचे हैं खोलें परन्तु शक्ति और आवश्यकतानुसार एक २ या दो २ या एक के पीछे दूसरी को रोककर या बिना रोके फसद खोलें और फसद खोलने के उपरांत प्रकृति को उन वस्तुओं से जो रुधिर और पित्तके सरसाम में वर्णन होचुकी हैं नर्म रक्खें और लेप और तरेडा और सुगंधित वस्तु जो पित्त के सरसाम में वर्णन की गई हैं काम लावे और भोजनों में से केवल जौका दलिया खाय। (विशेष द्रष्टव्य) यह बीमारी बहुधा लड़कों को उत्पन्न हुआ करती है इसका चिन्ह यह है कि तालू नीचे को बैठ जाय और आंखें भीतर को घुस जांय और छोटी होजांय और प्रत्यक्ष में सूखी दिखलाई दें ऐसे समय में यह इलाज है कि मुर्गी के अंडे की सफेदी गुल रोगन में अच्छी तरह मिलाकर ठंडा करके उसमें कपड़ा भिगोकर तालू पर रक्खे और हर घड़ी गर्म होजाने पर दूसरा बदलते रहें (अथवा खुर्फे के पत्ते, हरा धनियां कद्दू हर काहू का पानी निचोड़ कर गुलरोगन में मिलाकर रखते रहें। सरसाम का एक और भेद है उसे फलगमनी कहते हैं यह सूजन बहुधा रुधिर के बिगड़ जाने से होजाती है बहुधा ऐसा होता है कि इस सूजन की अधिकता से सर की दरारें खुलकर एक दूसरे से जुदी होजाती हैं और दिमाग या जाल अर्थात् झिल्ली खिचजाती है उसका (लक्षण) यह है कि आंख और मुंह बहुत लाल होजाय और दर्द अधिक हो और ऐसा मालूम हो जैसे कोई सिर को धीरे डालता है और यह भी आश्चर्य नहीं है कि इस रोग में गर्दन के पीछे वा आगे या दोनों ओर झांपटे आने लगें और जी मिचलावे (इलाज) यदि

जुमरे का वर्णन।

इस प्रकार के सरसाम में रोगी को ऐसा मालूम होता है कि जैसे सिर में आग जलती है। तथा बेचैनी, मुख की खाल ठंडी होजाती है, पीला पड़जाता है। मुख की खाल के ठंडा होने का कारण यह है कि प्रकृति कष्ट को दूर करने के लिये भीतर की ओर झुकती है और उस के पीछे ही रुधिर भी भीतर जाने के लिये उस के साथ होलेता है, इस कारण से गर्मी दूर होजाती है और हाथ लगाने से जगह ठंडी मालूम होती है और उचित है कि दाद दिमाग में होजाय उसका चिन्ह जमरे के चिन्ह के समीप है और दिमाग में खुजली होती है (इलाज) फसद रग सराख (मध्यमा उंगली से कोहनी के ऊपर की रग) और माथे की रग और नाकके सिरे की रग और जीभ की रग जिनमें दो रगें जीभ के ऊपर और दो जीभ के नीचे हैं खोलें परन्तु शक्ति और आवश्यकतानुसार एक २ या दो २ या एक के पीछे दूसरी को रोककर या बिना रोके फसद खोलें और फसद खोलने के उपरांत प्रकृति को उन वस्तुओं से जो रुधिर और पित्तके सरसाम में वर्णन हो चुकी हैं नर्म रक्खें और लेप और तरेड़ा और सुगंधित वस्तु जो पित्त के सरसाम में वर्णन की गई हैं काम लावे और भोजनों में से केवल जौका दलिया खाय। (विशेष द्रष्टव्य) यह बीमारी बहुधा लड़कों को उत्पन्न हुआ करती है इसका चिन्ह यह है कि तालू नीचे को बैठ जाय और आंखें भीतर को घुस जांय और छोटी होजांय और प्रत्यक्ष में रूखी दिखलाई दें ऐसे समय में यह इलाज है कि मुर्गी के अंडे की सफेदी गुल रोगन में अच्छी तरह मिलाकर ठंडा करके उसमें कपड़ा भिगोकर तालू पर रक्खे और हर घड़ी गर्म होजाने पर दूसरा बदलते रहें (अथवा खुरफे के पत्ते, हरा धनियां कद्दू हर काहू का पानी निचोड़ कर गुलरोगन में मिलाकर रखते रहें। सरसाम का एक और भेद है उसे फलगमनी कहते हैं यह सूजन बहुधा रुधिर के बिगड़ जाने से होजाती है बहुधा ऐसा होता है कि इस सूजन की अधिकता से सार की दरारें खुलकर एक दूसरे से जुदी होजाती हैं और दिमाग का जाल अर्थात् झिल्ली खिचजाती है उसका (लक्षण) यह है कि आंख और मुंह बहुत लाल होजांय और दर्द अधिक हो और ऐसा मालूम हो जैसे कोई सिर को चीरे डालता है और यह भी आश्चर्य नहीं है कि इस रोग में गर्दन के पीछे या आगे या दोनों ओर झांपटे आने लगें और जी मिचलावे (इलाज) यही

जो सिर को गर्मी पहुचे सिर का घूमना थमजाय और शेष चिन्ह कफ के सिर दर्द में देखलो । (दूसरे) यह कि सौदा (तीनों दोषों की तिलछट) के कारण स हो उसका चिन्ह यह है कि सोच की अधिकता, चुप्प रहना और नाडी में कठोरता और निर्बलता हो और शेष चिन्ह वादी के दर्द सर के अनुसार होते हैं। जानना चाहिये कि शोच की अधिकता और बहुत चुप्प रहना उस समय होता है जब सौदा पित्त म मिलाहुआ न हो और नाडी की निर्बलता के २ कारण हैं एक शक्ति का निर्बल होना दूसरे दिल की रगों की कठोरता परन्तु इस रोग में नाडी की निर्बलता का मुख्य कारण कठोरता है तीसरे यह कि खून से हो इसका चिन्ह यह है कफ और वादी के दुआर की अपेक्षा खूनी दुआर का घूमना जल्द जाता रहता है और दूसरे चिन्ह खूनी दर्द सर के प्रगट हो । चौथे यह कि पित्त के कारण से हो उसका चिन्ह यह है ठंढी चीजों से आराम पाना और सिर का घूमना जल्द जाता रहे और जो कुछ पित्तज सिर के दर्द में वर्णन किया गया है वह लक्षण प्रगट हों । पांचवें यह कि सर्द रियाहों से हो और यह बात प्रगट है कि ठंडे दोषों से रियाह (भोजन की भाफ़ के गाढे कण) उठते हैं और गर्म दोषों से रियाह फैलाते हैं और रीह का उसी दोष में वर्णन हो चुका है जिसमें कि वह पैदा होता है केवल उस में भारीपन नहीं होता है । छटे रीह गर्म से हो उसका वही चिन्ह है जो गर्म दोषों में वर्णन कर दिया गया है तथा छींक विशेष आना नाक खुश्क होना दुआर के समय थोडा सा पसीना सिर पर आना मिरगी वालों की तरह पृथ्वी पर गिरपड़ना ये इसके लक्षण हैं इस प्रकार का दुआर बहुधा गर्मी के कारण से बहुत देर तक नहीं ठहरता और सब प्रकार के दुआरों से जल्द जाता रहता है । परन्तु यह दुआर ऐसी घोर प्रबलता से होता है कि रोगी को पृथ्वी पर गिरा देता है । (इलाज) कफ वात और रीही दुआर में जो सर्द हैं प्रथम मल को कारण के अनुसार पकावे फिर देह और दिमाग के साफ करने के लिये हुकने और गोलियां और कुल्लों का प्रयोग उस रीत से करे जैसा कफ और वादी के सिर दर्द में वर्णन किया गया है और रियाह के निकालने के लिये कस्तूरी और गालिया (एक सुगंधित [illegible] और पधों के मल से बनता है) मय्याम (एक [illegible] की घास) और [illegible] सूंघे अथवा नकछिकनी तथा [illegible] के लिये [illegible] गन्धे, फलका, केसर और जुन्द [illegible] दानाय

जो सिर को गर्मी पहुचे सिर का घूमना थमजाय और शेष चिन्ह कफ के सिर दर्द में देखलो । (दूसरे) यह कि सौदा (तीनों दोषों की तिलछट) के कारण से हो उसका चिन्ह यह है कि सोच की अधिकता, चुप रहना और नाडी में कठोरता और निर्बलता हो और शेष चिन्ह वादी के दर्द सर के अनुसार होते हैं । जानना चाहिये कि शोच की अधिकता और बहुत चुप रहना उस समय होता है जब सौदा पित्त में मिलाहुआ न हो और नाडी की निर्बलता के २ कारण है एक शक्ति का निर्बल होना दूसरे दिल की रगों की कठोरता परन्तु इस रोग में नाडी की निर्बलता का मुख्य कारण कठोरता है तीसरे यह कि खून से हो इसका चिन्ह यह है कफ और वादी के दुआर की अपेक्षा खूनी दुआर का घूमना जल्द जाता रहता है और दूसरे चिन्ह खूनी दर्द सर के प्रगट हों । चौथे यह कि पित्त के कारण से हो उसका चिन्ह यह है ठंडी चीजों से आराम पाना और सिर का घूमना जल्द जाता रहे और जो कुछ पित्तज सिर के दर्द में वर्णन किया गया है वह लक्षण प्रगट हों । पांचवें यह कि सर्द रियाहों से हो और यह बात प्रगट है कि ठंडे दोषों से रिआह (भोजन की भाफ़ के गाढे कण) उठते हैं और गर्म दोषों से रिआह फैलाते हैं और रीह का उसी दोष में वर्णन हो चुका है जिसमें कि वह पैदा होता है केवल उस में भारापन नहीं होता है । छटे रीह गर्म से हो उसका वही चिन्ह है जो गर्म दोषों में वर्णन कर दिया गया है तथा छींक विशेष आना नाक खुश्क होना दुआर के समय थोडा सा पसीना सिर पर आना मिरगी वालों की तरह पृथ्वी पर गिरपड़ना ये इसके लक्षण हैं इस प्रकार का दुआर बहुधा गर्मी के कारण से बहुत देर तक नहीं ठहरता और सब प्रकार के दुआरों से जल्द जाता रहता है । परन्तु यह दुआर ऐसी घोर प्रबलता से होता है कि रोगी को पृथ्वी पर गिरा देता है । (इलाज) कफ वात और रीही दुआर में जो सर्द हैं प्रथम मल को कारण के अनुसार पकावे फिर देह और दिमाग के साफ करने के लिये हुकने और गोलियां और कुल्लों का प्रयोग उस रीत से करे जैसा कफ और वादी के सिर दर्द में वर्णन किया गया है और रिआह के निकालने के लिये कस्तूरी और गालिया (एक सुगंधित [illegible] औ [illegible] पशुओं के मल से बनताहै) मस्याम (एक [illegible] की घास) और [illegible] इन्हें सूंघे अथवा नकछिकनी तथा कुन्द [illegible] में लिप [illegible]

[illegible]

जो सिर को गर्मी पहुचे सिर का घूमना थमजाय और शेष चिन्ह कफ के सिर दर्द में देखलो । (दूसरे) यह कि सौदा (तीनों दोषों की तिलछट) के कारण से हो उसका चिन्ह यह है कि सोच की अधिकता, चुप रहना और नाडी में कठोरता और निर्बलता हो और शेष चिन्ह वादी के दर्द सर के अनुसार होते है। जानना चाहिये कि शोच की अधिकता और बहुत चुप्प रहना उस समय होता है जब सौदा पित्त मे मिलाहुआ न हो और नाडी की निर्बलता के २ कारण है एक शक्ति का निर्बल होना दूसरे दिल की रगा की कठोरता परन्तु इस रोग में नाडी की निर्बलता का मुख्य कारण कठोरता है तीसरे यह कि खून से हो इसका चिन्ह यह है कफ और वादी के दुआर की अपेक्षा खूनी दुआर का घूमना जल्द जाता रहता है और दूसरे चिन्ह खूनी दर्द सर के प्रगट हो । चौथे यह कि पित्त के कारण से हो उसका चिन्ह यह है ठंडी चीजों से आराम पाना और सिर का घूमना जल्द जाता रहै और जो कुछ पित्तज सिर के दर्द में वर्णन किया गया है वह लक्षण प्रगट हों । पांचवें यह कि सर्द रियाहों से हो और यह बात प्रगट है कि ठंडे दोषों से रिआह (भोजन की भाफ़ के गाढे कण) उठते है और गर्म दोषों से रिआह फैलात हैं और रीह का उसी दोष में वर्णन हो चुका है जिससे कि वह पैदा होता है केवल उस में भारापन नहीं होता है । छटे रीह गर्म से हो उनका यही चिन्ह है जो गर्म दोषों में वर्णन कर दिया गयाहै तथा छींक विशेष आना नाक खुश्क होना दुआर के समय थोडा सा पसीना सिर पर आना मिरगी वालों की तरह पृथ्वी पर गिरपडना ये इसके लक्षण है इस प्रकार का दुआर बहुधा गर्मी के कारण से बहुत देर तक नहीं ठहरता और सब प्रकार के दुआरों से जल्द जाता रहता है । परन्तु यह दुआर ऐसी घोर प्रबलता से होता है कि रोगी को पृथ्वी पर गिरा देता है । (इलाज) कफ वात और रीही दुआर में जो सर्द है प्रथम मल को कारण के अनुसार पकावे फिर देह और दिमाग के साफ करने के लिये हुकने और गोलियां और कुल्लों का प्रयोग उस रीत से करे जैसा कफ और वादी के सिर दर्द में वर्णन किया गया है और रिआह के निकालने के लिये कस्तूरी और गालिया (एक सुगंधित द्रव्यहै जो कई औषधों के मल से बनताहै) नम्माम (एक प्रकार की घास) और चमेली इन्हे सूंघे अथवा नकछिकनी तथा जुन्देबेदस्तर छींक के लिये दवें और मिर्च सफेद, एलवा, केसर और जुन्देबेदस्तर पीसकर दोनामरवा के पानी

जो सिर को गर्मी पहुचे सिर का घूमना थमजाय और शेष चिन्ह कफ के सिर दर्द में देखलो । (दूसरे) यह कि सौदा (तीनों दोषों की तिलछट) के कारण से हो उसका चिन्ह यह है कि सोच की अधिकता, चुप रहना और नाडी में कठोरता और निर्बलता हो और शेष चिन्ह बादी के दर्द सर के अनुसार होते है । जानना चाहिये कि शोच की अधिकता और बहुत चुप रहना उस समय होता है जब सौदा पित्त में मिलाहुआ न हो और नाडी की निर्बलता के २ कारण है एक शक्ति का निर्बल होना दूसरे दिल की रगा की कठोरता परन्तु इस रोग में नाडी की निर्बलता का मुख्य कारण कठोरता है तीसरे यह कि खून से हो इसका चिन्ह यह है कफ और बादी के दुआर की अपेक्षा खूनी दुआर का घूमना जल्द जाता रहता है और दूसरे चिन्ह खूनी दर्द सर के प्रगट हो । चौथे यह कि पित्त के कारण से हो उसका चिन्ह यह है ठंडी चीजों से आराम पाना और सिर का घूमना जल्द जाता रहै और जो कुछ पित्तज सिर के दर्द में वर्णन किया गया है वह लक्षण प्रगट हों । पांचवें यह कि सर्द रियाहों से हो और यह बात प्रगट है कि ठंडे दोषों से रियाह (भोजन की भाफ़ के गाढे कण) उठते है और गर्म दोषों से रिआह फैलात हैं और रीह का उसी दोष में वर्णन हो चुका है जिससे कि वह पैदा होता है केवल उस में भारापन नहीं होता है । छटे रीह गर्म से हो उसका यही चिन्ह है जो गर्म दोषों में वर्णन कर दिया गया है तथा छींक विशेष आना नाक खुश्क होना दुआर के समय थोडा सा पसीना सिर पर आना मिरगी वालों की तरह पृथ्वी पर गिरपडना ये इसके लक्षण हैं इस प्रकार का दुआर बहुधा नर्मी के कारण से बहुत देर तक नहीं ठहरता और सब प्रकार के दुआरों से जल्द जाता रहता है । परन्तु यह दुआर ऐसी घोर प्रबलता से होता है कि रोगी को पृथ्वी पर गिरा देता है । (इलाज) कफ बात और रीही दुआर में जो सर्द है प्रथम मल को कारण के अनुसार पकावे फिर देह और दिमाग के साफ करने के लिये हुकने और गोलियां और कुल्लों का प्रयोग उस रीत से करे जैसा कफ और बादी के सिर दर्द में वर्णन किया गया है और रियाह के निकालने के लिये कस्तूरी और गालिया (एक सुगंधित द्रव्य है जो कई औ षधों के मल से बनता है) नम्माम (एक प्रकार की घास) और चमेली इन्हें सूंघे अथवा नकछिकनी तथा जुन्देबेदस्तर छींक के लिये दवे और मिर्च सफेद, फल्वा, केसर और जुन्देबेदस्तर पीसकर दोनासरमा के पानी

और कुछ ऊपर भी वर्णन कर दिया गया है। (इलाज) काबुली हरड, अनीसून (रूमी सौंफ) सौंफ की जड, करफस (अजमोद) नसौत, फारतून, सनाय, गाफिस (कांटेदार घास) ये आठ दवाएं लेवें और जो कूटने के योग्यहैं उन्हें कूट लेवे और सब को औटाकर छानलेवे और खयूस के बीज का शीरा लाल खांड और बद अजीर का तल, सिल सकोतरी (प-लवा) इस काढे में मिलाकर हुकना करें और ऐसही आवश्यकतानुसार वमन कारक और दस्तावर दवाओंका काढा पीनेमें और पारजक खानेमें पतनकरे और जुलाब के उपरान्त आमाशय की पुष्टता और पाचकशक्ति के बढाने के लिये इतरीफल आदि गर्म जवारिश काम में लावे। दूसरे यह कि आमाशय में ठंडी रिआह ठंडे दोषों से उत्पन्नहों उसका चिन्ह उन दोषों के चिन्हसे प्रगट है और सिल्त, दोष को कहतेहैं और यह कि कभी जी मिचलावे परन्तु मादा कुछ न निकले क्योंकि मवाद आमाशय की गहराई में ठहरने के कारण से वमन में नहीं निकलताहै और कभी यह भी होकि दर्द सिचावट के साथ हो परन्तु अधिक हो इसका इलाज ज्योंकात्यों सद दायों कहा है परन्तु इसकारण से कि दोषगीहैं इसलिये इसके निकालनेवाली और पुष्ट करने वाली वस्तुओं में उचितहै कि गाढी के तोडनेवाली चीज भी मिलावें। सब चीजों में अधिक लाभदायक रीह अर्थात् बादी तोडने में शराब है जब कि उसमें जीरा और मजातर अर्थात् एक खुशबूदार घासहै पकावें। तीसरे यह कि सिलते गर्म अर्थात् गर्मदोष पित्त के इकट्ठे होजांय उसका चिन्ह यहहै कि खाली पेट में निरघृमनेलगे और भरेपेट में हुआर भभलावे और सब चिन्ह पित्त के आमाशय में वर्णन किये गयेहैं प्रगटहोजांय। (इलाज) शिकन्जबीन और गर्मपानी पीकर वमनकरडाले और हल्का पानी माउलजुब्न अर्थात् दूध का पानी फाक्कर निकालना या नफ (वह पानी जिसमें दवा भिगोई गईहो) आलू का हिमाद्रा और खट्टमीठ अनार का पानी छिडकों सहेत निरोग्यहर दी जिससे तबियत नर्महोजाय और हल्के पाने की यह रीति है कि पीली हरड और पील आलू और हिमोदा और इमली और काशनीकेबीज गरम औमाकरछानलेवे और तुरंजबीन मिलाकर देवे और जो गर्मपुनियों का पाक की पुष्टता के लिये (१) मसाहकर ला अधिक गुणकारी होगी।

(१) मंदाज मापह अर्थात् एक भीन पाकेया लगावें या कुगर में ऊपर मे से मिलाकर पीने, 'भिगोदा' भीगीहुई दवाके पानी को कहते हैं जो औटा हुआ न हो।

और कुछ ऊपर भी वर्णन कर दिया गया है। (इलाज) काबुली हरड़, अ नीसून (रूमी सौंफ) सौंफ की जड़, करफस (अजमोद) नसौत, फरफ्यून, सनाय, गाफिस (कांटेदार घास) ये आठ दवाएँ लेवें और जो कूटने के योग्यहैं उन्हें कूट लेवे और सब को औटाकर छानलेवे और खयार के बीज का शीरा लाल खांड और बद अजीर का तेल, सिकंजबीन सफोतरी (?- लवा) इस काढे में मिलाकर हुकना करें और ऐसही आवश्यकतानुसार वमन कारक और दस्तावरदवाओंका काढा पीनेमें और पारजक खानेमें यत्नकरें और जुलाब के उपरान्त आमाशय की पुष्टता और पाचकशक्ति के बढाने के लिये इतरीफल आदि गर्म जवारिश काम में लावे। दूसरे यह कि आमाशयमें ठंढी रिआह ठंढे दोषों से उत्पन्नहों उसका चिन्ह उन दोषों के चिन्हसे प्रगट है और सिक्त, दोष का कहतेहें और यह कि कभी जी मिचलावे परन्तु मादा कुछ न निकले क्योंकि मवाद आमाशय की गहराई में ठहरने के कारण से वमन में नहीं निकलताहै और कभी यह भी होकि दर्द रियाहट के साथ हो परन्तु अधिक हो इसका इलाज ज्याकात्यों सद दाषों कारा है परन्तु इसकारण से कि दोषगीहहैं इसलिये इसके निकालनेवाली और पुष्ट करने वाली वस्तुओं में उचितहै कि वादी के तोडनेवाली चीज भी मिलावें। सब चीजों में अधिक लाभदायक रीह अर्थात् वादी तोडने में शराब है जब कि उसमें जीरा और मजातर अर्थात् एक खुशबूदार घासहै पकावें। तीसरे यह कि सिलने गर्म अर्थात् गर्मदोष पित्त के इकट्ठे होजांय उसका चिन्ह यहहै कि खाली पेट में मिरघृमनेलगें और भरेपेट में डुकार धमलावे और सब चिन्ह पित्त के आमाशय में वर्णन कियेगयहैं प्रगटहोजांय। (इलाज) शिकनवीन और गर्मपानी पीकर वमनकरडाले और हकना करना माउलजुब्न अर्थात् दूध का पानी फाड़कर निकालना या नक (वह पानी जिसमें दवा भिगोई गई हो) आलू का शिमादा और खट्टमीठे अनार का पानी छिडकों सहित निचोड़कर दें जिससे तापिपन नर्महोजाय और हल्के पाक की यह रीति है कि पीली हड़ और पील आलू और हिमोथा और इमली और धामनीकेबीज सबको औगाकरछानलवे और तुर्जबीन मिलाकर दवे और जो सफूफियां का पाक की पुष्टता के लिये (१) मरदाककर ना अधिक गुणकारी होगी।

---

(१) मरदाक नामक अन्न कि एक भीन पारेका सगाई या कुम्हार में डाल में से मिलाकर पीना, 'भिगोदा' भीगिहुए दवाके पानी का कहते हैं जो औटाहुआ नहीं।

कि बकरी के दूध में पतलापन और तरी और चिकनाहट अधिक है और यही म योजन है। अजीर की लकड़ी के चलानेसे तबियत के नर्म करनेमें सहायता मिलतीहै। चौथे यह है कि रिआह आमाशय में गर्म दोषों से उत्पन्न हों उसके चिन्ह गर्म दोषों के से चिन्ह होंगे जैसे आमाशय में चुभना मालूम हो और टूंडी में दर्द हो और रीह अर्थात् हवा के निकलने से चाहे नीचे से निकले चाहे डकार में निकलकर आराम पहुंचावे (इलाज) आमाशय को हरड़ के काढे से साफ करे जिस का वर्णन होचुका है परन्तु सकमूनियां भी पिलावे । (दूसरा भेद) इस वर्णन में है कि माद्दा कनपटी के ऊपर की रगों में या उन रगों में कि जो कानके पीछे हैं या उन रगों में कि उन का नाम सुबातिया अर्थात् नींद लाने वाली है इकट्ठा होजाय और उस जगह से चढ़कर दुखार पैदा करे इसका (लक्षण) यह है कि इन रगों का खिंचे रहना, भरजाना फूलना और फड़कना है और जो इन रगों को हाथ से दबावें या विवशकारक औषध उस पर लगावें तो दुखार ठहर जाता है जो यह माद्दा दिल या जिगर या तिल्ली से निकल आता है तो सिवाय इन चिन्हों के कि इन अंगों में से किसी अंग में भी कष्ट पाया जाय और प्रत्येक अंग के कष्ट का वर्णन अपने २ स्थान पर किया गया है वहां देखलो (इलाज) पहले यह समझ लेवे कि भाफ के कणों का माद्दा कौनसा दोष है फिर उस के निकालने का उपाय करें और जो जिगर में मल हो तो उस के कार्यों में हानि होगी और आस पास में दुख और तकलीफ होगी या और जो उसके विषय में चिन्ह वर्णन किये गये हैं वह यहां भी साथी देवें सो जो माद्दा जिगर की गहराई की तरफ हो तो उस को निकालें और जो माद्दा जिगर के उठान की तरफ हो तो मूत्र और पसीन के रास्ते से माद्दे को निकालें और दूसरे माद्दे के चिन्हका कि इन दोनों तरफ से किस तरफ झुकता है जिगर के विषय में ग्यारहवां वर्णन किया गया है और जिस जगह माद्दा दिल में हो तो माद्दे के निकलने के पीछे केवड़ा शर्बत और मुफर्रहात अर्थात् आराम पहुंचाने वाली दवा देवे और जिस जगह माद्दा तिल्ली में हो तो बांये हाथ की अस्लम रग की फस्द खोले जो छोटी और मध्यमा उंगली के बीच की रग जो चौथी तक चली गई है और माद्दे के नष्ट करने वाली दवाओं का लेप तिल्ली पर करें और प्रत्येक रोगग्रस्त अंग का इलाज करें और जुलाब के पीछे चाहे माद्दा इन अंगों में हो चाहे रगों में तो सिर का घुमना जाना वह तो लेप से अच्छा है और जो बाकी हो तो ... तलाश करना चाहिये कि माद्दे का ... कौन सी

कि बकरी के दूध में पतलापन और तरी और चिकनाहट अधिक है और यही प्र योजन है। अजीर की लकड़ी के चलानेसे तबियत के नर्म करनेमें सहायता मिलती है। चौथे यह है कि रिआह आमाशय में गर्म दोषों से उत्पन्न हों उसके चिन्ह गर्म दोषों के से चिन्ह होंगे जैसे आमाशय में चुभना मालूम हो और हड्डी में दर्द हो और रीह अर्थात् हवा के निकलने से चाहे नीचे से निकले चाहे डकार से निकलकर आराम पहुंचावे (इलाज) आमाशय को हरड़ के फांटे से साफ़ करे जिस का वर्णन होचुका है परन्तु सकमूनियां भी पिलावे। (दूसरा भेद) इस वर्णन में है कि मादा कनपटी के ऊपर की रगों में या उन रगों में कि जो कानके पीछे हैं या उन रगों में कि उन का नाम सुबातिया अर्थात् नींद लाने वाली है इकट्ठा होजाय और उस जगह से चढ़कर दुआर पैदा करे इसका (लक्षण) यह है कि इन रगों का खिंचे रहना, भरजाना फूल ना और फड़कना है और जो इन रगों को हाथ से दबावें या विवधकारक औषध उस पर लगावें तो दुआर ठहर जाता है जो यह मादा दिल या जि गर या तिल्ली से निकल आता है तो सिवाय इन चिन्हों के कि इन अंगों में से किसी अंग में भी कष्ट पाया जाय और प्रत्येक अंग के कष्ट का वर्णन अपने २ स्थान पर किया गया है वहां देखलो (इलाज) पहले यह समझ लेवे कि भाफ के कणों का मादा कौनसा दोष है फिर उस के निकालने का उपाय करें और जो जिगर में मल हो तो उस के कामों में हानि होगी और आस पास में दुख और तकलीफ़ होगी या और जो उसके विषय में चिन्ह वर्णन किये गये हैं वह यहां भी साक्षी देवें सो जो मादा जिगर की गहराई की तरफ़ हो तो उस को निकालें और जो मादा जिगर के उठान की तरफ़ हो तो मूत्र और पसीने के रास्ते से मादे को निकालें और शराब मादे के चिन्हका कि इन दोनों तरफ़ से किस तरफ़ झुकता है जिगर के विषय में ब्योरेवार वर्णन किया गया है और जिस जगह मादा दिल में हो तो मादे के निकलने के पीछे सेवती शर्बत और मुफ़र्रहात अर्थात् आनन्द पहुंचाने वाली दवा देवे और जिस जगह मादा तिल्ली में हो तो बांये हाथ की असेलम रग की फस्द खोले जो छोटी और मध्यमा उंगली के बीच की रग जो पोरुओं तक चली गई है और मादे के नष्ट करने वाली दवाओं का लेप तिल्ली पर करें और प्रत्येक रोगग्रस्त अंग का इलाज करें और जुलाब के पीछे चाहे मादा इन अंगों में हो चाहे रगों में जो सिर का घूमना जाना रहे तो रूप में अच्छा है और जो बाक़ी हो तो तलाश करना चाहिये कि मादे का मादा कौन सी

और उक्त अंग से प्रमाद को दूसरी तरफ खींचे, फसद और दस्त और हुकना और मालिश आदि के द्वारा जैसा आवश्यकता हो सिर और दिमाग को बल पहुँचावें जिस से मादे को स्वीकार न करे और कभी ऐसा भी होता है कि धमक या चोट सिर पर पहुँचे इस कारण से दिमागी रूह हर्कत करे और दुआर पैदा हो जाय और दिमागी रूह की हर्कत करना चोट और धमाके के कारण से पानी की हर्कत के समान है कि जिस समय कोई भारी चीज पानी में पड़े या कोई चीज पानी पर जोर से मारे वह पानी हर्कत करेगा और चक्कर करेगा और लहरें मारेगा ऐसे ही रूह हर्कते शारिया के साथ लहरें मारती है। चिन्ह इसका प्रगट है (इलाज) धमाके और चोट का इलाज करें और जब कष्ट दूर होने के उपरांत भी सिर घूमा करे तो जान सकत है कि दिमाग की प्रकृति बिगड़ गई है फिर दुष्ट प्रकृति के अनुसार जैसा कि उसके चिन्हों से मालूम हो इलाज करें और कभी ऐसा होता है कि ऊपर दुष्ट प्रकृति सादा अचानक दिमाग में उत्पन्न हो और उस कारण से बाह्य अभ्यन्तर कष्ट पहुँचाने वाली वस्तुओं से रूह डरे और घबरा जाय और घूमने लगे यद्यपि कोई शारीरिक वस्तु जैसे भाफ के कण और रीह उस की हर्कत के कारण न हो और सूए मिजाज मुख्तलिफ भिन्न दुष्ट प्रकृति या दर्द समीप ही वर्णन किया जाता है उसका चिन्ह यह है कि दिमाग का हलका होना और गर्मी या सर्दी पहुँचने के उपरांत एक साथ दुआर या पैदा होना सामान्य बात है कि गर्मी या सर्दी बाहरी हो या भीतरी जैसा कि सिर के दर्द में वर्णन किया गया है॥ इस कारण के जानने के उपरांत उन चीजों से कि जो उस दुष्ट प्रकृति के विरुद्ध हो इलाज करें वह चीजें तकलीफ धार चीव सहित साधारण सिर के दर्द के वर्णन में कही गई है और कभी ऐसा भी होता है कि आदमी सिर को फिरावे और फिर ठहरावे तो उसकी रूह फिरने लगती है और सिर घूमने लगता है यह काम उसके समान है कि जैसे पानी के भरे प्याले को हिलावे यद्यपि उस प्याले को ठहरालें परन्तु पानी उस में बड़ी देर तक हिलता रहता और कभी ऐसा होता है कि जो आदमी तेज फिरने वाली चीज या बहुत देर तक देखे जाय तो रूह बासरा अर्थात देखने वाली रूह उसके देखने से चक्कर खाने लगती है और सिर घूमने लगता है और उस चक्कर की दशा देखकर बाकी रहती है जितना पाराण अधिक चलता हो रहती है देह की शक्तियां निर्बल होगी, कारण का अनु

और उक्त अंग से प्रमाद को दूसरी तरफ खींचे, फसद और दस्त और हुकना और मालिश आदि के द्वारा जैसा आवश्यकता हो सिर और दिमाग को बल पहुंचावें जिस से मादे को स्वीकार न करे और कभी ऐसा भी होता है कि धमक या चोट सिर पर पहुचे इस कारण से दिमागी रूह हर्कत करे और दुआर पैदा हो जाय और दिमागी रूह की हर्कत करना चोट और धमाके के कारण से पानी की हर्कत के समान है कि जिस समय कोई भारी चीज पानी में पड़े या कोई चीज पानी पर जोर से मारे वह पानी हर्कत करेगा और चक्कर करेगा और लहरें मारेगा ऐसे ही रूह हर्कते शारिया के साथ लहरें मारती है। चिन्ह इसका प्रगट है (इलाज) धमाके और चोट का इलाज करें और जब कष्ट दूर होने के उपरांत भी सिर घूमा करे तो जान सकते हैं कि दिमाग की प्रकृति बिगड़ गई है फिर दुष्ट प्रकृति के अनुसार जैसा कि उसके चिन्हों से मालूम हो इलाज करें और कभी ऐसा होता है कि ऊपर दुष्ट प्रकृति सादा अचानक दिमाग में उत्पन्न हो और उस कारण से बाह्य अभ्यन्तर कष्ट पहुचाने वाली वस्तुओं से रूह डरे और घबरा जाय और घूमने लगे यद्यपि कोई शारीरिक वस्तु जैसे भाफ के कण और रीह उस की हर्कत के कारण न हो और सूए मिजाज मुख्तलिफ भिन्न दुष्ट प्रकृति या इसके समीप ही वर्णन किया जाता है उसका चिन्ह यह है कि दिमाग का हलका होना और गर्मी या सर्दी पहुचने के उपरांत एक साथ दुआर या पैदा होना सामान्य बात है कि गर्मी या सर्दी बाहरी हो या भीतरी जैसा कि सिर के दर्द में वर्णन किया गया है॥ इस कारण के जानने के उपरांत उन चीजों से कि जो उस दुष्ट प्रकृति के विरुद्ध हो इलाज करें यह चीजें तफसील बार चीब सहित साधारण सिर के दर्द के वर्णन में कही गई है और कभी ऐसा भी होता है कि आदमी सिर को फिरावे और फिर ठहरावे तो उसकी रूह फिरने लगती है और सिर घूमने लगता है यह काम उसके समान है कि जैसे पानी के भरे प्याले को हिलावे यद्यपि उस प्याले को ठहरालें परन्तु पानी उस में कुछ देर तक हिलता रहता और कभी ऐसा होता है कि जो आदमी देर तक फिरने वाली चीज या पहिया देर तक देखे जाय तो रूह बासरा अर्थात देखने वाली रूह उसके देखने से चक्कर खाने लगती है और सिर घूमने लगता है और उस चक्कर की दशा देरतक बाकी रहती है जितना कारण अधिक बलवान हो उतनी ही देह की शक्तियां निर्बल होंगी, कारण का अस

से जागे और इस रोग के दस कारण हैं एक यह कि ठंडी दुष्ट सादा प्रकृति अधिकता के साथ उत्पन्न हो उसका चिन्ह यह है कि नाड़ी कठोर और मुतफावत हो (मुतफावत यह है कि निरोग की प्रकृति से नाड़ी उस की बहुत देर तक ठहरे तो जानना चाहिये कि दिल की शक्ति अधिक है) और बदन और मुखका रंग हरियाली लियेहुएहो और पहले सिर को सर्दी पहुंचीहो या ठंडी चीजें इससे पहले खाईहों या नशीली चीजें खाईहों और मुखपर भरभराहट न हो (इलाज) प्रकृति के बदलने के लिये हलकी सुगन्धित गर्म चीजें सूंघे और सुदाब (सावल व तुलसीघास) के काढे का पानी सिर पर डालें और बकायन का तेल—कूठ—जुन्देबेदस्तर, जंगली प्याज, मर्जंजोश अकरकरा पीसकर और सिरके में मिलाकर लेप करें और दिवालमुश्क और मशरूदीतूस (ये दोनों कई द्रव्यों के संयोग से बनी हुई माजून है) खावे और मुर्गी के बच्चे का मांस चने के पानी और अखरोट के तेल तथा राई के तेल में पकाकर खावे और जिस जगह नशीली दवा इस रोग का कारण हो उसका उपाय विषनाशक औषधों से करे जो कि किताब के अन्त में वर्णन होंगी ॥

दूसरे यह कि दिमाग के अग्रभाग में कच्ची रतूबत इकट्ठी हो जाय उसका यह चिन्ह है कि बीमार को सिर के अगले भाग और पलकों में बोझ और आंखों के फेरने में भारीपन मालूम हो और कभी नथनों से गाढ़ा पानी बहने लगे और जीभ चेपदार रतूबत से भरी हुई रहे (इलाज) प्रथम दिमाग के मल को उन गोलियों और हुकनों से परिश्र करे जिनका " सरसामबलीसर गुम " में वर्णन आचुका है और मादे के निकलने के उपरांत प्रकृति को उन चीजों से सम्हाले जो सुबात के पहले भेद अर्थात् साधारण सर्दी के वर्णन में कही गई है । तीसरे यह कि तर और निकम्मे भाफ के कण उठकर दिमाग की तरफ जांय और ऐसा हुआ नहीं करता है परन्तु कफ के ज्वर में उस का चिन्ह ज्वर से पहले होता है (इलाज) इस में ज्वर का उपाय करना उचित है और दिमाग के पुष्ट करने के लिये गुलरोगन और गुलाब और सिरके में रुई का फोआ भिगोकर तालू पर रक्खें और मल के खींचने के लिये पाशोया (दवाओं के पानी में रोगी को बिठालना) काम में लावें और पांव के तलुए खुरखुरी चीज से मलें और हाथ तथा पांव बांध देवें और [illegible] लाभदायक है । चौथे यह कि " सुदेगेत " अर्थात [illegible] और उसके कारण से यह बड़ा कष्ट्राय [illegible] [illegible] [illegible]

से जागे और इस रोग के दस कारण हैं एक यह कि ठंडी दुष्ट सादा प्रकृति अधिकता के साथ उत्पन्न हो उसका चिन्ह यह है कि नाड़ी कठोर और मुत-फावत हो (मुतफावत यह है कि निरोग की प्रकृति स नाड़ी उस की बहुत देर तक ठहरे वो जानना चाहिये कि दिल की शक्ति अधिक है) और बदन और मुखका रंग हरियाली लियेहुएहो और पहले सिर को सर्दी पहुंचीहो या ठंडी चीजें इससे पहले खाईहो वा नशीली चीजें खाईहों और मुखपर भरभराहट न हो (इलाज) प्रकृति के बदलने के लिये हलकी सुगन्धित गर्म चीजें सूंघे और शराब (सावल व तुलसीघास) के काढ़े का पानी सिर पर डाले और बकायन का तेल–कूठ–जुन्देबेदस्तर, जंगली प्याज, मवीजज अकरकरा पीसकर और सिरके में मिलाकर लेप करें और दिवालमुश्क और मशरूदीतूस (ये दोनों कई द्रव्यों के संयोग से बनी हुई माजून है) खावे और मुर्गी के बच्चे का मांस चने के पानी और असरोट के तेल तथा राई के तेल में पकाकर खावे और जिस जगह नशीली दवा इस रोग का कारण हो उसका उपाय विषनाशक औषधों से करे जो कि किताब के अन्त में वर्णन होंगी ॥

दूसरे यह कि दिमाग के अग्रभाग में कच्ची रतूबत इकट्ठी हो जाय उसका यह चिन्ह है कि बीमार को सिर के अगले भाग और पलकों में बोझ और आंखों के फेरने में भारीपन मालूम हो और कभी नथनों से गाढ़ा पानी बहने लगे और जीभ चेपदार रतूबत से भरी हुई रहे (इलाज) प्रथम दिमाग के मल को उन गोलियों और हुकनों से पवित्र करे जिनका " सरगामलीसर गुम " में वर्णन आचुका है और भारे के निकलने के उपरांत प्रकृति को उन चीजों से सम्हाले जो सुबात के पहले भेद अर्थात् साधारण सर्दी के वर्णन में कही गई है । तीसरे यह कि तर और निकम्मे भाफ के पेग उठकर दिमाग की तरफ जांय और ऐसा हुआ करता है परन्तु कफ के ज्वर में उस का चिन्ह ज्वर से पहले होता है (इलाज) इस में ज्वर का उपाय करना उचित है और दिमाग के पुष्ट करने के लिये गुलरोगन और गुलाब और सिरके में रुई का फोया भिगोकर तालू पर रक्खें और मल के खींचने के लिये पाशोया (दवाओं के पानी में रोगी को बिठलाना) काम में लावें और पांव के तलुए सुरसुरी चीज से मलें और हाथ तथा पांव बांध दवे और [illegible] लाभदायक है । चौथे यह कि " सुदैन " अर्थात् [illegible] और उसके कारण से प

मर हकीम की सम्मति पर निर्भर है जैसा देखे वैसा वर्ते । दसवां यह कि किसी शोक, परिश्रम और कठोर क्रिया के कारण या अधिक मलके निकलने के कारण रूह का जौहर निकलजाय और अधिक निकलने के कारण रूह देह में न फैलसके और अवश्यही जी आराम करना चाहे और दिमागीरूह भी अपना कार्य करने से ठहरजाय यहातक यह हैवानी अर्थात् दिलकी रूह स सहायता लेवै और जो उससे नष्ट होगया है फिर उतनाही आजाय इसका चिन्ह यह है कि नष्ट करनेवाले कारणों का गहरी नींद के पहले पायाजाना हो और धीरे २ गहरी नींद वेहोशी के साथ उत्पन्न हो[इलाज] गर्मप्रकृति वालेको मांस का पानी गुलाब और मवके पानी म मिलाकर दवे और ममहूदी तूतमाजून में वशलोचन बराबर मिलाके सेव के शर्बत या अनारके शर्बत के साथ देना लाभदायक है और चदन और गुलाब सूंघना लाभदायक है अभिप्राय यह है कि बेहोशी का इलाज करें और सर्द तर प्रकृतिवाले को मसरूदी सूम शहद के पानी या विही की शराब या अंगूरी शराबके साथ दवे और गोश्त का पानी भी शराबके साथ देते हैं [लाभ] सुबात अर्थात अचेत नींद और गशी अर्थात बेहोशी में यह अन्तर है कि गहरी नींदवाले की नाड़ी कभी २ बलवान और निरोग पुरुषों की नाड़ी के समान होती है और मूर्च्छा वालों की नाड़ी निर्बल होती है और गहरी नींदवाला की अपेक्षा कठोर हो तीहै मूर्च्छा में चहरेका रंग पीलापन लिये हुए होता है और गहरीनींदवाले का रंग अपनी दशापर होता है और कभी हरियाली लिये हुए भी होता है जैसा कि पहिले भेद में कहचुके हैं । सके और सुबात में यह अन्तर है कि गहरी नींदवाले का कठिनता से जगा सकतेहैं और उसकी चेष्टा सोनेवालों की चेष्टा के समान हो ती है और उसकी ज्ञानेन्द्रिया यद्यपि मन्द होती हैं तथापि कुछ २ दुरुस्त हो ती हैं । परन्तु यह मसपूत अर्थात सकेवाले के विरुद्धहै क्योंकि उसकी तमाम चेष्टा और इन्द्रियां मुर्देकी भी होजाती हैं (शिक्षा हम्प्य) जहां कहीं दिमाग में कष्टहो तो ठंडापानी पीना और उससे कुल्ले करना हानिकारकहै क्योंकि स्वयं दिमाग की प्रकृति ठंडी है और जो पट्ठे दिमाग से उगे हैं उनकी प्रकृति भी ठंडी है जो चीज उनसे ठंडी होगी और सुद्दम साई जायगी गर्मी गर्मी अवश्यही जायगी और तालू के द्वारा दिमाग का पहुंचेगी और यह गर्मी बाहरी हानि का कारण होगी और जो कष्ट सर्दी से है तो तुरतही हानि मालूम होगी और जो दुख गर्मी से है तो देर के उपरान्त हानि मालूम होगी परन्तु हानि दोनों दशा में है ॥

मर हकीम की सम्मति पर निर्भर है जैसा देखे वैसा वर्ते । दसवाँ यह कि किसी शोक, परिश्रम और कठोर क्रिया के कारण या अधिक मलके निकलने के कारण रूह का जौहर निकलजाय और अधिक निकलने के कारण रूह देह में न फैलसके और अवश्यही जी आराम करना चाहे और दिमागीरूह भी अपना कार्य करने से ठहरजाय यहांतक यह हैवानी अर्थात् दिलकी रूह से सहायता लेवे और जो उससे नष्ट होगया है फिर उतनाही आजाय इसका चिन्ह यह है कि नष्ट करनेवाले कारणों का गहरी नींद के पहले पायाजाना हो और धीरे २ गहरी नींद बेहोशी के साथ उत्पन्न हो [इलाज] गर्मप्रकृति वालेको मांस का पानी गुलाब और मजके पानी में मिलाकर देवे और मगजकी तुलमाजूत में वंशलोचन बराबर मिलाके सेव के शर्बत या अनारके शर्बत के साथ देना लाभदायक है और चंदन और गुलाब सूंघना लाभदायक है अभिप्राय यह है कि बेहोशी का इलाज करे और सर्द तर प्रकृतिवाले को मसरूदी तूम शहद के पानी या विही की शराब या अंगूरी शराबके साथ देवे और गोश्त का पानी भी शराबके साथ देते हैं [लाभ] सुबात अर्थात् अचेत नींद और गशी अर्थात् बेहोशी में यह अन्तर है कि गहरी नींदवाले की नाड़ी कभी २ बलवान् और निरोग पुरुषों की नाड़ी के समान होती है और मूर्च्छा वालों की नाड़ी निर्बल होती है और गहरी नींदवाला की अपेक्षा कठोर हो तीहै मूर्च्छा में चहरेका रंग पीलापन लिये हुए होता है और गहरीनींदवाले का रंग अपनी दशापर होता है और कभी हरियाली लिये हुए भी होता है जैसा कि पहिले भेद में कहचुके हैं । मके और सुबात में यह अन्तर है कि गहरी नींदवाले को कठिनता से जगा सकतेहैं और उसकी चेष्टा सोनेवालों की चेष्टा के समान हो ती है और उसकी ज्ञानेन्द्रिया यद्यपि मन्द होती हैं तथापि कुछ २ कुछ हो ती हैं । परन्तु यह मसपूत अर्थात् सकतेवाले के विरुद्ध है क्योंकि उसकी तमाम चेष्टा और इन्द्रियां मुर्देकी भी होजाती हैं (शिक्षा उत्तम) जहां कहीं दिमाग में कष्ट हो तो ठंडापानी पीना और उससे कुल्ले करना हानिकारक है क्योंकि स्वयं दिमाग की प्रकृति ठंडी है और जो पट्ठे दिमाग से उगे हैं उनकी प्रकृति भी ठंडी है जो चीज़ इनको से ठंडी होगी और सूक्ष्म राहें आवेगी नकसी गर्दी अवश्यही जावेगी और तालू के द्वारा दिमाग का पहुंचेगी और यह गर्दी बाहरी हानि का कारण होगी और जो कष्ट सर्दी से है तो तुरही हानि मालूम होगी और जो दुख गर्मी से है तो देर के उपरान्त हानि मालूम होगी परन्तु हानि दोनों दशा में है ॥

रोगके सब चिन्ह करानीतुम अर्थात् पित्त के सरसाम के से हैं और यह भी जान लेना चाहिये कि कोई २ मनुष्य ऐसे होते हैं जिन के देह में कोई दोष ऐसा निकम्मा होताहै कि जब तक जागता रहे और बैठा रहे तब तक वह दोष ठहरा रहे और जिस समय ऊँघने लगे और सोने का इरादा करें हरारत गरीजी अर्थात् असली हरारत देह के भीतर पचाव और दोषों के पकानेके लिये आरूढ़ हो परन्तु हरारत की शक्ति पूरा न पकासके सिवाय इसके कि दोषों को हिलावें और भाफके परमाणु उठावे और वर्णन किये हुये भाफ के परमाणु जो दिमाग में चढ़आवें और आदमी जल्द जागउठे यद्यपि सोना चाहे नींद न आवे और न केवल ऊँघने से आराम पावे यह भी सहर गुबाती का एक भेद है यह दशा खुश्क प्रकृतिवालों को बहुधा प्रगट हुआ करती है।

बुरे लक्षणों का वर्णन।

इन दोनों रोगों में ऐसा है कि रोगी चित्त पड़ा रहता है खाना पीना भूल जाता है और पानी पीने के समय सांस ऐसा उलटकर आता है कि थोडासा पानी फेंफडे से मुह में आजावे और खांसी उठे और शष कंठ की जगहों में रहकर नाकके रास्ते निकल जाय यह चिन्ह बहुत बुरा है और जानना चाहिये कि कभी ऐसा भी होता है कि पेशाब और दस्त भी बंद हो-जाता है और श्वास तंगी से आता है इसकी दशा इख्तिनाकुर्रहम अर्थात् गर्भ-स्थान के भिंचने की दशाके समान होती है।

इख्तिनाकुर्रहम और सुबात सहरी का अंतर

इन दोनों में यह अन्तर है कि सुबात सहरी में बहुत चौंकाने के उपरांत बात करना और जवाब देना कठिन है और गर्भस्थान के भिंचने की दशा में रोगी का चहरा अपनी प्राकृतिक दशा पर रहता है परन्तु सुबात सहरी में मुह का रंग दोष के अनुसार बदल जाता है और यह रोग पित्त के लक्षणों के वर्तमान होने से सरसाम बलगमी से भिन्न होता है और कफ के चिन्हों के होने से पित्तज सरसाम से भिन्न होता है (सूचना) कभी २ ऐसा भी होता है कि पित्त और कफ बराबर होजाते हैं इस दशा में सोने का समय और जागने का समय बराबर होता है एस ही और भी शष चिन्ह हैं (इलाज) और उभयमिश्रित उपाय यह है कि जो होसके तो प्रथम कफर खोलें और पिंडलियों पर सींगियां खिंचवावें इसलिये कि दिमाग से मादा उतर आवे क्योंकि रुधिर का निकालना इस्तिफराग कुल्ली अर्थात् सारी देही का

रोगके सब चिन्ह करानीतुम अर्थात् पित्त के सरसाम के से हैं और यह भी जान लेना चाहिये कि कोई २ मनुष्य ऐसे होते हैं जिन के देह में कोई दोष ऐसा निकम्मा होताहै कि जब तक जागता रहे और बैठा रहे तब तक वह दोष ठहरा रहे और जिस समय ऊंघने लगे और सोने का इरादा करें हरारत गरीजी अर्थात् असली हरारत देह के भीतर पचाव और दोषों के पकानेके लिये आरूढ हो परन्तु हरारत की शक्ति पूरा न पकासके सिवाय इसके कि दोषों को हिलावें और भाफके परमाणु उठावे और वर्णन किये हुये भाफ के परमाणु जो दिमाग में चढआवें और आदमी जल्द जागउठे बहुतेरा सोना चाहे नींद न आवे और न केवल ऊंघने से आराम पावे यह भी सहर मुबाती का एक भेद है यह दशा खुश्क प्रकृतिवालों को बहुधा प्रगट हुआ करती है।

बुरे लक्षणों का वर्णन।

इन दोनों रोगों में ऐसा है कि रोगी चित पड़ा रहता है खाना पीना भूल जाता है और पानी पीने के समय सांस ऐसा उलटकर आता है कि थोडासा पानी फेंफडे से मुह में आजावे और खांसी उठे और शेष कंठ की जगहों में रहकर नाकके रास्ते निकल जाय यह चिन्ह बहुत बुरा है और जानना चाहिये कि कभी ऐसा भी होता है कि पेशाब और दस्त भी बंद हो-जाता है और श्वास तंगी से आता है इसकी दशा इख्तिनाकुर्रहम अर्थात् गर्भस्थान के खिंचने की दशाके समान होती है।

इख्तिनाकुर्रहम और सुबात सहरी का अंतर

इन दोनों में यह अन्तर है कि सुबात सहरी में बहुत चौंकाने के उपरांत बात करना और जवाब देना कठिन है और गर्भस्थान के खिंचने की दशा में रोगी का चेहरा अपनी प्राकृतिक दशा पर रहता है परन्तु सुबात सहरी में मुह का रंग दोष के अनुसार बदल जाता है और यह रोग पित्त के लक्षणों के वर्तमान होने से सरसाम बलगमी से भिन्न होता है और कफ के चिन्हों के होने से पित्तज सरसाम से भिन्न होता है (खुलासा) कभी २ ऐसा भी होता है कि पित्त और कफ बराबर होजातेहैं इस दशा में सोने का समय और जागने का समय बराबर होता है एक ही और भी सब चिन्ह हैं (इलाज) और उभयमिश्रित उपाय यह है कि जो होसके तो प्रथम फस्द खोलें और पिंडलियों पर सींगियां खिंचवावें इसलिये कि दिमाग से मादा उतर आवे यद्यपि रुधिर का निकालना इस्तिफराग कुल्ली अर्थात् सारा दोषों का

में श्वास बन्द होजाय औ जमूदके विरुद्ध गहरी नींद वाले की आँखें बन्द रहती हैं और इस में बहुधा खुली रहतीहैं सुबात में गहरी नींद बहुत धीरे पडतीहै और जमूद अचानक पैदा होजातीहै । सुबात में नाड़ी नर्म होती है और जमूद में सुस्त और कड़ी और सुबात रोगी कठिने से काम करसकता है और कभी २ जवाब भी देसकताहै परन्तु जमूदवाला रोगी कभी कुछ काम नहीं करसकताहै ॥

जमूद और सकते का अन्तर ।

जमूदवाले के गलेमें कोई चीज नहीं जासकतीहै और सक्ते वाले के गले में जासकती है और सक्तेवाला सीधा चित्त सोता रहताहै परन्तु जमूद वालेकी यह दशा नहीं होती क्योंकि यह रोग एकही दशामें नहीं होताहै जैसा कि ऊपर लिखागयाहै जिस दशा में आदमी हो उसी दशामें रोग के आक्रमण करने से निश्चेष्टित और सज्ञाहीन हो जाता है जमूद और सक्ते की दशा लगभग एकसी है ॥

जमूद और ठंडे सरसाम का अन्तर ।

जमूद में ज्वर नहीं होता और सरसाम में ज्वर का होना अवश्य है और इनमें अन्तर प्रगट है क्योंकि सरसाम कभी इस दशा को नहीं पहुंचता कि बीमार मुर्दे की सी सूरतका या निश्चेष्टित होजाय (इलाज) दिमाग की सफाई के लिये सौदा के निकालनेवाली दवाओं से हुकना करें और हुकने में बीमार की प्रकृति पर ध्यान रक्खे जैसे जो प्रकृति बलवान् हो तो अफतीमून (आकाशबेल) और तिन्कायम (खरवाली एक लकड़ी) और हरड काबुली और गारीकून ऐसी ही चीजों से हुकना करें और नहीं तो गेहूं की भूसी और खुबकला के पत्ते औटाकर या बिना औटाये इसका पानी निकालें और तिली का तेल और थोड़ीसी सुरख़ इरमनी और इन्द्रायन का गूदा मिलाकर देवें और चैतन्य होने पर जो रोगी बलवान् हो तो बाद की गोलियों से और यारजों और सौदा के निकालने वाले काढ़ों से मलको निकालें और जो रोगी निर्बल हो तो चेत होनेपरभी केवल नर्म हुकनों का प्रयोग करें और इस रोग में पापूना और नूफाय सुरंज और अकलीलुल मलिक अर्थात् पस, सफ और सोया जगमें प्याज के सिरके के साथ मिलाकर सिरके सिरमें और नेद फरना लाभदायक है चाहे चेत होने से पहले लगाया जाय या पीछे भी और ऐसे ही गर्म तेल जैसे बैनका तेल और बुनकी [मुराद] होनायार

में श्वास बन्द होजाय औ जमूदके विरुद्ध गहरी नींद वाले की आंखें बन्द रहती हैं और इस में बहुधा खुली रहतीहैं सुबात में गहरी नींद बहुत धीरे घटतीहै और जमूद अचानक पैदा होजातीहै । सुबात में नाड़ी नर्म होती है और जमूद में सुस्त और कड़ी और सुबात रोगी कठिने से काम करसकता है और कभी २ जवाब भी देसक्ताहै परन्तु जमूदवाला रोगी कभी कुछ काम नहीं करसकताहै ॥

जमूद और सकते का अन्तर ।

जमूदवाले के गलेमें कोई चीज नहीं जासकतीहै और सक्ते वाले के गले में जासकती है और सक्तेवाला सीधा चित सोता रहताहै परन्तु जमूद वालेकी यह दशा नहीं होती क्योंकि यह रोग एकही दशामें नहीं होताहै जैसा कि ऊपर लिखागयाहै जिस दशा में आश्चर्य हो उसी दशामें रोग के आक्रमण करने से निश्चेष्टित और सज्ञाहीन हो जाता है जमूद और सक्ते की दशा लगभग एकसी है ॥

जमूद और ठंडे सरसाम का अन्तर ।

जमूद में ज्वर नहीं होता और सरसाम में ज्वर का होना अवश्य है और इनमें अन्तर प्रगट है क्योंकि सरसाम कभी इस दशा को नहीं पहुंचता कि बीमार मुर्दे की सी सूरतका या निश्चेष्टित होजाय (इलाज) दिमाग की सफाई के लिये सौदा के निकालनेवाली दवाओं से हुकना करें और हुकने में बीमार की प्रकृति पर ध्यान रक्खें जैसे जो प्रकृति बलवान् हो तो अफतीमून (आकाशबेल) और बिस्फायज (खपाली एक लकड़ी) और हरड़ काबुली और गारीकून ऐसी ही चीजों से हुकना करें और नहीं तो गेहूं की भूसी और चुकन्दर के पत्ते औटाकर या बिना औटाये इसका पानी निकालें और तिल्ली का तेल और थोड़ीसी सूरप इयरजी और इन्द्रायन का गूदा पिलाकर दें और चैतन्य होने पर जो रोगी बलवान् हो तो भाई की शाखियों से और यारजों और सौदा के निकालने वाले काढ़ों से मलको निकालें और जो रोगी निर्बल हो तो चेत होनेपरभी केवल नर्म हुकनों का प्रयोग करें और इस रोग में यापुना और तूफाय सुउर और अकलीलुल मलिक अर्थात् पर सफ और सोसन आदमी प्याज के सिरके के साथ मिलाकर सिरके निचोड़ी और लेप करना लाभदायक है चाहे चेत होने से पहले लगाया जाय या पीछे भी और ऐसे ही गर्म तेल जैसे नीलोफर तेल और तुलसी [सुदाब] बाबूना

उपाय झुकने और जुलाबकी दवाओं के पीछे करें और पूरी रीतिसे स्वच्छ होनेके पीछे प्रकृति को निज दशा पर लाने के लिये चूरए इस्मनी जुन्दे बेद स्तर, राई और सुहाव जगली पीसकर जगली प्याज़ का बना हुआ सिर्का और सन का तेल मिलाकर सिरके पिछले भाग पर लेप करें तथा जुन्दे-बेद्स्तर पीसकर सौसन के तेलमें मिलाकर मलें और जिन गर्म माजूनों में भिलावा और वच हो उनका सेवनकरें ॥

गर्म माजूनकी विधि ।

भिलावा ३१॥ माशे, एलुआ २७० माशे, गारीकून १०८ माशे, तज,वच, जरावन्दमुदहरिंज, (एक कड़वी जड़है यह दो किस्मका होताहै) केसर, दालचीनी और मस्तगी प्रत्येक २७ माशे, अफ्तीमून ३१॥ माशे और शहद आवश्यकतानुसार लेकर माजून बनालेवे यह बहुत गुणदायक होतीहै ॥

(सूचना) वह सिरका और सिकनबीन जो जगली प्याज के सिरके से बनतेहैं इस बीमारीमें बहुत लाभदायकहैं ॥

दूसरी बात यहहै दिमाग के पिछले भाग मे सर्दी और खुश्की ऐसी अधिक होजाय कि उसको मोमकी तरह कड़ा करदे और इस कारण से कोई बात उसमें न ठहर सके । यह रोग पहले की अपेक्षा कम पाया जाताहै ।

उक्तरोग का लक्षण ।

नींद का न आना, दिमाग के पिछले भाग में खुश्की होना ये लक्षण होते हैं तथा रोगी कठिनता से और रुक रुककर बोलता है उसे अपना गला घुटा हुआसा मालूम होता है और सिर पीछेको खिंचाहुआ मालूम होता है । (इलाज) तरी और गर्मी पहुचाने के [illegible] पक्षियों [illegible] गोस्त तथा बकरी के मांस का शोर्वा देवें । [illegible] नर्गीसका [illegible] का तेल और बाबूना का तेल सिरके पिछले [illegible] और यह [illegible] के पकेहुए पावे, बाबूना [illegible] और बनफ्शा [illegible] करके [illegible]

कभी २ साधा[illegible] यह रो[illegible] [illegible]

लक्षण उक्त दोनों [illegible] होते [illegible] इला[illegible]

होता है ।

दूसरा[illegible]

यहां क्रिया के अनेक [illegible]

शक्ति, बोधशक्ति आदि [illegible]

उपाय झुकने और जुलाबकी दवाओं के पीछे करें और पूरी रीतिसे स्वच्छ होनेके पीछे प्रकृति को निज दशा पर लाने के लिये यूरए इस्मनी जुन्दे वेद स्तर, राई और सुदाव जगली पीसकर जगली प्याज का बना हुआ सिर्का और सन का तेल मिलाकर सिरके पिछले भाग पर लेप करें तथा जुन्दे-वेदस्तर पीसकर सौसन के तेलमें मिलाकर मलें और जिन गर्म माजूनों में भिलावा और वच हो उनका सेवनकरें ॥

गर्म माजूनकी विधि ।

भिलावा ३१॥ मासे, एलुआ २७० मासे, गारीकून १०८ मासे, तज,वच, जरावन्दमुदहर्रिज, (एक कडवी जडहै यह दो किस्मका होताहै) केसर, दालचीनी और मस्तगी प्रत्येक २७ मासे, अफतीमून ३१॥ मासे और शहद आवश्यकतानुसार लेकर माजून बनालेवे यह बहुत गुणदायक होतीहै ॥

(सूचना) वह सिरका और शिकनवीन जो जगली प्याज के सिरके से बनतेहैं इस बीमारीमें बहुत लाभदायकहैं ॥

दूसरी बात यहहै दिमाग के पिछले भाग मे सर्दी और खुश्की ऐसी अधिक होजाय कि उसको मोमकी तरह कडा करदे और इस कारण से कोई बात उसमें न ठहर सके । यह रोग पहले की अपेक्षा कम पाया जाताहै ।

उक्तरोग का लक्षण ।

नींद का न आना, दिमाग के पिछले भाग में खुश्की होना ये लक्षण होते हैं तथा रोगी कठिनता से और रुक रुककर बोलता है उसे अपना गला घुटा हुआसा मालूम होता है और सिर पीछेको खिंचताहुआ मालूम होता है । (इलाज) तरी और गर्मी पहुचाने के लि[illegible] पक्षियों [illegible] मांस तथा बकरी के मांस का शोरवा देवे । [illegible] नलीरा [illegible] का

उपाय काम में लावें। (लाभ) यद्यपि चिंताका उपद्रव वास्तव में स्मरणशक्ति का नाश नहीं है क्योंकि नासियान जिसको भूलजाना कहते हैं यहां नहीं पाया जाता परन्तु जब कि गूढ़ अर्थों से फल निकालना और विद्या के अर्थों का जानना बोधशक्ति की हीनता से नहीं होसकता इसलिये साधारण रीति से इसको नासियानका भेद मानलिया है और बहुत से हकीम उस विचारहीनता को जो घरके काम और स्वभावों में हो उसे हुमुक अर्थात् मूर्खता कहते हैं और जो विद्या सबन्धी तथा गूढार्थों के समझने में हो उसको बलादत अर्थात् शठता कहते हैं*

तीसरी किस्म फसादि तखय्युल अर्थात बुरे विचारोंके वर्णनमें

यह दो प्रकार का है (१) विचार के कामों में निर्बलता और कमी आजाना (२) विचारका सर्वथा मिथ्या होजाना॥ और विचारके काम यह हैं कि उन सूरतों को जो बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जानी हों और उन सूरतों को जोकि ज्ञानेन्द्रियों में इकठ्ठी होगई हों और उन जानी हुई सूरतों को जो इन ज्ञानेन्द्रियों से छिप जांय उन सब को ज्यों का त्यों मौजूद करदे यही अर्थ विचार का है॥ और विचार के कार्य में कमी होने का यह चिन्ह है कि आदमी को स्वप्न बहुत कम दीखें और जो दीखें भी तो जागने पर उनको भूल जाय और इसी तरह जिनको बाह्य इन्द्रियों के द्वारा जाना है याद न रख सके और विचार के नष्ट होने का यह लक्षण है कि कभी स्वप्न न देखे और जो कभी देखे तो कदापि याद न रहे और बाह्येन्द्रियों के द्वारा जिन पदार्थों का ज्ञान हुआ है उनके अलग होते ही उनको भूल जाय जैसे बात के मुख से निकलते ही भूल जाय और याद न रहे कि क्या कहता था और ऐसेही वस्तुओं को दृष्टि से अलग होते ही उसी समय भूल जाय।

---

* प्रत्यक्षमें स्मरणशक्ति और विचारशक्ति में बहुत कम अंतर मालूम होता है इससे इनका पृथक् २ वर्णन करते हैं स्मरणशक्तिका यह काम है कि विचारशक्ति जिन सूक्ष्म अर्थोंको बाह्येन्द्रियों द्वारा उसके पास लेजाती है उन्हें याद रक्खे, जैसे दृष्टिने सिंह देखा तब विचारशक्तिने आज्ञादी कि यह शत्रु है और इस शत्रुता के अर्थको स्मरणशक्तिने याद रक्खा है, परन्तु उन सब बातों का याद रखना जो बाह्येन्द्रियों द्वारा ज्ञातहुई हैं अथवा उसके सम्पूर्ण अर्थको यादरखना(जैसेसिंहकी सूरत या सिंहोंमें शत्रुता होना) स्मरणशक्तिका काम नहीं है। स्मरणशक्ति का काम तो केवल याद रखना है क्योंकि सम्पूर्ण अर्थोंके जाननेका दोषबुद्धि है और मनुष्य उनका ज्ञात है बाह्येन्द्रियों के द्वारा जानी हुई वस्तुओं की रक्षा करना विचारशक्ति का काम है जैसा ऊपर वर्णन किया गया है।

उपाय काम में लावें । (लाभ) यद्यपि चिंताका उपद्रव वास्तव में स्मरणशक्ति का नाश नहीं है क्योंकि नासियान जिसको भूलजाना कहते हैं यहां नहीं पाया जाता परन्तु जब कि गूढ़ अर्थों से फल निकालना और विद्या के अर्थों का जानना बोधशक्ति की हीनता से नहीं होसकता इसलिये साधारण रीति से इसको नासियानका भेद मानलिया है और बहुत से हकीम उस विचारहीनता को जो घरके काम और स्वभावों में हो उसे हुमूक अर्थात् मूर्खता कहते हैं और जो विद्या सबन्धी तथा गूढार्थों के समझने में हो उसको बलादत अर्थात् शठता कहते हैं॥

तीसरी किस्म फसादे तखय्युल अर्थात बुरे विचारोंके वर्णनमें

यह दो प्रकार का है (१) विचार के कामों में निर्बलता और कमी आजाना (२) विचारका सर्वथा मिथ्या होजाना ॥ और विचारके काम यह हैं कि उन सूरतों को जो बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जानी हों और उन सूरतों को जोकि ज्ञानेन्द्रियों में इकट्ठी होगई हों और उन जानी हुई सूरतों को जो इन ज्ञानेन्द्रियों से छिप जांय उन सब को ज्यों का त्यों मौजूद करदें यही अर्थ विचार का है ॥ और विचार के कार्य में कमी होने का यह चिन्ह है कि आदमी को स्वप्न बहुत कम दीखें और जो दीखें भी तो जागने पर उनको भूल जाय और इसी तरह जिनको बाह्य इन्द्रियों के द्वारा जाना है याद न रख सके और विचार के नष्ट होने का यह लक्षण है कि कभी स्वप्न न देखे और जो कभी देखे तो कदापि याद न रहे और बाह्येन्द्रियों के द्वारा जिन पदार्थों का ज्ञान हुआ है उनके अलग होते ही उनको भूल जांय जैसे बात के मुख से निकलते ही भूल जाय और याद न रहे कि क्या कहता था और ऐसेही वस्तुओं को दृष्टि से अलग होते ही उसी समय भूल जाय ।

---

* प्रत्यक्षमें स्मरणशक्ति और विचारशक्ति में बहुत कम अंतर मालूम होता है इससे इनका पृथक् २ वर्णन करते हैं स्मरणशक्तिका यह काम है कि विचारशक्ति जिन सूक्ष्म अर्थोंको बाह्येन्द्रियों द्वारा उसके पास लेजाती है उन्हें याद रक्खे, जैसे दृष्टिने सिंह देखा तब विचारशक्तिने आज्ञादी कि यह शत्रु है और इस शत्रुता के अर्थको स्मरणशक्तिने याद रक्खा है, परन्तु उन सब बातों का याद रखना जो बाह्येन्द्रियों द्वारा ज्ञातहुई हैं अथवा उसके सम्पूर्ण अर्थको यादरखना(जैसेसिंहकी सूरत या सिंहमें शत्रुता होना) स्मरणशक्तिका काम नहीं है । स्मरणशक्तिका काम तो केवल याद रखना है क्योंकि सम्पूर्ण अर्थोंके जाननेका दोषबुद्धि है और मनुष्य उनका ज्ञात है बाह्येन्द्रियों के द्वारा जानी हुई वस्तुओं की रक्षा करना विचारशक्ति का काम है जैसा ऊपर वर्णन किया गया है ।

उपाय काम में लावें । (लाभ) यद्यपि चिंताका उपद्रव वास्तव में स्मरणशक्ति का नाश नहीं है क्योंकि नासियान जिसको भूलजाना कहते हैं यहां नहीं पाया जाता परन्तु जब कि गूढ़ अर्थों से फल निकालना और विद्या के अर्थों का जानना बोधशक्ति की हीनता से नहीं होसकता इसलिये साधारण रीति से इसको नासियानका भेद मानलिया है और बहुत से हकीम उस विचारहीनता को जो घरके काम और स्वभावों में हो उसे हुमुक अर्थात् मूर्खता कहते हैं और जो विद्या संबन्धी तथा गूढार्थों के समझने में हो उसको बलादत अर्थात् शठता कहते हैं॥

तीसरी किस्म फसादि तखय्युल अर्थात बुरे विचारोंके वर्णनमें

यह दो प्रकार का है (१) विचार के कामों में निर्बलता और कमी आजाना (२) विचारका सर्वथा मिथ्या होजाना ॥ और विचारके काम यह हैं कि उन सूरतों को जो बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जानी हों और उन सूरतों को जोकि ज्ञानेन्द्रियों में इकट्ठी होगई हों और उन जानी हुई सूरतों को जो इन ज्ञानेन्द्रियों से छिप जांय उन सब को ज्यों का त्यों मौजूद करदे यही अर्थ विचार का है ॥ और विचार के कार्य में कमी होने का यह चिन्ह है कि आदमी को स्वप्न बहुत कम दीखें और जो दीखें भी तो जागने पर उनको भूल जाय और इसी तरह जिनको बाह्य इन्द्रियों के द्वारा जाना है याद न रख सके और विचार के नष्ट होने का यह लक्षण है कि कभी स्वप्न न देखे और जो कभी देखे तो कदापि याद न रहे और बाह्येन्द्रियों के द्वारा जिन पदार्थों का ज्ञान हुआ है उनके अलग होते ही उनको भूल जांय जैसे बात के मुख से निकलते ही भूल जाय और याद न रहे कि क्या कहता था और ऐसेही वस्तुओं को दृष्टि से अलग होते ही उसी समय भूल जाय ।

---

* प्रत्यक्षमें स्मरणशक्ति और विचारशक्ति में बहुत कम अंतर मालूम होता है इससे इनका पृथक् २ वर्णन करते हैं स्मरणशक्तिका यह कामहै कि विचारशक्ति जिन सूक्ष्म अर्थोंको बाह्येन्द्रियों द्वारा उसके पास लेजाती है उन्हें याद रक्खे, जैसे दृष्टिने सिंह देखा तब विचारशक्तिने आज्ञादी कि यह शत्रु है और इस शत्रुता के अर्थको स्मरणशक्तिने याद रक्खा है, परन्तु उन सब बातों का याद रखना जो बाह्येन्द्रियों द्वारा ज्ञातहुई हैं अथवा उसके सम्पूर्ण अर्थको यादरखना(जैसेसिंहकी सूरत वा सिंहमें शत्रुता होना) स्मरणशक्तिका काम नहीं है । स्मरणशक्तिका काम तो केवल याद रखनाहै क्योंकि सम्पूर्ण अर्थके जाननेका दोषबुद्धिहै और मनुष्य उनका ज्ञात है बाह्येन्द्रियों के द्वारा जानी हुई वस्तुओं की रक्षा करना विचारशक्ति का काम है जैसा ऊपर वर्णन किया गया है ।

उपाय काम में लावें । (लाभ) यद्यपि चिंताका उपद्रव वास्तव में स्मरणशक्ति का नाश नहीं है क्योंकि नासियान जिसको भूलजाना कहते हैं यहा नहीं पाया जाता परन्तु जब कि गूढ़ अर्थों से फल निकालना और विद्या के अर्थों का जानना बोधशक्ति की हीनता से नहीं होसकता इसलिये साधारण रीति से इसको नासियानका भेद मानलिया है और बहुत से हकीम उस विचारहीनता को जो घरके काम और स्वभावों में हो उसे हुमुक अर्थात् मूर्खता कहते हैं और जो विद्या संबन्धी तथा गूढार्थों के समझने में हो उसको बलादत अर्थात् शठता कहते हैं*

तीसरी किस्म फसादि तखय्युल अर्थात् बुरे विचारोंके वर्णनमें

यह दो प्रकार का है (१) विचार के कामों में निर्बलता और कमी आजाना (२) विचारका सर्वथा मिथ्या होजाना ॥ और विचारके काम यह है कि उन सूरतों को जो बाह्य ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जानी हों और उन सूरतों को जोकि ज्ञानेन्द्रियों में इकट्ठी होगई हों और उन जानी हुई सूरतों को जो इन ज्ञानेन्द्रियों से छिप जांय उन सब को ज्यों का त्यों मौजूद करदे यही अर्थ विचार का है ॥ और विचार के कार्य में कमी होने का यह चिन्ह है कि आदमी को स्वप्न बहुत कम दीखें और जो दीखें भी तो जागने पर उनको भूल जाय और इसी तरह जिनको बाह्य इन्द्रियों के द्वारा जाना है याद न रख सके और विचार के नष्ट होने का यह लक्षण है कि कभी स्वप्न न देखे और जो कभी देखे तो कदापि याद न रहे और बाह्येन्द्रियों के द्वारा जिन पदार्थों का ज्ञान हुआ है उनके अलग होते ही उनको भूल जांय जैसे बात के मुख से निकलते ही भूल जाय और याद न रहै कि क्या कहता था और ऐसेही वस्तुओं को दृष्टि से अलग होते ही उसी समय भूल जाय ।

---

* प्रत्यक्षमें स्मरणशक्ति और विचारशक्ति में बहुत कम अंतर मालूम होता है इससे इनका पृथक् २ वर्णन करते हैं स्मरणशक्तिका यह कामहै कि विचारशक्ति जिन सूक्ष्म अर्थोंको बाह्येन्द्रियों द्वारा उसके पास लेजाती है उन्हें याद रक्खे, जैसे दृष्टिने सिंह देखा तब विचारशक्तिने आज्ञादी कि यह शत्रु है और इस शत्रुता के अर्थको स्मरणशक्तिने याद रक्खा है, परन्तु उन सब बातों का याद रखना जो बाह्येन्द्रियों द्वारा ज्ञातहुई हैं अथवा उसके सम्पूर्ण अर्थको यादरखना(जैसेसिंहकी सूरत वा सिंहमें शत्रुता होना) स्मरणशक्तिका काम नहीं है । स्मरणशक्तिका काम तो केवल याद रखनाहै क्योंकि सम्पूर्ण अर्थोंके जाननेका बोधबुद्धिहै और मनुष्य उनका ज्ञाता है बाह्येन्द्रियों के द्वारा जानी हुई वस्तुओं की रक्षा करना विचारशक्ति का काम है जैसा ऊपर वर्णन किया गया है ।

सी शक्ति अर्थात् इन्द्री है कि जो कुछ पाचों प्रत्यक्ष इन्द्रियों से मालूम होता है वह उसमें पहुंचता है इस कारण से उसको मुश्तरिक कहते हैं उसका स्थान दिमाग के पहिले भाग में है और दूसरी विचारशक्ति है यह हिस्से मुश्तरिक का कोष है क्योंकि जो कुछ उसे मिलता है उसे वह विचारशक्ति को सौंप देती है और उसका स्थान दिमागके अगले पर्देका पिछला भाग है। अभिप्राय यह है कि यह दोनों शक्तियां तो दिमाग के आगे के भाग में हैं और विचार के कार्य का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं तीसरी "कुव्वते मुतखय्यला" है इसको मुतर्सिफा भी इस कारण से कहते हैं कि वह सूरतें जो प्रत्यक्ष इन्द्रियों के द्वारा विचार में मौजूद हैं उनमें यह अपना अमल करे और यह अमल करना इस प्रकार से हो कि एक विद्यमान पदार्थ में अविद्यमान को मिलादेवे जैसा कि किसी आदमी को दो सिर का समझलवे अथवा अलग करदेवे जैसा कि किसी मनुष्यको बे सिरका समझना और ये बातें विचारके उपद्रवमें वर्णन होचुकी हैं और इसप्रकारके कार्य इस शक्तिकी उस दशामें हैं कि जब वहम अर्थात् चंचलचित्तता खयाली सूरतों और सूक्ष्म अर्थोंमें इससे सहायता लेताहो क्योंकि जब यह शक्ति बुद्धि और नफ्स नातका की आज्ञा पालन करती है तब इसका नाम "मुतफक्किरा" होजाता है और इस शक्ति का नफ्सनातका अर्थात् बोलता पुरुष की खिदमत करना सिवाय मनुष्य के और किसी जानदार में नहीं होता इसी लिये "कुव्वते मुतफक्किरा" अर्थात् विचारशक्ति सिवाय मनुष्य के और किसी जानदार में नहीं पाई जाती है और चिन्ता के उपद्रवों का वर्णन पृथक् किया गया है इस शक्ति का स्थान वहम और खयाल के बीच में है। (चौथी) शक्ति वहम है और वह ऐसी शक्ति है कि उन सूक्ष्म अर्थों को जो प्रत्यक्ष इन्द्रियों से संबंध रखतेहैं पहचान लेवे जैसा कि दोस्त की दोस्ती और दुश्मन की दुश्मनी, और इसी शक्ति के कारण बकरी भेड़िये को देखते ही भागती है और जिसको प्यार करती है उसकी तरफ आती है और इस शक्ति का स्थान दिमाग के बीच के पर्दे में है। पांचवीं "कुव्वते हाफ्ज़ा" अर्थात् हर्याफ्त करने वाली शक्ति यह ऐसी शक्ति है कि उन अर्थों को याद रखती है जो विचारशक्ति और मन की चंचलता से उत्पन्न हुए हैं और इसी शक्ति को मुतज़क्किरा भी कहते हैं क्योंकि यह भूली हुई चीजों को याद लाती है और यह-कुव्वत हाफ़ज़ा "मुतवहिमा" और मुतखय्यला का खजाना है और इस

सी शक्ति अर्थात् इन्द्री है कि जो कुछ पाचों प्रत्यक्ष इन्द्रियों से मालूम होता है वह उसमें पहुंचता है इस कारण से उसको मुश्तरिक कहते हैं उसका स्थान दिमाग के पहिले भाग में है और दूसरी विचारशक्ति है यह हिस्से मुश्तरिक का कोष है क्योंकि जो कुछ उसे मिलता है उसे वह विचारशक्ति को सौंप देती है और उसका स्थान दिमागके अगले पर्देका पिछला भाग है। अभिप्राय यह है कि यह दोनों शक्तियां तो दिमाग के आगे के भाग में हैं और विचार के कार्य का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं तीसरी "कुव्वते मुतखय्यला" है इसको मुसर्रिफा भी इस कारण से कहते हैं कि वह सूरतें जो प्रत्यक्ष इन्द्रियों के द्वारा विचार में मौजूद हैं उनमें यह अपना अमल करे और यह अमल करना इस प्रकार से हो कि एक विद्यमान् पदार्थ में अविद्यमान को मिलादेवे जैसा कि किसी आदमी को दो सिर का समझलेवे अथवा अलग करदेवे जैसा कि किसी मनुष्यको बे सिरका समझना और ये बातें विचारके उपद्रवमें वर्णन होचुकी हैं और इसप्रकारके कार्य इस शक्तिकी उस दशामें है कि जब वहम अर्थात् चचलचित्तता खयाली सूरतों और सूक्ष्म अर्थोमें इससे सहायता लेताहो क्योंकि जब यह शक्ति बुद्धि और नफ्स नातका की आज्ञा पालन करती है तब इसका नाम "मुतफक्किरा" होजाता है और इस शक्ति का नफसनातका अर्थात् बोलता पुरुष की खिदमत करना सिवाय मनुष्य के और किसी जानदार में नहीं होता इसी लिये "कुव्वते मुतफक्किरा" अर्थात् विचारशक्ति सिवाय मनुष्य के और किसी जानदार में नहीं पाई जाती है और चिन्ता के उपद्रवों का वर्णन पृथक् किया गया है इस शक्ति का स्थान वहम और खयाल के बीच में है। (चौथी) शक्ति वहम है और वह ऐसी शक्ति है कि उन सूक्ष्म अर्थों को जो प्रत्यक्ष इन्द्रियों से सबध रखतेहैं पहचान लेवे जैसा कि दोस्त की दोस्ती और दुश्मन की दुश्मनी, और इसी शक्ति के कारण बकरी भेड़िये का देखते ही भागती है और जिसको प्यार करती है उनकी तरफ आती है और इस शक्ति का स्थान दिमाग के बीच के पर्दे में है। पांचवीं "कुव्वते हाफजा" अर्थात् रक्षा करने वाली शक्ति यह ऐसी शक्ति है कि उन अर्थों को याद रखती है जो विचारशक्ति और मन की चंचलता से उत्पन्न हुए हैं और इसी शक्ति को मुतजक्किरा भी कहते हैं क्योंकि यह भूली हुई चीजों को याद करती है और यह कुव्वत हाफजा "मुतसर्रिमा" और मुतखय्यला का खजाना है और इस

और नाड़ी कठोर हो और एकसी न हो उसकी यह दशा है कि नाड़ी की चाल और स्थिति एक दूसरे के बराबर न हो और बहुतसा परिश्रम का पहले हो चुकना भी इसका चिन्ह है और कभी देह का रंग स्याही लिये हुए होता है और मूत्र साफ और सफेद होता है। और मूत्र की स्वच्छता पकने से पहले होती है पकने पर कालापन आ जाता है और यह भेद सब भेदों से साध्य है क्योंकि दोष विशेष करके किसी एक अंग में नहीं होता है, और इन के सूक्ष्म लक्षण हेतु के अनुसार होते हैं जैसे बहकना, हंसना, प्रसन्नता, आंखों में लाली, रगों में भारापन नाड़ी में गहूरता और तेजी तथा देह और चहरे के रंग का ललाई लिये हुए काला होना ये सब रक्त वात के चिन्ह हैं इन सब बातों के होने पर भी जो रोगी युवा हो और उसके देह से मामूली—रुधिर का निकलना बंद हो जाय तथा गर्मी और तरी पैदा करनेवाले उपाय भी पहिले काम में लाये गये हो तो ये सब काम रुधिर के जलने के चिन्ह हैं। और सोच में रहना, चिन्ता करना, डरना, भय, बुरे २ विचारों का उत्पन्न होना और अकेले बैठे रहना उस वादी के लक्षण हैं जो प्राकृतिक वादी के जल जाने से पैदा होती है और प्राकृतिक वादी के जल जाने की कैद इस लिये लगाई है कि अप्राकृतिक वादी के जल जाने से उन्मत्तता हो जाती है। और अधिक तेजी, स्वभाव का बिगड़ना, बहकना, चिल्लाना, घबराहट, जागना, कम ठहरना, क्रोध बहुत करना, छूने से देह का गर्म मालूम होना रंग का पीला होना पशुओं की तरह देखना और पागल हो जाना उस वादी के लक्षण हैं जो पित्त के जलने से पैदा होती है तथा गर्म और खुश्क उपाय प- हले बर्ताव में आये हैं। यहां जिस उन्मत्तता का वर्णन किया गया है *इस उस उन्मत्तता का ग्रहण है जो निकम्मे दोषों से उत्पन्न हुई हो। इधर उधर उच कना, थकना, सुस्ती, ठहरजाना छूने से गर्मी का कम मालूम होना ये उस वादी के लक्षण हैं जो कफ * के जलने से उत्पन्न हो ॥

(इलाज) सूनी में हफ्त अदाम (वह रग जो तर्जनी से कोहनी के पास तक चलीगई है) और बासलीक (वह रग जो मध्यमा से कोहनी तक चली गई है) की फस्द खोलें और जो स्त्रियों का मासिक रुधिर बंद होजाना रोग मालीखोलिया के उत्पन्न होने का कारण हो तो रगें साफिन अर्थात्

* दोषों के जलने का यह अर्थ है कि उस दोष की प्रकृति में गर्मी आ जाय और जो हलका भाग है वह नष्ट होजाय और गाढ़ा बचा रहे और सौदाय गैर तबई भी इसी को कहते हैं यहांतक कि सौदाय तबई जो जलजाय तो वह भी सौदाय गैर तबई हो जायगा जैसा कि हकीमों ने कहा है जो दोष जलता है सौदाय गैरतबई हो जाता है ॥

और नाड़ी कठोर हो और एकसी न हो उसकी यह दशा है कि नाड़ी की चाल और स्थिति एक दूसरे के बराबर न हो और बहुतसा परिश्रम का पहले हो चुकना भी इसका चिन्ह है और कभी देह का रंग स्याही लिये हुए होता है और मूत्र साफ और सफेद होता है। और मूत की स्वच्छता पकने से पहले होती है पकने पर कालापन आ जाता है और यह भेद सब भेदों से साध्य है क्योंकि दोष विशेष करके किसी एक अंग में नहीं होता है, और इन के सूक्ष्म लक्षण हेतु के अनुसार होते हैं जैसे बहकना, हसना, प्रसन्नता, आंखों में लाली, रगों में भारापन नाड़ी में गहरता और तेजी तथा देह और चहरे के रंग का ललाई लिये हुए काला होना ये सब रक्त ज्ञात के चिन्ह हैं इन सब बातों के होने पर भी जो रोगी युवा हो और उसके देह से मामूली—रुधिर का निकलना बंद हो जाय तथा गर्मी और तरी पैदा करनेवाले उपाय भी पहिले काम में लाये गये हो तो ये सब काम रुधिर के जलने के चिन्ह हैं। और सोच में रहना, चिन्ता करना, डरना, भय, बुरे २ विचारों का उत्पन्न होना और अकेले बैठे रहना उस वादी के लक्षण हैं जो प्राकृतिक वादी के जल जाने से पैदा होती है और प्राकृतिक वादी के जल जाने की कैद इस लिये लगाई है कि अप्राकृतिक वादी के जल जाने से उन्मत्तता हो जाती है। और अधिक तेजी, स्वभाव का बिगड़ना, बहकना, चिल्लाना, घबराहट, जागना, कम ठहरना, क्रोध बहुत करना, छूने से देह का गर्म मालूम होना रंग का पीला होना पशुओं की तरह देखना और पागल हो जाना उस वादी के लक्षण हैं जो पित्त के जलन से पैदा होती है तथा गर्म और खुश्क उपाय पहले बर्ताव में आये हैं। यहां जिस उन्मत्तता का वर्णन किया गया है उस उस उन्मत्तता का ग्रहण है जो निकम्मे दोषों से उत्पन्न हुई हो इधर उधर उचकना, थकना, सुस्ती, ठहरजाना छूने से गर्मी का कम मालूम होना ये उस वादी के लक्षण हैं जो कफ * के जलने से उत्पन्न हो॥

(इलाज) खूनी में हफ्त अदाम (वह रग जो तर्जनी से कोहनी के पास तक चलीगई है) और बासलीक (वह रग जो मध्यमा से कोहनी तक चली गई है) की फसद खोलें और जो स्त्रियों का मासिक रुधिर बंद होजाना रोग मालीखोलिया के उत्पन्न होने का कारण हो तो रगें साफिन अर्थात्

---

* दोषों के जलने का यह अर्थ है कि उस दोष की प्रकृति में गर्मी आ जाय और जो हलका भाग है वह नष्ट होजाय और गाढ़ा बना रहे और सौदाय गैर तबई भी इसी को कहते हैं यहांतक कि सौदाय तबई जो जलजाय तो वह भी सौदाय गैर तबइ हो जायगा जैसा कि हकीमों ने कहा है जो दोष जलता है सौदाय गैरतबई हो जाता है॥

पित्तज की चिकित्सा आदि का वर्णन ।

पित्त की दशा में पहले तरी पहुचाने के लिये तरी पहुचाने वाले लुआब और शर्बत पीवे और तरी पहुचाने के पीछे रोग के दोष को माउलजुब्न और नीचे लिखे क्वाथ से निकाले फिर ठंडी और तर चीजों से प्रकृति को सभाले और परिश्रम को छोड देवे तथा आराम करना, ठहरना और राग सुनना उचित समझे ।

उक्त क्वाथ की विधि ।

पीली हरड के छिलका, इमली और पित्तपापडा प्रत्येक ३१ माशे, आलू २० दाने, लिहसौडे ५० दाने, गुलाब के फूल और कासनी के बीज प्रत्येक १७॥ माशे, इनमें से कूटने की चीजों को कूट कर १॥ सेर पानी में औटावे जिस समय आध सेर रहजाय नीचे उतार लेवे और तुरत ही उस में १० माशे अफ्तीमून मिलाकर छोड देवे फिर ठंडा होने पर छानकर १ दांग (४ जौकी बराबर) सकमूनिया, एलुआ धोया हुआ ३॥ माशे, नर्मांथ ३॥ माशे मिलाकर ७० माशे तुरंजबीन, शीरख़िश्त और मिश्री मिलाकर पीवे ॥

एलुए के धोने की रीति ॥

आध सेर एलुए को कूट कर चलनी से छान कर रख लेवे फिर अगर नीम रूमी, बालछड, चिरायता, दालचीनी, तज, ऊद बिलसां, बिल्सां की शाखी, अजखर और तगर प्रत्येक १०॥ माशे लेकर ८१ सेर पानी में औटावे जब ८॥ सेर रहजावे तब छान लेवे और एलुआ को पत्थर के खरल में इस काढ़े के साथ पीसले जब महीन होजाय तब एक बर्तन में रखदेवे जिस में स्वच्छ हो जाय और जो कड़े टुकड़े रहें उन्हें अलग करके फिर इसी काढ़े में पीस ले जितना बारीक होजाय उतना ही अच्छा है फिर इसी बर्तन में रख देवे जिस से नीचे बैठजाय फिर उसका पानी धीरे २ निकाल देवे जिससे एलुआ शेष रह जाय फिर उसे सुखालेवे और १०॥ माशे केसर पीस कर उस में मिलाकर रख देवे और आवश्यकता के समय आवश्यकतानुसार दवाएँ मिलाकर काम में लावे और धोया हुआ विना धोये हुए की अपेक्षा अधिक लाभदायक है नहीं तो न धोये हुए को जो काम में लाओगे तो दस्त विशेष होंगे ॥

❀ वातज की चिकित्सा आदि का वर्णन ❀

प्रति दिन माउल उसूल अर्थात् जड़ों का पानी देवे (अथवा) गारकूनी

पित्तज की चिकित्सा आदि का वर्णन ।

पित्त की दशा में पहले तरी पहुचाने के लिये तरी पहुचाने वाले लुआव और शर्बत पीवे और तरी पहुचाने के पीछे रोग के दोष को माउलजुन्न और नीचे लिखे क्वाथ से निकाले फिर ठढी और तर चीजों से प्रकृति को सभाले और परिश्रम को छोड देवे तथा आराम करना, ठहरना और राग सुनना उचित समझे ।

उक्त क्वाथ की विधि ।

पीली हरड के छिलका, इमली और पित्तपापडा प्रत्येक ३१ माशे, आलू २० दाने, लिहसौडे ५० दाने, गुलाब के फूल और कासनी के बीज प्रत्येक १७॥ माशे, इनमें से कूटने की चीजों को कूट कर १॥ सेर पानी में औटावे जिस समय आध सेर रहजाय नीचे उतार लवे और तुरत ही उस में ३५ माशे अफ्तीमून मिलाकर छोड देवे फिर ठडा होने पर छानकर १ दांग (४ जौकी बराबर) सकमूनियां, एलुआ धोया हुआ ३॥ माशे, नमोध ३॥ माशे मिलाकर ७० माशे तुरजबीन, शीरए खिश्त और मिश्री मिलाकर पीवे ॥

एलुए के धोने की रीति ॥

आध सेर एलुए को कूट कर चलनी से छान कर रस लेवे फिर अफ्सन्तीन रूमी, बालछड, चिरायता, दालचीनी, तज, कड विलसां, गिलसां की गाली, अजखर और तगर प्रत्येक १०॥ माशे लेकर ऽ१ सेर पानी में औटावे जब ऽ॥ सेर रहजावें तब छान लवे और एलुआ को पत्थर के खरल में इस काढे के साथ पीसले जब महीन होजाय तब एक बासन में रखदेवे जिस से स्वच्छ हो जाय और जो कडे टुकडे रहें उन्हें अलग करके फिर इसी काढे में पीस ले जितना बारीक होजाय उतना ही अच्छा है फिर इसी बासन में रख देवे जिस से नीचे बैठजाय फिर उसका पानी धीरे २ निकाल देवे जिससे एलुआ शेष रह जाय फिर उसे सुखालेवे और १०॥ माशे केसर पीस कर उस में मिलाकर रख देवे और आवश्यकता के समय आवश्यकतानुसार दवाएं मिलाकर काम में लावे और धोया हुआ बिना धोये हुए की अपेक्षा अधिक लाभदायक है नहीं तो न धोये हुए को जो काम में लाओगे तो दस्त विशेष होंगे ॥

वातज की चिकित्सा आदि का वर्णन

प्रति दिन माउल उसूल अर्थात् जडों का पानी देवे (अथवा) गावजवां

जाती है और दिमाग को भी बिगाड़ देवे क्योंकि दिमागी रूह दिल की रूह के साथ मिली हुई है दिमागी रूह उसी दिल की रूह के जौहर से है सो उचित है कि सब प्रकार के मालीखौलियाओं में और विशेष करके इस में दिमाग और दिल की पुष्टता के लिये प्रयत्न करे जब तक भय डर और संदेह न जाय, फिर जो प्रकृति गर्म होवे तो पुष्टता के लिये जो कुछ उष्ण उन्मत्तता में वर्णन किया गया है काम में लावें और जो प्रकृति ठंडी हो तो नौशदारू और दीवाल मुश्क देवे ॥

हकीमराजी की बनाई मुफर्रेनामी नौशदारू।

गुलाबके फूल१९॥ माशे नागर माथावृफी १७॥ माशे, लौंग, मस्तगी,बा कच्छड और उसारून प्रत्येक १०॥ माशे, मिरफा, जरनब (प्रसिनाम एक घास) केसर प्रत्येक ७ माशे इलायची के दाने, बिस्वासा और जायफल प्रत्येक ३॥ माशे आमला॥ सेर प्रथम आमलों को साढ़ेतीन सेर पानी में औटावे जब डेढ़सेर रहजाय तब मल कर छानलेवे और पाव सेर शहद उस में मिला कर फिर औटावे जब गाढ़ा होजाय नीचे उतार कर बाकी दवा में हींग पीसकर उस में डालें और बेत की लकड़ी के चमचे से चलाता रहे जिससे मिल जाय और दो महिने पीछे सेवन करने से यह दवा आराम देती है, रग को साफ करती है पाचकशक्ति को बढ़ाती है और बुढ़ापा देर में आने देती है इस प्रकार की नौशदारू में शहद केवल पाव सेर है परन्तु कोई २ हकीम कद और आधों आध या केवल कद ही या निरा शहद आवश्यकतानुसार एक सेर स्वादिष्ट होने के लिये डालते हैं परन्तु (हकीम) समरकंदी ने भी अपनी करावादीन में पाव भर लिखा है ॥

❀ गर्म दिवाल मुश्क के बनाने की रीति ❀

नरकचूर, दरूनज अकरबी (एक जड़ निर्विष के समान है) अबरेशम मोती, कहरबा (गोंद सोने केसे रंग का) मूंगे की जड़ प्रत्येक ३९ माशा रेशम खाम बहमन सफेद, बहमन लाल, (गाजर कीसी सूरत की जड़) बालछड़ और छोटी इलायची के दानें प्रत्येक १७॥ माशे, छरीला, पीपल, सोंठ प्रत्येक १४ माशे कस्तूरी ७ माशे इन को कूट छानकर शहद में माजून बनावे ॥

❀ इस रोग के माउल जुब्न की विधि ❀

बकरी का आध सेर दूध औटावे और औटाते समय एक उफान आने के पीछे उतार कर ३१॥ माशे सादा सिकंजबीन या अफ्तीमून की सिर्कंजबी

जाती है और दिमाग को भी बिगाड देवै क्योंकि दिमागी रूह दिल की रूह के साथ मिली हुई है दिमागी रूह उसी दिल की रूह के जौहर से है सो उचित है कि सब प्रकार के मालीखौलियाओं में और विशेष करके इस में दिमाग और दिल की पुष्टता के लिये प्रयत्न करे जब तक भय डर और संदेह न जाय, फिर जो प्रकृति गर्म होवे तो पुष्टता के लिये जो कुछ उष्ण उन्मत्तता में वर्णन किया गया है काम में लावें और जो प्रकृति ठंढी हो तो नौशदारू और दीवाल मुश्क देवै ॥

हकीमराजी की बनाई मुफर्रेनामी नौशदारू ।

गुलाबके फूल१९॥ माशे नागर मोथा,कूठ १७॥ माशे, लौंग, मस्तगी,बा कछड और उसारून प्रत्येक १०॥ माशे, गिरफा, जरनब (अजीनाम एक घास) केसर प्रत्येक ७ माशे इलायची के दाने, बिस्बासा और जायफल प्रत्येक ३॥ माशे आमला ऽ॥ सेर प्रथम आमलों को साढेतीन सेर पानी में औटावे जब डेढसेर रहजाय तब मल कर छानलेवै और पाव सेर शहद उस में मिला कर फिर औटावे जब गाढा होजाय नीचे उतार कर बाकी दवा में हींग पीसकर उस में डालें और बेत की लकडी के चमचे से चलाता रहे जिससे मिल जाय और दो महिने पीछे सेवन करने से यह दवा आराम देवी है, रग को साफ करती है पाचकशक्ति को बढाती है और बुढापा देर में आने देती है इस प्रकार की नौशदारू में शहद केवल पाव सेर है परन्तु कोई २ हकीम कंद और आधों आध या केवल कंद ही या निरा शहद आवश्यकतानुसार एक सेर स्वादिष्ट होने के लिये डालते हैं परन्तु (हकीम) समरकंदी ने भी अपनी करावादीन में पाव भर लिखा है ॥

❁ गर्म दिवाल मुश्क के बनाने की रीति ❁

नरकचूर, दरूनज अकरबी (एक जड बिच्छू के समान है) अनबिंध मोती, कहरबा (गोंद साने कैसे रंग का) मूंगे की जड प्रत्येक ३५ माशा रेशम खाम बहमन सफेद, बहमन लाल, (गाजर कीसी सूरत की जड) बालछड और छोटी इलायची के दाने प्रत्येक १७॥ माशे, छरीला, पीपल, सोंठ प्रत्येक १४ माशे कस्तूरी ७ माशे इन को कूट छानकर शहद में माजून बनावे ॥

❁ इस रोग के माउल जुब्न की विधि ❁

बकरी का आध सेर दूध औटावे और औटाते समय एक छटांक आने ५ नीम उतार कर ३१॥ माशे सादा शिकंजबीन या अफतीमून की शिर्क जुर्ब

सत्त्वज्ञानियों को उत्पन्न होता है जैसे अफलातून और वैसेही और भी और हकीम तिबरी ने कहा है कि मैंने बहुतसे विद्यावानों को देखा है जो अकेले रहने लगे और जिन्हों ने पढने के सिवाय और कुल काम छोडदिये फिर उनके दोष जलगये और उनको मालीखोलिया होगया जैसे एक उन मेंसे हकीम फाराबी है और उस के सिवाय बहुतसे आदमी हैं और इसका (लक्षण) यहहै कि इस रोगी सदा सोच और चिंतामें ग्रस्त रहता है पृथ्वी पर टकटकी लगाकर देखता रहता है उसका सिर और मुख दुबला होजाता है तथा और सब अंग में प्रमाण का मांस होता है, आंख घुसीहुई होती है नाडी सुस्त छोटी कभी वैसी कभी वैसी और कठोर होती है पेशाब पतला और साफ होता है और रोग होने से पहिले अधिक जागना चिन्ताकी अधिकता धूपमें नगेसिर फिरना और लहसन प्याज और गन्दना आदि मस्तक को हानि पहुचानेवाले द्रव्यों का बहुत सेवन करना इसरोग के हेतु है (इलाज) यदि रुधिर की अधिकता हो तो पहले रगसरेरू की फसद खोले फिर ध्यानदवे कि रुधिर निराकाला है या लाली लिये हुएहै या केवल लाल है । जो काला हो तो उससमय तक बन्द न करे जबतक उसका रंग पलट न जाय वा निर्बलता का भय न हो उक्त रुधिर से यह मालूम होता है कि जलाहुआ मवाद दिमाग में स्थिर होनेके सिवाय देह में भी फैल गया है ॥ और जहा ललाई लिये हुए हो थोडा निकाले अधिक न निकाले और जब रुधिर लाल और स्वच्छ निकले तो जान लेवै कि दोष दिमाग की रगों में रुक रहा है देहमें नहीं फैला है इस दशा में रग सरेरू को बन्द करके उस के बदले माथे की फसद खोले जिससे दोष उस अकेले अगम से सहजमे निकल जाय और साफिन अर्थात् पाव की फसद का खोलना सरेरू की फसद से उत्तम है विशेष करके उस जगह जहा मल को एक जगह से निकाल कर दूसरी जगह पर ले जाना अभीष्ट हो यह बात विशेष करके स्त्रियों के की जाती है जो रजोधर्म के बन्द होने के कारण उन में यह रोग उत्पन्न हुआ हो—

फसद खोलने के पीछे विशेष दोष को उन काढे और गोलियों से निकाले जो उस दोष के योग्य हों उनका वर्णन पहले कर चुके हैं परन्तु जब तक दिमाग और दोषों को तरी न पहुचावे दस्त लानेवाली दवा न देवे क्योंकि मल सहज में न निकलेगा और तरी पहुंचाने का यह उपाय है कि मोटी मुर्गी वा बकरी या हिरन के बच्चों के मांस से वा मीठे और कदूदू के पानी की माठ्ठी में बने हुए शोर्बे और नशास्ता, खांड, खशखाश और बादाम के

तत्त्वज्ञानियों को उत्पन्न होता है जैसे अफलातून और वैसेही और भी और हकीम तिबरी ने कहा है कि मैने बहुतसे विद्यावानों को देखा है जो अकेले रहने लगे और जिन्हों ने पढने के सिवाय और कुल काम छोडदिये फिर उनके दोष जलगये और उनको मालीखौलिया होगया जैसे एक उन मैंसे हकीम फाराबी है और उस के सिवाय बहुतसे आदमी हैं और इसका (लक्षण) यहहै कि इस रोगी सदा सोच और चिंतामें ग्रस्त रहता है पृथ्वी पर टकटकी लगाकर देखता रहता है उसका सिर और मुख दुबला होजाता है तथा और सब अंग में प्रमाण का मांस होता है, आंख घुसीहुई होती है नाडी सुस्त छोटी कभी वैसी कभी वैसी और कठोर होती है पेशाब पतला और साफ होता है और रोग होने से पहिले अधिक जागना चिन्ताकी अधिकता धूपमें नंगेसिर फिरना और लहसन प्याज और गन्दना आदि मस्तक को हानि पहुचानेवाले द्रव्यों का बहुत सेवन करना इसरोग के हेतु हैं (इलाज) यदि रुधिर की अधिकता हो तो पहले रगसरेरू की फसद खोले फिर ध्यानदेवे कि रुधिर निराकाला है या लाली लिये हुएहै या केवल लाल है । जो काला हो तो उससमय तक बन्द न करै जबतक उसका रंग पलट न जाय वा निबलता का भय न हो उक्त रुधिर से यह मालूम होता है कि जलाहुआ मवाद दिमाग में स्थिर होनेके सिवाय देह में भी फैल गया है ॥ और जहां ललाई लिये हुए हो थोडा निकाले अधिक न निकाले और जब रुधिर लाल और स्वच्छ निकले तो जान लेवै कि दोष दिमाग की रगों में रुक रहा है देहमें नहीं फैला है इस दशा में रग सरेरू को बन्द करके उस के बदले माथे की फसद खोलें जिससे दोष उस अकेले अंगमें से सहजमें निकल जाय और साफिन अर्थात् पांव की फसद का खोलना सरेरू की फसद से उत्तम है विशेष करके उस जगह जहां मल को एक जगह से निकाल कर दूसरी जगह करना अभीष्ट हो यह बात विशेष करके स्त्रियों के की जाती है जो रजोधर्म के बन्द होने के कारण उन के यह रोग उत्पन्न हुआ हो—

फसद खोलने के पीछे विशेष दोष को उन काढे और गोलियों से निकाले जो उस दोष के योग्य हों उनका वर्णन पहले कर चुके हैं परन्तु जब तक दिमाग और दोषों को तरी न पहुंचावें दस्त लानेवाली दवा न देवै क्योंकि मल सहज में न निकलेगा और तरी पहुंचाने का यह उपाय है कि मोटी मुर्गी वा बकरी या हिरन के बच्चों के मांस से वा मीठे और कसरीन पानी की मछली से बने हुए शोर्बे और नशास्ता, खांड, मग़ज़बादाम और बादाम के

और भीतर की गर्मी के कारण से इकट्ठा होकर जलजाय चाहे मिराक से सूजन उत्पन्न करे या न करे फिर काले भाफ के परमाणु उस में से ऊपर को चढें और दिमाग में पहुच कर दिमागी रूह को काला करदे इस कारण से भय और सोच बढ जावे । और ऊपर वर्णन हो चुका है कि यह मल जिस अंग में ठहर जाता है तो काले भाफ के परमाणु उस जगह से दिमाग की तरफ चढते हैं और रोग उत्पन्न करते हैं ॥

❀ उक्त रोग के लक्षण ❀

जली हुई खट्टी डकारों का अधिक आना वा रिआह के गाढा होने से डकारों का बन्द होजाना बहुत खाने पर भी देह को भोजन का कम पहुचना, आमाशय और मिराक में दर्द और जलन और खिंचावट मालूम होना, छाती जिरती हुई और तंग मालूम होना मुख से लारका बहुत आना, पेट पर बहुत नर्म अफरा होना कथा के बीच में दर्द और झूठी भूख का अधिकता के साथ मालूम होना ये लक्षण होते हैं और बीमार को भाफ के परमाणुओं का चढना मालूम होता है भाफ के परमाणु चढने के समय गले और तालू जलने लगते हैं । और जो रोग तिल्ली से आरम्भ होता है उसकी पहचान यह है कि उक्त लक्षणों के सिवाय तिल्ली भी बढजाती है । इसी तरह जो रोग आमाशय की सूजन से हो वह गर्मी वा ठंडी सूजन के अनुसार ज्वर, प्यास और पित्त की वमन के आन न आने से पहचाना जाता है और ऐसे ही मासारीका में गांठ होने का हाल है जैसा कि आगे में वर्णन करेंगे– और जिस रोग में उक्त लक्षण मिलेहुए पाये जाय वह रोग दो व तीन तीन स्थानों के संयोग से होता है यदि उक्त सम्पूर्ण लक्षण पाये जाय और दूसरे किसी अवयव में रोग के उत्पन्न होने के लक्षण न पाये जाय तो दोष केवल मिराक में होता है विशेष करके जब पेट में सूजन अधिक हो और आमाशय निरोग हो ॥

❀ उक्त रोग की चिकित्सा ❀

प्रकृति के अनुसार हर चालीसवें दिन वा आगे पीछे बासलीक रग की फसद खोले यदि रुधिर अधिक हो और कोई बलवान उपद्रव न हो तो आवश्यकतानुसार और समयानुसार रुधिर निकाले इस रोग में घोंटा नश्तर लगावें जिससे गाढा रुधिर निकल जाय और यह रीति सब बादी के रोगों में करनी चाहिये जिन में फसद को खोलना उचित होवे और जो इस रोग के साथ उष्णांश मालूम हो तो एक तोला गुलाब नीलोफर, कासनी के बीज, मकोय

और भीतर की गर्मी के कारण से इकट्ठा होकर जलजाय चाहे मिराक में सूजन उत्पन्न करे या न करे फिर काले भाफ के परमाणु उस में से ऊपर को चढ़ें और दिमाग में पहुंच कर दिमागी रूह को काला करदे इस कारण से भय और सोच बढ़ जावे। और ऊपर वर्णन हो चुका है कि यह मल जिस अंग में ठहर जाता है तो काले भाफ के परमाणु उस जगह से दिमाग की तरफ चढ़ते हैं और रोग उत्पन्न करते हैं ॥

❀ उक्त रोग के लक्षण ❀

जली हुई खट्टी डकारों का अधिक आना वा रिआह के गाढ़ा होने से डकारों का बन्द होजाना बहुत खाने पर भी देह को भोजन का कम पहुंचना, आमाशय और मिराक में दर्द और जलन और खिंचावट मालूम होना, छाती खिंची हुई और तंग मालूम होना मुख से लार का बहुत आना, पेट पर बहुत नर्म अफरा होना कंधों के बीच में दर्द और झूठी भूख का अधिकता के साथ मालूम होना ये लक्षण होते हैं और बीमार को भाफ के परमाणुओं का चढ़ना मालूम होता है भाफ के परमाणु चढ़ने के समय गले और तालू जलने लगते हैं। और जो रोग तिल्ली से आरम्भ होता है उसकी पहचान यह है कि उक्त लक्षणों के सिवाय तिल्ली भी बढ़जाती है। इसी तरह जो रोग आमाशय की सूजन से हो वह गर्मी वा ठंडी सूजन के अनुसार ज्वर, प्यास और पित्त की वमन के आने न आने से पहचाना जाता है और ऐसे ही मासारीका में गांठ होने का हाल है जैसा कि उसके वर्णन में करेंगे– और जिस रोग में उक्त लक्षण मिलेहुए पाये जाय वह रोग इन तीन तीन स्थानों के संयोग से होता है यदि उक्त सम्पूर्ण लक्षण पाये जाय और दूसरे किसी अवयव में रोग के उत्पन्न होने के लक्षण न पाये जाय तो आप केवल मिराक में होता है विशेष करके जब पेट में सूजन अधिक हो और आमाशय निरोग हो ॥

❀ उक्त रोग की चिकित्सा ❀

प्रकृति के अनुसार हर चालीसवें दिन वा आगे पीछे बासलीक रग की फसद खोले यदि रुधिर अधिक हो और कोई बलवान उपद्रव न हो तो आवश्यकतानुसार और समयानुसार रुधिर निकाले इस रोग में थोड़ा नश्तर लगावें जितने गाढ़ा रुधिर निकल जाय और यह रीति सब बादी के रोगों में करनी चाहिये जिन में फसद को खोलना उचित होवे और जो इस रोग के साथ उष्णांश मालूम हो तो गुल खतमी नीलोफर, कासनी के बीज, मकोय

करके आमाशय के मुखपर मले और गर्म भूसी से सिकाव करे और बाबूना अकलीलुलमलिक और नीबू के पत्ते के काढे से तरेडा देना रिआह के नष्ट करने के लिये लाभदायक है और तर सिकताव सुश्क सिक्ताव की अपेक्षा अधिक लाभदायक है क्योंकि इस में तरी का पहुचना और रिआह का नष्ट होना दोनों पाये जाते हैं, ऐसे ही जिस अंग में दोष हो उस अंग का दोष निकालने और शक्ति पहुचाने में उक्त अंगों के कहे हुए रोगों के इलाज पर ध्यान देवे और मालीखौलिया की दशा भी दोषों के भिन्न २ स्थान और दूसरे दोष के उस में मिलने के अनुसार भिन्न २ होती है जैसे जो दोष दिमाग के बीच के भाग में आजाय जो ज्ञान का स्थान है, तो बुद्धि और विवेक जाते रहते है और उस के सब काम बिगड जाते है और जो दोष दिमाग के अगले भागों में आगया है जो विचार का स्थान है तो सब विचार जाते रहते हैं और जो दोष दिमाग के सब भागों में होगा तो ज्ञान विचार कार्य और कर्म सब में उपद्रव हो जायगा और दूसरे दोषों के मिलने से इस तरह पर और होता है कि जो बादी पित्त के साथ मिली है तो बीमार की प्रकृति में क्रोध और तेजी होगी और जो कफ वा बादी के साथ मिली है तो बीमार सुस्त रहेगा और उसे सोना लेटना अच्छा मालूम होगा और इस का वर्णन कई बार किया गया है कि बादी जिस दोष के जलने से पैदा होती है उस दोष की दशा भी उस में अवश्य होती है और यह बात उसके चिन्हों से जानी जाती है ॥

ग्यारहवांप्रकरण

दीवानगी अर्थात् उन्मत्ततापभेद

ये सब मालीखौलिया के प्रकारान्तरहैं यह रोग चार तरह का होता है इसलिये हम इस अध्याय को चार भेदों में वर्णन करतेहैं ।

पहला कुतरुब *

इसका यह लक्षण है कि बीमार अधिक क्रोधित रहे एक जगह न ठहरे

* इस रोग के नाम में हकीमों का भिन्न २ मतहै—शेख बूअलीसीना तो यह कहते हैं कि कुतरुब एक कीडा है जो पानीपर बहुत जल्दी फिरताहै । यह कीडा कभी आगे कभी पीछे कभी दाहें कभी बायें व्यर्थ निकम्मा फिरताहै कभी गोतामारकर बाहर निकलआताहै । यही दशा इसरोगीकीभी होतीहै इसलिये इसरोगका नाम कुतरुब रक्खा है । कुतरुब का दूसरा अर्थ भेडिये के "पुराने गिर कुत्ताल" हैं और क्यों कि यह रोगी भी भेडिया की तरह [illegible] आरामसे [illegible] । और [illegible] के सदृश शब्द करता है । इसकारण [illegible] है । कोई २ इसे [illegible] और [illegible] और कारणहैं परन्तु यहां इतनाही बहुत है ।

करके आमाशय के मुखपर मले और गर्म भूसी से सिकाव करे और बाबूना अकलीलुलमलिक और नीबू के पत्ते के काढे से तरेडा देना रिआह के नष्ट करने के लिये लाभदायक है और तर सिकताव सुनक सिक्ताव की अपेक्षा अधिक लाभदायक है क्योंकि इस में तरी का पहुंचना और रिआह का नष्ट होना दोनों पाये जाते हैं, ऐसे ही जिस अंग में दोष हो उस अंग का दोष निकालने और शक्ति पहुंचाने में उक्त अंगों के कहे हुए रोगों के इलाज पर ध्यान देवे और मालीखौलिया की दशा भी दोषों के भिन्न २ स्थान और दूसरे दोष के उस में मिलने के अनुसार भिन्न २ होती है जैसे जो दोष दिमाग के बीच के भाग में आजाय जो ज्ञान का स्थान है, तो बुद्धि और विवेक जाते रहते है और उस के सब काम बिगड जाते है और जो दोष दिमाग के अगले भागों में आगया है जो विचार का स्थान है तो सब विचार जाते रहते हैं और जो दोष दिमाग के सब भागों में होगा तो सोच विचार कार्य और कर्म सब में उपद्रव हो जायगा और दूसरे दोषों के मिलने से इस तरह पर और होता है कि जो बादी पित्त के साथ मिली है तो बीमार की प्रकृति में क्रोध और तेजी होगी और जो कफ वा बादी के साथ मिली है तो बीमार सुस्त रहेगा और उसे सोना लेटना अच्छा मालूम होगा और इस का वर्णन कई बार किया गया है कि बादी जिस दोष के जलने से पैदा होती है उस दोष की दशा भी उस में अवश्य होती है और यह बात उसके चिन्हों से जानी जाती है ॥

ग्यारहवांप्रकरण

दीवानगी अर्थात् उन्मत्ततापभेद

ये सब मालीखौलिया के प्रकारान्तरहैं यह रोग चार तरह का होता है इसलिये हम इस अध्याय को चार भेदों में वर्णन करतेहैं ।

पहला कुतरुब *

इसका यह लक्षण है कि बीमार अधिक कांपित रहे एक जगह न ठहरे

* इस रोग के नाम में हकीमों का भिन्न २ मतहै—शेख बूअली सिना का यह कहना है कि कुतरुब एक कीडा है जो पानीपर बहुत जल्दी फिरताहै । यह कीडा कभी आगे कभी पीछे कभी दाहें कभी बाहें व्यर्थ निकम्मा फिरताहै कभी गोतामारकर झट निकलआताहै । यही दशा इसरोगीकीभी होतीहै इसलिये इसरोगका नाम कुतरुब रक्खा है । कुतरुब का दूसरा अर्थ भेडिया के "पुराने गिर कुण्चाल" हैं और क्यों कि यह रोगी भी भेडिया की तरह [illegible] आराम [illegible] । और टरी के सदृश शब्द करता है । [illegible] का [illegible] । है । कोई २ इसे [illegible] और [illegible] रोग [illegible] और जातेहैं परन्तु यहां इतनाही बहुत है ।

इस कारण से रक्खागया है कि यदि उक्त रोगी किसीको काटखाय तो वह बहुधा मरजाताहै जैसे बावले कुत्ते के काटनेसे और जानना चाहिय कि रोग मानिया का कारण दग्धपित्त की भाफके कणहैं । जो दिमाग में चढ़कर इकट्ठे होजातेहैं वा दग्धवातकी भाफ के परमाणुहैं । जो मानिया वादीके जलने से उत्पन्न होता है उसका यह लक्षणहै कि वह रोगी चिन्ताग्रस्त और चुप रहताहै और जब कभी बोलताहै तो इतना बोलताहै कि सुननेवाले को पीछा छुड़ाना दुर्लभ होजाता है और जो उसको क्रोध आताहै तो जल्दीदेरमें ठंढा और शीतल होताहै और देह दुबली और रंग स्याही लियेहुए होताहै और जो पित्त के जलने से होताहै तो उसका यह लक्षणहै कि अधिक बेचैन होता है और जल्दी २ बदमाशी वा प्यार करने लगताहै इधर उधर डोलताहै और रंज और सोच में रहताहै इसरोग में और दिमागकी सूजन में यह अन्तर है कि दिमाग की सूजन में ज्वर का होना आवश्यकीय है परन्तु इसमेंज्वर नहीं होता है ।

(इलाज) पचाव और तरी पहुचाने के पीछे हेतु के अनुसार दोष को निकालदेवे और दोष के निकालने पर भी तरी पहुचानेवाली दवाएं देवे और पथ्य भी ऐसाही देवे दोष के निकलने पर चैतन्य कारक उचित भोजनों से दिल को बल पहुचावे ।

चौथा भेद सुबारा अर्थात् विशेष जनून का वर्णन ।

इसरोगमें मालूम होताहै कि जैसे मानिया और फरानीतुस दोनों इकट्ठे होगयेहैं इसके लक्षण यह है कि बीमार रोगके आरम्भ में बहुत जागताहै बेचैनी और घबराहट में रहै नींद में डरकर जागउठे, और श्वास चढे और मतलब के अनुसार उत्तर न दे व्यर्थ बोलताहै आंखों में लाली और मारामार मालूमहो और उसको ऐसा भ्रमहो कि कोई चीज आंखमें गिरपडी है और आने आप आंसू निकलें और पेशाब सफेद और पतलाहो और कभी ऐसाभी होता है कि पेशाब के न उतरनेसे पेट्पर हाथ मारे और मले और पुकार न कारण कह न सके कि क्याहै और कभी शरीरभी कांपने लगता है (इलाज) सिरके मलके मांजने के लिये और भाफके परमाणुओं के रोकने के लिये जो (इलाज) पित्तके सरसाममें वर्णन कियागयाहै वही (इलाज) इसका करे पर उस तरी के पहुचाने में परिश्रमकरे और हाथ पांव का बांधना उचित नहीं क्योंकि हाथपांवके बंधने से बहुतसे लाभहैं एक यह कि हाथपांव न चलानेसे क्या कि इससे बीमारी का कारण बढ़जाताहै दूसरा यह कि दिमाग से सारा [illegible]

इस कारण से रक्खागया है कि यदि वह रोगी किसीको काटखाय तो यह बहुधा मरजाताहै जैसे बावले कुत्ते के काटनेसे और जानना चाहिये कि रोग मानिया का कारण दग्धपित्त की भाफके कणहैं । जो दिमाग में बहुधा इकट्ठे होजातेहैं वा दग्धवातकी भाफ क परमाणुहैं । जो मानियां बादीके जलने से उत्पन्न होता है उसका यह लक्षणहै कि यह रोगी चिन्ताग्रस्त और चुप रहताहै और जब कभी बोलताहै तो इतना बोलताहै कि सुननेवाले को पीछा छुड़ाना दुर्लभ होजाता है और जो उसको क्रोध आताहै तो जल्दीहीसे ठंढा और शीतल होताहै और देह दुबली और रंग स्याही लियेहुए होताहै और जो पित्त के जलने से होताहै तो उसका यह लक्षणहै कि अधिक बेचैन होता है और जल्दी २ बदमाशी वा प्यार करने लगताहै इधर उधर डोलताहै और रंज और सोच में रहताहै इसरोग में और दिमागकी सूजन में यह अन्तर है कि दिमाग की सूजन में ज्वर का होना आवश्यकीय है परन्तु इसमेंज्वर नहीं होता है ।

(इलाज) पचाव और तरी पहुंचाने के पीछे हेतु के अनुसार दोष को निकालदेवे और दोष के निकालने पर भी तरी पहुंचानेवाली दवाएं देवे और पथ्य भी ऐसाही देवे दोष के निकलने पर चैतन्य कारक उचित भोजनों से दिल को बल पहुंचावे ।

चौथा भेद सुबारा अर्थात् विशेष जनून का वर्णन ।

इसरोगमें मालूम होताहै कि जैसे मानियां और फरानीतुस दोनों इकट्ठे होगयेहैं इसके लक्षण यह है कि बीमार रोगके आरम्भ में बहुत जागतारहे बेचैनी और घबड़ाहट में रहे नींद में डरकर जागउठे, और श्वास चढ़े और मतलब के अनुसार उत्तर न दे व्यर्थ बोलतारहे आंखों में लाली और भारीपन मालूमहो और उसको ऐसा भ्रमहो कि कोई चीज आंखमें गिरपड़ी है और आंखें आप आंसू निकलें और पेशाब सफेद और पतलाहो और कभी ऐसाभी होता है कि पेशाब के न उतरनेसे पेड़पर हाथ मारे और मले और पसीना न आवे यह न समझे कि क्याहै और कभी शरीरभी कांपने लगता है (इलाज) सिरके मलके भरने के लिये और भाफके परमाणुओं के रोकने के लिये जो (इलाज) पित्तके सरसाममें वर्णन कियागयाहै वही (इलाज) इसमें भी करे परन्तु तरी के पहुंचानेमें परिश्रमकरे और हाथ पांव का धोना उचित समझे क्योंकि हाथपांवधोने से बहुतही लाभहै परन्तु यह कि हाथपांव न मलनाहोगा क्या कि इसमें बीमारी का कारण बढ़जाताहै इसपर यह कि दिमाग से भारा खिंच

के तीक्ष्ण परमाणु सब देह से उठ कर दिमाग में आवें और बुद्धि बिगाड़ें जैसा कि ज्वर में होता है इस में पहले ज्वर आता है और प्रथम ज्वर ही का इलाज किया जाता है क्योंकि जब ज्वर जाता रहेगा तो यह बहकना और व्यर्थ बकना भी जाता रहेगा ॥

तेरहवां प्रकरण
अहंकार और मूर्खता का वर्णन

यह भी माली खौलिया का एक भेद है इस रोग में विचार की क्रिया शक्ति प्राय कार्यों में बिगड़ जाती है जैसे गृहस्थ के काम वा अन्य मनुष्यों से व्यवहार विषय में विचार शक्ति ठीक न रहे अथवा विचारशक्ति में न्यून ता आजाय इसी कारण से इस रोग वाला निष्प्रयोजन लड़कों की तरह काम करता है और उसका ध्यान सहज कार्यों में ठीक लगता है परन्तु काम के फल को अच्छी तरह नहीं सोच सक्ता है इस रोग के दो कारण हैं एक यह कि केवल सर्दी या सर्दी खुश्की के साथ दिमाग के बीच के पर्दे में आजाय जो विचार का स्थान है दूसरा यह कि उक्त पर्दे के पोलदार स्थान में कफ भर जाय सो जा सर्दी और खुश्की वा केवल सर्दी के कारण से होतो उस का लक्षण यह है कि नाक में खुश्की पायी जाय नींद न आवे न्हाने और सिर पर गर्म पानी डालने से लाभ हो और सर्दी तथा खुश्की का हेतु भी पाया जाय ।

इलाज— तरी और गर्मी पहुंचाने के लिये मोटी मुर्गियों का मांस, शोरवा, दालचीनी और कुलीजन के साथ सुगन्धित करके खाय और मीठी चीजें जो मौतदिल हैं और मीठ फालूदे और बादाम का तेल मिलाकर काम में लावे तो अधिक लाभदायक है और मैरा का तेल और बाबूना का तेल सिर के बीच में मले और उन सभी घासों को जो तरी और गर्मी का गुण रखती हैं औटा कर उसका पानी सिर पर डालना लाभदायक है और जा कफ के कारण से हो तो उस का लक्षण और इलाज उस विस्मरण रोग के समान होता है जिसका कारण विचारशक्ति का उपद्रव है और इस उपद्रव का कार ण भी सर्दी और कफ हुए था ।

चौदहवां प्रकरण ।
इश्क अर्थात आसक्ति का वर्णन ।

यह इश्कगी निकम्मी और इसका कुत्सायरा प्रकार है जिसको इश्क

के तीक्ष्ण परमाणु सब देह से उठ कर दिमाग में आवें और बुद्धि बिगा
जैसा कि ज्वर में होता है इस में पहले ज्वर आता है और प्रथम ज्वर ही
इलाज किया जाता है क्योंकि जब ज्वर जाता रहेगा तो यह बहकना
व्यर्थ बकना भी जाता रहेगा ॥

तेरहवां प्रकरण
अहंकार और मूर्खता का बर्णन

यह भी माली खोलिया का एक भेद है इस रोग में विचार की क्रि
शक्ति प्राय कामों में बिगड जाती है जैसे ग्रहस्थ के काम वा अन्य मनुष्य
से व्यवहार विषय में विचार शक्ति ठीक न रहे अथवा विचारशक्ति में न्यू
ता आजाय इसी कारण से इस रोग वाला निष्प्रयोजन लडकों की तर
काम करता है और उसका ध्यान सहज कामों में ठीक जमता है परं
काम के फल को अच्छी तरह नहीं सोच सक्ता है इस रोग के दो कारण
एक यह कि केवल सर्दी या सर्दी खुश्की के साथ दिमाग के बीच के पर्दे
आजाय जो विचार का स्थान है दूसरा यह कि उक्त पर्दे के पोलदार स्थान
में कफ भर जाय सो जा सर्दी और खुश्की वा केवल सर्दी के कारण
होवो उस का लक्षण यह है कि नाक में खुश्की पायी जाय नींद न आवे
न्हाने और सिर पर गर्म पानी डालने से लाभ हो और सर्दी तथा खुश्की
का हेतु भी पाया जाय ।

इलाज— तरी और गर्मी पहुंचाने के लिये मोटी मुर्गियों का मांस, शोरबा
दालचीनी और कुलीजन के साथ सुगंधित करके खाय और मीठी चीज जो
मौतदिल है और मीठ फालूदे और बादाम का तेल मिलाकर काम में लावे तो
अधिक लाभदायक है और मैरा का तेल और बाबूना का तेल सिर के बीच
में मले और उन सर्वी बातों को जो तरी और गर्मी का गुण रखती हैं
औटा कर उसका पानी सिर पर डालना लाभदायक है और जा कफ के
कारण से हो तो उस का लक्षण और इलाज उस विस्मरण रोग के समान हो-
ता है जिसका कारण विचारशक्ति का उपद्रव है और इस उपद्रव का कार
ण भी सर्दी और कफ हुए हा ।

चौदहवा प्रकरण ।
इश्क अर्थात आसक्ति का वर्णन ।

यह इश्कागे निकल्पाई और इसका खुब्याबरा प्रसन्द है जिसको इश्क

यह है कि सिर को सोते समय बहुत सर्दी पहुंचे और इस में पहले भेद के चिन्ह कुछ न हों । (इलाज) तुलसी का तेल, मस्तगी का तेल, और अजखर का तेल गुनगुना सिर पर मलें और देह का लाल करने वाली चीज जैसे, राई जुन्देबेदस्तर और सज्जी इन को जंगली प्याज के बने हुए सिर्के के साथ मिलाकर लेप करें ॥

सोलहवां प्रकरण

ॐ मृगी रोग का वर्णन ॐ

इस रोग में ज्ञान और चलने फिरने की शक्तियां नष्ट होजाती हैं प्रकृति बदल जाती है और रोगी गिर पड़ता है इसी लिये इसको अर्बी में सरा और संस्कृत में अपस्मार कहते हैं इसका पूर्ण कारण मवाद की गांठ है जो दिमाग के पर्दा और पर्दों के छेद में उत्पन्न हो जिससे दिमागी रुह अपने मार्ग में आ कर पट्ठों में न जा सके और पट्ठे खिंच जांय और यह बात स्पष्ट है कि जो गांठ न होती तो ज्ञानादि शक्तियों की क्रिया में उपद्रव न होता और पट्ठों में ऐंठन भी न होती और जो गांठ पूरी होती है तो शक्तियां सर्वथा जाती रहती हैं जैसा कि सक्ते में देखा जाता है और ऐंठन भी नहीं होती है यद्यपि मृगी रोग विशेष करके दिमाग के अगले भाग में होता है परन्तु समीप होने के कारण से दूसरे भागों में भी कष्ट पहुंचाता है क्योंकि यह बात प्रगट है कि जो दूसरे भागों में कष्ट न पहुंचता तो ज्ञानशक्ति और स्मरणशक्ति नष्ट न होती और इस रोग की अधिकता वा कमी इस के हेतु की कमी वा अधिकता के अनुसार होती है । इसी लिये किताब " जखीरे ख्वारज्मशाही ,, वाला लिखता है कि बहुधा ऐसा भी होता है कि किसी मनुष्य के मृगी उत्पन्न होकर जाती भी रहती है परन्तु ऐंठन नहीं होती इसका यह कारण है कि मल थोड़ा होता है ऐंठन के कारण केवल तीन हैं एक रगों का भरना, (२) पट्ठों में खुश्की होना (३) पट्ठों और भेजे का खिंचना और सिमटना परन्तु मृगी का उठना खुश्की से नहीं होता क्योंकि उठना खुश्की के कारण से एक साथ नहीं होता किन्तु धीरे २ होजाया करता है और यदि खुश्की इतनी बढ़जाय कि दिमाग का भेद हो तो ऐसे उठने से पहले ही मौत आ जाती है इस लिये अब निश्चय हो गया कि मृगी के उठने का कारण रगों का भरजाना वा दिमाग का सिमट जाना है और यह सिमटना दिमाग की ज्ञान शक्ति की तीक्ष्णता से वा भारी परमाणुओं के चढ़ने वा, किसी दशा से वा फिर स्वाद भागने से यह रोग होता है और

यह है कि सिर को सोते समय बहुत सर्दी पहुंचे और इस में पहले भेद के चिन्ह कुछ न हों । (इलाज) तुलसी का तेल, मस्तगी का तेल, और अजसर का तेल गुनगुना सिर पर मलें और देह का लाल करने वाली चीज़ जैसे, राई जुन्देबेदस्तर और सज्जी इन को जंगली प्याज के बने हुए सिर्क के साथ मिलाकर लेप करें ॥

सोलहवां प्रकरण

❀ मृगी रोग का वर्णन ❀

इस रोग में ज्ञान और चलने फिरने की शक्तियां नष्ट होजाती हैं प्रकृति बदल जाती है और रोगी गिर पड़ता है इसी लिये इसको अर्बी में सरा और संस्कृत में अपस्मार कहते हैं इसका पूर्ण कारण मवाद की गांठ है जो दिमाग के पर्दा और पर्दों के छेद में उत्पन्न हो जिससे दिमागी रूह अपने मार्ग में हो कर पट्ठों में न जा सके और पट्ठे खिंच जांय और यह बात स्पष्ट है कि जो गांठ न होती तो ज्ञानादि शक्तियों की क्रिया में उपद्रव न होता और पट्ठों में ऐंठन भी न होती और जो गांठ पूरी होती है तो शक्तियां सर्वथा जाती रहती हैं जैसा कि सक्ते में देखा जाता है और ऐंठन भी नहीं होती है यद्यपि मृगी रोग विशेष करके दिमाग के अगले भाग में होता है परन्तु समीप होने के कारण से इसके भागों में भी कष्ट पहुंचाता है क्योंकि यह बात प्रगट है कि जो दूसरे भागों में कष्ट न पहुंचता तो ज्ञानशक्ति और स्मरणशक्ति नष्ट न होती और इस रोग की अधिकता वा कमी इस के हेतु की कमी वा अधिकता के अनुसार होती है । इसी लिये किताब " जखीरे ख्वारज्मशाही ,, वाला लिखता है कि बहुधा ऐसा भी होता है कि किसी मनुष्य के मृगी उत्पन्न होकर जाती भी रहती है परन्तु ऐंठन नहीं होती इसका यह कारण है कि मल थोड़ा होता है पढा के कारण केवल तीन हैं एक रगों का भरना, (२) पट्ठों में खुश्की होना (३) पर्दों और भेजे का खिंचना और सिमटना परन्तु मृगी का उठना खुश्की से नहीं होता क्योंकि उठना खुश्की के कारण से एक साथ नहीं होता किन्तु धीरे २ होजाया करता है और यदि खुश्की इतनी बढ़जाय कि दिमाग का पेट ढ़ तो ऐंठ उठने से पहले ही मौत आ जाती है इस लिये अब निश्चय हो गया कि मृगी के उठने का कारण रगों का भरजाना वा दिमाग का सिमट जाना है और यह सिमटना दिमाग की ज्ञान शक्ति की तीव्रता से वा भारकर्व परमाणुओं के गड़ने वा, विषैली दशा से वा थिर स्थान भागने से यह रोग होता है और

में शारीरिक परिश्रम भी करता रहे और देह को इस तरह मला करे कि हाथ को ऊपर से नीचे की तरफ लावें और हाथ पाँव से मलना आरम्भ करें फिर सिर को भी इसी तरह मलें ॥

ॐ मृगी रोग में वर्जित कर्म ॐ

मल कारक अजीर्ण कारक, अण्डों के सालन और उन वस्तुओं से जो भाफ के परमाणु उत्पन्न करती हैं और देर में पचने वाली वस्तुओं जैसे साग, सलगम, मूली आदि का सेवन न करना उचित है तथा जाड़ा, गर्मी मैथुन एवं बहते पानी में देखना, चाँदनी, और ऊँची जगह पर बैठना, हम्मामें की जगह बहुत ठहरना, अधिक चलना, घोड़े पर बैठकर दौड़ाना, चमकीली और घूमती हुई वस्तुओं को ध्यान से देखना यह सब बातें मिरगी वालों को हानि कारक हैं। कफ वाली मिरगी में सब से उत्तम भोजन चने का पानी है जो कि तीतर, बटेर, मुर्ग, हिरन के माँस से मिलकर पका हो और मिरगी के समय हींग और शहद का पानी हलक में डालना लाभदायक है ॥

ॐ माजून मिसीतालयूस के बनाने की रीति ॐ

अफरयून, उस्तखुद्दूस, सिपालयूस प्रत्येक ३५ माशे, गारीकून १५॥ माशे, फिर्दमाना, हींग, जुन्दबेदस्तर, मुरहरीज, कुदवेलसा और फिलफिल की गोली प्रत्येक ८॥ माशे सब को कूट कर जंगली प्याज की बनी हुई शिकञ्जबीन में मिलावें इस की मात्रा ४॥ माशे है इस में फिर्दमाना ताजा और तर हो और हींग दुर्गन्धित हो। (अथवा) पुरानी कफवाली मिर्गी के लिये प्याज फिलफिली और हींग मिलाना बहुत लाभदायक है। दूसरे यह कि यह रोग बादी से बाफ उत्पन्न हो उसका चिन्ह यह है कि सफकान और दिल का धड़कना और भाग जो मुख से आता है उस का स्वाद खट्टा हो और कभी कभी जो भाग पृथ्वी पर गिर पड़े उसकी तेजी और खटाई की अधिकता से पृथ्वी उबलने लगे जैसा कि सिर्के से उबलती है और मिरगी के पहले में झूँठ संदेह बुरे विचार तथा चिन्ता और सोच की अधिकता हो और भूख की अधिकता हो जब कि मल दिमाग में और देह में भी फैल गया हो यह रोग कफ की मृगी की अपेक्षा बहुत कम है क्या कि कफ दिमाग की प्रकृति के अनुकूल है और जो वस्तु अनुकूल नहीं है वह कम हानि पहुँचाती है ॥ (इलाज) मल के पकाने पर अफ्तीमून से काटे और बादी दूर करने वाली गोलियों से मल के साफ होने पर सिर के पुष्ट करने के लिये अम्बर और गुलाब तेल मृगी के बच्चे गोश्त गुर्दी और बकरी के मांस से बनाये हुये शोर्बे आदि

सो शारीरिक परिश्रम भी करता रहै और देह को इस तरह मला करे कि हाथ को ऊपर से नीच की तरफ लावें और हाथ पांव से मलना आरम्भ करें फिर गिर को भी इसी तरह मले ॥

❀ मृगी रोग मे वर्जित कर्म ❀

मल कारक अजीर्ण कारक, अण्डो के सालन और उन वस्तुओं से जो भाफ के परमाणु उत्पन्न करती हैं और देर में पचने वाली वस्तुओं जैसे गऊ, सल्गम, मूली आदि का सेवन न करना उचित है तथा जाडा, गर्मी मैथुन कर्म बहते पानी में देखना, चांदनी, और ऊंची जगह पर बैठना, न्हाने की जगह बहुत ठहरना, अधिक चलना, घोडे पर बैठकर दौडाना, चमकीली और घूमती हुई वस्तुओं को ध्यान म देखना यह सब बातें मिरगी वालों को हानि कारक हैं । कफ वाली मिरगी में सब से उत्तम भोजन चने का पानी है जो कि तीतर, बटेर, मुर्ग, हिरन के मास से मिलकर पका हो और मिरगी के समय हाग और शहद का पानी हलक में डालना लाभदायक है ॥

❀ माजून सिसीरालयूस के बनाने की रीति ❀

अकरकरा, उस्तखुदूस, सिसालयूस प्रत्येक ३५ माशे गारीकून १७॥ माशे, किर्दमाना, हींग, जरावन्द, मुदहारिज, ऊदसलीब और बिलसां की गाली प्रत्येक ८॥ माशे सब को कूट कर जगली प्याज की बनी हुइ शिकजबीन में मिलावें इस की मात्रा ४॥ माशे है इस मे किर्दमाना ताजा और तर हो और हींग दुर्गन्धित हो । (अथवा) पुरानी कफवाली मिरगी के लिये यारज हिरमिसी और छोटा भिलावां बहुत लाभदायक है । दूसरे यह कि यह रोग बादी के कारण उत्पन्न हो उसका चिन्ह यह है कि खफकान और दिल का फडकना और झाग जो मुख से आता है उस का स्वाद खट्टा हो और कभी कभी जो झाग पृथ्वी पर गिर पडे उसकी तजी और खटाई की अधिकता से पृथ्वी उबलने लगे जैसा कि सिरके से उबलती है और मिरगी के पहले से झूठे सदह बुरे २ विचार तथा चिन्ता और क्रोध की अधिकता हो और भूख की अधिकता हो जब कि मल दिमाग मे और देह में भी फैल गया हो यह रोग कफ की मृगी की अपेक्षा बहुत बुरा है क्यों कि कफ दिमाग की प्रकृति के अनुकूल है और जो वस्तु अनुकूल होती है वह कम हानि पहुंचाती है ॥ (इलाज) मल के पकने पर अफतीमून के काढे और बादी दूर करने वाली गोलियों से मल के साफ होने पर सिर के पुष्ट करने के लिये अम्बर और गुलाब सूंघे मुर्गी के बच्चे मोटी मुर्गियों और बकरी के मांस स बनाये हुये शोर्बे खावे

सी शारीरिक परिश्रम भी करता रहै और देह को इस तरह मला करे कि हाथ को ऊपर से नीचे की तरफ लावें और हाथ पांव से मलना आरम्भ करें फिर सिर को भी इसी तरह मले ॥

❀ मृगी रोग मे वर्जित कर्म ❀

मल कारक अजीर्ण कारक, अण्डो के सालन और उन वस्तुओं से जो भाफ के परमाणु उत्पन्न करती हैं और देर में पचने वाली वस्तुओं जैसे सन, सल्गम, मूली आदि का सेवन न करना उचित है तथा जाडा, गर्मी मैथुन कर्म बहते पानी में देखना, चांदनी, और ऊंची जगह पर बैठना, न्हाने की जगह बहुत ठहरना, अधिक चलना, घोडे पर बैठकर दौडाना, नमकीली और घूमती हुई वस्तुओं को ध्यान से देखना यह सब बातें मिरगी वालों को हानि कारक हैं। कफ वाली मिरगी में सब से उत्तम भोजन चने का पानी है जो कि तीतर, बटेर, मुर्ग, हिरन के मास से मिलकर पका हो और मिरगी के समय हाग और शहद का पानी हलक में डालना लाभदायक है ॥

❀ माजून सिसारालयूस के बनाने की रीति ❀

अकरकरा, उस्तखुद्दूस, सिसालयूस प्रत्येक ३९ माशे गारीकून १७॥ माशे, किर्दमाना, हींग, जरावन्द, मुदहरंजि, ऊदनिलसा और बिलसां की गाली प्रत्येक ८॥ माशे सब को कूट कर जगली प्याज की बनी हुई शिकञ्जबीन में मिलावें इन की मात्रा ४॥ माशे है इनमें किर्दमाना ताजा और तर हो और हींग दुगन्धित हो। (अथवा) पुरानी कफवाली मिरगी के लिये यारज हिरामिसी और छोटा भिलावां बहुत लाभदायक है। दूसरे यह कि यह रोग बादी के कारण उत्पन्न हो उसका चिन्ह यह है कि खफकान और दिल का फड़कना और झाग जो मुख से आता है उस का स्वाद खट्टा हो और कभी कभी वो झाग पृथ्वी पर गिर पडे उसकी तेजी और खटाई की अधिकता से पृथ्वी उबलने लगे जैसा कि सिरके से उबलती है और मिरगी के पहले से झूठे खराब बुरे २ विचार तथा चिन्ता और सोच की अधिकता हो और भूख की अधिकता हो जब कि मल दिमाग मे और देह में भी फैल गया हो यह रोग कफ की मृगी की अपेक्षा बहुत बुरा है क्यों कि कफ दिमाग की प्रकृति के अनुकूल है और जो वस्तु अनुकूल होती है वह कम हानि पहुंचाती है ॥ (इलाज) मल के पकने पर अफतीमून से काढे और बादी दूर करने वाली गोलियां ॥ मल के साफ होने पर सिर के पुष्ट करने के लिये अम्बर और गुलाब हुये मुर्गी के बच्चे मोटी मुर्गियां और बकरी के मांस से बनाये हुये शोर्वा ॥

उत्पन्न होती है उस का लक्षण यह है कि बहपना बेचैनी घबगहट और गर्मी उस समय अधिकता से हो, वमन आवे । तथा मुख और आँखें पीली पड़जाय और मिरगी जल्द जाती रहे और इठना कम उत्पन्न हो वा न भी हो क्योंकि मल बहुत हलका और पतला होता है जैसा ऊपर कहागया है (इलाज) पित्त के मल के निकालने के लिये शर्बत आलू और इमली का शर्बत ठंडे पानी में मिलाकर पीवे और प्रकृति को ठीक करने के लिये सूंघने की दवाए और नाक में टपकाने की दवाएँ और ठंडे तथा तरतेल लगावे और जहां कहीं अंग इठ जाय तो तेल और गुन गुना पानी मृगी के समय और उस के पीछे भी देह पर मले यह काम ऐंठने के दूर करने के लिये है (लाभ) हकीम बुकरातने कहा है कि जिस समय दिमाग मिरगी में सिर और माथे पर सफेद दाग पडजाय तो जान लेवे कि मिरगी का द्रव्य नष्ट होगया ॥

दूसरा भेद शरीर में उत्पन्न होनेवाली मृगी ।

इस प्रकार का मिरगी रोग शरीर के अवयव वा आमाशय वा तिल्ली वा पेटके के ऊपर की झिल्ली वा जिगर वा गर्भस्थान वा आंत वा हाथ पावों में वा ऐसेही और अगमें होता है जैसा कि संयोगिक सिर के दर्द म वर्णन किया गया है फिर इस मल से भाफ के परमाणु वा रीह उठकर दिमाग में आके मृगी उत्पन्न करते हैं और अगके संयोग के अनुसार इसप्रकार के रोगके कई भेद हैं १ वह जो मृगी आमाशय के कारण से उत्पन्न होती है जब आमाशय दूषित कफ या वात वा पित्त से भर जाता है तो उन दोषों से दिमाग की तरफ भाफ के परमाणु चढते हैं फिर कभी या होता है कि केवल निकम्मी दशा से दिमाग कष्ट पाता है और सुकड जाता है इस कारण से रूह के रास्ते बंद हो जाते हैं दोषों की गांठ पडने से मिरगी उत्पन्न हो जाती है और यह प्रगट है कि जब तक बहुत बुराई नहो तब तक दिमाग में इठावही नहीं होता है परन्तु जहां कहीं दिमाग की शक्ति तेज और अधिक हो जाय वहां थोडी सी बुराई भी हो जाती है और यह बात प्रगट है कि भाफ के परमाणु उतनेही बुरे होंगे जैसा कि इन का मल बुरा होगा और कभी ऐसा भी होता है कि निकम्मी भाफ के परमाणु के बढ जाने से भी दिमाग कष्टपाता है और खिंचजाता है इनमें से किसी हेतुसे मृगी उत्पन्न हो जाती है जो गाढी भाफ का वर्णन है वह इस लिये है कि हलकी भाफ से विशेष करके चलने फिरने वाले अंगोंमें गांठ नहीं पडसकती है और जबतक कारण बलवान नहो भाफ रूहकी स्वाभाविक चेष्टा को कभी रोक

उत्पन्न होती है उस का लक्षण यह है कि वहकना बेचैनी घबराहट और गर्मी उस समय अधिकता से हो, वमन आवे। तथा मुख और आंखें पीली पड़जांय और मिरगी जल्द जाती रहे और ऐठना कम उत्पन्न हो वा न भी हो क्योंकि मल बहुत हलका और पतला होता है जैसा ऊपर कहागया है (इलाज) पित्त के मल के निकालने के लिये शर्बत आलू और इमली का शर्बत ठंडे पानी में मिलाकर पीवे और प्रकृति को ठीक करने के लिये सूघने की दवाए और नाक में टपकाने की दवाएं और ठंडे तथा तरतेल लगावे और जहां कहीं अंग ऐठ जाय तो तेल और गुन गुना पानी मृगी के समय और उस के पीछे भी देह पर मलें यह काम ऐंठने के दूर करने के लिये है (लाभ) हकीम रूफसने कहा है कि जिस समय दिमाग मिरगी में सिर और माथे पर सफेद दाग पड़जाय तो जान लेवें कि मिरगी का द्रव्य नष्ट होगया॥

दूसरा भेद शरीर में उत्पन्न होनेवाली मृगी।

इस प्रकार का मिरगी रोग शरीर के अवयव वा आमाशय वा तिल्ली वा पेड़के के ऊपर की झिल्ली वा जिगर वा गर्भस्थान वा आंत वा हाथ पावों में वा ऐसेही और अगमें होता है जैसा कि सयोगिक सिर के दर्द में वर्णन किया गया है फिर इस मल से भाफ के परमाणु वा रीह उठकर दिमाग में आके मृगी उत्पन्न करते हैं और अगके सयोग के अनुसार इसप्रकार के रोगके कई भेद हैं १ यह जो मृगी आमाशय के कारण से उत्पन्न होती है जब आमाशय दूषित कफ या वात वा पित्त से भर जाता है तो उन दोषों से दिमाग की तरफ भाफ के परमाणु चढते हैं फिर कभी या होता है कि केवल निकम्मी दशा से दिमाग कष्ट पाता है और सुकड जाता है इस कारण से रूह के रास्ते बंद हो जाते हैं दोषों की गांठ पड़ने से मिरगी उत्पन्न हो जाती है और यह प्रगट है कि जब तक बहुत बुराई नहो तब तक दिमाग में ऐठावही नहीं होता है परन्तु जहां कहीं दिमाग की शक्ति तेज और अधिक हो जाय वहां थोडी सी बुराई भी हो जाती है और यह बात प्रगट है कि भाफ के परमाणु उतनेही बुरे होंगे जैसा कि इन का मल बुरा होगा और कभी ऐसा भी होता है कि निकम्मी भाफ के परमाणु के चढ जाने से भी दिमाग कष्टपाता है और खिंचजाता है इनमें से किसी हेतुसे मृगी उत्पन्न हो जाती है जो गाढी भाफ का वर्णन है वह इस लिये है कि हलकी भाफ से विशेष करके चलने फिरने वाले अगोंमें गांठ नहीं पडसक्ती है और जबतक कारण बलवान नहो भाफ हलकी स्वाभाविक चेष्टा को कभी रोक

भी होता है कि केवल उचित भोजनों के खाने में मृगी जाती रहती है और दूसरी दवाओं की आवशयकता नहीं पड़ती इन बातों से यह प्रगट होता है कि बुरे दोषों के कारण से मिरगी होजाती है न कि अधिकता के कारण से और वे लक्षण तो कई बार वर्णन हो चुके हैं जिन से रोग पैदा करने वाले दोषों के भेद मालूम होते हैं

(इलाज) यदि उचित हो तो पहले सरेरू वा बासलीक की फस्द खोले क्यों कि फस्द में चारों दोष निकलते हैं । हर प्रकार के मल को निकालने के लिये दस्त और वमन करावे । आमाशय की मृगी में वमन करना अधिक गुणकारी है और वे दस्तावर गोलियां और काढे काम में लावे जो इस रोग में उचित समझे जांय यदि दोष कफयुक्त हो तो वमन के लिये मूली और सोये के पानी में शहद की बनी हुई शिकञ्जबीन मिलाकर पीवे और वमन कर डाले और जो दोष बादी का हो तो मूली को चीर कर उस में काली कुटकी भरदे फिर उसको बन्द करके शिकञ्जबीन में भिगोदे फिर उस मूली को खावे और शहद की शिकञ्जबीन लोबिये के पानी में मिलाकर उसके पीछे धीरे२ वमन करने का उपाय करे और जो दोष पित्तयुक्त हो तो सोये खर्बूजे और खब्बाजी के बीजों का क्वाथ करके उस में थोडा नमक मिलाकर शिकञ्जबीन के साथ पीवे और वमन कर डाले और जो गर्म पानी मिलाले तो भी अच्छा है । इस तरह मल को निकाल कर आमाशय को पुष्ट करे जिससे वह फिर मलको ग्रहण न करे और पुष्टाई भी हर दोष के अनुसार पहुंचानी चाहिये जैसे कफ की दशा में गुलाब के फूल-मस्तगी-कुन्दरू के छोटे २ टुकड़े, अगर और बालछड़ इन पांचों दवाओं को महीन करके गुलाब में मिलाकर आमाशय पर लेप करे * और तिरियाके अरबा, गर्म जवारिश और गुलकन्द खाय और भुना मांस और पक्षियों का मांस दालचीनी से छौंककर खाय और बादी में चन्दन और गुलाब का लेप करे और जो कुछ दवाएं कफ की दशा में वर्णन की हैं वे यहां भी लाभदायक हैं और दूध पीनेवाली बकरी का मांस और मुर्गी के बच्चों का मांस, मूंग, और बादाम की मिंगी और पालक के साथ पका कर खाय और पित्त की दशा में सुर्फा और काहू के पत्ते और बेद की डालियां पीसकर और सिरके में सांध कर लेप करे और पिचि का रुब्ब यातरीफा--खाला

* तिरियाक उस दवा का नाम है जो जहर को दूर करती है । तिरियाक अरबा यह एक नुसखा है जो इब्बुलगार--साबिया--मरमकी--आयन्द हर्फ़ से मिलकर बनता है ॥

भी होता है कि केवल उचित भोजनों के खाने से मृगी जाती रहती है और दूसरी दवाओं की आवश्यकता नहीं पड़ती इन बातों से यह प्रगट होता है कि बुरे दोषों के कारण से मिरगी होजाती है न कि अधिकता के कारण से और वे लक्षण तो कई बार वर्णन हो चुके हैं जिन से रोग पैदा करने वाले दोषों के भेद मालूम होते हैं

(इलाज) यदि उचित हो तो पहले सरेरू वा बासलीक की फस्द खोले क्यों कि फस्द में चारों दोष निकलते हैं । हर प्रकार के मल को निकालने के लिये दस्त और वमन करावे । आमाशय की मृगी में वमन करना अधिक गुणकारी है और वे दस्तावर गोलियां और काढे काम में लावे जो इस रोग में उचित समझे जांय यदि दोष कफयुक्त हो तो वमन के लिये मठी और सोये के पानी में शहद की बनी हुई शिकजबीन मिलाकर पीवे और वमन कर डाले और जो दोष बादी का हो तो मूली को चीर कर उस में काली कुटकी भरदे फिर उसको बन्द करके शिकजबीन में भिगोदे फिर उस मूली को खावे और शहद की शिकजबीन लोबिये के पानी में मिलाकर उसके पीछे पीकर वमन करने का उपाय करे और जो दोष पित्तयुक्त हो तो सोये खर्बूजे और खरबूजी के बीजों का क्वाथ करके उस में थोड़ा नमक मिलाकर शिकजबीन के साथ पीवे और वमन कर डाले और जो गर्म पानी मिलाले तो भी अच्छा है । इस तरह मल को निकाल कर आमाशय को पुष्ट करे जिससे वह फिर मलको ग्रहण न करे और पुष्टाई भी हर दोष के अनुसार पहुंचानी चाहिये जैसे कफ की दशा में गुलाब के फूल-मस्तंगी-कुन्दरू के छोटे २ टुकड़, अगर और बालछड़ इन पांचों दवाओं को महीन करके गुलाब में मिलाकर आमाशय पर लेप करे * और तिरियाके अरबा, गर्म जवारिश और गुलकन्द खाय और भुना मांस और पक्षियों का मांस दालचीनी से सुगन्धित करके खाय और बादी में चन्दन और गुलाब का लेप करे और जो कुछ दवायें कफ की दशा में वर्णन की है वे यहां भी लाभदायक है और दूध पीनेवाली बकरी का मांस और मुर्गी के बच्चों का मांस, मूंग, और बादाम की मिंगी और पालक के साथ पका कर खाय और पित्त की दशा में सुर्फा और काहू के पत्ते और बेद की डालियां पीसकर और सिरके में सान कर लेप करे और बिही का रुब्ब खट्टाभा-खट्टा

* तिरियाक उस दवा का नाम है जो जहर को दूर करती है । तिरियाक अरबा यह एक नुसखा है जो हब्बुलगार-जावशीर-मुरमकी जुन्तयान चार चीजों से मिलकर बनता है ॥

सेवन में जाती रहती है इस लिये उसको पित्तवाली मृगी जानकर दोनों का एक ही इलाज बर्णन किया है। अब जानना चाहिये कि जिस प्रकार की मृगी लड़कों को हुआ करती है उसे उम्मुस्सिबियां बोलते हैं और यह ठीक नहीं है कि बच्चों को पित्त की मृगी के सिवाय दूसरी न हो इस लिये कोई कोई मूर्ख नादान यह सोच कर कि बच्चों की मृगी का नाम उम्मुस्सिबियां है और इलाज इस का और पित्त का एकसा है ठंढे द्रव्यों के सिवाय दूसरी वस्तु नहीं देते और बहुधा बच्चों को मार डालते हैं। यह बात बहुत बुरी है लक्षणों के द्वारा बीमारी का निदान कर के उस के अनुसार इलाज करना उचित है जैसे जो पित्त के चिन्ह मालूम हों तो पित्त वाली मृगी के सदृश इलाज करे और ठंढी तर वस्तु नाक में डाले और सिर पर दूध लगावे परन्तु उसकी माता का दूध बहुत अच्छा है और उसे ठंढे मकानों में रक्खे और जो कफ के चिन्ह हों तो वह उपाय करे जो कफवाली मृगी में वर्णन किये गये हैं और जिस तरह हो सके बालक की धाय के दूध का भी उपाय करना चाहिये और उसे पुरुष सगम से भी रोके और बादल की गरज और बन्दूक तथा अन्य ऐसे ही भयकर शब्द बालक को न सुनने देवे तथा और भी ऐसी बातों से बचाना उचित है॥

अब हम यहां ऐसे अत्यन्त लाभदायक उपायों का वर्णन करते हैं जो सब प्रकार की मृगीयों के आने के समय करने के योग्य है मृगी वाला बहुधा जीभ चबाया करता है इस लिये नर्म कपड़े में रुई भर कर गेंद सी बना लेवे और जिस समय मिरगी प्रगट होने लगे तब वह गेंद उसके मुहमें रखदेवे जिस से जीभ न कट जाय और मुख भी खुला रहे तथा हींग और जुंदबेदस्तर महीन पीस कर शहद की शिकंजबीन में मिलाकर गले में टपकावे (अथवा) नकछिकनी, कुटकी इन्द्रायण का गूदा, करेले का निचोड़ा हुआ पानी, कालीमिरच, कलौंजी, सोंठ, सुर फरफयून और जुन्दबदस्तर इन दवाओं में से जो मिल सके पीसकर नाक में मले और कदे फादानियां (ऊदेसलीब) की नाक के सामने धूनी देवें और जो पीसकर नाक में भी फूंके तो भी कुछ हानि नहीं है ये सब उपाय इस लिये हैं कि चैतन्यता शीघ्र आजाय और ऊदे सलीब को भुजा पर बांधना सब मृगीवालों को लाभदायक है यदि वहां हरी उदेसलीब मिलजावे तो सब से अच्छा है (अथवा) हरी वा खुश्क तुलसी का सूंघना चैतन्यता वा मृगी आने पर दोनों दशाओं में लाभ दायक है। और ऐसे ही गर्मी पहुंचाने वाली [illegible] से [illegible] भी चेत कराता है जैसा कि ठंढे सिर दर्द में व [illegible]

सेवन से जाती रहती है इस लिये उसको पित्तवाली मृगी जानकर दोनों का एक ही इलाज वर्णन किया है। अब जानना चाहिये कि जिस प्रकार की मृगी लड़कों को हुआ करती है उसे उम्मुस्सिबियां बोलते हैं और यह ठीक नहीं है कि बच्चों को पित्त की मृगी के सिवाय दूसरी न हो इस लिये कोई कोई मूर्ख नादान यह सोच कर कि बच्चों की मृगी का नाम उम्मुस्सिबियां है और इलाज इस का और पित्त का एकसा है ठंडे द्रव्यों के सिवाय दूसरी वस्तु नहीं देते और बहुधा बच्चों को मार डालते हैं। यह बात बहुत बुरी है लक्षणों के द्वारा बीमारी का निदान कर के उस के अनुसार इलाज करना उचित है जैसे जो पित्त के चिन्ह मालूम हो तो पित्त वाली मृगी के सदृश इलाज करे और ठंडी तर वस्तु नाक में डाले और सिर पर दूध लगावे परन्तु उसकी माता का दूध बहुत अच्छा है और उसे ठंडे मकानों में रक्खे और जो कफ के चिन्ह हो तो वह उपाय करे जो कफवाली मृगी में वर्णन किये गये हैं और जिस तरह हो सके बालक की धाय के दूध का भी उपाय करना चाहिये और उसे पुरुष संगम से भी रोके और बादल की गरज और बन्दूक तथा अन्य ऐसे ही भयंकर शब्द बालक को न सुनने देवे तथा और भी ऐसी बातों से बचाना उचित है ॥

अब हम यहां ऐसे अत्यन्त लाभदायक उपायों का वर्णन करते हैं जो सब प्रकार की मृगीयों के आने के समय करने के योग्य है मृगी वाला बहुधा जीभ चबाया करता है इस लिये नर्म कपड़े में रुई भर कर गेंद सी बना लेवे और जिस समय मिरगी प्रगट होने लगे तब वह गेंद उसके मुहमें रखदेवे जिस से जीभ न कट जाय और मुख भी खुला रहे तथा हींग और जुंदेबेदस्तर महीन पीस कर शहद की शिकंजबीन में मिलाकर गले में टपकावे (अथवा) नकछिकनी, कड़ुई इन्द्रायण का गूदा, करेले का निचोया हुआ पानी, कालीमिरच, कलौंजी, सोंठ, सुर फरफयून और जुन्दबदस्तर इन दवाओं में से जो मिल सके पीसकर नाक में मले और कदे फारासियो (कदेसलीब) की नाक के सामने धूनी देवे और जो पीसकर नाक में भी फूंके तो भी कुछ हानि नहीं है ये सब उपाय इस लिये हैं कि चैतन्यता शीघ्र आजाय औरकदे सलीब को भुजा पर बांधना सब मृगीवालों को लाभदायक है यदि वहां हरी उदेसलीब मिलजावे तो सब से अच्छा है (अथवा) हरी वा सूखी तुलसी का सूंघना चैतन्यता वा मृगी आने पर दोनों दशाओं में लाभ दायक है। और ऐसे ही गर्मी पहुंचाने वाली [illegible] से [illegible] ना भी चेत कराता है जैसा कि ठंडे सिर दर्द में बहु [illegible] म

की शक्ति का मार्ग एकसाथ बन्द होजाताहै जो मस्तक से देहमें आता है तथा सबदेह बेकार होजातीहै सब इन्द्रियां सत्ताहीन होजातीहैं और श्वास के सिवाय कोई सत्ता शेष नहीं रहती है रोगी सीधा चित्त पड़ारहताहै कभी २ श्वास भी चलना दिखाई नहीं देता और सक्तेवाला मुर्देकी सूरतहोजाताहै । सक्ते वाले और मुर्दे में जो अन्तरहै वह इस प्रकरण के अन्तमें वर्णन कियाजायगा चुप्प रहना इस रोग का प्रधान लक्षणहै इसीसे इसका नाम सक्ता रक्खागयाहै मस्तक के सब पर्दों में एक साथ पूरीगांठ का उत्पन्न होना इस रोगका पूर्णहेतु है और दिमाग में गांठ पड़जाने के दो कारण हैं एक यह कि दिमाग और उसकी पोल और मार्ग कफ वा रक्त वा वादीसे भरजांय परन्तु पित्तके दिमागमें भरजाने से ऐसी गांठ नहीं होसकती जिससे सक्ता उत्पन्नहो परन्तु यदि पित्तसे सूजनहो तो उस सूजनके दबावसे सक्ता उत्पन्न होसक्ताहै दूसरे यह कि सिरपर अधिक सर्दी पहुंचने से वा चोट और धमकके ऐसे दर्दसे जिससे सूजन उत्पन्न न हो वा निकम्मे भाफके परमाणुओंसे या बुरी और विषैली दशामें जिनका पूर्वमें वर्णन हुआहै सिरको कष्ट पहुंच और दिमाग इन बातों के कष्टोंसे विल्कुल सुकड़जाय यहां दिमागके सुकड़नेसे यह तात्पर्य है दिमाग ऐसा सुकड़जाय कि जिसमें दिमागीरूह आजा न सके इसीदशा में सक्ता उत्पन्न होताहै और जो रूह के आने जाने का मार्ग बन्द न हों और दिमाग न सुकड़े तो गांठ उत्पन्न नहीं होसकती । इसरोग की न्यूनाधिक्यता का हेतु बलाबल पर निर्भरहै । हकीम बुकरातने कहा है कि जिस समय सक्ता बलवान् होताहै तो अच्छा नहीं होता और निर्बल हो तो उसका अच्छाहोना सहज नहीं है इस रोगका बलाबल श्वास चलने की कठिनता और सुगमता से मालूम होजाताहै और इसमें झाग आना शक्ति के निर्बल होनेका चिह्न है । और बीमारी की अधिकतामें न झाग आते हैं न श्वास सरलतासे आता होताहै और न श्वास चलताहै और पीने की जो चीज जावे वह भी झाग सो नाक के रास्ते से बाहर निकल आवे ऐसा बीमार बन्द माना जाता है और हकीम जालीनूस ने कहा है कि यह बात नहीं है कि जो मनुष्य बेहोश हो जाय और उसका हिलना चलना जातारहे तो उसको सक्ते ही की बीमारी समझीजाय संभवहै कि उसको बुहरान अर्थात् गहरीनींद या रोग हो और बुहरान और सक्ते में जो अन्तरहै वह बुहरान के वर्णन में और सक्ते और मुर्दे के बीच में जो अन्तर है वह तिब्ब के वर्णन में लिखेंगे यदि नाड़ी की

की शक्ति का मार्ग एकसाथ बन्द होजाताहै जो मस्तक से देहमें आता है तथा सनदेह बेकार होजातीहै सब इन्द्रियां सज्ञाहीन होजातीहैं और श्वास के सिवाय कोई सज्ञा शेष नहीं रहती है रोगी सीधा चित्त पड़ारहताहै कभी २ श्वास भी चलना दिखाई नहीं देता और सक्तेवाला मुर्देकी सूरतहोजाताहै । सक्तेवाले और मुर्दे में जो अन्तरहै वह इस प्रकरण के अन्तम वर्णन कियाजायगा चुप्प रहना इस रोग का प्रधान लक्षणहै इसीसे इसका नाम सकता रक्खागयाहै मस्तक के सब पर्दो में एक साथ पूरीगांठ का उत्पन्न होना इस रोगका पूर्णहेतु है और दिमाग में गांठ पड़जाने के दो कारण हैं एक यह कि दिमाग और उसकी पोल और मार्ग कफ वा रक्त वा बादीसे भरजाय परन्तु पित्तके दिमागमें भरजाने से ऐसी गांठ नहीं होसकती जिससे सक्ता उत्पन्नहो परन्तु यदि पित्तमें सूजनहो तो उस सूजनके दबावसे सक्ता उत्पन्न होसक्ताहै दूसरे यह कि सिरपर अधिक सर्दी पहुंचने से वा चोट और धमकके ऐसे दर्दसे जिससे सूजन उत्पन्न न हो वा निकम्मे भाफके परमाणुओंसे या बुरी और विषैली दशासे जिनका पूर्वमें वर्णन हुआहै सिरको कष्ट पहुंचे और दिमाग इन बातों के कष्टोंसे बिल्कुल सुकड़जाय यहां दिमागके सुकड़नेसे यह तात्पर्य्य है दिमाग ऐसा सुकड़जाय कि जिसमें दिमागीरूह आजा न सके इसीदशा में सक्ता उत्पन्न होताहै और जो रूह के आने जाने का मार्ग बन्द न हो और दिमाग न सुकड़े तो गांठ उत्पन्न नहीं होसकी । इसरोग की न्यूनाधिक्यता का हेतु बलाबल पर निर्भरहै । हकीम बुकरातने कहा है कि जिस समय सक्ता बलवान् होताहै तो अच्छा नहीं होता और निर्बल हो तो उसका अच्छाहोना सहज नहीं है इस रोगका बलाबल श्वास चलने की कठिनता और सुगमता से मालूम होजाताहै और मुखमें झाग आना शक्ति के निर्बल होनेका चिह्न है । और बीमारी की अधिकताम न झाग आते हैं न श्वास भलीप्रकार मालूम होताहै और न श्वास चलसक्ताहै और पीने की जो चीज डाले गले के द्वार से नाक के रास्ते से बाहर निकल आवै ऐसा बीमार मर जाता है और हकीम जालीनूस ने कहा है कि यह बात नहीं है कि जो मनुष्य बेहोश हो जाय और उसका हिलना चलना जातारहे तो उसका मरने ही की बीमारी समझीजाय सम्भवहै कि उसको सुबात अर्थात् गहरीनींद या शोम हो और सुबात और सक्ते में जो अन्तरहै वह सुबात के वर्णन में और सक्ते और मुर्दे के बीच में जो अन्तर है वह [illegible] के वर्णन में [illegible] यदि गर्मी की

पहुचाना उचित होता है और दिमाग को गर्मी पहुचाने की (रीति) यह है कि कस्तूरी–तुतली–और–लौंग सुघावें (अथवा) नकछिक्नी, काली–मिर्च और जुन्दे बेदस्तर बारीक करके नाक मे फूकें और उचित तरह दवे सुम्मे वा गोले सिकतान काम म लाव और सिर के बाल मूड कर जुन्दे बदस्तर और राई पीस कर सिरके क साथ गर्म करके लेप करें इस से दिमाग को गर्मी पहुचती है और सब से उत्तम उपाय यह है कि नमदे का टुकडा गर्म करके वा गर्म ईंट सिर पर रक्खें वा नमदे की टोपी सिर पर पहनावें और लोह का तवा खूब गर्म करके टोपी के ऊपर रख देवे और सिर के पीछे के भाग पर गर्मी पहुचाने का अधिक ध्यान रक्खे और वमन कारक द्रव्य जैसे मुर्गे का पर तेल से चिकना करके अयारजे फैकरा में भर कर गले में डाले जिससे वमन हो जाय यदि वमन न भी हो तो भी कुछ न कुछ लाभ होगा और जब तक सौसन का तेल मिले मुर्गे क पर को और किसी तेल से चिकना न करें क्योंकि वह अधिक लाभदायक है कफ के सक्ते में विशेष करके जो आमाशय का मुख कफ से भरजाय तो वमन करना सब से उत्तम है तुतली वा सौसन का तेल अथवा और गर्म तेलों को मोम के साथ मिलाकर गर्म गर्म गर्दन और कमर के मनकों और गुद्दियों पर और तिरियाके कबीर और मसरूदीतूस शहद के पानी के साथ मिलाकर जिस उपाय से बन पडे गले में टपकावें और जो तिरियाक कबीर और मसरूदीतूस न मिले तो सौंफ अनीसून और जीरे के काढे में गुलकन्द मिलाकर गले में डालें ॥

हुकना बनाने की रीति

दाशा, सोया, बरनजासफ, कन्तरयून छोटा और तुखली सुदाब और बेर अजीर अधकुचली हुई–करफस के बीज इनको औटा कर छान ले और फिर लाल खांड और जैतून का तेल मिलावे और मगज और नमीत और गर इरमनी (चल) इन्द्रायन का गूदा–मस्तगीयां पीसकर काथ म मिलाके हुकना अर्थात् अमल करें। और आराम होने पर यह उपाय है कि जब चौथा, सातवां वा चौदहवां दिन मल की निर्बलता और शक्ति के अनुसार म दीत जाय कभी मल को न निकाले परन्तु मल पकाने क लिये [illegible] । अनीसून सौंफ और गावजबां प्रत्यक २॥ माशे [illegible] २५ माशे [illegible] पकाकर दे सकते हैं। और खाने के लिये [illegible] तीतर [illegible] पकाकर जीरा और दारचीनी आदि मिला [illegible] । इसी [illegible]

पहुंचाना उचित होता है और दिमाग को गर्मी पहुंचाने की (रीति) यह है कि कस्तूरी-तुतली-और-लौंग सुघावें (अथवा) नकछिक्नी, काली-मिर्च और जुन्दे बेदस्तर बारीक करके नाक में फूंकें और उचित तरह दवे सूम्ये वा गीले सिकताव काम में लावें और सिर के बाल मूंड कर जुन्दे बेदस्तर और राई पीस कर सिरके के साथ गर्म करके लेप करें इस से दिमाग को गर्मी पहुंचती है और सब से उत्तम उपाय यह है कि नमदे का टुकड़ा गर्म करके वा गर्म ईंट सिर पर रक्खें वा नमदे की टोपी सिर पर पहनावें और लोहे का तवा खूब गर्म करके टोपी के ऊपर रख देवे और सिर के पीछे के भाग पर गर्मी पहुंचाने का अधिक ध्यान रक्खे और वमन कारक द्रव्य जैसे मुर्गे का पर तेल से चिकना करके अयारजे फैकरा में भर कर गले में डाले जिससे वमन हो जाय यदि वमन न भी हो तो भी कुछ न कुछ लाभ होगा और जब तक सोसन का तेल मिले मुर्गे के पर को और किसी तेल से चिकना न करें क्योंकि वह अधिक लाभदायक है कफ के सक्ते में विशेष करके जो आमाशय का मुख कफ से भरजाय तो वमन करना सब से उत्तम है सुतली वा सोसन का तेल अथवा और गर्म तेलों को मोम के साथ मिलाकर गर्म गर्म गर्दन और कमर के मनकों और गुद्दियों पर और तिरियाके कबीर और मसरूदीतूस शहद के पानी के साथ मिलाकर जिस उपाय से बन पड़े गले में टपकावें और जो तिरियाक कबीर और मसरूदीतूस न मिले तो सौंफ अनीसून और जीरे के काढ़े में गुलकन्द मिलाकर गले में डालें ॥

॥ हुकना बनाने की रीति ॥

दाशा, सोया, बरन्जासफ, फवरपून छोटा और दाली सुदाब और बेर अजीर अधकुचली हुई-करफस के बीज सबको औटा कर छान ले और फिर लाल खांड और जैतून का तेल मिलावे और नमक और नमीत और ... इरमनी (वल) इन्द्रायन का गूदा-...बनियां पीसकर ऊपर से मिलावें हुकना अर्थात् अमल करें। और आराम होने पर यह उपाय है कि जब चौथा, सातवां वा चौदहवां दिन मल की निर्बलता और शक्ति के अनुसार न बीत जाय कभी मल को न निकाले परन्तु मल पकाने के लिये [illegible] । अर्थात् सौंफ और गावजवां मतबूक १॥ माशे [illegible] २५ नग [illegible] पकाकर दे सकते हैं। और खान के लिये [illegible] तीन [illegible] नमकीन जीरा और दारचीनी आदि मिला [illegible] । इसी [illegible]

यूनानी कोप में अजूबिल किया अर्थात् फालिज कहतेहै इस इस्तरखा में पुस की त्वचा का सुन्न होजाना भी सम्भव है जैसा कि हमने इसका कारण ऊपर वर्णन किया है और प्रगट है कि जिससमय इस्तरखा सामान्य हो अर्थात् सुस्त और ढीले होने का कारण सम्पूर्ण दिमाग के पट्ठों और हराम मग्ज के पट्ठा की जड़ म होगा तो वह रोग सका का होगा और जानना चाहिये कि अगले हकीमों ने फालिज और इस्तरखा में कुछ अंतर नहीं किया है दोनों का एक ही अर्थ वर्णन किया है और इस रोग के पूरे कारण दो है एक यह कि ज्ञानशक्ति और गमन शक्ति की रूह के पट्ठों औरअजलों में जो उसके कारण भूत अवयव हैं उन में गांठ पड़जाने से वा पट्ठे के कटजाने से उक्त रूह उन में न जा सके दूसरे यह कि यद्यपि गांठ रूह के जाने को रोके वा गांठ पड़ी भी न हो और उक्त शक्तिया पट्ठों में जाती हो परन्तु किसी अंग की प्रकृति में ऐसा उपद्रव होगयाहो जिससे वह इन शक्तियो के प्रभावको ग्रहण न करें और इस उपद्रव का कारण गर्मी, सर्दी तरी, वा खुश्की है परंतु ज्वरांश इन्द्रियों में बहुत कम हानि पहुंचाता है यही दशा खुश्की की भी है जैसा कि तपदिक वाले की दशा से जाना जाता है। यद्यपि गर्मी और खुश्की अंगों म अधिक होती है परन्तु इन्द्रियो की शक्तियां अपने स्वभाव ही पर रहती हैं परन्तु इसबातको ईश्वरही जानताहै किगर्मी और खुश्की कीअधिकता किसदर्जेपर पहुंचकर शक्तियों को रोकदेगी। सर्दी रूह की प्रकृति के विरुद्धहै और असलीरूह या जो कि किसीके आधीन नहींहै उसकी चालको गाढ़ाकरडालती और रुकोदेतीहै और यह इस्तरखा कि जिसका कारण सादा सर्दी हो बहुधा एक अंगम आ नहीं रहती और उसका इलाजभी सहजमें होजाताहै अर्थात् गर्म लेप और गर्मतेल जातारहताहै और तरी शरीरके जोड़ और सन्धियों को ससार ढीलाकरती है और रगों तथा पट्ठों को एक दूसरे पर फिसलादेतीहै और रूह के जौहरको गाढ़ा और तेज करती है और शक्तियों को पट्ठों में और अजलों में आने जाने देती है और रूह की प्रकृति को सर्दी ग्रहण करनेपर तत्पर करती है और यह बात प्रगटहै कि सर्दी रूहकी प्रकृति के विरुद्ध है तो अब मालूम हुआ कि इस्तरखा का कारण जो दहन एक और के बहुधा मार्गोंमें उत्पन्न होताहै गांठ है वा पट्ठे का टूटजाना वा कटजानाहै। गांठ होनेके सामान्य रंग सात हैं)

(१) किसी अंगको इसतरहपर चोटै कि पट्ठोंके जिसमार्गसे रूहकी शक्तियां और आती है वहबेद होजाय और वह अंग इस कारण से हिल चल न सके परंतु पर

यूनानी कोष में अहूबिल किया अर्थात् फालिज कहतेहैं इस इस्तरखा में पुरुष की त्वचा का सुन्न होजाना भी सम्भव है जैसा कि हमने इसका कारण ऊपर वर्णन किया है और प्रगट है कि जिससमय इस्तरखा सामान्य हो अर्थात् सुस्त और ढीले होने का कारण सम्पूर्ण दिमाग के पट्ठों और हराम मग्ज के पट्ठा की जड़ में होगा तो यह रोग सका का होगा और जानना चाहिये कि अगले हकीमों ने फालिज और इस्तरखा में कुछ अंतर नहीं किया है दोनों का एक ही अर्थ वर्णन किया है और इस रोग के पूरे कारण दो है एक यह कि ज्ञानशक्ति और गमन शक्ति की रूह के पट्ठों औरअजलों में जो उसके कारण भूत अवयव हैं उन में गांठ पड़जाने से वा पट्ठे के कटजाने से उक्त रूह उन में न जा सके दूसरे यह कि यद्यपि गांठ रूह के जाने को रोके वा गांठ पड़ी भी न हो और उक्त शक्तियां पट्ठों में जाती हों परन्तु किसी अंग की प्रकृति में ऐसा उपद्रव होगयाहो जिससे वह इन शक्तियों के प्रभावको ग्रहण न करें और इस उपद्रव का कारण गर्मी, सर्दी तरी, वा खुश्की है परंतु ज्वरांश इन्द्रियों में बहुत कम हानि पहुंचाता है यही दशा खुश्की की भी है जैसा कि तपदिक वाले की दशा से जाना जाता है। यद्यपि गर्मी और खुश्की अंगों में अधिक होती है परन्तु इन्द्रियों की शक्तियां अपने स्वभाव ही पर रहती हैं परन्तु इसबातको ईश्वरही जानताहै किगर्मी और खुश्की कीअधिकता किसहदपर पहुंचकर शक्तियों को रोकदेगी। सर्दी रूह की प्रकृति के विरुद्धहै और असलीरूह या जो कि किसीके आधीन नहींहै उसकी च्यालको गाढ़ाकरडालती और गुदेस्देतीहै और वह इस्तरखा कि जिसका कारण सादा सर्दी हो बहुधा एक अगग आ नहीं रहती और उसका इलाजभी सहजमें होजाताहै अर्थात् गर्म लेप और गर्मतलों जातारहताहै और तरी शरीरके जोड़ और मांसों को परस्पर मिलादेती है और तरी तथा पट्ठों को एक दूसरे पर विरलादेतीहै और रूह के जोरसे गाढ़ा और तेज करती है और शक्तियों को पट्ठों में और अजलों में आने रोकती है और रूह की प्रकृति को सर्दी ग्रहण करनेपर तत्पर करती है और यह बात प्रगटहै कि सर्दी रूहकी प्रकृति के विरुद्ध है तो अब मालूम हुआ कि इस्तरखा का कारण जो दहय एक ओर के पट्ठों मार्गोंमें उत्पन्न होताहै गांठ है वा पट्ठे का टूटजाना वा कटजानाहै। गांठ होनेके सामान्य हेतु यह हैं)

(१) किसी अंगको इसतरहपरचोट कि पट्ठोंके जिसमार्गसे रूहकी शक्तियां अंग आती हैं वहबेद होजाय और वह अंग इस कारण से हिल चल न सके पट्ठे पर

चिन्ह है और पट्ठा टूटजाने का यह चिन्ह है कि किसी दवा से लाभ न हो और उसका इलाज भी नहीं हो सक्ता हो और सूजन का इस्तरखा सिचावट कष्ट और हर समय ज्वर रहने से पहचाना जा सकता है अब जो सूजन गर्म होगी तो दुख भी बहुत होगा और ज्वर भी बहुत तेज होगा और जो सूजन ठंडी होगी तो दर्द भी कम होगा और ज्वर भी हलका होगा और ऐसे ही जो कड़ी सूजन होगी तो छूने से मालूम हो जायगी और इस से पहले कुछ दर्द भी हुआ होगा और जो सूजन हलकी हो तो ज्वर के हलका होने और दर्द के कम होने से मालूम होजाता है और सुन्न होजाता है और चलने के समय दर्द अधिक होजाता है और जो इस्तरखा कि गर्म सूजन के कारण से उत्पन्न हो वह अधिक इलाज चाहने वाला है और जो इस्तरखा धमाके और चोट और गुडियों के हट जाने से और जोड़ उखड़जाने से उत्पन्न हो और जो पट्ठे के कटजाने से उत्पन्न हो उसको उसके हेतु से पहचान लेवे और जोड़ के गढे में एक अधिक वस्तु निकली हुई मालूम हो तो जोड़ के उखड़ जाने का चिन्ह है और जो गुडिया अपनी जगह से हट जाय तो उस का चिन्ह यह है कि जो भीतर की तरफ हट गये हैं तो पीठ और गर्दन भीतर को दब जायगी और छाती बाहर को निकल आवेगी और जो गुडिया बाहर की तरफ निकल जांय तो कमर और गर्दन बाहर की तरफ आकर झुकी हो जायगी और जो पट्ठे के गाढ़ होजाने से और खुश्की की अधिकता से इस्तरखा हो जाय तो उसका यह चिन्ह है कि पसारना और सकोड़ना ये दोनों काम कठिनता से कर सके और जो पट्ठा सर्दी के पहुंचने से कड़ा और गाढ़ा हो गया है तो उसका चिन्ह कारण का पहले होना है जिसका कारण गाढ़ा सर्दी या गाढ़ा तरी हो उसका चिन्ह यह है कि बीमारी धीरे २ उत्पन्न हो और दुख की शक्ति नष्ट होजाय और पट्ठों के गर्म करने वाली दवाओं से आराम मिले और ऐसे ही जो दो कारण के मिलने से उत्पन्न हो उसकी दशा भी उन चिन्हों के मिल जाने से जिनका बार बार वर्णन किया गया है नहीं छिप रह सकता जैसे बहुत ठंडा पानी पीना और बर्फ में फिरना और पानी में * खड़ा होना यह दुष्ट प्रकृति और साधारण तरी का (चिन्ह) है ॥

* हकीम जालीनूस ने कहा है कि एक मनुष्य मछली का शिकार करता था उस कारण से उसके पसीने की जगह और मसाने की जगह और मसाने की जगह में सर्दी आगई और आंतें और फुन्ना दोनों ठंडे होगये तो पेशाब और पसाना व गन्द (?) निकल जाता था ॥

चिन्ह है और पट्ठा टूटजाने का यह चिन्ह है कि किसी दवा से लाभ न हो और उसका इलाज भी नहीं हो सक्ता हो और सूजन का इस्तरखा खिंचावट कष्ट और हर समय ज्वर रहने से पहचाना जा सकता है अब जो सूजन गर्म होगी तो दुख भी बहुत होगा और ज्वर भी बहुत तेज होगा और जो सूजन ठंडी होगी तो दर्द भी कम होगा और ज्वर भी हलका होगा और ऐसे ही जो कड़ी सूजन होगी तो छूने से मालूम हो जायगी और इस से पहले कुछ दर्द भी हुआ होगा और जो सूजन हलकी हो तो ज्वर के हलका होने और दर्द के कम होने से मालूम होजाता है और सुन्न होजाता है और चलने के समय दर्द अधिक होजाता है और जो इस्तरखा कि गर्म सूजन के कारण से उत्पन्न हो वह अधिक इलाज चाहने वाला है और जो इस्तरखा धमाके और चोट और गुड़ियों के हट जाने से और जोड़ उखड़जाने से उत्पन्न हो और जो पट्ठे के कटजाने से उत्पन्न हो उसको उसके हेतु से पहचान लें और जोड़ के गढे में एक अधिक वस्तु निकली हुई मालूम हो तो जोड़ के उखड़ जाने का चिन्ह है और जो गुड़िया अपनी जगह से हट जाय तो उस का चिन्ह यह है कि जो भीतर की तरफ हट गये हैं तो पीठ और गर्दन भीतर को दब जायगी और छाती बाहर को निकल आवेगी और जो गुड़िया बाहर की तरफ निकल जाय तो कमर और गर्दन बाहर की तरफ आकर कुबड़ी हो जायगी और जो पट्ठे के गाढ होजाने से और खुश्की की अधिकता से इस्तरखा हो जाय तो उसका यह चिन्ह है कि पसारना और सकोड़ना ये दोनों काम कठिनता से कर सकें और जो पट्ठा सर्दी के पहुंचने से कड़ा और गाढा हो गया है तो उसका चिन्ह कारण का पहले होना है जिसका कारण गाढा सर्दी या गाढा तरी हो उसका चिन्ह यह है कि बीमारी धीरे २ उत्पन्न हो और इन की शक्ति नष्ट होजाय और पट्ठों के गर्म करने वाली दवाओं से आराम मिले और ऐसे ही जो दो कारण के मिलने से उत्पन्न हो उसकी दशा भी दो चिन्हों के मिल जाने से जिनका बार बार वर्णन किया गया है जान सकता जैसे बहुत ठंडा पानी पीना और बर्फ में फिरना और पानी में * खड़ा होना यह दुष्ट प्रकृति और साधारण सर्दी का (चिन्ह) है ॥

* हकीम जालीनूस ने कहा है कि एक मनुष्य मछली का शिकार करता था उस कारण से उसके पखाने की जगह और मसाने की जगह और मसाने की जगह में सर्दी आगई और आंतें और फुन्ना दोनों ढीले होगये तो पखाने और पेशाब बे खबर होकर निकल जाता था ॥

चिन्ह है और पट्ठा टूटजाने का यह चिन्ह है कि किसी दवा से लाभ न हो और उसका इलाज भी नहीं हो सक्ता हो और सूजन का इस्तरखा खिचावट पड़ और हर समय ज्वर रहने से पहचाना जा सकता है अब जो सूजन गर्म होगी तो दुख भी बहुत होगा और ज्वर भी बहुत तेज होगा और जो सूजन ठंढी होगी तो दर्द भी कम होगा और ज्वर भी हलका होगा और ऐसे ही जो कड़ी सूजन होगी तो छूने से मालूम हो जायगी और इस से पहले कुछ दर्द भी हुआ होगा और जो सूजन हलकी हो तो ज्वर के हलका होने और दर्द के कम होने से मालूम होजाता है और ख़ुश्क होजाता है और चलने में समय दर्द अधिक होजाता है और जो इस्तरखा कि गर्म सूजन के कारण से उत्पन्न हो वह अधिक इलाज चाहने वाला है और जो इस्तरखा धमाके और चोट और गुड़ियों के हट जाने से और जोड़ उखड़जाने से उत्पन्न हो और जो पट्ठे के कटजाने से उत्पन्न हो उसको उसके हेतु से पहचान लेवे और जोड़ में गढ़े में एक अधिक वस्तु निकली हुई मालूम हो तो जोड़ के उखड़ जाने का चिन्ह है और जो गुड़िया अपनी जगह से हट जाय तो उस का चिन्ह यह है कि जो भीतर की तरफ हट गये हैं तो पीठ और गर्दन भीतर को दब जायगी और छाती बाहर को निकल आवगी और जो गुड़िया बाहर की तरफ निकल जाय तो कमर और गर्दन बाहर की तरफ आकर कुबड़ी हो जायगी और जो पट्ठे के गाढ़े होजाने से और ख़ुश्की की अधिकता से इस्तरखा हो-जाय तो उसका यह चिन्ह है कि पसारना और समेटना ये दोनों काम कठिनता से कर सके और जो पट्ठा सर्दी के पहुंचने से कड़ा और गाढ़ा हो गया है तो उसका चिन्ह कारण का पहले होना है जिसका कारण माद्दा सर्दी या साद्दा सर्दी हो उसका चिन्ह यह है कि बीमारी धीरे २ उत्पन्न हो और पुन की शक्ति नष्ट होजाय और पट्ठों के गर्म करने वाली दवाओं से आराम मिले और ऐसे ही जो दो कारण के मिलने से उत्पन्न हो उसकी दशा भी इन चिन्हों के मिल जाने से जिनका बार बार वर्णन किया गया है नहीं छिप सकता जैसे बहुत ठंढा पानी पीना और बर्फ में फिरना और पानी में सदा रहना सर्द दुष्ट प्रकृति और साधारण सर्दी का (चिन्ह) है ॥

* हकीम जालीनूस ने कहा है कि एक मनुष्य हड्डी का शिकार था इस कारण से उसके पखाने की जगह और पेशाब की जगह और मसाने की जगह में सर्दी आगई और आंतें और फुकना दोनों ढीले होगये थे पेशाब और पखाना बे रोक टोक निकल आता था ॥

चिन्ह है और पट्ठा टूटजाने का यह चिन्ह है कि किसी दवा से लाभ न हो और उसका इलाज भी नहीं हो सक्ता हो और सूजन का इस्तरखा मिलावट कर और हर समय ज्वर रहने से पहचाना जा सकता है अब जो सूजन गर्म होगी तो दुख भी बहुत होगा और ज्वर भी बहुत तेज होगा और जो सूजन ठंडी होगी तो दर्द भी कम होगा और ज्वर भी हलका होगा और ऐसे ही जो कड़ी सूजन होगी तो छूने से मालूम हो जायगी और इस से पहले कुछ दर्द भी हुआ होगा और जो सूजन हलकी हो तो ज्वर के हलका होने और दर्द के कम होने से मालूम होजाता है और सुन्न होजाता है और चलने के समय दर्द अधिक होजाता है और जो इस्तरखा कि गर्म सूजन के कारण से उत्पन्न हो वह अधिक इलाज चाहने वाला है और जो इस्तरखा धमाके और चोट और गुड़ियों के हट जाने से और जोड़ उखड़जाने से उत्पन्न हो और जो पट्ठे के कटजाने से उत्पन्न हो उसको उसके हेतु से पहचान लेवे और जोड़ के गढ़े में एक अधिक वस्तु निकली हुई मालूम हो तो जोड़ के उखड़ जाने का चिन्ह है और जो गुड़िया अपनी जगह से हट जाय तो उस का चिन्ह यह है कि जो भीतर की तरफ हट गये हैं तो पीठ और गर्दन भीतर को दब जायगी और छाती बाहर को निकल आवेगी और जो गुड़िया बाहर की तरफ निकल जाय तो कमर और गर्दन बाहर की तरफ आकर कुबड़ी हो जायगी और जो पट्ठे के गाढ़े होजाने से और खुश्की की अधिकता से इस्तरखा हो-जाय तो उसका यह चिन्ह है कि पसारना और सकोड़ना ये दोनों काम कठिनता से कर सके और जो पट्ठा सर्दी के पहुंचने से कड़ा और गाढ़ा हो गया है तो उसका चिन्ह कारण का पहले होना है जिसका कारण मादा गर्मी या सादा सर्दी हो उसका चिन्ह यह है कि बीमारी धीरे २ उत्पन्न हो और पुन की शक्ति नष्ट होजाय और पट्ठों के गर्म करने वाली दवाओं से आराम मिले और ऐसे ही जो दो कारण के मिलने से उत्पन्न हो इसकी दशा भी इन चिन्हों के मिल जाने से जिनका बार बार वर्णन किया गया है नहीं छिप सक्ता जैसे बहुत ठंडा पानी पीना और बर्फ में फिरना और पानी में * सदा होना गर्द दुष्ट प्रकृति और साधारण सर्दी का (चिन्ह) है ॥

* हकीम जालीनूस ने कहा है कि एक मनुष्य कठोर का शिकार करता था इस कारण से उसके कमान की जगह और कमान की मसद और कमान की जगह में सर्दी आगई और आंखें और फुकना दोनों ढीले होगये थे पेशाब और पसाना व गंदा होकर निकल आता था ॥

अधिक होजाती है परन्तु नर्म हुकने का प्रयोग उचित है और मल को नर्म करने वाली दवाएं देवे जैसे रूमी सौंफ, सोये के बीज, अजमायन, किर्दमाना (पहाडी किरविया) अजमोद के बीज, सौंफ की जड, अजमोद की जड, गुलकन्द मिलाकर प्रति दिन प्रात काल पीवे और मल के पकजाने और नर्म होने पर जब चौथा सातवां वा चौदहवां दिन बीत जाय तब दस्तावर दवा पीवे और हुब्बे मुन्तन (बदबूदार गोली) तथा हुब्बे शैतरज (चीते की गोली) और ऐसही अन्य गोलियां इस में उपयोगी हैं और वमन करना भी लाभदायक है इस मल के दूर होने पर मल नाशक और शक्ति वर्द्धक गर्म तेल गुदियों और पट्ठों पर लगावे जैसे बेद अजीर का तेल वा सोये का तेल वा नारदैन का तेल तथा ऐसे ही अन्य तेलों का मर्दन करै और कभी २ जुन्दबेदस्तर और अकरकरा इन तेलों में मिला लिया करें और इसी तरह मल के स्वच्छ होनेपर प्रकृति को सम्हालने के लिये तिरियाक कबीर, मरूदीतूस और फलफलोज तथा अन्य गर्म ही दवा देवे यदि तिरियाक और दूसरी माजूनें मौजूद न हों तो मुक्लीन (कुन्दरू गोंद) वा जावशीर, बाकले के दाने के बराबर शहद के पानी में घिस कर पीवे और हींग का खाना तथा लेप करना अधिक लाभदायक है विशेष करके जो सर्दी की अधिकता हो तो दोनों समय शहद के पानी में मिलाकर देवे जिससे जल्दी लाभ हो। कोई २ कहता है कि प्रति दिन ४॥ माशे पान्जे फकरा और २॥ माशे कालीमिरच शहद में मिलाकर देवे और पानी न दे जिस से आमाशय में देर तक ठहरी रहे और अधिक गुणकारी हो और मान तक सदा २॥ माशे कालीमिरच और जुन्दबेदस्तर देवे और मुहम्मद जकरिया ने कहा है कि अर्द्धाङ्ग का इलाज अक्सर इस तरह करना चाहिये कि मल के साफ करने के लिये फाकाया की गोली देवे जिससे मल कम होजाय और प्रति दिन मिन्जाद की जवारिश अयारज फुर्गुसके साथ देवे जिससे प्रकृति बदल जाय और पट्ठों में गर्मी पहुंचाने के लिये कुस्त का तेल मले यह सब उपाय उस समय करने के हैं जब अर्द्धाङ्ग के साथ प्रकृति में गर्मी न हो। परन्तु जब आयु और शक्ति अनुकूल हो और रोगी की देह में गर्मी और रग में खाली और जवानी हो तो इलाज फस्द से आरम्भ करै क्योंकि रुधिर ही से सब दोष होते हैं ॥

फस्द से उसी समय मल तथा रोग भी कम हो जायगा परन्तु जिस समय मल के केवल कफ हो और रग में खाली और देह में गर्मी न हो किन्तु रग में सकेदी और देह में सर्दी हो और कफ की तरी कम करने के लिये काढ

अधिक होजाती है परन्तु नर्म हुकने का प्रयोग उचित है और मल को नर्म करने वाली दवाएँ देवे जैसे रूमी सौंफ, सोये के बीज, अजवायन, किर्दमाना (पहाडी किरविया) अजमोद के बीज, सौंफ की जड़, अजमोद की जड़, गुलकन्द मिलाकर प्रति दिन प्रात काल पीवे और मल के पकजाने और नर्म होने पर जब चौथा सातवां वा चौदहवां दिन बीत जाय तब दस्तावर दवा पीवे और हुब्बे मुन्तन (बदबूदार गोली) तथा हुब्बे शेतरज (चीते की गोली) और ऐसही अन्य गोलियां इस में उपयोगी हैं और वमन करना भी लाभदायक है इस मल के दूर होने पर मल नाशक और शक्ति वर्द्धक गर्म तेल गुद्दियों और पट्ठों पर लगावे जैसे वेद अंजीर का तेल वा सोये का तेल वा नारदैन का तेल तथा ऐसे ही अन्य तेलों का मर्दन करे और कभी २ जुन्दबेदस्तर और अफरफ्यून इन तेलों में मिला लिया करे और इसी तरह मल के स्वच्छ होनेपर प्रकृति को सम्हालने के लिये तिरियाक कबीर, मरूनदीतूस और फलफलोंज तथा अन्य ऐसी ही दवा देवे यदि तिरियाक और दूसरी माजूनें मौजूद न हों तो सुम्बीना (कुन्दरू गोंद) वा जावशीर, बाकले के दाने के बराबर शहद के पानी में घिस कर पीवे और हींग का खाना तथा लेप करना अधिक लाभदायक है विशेष करके जो सर्दी की अधिकता हो तो दोनों समय शहद के पानी में मिलाकर देवे जिससे जल्दी लाभ हो । कोई २ कहता है कि प्रति दिन ४॥ माशे पाज्ले फ़करा और २॥ माशे कालीमिर्च शहद में मिलाकर देवे और पानी न दे जिस से आमाशय में देर तक ठहरी रहे और अधिक गुणकारी हो और मान तरह सदा २॥ माशे कालीमिर्च और जुन्दबेदस्तर देवे और मुहम्मद जकरिया ने कहा है कि अर्द्धाङ्ग का इलाज अक्सर इस तरह करना चाहिये कि मल के साफ करने के लिये फाकाया की गोली देवे जिससे मल कम होजाय और प्रति दिन भिन्नार की जवारिश अयारज उसके साथ दो जिससे प्रकृति बदल जाय और पट्ठों में गर्मी पहुंचाने के लिये कुट का तेल मले यह सब उपाय उस समय करने के हैं जब अर्द्धाङ्ग के साथ प्रकृति में गर्मी न हो । परन्तु जब आयु और शक्ति अनुकूल हो और रोगी की देह में गर्मी और रग में लाली और जवानी हो तो इलाज फस्द से आरम्भ करे क्योंकि रुधिर ही से सब दोष होते हैं ॥

फस्द से इसी समय मल तथा रोग भी कम हो जायगा परन्तु जिस समय मल के केवल कफ हो और रग में लाली और देह में गर्मी न हो किन्तु रग में सफेदी और देह में सर्दी हो और कफ की वृद्धि कम करने के लिये क्वाथ

होकर सिरका बनजाती है और सिर्का पठ्ठों के लिये सब से बुरा है, और आरम्भ में जहा तक होसके खाने का कम खाय तथा थोडीसी दालचीनी तथा जीरा डालकर भाप के थोडे से पानी पर सतोष करे और जहा देह में गर्मी भी हो ता जीरे मिले हुए शोर्वे से उत्तम और कुछ नहीं है क्योंकि यह ज्वरांश को भी दबाता है और कफ को निकालता है॥

ज्वरनाशक वा अर्द्धांग में लाभकारक शोर्वेकी विधि

सफेद प्याज एक गांठ कतर कर कुचले और उसे बादाम के तेल में भून कर थोडासा पानी जितना कि सोख सके उस पर डालें और दो उफान आने पर सिर्का, सफेद चीनी और थोडी सी कांजी बढावे और थोडासा जीरा, धनियां तथा गर्म मसाला डालकर खाय और सर्वांगका दूखा सुनाहुआ कम्पवात और लकवे वाले को लाभदायक है और चिलगोजा शहद में मिला हुआ बहुत ही गुणकारक है॥

पठ्ठा को निर्मलकारक अद्वितीय गोली॥

एलुआ, इन्द्रायन का गूदा प्रत्येक ३५ माशे फरफयून १७॥ माशे, गूगल ३५ माशे इनकी विधिपूर्वक गोलियां बनावें और पहले एक सप्ताह में प्रति दिन देवै दूसरे सप्ताह म देना बन्द करदेवे और तीसरे में ३ माशा ३ रत्ती देवे और चौथे में देना बद करदेवे और फिर पांचवे में ३६ रत्ती द और इसी छोड देवै इसी तरह ५४ रत्ती तक पहुंच जाय। मुहम्मद जकरिया की बनाई गोलियां। हींग, जुन्दे बेदस्तर, इन्द्रायन का गूदा, फरफयून सहित प्रत्येक १॥ माशे और गूगल इतनाले कि उस में गोलियां बन जांय और यह एक मात्रा है और मात्र के निकलने पर सुगन्ध नहाने की जगह में गर्म तेल॥ गन्धक के सोतों के पानी में और समुद्र के पानी में बैठना, परिश्रम करना, भूखा रहना, चीखना, चिल्लाकर श्लोक पढना, छाती और दांत से कुल्ले करना यह सब लाभदायक हैं॥

मलके निकलने के आयन्त में हुकना॥

मकोयासाग, नाखूना, मेथी, बाबूनाजीर, गुलखैरो, अफसन्तीन, बालछड इन सबको पानी में औटावे और छानले फिर शहद और कांजी और पुराने तेल का सार और इन्द्रायन का गूदा बढाकर हुकना अर्थात् अमल करे और सामग्री चाहिये कि नदी और गन्धक की खान के पानी व सिवाय स्वच्छ जल के और पर कोई गर्म पानी न डाले क्योंकि मीठा पानी उस मल होता है जो इस का

होकर सिरका बनजाती है और सिर्का पट्ठों के लिये सब से बुरा है, और आरम्भ में जहा तक होसके खाने का कम खाय तथा थोडीसी दालचीनी तथा जीरा डालकर मास के थोडे से पानी पर सतोष करे और जहा देह में गर्मी भी हो तो जीरे मिले हुए शोर्वे से उत्तम और कुछ नहीं है क्योंकि यह ज्वरांश को भी दबाता है और कफ को निकालता है ॥

ज्वरनाशक वा अर्द्धांग में लाभकारक शोर्वेकी विधि

सफेद प्याज एक गांठ कतर कर कुचले और उसे बादाम के तेल में भून कर थोडासा पानी जितना कि सोख सके उस पर डालें और दो उफान आने पर सिर्का, सफेद चीनी और थोडी सी कांजी बढावे और थोडासा जीरा, धनियां तथा गर्म मसाला डालकर खाय और स्नायुशक्त कुक्कुट भुनाहुआ कम्पवात और लकवे वाले को लाभदायक है और चिलगोजा शहद में मिला हुआ बहुत ही गुणकारक है ॥

पट्ठा को निर्मलकारक अद्वितीय गोली ॥

एलुआ, इन्द्रायन का गूदा प्रत्येक ३५ माशे फरफयून १७॥ माशे, गूगल ३५ माशे इनकी विधिपूर्वक गोलियां बनावें और पहले एक सप्ताह में प्रति दिन देवे दूसरे सप्ताह में देना बन्द करदेवे और तीसरे में ३ माशा ७ रत्ती देवे और चौथे में देना बंद करदेवे और फिर पांचवे में ३६ रत्ती द और इस तरह छोड देवे इसी तरह ५४ रत्ती तक पहुंच जाय। मुहम्मद जकरिया की बनाई गोलियां। हींग, जुन्दे बेदस्तर, इन्द्रायन का गूदा, फतरपून महीन प्रत्येक १॥ माशे और गूगल इतनाले कि उस में गोलियां बन जाय और यह सब एक मात्रा है और मास के निकलने पर सुबह नहाने की जगह में गर्म रत ग ज्रक के सोतों के पानी में और समुद्र के पानी में बैठना, परिश्रम करना, भूखा रहना, चीखना, चिल्लाना, विक्षाकारक श्लोक पढना, फांसी और राई से कुल्ले करना यह सब लाभदायक हैं ॥

मलके निकलने के आधन्त में हुकना ॥

मकुआसाषा, नाखूना, मेथी, अन्जीर, कुसहरी, फतरपून, शहरिज इन सबको पानी में ओटावें और छानले फिर शहद और कांजी और कुसले तेलका मल और इन्द्रायन का गूदा बढाकर हुकना अमाम् अमल करे और सावधान रहे कि नदी और गधक की खान के पानी व सिराय स्नान करे और दर गर्म पानी न डाले क्योंकि मीठा पानी उस गर्म होता है सो दाद का

होकर सिरका बनजाती है और सिर्का पट्ठों के लिये सब से बुरा है और आरम्भ में जहां तक होसके खाने को कम खाय तथा थोडीसी दालचीनी तथा जीरा डालकर मास के थोडे मे पानी पर सतोष करे और जहा देह में गर्मी भी हो तो जीरे मिले हुए शोवें से उत्तम और कुछ नहीं है क्योंकि यह ज्वरांश को भी दबाता है और कफ को निकालता है ॥

ज्वरनाशक वा अर्द्धांग में लाभकारक शोवेंकी विधि

सफेद प्याज एक गांठ कतर कर फुल्ले और उसे बादाम के तेल में भून कर थोडासा पानी जितना कि सोख सके उस पर डालें और दो उफान आने पर सिर्का, सफेद चीनी और थोडी सी कांजी बढावे और थोडासा जीरा, धनियां तथा गर्म मसाला डालकर खाय और सगाशका मदा भुनाहुआ कम्पवात और लकवे वाले को लाभदायक है और चिलगोजा शहद में मिला हुआ बहुत ही गुणकारक है ॥

पट्ठा को निर्मलकारक अद्वितीय गोली ॥

एलुआ, इन्द्रायन का गूदा प्रत्येक ३५ माशे फरफयून १७॥ माशे, गूगल ३५ माशे इनकी विधिपूर्वक गोलियां बनावें और पहले एक सप्ताह मे प्रति दिन देवें दूसर सप्ताह मे देना बन्द करदेवे और तीसरे में ३ माशे ३ रत्ती देवे और चौथे में देना बद करदेवे और फिर पांचवे में ३६ रत्ती दें और छटा छोड देवे इसी तरह ५४ रत्ती तक पहुच जाय। मुहम्मद जकरिया की बनाई गोलिया। हींग, जुन्दे बेदस्तर, इन्द्रायन का गूदा, फतूरयून महीन प्रत्यक २॥ माशे और गूगल इतनाले कि उस में गोलियां बन जाय और यह सब एक मात्रा है और मादे के निकलने पर खुश्क न्हाने की जगह में गर्म रत म गधक के सोतों के पानी में और समुद्र के पानी में बैठना, परिश्रम करना, भूखा रहना, चखिना, चिल्लाकरके श्लोक पढ़ना, कांजी और राई से कुल्ले करना यह सब लाभदायक है ॥

मलके निकलने के आद्यन्त में हुकना ॥

मरुआ सोया, नाखूना, मेथी, बेदअर्जीर, मुलहटी, फतरयून, ग्रारीक इन सबका पानी में औटावे और छानले फिर शहद और कांजी और पुरान जैतूनका तल और इन्द्रायन का गूदा बढ़ाकर हुकना अर्थात् अमल करे और जानना चाहिये कि नदी और गधक की खान के पानी के सिवाय लकवे वाले अग पर कोई गर्म पानी न डाले क्योंकि मीठा पानी जब गर्म होता है तो दोष को

होकर सिरका बनजाती है और सिर्का पट्ठों के लिये सब से बुरा है और आरम्भ में जहां तक होसके खाने को कम खाय तथा थोडीसी दालचीनी तथा जीरा डालकर मास के थोडे मे पानी पर सतोष करै और जहा देह में गर्मी भी हो तो जीरे मिले हुए शोर्वे से उत्तम और कुछ नहीं है क्योंकि यह ज्वरांश को भी दबाता है और कफ को निकालता है ॥

ज्वरनाशक वा अर्द्धांग में लाभकारक शोर्वेकी विधि

सफेद प्याज एक गांठ कतर कर कूटले और उसे बादाम के तेल में भून कर थोडासा पानी जितना कि सोख सके उस पर डालें और दो उफान आने पर सिर्का, सफेद चीनी और थोडी सी कांजी बढावे और थोडासा जीरा, धनियां तथा गर्म मसाला डालकर खाय और खगाशका मदा भुनाहुआ कम्पवात और लकवे वाले को लाभदायक है और चिलगोजा शहद में मिला हुआ बहुत ही गुणकारक है ॥

पट्ठा को निर्मलकारक अद्वितीय गोली ॥

एलुआ, इन्द्रायन का गूदा प्रत्येक ३५ माशे फरफयून १७॥ माशे, गूगल ३५ माशे इनकी विधिपूर्वक गोलियां बनावें और पहले एक सप्ताह मे प्रति दिन देवे दूसरे सप्ताह मे देना बन्द करदेवे और तीसरे में २ माशे ३ रत्ती देवे और चौथे में देना बंद करदेवे और फिर पांचवे में २६ रत्ती दें और छठा छोड़ देवे इसी तरह ५८ रत्ती तक पहुच जाय। मुहम्मद जकरिया की बनाई गोलिया। हींग, जुन्दे वेदस्तर, इन्द्रायन का गूदा, फतूरयून महीन प्रत्यक १॥ माशे और गूगल इतनाले कि उस में गोलियां बन जाय और यह सब एक मात्रा है और माद्दे के निकलने पर खुश्क न्हाने की जगह में गर्म रत म गंधक के स्रोतों के पानी में और समुद्र के पानी में बैठना, परिश्रम करना, भूखा रहना, चीखना, चिल्लाकरके श्लोक पढ़ना, कांजी और राई से कुल्ले करना यह सब लाभदायक है ॥

मलके निकलने के आद्यन्त में हुकना ॥

मरुआ सोया, नाखूना, मैथी, वेदअजीर, मुलहटी, फतूरयून, बारीक इन सबका पानी में औटावे और छानले फिर शहद और कांजी और पुरान जैतूनका तल और इन्द्रायन का गूदा बढ़ाकर हुकना अर्थात् अमल करै और जानना चाहिये कि नदी और गंधक की खान के पानी के सिवाय लकवे वाले अंग पर कोई गर्म पानी न डाले क्योंकि मीठा पानी जब गर्म होता है तो दोष भी

के सरक जाने और उतर जाने के कारण से उत्पन्न हो तो उसका इलाज गुडियों को अपनी जगह पर हटालाना चाहिये और ऐसे ही जिस जगह जोड उखड जाने से फालिज उत्पन्न हो तो जोड के उखड जाने का इलाज करना चाहिये और जो सादा दुष्ट प्रकृति के कारण यह रोग उत्पन्न हो तो उस का इलाज यह है कि जिस तरह उचित हो प्रकृति को ठीक करें हकीम मुहम्मद ज करियाने कहा है कि एक मनुष्य को उपवास कराने से झोला मार गया और गर्मी अधिक थी हकीमों ने पारजे फैकरा खिलाई और उसको बहुत कष्ट हुआ फिर उस को हम्माम में लेगये और वह उपाय किये कि जिन से तृवत बढगई तब उसे आराम हुआ ॥ जीभ, हलक और नरखरा आदि के ढीलहोने का (इलाज) जुदे २ प्रकरणों में वर्णन होगा ॥

वोहरानी इस्तरखा का इलाज।

इस रोग में साधारण गर्म तेल जैसे नरगिस, सौसन, बेद अजीर और नारदेन के तेलों का मले और ऐसी भी दवाओं का प्रयोग करे जो उस अंग को पुष्टकरें और मल को उस पर गिरने से रोकें जैसे बाबूना नाखूना अर्थात् स्परक, दानामरुआ, कासनी के पानी म मिलाकर और कुछ ऐसी ही ठंडी दवाइयां मिलाकर मलना लाभदायक है और इस रोग में नारियल का तेल खाने और मलने में आजमूदा है ॥

सुन्नत कबीर की गोलियों के बनाने की रीति

फालिज, लक्वा और निकरस (एक दर्द है जो पांव के अगूठ में उत्पन्न होता है) ठंडी कफवाली गठिया को लाभदायक है ॥ पारज ३५ माशे इंद्रायन का गूदा और शुब्बरम (एक घास है बीज उसका मसूढ के समान होता है) और बारीक अस्तूग्यून और माही जौहरा प्रत्येक १७॥ माशे फरफयून ८॥ माशे, जुदबेदस्तर, सोंठ, हींग, सुकबीनज, जावशीर, चीता, राई, मिर्च प्रत्येक ३॥ माशे इनको पानी वा और किसी योग्य अर्क म गोलियां बनावे और आवश्यकतानुसार देवे ॥ बदबूदार छोटी ठंडी गोली के बनाने की रीति यह है इनको गर्मी म और गर्म प्रकृति वालों का देसक्ते हैं । इंद्रायन का गूदा ७ रत्ती, कतीरा ९॥ रत्ती, सूरजान (बरबरी नाम की एक जड है) जंगली लहसन के समान) बर्नीदान (एक लकडी है) माहजीरा दरम प्रत्येक १॥। माशे ये सब एक ही मात्रा है ॥

के सरक जाने और उत्तर जाने के कारण से उत्पन्न हो तो उसका इलाज गुं-डियों को अपनी जगह पर हटालाना चाहिये और ऐसे ही जिस जगह जाड उखड जाने से फालिज उत्पन्न हो तो जोड के उखड जाने का इलाज करना चाहिये और जो सादा दुष्ट प्रकृति के कारण यह रोग उत्पन्न हो तो उस का इलाज यह है कि जिस तरह उचित हो प्रकृति को ठीक करें हकीम मुहम्मद ज करियाने कहा है कि एक मनुष्य को उपवास कराने से झोला मार गया और गर्मी अधिक थी हकीमों ने पारजे फैकरा खिलाई और उसको बहुत कष्ट हुआ फिर उस को हम्माम में लेगये और वह उपाय किये कि जिन से कुवत बढगई तब उसे आराम हुआ ॥ जीभ, हलक और नरखरा आदि के ढीलहोन का (इलाज) जुदे २ प्रकरणों में वर्णन होगा ॥

वौहरानी इस्तरखा का इलाज ।

इस रोग में साधारण गर्म तेल जैसे नरगिस, सौसन, बेद अजीर और नारदेन के तेलों का मले और ऐसी भी दवाओं का प्रयोग करै जो उस अग को पुष्टकरें और मल को उस पर गिरने से रोकें जैसे बाबूना नाखूना अर्थात् स्यरक, दानामरुआ, कासनी के पानी म मिलाकर और कुछ ऐसी ही ठंडी दवाइयां मिलाकर मलना लाभदायक है और इस रोग में नारियल का तेल स्नान और मलने में आजमदा है ॥

सुन्तन कबीर की गोलियों के बनाने की रीति

फालिज, लरवा और निकरस (एक दर्द है जो पांव के अगूठ में उत्पन्न होता है) ठंडी कफवाली गठिया को लाभदायक है ॥ पारज ३० माशे इंद्रायन का गूदा और शुब्रम (एक घास है बीज उसका मसूर के समान होता है) और वारीक कतूरयून और माही जोहरा प्रत्येक १७॥ माशे फरफयून ८॥ माशे, जुदबेदस्तर, सोंठ, हींग, सुकबीनज, जावशीर, चीता, राई, मिर्च प्रत्येक ३॥ माशे इनको पानी वा और किसी योग्य अर्क म गोलियां बनावे और आवश्यकतानुसार देवे ॥ बदबूदार छोटी ठंडी गोली के बनाने की रीति यह है इनको गर्मी म और गर्म प्रकृति वालों का देसक हैं । इंद्रायन का गूदा ७ रत्ती, कतीरा ९॥ रत्ती, सूरजान (बरबरी नाम की एक जड है) जगली लहसन के समान) वनीदान (एक लकडी है) माहजीरा हरन प्रत्येक १॥। माशे ये सब एक ही मात्रा है ॥

वा वादी से इस तरह पर उत्पन्न होताहै कि वक्तमल पट्ठोंके छेदोंमें आकरपट्ठों को चौडा करदे तब उन की लबाई अवश्य ही कम होजायगी और चौडाइ बढ जायगी और पट्ठों के सुकड जाने का अर्थ भी यही है और प्रकटहै कि जिस समय पट्ठा सुकडजाय तो वह अग जिस की हर्कत उस पट्ठे के कारण से है फैल न सकेगा (सूचना) जो कफका मल पट्ठे में घुसकर तशन्नुज उत्पन्न करे तौ यह उचित नही है कि उससे इस्तरखा भी होजाय क्योंकि मल जब तक कि पट्ठे में और उन रेशों में जो अजले में है न घुसे तब तक अग ढिलढिला नहीं होता परन्तु तशन्नुज में पट्ठे के रोमांचों में ही दोष आता है परन्तु जो मल पतला और गाढा दोनों तरह का मिला झुला हो तो सम्भव है कि तशन्नुज भी हो और इस्तरखा भी हो और रुधिर से तशन्नुज इस तरह पैदा हुआ करता है कि अजला सूजजाय और मल रगों के रेशा में और पट्ठों में आजाय और जगह घेरले इस कारण से पट्ठे चौडाव में बढजाय और लबाई में कम होजाय और कभी २ पित्त भी रुधिर की तरह भरकर तशन्नुज उत्पन्न करता है और जा तशन्नुज कि उष्ण ज्वरके पीछे इस कारण से होजाय कि जो मल ज्वर की गर्मी से पिघला हो वह पट्ठों में और अजला में उतर कर तशन्नुज पैदा करे तौ यह भी इम्तिलाई अर्थात् मलके भरजाने के भेद में है परन्तु यह उस तशन्नुज के विरुद्ध है जो गर्म ज्वर के पीछे प्रकृति की तरी के नष्ट होजाने से उत्पन्न हो क्योंकि यह तशन्नुज खुश्क के भेदोंमेंसे है॥

चिन्हों का वर्णन

जो तशन्नुज कि कफ के मल के कारण से हो उसका चिन्ह यह है कि यांइटा एक साथ उत्पन्न होजाता है और विशेष करके चलने फिरने में बोझ और थकावट मालूम होने लगती है खाल में खिचावट होना ,नाडी का चौडा होना 'पेशाव में गाढापन, देह के रग में सफेदी, मांस में ढीलापन, वांयटे की जगह पर हाथ लगानेसे नर्मी और सर्दी मालूम होना, प्यासकी कमी, नींद की अधिकता पट्ठों में सुस्ती होना और प्रथम कफ पैदा करनेवाली वस्तुओं का खाना - वांयट के लक्षण हैं जो वादी से वांयटे हों तो वादी के वे चिन्ह जिन का बहुधा वर्णन होचुका है उन से मालूम होंगे और जो वांयटे रक्तज सूजन के कारण से वा कभी पित्तकी सूजन से उत्पन्न हों तो उक्त सूजनों के चिन्ह यह है कि उस अगमें जो बोझ और दर्द मालूम होता रक्तज सूजन है और जो टीस और जलन हो तो पित्त की सूजन है और उन के सिवाय

वा वादी से इस तरह पर उत्पन्न होताहै कि वक्कमल पट्ठोंके छेदोंमें आकरपट्ठों को चौडा करदे तब उन की लबाई अवश्य ही कम होजायगी और चौडाइ बढ जायगी और पट्ठों के सुकड जाने का अर्थ भी यही है और प्रकटहै कि जिस समय पट्ठा सुकडजाय तो वह अग जिस की हर्कत उस पट्ठे के कारण से है फैल न सकेगा (सूचना) जो कफका मल पट्ठे में घुसकर तशन्नुज उत्पन्न करे तौं यह उचित नहीं है कि उससे इस्तरखा भी होजाय क्योंकि मल जब तक कि पट्ठें में और उन रेशों में जो अजले मे है न घुसें तब तक अग ढिलढिला नहीं होता परन्तु तशन्नुज में पट्ठे के रोमांचों में ही दोष आता है परन्तु जो मल पतला और गाढा दोनों तरह का मिला झुला हो तो सम्भव है कि तशन्नुज भी हो और इस्तरखा भी हो और रुधिर से तशन्नुज इस तरह पैदा हुआ करता है कि अजला सूजजाय और मल रगों के रेशा में और पट्ठों में आजाय और जगह घेरले इस कारण से पट्ठे चौडाव में बढजाय और लबाई में कम होजाय और कभी २ पित्त भी रुधिर की तरह भरकर तशन्नुज उत्पन्न करता है और जा तशन्नुज कि उष्ण ज्वरके पीछे इस कारण से होजाय कि जो मल ज्वर की गर्मी से पिघला हो वह पट्ठों में और अजला में उतर कर तशन्नुज पैदा करे तौ यह भी इम्तिलाई अर्थात् मलके भरजाने के भेद में है परन्तु यह उस तशन्नुज के विरुद्ध है जो गर्म ज्वर के पीछे प्रकृति की तरी के नष्ट होजाने से उत्पन्न हो क्योंकि यह तशन्नुज खुश्क के भेदोंमेंसे है॥

चिन्हों का वर्णन

जो तशन्नुज कि कफ के मल के कारण से हो उसका चिन्ह यह है कि थोड़ा एक साथ उत्पन्न होजाता है और विशेष करके चलने फिरने में बोझ और थकावट मालूम होने लगती है साल में खिचावट होना ,नाडी का चौडा होना पेशाव में गाढापन, देह के रग में सफेदी, मांस में ढीलापन, वांयटे की जगह पर हाथ लगानेसे नर्मी और सर्दी मालूम होना, प्यासकी कमी, नींद की अधिकता पट्ठों में सुस्ती होना और प्रथम कफ पैदा करनेवाली वस्तुओं का खाना - वांयट के लक्षण है जो वादी से वांयटे हों तो वादी के वे चिन्ह जिन का बहुधा वर्णन होचुका है उन से मालूम होगे और जो वांयटे रक्तज सूजन के कारण से वा कभी पित्तकी सूजन से उत्पन्न हों तो उक्त सूजनों के चिन्ह यह है कि उस अगमें जो बोझ और दर्द मालूम होता रक्तज सूजन है और जो टीस और जलन हो तो पित्त की सूजन है और उन के सिवाय

निकालना, परिश्रम करना जागना और बहुत भूखा रहना आदि खुश्की उत्पन्न करने वाले और कारणों से उत्पन्न होता है अथवा पहिले पित्तज तीक्ष्ण ज्वर उत्पन्न हुआ हो और यह भी इस प्रकार का चिन्ह है कि धीरे२ उत्पन्न हो और कष्ट वाले अंग पर तेल मलने पर वह जल्दी सुखजाता है यह वात शति के बायटों के विपरीत है क्योंकि वह एक साथ उत्पन्न होता है और तेल को जल्दी नहीं सोख सकता और जब तब स्वाभाविक तरी नष्ट न हो दिमाग और पट्ठे जल कर सूखजांय उस समय तक सूखे बायटे उत्पन्न नहीं होते इसी कारण से हकीमोंने कहा है कि ये बांयटे अच्छे नहीं होते (इलाज) देह और कष्टित अंग में तरी पहुचाने के लिये अधिक ध्यान रक्खें और तरी पहुचाने की यह रीति है कि गधी का दूध, बकरी का दूध ताजा और जौका दलिया बिही दाने के लुआब के साथ शर्बत बनफशा और शर्बत नीलोफर मिलाकर और कदूका तेल तथा बादाम का तेल मिलाकर पीवे। चाहे ये सब या जो कुछ उनमें से मिलजावे। (अथवा) बकरी के बच्चे और भेड़ के बच्चे के पाये-पालक और बादाम के तेल के साथ पकाकर खाय (अथवा) ककरीली साफ पानी की मछली और हरीरा गेहू के नशास्ते, सफेद बूरे और बादाम के तेल से बनाकर सेवन करें यह सब लाभदायक हैं। और रोगी को भफारे में विठावे तथा तरी करने वाला मोमका तेल देह पर और विशेष करके बांयटे वाले अंग पर मलना अधिक लाभदायक है और तरी पहुचाने वाले तथा खुश्की दूर करने वाले तरेड़े और लेप लगावे तरेड़े की विधि यह है कि बनफशा, काहू की पत्ती तुष रहित जौ खितमी के पत्ते, बेद के पत्ते, कद्दू और नीलोफर इन सब को औटालेवें और लेप की दवाएं यह है कि बनफशा खितमी, जौका आटा, ईसब गोल का लुआब और कद्दू का तेल मिलाकर लेप करें। (मोम के तेल के बनाने की यह रीति है) गाय की नली का गूदा, मुर्गियों की चर्बी, मोम सफेद बनफसा के तेल में पकाकर लड़की वाली स्त्रियों का दूध मिलाकर मलें और जहां ज्वर हो वा दूध का पीना और पायचे का खाना वर्जित है। और लेप भी न करें मोम या तेल तथा और तेलों का मलना और मलको रोकने वाले लुआब आदि सब ज्वर में वर्जित हैं। अभिप्राय यह है कि जो कुछ तपेदिक के वर्णन में कहेंगे वह सब इस से सम्बन्ध रखता है और जिस तरह होसके तरी पहुचाना चाहिये और बीमार छोटा बच्चा हो तो पीने की चीजें दायी को पिलावे और तेल तथा लेप उसकी देह पर लगावें ॥

निकालना, परिश्रम करना जागना और बहुत भूखा रहना आदि खुश्की उत्पन्न करने वाले और कारणों से उत्पन्न होता है अथवा पहिले पित्तज तीक्ष्ण ज्वर उत्पन्न हुआ हो और यह भी इस प्रकार का चिन्ह है कि धीरे२ उत्पन्न हो और कष्ट वाले अंग पर तेल मलने पर वह जल्दी सूखजाता है यह वात शांति के बायटों के विपरीत है क्योंकि वह एक साथ उत्पन्न होता है और तेल को जल्दी नहीं सोख सकता और जब तक स्वाभाविक तरी नष्ट न हो दिमाग और पट्ठे जल कर सूखजाय उस समय तक सूखे बायटे उत्पन्न नहीं होते इसी कारण से हकीमोंने कहा है कि य बांयटे अच्छे नहीं होते (इलाज) देह और कष्टित अंग में तरी पहुचाने के लिये अधिक ध्यान रक्खे और तरी पहुचाने की यह रीति है कि गधी का दूध, बकरी का दूध ताजा और जौका दलिया बिही दाने के लुआब के साथ शर्बत बनफशा और शर्बत नीलोफर मिलाकर और कद्दूका तेल तथा बादाम का तेल मिलाकर पीवे। चाहे य सब या जो कुछ उनमें से मिलजावे। (अथवा) बकरी के बच्चे और भेड़ के बच्चे के पाये-पालक और बादाम के तेल के साथ पकाकर खाय (अथवा) ककरीली साफ पानी की मछली और हरीरा गेहूं के नशास्ते, सफेद बूरे और बादाम के तेल से बनाकर सेवन करे यह सब लाभदायक हैं। और रोगी को भफारे में बिठावे तथा तरी करने वाला मोमका तेल देह पर और विशेष करके बांयटे वाले अंग पर मलना अधिक लाभदायक है और तरी प-हुचाने वाले तथा खुश्की दूर करने वाले तरेड़े और लेप लगावे तरेड़े की विधि यह है कि बनफशा, काहू की पत्ती त्वचा रहित जो सिलमी के पत्ते, बेद के पत्ते, कद्दू और नीलोफर इन सब को ओटालेवें और लेप की दवाएँ यह हैं कि बनफसा सितमी, जौका आटा, ईसब गोल का लुआब और कद्दू का तेल मिलाकर लेप करें। (मोम के तेल के बनाने की यह रीति है) गाय की नली का गूदा, मुर्गियों की चर्बी, मोम सफेद बनफसा के तेल में पकाकर लड़की वाली स्त्रियों का दूध मिलाकर मलें और जहां ज्वर हो वा दूध का पीना और पायचे का खाना वर्जित है। और लेप भी न करें मोम या तेल तथा और तेलों का मलना और मलको रोकने वाले लुआब आदि सब ज्वर में वर्जित हैं। अभिप्राय यह है कि जो कुछ तपेदिक के वर्णन में कहेंगे वह सब इस से सम्बन्ध रखता है और जिस तरह होसके तरी पहुचाना चाहिये और बीमार छोटा बच्चा हो तो पीने की चीजें दायी को पिलावे और तेल तथा लेप उसकी देह पर लगावें॥

निकालना, परिश्रम करना जागना और वहुत भूखा रहना आदि खुश्की उत्पन्न करने वाले और कारणों से उत्पन्न होता है अथवा पहिले पित्तज तीक्ष्ण ज्वर उत्पन्न हुआ हो और यह भी इस प्रकार का चिन्ह है कि धीरे२ उत्पन्न हो और कष्ट वाले अग पर तेल मलने पर वह जल्दी सूखजाता है यह वात शति के वांपटों के विपरीत है क्योंकि वह एक साथ उत्पन्न होता है और तेल को जल्दी नहीं सोख सकता और जब तव स्वाभाविक तरी नष्ट न हो दिमाग और पट्ठे जल कर सूखजांय उस समय तक सूख वांपटे उत्पन्न नहीं होते इसी कारण से हकीमोंने कहा है कि ये वांपटे अच्छे नहीं होते (इलाज) देह और कष्टित अग में तरी पहुचाने के लिये अधिक ध्यान रक्खे और तरी पहुचाने की यह रीति है कि गधी का दूध, वकरी का दूध ताजा और जौका दलिया विही दाने क लुआव के साथ शर्वत वनफशा और शर्वत नीलोफर मिलाकर और कदूका तेल तथा वादाम का तेल मिलाकर पीवे । चाहे ये सव या जो कुछ उनमें से मिलजावे । (अथवा) वकरी के वच्चे और भेड के वच्चे के पाये-पालक और वादाम के तेल के साथ पकाकर खाय (अथवा) ककरीली साफ पानी की मछली और हरीरा गेहू के नशास्त, सफेद वूरे और वादाम के तेल से बनाकर सेवन करे यह सब लाभदायक हैं । और रोगी को भफारे मे विठावे तथा तरी करने वाला मोमका तेल देह पर और विशेप करके वांपटे वाले अग पर मलना अधिक लाभदायक है और तरी पहुचाने वाले तथा खुश्की दूर करने वाले तरेड़े और लेप लगावे तरडे की विधि यह है कि वनफशा, काहू की पत्ती तुप रहित जौ खितमी क पत्ते, वेद के पत्ते, कदद और नीलोफर इन सब को औटालेवें और लेप की दवाएँ यह हैं कि वनफसा खितमी, जौका आटा, ईसव गोल का लुआव और कद्दू का तेल मिलाकर लेप करे । (मोम के तेल क वनाने की यह रीति है) गाय की नली का गूदा, मुर्गियों की चर्वी, मोम सफेद वनफसा के तेल में पकाकर लड़की वाली स्त्रियों का दूध मिलाकर मलें और जहां ज्वर हो तो दूध का पीना आर पायचे का खाना वर्जित है । और लेप भी न करे मोम का तेल तथा और तेलो का मलना और मलको रोकने वाले लुआव आदि सब ज्वर में वर्जित हैं । अभिप्राय यह है कि जो कुछ तपदिक के वणन में कहेंगे वह सव इस से सम्बन्ध रखता है और जिस तरह होसके तरी पहुचाना चाहिये और वीमार छोटा वच्चा हो तो पीने की चीजें दायी को पिलावे और तेल तथा लेप उसकी देह पर लगावे ॥

निकालना, परिश्रम करना जागना और बहुत भूखा रहना आदि खुश्की उत्पन्न करने वाले और कारणों से उत्पन्न होता है अथवा पहिले पित्तज तीक्ष्ण ज्वर उत्पन्न हुआ हो और यह भी इस प्रकार का चिन्ह है कि धीरे२ उत्पन्न हो और कष्ट वाले अंग पर तेल मलने पर वह जल्दी सूखजाता है यह बात शति के वांयटों के विपरीत है क्योंकि वह एक साथ उत्पन्न होता है और तेल को जल्दी नहीं सोख सकता और जब तब स्वाभाविक तरी नष्ट न हो दिमाग और पट्ठे जल कर सूखजांय उस समय तक खुश्क वांयटे उत्पन्न नहीं होते इसी कारण से हकीमोंने कहा है कि ये वांयटे अच्छे नहीं होते (इलाज) देह और कष्टित अंग में तरी पहुचाने के लिये अधिक ध्यान रक्खे और तरी पहुचाने की यह रीति है कि गधी का दूध, बकरी का दूध ताजा और जौका दलिया बिही दाने के लुआब के साथ शर्बत बनफशा और शर्बत नीलोफर मिलाकर और कद्दूका तेल तथा बादाम का तेल मिलाकर पीवे। चाहे ये सब या जो कुछ उनमें से मिलजावे। (अथवा) बकरी के बच्चे और भेड़ के बच्चे के पाये-पालक और बादाम के तेल के साथ पकाकर खाय (अथवा) ककरीली साफ पानी की मछली और हरीरा गेहू के नशास्त, सफेद बूरे और बादाम के तेल से बनाकर सेवन करे यह सब लाभदायक हैं। और रोगी को भफारे में बिठावे तथा तरी करने वाला मोमका तेल देह पर और विशेष करके वांयटे वाले अंग पर मलना अधिक लाभदायक है और तरी पहुचाने वाले तथा खुश्की दूर करने वाले तरेड़े और लेप लगावे तरडे की विधि यह है कि बनफशा, काहू की पत्ती तुष रहित जौ खितमी के पत्ते, बेद के पत्ते, कद्दू और नीलोफर इन सब को औटालेवें और लेप की दवाएं यह हैं कि बनफशा खितमी, जौका आटा, ईसब गोल का लुआब और कद्दू का तेल मिलाकर लेप करें। (मोम के तेल के बनाने की यह रीति है) गाय की नली का गूदा, मुर्गियों की चर्बी, मोम सफेद बनफशा के तेल में पकाकर लड़की वाली स्त्रियों का दूध मिलाकर मलें और जहां ज्वर हो तो दूध का पीना और पायचे का खाना वर्जित है। और लेप भी न करे मोम का तेल तथा और तेलों का मलना और मलको रोकने वाले लुआब आदि सब ज्वर में वर्जित हैं। अभिप्राय यह है कि जो कुछ तपदिक के वर्णन में कहेंगे वह सब इस से सम्बन्ध रखता है और जिस तरह होसके तरी पहुचाना चाहिये और बीमार छोटा बच्चा हो तो पीने की चीजें दायी को पिलावे और तेल तथा लेप उसकी देह पर लगावे ॥

जाता है और ऐसाही जिस अंग का रोग संयोग के कारण से तशन्नुज के उत्पन्न होने का कारण हो तो उस अंग के रोग का उपायकरें जिसतरह अपने स्थानों में सब लिखेगये हैं और तशन्नुजवाले अंग पर उसके अनुसार तलमलें और जो तशन्नुज कीड़ों के कारण से उत्पन्न हो तो उनका मारडालना और निकालदेना लाभदायक है और मारडालने और निकाल देने के उपाय अपने स्थानपर वर्णन किये गये हैं ॥

बीसवां प्रकरण ।

तमद्दुद (खिंचाव) और कुज़ाज़ गर्दन के तशन्नुजका वर्णन ।

तमद्दुद का अर्थ " पट्ठे का दोनों तरफ खिंचना " है और इसी कारण इसी के अर्थ से इस का यह नाम रक्खा गया है । तमद्दुदवाला अंग सीधा रहता है किसी तरफ नहीं फिरता जैसे तमद्दुद दो तशन्नुजों से मिला हुआ है जैसा कि हकीम बुकरात ने कहा है कि तमद्दुद अगली और पिछली तरफ के तशन्नुज से मिला हुआ होता है इसी लिये तमद्दुद केवल तशन्नुज से बहुत बुरा है क्योंकि प्रकृति इतने कष्ट को नहीं सह सक्ती जैसा कि चौथे दिन इस का बोहरान है और बोहरान होने तक भी सदेह है जैसा कि हकीम बुकरात ने कहा है कि जिस मनुष्य को तमद्दुद हो जाय निःसंदेह वह चार दिन में मर जायगा फिर जो इन चार दिन से निकल गया तो अच्छा हो जायगा । और तमद्दुद सुकड़ने से रोकता है इस कारण से तशन्नुज के विरुद्ध है और जैसे तशन्नुज भर जाने और अधिक मल के निकलजाने और कष्ट पाने से उत्पन्न होता है इन्हीं कारणों से यह तमद्दुद भी होता है इस से उस के अनुकूलहै यद्यपि कुछहेतुओं से उससे पृथक और विपरीत है तमद्दुद और कुज़ाजके उत्पन्न होने के कारण बहुत हैं एक यह कि सर्द रतूबत पट्ठे के रेशों में आजाय और जम जाय इस कारण से अंग का सुकड़ना और मुड़ना कठिन हो और इस के सिवाय लंबाई में कुछ कमी नहो और यह बात सामान्य है कि रतूबत पट्ठे के रेशों में आय जम जाय या कोई ठंढा करने वाला भीतरी या बाहरी कारण उस में पहुंचे । भीतरी जैसे अफ़ीम, और ठंढा पानी पीना और बाहरी कारण, जैसे बर्फ में चलना, ठंढी हवा और ठंढे पानी में डोलना, फिरना, न्हाना, सुस्त और सुन्न करने वाली दवाओंका लगाना आदि और कभी ऐसा होताहैकि पट्ठे और असबके रेशोंमें तरी आजाय जैसे रेशों की तरह शरीर के अवयव लम्बे हो जांय और चौड़ाई में

जाता है और ऐसाही जिस अग का रोग संयोग के कारण से तशन्नुज के उत्पन्न होने का कारण हो तो उस अग के रोग का उपायकरें जिसतरह अपने स्थानों में सब लिखेगये हैं और तशन्नुज वाले अग पर उसके अनुसार तलमलें और जो तशन्नुज कीडों के कारण से उत्पन्न हो तो उनका मारडालना और निकालदेना लाभदायक है और मारडालने और निकाल देने के उपाय अपने स्थानपर वर्णन किये गये हैं ॥

बीसवां प्रकरण ।

तमद्दुद (खिंचाव) और कुजाज गर्दन के तशन्नुजका वर्णन ।

तमद्दुद का अर्थ " पट्ठे का दोनों तरफ खिंचना ,, है और इसी कारण इसी के अर्थ से इस का यह नाम रक्खा गया है । तमद्दुदवाला अंग सीधा रहता है किसी तरफ नहीं फिरता जैसे तमद्दुद दो तशन्नुजा से मिला हुआ है जैसा कि हकीम बुकरात ने कहा है कि तमद्दुद अगली और पिछली तरफ के तशन्नुज से मिला हुआ होता है इसी लिये तमद्दुद केवल तशन्नुज से बहुत बुरा है क्योंकि प्रकृति इतने कष्ट को नहीं सह सकती जैसा कि चौथे दिन इस का बोहरान है और बोहरान होने तक भी सदेह है जैसा कि हकीम बुकरात ने कहा है कि जिस मनुष्य को तमद्दुद हो जाय निःसदेह वह चार दिन में मर जायगा फिर जो इन चार दिन से निकल गया तो अच्छा हो जायगा । और तमद्दुद सुकडने से रोकता है इस कारण से तशन्नुज के विरुद्ध है और जैसे तशन्नुज भर जाने और अधिक मल के निकलजाने और कष्ट पाने से उत्पन्न होता है इन्हीं कारणों से यह तमद्दुद भी होता है इस से उस के अनुकूलहै यद्यपि कुछ हेतुओं से उससे पृथक और विपरीत है तमद्दुद और कुजाजके उत्पन्न होने के कारण बहुत हैं एक यह कि सर्द रतूबत पट्ठे के रेशों में आजाय और जम जाय इस कारण से अग का सुकडना और मुडना कठिन हो और इस के सिवाय लंबाई में कुछ कमी नहो और यह बात सामान्य है कि रतूबत पट्ठे के रेशे में आप जम जाय या कोई ठढा करने वाला भीतरी या बाहरी कारण उस में पहुंचे । भीतरी जैसे अफीम, और ठढा पानी पीना और बाहरी कारण, जैसे बर्फ में चलना, ठढी हवा और ठढे पानी में डोलना, फिरना, न्हाना, सुस्त और सुन्न करने वाली दवाओंका लगाना आदि और कभी ऐसा होताहैकि पट्ठे और असलके रेशोंमें तरी आजाय जैसे रेशों की तरह शरीर के अवयव लम्बे हो जांय और चौडाई में

सहज होता है पांचवें यह कि गलीज हवा इस रोग का कारण हो, तमद्दुद रीही कड़ा होता है और उसका इलाज तशन्नुज रीही से बहुत कठिन है। छटे यह कि अंग जल जाय या उसमें घाव होजाय और अदला उस फटने के भय से जो खुलने और सुकड़ने से पहुंचता है चल न सके और ऐसा ही रहे (लाभ) प्रायः तमद्दुद कुजाज और तशन्नुज में दर्द हुआ करता है और इन में दर्द होने का कारण यह है कि मादा रेशों में आजाता है और सुकड़ने की चेष्टा उसको दबाती है इस कारण से दर्द उत्पन्न होता है। शब्द " कुजाज " को ऐसे तशन्नुज पर भी बोलते हैं कि जो गर्दन की हँसली में उत्पन्न होकर उसको लम्बाई में अगली तरफ या पिछली तरफ खींचें या दोनों तरफों में और कभी हर प्रकार के तमद्दुद पर बोलते हैं चाहे किसी अंग में हो इस दशा में कुजाज और तमद्दुद का एक ही अर्थ है और कभी उस तमद्दुद पर बोलते जो पट्ठे में रतूवत जमने के कारण से हो उस दशा में तमद्दुद सामान्य है और कुजाज विशेष है तमद्दुद और कुजाज के प्रत्येक कारण के अनुसार चाहे तरी से हो चाहे खुश्की से या सूजन या फटने से सब लक्षण इलाज सहित वही हैं जो तशन्नुज के अध्याय में वर्णन हुए हैं परन्तु इतना अंतर है कि इस रोग के इलाज में तशन्नुज के इलाज की अपेक्षा जल्दी करें जैसा कि शेख ने कहा है कि सब से उत्तम यह है कि इस के इलाज में तशन्नुज की अपेक्षा इलाज में जल्दी की जाय क्यों कि यह घोट देता है और गला घोट कर अचानक मार डालता है परन्तु यह उस समय है कि कारण बलवान हो ॥

❀ इस रोग में होने वाले तमद्दुद सम्बन्धी पूर्व लक्षण ❀

ये लक्षण बहुत से हैं। (१) पट्ठा और गुद्दी के सब अंग भड़े हो जांय (२) सब देह फड़कने लगे और जीभ में बोझ मालूम हो (३) थूक और पानी कठिनता से निगल सके और सब देह में खुजली उत्पन्न हो जाय और खुजाते खुजाते चैन न पड़े ये सब कुजाज के पूर्व हेतु हैं और वे लक्षण जो इस रोग के उत्पन्न होने के पीछे होते हैं वे ये हैं कि कुजाज वाले के मुख और नेत्र गले घुटने वाले की तरह से हो जांय जैसे मुख का लाल पड़ना आंखों का चढ़ना और जल्दी जल्दी झपकना और यह सब उस समय है कि कुजाज अगली तरफ उत्पन्न हो और कभी ऐसा हो कि मुख का रंग काला या हरा हो जाय और यह उस समय है कि दिमाग और सिर की रगों में

सहज होता है पाचवे यह कि गलीज हवा इस रोग का कारण हो, तमद्दुद रीही कड़ा होता है और उसका इलाज तशन्नुज रीही से बहुत कठिन है। छटे यह कि अंग जल जाय या उसमें घाव होजाय और अदला उस कष्ट के भय से जो खुलने और सुकड़ने से पहुचता है चल न सके और ऐसा ही रहे (लाभ) प्राय तमद्दुद कुजाज और तशन्नुज में दर्द हुआ करता है और इन में दर्द होने का कारण यह है कि माद्दा रेशों में आजाता है और सुकड़ने की चेष्टा उसको दबाती है इस कारण से दर्द उत्पन्न होता है। शब्द " कुजाज ,, को ऐसे तशन्नुज पर भी बोलते हैं कि जो गर्दन की हँसली में उत्पन्न होकर उसको लम्बाई मे अगली तरफ या पिछली तरफ खींचें या दोनों तरफों मे और कभी हर प्रकार के तमद्दुद पर बोलते हैं चाहे किसी अंग में हो इस दशा में कुजाज और तमद्दुद का एक ही अर्थ है और कभी उस तमद्दुद पर बोलते जो पट्ठे मे रतूबत जमने के कारण से हो उस दशा में तमद्दुद सामान्य है और कुजाज विशेष है तमद्दुद और कुजाज के प्रत्येक कारण के अनुसार चाहे तरी से हो चाहे खुश्की से या सूजन या कष्ट से सब लक्षण इलाज सहित वही है जो तशन्नुज के अध्याय में वर्णन हुए है परन्तु इतना अंतर है कि इस रोग के इलाज मे तशन्नुज के इलाज की अपेक्षा जल्दी करें जैसा कि शेख ने कहा है कि सब से उत्तम यह है कि इस के इलाज में तशन्नुज की अपेक्षा इलाज में जल्दी की जाय क्यों कि कष्ट देता है और गला घोट कर अचानक मार डालता है परन्तु यह उस समय है कि कारण बलवान हो ॥

ॐ इस रोग में होने वाले तमद्दुद सम्बन्धी पूर्व लक्षण ॐ

ये लक्षण बहुत से हैं। (१) पट्ठा और गुद्दी के सब अंग पड़े हो जांय (२) सब देह फड़कने लगे और जीमें म बोझ मालूम हो (३) थूक और पानी कठिनता से निगल सके और सब देह में खुजली उत्पन्न हो जाय और खुजाते खुजाते चैन न पड़े ये सब कुजाज के पूर्व हेतु है और वे लक्षण जो इस रोग के उत्पन्न होने के पीछे होते है वे ये हैं कि कुजाज वाले के मुख और नेत्र गले घुटन वाले की तरह से हो जांय जैसे मुख का लाल पड़ना आंखों का चढ़ना और जल्दी जल्दी झपकना और यह सब उस समय है कि कुजाज अगली तरफ उत्पन्न हो और कभी ऐसा हो कि मुख का रंग काला या हरा हो जाय और यह उस समय है कि दिमाग और सिर की रगों म

हार्थो म मगट होती है क्योंकि शरीरके सब अगोंकी अपेक्षा हाथ म सचालन शक्ति विशेषहै क्योंकि इसमें जोड बहुतहै । हार्थोसे कमशक्ति पांवोंमें होती है और पावोंमे कम अन्य अगोंमे कांपने और फडकनेमें यह अन्तरहै कि फडकनेमें सचालनशक्ति प्रत्येक दशामें प्रगटहोतीहै चाहे अग ठहरारहे चाहे हिलपुले पर तु यह कांपनेके विरुद्ध है क्योंकि ठहरने की दशामें कम्पन नहीं होताहै, और ठहरनेका यह अर्थ है कि अग किसीके सहारेपर ठहरे, न यह कि वे स हारे ठहरे जाय । इसरोगके पूर्ण कारण तीन है एक यह कि चलने वाली शक्ति निर्बल होजाय दूसरे यह कि गमनशील अगका जोड निर्बल होजाय तीसरे यह कि दोनों इकट्ठे एक जगह निर्बलहों इसवास्ते इस रोग को कारण के अनुसार तीन प्रकारमें हम वर्णन करतेहै । पहिला प्रकार यह है कि सचालन शक्ति की निर्बलतासे कपकपी उत्पन्न हो इसके दो भेदहै एक यह कि बहुधा बीमारों को रोगके पीछे कपकपी उत्पन्न होजातीहै वा उनलोगों को उत्पन्न होजातीहै जो विशेष करके पेटभरेपर स्त्रीसगम बहुत करतेहैं दूसरे यह कि प्राकृतिक कारणसे उत्पन्नहो जैसे वादशाहके भय और बहुत डरने से, जैसे ऊची जगह से नीचे देखना या दीवार पर चलना आदि और अधिक प्रसन्नता अधिक क्रोध वा अधिक लज्जा से होजाय। इन सब कारणों से गमनशक्ति के आधीन होने या घबडाजानेसे कपकपी पैदाहोती है और जानना चाहिये कि भय- शक्तिको निर्बल करताहै और लज्जा क्रोध तथा प्रसन्नता प्राकृतिक शक्ति की चेष्टाके कार्य्योको विगाडती है और प्रगटहै कि दिमागवाली शक्ति दिलकी शक्ति के आधीन है परन्तु क्रोध उस समय शक्तिकी चेष्टामें घबराहट पैदा करताहै जो भयके साथ मिला हुला हो नहीं तो अकेला क्रोध कपकपी उत्पन्न नहीं करताहै क्योंकि केवल क्रोधमें निर्बलता नहीं होती किन्तु दिलमें शक्ति होने का चिन्ह है इसी कारण से जो क्रोध कि डर के साथ न हो उसमें मुखका रग लाल होजाता है और जो डरके साथ मिला हुआ हो तो उसमें रग चहरे का पीला पडजाता है (सूचना) कभी अकेला क्रोध और अकेला भय विना इसके कि कोई दूसरा कारण उनके साथ हो कपकपी पैदा करतेहै यह उस समय होता है कि रूह में अधिक घबराहट पैदा हो और उसकी चेष्टा जुदी २ हो और चलने वाली शक्ती की चेष्टाओं का प्रबन्ध विगड जाय और कभी ऐसा होता है कि लाभ और खुशी और किसी प्रयोजन का सिद्ध होना यद्यपि रूह में कुछ घबराहट नहो और किसी दूसरे कारण के साथ सयोग भी न हो परन्तु कपकपी उत्पन्न

हाथों में प्रगट होती है क्योंकि शरीरके सब अंगोंकी अपेक्षा हाथ में संचालन शक्ति विशेषहै क्योंकि इसमें जोड़ बहुतहै। हाथोंसे कमशक्ति पांवोंमें होती है और पावोंमे कम अन्य अंगोंमे कांपने और फड़कनेमें यह अन्तरहै कि फड़कनेमें संचालनशक्ति प्रत्येक दशामें प्रगटहोतीहै चाहे अंग ठहरारहे चाहे हिलमुले परन्तु यह कांपनेके विरुद्ध है क्योंकि ठहरने की दशामें कम्पन नहीं होताहै, और ठहरनेका यह अर्थ है कि अंग किसीके सहारेपर ठहरे, न यह कि वे सहारे ठहरे जाय। इसरोगके पूर्ण कारण तीन है एक यह कि चलने वाली शक्ति निर्बल होजाय दूसरे यह कि गमनशील अंगका जोड़ निर्बल होजाय तीसरे यह कि दोनों इकट्ठे एक जगह निर्बलहों इसवास्ते इस रोग को कारण के अनुसार तीन प्रकारमें हम वर्णन करतेहै। पहिला प्रकार यह है कि संचालन शक्ति की निर्बलतासे कपकपी उत्पन्न हो इसके दो भेदहै एक यह कि बहुधा बीमारों को रोगके पीछे कपकपी उत्पन्न होजातीहै वा उनलोगों को उत्पन्न होजातीहै जो विशेष करके पेटभरेपर स्त्रीसंगम बहुत करतेहैं दूसरे यह कि प्राकृतिक कारणसे उत्पन्नहो जैसे बादशाहके भय और बहुत डरने से, जैसे ऊंची जगह से नीचे देखना या दीवार पर चलना आदि और अधिक प्रसन्नता अधिक क्रोध वा अधिक लज्जा से होजाय। इन सब कारणों से गमनशक्ति के आधीन होने या घबड़ाजानेसे कपकपी पैदाहोती है और जानना चाहिय कि भय-शक्तिको निर्बल करताहै और लज्जा क्रोध तथा प्रसन्नता प्राकृतिक शक्ति की चेष्टाके काय्योंको बिगाड़ती है और प्रगटहै कि दिमागवाली शक्ति दिलकी शक्ति के आधीन है परन्तु क्रोध उस समय शक्तिकी चेष्टामें घबराहट पैदा करताहै जो भयके साथ मिला झुला हो नहीं तो अकेला क्रोध कपकपी उत्पन्न नहीं करताहै क्योंकि केवल क्रोधमें निर्बलता नहीं होती किन्तु दिलमें शक्ति होने का चिन्ह है इसी कारण से जो क्रोध कि डर के साथ न हो उसमें मुखका रंग लाल होजाता है और जो डरके साथ मिला हुआ हो तो उसमें रंग चहरे का पीला पड़जाता है (सूचना) कभी अकेला क्रोध और अकेला भय बिना इसके कि कोई दूसरा कारण उनके साथ हो कपकपी पैदा करताहै यह उस समय होता है कि रूह में अधिक घबराहट पैदा हो और उसकी चेष्टा जुदी २ हो और चलने वाली शक्ती की चेष्टाओं का प्रबन्ध बिगड़ जाय और कभी ऐसा होता है कि भाप और खुशी और किसी प्रयोजन का सिद्ध होना यद्यपि रूह में कुछ घबराहट नहो और किसी दूसरे कारण के साथ संयोग भी न हो। परन्तु कपकपी उत्पन्न

के पीने से उत्पन्न हाती है इसी प्रकार की है ॥ इस किताब के बनाने वाले ने कहा है कि शराब का अधिक सेवन अथवा गर्म या ठंडे भोजनो का अधिक करना प्रकृति को ठंडा करते हैं क्योंकि ऐसा करने से स्वाभाविक गर्मी बुझ जाती है, जलजाती है और दब जाती है जैसे थोड़ी आग पर बहुतसा ईंधन हो। फिर उस कारण से पट्ठा रूह और शक्ति निर्बल होकर अंगा या अपनी निज दशा पर न चला सके और कपकपी, सुन्नता तथा ऐसे ही और ठंडे रोग उत्पन्न होजाते हैं बहुत शराब पीने से उत्पन्न होने वाले रोगों के और कारण भी वर्णन किये हैं वह ग्रंथ के बढ़जाने के भय से नहीं लिखे गये हैं ॥ दूसरे यह कि माद्दे के भरजाने के कारण या खाना न पचने से या परिश्रम न करने से पट्ठे में गाड़े और लहसदार दोषों से गांठ पड़जाय और इस कारण से गमनशक्ति सबकी सब न जासके और जितनी कि घुसे उतने ही अंग को ऊपर की तरफ खींचे परन्तु इस कारण से कि प्रमाण में थोड़ी सी है और अंग को नहीं ठहरा सक्ती है अवश्य अपने ही बोझ से और जो दोष कि उसके भीतर ठहर गया हो उसके बोझ से नीचे की तरफ जाना चाहती है तब इन दो विपरीत कारणों से कपकपी उत्पन्न होती है और दुष्ट प्रकृति और गांठ के चिन्ह फालिज में वर्णन किये गये हैं। (इलाज) दोष की कपकपी में मलको धीरे २ कई बार में निकाले जैसे पहले जरों के पानी में हुब्बेशेतरज (चीते की गोली) फिर यारजात दे और मलको धीरे२ निकालने के उपाय पहले रोगों में साफ़२ वर्णन किये गये हैं प्रत्येक दशामें पुष्ट दवाओं और अधिक मलके निकालने से बचना अवश्य है जैसा कि हकीमो ने कहा है कि कपकपी में पुष्ट दवाओं और अधिक मलके निकालने से बचना उचित है क्योंकि यह सब शक्ति का दूर और निर्बल कर देते हैं और कपकपी को बढ़ाते हैं और पट्ठों के सब रोगों में यही आता है जैसा कि बहुधा ऊपर वर्णन किया गया है और कूठका तेल और चमेली का तेल मलना, गाहवा बिरंजासिफ या सातर के पके हुए पानी में गर्मी का बैठाना और स्वेद या लेप करना और गर्म सोता के पानी में न्हाना और अंग का मलना और दबाना यह सब लाभदायक हैं क्योंकि यह सब उपाय अवश्य उस जगह की तरफ बहुतसा खून खींच लावेंगे और उसको गर्म कर देंगे फिर उसकी शक्ति ठीक होजायगी और जो कपकपी दुष्ट प्रकृति के कारण उत्पन्न हो तो प्रकृति के दुरुस्त करने के लिये जो कुछ कि दुष्ट प्रकृति मस्तकी में वर्णन

के पीने से उत्पन्न होती है इसी प्रकार की है ॥ इस किताब के बनाने वाले ने कहा है कि शराब का अधिक सेवन अथवा गर्म या ठंडे भोजनों का अधिक करना प्रकृति को ठंडा करते हैं क्योंकि ऐसा करने से स्वाभाविक गर्मी बुझ जाती है, जमजाती है और दब जाती है जैसे थोड़ी आग पर बहुतसा ईंधन हो । फिर उस कारण से पट्ठा रूह और शक्ति निर्बल होकर अंगा या अपनी निज दशा पर न चला सके और कपकपी, सुन्नता तथा ऐसे ही और ठंडे रोग उत्पन्न होजाते हैं बहुत शराब पीने से उत्पन्न होने वाले रोगों के और कारण भी वर्णन किये हैं वह ग्रंथ के बढ़जाने के भय से नहीं लिखे गये हैं ॥ दूसरे यह कि माद्देके भरजाने के कारण या खाना न पचने से या परिश्रम न करने से पट्ठे में गाढ़े और लहसदार दोषों से गांठ पड़जाय और इस कारण से गमनशक्ति सबकी सब न जासके और जितनी कि धुसे उत ने ही अंग को ऊपर की तरफ खींचे परन्तु इस कारण से कि प्रमाण में थोड़ी सी है और अंग को नहीं ठहरा सकी है अवश्य अपने ही बोझ से और जो दोष कि उसके भीतर ठहर गया हो उसके बोझ से नीचे की तरफ जाना चाहती है तब इन दो विपरीत कारणों से कपकपी उत्पन्न होती हैं और दुष्ट प्रकृति और गांठ के चिन्ह फालिज में वर्णन किये गये हैं । (इलाज) दोष की कपकपी में मलको धीरे २ कईबार में निकाले जैसे पहले जरों के पानी में हुब्बेशेतरज (चीते की गोली) फिर यारजात दे और मलको धीरे२ निकालने के उपाय पहले रोगों में साफ़ २ वर्णन किये गये हैं प्रत्येक दशामें दुष्ट दवाओं और अधिक मलके निकालने से बचना अवश्य है जैसा कि हकीमों ने कहा है कि कपकपी में दुष्ट दवाओं और अधिक मलके निकालने से बचना उचित है क्योंकि यह सब शक्ति को दूर और निर्बल कर देते हैं और कपकपी को बढ़ाते हैं और पट्ठों के सब रोगों में यही आज्ञा है जैसा कि बहुधा ऊपर वर्णन किया गया है और कूठका तेल और चमेली का तेल मलना, गाहवा बिरंजासफ या सगाब के पके हुए पानी में गर्मी का बैठाना और स्वाद या लेप करना और गर्म सोता के पानी में न्हाना और अंग का मलना और दबाना यह सब लाभदायक है क्योंकि यह सब उपाय अवश्य उस जगह की तरफ बहुतसा खून खींच लावेंगे और उसको गर्म कर देंगे फिर उसकी शक्ति ठीक होजायगी और जो कपकपी दुष्ट प्रकृति के कारण उत्पन्न हो तो प्रकृति के दुरुस्त करने के लिये जो कुछ कि दुष्ट प्रकृति मस्तिष्क में वर्णन

ताव के अतमें विषैले जानवरों के काटने के विषय में लिखेंगे और जो दोष के आजाने से उत्पन्न हो तो उस दोष से देह निर्मल करें और ऐसेही और उचित उपाय काम में लावें और बालक वा युवा के जो कपकपी बायीं तरफ में उत्पन्न होती है उसका इलाज बहुत कठिन होता है क्योंकि बायीं तरफ दिल है जब उसके दिल की शक्ति में निर्बलता आजाती है तब यह रोग भी उत्पन्न होता है और दिल की शक्ति की निर्बलता का इलाज कठिनता से होता है ऐसा ही वृद्धों को कपकपी बुढापे के कारण उत्पन्न होती है इस कपकपी का इलाज इस कारण से कठिन है कि इस आयु में दिल की शक्ति और दिमागी शक्ति और जिगर की शक्ति तीनों निर्बल होजाती हैं इसी लिये इन्हीं शक्तियों के आधीन गमनादि शक्ति भी निर्बल होजाती है और इन सब श क्तियों की निर्बलता का इलाज ऐसे आराम के समय में कठिन है ॥

सिरके कांपने का इलाज ।

३॥ माशे उस्तखद्दूस को ३॥ माशे पारजे फैकरा के साथ गोली बनाकर दें और यदि ७ माशे केवल उस्तखद्दूस ही शहद क पानी में दें तो अधिक लाभदायक है और १८ दिन पीछे ३॥ माशे या ५। माशे शक्ति अनुसार फौकाया (यह यौगिक गोलियां हैं) की गोली भी देना लाभदायक है और पुरानी कपकपी के लिये जुन्दे बेदस्तर शहद के पानी म दना लाभदायक है (लाभ) । कपकपी में सब किस्म के पानी से मेहका पानी अधिक हानिकारक है और बहुत फसद खोलना इस रोग के उत्पन्न होने के कारणों में से है और दूसरे कारणों का ऊपर वर्णन होचुका है और हकीम मुहम्मद जक रियाने कहा है कि जिस समय मिरगी वाले का सिर हिलने लगे तो जान ना चाहिये कि उस के सिर में सूजन है ॥

बाईसवां प्रकरण ।

खदर अर्थात् सुन्न के वर्णन में ।

खदर शब्द अरबीहै यह उपद्रव और सुस्ती के अर्थ में आता है और क्योंकि इस रोगमें कष्ट होना उचित है इसलिये इस रोग का यह नाम रक्खा गया है और अगले बहुत से हकीमों ने इसकी प्रशंसा इस तरह पर की है कि यह रोग रागहै जो स्पर्शनाद्रियमें उत्पन्न होता है और यदि कारण बलवान होतो स्पर्श का ज्ञान बिलकुल जातारहताहै अथवा हेतुके अनुसार कम होजाताहै और बहुधा

ताव के अतमें विषैले जानवरों के काटने के विषय में लिखेंगे और जो दोष के आजाने से उत्पन्न हो तो उस दोष से देह निर्मल करें और ऐसेही और उचित उपाय काम में लावें और बालक वा युवा के जो कपकपी बायीं तरफ में उत्पन्न होती है उसका इलाज बहुत कठिन होता है क्योंकि बायीं तरफ दिल है जब उसके दिल की शक्ति में निर्बलता आजाती है तब यह रोग भी उत्पन्न होता है और दिल की शक्ति की निर्बलता का इलाज कठिनता से होता है ऐसा ही वृद्धों को कपकपी बुढापे के कारण उत्पन्न होती है इस कपकपी का इलाज इस कारण से कठिन है कि इस आयु में दिल की शक्ति और दिमागी शक्ति और जिगर की शक्ति तीनों निर्बल होजाती हैं इसी लिये इन्हीं शक्तियों के आधीन गमनादि शक्ति भी निर्बल होजाती है और इन सब शक्तियों की निर्बलता का इलाज ऐसे आराम के समय में कठिन है ॥

सिरके कांपने का इलाज ।

३॥ माशे उस्तसद्दूस को ३॥ माशे पारजे फैकरा के साथ गोली बनाकर दें और यदि ७ माशे केवल उस्तसद्दूस ही शहद क पानी में दें तो अधिक लाभदायक है और १८ दिन पीछे ३॥ माशे या ५। माशे शक्ति अनुसार फौकाया (यह यौगिक गोलियां हैं) की गोली भी देना लाभदायक है और पुरानी कपकपी के लिये जुन्दे बेदस्तर शहद के पानी म दना लाभदायक है (लाभ) । कपकपी में सब किस्म के पानी से मेहपा पानी अधिक हानिकारकहै और बहुत फसद खोलना इस रोग के उत्पन्न होने के कारणों में से है और दूसरे कारणों का ऊपर वर्णन होचुका है और हकीम मुहम्मद जकरियाने कहा है कि जिस समय मिरगी वाले का सिर हिलने लगे तो जानना चाहिये कि उस के सिर में सूजन है ॥

बाईसवां प्रकरण ।

खदर अर्थात् सुन्न के वर्णन में ।

खदर शब्द अरबीहै यह उपद्रव और सुस्ती के अर्थ में आता है और क्योंकि इस रोगमें कष्ट होना उचित है इसलिये इस रोग का यह नाम रक्खा गया है और अगले बहुत से हकीमों ने इसकी व्याख्या इस तरह पर की है कि यह ऐसा रोगहै जो स्पर्शनेन्द्रियमें उत्पन्न होता है और यदि कारण बलवान होतो स्पर्श का ज्ञान बिल्कुल जातारहताहै अथवा हेतुके अनुसार कम होजाताहै और बहुधा

सुर्खी स्याही लिये हुए होजाय (इलाज) यह है कि फस्द खोलें भोजन कम करै और जहां कहीं अग को बहुत देर तक एक तरह पर रखने से खून इकट्ठा होजाय तो ऐसी दशा में आप उस अग का बदलना ही लाभदायक है और जानना चाहिये कि वह गांठ जो अग को सुन्न कर देती है वह बादी के माद्दे से बहुत कम होता है और पित्त से कभी २ उत्पन्न होता है चौथे यह कि बाहर से किसी तरह पर अग में बहुत सर्दी पहुचे और उसकी प्रकृति को खराब और शरीर को गाढा करदे और जमादे इस कारण से रूह जैसी चाहिये न घुस सके और यह बात प्रकट है कि ठडी हुई प्रकृति जो अग को गाढा करे और दोष को जमादे वह भीतरी हो या बाहरी पट्ठे को कड़ा कर देती है क्या कि उसके भागों को इकट्ठा करता और समेटता है इसी कारण से पांव की त्वचा हाथ एडी वा पिंडली की त्वचा की अपेक्षा जन्म से ही कम ज्ञान वाली अर्थात् सुन्न होती है और ठडी हुई प्रकृति का यह चिन्ह है कि कारण पहले होचुका हो और पट्ठे में गाढापन और जमाव और कड़ापन प्रकट हो और गर्मी से लाभ मालूम हो और अग में चींटियासी चलती हुई मालूम हों (इलाज) पट्ठा नर्म करने के लिये गर्म गुण दायक तेल मल और गुनगुना पानी डाले और पट्ठे की प्रकृति के सम्हालने के लिये गर्मी पहुचाने वाले लेप और तरेड काम में लाव और अग को इस तरह हाथ से या किसी खुरखुरी चीज से मल कि लाल होजायें। पांचवें यह है कि खुश्की अधिक होजाय और इस कारण से पट्ठे के भाग इकट्ठे होजांय और सिमट जांय तो उसके रेशे आपस में मिल जायँगे क्यों कि जिस समय रेशे में भरी हुई तरी खुश्की के कारणसे नष्ट होजायगी तो इस कारण से अंग के भीतर और दोनों रेशा के बीच में बिल्कुल जगह खाली रहना कठिन है इस लिये वह रेशे आपस में एक दूसरे से मिल जायगे इस दशा में अवश्य रास्ते बद होजायगे और रूह को अन्दर नहीं जाने देंगे और अग सुन्न होजायगा इसका चिन्ह और इलाज वही है जो तशन्नुज यावित अर्थात् खुश्क ऐठने का चिन्ह और इलाज है और जानना चाहिये कि हकीम जालीनूस कहता है कि कभी ऐसा होता है कि खुश्क प्रकृति वाले को गर्म दवा खाने से खुश्की बढजाती है इस कारण से उसकी उगलियों के सिरा में सुन्न होना आरम्भ होजाता है और ऊपर चढता जाता है और दूसरे अगों में पहुचता है और इसी प्रकार की वह सुन्न है जो पित्त के गर्म ज्वरा म स्वाभाविक तरी के नष्ट होजाने से और खुश्की आजाने से हाथ और पांवमें उत्पन्न होजाय छठे यह कि ठढ विष जैसे अफीम या भांग का सेवन किया हो उसके कारण सुन्न उत्पन्न होजाय और यह बात प्रकट है कि

मुर्खी स्याही लिये हुए होजाय (इलाज) यह है कि फस्द खोलें भोजन कम करें और जहां कहीं अंग को बहुत देर तक एक तरह पर रखने से खून इकट्ठा होजाय तो ऐसी दशा में आप उस अंग का बदलना ही लाभदायक है और जानना चाहिये कि वह गांठ जो अंग को सुन्न कर देती है वह बादी के माद्दे से बहुत कम होता है और पित्त से कभी २ उत्पन्न होता है चौथे यह कि बाहर से किसी तरह पर अंग में बहुत सर्दी पहुंचे और उसकी प्रकृति को खराब और शरीर को गाढ़ा करदे और जमादे इस कारण से रूह जैसी चाहिये न घुस सके और यह बात प्रकट है कि ठंडी दुष्ट प्रकृति जो अंग को गाढ़ा करे और दोष को जमादे वह भीतरी हो या बाहरी पट्ठे को कड़ा कर देती है क्या कि उसके भागों को इकट्ठा करता और समेटता है इसी कारण से पांव की त्वचा हाथ एड़ी वा पिंडली की त्वचा की अपेक्षा जन्म से ही कम ज्ञान वाली अर्थात् सुन्न होती है और ठंडी दुष्ट प्रकृति का यह चिन्ह है कि कारण पहले होचुका हो और पट्ठे में गाढ़ापन और जमाव और कड़ापन प्रकट हो और गर्मी से लाभ मालूम हो और अंग में चींटियांसी चलती हुई मालूम हों (इलाज) पट्ठा नर्म करने के लिये गर्म गुण दायक तेल मल और गुनगुना पानी डाले और पट्ठे की प्रकृति के सम्हालने के लिये गर्मी पहुंचाने वाले लेप और तरेड़ काम में लाव और अंग को इस तरह हाथ से या किसी खुरखुरी चीज से मल कि लाल होजावें। पांचवें यह है कि खुश्की अधिक होजाय और इस कारण से पट्ठे के भाग इकट्ठे होजांय और सिमट जांय तो उसके रेशे आपस में मिल जायँगे क्यों कि जिस समय रेशों में भरी हुई तरी खुश्की के कारणसे नष्ट होजायगी तो इस कारण से अंग के भीतर और दोनों रेशों के बीच में बिल्कुल जगह खाली रहना कठिन है इस लिये वह रेशे आपस में एक दूसरे से मिल जायंगे इस दशा में अवश्य रास्ते बंद होजायंगे और रूह को अन्दर नहीं जाने देंगे और अंग सुन्न होजायगा इसका चिन्ह और इलाज वही है जो तशन्नुज याबिस अर्थात् खुश्क इठने का चिन्ह और इलाज है और जानना चाहिये कि हकीम जालीनूस कहता है कि कभी ऐसा होता है कि खुश्क प्रकृति वाले को गर्म दवा खाने से खुश्की बढ़जाती है इस कारण से उसकी उंगलियों के सिरों में सुन्न होना आरम्भ होजाता है और ऊपर चढ़ता जाता है और दूसरे अंगों में पहुंचता है और इसी प्रकार की वह सुन्न है जो पित्त के गर्म ज्वर में स्वाभाविक तरी के नष्ट होजाने से और खुश्की आजाने से हाथ और पांवमें उत्पन्न होजाय छठे यह कि ठंडे विष जैसे अफीम या पोस्त का सेवन किया हो उसके कारण सुन्न उत्पन्न होजाय और यह बात प्रकट है कि

सुर्खी स्याही लिये हुए होजाय (इलाज) यह है कि फस्द खोलें भोजन कम करें और जहा कहीं अग को बहुत देर तक एक तरह पर रखने से खून इकट्ठा होजाय तो ऐसी दशा में भाय उस अग का बदलना ही लाभदायक है और जानना चाहिये कि वह गांठ जो अग को सुन्न कर देती है वह बादी के माद्दे से बहुत कम होता है और पित्त से कभी २ उत्पन्न होता है चौथे यह कि बाहर से किसी तरह पर अग में बहुत सर्दी पहुचे और उसकी प्रकृति को खराब और शरीर को गाढा करदे और जमादे इस कारण से रूह जैसी चाहिये न घुस सके और यह बात प्रकट है कि ठडी दुष्ट प्रकृति जो अग का गाढा करे और भाप को जमादे वह भीतरी हो या बाहरी पट्ठे को कड़ा कर देती है क्यों कि उसके भागों को इकट्ठा करता और समेटता है इसी कारण से पांव की त्वचा हाथ एडी वा पिंडली की त्वचा की अपेक्षा जन्म से ही कम ज्ञान वाली अर्थात् सुन्न होती है और ठडी दुष्ट प्रकृति का यह चिन्ह है कि कारण पहले हाहुका हो और पट्ठे मे गाढापन और जमाव और कड़ापन प्रकट हो और गर्मी से लाभ मालूम हो और अग म चींटियासी चलती हुई मालूम हों (इलाज) पट्ठा नर्म करने के लिये गर्म गुण दायक तेल मल और गुनगुना पानी डालें और पट्ठे की प्रकृति के सम्हालने के लिये गर्मी पहुचाने वाले लेप और तरेड काम में लाव और अग को इस तरह हाथ से या किसी खुरखुरी चीज से मलें कि लाल होजावें। पांचवें यह है कि खुश्की अधिक होजाय और इस कारण से पट्ठे के भाग इकट्ठे होजांय और सिमट जांय तो उसके रेशे आपस में मिल जायँगे क्यों कि जिस समय रेशे में भरी हुई तरी खुश्की के कारणसे नष्ट होजायगी तो इस कारण से अग के भीतर और दोनों रेशों के बीच में बिल्कुल जगह खाली रहना कठिन है इस लिये वह रेशा आपस में एक दूसरे से मिल जायगे इस दशा में अवश्य रास्ते बद होजायगे और रूह को अन्दर नहीं आने देंगे और अग सुन्न होजायगा इसका चिन्ह और इलाज वही है जो तशन्नुज याबिस अर्थात् खुश्क इठने का चिन्ह और इलाज है और जानना चाहिये कि हकीम जालीनूस कहता है कि कभी ऐसा होता है कि खुश्क प्रकृति वाले को गर्म दवा खाने से खुश्की बढजाती है इस कारण से उसकी उगलियों के सिरों मे सुन्न होना आरम्भ होजाता है और आगे बढ़ता जाता है और दूसरे अगों में पहुचता है और इसी प्रकार की वह सुन्न है जो पित्त के गर्म ज्वरों में स्वाभाविक तरी के नष्ट होजाने से और खुश्की आजाने से हाथ और पांवमें उत्पन्न होजाय छटे यह कि ठडे चिप जैसे अफीम या सीसा का सेवन किया हो उसके कारण सुन्न उत्पन्न होजाय और यह बात प्रकट है कि

सुर्खी स्याही लिये हुए होजाय (इलाज) यह है कि फस्द खोलें भोजन कम करे और जहा कहीं अग को बहुत देर तक एक तरह पर रखने से खून इकट्ठा होजाय तो ऐसी दशा में भाय उस अग का बदलना ही लाभदायक है और जानना चाहिये कि वह गांठ जो अग को सुन्न कर देती है वह बादी के माद्दे से बहुत कम होता है और पित्त से कभी २ उत्पन्न होता है चौथे यह कि बाहर से किसी तरह पर अग में बहुत सर्दी पहुचे और उसकी प्रकृति को खराब और शरीर को गाढा करदे और जमादे इस कारण से रूह जैसी चाहिये न घुस सके और यह बात प्रकट है कि ठडी दुष्ट प्रकृति जो अग का गाढा करे और दाप को जमादे वह भीतरी हो या बाहरी पट्ठे को कड़ा कर देती है क्यों कि उसके भागों को इकट्ठा करता और समेटता है इसी कारण से पांव की त्वचा हाथ एडी वा पिंडली की त्वचा की अपेक्षा जन्म से ही कम ज्ञान वाली अर्थात् सुन्न होती है और ठंडी दुष्ट प्रकृति का यह चिन्ह है कि कारण पहले हाजुका हो और पट्ठे मे गाढापन और जमाव और कड़ापन प्रकट हो और गर्मी से लाभ मालूम हो और अग म चौंटियासी चलती हुई मालूम हों (इलाज) पट्ठा नर्म करने के लिये गर्म गुण दायक तेल मल और गुनगुना पानी डालें और पट्ठे की प्रकृति के सम्हालने के लिये गर्मी पहुचाने वाले लेप और तरेड काम में लाव और अग को इस तरह हाथ से या किसी खुरखुरी चीज से मलें कि लाल होजावें। पांचवें यह है कि खुश्की अधिक होजाय और इस कारण से पट्ठे के भाग इकट्ठे होजाय और सिमट जाय तो उसक रेशे आपस में मिल जायँगे क्यों कि जिस समय रेशे में भरी हुई तरी खुश्की के कारणसे नष्ट होजायगी तो इस कारण से अग के भीतर और दोनों रेशों के बीच में बिल्कुल जगह खाली रहना कठिन है इस लिये वह रेशा आपस में एक दूसरे से मिल जायगे इस दशा में अवश्य रास्ते बद होजायगे और रूह को अन्दर नहीं जाने देंगे और अग सुन्न होजायगा इसका चिन्ह और इलाज वही है जो तशन्नुज याबिस अर्थात् खुश्क इठने का चिन्ह और इलाज है और जानना चाहिये कि हकीम जालीनूस कहता है कि कभी ऐसा होता है कि खुश्क प्रकृति वाले को गर्म दवा खाने से खुश्की बढजाती है इस कारण से उसकी उगलियों के सिरों से सुन्न होना आरम्भ होजाता है और [illegible] बढता जाता है और दूसरे अगों में पहुचता है और इसी प्रकार की वह सुन्न है जो पित्त के गर्म ज्वरों में स्वाभाविक तरी के नष्ट होजाने से और खुश्की आजाने से हाथ और पांवमें उत्पन्न होजाय छठे यह कि ठंडे विष जैसे अफीम या शीशा का सेवन किया हो उसके कारण सुन्न उत्पन्न होजाय और यह बात प्रकट है कि

माथेकी खाल और होठ टेढ होजातेहैं और चहरेकी असली सूरत बदलजाती है और होट अच्छी तरह आपसमें नहीं मिल सक्तेहैं और आदमी चूसा से और किसी चीज को मुहम दबाके खाचने से असमर्थ होजाताहै और मुखनी फूक सीधी न निकलसके जैसा दीपक को न बुझासके और आंखकी पलकें अच्छी तरह बद न हों और यह सब जो कुछ कहागयाहै उस समयहोताहै कि बीमारी मुखके एक तरफ मे हो और बहुधा तो ऐसाही होता है परन्तु कभी मुखके दोनों तरफ मे भी बीमारी होती है इस तरह पर कि दोनों तरफ के सब चेहरेको घेरलेती है उसी समय मुह मे भी कुछ टेढापन तो प्रगट न होगा परन्तु पलकों के आपसमें मिलन में * कष्ट मालूमहोगा और इस दशामें जो चिन्ह पहले बीत चुके या अब मौजूदहै वह उन से अधिक होंगे जो एक तरफ के लकवे में होतेहै और जानना चाहिये कि लकवे के दो भेदहैं एक तशन्नुजी (इठना खिंचना- सिमटना) और दूसरे इस्तरखाई (ढीला व सुस्त होना) इस प्रकरण को हम दो भेदों में वर्णन करतेहै ।

❀ पहिला भेद तशन्नुजी लकवे का वर्णन ❀

यह तीन प्रकार पर है एक तो यह है कि जिन अदलों से य अग च लने फिरतेहै उन में गाढी और गलीज रतूबत दिमाग से आकर भरजाय और यह अदले चौडाई में बढजाय और लबाई में कम होजाय इस कारण से यह अग खिंचजाय और अपनी दशा से फिर जाय दूसरे यह कि गर्दन का अदला सूजजाय और गला घुटे और खिंचे और इस कारण से जाडों के बधन और मुख के अदल खिंचजाय और लकवा उत्पन्न होजाय इस लिये कि मुखके किसी २ जोड के बधन और अदले गर्दन के परले सिरपर हैं और इस प्रकार का लकवा होटों में उत्पन्न हुआ करता है और केवल होठों में प्रगट होने का कारण अगों के वर्णन मे मालूम होगा और कभी गर्दन के अदले के सूजने स अत में फालिज हो जाता है क्योंकि पट्ठों के रास्ते जो ज्ञान शक्ति के रास्ते में दब आतेहै और इस कारण से कि गर्दन के अदल की सूजन से कभी अतमे फालिज होजाता है और कभी लकवा इस लिये इस को सयोगिक कारणों में से जानतेहै तीसरे यह दिमागी अगों पर खुश्की

---

* हकीम गजी कहता है कि एक मनुष्यके बदन लगजाय और बहुत समय तक मुब्तिलारहा फिर उसको लकवा इसतरहसे उत्पन्न हुआ कि लकवा मुह तो टेढा न हुआ परन्तु उसकी एक आंख का बन्द करना कठिन होगया और दूसरी बिल्कुल बन्दही न होती थी ।

मापेकी खाल और होठ टेढ़ होजातेहैं और चहरेकी असली सूरत बदलजाती है और होट अच्छी तरह आपसमें नहीं मिल सकतेहैं और आदमी चूसा से और किसी चीज को मुहम दबाके खाचने से असमर्थ होजाताहै और मुखनी फूक सीधी न निकलसके जैसा दीपक को न बुझासके और आंखकी पलकें अच्छी तरह बंद न हों और यह सब जो कुछ कहागयाहै उस समयहोताहै कि बीमारी मुखके एक तरफ में हो और बहुधा तो ऐसाही होता है परन्तु कभी मुखके दोनों तरफ में भी बीमारी होती है इस तरह पर कि दोनों तरफ के सब चेहरेको घेरलेती है उसी समय मुह में भी कुछ टेढ़ापन तो प्रगट न होगा परन्तु पलकों के आपसमें मिलन में * कष्ट मालूमहोगा और इस दशामें सब चिन्ह पहले बीत चुके या अब मौजूदहैं वह उन से अधिक होंगे जो एक तरफ के लकवे में होतेहैं और जानना चाहिये कि लकवे के दो भेदहैं एक तशन्नुजी (इठना खिंचना- सिमटना) और दूसरे इस्तरखाई (ढीला व सुस्त होना) इस प्रकरण को हम दो भेदों में वर्णन करतेहैं ।

❀ पहिला भेद तशन्नुजी लक्वे का वर्णन ❀

यह तीन प्रकार पर है एक तो यह है कि जिन अदलों से य अंग च लने फिरतेहैं उन में गाढी और गलीज रतूबत दिमाग से आकर भरजाय और यह अदले चौडाई में बढ़जाय और लंबाई में कम होजांय इस कारण से यह अंग खिंचजाय और अपनी दशा से फिर जाय दूसरे यह कि गर्दन का अदला सूजजाय और गला घुटे और खिंचे और इस कारण से जाबों के बंधन और मुख के अदल खिंचजाय और लकवा उत्पन्न होजाय इस लिये कि मुखके किसी २ जोड के बंधन और अदले गर्दन के पट्ठे निकलेहैं और इस प्रकार का लकवा होंठों में उत्पन्न हुआ करता है और केवल होठों में प्रगट होने का कारण अगों के वर्णन से मालूम होगा और कभी गर्दन के अ दले के सूजने से अत में फालिज हो जाता है क्योंकि पट्ठों के रास्ते जो ज्ञान शक्ति के रास्ते में दब आतेहैं और इस कारण से कि गर्दन के अदल की सूजन से कभी अतमें फालिज होजाता है और कभी लकवा इस लिये उन को सयोगिक कारणों में से जानतेहैं तीसरे यह दिमागी अगों पर खुश्की

---

* इमीम गजी कहता है कि एक मनुष्यको पवन लगगया और बहुत समय तक मुब्तारहा फिर उसको लकवा इसतरहसे उत्पन्न हुआ कि लकवा मुह तो टेढा न हुआ परन्तु उसकी एक आंख का बन्द करना कठिन होगया और दूसरी बिल्कुल बन्दही न होती थी।

ये । अर्थात् यदि पहला भी तिन हो और यही रीति इस्तरखाई में भी पाद रखनी चाहिये और दूसरी बातें जो इस्तरखाई लक्वे के मकामान्तर में वर्णन करेंगे तशन्नुजी और इम्तिलाई लकवे में भी इन पर दृष्टि रखना आवश्यकीय है और लकवे के इलाज में चार दिन तक देर करने के लिये उस जगह आज्ञा है जहां रोग का कारण निर्बल हो और जहां कारण बलवान् हो और लकवे के साथ सिर और देह में बोझ और ज्ञानहीनता हो तो वहां ७ दिन तक इलाज न करें और मल के देर में निकालने की आज्ञा इस लिये है कि मल सम्बन्धी लकवा चाहे वह तशन्नुजी चाहे इस्तरखाई है उसका मल अपने आप उबलता है और विना पके वा निकलने की सामर्थ के विना ही एक साथ निकल पड़ता है और जो दस्तावर दवाओं का प्रभाव मल को हिलादेवे तो ऐसा भी होसकता है कि वह मल न निकले और दिल की तरफ गिरने लगे और अकस्मात् मारडाले या हराम मग्ज की किसी तरफ में गिरकर अ र्धाङ्ग करदे वा दिमाग के पर्दों की तरफ जाकर सक्ता उत्पन्न करे वा मौतका कारण हो इसी लिये इस किताब के बनाने वाले ने कहा है कि लकवे में प्राय सक्ता और फालिज होने का डर रहता है इस से उचित है कि उसके इलाज के आरम्भ में दोष को मुलायम करें और मल के निकालने के उपाय कर रक्खे जैसा कि आगे वर्णन करेंगे और जिस जगह गर्दन के अजले की सूजन से लकवा हो तो जो सूजन की दशानुसार उपाय करें ॥

दूसरा भेद इस्तरखाई लकवे का वर्णन

यह इस तरह पर होता है कि दिमाग से पतली रतूबत एक तरफ के अट्ठा और पट्ठों में उतर कर उनको तर कर देती है तथा पट्ठ और सिलिसिया के सुस्त होजाने से रूह के रास्ते बन्द होजाते हैं और इस कारण से व अंग सुस्त होकर ढीले होजाते हैं परन्तु लकवा प्राय तशन्नुज से ही उत्पन्न हुआ करता है और इस्तरखा से बहुत कम पैदा होता है । उसका चिन्ह यह है कि मुखका अग्रभाग ढीला होजाता है और गमनशक्ति में निर्बलता [illegible] तथ माथा, मुख की खाल, और अट्ठा उस ओर बहुत न [illegible] हो तथा उस तरफ की आंखके नीचे वाली पलक इसनी नीचे [illegible] ऊपर [illegible] न सके और उस [illegible] आया करते

ये । अर्थात् यदि पहला भी दिन हो और यही रीति इस्तरखाई में भी पाइ रखनी चाहिये और दूसरी बातें जो इस्तरखाई लक्वे के प्रकरणान्तर में वर्णन करेंगे तशन्नुजी और इम्तिलाई लकवे में भी इन पर दृष्टि रखना आवश्यकीय है और लक्वे के इलाज में चार दिन तक देर करने के लिये उस जगह आज्ञा है जहां रोग का कारण निर्बल हो और जहां कारण बलवान् हो और लक्वे के साथ सिर और देह में बोझ और ज्ञानहीनता हो तो वहां ७ दिन तक इलाज न करें और मल के देर में निकालने की आज्ञा इस लिये है कि मल सम्बन्धी लकवा चाहे वह तशन्नुजी चाहे इस्तरखाई है उसका मल अपने आप उबलता है और विना पके वा निकलने की सामर्थ के विना ही एक साथ निकल पड़ता है और जो दस्तावर दवाओं का प्रभाव मल को हिलादेवे तो ऐसा भी होसकता है कि वह मल न निकले और दिल की तरफ गिरने लगे और अकस्मात् मारडाले या हराम मग्ज की किसी तरफ में गिरकर अ ङ्ग को फरदे वा दिमाग के पर्दों की तरफ जाकर सक्ता उत्पन्न करे वा मौतका कारण हो इसी लिये इस किताब के बनाने वाले ने कहा है कि लक्वे में भाग सक्ता और फ़ालिज होने का डर रहता है इस से उचित है कि उसके इलाज के आरम्भ में दोष को मुलायम करें और मल के निकालने के उपाय कर रक्खे जैसा कि आगे वर्णन करेंगे और जिस जगह गर्दन के मजले की सूजन से लकवा हो तो जो सूजन की दशानुसार उपाय करें ॥

दूसरा भेद इस्तरखराई लक्वे का वर्णन

यह इस तरह पर होता है कि दिमाग से पतली रतूबत एक तरफ के अ- ला और पट्ठों में उतर कर उनको तर कर देती है तथा पट्ठे और रिंगिया सुस्त होजाने से रूह के रास्ते बंद होजाते हैं और इस कारण से वे अंग सु होकर ढीले होजाते हैं परन्तु लकवा प्रायः तशन्नुज से ही उत्पन्न हुआ कर है और इस्तरखा से बहुत कम पैदा होता है । उसका चिन्ह यह है कि मुख अग्रभाग ढीला होजाता है और गमनशक्ति में निर्बलता [illegible] मा माथा, मुख की खाल, और अदला उस ओर बहुत न [illegible] तथा उस तरफ की आंख के नीचे वाली पलक इतनी नीचे [illegible] ऊप की पलक उसतक न पहुंचे और उस [illegible] आप बहते [illegible] अवने की शक्ति जाती रहती है (तशन्नु [illegible]

वनारहे तत्पश्चात् नियत समयके वीतनेपर और मलके पकजानेपर देहको साफ करने के लिये गोलियां और पारज जिनका वर्णन फालिजमें होचुका है काम में लावे और पिछले प्रकरणों में कहेहुए उपायों को धीरे २ करनाभी उचित है फिर इसतरह देह की सफाई से निश्चिंत होकर विशेष करके शिरके साफ करने के लिये कुल्ले हुलास, तरेडे, सिकताव और सूंघने की दवाएं काम में लावें और क्योंकि यह तुर्तही गुणदायक होती हैं परन्तु चालीस दिन पर्यन्त सूंघने की दवा का प्रयोग न करै ।

कुल्ले अर्थात् गरगरे की रीति ।

दोनामरुआ, सआतर, अकरकरा, राई, विज्ञकीजडकीछाल, खट्टा अनारदाना और सोंठ इन सब दवाओं को कूटकर औटावे और जंगली प्याज की बनीहुई शिकजवीन में मिलाकर कुल्ले करै तोभी यही गुण रखता है ॥

नाकमें टपकानें की रीति ।

कुलंगकापित्ता, बाजकापित्ता, मुलहटी तरके पानी में मिलाकर नाक में टपकावें (अथवा) कुलंगकापित्ता स्त्रियों के दूध के साथ यही गुण रखता है और ऐसेही बाशे का पित्ता और भेडिये का पित्ता और शब्बूत (एक किस्म की मछली है जिसे वमछ भी कहते हैं) का पित्ता और दोनामरुआ और चुकन्दर का पानी टपकाना भी अच्छा है और कहते हैं कि जो छ रत्ती सुकवीनज, ३५ माशे दोनामरुआ के पानी में घिसकर १॥। माशे जैतून का तेल मिलाकर नाक में डालें तो ५ दिन में लक्वा अच्छा होजाता है ॥

तरेड़े और सिकावकी रीति ।

सआतर, तुलसी, अकरकरा, हिरमाना, वर्गगार, राई, बाबूना, नाखूना और दोनामरुआ आदि औटाकर तरेडे की तरह भी और सिकाव की तरह पर भी काम में लावे ॥ और जिन चीजों का सूंघना लाभदायक है वे ये हैं जैसे जुन्देवेदस्तर, सुकवीनज, जावशीर और गुगल और इन चीजों के सूंघने में यह लाभ है कि ये कफ को मुलायम कर के दिमाग से उतारती हैं और ऐसेही मस्तगी और अलकुल बतम (एक प्रकार का गोंद है) और बचका चवाना लाभदायक है परन्तु निगदार मुख में चबाने से अधिक गुणदायक है और किताब जखीरे ख्वारजम वाला लिखता है कि इस के इलाज में यह रीति उत्तम है कि जब ४ दिन बीत जांय तो ४॥ माशे यारजिफैकरा शवियार (मुसहिल की गोलियां हैं जो रावकी सिफतें हैं) की रीति पे

बनारहे तत्पश्चात् नियत समयके बीतनेपर और मलके पकजानेपर देहको साफ करने के लिये गोलियां और मारज जिनका वर्णन फालिजमें होचुका है काम में लावे और पिछले प्रकरणों में कहेहुए उपायों को धीरे २ करनाभी उचित है फिर इसतरह देह की सफाई से निश्चिंत होकर विशेष करके शिरके साफ करने के लिये कुल्ले हुलास, तरेडे, सिकताव और सूंघने की दवाएं काम में लावें और क्योंकि यह तुरंतही गुणदायक होती हैं परन्तु चालीस दिन पर्यंत सूंघने की दवा का प्रयोग न करै ।

कुल्ले अर्थात् गरगरे की रीति ।

दोनामरुआ, सआतर, अकरकरा, राई, फिन्नकीजडकीछाल, सहा अनारदाना और सोंठ इन सब दवाओं को कूटकर औटावे और जंगली प्याज की बनीहुई शिकंजबीन में मिलाकर कुल्ले करै तोभी यही गुण रखता है ॥

नाकमें टपकानें की रीति ।

फुलगकापित्ता, बाजकापित्ता, मुल्हटी तरके पानी में मिलाकर नाक में टपकावें (अथवा) फुलंगकापित्ता स्त्रियों के दूध के साथ यही गुण रखता है और ऐसेही बाशे का पित्ता और भेडिये का पित्ता और शब्बूत (एक किस्म की मछली है जिसे बमछ भी कहते हैं) का पित्ता और दोनामरुआ और चुकन्दर का पानी टपकाना भी अच्छा है और कहते हैं कि जो छ रत्ती सुकर्बीनज, ३५ माशे दोनामरुआ के पानी में घिसकर १॥। माशे जैतून का तेल मिलाकर नाक में डालें तो ९ दिन में लक्वा अच्छा होजाता है ॥

तरेडे और सिकावकी रीति ।

सआतर, तुलसी, अकरकरा, हिरमाना, पर्सेयाउ, राई, नाखूना, नागना और दोनामरुआ आदि औटाकर तरेडे की तरह भी और सिकाव की तरह पर भी काम में लावे ॥ और जिन चीजों का सूंघना लाभदायक है वे ये हैं जैसे जुन्देबेदस्तर, सुकबीनज, जावशीर और गूगल और इन चीजों के सूंघने में यह लाभ है कि ये कफ को मुलायम कर के दिमाग से उतारती हैं और ऐसेही मस्तगी और अलकुल बतम (एक प्रकार का गोंद है) और वचका चबाना लाभदायक है परन्तु निगदार मुख में चबाने से अधिक गुणदायक है और किताब जखीरे ख्वारजम वाला लिखता है कि इस के इलाज में यह रीति उत्तम है कि जब ४ दिन बीत जांय तो ४॥ माशे यारजफैकरा शबियार (मुसहिल की गोलियां हैं जो रावको सिगलते हैं) की गोली पे

गर्म करके सिर, मुख कनपटियों और गर्दन के नीचे मले और एक घंटा आराम करने दे फिर उसी झारी को गर्म करके बीमार का सिर उसकी भाफ पर रक्खे जैसा कह चुके हैं और पसीना पोंछ डाले उक्त तेल मले और फिर एक घंटे छोड़ दे और फिर यही भफारा दे इस तरह एक दिन में इस काम को दस वार करके बंद कर फिर सात दिन में एक दिन इसी तरह करें और जो कोई इस इलाज से एक महीने पीछे अच्छा न होवे तो जानना चाहिये किसी इलाज से अच्छा न होगा और हकीम मुहम्मद जकरिया कहता है कि हमेशा खाने को न दे जिससे देह में गर्मी आवे और रगें खाली होजांय और सिर और मुख झारी की भाफ पर रक्खे जैसा कि वर्णन होचुका है और कूट का तेल, तुलसी का तेल वा बुनका तेल गर्म करके सिर और गर्दन में मल और जो ज्वर आजाय तो कुछ डर नहीं है और हकीम जालीनूस कहता है कि जो काली मिरच बहुत महीन रेत समान पीसकर तेल में मिलाकर लेप करें तो इस विषय में कोई दवा उसके बराबर नहीं है और इस बीमारी के इलाज में अधिक भरोसा कुल्ले और नाक में टपकाने का होता है और जिस जगह नाक में टपकाने की दवाओं से दिमाग में कष्ट पहुंचे तो बनफसा का तेल और ताजा दूध और औरतों का दूध थोड़ी सी खांड मिलाकर नाकमें डालें और सिर के अगली तरफ भी लगावें और इस बीमारी में गुद्दिया को और जावड़े व बदलों को गर्मी पहुंचाना लाभदायक है और गुद्दी पर सींगियां लगाना मल को दिमाग से निकालता है और बीमार को जो पानी की जगह शहद का पानी बनाकर दें तो सब से उत्तम है और लौंग का चबाना भी लाभदायक है और जिन चिह्नों से मालूम होजाता है कि कौनसी ओर में कष्ट है एक यह है कि उस तरफ की ज्ञानशक्ति जाती रहे या कम होजांय और कल्पना उत्तम हो दूसरे यह कि जो बीमारी वाली तरफ को हाथ से सीधा करके स्वाभाविक दशा पर लावें तो दूसरी अपने आप सीधी होजाय और उसकी सूरत अपनी स्वाभाविक दशा पर लौट आवे और जानना चाहिए कि जो लकवा कि बाईं तरफ में उत्पन्न होता है उसका अच्छा होना बहुत कठिन है * ॥

* इस विषय में हकीमों ने विरुद्धता की है कि जो भाग झुकगया है वह ही बीमारी का कारण है या उस तरफ में है जो नहीं झुका है और वे सन्देह अपनी अपनी सम्मति पर प्रमाण देते हैं परन्तु सच यह है कि तशन्जुगी लकवे में जो भाग नहीं झुका है उसमें मल उतर आया है और जो भाग झुकगया हो वह आरोग्य है परन्तु इस्तरखाई अर्थात् ढील होजाने में कभी झुका हुआ भाग आरोग्य होता है और जो नहीं झुका है उसमें मल हुआ करता है और कभी इसके विरुद्ध हुआ करता है इसी तरह इस विवाद के बनाने वाले हो गए हैं—

गर्म करके सिर, मुख कनपटियों और गर्दन के नीचे मले और एक घड़ी आराम करने दे फिर उसी झारी को गर्म करके बीमार का सिर उसकी भाफ पर रक्खें जैसा कह चुके हैं और पसीना पोंछ डालें उक्त तेल मले और फिर एक घंटे छोड़ दे और फिर यही भफारा दे इस तरह एक दिन में इस काम को दस बार करके बंद कर फिर सात दिन में एक दिन इसी तरह करें और जो कोई इस इलाज से एक महीने पीछे अच्छा न हो तो जानना चाहिये किसी इलाज से अच्छा न होगा और हकीम मुहम्मद जकरिया कहता है कि इमरस खाने को न दे जिससे देह में गर्मी आवे और रगें खाली होजांय और सिर और मुख झारी की भाफ पर रक्खे जैसा कि वर्णन होचुका है और कूट का तेल, तुलसी का तेल वा बुनका तेल गर्म करके सिर और गर्दन में मल और जो ज्वर आजाय तो कुछ डर नहीं है और हकीम जालीनूस कहता है कि जो काली मिरच बहुत महीन रज समान पीसकर तेल में मिलाकर लेप करें तो इस विषय में कोई दवा उसके बराबर नहीं है और इस बीमारी के इलाज में अधिक भरोसा कुल्ले और नाक में टपकाने का होता है और जिस जगह नाक में टपकाने की दवाओं से दिमाग में कष्ट पहुंचे तो बनफसा का तेल और ताजा दूध और औरतों का दूध थोड़ी सी खांड मिलाकर नाकमें डालें और सिर के अगली तरफ भी लगावें और इस बीमारी में गुद्दिया को और जावड़े व गहलों को गर्मी पहुचाना लाभदायक है और गुद्दी पर सींगियां लगाना मल को दिमाग से निकालता है और बीमार को जो पानी की जगह शहद का पानी बनाकर दें तो सब से उत्तम है और लौंग का चबाना भी लाभदायक है और जिन चिह्नों से मालूम होजाता है कि कौनसी ओर में कष्ट है एक यह है कि उस तरफ की ज्ञानशक्ति जाती रहे या कम होजाय और फड़कना उत्पन्न हो दूसरे यह कि जो बीमारी वाली तरफ को हाथ से सीधा करके स्वाभाविक दशा पर लावें तो दूसरी अपने आप टेढ़ी सीधी होजाय और उसकी सूरत अपनी स्वाभाविक दशा पर लौट आवे और जानना चाहिए कि जो लकवा कि बाईं तरफ में उत्पन्न होता है उसका अच्छा होना बहुत कठिन है * ॥

---

* इस विषय में हकीमों ने विरुद्धता की है कि जो भाग झुकगया है उस में बीमारी का कारण है या उस तरफ में है जो नहीं झुका है और वे सन्देह अपनी अपनी सम्मति पर प्रमाण देते हैं परन्तु सच यह है कि लकवा की दशा में जो भाग नहीं झुका है उसमें मल उतर आया है और जो भाग झुकगया है वह आरोग्य है परन्तु इस्तरखाई अर्थात् ढील होजाने में कभी झुका हुआ भाग आरोग्य होता है और जो नहीं झुका है उसमें मल हुआ करता है और कभी इसके विरुद्ध हुआ करता है इसी तरह इस किताब के बनाने वाले ने कहा है-

गर्म करके सिर, मुख कनपटियों और गर्दन के नीचे
करने दे फिर उसी झारी को गर्म करके बीमार का
रक्खें जैसा कह चुके हैं और पसीना पोंछ डालें
घंटे छोड़ दे और फिर यही भफारा दे इस तरह एक
बार करके बंद कर फिर सात दिन में एक दिन
इस इलाज से एक महीने पीछे अच्छा न हो तो जा
से अच्छा न होगा और हकीम मुहम्मद जकरिया
नदे जिससे देह में गर्मी आवे और रगें खाली होजा
की भाफ पर रक्खे जैसा कि वर्णन होचुका है और
तेल या बुनफा तेल गर्म करके सिर और गर्दन में
तो कुछ डर नहीं है और हकीम जालीनूस कहता है
महीन रेत समान पीसकर तेल में मिलाकर लेप करें
उसके बराबर नहीं है और इस बीमारी के इलाज
और नाक में टपकाने का होता है और जिस जग
दवाओं से दिमाग में कए पहुंचे तो बनफ्शा का तेल
औरतों का दूध थोड़ी सी खांड मिलाकर नाकमें डाल
भी लगावें और इस बीमारी में गुद्दियों को और
पहुंचाना लाभदायक है और गुद्दी पर सींगियां
निकालता है और बीमार को जो पानी की जगह
तो सब से उत्तम है और लौंग का [illegible] भी लाभ
स मालूम होजाता है कि कौनसी ओर में कष्ट है
की ज्ञानशक्ति खाली रहे या कम होजाय और
कि जो बीमारी वाली तरफ को हाथ से सीधा करके
तो दूसरी अपने आप सीधी होजाय और उसकी
दशा पर लौट आवे और जानना चाहिये कि जो
उत्पन्न होता है उसका अच्छा होना बहुत कठिन है •

---

* इस विषय में हकीमों में विरुद्धता की है कि जो
बीमारी का कारण है या उस तरफ में है जो यहां
अपनी अपनी सम्मति पर प्रमाण देते हैं परन्तु सब
में जो भाग नहीं झुका है उसमें मल उतर आया है
वह आरोग्य है परन्तु इस्तरखाई अर्थात् ढील होजाने में
आरोग्य होना है और जो यहां झुका है उसमें मल हुआ
इसर रिक्त हुआ करता है इसी तरह इस विचार में

चलने फिरते हैं अर्थात् हाथ पांव और सिरमें हुआ करती है और फड़-कानेकी शक्तिकी यह प्रकृति है कि जल्द और बार २ हुआ करती है और जल्द ठहर जाती है परन्तु जो कारण बलवान् होतो सम्भव है कि ठहर जाय और फिर फड़कने लगे या बहुत देरतक फड़कता रहे और न ठहरे और जिस तरह हो फड़कने वाले अंगकी संचालन शक्ति किसी भागके साथ मुख्य नहीं है हरतरफ फिरती है और उसका झुकाव ऊपरकी तरफ हुआ करता है परन्तु यह बात कंपकंपी के विरुद्ध है क्योंकि उसमें अंग सदा नीचे की तरफ हुआ होता है और शीघ्रता वा रुकावट इसमें कुछ नहीं कर सकते और इस बीमारी का कारण गाढी बादी है जो गाढे दोषों के भाफके परमाणुओं से उत्पन्न होती है और इस कारण से कि बादी गाढी और संगीन है रोमाचों की राहसे नहीं निकल सकती और जो सांस उसके ऊपरहै वह उसके निकलने को रोकता है विशेष करके जो देहके ऊपर सर्दी की अधिकता हो और सामर्थ्य इसके दूर करनेवाली शक्ति उसको दूर करती है इसलिये दोनों में घबराहट उत्पन्न होती है उसी घबराहट से अंग फड़क जाता है जबतक फड़कने की गर्मीसे रीह गाढी नर्म और नष्ट न होजाय उस समय तक फड़कन रहती है और उसके रीहसे उत्पन्न होनेका यह कारण है कि जल्द नष्ट होजाती है और रीहके गाढे होने की यह दलील है कि ठंढी प्रकृतियों में और ठंढे समयों में और ठंढे देह में और सर्दी के कारणों से जैसे ठंढा पानी पीने और उस में न्हाने से अंग बहुधा फड़क उठताहै। और जानना चाहिये कि जो अंग बहुत गर्म है जैसे दिमाग और जो बहुत कड़ा है जैसे कठोर हड्डी इनमें फड़कना उत्पन्न नहीं होता क्योंकि हवा ऐसे अंगमें इस तरह पर नहीं पहुंच सकती कि उस में ठहरे और घूमती फिरे और फड़कना उत्पन्न करे और बहुधा काम क्रोध और शोकादि से भी अंग फड़क उठताहै इस कारणसे कि रूह चलती फिरती है और उसके हिलने चलने से जल्दी नष्ट होजाने हवा गाढी और नर्म उत्पन्न होती है हवा गाढी अर्थात् रीह यह है कि देहकी खाली जगहोंमें रहजाय और गाढी और अक्सर ऐसी होजाय जैसे हवा किसी जगह में बंद होकर हिलने लगे अब जानना चाहिये कि प्रत्यक समय और सदा का फड़कना जो मुख और नहर के भीतर होतो लकवे के उत्पन्न होनेका कारण है और जो सब शरीर फड़के तो हलके के उत्पन्न होने का कारण है या अमराजुद आमान् सि-बात या तशन्नुज अर्थात् ऐंठन का और जो पेट के पड़दे फड़कें तो भारी

चलने फिरते हैं अर्थात् हाथ पांव और सिरमें हुआ करती है और फड़-कनेकी शक्तिकी यह प्रकृति है कि जल्द और बार २ हुआ करती है और जल्द ठहर जाती है परन्तु जो कारण बलवान् होतो सम्भव है कि ठहर जाय और फिर फड़कने लगे या बहुत देरतक फड़कता रहे और न ठहरे और जिस तरह हो फड़कने वाले अंगकी संचालन शक्ति किसी भागके साथ मुख्य नहीं है हरतरफ फिरती है और उसका झुकाव ऊपरकी तरफ हुआ करता है परन्तु यह बात कपकपी के विरुद्ध है क्योंकि उसमें अंग सदा नीचे की तरफ हुआ होता है और शीघ्रता वा रुकावट इसमें कुछ नहीं कर सकते और इस बीमारी का कारण गाढ़ी बादी है जो गाढ़े दोषों के भाफके परमाणुओं से उत्पन्न होती है और इस कारण से कि बादी गाढ़ी और संगीन है रोमाचों की राह से नहीं निकल सकती और जो मांस उसके ऊपरहै वह उसके निकलने को रोकता है विशेष करके जो देहके ऊपर सर्दी की अधिकता हो और स्वाभाविक इसके दूर करनेवाली शक्ति उसको दूर करती है इसलिये दोनों में घबराहट उत्पन्न होती है उसी घबराहट से अंग फड़क जाता है जबतक फड़कने की गर्मीसे रीह गाढ़ी नर्म और नष्ट न होजाय उस समय तक फड़कन रहती है और उसके रीहसे उत्पन्न होनेका यह कारण है कि जल्द नष्ट होजाती है और रीहके गाढ़े होने की यह दलील है कि ठंढी प्रकृतियों में और ठंढे समयों में और ठंढे देश में और सर्दी के कारणों से जैसे ठंढा पानी पीने और उस में न्हाने से अंग बहुधा फड़क उठताहै । और जानना चाहिये कि जो अंग बहुत गर्म हैं जैसे दिमाग और जो बहुत कड़ा है जैसे कठोर हड्डी इनमें फड़कना उत्पन्न नहीं होता क्योंकि हवा ऐसे अंगमें इस तरह पर नहीं बन्द हो सकती कि उस में ठहरे मार और घूमती फिरे और फड़कना उत्पन्न करे और बहुधा काम क्रोध और शोकादि से भी अंग फड़क उठताहै इस कारण कि रूह चलती फिरती है और उसके हिलने चलने से दलके नष्ट होनेसे हवा गाढ़ी और नम उत्पन्न होती है हवा गाढ़ी अर्थात् रीह यह है कि देहकी खाली जगहों में रहजाय और गाढ़ी और जगकर ऐसी होजाय जैसे हवा किसी जगह में बंद होकर हिलने लगे अब जानना चाहिये कि मस्तक सब और सदा का फड़कना और मुख और न्हर के भीतर रोगों लकवे के उत्पन्न होनेका कारण है और जो सब शरीर फड़के तो मृत्यु के उत्पन्न होने का कारण है या ममदूद अर्थात् सिरसाम या तशन्नुज अर्थात् ऐंठन का और जो पेट के बड़ले फड़के तो मार्गी

य फिर उसकी देहमें सुस्ती मालूम हो (इलाज) मन और पित्त वाले मनको जनर निकालें और गर्म प्रकृतिवाले को बहुधा ठंढा पानी इस दशा में आराम देता है इसलिये कि ठंढापानी दोषों के उबाल को बुझाता है और धसा धनियां मिश्कर खाडके साथ पीसकर देने से भी ऐसा ही गुण करता है और जिस जगह कि हवा और भाफ के परमाणुओं का मल बहुत हो और प्रकृति में गर्मी हो तो बचका मुरब्बा और बेमुरब्बे की भी खाना लाभदायक है यह गर्मी का नष्ट करती है और नाद लानेवाली दोनों रगों को खूब दृढता से पकड़ना और दबाना इस तरह पर उत्तम है कि गहरी नींद और बहोशी लाने से यह रोग जाता रहता है क्योंकि यह रगें रूहके जानेका रास्ताहै जिस समय जिन को पकडलें तो रूह इकट्ठी हो जाती है और जब खोलदें तो रूह एक साथ हमला करके गिजाह और भाफ के परमाणु को जो दिमाग में आगये है नष्टकर डालती है और इन रगों के पकडने की रीति नाई जानते है परन्तु यह काम भयानक हैं क्योंकि हकीमों ने कहा है कि जो पकडे तो रगपर हाथ बहुत देरतक न रक्खे और आदमी जितना सांस रोकने की शक्ति रखता हो उससे जल्द छोडदे तो बहुत बडा भय है ।

छब्बीसवां प्रकरण जुकाम और नजले का वर्णन

जानना चाहिये कि जो मल दिमाग के दोनों अगले पर्दों से नाक की तरफ उतरता है उसका नाम बहुत से हकीमों के मतमें जुकामहै और जो गले की तरफ गिरता है उसका नाम नजला है और कोई हकीमों ने नजले को उस मल के साथ मुख्य किया है जो सीने और फेफडे की तरफ गिरता है और कोईर उसमल को जो नाक की तरफ उतरता है और पतला होता है और नाक का रास्ता बंद करता है उसको जुकाम कहते है और शेष सबको नजला कहते हैं परन्तु रोगके उत्पन्न होने का कारण एकही है गिरने की जगह यद्यपि अलगर हो इसलिये दोनों का आपस में साधारण भेद है । इसरोग का दिमागके साथ ऐसा सम्बन्ध है जैसा दस्तों में आमाशय के साथ सम्बन्ध है क्योंकि दस्तों में आमाशय की निर्बलताके कारण से भोजन अच्छा नहीं पचता इसलिये आमाशय में गुफलें अर्थात् निकम्मे फोक इकट्ठे होजाते हैं फिर आमाशय की दूर करनेवाली शक्ति उसको दूर करती है और कच्चा भोजन दस्तों में निकलता है इसी तरह जिस समय कि बहुत बुखार (यह बुखार जो मलों के साथ न मिलें हों अर्थात् कामी और अधिक हो) दिमाग की तरफ आती है और दिमाग

य फिर उसकी देहमें सुस्ती मालूम हो (इलाज) खून और पित्त वाले मनको जुलाब निकालें और गर्म प्रकृतिवाले को बहुधा ठंढा पानी इस दशा में आराम देता है इसलिये कि ठंढापानी दोषों के उबाल को बुझाता है और सूखा धनियां मक्कर साहके साथ पीसकर देने से भी ऐसा ही गुण करता है और जिस जगह कि हवा और भाफ के परमाणुओं का मल बहुत हो और प्रकृति में गर्मी हो तो बचका मुरब्बा और बेमुरब्बे की भी खाना लाभदायक है यह गर्मी को नष्ट करती है और नाद लानेवाली दोनों रगों को खूब दृढ़ता से पकड़ना और दबाना इस तरह पर उत्तम है कि गहरी नींद और बेहोशी लावे तो यह रोग जाता रहता है क्योंकि यह रगें रूहके जानेका रास्ताहै जिस समय कि इन को पकड़लें तो रूह इकट्ठी हो जाती है और जब खोलदें तो रूह एक साथ हमला करके भिआद और भाफ के परमाणु को जो दिमाग में आगये हैं नष्टकर डालती है और इन रगों के पकड़ने की रीति नाई जानते है परन्तु यह काम भयानक है क्योंकि हकीमों ने कहा है कि जो पकड़े तो रगके ऊपर हाथ बहुत देरतक न रक्खे और आदमी जितना सांस रोकने की शक्ति रखता हो उससे जल्द छोड़दे तो बहुत बड़ा भय है ।

छब्बीसवां प्रकरण जुकाम और नजले का वर्णन

जानना चाहिये कि जो मल दिमाग के दोनों अगले पर्दों से नाक की तरफ उतरता है उसका नाम बहुत से हकीमों के मतमें जुकामहै और जो गले की तरफ गिरता है उसका नाम नजला है और कोई हकीमों ने नजले को उस मल के साथ मुख्य किया है जो सीने और फेफड़े की तरफ गिरता है और कोई२ उसमल को जो नाक की तरफ उतरता है और पतला होता है और नाक का रास्ता बंद करता है उसको जुकाम कहते है और शेष सबको नजला कहते हैं परन्तु रोगके उत्पन्न होने का कारण एकही है गिरने की जगह यद्यपि अलग२ हो इसलिये दोनों का आपस में साधारण धर्म है । इसरोग का दिमागके साथ ऐसा सम्बन्ध है जैसा दस्तों में आमाशय के साथ सम्बन्ध है क्योंकि दस्तों में आमाशय की निर्बलताके कारण से भोजन अच्छा नहीं पचता इसलिये आमाशय से स्वतः अर्थात् निकम्मे फोक इकट्ठे होजाते हैं फिर आमाशय की दूर करनेवाली शक्ति उसको दूर करती है और कच्चा भोजन दस्तों में निकलता है इसी तरह जिस समय कि स्थूल बहार (?) रूह स्थूल जो सर्दी के साथ न मिली हो अर्थात् भारी और अधिक हो) दिमाग की तरफ जाती है और दिमाग

पकाना इस प्रकार पर है कि उसका मिजाज मुअतदिल होजाय अर्थात् जो गर्म और पतला हो तो गाढ़ा होजाय यहां तक कि ठीक बराबर होजाय और जो ठंढा और गाढ़ा हो तो पतला होकर बराबर होजाय जैसे गर्म और पतले-जुकाम में जौके घाट में उन्नाब लिसौढ़ा, बनफशा और खशखाश के बीज जोश कर दें और शर्बत खशखाश अधिक लाभदायक है और पहले दिन से तीन दिन तक यव जौ के दलिये के सिवाय कोई खाने और पीने की चीज न दे और जबतक जुकाम न जाय मांस न खाना चाहिये और ऊगरा जो मूंग की दाल और पालक से बना है और हरीरा जो गेंहू की भुसी के पानी बाकला के आटे नशास्ता कतीरा बादाम का तेल और चीनी से बना है केवल यही खाय (अथवा) ककड़ी खीरा के बीज की मिंगी, बादाम की मिंगी, बादाम का तेल और मक्खन विशेष करके गौ का, गर्म जुकाम में उचित है, और जो मल गर्म और तेज होतो जल्द फस्द खोलना चाहिये और जो मादे की ऐसी अधिकता और गर्मी की अधिकता न होतो तीन दिन के पीछे फस्द खोलें जिसमे इस समय तक मल पक भी जाय और जुकाम चाहे गर्म हो चाहे सर्द पीठ के बल न सोवें जिससे मल छाती पर न गिरे और सब से उत्तम (उपाय) यह है कि सिरहाना नीचा रक्खें और तकिये पर मुंह झुकाकर सोवें जिससे मल नाक की तरफ झुक आवे और छाती पर न गिरे और जुकाम के आरम्भ में छींक हानि पहुंचाती है यद्यपि छींक आने लगे तो बन्द करना चाहिये । यह सब छींक के प्रकरण में कहा जायगा और जुकाम यद्यपि गर्म हो सिर को ढके रक्खें और ठंढी तथा उत्तर की हवा से बचना चाहिये और यद्यपि बहुत प्यास हो तो भी बर्फ और सुराही का रक्खा हुआ ठंढा पानी न पीना चाहिये कम सोवे तथा दिन में कदापि न सोवें और भोजन के पीछे खाना सर्वथा वर्जित है और न्हाना जुकाम के आरम्भ में हानिकारक है परन्तु जहां कहीं मल पतला और थोड़ा होय तो लाभदायक है क्योंकि जो मादा पकाहै वह निकल जायगा और बाकी गाढ़ा रहजायगा और कठिनता से निकलेगा परन्तु जुकाम के अन्त में अधिक लाभदायक है क्योंकि पके हुए मल का गाढ़ा पिघलाकर निकाल देता है और जिस मनुष्य का जुकाम अधिक होता हो उसको आरोग्यता की दशा में न्हाना और पसीना लाना लाभदायक है क्योंकि वह रतूबतें और भाफ के परमाणु कि जिनसे जुकाम और नजला प्रारम्भ होता है पसीने में निकल जायगे और इसी कारण से स्वभाव की दशा

और इसका वही चिन्ह है जो पहले प्रकार में वर्णन किया गया है और नाड़ी गहरी हो तथा जल्दी जल्दी चलती है और पेशाब भी पीला होजाता है (इलाज) जैसे पहले प्रकार में मल के साफ करने और प्रकृति के बदलने का वर्णन किया गया है यहां भी उसी तरह करना चाहिये—तीसरा कारण यह है कि बाहर से सिर को सर्दी पहुंचे जैसे बहुत काल तक ठंडे पानी में सिर नंगा रक्खे या परिश्रम और स्नान करने के पीछे या ऐसे काम के पीछे जिस से देह में गर्मी आ गई हो और रोमांच खुल गये हों सिर को नंगा करे या न्हाने के स्थान मे सिर खुले हुए ठंडी हवा में बाहर निकल आवे और इन कारणों से रोमांच बंद होजाय और यह बात स्पष्ट है कि जिस समय सिर की खाल कड़ी होजाय और रोमांच बंद होजाय तो जो भाफ के परिमाणु निकलते होजाते थे वो रास्ते के न मिलने और न पचने से इकट्ठे होजांय और रतूबत बन कर गले की तरफ या नासिका की तरफ गिरने लगें। जैसे भबके में भाफ के परमाणु चढ़कर भबके के ढकने की तरफ रतूबत बन कर गिरते हैं। और सर्द दुष्ट प्रकृति के कारण दिमाग ठंडा होजाता है और उस में निर्बलता आ जाती है तो अपने मामूली खाने को भी नहीं पचा सकता है इस कारण से इस के दूर करने वाली शक्ति उस विशेष बने हुए भोजन को कोष के द्वारा निकालती है और उसका चिन्ह यह है कि कारण पहले हो चुके हों और ठंडा जुकाम बाहरी वा भीतरी कारणों से उत्पन्न होता है उस में आंख और मुख अपनी रंगत पर रहते हैं परन्तु भारीपन सारों में अधिक होता है और जो रतूबत नाक में या गले में उतर आती है वह पक्की, सफेद या नीले रंग की होती है और जो उभर आ जाय तो इस प्रकार जुकाम के चिन्ह से बीमार जल्द छूट जायगा और रंगत का बदलना और बास मालूम होना सारा या दोष युक्त मल के अनुसार कम या अधिक होगा जैसे पहले वर्णन किया गया है। (इलाज) इस रोग में ताजा गर्म कपड़े और गर्म कपड़े से सिर ढांपे और हम्माम में जाय जिस से रोमांच खुल जांय और कोष भी पक जाय और इन चीजों से रोमांचों को खोलती है और मल को पकाती है गर्म होना चाहे और दिमागी रतूबत के घटाने के लिये वे चीज जो दिमाग को गर्म करती है और गांठ को खोलती है जैसे ग्वारन, अगर, इन चीजों को सिरके में भिगो कर आग पर जलावे और उस का धुआं नाक में सूंघे चौथा यह कि मुख्य दिमाग की ठंडी प्रकृति इस रोग का कारण हो उसमें किसी प्रकार का

और इसका वही चिन्ह है जो पहले प्रकार में वर्णन किया गया है और नाड़ी गहरी हो तथा जल्दी जल्दी चलती है और पेशाब भी पीला होजाता है (इलाज) जैसे पहले प्रकार में मल के साफ करने और प्रकृति के बदलने का वर्णन किया गया है यहां भी उसी तरह करना चाहिये—तीसरा कारण यह है कि बाहर से सिर को सर्दी पहुंचे जैसे बहुत काल तक ठंडे पानी में सिर नंगा रक्खे या परिश्रम और स्नान करने के पीछे या ऐसे काम के पीछे जिस से देह में गर्मी आ गई हो और रोमांच खुल गये हों सिर को नंगा करे या न्हाने के स्थान से सिर खुले हुए ठंडी हवा में बाहर निकल आवे और इन कारणों से रोमांच बंद होजाय और यह बात स्पष्ट है कि जिस समय सिर की खाल कड़ी होजाय और रोमांच बंद होजाय तो जो भाफ के परिमाणु निकलते होजाते थे वो रास्ते के न मिलने और न पचने से इकट्ठे होजांय और रतूबत बन कर गले की तरफ या नासिका की तरफ गिरने लगें। जैसे भबके में भाफ के परमाणु चढ़कर भबके के ढकने की तरफ रतूबत बन कर गिरते हैं। और सर्द दुष्ट प्रकृति के कारण दिमाग ठंडा हो जाता है और उस में निर्बलता आ जाती है तो अपने मामूली खाने को भी नहीं पचा सकता है इस कारण से इस के दूर करने वाली शक्ति उस विशेष बने हुए भोजन को कोप के द्वारा निकालती है और उसका चिन्ह यह है कि कारण पहले हो चुके हों और ठंडा जुकाम बाहरी वा भीतरी कारणों से उत्पन्न होता है उस में आंख और मुख अपनी रंगत पर रहते हैं परन्तु भारा पन शरीर में अधिक होता है और जो रतूबत नाक में या गले में उतर आती है वह पत्ली, सफेद या नीले रंग की होती है और जो ज्वर आ जाय तो इस प्रकार जुकाम के पक्ने से बुखार जल्द घट जायगा और रंगत का बदलना और भारा मालूम होना भारा या दोष युक्त मल के अनुसार कम या अधिक होता जैसे पहले वर्णन किया गया है। (इलाज) इस रोग में ताजा गर्म करें और गर्म कपड़े से सिर को ढके और हम्माम में जाय जिस से रोमांच खुल जांय और कोप भी पक जाय और इन चीजों से रोमांचों को खोलती है और मल को पकाती है गर्म होना चाहे और दिमागी रतूबत के पकाने के लिये वे चीज जो दिमाग को गर्म करती है और गाढ़ को खोलती है जैसे लोबान, अगर, ऊद सब्जों या सिरके में भिगो कर आग पर जलावें और उस का धुआं नाक में सूंघे कोपा यह कि मुख्य दिमाग की ठंडी प्रकृति इस रोग का कारण हो उसमें किसी प्रकार का

और इसका वही चिन्ह है जो पहले प्रकार में वर्णन किया गया है और नाड़ी गहरी हो तथा जल्दी जल्दी चलती है और पेशाब भी पीला होजाता है (इलाज) जैसे पहले प्रकार में मल के साफ करने और प्रकृति के बदलने का वर्णन किया गया है यहां भी उसी तरह करना चाहिये—तीसरा कारण यह है कि बाहर से सिर को सर्दी पहुंचे जैसे बहुत काल तक ठंडे पानी में सिर नंगा रक्खे या परिश्रम और स्नान करने के पीछे या ऐसे काम के पीछे जिस से देह में गर्मी आ गई हो और रोमांच खुल गये हों सिर को नंगा करे या न्हाने के स्थान से सिर खुले हुए ठंडी हवा में बाहर निकल आवे और इन कारणों से रोमांच बंद होजाय और यह बात स्पष्ट है कि जिस समय सिर की खाल कड़ी होजाय और रोमांच बंद होजाय तो जो भाफ के परिमाणु कि नष्ट होजाते थे वो रास्ते के न मिलने और न पचने से इकट्ठे होजांय और रतूवत बन कर गले की तरफ या नासिका की तरफ गिरने लगें। जैसे भवके से भाफ के परमाणु चढ़कर भवके के ढकने की तरफ रतूवत बन कर गिरते हैं। और सर्द दुष्ट प्रकृति के कारण दिमाग ठंडा होजाता है और उस में निर्बलता आ जाती है तो अपने मामूली खाने को भी नहीं पचा सकता है इस कारण से इस के दूर करने वाली शक्ति उस विशेष बच हुए भोजन को फोक के द्वारा निकालती है और उसका चिन्ह यह है उक्त कारण पहले हो चुके हो और ठंडा जुकाम बाहरी वा भीतरी कारणों से उत्पन्न होता है उस में आंख और मुख अपनी रंगत पर रहते है परन्तु भारी पन दोनों में अधिक होता है और जो रतूवत नाक में या गले में उतर आती है वह कड़ी, सफेद या नीले रंग की होती है और जो ज्वर आ जाय तो इस प्रकार जुकाम के कष्ट से बीमार जल्द छूट जायगा और रंगत का बदलना शोर बोझ मालूम होना सादा वा दोष युक्त मल के अनुसार कम वा अधिक होगा जैसे बहुधा वर्णन किया गया है। (इलाज) इस रोग में बाजरा गर्म करके और गर्म कपड़े से सिक्ताव करे और हम्माम में जाय जिस से रोमांच खुल जांय और फोक भी पकजांय और इन चीजों से रोमांचों को खोलती है और मल को पकाती है सर्द होना चाहे और दिमागी रतूवत के बहाने के लिये वे चीजें जो दिमाग को गर्म करती है और गांठ को खोलती है जैसे लावन, अगर, कूट कलोंजी सिरके में भिगो कर आग पर जलावें और उस का धुआं नाक में खींचे चौथा यह कि मुख्य दिमाग की ठंडी प्रकृति इस रोग का कारण हो उसमें किसी प्रकार का

और इसका वही चिन्ह है जो पहले प्रकार में वर्णन किया गया है और नाड़ी गहरी हो तथा जल्दी जल्दी चलती है और पेशाब भी पीला होजाता है (इलाज) जैसे पहले प्रकार में मल के साफ करने और प्रकृति के बदलने का वर्णन किया गया है यहां भी उसी तरह करना चाहिये—तीसरा कारण यह है कि बाहर से सिर को सर्दी पहुंचे जैसे बहुत काल तक ठंडे पानी में सिर नंगा रक्खे या परिश्रम और स्नान करने के पीछे या ऐसे काम के पीछे जिस से देह में गर्मी आ गई हो और रोमांच खुल गये हों सिर को नंगा करे या न्हाने के स्थान से सिर खुले हुए ठंडी हवा में बाहर निकल आवै और इन कारणों से रोमांच बंद होजाय और यह बात स्पष्ट है कि जिस समय सि की खाल कड़ी होजाय और रोमांच बंद होजाय तो जो भाफ के परिमाणु कि होजाते थे वो रास्ते के न मिलने और न पचने से इकट्ठे होजांय और रतूब बन कर गले की तरफ या नासिका की तरफ गिरने लगें। जैसे भबके से भा के परमाणु चढ़कर भबके के ढकने की तरफ रतूबत बन कर गिरते हैं। औ सर्द दुष्ट प्रकृति के कारण दिमाग ठंडा होजाता है और उस में निर्बलत आ जाती है तो अपने मामूली खाने को भी नहीं पचा सकता है इस कारण से इस के दूर करने वाली शक्ति उस विशेष बच हुए भोजन को फांक के द्वारा निकालती है और उसका चिन्ह यह है उक्त कारण पहले हो चुके हों और ठंडा जुकाम बाहरी वा भीतरी कारणों से उत्पन्न होता है उस में आंख और मुख अपनी रंगत पर रहते हैं परन्तु भारी पन दोनों में अधिक होता है और जो रतूबत नाक में या गले में उतर आती है वह कड़ी, सफेद वा नीले रंग की होती है और जो उतर आ जाय तो इस प्रकार जुकाम के कष्ट से बीमार जल्द छूट जायगा और रंगत का बदलना और बोझ मालूम होना सादा वा दोष युक्त मल के अनुसार कम वा अधिक होगा जैसे बहुधा वर्णन किया गया है। (इलाज) इस रोग में बाजरा गर्म करके और गर्म कपड़े से सिकताव करे और हम्माम में जाय जिस से रोमांच खुल जांय और फोक भी पकजाय और इन चीजों से रोमांचों को खोलती है और मल को पकाती है सर्द होना चाहे और दिमागी रतूबत के बहाने के लिये वे चीजें जो दिमाग को गर्म करती हैं और गांठ को खोलती है जैसे लावन, अगर, कूट कलोंजी सिरके में भिगो कर आग पर जलावें और उस का धुआं नाक में सींचे चौथा यह कि मुख्य दिमाग की ठंडी प्रकृति इस रोग का कारण हो उसमें किसी प्रकार का

को खोल देवें दिमाग में बल पहुचावे और भाफ के परमाणु को दूर करें और इस के सिवाय दिमाग में बहुत गर्मी न करे और वह यह है कि मिसरी, कागज, सूखा धनियां, तिल और अम्बर की धूनी लेवै और जानना चाहिये कि इस रोग में जो का घाट सब पथ्यों से अधिक श्रेष्ट है और जो कुछ पहले प्रकार में वर्णन किया गया है सब लाभदायक है ॥

दूसरा भेद खूनी जुकाम का वर्णन ।

इसमें आंखों में लाली, सिरमें भारापन, सज्ञानाश, गहरीनींदका न आना और काग, मसूडों, कानों और मुहसे खुजली होना और मुखमें मीठापन तथा दुर्गन्धि और नाकसे गुलाबी रंगका मल निकलना ये लक्षण होते हैं (इलाज) सरेरू की फसद खोलकर उचित चीजों से तबीयतको मुलायम करै और जौ का पानी पीवें और जिस समय मादे का गाढा करना उचित हो तो उन्नाव का शर्बत और खशखाश का शर्बत देसकतेहैं और जिस समय गाढा करनेवाली चीजों के काम में लानेसे या बिना उनके काम में लाने के किसी और कारणसे मल बहने से ठहरजाय यद्यपि बहनेकी आवश्यकता अभी बाकी हो ऐसी दशा में उनचीजों की जिनका पित्त में वर्णन कियाहै धूनी देना चाहिये । और क्योंकि खूनका मादा पित्त की अपेक्षा बहुत गाढा होता है इससे उस गांठ के खोलने के लिये बालछड़ चदरस और अगर धूनी में बढाना चाहिये तथा बाबूना, नाखूना और दोनों मरुआ के काढसे भफारा करना मादे को पकाता है और गांठ को खोलता है ।

तीसराभेद कफ और जुकाम का वर्णन ।

यह सब प्रकारोंसे अच्छा है क्योंकि इस दोष की प्रकृति दिमाग की प्रकृति के अनुसार है और जो रोग कष्ट वाले अंग की प्रकृति के अनुसार होताहै उसका भय कम होता है क्योंकि-उससे हेतुके निर्बल होनेकी प्रतीति है और उसका (चिन्ह) यह है कि सिर में भारापन, सज्ञानाश,मुखमें रतूबत का होना, मुखका स्वाद बिगडना, और खाने तथा सोने के समय जीभका काटना आदि। इसप्रकार के जुकाममें बात करनेमें बहुत अन्तर पडजाताहै क्योंकि आरोग्यता की दशामें नाकके मलरहित होनेपर नाककी जडसे आवाज में सफाई और उम्दगी होती है और जिस समय उसमें गाढा चेपदार कफ बंद होजाता है तो सफाई से बातें करना कठिन होता है (इलाज) तबियत के नर्म करने के लिये जूफा, मुलहटी और अजीर पानी में औटाकर और गुरजबीन

को खोल देवें दिमाग में बल पहुचावे और भाफ के परमाणु को दूर करें और इस के सिवाय दिमाग में बहुत गर्मी न करे और वह यह है कि मिसरी, कागज, सूखा धनियां, तिल और अम्बर की धूनी लेवै और जानना चाहिये कि इस रोग में जौ का घाट सब पथ्यों से अधिक श्रेष्ट है और जो कुछ पहले प्रकार में वर्णन किया गया है सब लाभदायक है ॥

दूसरा भेद खूनी जुकाम का वर्णन ।

इसमें आंखों में लाली, सिरमें भारापन, सन्नानाश, गहरीनींदका न आना और काग, मसूढों, कानों और मुहसे खुजली होना और मुखमें मीठापन तथा दुर्गन्धि और नाकसे गुलाबी रगका मल निकलना ये लक्षण होते हैं (इलाज) सरेरू की फसद खोलकर उचित चीजों से तबीयतको मुलायम करै और जौ का पानी पीवें और जिस समय मादे का गाढा करना उचित हो तो उन्नाब का शर्बत और खशखाश का शर्बत देसकतेहैं और जिस समय गाढा करनेवाली चीजों के काम में लानेसे या विना उनके काम में लाने के किसी और कारणसे मल बहने से ठहरजाय यद्यपि बहनेकी आवश्यकता अभी बाकी हो ऐसी दशा में उनचीजों की जिनका पित्त में वर्णन कियाहै धूनी देना चाहिये । और क्योंकि खूनका मादा पित्त की अपेक्षा बहुत गाढा होता है इससे उस गांठ के खोलने के लिये बालछड़ चदरस और अगर धूनी में बढाना चाहिये तथा बाबूना, नाखूना और दोनों मरुआ के काढ़से भफारा करना मादे को पकाता है और गांठ को खोलता है ।

तीसराभेद कफ और जुकाम का वर्णन ।

यह सब प्रकारोंसे अच्छा है क्योंकि इस दोष की प्रकृति दिमाग की प्रकृति के अनुसार है और जो रोग कष्ट वाले अग की प्रकृति के अनुसार होताहै उसका भय कम होता है क्योंकि-उससे हेतुके निर्वल होनेकी प्रतीति है और उसका (चिन्ह) यह है कि सिर में भारापन, सन्नानाश,मुखमें रतूबत का होना, मुखका स्वाद बिगड़ना, और खाने तथा सोने के समय जीभका फाटना आदि । इसप्रकार के जुकाममें बात करनेमें बहुत अन्तर पड़जाताहै क्योंकि आरोग्यता की दशामें नाकके मलरहित होनेपर नाककी जड़से आवाज में सफाई और उम्दगी होती है और जिस समय उसमें गाढा चेपदार कफ बंद होजाता है तो सफाई से बातें करना कठिन होता है (इलाज) तबियत के नर्म करने के लिये जूफा, मुलहटी और अजीर पानी में औटाकर और तुरंजबीन

जौके पानी काढ़ और पालक में राध कर देना भी लाभदायक है और जो इतने इलाज से प्रयोजन सिद्ध न हो तो हरड इमली और अफसतीन के काढे या पित्त पापडा के पानी में खाड डालकर प्रकृति को नर्म करै और जो चीज मल को पेशाब के द्वारा या पसीने आदि के द्वारा निकालें और वह बलवान हो तो दे- सक्ते हैं जिससे दोष पेशाब या पसीने आदि के द्वारा निकल जाय और जो फसद खोलने की आवश्यकता हो और बीमार की दशा तथा हकीम की परीक्षा नुसार फसद खोलनी चाहिये और मल के निकलने के पीछे फिर प्रकृति के ठंढा करने और आरोग्य करन के लिये लेप तरेडे और ठंडे तेलों का प्रयोग करै ॥

दूसरा अध्याय ।

आंख के रोगों का वर्णन ।

आंख उपाग है इसमें पह जिगरकी रक्तवाहिनी रगें और दिल की रूह- वालीरगें फैली हुई हैं तथा इसमें ७ पर्दे और ३ रतूबतें है । अतएव प्रत्येक दशा का विस्तारपूर्वक वर्णन क्रमानुसर अलग २ प्रकरणों में कियाजाता है (लाभ) आंख की मुख्य और स्वाभाविक प्रकृति गर्मतर है और यदि ऐसा नहो तो उसकी कोई प्रकृति स्वाभाविक और मुख्य नहीं है किन्तु दूसरे के सयोग से होने वाली है और आंखकी प्रकृति की गर्मी का यह चिन्ह है कि जल्दी २ चलने लगे उनमें रग चमकने लगें रग में लाली हो, और छूनेसे गर्म मालूम हो और सर्दी के चिन्ह सब इसके विरुद्ध होंगे । और तरीके यह चिन्ह है कि मैल और आंसू बहुत आवे और बेड़ी होजाय और खुश्की का यह चिन्ह है कि छोटीहो और मैल तथा आंसू नहो और भीतर घुसी हुई हो और छूनेसे कडी मालूम हो और जानना चाहिये कि करंजी आंखकी गर्मी और तरी दूसरे रगकी तरी से कम होतीहै और काली आंख की गरमी और तरी सब रगों से अधिक है इसीलिये बहुधा काली आंखों में निजूलल्मा अर्थात् नजला उतर आताहै और ऐसेही और २ बीमारियां भी होजाती है जो कि परमाणुओं की अधिकता से उत्पन्न होतीहै और शौहला आंख (जिसकी स्याही लाली लिये हुये हो) वह साधारण होती है । अब जानना चाहिये कि यद्यपि हेतु के अनुसार आंख के सब प्रकार के रोगों का अलग२ इलाज वर्णन किया गयाहै परन्तु ये सब४भा- गों में बाटे गयहै जैसा पहिले संक्षेप रीतिसे वर्णन कियागयाहै और फिर प्रत्येक पर्दो और रतूबत की बीमारी यो जुदे प्रकरण में वर्णन करते हैं यथा (१) माद्दा

जौके पानी काढ़ और पालक में राघ कर देना भी लाभदायक है और जो इतने इलाज से प्रयोजन सिद्ध न हो तो हरड इमली और अफसतीन के काढे या, पित्त पापडा के पानी में खाड डालकर प्रकृति को नर्म करै और जो चीज मल को पेशाब के द्वारा या पसीनें आदि के द्वारा निकालें और वह बलवान हो तो दे-सक्ते है जिससे दोप पेशाब या पसीने आदि के द्वारा निकल जाय और जो फसद खोलने की आवश्यकता हो और बीमार की दशा तथा हकीम की परीक्षानुसार फसद खोलनी चाहिये और मल के निकलने के पीछे फिर प्रकृति के ठढा करने और आरोग्य करन के लिये लेप तरेडे और ठडे तेलों का प्रयोग करै ॥

दूसरा अध्याय ।

आख के रोगों का वर्णन ।

आंख उपाग है इसमें पह जिगरकी रक्तवाहिनी रगें और दिल की रूह-वालीरगें फैली हुई हैं तथा इसमें ७ पर्दे और ३ रतूबतें है । अतएव प्रत्येक दशा का विस्तारपूर्वक वर्णन क्रमानुसर अलग २ प्रकरणों में कियाजाता है (लाभ) आख की मुख्य और स्वाभाविक प्रकृति गर्मतर है और यदि ऐसा नहो तो उसकी कोई प्रकृति स्वाभाविक और मुख्य नहीं है किन्तु दूसरे के सयोग से होने वाली है और आंखकी प्रकृति की गर्मी का यह चिन्ह है कि जल्दी २ चलने लगे उनमें रग चमकने लगें रग में लाली हो, और छूनेसे गर्म मालूम हो और सर्दी के चिन्ह सब इसके विरुद्ध होंगे । और तरीके यह चिन्ह है कि मैल और आसू बहुत आवें और बेडी होजाय और खुश्की का यह चिन्ह है कि छोटी हो और मैल तथा आंसू नहो और भीतर घुसी हुई हो और छूनेंसे कडी मालूम हो और जानना चाहिये कि करजी आखकी गर्मी और तरी दूसरे रगकी तरी से कम होतीहै और काली आंख की गरमी और तरी सब रगों से अधिक है इसीलिये बहुधा काली आंखों में निजूलल्मा अर्थात् नजला उतर आताहै और ऐसेही और २ बीमारियां भी होजाती है जो कि परमाणुओं की अधिकता से उत्पन्न होतीहैं और शोहला आंख (जिसकी स्याही लाली लिपे हुये हो) वह साधारण होती है । अब जानना चाहिये कि यद्यपि हेतु के अनुसार आंख के सब प्रकार के रोगों का अलग२ इलाज वर्णन किया गयाहै परन्तु ये सब४भागों में बान्टे गयहै जैसा पहिले सक्षेप रीतिसे वर्णन कियागयाहै और फिर प्रत्येक पर्दो और रतूबत की बीमारी को जुदे प्रकरण में वर्णन करते हैं यथा (१) माद्दा

जौके पानी काहू और पालक में राध कर देना भी लाभदायक है और जो इतने इलाज से प्रयोजन सिद्ध न हो तो हरड इमली और अफसतीन के काढे या पित्त पापडा के पानी में खांड डालकर प्रकृति को नर्म करे और जो चीज मल को पेशाब के द्वारा या पसीने आदि के द्वारा निकाल और वह वलवान हो तो दे-सक्ते है जिससे दोप पेशाब या पसीने आदि के द्वारा निकल जाय और जो फसद खोलने की आवश्यकता हो और बीमार की दशा तथा हकीम की परीक्षा-नुसार फसद खोलनी चाहिये और मल के निकलने के पीछे फिर प्रकृति के वश करने और आरोग्य करन के लिये लेप तरेडे और ठडे तेलों का प्रयोग करै ॥

दूसरा अध्याय ।

आंख के रोगों का वर्णन ।

आख उपांग है इसमें पठ्ठ जिगरकी रक्तवाहिनी रगें और दिल की रूह वालीरगें फैली हुई है तथा इसमें ७ पर्दे और ३ रतूवतें है । अतएव प्रत्येक दशा का विस्तारपूर्वक वर्णन क्रमानुसर अलग २ प्रकरणों में कियाजाता है (लाभ) आंख की मुख्य और स्वाभाविक प्रकृति गर्मतर है और यदि ऐसा नहो तो उसकी कोई प्रकृति स्वाभाविक और मुख्य नहीं है किन्तु दूसर के सयोग से होने वाली है और आंखकी प्रकृति की गर्मी का यह चिन्ह है कि जल्दी २ चलने लगे उनमें रग चमकने लगें रग में लाली हो, और छूनेसे गर्म मालूम हो और सर्दी के चिन्ह सब इसके विरुद्ध होंगे । और तरीके यह चिन्ह है कि मैल और आसू बहुत आवे और बेढी होजाय और खुश्की का यह चिन्ह है कि छोटी हो और मैल तथा आंसू नहो और भीतर घुसी हुई हो और छूनेमे कडी मालूम हो और जानना चाहिये कि करंजी आंखकी गर्मी और तरी दूसरे रगकी तरी से कम होतीहै और काली आंख की गरमी और तरी सब रगों से अधिक है इसीलिये बहुधा काली आंखों में निजूलल्मा अर्थात् नजला उतर आताहै और ऐसेही और २ बीमारियां भी होजाती हैं जो कि परमाणुओं की अधिकता से उत्पन्न होतीहै और शोहला आंख (जिसकी स्याही लाली लिये हुये हो) वह साधारण होती है । अब जानना चाहिये कि यद्यपि हेतु के अनुसार आंख के सब प्रकार के रागों का अलग२ इलाज वर्णन किया गयाहै-परन्तु य सब४भागों में बांटे गयहै जैसा पहिले सक्षेप रीतिसे वर्णन कियागयाहै और फिर प्रत्येक पर्दा और रतूबत की बीमारी को जुदे प्रकरण में वर्णन करते हैं यथा (१) सादा

जौके पानी काहू और पालक में राध कर देना भी लाभदायक है और जो इतने इलाज से प्रयोजन सिद्ध न हो तो हरड इमली और अफ़सतीन के काढे या पित्त पापडा के पानी में खांड डालकर प्रकृति को नर्म करे और जो चीज मल को पेशाब के द्वारा या पसीने आदि के द्वारा निकाल और वह बलवान हो तो दे-सक्ते है जिससे दोप पेशाब या पसीने आदि के द्वारा निकल जाय और जो फसद खोलने की आवश्यकता हो और बीमार की दशा तथा हकीम की परीक्षा-नुसार फसद खोलनी चाहिये और मल के निकलने के पीछे फिर प्रकृति के ठंढा करने और आरोग्य करन के लिये लेप तरेडे और ठडे तेलों का प्रयोग करै ॥

दूसरा अध्याय ।

आंख के रोगों का वर्णन ।

आंख उपांग है इसमें पठ जिगरकी रक्तवाहिनी रगें और दिल की रूह वालीरगें फैली हुई है तथा इसमें ७ पर्दे और ३ रतूबतें है । अतएव प्रत्येक दशा का विस्तारपूर्वक वर्णन क्रमानुसर अलग २ प्रकरणों में कियाजाता है (लाभ) आंख की मुख्य और स्वाभाविक प्रकृति गर्मतर है और यदि ऐसा नहो तो उसकी कोई प्रकृति स्वाभाविक और मुख्य नहीं है किन्तु दूसर के संयोग से होने वाली है और आंखकी प्रकृति की गर्मी का यह चिन्ह है कि जल्दी २ चलने लगे उनमें रग चमकने लगें रग में लाली हो, और छूनेसे गर्म मालूम हो और सर्दी के चिन्ह सब इसके विरुद्ध होंगे । और तरीके यह चिन्ह है कि मैल और आसू वहुत आवे और बडी होजाय और खुश्की का यह चिन्ह है कि छोटी हो और मैल तथा आंसू नहो और भीतर घुसी हुई हो और छूनेमे कडी मालूम हो और जानना चाहिये कि करंजी आंखकी गर्मी और तरी दूसरे रगकी तरी से कम होतीहै और काली आंख की गरमी और तरी सब रगों से अधिक है इसीलिये बहुधा काली आंखों में निजूलत्मा अर्थात् नजला उतर आताहै और ऐसेही और २ बीमारियां भी होजाती हैं जो कि परमाणुओं की अधिकता से उत्पन्न होतीहै और शोहला आंख (जिसकी स्याही लाली लिये हुये हो) वह साधारण होती है । अब जानना चाहिये कि यद्यपि हेतु के अनुसार आंख में सब प्रकार के रोगों का अलग२ इलाज वर्णन किया गयाहै-परन्तु प सर्वेश्भा गों में ग्रादे गयहै जैसा पहिले संक्षेप रीतिसे वर्णन कियागयाहै और फिर प्रत्यक पर्दो और रतूबत की बीमारी को जुदे प्रकरण में वर्णन करते हैं यथा (१) सादा

हानि नहीं करता । सातवें यह कि जो मल किसी अंग से आंख में आता है तो उस अंग को उसमल से साफ करें और उस अंगके उपाय की तरफ झुके और घाव वा सूजन का इलाज उन दवाओंसे करें जो तरीको कम करती है और बहुत खुश्की भी नहीं बढाती है और न जलन पैदा करती है जैसे सुरमा, केसर, छीलाथोथा, सफेदा, शादनज अतसी (मसूड़ के समान पत्थर है) और एलवा आदि । क्योंकि जिस दवाकी प्रकृति आंखकी प्रकृति के समान है वह आंख को हानि पहुंचाती है और जो थोडीसी उसके विरुद्ध हैं वह लाभदायक है ॥ उक्त दवा इसी प्रकारकी है क्योंकि आंखकी प्रकृति गर्म और तर है इसकारणसे प्राय तरी बढानेवाली दवा आंखको हानि पहुंचाती है और जो दवा कुछ कम तरी करती है और जलन उत्पन्न करने वाली न होतो आंखको बल देती है और बल पानेवाला अंग रोग के मादे को ग्रहण नहीं करता और आरोग्य रहता है और यह एक बडी रीति है जिसे प्राय आंख के इलाजों में याद रखना चाहिये और आंखकी निज दशाको दुरुस्ती पर लाना और जो उपद्रव उसके अवयवों में उत्पन्न हो उसका दूर करना मुख्य है उसका कोई उपाय तो फस्द और मलके निकालने से होता है और कोई २ और तरह पर होता है कि प्रत्येक को अपनी २ जगह वर्णन किया जायगा लाभ - आंखके इलाज में प्रथमही यह देखे कि दर्द के साथ कुछ सूजनभी है या नहीं जो सिर दर्द के साथ सूजन होतो यह देखे कि कौनसा दोप है और किस दोपके चिन्ह अच्छी तरह प्रगट होतेहै और यहभी देखें कि मल सब शरीर में हैं या केवल सिर में है । जो मल सब देह में होतो पहले दोप के अनुसार सब शरीर से मलको निकाल कर फिर मुख्य दिमाग के मलको निकाले तत्पश्चात् आंखकी सफाई करे और जबतक देह पूर्ण रीति से मलरहित न हो जाय तबतक आंख का इलाज न करें और मलके नष्ट करने वाली दवाएं आंख पर न लगावें । जहां कहीं सूजनके साथ सिर दर्द अधिक हो या आंख में दर्द हो और जो ऐसा करेंगे तो कष्ट अधिक होजायगा और बडीभूल प्रगट होगी और उपायभी प्रत्येक कारणके अनुसार यद्यपि सविस्तर वर्णन किये जांयगे परन्तु यहां भी सूक्ष्म रीतिसे लिखते हैं जैसे जहां आंखके दर्द का मादा गाढी रतूबत या वादी का होतो उचित विरेचना से सब शरीर की सफाई करके एलवा की गोली यारजकी गोली और कौकाया की गोलीसे दिमाग को साफ करे फिर शेषको ऊपरसे निकाल लेवे और आंखको मेथी के पानीऔर बाजी

हानि नहीं करता। सातवें यह कि जो मल किसी अंग से आंख में आता है तो उस अंग को उसमल से साफ करें और उस अंगके उपाय की तरफ झुके और घाव वा सूजन का इलाज उन दवाओंसे करें जो तरीको कम करती है और बहुत खुश्की भी नहीं बढाती है और न जलन पैदा करती है जैसे सुरमा, केसर, तीलाथोथा, सफेदा, शादनज अतसी (मसूड के समान पत्थर है) और एलवा आदि। क्योंकि जिस दवाकी प्रकृति आंखकी प्रकृति के समान है वह आंख को हानि पहुचाती है और जो थोडीसी उसके विरुद्ध है वह लाभदायक है॥ उक्त दवा इसी प्रकारकी है क्योंकि आंखकी प्रकृति गर्म और तर है इसकारणसे प्राय तरी बढानेवाली दवा आंखको हानि पहुचाती है और जो दवा कुछ कम तरी करती है और जलन उत्पन्न करने वाली न होतो आंखको बल देती है और बल पानेवाला अंग रोग के मादे को ग्रहण नहीं करता और आरोग्य रहता है और यह एक बडी रीति है जिसे प्राय आंख के इलाजों में याद रखना चाहिये और आंखकी निज दशाको दुरुस्ती पर लाना और जो उपद्रव उसके अवयवों में उत्पन्न हो उसका दूर करना मुख्य है उसका कोई उपाय तो फस्द और मलके निकालने से होता है और कोई २ और तरह पर होता है कि प्रत्येक को अपनी २ जगह वर्णन किया जायगा लाभ - आंखके इलाज में प्रथमही यह देखे कि दर्द के साथ कुछ सूजनभी है या नहीं जो सिर दर्द के साथ सूजन होतो यह देखे कि कौनसा दोष है और किस दोषके चिन्ह अच्छी तरह प्रगट होतेहै और यहभी देखें कि मल सब शरीर में हैं या केवल सिर में है। जो मल सब देह में होतो पहले दोष के अनुसार सब शरीर स मलको निकाल कर फिर मुख्य दिमाग के मलको निकाले तत्पश्चात् आंखकी सफाई करे और जबतक देह पूर्ण रीति से मलरहित न हो जाय तबतक आंख का इलाज न करे और मलके नष्ट करने वाली दवाएं आंख पर न लगावे। जहां कहीं सूजनके साथ सिर दर्द अधिक हो या आंख में दर्द हो और जो ऐसा करेंगे तो कष्ट अधिक होजायगा और बडीभूल प्रगट होगी और उपायभी प्रत्येक कारणके अनुसार यद्यपि सविस्तर वर्णन किये जायगे परन्तु यहां भी सूक्ष्म रीतिसे लिखते हैं जैसे जहां आंखके दर्द का मादा गाढी रतूबत या वादी का होतो उचित विरेचना से सब शरीर की सफाई करके एलवा की गोली यारजकी गोली और कौकाया की गोलीसे दिमाग को साफ करे फिर शेषको ऊपरसे निकाल लेवे और आंखको मेथी के पानीऔर बाजी

हानि नहीं करता। सातवें यह कि जो मल किसी अंग से आंख में आता है तो उस अंग को उसमल से साफ करें और उस अंगके उपाय की तरफ झुकें और घाव वा सूजन का इलाज उन दवाओंसे करें जो तरीको कम करती हैं और बहुत खुश्की भी नहीं बढाती है और न जलन पैदा करती है जैसे सुरमा, केसर, तूतियाथोथा, सफेदा, शादनज अतसी (मसूड़ के समान पत्थर है) और एलवा आदि। क्योंकि जिस दवाकी प्रकृति आंखकी प्रकृति के समान है वह आंख को हानि पहुचाती है और जो थोडीसी उसके विरुद्ध है वह लाभदायक है ॥ उक्त दवा इसी प्रकारकी है क्योंकि आंखकी प्रकृति गर्म और तर है इसकारणसे प्राय तरी बढानेवाली दवा आंखको हानि पहुचाती है और जो दवा कुछ कम तरी करती है और जलन उत्पन्न करने वाली न होतो आंखको बल देती है और बल पानेवाला अंग रोग के माद्दे को ग्रहण नहीं करता और आरोग्य रहता है और यह एक बडी रीति है जिसे प्राय आंख के इलाजों में याद रखना चाहिये और आंखकी निज दशाको दुरुस्ती पर लाना और जो उपद्रव उसके अवयवों में उत्पन्न हो उसका दूर करना मुख्य है उसका कोई उपाय तो फसद और मलके निकालने से होता है और कोई २ और तरह पर होता है कि प्रत्येक को अपनी २ जगह वर्णन किया जायगा लाभ - आंखके इलाज में प्रथमही यह देखें कि दर्द के साथ कुछ सूजनभी है या नहीं जो सिर दर्द के साथ सूजन होतो यह देखे कि कौनसा दोष है और किस दोषके चिन्ह अच्छी तरह प्रगट होतेहै और यहभी देखें कि मल सब शरीर में है या केवल सिर में है। जो मल सब देह में होतो पहले दोष के अनुसार सब शरीर से मलको निकाल कर फिर मुख्य दिमाग के मलको निकालें तत्पश्चात् आंखकी सफाई करे और जबतक देह पूर्ण रीति से मलरहित न हो जाय तबतक आंख का इलाज न करें और मलके नष्ट करने वाली दवाएंआंख पर न लगावें। जहां कहीं सूजनके साथ सिर दर्द अधिक हो या आंख में दर्द हो और जो ऐसा करेंगे तो कष्ट अधिक होजायगा और बडीभूल प्रगट होगी और उपायभी प्रत्येक कारणके अनुसार यद्यपि सविस्तर वर्णन किये जांयगे परन्तु यहां भी सूक्ष्म रीतिसे लिखते हैं जैसे जहां आंखके दर्द का माद्दा गाढी रतूबत या बादी का होतो उचित विरेचनों से सब शरीर की सफाई करके एलवा की गोली यारजकी गोली और कौकाया की गोलीसे दिमाग को साफ करे फिर शेषको ऊपरस निकाल लेव और आंखको मेथी के पानीऔर बाजी

हानि नहीं करता । सातवें यह कि जो मल किसी अंग से आंख में आता है तो उस अंग को वसमल से साफ करें और उस अंगके उपाय की तरफ झुके और घाव वा सूजन का इलाज उन दवाओंसे करे जो तरीको कम करती हैं और बहुत खुश्की भी नहीं बढाती है और न जलन पैदा करती है जैसे सुरमा, केसर, लीलाथोथा, सफेदा, शादनज अतसी (मसूढ के समान पत्थर है) और एलवा आदि । क्योंकि जिस दवाकी प्रकृति आंखकी प्रकृति के समान है वह आंख को हानि पहुचाती है और जो थोडीसी उसके विरुद्ध हैं वह लाभदायक है ॥ उक्त दवा इसी प्रकारकी है क्योंकि आंखकी प्रकृति गर्म और तर है इसकारणसे प्राय तरी बढानेवाली दवा आंखको हानि पहुचाती है और जो दवा कुछ कम तरी करती है और जलन उत्पन्न करने वाली न होतो आंखको बल देती है और बल पानेवाला अंग रोग के मादे को ग्रहण नहीं करता और आरोग्य रहता है और यह एक बडी रीति है जिसे प्राय आंख के इलाजों में याद रखना चाहिये और आंखकी निज दशाको दुरुस्ती पर लाना और जो उपद्रव उसके अवयवों में उत्पन्न हो उसका दूर करना मुख्य है उसका कोई उपाय तो फसद और मलके निकालने से होता है और कोई २ और तरह पर होता है कि प्रत्येक को अपनी २ जगह वर्णन किया जायगा लाभ - आंखके इलाज में प्रथमही यह देखें कि दर्द के साथ कुछ सूजनभी है या नहीं जो सिर दर्द के साथ सूजन होतो यह देखे कि कौनसा दोष है और किस दोषके चिन्ह अच्छी तरह प्रगट होतेहै और यहभी देखें कि मल सब शरीर में है या केवल सिर में है । जो मल सब देह में होतो पहले दोष के अनुसार सब शरीर से मलको निकाल कर फिर मुख्य दिमाग के मलको निकाले तत्पश्चात् आंखकी सफाई करे और जबतक देह पूर्ण रीति से मलरहित न हो जाय तबतक आंख का इलाज न करे और मलके नष्ट करने वाली दवाएंआंख पर न लगावे । जहां कहीं सूजनके साथ सिर दर्द अधिक हो या आंख में दर्द हो और जो ऐसा करेंगे तो कष्ट अधिक होजायगा और बडीभूल प्रगट होगी और उपायभी प्रत्येक कारणके अनुसार यद्यपि सविस्तर वर्णन किये जांयगे परन्तु यहां भी सूक्ष्म रीतिसे लिखते हैं जैसे जहां आंखके दर्द का मादा गाढी रतूवत या बादी का होतो उचित विरेचनों से सब शरीर की सफाई करके एलवा की गोली यारजकी गोली और कौकाया की गोलीसे दिमाग को साफ करे फिर शेषको ऊपरम निकाल लेव और आंखको मेथी के पानीऔर ताजी

(सूचना) आंख की रक्षा नीचे लिखी रीतिसे करता रहे जिससे वे अच्छी रहीं आवें और इसमें लाभकारक वस्तुओं का सेवन और हानिकारक वस्तुओं का परित्याग कर देना चाहिये जो २ वस्तु आंखको हानि पहुचातीहैं वे ये हैं धुआं गर्द, हवा, गर्म हवा, बहुत ठंडी हवा, बहुत रोना, बहुत चमकीली वस्तुओं को देखना, चित्तलेट कर सोना, शराब पीना वा अन्य मादक वस्तुका सेवन वर्जितहै परन्तु अफीम का सेवन करना वर्जित नहीं है और खाने पीने की गरिष्ठ वस्तु जो अच्छी तरह न पचे और जो चीज कि दिमाग की तरफ भाफ के परमाणु उठावें और तेज हो जैसे गन्दना,लहसन, प्याज वा अन्य ऐसी ही वस्तुओं का सेवन अजीर्णका होना, बहुत न्हाना, बहुत फसद खोलना, बहुत पछन लगाना, बहुत सोना या जगना, टकटकी लगाना, नमक अधिक खाना, भरे पेट पर सोना रात के समय भोजन करना, बहुत सगम करना, बुरी और गाढी शराब तथा अन्य वस्तु जो आमाशय के मुख को कष्ट पहुचातीहै ये सब आंख को और दृष्टि की तेजी को अधिक हानि करती हैं और ऐसेही पहाडी तुलसी, सोया पका हुआ जैतून लाभदायक नहीं है और छोटे २ नकशों का देखना और सूक्ष्म अक्षरों का पढना भी हानिकारक है परन्तु कभी २ परिश्रम की रीतिपर सेवन करने पर कुछ हानि भी नहीं है और जो चीजें कि आंख को लाभ दायक है वह यह हैं कि मीठे और ठंडे पानी में डुबकी लेकर आंखें खोलदें और सुरमा लीलाथोथा, सौंफ और दोना मरुआ के पानी में घिसकर लगाना दृष्टि को तेज करता है और आंख को बलदेता है और अनार फोठडी दवा और सौंफ का पानी लगाना भी लाभदायक है ॥

पहिला प्रकरण

तबके सलमिया के रोगों के वर्णन में

यह तबका अर्थात् दिमाग की उस कडी झिल्ली से जो पोले पठठे से मिली हुई है निकलकर आया है और कोई २ हकीम इसको पर्दों में नहीं मानते हैं और झिल्लीही जानते है इस दशा में आंख के पर्दे गिनती में छ होते हैं और इस कारण से कि उक्त पर्दे में सूजन, सुरखी, सुद्दाव और ढिलाढिलापन होजाता है इसलिये हम इस प्रकारण को चार भेदों में वर्णन करते है ।

पहला भेद पर्दे की सूजन के वर्णन में

ऐसा हुआ करता है कि मुख्य इसी पर्दे में वा और पर्दा के संयोग से इस पर्दे में सूजन हो और इस पर्दे की सूजन के सब चिन्हों में यह होता है

(सूचना) आंख की रक्षा नीचे लिखी रीतिसे करता रहे जिससे वे अच्छी रहीं आखें और इसमें लाभकारक वस्तुओं का सेवन और हानिकारक वस्तुओं का परित्याग कर देना चाहिये जो २ वस्तु आंखको हानि पहुचातीहै वे ये है धुआं गर्द, हवा, गर्म हवा, वहुत ठंडी हवा, वहुत रोना, वहुत चमकीली वस्तुओं को देखना, चित्तलेट कर सोना, शराब पीना वा अन्य मादक वस्तुका सेवन वर्जितहै परंतु अफीम का सेवन करना वर्जित नहीं है और खाने पीने की गरिष्ठ वस्तु जो अच्छी तरह न पचे और जो चीज कि दिमाग की तरफ भाफ के परमाणु उठावें और तेज हो जैसे गन्दना, लहसन, प्याज वा अन्य ऐसी ही वस्तुओं का सेवन अजीर्णका होना, वहुत न्हाना, वहुत फसद खोलना, वहुत पछन लगाना, वहुत सोना या जगना, टकटकी लगाना, नमक अधिक खाना, भरे पेट पर सोना रात के समय भोजन करना, वहुत सगम करना, बुरी और गाढी शराब तथा अन्य वस्तु जो आमाशय के मुख को कष्ट पहुचातीहै ये सब आंख को और दृष्टि की तेजी को अधिक हानि करती है और ऐसेही पहाडी तुलसी, सोया पका हुआ जैतून लाभदायक नहीं है और छोटे २ नकशों का देखना और सूक्ष्म अक्षरों का पढना भी हानिकारक है परंतु कभी २ परिश्रम की रीतिपर सेवन करने पर कुछ हानि भी नहीं है और जो चीजें कि आंख को लाभ दायक है वह यह हैं कि मीठे और ठंडे पानी में डुबकी लेकर आंखें खोलदें और सुरमा लीलाथोथा, सौंफ और दोना मरुआ के पानी में घिसकर लगाना दृष्टि को तेज करता है और आंख को वलदेता है और अनार कीठंडी दवा और सौंफ का पानी लगाना भी लाभदायक है ॥

पहिला प्रकरण
तबके सलभिया के रोगों के वर्णन में

यह तबका अर्थात् दिमाग की उस कड़ी झिल्ली से जो पोले पडदे से मिली हुई है निकलकर आया है और कोई २ हकीम इसको पर्दों में नहीं मानते हैं और झिल्लीही जानते है इस दशा में आंख के पर्दे गिनती में छ होते हैं और इस कारण से कि उक्त पर्दे में सूजन, सुर्खी, मुद्दाव और ढिलाढिलापन होजाता है इसलिये हम इस प्रकारण को चार भेदों में वर्णन करते हैं।

पहला भेद पर्दे की सूजन के वर्णन में

ऐसा हुआ करता है कि मुख्य इसी पर्दे में वा और पर्दा के साथ इस पर्दे में सूजन हो और इस पर्दे की सूजन के सब चिन्हों में यह होता है

जो रतूबतों को सुखाती है सेवन करे और दोष युक्त दुष्ट प्रकृति में चाहे ढीलें होने का कारण खून हो चाहे कफ पहले फस्द* खोले पीछे मल के पकाने वाली पुष्ट दस्तावर दवाए काम में लावें ॥

❀ दूसरा प्रकरण ❀

❀ मुशीमियां पर्दे के रोगों का वर्णन ❀

इस पर्दे की बनावट दिमाग की महीन झिल्ली के किनारों और खूनवाली रगे जिसको जिगर की रग कहते हैं और रूहवाली रग (वह रग जो दिल से उगीं है) से हुई है और उसको मुशीमिया इस लिये कहते है कि वह शबकिया के ऊपर इस तरह है जैसा कि मुशीमियां अर्थात् गर्भस्थान बच्चे के ऊपर लगा रहता है और कहते है कि इसका यह नाम इस कारण से है कि यह मुशीमियां अर्थात् गर्भस्थान से रगों और दिल की रगों की अधिकता के कारण सूरत मे मिलता है क्यों कि इस पर्दे में रगें बहुत है और दूसरे पर्दों का पथ्य और रतूबत आने का रास्ता है इस लिये खून के रोग उस में बहुधा उत्पन्न होते है और ऐसा होजाता है कि उस में कोई उपद्रव उत्पन्न होकर आंख की रतूबत की प्रकृति बिगाड देता है क्यों कि शबकिया पर्दा मुशीमियां पर्दे से पुष्ट होता हैं और अपना भाग लेकर बाकी को साफ करके जजाजिया रतूबत बना देता है और यह अपना भाग लेकर बची हुई को साफ करके जुलेदिया रतूबत बना देता है इसी लिये जो मुशीमिया पर्दे में कोई कष्ट आजाता है तो जो रस वहां से आता है वह भी खराब होता है और बहुधा ऐसा भी हुआ करता है कि मुशीमिया के सूज जानेसे असबे मुजविफा वह पट्ठा पीला जो दिमाग से आंखों में आया है और वह आंख की रोशनी रहने का स्थान है। दब जाता है और दृष्टि में निर्बलता करता है और इस पर्दे में बीमारी होने

*फस्द का लाभ खून की दशा में तो प्रकट है परन्तु कफ की दशा में जो प्रकृति शक्ति आयु ऋतु और वर्ष अनुकूल हो तो फस्द खोलने में बड़ा लाभदायक है क्यों कि खून दोषों की सवारी है फस्द में कफभी निकलेगा इसलिये फस्द को पूर्ण दोष निस्सारक कहते है और बात यह है कि देह में खुश्की पहुचाना अवश्य है इसलिये शारह असबाब लिखता है कि विद्वान् और बुद्धिमान हकीम फालिज के आरम्भ में भी फस्द के खोलने की आज्ञा देते है और पहिले फस्द खोलने के लिये ऐसे रोगों में इसलिये आज्ञा है कि खून निकलने के कारण से रगें चौड़ी होजांय और पीछे जबकि दवा से सफाई करेंगे तो रगों के चौड़े होने से मलका चलाना और निकलना सहज होगा

जो रतूवतों को सुखाती है सेवन करे और दोष युक्त दुष्ट प्रकृति में चाहे ढीले होने का कारण खून हो चाहे कफ पहले फस्द* खोले पीछे मल के पकाने वाली पुष्ट दस्तावर दवाएं काम में लावें ॥

❀ दूसरा प्रकरण ❀

❀ मुशीमियां पर्दे के रोगों का वर्णन ❀

इस पर्दे की बनावट दिमाग की महीन झिल्ली के किनारों और खूनवाली रगें जिसको जिगर की रग कहते हैं और रूहवाली रग (वह रग जो दिल से कर्मीहै) से हुई है और उसको मुशीमिया इस लिये कहते हैं कि वह शबकिया के ऊपर इस तरह है जैसा कि मुशीमियां अर्थात् गर्भस्थान बच्चे के ऊपर लगा रहता है और कहते है कि इसका यह नाम इस कारण से है कि यह मुशीमियां अर्थात् गर्भस्थान से रगों और दिल की रगों की अधिकता के कारण सूरत में मिलता है क्यों कि इस पर्द में रगें बहुत है और दूसरे पर्दों का पथ्य और रतूवत आने का रास्ता है इस लिये खून के रोग उस में बहुधा उत्पन्न होते हैं और ऐसा होजाता है कि उस में कोई उपद्रव उत्पन्न हो कर आंख की रतूवत की प्रकृति बिगाड देता है क्यों कि शबकिया पर्दा मुशीमियां पर्दे से पुष्ट होता है और अपना भाग लेकर बाकी को साफ करके जजाजिया रतूवत बना देता है और यह अपना भाग लेकर बची हुई को साफ करके जुर्लदिया रतूवत बना देता है इसी लिये जो मुशीमिया पर्दे में कोई कष्ट आजाता है तो जो रस वहां से आता है वह भी खराब होता है और बहुधा ऐसा भी हुआ करता है कि मुशीमिया के रुज जानेसे असबे मुजविफा वह पट्ठा पीला जो दिमाग से आंखों में आया है और वह आंख की रोशनी रहने का स्थान है। दब जाता है और दृष्टि में निर्बलता करता है और इस पर्दे में बीमारी होने

*फस्द का लाभ खून की दशा में तो प्रकट है परन्तु कफ की दशा में जो प्रकृति शक्ति आयु ऋतु और वर्ष अनुकूल हो तो फस्द खोलने में बड़ा लाभदायक है क्यों कि खून दोषों की सवारी है फस्द में कफभी निकलेगा इसलिये फस्द को पूर्ण दोष निस्सारक कहते हैं और बात यह है कि देह में खुश्की पहुचाना अवश्य है इसलिये शारह असबाब लिखता है कि विद्वान् और बुद्धिमान हकीम फालिज के आरम्भ में भी फस्द के खोलने की आज्ञा देते हैं और पहिले फस्द खोलने के लिये ऐसे रोगों में इसलिये आज्ञा है कि खून निकलने के कारण से रगें चौड़ी होजांय और पीछे जबकि दवा से सफाई करेंगे तो रगों के चौडे होने से मलका चलाना और निकलना सहज होगा

कि यह पर्दा रतूवतें जलीदिया के समीप है और असवे मुजव्विफासे मिला हुआहै जो रूह और प्रकाश का मार्ग है। इस बात का कुछ भय नहीं है कि इस पर्दे के उपद्रव की हानि जलीदिया और असवे मुजव्विफा में पहुंचजाय और जो रोग कि इस पर्दे में होते है ५ है।

❀ यरकान अर्थात् कमलवातका वर्णन ❀

यह रोग आंख में उत्पन्न होता है और उस के साथ आंसूभी बहते हैं और आंसू बहने की प्रतिज्ञा इस लिये है कि जिस यरकान में आंसू नवहे उसका कारण यह है कि केवल तवके मुल्तहिमा (यह पर्दा जो ऊपरली आंख का पहला पर्दा है) रगीन होगया हो परन्तु यह इस यरकान के विरुद्ध है क्योंकि इस में आंसू का वहना पाया जायगा क्योंकि इसका मल शवकियामें होता है और आंसू वहने का यह कारण है कि थोडासा पित्त शवकिया के पर्दे पर गिरता है और जोकि इस पर्दे की ज्ञानशक्ति बहुत तेज है इस से अधिक कष्ट पाता है और उस पित्त को जलीदिया की ओर भेजता है जैसे कि रस को भेजता है और उस जगह से पित्त सब पर्दों में फैल जाताहै और सब को रगीन करदेता है और आंसुओं में मिलकर बाहर निकलता है (इलाज) जो आवश्यक्ता हो तो सरेरू की फस्द खोले और फिर हरड के काढे से तबियत को मुलायम करें और सफाई के उपरांत शियाफ़ अबियज लडकी वाली स्त्री के दूध में मिलाकर आंख में डाले और इसबगोल का लुआब, कासनी का पानी, अडे की सफेदी और गुलरोगन मिलाकर आंख पर लेप करे और जब मादे की तेजी में कमी प्रगट हो और टीस थमने लगे तो शेष मल के निकालने के लिये बनफ्सा, खितमी, बाबना और अक्लीलुल मलिक्के काढे का भपारा देवे। दूसरा रोग गांठ है जो इस पर्दे की रगों में पड जाती है और उस के कारण से रतूबते जजाजिया और और रतूबत जलीदिया में जाने वाला रस रुक जाता है क्योंकि यह रस प्रथम मुशीमिया पर्दे से शवकिया पर्दे में पहुचता है और शवकिया पर्दे से जजाजिया और जलीदिया रतूबतों में पहुचता है सो जिस समय शवकिया पर्दे में गांठ होगी तो अवश्य उक्त रतूबतो में रस का पहुचना बन्द होजायगा और इस पर्दे में मुद्दा पढने का यह (चिन्ह) है कि आंख भीतर घुसजाती है, सूख जाती है और उन में रतूबतें प्रगट नहीं होती और बीमार की आंखों में कुछ दर्द भी मालूम होन लगता है (इलाज) इस रोग में फसद खोलना चाहिये और तबियत के

कि यह पर्दा रतूबतें जलीदिया के समीप है और असबे मुजव्विफासे मिला हुआहै जो रूह और प्रकाश का मार्ग है। इस बात का कुछ भय नहीं है कि इस पर्दे के उपद्रव की हानि जलीदिया और असबे मुजव्विफा में पहुचजाय और जो रोग कि इस पर्दे में होते है ५ है।

❁ यरकान अर्थात् कमलवातका वर्णन ❁

यह रोग आंख में उत्पन्न होता है और उस के साथ आंसूभी बहते हैं और आंसू बहने की प्रतिज्ञा इस लिये है कि जिस परकान में आंसू नवहे उसका कारण यह है कि केवल तबके मुल्तहिमा (यह पर्दा जो ऊपरली आंख का पहला पर्दा है) रंगीन होगया हो परन्तु यह इस परकान के विरुद्ध है क्योंकि इस में आंसू का बहना पाया जायगा क्योंकि इसका मल शबकियामें होता है और आंसू बहने का यह कारण है कि थोडासा पित्त शबकिया क पर्दे पर गिरता है और जोकि इस पर्दे की ज्ञानशक्ति बहुत तज है इस से अधिक कष्ट पाता है और उस पित्त को जलीदिया की ओर भेजता है जैसे कि रस को भेजता है और उस जगह से पित्त सब पर्दों में फैल जाताहै और सब को रंगीन करदेता है और आंसुओं में मिलकर बाहर निकलता है (इलाज) जो आवश्यका हो तो सरेरू की फस्द खोले और फिर हरड के काढे से तबियत को मुलायम करें और सफाई के उपरांत शियाफ अबियज लडकी वाली स्त्री के दूध में मिलाकर आंख में डाले और इसबगोल का लुआब, कासनी का पानी, अंडे की सफेदी और गुलरोगन मिलाकर आंख पर लेप करे और जब मादे की तेजी में कमी प्रगट हो और टीस थमने लगे तो शेष मल के निकालने व लिप बनफसा, खितमी, बाबना और अक्लीकुल मलिक के काढ का भपारा देवे। दूसरा राग गांठ है जो इस पर्दे की रगों में पड जाती है और उस के कारण से रतूबते जजाजिया और और रतूबत जलीदिया में जाने वाला रस रुक जाता है क्योंकि यह रस प्रथम मुशीमिया पर्दे से शबकिया पर्दे म पहुचता है और शबकिया पर्दे से जजाजिया और जलीदिया रतूबतों में पहुचता है सो जिस समय शबकिया पर्दे में गांठ होगी तो अवश्य उक्त रतूबता म रस का पहुचना बन्द होजायगा और इस पर्द में सुद्दा पडने का यह (चिन्ह) है कि आंख भीतर घुसजाती है, सूख जाती है और उन में रतूबतें प्रगट नहीं होतीं और बीमार की आंखों में कुछ दर्द भी मालूम होन लगता है (इलाज) इस रोग में फसद खोलना चाहिए और तबियत के

निकल आती है (इलाज) जो आवश्यकता हो तो सरेरू की फसद खोलकर सिर के पीछे वा दोनों पर पछने लगावे और खून निकाले पर कोई कार्य वर्जित न हो तो हरड़के काढ़े तथा इमली और तुरन्जवीनसे तबियतको नर्मकरे इसमें कईवार करके मादे को निकालना चाहिये जिससे शक्ति ठहरी रहे। खाना वहुत कम खाना चाहिये और पहले दिन से तीसरे वा चौथे दिन तक केवल उन स्त्रियों का दूध आंख में डाले जिनके लड़कियां हुई हों (अथवा) पिस्ते का छिलका, मसूर,रसौत, अनार का गूदा और छिलका और कासनीकी पत्तियां उसके वीज ये दवाएं अकेली २ या इकट्ठी कूटकर और गुलरोगन में मिलाकर आंख पर लगावे और तीसरे या चौथे दिन एक, शियाफ (वत्ती) जरूर मलकाया की वनाकर ताजे दूध में वा ईसबगोल के लुआव या विही दाने के लुआव में घिसकर पलकके ऊपर लगावे और सप्ताह पीछे जरूरे अस्फरसगीर (छोटा) और शियाफेअहमरे लय्यन और जरूरे नीमानीम अर्थात् जिसमें आधा जरूरे अवियज और आधा जरूर अजफर मिलाहुआहो काम में लावें और जिस समय घटने लगे तव जरूरे असफर कवीर अर्थात् वड़ा काम में लावें आर जव किसी की पलक घायल होजाय और कठिन से खुलती हो और इन उपायों से कुछ लाभ न हो तो जरूरे अगवर लगावे और जरूर पलक के ऊपरही डालें आंख के भीतर न जाने दे और जहां कहीं बीमारी के अंत में पलक में खुजाल चले तो उसको शियाफे अवियज या अहमर लय्यन से धीरे २ खुजा लेवे।

जरूरे * मलकाया के वनाने की रीति।

गधीके दूध में शोधी हुई अजरूत अर्थात् लाई, नशास्ता, समगे अरवी (एक प्रकार के गोंद का नाम है) और मिश्री इन चारों को वरावर कूटकर और छानकर काम में लावे (दूसरा नुसखा) यह पहले से अधिक वल वान है। अजरूत मुदव्विर (लाई शोधी हुई) ३५ माशे, मिश्री १०॥ माशे, नशास्ता ३॥ माशे, कफे दरिया १॥। माशे इन सव को कूटकर और छान कर वनावे। और जरूरे अजफर सगीर के नुसखे की प्रशंसा करनियां पर्दे के पिछले अध्याय में वर्णन की गई है और शियाफे अहमरे लय्यन के नुसखे की प्रशंसा यह है। कि शादनज अदसी मगसूल (एक पत्थर मसूरे के समान है) को विधि पूर्वक धोकर ३२ माशे, तांवा जला हुआ २८ माशे, मोती

* जरूर सूखी दवाओं को पीसकर आंख या घाव पर छिड़कने का नाम है

निकल आती है (इलाज) जो आवश्यकता हो तो सरेरु की फसद खोलकर सिर के पीछे वा दोनों पर पछने लगावे और खून निकाले पर कोई कार्य वर्जित न हो तो हरड़के काढ़े तथा इमली और तुरन्जवीनसे तबियतको नर्मकरे इसमें कईवार करके मादे को निकालना चाहिये जिससे शक्ति ठहरी रहे । खाना बहुत कम खाना चाहिये और पहले दिन से तीसरे वा चौथे दिन तक केवल उन स्त्रियों का दूध आंख में डाले जिनके लड़कियां हुई हों (अथवा) पिस्ते का छिलका, मसूर,रसौत, अनार का गूदा और छिलका और कासनीकी पत्तियां उसके बीज ये दवाऐं अकेली २ या इकट्ठी कूटकर और गुलरोगन में मिलाकर आंख पर लगावे और तीसरे या चौथे दिन एक, शियाफ (बत्ती) जरूर मलकाया की बनाकर ताजे दूध में वा ईसबगोल के लुआब या बिही दाने के लुआब में घिसकर पलकके ऊपर लगावे और सप्ताह पीछे जरूरे अस्फ़रसगीर (छोटा) और शियाफेअहमरे लय्यन और जरूरे नीमानीम अर्थात् जिसमें आधा जरूरे अबियज और आधा जरूर अजफर मिलाहुआहो काम में लावें और जिस समय घटने लगे तब जरूरे असफर कबीर अर्थात् बड़ा काम में लावें आर जब किसी की पलक घायल होजाय और कठिन से खुलती हो और इन उपायों से कुछ लाभ न हो तो जरूरे अगबर लगावे और जरूर पलक के ऊपरही डालें आंख के भीतर न जाने दे और जहां कहीं बीमारी के अंत में पलक में खुजाल चले तो उसको शियाफे अबियज या अहमर लय्यन से धीरे २ खुजा लेवे ।

जरूरे* मलकाया के बनाने की रीति ।

गधीके दूध में शोधी हुई अजरूत अर्थात् लाई, नशास्ता, समगे अरबी (एक प्रकार के गोंद का नाम है) और मिश्री इन चारों को बराबर कूटकर और छानकर काम में लावे (दूसरा नुसखा) यह पहले से अधिक बल वान है । अजरूत मुदब्बिर (लाई शोधी हुई) ३५ माशे, मिश्री १०॥ माशे, नशास्ता ३॥ माशे, कफे दरिया १॥। माशे इन सब को कूटकर और छान कर बनावे । और जरूरे अजफर सग़ीर के नुसखे की मशाता यदनियां पर्दे के पिछले अध्याय में वर्णन की गई है और शियाफे अहमरे लय्यन के नुसखे की मशाता यह है । कि शादनज अदसी मगसूल (एक पत्थर मसूरे के समान है) को विधि पूर्वक धोकर ३२ माशे, तांबा जला हुआ २८ माशे, मोती

* जरूर सूखी दवाओं को पीसकर आंख या घाव पर छिड़कने का नाम है

और शबकिया पर्दे में पहुचकर आंख के ढेले में दर्द उत्पन्न कर और कोई कहते हैं कि यह फोक जिस समय आंख के पर्दे शबकिया में पहुचता है तब आधे सिरमें दर्द और कनपटियों में हूल उत्पन्न करताहै और प्रगट है कि उक्त मादा जो बहुतसा होगा तौ सिरमें आधासीसी का दर्द और आधी आंख में दर्द हो जाया करताहै (लाभ) जो फोक कि दिल की रगों में इकठा होजाता है उस की दो दशा है एक यह कि दिलकी गिजा का फोक होकर दिल की रगों में इकठा होजाय दूसरे यह कि फोक का मादा जिगर की रगों की उन शाखों से जो जिगर की रग और दिलकी रगों के बीचमें है दिल की रगों म आवै (इलाज) जो कुछ आधासीसी के दर्द में वर्णन किया है ज्यों का त्यों वही इसका (इलाज) है अर्थात् जो आवश्यकता हो तो फसद खोले और जु लाब देवै और फड़कने वाली रग को बेधे तथा इस रोग के (इलाज) में देर न करना चाहिये और रग के काटने में जल्दी करै उससे बड़े बड़े दुक्खों का भय जाता रहै जैसा कि इस किताब के बनाने वाले ने कहा है कि यह बीमारी बहुधा निजूलुलमा (आंख में पानी उतरना) या पर्दे को चौड़ाकर देतीहै या रतूवते वैजिया अर्थात् आंख की रतूवत को गदा करदेती है सो उचित है कि उस रग के काटने में जल्दी करें और (इलाज) में देर न करें

आंख में टपकाने की दवा।

यह दर्द को थामती है और मादे को हटाती है। लाल साग का पानी लेकर शियाफ मामीसा (एक घास सशलश के समान है) रसौत, अंडेकी सफेदी और लड़की वाली स्त्रियों का दूध आपस में मिलाकर और गुल रोगन मिलाकर आंख म डाले और जहा कहीं धमक बहुत कष्ट पहुचावै तो चेपदार चिपकनी चीजें कागज पर लगाकर दोनों कनपटियों पर लगावे इस की (रीति) यह है कि कासनी के बीज और काहू के बीज प्रत्येक ७ माशे, रसौत १०॥ माशे अफीम १॥। माशे, सबको पीसकर ईसबगोल के लुआब में मिलावे और क- पड़े या कागज के दो टुकड़ों पर जो प्रत्येक ३॥ माश के बराबर हों और कनपटियों पर लगाकर छोड़ देवै जिससे सुश्क होजाय। ए रोग है कि इस पर्दे में तफरुके इत्तिसाल अर्थात् घाव या सूजन उ जाय तौ फिर वह प्रकाश जो उस म घिरा हुआ है आंख के सब बिखर जाय और आंख की [illegible] जाय और दृष्टि कम ती रहे। इस रोग का नाम [illegible] की [illegible]

और शवकिया पर्दे में पहुचकर आंख के ढेले में दर्द उत्पन्न कर और कोई कहते हैं कि यह फोक जिस समय आंख के पर्दे शवकिया में पहुचता है तब आधे सिरमें दर्द और कनपटियों में हूल उत्पन्न करताहै और प्रगट है कि उक्त मादा जो बहुतसा होगा तो सिरमें आधासीसी का दर्द और आधी आंख में दर्द हो जाया करताहै (लाभ) जो फोक कि दिल की रगों में इकठा होजाता है उस की दो दशा है एक यह कि दिलकी गिजा का फोक होकर दिल की रगों में इकठा होजाय दूसरे यह कि फोक का मादा जिगर की रगों की उन शाखों से जो जिगर की रग और दिलकी रगों के बीचमें है दिल की रगों म आवे (इलाज) जो कुछ आधासीसी के दर्द में वर्णन किया है ज्यों का त्यों वही इसका (इलाज) है अर्थात् जो आवश्यकता हो तो फसद खोले और जुलाव देवै और फड़कने वाली रग को वेधे तथा इस रोग के (इलाज) में देर न करना चाहिये और रग के काटने में जल्दी करै उससे बड़े बड़े दुखों का भय जाता रहे जैसा कि इस किताव के बनाने वाले ने कहा है कि यह बीमारी बहुधा निजूलुलमा (आंख में पानी उतरना) या पर्दे को चौड़ाकर देतीहै या रतूवते वैजिया अर्थात् आंख की रतूवत को गदा करदेती है सो उचित है कि उस रग के काटने में जल्दी करें और (इलाज) में देर न करें

आंख में टपकाने की दवा ।

यह दर्द को थामती है और मादे को हटाती है । लाल साग का पानी लेकर शियाफ मामीसा (एक घास खशखश के समान है) रसौत, अंडेकी सफेदी और लड़की वाली स्त्रियों का दूध आपस में मिलाकर और गुल रोगन मिलाकर आंख म डाले और जहा कहीं धमक बहुत कष्ट पहुचावे तो चेपदार चिपकनी चीजें कागज पर लगाकर दोनों कनपटियों पर लगावे इस की (रीति) यह है कि कासनी के बीज और काहू के बीज प्रत्येक ७ माशे, रसौत १०॥ माशे अफीम १॥। माशे, सबको पीसकर ईसबगोल के लुआव में मिलावे और कपड़े या कागज के दो टुकड़ों पर जो प्रत्येक ३॥ माशे के बराबर हो और कनपटियों पर लगाकर छोड़ देवै जिससे खुश्क होजाय । ए[illegible] रोग है कि इस पर्दे में तफरुके इत्तिसाल अर्थात् घाव या खसन [illegible] जाय तो फिर वह प्रकाश जो उस म घिरा हुआ है आंख के सब बिखर जाय और आंख की [illegible] जाय और दृष्टि [illegible] ती रहे । इस रोग का नाम [illegible] की [illegible]

ससर ,अफसतीन, कसूस के बीज (अमर वेल व आकाश वेल के वीज) औटा कर शर्वत दीनार के साथ देवै और जिस जगह मादा गर्म हो तो कासनी के वीज, मुलहटी, मकोय, मुनक्का वेदाने की और पित्तपापड़ा औटा कर शिकजबीन सादा के साथ देवै और गर्म मादे में गांठ वहुत कम उत्पन्न होती है और तरी पहुचाने के लिये खब्बाजी और खितमी के पत्ते पीस के अण्डे की सफेदी और बनफशा के तेल के साथ मिलाकर आंख में लेप करें और शियाफे अबियज को लड़की वाली स्त्री के दूध में घिसकर आंख में लगावे और बनफशा का तेल नाक में डालें और जो रस के न पहुचने के कारण से खुश्की हो और रगें भी खाली हों तो तरी पहुचाने में अधिक परिश्रम करे जैसे औरतों का दूध सिर पर दुहें और हलका रुचि अनुसार पथ्य खाने को देवै और तरी पहुचाने वाले तेल नाक में डालना और सिर पर मलना लाभ दायक है। दूसरा यह रोग है कि आंख बिना सूजन के बडी होजाय और रोगी को आंख फेरने में देर मालूम हो अर्थात् देर में फेरै और ऐसा संदेह करे कि आंख बाहर निकली पडती है और इस कारण से जो आंख बडी होजाती है उसका नाम " अर्बी में हजूजुलऐन " अर्थात् आंखका उभर आना है और आंख उभर आने के २ कारण हैं एक यह कि जिन रगों में इस रतूबत का रस आता है चौडी हो जाय और इस कारण से प्रमाण से अधिक रस पहुचे और उक्त रतूबत इस से तर ही कर और भीग कर अवश्य अपनी जगह से बाहर निकलने लगे और वह आंख निकलना और उभरना जो गले घुटने और चिल्लाने और दर्द जहके समय हो और उसके सिवाय जो दम रुकने से उत्पन्न हो वह भी रगों के चौडे होने का एक भेद है और उसका चिन्ह यह है कि आंसू गाढे चेपदार निकलें दूसरा कारण यह है कि जो पर्दे इस रतूबत के गिर्द हैं वे इस की अधिकता से मोटे होजाय जैसा कि स्त्रियों के रजोधर्म के बन्द होने का समय वा गर्भ काल में होजाता है और यह पिछला रोग बहुत कठिन नहीं है और इस को अर्थात् हजूज का रतूबत जुजाजिया के रोग में गिनना विचाराधीन है क्योंकि यह रोग आंख के सब पर्दों में होता है (इलाज) सिर के साफ करने के लिये फस्द खोलें और पछने लगवावें और पीने तथा थुकने की दस्त लाने वाली दवाओं से तबियत को खोलें और साधारण सफाई के पीछे आंख के साफ करने के लिये जो चीजें मादे को चूसने और जलाने वाली तथा आंसू निकालने वाली हैं जैसे हरड़, पीपल, प्याज का पानी

सखर ,अफसतीन, कसूस के बीज (अमर वेल व आकाश वेल के वीज) औटा कर शर्बत दीनार के साथ देवै और जिस जगह मादा गर्म हो तो कासनी के वीज, मुलहटी, मकोय, मुनक्का वेदाने की और पित्तपापडा औटा कर शिकजबीन सादा के साथ देवै और गर्म मादे में गांठ बहुत कम उत्पन्न होती है और तरी पहुचाने के लिये खब्बाजी और खितमी के पत्ते पीस के अण्डे की सफेदी और बनफशा के तेल के साथ मिलाकर आंख में लेप करें और शियाफे अबियज को लडकी वाली स्त्री के दूध में घिसकर आंख में लगावे और बनफशा का तेल नाक में डालें और जो रस के न पहुचने के कारण से खुश्की हो और रगें भी खाली हों तो तरी पहुचाने में अधिक परिश्रम करे जैसे औरतों का दूध सिर पर दुहें और हलका रुचि अनुसार पथ्य खाने को देवै और तरी पहुचाने वाले तेल नाक में डालना और सिर पर मलना लाभ दायक है। दूसरा यह रोग है कि आंख बिना सूजन के बडी होजाय और रोगी को आंख फेरने में देर मालूम हो अर्थात् देर में फेरे और ऐसा संदेह करे कि आंख बाहर निकली पडती है और इस कारण से जो आंख बडी होजाती है उसका नाम " अर्बी में हजूजुलऐन " अर्थात् आंखका उभरे आना है और आंख उभर आने के २ कारण है एक यह कि जिन रगों में इस रतूवत का रस आता है चौडी हो जाय और इस कारण से प्रमाण से अधिक रस पहुचे और उक्त रतूवत इस से तर ही कर और भीग कर अवश्य अपनी जगह से वाहर निकलने लगे और वह आंख निकलना और उभरना जो गले घुटने और चिल्लाने और दर्द जहके समय हो और उसके सिवाय जो दम रुकने से उत्पन्न हो वह भी रगों के चौडे होनेका एक भेद है और उसका चिन्ह यह है कि आंसू गाढे चेपदार निकलें दूसरा कारण यह है कि जो पर्दे इस रतूवत के इर्द गिर्द हैं वे इस की आधिकता से मोटे होजाय जैसा कि स्त्रियों के रजोधर्म के बन्द होने का समय का गर्भ काल में होजाता है और यह पिछला रोग बहुत कठिन नहीं है और इस को अर्थात् हजूज का रतूवत जुजाजिया के रोग में गिनना विचाराधीन है क्यों कि यह रोग आंख के सब पर्दों में होता है (इलाज) सिर के साफ करने के लिये फस्द खोलें और पछने लगावें और पीने तथा डुकने की वस्तु लाने वाली दवाओं से तबियत को खोलें और साधारण सफाई के पीछे आंख के साफ करने के लिये जो चीजें मारे की घुसने और जलाने वाली तथा आंसू निकालने वाली हैं जैसे हरड, पीपल, प्याज का पानी

सखर ,अफसतीन, कसूम के बीज (अमर वेल व आकाश बेल के बीज) औटा कर शर्बत दीनार के साथ देवे और जिस जगह मादा गर्म हो तो कासनी के बीज, मुलहटी, मकोय, मुनक्का बेदाने की और पित्तपापड़ा औटा कर शिकजबीन सादा के साथ देवे और गर्म मादे में गांठ बहुत कम उत्पन्न होती है और तरी पहुचाने के लिये सब्जाजी और खितमी के पत्ते पीस के अण्डे की सफेदी और बनफशा के तेल के साथ मिलाकर आंख में लेप करें और शियाफे अबियज को लड़की वाली स्त्री के दूध में घिसकर आंख में लगावे और बनफशा का तेल नाक में डाले और जो रस के न पहुचने के कारण से खुश्की हो और रगें भी खाली हों तो तरी पहुचाने में अधिक परिश्रम करे जैसे औरतों का दूध सिर पर दुहें और हलका रुचि अनुसार पथ्य खाने को देवे और तरी पहुचाने वाले तेल नाक में डालना और सिर पर मलना लाभ दायक है। दूसरा यह रोग है कि आंख बिना वजन के बड़ी होजाय और रोगी को आंख फेरने में देर मालूम हो अर्थात् देर में फेरे और ऐसा संदेह करे कि आंख बाहर निकली पड़ती है और इस कारण से जो आंख बड़ी होजाती है उसका नाम " अर्बी में हजूजुलऐन " अर्थात् आंखका उभरे आना है और आंख उभर आने के २ कारण हैं एक यह कि जिन रगों में इस रतुवत का रस आता है चौड़ी हो जाय और इस कारण से प्रमाण से अधिक रस पहुचे और उक्त रतुवत इस से तर ही कर और भीग कर अवश्य अपनी जगह से बाहर निकलने लगे और वह आंख निकलना और उभरना जो गले घुटने और चिल्लाने और दर्द जहके समय हो और उसके सिवाय जो दम रुकने से उत्पन्न हो वह भी रगों के चौड़े होने का एक भेद है और उसका चिन्ह यह है कि आंसू गाढ़े चेपदार निकलें दूसरा कारण यह है कि जो पर्दे इस रतुवत के इर्द गिर्द हैं वे इस की अधिकता से मोटे होजांय जैसा कि स्त्रियों के रजोधर्म के बन्द होने का समय या गर्भ काल में होजाता है और यह पिछला रोग बहुत कठिन नहीं है और इस को अर्थात् हजूज को रतुवत जुजाजिया के रोग में गिनना विचाराधीन है क्यों कि यह रोग आंख के सब पर्दों में होता है (इलाज) सिर के साफ करने के लिये फस्द खोलें और पछने लगवावें और पीन तथा हुकने की दस्त लाने वाली दवाओं से तबियत को खोलें और साधारण सफ़ाई के पीछे आंख के साफ करने के लिये जो चीजें मादे की चूसने और जलाने वाली तथा आंसू निकालने वाली हैं जैसे हरड़, पीपल, प्याज का पानी

सखर, अफसतीन, कसूम के बीज (अमर बेल व आकाश बेल के बीज) औटा कर शर्बत दीनार के साथ देवै और जिस जगह मादा गर्म हो तो कासनी के बीज, मुलहटी, मकोय, मुनक्का बेदाने की और पित्तपापड़ा औटा कर शिकजबीन सादा के साथ देवै और गर्म मादे में गांठ बहुत कम उत्पन्न होती है और तरी पहुचाने के लिये सब्बाजी और खितमी के पत्ते पीस के अण्डे की सफेदी और बनफशा के तेल के साथ मिलाकर आंख में लेप करें और शिपाफे अबियज को लड़की वाली स्त्री के दूध में घिसकर आंख में लगावे और बनफशा का तेल नाक में डाले और जो रस के न पहुचने के कारण से खुश्की हो और रगें भी खाली हों तो तरी पहुचाने में अधिक परिश्रम करें जैसे औरतों का दूध सिर पर दुहें और हलका रुचि अनुसार पथ्य खाने को देवे और तरी पहुचाने वाले तेल नाक में डालना और सिर पर मलना लाभ दायक है। दूसरा यह रोग है कि आंख बिना सूजन के बड़ी होजाय और रोगी को आंख फेरने में देर मालूम हो अर्थात् देर में फेरे और ऐसा संदेह करे कि आंख बाहर निकली पड़ती है और इस कारण से जो आंख बड़ी होजाती है उसका नाम "अर्बी में हजूजुलऐन" अर्थात् आंखका उभरें आना है और आंख उभर आने के २ कारण है एक यह कि जिन रगों में इस रतूवत का रस आता है चौड़ी हो जाय और इस कारण से प्रमाण से अधिक रस पहुचे और उक्त रतूवत इस से तर ही कर और भीग कर अवश्य अपनी जगह से बाहर निकलने लगे और वह आंख निकलना और उभरना जो गले घुटने और चिल्लाने और दर्द जहके समय हो और उसके सिवाय जो दम रुकने से उत्पन्न हो वह भी रगों के चौड़े होनेका एक भेद है और उसका चिन्ह यह है कि आंसू गाढे चेपदार निकलें दूसरा कारण यह है कि जो पर्दे इस रतूवत के इर्द गिर्द है वे इस की आधिकता से मोटे होजांय जैसा कि स्त्रियों के रजोधर्म के बन्द होने का समय का गर्भ काल में होजाता है और यह पिछला रोग बहुत कठिन नहीं है और इस को अर्थात् हजूज को रतूवत जुजाजिया के रोग में गिनना विचाराधीन है क्यों कि यह रोग आंख के सब पर्दों में होता है (इलाज) सिर के साफ करने के लिये फस्द खोलें और पछने लगवावें और पीन तथा झुकने की दस्त लाने वाली दवाओं से तबियत को खोलें और साधारण सफ़ाई के पीछे आंख के साफ करने के लिये जो चीजें मादे की चूसने और जलाने वाली तथा आंसू निकालने वाली हैं जैसे हरड, पीपल, प्याज का पानी

सवर ,अफसतीन, कसूस के बीज (अमर बेल व आकाश बेल के बीज) औटा कर शर्बत दीनार के साथ देवै और जिस जगह माद्दा गर्म हो तो कासनी के बीज, मुलहटी, मकोय, मुनक्का वेदाने की और पित्तपापडा औटा कर शिकञ्जबीन सादा के साथ देवै और गर्म माद्दे में गांठ बहुत कम उत्पन्न होती है और तरी पहुचाने के लिये सब्जाजी और खितमी के पत्त पीरा के अण्डे की सफेदी और बनफशा के तेल के साथ मिलाकर आंख में लेप करें और शियाफे अवियज को लडकी वाली स्त्री के दूध में घिसकर आंख में लगावे और बनफशा का तेल नाक में डालैं और जो रस के न पहुचने के कारण से खुश्की हो और रगें भी खाली हों तो तरी पहुचाने में अधिक परिश्रम करें जैसे औरतों का दूध सिर पर दुहें और हलका रुचि अनुसार पथ्य खाने को देवै और तरी पहुचाने वाले तेल नाक में डालना और सिर पर मलना लाभ दायक है । दूसरा यह रोग है कि आंख बिना सूजन के बडी होजाय और रोगी को आंख फेरने में देर मालूम हो अर्थात् देर में फेरे और ऐसा संदेह करे कि आंख बाहर निकली पडती है और इस कारण से जो आंख बडी होजाती है उसका नाम " अर्बी में हजूजुलऐन " अर्थात् आंखका उभरं आना है और आंख उभर आने के २ कारण हैं एक यह कि जिन रगों में इस रतूबत का रस आता है चौडी हो जाय और इस कारण से प्रमाण से अधिक रस पहुचे और उक्त रतूबत इस से तर ही कर और भीग कर अवश्य अपनी जगह से बाहर निकलने लगे और यह आंख निकलना और उभरना जो गले घुटने और चिल्लाने और दर्द जहके समय हो और उसके सिवाय जो दम रुकने से उत्पन्न हो वह भी रगों के चौडे होने का एक भेद है और उसका चिन्ह यह है कि आंसू गाढे चेपदार निकलें दूसरा कारण यह है कि जो पर्दे इस रतूबत के इर्द गिर्द हैं वे इस की अधिकता से मोटे होजांय जैसा कि स्त्रियों के रजोधर्म के बन्द होने का समय या गर्भ काल में होजाता है और यह पिछला रोग बहुत कठिन नहीं है और इस को अर्थात् हजूज को रतूबत जुजाजिया के रोग में गिनना विचाराधीन है क्यों कि यह रोग आंख के सब पर्दों में होता है (इलाज) सिर के साफ करने के लिये फस्द खोलें और पछने लगावें और चीन तथा झुकने की दस्त लाने वाली दवाओं स तबियत को खोलें और साधारण सफाई के पीछे आंख के साफ करने के लिये जो चीजें माद्दे की चूसने और जलाने वाली तथा आंसू निकालने वाली हैं जैसे हरड, पीपल, प्याज या पानी

सवर ,अफसतीन, कसूस के बीज (अमर वेल व आकाश वेल के बीज) औटा कर शर्वत दीनार के साथ देवै और जिस जगह माद्दा गर्म हो तो कासनी के बीज, मुलहटी, मकोय, मुनक्का वेदाने की और पित्तपापडा औटा कर शिकञ्जबीन सादा के साथ देवै और गर्म माद्दे में गांठ बहुत कम उत्पन्न होती है और तरी पहुचाने के लिये सब्बाजी और खितमी के पत्ते पीस के अण्डे की सफेदी और बनफशा के तेल के साथ मिलाकर आंख में लेप करें और शियाफे अवियज को लडकी वाली स्त्री के दूध में घिसकर आंख में लगावे और बनफशा का तेल नाक में डालें और जो रस के न पहुचने के कारण से खुश्की हो और रगें भी खाली हों तो तरी पहुचाने में अधिक परिश्रम करें जैसे औरतों का दूध सिर पर दुहें और हलका रुचि अनुसार पथ्य खाने को देवै और तरी पहुचाने वाले तेल नाक में डालना और सिर पर मलना लाभ दायक है । दूसरा यह रोग है कि आंख विना सूजन के बडी होजाय और रोगी को आंख फेरने में देर मालूम हो अर्थात् देर में फेरे और ऐसा संदेह करे कि आंख वाहर निकली पडती है और इस कारण से जो आंख वडी होजाती है उसका नाम " अर्बी में हजूजुलऐन " अर्थात् आंखका उभरे आना है और आंख उभर आने के २ कारण है एक यह कि जिन रगों में इस रतूवत का रस आता है चौडी हो जाय और इस कारण से प्रमाण से अधिक रस पहुचे और उक्त रतूवत इस से तर ही कर और भीग कर अवश्य अपनी जगह से बाहर निकलने लगे और यह आंख निकलना और उभरना जो गले घुटने और चिल्लाने और दर्द जहके समय हो और उसके सिवाय जो दम रुकने से उत्पन्न हो वह भी रगा के चौडे होने का एक भेद है और उसका चिन्ह यह है कि आंसू गाढे चेपदार निकलें दूसरा कारण यह है कि जो पर्दे इस रतूवत के इर्द गिर्द हैं वे इस की अधिकता से मोटे होजाय जैसा कि स्त्रियों के रजोधर्म के वन्द होने का समय या गर्भ काल में होजाता है और यह पिछला रोग बहुत कठिन नहीं है और इस को अर्थात् हजूज को रतूवत जुजाजिया के रोग में गिनना विचाराधीन है क्यों कि यह रोग आंख के सब पर्दों में होता है (इलाज) सिर के साफ करने के लिये फस्द खोलें और पछने लगावें और पीने तथा हुकने की दस्त लाने वाली दवाओं से तबियत को खोलें और साधारण सफाई के पीछे आंख के साफ करने के लिये जो चीजें माद्दे की चूसने और जलाने वाली तथा आंसू निकालने वाली हैं जैसे हरड़, पीपल, प्याज या पानी

लगाव को थामते है ढीले होजांय और अवश्य आंख उभर आवे और इस में आंख कुछ भी बढ़ी न होगी परन्तु हजूज अर्थात् आंख के उभर आने से जो रतूवत जजाजिया के तर होजानेसे उत्पन्न होताहै अवश्य आंख बड़ी होजायगी (इलाज) हुजूजे इस्तरखाई (आंख के उभर आने का ढिलढिला होना) का उपाय उससे कर सकते है जो मुतलक इस्तरखा अर्थात् ढिलढिले होने में वर्णन किया गया है और शेष चार रीतियों में कि उन में यह रतूवत जुलेंदिया दायीं तरफ और दूसरे में बायीं तरफ और तीसरे में ऊपर को और चौथ में नीचे की तरफ हट जाय तो २ प्रकार पर है । एक यह है कि जहां यही दाहिने और बाये झुक गई है उस में प्रत्येक चीज जितनी है उस से चौड़ी दिखलाई देती है और दूसरे यह कि जो ऊपर और नीचे को झुक जाय अर्थात् एक आंख की रतूवत ऊंची होजाय और दूसरी की नीची या एक अपनी दशा पर रहे और दूसरी ऊंची या नीची होजाय तो इस दशा में जिस चीज को दोनों आंख से देखे तो वह चीज २ दिखलाई देगी और इस दशा को " हविल " अर्थात् " भेंढापन " कहते हैं और इस रोग वाले को आवल अर्थात् भेंढा कहते है । इस का जुदा वर्णन होगा– ।

❀ दूसरा भेद ❀

यह है कि इस रतूवत की दशा बदल जाय और यह तीन प्रकार पर होता है एक यह है कि रतूवत जुलेंदिया का रंग बदल जाय और अधिक दोष के रंग के अनुसार होजाय अर्थात् लाली या पीलापन या सफेदी या स्याही । और इस रोग में प्रत्येक वस्तु उस रंग की दिखलाई देती है जो इस रतूवत का रंग होगया है । दूसरे यह कि इस रतूवत पर रतूवत अर्थात् तरी या खुश्की रतूवत जजाजिया के संयोग से अधिक होजाय और इसका वर्णन हो चुका है । तीसरे यह कि जुलेंदिया में खुरखुरापन और कड़ापन न आजाय क्या कि असबे मुजव्विफा अर्थात् आंख का पोलदार पट्ठा, जो कि रतूवत जुले दिया को घेरे है और इस पट्ठे में खुरखुरापन आ जाने का यह कारण है कि कोई जलन पैदा करने वाला, अभिरू अजीर्ण कारक, समेट करने वाला और तेज चिरपरा तथा खुश्क दोष दिमाग के पर्दो से इस पट्ठे की तरफ टपक आता है तो जलन के साथ पहले आंसू निकालता है फिर रतूवत में कमी आने के कारण से पट्ठे में खुरखुरापन उत्पन्न कर देता है और इस पट्ठे के खुरखुरापन से रतूवत जुलेंदिया भी खुरखुरी होजातीहै । जानना चाहिए कि

लगाव को थामते है ढीले होजाय और अवश्य आंख उभर आवे और इस में आंख कुछ भी बड़ी न होगी परन्तु हजूज अर्थात् आंख के उभर आने से जो रतूबत जजाजिया के तर होजानेसे उत्पन्न होताहै अवश्य आंख बड़ी होजायगी (इलाज) हुजूजे इस्तरखाई (आंख के उभर आने का ढिलढिला होना) का उपाय उससे कर सकते है जो मुतलक इस्तरखा अर्थात् ढिलढिले होने में वर्णन किया गया है और शेष चार रीतियों में कि उन में यह रतूबत जुलैदिया दायीं तरफ और दूसरे में बांयीं तरफ और तीसरे में ऊपर को और चौथ में नीचे की तरफ हट जाय तो २ प्रकार पर है । एक यह है कि जहां यही दाहिने और बाये झुक गई है उस में प्रत्येक चीज जितनी है उस से चौड़ी दिखलाई देती है और दूसरे यह कि जो ऊपर और नीचे को झुक जाय अर्थात् एक आंख की रतूबत ऊंची होजाय और दूसरी की नीची या एक अपनी दशा पर रहै और दूसरी ऊंची या नीची होजाय तो इस दशा में जिस चीज को दोनों आंख से देखे तो वह चीज २ दिखलाई देगी और इस दशा को " हविल " अर्थात् " भेंढापन " कहते हैं और इस रोग वाले को आवल अर्थात् भेंढा कहते है । इस का जुदा वर्णन होगा— ।

दूसरा भेद

यह है कि इस रतूबत की दशा बदल जाय और यह तीन प्रकार पर होता है एक यह है कि रतूबत जुलैदिया का रंग बदल जाय और अधिक दोष के रंग के अनुसार होजाय अर्थात् लाली या पीलापन या सफेदी या स्याही । और इस रोग में प्रत्येक वस्तु उस रंग की दिखलाई देती है जो इस रतूबत का रंग होगया है । दूसरे यह कि इस रतूबत पर रतूबत अर्थात् तरी या खुश्की रतूबत जजाजिया के संयोग से अधिक होजाय और इसका वर्णन हो चुका है । तीसरे यह कि जुलैदिया में खुरखुरापन और कड़ापन न आजाय क्या कि असबे मुअन्विफा अर्थात् आंख का पोलदार पट्ठा, आधी रतूबत जुलैदिया को घेरे है और इस पट्ठे में खुरखुरापन आ जाने का यह कारण है कि कोई जलन पैदा करने वाला, अधिक अजीर्ण कारक, सफेद करने वाला और तेज चिरपरा तथा खुश्क दोष दिमाग के पर्दों से इस पट्ठे की तरफ टपक आता है तो जलन के साथ पहले आंसू निकालता है फिर रतूबत में गर्मी आने के कारण से पट्ठे में खुरखुरापन उत्पन्न कर देता है और इस पट्ठे के खुरखुरापन से रतूबत जुलैदिया भी खुरखुरी होजातीहै । जानना चाहिए कि

में अधिक दर्द दाबने वाला मालूम हो और आंख को न हिलासके और आंख मैल और आंसुओं से भरी रहे और उसका (इलाज) ऐसा है जैसा कि आंख की सूजन का (इलाज) होता है जैसा रमद अर्थात् आंख के दुखने और सूजजाने में वर्णन करेंगे और रतूबते जजाजिया में धन मादा गिरने से सूजन और घाव होजाता है और उस कारण से रतूबतें जुलैदिया फटजाती है ।

चौथा भेद ।

यह है कि इस रतूबत का प्रमाण कम होजाय और यह दो प्रकार पर है एक यह है कि रतूबते जुलैदिया अपने प्रमाण से बढजाय और उस का कारण रतूबते जुजाजिया का भरना होता है और उस का (चिन्ह) यह है कि सब दीखने वाली चीजें जितनी हों उससे छोटी दिखलाई दें और उसका कारण यह है कि जिस समय रतूबत जुलैदिया बडी होजाय तो दखने वाली उसमें बिखर जायगी और उसके भागों में जो बढगये है छिपजायगी सो इस दशामें अवश्य दिखलाई देनेवाली चीजें छोटी २ दिखलाई देंगी क्योंकि वह अपनी असली राहपर नहीं निकल सकती है और इसका (इलाज) यह है कि भोजन कम करे और देह को मादे से साफकरै । दूसरा यह कि रतूबते जुलैदिया अपने प्रमाण से छोटी होजाय । उसका (चिन्ह) यह है कि देखने वाली चीज अपने प्रमाण से बडी दिखलाई दे उसका कारण यह है कि जिस समय यह रतूबत छोटी होजायगी तो उस समय वह इकठी होकर बलपूर्वक निकलेगी और इस कारण से प्रत्येक चीज अपने प्रमाण से बडी दिखलाइ देगी परन्तु जिस समय यह रतूबत बहुत छोटी होजायगी तो उस समय दृष्टि में निबलता आजायगी ।

पांचवा भेद ।

उसरोग के वर्णन में जो मुख्यकर रतूबत जुलैदिया में उत्पन्न होते हैं यह यह है कि इस रतूबत में केवल सुरखी आजाय और इस कारण से कि सुरखी गदला करदेती है सूरतें न बनसकें जैसा कि चाहिये और जानना चाहिये कि यह सुरखी उस श्रेणी की नहीं है कि खुरखुरापन उत्पन्न करे इसीलिये इस रोगमें खुरखुरे होने के चिन्ह बिल्कुल नहीं हुआ करते परन्तु इतनाही होता है कि सूरत के छापने में खराबी आती है और इस रोगके दो कारण हैं एक यह कि निर्बल रहना या मल के अधिक निक[illegible] मन दे[illegible] [illegible] [illegible] (इलाज) यह है कि देह में और मकारि[illegible] [illegible] या एवन

में अधिक दर्द दानने वाला मालूम हो और आंख को न हिलासके और आंख मैल और आंसुओं से भरी रहे और उसका (इलाज) ऐसा है जैसा कि आंख की सूजन का (इलाज) होता है जैसा रमद अगार् आंख के दूखने और सूजजाने में वर्णन करेंगे और रतूबते जजाजिया मे वन गाढा गिरने से सूजन और घाव होजाता है और उस कारण से रतूबतें छुर्मैदिया फटजाती है ।

चौथा भेद ।

यह है कि इस रतूबत का प्रमाण कम होजाय और यह दो प्रकार पर है एक यह है कि रतूबते जुलैदिया अपने प्रमाण से बढजाय और उस का कारण रतूबते जुजादिया का भरना होता है और उस का (चिन्ह) यह है कि सब दीखने वाली चीजें जितनी हों उससे छोटी दिखलाइ दें और उसका कारण यह है कि जिस समय रतूबत जुलैदिया बडी होजाय तो दखने वाली उसमें बिखर जायगी और उसके भागा में जो बढगये है छिपजायगी तो इस दशामें अवश्य दिखलाई देनेवाली चीजें छोटी २ दिखलाई देंगी क्योंकि दह अपनी असली राहपर नहीं निकल सकती है और इसका (इलाज) यह है कि भोजन कम करे और देह को माद्दे से साफकरे । दूसर यह कि रतूबते जुलैदिया अपने प्रमाण से छोटी होजाय । उसका (चिन्ह) यह है कि देखने वाली चीज अपन प्रमाण से बडी दिखलाई द उसका कारण यह है कि जिस समय यह रतूबत छोटी होजायगी तो उस समय दह इकठ्ठी होकर बलपूर्वक निकलेगी और इस कारण से प्रत्येक चीज अपने प्रमाण स बडी दिखलाइ देगी परन्तु जिस समय यह रतूबत बहुत छोटी होजायगी ता उस समय दृष्टि में निबलता आजायगी ।

पांचवा भेद ।

उसरोग के वर्णन में जो मुख्यपर रतूबत जुलैदिया में उत्पन्न होते है यह यह है कि इस रतूबत में केवल खुश्की आजाय और इस कारण स कि खुश्की गदला करदेती है सूरतें न बनसके जैसा कि चाहिये और जानना चाहिये कि यह खुश्की उस श्रेणी की नहीं है कि खुरखुरापन उत्पन्न करे इसीलिए इस रोगमें खुरखुरे होने के चिन्ह बिल्कुल नहीं हुआ करते परन्तु इतनाही होता है कि सूरत के छापने म खराबी आती है और इस रोगके दो कारण हैं एक यह कि निर्बल रहना या मल के अधिक निक[illegible] मन दे[illegible] [illegible] इसका (इलाज) यह है कि दह में और प्रकार[illegible] [illegible] या रवन

और दूसरे पर्दों में उत्पन्न नहीं होती सो वह तशन्नुज और तकल्लुस अर्थात् इस दर्द में खिचजाना और सिमटना उत्पन्न होता है उसका चिन्ह यह है कि दृष्टि निर्बल होजाय और आंख फिरने लगे तथा बीमार यह जाने कि आंख में कांटा चुभता है या कोई चीज आंख को खींचती है और भूख की दशा में और सूरज के प्रकाश में और दुपहर के समय अधिक होजाती है (इलाज) जो तशन्नुज खुश्की के कारण होतो प्रकृति म तरी पहुचाने के लिये लड़की वाली स्त्री का दूध, बनफशा का तेल और लवी घीया का तेल नाक में डालें और जो चीजें तर और अगों को नर्म करती हों जैसे बनफशा, खित मी, कदू और तिल के पत्ते पानी में औटाकर उससे भफारा देवे और सब तरी करने वाले उपाय जिनका बहुधा वर्णन होचुका है काम में लावे । और जो तशन्नुज भरजाने से उत्पन्न हुआ होतो यारजात का सेवन करे और खुश्की लाने वाले कुल्लों का प्रयोग करे और सफाई के पीछे आंसू निकालने वाला सुरमा आंख में लगावे ॥

सातवा प्रकर्ण

रतूबत बैजिया अर्थात् आख की रतूबत के रोगों का वर्णन

यह रतूबत रग सफाई और असलियतमें अडे की सफेदी की तरत की है इस लिये इसका नाम बैजिया रक्खा है और इस रतूबत का रतूबत जलीदिया के आगे उत्पन्न होने का यह लाभ है कि तेज प्रकाश रतूबत जुलै-दिया पर धीरे २ पड़े और उसके कारण रतूबत जुलैदिया कष्ट से और ती-क्ष्ण प्रकाश खुश्की और गर्म दवा के कष्ट और खुश्की स बची रहे और इस रतूबत में तीन रोग उत्पन्न होते हैं एक यह कि रतूबत प्रमाण में बढ जावे । दूसरे यह कि प्रमाण में कम होजाय। तीसरे यह कि उसमें गदला पन और गाढापन आजाय इस लिये इन तीनों को तीन भेदों में वर्णन करते हैं।

पहला भेद-प्रमाण के बढ जाने का वर्णन ।

इस के बढ जाने की हानि प्रगट है यद्यपि थोडीसी अधिकता हो परन्तु इस कारण से कि भाग बढजाने से सफाई नहीं रहती है इस लिये रतूबत जली दिया पर सूरतों के छपने में हानि होती है और सूर्य की किरणों के निकलने पर प्राकृतिक मार्ग से उपद्रव आता है इस में आश्चर्य नहीं कि प्रमाण बहुत बढजाय क्योंकि इस दशा में तो दृष्टि बिल्कुल जाती रहती है और अंधेरा आजाता है और सूरतोंमें और रतूबत और जलीदिया के बीच में इस रतूबतके गिरने का

और दूसरे पर्दों में उत्पन्न नहीं होती सो वह तशन्नुज और तकल्लुस अर्थात् इस दर्द में खिचजाना और सिमटना उत्पन्न होता है उसका चिन्ह यह है कि दृष्टि निर्बल होजाय और आंख फिरने लगे तथा बीमार यह जाने कि आंख में कांटा चुभता है या कोई चीज आंख को खींचती है और भूख की दशा में और सूरज के प्रकाश में और दुपहर के समय अधिक होजाती है (इलाज) जो तशन्नुज खुश्की के कारण होतो प्रकृति म तरी पहुचाने के लिये लड़की वाली स्त्री का दूध, बनफशा का तेल और लंबी घीया का तेल नाक में डालें और जो चीजें तर और अंगों को नर्म करती हों जैसे बनफशा, खित मी, कदू और तिल के पत्ते पानी में औटाकर उससे भफारा देवे और सब तरी करने वाले उपाय जिनका बहुधा वर्णन होचुका है काम में लावे । और जो तशन्नुज भरजाने से उत्पन्न हुआ होतो यारजात का सेवन करे और खुश्की लाने वाले कुल्लों का प्रयोग करे और सफाई के पीछे आंख निकालने वाला सुरमा आंख में लगावे ॥

सातवा प्रकर्ण

रतूवत वैजिया अर्थात् आख की रतूवत के रोगों का वर्णन

यह रतूवत रग सफाई और असलियतमें अडे की सफेदी की सूरत की है इस लिये इसका नाम वैजिया रक्खा है और इस रतूवत का रतूवत जलीदिया के आगे उत्पन्न होने का यह लाभ है कि तेज प्रकाश रतूवत जुलै- दिया पर धीरे २ पड़े और उसके कारण रतूवत जुलैदिया कष्ट से और ती- क्ष्ण प्रकाश खुश्की और गर्म हवा के कष्ट और खुश्की स बची रहै और इस रतूवत में तीन रोग उत्पन्न होते हैं एक यह कि रतूवत प्रमाण में बढ जावे । दूसरे यह कि प्रमाण में कम होजाय । तीसरे यह कि उसमें गदला पन और गाढापन आजाय इस लिये इन तीनों को तीन भेदों में वर्णन करते हैं।

पहला भेद-प्रमाण के बढ जाने का वर्णन ।

इस के बढ जाने की हानि प्रगट है यद्यपि थोडीसी अधिकता हो परन्तु इस कारण से कि भाग बढजाने से सफाई नहीं रहती है इस लिये रतूवत जली दिया पर सूरतों के छपने में हानि होती है और सूर्य की किरणों के निकलने पर प्राकृतिक मार्ग से उपद्रव आता है इस में आश्चर्य नहीं कि प्रमाण बहुत बढजाय क्योंकि इस दशा में तो दृष्टि बिल्कुल जाती रहती है और अंधेरा आजाता है और सूरतोंमें और रतूवत और जलीदिया के बीच में इस रतूवतके गिरने का

में इसका वर्णन कियागया है इस किताब का बनाने वाला लिखता है कि सच तो यह है कि जिस समय वैजिया कम होजाती है तो खुश्की के कारण इकट्ठी होजाती है और इस में दो बातें अवश्य होजाती हैं एक यह कि वर्णन की हुई रतूवत के सब भाग इकट्ठे होजातेहै इस दशा में दृष्टि बिलकुल जाती रहती है और कुछ नहीं दिखलाई देता। दूसरे यह कि सब इकट्ठे न हों किन्तु कुछ इकट्ठे हों और कुछ न हों और यह भी दो प्रकार पर है कि उसकी एक जगह में हों दूसरे यह कि कई जगह में हों जो रतूवत के भाग एक ही जगह इकट्ठे होगये हैं तो बीमार को प्रत्येक वस्तु में गढा और अंधेरा दीखताहै और जो रतूवत के भाग कई जगह में सुकडगये हों तो जिस रीति पर भाग इकट्ठे हुएहै उसी के अनुसार प्रत्येक वस्तु में गढे २ दिखलाई देते है और ये वातें इस रतूवत के गदलेपनमें भी दिखलाई देती है जैसा आंख में पानी उतर आने के वर्णन में कहेंगे परन्तु भागों का इकट्ठा होना और वात है क्योंकि व खुश्की के भाग इकट्ठे नहीं होते इस वास्ते आंख का छोटा होजाना और प्रकृति के अनुसार नींद में कष्ट आना इस रतूवत के भागों के इकट्ठे होने में हुआ करता है इस कारण से भी इन दोनों में अन्तर कर सकते है यद्यपि दूसरे अन्तर भी बहुत हैं (इलाज) देह को पुष्ट करने का यत्न करैं और जो वस्तु खुश्की को नष्ट करे और रतूवत उत्पन्न करै उसको काम में लावे उत्तम उत्तम भोजन करै और परिश्रम और मिहनत छोडदे तथा तरी पहुचाने वाले पानी से हमेशा न्हाय और लडकी वालियों का दूध और अंड का सफेदी नाक में डालें। और बनफशा तथा नीलोफर सूघे और सिरको तरी पहुचाने वाले तेलों से तर रक्खे और दिमाग में बढाने वाली वस्तु काम में लावें

तीसरा भेद रतूवते वैजिया के गदला और गाढा होजाने का वर्णन।

इसकी यह हानि है कि दृष्टि के काम में कष्ट आजाता है जो थोडासा गदलापन होगा तो दूरकी वस्तु कभी दिखलाई नहीं देंगी और जो गाढापन और गदलापन अधिकता से हो तो पास की वस्तु भी दिखलाई न देगी और यह दो कारण से खाली नहीं एक यह कि इस रतूवत के सब भाग गदले होजांय इस दशामें दृष्टि बिलकुल जाती रहेगी। दूसरे यह कि इस रतूवत के कुछ भाग गदले होजांय। यह चार प्रकार पर है एक यह कि इस रतूवत के बीच में जो साम्हने है गदली होजाय और यह गदलापन आंख की पुतली

में इसका वर्णन कियागया है इस किताब का बनाने वाला लिखता है कि सच तो यह है कि जिस समय वैजिया कम होजाती है तो खुश्की के कारण इकट्ठी होजाती है और इस में दो बातें अवश्य होजाती हैं एक यह कि वर्णन की हुई रतूबत के सब भाग इकट्ठे होजातेहै इस दशा में दृष्टि बिलकुल जाती रहती है और कुछ नहीं दिखलाई देता। दूसरे यह कि सब इकट्ठे न हों किन्तु कुछ इकट्ठ हों और कुछ न हों और यह भी दो प्रकार पर है कि उसकी एक जगह में हों दूसरे यह कि कई जगह में हों जो रतूबत के भाग एक ही जगह इकट्ठे होगये हैं तो बीमार को प्रत्येक वस्तु में गढा और अंधेरा दीखताहै और जो रतूबत के भाग कई जगह में सुकडगये हों तो जिस रीति पर भाग इकट्ठे हुएहै उसी के अनुसार प्रत्येक वस्तु में गढे २ दिखलाई देते है और ये बातें इस रतूबत के गदलेपनमें भी दिखलाई देती हैं जैसा आंख में पानी उतर आने के वर्णन में कहेंगे परन्तु भागों का इकट्ठा होना और बात है क्योंकि व खुश्की के भाग इकट्ठे नहीं होते इस वास्तें आंख का छोटा होजाना और प्रकृति के अनुसार नींद में कष्ट आना इस रतूबत के भागों के इकट्ठे होने में हुआ करता है इस कारण से भी इन दोनों में अन्तर कर सकते है यद्यपि दूसरे अन्तर भी बहुत हैं (इलाज) देह को पुष्ट करने का यत्न करें और जो वस्तु खुश्की को नष्ट करें और रतूबत उत्पन्न करें उसको काम में लावे उत्तम उत्तम भोजन करें और परिश्रम और मिहनत छोडदे तथा तरी पहुचाने वाले पानी से हमेशा न्हाय और लडकी वालियों का दूध और अंड का सफेदी नाक में डालें। और बनफशा तथा नीलोफर सूंघे और सिरको तरी पहुचाने वाले तेलों से तर रक्खे और दिमाग में बढाने वाली वस्तु काम में लावें

तीसरा भेद रतूबते वैजिया के गदला और गाढा होजाने का वर्णन।

इसकी यह हानि है कि दृष्टि के काम में कष्ट आजाता है जो थोडासा गदलापन होगा तो दूरकी वस्तु कभी दिखलाई नहीं देंगी और जो गाढापन और गदलापन अधिकता से हो तो पास की वस्तु भी दिखलाई न देगी और यह दो कारण से खाली नहीं एक यह कि इस रतूबत के सब भाग गदले होजांय इस दशामें दृष्टि बिलकुल जाती रहेगी। दूसरे यह कि इस रतूबत के कुछ भाग गदले होजांय। यह चार प्रकार पर है एक यह कि इस रतूबत के बीच में जो साम्हने है गदली होजाय और यह गदलापन आंख की पुतली

आजाती है और गदला होने का चिन्ह प्रगट है (इलाज) दोषों के मुलायम करने का उपाय करे और जो कि नजूलुलमाय के आरंभ में लाभदायक है आवश्यकता के अनुसार यहां भी काम में लावें और इस रतूवत के गदले होने का वर्णन दृष्टि की निर्बलता में भी वर्णन किया जायगा।

॥ आठवां प्रकरण ॥

ॐ आंख के इनबिया पर्दे के रोगों का वर्णन ॐ

यह आंख का पर्दा गाढा है और रोशनी के निकलने के लिये इस पर्दे के बीच में रतूवत जुलेदिया के सामने एक छेद है जैसा छेद कि अंगूर में होता है जब कि उसको गुच्छे से जुदा करते हैं। क्योंकि यह इनब अर्थात् अंगूर की सी सूरत का होता है इस कारण से इस आंख के पर्दे का नाम इनबिया रक्खा गया है और इस का असली रंग हकीम जालीनूस के मत से आसमानी है और हकीम अरस्तू के मत से काला है और कोई २ हकीम इस पर्दे को मुशीमिया पर्दे के भागों में जानते हैं जुदा पर्दा नहीं मानते हैं और शबकिया इनकबूतिया और मुल्तहिमा पर्दों को भी ऐसाही जानते हैं। इस दशा में कुल तीन पर्दे गिनते हैं। अब जानना चाहिये कि इनबिया पर्दे का बाहर का भाग कड़ा है क्योंकि इसमें ऊपर को करनियां पर्दा लगा हुआ है और उस छूता है और भीतर की ओर यह मुलायम और नर्म है और उसमें महीन रेशे और कुंचट स्पंज की तरह पड़े हुए हैं और इस तरफ रतूबतें बैजिया से मिला हुआ है। उसकी सलवट और रेशों में तीन लाभ हैं एक यह कि जब पानी उतर आता है तब आंख का बनाने वाला इस पानी को रेशों के नीचे दबादेता है और वह इस पानी को ठहरालेता है आंख के छेद के साम्हने नहीं आने देता है यदि इस में कोई कारण बाधित नहो। दूसरे यह कि जो फांक आंख पर गिरते हैं वह रेशों और सिलवटों में ठहर जाते हैं और आंख की पुतली के छेद में पहुंचते हैं। तीसरे यह कि रतूबते बैजिया इन सलवटों के कारण से अपनी जगह ठहरी रहती है बहने नहीं पाती है। इस पर्दे में ५ रोग मुख्य होते हैं पहला घाव, दूसरा मवाद का भरजाना, तीसरा अपनी जगह से हटना, चौथा फैलना, पांचवें सुकड़ना इन सब का अलग२ वर्णन किया जाता है।

ॐ प्रथम घाव का वर्णन ॐ

जो घाव इस रतूबत में पैदा होता है उसका यह चिन्ह है कि पहले

आजाती है और गदला होने का चिन्ह प्रगट है (इलाज) दोषों के मुलायम करने का उपाय करे और जो कि नजूलुलमाय के आरभ में लाभदायक है आवश्यकता के अनुसार यहां भी काम में लावें और इस रतूबत के गदले होने का वर्णन दृष्टि की निर्बलता में भी वर्णन किया जायगा।

॥ आठवां प्रकरण ॥

ॐ आंख के इनबिया पर्दे के रोगों का वर्णन ॐ

यह आंख का पर्दा गाढा है और रोशनी के निकलने के लिये इस पर्दे के बीच में रतूबत जुलेदिया के सामने एक छेद है जैसा छेद कि अंगूर में होता है जब कि उसको गुच्छे से जुदा करते हैं। क्योंकि यह इनब अर्थात् अंगूर की सी सूरत का होता है इस कारण से इस आंख के पर्दे का नाम इनबिया रक्खा गया है और इस का असली रंग हकीम जालीनूस के मत से आसमानी है और हकीम अरस्तू के मत से काला है और कोई२ हकीम इस पर्दे को मुशीमिया पर्दे के भागों में जानते हैं जुदा पर्दा नहीं मानते हैं और शबकिया इनकबूतिया और मुल्तहिमा पर्दों को भी ऐसाही जानते हैं। इस दशा में कुल तीन पर्दे गिनते हैं। अब जानना चाहिये कि इनबिया पर्दे का बाहर का भाग कड़ा है क्योंकि इसमें इधर को करनियां पर्दा लगा हुआ है और उस छूता है और भीतर की ओर यह मुलायम और नर्म है और उसमें महीन रेशे और सुकड़ स्पंज की तरह पड़े हुए हैं और इस तरफ रतूबते बैजिया से मिला हुआ है। उसकी सलवट और रेशों में तीन लाभ हैं एक यह कि जब पानी उतर आता है तब आंख का बनाने वाला इस पानी को रेशों के नीचे दबादेता है और वह इस पानी को ठहरालेता है आंख के छेद के साम्हने नहीं आने देता है यदि इस में कोई कारण बाधित नहो। दूसरे यह कि जो फांक आंख पर गिरते हैं वह रेशों और सिलवटों में ठहर जाते हैं और आंख की पुतली के छेद में पहुंचते हैं। तीसरे यह कि रतूबते बैजिया इन सलवटों के कारण से अपनी जगह ठहरी रहती है बहने नहीं पाती है। इस पर्दे में ५ रोग मुख्य होते हैं पहला घाव, दूसरा मवाद का भरजाना, तीसरा अपनी जगह से हटना, चौथा फैलना, पांचवें सुकड़ना इन सब का अलग२ वर्णन किया जाता है।

ॐ प्रथम घाव का वर्णन ॐ

जो घाव इस रतूबत में पैदा होता है उसका यह चिन्ह है कि पहले

मा के साथ मुख्य है वह असबे मुजाफ़िफा का चौडा होना है जैसे कि वर्णन किया जायगा और इस पदे में रतूबत के भग्जान का यह (चिन्ह) है कि दृष्टि निर्बल होजाती है, एक आंख दूसरी से बडी दिखलाई देती है और एक दशा खिचावट के सदृश आंख में पाई जाती है और एक आंख दूसरी आंख से इस समय अधिक हो गई कि केवल आंख भरी हुई हो या दोनों भरी हुई हो परन्तु एक में दूसरी से अधिक हो (इलाज) गोलियां, याग्जात और कुल्लो से मल को निकाले और गाढी तर वस्तु देवे जैसे भेड का मांस आदि सफाई के पीछे और भरी रतूबत के कम होजाने पर आंख की रतूबत को खुश्क और नष्ट करने वाली दवाओं को आंख में लगावे जिस से शेष मल निकल जाय और जो इस काम म आता है वह सौंफ या पानी शहद, हींग, कालीमिरच, सुकबीनज (एक किस्म का गोंद है) उश्क (हिन्दी छरेला) और ऐसी ही अन्य वस्तु हैं ॥

तीसरा भेद इनबिया पर्दे के अपनी जगह से हटजाने का वर्णन ।

इस के दो कारण हैं एक यह कि इस पर्दे में या इस के पास के पर्दों में सूजन होजाय और इस कारण से यह पर्दा अपनी जगह से हट जाय इसका यह चिन्ह है कि आंख में भारीपन और दर्द हो, आंख निर्बल और इस कारण से इनबिया का छेद रतूबत जुलेदिया के सामने से हट जाय और प्रत्येक वस्तु तिरछी दिखलाई दे और ढला बाहर आवे और आंख का प्रमाण बढजाने से कि सूजन के कारण से यह बातें आवश्यकीय हैं पलक आपस में न मिलें और आंख में ऐसा मालूम हो कि पर्दे के दो भाग होगये हैं एक तो वैसाही साफ अपनी असली दशा पर रहे और दूसरे में गदलापन आ गया हो फिर जो अपनी दाहिनी ओर से हट गया हो तो बायीं तरफ की आधी करनिया में गदलापन प्रकट होगा और जो इस के विरुद्ध हो तो विरुद्ध प्रकट होगा (इलाज) उचित दस्तावर दवाएँ देवे और जो आवश्यकता समझे तो फस्द खोले और देह की सफाई के पीछे मुख्य अंग से मल निकालने के लिये शीयफ और आंसू निकालने वाली दवा आंख में लगावे और इन बातों का वर्णन इस पर्दे के भर जाने में किया गया है और बाहर की तरफ से भी ऐसेही उपाय करे कि अपनी जगह से हट जाने और बडी होजाने को लाभ दायक हो और इस का उपाय यह है कि एक टुकडा सीसे या रूपे का आंख में पर के बराबर उस का टोपी की सूरत का बना देवे और उसके बीचो बीच में छेद करदे फिर उस टोपी को पट्टियों में इस तरह लपेटे कि उसका छेद वैसा ही खुला रहे और

मा के साथ मुख्य है वह असबे मुजाफिफा का चौड़ा होना है जैसे कि वर्णन किया जायगा और इस पर्दे में रतूबत के भरजान का यह (चिन्ह) है कि दृष्टि निर्बल होजाती है, एक आंख दूसरी से बड़ी दिखलाई देती है और एक दशा खिचावट के सदृश आंख में पाई जाती है और एक आंख दूसरी आंख से इस समय अधिक हो गई कि केवल आंख भरी हुई हो या दोनों भरी हुई हों परन्तु एक में दूसरी से अधिक हो (इलाज) गोलियां, गरगरात और कुल्लों से मल को निकाले और गाढ़ी तर वस्तु देवे जैसे भेड़ का मांस आदि सफाई के पीछे और भरी रतूबत के कम होजाने पर आंख की रतूबत को खुश्क और नष्ट करने वाली दवाओं को आंख में लगावे जिस से शेष मल निकल जाय और जो इस काम में आता है वह सौंफ का पानी शहद, हींग, कालीमिरच, सुकबीनज (एक किस्म का गोंद है) उश्क (हिन्दी छरेला) और ऐसी ही अन्य वस्तु हैं ॥

तीसरा भेद इनबिया पर्दे के अपनी जगह से हटजाने का वर्णन ।

इस के दो कारण हैं एक यह कि इस पर्दे में या इस के पास के पर्दों में सूजन होजाय और इस कारण से यह पर्दा अपनी जगह से हट जाय इसका यह चिन्ह है कि आंख में भारापन और दर्द हो, आंख निबल और इस कारण से इनबिया का छेद रतूबत जुलैदिया के साम्हने से हट जाय और प्रत्येक वस्तु तिरछी दिखलाई दे और ढेला बाहर आवे और आंख का प्रमाण बढ़जाने से कि सूजन के कारण से यह बातें आवश्यकीय हैं पलक आपस में न मिलें और आंख में ऐसा मालूम हो कि पर्दे के दो भाग होगये हैं एक तो वैसाही साफ अपनी असली दशा पर रहे और दूसरे में गदलापन आ गया हो फिर जो अपनी दाहिनी ओर से हट गया हो तो बाईं तरफ की आधी पुतलियों में गदलापन प्रकट होगा और जो इस के विरुद्ध हो तो विरुद्ध प्रकट होगा (इलाज) उचित दस्तावर दवाएँ देवे और जो आवश्यकता समझे तो फस्द खोले और देह की सफाई के पीछे मुख्य अंग से मल निकालने के लिये शीयाफ और आंसू निकालने वाली दवा आंख में लगावे और इन बातों का वर्णन इस पर्दे के भर जाने में किया गया है और बाहर की तरफ से भी ऐसेही उपाय करे कि अपनी जगह से हट जाने और बड़ी होजाने को लाभ दायक हो और इस का उपाय यह है कि एक टुकड़ा सींग या लकड़ी आंख के बराबर के उस का टोपी की सूरत का बना लेवे और उसके बीच बीच में छेद करदे फिर उस टोपी को गद्दियों में इस तरह लपेटे कि उसका छेद वैसा ही खुला रहे और

मुल्तहिमा पर्दों को सलबिया के भागों में से गिनते है और आंखों में सब दो पर्दे मानते हैं और इस पद में होने वाले नौ रोग प्रधान है यथा एक खशूनत, दूसरे नत्र, तीसरे शकाक, चौथे कराह, पांचवें व्याज, छटे सरतान, सातवें कम्मू, आठवें सुरा, और नवें मिदा। शकाक अर्थात् फटजाने के २ भेद हैं और शेप आठों को हम अलग अलग वर्णन करते हैं ॥

❋ खशूनत का वर्णन ❋

करानिया पर्दे में जो कठोरता खरदरापन उत्पन्न हो जाता है इसके तीन कारण हैं एक यह कि इस में खुश्की आ जाने के कारण से जो रतूवत कि अग के छेदों में भरी रहती है और उसके ऊपरी भाग को साफ रखती है नष्ट होजाय और ऊपरी भाग अपने किसी भाग के ऊचे और नीचे रहने से बराबर न रहे और इस की हानि प्रकट है कि सफाई के नष्ट होजाने से प्रकाश और अन्य सूरतों के ग्रहण करने में अन्तर पडता है। दूसरे यह कि तेज दोप या खारी मवाद इस पर्दे पर गिरे और इतनी तेजी और खारापन से इस पर्दे का छीले जैस सूखी खुजली में खाल छिल जाती है। तीसरे तीक्ष्ण दवाओं के लगाने से इस पदे की प्रकृति बदल जाय और खरखरापन उत्पन्न होजाय और इस पर्दे में खुरखुरे होने का यह चिन्ह है कि आदमी आख खोलने और बन्द करने के समय संदेह करे कि उसका ऊपरी पलक किसी खुरखुरी चीज पर लग कर जाता है और पलक के लगने से कष्ट पहुच कर आंसू निकल आवे। यह (चिन्ह) मुख्य इस रोग का नहीं हो सकता है क्यों कि पलकों के नीचे दाने निकल आने में और झपकाने में पलक किसी खुरखुरी चीज से रगडता हुआ मालूम होता है और इस रगडने के कारण आंसू भी इस में निकल आते ह परन्तु पर्दे करानियां में जलन और पलकों में दर्द नहीं होता है, यह बात पलका में दाने निकल आने के विरुद्ध है जिसमे उसम जलन और पलकों में दर्द अवश्य होता है और खुश्की खुरखुरापन का कारण उत्पन्न करने वाली है औरों को भी दिखलाई दे और देखने से दिखलाई दे और जिस कारण से कि हो पहले उपाय उसको प्रकट करते है (इलाज) चाहे किसी कारणसे हो प्रकृति के बदलने के लिये तरी पहुचानेवाली दवाएँ काम में लावें जिनसे खुरखुरा पन दूर होजाय टीस और जलन थमजाय फिर जो यह नमकीन या तेज दोप के कारण हो तो बनफशा औटाकर उस में अमलतास का गूदा और तुरञ्जबीन घोल कर पिलावे जिससे कि माद्दा निकलजाय और सीसे का मैल आंखमें लगावे क्योंकि

मुल्तहिमा पर्दों को सलबिया के भागों में से गिनते है और आंखों में सब दो पर्दे मानते हैं और इस पर्द में होने वाले नौ रोग प्रधान है यथा एक खशूनत, दूसरे नतू, तीसरे शक़ाक, चौथे कराह, पांचवें ब्याज, छटे सरतान, सातवें कम्मू, आठवें सुरा, और नवें मिद्दा। शक़ाक अर्थात् फटजाने के २ भेद हैं और शेष आठों को हम अलग अलग वर्णन करते हैं॥

❋ खशूनत का वर्णन ❋

करानिया पर्दे में जो कठोरता खरदरापन उत्पन्न हो जाता है इसके तीन कारण हैं एक यह कि इस में खुश्की आ जाने के कारण से जो रतूवत कि अग के छेदों में भरी रहती है और उसके ऊपरी भाग को साफ रखती है नष्ट होजाय और ऊपरी भाग अपने किसी भाग के ऊचे और नीचे रहने से बराबर न रहे और इस की हानि प्रकट है कि सफाई के नष्ट होजाने से प्रकाश और अन्य सूरतों के ग्रहण करने में अन्तर पड़ता है। दूसरे यह कि तेज दोष या खारी मवाद इस पर्दे पर गिरे और इसनी तेजी और खारापन से इस पर्दे या छीले जैस सूखी खुजली में खाल छिल जाती है। तीसरे तीक्ष्ण दवाओं के लगाने से इस पर्दे की प्रकृति बदल जाय और खरखरापन उत्पन्न होजाय और इस पर्दे में खुरखुरे होने का यह चिन्ह है कि आदमी आख खोलने और बन्द करने के समय संदेह करे कि उसका ऊपरी पलक किसी खुरखुरी चीज पर लग कर जाता है और पलक के लगने से कष्ट पहुच कर आंसू निकल आवे। यह (चिन्ह) मुख्य इस रोग का नहीं हो सकता है क्यों कि पलकों के नीचे दाने निकल आने में और झपकाने में पलक किसी खुरखुरी चीज से रगड़ता हुआ मालूम होता है और इस रगड़ने के कारण आंसू भी इस में निकल आते ह परन्तु पर्दे करानियां में जलन और पलकों में दर्द नहीं होता है, यह बात पलकों में दाने निकल आने के विरुद्ध है जिसमें उसम जलन और पलकों में दर्द अवश्य होता है और खुश्की खुरखुरापन का कारण उत्पन्न करने वाली है औरों को भी दिखलाई दे और देखने से दिखलाई दे और जिस कारण से कि हो पहले उपाय उसको प्रकट करते है (इलाज) चाहे किसी कारणसे हो प्रकृति के बदलने के लिये तरी पहुचानेवाली दवाएं काम में लावें जिनसे खुरखुरा पन दूर होजाय टीस और जलन थमजाय फिर जो यह नमकीन या तेज दोष के कारण हो तो बनफशा औटाकर उस में अमलतास का गूदा और तुरजबीन घोल कर पिलावे जिससेकि माद्दा निकलजाय और सीसे का मैल आखमें लगावे क्योंकि

पांचवां और छटा भेद।

घाव और सफेदी जो इस पर्दे में उत्पन्न होती है उनका भी अलग २ प्रकरणों में वर्णन किया जायगा

सातवां भेद।

सरतान करनियां (कडी सूजन) कि यह वादी जिसमें पित्त मिला हुआ हो उसके कारण से इसपर्दे में उत्पन्न होजाय और उसका (चिन्ह) यह है कि दर्द अधिकता के साथ हो और आंखों की रगों में खिंचावट माळूम हो और सूजन के रंग में लाली स्याही लिये हुए प्रगट हो और चुभन के साथ दर्द कनपटियों तक पहुचे सिर में दर्द से बडा कष्ट हो और खाने की चाह न हो और यद्यपि यह रोग इलाज से नहीं जाता है परन्तु जिन उपायों से दर्द और रोग ठहर जांय वह किये जांय जिससे और बडे २ कष्ट उत्पन्न न होने पावें वह उपाय यह हैं कि फसद खोले और शक्ति के अनुसार रुधिर निकाले और तबियत को माउलजुबन से भी नर्म करें और जिस समय मादे में जलन प्रगटहो और दर्द बढजायतो शियाफे अंडे की सफदी मिलाकर आंखमें डाले और खितमीखुब्बाजी और मकोय की पत्ती कूटकर रोगन बनफसा में मिलाकर लेप कर देवे और तेज दवाए कभी न लगावे क्योंकि इन से ऐसा कष्ट होता है जो कदापि सहा नहीं जा सकता है

आठवा भेद करनियां की फुन्सियों का वर्णन।

जानना चाहिये कि कभी इस पर्दे की चारों तहों में फुन्सी का मादा इकठ्ठा होजाता है फिर बाहरकी सतहमें फुन्सियां होजातीहैं और इन फुन्सियों की दशा अर्थात् रंग और दर्द आदि उस तरह अलग २ होंगे जैसा कि मादा कम या अधिक या बुरा होगा जैसे मादा थोडा और मीठा होगा तो दर्द बहुतकम होगा और यदि मादा बहुत पतला और तेज होगातो दर्द अधिकता से होगा और मादे की जगह का अलग २ होना इस तरह पर होता है कि जो फुन्सी बाहर की तहमें होती है वह साफ और काली दिखलाई देती है और जो फुन्सियां दूसरी और तीसरी तह के नीचे हैं उनका ऐसा रंग नहीं होता क्योंकि इनबिया पर्दे की परछाई उनमें नहीं पडती है और वह जो तीसरी तह के नीचे है सफेद दिखलाई देगी और जो दूसरी तह के नीचे है काली है वह स्याही और सफेदी में मध्यम श्रेणी की होगी

पांचवां और छटा भेद ।

घाव और सफेदी जो इस पर्दे में उत्पन्न होती है उनका भी अलग २ प्रकरणों में वर्णन किया जायगा

सातवां भेद ।

सरतान करनियां (कड़ी सूजन) कि यह वादी जिसमें पित्त मिला हुआ हो उसके कारण से इसपर्दे में उत्पन्न होजाय और उसका (चिन्ह) यह है कि दर्द अधिकता के साथ हो और आंखों की रगों में खिंचावट मालूम हो और सूजन के रंग में लाली स्याही लिये हुए प्रगट हो और चुभन के साथ दर्द कनपटियों तक पहुंचे सिर में दर्द से बड़ा कष्ट हो और खाने की चाह न हो और यद्यपि यह रोग इलाज से नहीं जाता है परन्तु जिन उपायों से दर्द और रोग ठहर जांय वह किये जांय जिससे और बड़े २ कष्ट उत्पन्न न होने पावें वह उपाय यह हैं कि फ़सद खोले और शक्ति के अनुसार रुधिर निकाले और तबियत को माउलजुबन से भी नर्म करें और जिस समय मादे में जलन प्रगटहो और दर्द बढजायतो शियाफे अंडे की सफदी मिलाकर आंखमें डाले और खितमीखुब्बाजी और मकोय की पत्ती कूटकर रोगन बनफ़्शा में मिलाकर लेप कर देवे और तेज दवाएं कभी न लगावे क्योंकि इन से ऐसा कष्ट होता है जो कदापि सहा नहीं जा सकता है

आठवा भेद करनियां की फुन्सियों का वर्णन ।

जानना चाहिये कि कभी इस पर्दे की चारों तहों में फुन्सी का मादा इकठ्ठा होजाता है फिर बाहरकी सतहमें फुन्सियां होजातीहैं और इन फुन्सियों की दशा अर्थात् रंग और दर्द आदि उस तरह अलग २ होंगे जैसा कि मादा कम या अधिक या बुरा होगा जैसे मादा थोड़ा और मीठा होगा तो दर्द बहुतकम होगा और यदि मादा बहुत पतला और तेज होगातो दर्द अधिकता से होगा और मादे की जगह का अलग २ होना इस तरह पर होता है कि जो फुन्सी बाहर की तहमें होती है वह साफ और काली दिखलाई देती है और जो फुन्सियां दूसरी और तीसरी तह के नीचे हैं उनका ऐसा रंग नहीं होता क्योंकि इनबिया पर्दे की परछाई उनमें नहीं पड़ती है और वह जो तीसरी तह के नीचे है सफेद दिखलाई देगी और जो दूसरी तह के नीचे है काली है वह स्याही और सफेदी में मध्यम श्रेणी की होगी

होती है (इलाज) जो दवा सामान्य रीति से पकाकर निकालती है उन को काम में लावे जैसे जरूरे असफर को स्त्रियों के दूध वा मेथी के पानी वा अलसी के कुआव में मिलाकर आंख में लगावे तथा मेथी और अकलीलुल मलिक के गुनगुने पानी से थोडी थोडी देर में आंख को सेके और पीप को निकालने और सुखाने के लिये रूपामक्खी जो सोहन मक्खी का एक भेद है और चांदी का मैल बारीक करके आंखोंमें डाले यह दोनों चीजें इस विषय में अद्वितीयहैं। जानना चाहिये कि जब इन उपायों से पीप न निकले उस समय दस्तकारी की तरफ आरूढ होवे और उस की (रीति) यह है कि पर्दे करनियां को स्याही के घेरेकी ओर से उस नश्तर से कि जो इस कामके लिये मुख्य है चीर डाले और गहरा न चीरे इस लिये कि और किसी पर्दे को कष्ट न पहुचे फिर उस चीरे में " महत " सलाई डाल कर पीप निकाले और उस के उपरांत आंख के घाव का (इलाज) करे परतु जब तक कि अधिक आवश्यकता न हो और वह पीप भी दृष्टि को न रोके उस समय तक नश्तर नलगावे

❋ जरूर असगरके बनाने की रीति। ❋

अजरूत शुद्ध की हुई २१ माशे, एलवा, केसर और रसौत प्रत्येक ७ माशे, कुल ३॥ माशे कूटकर और बारीक कपडे में छानकर दूध में वा ऊपर कही हुई दवाओं में मिलाकर काम म लावे।

❋ दसवां प्रकरण ❋

❋ मुल्तहिमा पर्दे के रोगों का वर्णन ❋

यह एक पर्दा नर्म हड्डी का हैं कठोर और स्वच्छ और उसका जिर्म मोटा है और उन अदलों में जो आंखके ढेले को हिलातेहैं मिला हुआहै और यह पर्दा सफेद और चिकने मांस से भराह और वह झिल्ली जो सिरकी खोपडी *

* जो कुछ कि ऊपर वर्णन कियाहै यह पर्दा कठोर झिल्ली से जो खोपडी के ऊपर है उसमें से निकला है यहबात हकीम बुकरात की कहावत के अनुसार है और हकीम राजी ने भी कहाहै इसी लिये पर्दे मुल्तहिमा की सूजन जब कि अधिकता स होती है तो आंख के आसपास से बढकर गालों तक पहुचतीहै परतु अरही हानिस और रूफिस दोनों हकीम यह कहतेहै कि जो कठोर झिल्ली सिर की खापडी के भीतर है उसमें से यह पर्दा निकला है और यह दलील देतहै कि आंख के अधिक दुखने और सूज जाने के समय बुद्धि बिगड जाती है परतु यह कुछ बात नहीं है क्योंकि बाहर की झिल्ली के कष्ट से भी बुद्धि और ज्ञान बिगड जातेहै क्योंकि वह दिमाग क समीप है जैसा कि उस सिर दर्द में जो कि चोट के कारण से उत्पन्न हो यही बुद्धि आदि का बिगडना देखा जाता है।

होती है (इलाज) जो दवा सामान्य रीति से पकाकर निकालती है उन को काम में लावें जैसे जरूरे असफर को स्त्रियों के दूध वा मेथी के पानी वा अलसी के लुआब में मिलाकर आख में लगावै तथा मेथी और अकलीलुल मलिक के गुनगुने पानी से थोडी थोडी देर में आंख को सेंके और पीप को निकालने और सुखाने के लिये रूपामक्खी जो सोहन मक्खी का एक भेद है और चांदी का मैल बारीक करके आंखोंमें डाले यह दोनों चीजें इस विषय में अद्वितीयहैं । जानना चाहिये कि जब इन उपायों से पीप न निकले उस समय दस्तकारी की तरफ आरूढ होवै और उस की (रीति) यह है कि पर्दे करनियां को स्याही के घेरेकी ओर से उस नश्तर से कि जो इस कामके लिये मुख्य है चीर डाले और गहरा न चीरै इस लिये कि और किसी पर्दे को कष्ट न पहुचै फिर उस चीरे में " महस्त " सलाई डाल कर पीप निकालै और उस के उपरांत आंख के घाव का (इलाज) करै परंतु जब तक कि अधिक आवश्यकता न हो और वह पीप भी दृष्टि को न रोके उस समय तक नश्तर नलगावे

❁ जरूर असगरके बनाने की रीति । ❁

अजरूत शुद्ध की हुई २१ माशे, एलवा, केसर और रसौत प्रत्येक ७ माशे, कुल ३।। माशे कूटकर और बारीक कपडे में छानकर दूध में वा ऊपर कही हुई दवाओं में मिलाकर काम म लावे ।

❁ दसवां प्रकरण ❁

❁ मुल्तहिमा पर्दे के रोगों का वर्णन ❁

यह एक पर्दा नर्म हड्डी का हैं कठोर और स्वच्छ और उसका जिर्म मोटा है और उन अदलों में जो आंखके ढेले को हिलातेहैं मिला हुआहै और यह पर्दा सफेद और चिकने मांस से भराह और वह झिल्ली जो सिरकी खोपडी *

* जो कुछ कि ऊपर वर्णन कियाहै यह पर्दा कठोर झिल्ली से जो खोपडी के ऊपर है उसमें से निकला है यहबात हकीम बुकरात की कहावत के अनुसार है और हकीम राजी ने भी कहाहै इसी लिये पर्दे मुल्तहिमा की सूजन जब कि अधिकता से होती है तो आंख के आसपास से बढकर गालों तक पहुचतीहै परंतु अरही हानिस और रूफिस दोनों हकीम यह कहतेहै कि जो कठोर झिल्ली सिर की खोपडी के भीतर है उसमें से यह पर्दा निकला है और यह दलील देतहै कि आंख के अधिक दुखने और सूज जाने के समय बुद्धि बिगड जाती है परंतु यह कुछ बात नहीं है क्योंकि बाहर की झिल्ली के कष्ट से भी बुद्धि और ज्ञान बिगड जातेहैं क्योंकि वह दिमाग के समीप है जैसा कि उस सिर दर्द में जो कि चोट के कारण से उत्पन्न हो यही बुद्धि आदि का बिगडना देखा जाता है ।

पापड़ा और इमली के काढे से कोष्ठ को नर्म करै और मलके निकालने के पीछे शियाफ अबियज अंडे की सफेदी वा मैथी के लुआब वा औरतों के दूध में घिस कर आखमें लगाव परन्तु शियाफ (बत्ती) को पानी में घिस कर लगाव क्योंकि उक्त शियाफ और सब लुआबी ल्हेसदार वस्तुओं का प्रयोग देह और सिरके साफ करने से पहले वर्जित है कारण यह है कि कभी बहुत खिंचाव के कारण से शियाफ आदि के लगाने से किसी पर्दे का उभर आना, फटजाना टुकडे हो जाना और घायल हो जाना सम्भव है जैसा कि किताब जखीरे वाले ने कहा है कि जो हकीम आंख दूखने में मवाद निकालने के पहले लगाने की दवाएं लगाता है वह बहुत बडी भूल करता है वैसे ही आंख के दूखने के आरम्भ में पानी आंख में पहुचाना भी वर्जित है क्योंकि पानी मल को कच्चा रखता है आंख के पर्दों को मोटा करता है पठे को हानि पहुचाता है और२ भी बहुत सी हानि करता है ॥

शियाफ अबियज के बनाने की रीति

जस्ते का सफेदा, समगे अरबी और कतीरा इन तीनों को कूट छान कर ईसबगोल के लुआब या अंडे की सफेदी में मिलाकर बत्ती बनालेवे और किसी २ ने अफीम और अजरूत शोधी हुई भी थोडी बढाई है॥ और मलके निकलने पर आंख की पुष्टता और मवाद के हटाने के लिये चन्दन रसौत, अकाकिया और मामीसा हरे धनिये के पानी में लेपकरे और खट्टे मीठे पदार्थों का सेवन करे जैसा कि अनार, जरिश्क और इमली खांड के साथ मिला कर वा अन्य ऐसी ही वस्तु देवे, क्योंकि ऐसी दवा खून की तेजी को बैठाती है और उस के उबाल को बुझाती है परन्तु केवल खटाई न देनी चाहिये क्योंकि पर्दे मुल्तहिमा और पट्ठे के लिये कोई चीज खटाई से अधिक हानि कारक नहीं है ।

पित्तज रमद अर्थात् आंख दूखने का वर्णन

इस में सूजन, फुलाव, खिंचाव, लाली चीपड निकालना और आंसू बहना रक्तज रमद की अपेक्षा बहुत कम होता है परन्तु दर्द जलन और चुभन अधिक होती है और जानना चाहिये कि आंसू आरोग्यता की दशा में गर्म होते है क्योंकि उन में पचाव हो चुका है और रमद में मर्द होतेहैं क्योंकि बिना पचाव के आतेहैं (इलाज) वह हरड का काढा जिसका रक्तज रमद में वर्णन हुआ है पिलाकर दस्त करावै और ठंडी चीजों के पानी जैसे कासनी

पापड़ा और इमली के काढे से कोष्ट को नर्म करै और मलके निकालने के पीछे शियाफ अबियज अंडे की सफेदी वा मैथी के छुआब वा औरतों के दूध में घिस कर आखमें लगाव परन्तु शियाफ (बत्ती) को पानी में घिस कर लगाव क्योंकि उक्त शियाफ और सब कुआवी ल्हेसदार वस्तुओं का प्रयोग देह और सिरके साफ करने से पहले वर्जित है कारण यह है कि कभी बहुत खिंचाव के कारण से शियाफ आदि के लगाने से किसी पर्दे का उभर आना, फटजाना टुकडे हो जाना और घायल हो जाना सम्भव है जैसा कि किताब जखीरे वाले ने कहा है कि जो हकीम आंख दूखने में मवाद निकालने के पहले लगाने की दवाएं लगाता है वह बहुत बडी भूल करता है वैसे ही आंख के दूखने के आरम्भ में पानी आंख में पहुचाना भी वर्जित है क्योंकि पानी मल को कच्चा रखता है आंख के पर्दों को मोटा करता है पट्ठे को हानि पहुचाता है और२ भी बहुत सी हानि करता है ॥

शियाफ अबियज के बनाने की रीति

जस्ते का सफेदा, समगे अरबी और कतीरा इन तीनों को कूट छान कर इसबगोल के छुआब या अडे की सफेदी में मिलाकर बत्ती बनालेवे और किसी २ ने अफीम और अजरूत शोधी हुई भी थोडी बढाई है॥ और मलके निकलने पर आंख की पुख्ता और मवाद के हटाने के लिये चन्दन रसौत, अकाकिया और मामीसा हरे धनिये के पानी में लेपकरे और खट्टे मीठे पदार्थों का सेवन करे जैसा कि अनार, जरिश्क और इमली खांड के साथ मिला कर वा अन्य ऐसी ही वस्तु दवे, क्योंकि ऐसी दवा खून की तेजी को उखाडती हैं और उस के उबाल को बुझाती है परन्तु केवल खटाई न देनी चाहिये क्योंकि पर्दे मुल्तहिमा और पट्ठे के लिये कोई चीज खटाई से अधिक हानि कारक नहीं है ।

पित्तज रमद अर्थात् आंख दूखने का वर्णन

इस में सूजन, फुलाव, खिंचाव, लाली चीपड निकालना और आंसू बहना रक्तज रमद की अपेक्षा बहुत कम होता है परन्तु दर्द जलन और चुभन अधिक होती है और जानना चाहिये कि आसू आरोग्यता की दशा में गर्म होते हैं क्योंकि उन में पचाव हो चुका है और रमद में सर्द होतेहैं क्योंकि बिना पचाव के आतेहैं (इलाज) वह हरड का काढा जिसका रक्तज रमद में वर्णन हुआ है पिलाकर दस्त करावे और ठंडी चीजों के पानी जैसे कासनी

लगाने में देर करने की आज्ञा इसलिये है कि यह जरूर मादे को बहुत निकालता है और मादे के नष्ट करने वाली दवाओं का जो ये बलवान् हों तो उन को सूजनों मे रोग के अंत से पहले लगाना ठीक नहीं है।

मैथी के धोनें की रीति।

मैथी को मीठे पानी में डाल कर दो पहर रखदे फिर उस पानी को निकाल डालें और दूसरा पानी जो मैथी से बीस गुना हो उस में मिलाकर औटावे जब कि आधा रहजाय फिर लुआब को लेकर काम में लावें।

जरूरे अबियज के बनाने की रीति

अजरूत लेकर पीसले और गधी के दूध में या लडकी वालियों के दूध में सानकर झाऊ की लकडियों पर रखकर ऐसे चूल्हे में जो ठंडा होने को हो रखदे जिससे अजरूत उन लकडियों पर सूख जाय फिर निकाल कर एक भाग इस अजरूत में से और एक हिस्से की चौथाई नशास्ता लेकर आपस में मिलाकर बारीक पीसलें और उचित है कि पलकों के चिपटाने या मल के अनुसार थोडी सी मिश्री बढालेवे और कोई २ अजरूत को इस तरह पर शुद्ध करते है कि दूधमें पीस कर दूधमें सुखालेते हैं इसी तरह तीन बार करते हैं फिर मिलाते है और सुखाने के समय जिस चीज को कि उस में अजरूत हो सावधानी से ढककर रक्खें कि उस में धूल न पडे।

चौथा भेद वातजरमद का वर्णन।

आंख के बनाने वाले इस प्रकार के रमद को रमदेयाबिस अर्थात् खुश्की के कारण आंख दूखना कहते है और उसका यह (चिन्ह) है कि आंख खुश्क, भारी, रंग में स्याही लिये हुए हो, उस में चुभन मालूम हो, रोग बढजाय और पलकें लाल होजाय और कभी २ पर्दा मुल्तहिमा भी लाल होजाता है और यह रमद बहुधा सिरदर्द के साथ हुआ करता है विशेष करके जो बीमार की प्रकृति वादी की हो और दिमाग में खुश्की हो (इलाज) दिमाग में तरी पहुचाने केलिये तरी पैदा करनेवाले पथ्यदेवै जिनसे अच्छे दोष उत्पन्नहो और उनका वर्णन मालीखोलियाके वर्णनमें आयाहै। जौका पानी पीवै। बनफशा, नीलोफर, सितमी के पत्ते लरी घीया के पत्ते और जौकी घाटका काढा सिरके आगेके भागपर डाल और इसी काढे मे भफारादेवै और स्नान करे (अथवा) बनफशाकातेल और ताजा दूध नाकमे सुडके और बिहीदानेकालुआब आंखमेंडाले (अथवा) बाबना, बनफशा और अलसीका पानी नीलोफर के पानी के साथ मिलाकर आंख पर लेपकरे

लगाने में देर करने की आज्ञा इसलिये है कि यह जरूर माद्दे को बहुत निकालता है और माद्दे के नष्ट करने वाली दवाओं का जो ये बलवान् हों तो उन को सूजनों मे रोग के अत से पहले लगाना ठीक नहीं है ।

मैथी के धोने की रीति ।

मैथी को मीठे पानी में डाल कर दो पहर रखदे फिर उस पानी को निकाल डालें और दूसरा पानी जो मैथी से बीस गुना हो उस में मिलाकर औटावे जब कि आधा रहजाय फिर लुआब को लेकर काम में लावें ।

जरूरे आबियज के बनाने की रीति

अजरूत लेकर पीसले और गधी के दूध में या लडकी वालियों के दूध में सानकर झाऊ की लकडियों पर रखकर ऐसे चूल्हे में जो ठंडा होने को हो रखदे जिससे अजरूत उन लकडियों पर सूख जाय फिर निकाल कर एक भाग इस अजरूत में से और एक हिस्से की चौथाई नशास्ता लेकर आपस में मिलाकर बारीक पीसलें और उचित है कि पलकों के चिपटाने वा मल के अनुसार थोडी सी मिश्री बढालेवै और कोई २ अजरूत को इस तरह पर शुद्ध करते है कि दूधमें पीस कर दूधमें सुखालेते हैं इसी तरह तीन वार करते हैं फिर मिलाते है और सुखाने के समय जिस चीज को कि उस में अजरूत हो सावधानी से ढककर रक्खें कि उस में धूल न पडे ।

चौथा भेद वातजरमद का वर्णन ।

आंख के बनाने वाले इस प्रकार के रमद को रमदेयाबिस अर्थात् खुश्की के कारण आंख दूखना कहते है और उसका यह (चिन्ह) है कि आंख खुश्क, भारी, रग में स्याही लिये हुए हो, उस में चुभन मालूम हो, रोग बढजाय और पलकें लाल होजाय और कभी २ पर्दा मुल्तहिमा भी लाल होजाता है और यह रमद बहुधा सिरदर्द के साथ हुआ करता है विशेष करके जो बीमार की प्रकृति वादी की हो और दिमाग में खुश्की हो (इलाज) दिमाग में तरी पहुंचाने केलिये तरी पैदा करनेवाले पथ्यदेवै जिनसे अच्छे दोष उत्पन्नहो और उनका वर्णन मालीखोलियाके वर्णनमें आयाहै । जौका पानी पीवै । बनफशा, नीलोफर, सितमी के पत्ते लनी घीया के पत्ते और जौकी घाटका काढा सिरके आगेके भागपर डाल और इसी काढे से भफारादेवै और स्नान करे (अथवा) बनफशाकातेल और ताजा दूध नाकमें सुडके और बिहीदानेकालुआब आंखमेंडाले (अथवा) बाबूना, बनफशा और अलसीका पानी नीलोफर के पानी के साथ मिलाकर आंख पर लेपकरे

और बदलने के पीछे शियाफे आबियज और शियाफे आवार और जरूरे अबियज कि जिसमें वह अजरूत पडा हुआ हो जो लडकी वाली के दूध में शोधा गया हो आंख में लगावें और जब कि आंख से दवा अपना काम करने के पीछे निकलजाय और आंख इस से साफ होजाय तो उस समय में एक सलाई गुलरोगन में भरकर आंख में लगावें और आंख के ऊपर एक गद्दी तिरछी बांधे जिससे पलकों के मिलजाने से बची रहे और आंख के दुखने के भेदों में सिवाय इस के किसी में तेल नहीं लगाया जाता है और इल्तिसाक (आपस में चिपटने) में भी वर्णन करेंगे कि जिस समय आंख में अधिक लाली हो और पलक फटजाय और छिलजाय तो इस बात का भय है कि पलक चिपट जायगी और जब कि ऐसा हाल हो तो जल्द उपाय करें।

दूसरा भेद तुर्फे का वर्णन।

वह एक लाल काला वा नीला बिंदु होता है जो मुल्तिहिमा पर्दे में उत्पन्न होजाता है और इस के उत्पन्न होने के चार कारण हैं एक यह कि तमाचा या चोट आंख के ऊपर लगे और इस के कारण से कोई महीन रगें फटजांय और उसके खून निकलकर पर्दे मुल्तिहमा के नीचे ठहरजाय और कभी फटजांय उसके साथ मुल्तहिमा भी फटजाता है। तीसरे यह कि माद्दे के भरजाने और अधिक खिंचने से रगें फटजांय। तीसरे यह कि खून उबलजाय और तेजी तथा अधिकता के कारण से आंख की तरफ झुककर पर्दे मुल्तहिमा के भागों में आजाय। चौथा यह कि बहुत जोरसे चिल्लाने, बहुत डोलने, फिरने, जीमिच लाने और श्वास रुकने का काम पडे और दिमाग के भरजाने और खूनके गर्म होजाने के कारण से तुर्फा अर्थात् लाल बूंद आंख में उत्पन्न होजाय और जिस तुर्फ का कारण निर्बल होता है वह थोडे से समय में बिना इलाज के अपने आप जाता रहता है और जिसका कारण बलवान हुआ करता है वह इलाज की आवश्यकता रखता है (इलाज) माद्दे को दूसरी जगह लौटाने और साफ करने के लिये रग सराकी फस्द खोले और हरडके काढे से तबियत को नर्म करें और जो सकमूनियां को इस काढे में ऊपर से पीस घूटकर मिलावे तो उचित है परन्तु यारजात को कभी काम में न लावें इस में हुकना अधिक लाभदायक है और दर्द के थामने तथा माद्दे के पचाने के लिये दूध और जो दर्द के लुआन उचित हो गुनगुना करके आंख में डाले और एक दो

और बदलने के पीछे शियाफे अबियज और शियाफे आवार और जरूरे अबियज कि जिसमें वह अजरूत पड़ा हुआ हो जो लड़की वाली के दूध में शोधा गया हो आंख में लगावें और जब कि आंख से दवा अपना काम करने के पीछे निकलजाय और आंख इस से साफ होजाय तो उस समय में एक सलाई गुलरोगन में भरकर आंख में लगावें और आंख के ऊपर एक गद्दी तिरछी बांधे जिससे पलकों के मिलजाने से बची रहे और आंख के दूसरे के भेदों में सिवाय इस के किसी में तेल नहीं लगाया जाता है और इल्तिसाक (आपस में चिपटने) में भी वर्णन करेंगे कि जिस समय आंख में अधिक लाली हो और पलक फटजाय और छिलजाय तो इस बात का भय है कि पलक चिपट जायगी और जब कि ऐसा हाल हो तो जल्द उपाय करें।

दूसरा भेद तुर्फे का वर्णन।

वह एक लाल काला वा नीला बिंदु होता है जो मुल्तिहिमा पर्द में उत्पन्न होजाता है और इस के उत्पन्न होने के चार कारण है एक यह कि तमाचा या चोट आंख के ऊपर लगे और इस के कारण से कोई महीन रगें फटजांय और उसके खून निकलकर पर्दे मुल्तिहमा के नीचे ठहरजाय और कभी फटजांय उसके साथ मुल्तहिमा भी फटजाता है। तीसरे यह कि माद्द के भरजाने और अधिक खिंचने से रगें फटजांय। तीसरे यह कि खून उबलजाय और तेजी तथा अधिकता के कारण से आंख की तरफ झुककर पर्दे मुल्तहिमा के भागों में आजाय। चौथा यह कि बहुत जोरसे चिल्लाने, बहुत डोलने, फिरने, जीमिच लाने और श्वास रुकने का काम पड़े और दिमाग के भरजाने और खूनके गर्म होजाने के कारण से तुर्फो अर्थात् लाल बूंद आंख में उत्पन्न होजाय और जिस तुर्फ का कारण निर्बल होता है वह थोड़े से समय में बिना इलाज के अपने आप जाता रहता है और जिसका कारण बलवान हुआ करता है वह इलाज की आवश्यकता रखता है (इलाज) माद्दे को दूसरी जगह लौटाने और साफ करने के लिये रग सराकी फस्द खोले और हरड़के काढ़े से तबियत को नर्म करें और जो सकमूनियां को इस काढ़े में ऊपर से पीस कूटकर मिलावें तो उचित है परन्तु यारजात को कभी काम में न लावें इस में हुक्ना अधिक लाभदायक है और दर्द के थामने तथा माद्दे के पचाने के लिये दूध और जो दर्द के लुआब उचित हो गुनगुना करके आंख में डाले और एक रई

गोलाई के साथ करानिया के और पास फैल जाता है और नाखूना एक तरफ से कभी दूसरी तरफ नहीं जाता और कभी इस मे गोलाई नहीं आती और नाखूना जिस जगह से उत्पन्न होता है जड के समान होता है और दूसरी तरफसे टहनियाँ की तरफ फेला हुआ होता है और सबल मे जड और डाली की पहचान नहीं होती (इलाज) सरेरू की फस्द खोलें और दस्तों के लिये यारज देवे फिर मल को निकालने के लिये शियाफे वीजज, शियाफे दीनारगू और बासलीकू अकबर आंख में लगावे ये दवा स्नान करके और नाखूनों को नर्म करने के पीं लगाई जाती है क्योंकि नर्मी के कारण दवा का असर अच्छा होता है ॥

ॐ शियाफे वीजज के बनाने की रीति ॐ

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५। माशे, चांदी का मेल सात माशे छरीला, सुकवीनज और पीपल प्रत्येक ५। माशे इन में से छरीला, और सुक बीनज (कुंदुरु गोंद) को पुरानी शराब में घिसले और सब दवाओं को कूट छान कर इस में मिला के शियाफ बना लेवे ॥

इस रोग में उपयोगी शियाफे दीनारगू के बनाने की रीति ।

सिंदरफ, तांवा जलाहुआ, हरताल लाल, कुन्दुरु, मिश्री, और हिन्दी छरीला, प्रत्येक एक भाग मुर, केसर, और हल्दी प्रत्येक चौथाई भाग सब को कूट छान कर पानी में सान लेवे और इस कारण से कि यह शियाफ दीनार के रंग पर होता है इस लिये इस नाम से बोला जाता है । दूसरी प्रकार का नाखूना वह है कि बड़े कोये के मांस से जिस का वतत कहते है आरम्भ हो और पर्दे करनियां के किनारे पर जहां तक कि स्याही की सीमा होती है पहुंच कर गाढा होकर ठहर जाय और इस प्रकार का नाखूना बहुधा यहीं पर ठहर जाता है और स्याही आगे नहीं बढती इसी लिये कहते है कि जब तक निश्चय मालूम न हो कि आंख की स्याही पर पहुंच जायगा उस समय तक उसका इलाज न करें और इस के थोडे कष्ट को सहना उचित है क्यों कि पुष्ट दवाओं के काम में लाने से दृष्टि की शक्ति निर्बल हो जाती है और बहुत ही तीक्ष्ण मल निकालने वाली दवा इतनी कठोरता को नष्ट कर सकती हैं और कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो सिवाय इस नाखूने के और भागों को नष्ट न करे । यद्यपि इस नाखूने का होना दृष्टि को नहीं रोकता परन्तु यदि यह जाने कि आंख की स्याही के ऊपर पहुंच जाता है तो उस समय में जो दवा पहले भेद में वर्णन की है उसको लगाना चाहिये जिससे आंख के स्याह ढेले पर पहुंच कर दृष्टि का रोकने वाला न हो । नाखूने का तीसरा

गोलाई के साथ करानिया के ओर पास फैल जाता है और नाखूना एक तरफ से कभी दूसरी तरफ नहीं जाता और कभी इस में गोलाई नहीं आती और नाखूना जिस जगह से उत्पन्न होता है जड के समान होता है और दूसरी तरफसे टहनियों की तरफ फैला हुआ होता है और सबल मे जड और डाली की पहचान नहीं होती (इलाज) सरेरू की फस्द खोलै और दस्तों के लिये यारज देवै फिर मल को निकालने के लिये शियाफे वीजज, शियाफे दीनारगू और वासलीकून अकबर आंख में लगावै ये दवा स्नान करके और नाखूनों को नर्म करने के पीछे लगाई जाती है क्योंकि नर्मी के कारण दवा का असर अच्छा होता है ॥

❀ शियाफे वीजज के बनाने की रीति ❀

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५। माशे, चांदी का मैल सात माशे, छरीला, सुकबीनज और पीपल प्रत्येक ५। माशे इन में से छरीला, और सुकबीनज (कुंदुरु गोंद) को पुरानी शराब में घिसले और सब दवाओं को कूट छान कर इस में मिला के शियाफ बना लेवै ॥

इस रोग में उपयोगी शियाफे दीनारगू के बनाने की रीति ।

सिंदरफ, तांबा जलाहुआ, हरताल लाल, कुन्दुरु, मिश्री, और हिन्दी छरीला, प्रत्येक एक भाग मुर, केसर, और हल्दी प्रत्येक चौथाई भाग सब को कूट छान कर पानी में सान लेवै और इस कारण से कि यह शियाफ दीनार के रंग पर होता है इस लिये इस नाम से बोला जाता है । दूसरी प्रकार का नाखूना वह है कि चढे कोये के मांस से जिस का वतत कहते हैं आरम्भ हो और पर्दे करनियां के किनारे पर जहां तक कि स्याही की सीमा होती है पहुंच कर गाढा होकर ठहर जाय और इस प्रकार का नाखूना बहुधा यहीं पर ठहर जाता है और स्याही आगे नहीं बढती इसी लिये कहते हैं कि जब तक निश्चय मालूम न हो कि आंख की स्याही पर पहुंच जायगा उस समय तक उसका इलाज न करें और इस के थोडे कष्ट को सहना उचित है क्यों कि पुष्ट दवाओं के काम में लाने से दृष्टि की शक्ति निर्बल हो जाती है और बहुत ही तीक्ष्ण मल निकालने वाली दवा इतनी कठोरता को नष्ट कर सकती हैं और कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो सिवाय इस नाखूने के और भागों को नष्ट न करे । यद्यपि इस नाखूने का होना दृष्टि को नहीं रोकता परन्तु यदि यह जाने कि आंख की स्याही के ऊपर पहुंच जाताहै तो उस समय में जो दवा पहले भेद में वर्णन की है उसको लगाना चाहिये जिसमें आंख के स्याह ढेले पर पहुंच कर दृष्टि का रोकने वाला न हो । नाखूने का तीसरा

गोलाई के साथ करानियों के ओर पास फैल जाता है और नाखूना एक तरफ से कभी दूसरी तरफ नहीं जाता और कभी इस में गोलाई नहीं आती और नाखूना जिस जगह से उत्पन्न होता है जड के समान होता है और दूसरी तरफसे टहनियों की तरफ फैला हुआ होता है और सबल मे जड और डाली की पहचान नहीं होती (इलाज) सरेरू की फस्द खोलै और दस्तों के लिये यारज देवै फिर मल को निकालने के लिये शियाफे बीजज, शियाफे दीनारगू और बासलीकून अकबर आंख में लगावे ये दवा स्नान करके और नाखूनो को नर्म करने के पीछे लगाई जाती है क्योंकि नर्मी के कारण दवा का असर अच्छा होता है ॥

❈ शियाफे बीजज के बनाने की रीति ❈

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५। माशे, चांदी का मैल सात माशे, छरीला, सुकबीनज और पीपल प्रत्येक ५। माशे इन में से छरीला, और सुकबीनज (कुंदुरु गोंद) को पुरानी शराब में घिसले और सब दवाओं को कूट छान कर इस में मिला के शियाफ बना लेवे ॥

इस रोग में उपयोगी शियाफे दीनारगू के बनाने की रीति ।

सिंदरफ, तांबा जलाहुआ, हरताल लाल, कुन्दुरु, मिश्री, और हिन्दी छरीला प्रत्येक एक भाग मुर, केसर, और हल्दी प्रत्येक चौथाई भाग सब को कूट छान कर पानी में सान लेवै और इस कारण से कि यह शियाफ दीनार के रंग पर है इस लिये इस नाम से बोला जाता है । दूसरी प्रकार का नाखूना वह है कि कोये के मांस मे जिस का वतत कहते है आरम्भ हो और पर्दे करानियों के पर जहां तक कि स्याही की सीमा होती है पहुच कर गाढा जाय और इस प्रकार का नाखूना बहुधा यहीं पर ठहर जाता है आगे नहीं बढती इसी लिये कहते है कि जब तक निश्चय आंख की स्याही पर पहुच जायगा उस समय तक उसको इस के थोडे कष्ट को सहना उचित है क्यों कि पुष्ट दवाओं के दृष्टि की शक्ति निर्बल हो जाती है और बहुत ही तीक्ष्ण मल दवा इतनी कठोरता को नष्ट कर सकती है और कोइ ऐसी वस्तु इस नाखूने के और भागों को नष्ट न करे । यद्यपि इस नाखूने नहीं रोकता परन्तु यदि यह जाने कि आंख की स्याही के ऊपर उस समय में जो दवा पहले भेद में वर्णन की है उसको लगाना चाहिये के स्याह ढले पर पहुच कर दृष्टि का रोकने वाला न हो ।

गोलाई के साथ करानियों के और पास फैल जाता है और नाखूना एक तरफ से कभी दूसरी तरफ नहीं जाता और कभी इस में गोलाई नहीं आती और नाखूना जिस जगह से उत्पन्न होता है जड के समान होता है और दूसरी तरफसे टहनियों की तरफ फैला हुआ होता है और सबल मे जड और डाली की पहचान नहीं होती (इलाज) सरेरू की फस्द खोलै और दस्तों के लिये यारज देवै फिर मल को निकालने के लिये शियाफे बीजज, शियाफे दीनारगू और बासलीकून अकबर आंख में लगावे ये दवा स्नान करके और नाखूनो को नर्म करने के पीछे लगाई जाती है क्योंकि नर्मी के कारण दवा का असर अच्छा होता है ॥

❋ शियाफे बीजज के बनाने की रीति ❋

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५। माशे, चांदी का मैल सात माशे, छरीला, कुकबीनज और पीपल प्रत्येक ५। माशे इन में से छरीला, और कुरु बीनज (कुदुरु गोंद) को पुरानी शराब में घिसले और सब दवाओं को कूट छान कर इस में मिला के शियाफ बना लेवे ॥

इस रोग में उपयोगी शियाफे दीनारगू के बनाने की रीति ।

सिंदरफ, तांबा जलाहुआ, हरताल लाल, कुन्दुरु, मिश्री, और हिन्दी छरीला प्रत्येक एक भाग मुर, केसर, और हल्दी प्रत्येक चौथाई भाग सब को कूट छान कर पानी में सान लेवै और इस कारण से कि यह शियाफ दीनार के रंग पर है इस लिये इस नाम से बोला जाता है । दूसरी प्रकार का नाखूना वह है कि कोये के मांस मे जिस का वतत कहते है आरम्भ हो और पर्दे करानियां क पर जहां तक कि स्याही की सीमा होती है पहुच कर गाढा जाय और इस प्रकार का नाखूना बहुधा यहीं पर ठहर जाता है आगे नहीं बढती इसी लिये कहते है कि जब तक निश्चय आंख की स्याही पर पहुच जायगा उस समय तक उसका इस के थोडे कष्ट को सहना उचित है क्यों कि पुष्ट दवाओं के दृष्टि की शक्ति निर्बल हो जाती है और बहुत ही तीक्ष्ण मल दवा इतनी कठोरता को नष्ट कर सकती हैं और कोइ ऐसी वस्तु इस नाखूने के और भागों को नष्ट न करे । यद्यपि इस नाखूने नहीं रोकता परन्तु यदि यह जाने कि आख की स्याही के ऊपर उस समय में जो दवा पहले भेद में वर्णन की है उसको लगाना चा के स्याह ढले पर पहुच कर दृष्टि का रोकने वाला न हो ।

गोलाई के साथ करानियों के ओर पास फैल जाता है और नाखूना एक तरफ से कभी दूसरी तरफ नहीं जाता और कभी इस म गोलाई नहा आती और नाखूना जिस जगह से उत्पन्न होता है जड के समान होता है और दूसरी तरफम टहनियों की तरफ फैला हुआ होता है और सबलमे जड और डाली की पहचान नहीं होती (इलाज) सरेरू की फस्द खोले और दस्तों के लिये यारज दवे फिर मल को निकालने के लिये शियाफे वीजज, शियाफे दीनारगू और वासलीकून अकबर आंख में लगावे ये दवा स्नान करके और नाखूनों को नर्म करने के पीछे लगाई जाती है क्योंकि नर्मी के कारण दवा का असर अच्छा होता है ॥

❀ शियाफे वीज़ज के बनाने की रीति ❀

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५। माशे, चादी का मैल सात माशे, छरीला, सुकवीनज और पीपल प्रत्येक ५। माशे इन में से छरीला, और सुक वीनज (कुन्दुरु गोंद) को पुरानी शराब में घिसले और सब दवाओं को कूट छान कर इस में मिला के शियाफ बना लेवे ॥

इस रोग में उपयोगी शियाफे दीनारगू के बनाने की रीति ।

सिंदरफ, तांबा जलाहुआ, हरताल लाल, कुन्दुरु, मिश्री, और हिन्दी छरीला, प्रत्येक एक भाग मुर, केसर, और हल्दी प्रत्येक चौथाई भाग सब को कूट छान कर पानी में सान लेवे और इस कारण से कि यह शियाफ दीनार के रंग पर होता है इस लिये इस नाम से बोला जाता है । दूसरी प्रकार का नाखूना वह है कि पर्दे कोये के मांस से जिस का वतत कहते है आरम्भ हो और पर्दे करानिया के किनारे पर जहां तक कि स्याही की सीमा होती है पहुच कर गाढा होकर ठहर जाय और इस प्रकार का नाखूना बहुधा यहीं पर ठहर जाता है और स्याही आगे नहीं बढती इसी लिये कहते हैं कि जब तक निश्चय मालूम न हो कि आंख की स्याही पर पहुच जायगा उस समय तक उसका इलाज न करें और इस के थोडे कष्ट का सहना उचित है क्यों कि पुष्ट दवाओं के काम में लाने से दृष्टि की शक्ति निर्बल हो जाती है और बहुत ही तीक्ष्ण मल निकालने वाली दवा इतनी कठोरता को नष्ट कर सकती है और कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो सिवाय इस नाखूने के और भागों को नष्ट न करे । यद्यपि इस नाखूने का होना दृष्टि को नहीं रोकता परन्तु यदि यह जाने कि आंख की स्याही के ऊपर पहुच जाता है तो इस समय में जो दवा पहले भेद में वर्णन की है उसको लगाना चाहिए जिससे आंख के स्याह ढेले पर पहुच कर दृष्टि का रोकने वाला न हो । नाखूने का तीसरा

गोलाई के साथ करानियों के ओर पास फैल जाता है और नाखूना एक तरफ से कभी दूसरी तरफ नहीं जाता और कभी इस म गोलाई नहा आती और नाखूना जिस जगह से उत्पन्न होता है जड के समान होता है और दूसरी तरफम टहनियों की तरफ फैला हुआ होता है और सवलमे जड और डाली की पहचान नहीं होती (इलाज) सरेरू की फस्द खोले और दस्तों के लिये यारज दवै फिर मल को निकालने के लिये शियाफे वीजज, शियाफे दीनारगू और वासलीकून अकबर आंख में लगावे ये दवा स्नान करके और नाखूनों को नर्म करने के पीछे लगाई जाती है क्योंकि नर्मी के कारण दवा का असर अच्छा होता है ॥

❀ शियाफे वीजज के बनाने की रीति ❀

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५। माशे, चादी का मैल सात माशे, छरीला, सुकवीनज और पीपल प्रत्येक ५। माशे इन में से छरीला, और सुक वीनज (कुन्दुरु गोंद) को पुरानी शराब में घिसले और सब दवाओं को कूट छान कर इस में मिला के शियाफ बना लेवे ॥

इस रोग में उपयोगी शियाफे दीनारगू के बनाने की रीति ।

सिंदरफ, तांबा जलाहुआ, हरताल लाल, कुन्दुरु, मिश्री, और हिन्दी छरीला, प्रत्येक एक भाग मुर, केसर, और हल्दी प्रत्येक चौथाई भाग सब को कूट छान कर पानी में सान लेवे और इस कारण से कि यह शियाफ दीनार के रंग पर होता है इस लिये इस नाम से बोला जाता है । दूसरी प्रकार का नाखूना वह है कि पर्दे कोये के मांस स जिस का वतत कहते है आरम्भ हो और पर्दे करानिया के किनारे पर जहां तक कि स्याही की सीमा होती है पहुच कर गाढा होकर ठहर जाय और इस प्रकार का नाखूना बहुधा यहीं पर ठहर जाता है और स्याही आगे नहीं बढती इसी लिये कहते हैं कि जब तक निश्चय मालूम न हो कि आंख की स्याही पर पहुच जायगा उस समय तक उसका इलाज न करें और इस के थोडे कष्ट का सहना उचित है क्योंकि पुष्ट दवाओं के काम में लाने से दृष्टि की शक्ति निर्बल हो जाती है और बहुत ही तीक्ष्ण मल निकालने वाली दवा इतनी कठोरता को नष्ट कर सकती है और कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो सिवाय इस नाखूने के और भागों को नष्ट न करे । यद्यपि इस नाखूने का होना दृष्टि या नहीं रोकता परन्तु यदि यह जाने कि आंख की स्याही के ऊपर पहुच जाता है तो उस समय में जो दवा पहले भेद में वर्णन की है उसको लगाना चाहिये जिससे आंख के स्याह ढेले पर पहुच कर दृष्टि का रोकने वाला न हो । नाखूने का तीसरा

बांध देवे फिर दूसरे दिन गुलाव के सूखे हुए फूल पानी में औटा कर और आंख खोल कर उस पानी से धो डाले और सलाई गुलरोगन में चिकनी करके आंख के भीतर फिरावे और जो यह जानें कि पलक पर्दे मुल्तहिमा से चिपट गया है तो जुदा कर देवे और दूसरी वार जीरा और नमक चवा कर उसका पानी टपकावे और उचित है कि तीन दिन तक जीरा और नमक चवा कर उसका पानी डालते रहें चाहे पर्दे मुल्तहिमा पर पलक चिपट जाय या न चिपटे और तीन दिन पीछे वासलीकून वा ऐसी ही अन्य दवा काम में लावे जिससे सवल की जड बिल्कुल न रहे और जो रमद अर्थात् आंख का दुखना या सूजन उत्पन्न हो जाय तो प्रथम उसका इलाज कर के फिर सवल का इलाज करे ॥ (लाभ) मुन्नारा एक शस्त्र है जो लोहे व तकले की तरह का बनता है उसका सिर टेढा होता है इस शस्त्र की सूरत उस कांटे के समान है जिससे मछली पकडते हैं । और सवल एक प्रकार का रोग है जो वहुधा रमद गर्म के उपरांत इस कारण से उत्पन्न होजाती है कि रमद अर्थात् आंख दुखने या सूजआने के इलाज में ठंडी चीजें अधिकतासे काम में लाई गई हैं इस कारण से रुधिर गाढा होजाय और खाल मोटी और रोमांच वंद होजाय और माद्दा निकलने से रुक जाय और इस कारण से वह फूल कर वढ जाय और रगें भी फूल जांय उसका (चिन्ह) यह है कि पर्दे मुल्तहिमा विना सूजन के लाल हो और उसके ऊपर लाल रगें भरी हुई दिखलाईदें और सदा दर्द रहे और आंसू वहें जांय (इलाज) फसद खोले और दस्त करावे पीछे माद्दे के गाढ़ापन से जो तेजी अधिक होतो शियाफे अवियज लगावे और नहीं तो यह कार्य अवश्य है कि ऐसी चीजें जो गाढे माद्दे का नर्म करती हैं और माद्दे को निकालती हैं वह लगावे जैसे सियाफ अहमरे लय्यन सुर्मा और जरूरे रिमादी ।

जरूरेरिमादी के बनाने की रीति ।

चीनी मामीरा, ३॥ माशे, तूतियाथोथा सुधा हुआ और शीह जली हुई सोधी हुई, (शीह-एक घास है पत्ती उसकी तुलसी के समान होती है) और तूबाल (लोहचून) अर्थात् घुले हुए तांवे की गाद और सुरमा अस्फहानी सुधा हुआ प्रत्येक ७ माशे, सव को कूट छान कर काम में लावें । सवल और खसी खुजली और दमा एक वीमारी आंख में है जिस में हर समय आंख तर रहती है और विना इरादा आंसू वहा करते हैं को लाभ देता है और जिस

बांध देवै फिर दूसरे दिन गुलाव के सूखे हुए फूल पानी में औटा कर और आंख खोल कर उस पानी से धो डाले और सलाई गुलरोगन में चिकनी करके आंख के भीतर फिरावे और जो यह जानें कि पलक पर्दे मुल्तहिमा से चिपट गया है तो जुदा कर देवे और दूसरी वार जीरा और नमक चवा कर उसका पानी टपकावे और उचित है कि तीन दिन तक जीरा और नमक चवा कर उसका पानी डालते रहें चाहे पर्दे मुल्तहिमा पर पलक चिपट जाय या न चिपटे और तीन दिन पीछे वासलीकून वा ऐसी ही अन्य दवा काम में लावे जिससे सवल की जड विल्कुल न रहे और जो रमद अर्थात् आंख का दुखना या सूजन उत्पन्न हो जाय तो प्रथम उसका इलाज कर के फिर सवल का इलाज करे ॥ (लाभ) सुन्नारा एक शस्त्र है जो लोहे स तकले की तरह का वनता है उसका सिर टेढा होता है इस शस्त्र की सूरत उस कांटे के समान है जिससे मछली पकडते हैं । और सवल एक प्रकार का रोग है जो वहुधा रमद गर्म के उपरांत इस कारण से उत्पन्न होजाती है कि रमद अर्थात् आंख दुखने या सूजआने के इलाज में ठंडी चीजें अधिकतासे काम में लाई गई हैं इस कारण से रुधिर गाढा होजाय और खाल मोटी और रोमांच वद होजाय और माद्दा निकलने से रुक जाय और इस कारण से वह फूल कर वढ जाय और रगें भी फूल जांय उसका (चिन्ह) यह है कि पर्दे मुल्तहिमा विना सूजन के लाल हो और उसके ऊपर लाल रगें भरी हुई दिखलाईदें और सदा दर्द रहे और आंसू वहे जांय (इलाज) फसद खोले और दस्त करावे पीछे मादे के गाढ़ापन से जो तेजी अधिक होतो शियाफे अवियज लगावे और नहीं तो यह कार्य अवश्य है कि ऐसी चीजें जो गाढे मादे को नर्म करती हैं और मादे को निकालती हैं वह लगावे जैसे सियाफ अहमरे लय्यन सुर्मा और जरूरे रिमादी ।

जरूरेरिमादी के बनाने की रीति ।

चीनी मामीरा, ३॥ मासे, लीलाथोथा सुना हुआ और शीह जली हुई सोधी हुई, (शीह-एक घास है पत्ती उसकी तुवली के समान होती है) और तूत्याल (लोहलून) अर्थात् घुले हुए तांवे की राख और सुरमा अस्फहानी सुधा हुआ प्रत्येक ७ मासे, सत्र को कूट छान कर काम में लावें । सवल और खुसी खुजली और दमा एक वीमारी आंख में है जिस में हर समय आंख तर रहती है और विना इरादा आंसू वहा करते हैं को लाभ देता है और जिस

वा अन्य ऐसी ही दवा पानी में पीसकर आंख की गीठ पर लेप करें और अंत में जरूरे अजफ़र सगीर, शियाफ अहमरे लय्यन के साथ मिलाकर आंख में लगावे तथा एलवा, रसौत और केसर मकोय के पानी म डालकर लेप करे और सुखाने वाले पदार्थ खाने को देवे और जो चीजें पकाती हैं उनको छोड़ देवे।

और जो आवश्कता होतो प्रति दिन रात के समय इत्रीफलका सेवन करे दूसरे यह कि इसका कारण कफ हो और उसका चिन्ह यह है कि बोझ मालूम हो तथा रीह की अपेक्षा ठंढा और तर हो और जिस समय उसको दवावें तो बड़ी देर तक उसमें दवाने का चिन्ह रहे और जल्दी पलटकर बराबर न हो (इलाज) कफ के साफ करने के लिये यारज देवे (अथवा) शिकंजबीन और गर्म पानी से वा मैफ़सतज (अंगूर का पानी औटाया हुआ यहां तक होकि चौथाई हिस्सा बाकी रहे) और अमलतास का गूदा या सौंफ के काढे से कुल्ला करें। इस तरह मलके साफ होने पर जरूर अहमरे लय्यन आंख मे लगावे पीछे जरूरे असफर और शियाफे अहमरे हाद (तेज) दोनों को इकट्ठा कर के लगावें।

शियाफ अहमरेहाद के बनाने की रीति

शादनज (एक पत्थर मसूर के समान) और फिटकरी भुनी हुई प्रत्येक ३॥ माशे, तांबा जलाहुआ, केसर और काली मिर्च प्रत्येक १॥ माशे कूट और छानकर तुतली के पानी में शियाफ (सलाई) बनालेवे। तीसरे यह कि उसका कारण पतली रतूबत का होना और उसका (चिन्ह) यह है कि दर्द, टीस और खुजली कुछ न हो और फूलने का रंग देह केसे रंगका हो और जब उस को दवावें तो दवाने के पीछे तत्काल अपनी निज दशापर आजाय और दवाने का चिन्ह बहुत देर तक न रहे (इलाज) मादे के निकालने के लिये ऐसे काढे या पानी जिसमें यारज मिली हुई हो पिलावे और सफाई के उपरांत उक्त सुर्मे को उक्त रीति से आंख में लगावे। शियाफे दीनार भी इस जगह अधिक लाभदायक है और उचित है कि बाबना, अकलील ुल मलिक, सआतर और दोना मरुआ के काढे से तरड़ा देवे और मसूर का चून, जौका चून, एलवा, मामीरा और अकलीलुल मलिक सौंफ के पानी में सानकर लेपकरे ... यह कि इसका कारण बादी हो और उसका (चिन्ह) यह है कि ... अर्थात् फूलना उभरना इतना कड़ा हो कि दव...

वा अन्य ऐसी ही दवा पानी में पीसकर आंख की पीठ पर लेप करे और अंत में जरूरे अजफ़र सगीर, शियाफ अहमरे लय्यन के साथ मिलाकर आंख में लगावे तथा एलवा, रसौत और केसर मकोय के पानी म डालकर लेप करे और झुखाने वाले पदार्थ खाने को देवे और जो चीजें पकाती हैं उनको छोड़ देवे।

और जो आवश्कता होतो प्रति दिन रात के समय इत्रीफल का सेवन करे दूसरे यह कि इसका कारण कफ हो और उसका चिन्ह यह है कि बोझ मालूम हो तथा रीह की अपेक्षा ठंडा और तर हो और जिस समय उसको दबावें तो बड़ी देर तक उसमें दबाने का चिन्ह रहे और जल्दी पलटकर बराबर न हो (इलाज) कफ के साफ करने के लिये यारज देवे (अथवा) शिकंज बीन और गर्म पानी से वा मैफ़्ख़्तज (अंगूर का पानी औटाया हुआ यहां तक होकि चौथाई हिस्सा बाकी रहे) और अमलतास का गूदा या सौंफ़ के काढे से कुल्ला करें। इस तरह मलके साफ होने पर जरूर अहमरे लय्यन आंख मे लगावे पीछे जरूरे असफर और शियाफे अहमरे हाद (तेज) दोनों को इकट्ठा कर के लगावें।

शियाफ अहमरेहाद के बनाने की रीति

शादनज (एक पत्थर मसूर के समान) और फिटकरी भुनी हुई प्रत्येक ३॥ माशे, तांबा जलाहुआ, केसर और काली मिर्च प्रत्येक १॥ माशे कूट और छानकर तुतली के पानी में शियाफ (सलाई) बनालेवे। तीसरे यह कि उसका कारण पतली रतूबत का होना और उसका (चिन्ह) यह है कि दर्द, टीस और खुजली कुछ न हो और फूलने का रंग देह केसे रंगका हो और जब उस को दबावें तो दबाने के पीछे तत्काल अपनी निज दशापर आजाय और दबानें का चिन्ह बहुत देर तक न रहे (इलाज) मादे के निकालने क लिये उसे काढे का पानी जिसमें यारज मिली हुई हो पिलावे और सफ़ाई के उपरांत उक्त सुमें को उक्त रीति से आंख में लगावे। शियाफे दीनार ग भी इस जगह अधिक लाभदायक है और उचित है कि बाबना, अक्लील उल मलिक, गाआतर और दौना मरुआ के काढे से तरडा देवे और मटर का चून, लौका [illegible]न, एलवा, नाखूना और अक्लीकुल मलिक सौंफ के पानी में सानकर लेपकरे [illegible] यह कि इसका कारण बादी हो और उसका (चिन्ह) यह है कि [illegible] [illegible] अर्थात् फूलना उभरना इतना ऊंचा हो कि दब [illegible]

सातवां भेद-मुल्ताहिमा में खुजली होने का वर्णन ।

खुजली का बहुधा कारण खारी फोक होता है जो खारके सदृश हो इसी कारण से आंसू खारी आते हैं और इस पर्दे के रग में लाली आजाती है और कभी २ पलक भी लाल होजाते हैं और खुजली की अधिकता से घायल भी हो जाते हैं (इलाज) प्रथम दस्त लेकर प्रतिदिन प्रात काल हम्माम में जांय और नर्म भोजनों का सेवन करै तथा तेज और खारी पदार्था से बचे और जो दवा आंसू निकालती है उन्हे आंख में लगावैं ॥

आठवां भेद- वतका का वर्णन ।

यह एक प्रकार की सूजन और कडी फुन्सियां होती हैं जो पर्दे मुल्तहिमा के ऊपर वडे वा छोटे कोये की तरफ से निकलती है और कभी स्याही के आर पास छोटे २ दाने वहुत से मोती के से निकल आते हैं और कभी यह रोग पलक के नीचे भी उत्पन्न होजाता है और इस सूजन का रग मादे के अनुसार तरह २ का होता है जैसे जो मादा खूनी हो तो वतका अर्थात् सख्त फुन्सियां और सूजन लाल रग की होती हैं और जो कफ के कारण से हो तो सफेद रग होता है और यह बीमारी रमद (आंख के दुखन) के अन्त में उत्पन्न हो जाती है और हिन्दी में इस रोग को रोहा कहा करते हैं (जैसा कि कहते हैं कि फलाने की आंख में दूखते २ रोहे पडगए) और वतका अर्थात् सूजन और कठोर फुन्सी और मोरसर्जे में यह अन्तर है कि मो रसर्जे करनियां (आख के तीसरे पर्दे) में होता है और वुतका मुल्तहिमा (आंख के ऊपरले पर्दे मे) उत्पन्न होता है और मोरसर्जे में करनियां (आंख का तीसरा पर्दा) फट जाता है और इनाविया वाहर निकल आता है और पर्दे मुल्तहिमा (आंख के ऊपरले पर्दे) में फटने की नौवत नहीं पहुचती (इलाज) कभी २ खून की दशा म फसद सरेरू की खोलें और कफ की दशा में कफ के निकालने के लिये अफ्तीमून का काढा और यारज फी गा लीदें और सफाई के पीछे जो रोग वाकी रहे तो ध्यान से देखे कि लाल है या सफेद और जो लाल हो तो शियाफ अवियज आंख में लगावें और जो सफेद हो तो शियाफे अहमरे लय्यन काम में लावें और जब वहुत दिन बीत जांय तो तेज दवाए जैसे वासलीकून और शियाफ अहमरे हाद और वैसी ही अन्य दवा काम में लावे और जिस समय मादा इकट्ठा होने लगे तो पहले पकने और जमा होने की सहायता के लिये शियाफे काम में लावें

सातवां भेद-मुल्तहिमा में खुजली होने का वर्णन।

खुजली का बहुधा कारण खारी फोक होता है जो खारके सदृश हो इसी कारण से आंसू खारी आते है और इस पर्दे के रग में लाली आजाती है और कभी २ पलक भी लाल होजाते है और खुजली की अधिकता से घायल भी हो जाते हैं (इलाज) प्रथम दस्त लेकर प्रतिदिन प्रात काल हम्माम में जांय और नर्म भोजनों का सेवन करै तथा तेज और खारी पदार्थो से बचे और जो दवा आंसू निकालती है उन्है आंख में लगावैं॥

आठवां भेद- वतका का वर्णन।

यह एक प्रकार की सूजन और कड़ी फुन्सियां होती हैं जो पर्दे मुल्तहिमा के ऊपर बड़े वा छोटे कोये की तरफ से निकलती हैं और कभी स्याही के और पास छोटे २ दाने बहुत से मोती के से निकल आते हैं और कभी यह रोग पलक के नीचे भी उत्पन्न होजाता है और इस सूजन का रग मादे के अनुसार तरह २ का होता है जैसे जो मादा खूनी हो तो वतका अर्थात् सख्त फुन्सियां और सूजन लाल रग की होती हैं और जो कफ के कारण से हो तो सफेद रग होता है और यह बीमारी रमद (आंख के दुखन) के अन्त में उत्पन्न हो जाती है और हिन्दी में इस रोग को रोहा कहा करते हैं (जैसा कि कहते हैं कि फलाने की आंख में दूखते २ रोहे पड़गए) और वतका अर्थात् सूजन और कठोर फुन्सी और मोरसर्ज में यह अन्तर है कि मो रसर्ज करनियां (आंख के तीसरे पर्दे) में होता है और वुतका मुल्तहिमा (आंख के ऊपरले पर्दे में) उत्पन्न होता है और मोरसर्ज में करनियां (आंख का तीसरा पर्दा) फट जाता है और इनबिया बाहर निकल आता है और पर्दे मुल्तहिमा (आंख के ऊपरले पर्दे) में फटने की नौबत नहीं पहुंचती (इलाज) कभी २ खून की दशा में फसद सरेरू की खोलें और कफ की दशा में कफ के निकालने के लिये अफ्तीमून का काढा और यारज फीगा लीदें और सफाई के पीछे जो रोग बाकी रहे तो ध्यान से देखे कि लाल है या सफेद और जो लाल हो तो शियाफ अबियज आंख में लगावें और जो सफेद हो तो शियाफे अहमरे लय्यन काम में लावें और जब बहुत दिन बीत जांय तो तेज दवाएं जैसे बासलीकून और शियाफ अहमरे हाद और वैसी ही अन्य दवा काम में लावे और जिस समय मादा इकट्ठा होने लगे तो पहले पकने और जमा होने की सहायता के लिये शियाफे काम में लावें

और उस के समान पैदा करती है और कभी पलकों को खाकर गिरा देती है और यह रोग दो प्रकार का होता है एक यह है कि जन्म से हो दूसरे यह कि किसी ऊपरी कारण से हो। जन्म वाले का इलाज नहीं परन्तु ऊपरी का इलाज हो सकता है परन्तु जो ऊपरी भी उस मांस के अधिक कटने से जो आंख के कोये में है होजाय तो इसका इलाज भी नहीं हो सकता है और दमआ के जैसे जैसे कारण हैं उसी के अनुसार इसे भी वर्णन करते हैं ॥

॥ पहिला भेद ॥

इस प्रकार का दमआ अधिक निचोड के कारण से उत्पन्न होजाता है जैसा कि नाखूना के काटने में हद से वढकर आंख के कोये का कुछ मांस भी नाखूने के साथ कट गया हो और उसके समेट से दमआ रोग उत्पन्न होगया हो तो उसका इलाज इस समय तक हो सकता है जब कि आंख के कोये का मास थोडासा कट गयाहो और बहुतसा शेष रह गयाहो और जो मांस सबका सब या बहुतसा कट जाय तो कभी दवा असर करनेवाली नहीं होती (इलाज) जरूरें असफर और शियाफे जाफरान आंखमें लगावे और एलवा कुंदुरु गोंद और शियाफे मामीसा और उनके सिवाय जो चीजें मांस उत्पन्न करतीहै और अंगमें अजीर्ण करती है और रतूबतको सुखातीहै काममें लावे।

शियाफे जाफरान के बनाने की रीत

यह है कि केसर और बालछड प्रत्येक ७ माशे, पीपल ३॥ माशे, मिर्च सफेद ९ रत्ती, नौशादर १॥। माशे, माजू १०॥ माशे, कपूर ३ रत्ती, ये सब ७ दवा हैं इनको कूट और छानकर गुलाब में गूदकर शियाफ (सलाई) बनालेवे।

दूसरा भेद

इस प्रकारके दमे का यह कारण है कि सिर और आंख माद्दे से भर गई हो और ग्रहणशक्ति तथा पाचकशक्ति निर्बल हों (इलाज) दिमाग के साफ करने के लिये मुसहिल देवे और जो परीक्षा में आवे तो फसद खोले और माद्दे के साफ करने के पीछे तीला थोथा भुना हुआ और दूसरे सुरमें कि जो इस काम के योग्य हो आंख में लगावे।

तर दमेमें लाभकारी सुर्मा

यह आंख की आरोग्यता की रक्षा करता है तीला थोथा और हन्न की छाल घिसी हुई दोनों को बराबर लेकर खट्टे अंगूर के पानी में या गाढ स-

और उस के समान पैदा करती है और कभी पलकों को खाकर गिरा देती है और यह रोग दो प्रकार का होता है एक यह है कि जन्म से हो दूसरे यह कि किसी ऊपरी कारण से हो। जन्म वाले का इलाज नहीं परन्तु ऊपरी का इलाज हो सकता है परन्तु जो ऊपरी भी उस मांस के अधिक कटने से जो आंख के कोये में है होजाय तो इसका इलाज भी नहीं हो सकता है और दमआ के जैसे जैसे कारण हैं उसी के अनुसार इसे भी वर्णन करते हैं ॥

॥ पहिला भेद ॥

इस प्रकार का दमआ अधिक निचोड के कारण से उत्पन्न होजाता है जैसा कि नाखूना के काटने में हद से बढकर आंख के कोये का कुछ मांस भी नाखूने के साथ कट गया हो और उसक समेट से दमआ रोग उत्पन्न होगया हो तो उसका इलाज इस समय तक हो सकता है जब कि आंख के कोये का मास थोडासा कट गयाहो और बहुतसा शेष रह गयाहो और जो मांस सबका सब या बहुतसा कट जाय तो कभी दवा असर करनेवाली नहीं होती (इलाज) जरूरे असफर और शियाफे जाफरान आंखमें लगावे और एलवा कुंदुरु गोंद और शियाफे मामीसा और उनके सिवाय जो चीजें मांस उत्पन्न करतीहै और अंगमें अजीर्ण करती ह और रतूबतको सुखातीहै काममें लावे।

शियाफे जाफरान के बनाने की रीत

यह है कि केसर और बालछड प्रत्येक ७ माशे, पीपल ३॥ माशे, मिर्च सफेद ९ रत्ती, नौशादर १॥। माशे, माजू १०॥ माशे, कपूर ३ रत्ती, ये सब ७ दवा है इनको कूट और छानकर गुलाब में गूंदकर शियाफ (सलाई) बनालेवे।

दूसरा भेद

इस प्रकारके दमे का यह कारण है कि सिर और आंख माद्दे से भर गई हो और ग्रहणशक्ति तथा पाचकशक्ति निर्बल हों (इलाज) दिमाग के साफ करने के लिये मुसहिल देवे और जो परीक्षा में आवे तो सरेरू खोले और माद्दे के साफ करने के पीछे लीला थोथा सुना हुआ और दूसरे सुरमें कि जो इस काम के योग्य हो आंख में लगावे।

तर दमेमें लाभकारी सुर्मा

यह आंख की आरोग्यता की रक्षा करता है लीला थोथा और हर्र की छाल घिसी हुई दोनों को बराबर लेकर खट्टे अंगूर के पानी में या गाळ स-

और वारीक कपडे में छानकर काम में लावे । और जिसकी प्रकृति सर्दतर हो उस के लिये वासलीकून और सुरमा लाभदायक है ।

आंख की निर्बलता में उपयोगी दवा ।

पीलीहरड जलीहुई गुठली, नमकसंग, और माजू, इन तीनों को बराबर लेकर कूट और छानकर काम में लावें ।

बारहवां प्रकरण ।

बव्वारतीन का वर्णन ।

यह ऐसा रोग होता है कि इस में हर घडी थोडी २ देर में आंसू टपकने लगते हैं और फिर थमजाते हैं । हकीम, तिवरी ने कहा है कि किसी कारण से इस का नाम अव्वालतनि है और इसका कारण यह होता है कि ऊपर की पलक थोडी सी मोटी और गदी होजाय और उस पलक के भीतर कोई चीज उभर आवे फिर जिस समय वह उभरी हुई चीज पर्दे मुल्तहिमा पर या नीचे के पलकपर लगती है तब उस रिगडने से आंसू निकलते हैं और जाती है जैसे जिस समय देह में मवाद भरा हो आमाशय भोजन और शराब आदि से भरा हो और बहुत जागने का काम पडा होतो इस में पलक में गाढापन और गदगी बढ जाती है और उसका कष्ट अधिक होजाता है और जिस समय पेट खाली हो और थोडी नींद आई हो तो इस दशा में कष्ट कम और हलका होगा और जिस समय पलक में गाढापन बहुत कमहो और भीतर बहुत कम उभरा हुआ मालूमहो इतना कि पर्द मुल्तहिमा और नीचे की पलक पर बलपूर्वक न घुससके इस दशा में आंसू नहीं निकलते और यहरोग कारण के अनुसार बहुधा पलक के रोगों में गिना जाता है परन्तु दमआक पीछे उसका वर्णन करना इस कारण से उचित समझागया, है कि दम में भी आंसू निकलते हैं और इस में भी आंसू निकलते हैं (इलाज) देह को मल से साफ करें और गाढ और बादी करने वाले भोजन न खांय । इस रोग में भोजन का कम करना और पाचक शक्ति के बढाने का उपाय करना उचित है और मादे के निकालने वाली दवा जैसे मामीसा बूल और केसर पलक के ऊपर लेप करे और सिंकताव करे और सफाई के पीछे ऐसी दवा जो आंसू निकालती हैं और रतूबतों को नष्ट करती हैं जैसे वासलीकून और शियाफे अहमर आंख में लगावे ॥

और वारीक कपड़े में छानकर काम में लावे । और जिसकी प्रकृति सर्दतर हो उस के लिये वासलीकून और सुरमा लाभदायक है ।

आंख की निर्बलता में उपयोगी दवा ।

पीलीहरड जलीहुई गुठली, नमकसंग, और माजू, इन तीनों को बराबर लेकर कूट और छानकर काम में लावें ।

बारहवां प्रकरण ।

बव्वालतीन का वर्णन ।

यह ऐसा रोग होता है कि इस में हर घडी थोडी २ देर में आंसू टपकने लगते हैं और फिर थमजाते हैं । हकीम, तिवरी ने कहा है कि किसी कारण से इस का नाम अव्वालतनि है और इसका कारण यह होता है कि ऊपर की पलक थोडी सी मोटी और गदी होजाय और उस पलक के भीतर कोई चीज उभर आवे फिर जिस समय वह उभरी हुई चीज पर्दे मुल्तहिमा पर या नीचे के पलकपर लगती है तब उस रिगडने से आंसू निकलते हैं और जाती है जैसे जिस समय देह में मवाद भरा हो आमाशय भोजन और शराब आदि से भरा हो और बहुत जागने का काम पडा होतो इस में पलक मे गाढापन और गदगी बढ जाती है और उसका कष्ट अधिक होजाता है । और जिस समय पेट खाली हो और थोडी नींद आई हो तो इस दशा में कष्ट कम और हलका होगा और जिस समय पलक में गाढापन बहुत कमहो और भीतर बहुत कम उभरा हुआ मालूमहो इतना कि पर्द मुल्तहिमा और नीचे की पलक पर बलपूर्वक न घुससके इस दशा में आंसू नहीं निकलते और यहरोग कारण के अनुसार बहुधा पलक के रोगों में गिना जाता है परन्तु दमआके पीछे उसका वर्णन करना इस कारण से उचित समझागया, है कि दम में भी आंसू निकलते हैं और इस में भी आंसू निकलते हैं (इलाज) देह को मल से साफ करें और गाढ और वादी करने वाले भोजन न खांय । इस रोग में भोजन का कम करना और पाचक शक्ति के बढाने का उपाय करना उचित है और माद्दे के निकालने वाली दवा जैसे मामीसा बूल और केसर पलक के ऊपर लेप करै और सिदताव करै और सफाई के पीछे ऐसी दवा जो आंसू निकालती हैं और रतूवतों को नष्ट करती हैं जैसे वासलीकून और शियाफे अहमर आंख मे लगावे ॥

आंखमें किसी वस्तुके गिरने का वर्णन

इसके पहचानने की यह (रीति) है कि जिस समय धूल और हवा के पहुचने के पीछे आंख में छिलन मालूमहो और आंसू निकलने लगें और इससे पहिले किसी प्रकारका कष्ट आंख में न हो तो जानसकते है कि कोई ऊपरी चीज आंखमें गिरपडी है (इलाज) आंखको गर्म पानी से धोवें परन्तु हाथ से कभी न मलें और आंखमें स्त्रियों का दूध डालें। जो धूआं और धूल गिरी हैं तो इसी उपायसे दूर हो जायगा और नहीं तो पलक को उलटकर आंख के भीतर और दोनों पलको की जडमें ध्यानसे देखें जो दिखलाई दे तो सलाई के सिरे से उसको उठालेवें या एक रुईका फोआ आंख के भीतर रक्खें और थोडी देर तक उसके ऊपर रहने दें इसलिये कि जो चीज आंखम पडगई है इसरुई में लगजाय फिर एकसाथ उसको बाहर निकाल लेवें और जो वह चीज बहुत ऊपरहो और पर्दे मुल्तहिमा में या पलकके भीतर न घुसगई हो तो अलसी के टुकडे से या जो कपडा मौजूद हो उससे सहजम निकलआती है और जो बहुत भीतर घुसगई हो और इन उपायों से न निकले तो उचित है कि नशास्ते को बारीक पीसकर आंखमें डाले और थोडी देरतक वहीं रहने देवे इससे जो चीज कि आंख में गिरपडी है अपनी जगहसे जुदा होकर नशास्ते म लगजायगी फिर उसे रुई से निकाल लेवे और कभी २ आंख में पडीहुई वस्तु मालूम नहीं होती परन्तु जब बारीक कपडा उंगलीपर लपेटकर पलक के भीतर फेरते है तो निकलआती है और जहां कहीं कोई खुरखुरी चीज जैसे गेहूं या जौ की बालके ऊपर का तिनका या कांच का टुकडा और ऐसी ही कोई और वस्तु गिरपडती है और चिपट जाती है तो इस दशामें उनको उस औजारसे जो इस कामके लिये मुख्य है पकडकर निकाललवें या और जिस तरहसे निकालना उचित हो निकालना चाहिये और उसके पीछे स्त्रियों का दूध वा अंडे की सफेदी आंख में डाले जिससे कोई हानि न होने पावे।

आंख में जानवर गिरने का वर्णन।

जानना चाहिये कि मच्छर की सूरत का एक जानवर वा उससे भी बहुत छोटा होता है इस के बहुतही छोटे दो पर होते हैं जिस समय यह आंख मे गिरता है तो पुतली पर चिपट जाता है और आंख के डेले को चूसता है इस कारण से आंख को अधिक कष्ट पहुचता है और सुरसुराहट भी मालूम होती है और आंख लाल होजाती है उसके निकालने की दो रीति हैं एक यह

आंखमें किसी वस्तुके गिरने का वर्णन

इसके पहचानने की यह (रीति) है कि जिस समय धूल और हवा के पहुचने के पीछे आंख में छिलन मालूमहो और आंसू निकलने लगें और इससे पहिले किसी प्रकारका कष्ट आख में न हो तो जानसकते हैं कि कोई ऊपरी चीज आंखमें गिरपडी है (इलाज) आखको गर्म पानी से धोवे परन्तु हाथ से कभी न मले और आंखमें स्त्रियों का दूध डाले। जो धूआं और धूल गिरी है तो इसी उपायसे दूर हो जायगा और नहीं तो पलक को उलटकर आख के भीतर और दोनों पलको की जडमें ध्यानसे देखें जो दिखलाई दे तो सलाई के सिरे से उसको उठालेवे या एक रुईका फोआ आंख के भीतर रक्खे और थोडी देर तक उसके ऊपर रहने दें इसलिये कि जो चीज आखम पडगई ह इसरुई में लगजाय फिर एकसाथ उसको बाहर निकाल लेवे और जो वह चीज बहुत ऊपरहो और पर्द मुल्तहिमा में या पलकके भीतर न घुसगई हो तो अलसी के टुकडे स या जो कपडा मौजूद हो उससे सहजम निकलआती है और जो बहुत भीतर घुसगई हो और इन उपायों से न निकले तो उचित है कि नशास्ते को बारीक पीसकर आंखमें डाले और थोडी देरतक वहीं रहन देवे इससे जो चीज कि आख में गिरपडी है अपनी जगहसे जुदा होकर नशास्ते म लगजायगी फिर उसे रुई से निकाल लेवे और कभी २ आख में पडीहुइ वस्तु मालूम नहीं होती परन्तु जब बारीक कपडा उगलीपर लपेटकर पलक के भीतर फेरते है तो निकलआती है और जहां कहीं कोई खुरखुरी चीज जैसे गेहू या जो की बालके ऊपर का तिनका या कांच का टुकडा और ऐसी ही कोई और वस्तु गिरपडती है और चिपट जाती है तो इस दशामें उसको उस औजारसे जो इस कामके लिये मुख्य है पकडकर निकाललेवे या और जिन तरहसे निकालना उचित हो निकालना चाहिये और उसके पीछे स्त्रियों का दूध वा अडे की सफेदी आंख में डाले जिससे कोइ हानि न होने पावे।

आख में जानवर गिरने का वर्णन।

जानना चाहिये कि मच्छर की सूरत का एक जानवर वा उससे भी बहुत छोटा होता है इस के बहुतही छोटे दो पर होते हैं जिस समय यह आंख मे गिरता है तो पुतली पर चिपट जाता है और आंख के डेले को चूसता है इस कारण से आंख को अधिक कष्ट पहुचता है और झलझलाहट भी मालूम होती है और आंख लाल होजाती है उसके निकालने की दो रीति हैं एक यह

होता है वह दिखलाई देताहै और प्रत्येक घाव के पुरपर चिन्ह है । य चिन्हउस घाव के विरुद्ध हैं जो इनके सिवाय और दूसरे पदा में होते हैं जो दिखलाई नहीं दिया करते परन्तु जिस समय पीपउचलकर ऊपरकेपर्दों को फाड़कर औररतूबतों मे घुस कर बाहर की तरफ आती है तब दिखलाई देते हैं । परन्तु आरंभ में इस के कुछ चिन्ह नहीं पाये जाते केवल बहुत दर्द और अधिक कष्ट अवश्य हुआ करता है । इस बात को हकीम जानता है कि यह आंख दुखती है या सूज गई है और इस कारण से घाव का कारण वे तेज दोष जले हुए और जलन उत्पन्न करनेवाले हैं जो पर्दा में घुस कर घाव उत्पन्न करतेहैं इसलिये दर्द की अधिकता चुभन टीस और आंसू बहना सब पदा के घावों में हुआ करताहै । अब वे चिन्ह जो मुल्तहिमा इनबिया और करनिया पदायेघावके साथ सबब रखते हैं वर्णन कियेजाते हैं। पर्दै मुल्तहिमा के घाव का यह (चिन्ह) है कि आंख की सफेदी में एक लाल बिन्दु प्रगट हो और जो लाली सब सफेदी में फैलगई होतो कोई मुख्य स्थान दूसरे भागों से अधिक लाल दिखलाई दे और इसके सिवाय कि दूसरे (चिन्ह) जो घाव में अवश्य होते हैं और वर्णन हो चुके हैं अर्थात् दर्द की अधिकता चुभन और धमक आदि इस के साक्षी होंगे और पद मुल्तहिमा म जो घाव गहरा होता है उस को फार्सी में दुनीला कहते है । और पद इनबिया के घाव का यह (चिन्ह) है कि आंख की स्याही के सामने एक बिन्दु लाल या लाल रगों से बना हुआ हो दिख लाई दे फिर जो मादा प्रमाण से अधिक और दशा में बुरा होता है तो पर्दै करनियां को फाड़ डालता है और जो अधिकता और बुराई से खाली होता हो तो नष्ट होजाता है और फटन की नौबत नहीं पहुचती और पद करनिया के घाव के होने का यह चिन्ह है कि आंख की स्याही में एक सफेद दाग पैदा हो और इस पद में सफेद घाव होने का यह कारण है कि इनबिया पर्दा जो उसके नीचे है वह दृष्टि को उसके देखने से रोकता है और करनिया पर्दै का रंग उसके रंग जैसा दीखता है और इस पद के घावों के ७ भेद हैं और इन सात म से चार ऐसे होते हैं जो पद करनिया के बाहरी भाग पर उत्पन्न हों और तीन उसके भीतर अर्थात् गहराई म होते हैं इस लिये उनके घावों को हम दो भेद में वर्णन करते हैं ।

पहला भेद ।

पद करनिया का वह घाव [illegible] मा [illegible] उत्पन्न होता है उसे हकीम जालीनूस तथा उर्स [illegible] है

होता है वह दिखलाई देताहै और प्रत्येक घाव केमुखपर चिन्ह है । य चिन्हउस घाव के विरुद्ध है जो इनके सिवाय और दूसरे पर्दा में होते हैं जो दिखलाई नहीं दिया करते परन्तु जिस समय पीपउबलकर ऊपरकेपर्दों को फाड़कर औररतूबतों मे घुस कर बाहर की तरफ आती है तब दिखलाई देते हैं । परन्तु आरम्भ में इस के कुछ चिन्ह नहीं पाये जाते केवल बहुत दर्द और अधिक कष्ट अवश्य हुआ करता है । इस बात को हकीम जानता है कि यह आंख दुखती है या सूज गई है और इस कारण से घाव का कारण वे तेज दोष जले हुए और जलन उत्पन्न करनेवाले हैं जो पर्दा में घुस कर घाव उत्पन्न करतेहैं इसलिये दर्द की अधिकता चुभन टीस और आंसू बहना सब पर्दा के घावों में हुआ करताहै । अब वे चिन्ह जो मुल्तहिमा इनबिया और करनिया पर्दाकेघावके साथ सबब रखते हैं वर्णन कियेजाते है । पर्दे मुल्तहिमा के घाव का यह (चिन्ह) है कि आंख की सफेदी में एक लाल बिन्दु प्रगट हो और जो लाली सब सफेदी में फैलगई होतो कोई मुख्य स्थान दूसरे भागों से अधिक लाल दिखलाई दे और इसके सिवाय कि दूसरे (चिन्ह) जो घाव में अवश्य होते हैं और वर्णन हो चुके है अर्थात् दर्द की अधिकता चुभन और धमक आदि इस के साक्षी होंगे और यह मुल्तहिमा म जो घाव गहरा होता है उस को फार्सी मे दखीला कहते हैं । और पर्द इनबिया के घाव का यह (चिन्ह) है कि आंख की स्याही के सामने एक बिन्दु लाल जो लाल रगों से बना हुआ हो दिख लाई दे फिर जो माद्दा प्रमाण मे अधिक और दशा मे बुरा होता है तो पर्दे करनियां को फाड़ डालता है और जो अधिकता और बुराई से खाली होता हो तो नष्ट होजाता है और फटन की नौबत नहीं पहुंचती और पर्द करनिया के घाव के होने का यह चिन्ह है कि आंख की स्याही में एक सफेद दाग पैदा हो और इस पर्द में सफेद घाव होने का यह कारण है कि इनबिया पर्दा जो उसके नीचे है वह दृष्टि को उसके देखने से रोकता है और करनिया पर्दे का रंग उसके रंग जैसा दीखता है और इस पर्द के घावों के ७ भेद हैं और इन सात में से चार ऐसे होते हैं जो पर्द करनिया के बाहरी भाग पर उत्पन्न हों और तीन उसके भीतर अर्थात् गहराई में होते हैं इस लिये उनके घावों को हम दो भेद में वर्णन करते हैं ।

पहला भेद ।

पर्द करनिया का वह घाव [illegible] उत्पन्न होता है उसे हकीम जालीग्रम तथा उर्स [illegible]

आता है । दूसरे यह कि लौकूपून की अपेक्षा अधिक चौडा हो और गहराई में कम हो और उसको हाफरा कहते हैं और यूनानी में कूलूमा अर्थात् गहरा गढा कहते हैं और जखीरे ख्वारज्म शाही में लिखता है कि उसको फलगमूना कहते है अर्थात् रंज पहुचाने वाला और दुःख देने वाला । तीसर यह कि इस में से बहुत मैल चीपड और खुरंड आवें और जो बहुत समय बीत जाय तो आख की रतूबत उस से छन कर निकल जाय और किसी किसी के मत में यही दबीला अर्थात् गहरा घाव है । और यह घाव भी इन्हीं नामों से नाम लिया जाता है जो पहले, भेद के चौथे प्रकार में वर्णन किये गए है अर्थात् दूसरा की अवीकूमा और हफीकादमा, और एक प्रकार का घाव होता है जो इन से जुदा है-और कभी २ होता है उसको "जातुलु" अर्थात् रगों का घाव कहते है और इस की पहचान यह है कि उसमें रगें बहुत और आख की जिस जगहमें यह प्रकट हो वहा टहनीमें टहनी और रगें बनी हुई प्रकट हो जैसे जाल और यह घाव बहुत से पर्दों को दबा लेता है और गहरा घाव होजाता है । और इस से आख अच्छी नहीं होती और इस के उत्पन्न होने की जगह पर्दे शबकिया है (लाभ) इन घावों में से जल्दी अच्छा होने वाला वह घाव है जो पर्दे मुल्तहिमा में उत्पन्न हो और उस में दर्द और बेचैनी और आंसू बहुत कम हों और बीमार आंख को बन्द कर सके और जो ऐसा न हो तो वह बहुत बुरा होता है विशेष कर जो स्याही में पुतली के साम्हने हो (इलाज) जिस समय ये चिन्ह कि जिन का वर्णन आया है उनका गुण प्रकट हो तो जल्द फस्द खोलें और शक्ति के अनुसार खून निकालें और हर सातवें दिन या उस से भी पहले रगें मरेरू से थोडा खून निकालते रहें । हरड, इमली और अमलतास के काढे से और ऐसी ही अन्य वस्तुओं से तबियत को नर्म करें और हरड के काढे में थोडासा यारज डालना बहुत उत्तम है और कई बार जुलाब देवें और जब घाव उस कोने की तरफ जो नाक की ओर है बहुत समीप हो तो सोते समय इस प्रकार सोवे कि वह भाग ऊंचा रहे जिस से पीप आख के कोये में इकट्ठा न हो और उसको न बिगाडे । जो उस कोने में हो जो कान की तरफ है तो ऐसी तरह पर सोवे कि यह कोना तकिये के ऊपर हो इस लिये कि पीप छन कर निकलता रहे । चिल्लाना वमन, छींक, सिरहाना नीचा रखना और गाढे भोजन खाना हानि दायक है उन से बचते रहें और जो घाव नक्सान और मादा गर्म जलाने

आता है। दूसरे यह कि लौकूपून की अपेक्षा अधिक चौडा हो और गहराई में कम हो और उसको हाफरा कहते हैं और यूनानी में क्लुमा अर्थात् गहरा गढा कहते हैं और जखीरे ख्वारज्म शाही में लिखता है कि उसको फलगमूना कहते हैं अर्थात् रंज पहुचाने वाला और दुख देने वाला। तीसरे यह कि इस में से बहुत मैल चीपड और खुरड आवें और जो बहुत समय बीत जाय तो आख की रतूबत उस से छन कर निकल जाय और किसी किसी के मत में यही दबीला अर्थात् गहरा घाव है। और यह घाव भी इन्हीं नामों से नाम लिया जाता है जो पहले, भेद के चौथे प्रकार में वर्णन किये गए हैं अर्थात् इसरा की अबीक्रूमा और हफीकादमा, और एक प्रकार का घाव होता है जो इन से जुदा है-और कभी २ होता है उसको "जातुलु" अर्थात् रगों का घाव कहते हैं और इस की पहचान यह है कि उसमें रगें बहुत और आख की जिस जगहमें यह प्रकट हो वहां टहनीमें टहनी और रगें बनी हुई प्रकट हो जैसे जाल और यह घाव बहुत से पर्दों को दबा लेता है और गहरा घाव होजाता है। और इस से आख अच्छी नहीं होती और इस के उत्पन्न होने की जगह पर्दे शबकिया है (लाभ) इन घावों में से जल्दी अच्छा होने वाला वह घाव है जो पर्दे मुल्तहिमा में उत्पन्न हो और उसमें दर्द और बेचैनी और आंसू बहुत कम हों और बीमार आंख को बन्द कर सके और जो ऐसा न हो तो वह बहुत बुरा होता है विशेष कर जो स्याही में पुतली के साम्हने हो (इलाज) जिस समय ये चिन्ह कि जिन का वर्णन आया है उनका गुण प्रकट हो तो जल्द फस्द खोलें और शक्ति के अनुसार खून निकालें और हर सातवें दिन या उस से भी पहले रगें मरेठ से थोडा खून निकालते रहें। हरड, इमली और अमलतास के काढे से और ऐसी ही अन्य वस्तुओं से तबियत को नर्म करें और हरड के काढे में थोडासा यारज डालना बहुत उत्तम है और कई बार जुलाब देवें और जब घाव उस कोने की तरफ जो नाक की ओर है बहुत समीप हो तो सोते समय इस प्रकार सोवे कि वह भाग ऊंचा रहे जिस से पीप आंख के कोये में इकट्ठा न हो और उसको न बिगाड़े। जो उस कोने में हो जो कान की तरफ है तो ऐसी तरह पर सोवे कि यह कोना तकिये के ऊपर हो इस लिये कि पीप छन कर निकलता रहे। चिल्लाना वमन, छींक, सिरहाना नीचा रखना और गाढे भोजन खाना हानि दायक है उन से बचते रहें और जो घाव नहलान और मारा गर्म जलने

से बहुत समय तक आंख बंद रहे और निकम्मा मवाद वा फोक उसके ऊपर गिरता रहे और वह निर्बलता के कारण से न निकल सके यद्यपि घाव अच्छा होजाय परन्तु सफेदी बाकी रहे और इस भांति की सफेदी इलाज से सब की सब नष्ट नहीं होती है घाव के चिन्ह के बराबर सफेदी रह जाती है क्योंकि जिस समय करानियां पर्दे में घाव हो जाता है तो वह पुर तो जाता है पर मिलकर एकसा नहीं होजाता जैसा कि होजाना चाहिये परन्तु मिलने का चिन्ह बसम शेष रहता है जैसा कि खाल में रह जाया करता है और इस चिन्ह के जाने की आशा नहीं होती है। (२) आंख दूखने के कारण सफेदी होजाती है इसका कारण यह है कि इलाज में असावधानी होने से मवाद गाढ़ा होजाय और उसके नष्ट न होने से आंख के पर्दों में कष्ट पहुंचे और आंख बंद रहे फिर इस कारण से बहुत से निकम्मे मवाद उसमें आजाय और सफेदी पड़ जाय। (३) आधी आंख में दर्द अधिक हो और इस दर्द के पीछे सफेदी उत्पन्न होजाती है कारण यह है कि आंख सिरदर्द के कष्ट से बंद रहती है और उसमें निकम्मा मवाद आजाता है क्योंकि जो दर्द सिर बहुत कष्ट पहुंचाता है उसमें आंख का बंद रखना अच्छा लगता है और जिस समय ऐसा होता है तो वे फोक जो आंख के खुलने और चलने फिरने से निकल जाया करते हैं वे रुक कर वहीं रह जाया करते है (इलाज) जो कारण शेष होता उसे पहले उन चीजों से दूर करे जो उसके अनुकूल हो और नहीं तो इस रोग में न फस्द खोलने की आवश्यकता है न तीक्ष्ण विरेचन की। परन्तु जहां कहीं यह भय हो कि फाटने वाली तेज दवाओं के लगाने से जो गर्मी उत्पन्न होकर मवाद या खाचे ऐसी दशा में पहले फस्त खोलना और विरेचन देना सब से अच्छा होता है और हेतु के दूर होने पर जो आंख की सफेदी हलकी होतो केवल लाले का पानी (लाला एक घास का नाम है सगसग के पत्ते और फूल के समान होती है) और कन्तूरयून (अर्थात् एक घास का नाम है जो रूमी की अर्थात् फसल में लगती है) का निचोड़ा हुआ पानी शहद के साथ लगाना इसको फाट डालता है और बहुधा सफेदी पतली जीभ लगाने से भी जाती रहती है यह काम इस तरह करते हैं कि प्रथम खांड और नमक जीभपर मलें जब जीभ सुरखी होजाय तो आंख को जीभ पर मलें इसी तरह प्रतिदिन मल साफ करता रहे इस रोगी को सदा पथ्य से रहना चाहिये। और जो सफेदी गाढ़ी होतो बलवान औषध लगावें जैसाकि जलाहुआ तांबा, झाग, नागरद

से बहुत समय तक आंख बंद रहे और निकम्मा मवाद वा फोक उसके ऊपर गिरता रहै और वह निर्बलता के कारण से न निकल सके यद्यपि घाव अच्छा होजाय परंतु सफेदी बाकी रहै और इस भांति की सफेदी इलाज से सब की सब नष्ट नहीं होती है घाव के चिन्ह के बराबर सफेदी रह जाती है क्योंकि जिस समय करनियां पर्दे में घाव हो जाता है तो वह पुर तो जाता है पर मिलकर एकसा नहीं होजाता जैसा कि होजाना चाहिये परंतु मिलने का चिन्ह उसमें शेष रहता है जैसा कि खाल में रह जाया करता है और इस चिन्ह के जाने की आशा नहीं होती है। (२) आंख दूखने के कारण सफेदी होजाती है इसका कारण यह है कि इलाज में असावधानी होने से मवाद गाढा होजाय और उसके नष्ट न होने से आंख के पर्दों में कष्ट पहुंचे और आंख बंद रहे फिर इस कारण से बहुत से निकम्मे मवाद उसमें आजाय और सफेदी पड जाय। (३) आधी आंख में दर्द अधिक हो और इस दर्द के पीछे सफेदी उत्पन्न होजाती है कारण यह है कि आंख सिरदर्द के कष्ट से बंद रहती है और उसमें निकम्मा मवाद आजाता है क्योंकि जो दर्द सिर बहुत कष्ट पहुंचाता है उसमें आंख का बंद रखना अच्छा लगता है और जिस समय ऐसा होता है तो वे फोक जो आंख के खुलने और चलने फिरने से निकल जाया करते हैं वे रुक कर वहीं रह जाया करतेहैं (इलाज) जो कारण शेष होता उसे पहले उन चीजों से दूर करे जो उसके अनुकूल हो और नहीं तो इस रोग में न फस्द खोलने की आवश्यकता है न तीक्ष्ण विरेचन की। परंतु जहां कहीं यह भय हो कि काटने वाली तेज दवाओं के लगाने से जो गर्मी उत्पन्न होकर मवाद को खींचे ऐसी दशा में पहले फस्द खोलना और विरेचन देना सब से अच्छा होता है और हेतु के दूर होने पर जो आंख की सफेदी हलकी होतो केवल लाले का पानी (लाला एक घास का नाम है खसखस के पत्ते और फूल के समान होती है) और कन्तूरयून (अर्थात् एक घास का नाम है जो रबी की अर्थात् फसल में उगती है) का निचोड़ा हुआ पानी शहद के साथ लगाना इसको काट डालता है और बहुधा सफेदी पतली जीभ लगाने से भी जाती रहती है यह काम इस तरह करते हैं कि प्रथम खांड और नमक जीभपर मलें जब जीभ खुरखुरी होजाय तो आंख को जीभ पर मलें इसी तरह प्रतिदिन प्रात काल करता रहै इस रोगी को सदा पथ्य में रहना चाहिये। और सफेदी गाढी होतो बलवान औषध लगावे जैसाकि जलाहुआ तांबा, झाग, नागरद

❀ हजम सगीर के बनाने की रीति ❀

मुर्गी के अंडे का छिलका जितना चाहे उस को लेकर मीठे पानी में भिगोदे और उस बरतन को धूपमें रख दे यहां तक कि उस पानी में बदबू आने लगे फिर उस को धीरे धीरे धोकर पानी निकाल डाल फिर दूसरा ताजा पानी मिलावें इसी तरह करते रहे जब तक पानी में बदबू आवे फिर छिलकों को निकाल कर सुखाले और बारीक पीस कर खांड मिलाकर काम में लावें ॥

❀ हजम कबीर के बनाने की रीति ❀

मुर्गी के अंडे का छिलका साफ किया हुआ जिस रीत पर कि उस का वर्णन अभी किया गया है और पुराने बांस की गांठ और जली हुई सीप अनविंधे मोती, सीह अमेनी (एक घास है पत्ते उसके तुतली के समान होते हैं,) समदर झाग, दोहनज (एक पत्थर हरे रंग का,) गोह की बीट, चांदी का मैल, सोने का मैल, सादना (एक पत्थर मसूड के समान) गिद्ध के जले हुए बाजू की राख, मूंगा की जड प्रत्येक एक भाग, हरा पत्थर जिस पर उस्तरा तेज करते हैं चौथाई भाग, चमगादर की बीट आधा भाग, यह सब १५ दवाएं होती हैं इन को कूट कर और बारीक कपडे में छान कर, काम में लावें ॥

❀ हजमेमुअरसल के बनाने की रीति ❀

गोह की बीट, शुतर मुर्ग के अंडे का छिलका, जली हुईसीप और सीह (एक किस्म का पत्थर है) मूंगे की जड, चमगादर की बीट, पापरी लोन यह सब सात दवाएं होती हैं इन का बराबर लेकर परगास और गुलाब के पत्ते में भिगो कर सुखाले और बारीक पीस कर रख छोडे और आवश्यकता के समय शहद में मिला कर काम में लावें और इन दवाओं को आंख की मादी सफेदी में लगावे ॥

❀ अठारहवां प्रकरण मोगसर्ज का वर्णन ❀

जानना चाहिये कि जब करनिया पर्दा घाव या फुन्सी के कारण से (फटजाय) और इनबिया पर्दा उसके बीच में बाहर निकल आवे और ऊंचा होजाय तो इस को हो जाने का नाम सब हकीम मोरसर्ज कहते हैं । मोरसर्ज को हिन्दी में चींटी का सिर कहते हैं परन्तु हकीमों के मत से इस ऊंचाई का नाम उस के प्रमाण के अनुसार भिन्न २ होता है जैसे जो इनबिया पर्दा चींटी के सिर के बराबर उभर आता है तो उस उभर आने का नाम नम्ला अर्थात् चींटी का सिर कहते हैं जो इस से भी अधिक बड जाय जैसे मक्खी का सिर

❁ हजम सगीर के बनाने की रीति ❁

मुर्गी के अंडे का छिलका जितना चाहे उस को लेकर मीठे पानी में भिगोदे और उस बरतन को धूपमें रख दे यहां तक कि उस पानी में बदबू आने लगे फिर उस को धीरे धीरे धोकर पानी निकाल डाल फिर दूसरा ताजा पानी मिलावें इसी तरह करते रहै जब तक पानी में बदबू आवे फिर छिलकों को निकाल कर सुखाले और बारीक पीस कर खांड मिलाकर काम में लावें ॥

❁ हजम कबीर के बनाने की रीति ❁

मुर्गी के अंडे का छिलका साफ किया हुआ जिस रीति पर कि उस का वर्णन अभी किया गया है और पुराने बास की गांठ और जली हुई सीप अनबिंधे मोती, सीह अर्मनी (एक घास है पत्ते उसके तुलसी के समान होते हैं,) समदर झाग, दोहनज (एक पत्थर हरे रंग का,) गोह की बीट, चांदी का मैल, सोने का मैल, सादना (एक पत्थर मसूड़ के समान) गिद्ध के जले हुए बाजू की राख, सूगा की जड़ प्रत्येक एक भाग, हरा पत्थर जिस पर उस्तरा तेज करते हैं चौथाई भाग, चमगादड़ की बीट आधा भाग, यह सब १५ दवायें होती हैं इन को कूट कर और बारीक कपड़े में छान कर, काम में लावें ॥

❁ हजमेमुअरसल के बनाने की रीति ❁

गोह की बीट, शुतर मुर्ग के अंडे का छिलका, जली हुईसीप और मीह (एक किस्म का पत्थर है) मर्ग की जड़, चमगादड़ की बीट, पापरी लोन यह सब सात दवाएं होती हैं इन को बराबर लेकर बरगद और कुल्फा के पत्ते में भिगो कर सुखाले और बारीक पीस कर रख छोड़े और आवश्यकता के समय शहद में मिला कर काम में लावें और इन दवाओं को ओरत की मादी सफेदी में लगावे ॥

❁ अठारहवां प्रकरण मोगसर्ज का वर्णन ❁

जानना चाहिये कि जब करनिया पर्दा घाव या फुन्सी के कारण से (फटजाय) और इनबिया पर्दा उसके बीच में बाहर निकल आवे और ऊंचा होजाय तो इस को दो नाम का नाम सब हकीम शीरसर्ज कहते हैं। मोगसर्ज को हिन्दी में चींटी का सिर कहते हैं परन्तु हकीमों के मत से इस ऊंचाई का नाम उस के प्रमाण के अनुसार भिन्न २ होता है जैसे जो इनबिया पर्दा चींटी के सिर के बराबर उभर आया है तो उस उभर आने का नाम नम्ला अर्थात् चींटी का सिर कहते हैं जो इस से भी अधिक बढ़ जाय तो उसे मक्खी का सिर

पहिले जो किसी उपाय से अच्छे न होसकें उससे मोररासे के इलाज में शी घ्रता करे और उचाई के दूर करने का यत्न करे और ऐसी चीजें रोकने और बंद करने वाली हों, और जिन में खुरखुरापन न हो आंख में लगावे जिससे आंख के बहने को रोके और बंद करे और इकट्ठे और एकाग्रता के कारण अधिक न फटनेदें और इनबिया पर्दे को बाहर न निकलनेदें जैसे सादनज मगसूल चांदी का मैल, और सीह जली हुई और जली हुई सीप तथा अन्य ऐसी ही वस्तु लगावे और इस बात में सबसे अधिक लाभदायक कहौले अक्सीरीन् अर्थात् लाभदायक सुर्मा है।

कौहले अक्सीरीन के बनाने की रीति

सुर्मा और शादनज तोल में बराबर २ दोनों को लेकर बारीक पीसलें और उभार के हटाने की यह रीति है कि मोटी गद्दी आंख के ऊपर रखकर बांधदें परन्तु आंख के घर के बराबर बनावे और जो आवश्यकता हो तो सीसे का टुकड़ा जो तोल में साढ़ेसत्रह माशे, या ३५ माशे हो गद्दी के ऊपर रखकर बांधदें और जो उस के बदले एक थैली महीन सुर्मे से भरकर रखदें तो सब से अच्छा है क्योंकि मुलायम है और सुर्मे में आंख को शक्ति देने की एक नियत प्रकृति है और जिस समय चीरे के किनारे मोटे और कड़े होजावें तो उसका अच्छा होना उचित् नहीं और अच्छे होने की आशा नहीं परन्तुजब कि नितूए मिस्मारी (अर्थात् आंख के तीसरे पर्दे या आंख के दूसरे पर्दे के फटजाने के कारण से मेख के सिर के बराबर उभर आना और नितूएनबी (अर्थात् आंख के तीसरे पर्दे या दूसरे पर्दे के फटजाने के कारण अंगूर के समान उभर आवे) पुराने होजांय तो अधिक भाग को काटडालते हैं जिससे आंख बुरी न मालूम हो परन्तु इस काम में डर है।

उन्नीसवां प्रकरण।

हविल अर्थात् भेंढेपन का वर्णन।

यह ऐसा रोग है कि जिसमें आदमी प्रत्येक वस्तु को दोनों ओरों से देखकर यह संदेह करे कि दो चीज हैं और यह रोग रतूबतें जुलेदिया अर्थात् वह तरी जो बर्फ के समान है) के साथ संबंध रखती है जैसा इस जगह हम वर्णन कर आये हैं कि जिस समय दोनों आंखों की रतूबतें जुलेदिया में पूरी विरुद्धता उत्पन्न होती प्रत्येक वस्तु दो दिखलाई देती हैं। पूरी विरुद्धता का यह अर्थ है कि एक आंख की रतूबते जुलेदिया नीचे की तरफ सुकजाय

पहिले जो किसी उपाय से अच्छे न होसकें उससे मोरसले के इलाज में शी घ्रता करे और उचाई के दूर करने का यत्न करे और ऐसी चीजें रोकने और वद करने वाली हों, और जिन में खुरखुरापन न हो आंख में लगाव जिससे आंख के वहने को रोके और वद करे और इकट्ठे और कठोरता क कारण अधिक न फटनेदें और इनबिया पर्दे को बाहर न निकलनेदें जैस शादनज मगसूल चांदी का मैल, और सीह जली हुई और जली हुई सीप तथा अन्य ऐसी ही वस्तु लगावे और इस बात में सबसे अधिक लाभदायक कहौले अक्सीरीन् अर्थात् लाभदायक सुर्मा है ।

कोहले अक्सीरीन के बनाने की रीति

सुर्मा और शादनज तोल में बराबर २ दोनों को लेकर बारीक पीसलें और उभार के हटाने की यह रीति है कि मोटी गद्दी आंख के ऊपर रखकर बांधदें परन्तु आंख के घर के बराबर बनावे और जो आवश्यकता हो तो सीसे का टुकड़ा जो तोल में साढेसत्रह माशे, या ३५ माशे हो गद्दी के ऊपर रखकर बांधदें और जो वस के बदले एक थैली महीन सुर्मे से भरकर रखदें तो सब से अच्छा है क्योंकि मुलायम है और सुर्मे में आंख को शक्ति देने की एक नियत प्रकृति है और जिस समय चीरे के किनारे मोटे और कड़े होजावें तो उसका अच्छा होना उचित् नहीं और अच्छे होने की आशा नहीं परन्तु जब कि नितूए मिस्मारी (अर्थात् आंख के तीसरे पर्दे या आंख य दूसरे पर्दे के फटजाने के कारण से मेख के सिर के बराबर उभर आना और नितूए अनबी (अर्थात् आंख के तीसरे पर्द या दूसरे पर्दे के फटजाने के कारण अंगूर के समान उभर आवे) पुराने होजांय तो अधिक भाग को काटडालते हैं जिससे आंख बुरी न मालूम हो परन्तु इस काम में डर है ।

उन्नीसवां प्रकरण ।

हविल अर्थात् भेंडेपन का वर्णन ।

यह ऐसा रोग है कि जिसमें आदमी प्रत्येक वस्तु को दोनों आंखों से देखकर यह सन्देह करे कि दो चीजें हैं और यह रोग रतूबतें जुलैदिया अर्थात् वह तरी जो बर्फ के समान है) के साथ सबध रखती है जैसा इस जगह हम वर्णन कर आये हैं कि जिस समय दोनों आंखों की रतूबतें जुलैदिया में पूरी विरुद्धता उत्पन्न होती प्रत्येक वस्तु दो दिखलाई देती हैं । पूरी विरुद्धता का यह अर्थ है कि एक आंख की रतूबते जुलैदिया नीचे की तरफ झुकजाय

को देखे वह उसी जगह पहुंचजाय जिससे एक सूरत दो न दिखलाई दे सो यह जगह मजमे उन्नूर है जहां एकही वस्तु दोनो आंखों से पहुंचती है जिस समय एक आंख की पुतली ऊपर जाती है और दूसरी नीचे जाती है या एक ऊपर या नीचे हो और दूसरी अपनी निज दशा पर रहे तो एक चीज दो दिखलाई देती है और यह इस कारण से हुआ करता है कि जो दोनों पट्ठे मजमे उन्नूर मे जाते है । वह एक दूसरे की सीधपर न जांय और इस कारण से लेप की सूरत मे उन पट्ठो के झुकजाने से जो वह आपस में मिलते है खराब होजाय और ऐसी सूरत होजाय कि जैसे एक वस्तु मजमउन्नूर अर्थात् प्रकाशके इकट्ठा होनेके स्थान में दो जगह से पहुंचती है अर्थात् एक पट्ठा ऊंची जगहसे चमुर्को लगाहै और दूसरा पट्ठा नीची जगहसे इसी कारण से एक चीज दो दिखाई देती है यही कारण भेंड होने का है । अब हम मतलब की ओर लौटते है जो जानना चाहिये कि भेंडापन दो प्रकार का होता है एक तो यह कि जन्मसे ही हो और उसका इलाज नहीं । दूसरे यह कि पीछे उत्पन्न होजाय और जो भेंडापन कि नया उत्पन्न होता है वह बहुधा बालकों मे उत्पन्न होता है और कभी बड़ों में भी उत्पन्न होजाता है इस के दो भेद हैं पहला जो बच्चों में उत्पन्न होता है उसके तीन कारण हैं एक यह कि मिर्गी उत्पन्न हो उस के कारण से दिमाग की झिल्ली खिचकर सिकुड़जाय और आंख के पर्दे और अन्य मुजविफा भी गिर जाय और एक आंख ऊपर की तरफ या नीचे की तरफ झुकजाय बहुधा यह दशा मृगी के चले जाने पर भी रही आती है । दूसरे यह कि दाइ बालक के लिटाने मे और दूध पिलाने मे निकम्मा उपाय बर्तावमें लावे जैसे सदा एक तर्फ और एक करवट पर लिटावे और इसी रीति पर दूध पिलावे और इस कारण से कि एक का दाईं ओर आंख को तिर्छी करके एक तरफ से बहुत समय तक देखता रहै तो वही सूरत उसकी आंख मे ठहरकर जमजाती है तीसरे यह कि कोई चिल्लाकर बोल या कोई अन्य भयंकर शब्द हो जिससे एक साथ बच्चा डिर पश्चात् इस कारण से उस ओर आंख घुमाके देखने लगे और बहुत अरसे देखने से आंख उसी ओर फिरजाय अन्ततः उस ओर देखना रहे आराम पावे और जब उस ओर के विरुद्ध देखना चाहे तो कठिन मालूमहो क्योंकि पट्ठे और झिल्लियों के खिंचाव मे कष्ट पहुंचता है इस कारण से उसी सूरत पर ठहरजाती है (इलाज) जिस उपाय से आंख को आराम मिले वही काममें लावें और (इलाज) में शीघ्र करें क्योंकि बालकोंका (इलाज) उनके देह की नर्मी के कारण शीघ्र होसकता

को देखे वह उसी जगह पहुचजाय जिससे एक सूरत दो न दिखलाई दे सो यह जगह मजमे उन्नूर है जहां एकही वस्तु दोनो आंखों से पहुंचती है जिस समय एक आंख की पुतली ऊपर आती है और दूसरी नीचे जाती है या एक ऊपर या नीचे हो और दूसरी अपनी निज दशा पर रहे तो एक चीज दो दिखलाई देती है और यह इस कारण से हुआ करता है कि जो दोदों पट्ठे भजमे उन्नूर में जाते है । वह एक दूसरे की सीधपर न जांय और इस कारण से लेपा की सूरत में उन पट्ठो के झुकजाने से जो वह आपस में मिलते है खराब होजांय और ऐसी सूरत होजाय कि जैसे एक वस्तु मजमउन्नूर अर्थात् प्रकाशके इकट्ठा होनेके स्थान में दो जगह से पहुंचती है अर्थात् एक पट्ठा ऊंची जगहसे चम्कता लाताहै और दूसरा पट्ठा नीची जगहसे इसी कारण से एक चीज दो दिखाई देती है यही कारण भेंड होने का है । अब हम मतलब की ओर लौटते है जो जानना चाहिये कि भेंडापन दो प्रकार का होता है एक तो यह कि जन्मसे ही हो और उसका इलाज नहीं । दूसरे यह कि पीछे उत्पन्न होजाय और जो भेंडापन कि नया उत्पन्न होता है वह बहुधा बालकों मे उत्पन्न होता है और कभी बड़ों में भी उत्पन्न होजाता है इस के दो भेद हैं पहला जो बच्चो में उत्पन्न होता है उसके तीन कारण हैं एक यह कि मिर्गी उत्पन्न होउस के कारण से दिमाग की झिल्ली खिचकर सिकुड़जाय और आंख के पर्दे और अन्य मुजब्बिफा भी खिंच जाय और एक आंख ऊपर की तरफ या नीचे की तरफ झुकजाय बहुधा यह दशा मृगी के चले जाने पर भी रही आती है । दूसरे यह कि दाइ बालक को लिटाने में और दूध पिलाने में नियम्य उपाय बर्तावमें लावे जैसे सदा एक तर्फ और एक करवट पर लिटावे और इसी रीति पर दूध पिलावे और इस कारण से कि लड़का दाई ओर आंख को तिरछी करके एक तरफ से बहुत ज्यादा तक देखता रहे तो वही सूरत उसकी आंख में ठहरकर जमजाती है तीसर यह कि कोई चिल्लाकर बोले या कोई अन्य भयकर शब्द हो जिससे एक साथ बच्चा डिर पश्चात् इस कारण से डर ओर आंख घुमाके देखने लगे और बहुत करके देखने में आंख उसी ओर फिरजाय जबतक उस ओर देखता रहे आराम पावे और जब उस ओर के विरुद्ध देखना चाहे तो कठिन मालूमहो क्योंकि पट्ठे और झिल्लियों के खिंचाव पर पहुंचाता है इस कारण से उसी सूरतपर ठहरजाती है (इलाज) जिस उपाय से आंख को आराम मिले वही काममें लावे और (इलाज) में शीघ्र करे क्योंकि बालकोंका (इलाज) उनके देह की नर्मी के कारण शीघ्र होसकता

में से कोई अदला ढीला होजाय अर्थात् उसमें ढिलढिलापन उत्पन्न हो और आंख का ढेला इस अदले की दूसरी ओर झुक जाय और ढीले होनेका चिन्ह और (इलाज) का वर्णन सिर के रोगोंमें होचुकाहै । तीसरे यह कि आंख के पर्दे और आंख की रतूबतें अपनी जगह से उनगाढी बादी के कारण से हट जाय कि जिनका निकलना और पचना कठिनहो और भिन्न २ गतियों की अधिकता से आंखके पर्दे और रतूबतों को हिलावें और जगह से हटा कर किसी तर्फ झुकावें उसका यह चिन्ह है कि आंख फड़का करै और कभी २ आंसू भी बहने लगें (इलाज) पहले पारजात और गोलियां देनी चाहियें जिससे उन आंख की रतूबतों को जो रिहा (अर्थात् हवा) उत्पन्न करते हैं दिमाग से निकाले और रिहा (अर्थात् हवा) को निकालने और पचाव के लिये गर्म पानी से सिकाव करें और मामीरा सौंफके पानी में पीसकर लेपकरें और जो मवाद आमाशय में हो और उस जगहसे दिमाग में जाकर रोग उत्पन्न करे तो आमाशय को वमन और दस्तों के द्वारा साफ करना चाहिये और गर्म जवारिशों के काममें लाने से रिहा (अर्थात्वादी) को तोड़ना चाहिये और कभी आंखके पर्दों और रतूबतों का अपनी जगह से हटजाना इस कारणसे होताहै कि निकम्मे बादी उत्पन्न करने वाले फोक रोगोंमें इकट्ठे होकर सबकिया में पहुंचे यह पर्दा अपनी जगह से ऊंचा होकर रतूबते जुजाजिया से मुकाबिला करै और रतूबत जजाजिया, रतूबते जुलैदिया से मुकाबिला करके उसको उस की जगह से हटादे इस कारण से भैंगापन उत्पन्न होता है ।

❀ बीसवां प्रकरण ❀

❀ रतौंध का वर्णन ❀

अशाका अर्थ सबकोरी और सबकोरीका अर्थ रतौंधा है और वह इस प्रकारकाहै कि रातके समय आंखकी ज्योतिबेकार होजाय यहां तककि तारागणों को भी न देख सके और दिनमें अपनी ठीक दशा पर आजाय और जब सूर्य अस्त होने लगे फिर आंख की ज्योति में निर्बलता मालूम होने लगे और कोई यह कहते हैं कि जिस समय रतौंध इस दर्जे को पहुंचे कि दिन को बादल होने के समय भी न देख सके उस समय उसका नाम अशा अर्थात् रतौंधी होता है इस रोग के तीन कारण हैं । एक यह कि देखनेवाली रूह जिसको रूह बासरा कहतेहैं गाढे और निकम्मे भाफ के परमाणुओं से मि-

में से कोई अदला ढीला होजाय अर्थात् उसमें ढिलढिलापन उत्पन्न हो और आंख का ढेला इस अदले की दूसरी ओर झुक जाय और ढीले होनेका चिन्ह और (इलाज) का वर्णन सिर के रोगोंमें होचुकाहै । तीसरे यह कि आंख के पर्दे और आंख की रतूबतें अपनी जगह से उनगाढी वादी के कारण से हट जाय कि जिनका निकलना और पचना कठिनहो और भिन्न २ गतियों की अधिकता से आंखके पर्दे और रतूबतों को हिलावें और जगह से हटा कर किसी तर्फ झुकावें उसका यह चिन्ह है कि आंख फड़का करे और कभी २ आंसू भी बहने लगें (इलाज) पहले यारजात और गोलियां देनी चाहियें जिससे उन आंख की रतूबतों को जो रिहा (अर्थात् हवा) उत्पन्न करते हैं दिमाग से निकाले और रिहा (अर्थात् हवा) को निकालने और पचाव के लिये गर्म पानी से सिकाव करें और मामीरा सौंफके पानी में पीसकर लेपकरें और जो मवाद आमाशय में हो और उस जगहसे दिमाग में जाकर रोग उत्पन्न करे तो आमाशय को वमन और दस्तों के द्वारा साफ करना चाहिये और गर्म जवारिशों के काममें लाने से रिहा (अर्थात्वादी) को तोड़ना चाहिये और कभी आंखके पर्दों और रतूबतों का अपनी जगह से हटजाना इस कारणसे होताहै कि निकम्मे वादी उत्पन्न करने वाले फोक रोगोंमें इकट्ठे होकर सबकिया में पहुचे यह पर्दा अपनी जगह से ऊंचा होकर रतूबते जुजाजिया से मुकाबिला करे और रतूबत जजाजिया, रतूबते जुलैदिया से मुकाबिला करके उसको उस की जगह से हटादे इस कारण से भेंगापन उत्पन्न होता है ।

❀ बीसवां प्रकरण ❀

❀ रतोंध का वर्णन ❀

अशाका अर्थ मचकोरी और मचकोरीका अर्थ रतौंधा है और वह इस प्रकारकाहै कि रातके समय आंखकी ज्योतिविकार होजाय यहां तकभि तारागणों का भी न देख सके और दिनमें अपनी ठीक दशा पर आजाय और कार सूर्य अस्त होने लगे फिर आंख की ज्योति में निर्बलता मालूम होने लगे और कोई यह कहते हैं कि जिस समय रतौंध इस दर्जे को पहुचे कि दिन को बादल होने के समय भी न देख सके उस समय उसका नाम अशा अर्थात् रतौंधी होता है इस रोग के तीन कारण हैं । एक यह कि देखनेवाली वा नस्को रूह वागरा पहुंचेहैं गाढे और निकम्मे भाफ के परमाणुओं से का-

भी ऐसी आंख की तर्फ जो देखे तो यह संदेह करे कि सब आंख काली हो गईहै और मुक्ते इनबिया के चौडे होजाने के समय जो आंखके भागों में प्रकाश नहीं दिखाई देता इसका यह कारण है कि आंख की ज्योति सब की सब सीधी आंख के तीसरे पर्दे के छेद से बाहर चली आती है और पीछे बाहर फैल जाती है और प्रगट है कि जब आंख की ज्योति आंख के तीसरे पर्दे के छेद से निकल आती है तो आंख के भागों में फैलना मालूम नहीं होता है परंतु अस्बे मुजव्विफा के चौडे होजाने में ज्याति आंख के भागों में फैलती है और छेद से सीधी बाहर नहीं निकलती इस लिये आंख के भागों में आंख की ज्योतिका फैल जाना मालूम हो यह अस्बे मुजव्विफाके चौडे होनके चिन्हों में से होता है और जो फैलना सबकिया पर्दे के हटजाने से होता है उसमें भी आंख की ज्योति बिलकुल जाती रहती है जैसा कि सबकिया पर्दे के रोगों में वर्णन किया गया है और सबकिया पर्दे के फैलने और प्रकाशवाही नलके फैलनेमें यह अन्तरहै कि सबकिया पर्दका फैलना एक साथ उत्पन्न होता है और अस्बे मुजव्विफा धीरे २ चौडा होता है। इस अध्याय का हम तीन विभागों में वर्णन करते है।

अस्बे मुजव्विफा अर्थात प्रकाशवाहीनलके चौडे होनेका वर्णन।

इस के चिन्हों का वर्णन होचुकाहै और प्रायः इस पट्ठ का फैलजाना दोषयुक्त दर्द सिरके पीछे जो बहुत कडा होताहै वा सरसामक पीछे वा मालीखोलिया (अर्थात् पित्ती और सूनी उन्माद) के उपरान्त उत्पन्न होता है और इसका यह कारण है कि गाढ दोष वा तेजभाफ के परमाणु आंखके प्रकाशवाहीनलमें आजाय और उसकी चौडाई में सौंचकर चौडाकरदें और कभी २ यों भी होताहै कि आंख के पाले पट्ठ उकाल के चौडे होजाने के साथ मुक्ते इनबिया न चौडा हुआहो और इस कारणसे कि दवाका असर अस्बे मुजव्विफातक पहुंचना बहुत कठिन है और आपसे भी ठीक नहीं होसकताहै इसलिये किताब शाफी अकबरके बनाने वालेने उसके विषयमें कहाहै कि यह किसी उपाय से अच्छा नहीं होता और अभिप्राय यह है कि जो कुछ निजूलुलमा (अर्थात् आंखमें पानी उतरआने) के आरंभन होसकताहै वही उस में गुण करता है

मुक्ते इनबिया के चौडे होनेका वर्णन।

इसके चार कारणहै एक यह कि कोई कारण बाहरसे हो जैसा चोट या धमाका आंखपर लगे और इसके कारणसे इनबिया कड़ा चारोंतरफ खिचजाय और आंखके तीसरे पर्दे का छेद

भी ऐसी आंख की तर्फ जो देखे तो यह संदेह करे कि सब आंख फाड़ी हो गईहै और मुकरे इनबिया के चौड़े होजाने के समय जो आंखके भागों में प्रकाश नहीं दिखाई देता इसका यह कारण है कि आंख की ज्योति सब की सब सीधी आंख के तीसरे पर्दे के छेद से बाहर चली आती है और पीछे बाहर फैल जाती है और प्रगट है कि जब आंख की ज्योति आंख के तीसरे पर्दे के छेद से निकल आती है तो आंख के भागों में फैलना मालूम नहीं होता है परंतु अस्बे मुजव्विफा के चौड़े होजाने में ज्योति आंख के भागों में फैलती है और छेद से सीधी बाहर नहीं निकलती इस लिये आंख के भागों में आंख की ज्योतिका फैल जाना मालूम हो यह अस्बे मुजव्विफाके चौड़े होनके चिह्नों में से होता है और जो फैलना सबकिया पर्दे के हटजाने से होता है उसमें भी आंख की ज्योति बिलकुल जाती रहती है जैसा कि सबकिया पर्दे के रोगों में वर्णन किया गया है और सबकिया पर्दे के फैलने और प्रकाशवाही नलके फैलनेमें यह अन्तरहै कि सबकिया पर्देका फैलना एक साथ उत्पन्न होता है और अस्बे मुजव्विफा धीरे २ चौड़ा होता है। इस अध्याय का हम तीन विभागों में वर्णन करते है।

अस्बे मुजव्विफा अर्थात प्रकाशवाहीनलके चौड़े होनेका वर्णन।

इस के चिन्हों का वर्णन होचुकाहै और भारी इस पठ्ठ का फैलजाना दोषयुक्त दर्द सिरके पीछे जो बहुत कड़ा होताहै वा सरसामक पीछे वा मागरा (अर्थात् पित्ती और खूनी सूजन) के उपरान्त उत्पन्न होता है और उसका यह कारण है कि गाढ दोष वा तेजभाफ के परमाणु आंखके प्रकाशवाहीनल में आजाय और उसका चौड़ाई में खींचकर चौड़ाकरदे और कभी २ यों भी होताहै कि आंख के पाले पठ्ठ उकाल के चौड़े होजाने के साथ मुकरे इनबिया न चौड़ा हुआहो और इस कारणसे कि दवाका असर अस्बे मजव्विफातक पहुंचना बहुत कठिन है और हाथसे भी ठीक नहीं होसकताहै इसलिये किताब शाफ्द असबाबके बनाने वाले उसके विषयमें कहाहै कि यह किसी उपाय से अच्छा नहीं होता और अभिप्राय यह है कि जो कुछ निजूलुल्मा (अर्थात् आंखमें पानी उतरआने) के आरंभ होनेहारपर कहै वही इस में गुण करता है

मुकरे इनबिया के चौड़े होनेका वर्णन।

इसके चार कारणहैं एक यह कि आई कारण बाहरसे हो जैसे चोट का लगना आंखपर हो और इसके कारण से इनबिया पर्दा चारोंतरफ खिंचजाय और आंखके तीसरे पर्दे का छेद

को बराबर लेकर सुखा लेवे और इन्द्रायन का गूदा, और सुम्बीनज और फर्फयून प्रत्येक साढे तीन माशे, उस में मिलाकर कुछ छान सौंफ के पानी में सान कर बत्ती अथवा सलाई बना लेवे । तीसरे यह कि रतूबतें बैजिया पुष्ट बढ जाय और सुरुबे इनबिया को कष्ट पहुंचावे और चौडा कर दे और यह रोग स्त्रियों और लडकियों में बहुत होता है । चौथे यह कि आंख का तीसरा परदा सूज जाय और सूजने के कारण से उस के भाग उसकी तरफ खिंचजाय और रतूबत बैजिया का बढना और आंख के तीसरे परदे का सूज जाना आंख के परदे के रोगो में लक्षण और इलाजों सहित वर्णन हो चुका है वहां देखना योग्य है । पांचवें यह कि इनबिया अर्थात् आंख का तीसरा पर्दा सूख जाय और इस कारण से किनारों की तरफ खिंच जाय और उसके कुछ भाग आपस में मिल जांय और आंख के छेद का घेरा अपने केन्द्र से दूर होजाय और यह रोग उस समय उत्पन्न होता है जब कि उस पर्द के किनारों में विशेष सूखापन बढजाय और उस का चिन्ह वही निर्बलता का चिन्ह है जिसका कारण सूखापन हो और उसका वर्णन किया जायगा अर्थात् जो आंख दुबली होजाय और भूख के समय वा बहुत परिश्रम और शोचादि के पीछे बढ जाय और उसका (इलाज) वही है जो कि खुश्की वाली आंख की निर्बलता में वर्णन किया जायगा । यह रोग अन्यरोगों की अपेक्षा दुःसाध्यहै । हकीम जालीनूस कहता है कि इनबिया के सब रोगों में से सूजन आदि अच्छे होने में उन रोगों से अधिक सहज है जो खुश्की से उत्पन्न हो और प्रगट है कि हर अंग में खुश्की पहुंचाने से सहज है तीसरी प्रकार का रोग शबकिया पर्दे के अपने स्थान से हट जाने से उत्पन्न होता है और उसका चिन्ह यह है कि आंख की ज्योति एक साथ जाती रहे और जो दूसरे कारण जो आंख की ज्योति को नष्ट करते हैं उनका चिन्ह न पाया जाय । इस रोग का (इलाज) नहीं है ॥

॥ तईसवां प्रकरण ॥

❀ जैक अर्थात् सबफह अखिया के सुकडने का वर्णन ❀

हकीम लोग इस रोग के विषय में अनेक प्रकार की विरुद्धता और वादानुवाद करते हैं परन्तु जिस पर सब पिछले हकीमों की एक सम्मति है वह यह है कि यह रोग २ प्रकार का है एक तो जन्म से ही सुकडापन और छोटा उत्पन्न हो और उसको प्राकृतिक वा सहज कहते हैं और यह बहुत उत्तम और श्रेष्ठ है क्योंकि इस में आंख की ज्योति का प्रकाश इकट्ठा रहता है और अपनी ज्योति को बढाता है । दूसरे यह कि जो जन्म लेने के उपरान्त होजाय

को बराबर लेकर सुखा लेवे और इन्द्रायन का गूदा. और सुम्बीनज और फरफयन प्रत्येक साढे तीन माशे, उस में मिलाकर पट छान सौंफ के पानी में सान कर बत्ती अथवा सलाई बना लेवे। तीसरे यह कि रतूबतें बैजिया पुष्ट बढ जाय और सुरूबे इनबिया को कष्ट पहुचावे और चौडा कर दे और यह रोग स्त्रियों और लडकियों में बहुत होता है। चौथे यह कि आंख का तीसरा परदा सूज जाय और सूजने के कारण से उस के भाग उसकी तरफ खिचजाय और रतूबत बैजिया का बढना और आंख के तीसरे परदे का सूज जाना आंख के परदे के रोगो में लक्षण और इलाजों सहित वर्णन हो चुका है वहां देखना योग्य है। पांचवें यह कि इनबिया अर्थात् आंख का तीसरा पर्दा सूख जाय और उस कारण से किनारों की तरफ खिंच जाय और उसके कुछ भाग आपस में मिल जांय और आंख के छेद का घेरा अपने केन्द्र से दूर होजाय और यह रोग उस समय उत्पन्न होता है जब कि उस पर्द के किनारों में विशेष सूखापन बढजाय और उस का चिन्ह वही निर्बलता का चिन्ह है जिसका कारण सूखा पन हो और उसका वर्णन किया जायगा अर्थात् जो आंख दुर्बल होजाय और भूख के समय वा बहुत परिश्रम और शोकादि के पीछे बढ जाय और उसका (इलाज) वही है जो कि खुश्की वाली आंख की निर्बलता में वर्णन किया जायगा। यह रोग अन्यरोगों की अपेक्षा दुःसाध्यहै। हकीम जालीनूस कहता है कि इनबिया के सब रोगों में से सूजन आदि अच्छे होने में उन रोगों से अधिक सहज है जो खुश्की से उत्पन्न हो और प्रगट है कि हर अंग में खुश्की पहुंचाने से सहज है तीसरी प्रकार का रोग शबकिया पर्द के अपने स्थान से हट जाने से उत्पन्न होता है और उसका चिन्ह यह है कि आंख की ज्योति एक साथ जाती रहे और जो दूसरे कारण जो आंख की ज्योति को नष्ट कर देते हैं उनका चिन्ह न पाया जाय। इस रोग का (इलाज) नहीं है॥

॥ तईसवां प्रकरण ॥

❀ जैक अर्थात् सबक्ह अखिया के सुकडने का वर्णन ❀

हकीम लोग इस रोग के विषय में अनेक प्रकार की विरुद्धता और वादानुवाद करते हैं परन्तु जिन पर सब पिछले हकीमों की एक सम्मति है वह यह है कि यह रोग २ प्रकार का है एक तो जन्म से ही सुकडापन और छोटा उत्पन्न हो और उसको प्राकृतिक वा सहज कहते हैं और यह बहुत उत्तम और श्रेष्ठ है क्योंकि इस में आंख की ज्योति का प्रकाश इकट्ठा रहता है और उसकी ज्योति को बढाता है। दूसरे यह कि जो जन्म लेने के उपरान्त होजाय

यह रोग वृद्धापन में और गरम सरसाम अर्थात् दिमागकी सूजनके उपरांत बहुत उत्पन्न होता है और इसका यह चिन्ह है कि आंख छोटी होजाय और खुश्कीके चिन्ह प्रगट हों और पहले उपाय इसपर साक्षी हो और इसरोगवाले को मनुष्योंका स्वरूप न दिखाईदे किन्तु परछाहींके समान आवे और इसका इलाज वही है जो मुक़द्दमे इनविषयोंके खुश्की से उत्पन्न होनेवाले सेरु रोग में वर्णनकर आये हैं इसरोगमें तर चीजों को काममें लाना चाहिये। (चौथ) यह कठोर और गाढ़ा दोष आंखके छेदके भीतर इकट्ठा होजाय और उसजगह ठहरजाय उसका यह चिन्ह है कि हकीमको आंखका छेद न दिखलाई दे इसका इलाज यहहै कि दिमागको साफ़ और स्वच्छकरें और तरी पहुंचावें। और ध्यानदेवें जिससे कच्चा दोष निकलनेके योग्य होजाय (लाभ) जानना चाहिये कि हकीमोंकी इसविषयमें विरुद्धता है कि तरी और खुश्की आंख के तीसरे पर्देके छेदके छोटे होनेका कारणहो कोई यह कहते हैं कि इसदशा में आंखकी ज्योतिकी निर्बलताका यह कारण है कि आंखका छोटा होना अप्राकृतिक कारणों मेंसेहै और शेखने कहा है कि इसके कारण पानी करनिया अर्थात् आंख के दूसरे पर्देका सूखजाना है जो उसको इकट्ठा करता है और आंख के छेद को सकोड़ देता है वा छोटाकरदेता है वा बंद कर देता है या रतूबतहै यानमीहै जो आंखके दूसरे पर्दे को किनारों से बीचकी तरफ खींचता है और आंख के छेद को छोटा करदेतीहै वा आंखकी रतूबत बैज़ियामें विशेष खुश्की होनेके कारण यह कम होजाती है और उसके साथ आंख का पर्दा दुबला होकर सुकड़जाय और प्रगट है कि जिस समय आंखका दूसरा पर्दा तरी अथवा खुश्की के साथ इकट्ठा होकर इस रीति पर सुकड़ जाय कि आंख के तीसरे पर्दे के छेद की दूरी में सिकुड़न पैदा करे तो इसका छेद भी सुकड़ जाता है और जब आंख के दूसरे पर्दे के भाग यहां तक सुकड़ जाय कि आंखके तीसरे पर्दे या जो उस के गिर्द है अपने साथ इकट्ठा करले तो इस दशा में उचित है कि आंख के दूसरे पर्दे में गाढ़ापन और सिकुड़न पड़ जायगी जैसा कि खुश्की की हालत में उत्पन्न होता है। प्रगट है कि आंख के दूसरे पर्दे के साफ़ न होनेसे आंख की ज्योतिमें हानि पहुंचतीहै और रतूबतें जलीदिया बरफसारीकी तरह जो ठीक २ उसी से रखती है और इस दशा में रोगी जिस वस्तु को देखता है वह उसको बादल वा धुआ छाया हुआ मालूम होता है यही आंख की दृष्टि

यह रोग वृद्धापन में और गरम सरसाम अर्थात् दिमागकी सूजनके उपरांत बहुत उत्पन्न होता है और इसका यह चिन्ह है कि आंख छोटी होजाय और खुश्कीके चिन्ह प्रगट हों और पहले उपाय इसपर साक्षी हो और इसरोगवाले का मनुष्योंका स्वरूप न दिखाई किन्तु परछाहींके समान आवे और इसका इलाज वही है जो सुकूने इनबियाके खुश्की से उत्पन्न होनेवाले लैक राग में वर्णनकर आये है इसरोगमें तर चीजों को काममें लाना चाहिये। (चौथ) यह कठोर और गाढा दोष आंखके छेदके भीतर इकट्ठा होजाय और उसजगह ठहरजाय उसका यह चिन्ह है कि हकीमको आंखका छेद न दिखलाई दे इसका इलाज यहहै कि दिमागको साफ और स्वच्छकरें और तरी पहुंचावें। और ध्यानदेवे जिसमें कच्चा दोष निकलने के योग्य होजाय (लाभ) जानना चाहिये कि हकीमोंकी इसविषयमें विरुद्धता है कि तरी और खुश्की आंख के तीसरे पर्देके छेदके छोटे होनेका कारणहो कोई यह कहते हैं कि इसदशा में आंखकी ज्योतिकी निर्बलताका यह कारण है कि आंखका छोटा होना अस्वाभाविक कारणों मेंसेहै और शेखने कहा है कि इसके कारण पानी करनिया अर्थात् आंख के दूसरे पर्देका सूखजाना है जो उसको इकट्ठा करता है और आंख के छेद को सिकोड़ देता है वा छोटाकरदेता है वा बंद कर देता है या खुश्कहै या तरीहै जो आंखके दूसरे पर्दे को किनारों से बीचकी तरफ खींचता है और आंख के छेद को छोटा करदेताहै या आंखकी रतूबत बैजियामें विशेष खुश्की हो जाके प्रमाण यह कम होजाती है और उसके साथ आंख का पर्दा दुबला होकर सुकड़जाय और प्रगट है कि जिस समय आंखका दूसरा पर्दा तरी अथवा खुश्की के साथ इकट्ठा होकर इस रीति पर सुकड़ जाय कि आंख के तीसरे पर्दे के छेद को इस में सिकुड़न पैदा करे तो इसका छेद भी सुकड़ जाता है और जब आंख के दूसरे पर्दे के भाग यहां तक सुकड़ जाय कि आंखके तीसरे पर्दे या जो उस के नीचे है अपने साथ इकट्ठा करले तो इस दशा में उचित है कि आंख के दूसरे पर्दे में गाढापन और सिकुड़न पड़ जायगी जैसा कि बुढापे में अक्सर समय में उत्पन्न होता है। प्रगट है कि आंख के दूसरे पर्दे के साफ न होनेसे आंख की ज्योतिमें हानि पहुंचतीहै और स्वच्छ जलादिक वस्तुओंके प्रकाशकी को ठीक २ देखने से रोकती है और इस दशा में रोगी जिस वस्तु को देखता है वह उसको बादल सा धुआं छाया हुआ मालूम होता है यहां आंख की दृष्टि

पडे तो खयालात भी कम होजांय अर्थात् रंग बिरंगी सूरतें कम दिखलाईदें और यह किसी प्रकार का रोग नहीं है परन्तु ज्ञानशक्ति के निकम्मे और बेकार होजाने के कारण से इसको इलाज या उपाय से दूर करते हैं। दूसरा यह कारण है कि आंख के परदों में कोई रोग उत्पन्न हो जैसे आंख के दूसरे पर्दे में चेचक के चिन्ह से वा आंख के दूखने से गाढापन उत्पन्न करने वाली सर्दी के कारण चिन्ह पैदा होजांय यद्यपि वे चिन्ह बहुत छोटे होने के कारण से आंखमें दिखलाई न दें परन्तु इस कारण से कि वे उक्त पर्दे की सफाई को भीतर से नष्ट करतेहैं तो वह जितना बडा होता है उतना निगाह को ढक लेता है और इस चिन्ह को जितना प्रमाण वा त्रिकोन, चौकोन वा पंच पटकोन आदि जैसी सूरत होगी आदमी वैसाही ध्यान करेंगे और निगाहके साम्हने वैसीही सूरत दिखाई देंगी और इसका यह चिन्ह है कि उक्त कारण पहले होचुके और भांति २ की सूरतें बहुत काल तक दिखलाईदे और कोई दूसरा कष्ट न दिखाईदे और भोजनों के कारण से उनमें अधिकता और न्यूनता भी न हुई हो। तीसरा यह कारण है कि तरी में किसी प्रकार का रोग उत्पन्न होय यह चार प्रकार से होता है एक यह कि रतूबतें बैंजिया का भाग अपने आप रंग बिरंगी सूरतों का कारण हो (दूसरा) यह कि सर्द तर दुष्ट प्रकृति अपने गाढापन और भारीपनके कारण से आंख के भागों में उत्पन्न होकर इसकी तरी पवित्रता और सफाई को बदलदें। (तीसरे) यह कि बलवान् गरमी आंख की तरी में इस तरह पर आजाय कि आंखकी तरी उबलने लगे और आंखकी तरी में मिलजाय और उसका गाढापन झाग की सूरत होकर सफाई को नष्ट करदे। चौथे यह कि सर्दी, खुश्की और तरी समस्त आंख की तरी को गाढा करके जमादें और उसकी पवित्रता नष्ट होजाय। इस प्रकार का चिन्ह यह है कि इनके कारणों का पहले होजाना साक्षी हो जैसे पहले गर्मी के कारण से पहली आंखका पर्दा खुल जाय वा कोई ऐसा कारणजो सर्दी तरी गर्मी वा खुश्की पहुंचाने वाला हो काम पड़े जैसाकि आंखकी रतूबतों अर्थात् तरीके रोगों में हमने वर्णन किया है और यह रोग अटकल से जाना जाताहै मुख्य करके जो आंखका दूसरा पर्दा साफ और गुप्तहो और उसमें धुन्धुलेपनका कोई चिन्ह प्रगट न हो और इसके सिवाय आंख के साम्हने उड़ती हुई धूल दिखलाईदें और उनमें घटाव बढाव नहो और किसी तरी हानि के कारण भी न हों यह भी इस प्रकारके लक्षणहैं॥ चौथा यह कारणहै कि

पडे तो खयालात भी कम होजांय अर्थात् रंग बिरंगी सूरतें कम दिखलाईदें और यह किसी प्रकार का रोग नहीं है परन्तु ज्ञानशक्ति के निकम्मे और बेकार होजाने के कारण से इसको इलाज या उपाय से दूर करते हैं। दूसरा यह कारण है कि आंख के पर्दों में कोई रोग उत्पन्न हो जैसे आंख के दूसरे पर्दे में चेचक के चिन्ह से वा आंख के दूखने से गाढापन उत्पन्न करने वाली सर्दी के कारण चिन्ह पैदा होजांय यद्यपि वे चिन्ह बहुत छोटे होने के कारण से आंखमें दिखलाई न दें परन्तु इस कारण से कि वे उक्त पर्दे की सफाई को भीतर से नष्ट करतेहैं तो वह जितना बडा होता है उतना निगाह को ढक लेता है और इस चिन्ह को जितना प्रमाण वा त्रिकोन, चौकोन वा पंच पटकोन आदि जैसी सूरत होगी आदमी वैसाही ध्यान करेंगे और निगाहके साम्हने वैसीही सूरत दिखाई देंगी और इसका यह चिन्ह है कि उक्त कारण पहले होचुकेहैं और भांति २ की सूरतें बहुत काल तक दिखलाईदें और कोई दूसरा कष्ट न दिखाईदे और भोजनों के कारण से उनमें अधिकता और न्यूनता भी न हुई हो। तीसरा यह कारण है कि तरी में किसी प्रकार का रोग उत्पन्न होय यह चार प्रकार से होता है एक यह कि रतूबतें बैंजिया का भाग अपने आप रंग बिरंगी सूरतों का कारण हो (दूसरा) यह कि सर्द तर दुष्ट प्रकृति अपने गाढापन और भारापनके कारण से आंख के भागों में उत्पन्न होकर इसकी तरी पवित्रता और सफाई को बदलदे। (तीसरे) यह कि बलवान् गरमी आंख की तरी में इस तरह पर आजाय कि आंखकी तरी उबलने लगे और आंखकी तरी में मिलजाय और उसका गाढापन झाग की सूरत होकर सफाई को नष्ट करदे। चौथे यह कि सर्दी, खुश्की और दो गरम आंख की तरी को गाढा करके जमादे और उसकी पवित्रता नष्ट होजाय। इस प्रकार का चिन्ह यह है कि इनके कारणों का पहले होजाना साक्षी हो जैसे पहले गर्मी के कारण से पहली आंखका पर्दा बन जाय वा कोई ऐसा कारणका जो सर्दी तरी गर्मी वा खुश्की पहुंचाने वाला हो काम पडे जैसाकि आंखकी रतूबतों अर्थात् तरीके रोगों में हमने वर्णन किया है और यह रोग अटकल से जाना जासकताहै मुख्य करके जो आंखका दूसरा पर्दा साफ और शुफ्फाफहो और उसमें खुरदुरापनका कोई चिन्ह प्रगट न हो और इसके सिवाय आंख के साम्हने उडती हुई चीज दिखलाईदें और उनमें ज्यादा घटाव नहो और किसी तरी हानि के कारण भी न हों यह भी इस प्रकारके लक्षणहैं॥ चौथा यह कारणहै। कि

क्योंकि कोई कोई रगें ऐसी छिपी होती हैं कि उनका काटना और दाग देना उचित नहीं सो मूल से माद्दा रह गया हो तो उचित है कि इन छिपी हुई रगों के दाग चढ़ जाय । और रगों के काटने और रगों के दाग देने की विधि लाभ और हानि सहित आधासीसी के वर्णन में कही गई है । दूसरा यह कि रगें गर्म खून से भरजांय फिर आपस में भिचजांय और लाल भाफ के परमाणु उन से उठ कर दद में मिल जांय उसका यह चिन्ह है कि सिर निबल होजांय और कभी कभी आग की लौ सी आंखों के सामने दिखलाई दें (इलाज) पहले फस्द खोलें और खून अधिक निकालें और फस्द खोलने के उपरान्त प्रकृति को उन चीजों से जो खून के उबाल को बुझाता है नर्म करें और जो चीजें खून को बढ़ाती हैं जैसे मांस, मिठाई और बहुत भोजन से बचें और इस प्रकार के इलाज में सुस्ती न करें क्योंकि खून दिल की दोनों खोल में जापड़ता है और बेहोशी उत्पन्न करता है फिर गले में सूजन और मृत्यु का कारण होता है और कभी वह खून दिमाग की खोल में जा गिरता है और सक्ता अर्थात् मुर्दे की दशा उत्पन्न करता है । सो उचित है कि इलाज में जल्दी करें और फस्द खोलने से पहले दस्त लाने वाली औषध न करें और खून थोड़ा न निकाले जिस से मल को हिलावें और उसके अच्छी तरह न निकलने से इन कष्टों में न पड़े । तीसरे यह कि कफ की तरी जो मीठी और साफ हो वह आमाशय में उत्पन्न हो फिर दिमाग के अगले भाग में या आंख या सिर में आकर इकट्ठी होजांय और जिस समय कि आदमी सोने या आराम या उठे उस उठने और कफ वाले मल को हिलाने और दौर के रंग के अनुसार भाफ के परमाणु उस से निकलें और आंखों [illegible] ऐसा [illegible] कि कोई सफेद वस्तु रुई हुई नीचे आती है [illegible] आती है [illegible] तक चौर की हरकत या और आंख के मलने [illegible]

उस समय तक यह वस्तु [illegible] देगी (इ[illegible]

तथा दिमाग का माद्दा [illegible] करे

मांस घी के साथ सौंफ का [illegible] से

यह है इन कारणों से जो [illegible]

के कारण हैं और इसी प्रकार [illegible]

के मुख्य भाग गदले होजांय [illegible]

[illegible] का यह चिन्ह है कि दांई [illegible]

क्योंकि कोई कोई रगें ऐसी छिपी होती हैं कि उनका काटना और दाग देना उचित नहीं सो भूल से मादा रह गया हो तो उचित है कि इन छिपी हुई रगों के दाग पड़ जाय । और रगों के काटने और रगों के दाग देने की विधि लाभ और हानि सहित आधासीसी के वर्णन में कही गई है । दूसरा यह कि रगें गर्म खून से भरजांय फिर आपस में भिचजांय और लाल भाफ के परमाणु उन से उठ कर रह में मिल जांय उसका यह चिन्ह है कि सिर निबल होजांय और कभी कभी आग की लौ सी आंखों के सामने दिखलाई दें (इलाज) पहले फस्द खोलें और खून अधिक निकालें और फस्द खोलने के उपरान्त प्रकृति को उन चीजों से जो खून के उबाल को बुझाता है नर्म करें और जो चीजें खून को बढ़ाती हैं जैसे मांस, मिठाई और बहुत भोजन से बचें और इस प्रकार के इलाज में सुस्ती न करें क्योंकि खून दिल की दोनों खोल में जापड़ता है और बेहोशी उत्पन्न करता है फिर गले में सूजन और खुरखुरा का रण होता है और कभी वह खून दिमाग की खोल में जा गिरता है और सक्ता अर्थात् मुर्दे की दशा उत्पन्न करता है । सो उचित है कि इलाज में जल्दी करें और फस्द खोलने से पहले दस्त लाने वाली औषध न करें और खून थोड़ा न निकालें जिस से मल को हिलाने और उसके अच्छी तरह न निक लने से इन कष्टों में न पड़े । तीसरे यह कि कफ की तरी जो मीठी और साफ़ हो वह आमाशय में उत्पन्न हो फिर दिमाग के अगले भाग में या आंख या सिर में आकर इकट्ठी होजांय और जिस समय कि आदमी धोवे या आंख या मले उस ठंडे और कफ वाले मल को हिलावे और तरी के रंग के अनुसार भाफ के परमाणु उस से निकलें और आंखों [illegible] ऐसा [illegible] कि कोई सफेद वस्तु मुंदी हुई मीन आती है [illegible] पाती है [illegible] तक छींक की हरकत या और आंख के मलने [illegible]

उस समय तक यह वस्तु [illegible] देगी (इ[illegible]
तथा दिमाग का मादा [illegible] करे
मांस घी के साथ सोंफ [illegible] से
यह है इन कारणों से जो [illegible]
के कारण हैं और इसी प्रकार
के कुछ भाग गदले होजांय [illegible]
[illegible] यह चिन्ह है कि दाई [illegible]

और सम्पूर्ण वादीकी चीजों से बचता रहे तथा स्त्री संगम और रातका खाना छोड़देवे (लाभ) खयालात (अर्थात् आंखके सामने भुनगा आदि दिखाई देना) का दूसरा भेद जो आंखकी ज्योति के साथ संबंध रखता है जैसा कि पदार्थीं का छोटा दिखाई देना और इसके विरुद्ध और समीप से दूरकी अपेक्षा अच्छा दिखाई देना या इसके विरुद्ध। जब कि ये सब आंखकी ज्योति की निर्बलता के भेदों में से इस लिये आंखकी दृष्टि की निर्बलता के प्रकरण में इनका वर्णन किया जायगा॥

पच्चीसवां प्रकरण॥

नजले का वर्णन।

जानना चाहिये कि इस रोग में हकीमों की बहुत कहावतें हैं परंतु जिस को हकीम शैखबूअली सेनाने और उसके मानने वालों ने गृहण किया है वह यह है कि एक ऊपरी रतूबत अर्थात् तरी है जो सिर से उतर कर आंख के तीसरे पर्दे के छेद में आती है और करनिया पर्दे तथा रतूबतें बैजिया के बीच में ठहर जाती है और क्योंकि यह आंख का छेद ऐसा मार्ग है कि प्रकाश की किरणों का निकलना और रूप रंग का आना इसी रास्ते से होता है सो जब कि उक्त तरी अर्थात् ऊपरी रतूबत इस मार्ग को बंद कर देती है सो जितने मार्ग के भागबंद होंगे उतना ही आंख की ज्योति नष्ट होती जायगी जैसे जो सब आंख के छेद को घेर लेवे तो सब दृष्टि नष्ट हो जायगी और जो पानी कुछ भागों में होगा और कुछ उससे खाली होंगे तो खुली हुई तरफ से देख सकता है और इस ऊपरी रतूबत के उतर आने की दशा में एक दूसरे के विरुद्ध होती है कभी तो यह निजूलकुमाय अर्थात् नजला मंडल की तरह आंख के छेद के घेरे को रोक लेता है और इसका मध्य खाली रहता है सो जिस चीज को ध्यान करके सन्मुख से देखे तो इसका बीच दिखाई देता है और किनारे नहीं देख सकता और कभी बीच को दबा देता है और घेरा खुला रहता है इस दशामें सन्मुख से जिन चीजोंको देखता है उनका बीच नहीं दिखाई देता परन्तु आंखके ढेले के फटने से देख सकता है इस कारण से आंख के छेद का खुला हुआ भाग देखी हुई चीजों के सामने हो जाता है और कभी यह रतूबत अर्थात् तरी पतली होती है इस दशा में यद्यपि कर आंख के छेद को रोक लेती है परन्तु पतले होने के कारण धूपे और दीपक के प्रकाश को देखने से और जगमगाती हुई चीजों के देखने से अधिक नहीं

और सम्पूर्ण वादीकी चीजों से बचता रहे तथा स्त्री संगम और रातका खाना छोडदेवै (लाभ) सपालात (अर्थात् आंखके सामने भुनगा आदि दिखाई देना) का दूसरा भेद जो आंखकी ज्योति के साथ संबंध रखता है जैसा कि बडीचीज का छोटा दिखाई देना और इसके विरुद्ध और समीप से दूरकी अपेक्षा अच्छा दिखाई देना या इसके विरुद्ध । जब कि ये सब आंखकी ज्योति की निर्बलता के भेदों में से इस लिये आंखकी दृष्टि की निर्बलता के प्रकरण में इनका वर्णन किया जायगा ॥

पच्चीसवां प्रकरण ॥

नजले का वर्णन ।

जानना चाहिये कि इस रोग में हकीमों की बहुत कहावतें हैं परंतु जिस को हकीम शैखबूअली सेनाने और उसके मानने वालों ने गृहण किया है वह यह है कि एक ऊपरी रतूबत अर्थात् तरी है जो सिर से उतर कर आंख के तीसरे पर्दे के छेद में आती है और करनियां पर्दे तथा रतूबतें बैजिया के बीच में ठहर जाती है और क्योंकि यह आंख का छेद ऐसा मार्ग है कि प्रकाश की किरणों का निकलना और रूप रंग का आना इसी रास्ते से होता है सो जब कि उक्त तरी अर्थात् ऊपरी रतूबत इस मार्ग को घेर कर रहती है तो जितने मार्ग के भागबंद होंगे उतना ही आंख की ज्योति नष्ट होती जायगी जैसे जो सब आंख के छेद को घेर लेवो सब दृष्टि नष्ट हो जायगी और जो पानी कुछ भागों में होगा और कुछ उससे खाली होंगे तो खुली हुई तरफ से देख सकता है और इस ऊपरी रतूबत के उतर आने की दशा में एक दूसरे के विरुद्ध होती है कभी तो यह निजूलकुमाय अर्थात् नजला मकल की तरह आंख के छेद के घेरे को रोक लेता है और इसका मध्य खाली रहता है सो जिस चीज को ध्यान देकर सन्मुख से देखे तो इसका बीच दिखाई देता है और किनारे नहीं देख सकता और कभी बीच को दबा लेता है और घेरा खुला रहता है इस दशामें सन्मुख से जिन चीजोंको देखता है उनका बीच नहीं दिखाई देता परंतु आंखके ढेले के फटने से देख सकता है इस कारण से आंख के छेद का खुला हुआ भाग देखी हुई चीजों के सामने हो जाता है और कभी यह रतूबत अर्थात् तरी पतली होती है इस दशा में यद्यपि यह आंख के छेद को रोक लेती है परन्तु पतले होने के कारण धूपे और दीपक के प्रकाश को देखने से और जगमगाती हुई चीजों के देखने से अधिक नहीं

अन्तर असबये मुजविफा के गाठ और नजले के मध्य में है वह हम वर्णन करेंगे और जो गांठ और आंख में पानी उतर आना गिरपड़ने या चोट के लगने के कारण से होता है वह एकसाथ होजाताहै। दूसरे यह कि देह में गाढ़े दोष भरजांय और उन दोषों की तरियों में से भाफ के परमाणु निकलकर धीरे २ आंख के छेद में आजांय और जब इस भाफ के परमाणु से आगे के भाग दूर होजांय और यहां अधिक हों तो भाफ के परमाणुओं की दशा गाढ़ी रतूबत की सूरत बनजावेगी और दृष्टि को नष्ट करेंगी। तीसरे यह कि सिर दर्द अधिक और देर तक ठहरने वाला सिर में उत्पन्न हो जाय और कष्ट की अधिकता से दोषों को गर्म करदे और अंगों को दुर्बल करदे फिर थोड़ी सी दुष्ट तरी रग और असबये मुजविफा के द्वारा आंख की तरफ उतर आवे। (चौथे) यह कि वमन बहुत आवे और इस कारण से वमन होने में छेद चौड़े होजाते हैं और दोष इधर उधर फिरने लगते हैं इस लिये थोड़ी सी रतूबत आंख की तरफ उतर आवे और यह भी अचानक हो जाता है। (पांचवें) यह कि विशेष जाड़ा और प्रकृति की सर्दी इस रोग का कारण हो जैसा कि कोई मनुष्य बर्फ और जाड़े में फंसा हुआ हो तो उस को यह उत्पन्न होजाय। छठे यह कि देखने वाली शक्ति निर्बल होजाय और यह बुड्ढों को और उन लोगों कि बहुत बीमारी से उठते हैं उनको उत्पन्न होजाता है। जानना चाहिये कि प्रत्येक कारण को उसकी पहिली दशा से पहचान सकते हैं और जहां कहीं एक साथ उत्पन्न होजाय तो अन्तर करने वाले चिन्हों की वहां कुछ आवश्यकता नहीं जो धीरे २ उत्पन्न हो तो इसके आरम्भ होने के चिन्ह वर्णन करदेना अवश्य है जिससे रोगके दृढ़ होजाने से पहले उपाय किया जाय। आरम्भ में आंख में पानी उतर आने का यह चिन्ह है कि खयालात जैसे मच्छड़ मक्खियां भुनगे बाल या अन्य वस्तु दृष्टि में अनुसार दिखाई दें और इस कारण से कि कभी यह खयालात जैसे मच्छड़ और मक्खी आदि का दिखाई देना मेदे के प्रकोप होते हैं और कहीं तो दूसरे कारणों से जिनका सरसाम के प्रकरण में वर्णन किया है बहुधा होजाते हैं इससे उचित हुआ कि इसकी भी अच्छी तरह मालूम करने के लिये उन खयालातका जिनसे नजूलेका भय होता है और उनका अन्तर भी वर्णन किया जायगा और उनमें जो कारण से अन्तर होता है। एक यह कि जो पाजात (फ़ासिद) अर्थात् वहीं बातें बहुधा एक आंख में होजाते हैं और

अन्तर असवये मुजलिफा के गाठ और नजले के मध्य में है वह हम वर्णन करेंगे और जो गांठ और आंख में पानी उतर आना गिरपने या चोट के लगने के कारण से होता है वह एक साथ होजाताहै। दूसरे यह कि देह में गाढ़े दोष भरजांय और उन दोषों की तरियों में से भाफ के परमाणु निकलकर धीरे २ आंख के छेद में आजांय और जब इस भाफ के परमाणु से आगे के भाग जुड़ होजांय और यदि अधिक हो तो भाफ के परमाणुरी दशा गाढ़ी रतूबत की सूरत बनजावगी और दृष्टि को नष्ट करेगी। तीसरे, यह कि सिर दर्द अधिक और देर तक ठहरने वाला सिर में उत्पन्न हो जाय और कष्ट की अधिकता से दांतों को गर्म करद और अंगों को दुर्बल करद फिर थोड़ी सी दुष्ट भरी रग और असवये मुजलिफा के द्वारा आंख की तरफ उतर आवे। (चौथे) यह कि वमन बहुत आवे और इस कारण से वमन होने में छेद चौड़े होजाते हैं और दोष इधर उधर फिरने लगते हैं इस लिये थोड़ी सी रतूबत आंख की तरफ उतर आवे और यह भी अचानक हो जाता है। (पांचवें) यह कि विशेष जाड़ा और प्रकृति की सदी इस रोग का कारण हो जैसा कि कोई मनुष्य बर्फ और जाड़े में फंसा हुआ हो तो उस को यह उत्पन्न होजाय। छठे यह कि देखने वाली शक्ति निर्बल होजाय और यह बुढ़ों को और जो लोग कि बहुत बीमारी से उठते हैं उनको उत्पन्न होजाता है। जानना चाहिये कि प्रत्येक कारण को उसकी पहिली दशा से पहचान सकते हैं और जहां कहीं एक साथ उत्पन्न होजाय तो अन्तर करने वाले चिन्हों की वहां कुछ आवश्यकता नहीं जो धीरे २ उत्पन्न हो तो उसके आरम्भ होने के चिन्ह वर्णन करदेना अवश्य है जिससे रोगके दृढ़ होजाने से पहले उपाय किया जाय। आरम्भ में आंख में पानी उतर आने का यह चिन्ह है कि ख्यालात जैसे मच्छर मक्खियां भुनगे बाल या अन्य वस्तु इस के अनुसार दिखाई दें और इस कारण से कि कभी यह ख्यालात जैसे मच्छर और मक्खी आदि का दिखाई देना नजले के प्रारम्भ होते हैं और यही तो दूसरे कारणों से जिनका वर्णन ख्यालात के प्रकरण में वर्णन किया है बहुधा होजाते हैं इससे उचित हुआ कि इसमें भी अच्छी तरह भेद बताने के लिए इन ख्यालातका जिनसे नजलेका भय होता है और उनका अन्तर भी वर्णन किया जायगा और उन में थोर कारण से अन्तर होता है। एक यह कि माउलअस्ल (मुकाविरा) अथात् गाढ़ी बाढ़े बहुधा एक आंख में होजाते हैं और

करना चाहिये तथा अयारजात और गोलियों से (शबयार) (अर्थात्) (दस्तावर गोलियां है जिन को रात को खाते है) के वेग पर सिर को स्वच्छ करे और इस बीच में पकाव की रक्षा भी उचित समझें अर्थात् बिना पकाव के मवाद को न निकाले और मवाद के पकाने वाली और दस्तलाने वाली दवाओं के काम मे लाने में रोगी की प्रकृति और शक्ति की रक्षा करना उचित है इस लिये कि गर्म दवाओं की अधिकता से कोई दूसरा कष्ट न उत्पन्न होजाय और जहां कहीं शक्ति बलवान् हो तो दस्तों की दवा लगातार देना चाहिये और नहीं तो सात दिन में एक बार अयारजे फैकरा का काढ़ा अफ्तीमून के साथ देवे । और भोजनों में से रूखे खाने जैसे चकोर और लवाका मांस सूखा और भुना हुआ कलिया और गेहूं की रोटी जिस में भुसी मिली हुई हो या अन्य ऐसी ही वस्तु देवे और भोजनों के भीतर दालचीनी, सातर, तुलसी, नाजा, और हरी सौंफ, कांजी का पानी काम में लावे और जब मवाद के निकल जाने के उपरान्त जो चीजें कि पानी को साफ करने वाली और सुखाने वाली हों जैसे शयाफ मिरामीत और बासलीकून अर्थात् सुरमा और ऐसी ही अन्य दवा आंख में लगावें और हकीम लोग कहते हैं कि आंवले नील के बीज को सुरमे की तरह आंख में लगावे तो उसको पानी से बचा रखता है और अच्छा कर देता है और जो गोलियां कि इस रोग में खिलाई जाती हैं उचित है कि इन को बड़ी जल्दी चबावें जिस से आमाशय में अधिक ठहरें और बहुत ठहरने के कारण से भाफ को दिमाग से अच्छी तरह नीचे उतार देवें। प्रकट हो कि दिमाग के रोग और जो रोग कि दिमाग से सम्बन्ध रखते हैं उनके दूर करने के लिये आमाशय की सफाई, पवित्रता और उसका उपाय करना अधिक लाभदायक है क्योंकि दिमाग के सामने आमाशय है और उसके रोग और बिगड़जाने से दिमाग में तथा अन्य अंगों में जो उस से सम्बन्ध रखते हैं उपद्रव हो जायगा और जिस रोगी को अधिक गर्मी पहुंचने का भय हो तो इत्रीफल अयारज के साथ पुष्ट किया हुआ अधिक लाभदायक है और जानना चाहिये कि छींक लाने वाली दवायें यद्यपि इस रोग में लाभदायक हैं परन्तु उन को काम में लाना भय से खाली भी नहीं है क्यों कि और भी उपद्रव बहुत करती हैं और इस कारण से असम्भव नहीं कि आंख में पानी उतर आने की सहायता करें परन्तु जिस रोगी के दोषों में गर्मी न हो और मवाद भी आवश्यकतानुसार निकल गया हो तो

करना चाहिये तथा अयारजात और गोलियों से (शबयार) (अर्थात्) (दस्तावर गोलियां हैं जिन को रात को खाते हैं) वे वग पर सिर को स्वच्छ करें और इस बीच में पकाव की रक्षा भी उचित समझें अर्थात् बिना पकाव के मवाद को न निकालें और मवाद के पकाने वाली और दस्तलाने वाली दवाओं के काम में लाने में रोगी की प्रकृति और शक्ति की रक्षा करना उचित है इस लिये कि गर्म दवाओं की अधिकता से कोई दूसरा कष्ट न उत्पन्न होजाए और जहां कहीं शक्ति बलवान् हो तो दस्तों की दवा लगातार देना चाहिये और नहीं तो सात दिन में एक बार अयारजे फैकरा का काढा अन्जरूत के साथ देवे । और भोजनों में से सूखे खाने जैसे चकोर और लवाका मांस सुना और भुना हुआ कलिया और गेहू की रोटी जिस में भुसी मिली हुई हो या अन्य ऐसी ही वस्तु देवे और भोजनों के भीतर दालचीनी, सातर, तुलसी, राजा, और हरी सोंफ, कांजी का पानी काम में लावे और सब मवाद के निकल जाने के उपरान्त जो चीजें कि पानी को साफ करने वाली और सुखरा करने वाली हों जैसे शयाफ मिरागत और बासली कूल अर्थात् सुरमा और ऐसी ही अन्य दवा आंख में लगावें और हकीम लोग कहते हैं कि जो नील के बीज को सुरमे की तरह आंख में लगाए तो उसको पानी न बढा रखता है और अच्छा कर देता है और जो गोलियां कि इस रोग में खिलाई जाती हैं उचित है कि इन को बड़ी करी बनावें जिस से आमाशय में अधिक ठहरें और बहुत ठहरने के कारण से मवाद को दिमाग से अच्छी तरह नीचे उतार सकें । प्रकट हो कि दिमाग के रोग और जो रोग कि दिमाग से सम्बन्ध रखते हैं उनके दूर करने के लिये आमाशय की सफाई, पवित्रता और उसका उपाय करना अधिक लाभदायक है क्योंकि दिमाग के सामने आमाशय है और उसके रोग और बिगड़जाने से दिमाग में तथा अन्य अंगों में जो उस से सम्बन्ध रखते हैं उपद्रव हो जायगा और जिस रोग को अधिक गर्मी बढ़जाने का भय हो तो इत्रीफल अयारज के साथ पुष्ट किया हुआ अधिक लाभदायक है और जानना चाहिये कि छींक लाने वाली दवायें यद्यपि इस रोग में लाभ दायक हैं परन्तु उन को काम में लाना भय से खाली भी नहीं है क्यों कि और भी रचना बहुत पतली है और इस कारण से असम्भव नहीं कि आंख में पानी उतर आने की सहायता करें परन्तु जिस रोगी के दोनों में गर्मी न हो और मवाद भी आवश्यकतानुसार निकल गया हो तो

के वह होजाने का वर्णन चिन्हों और इलाज सहित तथा उन दोनों प्रकारके नजलों का अन्तर जो गांठ या बिना गांठ के होता है हम इस मकालाके अन्तमें वर्णन करेंगे और जो पानी आंख में उतर आवे और आंख बनने के योग्य नहीं तो अच्छे उपायों से आंख को बनाने के योग्य करलें तो फिर आंख में से पानी निकालें और किताब शरह असबाब के बनाने वाले ने कहा है कि अच्छे उपायों से सब प्रकारकी नजलेंवाली आंख बनाने के योग्य हो सकती है और जिसप्रकारसे आंख बनने और पानी निकालने के योग्य हो तो उसकी यह पहचान है कि सफेद साफ गाढ़ी और पतली नहो और जो बीमार को छींक आवे तो मालूम होकि एक प्रकाश के समान उसकी आंख से बाहर निकलताहै और जिससमय इस प्रकार के रोगकी आंख को मलें तो पानी के भाग बिखरे हुए दिखलाई दें और जो ऐसा नहो तो आंख बनने और पानी निकालने के योग्य नहीं होती जो आंख बनने के योग्य नहीं होती उसके बहुत भेद हैं और प्रत्येक का जैसा २ रंग और गाढ़ापन होता है उसी के अनुसार उसका नाम है जैसा एक तो (गमामी) है और वह एक रौशन अर्थात् तरी वाली बदली के समान है जो जला नहीं करती है। दूसरे (जैबकी) वह एक गोल रतूबत अर्थात् तरी पारे के समान है और यह चला करती है। तीसरे (जमदी) वह इस प्रकारकी है कि गम अर्थात् घुन के टुकड़े की सूरत दिखाई दे और आंख के छेद में मिलावट उत्पन्न करे और हरकत न करे और जाहिरे दूसरी आंख के [illegible] पानी में किसी तरहका अन्तर न मालूम हो। (चौथे आस्मानगुनी) यह इस प्रकारकी होती है कि इसका रंग आस्मान रंगे रंग के समान हो और यह पानी बहुधा हिलता नहीं और इस कारण से कि अपनी तेजी और गर्मी से रतूबत [illegible] को साफ करदेताहै उसका आरोग्य होना बहुत कठिन है इसलिये शरह असबाब बनानेवाले ने कहा है कि यह आंख बनाने और पानी निकालने से अच्छी नहीं होती। (पांचवें) मुन्तशिर रकीक अर्थात् पानी और फैली हुई रतूबत कि जो सम्पूर्ण नहो और उसमें टुकड़ा न पाई हो और यह पतली पानी नहो रोगी इस प्रकार में [illegible] कम देखताहै और कभी आंखकी [illegible] की हालतमें फिरे [illegible] और कभी [illegible] है और यह प्रकार [illegible] नहीं होता इसप्रकार आंख का बनाना अथवा पानी निकालना नहीं होसकता। छठे ([illegible]) अर्थात् पिघले हुए सीस के समान। सातवें ([illegible]) अर्थात् [illegible]

डालने से आंख का दर्द बढजायगा इस से उचित है कि जब तक अच्छी त रह पानी की जगह पकडने से दिलजमई न हो तब तक सलाई के निकाल ने में जल्दी न करे और बहुधा इनबिया अर्थात् आंख के तीसरे पर्दे की सिलवट चेपदार होती है इन कारण से पानी को बहुत कठिन से सींचती हैं और उचित है कि पानी बहुत गाढा या बहुत पतला हो और इस कारण से उसका दबाना और बैठजाना कठिन होता है और बहुधा यह भी होता है कि एकहीवार ऐसा बैठजाता है कि उसमें फिर लौट आने का भय नहीं रहता और बहुधा बहुत कठिन से दबता है और फिर आजाता है और जहां उसका लेजाना चाहते हैं सबका सब नहीं जाता इसीलिए हकीम लोग कहते हैं कि जो ऐसा हो और बहुत दुख और कष्ट दे तो सलाईको उसी तरह रहने दें और सलाईकी तेज नोक से आंखके कोये में जोरसे दबावे जिससे थोडा रुधिर निकल आवे और पानीको उस रुधिरके साथ दबाकर बैठासके और कभी २ बिना हकीम की इच्छा के थोडासा खून निकलआवे तो कुछ भय न करना चाहिये। किन्तु जो पानी कठिन से दबताया उसको उतने खूनके साथ दबाकर बैठादें जिससे खूनकी शक्ति पानीको आंखकी पोल के भीतर जलाकर नष्टकरदे और पानी को खूनके साथ बैठाने में दूसरा यह लाभ है कि जो खूनको न दबावे तो उसी जगह ठिठरकर रहजाय और इससे तुर्फेकी बीमारी उत्पन्न होजाती है और वह बहुत कठिनता से जाती है इससे उचित है कि पानी बैठने के समय रोगी न गले के मार्ग से स्वांसे न नाक के मार्ग से मलका सुडके और मुखकी लार निगल जाय जिससे पानी भीतरकी तरफ वह जाय और आधीन होजाय और पानी बैठा देने के पीछे सलाई को धीरे २ फिराकर वाहर निकाले और अंडे की जर्दी गुलाब के तेल के साथ औटाकर आंखकी पीठ पर रक्खे और जीरा चबाकर उसका निर्मल पानी आंख में डालें और दोनों आंखों को कसके बांध दें जो वाहर की तरफ आंख के कोये में खून दिखाई देता नमक पीसकर उसपर छिडक कर गद्दी स कसा बांध दें और रोगी को अंधेरे घर में लावें और कहदें कि चित्त लेटा रहे और सोने वालोंकी तरह पडा रहे और उसे बिलकुल हिलने न दे यदि किसी प्रकार की आवश्य कता हो तो सचेत ही बहुत है और छींक और खांसी से अपना तईं बचावे और जो छींक आने लगे तो नाकको हाथ से मल दे जिससे छींक रुक जाय और जो खांसी आनलगे जो जुल्लाव को बादाम के तेल में मिलाकर थोडा २ घोट करके पीवे और कनपटियों पर जो चीज ठंढी और अगकी शिथल कर-

डालने से आंख का दर्द बढजायगा इस से उचित है कि जब तक अच्छी त रह पानी की जगह पकडने से दिलजमई न हो तब तक सलाई के निकाल ने में जल्दी न करे और बहुधा इनबिया अर्थात् आंख के तीसरे पर्दे की सिलवट चेपदार होती है इस कारण से पानी को बहुत कठिन से खींचती है और उचित है कि पानी बहुत गाढा या बहुत पतला हो और इस कारण से उसका दबाना और बैठजाना कठिन होता है और बहुधा यह भी होता है कि एकहीवार ऐसा बैठजाता है कि उसमें फिर लौट आने का भय नहीं रहता और बहुधा बहुत कठिन से दबता है और फिर आजाता है और जहां उसका लेजाना चाहते हैं सबका सब नहीं जाता इसीलिये हकीम लोग कहते हैं कि जो ऐसा हो और बहुत दुख और कष्ट दे तो सलाईको उसी तरह रहने दें और सलाईकी तेज नोक से आंखके कोये में जोरसे दबावे जिससे थोडा रुधिर निकल आवै और पानीको उस रुधिरके साथ दबाकर बैठासके और कभी २ बिना हकीम की इच्छा के थोडासा खून निकलआवे तो कुछ भय न करना चाहिये। किन्तु जो पानी कठिन से दबताथा उसको उतने खूनके साथ दबाकर बैठादें जिससे खूनकी शक्ति पानीको आंखकी पोल के भीतर जलाकर नष्टकरदे और पानी को खूनके साथ बैठाने में दूसरा यह लाभ है कि जो खूनको न दबावे तो उसी जगह ठिहरकर रहजाय और इससे दुर्फेकी बीमारी उत्पन्न होजाती है और वह बहुत कठिनता से जाती है इससे उचित है कि पानी बैठने के समय रोगी न गले के मार्ग से स्वांसे न नाक के मार्ग से मलका सुडके और मुखको चार निगल जाय जिससे पानी भीतरकी तरफ बह जाय और आधीन होजाय और पानी बैठा देने के पीछे सलाई को धीरे २ फिराकर बाहर निकाले और अंडे की जर्दी गुलाब के तेल के साथ औटाकर आंखकी पीठ पर रक्खे और जीरा चबाकर उसका निर्मल पानी आंख में डालें और दोनों आंखों को कसके बांध दें जो बाहर की तरफ आंख के कोये में एन दिखाई देता नमक पीसकर उसपर छिडक कर गद्दी स कड़ा बांध दें और रोगी को अंधेरे घर में लावें और कहदें कि चित्त लेटा रहे और सोने वालोंकी तरह पड़ा रहे और उसे बिलकुल हिलने न दे यदि किसी प्रकार की आवश्य कता हो तो सचेत ही बहुत है और छींक और खांसी से अपना तईं बचावें और जो छींक आने लगे तो नाकको हाथ से मल दे जिससे छींक रुक जाय और जो खांसी आनलगे जो जुल्लाब को बादाम के तेल में मिलाकर थोरा २ घोट करके पीवे और कनपटियों पर जो चीज ठंढी और अगधी शिथल कार-

के लिये मुख्य है पानी को बाहर खींच लेते हैं परन्तु इस रीति में बहुत बड़ा भय है और वह यह है कि जो पानी गाढा होगा तो रतूबत बैजिया को अपने साथ बाहर खींच लावेगा इसी से सावधान करने के लिये हम ने इस विधि को लिख दिया है (हब्बुजहब अर्थात् सोने की गोली की बनानेकी विधि) ऐलवा पेंतीस माशे, बुब्रैद साढे चौबीस माशे, मस्तगी, गुलाब के फूल, प्रत्येक पौने नौ माशे, केसर पौने दो माशे, पीली हरड साढे सत्तरह माशे, सकमूनिया सवा बारह माशे। इस की मात्रा नौ माशे है। ये सब सात दवा हैं हकीम लोग रोगी की दशा और ऋतु के अनुसार इस को देवें तब वे तोल की न्यूनता अधिकता और दवाओं के बढाने घटाने के मालिक है। मवाद के निकालने वाली गोलियां ऊपर कई जगह लिख चुके है जैसा किताब के अंत में प्रत्येक नुसखे की जगह का और प्रत्येक लाभ का संकेत किया जायगा–। जिस मनुष्य को उन की जगह जाननी उचित हो तो किताब के अंत से ढूंढ के निकाल लें। (कन्तूरयून के काढे की विधि) कन्तूरयून बारीक (कन्तूरयून–दकीक) बुब्रैद सफेद अध कुचली हुई, प्रत्येक १०॥ माशे, बिस्फाइज अध कुचली हुई २४॥ माशे, मुशका बीज निकाली हुई सत्तर माशे, ये सब चार दवाई है इन को लेकर ५२५ माशे पानी में औटावे जब १७५ माशे बच रहे तब साफ करै और इस अयारज के पीछे पिलावे और जो अयारज इस काढे में मिला कर दें तो सब से उत्तम है ॥

❀ नजले पर परीक्षित माजून ❀

बच, लौंग, सोंठ, और सोंफ चारों बराबर लेकर कूट और छान कर साफ किये हुए शहद में सान लें मात्रा प्रति दिन प्रात काल के समय ४॥ माशे सेवन करे और जानना चाहिये कि दौना मरुवा, चमेली और कलौंजी सूंघना और ऐसे ही दौना मरुवा के तेल को सिर पर मलना लाभदायक है और जितनी दवाओं का वर्णन हुआ है वे सब रोग के आरम्भ में उचित है और रोगी की प्रकृति की गर्मी, सर्दी, तरी और खुश्की की रक्षा करनी योग्य है और मवाद के निकालने के पहले आंख में दवा का लगाना वर्जित है क्यों कि बिना मवाद के निकालने आमाशय आरोग्य नहीं होता किन्तु दवा के लगाने से रोग मे विशेष होजाने का भय है। पियाज का पानी शहद के साथ आंख में लगाना आंख को साफ कर देता है और ठंढा पानी पीना और लौंग खाना तथा लौंग को शहद के साथ आंख में लगाना लाभ दायक है। हकीम शैखबूअली सैना

के लिये मुख्य है पानी को बाहर खींच लेते है परन्तु इस रीति में बहुत बडा भय है और वह यह है कि जो पानी गाढा होगा तो रतूबत बैजिया को अपने साथ बाहर खींच लावेगा इसी से सावधान करने के लिये हम ने इस विधि को लिख दिया है (हब्बुजहब अर्थात् सोने की गोली की बनानेकी विधि) ऐलवा पेंतीस माशे, तुर्बुद साडे चौबीस माशे, मस्तगी, गुलाब के फूल, प्रत्येक पौने नौ माशे, केसर पौने दो माशे, पीली हरड साडे सत्तरह माशे, सकमूनिया सवा बारह माशे। इस की मात्रा नौ माशे है। ये सब सात दवा हैं हकीम लोग रोगी की दशा और ऋतु के अनुसार इस को देवें तब वे तोल की न्यूनता अधिकता और दवाओं के बढाने घटाने के मालिक है। मवाद के निकालने वाली गोलियां ऊपर कई जगह लिख चुके है जैसा किताब के अंत में प्रत्येक नुसखे की जगह का और प्रत्येक लाभ का संकेत किया जायगा-। जिन मनुष्य को उन की जगह जाननी उचित हो तो किताब के अंत से ढूंड के निकाल लें। (कतूरयून के काढे की विधि) कन्तूरयून बारीक (कन्तूरयून-दकीक) तुर्बुद सफेद अध कुचली हुई, प्रत्येक १०॥ माशे, बिस्फाइज अध कुचली हुई २४॥ माशे, मुनक्का बीज निकाली हुइ सत्तर माशे, ये सब चार दवाई है इन को लेकर ५२५ माशे पानी में औटावे जब १७५ माशे बच रहे तब साफ करे और इस अयारज के पीछे पिलावे और जो अयारज इस काढे में मिला कर दें तो सब से उत्तम है ॥

ॐ नजले पर परीक्षित माजून ॐ

बच, हींग, सोंठ, और सौंफ चारों बराबर लेकर कूट और छान कर साफ किये हुए शहद में सान लें मात्रा प्रति दिन प्रात काल के समय ४॥ माशे सेवन करे और जानना चाहिये कि दौना मरुवा, चमेली और कलौंजी सूघना और ऐसे ही दौना मरुवा के तेल को सिर पर मलना लाभदायक है और जितनी दवाओं का वर्णन हुआ है वे सब रोग के आरम्भ में उचित है और रोगी की प्रकृति की गर्मी, सर्दी, तरी और खुश्की की रक्षा करनी योग्य है और मवाद के निकालने के पहले आंख म दवा का लगाना वर्जित है क्यों कि बिना मवाद के निकालने आमाशय आरोग्य नहीं होता किन्तु दवा के लगाने से रोग के विशेष होजाने का भय है। पियाज का पानी शहद के साथ आंख में लगाना आंख को साफ कर देता है और ठंडा पानी पीना और हींग खाना तथा हींग को शहद के साथ आंख में लगाना लाभ दायक है। हकीम शैखबूअली सैना

न समा सके । इस वर्णन से आंख में पानी उतर आनेके कारणसे ज्योति के आन जाने का रास्ता बन्द हो अथवा न हो इन दोनों का पूरा अन्तर नहीं माळूम होता इस लिये कि जो रोगी की एक ही आंख है तो क्यों कर अन्तर माळूम कर सकेंगे फिर उचित है कि वह दवा और भोजन काम में लाये जावें कि जो एकसा पानी उत्पन्न करे और प्रकट है कि दूसरी आंख बन्द करने के समय जो आंख का छेद चौड़ा होता है तो उस का यह कारण है कि बन्द आंख की रूह खुली आंख की तरफ चली जाती है और ज्योति के आने जाने के छेद में इसी कारण से चौडाई दिखाई देती है और जब पानी का गाढ़ापन रूह के निकलने को जिस कारण से कि आंख का छेद चौडा दिखाई दे घांनेत हो तो इस दशा में आंख के छेद के चौडा न होने से आंख के पोले पट्ठ में जो ज्योति के रहने का स्थान है कभी नहीं कह सकते कि उसका रास्ता बन्द हो गया है इसी वास्ते इस में अर्थात् आंख में पानी उतर आने की दशा में ये सम्मति है कि आंख का पानी निकालना चाहे तो पहले दिमाग के साफ करने का उपाय करे और बन्द रास्ते के खोलने वाली चीज काम में लावे जिस से जो रास्ता बंद हो तो खुल जाय और आंख का पानी निकाला लाभ दे और कभी २ जो किसी अज्ञ अशचिकित्सक ने बिना गांठ को दूर किये नजले के पानी को निकाल दिया और उस को आंख के छेद से हटा दिया और फिर भी आंख की दृष्टि न खुले तो जान सकते हैं कि आंख के प्रकाश वाही नल का रास्ता बंद हो गया है और बहुत काल के पीछे अर्थात् जब आंख से पानी निकाले हुए इतना काल व्यतीत होजाय कि फिर रोगी की दवा से सफाई कर सके तो प्रकाशवाही नल की गांठ खोलने का उपाय करे जिस से आंख की दृष्टि खुल जाय (इलाज) पहले कोकाया की गाली अयारज फयकरा वा अन्य ऐसे ही दवा दूसरी वार मल के निकालने के लिये काम में लावें और आंख के रग की फस्द खोलें और कनपटियों पर जोंकें लगावे और मवाद को पांव की तरफ खींच ले ॥

॥ छब्बीसवां प्रकरण ॥

❀ जरका अर्थात् केंजी आंखों का वर्णन ❀

जिस मनुष्य की आंखों की पुतली बिल्ली के सदृश सफेद होती हैं उसे कंजी कहते हैं । यह दो प्रकार का होता है एक जन्म से, दूसरा जन्म पीछे

न समा सके । इस वर्णन से आंख में पानी उतर आनेके कारणसे ज्योति के आने जाने का रास्ता बन्द हो अथवा न हो इन दोनों का पूरा अन्तर नहीं मालूम होता इस लिये कि जो रोगी की एक ही आंख है तो क्यों कर अन्तर मालूम कर सकेंगे फिर उचित है कि वह दवा और भोजन काम में लाये जावें कि जो एकसा पानी उत्पन्न करे और प्रकट है कि दूसरी आंख बन्द करने के समय जो आंख का छेद चौड़ा होता है तो उस का यह कारण है कि बन्द आंख की रूह खुली आंख की तरफ चली जाती है और ज्योति के आने जाने के छेद में इसी कारण से चौड़ाई दिखाई देती है और जब पानी का गाढ़ापन रूह के निकलने को जिस कारण से कि आंख का छेद चौड़ा दिखाई दे थांभेत हो तो इस दशा में आंख के छेद के चौड़ा न होने से आंख के पोले पड़ में जो ज्योति के रहने का स्थान है कभी नहीं कह सकते कि उसका रास्ता बन्द हो गया है इसी वास्ते इस में अर्थात् आंख में पानी उतर आने की दशा में ये सम्मति है कि आंख का पानी निकालना चाहें तो पहले दिमाग के साफ करने का उपाय करे और बन्द रास्ते के खोलने वाली चीज काम में लावे जिस से जो रास्ता बंद हो तो खुल जाय और आंख का पानी निकालना लाभ दे और कभी २ जो किसी अज्ञ अक्षिचिकित्सक ने बिना गांठ को दूर किये नजले के पानी को निकाल दिया और उस को आंख के छेद से हटा दिया और फिर भी आंख की दृष्टि न खुले तो जान सकते हैं कि आंख के प्रकाश वाही नल का रास्ता बंद हो गया है और बहुत काल के पीछे अर्थात् जब आंख से पानी निकाले हुए इतना काल व्यतीत होजाय कि फिर रोगी की दवा से सफाई कर सकें तो प्रकाशवाही नल की गांठ खोलने का उपाय करै जिस से आंख की दृष्टि खुल जाय (इलाज) पहले कोकाया की गोली अयारज फयकरा वा अन्य ऐसे ही दवा दूसरी बार मल के निकालने के लिये काम में लावें और आंख के रग की फस्द खोलें और कनपटियों पर जोंकें लगावे और मवाद को पांव की तरफ खींच ले ॥

॥ छब्बीसवां प्रकरण ॥

❀ जरका अर्थात् कंजी आंखों का वर्णन ❀

जिस मनुष्य की आंखों की पुतली बिल्ली के सदृश सफेद होती है उसे कंजी कहते हैं । यह दो प्रकार का होता है एक जन्म से, दूसरा जन्म ऐन

प्रकार का चिन्ह है (इलाज) दिमागकी आरोग्यता के लिये बटेर और मुर गियों का मांस भूनकर वा चने और दालचीनी के साथ रांधकर सेवन करे और बानका तेल (बकायन) और चमेली का तेल नाकमें डालें और गर्म दवाई जो जड़ी बूटी हो उनके औटाएहुऐ पानी की भाफ ले और इस भफारे की यह विधि है कि जब पसीना लाना उचित होता है तो रोगी को एक चादर उ ढादेते हैं और जो दवा औटाएहुऐ पानीकी बनाई जाती है उसकी भाफरोगीके सब शरीर में देते हैं और कभी किसी खास आदि मुख्य अंग में देते हैं और शियाफ असफर तथा शियाफ अखजर आंख में लगाते हैं।

शियाफ असफर के बनाने की विधि।

पीली हरड़, नीलाथोथा, सफेद मिरच, समग अर्बी प्रत्येक १०॥ माशे, केसर ३॥ माशे, इन पांचों दवा को कूट छान कर ताजी हरी सौंफ के पानी में सलाई बनालेवे शियाफ अखजर (अर्थात्) हरी सलाई के बनाने की रीति यह है कि जगार १०॥ माशे, पीली फिटकिरी जली हुई २१ माशे, पापड़ी नौन, समुद्र झाग, लाल हरताल प्रत्येक ३॥ माशे, नोसादर १॥। माशे, हिन्दी छरीला ४॥ माशे, यह सब सात दवाहैं इन में से हिन्दी छरीला को ताजी हरी तुलसी के पानी में मिलाले और बाकी सब दवाओं को कूटछान कर उसमें सानले और सलाई बनालें। और तीसरे यह कि शोप युक्त गर्म दुष्ट प्रकृति निर्बलता का कारण होजाय और यह बात प्रगट है कि गर्मी आंख की रतू बतों को उबाल देती है और उनको बढ़ा देती है इस कारण से आंख के जोड़ खिंचकर बढ़जाते है और आंखकी दृष्टि खराब होती है उसका चिन्ह यह है आंख फूली हुई लाल और गर्म मालूम हो। (इलाज) जो खून विशेष हो तो फसद खोलें और हरड़ के काढे से कोष्ठ को नर्म करें और प्याज गन्दना आदि वातकारक खारी तेज वस्तुओं का सेवन यद्यपि न करे और सामान्य विरेचन के पीछे आंसू निकालने वाली दवा आंख में ल गावे जैसे बरूद हसरमी वा अन्य ऐसी ही दवा। बरूद हसरमी के बनाने की विधि यह है कि नीलाथोथा महीन पीस कर खट्टे अंगूर के पानी में भि गो कर छाया में सुखाले और दूसरी बार पीस कर कपड़े में छान कर आंख में लगावे। और नीलाथोथा के साथ यह दवा भी मिलालेवे जो करावादीनों में लिखी है। चौथे यह है कि साधारण गर्म दुष्ट प्रकृति जो विशेष गर्म हो और आंख के अंगों को गर्म करके उसकी रतूबतों को सुखादे और इस का

प्रकार का चिन्ह है (इलाज) दिमागकी आरोग्यता के लिये बटेर और मुर गियों का मांस भूनकर वा चने और दालचीनी के साथ रांधकर सेवन करै और बानका तेल (बकायन) और चमेली का तेल नाकमें डालें और गर्म दवाई जो जडी बूटी हो उनके औटाएहुऐ पानी की भाफ ले और इस भफारे की यह विधि है कि जब पसीना लाना उचित होता है तो रोगी को एक चादर उ ढादेते हैं और जो दवा औटाएहुऐ पानीकी बनाई जाती है उसकी भाफरोगीके सब शरीर में देते हैं और कभी किसी कान आदि मुख्य अंग में देते हैं और शियाफ असफर तथा शियाफ अखजर आंख में लगाते हैं ।

शियाफ असफर के बनाने की विधि ।

पीली हरड, नीलाथोथा, सफेद मिरच, समग अर्बी प्रत्येक १०॥ माशे, केसर ३॥ माशे, इन पांचों दवा को कूट छान कर ताजी हरी सौंफ के पानी में सलाई बनालेवे शियाफ अखजर (अर्थात्) हरी सलाई के बनाने की रीति यह है कि जगार १०॥ माशे, पीली फिटकिरी जली हुई २१ माशे, पापडी नोंन, समुद्र झाग, लाल हरताल प्रत्येक ३॥ माशे, नोसादर १॥। माशे, हिन्दी छरीला ४॥ माशे, यह सब सात दवाहैं इन में से हिन्दी छरीला को ताजी हरी बुतली के पानी में मिलाले और बाकी सब दवाओं को कूटछान कर उसमें सानले और सलाई बनालें । और तीसरे यह कि शोप युक्त गर्म दुष्ट प्रकृति निर्बलता का कारण होजाय और यह बात प्रगट है कि गर्मी आंख की रतू बतों को उबाल देती है और उनको बढा देती है इस कारण से आंख के जोड सिंचकर बढजाते है और आंखकी दृष्टि खराब होती है उसका चिन्ह यह है आंख फूली हुई लाल और गर्म मालूम हो । (इलाज) जो खून विशेष हो तो फसद खोलें और हरड के काढे से कोष्ठ को नर्म करें और प्याज गन्दना आदि वातकारक खारी तेज वस्तुओं का सेवन कदापि न करें और सामान्य विरेचन के पीछे आंसू निकालने वाली दवा आंख में ल- गावे जैसे बरूद हसरमी वा अन्य ऐसी ही दवा । बरूद हसरमी के बनाने की विधि यह है कि नीलाथोथा महीन पीस कर खट्टे अंगूर के पानी में भि गो कर छाया में सुखाले और दूसरी बार पीस कर कपडे में छान कर आंख में लगावे । और नीलाथोथा के साथ वह दवा भी मिलालेवे जो करावादीनों में लिखी है । चौथे यह है कि साधारण गर्म दुष्ट प्रकृति जो विशेष गर्म हो और आंख के अंगों को गर्म करके उसकी रतूबतों को सुखादे और इस का

कम होजाय और ज्याति को रतूवत जुलेदिया से बाहर की तरफ न निक-
लनेदे और सूरतों की उस में अच्छी तरहछायापडने म वाधकहो और रतूवत
वैजिया के गदले होने के तीन कारणहै एकतो यह है कि वातकारक दोष देह में
बढजाय फिर उस मवाद से वादी के गाढे और काले अंश दिमाग की तरफ
चढजाय और उस जगह से नीचे उतरकर रतूवत वैजिया में इकट्ठे होजांय और
अपने गाढेपन के कारण रतूवत वैजिया को मैलाकरदें । दूसरे यह कि स्त्रीगमन
अधिक किया जाय और इस कारण से कि अन्न के भोजन का सारभाग सब
देह और विशेष कर के दिमाग से निकल जाता है तो दिमाग में बहुत खुश्की
उत्पन्न होजाती है और क्योंकि आंख में जो तरी और बल है वह दिमाग की
तरी से आताहै इस लिये जिस समय दिमाग खुश्क होजाता है तब उसके साथ
ही आंख की तरी भी खुश्कहो जायगी और इस कारण से रतूवत वैजिया सुक-
ड़कर गाढी होजायगी और उस का प्रकाश तथा चमक जाती रहेगी फिर जो
खुश्की विशेष होतो कोई चीज दिखाई न देगी और जो कम हो तो ऐसा दीख
सकता है कि जैसा एक काला पर्दा आंख पर पड़ा हुआ है । तीसरे यह है कि
खाने पीने में कुपथ्य हुआ हो और सदा रात्रिके समय भोजन करने से वा अ-
जीर्ण के कारण से और अन्न के पचने के कारण शरीर में तरी विशेष उत्पन्न.
होजाय और रतूवत वैजिया को गन्दा करदे और इस प्रकार की निबलता
का चिन्ह यह है कि रोगी को अपनी आंख के सन्मुख एक काला पर्दा दिखा
ईदे और दृष्टि आकाश की तरफ देखने में पृथ्वी की तरफ देखने की अपेक्षा
अधिक स्वच्छ और प्रकाशित हो क्योंकि बहुधा रोगियों की आंख में रतूवत
वैजिया का गदला होना धूलके निकम्मे परमाणुओं के मिलने से होता है और
इन परमाणुओं का झुकाव [illegible] नीचे [illegible] है इस दशामें आंखके
नीचा करने से बहुत गद[illegible] और [illegible] पर्दे में गदलापन
न होगा और जो गदलाप[illegible] की [illegible] होता है उसका हाल तो
प्रगट ही है (इलाज) [illegible] गदल
पा का कारण हो तो [illegible] और
[illegible] ओं का [illegible] या
[illegible] पहुंचाने में [illegible] सब
[illegible] वाली [illegible] कि

कम होजाय और ज्याति को रतूबत जुलेदिया से बाहर की तरफ न निक-
लनेदे और सूरतों की उस में अच्छी तरहछायापड़ने म बाधकहा और रतूबत
बैजिया के गदले होने के तीन कारणहै एकतो यह है कि वातकारक दोष देह में
बढजाय फिर उस मवाद से वादी के गाढे और काले अश दिमाग की तरफ
चढजाय और उस जगह से नीचे उतरकर रतूबत बैजिया में इकट्ठे होजाय और
अपने गाढेपन के कारण रतूबत बैजिया को मैलाकरदें । दूसरे यह कि स्त्रीगमन
अधिक किया जाय और इस कारण से कि अन्न के भोजन का सारभाग सब
देह और विशेष कर के दिमाग से निकल जाता है तो दिमाग में बहुत खुश्की
उत्पन्न होजाती है और क्याकि आंख में जो तरी और बल है वह दिमाग की
तरी से आताहै इस लिये जिस समय दिमाग खुश्क होजाता है तब उसके साथ
ही आंख की तरी भी खुश्कहो जायगी और इस कारण से रतूबत बैजिया सुक-
ड़कर गाढी होजायगी और उस का प्रकाश तथा चमक जाती रहेगी फिर जो
खुश्की विशेष होतो कोई चीज दिखाई न देगी और जो कम हो तो ऐसा दीख
सकता है कि जैसा एक काला पर्दा आंख पर पड़ा हुआ है । तीसरे यह है कि
खाने पीने में कुपथ्य हुआ हो और सदा रात्रिके समय भोजन करने से वा आ-
जीर्ण के कारण से और अन्न के पचने के कारण शरीर में तरी विशेष उत्पन्न
होजाय और रतूबत बैजिया को गन्दा करदे और इस प्रकार की निर्बलता
का चिन्ह यह है कि रोगी को अपनी आंख के सन्मुख एक काला पर्दा दिखा
ईदे और दृष्टि आकाश की तरफ देखने में पृथ्वी की तरफ देखने की अपेक्षा
अधिक स्वच्छ और प्रकाशित हो क्योंकि बहुधा रोगियों की आंख में रतूबत
बैजिया का गदला होना धूलके निकम्मे परमाणुओं के मिलने से होता है और
इन परमाणुओं का झुकाव [illegible] नीचे [illegible] है इस दशामें आंख के
नीचा करने से बहुत गद[illegible] और [illegible] पर्दे में गदलापन
न होगा और जो गदलाप[illegible] की अ[illegible] होता है उसका हतु तो

शकीहो जो खींचकर पठ्ठेको दबादे और उसकी पोलको अधूरी गांठ से ऐसी तरह पर बन्द करदे कि बिल्कुल बद न होतो तरी पहुचानेका यत्न करें और जो पठ्ठे के दबजाने का कारण तरी होतौ उस के मुखाने और निकालने का यत्न करे और यह सामान्य बात है कि उक्त तरी सूजन उत्पन्न करे या नकरे परन्तु जो तरीका माद्दा बिना सूजन के होगा तो पठ्ठे में ढीला पन होगा और इसकारण से उसके कोई २ भाग आपसमें ऐसी रीति से मिलजांयगे कि पठ्ठे की राह बिल्कुल बद नहो क्योंकि जो सबका सब बंद हो जाय तो इस सूरत में अवश्य अधा होजाता है जैसा कि नजलेके प्रकरणके अत में वर्णन कियाहै और जो तरी सूजन उत्पन्न करने वाली है तो समीपवाले अंगों समेत पठ्ठे के भागों का सूजना पठ्ठे के रास्तेमें तगी कर देता है।

दसवें यह कि छोटी वस्तु बडी दिखाई दे यद्यपि वह बहुत समीप हो और न बहुत दूर हो क्योंकि जो वह वस्तु अधिक समीप हो तो प्रत्येक मनुष्यों को बडी दिखाई दे जैसे कि अगूठीको आखके बहुत समीप लावें तो ककण के बराबर मालूमहोती है और छोटी वस्तु जो मध्य दूरी से बडी दिखाईदे तो उसका कारण यह है कि तर गाढा और साफ शरीर पानी बिल्लौर और उजल दर्पण की तरह दृष्टि और दृश्य पदार्थ के मध्य में अडजाता है तब उस शरीर के कारण से आंखकी ज्योति टेढी होजाती है और जब ज्योति टेढी हुई और उसकी किरणों ने प्रत्येक ओर टेढे होकर शक्ति पाई तो प्रत्येक वस्तु बडी दिखाई देने लगती है और इसी कारणसे जाडेकी ऋतुमें तारागण हवा के गाढी होनसे बडे २ दिखाई देतेहै और दराहम पानीकी गहराई में स्वच्छ अक्षर बिल्लौर के नीचे बडे २ मालूम होतेहै यहां तक कि हकीम लोग इसी लिए आंख की दृष्टि की निर्बलता में ऐनकका सहारा पकडते हैं (इलाज) आमाशय और सिर को मवादसे साफ करनेके लिये अयारजात देवै जिससे वह तरी जो रोगके उत्पन्न होने का कारणहै निकलजाय उसके पीछे आंख के पर्दोंको स्वच्छ करने और आसू निकालने वाले सुर्मे जैसे बासलीकून और उसके समान अन्य सुर्मे आंख में लगावे जिससे वह भाफवाली वस्तु जो बीच में आगईहै सब निकलजाय।

ग्यारहवां यह है कि आरोग्यता के दिनों में जितनी दूरसे आंख के देखने वाली शक्ति अच्छी तरह देखती थी अच्छी तरह से न मालूम करसके और निर्बल होजाय परन्तु समीप से किसी तरह की हानि प्रगट नहो तो उसका कारण यह

शकीहो जो खींचकर पट्ठेको दबादे और उसकी पोलको अधूरी गांठ से ऐसी तरह पर बन्द करदे कि बिल्कुल बद न होतो तरी पहुंचानेका यत्न करें और जो पट्ठे के दबजाने का कारण तरी होतो उस के सुखाने और निकालने का यत्न करें और यह सामान्य बात है कि उक्त तरी सूजन उत्पन्न करें या नकरे परन्तु जो तरीका माद्दा विना सूजन के होगा तो पट्ठे में ढीलापन होगा और इसकारण से उसके कोई २ भाग आपसमें ऐसी रीति से मिलजांयगे कि पट्ठे की राह बिल्कुल बद नहो क्योंकि जो सबका सब बंद हो जाय तो इस सूरत में अवश्य अधा होजाता है जैसा कि नजलेके प्रकरणके अत में वर्णन कियाहै और जो तरी सूजन उत्पन्न करने वाली है तो समीपवाले अंगों समेत पट्ठे के भागों का सूजना पट्ठे के रास्तेमें तगी कर देता है।

दसवें यह कि छोटी वस्तु बडी दिखाई दे यद्यपि वह बहुत समीप हो और न बहुत दूर हो क्योंकि जो वह वस्तु अधिक समीप हो तो प्रत्येक मनुष्यों को बडी दिखाई दे जैसे कि अगूठीको आंखके बहुत समीप लावें तो ककण के बराबर मालूमहोती है और छोटी वस्तु जो मध्य दूरी से बडी दिखाईदे तो उसका कारण यह है कि तर गाढा और साफ शरीर पानी बिल्लौर और उजल दर्पण की तरह दृष्टि और दृश्य पदार्थ के मध्य में अडजाता है तब उस शरीर के कारण से आंखकी ज्योति टेढी होजाती है और जब ज्योति टेढी हुई और उसकी किरणों ने प्रत्येक ओर टेढे होकर शक्ति पाई तो प्रत्येक वस्तु बडी दिखाई देने लगती है और इसी कारणसे जाडेकी ऋतुमें तारागण हवा के गाढी होनसे बडे २ दिखाई देतेहै और दराहम पानीकी गहराई में स्वच्छ अक्षर बिल्लौर के नीचे बडे २ मालूम होतेहै यहां तक कि हकीम लोग इसी लिए आंख की दृष्टि की निर्बलता में ऐनकका सहारा पकडते हैं (इलाज) आमाशय और सिर को मवादसे साफ करनेके लिये अयारजात देवै जिससे वह तरी जो रोगके उत्पन्न होने का कारणहै निकलजाय उसके पीछे आंख के पर्दोंको स्वच्छ करने और आंसू निकालने वाले सुर्मे जैसे बासलीकून और उसके समान अन्य सुर्मे आंख में लगावे जिससे वह भाफवाली वस्तु जो बीच में आगईहै सब निकलजाय।

ग्यारहवां यह है कि आरोग्यता के दिनों में जितनी दूरसे आंख के देखने वाली शक्ति अच्छी तरह देखती थी अच्छी तरह से न मालूम करसके और निर्बल होजाय परन्तु समीप से किसी तरह की हानि प्रगट नहो तो उसका कारण यह

को ढूढती है बहुत शक्ति के साथ आंखसे निकले जिससे बाहरके प्रकाश में जामिले फिर क्योंकि प्रकाश बहुत बलसे निकलता है इसलिये आंखका छेद बहुत चौडा होजाता है जब आंखका छेद बहुत चौडा होगातो प्रकाश फैल जायगा और सूरजका प्रकाश भी उस आंखकी दृष्टिकी ज्योति को जो निर्बल हुआ करती है लेजाता है जैसा कि दीपकके प्रकाशको उसकी न्यूनता और निर्बलताके कारणसे कम करदेता है (इलाज) जिस रोगी की आख में ज्यो तिका गदला होना या मार्गों का बंद होजाना वा रतूबत बैजियाका काला हो जाना दृष्टिके कष्ट होनेका कारण हो तो दोषके निकालने वाला सुर्मा जैसेवा सलीकून और शियाफामिरारात वा अन्य वैसेही सुर्मा आंख में लगावे और भोजन और माजून जो मवादको हलका पवित्र करनेवाली हो आंखमें लगावे और जिस रोगी की दृष्टिका नाश अंधेरे से एक साथ बाहर प्रकाश में निकल आनेके कारण होतो उसका उपाय यह है कि सूरजके प्रकाशकी ओर न देखै और एक नीला दुपट्टा अपने मुखपर डाले रक्खै और सीसे को रती म रख कर उसके चूर्णको देखता रहे और अच्छे २ भोजन खवावे और रात के समय भोजन न करे और स्त्रीसंगमसे बचारहे ।

उन्तीसवा प्रकरण

खिफ्फ्रम का वर्णन

इस शब्दका अर्थ हकीमलोग कई प्रकार का बताते हैं कोई तो यह कहते हैं कि जब करनिया अर्थात् आखका दूसरा पर्दा और इनबिया अर्थात् तीसरा पर्दा जन्मसेही पतला हो या रतूबतबैजिया जन्मसेही बहुत थमहा और इस कारणसे सूर्यकी किरणें और प्रकाश उसमें प्रवेश होजाय । इस रोगको खिफ्फ्रम कहते हैं और इसी कारणसे हकीमलोगोंने कहा है कि यह रोग मनुष्यके साथ ही उत्पन्न हुआ करता है और उसका चिन्ह यह है कि दिनमें आंखकी दृष्टि निर्बल हो और सूर्यास्तके समय या जिसदिन बादलहो किसी तरहकी खरा बी आंख में नरहे और आंखकी दृष्टि बलवान हो और कभी कारण निर्बल हुआ करता है अर्थात् करनिया और इनबिया पर्दा या रतूबत बैजिया में नि र्बलता कमहोतो यद्यपि दिन हो परन्तु छायामें देख सकताहै और सूर्यकी किरणें और प्रकाशमें आंखके छोट होजाने और फुल्ल जाने से आंख की दृष्टि निर्बल होजाती है इसी कारण से इस का यह नाम रक्खा गया है और इसी कारण से खफ्फाश को चमगादड कहते है और फांसमें सफ्करा

को ढूंढती है बहुत शक्ति के साथ आंखसे निकले जिससे बाहरके प्रकाश में जामिले फिर क्योंकि प्रकाश बहुत बलसे निकलता है इसलिये आंखका छेद बहुत चौडा होजाता है जब आंखका छेद बहुत चौडा होगातो प्रकाश फैल जायगा और सूरजका प्रकाश भी उस आंखकी दृष्टिकी ज्योति को जो निर्बल हुआ करती है लेजाता है जैसा कि दीपकके प्रकाशको उसकी न्यूनता और निर्बलताके कारणसे कम करदेता है (इलाज) जिस रोगी की आंख में ज्योतिका गदला होना या मार्गों का बंद होजाना वा रतूबत बैजियाका काला होजाना दृष्टिके कष्ट होनेका कारण हो तो दोषके निकालने वाला सुर्मा जैसेवा सलीकून और शियाफमिरारात वा अन्य वैसेही सुर्मा आंख में लगावे और व भोजन और माजून जो मवादको हलका पवित्र करनेवाली हो आंखमें लगावे और जिस रोगी की दृष्टिका नाश अंधेरे से एक साथ बाहर प्रकाश में निकल आनेके कारण होतो उसका उपाय यह है कि सूरजके प्रकाशकी ओर न देखे और एक नीला दुपट्टा अपने मुखपर डाले रक्खे और सीसे को रती २ रत कर उसके चूर्णको देखता रहे और अच्छे २ भोजन खावे और रात के समय भोजन न करे और स्त्रीसंगमसे बचारहे ।

उन्तीसवा प्रकरण

खिफ्फश का वर्णन

इस शब्दका अर्थ हकीमलोग कई प्रकार का बताते हैं कोई तो यह कहते हैं कि जब करनिया अर्थात् आंखका दूसरा पर्दा और इनबिया अर्थात् तीसरा पर्दा जन्मसेही पतला हो या रतूबतबैजिया जन्मसेही बहुत थमहा और इस कारणसे सूर्यकी किरणें और प्रकाश उसमें प्रवेश होजाय। इस रोगको खिफ्फश कहते हैं और इसी कारणसे हकीमलोगोंने कहा है कि यह रोग मनुष्यके साथ ही उत्पन्न हुआ करता है और उसका चिन्ह यह है कि दिनमें आंखकी दृष्टि निर्बल हो और सूर्यास्तके समय या जिसदिन बादल हों किसी तरहकी खरा बी आंख में नरहे और आंखकी दृष्टि बलवान हो और कभी कारण निर्बल हुआ करता है अर्थात् करनियां और इनबिया पर्दा या रतूबत बैजिया में निर्बलता कमहातो यद्यपि दिन हो परन्तु छायामें देख सकताहै और सूर्यकी किरणें और प्रकाशमें थारोंके छोटे होजाने और सुकड जाने से आंख की दृष्टि निर्बल होजाती है इसी कारण से इस का यह नाम रक्खा गया है और इसी कारण से खफ्फाश को चमगादड कहते है और फारसमें सफ्फरा

कि उसका उपाय न करै । (इलाज) एक काला कपड़ा मुख के ऊपर ल-टकावे और काले कपडे पहनले और काली पट्टियां आंख के नीचे बांध दें ऐसी तरह पर कि सदा उन पर दृष्टि पड़ती रहे और सब से श्रेष्ट उपाय यह है कि एक काली वस्तु जिस को काले बालों से बुनते है और तुर्क लोग यात्रा में उस को लगाते है आंख के ऊपर बांध दें जिसके काले होनेके कारण से आंख के प्रकाश को इकट्ठा रक्खे और उन पर्दोंके कारणसे जो उसमें होते है देखने से भी न रोके और दूध आंख में दोहे जिससे रूह गाढी हो जाय और आंख के पर्दों को नर्म करे और सर्दी के जमाव को खोदे । जो रोग बर्फ के देखने से उत्पन्न हुआ हो तो दृष्टि को शक्ति देने और रूह के गाढापन के दूर करने के लिये कड़वे बादाम को कूट कर आंख के ऊपर लेप करें और आंख और रूह की दुरुस्ती के लिये और आंख के पर्दों की नर्मी और ग दलापन नष्ट करने और रोमाचों के खोलने के लिये गर्म पानी से सिंचार करें (सूचना) कभी बर्फ को देखने से आंख दूखने आजाती है उसका का-रण यह है कि आंख के पर्दों के सुकड़जाने और रोमांचों के बंद होने के कारण से आंख में भाफ के परमाणु घुटजाते हैं और उस जगह रुक कर उन का मवाद निकम्मा और सूजन करने वाला बन जाता है और उसका चिन्ह यह है कि कारण होचुके हों और दूसरे चिन्ह आंख दुखने और आंख के सूखजाने के प्रकरण में प्रत्येक कारण के अनुसार भिन्न २ वर्णन किये गये है वे न पाये जांय (इलाज) मवादके पिघलाने और निकालने वाली दवाएं काममें लावें उससे रोमांच खुलजांय और जो भाफ के परमाणु और मवाद कि मौजूद हैं वे मुलायम हो जांय जैसे सलगम और कसहन के ताजे पत्त या उसके सू खे हुए छिलके, जूफाखुश्क, अकलीकुल मलिक और बाबना पानी में औटा कर उसकी भाफ का भपारा दें और चक्की का पत्थर गर्म करके और निर्मल शराब उसपर डालकर उसकी भाफ पर सिर झुकाये रक्खे और जो तांबा गर्म करे और शराब उस पर डाल कर उसकी भाफ आंख में पहुंचावे तो सब से अच्छा होगा और रोमांचों के खुलने और मवाद के निकालने और आंख को बलदेने में गुण कारी होगा ।

इकत्तीसवां प्रकरण ।

सल्कुलऐन का वर्णन सलका अर्थ दुबला „होजाना„ है कभी तो इस रोग में आंख का ढेला अधिक दुबला होजाता है यहां तक कि पलक उस के ऊपर

कि उसका उपाय न करै । (इलाज) एक काला कपडा मुख के ऊपर ल-टकावे और काले कपडे पहनले और काली पट्टियां आंख के नीचे बांध दें ऐसी तरह पर कि सदा उन पर दृष्टि पडती रहे और सब से श्रेष्ट उपाय यह है कि एक काली वस्तु जिस को काले बालों से बुनते है और तुर्क लोग यात्रा में उस को लगाते है आंख के ऊपर बांध दें जिसके काले होनेके कारण से आंख के प्रकाश को इकट्ठा रक्खे और उन पर्दोंके कारणसे जो उसमें होते है दखने से भी न रोके और दूध आंख में दोहे जिससे रूह गाढी हो जाय और आंख के पर्दों को नर्म करै और सर्दी के जमाव को खोदे । जो रोग बर्फ के देखने से उत्पन्न हुआ हो तो दृष्टि को शक्ति देने और रूह के गाढापन के दूर करने के लिये कडवे बादाम को कूट कर आंख के ऊपर लेप करें और आंख और रूह की दुरुस्ती के लिये और आंख के पर्दों की नर्मी और ग दलापन नष्ट करने और रोमाचों के खोलने के लिये गर्म पानी से सिंचान करें (सूचना) कभी बर्फ को देखने से आंख दूखने आजाती है उसका का-रण यह है कि आंख के पर्दों के सुकडजाने और रोमांचों के बंद होने के कारण से आंख में भाफ के परमाणु घुटजाते हैं और उस जगह रुक कर उन का मवाद निकम्मा और सूजन करने वाला बन जाता है और उसका चिन्ह यह है कि कारण होचुके हों और दूसरे चिन्ह आंख दुखने और आंख के सूखजाने के प्रकरण में प्रत्येक कारण के अनुसार भिन्न २ बर्णन किये गये है वे न पाये जांय (इलाज) मवादके पिघलाने और निकालने वाली दवाएं काममें लावें उससे रोमांच खुलजांय और जो भाफ के परमाणु और मवाद कि मौजूद हैं वे मुलायम हो जांय जैसे सलगम और लहसन के ताजे पत्त या उसके सू खे हुए छिलके, जूफासुश्क, अकलीकुल मलिक और बाबना पानी में औटा कर उसकी भाफ का भपारा दें और चक्की का पत्थर गर्म करके और निर्मल शराब उसपर डालकर उसकी भाफ पर सिर झुकाये रक्खे और जो तांबा गर्म करै और शराब उस पर डाल कर उसकी भाफ आंख में पहुचावे तो सब से अच्छा होगा और रोमांचों के खुलने और मवाद के निकालने और आंख को बलदेने में गुण कारी होगा ।

इकत्तीसवां प्रकरण ।

सल्कुलऐन का वर्णन सलका अर्थ दुबला ,,होजाना,, है कभी तो इस रोग में आंख का ढेला अधिक दुबला होजाता है यहां तक कि पलक उस के ऊप

" हीरतुलबरा " में कहा है कि बहुत से आदमी ऐसे हैं कि हकीम लोगों ने उनकी आंख के दर्द का इलाज अफीम और दूसरी सुन्न करने वाली वस्तुओं से किया और जब बहुत समय व्यतीत हो गया तब किसी २ की दृष्टि निर्बल हो गई और जाती रही और किसी की आंख दुबली और छोटी होगई और यह बात यद्यपि पहले भी हम ने वर्णन की है परन्तु इस में गुण विशेष है इस लिए फिर वर्णन की गई है (इलाज) जिसरोगी की आंख में रोग का कारण मवाद की गांठ हो तो मवाद के निकालने वाली दवाएं लगावें और गांठ के खोलने का उपाय करे और उसके पीछे सब शरीर और सिर की प्रकृति को तरी पहुंचावें और जिस रोगी की आंख का रास्ता चेपदार रतूबत आदि से बन्द न हो गया हो तो केवल तरी पहुंचाने का उपाय करे और मवाद के निकालने और गांठ के खोलने वाली वस्तुओं को काम में न लावे ॥

॥ बत्तीसवां प्रकरण ॥

ॐ जुहूज अर्थात् आंख के बाहर निकल आने का वर्णन ॐ

यद्यपि इस बीमारी का थोड़ा सा वर्णन हम रतूबत जुजाजिया और रतूबत बुलैदिया के रोगों में वर्णन कर आये हैं परन्तु अब इस जगह भी गुणों की अधिकता के कारण फिर दुबारा वर्णन करते हैं अब समझना चाहिए कि इस रोग के तीन कारण है एक तो यह कि रीह अर्थात् वादी अथवा दोष युक्त मवाद आंख के भागों में आ जाय और उसके कारण से आंख का ढेला बढ़ कर और फूल कर बाहर की तरफ झुक आवे और उसका चिन्ह यह है कि ऊंची होने और उभरने के साथ आंख बड़ी मालूम हो और जो दोषक कारण से हो तो बोझ भी मालूम हो (इलाज) जिस मवाद से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तो उस के अनुसार दवाओं से उसे दुकना अर्थात् दवाओं में रूई अथवा कपड़े को सान करके गुदा पर रक्खे और अगाड़ी की गहराई से मल के निकालने वाली दवाएं, फस्द और पछने द्वारा मवाद को निकाले और मवाद के निकालने के पीछे जो वस्तु आंख से निकालने वाली, मवाद के रोकने वाली और आंखों को दृढ़ करने वाली हों आंख में लगावें जिस से आंख को बल देवे और उभर आने और मवाद को ग्रहण करने से उसको रोक रक्खे और जो दवा कि इस रोग में लगाई जाती है वह शियाफ मिमाक है इस शियाफ मिमाक के बनाने की विधि यह है कि मिमाक को पानी में औटाकर छान ले और केवल एकहुण पानी का औटाले जब गाढ़ा होजाय तो उस समय रोग में

" हीरतुलवरा " में कहा है कि बहुत से आदमी ऐसे हैं कि हकीम लोगों ने उनकी आंख के दर्द का इलाज अफीम और दूसरी सुन्न करने वाली वस्तुओं से किया और जब बहुत समय व्यतीत हो गया तब किसी २ की दृष्टि निर्बल हो गई और जाती रही और किसी की आंख दुबली और छोटी होगई और यह बात यद्यपि पहले भी हम ने वर्णन की है परन्तु इस में गुण विशेष है इस लिए फिर वर्णन की गई है (इलाज) जिसरोगी की आंख में रोग का कारण मवाद की गांठ हो तो मवाद के निकालने वाली दवाएँ लगावें और गांठ के खोलने का उपाय करें और उसके पीछे सब शरीर और सिर की प्रकृति को तरी पहुंचावें और जिस रोगी की आंख का रास्ता चेपदार रतूबत आदि से बन्द न हो गया हो तो केवल तरी पहुंचाने का उपाय करे और मवाद के निकालने और गांठ के खोलने वाली वस्तुओं को काम में न लावे ॥

॥ बत्तीसवां प्रकरण ॥

❀ जुहूज अर्थात् आंख के बाहर निकल आने का वर्णन ❀

यद्यपि इस बीमारी का थोड़ा सा वर्णन हम रतूबत जुजाजिया और रतूबत जुलैदिया के रोगों में वर्णन कर आये हैं परन्तु अब इस जगह भी गुणों की अधिकता के कारण फिर दुबारा वर्णन करते हैं अब समझना चाहिये कि इस रोग के तीन कारण हैं एक तो यह कि रीह अर्थात् वादी अथवा दोष युक्त मवाद आंख के भागों में आ जाय और उसके कारण से आंख का ढेला बढ़ कर और फूल कर बाहर की तरफ झुक आवे और उसका चिन्ह यह है कि ऊंची होने और उभारने के साथ आंख बड़ी मालूम हो और जो दोषक कारण से हो तो बोझ भी मालूम हो (इलाज) जिस मवाद से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तो उस के अनुसार दवाओं से उसे दुकना अर्थात् दवाओं में रुई अथवा कपड़े को सान करके गुदा पर रक्खे और अंगों की गहराई से मल के निकालने वाली दवाएँ, फस्द और पछने द्वारा मवाद को निकाले और मवाद के निकालने के पीछे जो वस्तु आंख से निकालने वाली, मवाद के रोकने वाली और आंखों को दृढ़ करने वाली हों आंख में लगावें जिस से आंख को बल देवे और उभर आने और मवाद को ग्रहण करने से उसको रोक रक्खे और जो दवा कि इस रोग में लगाई जाती है वह शियाफ सिमाक है इस शियाफ सिमाक के बनाने की विधि यह है कि सिमाक को पानी में औटाकर छान लें और केवल छनहुए पानी को औटाले जब गाढ़ा होजाय तो उस समय रोग में

फुल, कुन्दरु गोंद और वालछड आंख के ऊपर लगावे जिस से अजीर्ण के कारण से ढेले के भागों को खींच कर दृढ करदेवे ।

तेंतीसवां प्रकरण

खुगशुलऐनालिशुआ अर्थात् सूर्यकी किरणोंके देखनेमें घृणाकावर्णन

इस रोगके दो कारणहैं एक तो यह कि रुह गर्म होकर भड़क उठे फिर सूर्य की किरण की गर्मी और पतलापन बढजाय और इस कारणसे आंख की देखनेवाली शक्ति का उसका देखना बुरा मालूमहो और इससे करानीतुस अर्थात् सरसामके होने का भय होताहै क्योंकि सरसाम गर्म मवाद से उत्पन्न होताहै और उसका चिन्ह यहहै कि दूसरी प्रकारके चिन्ह बिलकुल नहीं होते (इलाज) तरी और सर्दी पहुचानेके उपाय में आलस्य न करे जिससे कोई बड़ा कष्ट नहो । दूसरा यह कि आंखमें कोई रोग जैसे आंख का दुखनी आना, सबल रोग वा पलकमें कोई कष्ट होजाय जैसे खुजली । फिर इस रोगके कारणसे आंखको सूर्यकी किरणोंका देखना अच्छा न मालूम हो और कारणका पाया जाना उसका चिन्हहै और हेतुका दूर करना इलाजहै ।

चौंतीसवां प्रकरण

कुमना अर्थात् आंखकी लालीका वर्णन

यह रोग पलकों से सम्बन्ध रखताहै इस शब्द के तीन अर्थहैं इसका वर्णन ऊपर किया गया है और इस जगह यह अर्थ है कि जब आदमी नींद से जागे तो यह संदेह करे कि उसकी दोनों आंखों में रेत और धूलहै और उसका कारण यह है कि गाढी बादी के कारण से एक प्रकार का बोझ पलक में उत्पन्न हो और भाफ के निकम्मे परमाणु आंख के पर्दों में बंद होजांय और इसी लिये यह दशा सदा और प्रत्येक समय नहीं रहा करती है क्योंकि जागने की दशा में पलक के बंद करने और खोलने में और प्रत्येक ओर देखने से और दिन के प्रकाश के कारण से भाफ के परमाणु नष्ट होजाया करते थे और सोने की दशामें नष्ट करने वाले कारणों के न रहने से भाफके परमाणु इकट्ठे होजाते हैं इससे अवश्य जागने के पीछे मालूम होगा कि जैसे रेत आंख में गिरपड़ी है और जागने के थोडी देर पीछे गर्मी के कारण से जितने भाफके परमाणु इकट्ठे होगये थे नष्ट होजाते हैं (इलाज) जो वस्तु कि रोगी की प्रकृति के अनुसार है उनके [illegible] करने वाले मवाद को निकाले और सब शरीर [illegible] और आंख के पर्दों के मवाद के निकालने के लि[illegible] लगावे जिस

फूल, कुन्दरु गोंद और वालछड आंख के ऊपर लगावे जिस से अजीर्ण के कारण से ढेले के भागों को खींच कर दृढ करदेवे ।

तेंतीसवा प्रकरण

शुगलुलऐनालिशुआ अर्थात् सूर्यकी किरणोंके देखनेमें घृणा का वर्णन

इस रोगके दो कारणहैं एक तो यह कि रुह गर्म होकर भडक उठ फिर सूर्य की किरण की गर्मी और पतलापन बढजाय और इस कारणसे आंख की देखनेवाली शक्ति का उसका देखना बुरा मालूमहो और इससे करानीतुस अर्थात् सरसामके होने का भय होताहै क्योंकि सरसाम गर्म मवाद से उत्पन्न होताहै और उसका चिन्ह यहहै कि दूसरी प्रकारके चिन्ह बिल कुल नहीं होते (इलाज) तरी और सर्दी पहुचानेके उपाय में आलस्य न करे जिससे कोई बडा कष्ट नहो । दूसरा यह कि आंखमें कोई रोग जैसे आंख का दुखनी आना, सबल रोग वा पलकमें कोई कष्ट होजाय जैसे खुजली । फिर इस रोगके कारणसे आंखको सूर्यकी किरणोंका देखना अच्छा न मालूम हो और कारणका पाया जाना उसका चिन्हहै और हेतुका दूर करना इलाजहै ।

चौंतीसवा प्रकरण

कुमना अर्थात् आंखकी लालीका वर्णन

यह रोग पलकों से सम्बन्ध रखताहै इस शब्द के तीन अर्थहैं इसका वर्णन ऊपर किया गया है और इस जगह यह अर्थ है कि जब आदमी नींद से जागे तो यह संदेह करे कि उसकी दोनों आंखों में रेत और धूलहै और उसका कारण यह है कि गाढी नादी के कारण से एक प्रकार का बोझ पलक में उत्पन्न हो और भाफ के निकम्मे परमाणु आंख के पर्दों में बंद होजाय और इसी लिये यह दशा सदा और प्रत्येक समय नहीं रहा करती है क्योंकि जागने की दशा में पलक के बंद करने और खोलने से और प्रत्येक ओर देखने से और दिन के प्रकाश के कारण से भाफ के परमाणु नष्ट होजाया करते थे और सोने की दशामें नष्ट करने वाले कारणों के न रहने से भाफके परमाणु इकट्ठे होजाते हैं इससे अवश्य जागने के पीछे मालूम होगा कि जैसे रेत आंख में गिरपडी है और जागने के थोडी देर पीछे गर्मी के कारण से जितने भाफके परमाणु इकट्ठे होगये हो नष्ट होजाते हैं (इलाज) जो वस्तु कि रोगी की प्रकृति के अनुसार है उनके द्वा[illegible] करने वाले मवाद को निकाले और सर शरीर मवा[illegible] और आंख के पर्दो के मवाद के निकालने के लि[illegible] लगावे जिस

उन रगोंकी फस्द खोलनेकी विधि यह है कि रोगी श्वास को रोककर धूपमें खडाहो और नाकके छेद को सूर्यके सन्मुख रक्खे जिससे प्रकाश के कारण रगें दिखाई दे और फस्द खोलने वाले को दीख पडे फिर फस्द खोलने वाला उनको नश्तरकी पीठ से या उस औजार से जो इस काम के लिये बनायागया है खोलदे और इन रगोंकी फस्द खोलनेका यह लाभ है कि रुतूवत स्रव के साथ आंख से निकल जाती है और कभी पलकका ढीलापन फालिज और लकुएकी रीति पर हुआ करता है और उसका वर्णन होचुका है और कभी ऐसा भी होता है कि वह बन्धन जो पलकको थामे रहता है माथे की रग की फस्द खोलने के समय फस्द खोलने वालेके चूकजानेके कारण से किसी तरफ सेकटजाता है तो इस कारणसे पलक ढीला होजाता है जैसाकि अन्दह मासम हकीमको काम पडा कि जिस समय वह बादशाहकी बर्दीकी फस्द खोलता था पलकके बंधनकी एक तरफ कटगई और उसकी दोनों आंखें बंद रह गई फिर बादशाहने उसका हाथ काट डालनेके लिये आज्ञादी वे बादशाह इलाज में चूकनेवाले हकीमों का हाथ कटवाडाला करतेथे।

छत्तीसवां प्रकरण।

इल्तिसा कुरुजफन अर्थात् दोनों पलकों के आपस में मिलने का वर्णन।

जानना चाहिये कि कभी पलकका मिलना एक कोने में होता है और कभी दोनों में उत्पन्न होता है और कभी दोनों पलक एक किनार से लगाकर दूसरे किनारे तक मिलजातेहैं और कभी पलक मुल्तहिमा वा करनियां पर्दों पर दोनों ओर चिपट जाताहै और इस रोगके तीन कारणहैं एकतो यहकि आंख प्रथम सुजकर बहुत लाल होजाय और पलक ऐसी दिखाइदे कि जैसे फट गई और छिलगई है फिर जब घाव भरजाता है तो इस कारणसे पलक मिलजाती है कि बहुत कालतक एक पलक दूसरे पलकसे बराबर मिली रहीथी। दूसरा यह कि आंख में या पलक में घाव होजाय और बहुत समय तक आंख मिची रहे और उसके कारणसे घाव भी भिडजाय। तीसरा यहकि सबल वा नाखूना काटडाला हो और उस जगह का जैसा कि चाहिये था जीरा और नमक से दाग न दिया हो और जो सावधानी काटन के पीछे करनी है वे भी न की हों यहांतक कि इन्हीं कारणों से दोनों पलक आपस में मिलजाय हैं। (इलाज) इसरोगका उपाय जर्राही से होताहै जिस रोगीकी आंखमें पलक बिल्कुल म

उन रगोंकी फस्द खोलनेकी विधि यह है कि रोगी श्वास को रोककर धूपमें खड़ाहो और नाकके छेद को सूर्य्यके सन्मुख रक्खे जिससे प्रकाश के कारण रगें दिखाई दे और फस्द खोलने वाले को दीख पड़े फिर फस्द खोलने वाला उनको नश्तरकी पीठ से या उस औजार से जो इस काम के लिये बनायागया है खोलदे और इन रगोंकी फस्द खोलनेका यह लाभ है कि रुतूवत खून के साथ आंख से निकल जाती है और कभी पलकका ढीलापन फालिज और लकुएकी रीति पर हुआ करता है और उसका वर्णन होचुका है और कभी ऐसा भी होता है कि वह बन्धन जो पलकको थामें रहता है माथे की रग की फस्द खोलने के समय फस्द खोलने वालेके चूकजानेके कारण से किसी तरफ सेकटजाता है तो इस कारणसे पलक ढीला होजाता है जैसाकि अब्दुल मासम हकीमको काम पड़ा कि जिस समय वह बादशाहकी बर्टीकी फस्द खोलता था पलकके बंधनकी एक तरफ कटगई और उसकी दोनों आंखें बंद रह गई फिर बादशाहने उसका हाथ काट डालनेके लिये आज्ञादी वे बादशाह इलाज में चूकनेवाले हकीमों का हाथ कटवाडाला करतेथे।

छब्बीसवां प्रकरण।

इल्तिसा कुळजफन अर्थात् दोनों पलकों के आपस में मिलने का वर्णन।

जानना चाहिये कि कभी पलकका मिलना एक कोने में होता है और कभी दोनों में उत्पन्न होता है और कभी दोनों पलक एक किनारे से लेकर दूसरे किनारे तक मिलजातेहैं और कभी पलक मुल्तहिमा वा करनिया पर्दों पर दोनों ओर चिपट जाताहै और इस रोगके तीन कारणहैं एकतो यहकि आंख प्रथम सुजकर बहुत लाल होजाय और पलक ऐसी दिखाई दे कि जैसे फट गई और छिलगई है फिर जब घाव भरजाता है तो इस कारणसे पलक मिलजाती है कि बहुत कालतक एक पलक दूसरे पलकसे बराबर मिली रहीथी। दूसरा यह कि आंख में या पलक में घाव होजाय और बहुत समय तक आंख मिची रहे और उसके कारणसे घाव भी निबटजाय। तीसरा यहकि सबल वा नाखूना काटडाला हो और उस जगह का जैसा कि चाहिये था जीर्ण और नमक से दाग न दिया हो और जो सावधानी काटने के पीछे कीजाती है वे भी न की हों यहांतक कि इन्हीं कारणों से दोनों पलक आपस में मिलजाय हों। (इलाज) इसरोगका उपाय जर्राही से होताहै जिस रोगीकी आंखमें पलक बिल्कुल म

मेथी के जुशाव का तरेडा देवे और तरी पहुचाने वाले शर्बत भोजन या तेल या तरेडे काममें लावे। ये बातें खुश्क और दोषयुक्त दोनों प्रकार के रोगों में लाभदायक है क्योंकि जो सिबारुट मवाद के भरे होने के कारण से हो तो मवाद के गाढेपन के कारण से तरी पहुचाने और नर्म करनेकी आवश्यकता है और ऐसेही लडकी वाली स्त्रियों के दूध में खितमी और बनफशा मिलाकर लेप करना और बनफशा का तेल और कद्दूका तेल सिरमें डालना दोनों रोगों में लाभदायक है

अडतीसवां प्रकरण।

शिरनाक अर्थात् अधिमास का वर्णन

यह चर्बी के सदृश पट्ठे से बना हुआ मांसका टुकडा होता है और एक झिल्ली उसमें लिपी हुई ऊपर के पलक में बाहरकी तरफ पैदा हुआ करती है और उसका चिन्ह यह है कि पलक मोटी होजाय और मोटे होने के कारण कठिन से खुले और आंख म सदा तरी रहे और जिस समय तर्जनी उगली और बीच की उगली का खोलकर आंख के ऊपर रखकर जोर से दबावें तो दोनों उगलियों के बीच में एक विशेष वस्तु प्रगट हो और क्योंकि यह रोग अग के सार भाग न चिपट कर गाढा रहता है और उससे जुदा नहीं होता है और फिरता नहीं। परन्तु रसौली इस के विरुद्धहै क्योंकि वह चला करती है और शिरनाक अर्थात् अधिमास और रसौली के बीच म यही अन्तरहै और इस रोगवाला सूर्य के प्रकाश को बहुत कम देखसकता है और उसके आन्द आंसू निकल आते है और छींक आजाती है और यह रोग जुकाम और नजले वाले और तर प्रकृति वाले को बहुधा उत्पन्न हुआ करता है (इलाज) जैसी आवश्यकता हो फिर देहके मवाद क निकालने लिये फस्त खोले और बनफशा की टिकियाद और मवाद को मुलायम करने के लिए मुजब्बिरा और यवच पक्षियों या मांसदवे और बादी के उत्पन्न करने वाली वस्तुओं स बचता रहे और प्रकृतिके सम्हालने का यत्न करता रहे और न्हाने व स्थान पर लाभदायक समझ और मवादके नष्ट करनेवाली जडी बुटिया को पानी म औटाकर उस पानी से सिकताव करें और मवाद के निकालनेके पीछे बासलीकून न अगरर लगाये जिससे तरी वाला मवाद निकलजाय और जो इन उपायों से सिद्धि न हो तो नश्तर का प्रयोग करें और यह बात प्रगट है कि जबतक बन पड और दवाओं उपाय हासक तो हाथ से फाडना अच्छा नहीं है क्योंकि चीरने फाडने म भय अवश्य रहता है इसलिए पिसाव शार अत्यार

मैथी के क्वाथ का तरेड़ा देवे और तरी पहुचाने वाले शर्बत भोजन वा तेल वा तरेड़े काममें लावे। ये बातें खुश्क और चोपयुक्त दोनों प्रकार के रोगों में लाभदायक है क्योंकि जो खिचावट मवाद के भरे होने के कारण से हो तो मवाद के गाढ़ेपन के कारण से तरी पहुचाने और गर्म करनेकी आवश्यकता है और ऐसेही लड़की वाली स्त्रियों के दूध में खितमी और बनफशा मिलाकर लेप करना और बनफशा का तेल और कद्दूका तेल सिरमें डालना दोनों रोगों में लाभदायकहै

अड़तीसवां प्रकरण।

शिरनाफ अर्थात् आधिमास का वर्णन

यह चर्बी के सदृश पट्ठे से बना हुआ मांसका टुकड़ा होता है और एक झिल्ली उसमें खिंची हुई ऊपर के पलक में बाहरकी तरफ पैदा हुआ करती है और उसका चिन्ह यह है कि पलक मोटी होजाय और मोटे होने के कारण कठिन से खुले और आंख म सदा तरी रहे और जिस समय तर्जनी उंगली और बीच की उंगली को खोलकर आंख के ऊपर रखकर जोर से दबावें तो दोनों उंगलियों के बीच में एक विशेष वस्तु प्रगट हो और क्योंकि यह रोग अंग के सार भाग न चिपट कर गाढ़ा रहता है और उससे जुदा नहीं होताहै और फिरता नहीं। परन्तु रसौली इस के विरुद्धहै क्योंकि वह चला करती है और शिरनाफ अर्थात् अधिमास और रसौली के बीच म यही अन्तरहै और इस रोग वाला सूर्य के प्रकाश को बहुत कम देखसकता है और उसके जल्द आंसू निकल आते हैं और छींक आजाती है और यह रोग कुपाम और नजले वाले और तर प्रकृति वाले को बहुधा उत्पन्न हुआ करता है (इलाज) जैसी आवश्यकता हो फिर देहके मवाद के निकालने लिये फस्त खोले और या कफसा की टिकियादे और मवाद को मुलायम करने के लिए मुजफ्फिरा और यंबुक पक्षियों का मांसदवे और बादी के उत्पन्न करने वाली वस्तुओं से बचाता रहे और प्रकृतिके सम्हालने का यत्न करता रहे और न्हाने व स्थान पर लाभदायक समझ और मवादके नष्ट करनवाली जड़ी बुटियों को पानी म औटावकर उस पानी से सिकताव करे और मवाद के निकालनेके पीछे खासतौरपर न अगरर लगावे जिससे तरी वाला मवाद निकलजाय और जो इन उपायोंसे अर्थसिद्धि न हो तो नश्तर का प्रयोग करे और यह बात प्रगट है कि उक्त क यन पढ और दवाने उपाय इलाज को हाथ से फाड़ना अच्छा नहीं है क्योंकि चीरने फाड़ने म भय अवश्य रहता है इसलिये विशाल शास्त्र अनुसार

इस का नर्मभाग तो नष्ट होजाता है और शेष पथरा जाताहै। इसी लिये उसका इकदा अर्थात् गांठ नाम रक्खा गया है। इस गांठ के तीन भेदहैं एक तो वहहै जो रसौली की तरह फिरता है और अपनी जगहसे दाहें बांये वा ऊपर नीचे हटजाता है (इलाज) जो गांठ गहरी भीतर गढी हुई न हो तो गांठ के ऊपरकी खाल को चौडाई में चीरदे और चीरों के किनारे लोहे के औजारों से पकड़ कर गांठ के ऊपर से खींचले और जल्द छील डाले जिससे उसके ऊपर की झिल्ली जो उस पर लिपटी हुई है दिखाई देने लगे फिर उस झिल्ली को धीरे से खींचे जिससे गांठ सहित बाहर निकल आवे और निकालने के समय सावधानी करें जिससे वह झिल्ली न फटे क्योंकि जो वह झिल्ली गांठ के ऊपर छाई हुई है फट जायगी तो काटना और छीलना अच्छी तरह न बन पड़ेगा इस लिये किसी २ हकीमो ने कहा है कि गांठ के ऊपर वाली खाल को भी चौडाई में और लम्बाई में चीर देवे जिससे गांठ का निकाल लेना सुगम हो जाय और जो गांठ बहुत भीतरी गढी हुई हो तो पलक को बाहर की तरफ उलट दें और पलक के भीतर से जिस जगह कि गांठ है चीरा दें और सावधानी के साथ उक्त रीति से गांठ को बाहर निकाललें फिर जीरा चबाकर उस का पानी आंख में डालें और थोडी देर तक पलक को थामे रहे जिससे वह झुक न जाय। दूसरा यह कि ककरी और पत्थर के समान कडी हो और अपनी जगह से न हिले क्योंकि वह उससे जुदी नहीं है किन्तु उस में चिपटी हुई है और इसी लिये किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले ने कहा है कि यह फोडे के सदृश होती है (इलाज) गांठ के नर्म करने के लिये गर्म पानी और मोम का तेल उस पर लगावें और जब नर्म होजाय तो मरहम दाखलीयून मेथी और अलसी का लुआब लगावें जिससे वह नष्ट होजाय इस पर भी जो गांठ नष्ट न हो तो उत्तम यह है कि उसको छोडदें और लोहे के औजारों से तथा तीक्ष्ण दवाओं से न छेडे क्योंकि उसके काटने में रोगी को सताने और दुखदेने के सिवाय और कोई लाभ नहीं है और भय बहुत है क्योंकि इस के वास्ते कोई अलग थैली नहीं हुआ करती है जिससे उसके कारण का सब का सब निकल आवे और जब थोडासा बाकी रहजाता है तो उसके समीप से दूसरी बार फिर निकल आती है और कभी २ सूजन भी उत्पन्न कर देती है और किसी २ हकीम ने उपाय किया है कि जब मवाद निकलजाने के पीछे जब कि बीमारी का मवाद आवश्यकतानुसार निकल जाय तो गांठ को

इस का नर्मभाग तौ नष्ट होजाता है और शेष पथरा जावाहै। इसी लिये उसका इकदा अर्थात् गांठ नाम रक्खा गया है। इस गांठ के तीन भेदहैं एक तो वहहै जो रसौली की तरह फिरता है और अपनी जगहसे दाहें बांये वा ऊपर नीचे हटजाता है (इलाज) जो गांठ गहरी भीतर गढी हुई न हो तो गांठ के ऊपरकी खाल को चौडाई में चीरदे और चीरों के किनारे लोहे के औजारों से पकड़ कर गांठ के ऊपर से खींचले और जल्द छील डाले जिससे उसके ऊपर की झिल्ली जो उस पर लिपटी हुई है दिखाई देने लगे फिर उस झिल्ली को धीरे से खींचे जिससे गांठ सहित बाहर निकल आवे और निकालने के समय साव-धानी करें जिससे वह झिल्ली न फटे क्योंकि जो वह झिल्ली गांठ के ऊपर छाई हुई है फट जायगी तो काटना और छीलना अच्छी तरह न बन पड़ेगा इस लिये किसी २ हकीम ने कहा है कि गांठ के ऊपर वाली खाल को भी चौडाई में और लम्बाई में चीर देवे जिससे गांठ का निकाल लेना सुगम हो जाय और जो गांठ बहुत भीतरी गढी हुई हो तो पलक को बाहर की तरफ उलट दें और पलक के भीतर से जिस जगह कि गांठ है चीरा दें और साव-धानी के साथ उक्त रीति से गांठ को बाहर निकाललें फिर जीरा चबाकर उस का पानी आंख में डालें और थोडी देर तक पलक को थामे रहे जिससे वह झुक न जाय। दूसरा यह कि ककरी और पत्थर के समान कडी हो और अ-पनी जगह से न हिले क्योंकि वह अगसे जुदी नहीं है किंतु उस में चिपटी हुई है और इसी लिये किताब शरह असबाब के बनाने वाले ने कहा है कि यह फोडे के सदृश होती है (इलाज) गांठ के नर्म करने के लिये गर्म पानी और मोम का तेल उस पर लगावें और जब नर्म होजाय तो मरहम दाखलीयून मेथी और अलसी का लुआब लगावें जिससे वह नष्ट होजाय इस पर भी जो गांठ नष्ट न हो तो उत्तम यह है कि उसको छोडदें और लोहे के औजारों से तथा तीक्ष्ण दवाओं से न छेडे क्योंकि उसके काटने में रोगी को सताने और दुखदेने के सिवाय और कोई लाभ नहीं है और भय बहुत है क्योंकि इस के वास्ते कोई अलग थैली नहीं हुआ करती है जिससे उसके कारण का सब का सब निकल आवे और जब थोडासा बाकी रहजाता है तो उसके खमीर से दूसरी बार फिर निकल आती है और कभी ५ सूजन भी उत्पन्न कर देती है और किसी २ हकीम ने उपाय किया है कि सब मवाद निकलजाने के पीछे जब कि बीमारी का मवाद आवश्यकतानुसार निकल जाय तो गांठ को

समीप इकट्ठी होजाती है और इस रतूबत में खारीपन नहीं होता है, क्योंकि जो खारी होती तो विशेष बालोंको गिरादती और खराब करदती और उन को जमने न दती (इलाज) प्रथमही इस रोगके मवादको उचित दवाओंके द्वारा दिमाग और देह से निकालना चाहिए और अयारज तथा ऐसीही दवा ओं से कुल्ले करना योग्य है और जिस मनुष्यकी प्रकृति में गर्मी होता सवर के समय पीली हरडका मुरब्बा व इत्रीफलसगीर देना चाहिए और सदा पीली हरड वा काबुली हरड मुखमें रखना और चूसना योग्य है और जिस बीमारकी प्रकृति ठंडी होतो उसको मस्तगी और लौंग चबाना और जायफल मुख में रखकर उसका पानी धीरे २ चूसना और अम्बर सूंघना चाहिये और उन उपायोंके पीछे जर्राही से इलाज करे। इस बीमारी में जर्राही पांच प्रकार की होती है एक तो दवा लगाना, दूसरा इस निकम्मे बालको अच्छे बालों के साथ लगाना और चिपकाना तीसरा दाग देना, चौथे खोंदेना और पांचवें काटना। लगाने वाली दवाओं में तीक्ष्ण और पलक का साफ करने वाली दवा लगावे जैसे बासलीकून, रोगनाई कबीर, शियाफ असफर और अहमर हाद। और निकम्मे बालको अच्छे बालो में चिपकाना और लगादेना इस प्रकारका होता है कि निकम्मे बालको और अच्छा बहुत कोई चेपदार चीज लगाकर उंगली से दोनों मिलाकर आपस में जमादे और इतनी देर तक पकड़े रहे कि वे चिपकाए हुऐ बालकड़े होजांय और वह चेपदार वस्तु भी सूख जाय और यह काम उस समय म कर सकते हैं कि परबाल गिन्ती म पांच से विशेष न हों किन्तु पांच स भी कम हों और जिस चीज से परबाल को चिपकाते हैं वह यह दवाहै बबूल का गोंद और कतीरा पानीमें भिगा हुआ और दुकह का शहद भी ऐसा ही गुण कारी है किन्तु सब से विशेष बलवान् है और मस्तगी को पिघला कर उस से और रातीनज अर्थात् लोबान व गोंद से चिपका सकते है और दुकह एक दाना है जैसे हब्बुलास अर्थात् अबीरा की गाली और उस के भीतर बहुत चेपदार शहद है और बाल की जड़ को दाग देने की यह रीति है कि पलक को बाहर की तरफ उलट कर बालो को उखाड डाले और एक औजार सुई के समान जो इस काम के लिये प्रसिद्ध है उसको आग में लाल करले और बाल की जड़ को दाग दें अर्थात् जला दें और प्रत्येक समय २ बाल उखाड़ न उखाड़े तथा जो एक ही बाल का उखाड़ कर दाग दें और जब वह अच्छा होजाय फिर दूसरा बाल उखाड़े और इसी तरह दाग देते रहें तो

समीप इकट्ठी होजाती है और इस रतूबत में खारीपन नहीं होता है, क्योंकि जो खारी होती तो विशेष बालोंको गिरादती और खराब करदती और उन को जमने न देती (इलाज) प्रथमही इस रोगके मवादको उचित दवाओंके द्वारा दिमाग और देह से निकालना चाहिये और अयारज तथा ऐसीही दवा ओं से जुल्लाब करना योग्य है और जिस मनुष्यकी प्रकृति में गर्मी होता स्वर के समय पीली हरडका मुरब्बा व इत्रीफलसगीर देना चाहिये और सदा पीली हरड वा काबुली हरड मुखमें रखना और चूसना योग्य है और जिस बीमारकी प्रकृति ठंडी होतो उसको मस्तगी और लौंग चवाना और जायफल मुख में रखकर उसका पानी धीरे २ चूसना और अम्बर सूंघना चाहिये और उन उपायोंके पीछे जर्राही से इलाज करै। इस बीमारी में जर्राही पांच प्रकार की होती है एक तो दवा लगाना, दूसरा इस निकम्मे बालको अच्छे बालों के साथ लगाना और चिपकाना तीसरा दाग देना, चौथे खोदैना और पांचवें काटना। लगाने वाली दवाओं में तीक्ष्ण और पलक का साफ करने वाली दवा लगावे जैसे बासलीकून, रोगनाई कबीर, शियाफ अख़ज़र और अहमर दाद। और निकम्मे बालका अच्छे बालों में चिपकाना और लगादेना इस प्रकारका होता है कि निकम्मे बालको और अच्छा बहुत कोई चेपदार चीज लगाकर उंगली से दोनों मिलाकर आपस में जमादे और इतनी देर तक पकड़े रहे कि वे चिपकाए हुऐ बालकड़े होजांय और वह चेपदार वस्तु भी सूख जाय और यह काम उस समय में कर सकते हैं कि परबाल गिन्ती में पांच से विशेष न हों किन्तु पांच से भी कम हों और जिस चीज से परबाल को चिपकाते हैं वह यह दवाहै बबूल का गोंद और कतीरा पानीमें भिगा हुआ और दुकह या शहद भी ऐसा ही गुण कारी है किन्तु सब से विशेष बलवान है और मस्तगी का पिघला कर उस से और रातीनज अर्थात् लाख व गोंद से चिपका सकता है और दुकह एक दाना है जैसे हब्बुलास अर्थात् अबीरा की बाली और उस के भीतर बहुत चेपदार शहद है और बाल की जड़ को दाग देने की यह रीति है कि पलक को बाहर की तरफ उलट कर बालों को उखाड़ डाले और एक औजार सुई के समान जो इस काम के लिये हुआ है उसको आग में लाल करले और बाल की जड़ को दाग दें अर्थात् जला दें और प्रत्येक समय २ बाल मुलायम न उखाड़े तथा जो एक ही बाल का उखाड़ कर दाग दें और जब फिर उसी जगह फिर दूसरा बाल उखाड़े और इसी तरह दाग देते रहें तो

बाहर निकाल लावे तब उसको असली बाल के साथ जैसा कि मालूम होचुका है चिपका दें परन्तु पहिले सूई के निकालने का छेद सलाई से कईबार मलें जिससे मिलजाय और परवाल उसमें ठहरा रहे और इस सीने को अरबी में नज्म कहते हैं (सूचना) जो बालकी जगह रेशम का पतला डोरा भी काममें लावें तो कुछ डर नहीं और इन बालों के सीने के विषय में किताब शरह असबाब के बनाने वालेने कहा है कि जो उचित हो तो परवाल को सुई के नाके में पिरोकर पलक के बाहर निकालले और यहां उचित होने का अर्थ यहहै कि परवाल बहुत छोटा नहीं। और पलक को उस समय काटना चाहिये कि जब परवाल बहुत हो और उसकी उत्तम रीति यह है कि बीमार लेटजाय और हकीम अपने बांये हाथ के अगूठे और तरजनी उगली के ऊपर के पलकको पकड़कर उसको थोडासा उठाले और सलाई का चौडा सिरा पलक की पीठपर रख कर दबावे जिससे पलक उलट जाय और तीन डोरे तीन पतली २ सूइयों में पिरोवे और उन सूइयों को पलक के भीतर से पलक की पीठकी तरफ से बाहर निकालें जिस जगह पर कि पलकका बीच समझ में आवे और जो डोरा के बदले पलकको औजारों से उठाले तो बहुत अच्छा है और जब पलक को चाहे डोरा से चाहे औजारों से उठाले तो पहिले यह अनुमान करलें कितना काटना योग्य है और जितनी जगह अनुमान में आवे सुइ और धागेसे उस जगह पर तीन चिन्ह करदें फिर कैंची से काटदें और इस बातकी विशेष सावधानी रक्खें कि पलक के सिवाय और कुछ न कटजाय और जब काट चुके तब तीन जगह सूईसे टांके लगाकर गांठ लगादें और पहिले बीचकी जगह को सी देना चाहिये फिर जरूर अजफर, मरहम अविषज में मिलाकर घाव पर लगावें और हकीम काटने के समय इस बातका बडा ध्यान रक्खे जिससे पलक के वह अजल न कटजाय जो पलक को झुकाते हैं इसी कारण से बहुधा कहा गया है कि इस काम पर बडे निपुण बुद्धिमान और क्रिया कुशल हकीम की आवश्यकताहै और पलक काटने की दूसरी विधि यह है कि आंखके पलकको दो उंगलियों या दो औजारों से थोडासा उठाले और लकड़ी की दो पट्टियां बहुत साफ और हलकी पलक के बराबर काटकर बनालें और पलकका जितना काटना अनुमान में आवे उस दोनों पट्टियों के बीच में दबाकर पट्टियों के दोनों सिरे एसे कसके बांध दें कि पलक की खाल भिचाव में आजाय यह बात इस लिये की जाती है कि पलक के उस भाग में पुष्टाई न पहुचे और वह खाल दस दिन में या जल्दी

बाहर निकाल लावे तब उसको असली बाल के साथ जैसा कि मालूम होचुका है चिपका दें परन्तु पहिले सूई के निकालने का छेद सलाई से कईबार मलें जिससे मिलजाय और परवाल उसमें ठहरा रहे और इस सीने को अरबी में नज्म कहते हैं (सूचना) जो बालकी जगह रेशम का पतला डोरा भी काममें लावें तो कुछ डर नहीं और इन बालों के सीने के विषय में किताब शरह असबाब के बनाने वालेने कहा है कि जो उचित हो तो परबाल को सुई के नाके में पिरो कर पलक के बाहर निकालले और यहां उचित होने का अर्थ यहहै कि परवाल बहुत छोटा नहीं। और पलक को उस समय काटना चाहिये कि जब परवाल बहुत हो और उसकी उत्तम रीति यह है कि बीमार लेटजाय और हकीम अपने बांये हाथ के अगूठे और तरजनी उंगली के ऊपर के पलकको पकड़कर उसको थोड़ासा उठाले और सलाई का चौड़ा सिरा पलक की पीठपर रख कर दबावे जिससे पलक उलट जाय और तीन डोरे तीन पतली २ सूइयों में पिरोवे और उन सूइयों को पलक के भीतर से पलक की पीठकी तरफ से बाहर निकालें जिस जगह पर कि पलकका बीच समझ में आवे और जो डोरा के बदले पलकको औजारों से उठाले तो बहुत अच्छा है और जब पलक को चाहै डोरा से चाहै औजारों से उठाले तो पहिले यह अनुमान करलें कितना काटना योग्य है और जितनी जगह अनुमान में आवे सुई और धागेसे उस जगह पर तीन चिन्ह करदें फिर कैंची से काटदें और इस बातकी विशेष सावधानी रक्खे कि पलक के सिवाय और कुछ न कटजाय और जब काट चुके तब तीन जगह सूईसे टांके लगाकर गांठ लगादें और पहिले बीचकी जगह को सी देना चाहिये फिर जरूर अजफर, मरहम अबियज में मिलाकर घाव पर लगावें और हकीम काटने के समय इस बातका बड़ा ध्यान रक्खे जिसमें पलक के वह अजल न कटजाय जो पलक को झुकाते हैं इसी कारण से बहुधा कहा गया है कि इस कामके बड़े निपुण बुद्धिमान और क्रिया कुशल हकीमकी आवश्यकताहै और पलक के काटने की दूसरी विधि यह है कि आंखके पलकको दो उंगलियों या दो औजारों से थोड़ासा उठाले और लाह की दो पट्टियां बहुत साफ और हलकी पलक के बराबर काटकर बनालें और पलकका जितना काटना अनुमान में आवे उस दोनों पट्टियों के बीच में दबाकर पट्टियों के दोनों सिरे ऐसे कसके बांध दें कि पलक की खाल भिचाव में आजाय। यह बात इस लिये की जाती है कि पलक के उस भाग में पुष्टाई न पहुंचे और वह खाल इस रीत से था कटजी

जो सब देह में होता तो सब देह के बालों को गिरा देता और कोई २ यह भी कहते हैं कि चाहे मवाद सब देह में हो परन्तु उसका असर पलक के सिवाय शरीर के अन्य अवयवों में प्रकट नहीं होता है इसलिये कि पलक नर्म और हल्के होने के कारण से मवाद का असर जल्दी ग्रहण करता है और उसका चिन्ह यह है कि दोषोंमें से एक की अधिकता का चिन्ह प्रकट हो और जलन और खुजली हो (इलाज) जैसा दोष हो उस के अनुसार मवाद को निकाले और प्रकृति की दुरुस्ती का उपाय करें फिर जो वस्तु कि पलक को जमा देती है सुर्मे की तरह लगावें जैसे लाजवर्द, सग अरमनी, छुआरे की गुठली जली हुई, कुन्दरु गोंद का काजल, किशूर सिनौबर अर्थात् लीक की छाल और बालछड़ । दूसरा यह कि पलक सींचने वाली शक्ति निर्बल होजाय और इस कारण से उस में पुष्टई न पहुचे और पलकों के बाल झड़ जांय और जब तक हेतु का उपाय न हो बाल कभी न जमें जैसे किसी वृक्ष में पानी न पहुंचे और उस का चिन्ह यह है कि गर्म सरसाम और प्रबल ज्वर के उत्पन्न हो । (इलाज) ऐसे उपाय करें कि जो सींचने वाली शक्ति को उभार दें और शरीर में बढ़ाने के लिये वे भोजन जिन से अच्छे दोष उत्पन्न होते हैं खवावें और न्हावें और मवाद के निकालने वाली सब वस्तुओं से बिलकुल सावधानी रक्खें और तरी बढ़ाने वाली चीजों की आवश्यकता रक्खें फिर ऐसी चीज जो आंसू न निकाले आंख में लगावें जिस से पलकों की जड़ में गर्मी पहुचे और पुष्टाई को ग्रहण कर सकें जैसे बासलीकून और कोहल रौशनाई । कोहल रौशनाई के बनाने की यह विधि है कि जला हुआ तांबा शादनज मगसूल प्रत्येक १७॥ माशे, मिरच, पीपल, केसर, इन्द्रायन का गूदा, प्रत्येक १॥। माशे, जंगार, एलवा कुन्द इरमनी प्रत्येक माशे तीन माशे, चांदी का मैल ७ माशे ये सब दश दवाई हैं इन्हें कूट छान कर महीन करलें । तीसरे यह कि उस जगह में तरी बढ़कर पलकों की जड़ को ढीला और सुस्त कर दे और छेदों को चौड़ा करदे इस कारण से बाल पलकों में न जम सकें और झड़ जांय और रूक के पाय जाने का चिन्ह उसका साक्षी है (इलाज) कफ के निकालने के लिये अयारजात और गोलियों दे बहुत परिश्रम करना, जागना कम खाना तथा खुश्की उत्पन्न करने वाली वस्तुओं का सेवन उचित है और जो दवा आंसू निकालने वाली है जैसे अहमरेदार और जंगार आंख में लगावें जिससे प्रधान अंग में से रतूबत ि[illegible] ि हो

जो सब देह में होता तो सब देह के बालों को गिरा देता और कोई २ यह भी कहते हैं कि चाहे मवाद सब देह में हो परन्तु उसका असर पलक के सिवाय शरीर के अन्य अवयवों में प्रकट नहीं होता है इसलिये कि पलक नर्म और हल्के होने के कारण से मवाद का असर जल्दी ग्रहण करता है और उसका चिन्ह यह है कि दोषोंमें से एक की अधिकता का चिन्ह प्रकट हो और जलन और खुजली हो (इलाज) जैसा दोष हो उस के अनुसार मवाद को निकाले और प्रकृति की दुरुस्ती का उपाय करें फिर जो वस्तु कि पलक को जमा देती है सुर्मे की तरह लगावें जैसे लाजवर्द, संग अरमनी, छुआरे की गुठली जली हुई, कुन्दरु गोंद का काजल, किश्रूर सिनोवर अर्थात् लीक की छाल और बालछड़ । दूसरा यह कि पलक खैंचने वाली शक्ति निर्बल होजाय और इस कारण से उस में पुष्टई न पहुचे और पलकों के बाल झड़ जाय और जब तक हेतु का उपाय न हो बाल कभी न जमें जैसे किसी वृक्ष में पानी न पहुचे और उस का चिन्ह यह है कि गर्म सरसाम और प्रबल ज्वर के उत्पन्न हो । (इलाज) ऐसे उपाय करें कि जो खींचने वाली शक्ति को उभार दें और शरीर में बढ़ाने के लिये वे भोजन जिन से अच्छे दोष उत्पन्न होते हैं खवावें और न्हावें और मवाद के निकालने वाली सब वस्तुओं से बिल्कुल सावधानी रक्खें और तरी बढ़ाने वाली चीजों की आवश्यकता रक्खें फिर ऐसी चीज जो आंख न निकाले आंख में लगावें जिस से पलकों की जड़ में गर्मी पहुचे और पुष्टाई को ग्रहण कर सके जैसे बासलीकून और कोहल रौशनाई । कोहल रौशनाई के बनाने की यह विधि है कि जला हुआ तांबा शादनज मगसूल प्रत्येक १७॥ माशे, मिरच, पीपल, केसर, इन्द्रायन का गूदा, प्रत्येक १॥। माशे, जगार, एलवा ग्रन्थ इरमनी प्रत्येक साढे तीन माशे, चांदी का मैल ७ माशे ये सब दश दवाई हैं इन्हें कूट छान कर महीन करलें । तीसरे यह कि उस जगह में तरी बढ़कर पलकों की जड़ का ढीला और सुस्त कर दे और छेदों को चौड़ा करदे इस कारण से बाल पलकों में न जम सकें और झड़ जांय और रूक के पाय जाने का चिन्ह उसका साक्षी है (इलाज) कफ के निकालने के लिये अयारजात और गोलियां दे बहुत परिश्रम करना, जागना कमखाना तथा खुश्की उत्पन्न करने वाली वस्तुओं का सेवन उचित है और जो दवा आंख निकालने वाली है जैसे अहमरेदार और अगार आंख में लगावें जिससे प्रधान अंग में से रतूबत [illegible] ... [illegible] शि कर्दे

के साथ प्रकट हो और उसके कारणसे आंखमें आंसू आजांय और इस प्रकार का रोग फैली खुजलीके नामसे विख्यातहै और बहुधा गर्मसुजा के उपरान्त उत्पन्न होताहै इसलिये उसके इलाज में सर्दी पहुंचानेकी अधिकताकीजाती है (इलाज) रग सराह्की फसद खोलें और पीलीहरड़के खिसांद तथा चीनी से प्रकृति को नर्म करें और देहके मवादके निकलनेके पीछे प्रधान अंगके मवादके निकालनेके लिये ज्योति बढाने वाला सुर्मा और शियाफ अहमरे लेपन और शियाफ अखजरे लेपन आंखमें लगावे और जो यह खुजली गाढी और पक्की हो और इस उपायसे अच्छी नहो तो उसका (इलाज) यहहै कि मवादके निकालनेके पीछे पलकके भीतर रोग की जगह पर नश्तरसे पछने लगावें और इस कारण से कि उसका मवाद बहुत पलकके गहराई में नहीं होताहै सो पछने गहरे न लगावें और केवल हलके २ पछने लाभदायक है और पछने लगाने के पीछे उस जगह को सलाई से खुजाना चाहिये जिससे बहुतसा खून निकल जाय और खुरखुरापन जातारहे और पलक का अंग जैसा कि असल में पतला था वैसा ही होजाय इसके उपरान्त गुलाब और पोस्तासा शियाफ उस जगहपर लगावें जिससे दर्द रुकजाय और पलक का चिपकना रहे और ऐसी खुजली में सदा न्हाना बहुत लाभ दायक है क्योंकि दोषके नष्ट करनेमें सहायता पहुंचाताहै अंग को चैतन्य करताहै जिससे उसका पूरा मवाद निकलजाय और दवा का असर जल्द ग्रहण करें और जबतक कि मादे को मुलायम करो और निकालनेमें और हलके और नर्म नष्ट करने वाली दवाओं से मवाद की जड़ उखड सके तो पछने लगाने और खुजानेसे अवश्य सावधानी करे और आ वश्यकताके समय विवशताहै और खुजाने की आज्ञा जो [illegible] के रोग में मुख्यहै जिसका मवाद झिल्ली के ऊपरी भागपर [illegible] और गहरा नहीं दूसरे यह कि पलकके भीत[illegible] परमाणुनाम छोटे २ दाने प्रकट होवें [illegible] माफ दे परमाणुओं में घुसजानेके कार[illegible] से कि इस प्रकार की खुजली दाने नाम हस्की हुआहै। इसका एक प्रकार आती है और उसका प्रकार यहहै कि [illegible] की सूरत बने और जब इस (इला[illegible]) में सुर्खी और आलस्य [illegible]

के साथ प्रकट हो और उसके कारणसे आंखमें आंसू आजांय और इस प्रकार का रोग फैली हुईखुजलीके नामसे विख्यातहै और बहुधा गर्मखुजा के उपरांत उत्पन्न होताहै इसलिये उसके इलाज में सर्दी पहुचानेकी अधिकताकीजाती है (इलाज) रग सराहकी फसद खोलें और पीळीहरडके सिसाद तथा चीनी से प्रकृति को नर्म करे और देहके मवादके निकलनेके पीछे प्रधान अगके मवादके निकालनेके लिये ज्योति बढाने वाला सुर्मा और शिपाफ अहमरे लैपन और शिर्याफअसजरेलैपन आंखमें लगावे और जो यह खुजली गाढी और पक्की हो और इस उपायसे अच्छी नहो तो उसका (इलाज) यहहै कि मवादके निकालनेके पीछ पलकके भीतर रोग की जगह पर नश्तरसे पछने लगावें और इस कारण से कि उसका मवाद बहुत पलकके गहराई में नहीं होताहै सो पछने गहरे न लगावें और केवल हलके २ पछने लाभदायक है और पछने लगाने के पीछे उस जगह को सलाई से खुजाना चाहिये जिससे बहुतसा खून निकल जाय और खुरखुरापन जातारहै और पलक का अग जैसा कि असल में पतला था वैसा ही होजाय इसके उपरान्त गुलाब और थोडासा शिर्या उस जगहपर लगावें जिससे दर्द रुकजाय और पलक का चिपकने न दे और ऐसी खुजली में सदा न्हाना बहुत लाभ दायक है क्योंकि दोषके नष्ट करनेमें सहायता पहुंचाता है अग को चैतन्य करताहै जिससे उसका पूरा मवाद निकलजाय और दवा का असर जल्द ग्रहण करें और जबतक कि माद्दे को मुलायम करने और निकालनेमें और हलके और नर्म नष्ट करने वाली दवाओ से मवाद की न्यूनता उत्पन्न न करें तो पछने लगाने और खुजानेसे अवश्य सावधानी करें और आवश्यकताके समय निकालता है और खुजाने की आशा जो ... के रोग में मुख्यहै जिसका मवाद झिल्ली के ऊपरी भागपर ... गहरा नहीं इससे यह कि पलकके भीतर ... और परमाणुनाक छोटे २ दाने मकड़ निकलें ... भाफ के परमाणुओं में पुष्टताईके कारण ... से कि इस प्रकार की खुजलीके दाने ... नाम हरकी हुआहै । इसक एक प्रकार ... आती है और इनका प्रकार यहहै कि ... से झिल्ली की सुर्ख रंगत और जब इस (इलाज) में सुर्खी और लालरंग ...

चलनी के हिलने से रोमांच चौड़े होजांय और पसीने आजांय तो उस समय एक साथ सर्द हवा ठंढा पानी पलकों में लगे जिससे भाफके परमाणु जो पतले और हलके होकर बाहर निकलना चाहते थे खालके नीचे रुकजांय और बाहर निकलने में रुके रहें और यह बात प्रगट है कि प्रत्यक्ष में ठंढ रोमांचों को बंद करदेती है। दूसरे यह कि नींदमें जागने के पीछे पलकमें बोझ और मोटापन मालूम हो और यह इस रीति से होता है कि जो भाफके परमाणु जागने के हलने चलने से पचजाया करते थे वेही नींद की दशा में न पचनेमे बहुत होजांय और सिरकी तरफ चढकर दिमाग में बंद होजांय मुख्यकर आंख की रगों में जो भाफ के परमाणुओं में गाढापन और रोमांचों में सुकड़न आजाती है। तीसरे यह कि खुजली का मवाद गाढापन करदे और यह इसतरह होता है कि उसके मवाद में से हलके और नर्म भाग जिनमें खारापन हो पचकर गाढे भाग जिनमें खारापन नहो शेष रहजांय। चौथे यह कि आंखकी सूजनका मवाद इसरोगका उत्पन्न करे क्योंकि उसके इलाजमें जो पलकके ऊपर ठंढे लेप लगाए जाते हैं वे मवाद में गाढापन और रोमांच में ठिठरन पैदा करते हैं (इलाज) पहले मवाद के पकानेवाले काढ़ों से मवाद को पकावे उसके पीछे अफतीमूनके काढे और काबली हरड से निकालें और बाबूना, अकलीलुल मलिक, बनफशा, और सितर्मी के पत्ते पानी में औटाकर उसकी भाफपर सिर झुकावे जिससे रोमांच खुलजांय और मवाद नर्म और पतला होकर सहजमें निकलजाय और मवादके निकलनेके पीछे आंखको हाथ से मलें और प्रगट है कि निस्संदेह पलकका मलना गर्मी के कारणसे रोमांच को खोलता है और उन भाफके परमाणुओं को जो पलकों में ठहरेहुए हैं नष्ट करदेता है इसी कारणसे जागने के पीछे जो आंखको मलते है तो हलकापन आजाता है और हमाउल अजफान (पलकोंका दुखना और लाल होजाना) का एक भेद है उसको यबूसतुलऐन अर्थात् आंखका सुजाना कहते हैं जैसा कि किताब शरह अस्वावके बनाने वालेने कहाहै जब कि खुजली बिना मवाद के होतो उसको यबूसतुलऐन कहते हैं और जब ऐसा होतो केवल तरी पहुंचाना ही गुणकारी है और मवादके निकालने की आवश्यकता नहीं और तरी पहुं चानेको लिये गर्म पानीमे निचोड कर और तर दवाओं को पानी में औटा कर उस गर्म पानीके तरडेदें और तर तेल सिरपर मलें जैसा कि पहले कह चुके हैं

चलनी के हिलने से रोमांच चौडे होजांय और पसीने आजांय तो उस समय एक साथ सर्द हवा ठंढा पानी पलकों में लगे जिससे भाफके परमाणु जो पतले और हलके होकर बाहर निकलना चाहते थे खालके नीचे रुकजांय और बाहर निकलने म रुके रहैं और यह बात प्रगट है कि परपक्ष में ठंढ रोमांचों को बंद करदेती है। दूसरे यह कि नींदमें जागने के पीछे पलकमें बोझ और मोटापन मालूम हो और यह इस रीति से होता है कि जो भाफके परमाणु जागने के हलने चलने से पचजाया करते थे वेही नींद की दशा में न पचनेसे बहुत होजांय और सिरकी तरफ चढकर दिमाग में बंद होजांय मुख्यकर जाड़े की रातों में जो भाफ के परमाणुओं में गाढापन और रोमांचों में सुकड़न आजाती है। तीसरे यह कि खुजली का मवाद गाढापन करदे और यह इसतरह होता है कि उसके मवाद में से हलके और नर्म भाग जिनमें खारापन हो पचकर गाढे भाग जिनमें खारापन नहो शेष रहजांय। चौथे यह कि आंखकी सूजनका मवाद इसरोगका उत्पन्न करे क्योंकि उसके इलाजमें जो पलकके ऊपर ठंढे लेप लगाए जाते हैं वे मवाद म गाढापन और रोमांच में ठिठरन पैदा करते हैं (इलाज) पहले मवाद के पकानेवाले काढों से मवाद को पकावे उसके पीछे अफतीमूनके काढे और कावली हरड से निकालें और बाबूना, अकलीलुल मलिक, बनफशा, और सितमी के पत्ते पानी में औटाकर उसकी भाफपर सिर झुकावे जिससे रोमांच खुलजांय और मवाद नर्म और पतला होकर सहजमें निकलजाय और मवादके निकलनेके पीछे आंखको हाथ से मलैं और प्रगट है कि निस्संदेह पलकका मलना गर्मी के कारणसे रोमांच को खोलता है और उन भाफके परमाणुओं को जो पलकों में ठहरेहुए हैं नष्ट करदेता है इसी कारणसे जागने के पीछे जो आंखको मलते है तो हलकापन आजाता है और हमाउल अज्फान (पलकोंका फूलना और लाल होजाना) का एक भेद है उसको धर्म्मलुलऐन अर्थात् आंखका सुजाना कहते हैं जैसा कि किताब शरह अस्वाबके बनाने वालेने कहाहै जब कि खुजली बिना मवाद के होतो उसको धर्म्मलुलऐन कहते हैं और जब ऐसा होतो केवल तरी पहुंचाना ही गुणकारी है और मवादके निकालने की आवश्यकता नहीं और तरी पहुंचानेके लिये गर्म पानीमें बिठार कर और तर दवाओं को पानी में जोश कर उस गर्म पानीके तरेडे दें और तर तेल सिरपर मलैं जैसा कि बहुधा कह चुके हैं

और अनिपज इकट्ठा करके आंखमें लगावे और इन शियाफोंको सौंफके पानी में पीसकर लगावें और इन सलाइयोंके इकट्ठा करने की इसलिये आज्ञा दी है कि अपनी असली दशापर आजाने से मवाद की तेजी को घटावें और उस को नष्ट भी करदें ॥

संतालीसवां प्रकरण ।

कमलुल अज्फान अर्थात् पलकों में जुंआं पडजाने का वर्णन

ये तीन प्रकार का होता है एक तो यह कि बहुत छोटा और सफेद हो और पलक के बालो की जड में दिखाई दें उनको अरबी में सीबां कहते हैं। दूसरे यह कि बडी हो और उनका रंग गेहूं वा धूलके रंग का सा हो उन को कमकाम कहते हैं और कोई कोई हकीम कमकाम उनको कहते हैं जिन के पांव बहुत हों और औरों को कम्ल कहते हैं परन्तु कमकाम और कम्ल में बहुत अन्तर है। तीसरे यह कि उसका मवाद अधिक और बहुत गाढा हो और उनके पांव दिखाई दें उसको अरबी में किर्दां कहते हैं। अभिप्राय यह है कि उसका मवाद कफ की सडी हुई रतूबत होती है कि प्रकृति उसको पकाने के पीछे खाल के चारों ओर और बालों की जडों में फेंक दिया करती है क्यों कि प्रकृति को उसकी दुर्गंधि और मैले पन से घृणा आती है और यह बात प्रकट है कि निस्सन्देह बालों की जड ऐसी जगह है कि जिस प्रकार से बाल पुष्टाई प्राप्त करते हैं उनको ग्रहण करने के लिए तत्पर रहती है और जानना चाहिये कि कफ के मवाद के सिवाय दूसरे दोष में यह प्रभाव नहीं है कि उसमें जूंआं उत्पन्न हो क्योंकि पित्त की गर्मी बहुत तेज है और उसका मवाद कडवा है और कडवापन जू की प्रकृति के विरुद्ध है और यही कारण है कि कडवी चीजें उसको मार डालती हैं और सौदा अर्थात् बादी अपनी प्रकृति से जीवन के विरुद्ध है क्यों कि यह सर्द और खुश्क है और [illegible] तरी जरूर है जिसको प्रकृति देना नहीं चाहती है ([illegible]) तरी चाहे फोक वाली और निकम्मी हो चाहे अच्छी हो जब स्वाभाविक वा कपरी गर्मी उनमें अपना काम करती है तो उस तरी में जीवन की शक्ति उत्पन्न होजाती है और ईश्वर की कृपा से उस में जीव आजाता है यह ईश्वर की पूर्ण कृपा का कारण है (इलाज) दस्तों से दूर मवाद से पवित्र करें और उसके पीछे अयारज फैकरा, हुब्बशोबाया और हब्बुबा की गोली से और उन वस्तुओं से जो अयारज फयकरा, फौंजी और शहद से बनाए जायें

और अफियून इकट्ठा करके आंखमें लगाव और इन शियाफोंको सीफके पानी में पीसकर लगावें और इन सलाइयोंके इकट्ठा करने की इसलिये आज्ञा दी है कि अपनी असली दशापर आजाने से मवाद की तेजी को घटावें और उस को नष्ट भी करदें ॥

सैंतालीसवां प्रकरण ।

कमलुल अज्फान अर्थात् पलकों में जुंआं पडजाने का वर्णन

ये तीन प्रकार का होता है एक तो यह कि बहुत छोटा और सफेद हो और पलक के बालो की जड में दिखाई दें उनको अरबी में सीबां कहते हैं। दूसरे यह कि बडी हो और उनका रंग गेहूं या धूलके रंग का सा हो उन को कमकाम कहते हैं और कोई कोई हकीम कमकाम उनको कहते हैं जिन के पांव बहुत हों और औरों को कम्ल कहते हैं परन्तु कमकाम और कम्ल में बहुत अन्तर है। तीसरे यह कि उसका मवाद अधिक और बहुत गाढा हो और उनके पांव दिखाई दें उसको अरबी में किर्दा कहते हैं। अभिप्राय यह है कि उसका मवाद कफ की सडी हुई रतूबत होती है कि प्रकृति उसको पकाने के पीछे खाल के चारों ओर और बालों की जडों में फेंक दिया करती है क्यों कि प्रकृति को उसकी दुर्गंधि और मैले पन से घृणा आती है और यह बात प्रकट है कि निस्सन्देह बालों की जड ऐसी जगह है कि जिस पासों से बाल पुष्टाई प्राप्त करते हैं उनको ग्रहण करने के लिये तत्पर रहती है और जानना चाहिये कि कफ के मवाद के सिवाय दूसरे दोष में यह प्रभाव नहीं है कि उसमें जूआं उत्पन्न हों क्योंकि पित्त की गर्मी बहुत तेज है और उसका मवाद कडवा है और कडवापन जूं की प्रकृति के विरुद्ध है और यही कारण है कि कडवी चीजें उसको मार डालती हैं और सौदा अर्थात् बादी अपनी प्रकृति से जीवन के विरुद्ध है क्यों कि यह सर्द और खुश्क है और रुधिर ऐसी वस्तु है जिसको प्रकृति देना नहीं चाहती है (गुनना) तरी चाहे फोक वाली और निकम्मी हो चाहे अच्छी हो जब स्वाभाविक या ऊपरी गर्मी उसमें अपना काम करती है तो उस तरी में जीवन की शक्ति उत्पन्न होजाती है और ईश्वर की कृपा से उस में जीव आजाता है यह ईश्वर की पूर्ण कृपा का कारण है (इलाज) दस्त से दुष्ट मवाद से पवित्र करे और उसके पीछे अयारज फैकरा, हुब्बशीयारा और कदुवा की गोली से और उन नुस्खों से जो अयारज फैकरा, मांजी और शहद ॥ बनाय जावें

होती है और उसके लिये एक झिल्ली थैली की तरहकी है (इलाज) शरीर के मवादके निकालने के पीछे नश्तर का प्रयोग करे और इसकी विधि यह है कि पलक की खालको धीरेसे चौड़ाई में चीरदे और सावधान रहे कि नश्तर का सिरा रसौलीकी झिल्लीमें न पहुंचे और इसबातका यत्न करे कि रसौली अपनी झिल्ली सहित ज्योंकी त्यों निकल आवे और जिसरोगी की आंखमें बाकी रह जायतो तेज दवा औरगों का घी उसपर लगावे जिससे सबकी सबबाहर निकल आवे जो रसौलीकी झिल्ली घायल होकर उसमें से पीप निकल जाय तो इस दशामें इलाज कठिन होजाता है और रसौली फिर दुबारा निकल आती है (सूचना) मस्सा पित्ती और रसौली एक ही अंगसे सम्बन्ध नहीं रखते जैसा किताब के अंतमें उनरोगों का वर्णन जो किसी एकही अंग से सम्बन्ध नहीं रखते हैं लिखा जायगा परन्तु हमने इसजगह में भी इस लिये वर्णन कर दिया है कि जब यह रोग इसजगह उत्पन्न होते हैं तब कोई उपाय और प्रकार पर किये जाते हैं और यही मुख्य है जैसा कि प्रकट है।

उनसठवां प्रकरण।

(पलक के नीले और हरेरंगका वर्णन)

यह घावके कारणसे पलकके ऊपर उत्पन्न होजाताहै (इलाज) यद्यपि घाव बाकी हो और कोई काम बाजन न होतो फस्द खोलें और दस्तावर दवाई दें और चंदन और मुर्दासिंग को गुलाब में पीसकर लेपकरें जिससे घाव अच्छा होजाय उसके पीछेसगफिलफिल घिसकर लेपकरें और फोगी ठीकरी आगमें गिसकर लगाना भी लाभदायक है यह नीलपन का दूर करदती है मूली के बीजका पानीमें घिस कर लेपकरनाभी नीलेपन को दूरकरताहै और जो दवा नीलापन और हरेपन को दूरकरती है और इसकाम में मुख्य है व किताब के अंत में लिखी हैं ।

साठवां प्रकरण।

गर्ब अर्थात् नासूर का वर्णन।

जानना चाहिये कि जब आंखके कोए में जो नाक की तरफ है सूजन उत्पन्न होकर उसके पीछे नासूर होजाय उसको गर्ब कहते हैं और जो मवा-द कि उस जगह में इकट्ठा होजाता है उसकी दशाएं भिन्न २ होती हैं कभी वो नाक की तरफ फूट निकलता है और उस मार्ग से आ और ... बाहर

होती है और उसके लिये एक झिल्ली थैली की सूरतमें है (इलाज) शरीर के मवादके निकालने के पीछे नश्तर का प्रयोग करे और इसकी विधि यह है कि पलक की खालको धीरेसे चौड़ाई में चीरदे और सावधान रहे कि नश्तर का सिरा रसौलीकी झिल्लीमें न पहुंचे और इसबातका यत्न करे कि रसौली अपनी झिल्ली सहित ज्योंकी त्यों निकल आवे और जिसरोगी की आंखमें बाकी रह जायतो तेज दवा औरगौ का घी उसपर लगावे जिससे सबकी सबबाहर निकल आवे जो रसौलीकी झिल्ली घायल होकर उसमें से पीप निकल जाय तो इस दशामें इलाज कठिन होजाता है और रसौली फिर दुबारा निकल आती है (सूचना) मस्सा पित्ती और रसौली एक ही अगसे सम्बन्ध नहीं रखत जैसा किताब के अतमें उनरोगों का वर्णन जो किसी एकही अग से सम्बन्ध नहीं रखते हैं लिखा जायगा परन्तु हमने इसजगह में भी इस लिये वर्णन कर दिया है कि जब यह रोग इसजगह उत्पन्न होते हैं तब कोई उपाय और प्रकार पर किये जाते हैं और यही मुख्य है जैसा कि प्रकट है।

उनसठवां प्रकरण।

(पलक के नीले और हरेरंगका वर्णन)

यह घावके कारणसे पलकके ऊपर उत्पन्न होजाताहै (इलाज) यद्यपि घाव बाकी हो और कोई काम घातक न होतो फस्द खोलें और दस्तावर दवाई दें और चदन और मुर्दासिंग को गुलाब में पीसकर लगावें जिससे घाव अच्छा होजाय उसके पीछेसगफिलफिल घिसकर लगावें और फोरी ठीकरी आग में गिरकर लगाना भी लाभदायक है यह नीलपन का दूर करती है मूली के बीजका पानीमें घिसकर लगाना भी नीलेरंग को दूरकरताहै और जो दवा नीलापन और हरेपन को दूरकरती है और इसकाम में मुख्य हैं व किताब के अत में लिखी हैं।

साठवां प्रकरण।

गर्ब अर्थात् नासूर का वर्णन।

जानना चाहिये कि जब आंखके कोए में जो नाक की तरफ है सूजन उत्पन्न होकर उसके पीछे नासूर होजाय उसको गर्ब कहते हैं और जो मवाद कि उस जगह में इकट्ठा होजाता है उसकी दशाएँ भिन्न २ होती हैं कभी वह नाक की तरफ फूट निकलता है और उस मार्ग से जो आंख [illegible]

होती है और उसके लिये एक झिल्ली थैली की सूरतकी है (इलाज) शरीर के मवादके निकालने के पीछे नश्तर का प्रयोग करे और इसकी विधि यह है कि पलक की खालको धीरेसे चौडाई में चीरदे और सावधान रहे कि नश्तर का सिरा रसौलीकी झिल्लीमें न पहुंचे और इसबातका यत्न करें कि रसौली अपनी झिल्ली सहित ज्योंकी त्यों निकल आवे और जिसरोगी की आंखमे बाकी रह जायतो तेज दवा औरगौ का घी उसपर लगावे जिससे सबकी सब बाहर निकल आवे जो रसौलीकी झिल्ली घायल होकर उसमें से पीप निकल जाय तो इस-दशामें इलाज कठिन होजाता है और रसौली फिर दुबारा निकल आती है (सूचना) मस्सा पित्ती और रसौली एक ही अगसे सम्बन्ध नहीं रखते जैसा किताब के अतमें उनरोगों का वर्णन जो किसी एकही अग से सम्बन्ध नहीं रखते हैं लिखा जायगा परन्तु हमने इसजगह में भी इस लिये वर्णन कर दिया है कि जब यह रोग इसजगह उत्पन्न होते हैं तब कोई उपाय और प्रकार पर किये जाते हैं और यही मुख्य है जैसा कि प्रकट है ।

उनसठवां प्रकरण ।

(पलक के नीले और हरेरंगका वर्णन)

यह घावके कारणसे पलकके ऊपर उत्पन्न होजाताहै (इलाज) यद्यपि घाव बाकी हो और कोई काम वर्जित न होतो फस्द खोलें और दस्तावर दवाई दें और चदन और मुर्दासिंग को गुलाब में पीसकर लेपकरें जिससे घाव अच्छा होजाय उसके पीछेइसगफिलफिल घिसकर लेपकरें और कोरी ठीकरी आपस में घिसकर लगाना भी लाभदायक है यह नीलेपन को दूर करदेती है मुली के बीजका पानीमें रिगड कर लेपकरनाभी नीलेरंग को दूरकरताहै और जो दवा नीलापन और हरेपन को दूरकरती है और इसकाम में मुख्य है वे किताब के अत में लिखी हैं ।

साठवां प्रकरण ।

गर्ब अर्थात् नासूर का वर्णन ।

जानना चाहिये कि जब आंखके कोए में जो नाक की तरफ है सूजन उत्पन्न होकर उसके पीछे नासूर होजाय उसको गर्ब कहते हैं और जो मवा द कि उस जगह में इकट्ठा होजाता है उसकी दशाएं भिन्न २ होती हैं कभी तो नाक की तरफ फूट निकलता है और उस मार्ग से जो आंख और नाक

होती है और उसके लिये एक झिल्ली थैली की सूरतकी है (इलाज) शरीर के मवादके निकालने के पीछे नश्तर का प्रयोग करे और इसकी विधि यह है कि पलक की खालको धीरेसे चौडाई में चीरदे और सावधान रहे कि नश्तर का सिरा रसौलीकी झिल्लीमें न पहुचे और इसबातका यत्न करें कि रसौली अपनी झिल्ली सहित ज्योंकी त्यों निकल आवे और जिसरोगी की आंखम बाकी रह जायतो तेज दवा औरगौ का घी उसपर लगावे जिससे सबकी सबबाहर निकल आवे जो रसौलीकी झिल्ली घायल होकर उसमें से पीप निकल जाय तो इस दशामें इलाज कठिन होजाता है और रसौली फिर दुबारा निकल आती है (सूचना) मस्सा पित्ती और रसौली एक ही अगसे सम्बन्ध नहीं रखते जैसा किताब के अतमें उनरोगों का वर्णन जो किसी एकही अग से सम्बन्ध नहीं रखते हैं लिखा जायगा परन्तु हमने इसजगह में भी इस लिये वर्णन कर दिया है कि जब यह रोग इसजगह उत्पन्न होते हैं तब कोई उपाय और प्रकार पर किये जाते हैं और यही मुख्य है जैसा कि प्रकट है ।

उनसटवां प्रकरण ।

(पलक के नीले और हरेरंगका वर्णन)

यह घावके कारणसे पलकके ऊपर उत्पन्न होजाताहै (इलाज) यद्यपि घाव बाकी हो और कोई काम वर्जित न होतो फस्द खोलें और दस्तावर दवाइ दें और चदन और मुर्दासिंग को गुलाब में पीसकर लेपकरें जिससे घाव अच्छा होजाय उसके पीछेसगफिलफिल घिसकर लेपकरें और कोगी ठीकरी आपस में घिसकर लगाना भी लाभदायक है यह नीलेपन को दूर करदेती है मूली के बीजका पानीमें रिगड कर लेपकरनाभी नीलेरग को दूरकरताहै और जो दवा नीलापन और हरेपन को दूरकरती है और इसकाम में मुख्य है वे किताब के अत में लिखी है ।

साठवां प्रकरण ।

गर्ब अर्थात् नासूर का वर्णन ।

जानना चाहिये कि जब आंखके कोए में जो नाक की तरफ है सूजन उत्पन्न होकर उसके पीछे नासूर होजाय उसको गर्ब कहते हैं और जो मवा है कि उस जगह में इक्ट्ठा होजाता है उसकी दशाएं भिन्न २ होती हैं कभी तो नाक की तरफ फूट निकलता है और उस मार्ग से जो आख और नाक

तरह पर कि दागदें उसके पीछे सफेदी का मरहम लगावें जिससे घाव को भर लावे और दर्द को रोक दे। शियाफ गर्व के बनाने की यह विधि है कि एलवा, कुन्दरु गोंद, अजरूत, दम्मुल असवैन, अनार के फूल, सुर्मा, फिटकरी, सब एक एक भाग, जगार चौथाई भाग इन सातों दवाओं को कूट छानकर शियाफ अर्थात् सलाई बना लेवें और आवश्यकता के समय पानी में घोल कर तीन बूंदें टपकावें। थोडी २ देर पीछे इसी तरह टपकाते रहें यहां तक कि लाभ प्राप्तहो (सूचना) जबतक कि उक्त सूजनमें मुख न हुआ होतो मामीसा, केसर, मुर्र, ऐलवा, जली हुई सीपी इनमें से जो मिलजांय सबको तलशयून के पानी में या ताजी हरी कासनीके पानीमें लेपकरें और हकीम लोग कहतेहैं कि उर्द की यह प्रकृतिहै कि जो उसको चबाकर नासूर पर रखदें तो उसको खो देता है और इस (इलाज) से यह लाभहै कि यह सूजन को खो देताहै और जो न हटे तो तेज दवा पीसकर लेपकरें जैसे मटर कूटकर और शहदमें मिलाकर अथवा कुन्दरुगोंद कबूतर की बीटमें मिलाकर अथवा फिटकरी पीसकर अथवा तुकबीनज को सिर्केमें घिसकर लगावें। इनका यह लाभहै कि मवाद को पकाकर खाल को तोड देतेहैं और हड्डीको सडने नहीं देतेहैं और जब सूजन पक जाय तो बूल और सूखी मोलसरी पीसकर या अन्य ऐसीही वस्तु नासूरके छेदमें भरदे जिससे उसको सुखादे और जो जगार को पीसकर और बत्तीमें लगाकर उसमें रखदें तो लाभदायक है। यद्यपि यह दवा प्रथम जला देतीहै और जलन पैदा करतीहै परन्तु जब कई बार लगावें और उनको रोगी सहजाय तो हानि पहुचातीहै। और सीप, एलवा और बूल इन तीनों को मिलाकर पीसलें और उसमें मुख होनेसे पहले और पीछे भी उनका लेप करना लाभदायकहै और तुलसी के पत्तेको पानीमें मिलाकर बत्ती बनाकर उसमें रखदें तो बहुत लाभदायक हो और सूखहुए सिमाक का पानी उसमें टपकाना लाभदायकहै और सबसे अच्छी यहहै कि जब दवा बत्ती पर लगाकर उसमें रखना चाहें तो पहले उसको भीचकर दबावें जिस से जो उसमें मवादहो निकल आवे अगूर की और अजीर्ण करनेवाली शराब से धोकर नासूर में दवा रक्खें और जो उसमें मवाद जमा और न निकलेतो दो तीन दिन ठहरजाय जिससे इकट्ठा होजाय पीछे भीच कर धोडाले और दवा रखदें जब नासूरका मुख बंद होजाय और पीब न निकले तो कनूचा के बीजको कूटकर गेंहू हुए आटे में मिलावे या रूई के हमें

तरह पर कि दागदें उसके पीछे सफेदी का मरहम लगावें जिससे घाव को भर लावे और दर्द को रोक दे। शियाफ गर्व के बनाने की यह विधि है कि एलवा, कुन्दरु गोंद, अनजरूत, दम्मुल अखवैन, अनार के फूल, सुर्मा, फिटकरी, सब एक एक भाग, जगार चौथाई भाग इन सातों दवाओं को कूट छानकर शियाफ अर्थात् सलाई बना लेवें और आवश्यकता के समय पानी में घोल कर तीन बूंदें टपकावें। थोड़ी २ देर पीछे इसी तरह टपकाते रहें यहां तक कि लाभ माप्तहो (सूचना) जबतक कि उक्त सूजनमें सुख न हुआ होतो मामीसा,केसर, सुर्रे, एलवा, जली हुई सीपी इनमें से जो मिलजाय सबको तलशफून के पानी में या ताजी हरी कासनीके पानीमें लेपकरें और हकीम लोग कहतेहैं कि उर्द की यह प्रकृतिहै कि जो उसको चबाकर नासूर पर रखदें तो उसको खो देता है और इस (इलाज) से यह लाभहै कि यह सूजन को खो देताहै और जो न हटे तो तेज दवा पीसकर लेपकरें जैसे मटर कूटकर और शहदमें मिलाकर अथवा कुन्दरुगोंद कबूतर की बीटमें मिलाकर अथवा फिटकरी पीसकर अथवा तुकबीनज को सिर्केमें घिसकर लगावें। इनका यह लाभहै कि मवाद को पकाकर खाल को तोड़ देतेहैं और हड्डीको सड़ने नहीं देतेहैं और जब सूजन पक जाय तो बूल और सूखी मौलसरी घिसकर या अन्य ऐसीही वस्तु नासूरके छेदमें भरदे जिससे उसको सुखादे और जो जगार को पीसकर और बत्तीमें लगाकर उसमें रखदें तो लाभदायक है। यद्यपि यह दवा प्रथम जला देतीहै और जलन पैदा करतीहै परन्तु जब कई बार लगावें और उनको रोगी सहजाय तो हानि पहुचातीहै। और सीप, एलवा और बूल इन तीनों को मिलाकर पीसलें और उसमें सुख होनेसे पहले और पीछे भी उनका लेप करना लाभदायकहै और तुलसी के पत्तेको पानीमें मिलाकर बत्ती बनाकर उसमें रखदें तो बहुत लाभदायक हो और सूखदुन सिमाक का पानी उसमें टपकाना लाभदायकहै और सबसे अच्छी यहहै कि जब दवा बत्ती पर लगाकर उसमें रखना चाहें तो पहले उसको भींचकर दबावें जिस से जो उसमें मवादहो निकल आवे अंगूर की और अजीर्ण करनेवाली शराब से धोकर नासूर में दवा रक्खें और जो उसमें मवाद जमा और न निकलेतो दो तीन दिन ठहरजाय जिससे इकट्ठा होजाय पीछे भींच-कर धोडाले और दवा रखदें जब नासूरका मुख बंद होजाय और पीब न निकले तो मनूषा के बीजको कूटकर गेंद हुए आटे में मिलावे वा रुई के इसमें

बी कीकड़ा सब ३॥ माशे, सोंठ १॥। माश, कपूर ३॥ रत्ती, कस्तूरी २ रत्ती, लौंग एक माशे, यह सब १९ दवा हैं इनको कूटछानकर मैदाके समान पीसले

बासठवां प्रकर्ण ।

गुद्दा अर्थात् आंख के रोगों में कड़े मांस के उत्पन्न होजाने का वर्णन ।

जब यह आंख के कोये में उत्पन्न होजाता है तब आंख के उस कोएका जो नाक की तरफ है मांस विशेष बढ़जाता है इसी को गुद्दा कहते हैं और इस से यह हानि है कि आंख के जो फोक आंसू और गीढ़ होकर निकलते हैं उसको कोए में रोक रक्खे और इस कारण से नासूर उत्पन्न होजाता है और कभी बहुत बढ़जाने से आंख की दृष्टि को रोकता है (इलाज) सरीरमें जो विशेप दोपहै उसको निकाले पीछे मरहम जगार या शियाफ जगार उसपर लगावें फिर जो अच्छा होजायतो ठीक है। नहींतो आंख के नासूने की तरह उस को काट डाले और जब विशेष मांस कटजाय और कोया अपनी असली दशा पर आजाय तो यह चिन्ता न करें कि जड़ से कटे जिससे आंसू हर समय आंख में से न निकलने लगे और सबसे अच्छा उपाय यह है कि काटने के पीछे बारूद अजफर उसपर बुरकदवे जिससे जो बाकी रहजाय उसको भी खाजाय और काटन के कारण से जो कष्ट पहुंचा हो उसको दूर करने के लिये अंडे की जरदी गुलरोगन में मिलाकर लेप करे और जख्म भरने के लिये मरहम लगावें। शियाफ जिन्गार के बनाने की विधि यह है कि ममग अरबी, राग का सफेदा, जगार प्रत्येक ७ माशे, इन तीनों दवाओं को पीसकर तुबरी में सानले और सलाई बनाकर काम में लावे ॥

तीसरा अध्याय ।

कर्ण रोगों का वर्णन

यह एक नर्म हड्डी का अंगहै जो मांसके और ज्ञानेन्द्रियों के पट्ठों मिलकर बना हुआ है उस का लाभ यह है कि हवा लहरें मारती [illegible] उस में इकट्ठी होकर इजमहजरी (वह हड्डी जिसमें कान का छेद है) के छेद में प्रवेश हो और जब उस ज्ञानेन्द्रिय के पट्ठों कि जो कान के छेद में बिछा हुआ है जिनमें और ज्ञान वाली शक्ति रहती है जाग [illegible] का ज्ञान प्राप्त होता है और इस अध्याय में आठ म[illegible] प्रकरण

वी कीकड़ा सब ३॥ माशे, सोंठ १॥। माशा, कपूर ३॥ रत्ती, कस्तूरी ३ रत्ती, लौंग एक माशे, यह सब १९ दवा हैं इनको कूटछानकर मैदाके समान पीसले

बासठवां प्रकर्ण ।

गुद्दा अर्थात् आंख के रोगों में कड़े मांस के उत्पन्न होजाने का वर्णन ।

जब यह आंख के कोये में उत्पन्न होजाता है तब आंख के उस कोएका जो नाक की तरफ है मांस विशेष बढ़जाता है इसी को गुद्दा कहते हैं और इस से यह हानि है कि आंख के जो फोक आंसू और गीढ़ होकर निकलते हैं उसको कोए में रोक रक्खे और इस कारण से नासूर उत्पन्न होजाता है और कभी बहुत बढ़जाने से आंख की दृष्टि को रोकता है (इलाज) शरीरमें जो विशेष दोषहै उसको निकाले पीछे मरहम जगार या शियाफ जगार उसपर लगावें फिर जो अच्छा होजायतो ठीक है। नहींतो आंख के नाखूने की तरह उस को काट डाले और जब विशेष मांस कटजाय और कोया अपनी असली दशा पर आजाय तो यह चिन्ता न करें कि जड़ से कटे जिससे आंसू हर समय आंख में से न निकलने लगे और सबसे अच्छा उपाय यह है कि काटने के पीछे बारूद अजफ़र उसपर बुरकदवे जिससे जो बाकी रहजाय उसको भी खाजाय और काटने के कारण से जो कष्ट पहुंचे तो उसको दूर करने के लिये अंडे की जरदी गुलरोगन में मिलाकर लेप करे और जख्म भरने के लिये मरहम लगावे। शियाफ जिन्गार के बनाने की विधि यह है कि समग अरबी, रांग का सफ़ेदा, जंगार प्रत्येक ७ माशे, इन तीनों दवाओं को पीसकर तुर्शी में सानले और सलाई बनाकर काम में लावे ॥

तीसरा अध्याय ।

कर्ण रोगों का वर्णन

यह एक नर्म हड्डी का अंगहै जो मांसके और ज्ञानेन्द्रियों के पट्ठों मिलकर बना हुआ है इस का लाभ यह है कि हवा लहरें मारती हुई उस में इकट्ठी होकर इजमहजरी (वह हड्डी जिसमें कान का छेद है) के छेद में प्रवेश होवे और जब उस ज्ञानेन्द्रिय के पठ्ठे में कि जो कान के छेद में बिछा हुआ है जिसमें और ज्ञान वाली शक्ति रहती है जाए [illegible] का ज्ञान प्राप्त होता है और इस अध्याय में आठ प्र[illegible] एक रोग

इस कारण से दर्द विशेष होजाता है और दूध में यह बात नहीं है क्योंकि उस के कान को धोकर साफ कर देता है और दूध तेल की अपेक्षा दर्द को बहुत रोकता है क्योंकि अंग को बहुत नर्म करता है। दूसरे यह कि गर्मी के दिनों में जब चलने का काम पडे और इस कारण से दिमाग की तरी में गर्मी आकर उससे भाफ उठे और जब उस भाफमें से गर्म भाग अलग होजातेहै तब परिमाणुओं से हवा बनकर कानमें ठहरजातीहै और उसका यह चिन्ह है कि बीमारके दोनों कान दोनों आंख और मुख में गर्मी और जलन मालूम होती है नथने सूखजाते हैं बेचैनी घबराहट और प्यास उत्पन्न होजाती है और जब ठंडे पानीसे कुल्ले करने पर यह चिन्ह हलके पड जाते हैं और जिसरोग का कारण आमाशयमें होताहै वह इससे विपरीत होताहै कि जबतक ठंडा पानी न पियाजाय कुछ शांति नहीं मालूम होतीहै इस प्रकार के रोगमें कुल्ले करनेसे आराम इस लिये प्राप्त होता है कि उस में गर्मी केवल सिरके अंगों में ही रुकी हुई हैं और पहले से गर्म हवाएँ लगती उसके साक्षीहै (इलाज) गुलरोगनको तिगुनेसिर्केमें पकाकर कानमें टपकावें और कपडों को ठंडे करके कानपर रक्खें और दिमागको सर्दी और तरी पहुंचानेमें परिश्रम करें। अर्थात् उन ठंडे तेल और ऐसेही अन्य वस्तुओं का प्रयोग करै जो कि दाहयुक्त सिरके रोगोंमें लिखीगईहैं तीसरे यह कि गर्म पानी वा गर्म सोतों का पानी कान में लगा कर गर्म हवाके उत्पन्न होनेका कारण होजाय और इसका कारण क्या है कि उन पानियों के कानमें गिरने से वा पानियों में गोते लगाने से वादी उत्पन्न होती है तो इसका ज्यों का त्यों वही कारण है जो समाइम अर्थात् लूओं के पहुंचने में वर्णन कियाहै मुख्य करके गर्म सोतों का पानी जिनको अर्बीमें मिआहहुम्माद कहतेहैं जैसे गंधकके सोते का पानी या खारी सोतका पानी व नमक के सोतका पानी सिरको अधिक गर्म करता है और गर्मीका काम वादी के उत्पन्न करने में उसकी सहायता करता है और उसका चिन्ह यह है कि कारणका पहले होना साक्षी हो और सिर हलका हो कानों और सिर में विशेष गर्मी हो और उसके मध्य और अन्तमें दर्द मालूम हो (सूचना) सिरका हलका होना ऐसा चिन्ह है जो वादी के सब रोगों में पायाजाता है (इलाज) जो आवश्यकता मालूमहो तो मवादके फेरदेने और नीचे उतार लेनेके लिये फस्द खोलें और पिंडलियों को बांधें और पांवके तलुए मलें और भाफके हटाने के लिये ठंडे तेल जैसे बनफशा का तेल, नीलो

इस कारण से दर्द विशेष होजाता है और दूध में यह बात नहीं है क्योंकि उस के कान को धोकर साफ कर देता है और दूध तेल की अपेक्षा दर्द को बहुत रोकता है क्योंकि अंग को बहुत नर्म करता है। दूसरे यह कि गर्मी के दिनों में जब चलने का काम पड़े और इस कारण से दिमाग की तरी में गर्मी आकर उससे भाफ उठे और जब उस भाफमें से गर्म भाग अलग होजातेहैं तब परिमाणुओं से हवा बनकर कानमें ठहरजातीहै और उसका यह चिन्ह है कि बीमारके दोनों कान दोनों आंख और मुख में गर्मी और जलन मालूम होती है नथने सूखजाते हैं बेचैनी घबराहट और प्यास उत्पन्न होजाती है और जब ठंडे पानीसे कुल्ले करने पर यह चिन्ह हलके पड़ जाते हैं और जिसरोग का कारण आमाशयमें होताहै वह इससे विपरीत होताहै कि जबतक ठंडा पानी न पियाजाय कुछ शांति नहीं मालूम होतीहै इस प्रकार के रोगमें कुल्ले करनेसे आराम इस लिये प्राप्त होता है कि उस में गर्मी केवल सिरके अंगों में ही रुकी हुई हैं और पहले से गर्म हवाएं लगनी उसके साक्षीहैं (इलाज) गुलरोगनको सिगुनेसिरकेमें पकाकर कानमें टपकावें और कपड़ों को ठंडे करके कानपर रखदें और दिमागको सर्दी और तरी पहुंचानेमें परिश्रम करें। अर्थात् उन तरेड़े तेल और ऐसेही अन्य वस्तुओं का प्रयोग करै जो कि दाहयुक्त सिरके रोगोंमें लिखीगईहैं तीसरे यह कि गर्म पानी या गर्म सोतों का पानी कान में लगा कर गर्म हवाके उत्पन्न होनेका कारण होजाय और इसका कारण क्या है कि उन पानियों के कानमें गिरने से या पानियों में गोते लगाने से वादी उत्पन्न होती है तो इसका ज्यों का त्यों वही कारण है जो समाइम अर्थात् कूओं के पहुंचन में वर्णन कियाहै मुख्य करके गर्म सोतों का पानी जिनको अर्बीमें मिआहहुम्माद कहतेहैं जैसे गन्धकके सोते का पानी या खारी सोतका पानी व नमक के सोतका पानी सिरको अधिक गर्म करता है और गर्मीका काम वादी के उत्पन्न करने में उसकी सहायता करता है और उसका चिन्ह यह है कि कारणका पहले होना साक्षी हो और फिर हलका हो कानों और सिर में विशेष गर्मी हो और उसके मध्य और अन्तमें दर्द मालूम हो (सूचना) सिरका हलका होना ऐसा चिन्ह है जो वादी के सब रोगों में पायाजाता है (इलाज) जो आवश्यकता मालूमहो तो मवादके फेरदेने और शीघ्र उतार लेनेके लिये फस्द खोल और पिंडलियों को बांधें और पांवके तलुए मले और भाफके हटाने के लिये ठंडे तेल जैसे बनफशा का तेल, नीलो

जाय फिर उनभाफ के परमाणुओं मे सर्दरिहा अर्थात् ठढी हवा बनजाय विशेष करके जो वे भाफ के परिमाणु अपनी प्रकृति म ठढी हो जैसे ठढी प्रकृति वालों के अवसरे हुआ करते हैं और वहा कान की तरफ आकर कष्ट उत्पन्न करते हैं उसका चिन्ह यह है कि उससे पहले ठढी हवा पहुची होगी और बीमार को अपने कानमें हवा का सा लगना मालूम हो और इस रोग में दर्द उस खिंचाव के समान नहीं होता है जो अग को कठोरता से चारों तरफ खींचता है जैसा कि रिहा गर्म हलकी रिहा से खिंचाव होताहै इसलिये कि उनकी अधिकता अग की गहराई से विशेष होती है किन्तु इस प्रकार के रोग में उस प्रकार का दर्द होता है कि जैसे कोई चीज कान में जोर से घुसती है और उस के भीतर जाने से कुछ दर्द खिंचाव के साथ उत्पन्न होता है (इलाज) दर्द के कम करने के लिये गर्म तेल सिर पर मलें और कान में टपकावें जिस से गर्मी पहुचे और सब्त सपस्त, बाबूना, अकलीकुल मलिक अनार के पत्त, दोनामरुवा, नम्माम कैसून, पानी में औटाकर तरेडा देवे और न्हाने की जगह में गर्म सेंक ऊपर कान रक्खे और सलगम को पानीमें औटाकर उसका भाफ कानमें पहुचा वे और राईकूटकर गर्म तेलोंमें मिलाकर उसकी बत्ती बनाकर कानमें रक्खें और तरेडों की दवाओं से वा पुरानी रुईको मीठे जैतून के तेलमें भिगोकर उससे गुन गुना सिकाव करें। चौथे यह कि ठढा पानी सिर पर डाल या उसमें डुबकी लगावे जैसे ठढी हवाके लगने में वर्णन किया गयाहै ठढी और रिहाके उत्पन्न होनेका कारणहो और उस कारणसे कानमें दर्द उत्पन्नहो और कारण का प्रकट होना उसका चिन्ह है और सिरके पीछेकी तरफ में ऐसा दर्द हो कि सिरका फिराना कठिन होजाय (इलाज) गर्म तेल सिरपर विशेष करके सिर के पीछे के भागपर मले और कान में भी डाले। पांचवें यहहै कि कानमें सर्द दवाओंके लगाने से रिहा उत्पन्नहो और कारण का पहले होजाना उसका चिन्ह है (इलाज) जो दवा उक्त दवाओं के विरुद्ध हो लगावे।

रुधिरके भरजाने से दर्दका तीसरा भेद।

उसका चिन्ह यहहै कि मुख लालहो सिर और माथे में भारीपन और आगे को झुकते समय बोझ मालूमहो और कानके दर्दके साथ विशेष टीसहो (इलाज) फस्द सरेरू खोल और अर्कोके पानीसे तबियत को नर्म करें और गुलरोगन सिरके में पकाकर कानमें टपकावे। चौथी प्रकारका कान का दर्द गर्म मादा हुए प्रकृति बिगड़ जानेसे उत्पन्न होताहै उसका यह चिन्ह है कि मुख और सिरमें दर्द उत्पन्न होजाय और रोगी ठण्डी हवासे आराम पावे

जाय फिर उनभाफ के परमाणुओं मे सर्दरिहा अर्थात् ठंडी हवा बनजाय विशार करके जो वे भाफ के परिमाणु अपनी प्रकृति म ठंडी हो जैसे ठंडी प्रकृति वालों के अवसरे हुआ करते हैं और वहा कान की तरफ आकर कष्ट उत्पन्न करते हैं उसका चिन्ह यह है कि उससे पहले ठंडी हवा पहुची होगी और बीमार को अपने कानमें हवा का सा लगना मालूम हो और इस रोग में दर्द उस सिंचाव के समान नहीं होता है जो अंग को कठोरता से चारों तरफ खींचता है जैसा कि रिहा गर्म हलकी रिहा से सिंचाव होताहै इसलिये कि उनकी अधिकता अंग की गहराई से विशेष होती है किन्तु इस प्रकार के रोग में उस प्रकार का दर्द होता है कि जैसे कोई चीज कान में जोर से घुसती है और उस के भीतर जाने से कुछ दर्द खिंचाव के साथ उत्पन्न होता है (इलाज) दर्द क कम करने के लिये गर्म तेल सिर पर मलें और कान में टपकावें जिस से गर्मी पहुंचे और सब्त सपस्त, बाबूना, अकलीकुल मलिक अनार के पत्त, दोनामरुवा, नम्माम कैसून, पानी में औटाकर तरेडा देवे और न्हाने की जगह में गर्म तबेक ऊपर कान रक्खे और सलगम को पानीमें औटाकर उसका भाफ कानमें पहुंचा वे और राईकूटकर गर्म तेलोंमें मिलाकर उसकी बत्ती बनाकर कानमें रक्खे और तरेडों की दवाओं से वा पुरानी रुईको मीठे जैतून के तेलमें भिगोकर उससे गुन गुना सिकाव करें । चौथे यह कि ठंडा पानी सिर पर डाल या उसमें डुबकी लगावे जैसे ठंडी हवाके लगने में वर्णन किया गयाहै ठंडी और रिहाके उत्पन्न होनेका कारणहो और उस कारणसे कानमें दर्द उत्पन्नहो और कारण का पहिले होना उसका चिन्ह है और सिरके पीछेकी तरफ में ऐसा दर्द हो कि सिरको फिराना कठिन होजाय (इलाज) गर्म तेल सिरपर विशेष करके सिर क पीछे के भागपर मले और कान में भी डाले । पांचवें यहहै कि कानमें सर्द दवाओंके लगाने से रिहा उत्पन्नहो और कारण का पहले होजाना उसका चिन्ह है (इलाज) जो दवा उक्त दवाओं क विरुद्ध हो लगावे ।

रुधिरके भरजाने से दर्दका तीसरा भेद ।

उसका चिन्ह यहहै कि मुख लालहो सिर और माथे में गुरुत्वर आगे को झुकते समय बोझ मालूमहो और कानके दर्दके साथ विशेष टीसहो (इलाज) फस्द सरेरू खोल और मकोके पानीसे तबियत को नर्म करें और गुलरोगन सिरके में पकाकर कानमें टपकावे । चौथी प्रकारका कान का दर्द गर्म सादा हुए प्रकृति पित्तक बिगड़ जानेसे उत्पन्न होताहै उसका यह चिन्ह है कि मुख और सिरमें दर्द उत्पन्न होजाय और रोगी ठंडी हवासे आराम पावे

आरम्भ से दर्द बहुत कड़ा हो तो मीठे पानी में कपड़ा भिगोकर सूजन पर रक्खें और जो दर्द विशेष हो तो नोंन गर्म करके उसपर रक्खें। दूसरे यह है कि छेद के अन्दर सूजन उत्पन्न हो और समीप होने के कारण से सुनने का पट्ठा सूजजाय और इस रोग में जब तक पीब नहीं पड़जाती तब तक दर्द में कठोरता और अधिकता रहा करती है और इस रोग में बड़ा भय है और दर्द इतना बढ़जाता है कि जिसकी अधिकता से रोगी को मूर्च्छा आने लगती है और मतिहीन होजाता है किन्तु बहुधा सरसाम अर्थात् सिर में सूजन की दशा पर पहुंच जाती है और कभी यह दर्द ७ दिन के भीतर रोगी को मारडालता है मुख्यकर जो रोगी जवान हो और इस प्रकार के छेद के भीतर सूजन होने का चिन्ह यह है कि कान में बोझ मालूम हो और सुनने में अन्तर आजाय और कान की गहराई में दर्द विशेष हो और एक ऐसा शब्द जो थोड़ीसी देर में बंद होजाय और फिर आने लगे रोगी को मालूम हो और यद्यपि दिमाग में और सिर के सब अंगों की ठहराने वाली शक्ति में निर्बलता के आजाने से आंसू बहने लगें और नाक में से भी रतूबत निकलन और जानना चाहिये कि इस रोग में ज्वर हर समय रहता है और जो सूजन कि कान के छेद के बाहर होती है उस में ज्वर हर समय नहीं रहता परन्तु एकाहिक ज्वर होता है (इलाज) फस्द खोले और तबियत को नर्म करें और शियाफ अबियज कान में टपकावें और नर्द जो हकीम जनीन इसहाक के बेटे की बनाई हुई दवा है उस हरा धनियां, मकोय और कासनी पानी में मिलाकर लेप करें और स्त्री की छाती से दूध कान में डालें यह उपाय दर्द के कम करने के लिये है सो जो थम गया हो तो सब से अच्छा नहीं तो मवाद के पकाने वाले लुआब जैसे अलसी का लुआब और ऐसेही अन्य द्रव्य कान में टपकावें जिससे पीब निकलजाय और दर्द रुकजाय। नर्द के बनाने की यह रीति है कि लाल चंदन, सफेद चंदन, गिलेइरमनी मामीसा, रसौत, सफदा, कुशादरजदी, कासनी के बीज, वंशलोचन, कपूर, यह सबदस दवाई हैं प्रत्येक को जितना उचित हो लेकर किसी ठंढे रस म सानकर नर्द की सूरत की गोलियां बनालें। अर्थात् सिरकी तरफ से बारीक और जड़ औरजड़ की तरफ से मोटी और फैली हुई हो। तथा उचित है उस के छ कोने रक्खें जिससे आवश्यक्ता के समय पत्थर पर शीघ्र घिसजाय। कुशादरजदी एक प्रकार की घास है कि जिस की जड़ पत्ती समेत पहुंचते हैं और उसकी टिकिया

आरम्भ से दर्द बहुत कड़ा हो तो मीठे पानी में कपड़ा भिगोकर सूजन पर रक्खें और जो दर्द विशेष हो तो नोंन गर्म करके उसपर रक्खें। दूसरे यह है कि छेद के अन्दर सूजन उत्पन्न हो और समीप होने के कारण से सुनने का पट्ठा सूजजाय और इस रोग में जब तक पीब नहीं पड़जाती तब तक दर्द में कठोरता और अधिकता रहा करती है और इस रोग में बड़ा भय है और दर्द इतना बढ़जाता है कि जिसकी अधिकता से रोगी को मूर्च्छा आने लगती है और मतिहीन होजाता है किन्तु बहुधा सरसाम अर्थात् सिर में सूजन की दशा पर पहुंच जाती है और कभी यह दर्द ७ दिन के भीतर रोगी को मारडालता है मुख्यकर जो रोगी जवान हो और इस प्रकार के छेद के भीतर सूजन होने का चिन्ह यह है कि कान में बोझ मालूम हो और सुनने में अन्तर आजाय और कान की गहराई में दर्द विशेष हो और एक ऐसा शब्द जो थोड़ीसी देर में बंद होजाय और फिर आने लगे रोगी को मालूम हो और यद्यपि दिमाग में और सिर के सब अंगों की ठहराने वाली शक्ति में निर्बलता के आजाने से आंसू बहने लगें और नाक में से भी रतूबत निकलती और जानना चाहिये कि इस रोग में ज्वर हर समय रहता है और जो सूजन कि कान के छेद के बाहर होती है उस में ज्वर हर समय नहीं रहता परन्तु एकाहिक ज्वर होता है (इलाज) फस्द खोले और तबियत को नर्म करें और शियाफ अबियज कान में टपकावें और नर्द जो हकीम जनीन इसहाक के बेटे की बनाई हुई दवा है वह हरा धनियां, मकोय और कासनी पानी में मिलाकर लेप करें और स्त्री की छाती से दूध कान में डालें यह उपाय दर्द के कम करने के लिये है सो जो थम गया हो तो सब से अच्छा नहीं तो मवाद के पकाने वाले लुआब जैसे अलसी का लुआब और वैसेही अन्य द्रव्य कान में टपकावें जिससे पीब निकलजाय और दर्द रुकजाय। नर्द के बनाने की यह रीति है कि लाल चंदन, सफ़ेद चंदन, गिलेइरमनी मामीसा, रसौत, सफ़दा, बुशदरदी, कासनी के बीज, बंशलोचन, कपूर, यह सबदस दवाई है प्रत्येक को जितना उचित हो लेकर किसी ठंढे रस म सानकर नर्द की सूरत की गोलियां बनालें। अर्थात् सिरकी तरफ़ से बारीक और जड़ औरजड़ की तरफ से मोटी और फैली हुई हो। तथा उचित है उस के छ घोने रक्खें जिससे आवश्यक्ता के समय पत्थर पर शीघ्र घिसजाय। बुशदरदी एक प्रकार की घास है कि उस की जड पत्ती समेत प्रत्येक हैं और उसकी क्रिया

घाव पुराना और मैलसे भराहुआ होतो मरहम मिसरी और मरहम बासली
कून कबीर और मरहम अहमर और मरहम खल खब्सुलहदीद लगावे और जिस
रोगीके कानसे केवल रक्तही बहतीरहे और पीव नहोतो माजूको पीसकर
पुरानी शराब में मिलाकर कान में टपकावें तो आराम प्राप्त होगा और जिस
रोगी के कान से रक्त बहने के साथ पीव भी पाई जाय तो चाहिये कि
खुश्क करने वाली दवाओं में ऐसी दवाएँ मिलावें कि मवाद को साफ और
पतला करें और घाव को साफ करें और जब कान के घाव में दर्द हो और
उसका रोकना उचित हो तो अफीम की राख उसमें मिलावें कि अफीम से
उसकी राख में सुन्न करदेना और खुश्क कर देना विशेष है परन्तु इस राख
में थोडासा जुन्दे वेदस्तर भी अवश्य मिलावें जिससे अफीम का अवगुण
जाता रहे। मरहम मिसरी बनाने की विधि यह है कि जंगार, शहद, सिर-
का, कुन्दरू गोंद, चारों बराबर लेकर पानी में इतना पकावें कि शहद सा
गाढा होजाय तब मोम और गुलरोगन मिलाकर काम में लाव। मरहम बास
लीकून कबीर के बनाने की यह विधि है कि मोम पावभर, जुफ्त ३२ माशे,
मुर्र, रातीनज, अस्हे कुलअम्बात् प्रत्येक १६ माशे, जैतून का तेल सेर भर।
प्रथम मोम को जैतून के तेल में पकावें और चारों दवाओं को उनमें मिलाकर
मरहम बनाले खल्खबसुलहदीदके बनानेकी यह विधि है कि खब्सुल्हदीद अर्थात्
लोहे का मैल एक महीने तक खल अर्थात् सिर्के में भिगालें या एक महीने से
अधिक भिगोकर सिर्का अलग करलें। खल्खब्सुल हदीदके बनाने की दूसरी
विधि यह है कि खब्सुलहदीदको सिर्के में भिगाकर सुखावें फिर पुराने सिर्के
में इतना पकावे कि शहदका सा गाढा होजाय फिर उतारलें और रुई डोवें और
कई बूंद कान में टपकावें। आठवा भेद यह है कि कानमें कीडोंके पडजानेसे दर्द
उत्पन्न हो इसके दो कारण हैं पहला भराहुआ मवाद दूसरे घाव जो पुराना
हो और वह सडजाय और कान में कीडे पडजाने का यह चिन्ह है कि गुदगुदी
और कीडों का चलना मालूम हो और कभी कोई कीडा निकल आया करे
और यह कीडे मवाद की विरुद्धता से दो प्रकार के होते हैं एक तो वह है
कि सफेद हो परन्तु उनका सिर कालाहो और हर समय बोलते रहें। दूसरे
लाली रंगके जैसे घुनकी [illegible] (इलाज) कीडों का मारडालने का उपाय
यह है कि सिरका पापडी नोन [illegible] लेकर [illegible] अथवा [illegible]
या [illegible] अथवा [illegible] के पत्तके औटे हुए पानी में मिलाकर कानमें डाल

घाव पुराना और मैलमे भराहुआ होतो मरहम मिसरी और मरहम नामली कुन कबीर और मरहम अहमर और मरहम खल खब्सुलहदीद लगावे और जिस रोगीके कानसे केवल रक्तवही बहतीरहे और पीव नहोतो माजूको पीसकर पुरानी शराब में मिलाकर कान में टपकावें तो आराम प्राप्त होगा और जिस रोगी के कान से रक्त बहने के साथ पीव भी पाई जाय तो चाहिये कि खुश्क करने वाली दवाओं में ऐसी दवाएं मिलावें कि मवाद को साफ और पतला करें और घाव को साफ करें और जब कान के घाव में दर्द हो और उसका रोकना उचित हो तो अफीम की राख उसमें मिलावें कि अफीम मे उसकी राख में सुन्न करदेना और खुश्क कर देना विशेष है परन्तु इस राख में थोडासा जुन्दे बेदस्तर भी अवश्य मिलावें जिससे अफीम का अवगुण जाता रहे। मरहम मिसरी बनाने की विधि यह है कि जगार, शहद, सिरका, कुन्दरू गोंद, चारों बराबर लेकर पानी में इतना पकावें कि शहद सा गाढा होजाय तब मोम और गुलरोगन मिलाकर काम में लाव। मरहम बासलीकून कबीर के बनाने की यह विधि है कि मोम पावभर, जुफ्त ३२ माशे, मुर्र, रातीनज, अस्दै कुलअम्बात् प्रत्येक १६ माशे, जैतून का तेल सेर भर। प्रथम मोम को जैतून के तेल में पकावें और चारों दवाओं को उसमें मिलाकर मरहम बनाले सल्सबसुलहदीदके बनानेकी यह विधि है कि सब्मुल्हदीद अर्थात् लोहे का मैल एक महीने तक खल अर्थात् सिरके में भिगालें या एक महीने से अधिक भिगोकर सिरका अलग करले। सल्सबसुलहदीदके बनाने की दूसरी विधि यह है कि खब्सुलहदीदको सिरके में भिगोकर सुखावे फिर पुराने सिरके में इतना पकावे कि शहदका सा गाढा होजाय फिर उतारलें और रख छोडें और एक बूंद कान में टपकावें। आठवां भेद यह है कि कानमें कीडोंके पहचाननेका यह उत्पन्न हो इसके दो कारण हैं एकतो भराहुआ मवाद दूसरे घाव को पुराना हो और वह सडजाय और उनके कीडे पहचान का यह चिन्ह है कि खुजली और कीडों का चलना मालूम हो और कभी कोई कीडा निकल आया करे और यह कीडे मवाद की विरुद्धता से दो प्रकार के होते हैं एक तो यह है कि सफेद हो परन्तु उनका सिर कालाहो और हर समय डोलते रहें। दूसरे लाकी रंगके जैसे गुर्जकी फलीली (इलाज) कीडों का मारडालने का उपाय यह है कि सिरका पावभर नोन एकत्र लेकर ताजी अजमोद अथवा [illegible] का गूदा अथवा शफतालू के पत्तके औटे हुए पानी में मिलाकर कानमें डाले

किनारे को अग्नि से जलादेवे और यह बात प्रगट है कि जब दूसरा सिरा जलनेलगेगा तो आगकी गर्मीका असर कानमें पहुंचेगा और पानीबाहर की तरफ खिंचकर नष्ट होजायगा जैसा दीपकके तेलको देखते हैं चौथे यह कि स्पंजकी बत्ती बनाकर कानमें रक्खें और बीमार उसी कानकी करवट पर लेटे और बहुत देरके पीछे उसको निकाले ईश्वर की कृपासे पानी उसमें खिंचआवेगा ।

दूसरा प्रकरण।

तर्श वा वक्र वा समुमूका वर्णन

तर्श का अर्थ "सुननेमें कमी होना" और,, वक्र बिल्कुल न सुनना ,, और समुमूका अर्थ " कानका छेद जाता रहना" है और कभी २ इनका अर्थ एक दूसरेके विरुद्धभी होताहै और कोई२ हकीम सुननेके कष्टको जो बहुत दिनोंसे हो और पुराना होजाय तो उसको वक्र कहा करते हैं और जो नया कष्टहो और बहुत दिन व्यतीत न हुएहों तो उसको तर्श कहते हैं अभिप्राय यह है कि कम सुनने और बिल्कुल न सुननेके सात भेदहैं एक तो यह है जो जन्मसे हो उसका इलाज नहीं और इलाज न होनेका कारण यहहै कि उसमें दोबातें हुआ करती हैं एक तो यह कि सुननेवाली शक्ति नष्ट होजाती है दूसरे यह कि जन्मसेही उत्पन्न होता है और यह प्रगट है कि इलाजसे अच्छा नहीं होता और सुननेवाली शक्तिका पैदा करना मनुष्य की शक्तिसे बाहर और असम्भव है हकीम अरस्तू और बुकरातकी बुद्धि उसको नहीं जानगई ती है और श्रवणशक्ति के छेदका मार्ग बंद होनेका वर्णन इस अध्यायके अन्त में एक प्रकारकी निर्बलता सहित सविस्तर वर्णन कियाजायगा और उसका इलाज भी कठिन नहींहै। यह बात प्रगट है कि बहरा जन्मसे गूंगा भी होताहै क्योंकि शब्द और उनके बोलने का और उनके उच्चारणकी दशाका उसको सर्वथा ज्ञान नहीं होताहै और बिना जानीहुई बातका बोलना कठिनहै। दूसरे यहकि बहुत उम्र और बुढ़ापा आनेके कारणसे बहरापन उत्पन्नहो क्योंकि उस अवस्थामें शक्ति निर्बल होजातीहै और सर्दी तथा खुश्की अधिक होजातीहै इसकी भी दवा नहीं है इस बातको हकीम लोग अच्छी तरह जानते हैं। तीसरे यहहै कि जो पट्ठा कानके छेदमें बिछा हुआहै और जिसमें श्रवणशक्ति रहतीहै धमाके अथवा गिरपड़ने के कारणसे टूटजाय इसका भी इलाज नहीं है क्योंकि उसका मिलना कठिन है। चौथे यहहै कि पीड़ाकी रीतिपर दि-

किनारे को अग्नि से जलादेवे और यह बात प्रगट है कि जब दूसरा सिरा जलनेलगेगा तो आगकी गर्मीका असर कानमें पहुंचेगा और पानीआग की तरफ खिंचकर नष्ट होजायगा जैसा दीपकके तेलको देखते हैं चौथे यह कि रूईकी बत्ती बनाकर कानमें रक्खें और बीमार उसी कानकी करवट पर लेटे और बहुत देरके पीछे उसको निकाले ईश्वर की कृपासे पानी उसमें खिंचआवेगा ।

दूसरा प्रकरण ।

तर्श वा वक्र वा समुम्का वर्णन

तर्श का अर्थ "सुननेमें कमी होना" और „ वक्र बिल्कुल न सुनना „ और समुम्का अर्थ " कानका छेद जाता रहना" है और कभी २ इनका अर्थ एक दूसरेके विरुद्धभी होताहै और कोई२ हकीम सुननेके कष्टको जो बहुत दिनोंतक हो और पुराना होजाय तो उसको वक्र कहा करते हैं और जो नया कष्टहो और बहुत दिन व्यतीत न हुएहों तो उसको तर्श कहते हैं अभिप्राय यह है कि कम सुनने और बिल्कुल न सुननेके सात भेदहैं एक तो यह है जो जन्मसे हो उसका इलाज नहीं और इलाज न होनेका कारण यहहै कि उसमें दोबातें हुआ करती हैं एक तो यह कि सुननेवाली शक्ति नष्ट होजातीहै दूसरे यह कि जन्महीसे उत्पन्न होता है और यह प्रगट है कि इलाजसे अच्छा नहीं होता और सुननेवाली शक्तिका पैदा करना मनुष्य की शक्तिसे बाहर और असम्भव है हकीम अरस्तू और बुकरातकी बुद्धि उसको नहीं जानती है और श्रवणशक्ति के छेदका मार्ग बंद होनेका वर्णन इस अध्यायके अन्तमें एक प्रकारकी निर्बलता सहित सविस्तर वर्णन कियाजायगा और उसका इलाज भी कठिन नहींहै । यह बात प्रगट है कि बहरा जन्मसे गूंगा भी होताहै क्योंकि शब्द और उनके बोलने का और उनके उच्चारणकी दशाका उसको सर्वथा ज्ञान नहीं होताहै और बिना जानीहुई बातका बोलना कठिनहै । दूसरे यहकि बहुत उम्र और बुढापा आनेके कारणसे बहरापन उत्पन्नहो क्योंकि उस अवस्थामें शक्ति निर्बल होजातीहै और सर्दी तथा खुश्की अधिक होजातीहै इसकी भी दवा नहीं है इस बातको हकीम लोग अच्छी तरह जानते हैं । तीसरे यहहै कि जो पट्ठा कानके छेदमें बिछा हुआहै और जिसमें श्रवणशक्ति रहतीहै घावके अथवा गिरपड़नेके कारणसे टूटजाय इसका भी इलाज नहीं है क्योंकि उसका मिलना कठिन है । चौथे यहहै कि पोस्त की रीतिपर दि-

कारणों में से हैं कि कान में और उसके ओर पास में जलन रहा करती है और जो खुश्क दुष्ट प्रकृति हो तो परिश्रम करना, निराहार रहना, जागना और जो उनके खुश्क करने वाले कारण हैं उनका पहले होना साक्षी हो और आंखों में और मुखमें दुबलापन प्रगट हो और तरी पहुंचाना लाभदायक हो और खुश्की हानि पहुंचावे और जो तर दुष्ट प्रकृति हो तो रोगी तर वस्तुओं से कष्ट और खुश्क चीजों से लाभ पाता है (सूचना) तरातर प्रकृति कदाचित इस रोगके कारण होती है इस लिये शैखबूअलीसेनाने इसका वर्णन छोड़ दिया है और किताब शरह असबाब के बनाने वाले ने भी शैखबूअलीसेना के अनुसार लिखा है (इलाज) जैसा कारण हो उसी के अनुसार शर्बत भोजन तरेड़े और दवाओं की उचित दवाओं से प्रकृति को अपनी असली दशा पर लावें । छठे यह कि गाढ़ा रूखा दोष उस पट्ठे की तरफ गिरे जो सुनने का अंग है और इस कारण से दिमाग वाली रूह उस पट्ठे में न जाय तो अवश्य उस की ज्ञान शक्ति नष्ट होजायगी और उसका चिन्ह यह है कि गर्म वस्तु लाभदायक हों और पहले उन्हें जुकाम का काम पड़ा हो और सिर में भारापन मालूम हो और झुकने के समय सिर में विशेष भारापन मालूम हो और गर्मी और लाली बिलकुल न हो (इलाज) यारजात और कुर्सों से और इसी प्रकार की दवाओं से दिमाग को पवित्र करें फिर सोये का तेल, और तुलसी का तेल कान में डालें और जन्दबेदस्तर, गारके पत्ते, दौना मरुवा, नम्माम, वग्जारफ, सातर और बाबूने के पानी से गुद्दी पर और कान की जड़पर सिकाव करें और तुलसी सातर अजमोद मिर्चें और जैतून के तेल को पानी में औटाव और झारी में डालकर उसका मुख बंद करदें और झारी की टोंटी कान में रक्खें जिससे उस काढ़े की भाफ कान के भीतर पहुंचे (सूचना) कान में जो भारापन होता है उसको कई बार करके निकालना चाहिये जिससे शक्ति बनी रहे और मवाद के पकने तक ज्यों की त्यों रहे और जो दवा कान में डाली जाय वह गुनगुनी हो वह सर्वदा बहुत गर्म न चाहिये और मादे के निकलने से पहले किसी प्रकार की दवा कान में न टपकावें और इस सूचना को सब जगह याद रक्खें । सातवें यह कि कान में छेद या मार्ग बंद होजाय और दवा का असर श्रवण शक्ति वाले पट्ठे में न पहुंचे और उस गांठ के होने का कारण है । एक तो यह कि कान में बहुत सा मैल इकट्ठा होजाय, और

कारणों में से हैं कि कान में और उसके ओर पास में जलन रहा करती है और जो खुश्क दुष्ट प्रकृति हो तो परिश्रम करना, निराहार रहना, जागना और जो उनके खुश्क करने वाले कारण हैं उनका पहले होना साक्षी हो और आंखों में और मुखमें दुबलापन प्रगट हो और तरी पहुंचाना लाभदायक हो और खुश्की हानि पहुंचावे और जो तर दुष्ट प्रकृति हो तो रोगी तर वस्तुओं से कष्ट और खुश्क चीजों से लाभ पाता है (सूचना) सरदतर प्रकृति कदाचित इस रोगके कारण होतीहै इस लिये शैखबूअली सेनाने इसका बयान छोड़ दिया है और किताब शरह असबाब के बनाने वाले ने भी शैखबूअलीसेना के अनुसार लिखा है (इलाज) जैसा कारण हो उसी के अनुसार शर्बत भोजन बरते और उपकारी उचित दवाओं से प्रकृति को अपनी असली दशा पर लावें । छटे यह कि गाढ़ा खुश्क दोष उस पट्ठे की तरफ गिरे जो सुनने का अंग है और इस कारण से दिमाग वाली रूह उस पट्ठे में न जाय तो अवश्य उस की ज्ञान शक्ति नष्ट होजायगी और उसका चिन्ह यह है कि गर्म वस्तु लाभदायक हों और पहले ढके वबाय का काम पड़ा हो और सिर में भारापन मालूम हो और थूकने के समय सिर में विशेष भारापन मालूम हो और गर्मी और लाली बिलकुल न हो (इलाज) यारजात और कुल्लों से और इसी प्रकार की दवाओं से दिमाग को पवित्र करें फिर सोये का तेल, और तुलसी का तेल कान में डालें और जन्दबेदस्तर, गारके पत्ते, दौना मरुवा, नम्माम, मरजारफ, सातर और बाबूने के पानी से गुद्दी पर और कान की जड़पर सिकाव करें और तुलसी सातर अजमोद मिर्च और जैतून के तेल को पानी में औटावें और झारी में डालकर उसका मुख बंद करदें और झारी की टोंटी कान में रक्खे जिससे उस काढ़े की भाफ कान के भीतर पहुंचे (सूचना) कान में जो भारापन होता है उसको कई बार करके निकालना चाहिये जिससे शक्ति बनी रहै और मवाद के पकने तक ज्यों की त्यों रहे और जो दवा कान में डाली जाय वह गुनगुनी हो वह सर्वदा बहुत गर्म न चाहिये और मादे के निकलने से पहले किसी प्रकार की दवा कान में न टपकावें और इस सूचना को सब जगह याद रक्खें । सातवें यह कि कान के छेद का मार्ग बंद होजाय और दवा का असर श्रवण शक्ति वाले पट्ठे में न पहुंचे और उस मार्ग के बंद होने के तीन कारण हैं । एक तो यह कि कान में बहुत सा मैल इकट्ठा होजाय, और

वह विशेष मांस भीतरकी तरफ और गहराई में हो तो पतले नश्तर से या शिग चपायसे कटसके काटदेवे और काटनेके पीछे एक बत्तीको लाल फिटकरी वा अन्य वस्तुमें जो घावको न मिलनेदें सानकर कानमें रक्खें जिससे फिर न निकले और जिस रोगी के कानमें विशेष मांस या मस्सा किसी कारण से कट न सके तो चाहिये कि कानको सदा पापड़ीनोन और गर्म पानी से धोया करें और जटामांसी बारीक पीसकर सिर्के में मिलाकर उस जगह रक्खें जिससे इस विशेष वस्तु को नष्ट करदें और जब वह नष्ट होजाय तो घावका इलाज करें और घावको मिलाने वाली दवाएँ कानमें डालें (सूचना) कानके भीतर जो गांठ जन्मसे होतीहै वह तीन प्रकार की होती है एक तो वह है कि कान की जड़ में जो हड्डी है उसमें शब्द आनेका रास्ता वा छेद उत्पन्न न हो । दूसरी यह कि यद्यपि छेद हो परन्तु मांस से भरकर खूब अच्छी तरह से बंद होगया हो इन दोनोंका इलाज नहीं है और इस अध्याय के अंतमें जो यह वर्णन किया है वह जन्म से कम सुनने का कारण यही जन्म से होनेवाली गांठ है इसका इलाज नहीं होता है तीसरी प्रकार का रोग जो इलाज के योग्य है वह यह है कि रास्ता खुला हुआ हो परन्तु रास्ते के ऊपर बाहर की तरफ एक खाल ढकी हुई हो उसका चिन्ह यह है कि आदमी जोर से कही हुई बात सुन सके और जो छेद के ऊपर उंगली मारे तो उंगली के लगने को और उसकी चोट को जान सके और उसका इलाज यह है कि उस झिल्ली में छेद करें और रास्ते को साफ करें और फिटकरी में बत्ती भरकर उस छेदमें रखदें जिससे घाव न भरने पावे । अभिप्राय यह है कि घाव न भरने पावे (सूचना) जो छोटे बच्चे के कान में भारीपन मालूम हो तो दूध पिलानेवालीको चाहिये कि गाजर और इन्द्रायणी नाम घास में चबाकर उस पानी की एक बूंद उसके कानमें टपकावें ॥

तीसरा प्रकरण

तनीन और दवी का वर्णन

तनीन कोष में घंटे की झनकार को कहते हैं और हकीमों की सम्मति में यह शब्द है कि जिसको आदमी कानसे सुनता और भीतरी भाफके धक्के धुओंकी गतिके कारण से सुन और बाहरकी हवाके आनेसे नहीं फिर जो यह रोग शब्द बहुत तेज और पतला हो तो तनीन कहलाता है और जो बहुत नर्म और बड़ा होता तो दवी कहलाता है और मन्ना शब्द कहते हैं कि उ-पर्युक्त किसी कारणसे कोई वस्तु पर टक्कर मारे कि भीतरकी हवाको सरकावें

वह विशेष मास भीतरकी तरफ और गहराई म हा तो पतले नश्तर स या झिग चपायसे कटसके काटदेवे और काटनेक पीछे एक बत्तीको लाल फिटकरी वा अन्य वस्तुमें जो घावको न मिलनदें सानकर कानमें रक्खें जिससे फिर न निकले और जिस रोगी के कानमें विशेष मांस या मस्सा चिर्स, कारण से कट न सके ता चाहिये कि कानको सदा पापड़ीनोंन और गर्म पानी स धोया करें और जटामांसी बारीक पीसकर सिर्के में मिलाकर उस जगह रक्खें जिससे इस विशेष वस्तु को नष्ट करदें और जब वह नष्ट होजाय तो घावका इलाज करें और घावको मिलाने वाली दवाएं कानमें डालें (सूचना) कानके भीतर जो गाठ जन्मसे होतीहै वह तीन प्रकार की होती है एक तो वह है कि कान की जड़ में जो हड्डी है उसमें शब्द आनेका रास्ता वा छेद उत्पन्न न हो। दूसरी यह कि यद्यपि छेद हो परन्तु मांस से भरकर खूब अच्छी तरह स बद होगया हो इन दोनोंका इलाज नहीं है और इस अध्याय के अतमें जो यह वर्णन किया है वह जन्म से कम सुनने का कारण यही जन्म से होनेवाली गांठ है इसका इलाज नहीं होता है तीसरी प्रकार का रोग जो इलाज के योग्य है वह यह है कि रास्ता खुला हुआ हो परतु रास्ते के ऊपर बाहर की तरफ एक खाल ढकी हुई हो उसका चिन्ह यह है कि आदमी जोर से कही हुई बात सुन सके और जो छेद के ऊपर उंगली मारे तो उंगली के लगने को और उसकी चोट को जान सके और उसका इलाज यह है कि उस झिल्ली में छेद करे और रास्ते का मार्ग खोले और फिटकरी में बत्ती भरकर उस छेदमें रक्खें जिससे घाव न भरने पावे। अभिप्राय यह है कि घाव न भरने पावे (सूचना) जो छोटे बच्चे के कान में भारीपन मालूम हो तो दूध पिलाने वालीको चाहिये कि गाजर और इन्द्रायनी नाम मुख में चबाकर उस पानी की एक बूद उसके कान में टपकावें ॥

तीसरा प्रकरण

तनीन और दवी का वर्णन

तनीन कोष में बाल की झनकार को कहते हैं और हकीमों की सम्मति में यह शब्द है कि जिसको आदमी ख्याल करता और भीतरी भाफ के परमाणुओंकी गतिके कारण से सुन और बाहरकी हवाके आनेसे नहीं फिर या यह रोग शब्द बहुत तेज और पतला होता तिनीन कहलाता है और जो बहुत नर्म और मोटा होता दवी रोग जानाहै और मन्ना शब्द कहे कि कानमें किसी कारणसे ऐसी तरह पर ठहर मारे कि भीतरकी हवाको रोके।

चलने लगे तो कान में विशेष भिनभिनाहट होजाती है और जिस समय गतिका कारण नष्ट होजाय तो भिनभिनाहट भी कम मालूम हो और जो दोषका गिरना इस रोग का कारण हो तो उसका यह चिन्ह है कि सिर और कान में भारीपन और खिंचावट उत्पन्न हो और इस कारण से दोषके गिरने की गति हमेशा रहे तो भिनभिनाहट भी हर समय रहेगी और पहले कारण जो मैल बढाते हैं उसपर साक्षी होंगे (इलाज) दिमाग को साफ करने के पीछे पोदीना अजमोद, दानामरुआ, सातर पानीमें औटाकर उसका भपारा लें और चमेली तथा खैरा का तेल कान में टपकावे और मवाद के निकालने के पीछे इसलिये कि रिहा और शर मैल नष्ट होजांय सदा न्हायाकरें परन्तु सफाई से पहले न्हाने, जोरसे चलने फिरने और सूर्य और आग की गर्मी से अवश्य बचता रहे जिससे मवाद का कारण न बढे पांचवें यह कि भूख और निराहार रहने की अधिकता इस रोग का कारण हो और यह इस तरह होता है कि जब आदमी को खाने का न मिले तो अवश्य तबियत खाने के लिये उन तरियों की तरफ जो ओस की तरह देह में बिखरी हुई है आरूढ होगी और डोलन फिरने से उन शरीर की तरियों में बखेड़ा पड़ जायगा और उन तरियों की चाल के कारण से धुंआर या भाफ के परमाणु कि उन शरीर की तरियों से निकलते हैं उनकी चाल से भाफ के परमाणु के और इन्द्रियां भोजन के न मिलने से पवित्र है तो कान की ज्ञानशक्ति में उनगति होने लगेगी और उसका चिन्ह यहहै कि भूख के समय और पेट खाली होने पर कानमें भिन भिनाहट विशेष मालूम हो और निर्बलता की अधिकता और भोजन का मिलना उसपर साक्षी हो (इलाज) भोजन विशेष दें और दिन में कईबार खाया करें और गुलरोगन और दूसरे तेल ठंडे और तर कान में डालें और कभी ज्ञानशक्ति के बढाने के लिये भांग का तेल भी कान में डाला करें जिससे श्रवणशक्ति भिनभिनाहट के शब्दों को न सुन सके छठे यह कि भिनभिनाहट और गर्म दुष्ट प्रकृति दोनों को उबाल और भाफ के परमाणुओं की हिलाव और श्रवणशक्ति उसको जानलें जैसा कि किसी २ रोगों मे ज्वर के आरम्भ में उत्पन्न होता है (इलाज) इसमें ज्वर का इलाज करना चाहिये। सातवें यह कि कोई ऐसी दशा के आने का नाम पचादा जो भाफ के परमाणु को इस पर दिमाग में लेजाय जैसे कारी दिये या अन्य कोई वस्तु अथवा भाफ के परमाणु उत्पन्न करने वाले भोजन जो कान की हवा और ठहरे हुए भाफ के परमाणु को हिलावें जैसे लहसन और गन्दना और उसके समान खाने का

चलने लगे तो कान में विशेष भिनभिनाहट होजाती है और जिस समय गतिका कारण नष्ट होजाय तो भिनभिनाहट भी कम मालूम हो और जो दोषका गिरना इस रोग का कारण हो तो उसका यह चिन्ह है कि सिर और कान में भारीपन और खिंचावट उत्पन्न हो और इस कारण से दोषके गिरने की गति हमेशा रहे तो भिन भिनाहट भी हर समय रहेगी और पहले कारण जो मैल बढाते हैं उसपर गाक्षी होंगे (इलाज) दिमाग को साफ करने के पीछे पोदीना अजमोद, दानामरुआ, सातर पानीमें औटाकर उसका भपारा लें और चमेली तथा खैरा का तेल कान में टपकावे और मवाद के निकालने के पीछे इसलिये कि रिहा और शर मैल नष्ट होजांय सदा न्हायाकरें परन्तु सफाई से पहले न्हाने, जोरसे चलने फिरने और सूर्य और आग की गर्मी से अवश्य बचता रहे जिससे मवाद का कारण न बढे पांचवें यह कि भूखरी और निराहार रहने की अधिकता इस रोग का कारण हो और यह इस तरह होता है कि जब आदमी को खाने को न मिले तो अ वश्य तबियत खाने के लिये उन तरियों की तरफ जो ओस की तरह दह में बि खरी हुई है आरूढ होगी और डोलन फिरने से उन शरीर की तरियों में चलना पड जायगा और उन तरियों की चाल के कारण से धुआंर का भाफ के परमाणु कि उन शरीर की तरियों से निकलते हैं उनकी चाल से भाफ के परमाणु के और इन्द्रियां भोजन के न मिलने से पवित्र है तो कान की ज्ञानशक्ति में उनगति होने लगेंगी और उसका चिन्ह यहहै कि भूख के समय और पेट खाली होने पर कानमें भिन भिनाहट विशेष मालूम हो और निर्बलता की अधिकता और भोजन का मिलना उसपर साक्षी हो (इलाज) भोजन विशेष दें और दिन में कईवार खाया करें और गुलरोगन और दूसरे तेल ठंडे और तर कान में डालें और कभी ज्ञानशक्ति के बढाने के लिये भांग का तेल भी कान में डाला करें जिससे श्रवणशक्ति भिनभिनाहट के शब्दों को न सुन सके छठे यह कि घब राहट और गर्म दुष्ट प्रकृति दोषों को उबाल और भाफ के परमाणुओं की खि चाव और श्रवणशक्ति उसको जानलें जैसा कि किसी २ रोगों को ज्वर के आरम्भ में उत्पन्न होता है (इलाज) इस में ज्वर का इलाज करना चाहिये। सातवें यह कि कोई ऐसी दशा के खाने का काम पकाता को भाफ के परमाणु को इस पर दिमाग में लेजाय जैसे कार्ती दिये या अन्य कोई वस्तु अथवा भाफ के परमाणु उत्पन्न करने वाले भोजन जो कान की हवा और हवा द्वार भाफ के परमाणु को दिमाग में लेजाय लहसन और गन्दा और उसके समान साग का

रग फटजाय या किसी का मुख खुल जाय । तीसरे यह कि पढ़ने वाला सर्प काट खाय क्योंकि इस सर्प का प्रभाव है कि जब काटता है तो शरीर के सब रोमाञ्चों और छेदों से खून बह निकलता है (इलाज) जिस रोगी के रोग का कारण मवाद का भरजाना हो तो पहले फस्द खोलें यदि कोई उपद्रव न हो और जिस रोगी के विपत्ति या हानि इस रोग का कारण हो और देखते ही आवश्यकता मालूम हो तो इस प्रकार के रोगी की भी फस्द खोलें और दशा अनुसार खून निकाले और जिस रोगी को सर्प का काटना कारण हो तो पहले काटने की विपत्ति का खोवें और सब रोगों में कारण के दूर करने के पीछे खून बंद करने के लिये जो चीजें खून को बंद करती हैं कान में डालें और गर्मी और सर्दी की भी रक्षा रक्खें जैसे जो ज्वर और गर्मी हो तो माजू को सिर्के में उबाल और थोड़ा कपूर उस सिर्के में मिला कर कान में डाले और ताजी हरी बारतंग और खुर्फा का पानी, अकाकिया और मामीसा उस में मिलाकर लगावे तो भी बेगा ही गुणकारी है और एक अनार खटमिट्ठा लेकर ज्यों का त्यों सिर्के में उबाल लें और जब उबल जाय तो उसका पानी निचोड़ कर वह बूंद कान में टपकावें तो बहुत जल्द खून को बंद कर देता है जो प्रकृति में गर्मी न हो तो गन्दना का पानी सिर्के में औटाकर लगावें और जो समान बनाना चाहे तो थोड़ा सा कपूर भी गन्दना के पानी में बढ़ावें और यह बात किसी तरह छिपी नहीं है कि गन्दना का पानी खून को बंद कर देता है क्यों कि यह उस जला देता है ॥

॥ पांचवां प्रकरण ॥

इन्किसारुल उजून का अर्थात् कान के टूटजाने का वर्णन

इन्किसार (टूट जाना) का शब्द नर्म अंग के टूटने पर इस लिये लाये हैं कि किसी स्थान न अंग की हड्डी कहा है और बहुत से हकीमों के मतानुसार इस प्रकार पर है कि नर्म हड्डी के टूटने और चटजाने का रूप करते हैं और हड्डी के टूटने का प्रयोग करते हैं इस रोग का यह कारण है कि दबाव से कान को मले, या चोट लगे या किसी से दबजाय (इलाज) फस्द खोले और संखिया को नर्म करें और अकाकिया फलसा गलीनसा और हल्दी का लेप [illegible] करें जिस तरफ टूटा हुआ अंग मुड़ गया है जिस से उस [illegible] की दूसरी तरफ और अंग को असली दशा पर हटा दे जैसे जो टूटना भीतर की तरफ से बाहर की तरफ हो तो इस दशा में बाहर की तरफ लेप करें और जो भीतर

रग फटजाय या किसी का मुख खुल जाय । तीसरे यह कि पढ़ने वाला सर्प काट खाय क्योंकि इस सर्प का प्रभाव है कि जब काटता है तो शरीर के सब रोमाञ्चों और छेदों से खून बह निकलता है (इलाज) जिस रोगी के रोग का कारण मवाद का भरजाना हो तो पहले फस्द खोलें यदि कोई उपद्रव न हो और जिस रोगी के विपत्ति या हानि इस रोग का कारण हो और देखते ही आवश्यकता मालूम हो तो इस प्रकार के रोगी की भी फस्द खोलें और दशा अनुसार खून निकाले और जिस रोगी को सर्प का काटना कारण हो तो पहले काटने की विपत्ति का खोवें और सब रोगों में कारण के दूर करने के पीछे खून बंद करने के लिये जो चीजें खून को बंद करती हैं कान में डालें और गर्मी और सर्दी की भी रक्षा रक्खें जैसे जो ज्वर और गर्मी हो तो माजू को सिरके में उबाल और थोड़ा कपूर उस सिरके में मिला कर कान में डाले और ताजी हरी बारतंग और खुर्फ़ा का पानी, अकाकिया और मामीसा उस में मिलाकर लगावे तो भी बेहद ही गुणकारी है और एक अनार मठनिश्रा लेकर ज्यों का त्यों सिर्के में उबाल लें और जब उबल जाय तो उसका पानी निचोड़ कर वह बंद कान में टपकावें तो बहुत जल्द खून को बंद कर देता है जो प्रकृति में गर्मी न हो तो गन्दना का पानी सिर्के में औटाकर लगावें और जो समान बनाना चाहे तो थोड़ा सा कपूर भी गन्दना के पानी में बढ़ावें और यह बात किसी तरह छिपी नहीं है कि गन्दना का पानी खून को बंद कर देता है क्यों कि यह उस जला देता है ॥

॥ पांचवां प्रकरण ॥

इन्किसारुल उजून का अर्थात् कान के टूटजाने का वर्णन

इन्किसार (टूट जाना) का शब्द नर्म अंग के टूटने पर इस लिये लाये हैं कि किसी हकीम ने उस को हड्डी कहा है और बहुत से हकीमों के नज़दीक इस प्रकार पर है कि नर्म हड्डी के टूटने और बढ़जाने का रक्षा करते हैं और हड्डी के टूटने का प्रकार कहते हैं इस रोग का यह कारण है कि बाहर से चोट को मले, या चोट लगा या किसी से दबजाय (इलाज) फस्द खोले और सबिया को नर्म करें और अकाकिया फलसा गलीनस और सर्दी का जन गारे [illegible] करें जिस तरफ टूटा हुआ अंग झुक गया है जिस से उस रोग स्थान का दबा करे और अंग को अपनी दशा पर रखा दे जैसे जो टूटना भीतर की तरफ से बाहर की तरफ हो सो इस दशा में बाहर की तरफ दबा करें और जो भीतर

जो सूजन कफ के कारणसे होतीहै उसका एक चिन्ह यह है कि नर्मी औ लाली और भारापन कमहो और जो सूजन बादी के कारण से हो उसका यह चिन्ह है कि कठोरता और दर्द न्यूनता के साथ हो (इलाज) सब से पहले जैसी आवश्यकता हो फस्द और दस्तों के द्वारा शरीरका मवाद निकाल- ने के पीछे वे गर्म तर दवा जो नर्म करनेवाली और दर्द को रोक देने वाली हैं सूजन पर लेप करें यद्यपि रोग का आरम्भ ही हो और जो दवा मवादको हटानेवालीहैं उनसे सावधानी करें परन्तु वे उनके विरुद्धहैं जो इसी जगह उत्पन्न हो जिनका इलाज आरम्भ में मवादके हटाने के साथ है क्योंकि कानकी जड ऐसी जगहहै कि दिमाग का मैल उसपर गिरताहै सो जो मवादके हटानेवाली दवाईयोंको लगावे तो इस बातका भयहै कि वही मैल दिमागकी तरफ जो शरीरका प्रधानअंग और रक्षकहै पलटजाय और हकीमलोग जो चीजें इस रोगके लेपमें लगातेहैं वह दवाएं यहहैं साप का आटा, रायूना, अलसी, गुलरोगन, मोम इन सब दवाओंको आपसमें मिलाकर गुनगुना लगावे और कनेरकी पत्ती घीमें तली हुई उसी प्रकारका गुण करतीहै और जो सूजन गां- ठान के कारणसे होता मवादके इकट्ठा करनेमें परिश्रम करें जिससे उस जगह बहुतसा मवाद सिमटआवे जिसतरह बनपडे और जिस रोगीकी सूजनमें आ रम्भसे विशेष दर्द होतो एक कपडा गुनगुने निर्मल पानीमें भिगोकर उसपर रखदें तो दर्द कमहोजाताहै और जब मालूम हो कि सूजनमें पककर पीब पडे- गी और नष्ट न होगी तो सूजनके पकानेवाली दवा उसपर लगावें परन्तु जो बादी के कारणसे सूजन होतो आरम्भ में ठंडी चीजें जैसे कपूरका मरहम और ताजी हरी मकोय का पानी लगासक्ते हैं जिससे सूजन न बढे और ठंडी द- वाओंके लगाने की आज्ञा इस सूजनमें इस लिये है कि बादीका गाढा मवाद जल्द नहीं हटता और ठंडी चीजों के लगानेसे विशेषभी नहीं होताहै ।

आठवां प्रकरण।

कानकी जडमें घाव होनेका वर्णन ।

इस रोगको सिलाउल उजनभी कहते हैं यह कानका पकना मनुष्य बालकों के हुआ करताहै क्योंकि उनकी खाल नर्म हुआकरती है (इलाज) दोनों कान- की और कानकी जडमें हजामत बनवाकर सिर्कामें दूध मलें जिससे मवाद की तेजी कम होजाय और पीबभी दूर होजाय इसके पीछे मुर्दासिंग और पनीला महीन पीसकर उसपर बुरकें ।

जो सूजन कफ के कारणसे होतीहै उसका एक चिन्ह यह है कि नर्मी हो लाली और भारापन कमहो और जो सूजन बादी के कारण से हो वाका यह चिन्ह है कि कठोरता और दर्द न्यूनता के साथ हो (इलाज) सब से पहले जैसी आवश्यकता हो फस्द और दस्तों के द्वारा शरीरका मवाद निकल- ने के पीछे वे गर्म तर दवा जो नर्म करनेवाली और दर्द को रोक देने वाली हैं सूजन पर लेप करें यद्यपि रोग का आरम्भ ही हो और जो दवा मवादको हटानेवालीहैं उनसे सावधानी करें परन्तु वे उनके विरुद्धहैं जो दूसरी जगह उत्पन्न हो जिनका इलाज आरम्भ में मवादके हटाने के साथ है क्योंकि कानकी जड ऐसी जगहहै कि दिमाग का मैल उसपर गिरताहै सो जो मवादके हटानेवाली दवाईयोंको लगावे तो इस बातका भयहै कि वही मैल दिमागकी तरफ जो शरीरका प्रधानअंग और रक्षकहै पलटजाय और हकीमलोग जो चीजें इस रोगके लेपमें लगातेहैं वह दवाएँ यहहैं साथ का आटा, बाबूना, अलसी, गुलरोगन, मोम इन सब दवाओंको आपसमें मिलाकर गुनगुना लगावे और कनेरकी पत्ती घीमें तली हुई उसी प्रकारका गुण करतीहै और जो सूजन सौ- दरान के कारणसे होता मवादके इकट्ठा करनेमें परिश्रम करें जिससे उस जगह बहुतसा मवाद खिंचआवे जिसतरह बनपड़े और जिस रोगीकी सूजनमें आ- रम्भसे विशेष दर्द होतो एक कपडा गुनगुने निमल पानीमें भिगोकर उसपर रक्खें तो दर्द कमहोजाताहै और जब मालूम हो कि सूजनमें पककर पीव पडे- गी और नष्ट न होगी तो सूजनके पकानेवाली दवा उसपर लगावें परन्तु जो बादी के कारणसे सूजन होतो आरम्भ में ठंढी चीज जैसे कपूरका मरहम और ताजी हरी मकोय का पानी लगासक्ते हैं जिससे सूजन न बढ़े और ठंढी द- वाओंके लगाने की आज्ञा इस सूजनमें इस लिये है कि बादीका गाढा मवाद जल्द नहीं हटता और ठंढी चीजों के लगानेसे विशेषभी नहीं होताहै ।

आठवां प्रकरण।

कानकी जडमें घाव होनेका वर्णन ।

इस रोगको बिलाउल उजनभी कहते हैं यह कानका पकना बहुधा बालकों के हुआ करताहै क्योंकि उनकी खाल नर्म हुआकरती है (इलाज) दोनों कन- पटी और कानकी जडमें हजामत बनवाकर जोंकोंका दूध मलें जिससे मवाद की तेजी कम होजाय और पीवभी दूर होजाय इसके पीछे इसीतरह और पपोलिया नहीं पीसकर उसपर बुरकें ।

जो सूजन कफ के कारणसे होतीहै उसका एक चिन्ह यह है कि नर्मी हो लाली और भारापन कमहो और जो सूजन वादी के कारण से हो उसका यह चिन्ह है कि कठोरता और दर्द न्यूनता के साथ हो (इलाज) सब से पहले जैसी आवश्यकता हो फस्द और दस्तों के द्वारा शरीरका मवाद निकल- ने के पीछे वे गर्म तर दवा जो नर्म करनेवाली और दर्द को रोक देने वाली हैं सूजन पर लेप करें यद्यपि रोग का आरम्भ ही हो और जो दवा मवादको हटानेवालीहैं उनसे सावधानी करें परन्तु वे उनके विरुद्धहैं जो दूसरी जगह उत्पन्न हो जिनका इलाज आरम्भ में मवादके हटाने के साथ है क्योंकि कानकी जड ऐसी जगहहै कि दिमाग का मैल उसपर गिरताहै सो जो मवादके हटानेवाली दवाईयोंको लगावे तो इस बातका भयहै कि वही मैल दिमागकी तरफ जो शरीरका प्रधानअंग और रक्षकहै पलटजाय और हकीमलोग जो चीजें इस रोगके लेपमें लगातेहैं वह दवाएँ यहहैं सांये का आटा, बाबूना, अलसी, गुलरोगन, मोम इन सब दवाओंको आपसमें मिलाकर गुनगुना लेपकरे और कनेरकी पत्ती घीमें तली हुई उसी प्रकारका गुण करतीहै और जो सूजन बो- हरान के कारणसे होता मवादके इकठा करनेमें परिश्रम करें जिससे उस जगह बहुतसा मवाद खिचआवे जिसतरह बनपडे और जिस रोगीकी सूजनमें आ- रम्भसे विशेप दर्द होतो एक कपडा गुनगुने निर्मल पानीमें भिगोकर उसपर रखदे तो दर्द कमहोजाताहै और जब मालूम हो कि सूजनमें पककर पीव पडे गी और नष्ट न होगी तो सूजनके पकानेवाली दवा उसपर लगावें परन्तु जो वादी के कारणसे सूजन होतो आरम्भ में ठंडी चीजें जैसे कपूरका मरहम और ताजी हरी मकोय का पानी लगासकते है जिससे सूजन न बढे और ठंडी द- वाओंके लगाने की आज्ञा इस सूजनमें इस लिये है कि वादीका गाढा मवाद जल्द नहीं हटता और ठंडी चीजों के लगानेसे विशेषभी नहीं होताहै।

आठवां प्रकरण।

कानकी जडमें घाव होनेका वर्णन।

इस रोगको किलाब्ल उजनभी कहते है यह कानका पकना बहुधा बालकों के हुआ करताहै क्योंकि उनकी खाल नर्म हुआकरती है (इलाज) दोनों कन पटी और कानकी जडमें हजामत बनवाकर सिपोंका दूध मलें जिससे मवाद की तरी कम होजाय और पीवभी दूर होजाय इसके पीछे मुर्दासिंह और फथीला महीन पीसकर उसपर बुरकदें।

जो सूजन कफ के कारणसे होतीहै उसका एक चिन्ह यह है कि नर्मी हो लाली और भारापन कमहो और जो सूजन वादी के कारण से हो उसका यह चिन्ह है कि कठोरता और दर्द न्यूनता के साथ हो (इलाज) सब से पहले जैसी आवश्यकता हो फस्द और दस्तों के द्वारा शरीरका मवाद निकल्ने के पीछे वे गर्म तर दवा जो नर्म करनेवाली और दर्द को रोक देने वाली है सूजन पर लेप करें यद्यपि रोग का आरम्भ ही हो और जो दवा मवादको हटानेवालीहैं उनसे सावधानी करें परन्तु वे उनके विरुद्धहैं जो दूसरी जगह उत्पन्न हो जिनका इलाज आरम्भ में मवादके हटाने के साथ है क्योंकि कानकी जड ऐसी जगहहै कि दिमाग का मैल उसपर गिरताहै सो जो मवादके हटानेवाली दवाईयोंको लगावे तो इस बातका भयहै कि वही मैल दिमागकी तरफ जो शरीरका प्रधानअग और रक्षकहै पलटजाय और हकीमलोग जो चीजें इस रोगके लेपमें लगातेहैं वह दवाएं यहहैं सांये का आटा, बाबूना, अलसी, गुलरोगन, मोम इन सब दवाओंको मामसे मिलाकर गुनगुना लेपकरे और कनेबकी पत्ती घीमें तली हुई उसी प्रकारका गुण करतीहै और जो सूजन वांहरान के कारणसे होता मवादके इकठा करनेमें परिश्रम करें जिससे उस जगह बहुतसा मवाद खिचआवे जिसतरह बनपडे और जिस रोगीकी सूजनमें आरम्भसे विशेप दर्द होतो एक कपडा गुनगुने निर्मल पानीमें भिगोकर उसपर रखदे तो दर्द कमहोजाताहै और जब मालूम हो कि सूजनमें पककर पीव पडेगी और नष्ट न होगी तो सूजनके पकानेवाली दवा उसपर लगावें परन्तु जो वादी के कारणसे सूजन होतो आरम्भ में ठढी चीजें जैसे कपूरका मरहम और ताजी हरी मकोय का पानी लगासकते है जिससे सूजन न बढे और ठढी दवाओंके लगाने की आज्ञा इस सूजनमें इस लिये है कि वादीका गाढा मवाद जल्द नहीं हटता और ठढी चीजों के लगानेसे विशेपभी नहीं होताहै ।

आठवां प्रकरण।

कानकी जडमें घाव होनेका वर्णन ।

इस रोगको किलाबल उजनभी कहते है यह कानका पकना बहुधा बालकों के हुआ करताहै क्योंकि उनकी खाल नर्म हुआकरती है (इलाज) दोनों कनपटी और कानकी जडमें हजामत बनवाकर स्त्रियोंका दूध मलें जिससे मवाद की तर्जी कम होजाय और पीवभी दूर होजाय इसके पीछे मुर्दासिंह और फफीला महीन पीसकर उसपर बुरकदे ।

॥ चौथा अध्याय ॥

❀ नाक के रोगों का वर्णन ❀

नाक में से ऊपर का आधा भाग तो हड्डी है और नीचे का आधा नर्म-भी हड्डी है और नाक का मार्ग मिस्फात् (एक हड्डी है जो नाक के सूराखों पर रक्खी हुई है) खुला हुआ है और मिस्फात के बराबर दिमाग की झिल्ली में एक मार्ग है कि उसी मार्ग से सुगन्ध प्रवेश होकर दिमाग में पहुचती है और वह दोनों विशेष वस्तु दिमाग के प्रथम भाग म से स्तनों के अग्र भाग के समान निकली है और हकीम लोग उस को हिलमत्तुसुदा कहते हैं और दिमाग का मैल भी इसी मार्ग से बाहर की तरफ निकलता है और नाक के छेद में से दो मार्ग तालु की तरफ इस लिये खुले हुए हैं जिन से श्वास बाहर आता है और नाक के रास्ते से हवा खिंचकर भीतर जाती है और आवाज साफ रहती है इसी कारण से जुकाम और नजले में जब कि इन दोनों मार्गों में तरी आजाती है तो आवाज बिगड जाती है और परम पवित्र दयालु ईश्वर ने जैसा कि नाक को मुख के लिये शोभायमान किया है सूघने की शक्ति और आवाज को साफ रखना भी उस को सौंपा है धन्य है उस परमात्मा सृष्टि कर्ता को ॥ इस अध्याय में ग्यारह प्रकर्ण हैं ।

॥ पहिला प्रकरण ॥

❀ खश्म का वर्णन ❀

इस रोग की यह दशा है कि सूघने की शक्ति नष्ट होजाती है यदि वह जन्मसे हैं तो इलाज नहीं है और जो ऊपरी है तो कारणके अनुसार सात भेदों में बांटी गयी है । पहला भेद तो यह है कि नाक के मार्ग में विशेप मास का लोथडा जम जाय और गन्धयुक्त हवा को घ्राणेन्द्रिय में न जाने दे । हकीम लोग इसको बवासीर उलअफन अर्थात् नाक की बवासीर कहते हैं और यह मांस का लोथडा जो बवासीरी मस्सेके समान होताहै बहुधा सफेद होताहै तो उसके साथ में दर्द नहीं होताहै और इस का इलाज बहुत सहज है और जो लाल और स्याही लिए हुए होता है तो बहुत दर्द के साथ होता है और इस का इलाज कठिन है मुख्य कर जो पीला पानी दुर्गंधित उसमें स बहा करें और यह मांस का लोथडा कभी इतना बढ जाता है कि नाक का छेद उस से भरजाता है और कभी इत-

॥ चौथा अध्याय ॥

❋ नाक के रोगों का वर्णन ❋

नाक में से ऊपर का आधा भाग तो हड्डी है और नीचे का आधा चर्बी हड्डी है और नाक का मार्ग मिस्फात् (एक हड्डी है जो नाक के सूटों पर रक्खी हुई है) खुला हुआ है और मिस्फात के बराबर दिमाग की झिल्ली में एक मार्ग है कि उसी मार्ग से सुगन्ध प्रवेश होकर दिमाग में पहुचती है और वह दोनों विशेष वस्तु दिमाग के प्रथम भाग म से स्तनों के अग्र भाग के समान निकली है और हकीम लोग उस को हिलमतुसुदा कहते है और दिमाग का मैल भी इसी मार्ग से बाहर की तरफ निकलता है और नाक के छेद में से दो मार्ग तालु की तरफ इस लिये खुले हुए हैं जिन से श्वास बाहर आता है और नाक के रास्ते से हवा खिंचकर भीतर जाती है और आवाज साफ रहती है इसी कारण से जुकाम और नजले में जब कि इन दोनों मार्गों में तरी आजाती है तो आवाज बिगड जाती है और परम पवित्र दयालु ईश्वर ने जैसा कि नाक को मुख के लिये शोभायमान किया है सूघने की शक्ति और आवाज को साफ रखना भी उस को सौंपा है धन्य है उस परमात्मा सृष्टि कर्ता को ॥ इस अध्याप में ग्यारह प्रकर्ण हैं।

॥ पहिला प्रकरण ॥

❋ खश्म का वर्णन ❋

इस रोग की यह दशा है कि सूघने की शक्ति नष्ट होजाती है यदि वह जन्मसे हैं तो इलाज नहीं है और जो ऊपरी है तो कारणके अनुसार सात भेदों में बांटी गयी है। पहला भेद तो यह है कि नाक के मार्ग में विशेष मास का लोथडा जम जाय और गन्धयुक्त हवा को घ्राणेन्द्रिय में न जाने दे। हकीम लोग इसको बवासीर उलअफन अर्थात् नाक की बवासीर कहते हैं और यह मांस का लोथडा जो बवासीरी मस्सेके समान होताहै बहुधा सफेद होताहै तो उसके साथ में दर्द नहीं होताहै और इस का इलाज बहुत सहज है और जो लाल और स्याही लिए हुए हाता है तो बहुत दर्द के साथ होता है और इस का इलाज कठिन है मुख्य कर जो पीला पानी दुर्गंधित उसमें स चढा करें और यह मांस का लोथडा कभी इतना बढ जाता है कि नाक का छेद उस से भरजाता है और कभी इत-

की विधि यहहै कि सीसे की नलकी अथवा परकी जड लेकर उसपर कपडा लपेटकर मासके खानेवाली दवाई उसपर लगाकर उसको नाकके भीतरलावें और यह काम जबतक प्रयोजन सिद्ध न हो बराबर करतेरहे और नलके छेद के कारणसे और परके भीतर पोल होनेसे श्वास आने की जगह खुली रहेगी। दूसरा भेद यहहै कि नाकके छेदमें नर्म सूजन उत्पन्नहो और वह चौडाई में बडी हो और उसमें बहुतसी महीन रगें प्रगट हो इस कारणसे इस सूजन का कसीरउल अरजल और विस्फायज कहतेहैं क्योंकि यह मछलीके समान है। और यह मछली भी नर्म और मुलायम होतीहै और छोटे २ बहुतसे पांव रखतीहै न उसमें कांटेहैं न हड्डीहै और किताब कामिलुससनाआके लिखने वालेने कहाहै कि मछली रोबियां को जब कोई शिकार करना चाहताहै तो वह मछली अपने पांवसे अपनी नाक का छेद बंदकरलेती है जैसे यह सूजन नाक का छेद बंद करतीहै तो इस समतासे यह इसका नाम हुआहै और इस सूजन का यह प्रभावहै कि जब नाकके भीतर उत्पन्न होतीहै तो बारीक २ लाल और हरी रगें जसे रोबियां मछलीके पाव नाकके बाहर दिखाई देतेहैं और कभी यह सूजन घायल होकर उसमें से पीला पानी और तरी बहा करतीहै और कभी यह सूजन सरतानी अर्थात् केकडेके समान बढजाती है और नाक की सूरत को बिगाडदेती है और इस प्रकार का चिन्ह यहहै कि सूजन सरतान होनेकी तरफ झुकी हुईहै या नहीं तो इस विधि परहै कि सूजन जैसी थी उससे विशेष कडी होजाय और पहलेकी अपेक्षा दर्दमें बहुत कमी हो और उस सूजन की रगें तमाम हरी होकर खिंचजांय आंखों की पलकके भीतर खिचावट मालूमहो (इलाज) गोली और यारजसे दिमागके मवाद को निकालें और रसोत खुर्र, तरज़फा जैतूनके तेलकी गाद, सुर्दासन, मेथी, अथवा अलसी के लुआबमें मिलाकर सूजन पर लेप करें और जब तक कि सूजन अच्छी तरह नर्म न हो उन दवा ओं को लगाते रहें फिर नश्तर से पछने लगाकर खून निकालें अथवा जोंकें लगावें परन्तु सरतानी सूजन में चाहिये कि उसके इलाज में लोहे के औजार काममें न लावें और दवाएं मांसके नष्ट करने वाली भी उस पर न लगावें क्योंकि जो सरतानी सूजन घायल होगयी हो तो इसका उभरना कठिन है यद्यपि दर्द की अधिकता से दिमाग के पर्दे में सूजजाने की नौबत पहुचे और रोगी को मारडालें इसलिये यह बात अवश्य है कि सरतानी सूजनपर सदाकीरूती अर्थात् मोमका तेल लगातेरहें

की विधि यहहै कि सीसे की नलकी अथवा परकी जड लेकर उसपर कपडा लपेटकर मासके खानेवाली दवाई उसपर लगाकर उसको नाकके भीतरलावें और यह काम जबतक प्रयोजन सिद्ध न हो बराबर करतेरहै और नलके छेद के कारणसे और परके भीतर पोल होनेसे श्वास आने की जगह खुली रहेगी। दूसरा भेद वहहै कि नाकके छेदमें नर्म सूजन उत्पन्नहो और वह चौडाई में बडी हो और उसमें बहुतसी महीन रगें प्रगट हो इस कारणसे इस सूजन का कसीरउल अरजल और विस्फायज कहतेहैं क्योंकि यह मछलीके समान है। और यह मछली भी नर्म और मुलायम होतीहै और छोटे २ बहुतसे पांव र खतीहै न उसमें कांटेहैं न हड्डीहै और किताब कामिलुससनाआके लिखने वालेने कहाहै कि मछली रोबियां को जब कोई शिकार करना चाहताहै तो वह मछली अपने पांवसे अपनी नाक का छेद वदकरलेती है जैसे यह सूजन नाक का छेद वद करतीहै तो इस समतासे यह इसका नाम हुआहै और इस सूजन का यह प्रभावहै कि जब नाकके भीतर उत्पन्न होतीहै तो वारीक २ लाल और हरी रगें जसे रोबियां मछलीके पाव नाकके बाहर दिखाई देतेहैं और कभी यह सूजन घायल होकर उसमें से पीला पानी और तरी बहा क-रतीहै और कभी यह सूजन सरतानी अर्थात् केकडेके समान बढजाती है और नाक की सूरत को बिगाडदेती है और इस प्रकार का चिन्ह यहहै कि सूजन सरतान होनेकी तरफ झुकी हुईहै या नहीं तो इस विधि परहै कि सूजन जैसी थी उससे विशेष कडी होजाय और पहलेकी अपेक्षा दर्दमें बहुत कमी हो और उस सूजन की रगें तमाम हरी होकर खिंचजांय आंखों की पलकके भीतर खिचावट मालूमहो (इलाज) गोली और पारजसे दिमागके मवाद को निकालें और रसौत मुर्र, बरजफा जैतूनके तेलकी गाद, सुर्दासन, मैथी, अथवा अलसी के लुआबमें मिलाकर सूजन पर लेप करें और जब तक कि सूजन अच्छी तरह नर्म न हो उन दवा ओं को लगाते रहें फिर नश्तर से पछने लगाकर खून निकालें अथवा जोंकें लगावें परन्तु सरतानी सूजन में चाहिये कि उसके इलाज में लोहे के औजार काममें न लावें और दवाएं मांसके नष्ट करने वाली भी उस पर न लगावें क्योंकि जो सरतानी सूजन घायल होगयी हो तो इसका उभरना कठिन है यद्यपि दर्द की अधिकता से दिमाग के पर्दे में सूजजाने की नौबत पहुचे और रोगी को मारडालें इसलिये यह बात अवश्य है कि सरतानी सूजनपर सदाकीरुती अर्थात् मोमका तेल लगातेरहें

नाकमें बोलता है और इसकी सत्यता इस तरह परहै कि बातों में अन्तर नहीं आता जब तक कि उस रास्ते में जो नाक और मुखके बीच में है किसी निकम्मे मवाद आदिसे रुकावट न आजाय जैसा कि इस अध्याय के आरम्भ में नाक के प्रकरण में वर्णन किया गया है और हकीम इन्चिया सराफयून ने अपनी किताब में कहा है कि जब सूघने की ज्ञानशक्ति नष्ट होजाय तो देखना चाहिये कि बीमार अपनी नाक से भी बोलता है सो यह बात हो तो रोग नाक के छेद में है दिमाग में नहीं और जो बोल चाल अपनी दशा पर हो तो बीमारी का कारण मिस्फात् में अथवा दिमाग में है (इलाज) मवाद को मुलायम करें और दिमाग से निकालें उसके पीछे ऐसी दवाई जो मवाद को निकालें और नर्म करद जैसे कलौंजी पोदीना इन्द्रायन का गूदा, ऊट का पेशाव, नाक में अलग २ वा सबको मिला कर टपकावें। और ऐसे ही मवाद के नर्म करने वाली दवाओं को पानी में औटाकर तरे डादेवै और जब दवा नाक में डाली जाय तब बीमार को चाहिये कि अपने मुख में पानी भरले और सिर को पीछे की तरफ झुकावे और जोर से श्वास खींचे। छटा भेद यह है कि गाढी रीह नाक के रास्ते म बन्द होजाय और नाक की छेददार नर्म हड्डी जो स्पज के समान है और नाक के टूटके ऊपर रक्खी हुई है आरोग्य रहे इसका चिन्ह यह है कि जब बीमार नाक से भीतर का श्वास बाहर निकाले तो श्वास कठिन से बाहर निकलेगा और नाक का एक छेद सदा बंद रहेगा (इलाज) पहले दिमाग को साफ करें जिससे वह मवाद जिससे रीह पैदा होती है निकल जाय फिर काली मिर्च और कुन्दे बे-दस्तर से छींकलें और अजमोद, राई, जीरा, शीह, नम्माम्, पादीना और इस प्रकार क मवाद के पकाने वाली दवा पानी में औटा कर उसकी भाफ का भफारा देवै और कडवे बादाम के तेल में राई और थोडी सी सफेद मिर्चे मिला कर नाक में टपकावे। सातवां भेद यह है कि दिमाग के प्रथम भाग में और इन दोनों पर्दों में जो उसमें दाहिनी और बाई ओर है दुष्ट प्रकृति उत्पन्नहो या उन दोनों नाकके सूटों में जो सूघने के अग हैं दुष्ट प्रकृति उत्पन्न हो और हकीम राजीने कहा है कि सरम हफीकी (एक राग जिस में सुगन्धि न मालूम हो) यही है और जानना चाहिये कि इस प्रकार के रोग में बात चीत करने म अन्तर नहीं आता है। अब हम चारों दुष्ट प्रकृतियों के चिन्ह वर्णन करते हैं सो जो गर्म दुष्ट प्रकृति है तो गर्म चपायों का पहले होना इस

नाकमें बोलता है और इसकी सत्यता इस तरह परहै कि बातों में अन्तर नहीं आता जब तक कि उस रास्ते में जो नाक और मुखके बीच में है किसी निकम्मे मवाद आदिसे रुकावट न आजाय जैसा कि इस अध्याय के आरम्भ में नाक के प्रकरण में वर्णन किया गया है और हकीम इन्विया सराफयून ने अपनी किताब में कहा है कि जब सूघने की ज्ञानशक्ति नष्ट होजाय तो देखना चाहिये कि बीमार अपनी नाक से भी बोलता है सो यह बात हो तो रोग नाक के छेद में है दिमाग में नहीं और जो बोल चाल अपनी दशा पर हो वो बीमारी का कारण मिस्फात् में अथवा दिमाग में है (इलाज) मवाद को मुलायम करें और दिमाग से निकालें उसके पीछे ऐसी दवाई जो मवाद को निकालें और नर्म करद जैसे कलौंजी पोदीना इन्द्रायन का गूदा, कट का पेशाव, नाक में अलग २ वा सबको मिला कर टपकावें। और ऐसे ही मवाद के नर्म करने वाली दवाओ को पानी में औटाकर तरे डादेवै और जब दवा नाक में डाली जाय तब बीमार को चाहिये कि अपने मुख में पानी भरले और सिर को पीछे की तरफ झुकावे और जोर से श्वास खींचे। छठा भेद वह है कि गाढी रीह नाक के रास्ते म बन्द होजाय और नाक की छेददार नर्म हड्डी जो स्पज के समान है और नाक के ढूकडे ऊपर रक्खी हुई है आरोग्य रहे इसका चिन्ह यह है कि जब बीमार नाक से भीतर का श्वास बाहर निकाले तो श्वास कठिन से बाहर निकलेगा और नाक का एक छेद सदा बद रहेगा (इलाज) पहले दिमाग को साफ करै जिससे वह मवाद जिससे रीह पैदा होती है निकल जाय फिर काली मिर्च और जुन्दे बे-दस्तर से छींकलें और अजमोद, राई, जीरा, शीह, नम्माम्, पादीना और इस प्रकार क मवाद के पकाने वाली दवा पानी में औटा कर उसकी भाफ का भफारा देवै और कडवे बादाम के तेल में राई और थोडी सी सफेद मिर्चे मिला कर नाक में टपकावे। सातवां भेद वह है कि दिमाग के प्रथम भाग में और इन दोनों पर्दों में जो उसमें दाहिनी और बाई ओर है दुष्ट प्रकृति उत्प-न्नहो या उन दोनों नाकके सूटों में जो सूघने के अग हैं दुष्ट प्रकृति उत्पन्न हो और हकीम राजीने कहा है कि सश्म हर्कीकी (एक राग जिस में सुगन्धि न मालूम हो) यही है और जानना चाहिये कि इस प्रकार के रोग में बात चीत करने म अन्तर नहीं आता है। अब हम चारों दुष्ट प्रकृतियों के चिन्ह वर्णन करते हैं सो जो गर्म दुष्ट प्रकृति है तो गर्भ चपायों का पहले होना इस

में दुष्ट प्रकृति उत्पन्न होजावे । अब समझना चाहिये कि गर्म खुश्क और दुष्ट प्रकृति सूंघने वाली शक्ति की क्रियाओं को बिगाड कर निकम्मा कर देती है इस कारण से वह सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध को सदा ग्रहण किया करती है और वास्तव में कोई वस्तु मौजूद नहीं होती है । यद्यपि चिन्ता के कारण से सूंघने वाली शक्ति में ऐसी दशा उत्पन्न होजाती है कि बुरी और निकम्मी वस्तुओं को अच्छा जाने और अच्छी सुगन्धित वस्तुओं से घृणा करे परन्तु सर्द और तर दुष्ट प्रकृति जब तक निर्बल रहती है तब तक वह दशा के बदलने का कारण होसकती है और सूंघने वाली शक्ति एक ही गन्ध को जान सकती है चाहे वह सुगन्धि हो वा दुर्गन्धि यद्यपि वह मौजूद न हो परन्तु जो यह दोनों प्रकृति बलवान् होगी तो सूंघने वाली शक्ति को बिल्कुल नष्ट करदेंगी और किसी सुगन्धि वा दुर्गन्धि के मालूम करने का कारण न होंगी और सूंघने वाली शक्ति को किसी प्रकार की गन्ध के होने वा न होने का ज्ञान न होगा और चारों दुष्ट प्रकृतियों के चिन्ह खश्म (एक रोग है जिस में किसी चीज की गन्ध नहीं मालूम होती है) में वर्णन होचुके हैं (इलाज) इस रोग में प्रकृतिको अपनी असली दशापर लाना चाहिये । दूसरा कारण पहले प्रकार के रोगका यह है कि दिमाग के आगेके भागमें एक निकम्मा दोष आजाताहै और सूंघने वाली शक्ति उसकी गन्धको ग्रहण करलेतीहै फिर जो यह जो दोष प्रमाणमें बहुत कमहो वा कोई बुरी प्रबल दशा उसमें आगई होगी सूंघने वाली शक्ति सदा उसी को मालूम किया करेगी और जो अटकल में कम और दशा में निर्बल होगी तो उस समय इस दोष की गन्ध मालूम न होगी परन्तु जब कि मनुष्य किसी और वस्तु के सूंघने की ऊपर से इच्छा करे तो प्रगट है कि जिस वस्तुको ऊपर से सूंघता है तो यद्यपि वह सुगन्धित हो परन्तु सूंघने वाली शक्ति उस गन्धको ग्रहण न करसकेगी किंतु उसी दोष की गन्धको ग्रहण करेगी क्योंकि वही समीप और पास लगी हुई है (लाभ) दोष का भेद उसकी गन्ध से पहचान सकते हैं जैसे काली मिर्च और बालछड की सी गन्ध मालूम हो तो गर्म दोष है और जो सूंघने में सड़ीहुई गन्ध मालूम हो तो दुर्गंधित है और जो तरी की गन्ध मालूम हो तो ठंढा दोष है जो खट्टी गन्ध पाई जाती है तो बादी का दोष है (इलाज) एक दोष को दिमाग से गोलियों और कुल्लों के कराने से जिसतरह उचित हो निकालदेवे और जो वस्तु दिमाग को साफ करने वाली हैं वे भी देवे । दूसरा भेद यह है जिसमें एकही वस्तु के सूंघने से कई प्रकार की गन्ध मालूमहो । इस का यह कारण है कि जिसके दिमाग के अगले भाग की प्रकृति में कई प्रकार की विरुद्ध दशा होतीहै

में दुष्ट प्रकृति उत्पन्न होजावे । अब समझना चाहिये कि गर्म खुश्क और दुष्ट प्रकृति सूंघने वाली शक्ति की क्रियाओं को बिगाड कर निकम्मा कर देती है इस कारण से वह सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध को सदा ग्रहण किया करती है और वास्तव में कोई वस्तु मौजूद नहीं होती है । यद्यपि चिन्ता के कारण से सूंघने वाली शक्ति में ऐसी दशा उत्पन्न होजाती है कि बुरी और निकम्मी वस्तुओं को अच्छा जाने और अच्छी सुगन्धित वस्तुओं से घृणा करे परन्तु सर्द और तर दुष्ट प्रकृति जब तक निर्बल रहती है तब तक वह दशा के बदलने का कारण होसकती है और सूंघने वाली शक्ति एक ही गन्ध को जान सकती है चाहे वह सुगन्धि हो वा दुर्गन्धि यद्यपि वह मौजूद न हो परन्तु जो यह दोनों प्रकृति बलवान् होगी तो सूंघने वाली शक्ति को बिल्कुल नष्ट करदेंगी और किसी सुगन्धि वा दुर्गन्धि के मालूम करने का कारण न होंगी और सूंघने वाली शक्ति को किसी प्रकार की गन्ध के होने वा न होने का ज्ञान न होगा और चारों दुष्ट प्रकृतियों के चिन्ह खश्म (एक रोग है जिस में किसी चीज की गन्ध नहीं मालूम होती है) में वर्णन होचुके हैं (इलाज) इस रोग में प्रकृतिको अपनी असली दशापर लाना चाहिये । दूसरा कारण पहले प्रकार के रोगका यह है कि दिमाग के आगेके भागमें एक निकम्मा दोष आजाताहै और सूंघने वाली शक्ति उसकी गन्धको ग्रहण करलेतीहै फिर जो यह जो दोष प्रमाणमें बहुत कमहो वा कोई बुरी प्रबल दशा उसमें आगई होगी सूंघने वाली शक्ति सदा उसी को मालूम किया करेगी और जो अटकल में कम और दशा में निर्बल होगी तो उस समय इस दोष की गन्ध मालूम न होगी परन्तु जब कि मनुष्य किसी और वस्तु के सूंघने की ऊपर से इच्छा करे तो प्रगट है कि जिस वस्तुको ऊपर से सूंघता है तो यद्यपि वह सुगन्धित हो परन्तु सूंघने वाली शक्ति उस गन्धको ग्रहण न करसकेगी किन्तु उसी दोष की गन्धको ग्रहण करेगी क्योंकि वही समीप और पास लगी हुई है (लाम) दोष का भेद उसकी गन्ध से पहचान सकते हैं जैसे काली मिर्च और बालछड की सी गन्ध मालूम हो तो गर्म दोष है और जो सूंघने में सडीहुई गन्ध मालूम हो तो दुर्गंधित है और जो तरी की गन्ध मालूम हो तो ठंढा दोष है जो खट्टी गन्ध पाई जाती है तो बादी का दोष है (इलाज) उक्त दोष को दिमाग से गोलियों और कुल्लों के कराने से जिसतरह उचित हो निकालदेवे और जो वस्तु दिमाग को साफ करने वाली हैं वे भी देवे । दूसरा भेद वह है जिसमें एकही वस्तुके सूंघने से कई प्रकार की गन्ध मालूमहो । इस का यह कारण है कि जिसके दिमाग के अगले भाग की प्रकृति में कई प्रकार की विरुद्ध दशा होतीहै

खूब ठहर कर जगह पकड़ गई तो यही उपाय है कि जो किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले ने लिखा है और हकीम राजी की भी यही सम्मति है।

तीसरा प्रकरण।

नाक की फुन्सियों का वर्णन।

कभी नाक के भीतर कफ के मवाद या बादी के कारण से फुन्सियां निकल आती है और भीतर की गर्मी से साफ मवाद नष्ट होजाता है और बाकी गाढा होकर पथरा जाता है यहां तक कि श्वास के आने जाने में भी कष्ट होता है और ऐसाही नाक के मल निकलने में भी होता है (इलाज) जैसा मवाद हो उसके अनुसार दिमाग को साफ करे फिर फुन्सियों को नर्म करने के लिये मोम का तेल उनपर लगावे और गर्म पानी नाक में डालें जिससे मवाद नष्ट होजाय और जो इस उपाय से नष्ट न हो तो नश्तर से पछने लगावें और जो उचित हो तो मांस को नष्ट करने वाली मरहम असजद आदि उस समय तक लगावे जबतक कि बिल्कुल नष्ट न होजाय। फिर घाव भरआने के लिये सफेदा का मरहम लगावे और इस रोग के इलाज में आलस्य न करना चाहिये क्योंकि इस से बहुधा नासूर हो जाता है।

चौथा प्रकरण

नाक के घावों का वर्णन।

इन के तीन भेद है एक तो यह कि तर हो और उसका कारण खारी नोन के स्वादवाली रतूबतें होती हैं जो दिमाग से इस जगह उतर आतीहैं (इलाज) दिमाग से मवाद को निकाले जिससे जो मवाद रोग का कारण है निकलजाय उस के पीछे सफेदा, मुर्दासन, चांदी का मैल, जला हुआ सीसा, गुलनार, इनका मरहम बनाकर लगावे। दूसर यह कि खुश्क हो और यह रोग बहुधा बहुत होता है और जले हुए दोषों से उत्पन्न होता है (इलाज) नीलोफर का तेल तथा मुर्गी और बतक की चर्बी मले और मरहम असफेदाज, पीला मोम, कडवे बादाम का तेल, बनफशा तेल, गाय की नली का गूदा, इनकी कीरूती बनाकर बिहीदाने के लुआब न मिलाकर लगावे अर्थात् मोम को तेलों में औटाकर और ठंडा करके तैयार किया हुआ लुआब इस में डालकर और अच्छी तरह मलकर पिलावे। तीसरे यह कि घाव में बहुत दिन होजाने से वा दुर्गन्धित रतूबतों के आनाने से सड़ाहट आजाय। सफेद कत्था और हाल्म बराबर पीसकर नाक में फूंकें इनके पीछे अंगूरी सिर्के से घावकोधोवें और सुर्मा बारीक पीसकर नाक में फूंकें, यदी

खूब ठहर कर जगह पकड़ गई तो यही उपाय है कि जो किताब शरह अ-स्बाब के बनाने वाले ने लिखा है और हकीम राजी की भी यही सम्मति है।

तीसरा प्रकरण ।

नाक की फुन्सियों का वर्णन ।

कभी नाक के भीतर कफ के मवाद या बादी के कारण से फुन्सियां निकल आती हैं और भीतर की गर्मी से साफ मवाद नष्ट होजाता है और बाकी गाढा होकर पथरा जाता है यहां तक कि श्वास के आने जाने में भी कष्ट होता है और ऐसाही नाक के मल निकलने में भी होता है (इलाज) जैसा मवाद हो उसके अनुसार दिमाग को साफ करे फिर फुंसियों को नर्म करने के लिये मोम का तेल उनपर लगावे और गर्म पानी नाक में डालें जिससे मवाद नष्ट होजाय और जो इस उपाय से नष्ट न हो तो नश्तर से पछने लगावें और जो उचित हो तो मांस को नष्ट करने वाली मरहम असजद आदि उस समय तक लगावै जबतक कि बिल्कुल नष्ट न होजाय। फिर घाव भरआने के लिये सफेदा का मरहम लगावे और इस रोग के इलाज में आलस्य न करना चाहिये क्योंकि इस से बहुधा नासूर हो जाता है।

चौथा प्रकरण

नाक के घावों का वर्णन ।

इन के तीन भेद है एक तो यह कि तर हो और उसका कारण खारी नौन के स्वादवाली रतूबतें होती हैं जो दिमाग से इस जगह उतर आतीहैं (इलाज) दिमाग से मवाद को निकाले जिससे जो मवाद रोग का कारण है निकलजाय उस के पीछे सफेदा, मुर्दासन, चांदी का मैल, जला हुआ सीसा, शुक्रगान, इनका मरहम बनाकर लगावे। दूसर यह कि खुश्क हो और यह रोग बहुधा बहुत होता है और जले हुए दोषों से उत्पन्न होता है (इलाज) नीलोफर का तेल तथा मुर्गी और बतक की चर्बी मले और मरहम अलियजा, पीला मोम, कद्दू बादाम का तेल, बनफ्शा तेल, गाय की नली का गूदा, इनकी कीरूती बनाकर बिहीदाने के लुआब में मिलाकर लगावे अर्थात् मोम को तेलों में औटाकर और ठंडा करके निकाला हुआ लुआब इस में डालकर और अच्छी तरह मलकर पिलावे। तीसरे यह कि घाव में बहुत दिन होजाने से वा दुर्गन्धित रतूबतों के आने से सड़ाहट आजाय। सफेद खरबक और हाऊम बराबर पीसकर नाक में फूंकें इसके पीछे अंगूरी सिर्के से घावकोधोवें और मुर्दे बारीक पीसकर नाक में फूंके यही

ऐसेही पोदीना और गधे की लीद का पानी थोड़ेसे कपूर के साथ और इसी तरह माजू धनियां, चक्की की झाड़न, कुंदरुगोंद, एलुआ, हीराडुखीगोंद, फिटकिरी बारीक पीसले जब खूब महीन होजाय तो रहनेदे और एक बत्ती कागज या कपड़े की बनाकर उसको गधे की लीद के पानी में वा अडेकीसफेदी में भरले फिर उक्त दवाओं को उसपर बुरककर नाक में रक्खे और उचित है कि उन पिसी हुई दवाओं को नल्की से नाक में फूकें और मकड़ी का जाला स्याही में भिगोकर और चक्की का झाड़न उसपर बुरककर नाक में रक्खें तो जल्दी नकसीर को बंद करदेती है और केवल गधे की लीद का पानी नाक में टपकाना परीक्षा किया हुआ है और बाहु और जांघ का बांधना और मलना तथा ऐसेही दोनों कानों और दोनों अंडकोशों और छातिओं का मलना और बांधना नकसीर बंद करने में अधिक गुण रखता है परन्तु ऐसा बांधना चाहिये कि दर्द मालूम हो और गुद्दीपर सींगयां लगवाना लाभदायक है और जो दाहने नथने से खून बहता हो तो जिगर पर पछने लगाना लाभदायक है और बांये नथने में विपत्ति होतो तिल्ली पर लगाना लाभदायकहै (सूचना) हकीम जालीनूस और हकीम इब्नसराफयन के मतमें बाहु और जांघ के बांधनेकी यह विधि है कि हाथका बगलसे लेकर हथेली तक और पांवको चड्ढो से लेकर पांव तक सब बांधना चाहिये और बगल और जांघकी जड़से बांधना आरम्भ करै और हकीम राजी कहवाहै कि इस तरहका बांधना बड़ी चूककी बातहै केवल अंगकी जड़को बांधदे जैसे हाथको बगलके पास और पांवको चड्ढेसे मिलाकर बांधै केवल नीचकी तरफमें उनको उसी तरह छोड़दे इसलिये कि इसतरफ खून खिंचकर नीचे उतरआवे और उतनीही जगह पावे और जो सब अंग बंधा होगा तो मवाद अच्छी तरह नीचे न उतरेगा और उचितहै कि यहां आनेकी जगह न पावेगा तो फिर लौटजायगा और बड़े कष्टमें डालेगा । प्रत्येक दशामें जो देहमें खून भराहुआ होतो अवश्य हकीम राजीकी कहावत मानने योग्यहै । तीसरे यहहै कि जो रगें और दिलकी रगें कि जो दिमाग के नीचेकी झिल्ली मेंहै और उस झिल्लीको शव किया और यूनानीमियां कहतेहैं खूनके भरजानेकी अधिकता से खुलजाय और नाक में से खून निकाले । इस प्रकार का यह चिन्ह है कि पहले सिर में विशेष दर्द उत्पन्न हो और मुख और आंखों में लाली प्रकट हो उसके पीछे नकसीर फूटे और जानना चाहिये कि जब खून उछल कर निकले और पतला और नि-

ऐसेही पोदीना और गधे की लीद का पानी थोड़ेसे कपूर के साथ और इसी तरह माजू धनियां, चक्की की झाडन, कुंदरुगोंद, एलुआ, हीरादुखीगोंद, फिटकिरी बारीक पीसले जब खूब महीन होजाय तो रहनेदे और एक बत्ती कागज या कपड़े की बनाकर उसको गधे की लीद के पानी में वा अडेकीसफेदी में भरले फिर उक्त दवाओं को उसपर बुरककर नाक में रक्खे और उचित है कि उन पिसी हुई दवाओं को नल्की से नाक में फूकें और मकड़ी का जाला स्याही में भिगोकर और चक्की का झाडन उसपर बुरककर नाक में रक्खें तो जल्दी नकसीर को बद करदेती है और केवल गधे की लीद का पानी नाक में टपकाना परीक्षा किया हुआ है और बड और जांघ का बांधना और मलना तथा ऐसेही दोनों कानों और दोनों अडकोशों और छातियों का मलना और बांधना नकसीर बद करने में अधिक गुण रखता है परन्तु ऐसा बांधना चाहिये कि दर्द मालूम हो और गुद्दीपर सींगयां लगवाना लाभदायक है और जो दाहिने नथने से खून बहता हो तो जिगर पर पछने लगाना लाभदायक है और बांये नथने में विपत्ति होतो तिल्ली पर लगाना लाभदायकहै (सूचना) हकीम जालीनूस और हकीम इब्नसराफ़यन केम तमें बड और जांघ के बांधनेकी यह विधि है कि हाथका बगलसे लेकर हथेली तक और पांवको पट्ठो से लेकर पांव तक सब बांधना चाहिये और बगल और जांघकी जडसे बांधना आरम्भ करे और हकीम राजी कहताहै कि इस तरहका बांधना बड़ी चूककी बातहै केवल अगकी जडको बांधदें जैसे हाथको बगलके पास और पांवको पट्ठेसे मिलाकर बांधे केवल नीचेकी तरफमें उनको उसी तरह छोडदे इसलिये कि इसतरफ खून खिचकर नीचे उतरआवे और उतनीही जगह पावे और जो सब अग बधा होगा तो मवाद अच्छी तरह नीचे न उतरेगा और उचितहै कि यहां आनेकी जगह न पावेगा तो फिर लौटजायगा और बड़े कष्टमें डालेगा । प्रत्येक दशाम जो देहमें खून भराहुआ होतो अवश्य हकीम राजीकी कहावत मानने योग्यहै । तीसरे यहहै कि जो रगें और दिलकी रगें कि जो दिमाग के नीचेकी झिल्ली मेंहै और उस झिल्लीको शव किया और खुशीमियां करतेहैं खूनके भरजानेकी अधिकता से खुलजाय और नाक में से खून निकाले । इस प्रकार का यह चिन्ह है कि पहले सिर में विशेष दर्द उत्पन्न हो और मुख और आंखों में लाली प्रकट हो उसके पीछे नकसीर फूटे और जानना चाहिये कि जब खून पक कर निकले और पतला और नि-

मवाद बहुत भरा हो और जिस मनुष्य की नाक से खून बहुत निकले इन सब को छींक हानिकारक है परंतु तीन मनुष्यों को छींक लाभदायक है एक तो उसको जिसके सिर में थोड़े भाफ के परमाणु या रीह अथवा थोड़ा सा मवाद हो। दूसरे उसको जिसके दिमाग में पकाहुआ मवाद हो इसी कारण से जुकाम के अंतमें अच्छा है यद्यपि मवाद गाढा और बहुतहो और जब पकाहो और छींक आवे तो दिमाग के बलवान होने का चिन्ह है इसी कारण से मृत्युके समीप छींक नहीं आया करतीहै क्योंकि दिमाग निर्बल होजाताहै। तीसरे स्त्रियों के बालक होने के समय क्योंकि छींक बालक और उस झिल्ली को जिसमें बालक लिपटा रहता है बाहर निकालने के लिये सहायता करती है (इलाज) जिस समय छींक विशेष आनेलगें और आवश्यकता नहीं और रोकना चाहे तो सुगन्धित गुलरोगन और बेदका तेल नाकमें सुड़के और गुनगुने मीठे पानीसे सिरपर तरड़ादें और गुनगुना तेल कानों पर और कानों की जड़ पर मलें और गर्म हरीरा पीवे और तकिया गर्म करके गुद्दी के नीचे रक्खे और हाथ, पांव, आंख, कान, और तालू मलें और आज्ञादें कि बिछौने पर लेटकर करवटें बदले और चिन्ता करना और काममें लिप्तहोना और उस पर संतोष करना और सबको सूंघना छींक के रोकनेमें सहायता करते हैं और उचित है कि धूआं धूल तथा अन्य वस्तुओंसे जो छींकके आने का कारणहै उनसे बचते रहें (सूजन) यदि छोटे बच्चे को छींकें आतीहों तो बकरी का गुर्दा अग्नि के ऊपर भून और जो पानी उसम से टपके तो उसको लेकर बच्चे की नाकके भीतर मले अथवा नाक में टपकावें॥

॥ नवां प्रकरण ॥

नाकके सूज जाने का वर्णन।

जानना चाहिये कि नाकके सूजजाने के तीन कारण हैं एकतो विशेष गर्मी जैसे तप माहर्रका (वह पित्त ज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर और दिल और जिगर के समीप होवाहै) म उत्पन्नहोती है दूसरे विशेष खुश्की जो नाक की तरीको नष्ट करदेती है जैसे तपेदिक वह ज्वर जिसकी गर्मी मुख्य अंगों के साथ अर्थात् दिल जिगर और दिमाग के साथ सम्बन्धित हो। तीसरे छेददार दोष कि नाक के भीतर चिपट कर उस जगह हवा की गर्मी स सूसलाप और मार्ग बन्द होने के कारण से वहतरी जो दिमाग से उतरती है और नाकको तर रखती है न आने पावे इस कारण से सूजजाय (इलाज)

मवाद बहुत भरा हो और जिस मनुष्य की नाक से रूम बहुत निकले ॥ सब को छींक हानिकारक है परन्तु तीन मनुष्यों को छींक लाभदायक एक तो उसको जिसके सिर में थोड़े भाफ के परमाणु या रीह अथवा थोड़ा सा मवाद हो । दूसरे उसको जिसके दिमाग में पकाहुआ मवाद हो इसी कारण से जुकाम के अंतमें अच्छा है यद्यपि मवाद गाढा और बहुतहो और जल पकाहो और छींक आवे तो दिमाग के बलवान होने का चिन्ह है इसी कारण से मृत्युके समीप छींक नहीं आया करतीहै क्योंकि दिमाग निर्बल होजाताहै तीसरे स्त्रियों के बालक होने के समय क्योंकि छींक बालक और उस झिल्ली को जिसमें बालक लिपटा रहता है बाहर निकालने के लिये सहायता करती है (इलाज) जिस समय छींक विशेष आनेलगें और आवश्यकता नहीं और रोकना चाहे तो सुगन्धित गुलरोगन और बेदका तेल नाकमें सुडके और गुनगुने मीठे पानीसे सिरपर तरडादें और गुनगुना तेल कानों पर और कानों की जड़ पर मलें और गर्म हरीरा पीवे और तकिया गर्म करके गुद्दी के नीचे रक्खे और हाथ, पांव, आख, कान, और तालू मलें और आज्ञादें कि बिछोने पर लेटकर करवटें बदले और चिन्ता करना और काममें लिप्तहोना और उस पर संतोष करना और सेवको सूंघना छींक के रोकनेमें सहायता करते हैं और उचित है कि धूआं धूल तथा अन्य वस्तुओंसेजो छींकके आने का कारणहै उनसे बचते रहें (सूजन) यदि छोटे बच्चे को छींकें आतीहों तो बकरी का गुर्दा अग्नि के ऊपर भून और जो पानी उसम से टपके तो उसको लेकर बच्चे की नाकके भीतर मले अथवा नाक में टपकावें ॥

॥ नवां प्रकरण ॥

नाकके सूज जाने का वर्णन ।

जानना चाहिये कि नाकके सूजजाने के तीन कारण हैं एकतो विशेष गर्मी जैसे तप माहरका (वह पित्त ज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर और दिल और जिगर के समीप होताहै) म उत्पन्नहोती है दूसरे विशेष खुश्की जो नाक की तरीको नष्ट करदेती है जैसे तपेदिक वह ज्वर जिसकी गर्मी मुख्य अंगों के साथ अर्थात् दिल जिगर और दिमाग के साथ सम्बंधित हो । तीसरे छेददार दोष कि नाक के भीतर चिपट कर उस जगह हवा की गर्मी स मुसलाप और मार्ग बन्द होने के कारण से वहतरी जो दिमाग से उतरती है और नाकको तर रखती है न आने पावे इस कारण स सूजजाय (इलाज)

... रोगी के नकसीर के आने का चिन्ह और चहरे में लाली ... और आंखों के आगे बिजली की सी चमक मालूम हो तो रग खोले ... ॥

ग्यारहवां प्रकरण॥

... में घुसी हुई वस्तुओं के निकालने का वर्णन ।

... चीज कि नाक में घुसजाय और वहीं रहजाय उसके निकालने का ... चाहे तो जो दवा छींक लानेवाली हैं जैसे नकछिकनी, सफेद ..., काली मिर्च, जुन्दे वेदस्तर और राई कूट छानकर मुगके परसे उड़ाकर ... में प्रवेश करें या नलकी से फूकदें और दूसरे छेद को जो खाली है वद ... और मुखकी तरफ से श्वासलें जिससे जिस समय छींक आवें तो उस ... ओर से वह चीज बाहर निकलपड़े और जगली तुलसी, अकरकरा और ... भी छींक ले आते हैं और प्रगटहै कि किसी जगह छींकलाने की आवश्यकता होती है परन्तु गर्म प्रकृति वाले को इन चीजों का सेवन न करना मुख्य है (सूचना) बहुधा नजला और जुकाम का वर्णन करना इस स्थान में योग्य था परन्तु किताव शरह असवाव बनाने वालकी सम्मतिके अनुसार ... बीमारियोंके प्रकरणोंके अन्तमें इस्तिलाज अर्थात् अगया फड़कना और फीहलज (हवा के बिगड़ना) के पीछे उनका वर्णन ... गया है ॥

पांचवां अध्याय

जिव्हा और ... रोगों के ... ।

इनमें से प्रत्येक का वर्ण... प्रकरणों ... और ... इस का मार्ग भोजन के आग... अग है ... रापीन अर्थात् दिलकी रगों से ... जि... हो बना हुआ है और दिलकी ... जीभ की जड़में एक मांसका ल... निकलता है और जीभ का तर... ता है और यद्यपि जीभ के दो ... हैं परन्तु एक दिखाई देता है ... का अभिप्राय इसी व कारण से ...

... रोगी के नकसीर के आने का चिन्ह और चहरे में लाली ... आंखों के आगे बिजली की सी चमक मालूम हो तो रग सरा ... खुलें ॥

ग्यारहवां प्रकरण॥

...में घुसी हुई वस्तुओं के निकाळने का वर्णन।

...चीज कि नाक में घुसजाय और वहीं रहजाय उसके निकालने का ... चाहे तो जो दवा छींक लानेवाली हैं जसे नकछिक्नी, सफेद ... काली मिर्च, जुन्दे वेदस्तर और राई कूट छानकर मुगके परसे उठाकर ... में प्रवेश करें या नलकी से फूकदें और दूसरे छेद को जो खाली है वद करदें और मुसकी तरफ से श्वासलें जिससे जिस समय छींक आवें तो उस ... ओर से वह चीज वाहर निकलपडे और जगली तुलसी, अकरकरा और एलवा भी छींक ले आते हैं और प्रगटहै कि किसी जगह छींकलाने की आवश्यकता होती है परन्तु गर्म प्रकृति वाले को इन चीजों का सेवन न करना मुख्य है (सूचना) वहुधा नजला और जुखाम का वर्णन करना इस स्थान में योग्य था परन्तु किताव शरह असवाव वनाने वालकी सम्मतिके अनुसार जिनकी वीमारियोंके प्रकरणांके अन्तमें इस्तिलाज अर्थात् अगया फडकना और फीहलज (हवा के विगडना) के पीछे उनका वर्णन ... गया है ॥

पांचवां अध्याय

जिव्हा और ... रोगों के ...

इनमें से प्रत्येक का वर्... प्रकरणों ... और ...

इस का मार्ग भोजन के अग... अग है ...

शरीर अर्थात् दिलकी रगों ... जिर...

से बना हुआ है और दिलकी ...

जीभ की जडमें एक मांसका ल...

निकलता है और जीभ का तर...

... है और यद्यपि जीभ के दो ...

और मवाद के निकालने के पीछे अजीर और मेथी को अलसी के पानी में औटाकर बनफशा का तेल और शहद और अमलतासका शीरा मिलाकर कुल्ला करें और हरा काहू, कासनी, और हरे धनिये का निचोड़ा हुआ पानी बहुधा मुख में रखना चाहिये जिस से गर्म दवाओं के लगाने से मवाद की तेजी न बढ़ और सूजन न हो जाय (सूचना) उचित है कि विषैली चीजों का खाना जैसे अफीम और फित्र * को छोड़ देवे जानना चाहिये कि जिस दुष्ट प्रकृति से सूजन की दशा उत्पन्न होजाय तो उसका वैसा ही उपाय करें जैसा उसका कारण हो जैसे जो खून के कारण से हो तो फस्द खोलें और हरी बारतंग के पानी और सिर्के और गुलाब से कुल्ला करें और बादाम का तेल और नीलोफर का तेल और कपूर मुख में रक्खें और इसी तरह जैसा कारण के अनुसार हो वैसाही गुणकारी चीजों से इलाज कर सकते हैं और जो दुष्ट प्रकृति सादा हो तो उस में मवाद के निकालने की आवश्यकता नहीं है केवल समान करना ही लाभदायक है ॥

॥ दूसरा प्रकरण ॥

❀ मुख के स्वाद बिगड जाने का वर्णन ❀

इस के दो भेद हैं—पहिले यह है जिस में मुख का स्वाद बिल्कुल बिगड़ जाता है और वह इस प्रकार पर है बिल्कुल स्वाद मालूम न हो और यह सवाद का बिगड़ना कभी इस दशा को पहुंच जाता है बीमार सर्दी और गर्मी को न पहचान सके अर्थात् जीभ की ज्ञानशक्ति में अन्तर आजाय। और यह बात प्रकट है सर्दी और गर्मी का सम्बन्ध ज्ञानशक्ति के छूने के साथ है कि सब ज्ञान वाले पट्ठा जो जीभ पर बिछा हुआ है उस में मैल मक्कड़ की रतूबत इकट्ठी हो जाय और यह पट्ठा उस को पी जाय और फिर स्वादवाली शक्ति के प्रवेश होने के मार्ग बन्द होजाय और पट्ठे की तरी का पीना और न पीने से सूजन और तरी से उत्पन्न हुए ढिलाढिलेपन में अन्तर हो सक्ता है (इलाज) सर्दी का पानी पिलावें जिस से मैल में नर्मी और पकाव आजाय इस के पीछे यारजफ़ैकरा और कोकायाकी गोली से दिमाग को साफ करें और इसी तरह अकरकरा, और पहाड़ी मुनक्का, राई, पानी में औटाकर के कुल्ला करें और जानना चाहिये कि जितनी गर्म चीजों के लगाने का वर्णन हुआहै वह उस से

* फित्र पुन्सीका एक भेद है जो सब से बुरा है जो जीभ में सूजन उत्पन्न करे और इसका इलाज किताब के अन्त में विष के अध्याय में वर्णन किया जायगा और फित्र समाकृत और हकीम लोग और कुल्लाहे साग और जिन को हिन्दी में कुभी कहते और उसके भेद बहुत हैं उन में सब से बुरी ... कुंभी है ॥

और मवाद के निकालने के पीछे अजीर और मैथी को अलसी के पानी में औटाकर बनफशा का तेल और शहद और अमलतासका शीरा मिलाकर कुल्ला कर और हरा काहू, कासनी, और हरे धनिये का निचोड़ा हुआ पानी बहुधा मुख में रखना चाहिए जिस से गर्म दवाओं के लगाने से मवाद की तेजी न बढ़ और सूजन न हो जाय (सूचना) उचित है कि विषैली चीजों का खाना जैसें अफीम और फित्र * को छोड़ देवे जानना चाहिये कि जिस दुष्ट प्रकृति से सूजन की दशा उत्पन्न होजाय तो उसका वैसा ही उपाय करें जैसा उसका कारण हो जैसे जो खून के कारण से हो तो फस्द खोलें और हरी बारतग के पानी और सिर्के और गुलाब से कुल्ला करें और बादाम का तेल और नीलोफर का तेल और कपूर मुख में रक्खें और इसी तरह जैसा कारण के अनुसार हो वैसाही गुणकारी चीजों से इलाज कर सकते हैं और जो दुष्ट प्रकृति सादा हो तो उस में मवाद के निकालने की आवश्यकता नहीं है केवल समान करना ही लाभदायक है ॥

॥ दूसरा प्रकरण ॥

❀ मुख के स्वाद बिगड जाने का वर्णन ❀

इस के दो भेद हैं—पहिले यह है जिस में मुख का स्वाद बिल्कुल बिगड जाता है और वह इस प्रकार पर है बिल्कुल स्वाद मालूम न हो और यह सवाद का बिगडना कभी इस दशा को पहुंच जाता है बीमार सर्दी और गर्मी को न पहचान सके अर्थात् जीभ की ज्ञानशक्ति में अन्तर आजाय । और यह बात प्रकट है सर्दी और गर्मी का सम्बन्ध ज्ञानशक्ति के छूने के साथ है कि नम ज्ञान वाला पट्ठा जो जीभ पर बिछा हुआ है उस में मैल मक्कड की रतूबत इकट्ठी हो जाय और यह पट्ठा उस को पी जाय और फिर स्वादवाली शक्ति के प्रवेश होने के मार्ग बन्द होजाय और पट्ठे की तरी का पीना और न पीने से सूजन और तरी से उत्पन्न हुए ढिलढिलेपन में अन्तर हो सक्ता है (इलाज) जडों का पानी पिलावें जिस से मैल में नर्मी और पकाव आजाय इस के पीछे पाञ्जफफरा और कोकायाकी गोली से दिमाग को साफ कर और इसी तरह अकरकरा, और पहाडी मुनक्का, राई, पानी में औटाकर के कुल्ला करें और जानना चाहिये कि जितनी गर्म चीजों के लगाने का वर्णन हुआहै वह उस ॥

* फित्र खुम्भीका एक भेद है जो सब से बुरा है जो जीभ में सूजन उत्पन्न करे और इसका इलाज किताब के अन्त में विष के अध्याय में वर्णन किया जायगा और फित्र समारुग और हकीम लोग और कुलाह शार्ग और जिन को हिन्दी में कुभी कहत और उसके भेद बहुत हैं उन में सब से बुरी [illegible] खुंभी है ॥

रूखी दवा बुरकदेवे सातवां भेद वह है कि कडी सूजन के कारण से जीभ में भारापन उत्पन्न हो और सूजन चाहें आरम्भ में चाहें अंत में कड़ी होजा य और कदाचित् जब घाव मिलजाय तो उस जगह में गांठ उत्पन्न हो और इस कारण से जीभ में भारापन आजाय (इलाज) कठोरता और गांठ के नरम करने के लिये लुआव और तेल और चरबी लगावें । आठवां भेद यह है कि जीभ का हिलाने चलाने वाला पट्ठा चोट लगने अथवा धमाके के का रण से जो सिर के पिछली ओर हो टूटजाय और इस कारण से जीभ भारी होजाय और इस लिये कि वह पट्ठा जुड नहीं सकता है तो इस रोग का इलाज नहीं है ।

चौथा प्रकरण ।

जीभ के बड़े होजाने का वर्णन ।

जानना चाहिये कि कभी जीभ इतनी बढजाती है कि मुख में नहीं समा ती और मुख से बाहर निकल आती है इस लिये इसका नाम अदलाउललि सान है और इस रोग का कारण मवाद की तरियां हैं जो सिर से जीभ की तरफ गिरती है और जीभ के भाग उस को पीलेते है) इलाज (जो जीभ में गर्मी का चिन्ह प्रगट हो और वह तरी जिसको जीभ के भागों ने पीलिया है खून का पनीलापन हो तो पहले फस्द खोलें उसके पीछे खट्टा दही और नी बू की खटाई और उनके समान जो चीजें मवाद को निकालती है और लार को बहाती है जैसे खट्टा अनार आदि जीभ पर मलें और जो गर्मी न हो और वह तरी जिसको जीभ ने पीलियाहै कफकी पतली तरी हो तो पाखाना से निकालें फिर नमक, सिर्का और सोंठ अथवा नौसादर जिस को सिर्के में अथवा रिजीन (दूध का इतना औटाते है कि गाढा होजाता है उसके उप रांत उसका पानी टपका लेते है) में मिला दिया हो जीभ पर मल जानना चाहिये कि जब छाछ को पकाकर उसमें थोडासा नमक मिलाकर धूप में रख दें और जब सूखजाय और बहुत खट्टा होजाय तो उसको मसल कहते है और रिजीन उस दूध के पानीपन को कहते हैं जिस को पकाकर गाढा करलें और वह खुश्क और तर है ।

पांचवां प्रकरण ।

जीभ के ढीले होजाने का वर्णन ।

जीभ के भारी होजाने में आप जीभ के ढील होजाने का सविस्तर वर्णन

खली दवा भुरकदेवे सातवां भेद वह है कि कडी सूजन के कारण से जीभ में भारापन उत्पन्न हो और सूजन चाहें आरम्भ में चाहें अंत में कडी होजा य और कदाचित् जब घाव मिलजाय तो उस जगह में गांठ उत्पन्न हो और इस कारण से जीभ में भारापन आजाय (इलाज) कठोरता और गांठ के नरम करने के लिये लुआव और तेल और चरबी लगावें । आठवां भेद वह है कि जीभ का हिलाने चलाने वाला पट्ठा चोट लगने अथवा धमाके के का रण से जो सिर के पिछली ओर हो टूटजाय और इस कारण से जीभ भारी होजाय और इस लिये कि वह पट्ठा जुड नही सकता है तो इस रोग का इलाज नही है ।

चौथा प्रकरण ।

जीभ के बडे होजाने का वर्णन ।

जानना चाहिये कि कभी जीभ इतनी बढजाती है कि मुख में नहीं समा ती और मुख से बाहर निकल आती है इस लिये इसका नाम अदलाउललि सान है और इस रोग का कारण मवाद की तरियां हैं जो सिर से जीभ की तरफ गिरती है और जीभ के भाग उस को पीलेते है) इलाज (जो जीभ में गर्मी का चिन्ह प्रगट हो और वह तरी जिसको जीभ के भागों ने पीलिया है खून का पनीलापन हो तो पहले फस्द खोलें उसके पीछे खट्टा दही और नी बू की खटाई और उनके समान जो चीजें मवाद को निकालती है और छार को बहाती है जैसे खट्टा अनार आदि जीभ पर मलें और जो गर्मी न हो और वह तरी जिसको जीभ ने पीलियाहै कफकी पतली तरी हो तो यारजात से निकालें फिर नमक, सिर्का और सोंठ अथवा नोसादर जिस को सिर्के में अथवा रिजीन (दूध का इतना औटाते है कि गाढा होजाता है उसके उप रांत उसका पानी टपका लेते है) में मिला दिया हो जीभ पर मलें जानना चाहिये कि जब छाछ को पकाकर उसमें थोडासा नमक मिलाकर धूप में रख दें और जब सूखजाय और बहुत खट्टा होजाय तो उसको मसल कहते है और रिजीन उस दूध के पानीपन को कहते हैं जिस को पकाकर गाढा करलें और वह खुश्क और तर है ।

पांचवां प्रकरण ।

जीभ के ढीले होजाने का वर्णन ।

जीभ के भारी होजाने में साथ जीभ के ढील होजाने का सविस्तर वर्णन

सातवां प्रकरण।

जीभके फटजाने का वर्णन।

इस रोग के दो कारण हैं एक तो यह है कि दिमाग में बहुतसी खुश्की बढ़जाय और खुश्क प्रकृति पट्ठों के मार्ग से जीभ की तरफ आजाय और उन भागों के इकट्ठे होने से जीभ फटजाय और क्योंकि जीभ नर्म और छिद्रयुक्त तथा लचलची है तो इसमें गहरा फटाव होता है यहां तक कि भोजन करना भी कठिन होजाता है मुख्य कर जिस समय कोई खटाई या नमकीन चीज जीभ में लगती है तो विशेष दर्द और जलन उत्पन्न होती है और उसका चिन्ह पहले से नींद का न आना और दिमाग की खुश्की के चिन्ह जिनका बहुधा वर्णन होचुका है प्रगट होते हैं (इलाज) ईसबगोल को थोड़े से बूरे के साथ मिलाकर मुख में रक्खें और जौका पानी पीवें और मांस खाया करें और ककड़ी के झाग और मोमका तेल जिसको बनफशा के तेल से बनालियाहो जीभपर मलैं और जो चीजें नमकीन खट्टी और तेजहैं उनसे बचे और दिमाग की प्रकृति के सम्हालने में परिश्रम करे (सूचना) ककड़ी का झाग उसे कहते हैं कि खीरे को काटकर दोनों टुकड़ों को एक दूसरे पर मलै यहां तक कि झाग उत्पन्न हों और यह झाग तरी और चिपकाहट के कारण से खुश्की और फटजाने के लिये विशेष लाभदायक है। दूसरा यह कारण है कि जले हुये दोष आमाशय में इकट्ठे होजांय और उनमें से भाफ के परमाणु उठें और जीभ फटजाय उसका यह चिन्ह है कि डकार में धूंआंसा मालूम हो और जैसा दोषका सवाद होगा मुख के स्वादकी भी वही दशा होगी और कभी २ वह दोष वमन में भी निकल आया करता है (इलाज) जो चीजें उस मवाद के योग्य हों उन से आमाशय के मवाद को निकालें और लिहसौड़ा मुख में रक्खें और बाकी उपाय पहिली प्रकार के से करें॥

॥ आठवां प्रकरण ॥

जीभ के शुष्क होजानेका वर्णन।

यह दो प्रकारकाहै एकतो यह है कि गर्मी और खुश्की उसका कारण हो और उसका चिन्ह यहहै कि जीभ पीली और खुरखुरीहो और पित्त के सब चिन्ह प्रत्यक्षहों और असली खुश्की का यही भेदहै और दुमयात् मोहरका (वह पित्तज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो) के उपरान्त उत्पन्नहोवे (इलाज) बिहीदानेका लुआब, नीलोफरका पानी

सातवां प्रकरण।

जीभके फटजाने का वर्णन।

इस रोग के दो कारण हैं एक तो यह है कि दिमाग में बहुतसी खुश्की बढजाय और खुश्क प्रकृति पट्ठों के मार्ग से जीभ की तरफ आजाय और उन भागों के इकट्ठे होने से जीभ फटजाय और क्योंकि जीभ नर्म और छिद्रयुक्त तथा लचलची है तो इसमें गहरा फटाव होता है यहां तक कि भोजन करना भी कठिन होजाता है मुख्य कर जिस समय कोई खटाई या नमकीन चीज जीभ में लगती है तो विशेष दर्द और जलन उत्पन्न होती है और उसका चिन्ह पहले से नींद का न आना और दिमाग की खुश्की के चिन्ह जिनका बहुधा वर्णन होचुका है प्रगट होते हैं (इलाज) ईसबगोल को घोटे से बूरे के साथ मिलाकर मुख में रक्खें और जौका पानी पीवैं और मांस खाया करें और ककड़ी के झाग और मोमका तेल जिसको बनफशा के तेल से बनालियाहो जीभपर मलैं और जो चीजें नमकीन खट्टी और तेजहैं उनसे बचे और दिमाग की प्रकृति के सम्हालने में परिश्रम करे (सूचना) ककड़ी का झाग उसे कहते हैं कि खीरे को काटकर दोनों टुकड़ों को एक दूसरे पर मलै यहां तक कि झाग उत्पन्न हों और यह झाग तरी और चिपकाहट के कारण से खुश्की और फटजाने के लिये विशेष लाभदायक है। दूसरा यह कारण है कि जले हुऐ दोष आमाशय में इकट्ठे होजांय और उनमें से भाफ के परमाणु उठें और जीभ फटजाय उसका यह चिन्ह है कि डकार में धूंआसा मालूम हो और जैसा दोपका सवाद होगा मुख के स्वादकी भी वही दशा होगी और कभी २ वह दोष वमन में भी निकल आया करता है (इलाज) जो चीजें उस मवाद के योग्य हों उन से आमाशय के मवाद को निकालें और लिहसोडा मुख में रक्खें और बाकी उपाय पहिली प्रकार के से करें॥

॥ आठवां प्रकरण ॥

जीभ के शुष्क होजानेका वर्णन।

यह दो प्रकारकाहै एकतो यह है कि गर्मी और खुश्की उसका कारण हो और उसका चिन्ह यहहै कि जीभ पीली और खुरखुरीहो और पित्त के सब चिन्ह प्रत्यक्षहों और अगली खुश्की का यही भेदहै और दूसरापात् चौदर का (वह पित्तज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो) के उपरान्त उत्पन्नहोवे (इलाज) बिहीदानेका लुआब, नीलोफरका पानी

सातवां प्रकरण ।

जीभके फटजाने का वर्णन ।

इस रोग के दो कारण हैं एक तो यह है कि दिमाग में बहुतसी खुश्की बढजाय और खुश्क प्रकृति पट्ठों के मार्ग से जीभ की तरफ आजाय और उन भागों के इकट्ठे होने से जीभ फटजाय और क्योंकि जीभ नर्म और छिद्रयुक्त तथा लचलची है तो इसमें गहरा फटाव होता है यहां तक कि भोजन करना भी कठिन होजाता है मुख्य कर जिस समय कोई खटाई या नमकीन चीज जीभ में लगती है तो विशेष दर्द और जलन उत्पन्न होती है और उसका चिन्ह पहले से नींद का न आना और दिमाग की खुश्की के चिन्ह जिनका बहुधा वर्णन होचुका है प्रगट होते हैं (इलाज) ईसबगोल को थाडे से बूरे के साथ मिलाकर मुख म रक्खें और जौका पानी पीवें और मांस खाया करें और ककडी क झाग और मोमका तेल जिसको बनफशा के तेल से बनालियाहो जीभपर मलें और जो चीजें नमकीन खट्टी और तेजहैं उनसे बचें और दिमाग की प्रकृति के सम्हालने में परिश्रम करें (सूचना) ककडी का झाग उसे कहते हैं कि खीरे को काटकर दोनों टुकडों को एक दूसरे पर मलें यहां तक कि झाग उत्पन्न हों और यह झाग तरी और चिपकाहट के कारण से खुश्की और फटजाने के लिये विशेष लाभदायक है। दूसरा यह कारण है कि जले हुये दोष आमाशय में इकट्ठे होजांय और उनमें से भाफ के परमाणु उठें और जीभ फटजाय उसका यह चिन्ह है कि डकार में धूंआंसा मालूम हो और जैसा दोषका मवाद होगा मुख के स्वादकी भी वही दशा होगी और कभी २ वह दोष वमन में भी निकल आया करता है (इलाज) जो चीजें उस मवाद के योग्य हों उन से आमाशय के मवाद को निकालें और लिहसौडा मुख में रक्खें और बाकी उपाय पहिली प्रकार के से करें॥

॥ आठवां प्रकरण ॥

जीभ के शुष्क होजानेका वर्णन ।

यह दो प्रकारकाहै एकतो यह है कि गर्मी और खुश्की उसका कारण हो और उसका चिन्ह यहहै कि जीभ पीली और खुरखुरीहो और पित्त के सब चिन्ह प्रत्यक्षहों और असली खुश्की का यही भेदहै और दूसरायह पौहरं का (वह पित्तज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हों) के उपरान्त उत्पन्नहोवे (इलाज) बिहीदानका लुआब, मीठोकद्दू का पानी

सातवां प्रकरण ।

जीभके फटजाने का वर्णन ।

इस रोग के दो कारण हैं एक तो यह है कि दिमाग में बहुतसी खुश्की बढजाय और खुश्क प्रकृति पट्ठों के मार्ग से जीभ की तरफ आजाय और उन भागों के इकट्ठे होने से जीभ फटजाय और क्योंकि जीभ नर्म और छिद्रयुक्त तथा लचलची है तो इसमें गहरा फटाव होता है यहां तक कि भोजन करना भी कठिन होजाता है मुख्य कर जिस समय कोई खटाई या नमकीन चीज जीभ में लगती है तो विशेष दर्द और जलन उत्पन्न होती है और उसका चिन्ह पहले से नींद का न आना और दिमाग की खुश्की के चिन्ह जिनका बहुधा वर्णन होचुका है प्रगट होते हैं (इलाज) ईसबगोल को थोड़े से बूरे के साथ मिलाकर मुख म रक्खें और जौका पानी पीवें और मांस खाया करें और ककडी के झाग और मोमका तेल जिसको बनफशा के तेल से बनालियाहो जीभपर मलें और जो चीजें नमकीन खट्टी और तेजहैं उनसे बचें और दिमाग की प्रकृति के सम्हालने में परिश्रम करें (सूचना) ककडी का झाग उसे कहते हैं कि खीरे को काटकर दोनों टुकडों को एक दूसरे पर मलें यहां तक कि झाग उत्पन्न हों और यह झाग तरी और चिपकाहट के कारण से खुश्की और फटजाने के लिये विशेष लाभदायक है । दूसरा यह कारण है कि जले हुये दोष आमाशय में इकट्ठे होजाय और उनमें से भाफ के परमाणु उठें और जीभ फटजाय उसका यह चिन्ह है कि डकार में धूंआंसा मालूम हो और जैसा दोषका मवाद होगा मुख के स्वादकी भी वही दशा होगी और कभी २ वह दोष वमन में भी निकल आया करता है (इलाज) जो चीजें उस मवाद के योग्य हों उन से आमाशय के मवाद को निकाले और लिहसौडा मुख में रक्खें और बाकी उपाय पहिली प्रकार के से करै ॥

॥ आठवां प्रकरण ॥

जीभ के शुष्क होजानेका वर्णन ।

यह दो प्रकारकाहै एकतो यह है कि गर्मी और खुश्की उसका कारण हो और उसका चिन्ह यहहै कि जीभ पीली और खुरखुरीहो और पित्त के सब चिन्ह प्रत्यक्षहों और असली खुश्की का यही प्रदहै और दुमयात् मोहर्रका (वह पित्तज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो) के उपरान्त उत्पन्नहोवे (इलाज) बिहीदानका लुआब, मीठोकापा पानी

सातवां प्रकरण।

जीभके फटजाने का वर्णन।

इस रोग के दो कारण हैं एक तो यह है कि दिमाग में बहुतसी खुश्की बढजाय और खुश्क प्रकृति पट्ठों के मार्ग से जीभ की तरफ आजाय और उन भागों के इकट्ठे होने से जीभ फटजाय और क्योंकि जीभ नर्म और छिद्रयुक्त तथा लचलची है तो इसमें गहरा फटाव होता है यहां तक कि भोजन करना भी कठिन होजाता है मुख्य कर जिस समय कोई खटाई या नमकीन चीज जीभ में लगती है तो विशेष दर्द और जलन उत्पन्न होती है और उसका चिन्ह पहले से नींद का न आना और दिमाग की खुश्की के चिन्ह जिनका बहुधा वर्णन होचुका है प्रगट होते हैं (इलाज) ईसबगोल को थोडे से बूरे के साथ मिलाकर मुख में रक्खें और जौका पानी पीवें और मांस खाया करें और ककडी के झाग और मोमका तेल जिसको बनफशा के तेल से बनालियाहो जीभपर मलें और जो चीजें नमकीन खट्टी और तेजहैं उनसे बचे और दिमाग की प्रकृति के सम्हालने में परिश्रम करें (सूचना) ककडी का झाग उसे कहते हैं कि खीरे को काटकर दोनों टुकडों को एक दूसर पर मलें यहां तक कि झाग उत्पन्न हों और यह झाग तरी और चिपकाहट के कारण से खुश्की और फटजाने के लिये विशेष लाभदायक है। दूसरा यह कारण है कि जले हुये दोष आमाशय में इकट्ठे होजांय और उनमें से भाफ के परमाणु उठें और जीभ फटजाय उसका यह चिन्ह है कि डकार में धूंआसा मालूम हो और जैसा दोषका सवाद होगा मुख के स्वादकी भी वही दशा होगी और कभी २ वह दोष वमन में भी निकल आया करता है (इलाज) जो चीजें उस मवाद के योग्य हों उन से आमाशय के मवाद को निकालें और लिहसौडा मुख में रक्खें और बाकी उपाय पहिली प्रकार के से करें॥

॥ आठवां प्रकरण ॥

जीभ के शुष्क होजानेका वर्णन।

यह दो प्रकारकाहै एकतो वह है कि गर्मी और खुश्की उसका कारण हो और उसका चिन्ह यहहै कि जीभ पीली और खुरखुरीहो और पित्त के सब चिन्ह प्रत्यक्षहों और असली खुश्की का यही भेदहै और दूसरा ... पौदर्‌का (वह पित्तज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो) के उपरान्त उत्पन्नहोव (इलाज) बिहीदानेका लुआब, नीलोफरका पानी

सातवां प्रकरण।

जीभ के फटजाने का वर्णन।

इस रोग के दो कारण हैं एक तो यह है कि दिमाग में बहुतसी खुश्की बढजाय और खुश्क प्रकृति पट्ठों के मार्ग से जीभ की तरफ आजाय और उन भागों के इकट्ठे होने से जीभ फटजाय और क्योंकि जीभ नर्म और छिद्रयुक्त तथा लचलची है तो इसमें गहरा फटाव होता है यहां तक कि भी जन करना भी कठिन होजाता है मुख्य कर जिस समय कोई खटाई या नम कीन चीज जीभ में लगती है तो विशेष दर्द और जलन उत्पन्न होती है और उसका चिन्ह पहले से नींद का न आना और दिमाग की खुश्की के चिन्ह जिनका बहुधा वर्णन होचुका है प्रगट होते हैं (इलाज) ईसबगोल को पोदे से बूरे के साथ मिलाकर मुख में रक्खें और जौका पानी पीवें और मांस खाया करें और ककडी के झाग और मोमका तेल जिसको बनफशा के तेल से बनालियाहो जीभपर मलें और जो चीजें नमकीन खट्टी और तेजहैं उनसे बचे और दिमाग की प्रकृति के सम्हालने में परिश्रम करें (सूचना) ककडी का झाग उसे कहते हैं कि खीरे को काटकर दोनों टुकडों को एक दूसर पर मलें यहां तक कि झाग उत्पन्न हों और यह झाग तरी और चिपकाहट के कारण से खुश्की और फटजाने के लिये विशेष लाभदायक है। दूसरा यह का रण है कि जले हुये दोष आमाशय में इकट्ठे होजांय और उनमें से भाफ के परमाणु उठें और जीभ फटजाय उसका यह चिन्ह है कि डकार में धुंआसा मालूम हो और जैसा दोषका सवाद होगा मुख के स्वादकी भी वही दशा होगी और कभी २ वह दोष वमन में भी निकल आया करता है (इलाज) जो चीजें उस मवाद के योग्य हों उन से आमाशय के मवाद को निकालें और लिहसोडा मुख में रक्खें और बाकी उपाय पहिली प्रकार के से करें॥

॥ आठवां प्रकरण ॥

जीभ के शुष्क होजानेका वर्णन।

यह दो प्रकारकाहै एकतो यह है कि गर्मी और खुश्की उसका कारण हो और उसका चिन्ह यहहै कि जीभ पीली और खुरखुरीहो और पित्त के सब चिन्ह प्रत्यक्षहों और असली खुश्की का यही भेदहै और दूसरा दोहर का (वह पित्तज्वर जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो) के उपरान्त उत्पन्नहोवे (इलाज) बिहीदानेका लुआब, नीलोफरका पानी

लाल हो और आदमी जीभ को दांतों से खुजावे और गर्म पानी से कुल्ला करें तो चैन प्राप्त हो (इलाज) पहले दोषको निकालें और दोषके निकालने के पीछे गर्म पानी से कुल्ला करें जिससे जलन रुकजाय और जीभकी खाल गर्म होजाय और मवाद में तरी पहुच कर निकलने लगे और उसके पीछे दूध में बूरा मिलाकर कुल्ला करें फिर सिर्को और गुलरोगन से कुल्ला करें जिसमें जलन रुककर सर्दी पहुचै और मवाद नर्म और फटकर नष्ट होजाय और जानना चाहिये कि पीली हरडका चबाना और जीभ पर मलना उस गर्म मवाद को जो जीभ में हो निकालने में पूरा असर रखता है ॥

॥ ग्यारहवां प्रकरण ॥

जीभ से खाल उतरने का वर्णन ।

जो खाल जीभ तालू और मसूडोंपर होती है यहां उसका ग्रहण है और खाल उतारने के कारण गर्म तेज और चुभने वाले भाफके परमाणु होते हैं जो शरीर में उठ कर इस झिल्ली को जो इन अंगों पर लगी हुई है जलाकर गला देते हैं और इस तरी को जिससे अंग के भाग मिले हुए हैं नष्ट करदेते हैं फिर इस कारण से बारीक खाल जुदी होती है और उसका चिन्ह यह है कि जब आदमी अपने मुख अथवा तालूको कपडे से मले तो बारीक सफेद खाल पियाजके छिलके के सदृश जुदी होजाती है और दर्द मालूम होता है (इलाज) फस्द खोलें और हरड का काढा पिलावे और आस अर्थात् अधीरा और अनार के फूल और गुलाबके पत्ते सिर्के में औटाकर उस पानीसे कुल्ला करें और सबसे अच्छा उपाय यह है कि इस रोगके इलाज में ऐसी चीजें काम में लावे जो गर्म काम के साथ अजीर्ण करने वाली भी हों ॥

॥ बारहवां प्रकरण ॥

मुखकी फुन्सियों का वर्णन ।

फुन्सियों के निकल आने का कारण तेज खून होता है जिसमें पकाहुआ पित्त मिल गया हो और इस रोग में अधिक दर्द होता है यहां तक कि चीजों का चबाना कठिन होजाता है (इलाज) फस्द खोल और मवाद के निकलने के लिये हरड का काढा दें और आरम्भ में गुलाब के फूल, लालसाग, मकोय के पत्ते और कासनी की जड और पत्ती तथा धनियां और मसूर सिर्के में औटाकर कुल्ला करें ॥

लाल हो और आदमी जीभ को दांतों से खुजावे और गर्म पानी से कुल्ला करें तो चैन प्राप्त हो (इलाज) पहले दोषको निकालें और दोषके निकालने के पीछे गर्म पानी से कुल्ला करें जिससे जलन रुकजाय और जीभकी खाल गर्म होजाय और मवाद में तरी पहुंच कर निकलने लगे और उसके पीछे दूध में बूरा मिलाकर कुल्ला करें फिर सिर्को और गुलरोगन से कुल्ला करें जिसमें जलन रुककर सर्दी पहुंचै और मवाद नर्म और फटकर नष्ट होजाय और जानना चाहिये कि पीली हरडका चबाना और जीभ पर मलना उस गर्म मवादके जो जीभ में हो निकालने में पूरा असर रखता है ॥

॥ ग्यारहवां प्रकरण ॥

जीभ से खाल उतरने का वर्णन ।

जो खाल जीभ तालू और मसूड़ोंपर होती है यहां उसका ग्रहण है और खाल उतारने के कारण गर्म तेज और चुभने वाले भाफक परमाणु होते हैं जो शरीर में उठ कर इस झिल्ली को जो इन अगों पर लगी हुई है जलाकर जुदा देते हैं और इस तरी को जिससे अग के भाग मिले हुए हैं नष्ट करदेते हैं फिर इस कारण से बारीक खाल जुदी होती है और उसका चिन्ह यह है कि जब आदमी अपने मुख अथवा तालूको कपड़े से मलें तो बारीक सफेद खाल पियाजके छिलके के सदृश जुदी होजाती है और दर्द मालूम होता है (इलाज) फस्द खोलें और हरड का काढा पिलावे और आस अर्थात् अधीरा और अनार के फूल और गुलाबके पत्ते सिर्के में औटाकर उस पानीसे कुल्ला करें और सबमें अच्छा उपाय यह है कि इस रोगके इलाज में वही चीजें काम में लावे जो गर्म काग के साथ अजीर्ण करने वाली भी हों ॥

॥ बारहवां प्रकरण ॥

मुखकी फुन्सियों का वर्णन ।

फुन्सियों के निकल आने का कारण तेज खून होता है जिसमें पाढ़ागा पित्त मिल गया हो और इस रोग में अधिक दर्द होता है यहां तक कि चीजों का चबाना कठिन होजाता है (इलाज) फस्द खोल और मवाद के निकलने के लिए हरड का काढा दें और आरम्भ में गुलाब के फूल, लालसाग, मकोय के पत्ते और कासनी की जड़ और पत्ती तथा धनियां और मसूर सिर्के में औटाकर कुल्ला करें ॥

बेल का काढा पिलावे और आरम्भ में मवाद के पकाने और नर्म करने के लिये गौ की नली के गूदे का लेप करें और उसके पीछे रोगी से मेंहदी की पत्ती चबवावें जिससे घाव खुश्क होकर भरआवें फिर माजू, अनार के छिलके अनार के फूल, सिमाक, धनियां, सिरके में औटाकर कुल्ले करें ।

चौदहवां प्रकर्ण ।

मुख में दुर्गन्धित गहरे घाव के होजाने का वर्णन ।

यह एक गहरा घाव बुरा दुर्गंधित होता है जो थोडेमें समय में बहुत सी जगहों में फैल जाता है और उसका मवाद जितना निकम्मा और बुरा होता है उतनाही जल्द यह घाव भी फैलाकरता है और उसका कारण दुर्गंधित तेज दोष है जो टीस उत्पन्न करता है और अंगों को नष्ट करदेता है यह सिरमेंसे उतर आता है अथवा देहमेंसे ऊपर मुख की तरफ चढजाता है और यह जगहनिर्बलता के कारण से उसको ग्रहण करलेती है (इलाज) फस्द खोले औरदस्तों के लिये आकाश बेलका काढा पीवे और मवाद की तेजी को तोडने के लिये सिर्का और सिमाक के पानी और खट्टे अंगूर के पानी से कुल्लेकरें और जो दवा जलाने वाली हो और उनमें अजीर्ण और खुश्क करनेका गुणहो उनसे कुल्ला करें जिससे दुर्गंधित गहरा घाव फैलनेसे रुकजाय उस के पीछे फलाफलून, सुरती निकम्मा मांस नष्टहोजाय और घाव मैल और पीव से स्वच्छ होजाय फिर अच्छा मांस जम जावे (फलाफलून के बनाने की यह विधि है) कि बिनबुझा चूना जो बहुत अच्छा हो एक भाग, लाल और पीली हरताल, सज्जी, अपाकिया, आधा भाग इन पांचों दवाओं को पीसकर अंगूरी सिरके में मिलाकर टिकियां बनाके और सुखाकर उठा रक्खे और आवश्यक्ता के समय काम में लावे (सुरतीजान के बनानेकी यह विधि है) कि खट्टे अनार की छाल मीठे अनारका छिलका प्रत्येक १०५ माशे, माजू, अनारकेफूल, फिटकरी, जलाहुआ कागज, अकरकरा, मिश्री प्रत्येक ३५ माशे, सिमाक १७॥ माशे, नोंन हिन्दी, नौसादर प्रत्येक १७॥ माशे, यह सब दश दवाई हैं इन को कूट छानकर इन्दुफ़सल के सिर्के में गूंदकर टिकिया बनावें और सुखाकर उठा रक्खे और आवश्यक्ता के समय काममें लावे ॥

पद्रहवां प्रकर्ण ।

मुख से अधिक लार गिरने का वर्णन ।

इस रोगके दो कारणहैं पहला तो गर्मी और तरी है मुख्य कर जब यह

बेल का काढ़ा पिलावे और आरम्भ में मवाद के पकाने और नर्म करने के लिये गौ की नली के गूदे का लेप करें और उसके पीछे रोगी से मेंहदी की पत्ती चबवावें जिससे घाव खुश्क होकर भरआवें फिर माजू, अनार के छिलके अनार के फूल, सिमाक, धनियां, सिरके में औटाकर कुल्ले करें।

चौदहवां प्रकर्ण।

मुख में दुर्गन्धित गहरे घाव के होजाने का वर्णन।

यह एक गहरा घाव बुरा दुर्गंधित होता है जो थोड़ेसे समय में बहुत सी जगहों में फैल जाता है और उसका मवाद जितना निकम्मा और बुरा होता है उतनाही जल्द यह घाव भी फैलाकरता है और उसका कारण दुर्गंधित तेज दोष है जो टीस उत्पन्न करता है और अंगों को नष्ट करदेता है यह सिरमेंसे उतर आता है अथवा देहमेंसे ऊपर मुख की तरफ चढजाता है और यह जगहनिर्बलता के कारण से उसको ग्रहण करलेती है (इलाज) फस्द खोले औरदस्तों के लिये आकाश बेलका काढ़ा पीवे और मवाद की तेजी को तोड़ने के लिये सिर्का और सिमाक के पानी और खट्टे अंगूर के पानी से कुल्लेकरें और जो दवा जलाने वाली हो और उनमें अजीर्ण और खुश्क करनेका गुणहो उनसे कुल्ला करें जिससे दुर्गंधित गहरा घाव फैलनेसे रुकजाय उस के पीछे फलाफयून, सुरती निकम्मा मांस नष्टहोजाय और घाव मैल और पीव से स्वच्छ होजाय फिर अच्छा मांस जम जावे (फलाफयून के बनाने की यह विधि है) किबिनबुझा चूना जो बहुत अच्छा हो एक भाग, लाल और पीली हरताल, सज्जी, अकाकिया, आधा भाग इन पांचों दवाओं को पीसकर अंगूरी सिरके में मिलाकर टिकियां बनाके और सुखाकर उठा रक्खे और आवश्यक्ता के समय काम में लावे (सुरतीजान के बनानेकी यह विधि है) कि खट्टे अनार की छाल मीठे अनारका छिलका प्रत्येक १०५ माशे, माजू, अनारकेफूल, फिटकरी, जलाहुआ कागज,अकरकरा,मिश्री प्रत्येक ३५ माशे,सिमाक १७॥माशे,नोंन हिन्दी,नौशादर प्रत्येक १७॥ माशा, यह सब दश दवाई हैं इन को कूट छानकर हिन्दुबास के सिर्के में गूंदकर टिकिया बनावें और सुखाकर उठा रक्खे और आवश्यक्ता के समय काममें लावे॥

पन्द्रहवां प्रकर्ण।

मुख से अधिक लार गिरने का वर्णन।

इस रोगके दो कारणहैं पहला तो गर्मी और तरी है मुख्य कर जब तर

कुछ बूरा डालकर खाय और खीरा, आलू, शफताल और तरबूज खाना इस रोग में बहुत लाभदायक है और सबेरे के समय कोई चीज खालेना उचित है जिस से आमाशय की गर्मी भूख के कारण से बढ न जाय । दूसरा भेद यह है कि दुर्गन्धित कफ आमाशय में इकठा होजाय और उसमें से दुर्गन्धित भाफ के परमाणु उठें और उसका चिन्ह यह है कि खाने और मुख धोने से रुकजांय क्योंकि इस बीमारी का कारण खाने और मुख धोने से नष्ट नहीं होता परन्तु कुछ दबजाता है (इलाज) नमकीन मछली खाकर और मूली, लोबिया और सोए का फाढा पीकर वमन करें और पारज फयगरा और ऐलवा की गोली से तबियत को नर्म करें और ऐलवा का सिसांदा शराब अफसन्तीन के साथ देना लाभदायक है और मवाद के निकलने के पीछे सोंठ का मुरब्बा खाना चाहिये और इतरीफल सगातर और शहद का बना गुलकंद और शहद की बनी शिकञ्जबीन सर्वदा खाते हैं और इस रोग में ऐसे भोजन करें जो तरी के उत्पन्न करने वाले हों जैसे कबाब और कलिया जिस में अच्छे मसाले पडे हों तीसरा भेद यह है कि निकम्मी दुर्गन्धित तरी जिन की दशा में तेजी हो सिरमें से दांतों की जडों पर गिरे और उनको खाकर और सडा कर बिगाडदे और इस का चिन्ह यह है कि जब इस प्रकार का रोगी किसी खटी या खारी चीज से कुल्ले करें तो चेपदार तरी और दुर्गन्धि दांतों की जडों से खिचकर कुल्लों में आजाय तब भी मुख की दुर्गन्धि न जाय यद्यपि कुछ थोडी देर तक दबजाय और यह बात बिलकुल न जाय तो इस के दो कारण हैं । पहला कारण तो यह है कि निकम्मी तरी जो कुल्ला करने के कारण से दांतों की जड में से दूर होजाती है उसके बदले में और तरियां सिरमें से सिय आती हैं । दूसरा कारण यह है कि निकम्मी तरी पहिले के भारी सडक था दांतों पर गिरी हुई है और कुल्ला की दवा या असर वहां तक न पहुंचे (इलाज) दिमाग और मुख के साफ करने के लिये और मसूडा की पुष्टता के लिये शर्मीग और अनार के फूल सिर्के में औटा कर इस सिर्के से कुल्ला करें जिस से उस मवाद को जो सिर से उस की तरफ गिरता है ग्रहण न करें और जो अंगूर का शीरा इस सिर्के में मिलावें तो सब से अच्छा है और मुख की सुगन्धि और मसूडों की पुष्टता के लिये हब्बुलमिस्क अर्थात् कस्तूरी की गोली मुखमें रक्खें। हब्बुलमिस्क के बनाने की यह विधि है कि दालचीनी, लौंग

कुछ बूरा डालकर खाय और खीरा, आलू, शफताल और खरबूज खाना इस रोग में बहुत लाभदायक है और सवेरे के समय कोई चीज खालेना उचित है जिस से आमाशय की गर्मी भूख के कारण से बढ़ न जाय । दूसरा भेद यह है कि दुर्गन्धित कफ आमाशय में इकठ्ठा होजाय और उसमें से दुर्गन्धित भाफ के परमाणु उठें और उसका चिन्ह यह है कि खाने और मुख धोने से रुकजांय क्योंकि इस बीमारी का कारण खाने और मुख धोने से नष्ट नहीं होता परन्तु कुछ दबजाता है (इलाज) नमकीन मछली खाकर और मूली, लोबिया और सोए का काढ़ा पीकर वमन करें और यारज फयकरा और ऐलवा की गोली से तबियत को नर्म करें और ऐलवा का खिसांदा शराव अफसन्तीन के साथ देना लाभदायक है और मवाद के निकलने के पीछे सोंठ का मुरब्बा खाना चाहिये और इतरीफल सगीर और शहद का बना गुलकंद और शहद की बनी शिकञ्जबीन सर्वदा खाते हैं और इस रोग में ऐसे भोजन करें जो तरी के उत्पन्न करने वाले हों जैसे कबाब और कलिया जिस में अच्छे मसाले पड़े हों तीसरा भेद यह है कि निकम्मी दुर्गन्धित तरी दिमाग की दशा में तेजी हो सिरमें से दांतों की जड़ों पर गिरे और उनको खावर और सड़ा कर बिगाड़दे और इस का चिन्ह यह है कि जब इस प्रकार का रोगी किसी खट्टी या खारी चीज से कुल्ले करे तो चेपदार तरी और दुर्गन्धि दांतों की जड़ों से खिंचकर कुल्लों में आजाय तब भी मुख की दुर्गन्धि न जाय यद्यपि कुछ थोड़ी देर तक दबजाय और यह बात बिलकुल न जाय तो इस के दो कारण है। पहला कारण तो यह है कि निकम्मी तरी जो कुल्ला करने के कारण से दांतों की जड़ में से दूर होजाती हैं उसके बदल में और तरियां सिरमें से खिंच आती हैं। दूसरा कारण यह है कि निकम्मी तरी वहां के चारों तरफ को दांतों पर गिरी हुई है और कुल्ला की दवा का असर वहां तक न पहुंचे (इलाज) दिमाग और मुख के साफ करने के लिये और मसूढ़ों की पुख्ता के लिये वधीरा और अनार के फूल सिर्के में औटा कर इस सिर्के से कुल्ला करें जिस से उस मवाद को जो सिर से उस की तरफ गिरता है ग्रहण न करे और जो अंगूर का शीरा इस सिर्के में मिलाले तो सब से अच्छा है और मुख की सुगन्धि और मसूढ़ों की पुख्ता के लिये हब्बुलमिस्क अर्थात् कस्तूरी की गोली मुखमें रक्खे। हब्बुलमिस्क के बनाने की यह विधि है कि इलायची, लौंग

में अधीरा, गुलाब के फूल, अनार के फूल, मकोय की जड़ सिर्के में औटा कर के कुल्ला करें और जरूर वारिज अर्थात् एक संयोगिक नुसखे का नाम है कि जो वंशलोचन, गुलाब के फूल, खुर्फा के बीज, नशास्ता, सफेदा, समग अरबी, और मसूर के आटे से बनाकर थोड़ासा कपूर उस में मिलाकर तालू पर छिड़कें और अन्त में शीरनी बनफशा कनूचे के काढे में अमलतास का गूदा मिला कर कुल्ला करें जिससे जो मवाद बाकी है उस को भी नष्ट कर दें और तरी वाली सूजन का यह चिन्ह है कि सूजन का रंग सफेद हो और दर्द न हो (इलाज) मवाद के निकालने के लिये यारजात खाय और माई, और अकरकरा कांजी में मिलाकर कुल्ला करें जिस से विवध और पुष्टता भी प्राप्त हो और मवाद भी निकल जाय॥

॥ छटा अध्याय ॥

❀ होठ के रोगों का वर्णन ❀

होठ पट्ठे और मांस और मछलियां दिल की रग और जिगर की रग से मिलकर बने हैं और उस का लाभ यह है कि मुख को छिपाये रखता है और चबाने वाली चीजें और लार का रोक रखता है और बोलने में सहायता करता है और मुख की शोभा है और जो रोग गुदा में उत्पन्न होता है वही होठ में भी हो जाता है क्योंकि होठ और गुदा की बनावट और प्रकृति एक ही प्रकार पर है और यह दोनों होठ नरखरा और आमाशय और गुदा की आंतो के २ किनारे इस प्रकार पर हैं कि होठ आरम्भ में और अन्त में हैं इसी लिये जिस तरह से गुदा फटजाती है और उस में बवासीर उत्पन्न होती है इसी तरह से होठ भी फट जाते हैं और उस में बवासीर उत्पन्न होजाती है इसी तरह से और सब रोग हैं। इस अध्याय में दश प्रकरण हैं॥

॥ पहिला प्रकरण ॥

❀ होठ के सफेद होजाने का वर्णन ❀

इस रोग का यह कारण है कि खून में कफ की रूखी रतूबत प्राप्त होने और गिर और मुख में अग्नि की गर्मी की न्यूनता के कारण से सफेदी आजाय क्योंकि इस दशा में बदलनेवाली शक्ति निर्बल होजाती है और भोजनपानेवाले में बराबरी समानता नहीं करसकती और इस कारण से जो होठ का रंग लाल है इसलिये बदलने वाली शक्ति में थोड़ासा अन्तर पहचानने से होठमें सफेदी मालूम होने लगती है यह बात दूसरे अंगों

में अधीरा, गुलाब के फूल, अनार के फूल, मकोय की जड़ सिर्के में औटा कर के कुल्ला करें और जरूर वाजिज अर्थात् एक संयोगिक नुसखे का नाम है कि जो वंशलोचन, गुलाब के फूल, सुर्फा के बीज, नशास्ता, कसीरा, समग अरबी, और मसूड के आटे से बनाकर थोड़ासा कपूर उस में मिलाकर तालू पर छिड़कें और अन्त में बाउना बनफशा कनूचे के काढे में अमलतास का गूदा मिला कर कुल्ला करें जिससे जो मवाद बाकी है उस को भी नष्ट कर दें और तरी वाली सूजन का यह चिन्ह है कि सूजन का रंग सफेद हो और दर्द न हो (इलाज) मवाद के निकालने के लिये यारजात खाय और माई, और अकरकरा कांजी में मिलाकर कुल्ला करें जिस से विवर और पुष्टता भी प्राप्त हो और मवाद भी निकल जाय॥

॥ छठा अध्याय ॥

होठ के रोगों का वर्णन

होठ पट्ठे और मांस और मछलियां दिल की रग और जिगर की रग से मिलकर बने हैं और उस का लाभ यह है कि मुख को छिपाये रखता है और चबाने वाली चीजें और लार का रोक रखता है और बोलने में सहायता करता है और मुख की शोभा है और जो रोग गुदा में उत्पन्न होता है वही होठ में भी हो जाता है क्योंकि होठ और गुदा की बनावट और प्रकृति एक ही प्रकार पर है और यह दोनों होठ नरखरा और आमाशय और गुदा की आंतों के २ किनारे इस प्रकार पर हैं कि होठ आरम्भ में और अन्त में हैं इसी लिये जिस तरह से गुदा फटजाती है और उस में बवासीर उत्पन्न होती है इसी तरह से होठ भी फट जाते हैं और उस में बवासीर उत्पन्न होजाती है इसी तरह से और सब रोग हैं। इस अध्याय में दश प्रकरण हैं॥

॥ पहिला प्रकरण ॥

होठ के सफेद होजाने का वर्णन

इस रोग का यह कारण है कि खून में कफ की कच्ची रतूबत बढजाने और गिर और मुख में अग की गर्मी की न्यूनता के कारण से सफेदी आजाय क्योंकि इस दशा में बदलनेवाली शक्ति निर्बल होजाती है और भोजनपचानेवाली शक्ति भली प्रकार नहीं पचसकती और इस कारण से जो होठ का रंग लाल है इसलिये बदलने वाली शक्ति में थोड़ासा अन्तर पड़जाने से होठमें सफेदी मालूम होजाती है पर यह दूसरे अंगों

सुकड़जाय और कभी आराम के लिये फैलजाय और क्योंकि गुपका ऊपरी भाग आमाशय के ऊपरी भाग से मिलाहुआ है और वह झिल्ली जो इन दोनों के बीचमें मिलीहुई है वास्तव में कड़ी है इस कारण से आमाशय के हिलने से होठमें फड़कन होती है क्योंकि कड़े शरीर की जब एक तरफ हिलती है तो दूसरी तरफ भी अवश्य हिलेगी और इसका चिन्ह यहहै कि जी मिचलावे हिचकी आवें तथा उबकाई भी आने लगें। दूसरा भेद यहहै कि उस पट्ठे के सयोग से उत्पन्न हो जो दिमाग से होठ पर पहुचाहै और यह उससमय होता है कि कष्टदायक मवाद दिमाग में आजाय और दिमाग बन्द होने और खुल्नेकी गतिके साथ उसके दूरकरन के लिये हिले और पट्ठे के द्वारा होठ फड़के और इस प्रकार का फड़कना मिर्गी और लकवा के आरम्भ में हुआ करता है तीसरा भेद यह है कि इसी जगह में गाढा मवाद उत्पन्न हो और फड़के इन तीनों भेदों को वर्णन सामान्य फड़कने के वर्णन में किया गयाहै कि जो शिरके रोगों में लिखा है चौथा भेद यह है कि वारीक रगें जो होठमें हैं खूनस भरजांय फिर इसी प्रकार की पैदा करनेवाली शक्ति उनमें उत्पन्न हो उन भाफों या माणुओं को रिहा बनादे जो खूनसे निकलते हैं और रोमांचो या भी गुजाइश इस कारण से रिहा अर्थात् हवा निकलने से रहजाय और फड़कन उत्पन्न करे और खूनके चिन्ह प्रगट हो (इलाज) सरेरू की फस्द खोलें और खाने को कम दें और रोमांचों के खोलने म परिश्रम करें।

चौथा प्रकरण।

दोनों होठोंके खिचने और सुकड़ने का वर्णन।

इस रोगके तीन भेद है पहला तो यह है कि मवाद की न्यूनतासे जन्मते ही बच्चेका होठ खिचा और सुकड़ाहुआ उत्पन्नहो और यह रोग लड़कपन के दिनोंमें जबतक कि बच्चा पैदा करता है आरोग्यता के योग्य होताहै क्योंकि अंग नर्म होते हैं और प्रत्येक दशा को ग्रहण करसके हैं और अपनी निज दशा पर आनेकी यह विधि है कि खिचे हुए और मुड़े हुए होट को सीधा करें और अच्छी दशा पर लावें और फिर उसी तरह बांध दें जिस मे ठीक रहे। दूसरा भेद यह है कि मवाद के निकलने के कारण से चौपटे और खिचाव उत्पन्न हो और इसका इलाज नहीं है। तीसरा भेद यह है कि मवाद के भरने के कारण से यह रोग उत्पन्न हो और उसका इलाज मवाद का

झुकडजाय और कभी आराम के लिये फैलजाय और क्योंकि गुसका ऊपरी भाग आमाशय के ऊपरी भाग से मिलाहुआ है और वह झिल्ली जो इन दोनों के बीचमें मिलीहुई है वास्तव में कड़ी है इस कारण से आमाशय के हिलने से होठमें फड़कन होती है क्योंकि कड़े शरीर की जब एक तरफ हिलती है तो दूसरी तरफ भी अवश्य हिलैगी और इसका चिन्ह यहहै कि जी मिचलावे हिचकी आवें तथा उबकाई भी आने लगें। दूसरा भेद यहहै कि वात पट्ठे के संयोग से उत्पन्न हो जो दिमाग से होठ पर पहुचाहै और यह उससमय होता है कि कष्टदायक मवाद दिमाग में आजाय और दिमाग बन्द होने और खुल- नेकी गतिके साथ उसके दूरकरने के लिये हिले और पट्ठे के द्वारा होठ फड़के और इस प्रकार का फड़कना मिर्गी और लकवा के आरम्भ में हुआ करता है तीसरा भेद यह है कि इसी जगह में गाढ़ा मवाद उत्पन्न हो और फड़के इन तीनों भेदों को वर्णन सामान्य फड़कने के वर्णन में किया गयाहै कि जो सिरके रोगों में लिखा है चौथा भेद यह है कि बारीक रगें जो होठमें हैं खूनसे भरजांय फिर इसी प्रकार की दृढ़ा करनेवाली शक्ति उनमें उत्पन्न हो उन भाफों व माणुओं को रिहा बनादे जो खूनसे निकलते हैं और रोमांचों का भी गुबार इस कारण से रिहा अर्थात् हवा निकलने से रहजाय और फड़कन उत्पन्न करें और खूनके चिन्ह प्रगट हो (इलाज) सरेरू की फस्द खोलें और खाने को कम दें और रोमांचों के खोलने म परिश्रम करें।

चौथा प्रकरण।

दोनों होठोंके खिचने और सुकड़ने का वर्णन।

इस रोगके तीन भेद हैं पहला तो यह है कि मवाद की न्यूनतासे जन्मसे ही बच्चेका होठ खिचा और सुकड़ाहुआ उत्पन्नहो और यह रोग लड़कपन के दिनोंमें जबतक कि बच्चा बड़ा करता है आरोग्यता के योग्य होताहै क्योंकि अंग नर्म होते हैं और प्रत्येक दशा का ग्रहण करसके हैं और अपनी निज दशा पर आनेकी यह विधि है कि खिचे हुए और मुड़े हुए होठ को सीधा करें और अच्छी दशा पर लावें और फिर उसी तरह बांध दें जिस से ठीक रहे। दूसरा भेद यह है कि मवाद के निकालने के कारण से खींचे और खिंचाव उत्पन्न हो और इसका इलाज नहीं है। तीसरा भेद यह है कि मवाद के भरने के कारण से यह रोग उत्पन्न हो और उसका इलाज मवाद का

को इन इलाजों से आरोग्यता न हो तो फिर यह उपाय है कि होंठ की लम्बाई में चीरादे और घावके किनारे को जो सीन के पीछे असली दशा पर आसके कटादेवे फिर ऐसी तरहपर सीये कि अपनी असली दशापर आजाय और खून के बन्द करने वाली दवाएँ जैसे गुलाब का फूल, केसर, दम्मुल अखवैन (हीरा दुखी गोंद) महीन पीसकर घाव पर छिड़कदे और उस के उपरान्त घाव भरलाने वाले मल्हमों से इलाज करें ॥

छटा प्रकरण ।

होंठ की सूजन का वर्णन ।

इस सूजनका कारण दोषोंकी अधिकता होती है और दोषोंकी अधिकता के चिन्ह बहुधा वर्णन होचुके हैं (इलाज) जिस प्रकार का दोष हो उसी के अनुसार फसद और दस्तों के द्वारा शरीर के मवाद को निकालें और मवाद के निकालने के पीछे ऐसी चीजों से लेप करें जिनमें मवाद के निकालने के साथ अजीर्ण भी हो जैसे रसौत, बाबूना, जौंका आटा, गुलाब, उसारे गाफिस मकोय और अन्त में बादाम के तेल और मोम से मरहम बनाकर लगावें और गर्म पानी से बहुत सा धोया करें और कफ वाली सूजनमें मवाद के निकालने वाली चीजें सोया बाबूना और अकलीलउल मलिक या लेप करना चाहिये और जो सूजन बादी के कारण से हो तो जो कुछ कि सरतान अर्थात् सूजन के विषय में वर्णन कियागया है यहां भी वही काम में लाना चाहिये और कोई गर्म लेप न लगाना चाहिये क्योंकि यह सूजन नष्ट नहीं होगी परन्तु ठंडी चीजों का लगाना अवश्य है जिससे विशेष न हो जाय और इस रोग में कम खाना तथा गोश्त का न खाना चाहिये ॥

सातवाँ प्रकरण ।

होंठ की फुन्सियों का वर्णन ।

फुन्सियों के उत्पन्न होने का कारण या तो खून होता है या पित्त (इलाज) कीफाल्की फसद खोलें और हररड़ के काढ़े से अथवा अफ्तीमून के काढ़े से तबियत को नर्म करें ॥

आठवाँ प्रकरण ।

होंठ के घाव का वर्णन ।

इसका कारण बहुधा यों होता है कि फुन्सियों में पीब पड़कर घाव हो

को इन इलाजों से आरोग्यता न हो तो फिर यह उपाय है कि होंठ की ल-
म्बाई में चीरादे और घावके किनारे को जो सीन के पीछे असली दशा पर
आसके कटादेवे फिर ऐसी तरहपर सीये कि अपनी असली दशापर आजा
य और खून के बन्द करने वाली दवाएँ जैसे गुलाब का फूल, केसर, दम्मुल
असवैन (हीरा दुखी गोंद) महीन पीसकर घाव पर छिड़कदे और उस
के उपरान्त घाव भरलाने वाले मल्हमों से इलाज करें ॥

छटा प्रकरण ।

होंठ की सूजन का वर्णन ।

इस सूजनका कारण दोषोंकी अधिकता होती है और दोषोंकी अधिकता
के चिन्ह बहुधा वर्णन होचुके हैं (इलाज) जिस प्रकार का दोष हो उसी के
अनुसार फसद और दस्तों के द्वारा शरीर के मवाद को निकालें और मवाद
के निकालने के पीछे ऐसी चीजों से लेप करें जिनमें मवाद के निकालने के
साथ अजीर्ण भी हो जैसे रसौत, बाबूना, जौका आटा, गुलाब, उसारे गा-
फिस मकोय और अन्त में बादाम के तेल और मोम से मरहम बनाकर ल
गाव और गर्म पानी से बहुत सा धोया करें और कफ वाली सूजनमें मवाद
के निकालने वाली चीजें सोया बाबूना और अकलीलउल मलिक या लेप
करना चाहिये और जो सूजन बादी के कारण से हो तो जो कुछ दि स्त-
तान अर्थात् सूजन के विषयमें वर्णन कियागया है यहां भी वही काम में
लाना चाहिये और कोई गर्म लेप न लगाना चाहिये क्योंकि यह सूजन नष्ट
नहीं होगी परन्तु ठंडी चीजों का लगाना अवश्य है जिससे विशेष न होजाय
और इस रोग में कम खाना तथा रात का न खाना चाहिये ॥

सातवां प्रकरण ।

होंठ की फुन्सियों का वर्णन ।

फुन्सियों के उत्पन्न होने का कारण या तो खून होता है या पित्त
(इलाज) कीफालकी फसद खोलें और दस्त कराके ... अथवा अफसीमून के
काढ़े से तबियत को नर्म करें ॥

आठवां प्रकरण ।

होंठ के घाव का वर्णन ।

इसका कारण बहुधा यों होता है कि फुन्सियों में पीव पड़कर घाव हो

॥ सातवां अध्याय ॥

मसूड़े और दांतों के रोगों का वर्णन ।

जानना चाहिये कि इस विषय में कि दांतों की जात हड्डी है या पट्ठा हकीमों का मत जुदा जुदा है । हर एकने अपना२ प्रयोजन सिद्ध करनेके लिये पृथक्२ विचार किया है जो हकीम कि दांतों को कठोरता के कारण से उनको हड्डियों में जानते हैं और उनको सुन्न बताते है वह यह कहते है कि जो उन में ज्ञानशक्ति होती तो उनको काटने और घिसने में कष्ट उत्पन्न होता परन्तु थोडा सा दर्द जो उखडने के उपरान्त मालूम होता है उसका कारण या तो उस पट्ठे की दुष्ट प्रकृति है जो दांतों की जडों में मिली हुई है या दांतों की जडकी सूजन है और क्योंकि यह अंग दांतोंके बहुत समीप हैं इससे ध्यान में ऐसा आया करता है कि केवल दांतों में ही दर्द है और जो हकीम दांतों को पट्ठों में इस लिये गिनते है कि वह सर्दी और गर्मी का गुण ग्रहण करते हैं और खटाई से सुन्न होजाते हैं तो वह यह कहते हैं कि सुन्न पट्ठे के सिवाय नहीं होता और दांतों के सुन्न होने को अर्बी में जर्स कहते हैं परन्तु ठीक बात यह है कि दांतों की जात हड्डी है और दिमाग के पट्ठे उसकी जडसे मिले हुए हैं किन्तु उस में मिलगये है और यह पट्ठे उसकी जडों में विशेष है सो उसका दर्द और टीसें इन पट्ठों के कारण से हैं और टूटजाना रेतने या काटने के असर से कष्ट न पाना उसकी [illegible] ति पर निर्भर है कि वह हड्डी है और हकीम जालीनूस ने कहा है [illegible] उन में ज्ञा[illegible] है और वह फडकते है जैसे होठ फडकता है [illegible] जाते है औ[illegible] साबतकराह के बेटे ने इ[illegible] पुष्ट [illegible] हकीम शे[illegible] सैना और उसके मानने [illegible] ऐसे [illegible] में भी विरुद्धता है कि [illegible] की प[illegible] से उत्पन्न होती है [illegible] जम आती है और इस [illegible] के वीर्य से बना है जो उ[illegible] नहीं आता और किसी [illegible] बात उस अंग के विरुद्ध [illegible] टुकडा जाता रहता है तो [illegible]

॥ सातवां अध्याय ॥

मसूड़े और दांतों के रोगों का वर्णन ।

जानना चाहिये कि इस विषय में कि दांतों की जात हड्डी है या पट्ठा हकीमों का मत जुदा जुदा है । हर एकने अपना२ प्रयोजन सिद्ध करनेके लिये पृथकृ२ विचार किया है जो हकीम कि दांतों को कठोरता के कारण से उनको हड्डियों में जानते हैं और उनको सुन्न बताते है वह यह कहते है कि जो उन में ज्ञानशक्ति होती तो उनको काटने और घिसने में कष्ट उत्पन्न होता परन्तु थोडा सा दर्द जो उखडने के उपरान्त मालूम होता है उसका कारण या तो उस पट्ठे की दुष्ट प्रकृति है जो दांतों की जडों में मिली हुई है या दांतों की जडकी सूजन है और क्योंकि यह अग दांतोंके बहुत समीप हैं इससे ध्यान में ऐसा आया करता है कि केवल दांतों में ही दर्द है और जो हकीम दांतों को पट्ठों में इस लिये गिनते है कि वह सर्दी और गर्मी का गुण ग्रहण करते हैं और खटाई से सुन्न होजाते हैं तो वह यह कहते हैं कि सुन्न पट्ठे के सिवाय नहीं होता और दांतों के सुन्न होने को अर्बी में जर्स कहते हैं परतु ठीक बात यह है कि दांतों की जात हड्डी है और दिमाग के पट्ठे उसकी जडसे मिले हुए हैं किन्तु उस में मिलगये है और यह पट्ठे उसकी जडों में विशेष है सो उसका दर्द और टीसें इन पट्ठों के कारण से हैं और टूटजाना रेतने या काटने के असर से कष्ट न पाना उसकी [illegible] ति पर निर्भर है कि वह हड्डी है और हकीम जालीनूस ने कहा है [illegible] उन में ज्ञा[illegible] है और वह पकडते है जैसे होठ फडकता है [illegible] जाता है औ[illegible] साबतकराह के बेटे ने इ[illegible] पुष्ट [illegible] हकीम [illegible] सैना और उसके मानने [illegible] ऐसे [illegible] में भी विरुद्धता है कि [illegible] की [illegible] से उत्पन्न होती है [illegible] चर्बी [illegible] जम आती है और इस [illegible] के वीर्य से बना है जो उ[illegible] नहीं आता और किसी [illegible] बात उस अग के विरुद्ध [illegible] टुकडा जाता रहता है तो [illegible]

यहहै कि सर्द दुष्ट प्रकृति बिना मवाद की दर्दका कारणहो उसका चिन्ह यह है कि ठंढा पानी पीने और ठंढी हवा लगने के पीछे उत्पन्न हो और मुखमें गर्म पानी लेने से रुकजाय (इलाज) जो कुछ कफ वाली सूजन में मवाद को निकलने के लिये सिकाव और कुल्ले और दागका वर्णन आवेगा यहांभी काम में लावे और चाहिये कि कालीमिर्चको महीन पीसकर और शहद में मिलाकर दांतोंकी जड़ोंमें मलै और इसतरहसे रोगीके भोजनोंमें लहसन और गर्म दवाएं और केसर डाले (सूचना) बिना मवादके तर दुष्ट प्रकृति दर्द उत्पन्न नहीं करती परन्तु बिना मवादकी खुश्क दुष्ट प्रकृति कभी अंग के पिघल भागों को इकट्ठा करनेसे दर्दकी दशा पहुंचा देतीहै तो उसका इलाज तरी पहुंचादेनेवाली चीजों से करसकतेहैं । पांचवां भेद यहहै कि कफके कारणसे दर्द उत्पन्नहो उस का चिन्ह यहहै कि सर्दीके पहुंचने से बढजाय और गर्मीसेलाभ मालूम हो चाहे गर्मी और सर्दी भीतरी हो चाहे ऊपरी और इस दर्द में टीस वा गर्मी के चिन्ह कुछ नहीं होते हैं।

(इलाज) यारज और एलवा की गोली वा अन्य ऐसीही दवा का सेवन करना उचितहै जिससे कफ हटजाय और पोदीना सातर और अकरकरा सिर्के में औटाकर कुल्लेकरें जिससे कफ कटकर निकलजाय और दवा की शक्तिको अंग की गहराई में पहुंचादे और अकरकरा, पापडी नोंन, सोंठ, चैना, पीपल महीन पीसकर सूजनपर मलें और तिरियाक अरबा, और तरिया कुल अस्नान अथवा फलूनियां दांतोंकी जड़ोंपर रक्खें और नोंन और बाजरा गर्म करके जावडों की हड्डियों को सिकाव की रीतिपर सेकें या केवल कपड़ेही को बहुत गर्म करके सिकाव करें जिस से दांतों में से मवाद बाहर की तरफ खिचआवे और क्योंकि बाहर की तरफ मवाद के खिच आने से दर्द थम जाता है अर्थात् जिस समय जड़ें सूज जाती हैं तो दर्द जाता रहता है और चाहिये कि सिकाव ऐसी तरह पर करें कि लाभ के सिवाय हानि न पहुंचावें और उस की यह विधि है कि भोजन करने के पीछे जब तक चार घंटे न बीत जांय तब तक सिकाव न करें और होने के पीछे जब तक २ घंटे न बीत जांय तब तक भोजन न करें क्यों कि जो ऐसा न करें तो इस बात का भय है कि कच्चा मवाद बिना पचे उस जगह खिच आवे और दर्दको बढावें तिरिया कुल अस्नान के बनाने की यह विधि है कि जुन्दे बेदस्तर, हींग, काली मिरच, सोंठ बनफशा की जड़, अफीम इन छ ओं दवाओं को बराबर लेकर कूटछान कर शहद

यहहै कि सर्द दुष्ट प्रकृति विना मवाद की दर्दका कारणहो उसका चिन्ह यह है कि ठढा पानी पीने और ठढी हवा लगने के पीछे उत्पन्न हो और मुखमें गर्म पानी लेने से रुकजाय (इलाज) जो कुछ कफ वाली सूजन में मवाद को निकलने के लिये सिकाव और कुल्ले और दागका बर्णन आवेगा यहांभी काम में लावे और चाहिये कि कालीमिर्चको महीन पीसकर और शहद में मिलाकर दांतोंकी जड़ोंमें मले और इसतरहसे रोगीके भोजनोंमें लहसन और गर्म दवाए और केसर डाले (सूचना) विना मवादके तर दुष्ट प्रकृति दर्द उत्पन्न नहीं करती परन्तु विना मवादकी खुश्क दुष्ट प्रकृति कभी अग के पिछल भागों को इकट्ठा करनेसे दर्दकी दशा पहुचा देतीहै तो उसका इलाज तरी पहुँचादेनेवाली चीजों से करसकतेहै । पांचवां भेद यहहै कि कफके कारणसे दर्द उत्पन्नहो उस का चिन्ह यहहै कि सर्दीके पहुचने से बढजाय और गर्मीसेलाभ माळूम हो चाहे गर्मी और सर्दी भीतरी हो चाहे ऊपरी और इस दर्द में टीस वा गर्मी के चिन्ह कुछ नहीं होते हैं ।

(इलाज) पारज और एलवा की गोली वा अन्य ऐसीही दवा का सेवन करना उचितहै जिससे कफ हटजाय और पोदीना सातर और अकरकरा सिर्के में औटाकर कुल्लेकरें जिससे कफ कटकर निकलजाय और दवा की शक्ति को अग की गहराई में पहुचादे और अकरकरा, पापडी नोंन, सोंठ, चैना, पीपल महीन पीसकर मूजनपर मलें और तिरियाक अरबा, और तरिया कुल अस्नान अथवा फलूनियां दांतोंकी जडोंपर रक्खें और नोंन और बाजरा गर्म करके जावडों की हड्डियों को सिकाव की रीतिपर सेकें या केवल कपडेही को बहुत गर्म करके सिकाव करें जिस से दांतों में से मवाद बाहर की तरफ खिचआवे और क्योंकि बाहर की तरफ मवाद के खिच आने से दर्द थम जाता है अर्थात् जिस समय जडें सूज जाती हैं तो दर्द जाता रहता है और चाहिये कि सिकाव ऐसी तरह पर करें कि लाभ के सिवाय हानि न पहुचावें और उस की यह विधि है कि भोजन करने के पीछे जब तक चार घंटे न बीत जांय तब तक सिकाव न करें और होने के पीछे जब तक २ घटे न बीत जांय तब तक भोजन न करें क्यों कि जो ऐसा न करें तो इस बात का भय है कि कच्चा मवाद विना पचे उस जगह खिच आवे और दर्दको बढावें तिरिया कुल अस्नान के बनाने की यह विधि है कि जुन्दे बेदस्तर, हींग, काली मिरच, सोंठ बनफशा की जड़, अफीम इन छ ओं दवाओं को बराबर लेकर कूटछान कर शहद

कि निकम्मा मवाद दांतों की जडों में सडजाय और उनकों खराब करदें और दांतों के निकम्मे होने पर टूटने और फटने से अपने आप दर्द उत्पन्न होजाता है तो वे हिलते है न बाहर से कोई चीज उनकी जड में आती है (इलाज) अकरकरा, अफीम, कुन्दरू गोंद, बारीक पीसकर स्त्रियों के दूध वा गौ के दूध में मिलाकर रक्खें जिससे दर्द रुके और दांत विशेष न फटने पावें और जो यह उपाय लाभदायक न हो तो दागदें जिस तरह पर कि कफ वाले दर्द में उसका वर्णन होचुका है। आठवां भेद यह है कि निकम्मी हवा अर्थात् वादी सिर मेंसे निकलकर दातों की जड और उस पट्ठे की तरफ जो दांतों पर घिरा हुआ है गिरे उसका चिन्ह यह है कि दर्द खिचावट के साथ हो और दर्द जगह बदलता रहे (इलाज) जिस मवाद से कि वादी उत्पन्न होती है उसके निकालने के लिये बनफ़शा की गोली वा पारे की गोली वा अन्य ऐसी ही दवा रोगी को खवावें और वादी के दूर करने के लिये सौंफ, अफीम, जीरा प्रत्येक ३॥ माशे, पानी में औटा कर उसका गर्म पानी मुख में रक्खें और दांतों की पुष्टता के लिये समगुल्वतम् (एक गोंद) काली मिर्च, किब्र की जड की छाल, सोया महीन पीस कर शहद में मिलाकर दांतों पर मले और ठंडे पानी से और जो चीजें कफ को बढाती हैं उन सब से बचता रहै और बादी को नष्ट करने वाली वस्तुओं का सेवन करे नवां भेद यह है कि दांतों में कीडे उत्पन्न होकर दर्द पैदा करें और दांतों में कीडे इस तरह उत्पन्न होते हैं कि किसी छेददार घुने हुए दांत में तरी आजाय और सडकर उसके कीडे बनजाय (इलाज) गन्दना के बीज, खुरासानी अजवायन, पियाज के बीज को महीन पीसकर मोम में अथवा बकरी की चर्वी में मिलावें और उसको आग पर डालें और उस के धुऐं को नलकी के द्वारा से इस तरह कि उस नलकी का एक सिरा उस दवा पर रक्खा रहै और दूसरे सिरे को दांतों पर पहुचावें जिससे उस दवा के धुऐं से कीडे मर कर गिरपडें (सूचना) दांतों की आरोग्यता की रक्षा के लिये मनुष्य को नीचे लिखी हुई दस बातों पर सर्वदा दृष्टि रखनी चाहिये जिससे उसके दांत सब पीडाओं से बचे रहें। एक तो अजीर्ण से जिसमें खाया हुआ अन्न विगड जाताहै और बहुत खाने और आमाशय को बोझदार करने से बचे और उन भोजनों से बचे जो तुर्त विगड जाते हैं जैसे दूध और मछली * खानेमें वेढंगे

* दूध और मछली को एक समय में बराबर अथवा दोनों को मिलाकर खाना वर्जित है क्योंकि इन दोनों के एक बार खाने से जुकाम अर्थात् कफ उत्पन्न होजाता है और इस रोग का अच्छा होना कठिन है।

कि निकम्मा मवाद दांतों की जडों में सडजाय और उनको खराब करदें और दांतों के निकम्मे होने पर टूटने और फटने से अपने आप दर्द उत्पन्न होजाता है तो वे हिलते है न बाहर से कोई चीज उनकी जड में आती है (इलाज) अकरकरा, अफीम, कुन्दरू गोंद, बारीक पीसकर स्त्रियों के दूध वा गौ के दूध में मिलाकर रक्खें जिससे दर्द रुके और दांत विशेष न फटने पावें और जो यह उपाय लाभदायक न हो तो दागदें जिस तरह पर कि कफ वाले दर्द में उसका वर्णन होचुका है । आठवां भेद यह है कि निकम्मी हवा अर्थात् वादी सिर मेंसे निकलकर दांतों की जड और उस पठ्ठे की तरफ जो दांतों पर घिरा हुआ है गिरे उसका चिन्ह यह है कि दर्द खिचावट के साथ हो और दर्द जगह बदलता रहे (इलाज) जिस मवाद से कि वादी उत्पन्न होती है उसके निकालने के लिये बनफशा की गोली वा पारे की गोली वा अन्य ऐसी ही दवा रोगी को खवावें और वादी के दूर करने के लिये सौंफ, अफीम, जीरा प्रत्येक ३॥ माशे, पानी में औटा कर उसका गर्म पानी मुख में रक्खें और दांतों की पुष्टता के लिये समगुल्वतम् (एक गोंद) काली मिर्च, किब्र की जड की छाल, सोया महीन पीस कर शहद में मिलाकर दांतों पर मले और ठंडे पानी से और जो चीजें कफ को बढाती हैं उन सब से बचता रहे और वादी को नष्ट करने वाली वस्तुओं का सेवन करें नवां भेद यह है कि दांतों में कीडे उत्पन्न होकर दर्द पैदा करें और दांतों में कीडे इस तरह उत्पन्न होते है कि किसी छेददार घुने हुए दांत में तरी आजाय और सडकर उसके कीडे बनजाय (इलाज) गंदना के बीज, खुरासानी अजवायन, पियाज के बीज को महीन पीसकर मोंम में अथवा बकरी की चर्बी में मिलावें और उसको आग पर डालें और उस के धुएँ को नलकी के द्वारा से इस तरह कि उस नलकी का एक सिरा उस दवा पर रक्खा रहे और दूसरे सिरे को दांतों पर पहुचावें जिससे उस दवा के धुएँ से कीडे मर कर गिरपडें (सूचना) दांतों की आरोग्यता की रक्षा के लिये मनुष्य को नीचे लिखी हुई दस बातों पर सर्वदा दृष्टि रखनी चाहिये जिससे उसके दांत सब पीडाओं से बचे रहें । एक तो अजीर्ण से जिसमें आया हुआ अन्न बिगड जाताहै और बहुत खाने और आमाशय को बोझदार करने से बचे और उन भोजनों से बचे जो तुर्त बिगड जाते हैं जैसे दूध और मछली * खानेमें बेढंगे

* दूध और मछली को एक समय में बराबर अथवा दोनों को मिलाकर खाना वर्जित है क्योंकि इन दोनों के एक बार खाने से जुजाम अर्थात् कोढ उत्पन्न होजाता है और इस रोग का अच्छा होना कठिन है ।

जो खुश्क होने पर भी गर्म होते है ये है जलाहुआ नमक, जलाहुआ पापड़ी नोन, सोंठ, दालचीनी, सुखाजूफा, कुन्दवेलके फूल, पहाडी गौका जलाहुआ सींग, जलाहुआ पोदीना, हाऊवर, जरावदगिर्द अर्थात् एक गोल कड़वी जड़, इन्द्रायन का गूदा, अकरकरा, पतरज, किन्न की जड़ की छाल, किन्न अगर छुआरे की जली हुई गुठली, खरगोश का जला और वे जलाहुआ सिर अगर की लकड़ी की राख, पापड़ी नोन की राख, मस्तगी, जलाहुआ सीसा। और जब गर्मी और सर्दी की स्थान प्रकृति करनी है। तो ठंडी दवाओं को गर्म दवाओं के साथ आवश्यकतानुसार मिलालेवें।

दूसरा प्रकरण

दांतोंके सुस्त और सुन्न होनेका कारण

इस के दो कारण हैं पहिला कारण तो ऊपरी है जैसे किसी मवाद के रोकने वाली अथवा कसैली और अधिक खट्टी वस्तु का खाना और चवाना जो दांतों पर वहुत देर तक ठहरे फिर उसम से थोडीसी पतली और हलकी दांतों की जड़में घुसजाय और ठंड और खुरखुरापन उत्पन्न करे वहुत देरतक ठहरने की प्रतिज्ञा इस लिये लगाइ है कि यद्यपि वह वस्तु वहुत खट्टी हो परन्तु नर्मी और पतलेपन के कारणसे दांतों में न ठहरे तो सुस्ती नहीं उत्पन्न करती है जैसे सिर्का (इलाज) जो गर्म प्रकृति हो तो खुर्फाकी पत्ती और उसकी टह-नियां और तुलसी चवाव और जिस नगर में खुर्फा न मिलता हो या उसकी ऋतु न हो और इस कारण से खुर्फा की पत्ती और टहनी न मिले तो उसके बीज कुटे हुए और पानी में भीगे उसकी जगह काम आतेहैं।

और छुआरे का शीरा और कच्चे जैतूनके तेल से कुल्ला करना और गर्म कवाव दांतों में दवाना लाभदायक है और जो प्रकृति म गर्मी न हो तो अख-रोट और फुन्दक की मिंगी (एक पहाड़ी पेड का फल है) खोपरा, कड़वे बादाम की मिंगी, गर्म करके दांतों पर मले और पीला मोम, अलेउल अर्थात् (गोंद) चवावें और सातर, तुलसी, शहद और नमक दांतों पर मले और जैतून के तेल की गाद जिसको तांवे के वादल में आग पर या धूप में रखकर गाढा कर लिया हो दांतों पर लगाना लाभदायक है। दूसरा कारण भीतरी हो जैसे खट्टा दोष आमाशय के मुख में इकट्ठा हो और वमन के साथ नि-कल आवे और दांतों को सुस्त करदें अथवा वमन के साथ न निकले परन्तु

जो खुश्क होने पर भी गर्म होते है ये है जलाहुआ नमक, जलाहुआ पापडी नोन, सोंठ, दालचीनी, सुखाफा, कुन्दबेलके फूल, पहाडी गौका जलाहुआ सींग, जलाहुआ पोदीना, हाऊबर, जरावदगिर्द अर्थात् एक गोल कड्वी जड, इन्द्रायन का गूदा, अकरकरा, पतरज, किब्र की जड की छाल, किब्र अगर छुआरे की जली हुई गुठली, खरगोश का जला और बे जलाहुआ सिर अगर की लकडी की राख, पापडी नोन की राख, मस्तगी, जलाहुआ सीसा। और जब गर्मी और सर्दी की स्थान प्रकृति करनी है। तो ठंडी दवाओं को गर्म दवाओं के साथ आवश्यकतानुसार मिलालेवें।

दूसरा प्रकरण

दांतोंके सुस्त और सुन्न होनेका कारण

इस के दो कारण हैं पहिला कारण तो ऊपरी है जैसे किसी मवाद के रोकने वाली अथवा कसेली और अधिक खट्टी वस्तु का खाना और चबाना जो दांतों पर बहुत देर तक ठहरे फिर उसमें से थोडीसी पतली और हलकी दांतों की जडमें घुसजाय और ठंड और खुरखुरापन उत्पन्न करे बहुत देरतक ठहरने की प्रतिज्ञा इस लिये लगाई है कि यद्यपि वह वस्तु बहुत खट्टी हो परन्तु नर्मी और पतलेपन के कारणसे दांतों में न ठहरे तो सुस्ती नहीं उत्पन्न करती है जैसे सिर्का (इलाज) जो गर्म प्रकृति हो तो खुर्फाकी पत्ती और उसकी टह-नियां और तुलसी चबाव और जिस नगर में खुर्फा न मिलता हो या उसकी ऋतु न हो और इस कारण से खुर्फा की पत्ती और टहनी न मिले तो उसके बीज कुटे हुए और पानी में भीगे उसकी जगह काम आतेहैं।

और छुआर का शीरा और कच्चे जैतूनके तेल से कुल्ला करना और गर्म कबाब दांतों में दबाना लाभदायक है और जो प्रकृति में गर्मी न हो तो अस-रोट और फुन्दक की मिंगी (एक पहाडी पेड का फल है) खोपरा, कड्वे बादाम की मिंगी, गर्म करके दांतों पर मले और पीला मोम, अलेजुल अर्थात् (गोंद) चबावें और सातर, तुलसी, शहद और नमक दांतो पर मले और जैतून के तेल की गाद जिसको तांबे के बादल में आग पर या धूप में रखकर गाढाकर लिया हो दांतों पर लगाना लाभदायक है। दूसरा कारण भीतरी हो जैसे खट्टा दोष आमाशय के मुख में इकट्ठा हो और वमन के साथ नि-कल आवे और दांतों को सुस्त करदें अथवा वमन के साथ न निकले परन्तु

उसमें दांतों का सेक करे तो जमी हुई सर्दी को उसमें से निकाल देती है और जगली बकरी का खून भूनकर और गर्म करके उससे सिकाव करें तो दांतों की सर्दी को प्रकृति के अनुसार खोदेती है और सेकके पीछे गुलरोगन में मस्तगी घिसकर गर्म करके मुख में रक्खें जिससे दांतों पर और मसूढ़ों को शक्ति पहुचे और ठंडे दर्द को रोके तिरियाकचड़ा और मळसा का तेल मलना लाभदायक है और ऐसे ही राई का तेल मुखमें रखना लाभ दायक है दूसरा कारण यह है कि दांतों में विशेष गर्मी उत्पन्न हो और उनकी समानता को बिगाडदें और ऐसी खुश्की उत्पन्नकरे कि दांत थोडे सुन्न होजाय जैसे पहले भेदमें जमादेने वाली सर्दी दांतों के सुन्न करने का कारण होती है तो इस भेद में विशेष गर्मी सुन्न करने का कारण हो इस कारण में यह रोग बहुधा प्रगट होता है कि सूखजाने के कारणसे रूहके मार्ग बंद होजाते हैं और दांतों में गर्मी होनेका चिन्ह है कि मसूडों और दांतों के छूने से गर्मी मालूम हो और मसूडे लाल होजांय और उचित है कि दांतों के रंगम भी कुछ लाली आजाय (इलाज) गुलरोगन म कपूर और चदन मिलाकर दांतों पर मलें और मुखमें रक्खे और खुर्फाकी पत्ती और टहनियां उसके बीचम चबावे।

चौथा प्रकरण
दांतोंके पोले होजानेका वर्णन

इस रोग के दो भेद हैं पहला यह है कि निकम्मी रतूबत दांतोंमें भीतर घुमकर सडजाय और उनकी रूहकी प्रकृतिको बिगाडदे तो इसकारणसे दांत धुन जाते हैं और भुरभुरे होजातेहैं और उसका चिन्ह यहहै कि दांत अपनी पहली दशापर रहें और रंगमें हरापन पीलापन या कालापन आजाय (इलाज) यारजात् और गोलियोंसे दिमागको साफ करें और दांतोंकी पुष्टिता के लिये ऐसी दवा जो जमा देनेवाली हो और गलाने वाली न हो जैसे रसौत, मारदेन, नगरमोथा, माजू, अक्करकरा दांतों पर मले जिस से निकम्मे मवाद को ग्रहण न करें और अधीरा, अनार के फूल, फिटकरी सिर्कमें औटाकर कुल्ला करें और चाहिये कि दांतों की जोनसी जगह गली हुई और घुनी हुई और खोखला हो गई हो तो उस में सुक, मस्तगी और धाढासा कपूर महीन पीसकर भरदें यह दवा विशेष घुने होने को और कष्ट को जो वस्तुओं के चबाने के समय होता है उस को रोक देती है और दर्द को थाम देती है और चाहिये किपहले दांतोंके निकम्मे भागों को रेतीसे रेतकर साफ करदें जिससे उनमें से खराबी दूसरे दांतों

उसमें दांतों का सेक करे तो जमी हुई सर्दी को उसमें से निकाल देती है और जंगली बकरी का खून भूनकर और गर्म करके उससे सिकाव करें तो दांतों की सर्दी को प्रकृति के अनुसार खोदेती है और सेकके पीछे गुलरोगन में मस्तगी घिसकर गर्म करके मुख में रक्खें जिससे दांतों पर और मसूढों को शक्ति पहुचे और ठंडे ददा को रोके तिरियाकबडा और मळसा का तेल मलना लाभदायक है और ऐसे ही राई का तेल मुखमें रखना लाभ दायक है दूसरा कारण यह है कि दांतों में विशेष गर्मी उत्पन्न हो और उनकी समानता को बिगाडदें और ऐसी खुश्की उत्पन्नकरें कि दांत थोडे सुन्न होजांय जैसे पहले भेदमें जमादेने वाली सर्दी दांतों के सुन्न करने का कारण होती है तो इस भेद में विशेष गर्मी सुन्न करने का कारण हो इस कारण में यह रोग बहुधा प्रगट होता है कि सूखजाने के कारणसे रूहके मार्ग बंद होजाते हैं और दातों में गर्मी होनेका चिन्ह है कि मसूडों और दांतों के छूने से गर्मी मालूम हो और मसूडे लाल होजांय और उचित है कि दांतों के रंगम भी कुछ लाली आजाय (इलाज) गुलरोगन म कपूर और चंदन मिलाकर दातों पर मलें और मुखमें रक्खे और खुर्फाकी पत्ती और टहनियां उसके बीचम चबावें।

चौथा प्रकरण
दांतोंके पोले होजानेका वर्णन

इस रोग के दो भेद हैं पहला यह है कि निकम्मी रतूबत दांतोंमें भीतर घुसकर सडजाय और उनकी रूहकी प्रकृतिको बिगाडदे तो इसकारणसे दांत घुन जात हैं और भुरभुरे होजातेहैं और उसका चिन्ह यहहै कि दांत अपनी पहली दशापर रहें और रंगमें हरापन पीलापन या कालापन आजाय (इलाज) यारजात् और गोलियोंसे दिमागको साफ करे और दांतोंकी पुष्टिता के लिये ऐसी दवा जो जमा देनेवाली हो और गलाने वाली न हो जैसे रसौत, नारदेन, नगरमोथा, माजू, अकरकरा दांतों पर मले जिस से निकम्मे मवाद को ग्रहण न करें और अधीरा, अनार के फूल, फिटकरी सिर्केमें औटाकर कुल्ला करे और चाहिये कि दांतों की जौनसी जगह गली हुई और घुनी हुई और खोखला हो गई हो तो उस में मुक, मस्तगी और थोडासा कपूर महीन पीसकर भरदें यह दवा विशेष घुने होने को और कष्ट को जो वस्तुओं के चबाने के समय होता है उस को रोक देती है और दर्द को थाम देती है और चाहिये किपहले दांतोंके निकम्मे भागों को रेतीसे रेतकर साफ करदें जिससे उनमें से सरावी दूसरे दांतों

अर्थात् दांतका पीला होना भी कहतेहैं और उसका कारण निकम्मे तर भाफ के परमाणु होतेहैं जो चपदार नहीं और उनमें कुछ गर्मी भी हो और आमाशयसे उठकर मुखके ऊपरी भाग पर इकट्ठे होकर दांतों की जड़ों में चिपट जांय फिर जो कुछ कि मुखके ऊपरी भागपरहै वह जीभ के हलने के कारणसे दूर होजाय और जितने दांतों की जड़ोंम भीतर बाहर है वह सब बाकी रह जाय क्योंकि यह जगह जीभके हर समयके फिरने से बचीहुई है किन्तु उसमें बिना चलाय जीभ का पहुचना कठिन है और यह बीमारी उन लोगों को उत्पन्न होतीहै जो बहुत दिनोंतक दांतन न करें और न दांतोंको माज (इलाज) जो दोष कि इस बीमारी का कारणहै पहले उसको देह और आमाशयमें से निकाले फिर जो हफ अर्थात् दांतों का मैल बहुत कड़ा हो तो उसको लोहे के औजारसे धीरे २ छील डालें और जो इतना कड़ा न हो तो एक साथ अलग करें और जब उसको उखाडके अलग करदें तो फिर नोंन, समुद्री झाग सीपी की राख, घिसा हुआ जलाशीशा, और पहाडी गौका जलाहुआ सींग, से मंजन बनाकर लगावें जिससे बाकीको दूर करदे और फिर कड़ा न होनेदे।

छटा प्रकरण

दांतोंके रंग बदलजाने का वर्णन

उसका यह कारणहै कि निकम्मा मवाद दांतोंकी जड़में घुसकर उनको अपना रंगदे और यह नहीं कि मैल उत्पन्न करै फिर जो मवाद गाढा हो तो बहुत दिनों में बदलेगा और जो हलका और पतला मवाद हो तो थोडेसे दिनों में सब दांत बदल जांयगे (इलाज) पहले तो गोलियों और कुल्लोंसे देह और दिमाग को पवित्र करें और मवादके निकलने के पीछे जो दांतों का रंग पीला होतो हरी मकोयके पानी और सिर्केसे कुल्ले करें फिर मसूर जौ और सितमी का आटा सिर्के में मिलाकर दांतोंपर रक्खें और जब दांतों का रंग काला होतो बिब्री जड़, मजरी, मस्तगी, हिन्दी छडीला कूट छानकर गुलरोगन मे मिलाकर काम में लावें और जा दांतोंका रंग चूने की रंगत का हो तो मस्तगी का तेल दांतोंपर मलें और मुर्गी की चर्बी और मोम सेराके तलमें पिघलाकर और थोडासा जूफा और कुछ हींग उसमें मिलाकर दांतोंपर लगावें और इस रोगमें और बादी में सब दवाओंसे विशेष लाभदायक यहहै कि इन्द्रायनके बीज निकालकर फिर इसको सिर्के में औटावे और उसमें कुल्ला करें और जानना चाहिये कि इन्द्रायनके बीजको अर्वाम (दवीद) कहतेहैं और

अर्थात् दांतका पीला होना भी कहतेहैं और उसका कारण निकम्मे तर भाफ के परमाणु होतेहैं जो चपदार नहीं और उनमें कुछ गर्मी भी हो और आमाशयसे उठकर मुखके ऊपरी भाग पर इकठे होकर दांतो की जडों में चिपट जांय फिर जो कुछ कि मुखके ऊपरी भागपरहै वह जीभ के हलने के कारणसे दूर होजाय और जितने दांतों की जडोंम भीतर बाहर है वह सब बाकी रह जाय क्योंकि यह जगह जीभके हर समयके फिरने से बचीहुई है किन्तु इनमें बिना चलाय जीभ का पहुचना कठिन है और यह बीमारी उन लोगों को उत्पन्न होतीहै जो बहुत दिनोंतक दांतन न करें और न दांतोंको माज (इलाज) जो दोष कि इस बीमारी का कारणहै पहले उसको देह और आमाशयमें से निकाले फिर जो हफ अर्थात् दांतों का मैल बहुत कडा हो तो उसको लोहे के औजारसे धीरे २ छील डालें और जो इतना कडा न हो तो एक साथ अलग करें और जब उसको उखाडके अलग करदें तो फिर नोंन, समुद्री झाग सीपी की राख, घिसा हुआ जलाशीशा, और पहाडी गौका जलाहुआ सींग, से मंजन बनाकर लगावें जिससे बाकीको दूर करदे और फिर कडा न होनेदे।

छटा प्रकरण

दांतोंके रंग बदलजाने का वर्णन

उसका यह कारणहै कि निकम्मा मवाद दांतोंकी जडमें घुसकर उनको अपना रगदे और यह नहीं कि मैल उत्पन्न करे फिर जो मवाद गाढा हो तो बहुत दिनों में बदलेगा और जो हलका और पतला मवाद हो तो थोडेसे दिनों में सब दांत बदल जायगे (इलाज) पहले तो गोलियों और कुल्लोंसे देह और दिमाग को पवित्र करें और मवादके निकलने के पीछे जो दांतों का रग पीला होतो हरी मकोयके पानी और सिर्केसे कुल्ले करें फिर मसूर जौ और खितमी का आटा सिर्के में मिलाकर दांतोंपर रक्खें और जब दांतों का रग काला होतो खिब्बजी जड, मजरी, मस्तगी, हिन्दी छडीला कूट छानकर गुलरोगन मे मिलाकर काम में लावें और जो दांतोंका रग चूने की रगत का हो तो मस्तगी का तेल दांतोंपर मलें और मुर्गी की चर्बी और मोम खेराके तलमें पिघलाकर और थोडासा जूफा और कुछ हींग उसमें मिलाकर दांतोंपर लगावें और इस रोगमें और बादी में सब दवाओंमे विशेष लाभदायक यहहै कि इन्द्रायनके बीज निकालकर फिर इसको सिर्के में औटावे और उसमें कुल्ला करें और जानना चाहिये कि इन्द्रायनके बीजको अबांमें (हबीद) कहतेहैं और

पीसकर दांतों की जडों पर बुरकें जिससे उस में शक्ति आवे। दूसरा कारण यह है कि पतली तरी दांतों की जडों में आजाने से मसूढे और वह पठ्ठे कि जो दांतों को थामें हुए हैं सुस्त होजाय और उसका चिन्ह यह है कि मसूढे ढीले और सुस्त रहें और गर्म और ठंढी चीजों से उनमें हानि पहुंचे और दांत मोटे हों और बोलने के समय मुख का जबड़ा कांपने लगे और बीमार की दांतों की जडों में सर्दी मालूम हो और मुख से लार बहने लगे (इलाज) जो कुछ फालिज अर्थात् अर्द्धांग में मवादका निकालना आदि वर्णन किया है वही इस रोग का इलाज है और गर्म और काबिज अर्थात् विवन्धक दवाओं के काढों से कुल्ले करें जैसे अकरकरा किन्न की जड की छाल, मेंहदी नागरमोथा, भुनी हुई फिटकिरी, गुलाब के फूल, बालछड, और ऐसी ही विवन्धक सूखी हुई दवाओं को महीन पीसकर मसूढे और दांतों पर बुरक और जडों पर लेप करें। तीसरा कारण यह है कि गर्म सूजन मसूडों में उत्पन्न हो इस कारण से मसूढे दांतों से अलग होजांय उसका चिन्ह सूजन का होना और दर्द की अधिकता और टीसें हों (इलाज) फसद खोलें और पछने लगावें और आवश्यकता के अनुसार दस्त की दवाई पीवे जैसा मसूढों की सूजन में वर्णन किया गया है और मवाद के निकालने के पीछे आरम्भ में दोषों के समेटने और रोकने वाली दवायें और ठंढी दवा वंशलोचन, पीली हरडका छिलका, अनार के फूल, समाक मसूडोंपर मलें और हरी बारतंग और हरे खुर्फे के पानी से कुल्ले करें और रोगके बढाव के समय मवादके निकालने वाली चीजों से जैसे हरे धनिये का पानी और गुलरोगन से कुल्ले करें। चौथा कारण यह है कि निर्बलता के कारण से और खून की न्यूनता से मसूढे ढीले होकर दांतों से अलग होजांय जैसे निर्बल मनुष्यों का उत्पन्न हुआ चिन्ह यह है कि मसूढे बिल्कुल सफेद होजांय और ऐसे दिखाईदें कि उनमें खून नहीं रहाहै और यह बात प्रगट है कि मांस सफेद है और उनमें लाली खूनके कारणसे होती है और ऐसाही जो कुछ तरीवाले रोग में वर्णन किया है वह इसरोगमें न पायाजाय (इलाज) बकरे का मांस, हिरन का मांस और मुर्गी के मोटे बच्चोंका मांस, और अंडेकी जर्दीका सेवन करें जिससे शक्ति प्राप्त हो और अच्छा खून उत्पन्न हो और गर्म चीजें जैसे नागरमोथा, बालछड अगर, पिसी हुई मस्तगी, गुलाबके फूल, मसूढोंपर मलें जिससे उनकी तरफ खून खिंच आवे

पीसकर दांतो की जडों पर बुरकें जिससे उस में शक्ति आवे। दूसरा कारण यह है कि पतली तरी दांतों की जडों में आजाने से मसूढे और वह पट्ठे कि जो दांतों को थामें हुए हैं सुस्त होजाय और उसका चिन्ह यह है कि मसूढे ढीले और सुस्त रहें और गर्म और ठंडी चीजों से उनमें हानि पहुंचे और दांत मोटे हों और बोलने के समय मुख का जबडा कांपने लगे और बीमार की दांतों की जडों में सर्दी मालूम हो और मुख से लार बहने लगे (इलाज) जो कुछ फालिज अर्थात् अर्द्धांग में मवादका निकालना आदि वर्णन किया है वही इस रोग का इलाज है और गर्म और काबिज अर्थात् विबन्धक दवा ओं के काढों से कुल्ले करें जैसे अकरकरा किब्र की जड की छाल, महदी नागरमोथा, भुनी हुई फिटकिरी, गुलाब के फूल, बालछड, और ऐसी ही विबन्धक सूखी हुई दवाओं को महीन पीसकर मसूढे और दांतों पर बुरके और जडों पर लेप करें। तीसरा कारण यह है कि गर्म सूजन मसूडों में उत्पन्न हो इस कारण से मसूढे दांतों से अलग होजांय उसका चिन्ह सूजन का होना और दर्द की अधिकता और टीसें हों (इलाज) फसद खोलें और पछने लगावें और आवश्यकता के अनुसार दस्त की दवाई पीवे जैसा मसूडों की सूजन में वर्णन किया गया है और मवाद के निकालने के पीछे आरम्भ में दोषा के समेटने और रोकने वाली दवायें और ठंढी दवा वंशलोचन, पीली हरडका छिलका, अनार के फूल, समाक मसूडोंपर मलें और हरी बारतंग और हरे खुर्फा के पानी से कुल्ले करें और रोगके बढाव के समय मवादके निकालने वाली चीजों से जैसे हरे धनिये का पानी और गुलरोगन से कुल्ले करें। चौथा कारण यह है कि निर्बलता के कारण से और खून की न्यूनता से मसूढे ढीले होकर दांतो से अलग होजांय जैसे निर्बल मनुष्यों का उत्पन्न हुआ चिन्ह यह है कि मसूढे बिल्कुल सफेद होजांय और ऐसे दिखाईदें कि उनमें खून नहीं रहाहै और यह बात प्रगट है कि मांस सफेद है और उनमें लाली खूनके कारणसे होती है और ऐसाही जो कुछ तरीवाले रोग में वर्णन किया है वह इसरोगमें न पायाजाय (इलाज) बकरे का मांस, हिरन का मांस और मुर्गी के मोटे बच्चोंका मांस, और अंडेकी जर्दीका सेवन करें जिससे शक्ति प्राप्त हो और अच्छा खून उत्पन्न हो और गर्म चीजें जैसे नागरमोथा, बालछड अगर, पिसी हुई मस्तगी, गुलाबके फूल, मसूढेपर मलें जिससे उनकी तरफ खून खिंच आवे

लगादिया करें जिससे उसका असर और दांतोंमें न पहुचे। (अथवा) शहतूत के पेडकी छाल, किब्रकी जड, पीली हरताल, अकरकरा, जर्द चोवा, कन्दौ कचरीके बीज इन सबको बराबर लेकर कूट और छानकर सिर्केमें मिलाकर तीन दिन रखदे फिर लेपकरे। (अथवा) लालहरताल सिर्केमें रचाकर उस जगह रखदे तो दांतोंकी जडको बहुत जल्द निर्बल करदेतीहै और सिककी गादभी इसीतरह से दांतों की जडोंका निबल करदेती है और कच्ची अजीरका दूध भी इसमें बलवान् है और अजीरका हरापत्ता महीन पिसाहुआभी लाभदायकहै,

आठवां प्रकरण

बच्चों के दांतों का उपाय।

नीचे लिखे उपायों से दांत सहज में निकल आवे हैं कि उनकी जडों पर तेल, मक्खन, और चर्बियां और गौ की नली का गूदा और उसके सिर का भेजा और खरगोश क सिरका भेजा पका हुआ मलना लाभदायक है और हकीम लोगों ने कुतिया का दूध इसी विषय में प्रकृति के अनकूल ठहराया है और जब दांत निकलने के बीच म दर्द की अधिकता हो तो हरी मकोय का पानी और गुलरोगन मिलाकर गुनगुना करें और उसमें उंगली को चिकना करके धीरे से जावडे पर मले और जब दांत निकलने लगें तो सिर और गर्दन और कानों की जड और नीचे के जावडे को चिकना रक्खे और जो गुनगुने तेल की बद कान में टपकावे तो कुछ भय नहीं और बच्चे को कोई चीज न चबाने दे क्योंकि दांतों का मवाद निकल जायगा।

नवां प्रकरण

दांतों के प्राकृतिक दशा से बढने का वर्णन

इसके दो भेद हैं पहला भेद तो यह है कि दांत बढ जाय और गाढे हो जाय और एक प्रकार की उलजन उनमें उत्पन्न हो और उसका यह कारण है कि दांतों की जडमें मवाद गिरे और जानना चाहिये कि दांत जैसे भोजन को ग्रहण करते हैं और बढते हैं उसी तरह से मैल मवाद का ग्रहण करते हैं और लम्बाई चौडाई में बढ जातेहैं और यह प्रगटहै कि जो फोकोंको ग्रहण न करते तो भांति२के रंगों से रंगीन न होते और दांतोंका रंगीन होना निश्चय मवादके गिरने म भी होता है और यह किस्म दो तरह पर बांटी गई है पहली तो यह है कि जिस का कारण गर्म दोष हो और उस का चिन्ह यह है

लगादिया करें जिससे उसका असर और दांतोंमें न पहुंचे । (अथवा) शहतूत के पेडकी छाल, किबकी जड, पीली हरताल, अकरकरा, जर्द चोवा, कच्ची कचरीके बीज इन सबको बराबर लेकर कूट और छानकर सिर्केमें मिलाकर तीन दिन रखदे फिर लेपकरे । (अथवा) लालहरताल सिर्केमें रचाकर उस जगह रखदे तो दांतोंकी जडको बहुत जल्द निर्बल करदेतीहै और सिककी गादभी इसीतरह से दांतों की जडोंको निबल करदेती है और कच्ची अजीरका दूध भी इसमें बलवान् है और अजीरका हरापत्ता महीन पिसाहुआभी लाभदायक है,

आठवां प्रकरण

बच्चों के दांतों का उपाय ।

नीचे लिखे उपायों से दांत सहज में निकल आते हैं कि उनकी जडों पर तेल, मक्खन, और चर्बियां और गौ की नली का गूदा और उसके सिर का भेजा और खरगोश क सिरका भेजा पका हुआ मलना लाभदायक है और हकीम लोगों ने कुतिया का दूध इसी विषय में प्रकृति के अनकूल ठह राया है और जब दांत निकलने के बीच म दर्द की अधिकता हो तो हरी मकोय का पानी और गुलरोगन मिलाकर गुनगुना करें और उसमें उंगली को चिकना करके धीरे से जावडे पर मले और जब दांत निकलने लगें तो सिर और गर्दन और कानों की जड और नीचे के जावडे को चिकना रक्खे और जो गुनगुने तेल की बूंद कान में टपकावे तो कुछ भय नहीं और बच्चे को कोई चीज न चबाने दे क्योंकि दांतों का मवाद निकल जायगा ।

नवां प्रकरण

दांतों के प्राकृतिक दशा से बढने का वर्णन

इसके दो भेद हैं पहला भेद तो यह है कि दांत बढ जांय और मोटे हो जांय और एक प्रकार की सूजन उनमें उत्पन्न हो और उसका यह कारण है कि दांतों की जडमें मवाद गिरे और जानना चाहिये कि दांत जैसे भोजन को ग्रहण करते हैं और बढते हैं उसी तरह से मैल मवाद का ग्रहण करते हैं और लम्बाई चौडाई में बढ जातेहैं और यह प्रगटहै कि जो फोकोंको ग्रहण न करते तो भांति२के रंगों से रंगीन न होते और दांतोंका रंगीन होना निश्चय मवाद के गिरने म भी होता है और यह किस्म दो तरह पर बांटी गई है पहली तो यह है कि जिस का कारण गर्म दोष हो और उस का चिन्ह यह है

हो (इलाज) जो उस पट्ठे में से जो उसको ठहराता है और दृढ रखता है अलग न हुआ हो और उससे सम्बन्ध रखता हो तो उसका हाथ से पीछे की तरफ हटा देना चाहिये जिससे अपनी जगह में बैठजाय फिर मस्तगी को महीन पीसकर उस पर छिडकदे जिससे उसको दृढ रक्खे और जो सोने के तारों से बांधदें तो अति उत्तम है और जब तक कि अच्छी तरह दृढ न हो तब तक फिटकरी, बारहसिंघा का सींग जला हुआ उस पर छिडकते रहें ॥

दसवां प्रकरण ।

दांतों की खुजली का वर्णन ।

उसके दोकारण हैं पहला कारण तो यह है कि कई प्रकार के पानी जिन की निकम्मी दशा हो जैसे नोंन गन्धक और पापडी नमक के पानी वा अन्य वैसीही वस्तु पीनी पडे और यह बहुधा उत्पन्न हुआ करता है। दूसरा कारण यह है कि ऐसे भोजन खाने में आवें जिनसे तेज दोष उत्पन्नहो और थोडासा-अन्न दांतों की जडोंमें आजाय और कदाचित् उनकी जडम भी घुसजाय और जो यह मवाद देह में भी फैला हुआहो तो सब देह में खुजली उत्पन्न होतीहै और उसका चिन्ह यह है कि दांतों में और उनकी जडों में खुजलीसी मालूम हो इस कारणसे दांतों को आपसमें रिगडने से या और चीजों के चबाने से खुजली पलभरभी न थमें (इलाज) देह और दिमाग से मवादको निकालने के लिये आकाशवलका काढा पिलावे और हुब्बयारज तथा तेज खट्टी और सलोनी वस्तुओंका सेवन करे और दोषों के निकालने लिये जंगली प्याजकी शिकंजबीन से या चूकाकी जड सिर्के में औटाकर उससे कुल्ले करे ।

ग्यारहवां प्रकरण

नींदमें दांत कटकटाने का वर्णन ।

इसका यह कारण है कि अजलों में निर्बलता आजाय और यह दशा ब-हुधा छोटे लडकों को उत्पन्न हुआ करती हैं और बडे होजानेपर स्वाभाविक गर्मीके बढ जानसे जाती रहतीहै और इसीतरहसे यह दशासक्ते मिर्गी, कांपने और फालिज अर्थात् अर्द्धांग के आरम्भमें और पेट में कीडे उत्पन्न होने पर कपकपी के समय और जब कि दांतोंमें दर्द की अधिकता हो उत्पन्न हुआ क-रती है और इसके कारण बडी पुस्तकों में वर्णन किये गयेहैं (इलाज) जिस रोगी को दिमाग की तरी इसरोगका कारण होतो उसके निकालने के लिये

हो (इलाज) जो उस पत्ते में से जो उसको ठहराता है और दृढ रखता है अलग न हुआ हो और उससे सम्बन्ध रखता हो तो उसका हाथ से पीछे की तरफ हटा देना चाहिये जिससे अपनी जगह में बैठजाय फिर मस्तगी को महीन पीसकर उस पर छिडकदे जिससे उसको दृढ रक्खे और जो सोने के तारा से बांधदें तो अति उत्तम है और जब तक कि अच्छी तरह दृढ न हो तब तक फिटकरी, बारहसिंघा का सींग जला हुआ उस पर छिडकते रहें ॥

दसवां प्रकरण ।

दांतों की खुजली का वर्णन ।

उसके दोकारण हैं पहला कारण तो यह है कि कई प्रकार के पानी जिन की निकम्मी दशा हो जैसे नोन गन्धक और पापडी नमक के पानी वा अन्य वैसीही वस्तु पीनी पडे और यह बहुधा उत्पन्न हुआ करता है। दूसरा कारण यह है कि ऐसे भोजन खाने म आवें जिनमें तेज दोष उत्पन्नहो और थोडासा अन्न दांतों की जडोंमें आजाय और कदाचित् उनकी जडम भी घुसजाय और जो यह मवाद देह में भी फैला हुआहो तो सब देह में खुजली उत्पन्न होतीहै और उसका चिन्ह यह है कि दांतों में और उनकी जडों में खुजलीसी मालूम हो इस कारणसे दांतों को आपसमें रिगडने से या और चीजों के चबाने से खुजली पलभरभी न थमे (इलाज) देह और दिमाग से मवादको निकालने के लिये आकाशवल्ली का काढा पिलावे और हुब्बयारज तथा तेज खट्टी और सलोनी वस्तुओंका सेवन करे और दोषों के निकालने लिये जंगली प्याजकी शिकजबीन से या चुकाकी जड सिर्के में औटाकर उससे कुल्ले करे ।

ग्यारहवां प्रकरण

नींदमें दांत कटकटाने का वर्णन ।

इसका यह कारण है कि अजलों में निर्बलता आजाय और यह दशा ब-हुधा छोटे लडकों को उत्पन्न हुआ करती है और बडे होजानेपर स्वाभाविक गर्मीके बढ जानसे जाती रहतीहै और इसीतरहसे यह दशासक्ते मिर्गी, कांपने और फालिज अर्थात् अर्द्धांग के आरम्भमें और पेट में कीड़े उत्पन्न होने पर कपकपी के समय और जब कि दांतोंमें दर्द की अधिकता हो उत्पन्न हुआ क-रती है और उनके कारण बडी पुस्तकों में वर्णन किये गयेहैं (इलाज) जिस रोगी को दिमाग की तरी इसरोगका कारण होतो उसके निकालने के लिये

सुकोड देते हैं और मवाद को निकलने नहीं देते हैं तीसरा भेद यह है कि उसकी सूजन का रंग सफेद होता है और वह छूने में ठंडी मालूम होती है। (इलाज) पहले मवाद को नर्म करने और काटने के लिये शहद और जैतून से कुल्ले करें फिर मवाद के निकालने के लिये बाबूना, सौंफ मरुवा, मेथी के बीज और अलसी पानी में औटाकर उस पानी से कुल्ले करें और जो कारण बलवान् हो तो कफके फोकों के निकालने का उपाय करे॥

तेरहवा प्रकरण।

दांतों की जड से सदा रुधिर बहने का वर्णन।

और यह ऐसा होता है कि दांतों की जड के मांस से खून बहा करता है और उसका यह कारण है कि मसूडों की शक्ति में निर्बलता आजाय क्योंकि निर्बलता होने के कारण से इस खून म जो मसूडों में पहुचता है उसमें ग्रहण करने की शक्ति न रहे और अग म रुधिर भरजाय और क्योंकि वह जगह नर्म होती है इस लिये मसूडे फटकर खून बहने लगता है (इलाज) इस रोग में दोषको इकट्ठा करने वाली और पुष्टिकारक दवा लगावे जैसे जली हुई मसूर, वंशलोचन, कीकर, और माजू इन दवाओं को महीन पीसकर मसूडोंपरमलें और जवहरशिवी और जवहर तरीसी मसूडोंपर बुरकदे। जवहर शिवीके बनानेकी यह विधि है फिटकिरी भूनकर सिर्के में बुझाई हुई १ भाग, नमक २ भाग, लाल फिटकिरी १॥ भाग इन तीनों को महीन पीसकर मसूडों पर बुरकदे और फिटकिरी को सिर्के में बुझाने की विधि यह है कि उसको लेकर ठीकर पर भूने और गर्म गर्म पर सिर्का डालें जिससे उसमें से भाफउठे। जवहर तरीसी के बनाने की यह विधि है कि तरीस एक प्रकार की मछली होती है उसको लेकर आग में डालदें जब वह जलकर लाल होजाय तब उसकी राख लेकर उसके बराबर सूखे गुलाब के फूल मिलावें और दोनों को महीन पीसकर मसूडों पर बुरकदें। तरीस एक प्रकार की मछली बारह अगुल लम्बी होती है और यह अर्जीश नदीमें मिलती है इसमें नमक मिलाकर और सुखाकर शहरों में लेजाते है उसकी प्रकृति पहले दर्जे म गर्म और खुश्क है और जितनी पुरानी होजाती है उतनीही अधिक गुणकारी होती है और इसी मछली को शहर आजुरबायजान से लाते है और कभी ऐसा होता है कि मसूडों की शक्ति अपनी दशापर हो और निर्बल न हो परन्तु देह में खून बढजाने से मसूडोंमें मन

छुकोड देते हैं और मवाद को निकलने नहीं देते हैं तीसरा भेद यह है कि उसकी सूजन का रंग सफेद होता है और वह छूने में ठंडी मालूम होती है। (इलाज) पहले मवाद को नर्म करने और काटने के लिये शहद और जैतून से कुल्ले करें फिर मवाद के निकालने के लिये बाबूना, दौना मरुवा, मेथी के बीज और अलसी पानी में औटाकर उस पानी से कुल्ले करें और जो कारण बलवान् हो तो कफके फोकों के निकालने का उपाय करे॥

तेरहवां प्रकरण।

दांतों की जड़ से सदा रुधिर बहने का वर्णन।

और यह ऐसा होता है कि दांतों की जड के मांस से खून बहा करता है और उसका यह कारण है कि मसूड़ों की शक्ति में निर्बलता आजाय क्योंकि निर्बलता होने के कारण से इस खून में जो मसूड़ों में पहुंचता है उसमें ग्रहण करने की शक्ति न रहे और अंग में रुधिर भरजाय और क्योंकि वह जगह नर्म होती है इस लिये मसूड़े फटकर खून बहने लगता है (इलाज) इस रोग में दोषको इकट्ठा करने वाली और पुष्टिकारक दवा लगावे जैसे जली हुई मसूर, बंशलोचन, कीकर, और माजू इन दवाओं को महीन पीसकर मसूड़ोंपरमलें और जरूरशिवी और जरूर तरीसी मसूड़ोंपर बुरकदे। जरूर शिवीके बनानेकी यह विधि है फिटकिरी भूनकर सिर्के में बुझाई हुई १ भाग, नमक २ भाग, लाल फिटकिरी १॥ भाग इन तीनों को महीन पीसकर मसूड़ों पर बुरकदे और फिटकिरी को सिर्के में बुझाने की विधि यह है कि उसको लेकर ठीकरे पर भूने और गर्म गर्म पर सिर्का डालें जिससे उसमें से भाफउठे। जरूर तरीसी के बनाने की यह विधि है कि तरीस एक प्रकार की मछली होती है उसको लेकर आग में डालदें जब वह जलकर लाल होजाय तब उसकी राख लेकर उसके बराबर सूखे गुलाब के फूल मिलावें और दोनों को महीन पीसकर मसूड़ों पर बुरकदें। तरीस एक प्रकार की मछली बारह अंगुल लम्बी होती है और यह अर्जीश नदीमें मिलती है इसमें नमक मिलाकर और सुखाकर शहरों में लेजाते हैं उसकी प्रकृति पहले दर्जेमें गर्म और खुश्क है और जितनी पुरानी होजाती है उतनीही अधिक गुणकारी होती है और इसी मछली को शहर आजुरबायजान से लाते हैं और कभी ऐसा होता है कि मसूड़ों की शक्ति अपनी दशापर हो और निर्बल न हो परन्तु देह में खून बढजाने से मसूड़ोंपर खून

हब्बुलास प्रत्येक १४ मासे, खनैन, नमी, समाक, अकरकरा प्रत्येक १७॥ मासे, लेकर इन सबको कूट छानकर जब बहुत बारीक होजाय तब मसूड़ों पर बुरकदें।

सोलहवां प्रकरण।

मसूडों के मांस के बढजाने का वर्णन।

यह बहुधा सब दांतों के अन्तकी डाढ में उत्पन्न होता है और इसतरहसे उत्पन्न होता है कि कोई गर्म वस्तु पीई हो और उसमें से नर्म और श्लेष्मभाग नष्ट होजाय और बाकी कडा होकर रहजाय और रोगी यह जान कि कोई चीज खाने की चीजों म से डाढमें चिपट गई है (इलाज) हरी फिटकिरी और मुरं दोनों को महीन पीसकर उस बढेहुए मांसपर बुरकदे जिससे वह नष्ट होकर सूखजाय।

आठवां अध्याय।

कंठरोगका वर्णन।

जानना चाहिये कि बहुतसे हकीम गले से उस स्थान को ग्रहण करते हैं जो भोजन और श्वास के नलोंसे बना हुआ है और काकलक जिसे कौवा, काग आदि नामों से बोलतेहैं एक मांसका बना हुआ अग है जो सनोवरकी सूरतका तालूके ऊपर लटका हुआ है और उसमें दिलकी रगें और अजलेनहीं है और ऐसेही पठे भी बहुत नहींहै और उसका यह लाभहै कि वह हवाको धुए और गर्दसे साफ करदेताहै और कंठ से शब्दके निकलने में सहायता करता है और नरखरा मांस, दिलकी रगों और पट्ठोंसे बना हुआहै और पर्तदारहै और हजरा अर्थात् श्वास नली के सामने से उठा है और हकीम लोग उस जगह को आमाशय का मुख कहते हैं और यह मुखके अन्त तक पहुंचा है और उसका लाभ प्रगट है जैसा कि आंतें आमाशयसे नीचे फुजले के दूर करने के लिये उत्पन्न होती हैं उसी प्रकार से नरखरा भी चीजों के आमाशय में आने के लिये बनाया गया है और यह नरखरा आंतों से अधिक चौड़ा है और उसके भीतर की झिल्ली बहुत कड़ी है क्योंकि जो भोजन मुखसे नरखरे म जाताहै वह कच्चा अपक्व और गाढा होता है और जो फोक आमाशय से आंतों में आता है वह पकाहुआ होता है और कस्बये रिआ (फेंफड़ेका सिर) एक अंग है

इन्नुलास प्रत्येक १४ माशे, खनेत, नमी, समाक, अकरकरा प्रत्येक १७॥ माशे, लेकर इन सबको कूट छानकर जब बहुत बारीक होजाय तब मसूढों पर बुरकदें।

सोलहवां प्रकरण।

मसूढों के मांस के बढजाने का वर्णन।

यह बहुधा सब दांतों के अन्तकी डाढ में उत्पन्न होता है और इसतरहसे उत्पन्न होता है कि कोई गर्म वस्तु पीई हो और उसमें से नर्म और श्रेष्ठभाग नष्ट होजाय और बाकी कडा होकर रहजाय और रोगी यह जाने कि कोई चीज खाने की चीजों म से डाढमें चिपट गई है (इलाज) हरी फिटकिरी और सुर्र दोनों को महीन पीसकर उस बढेहुए मांसपर बुरकदें जिससे वह नष्ट होकर सूखजाय।

आठवां अध्याय।

कंठरोगका वर्णन।

जानना चाहिये कि बहुतसे हकीम गले से उस स्थान को ग्रहण करते हैं जो भोजन और श्वास के नलोंसे बना हुआ है और कायलक जिसे कौवा, काग आदि नामों से बोलतेहैं एक मांसका बना हुआ अंग है जो सनोबरकी सूरतका तालूके ऊपर लटका हुआ है और उसमें दिलकी रगें और अजलेनहीं है और ऐसेही पठे भी बहुत नहींहै और उसका यह लाभहै कि वह हवाको धुएं और गर्दसे साफ करदेताहै और कंठ से शब्दके निकलने में सहायता करता है और नरखरा मांस, दिलकी रगों और पठोंसे बना हुआहै और पर्तदारहै और हजरा अर्थात् श्वास नली के सामने से उठा है और हकीम लोग उस जगह को आमाशय का मुख कहते हैं और यह मुखके अन्त तक पहुंचा है और उसका लाभ प्रगट है जैसा कि आंतें आमाशयके नीचे फार्ला [illegible] करने के लिये उत्पन्न होती हैं उसी प्रकार से नरखरा भी चीजों के आमाशय में आने के लिये बनाया गया है और यह नरखरा आता से अधिक चौडा है और उसके भीतर की झिल्ली बहुत कड़ी है क्योंकि जो भोजन मुखसे नरखरे में जाताहै वह कच्चा अपक्व और गाढा होता है और जो फोक आमाशय से आंतों में आता है वह पकाहुआ होता है और कस्वये रिआ (फेफडेका सिर) एक अंग है

की तरफ खिचकर आती है उनको भी सुखा देती है। (बच्चों के कौव्वों को उठाने वाली दवा) माजू को सिर्के में पीसकर तालू पर लेप करे और जली हुई मुलतानी सिर्के में मिलाकर तालू पर लगाना भी लाभदायक है और जब ढीले होने के पीछे कौव्वे की जड महीन और सिर मोटा तथा गाढा होजाय और दवा लाभ न करे तो चाहिये कि जुफ्त को गर्म पानी में पिघलाकर उस पानी से गर्म गर्म कुल्ले करें जिससे सूजन नर्म होकर नष्ट होजाय और नर्म होने के पीछे दोष के भागों को समेटने वाली दवाओं के काढे से जैसे उसारेंल्हैतुचीस सुक और लाजू उस में मिलाकर कुल्ले करें जिससे और मवाद कौव्वे पर न गिरे और जिस बीमारके कौव्वे में गर्मी उत्पन्न होजाने से लाली और गर्मी मालूम हो तो हरी मकोय और हरे धनिये के पानी से कुल्ले करें और जब कोई फिटकिरी की दवा ढीले कौव्वे के उठाने में लाभदायक न हो और उसकी जड बहुत पतली और सिर की तरफ से बडी होजाय और गोलाई में अगूर के समान और रग सफेद हो और गलेपर पडे रहने से रोगी के दम घुटने का भय हो तो उचित है कि जितना बढगया हो उसको काटदे और इसी तरह से यदि कौआ बढजाय और उसकी जड पतली और किनारे चूहे की पुछ के समान हों और ढीला होजाय अभिप्राय यह है कि जिस तरह से हो जब काटना चाहें तो पहले देह से मवाद को निकाले और सबका सब न काटना चाहिये किन्तु अपने प्रमाण से जितना विशेष होगया हो उतनाही काटना चाहिये क्योंकि जो विशेष कटजायगा तो खून बन्द न होने का भय है और गले में इतना खून उतरजाय कि गला और फेंफडा भरजाय और बीमार उसी घडी मरजाय और कदाचित् कडी सूजन और गलेकी सूजन मृत्युकारक हो और हकीमोंने इसी कारण से उसके काटने में जल्दी नहीं की और उसके काटने का काम पडे तो यह भी समझलेना चाहिये कि जैसा उस को जड से काटना वर्जित है वैसा ही कम काटना भी अच्छा नहीं क्योंकि इस सूजन में कष्ट वैसा ही रहता है और काटने की दो रीति हैं एक तो लोहे से दूसरी दवासे। लोहेसे तो इस तरह पर कटता है कि रोगी सूर्य के सन्मुख बैठे और जितना उचित हो मुख को खोलें और जर्राह उसकी जीभ को अपनी उगली स नीचे की तरफ दबाकर कौव्वे को जहां से वह अपनी असली दशा मे बढगया है उस औजार से जिसका नाम मासिकतुल्लहात् (कौव्वे के पकडने का औजार) है पकडले और बडे हुये कैंची या नश्तर से का-

की तरफ खिचकर आती है उनको भी सुखा देती है। (बच्चों के कौव्वों को उठाने वाली दवा) माजू को सिर्के में पीसकर तालू पर लेप करे और जली हुई मुलतानी सिर्के में मिलाकर तालू पर लगाना भी लाभदायक है और जब ढीले होने के पीछे कौव्वे की जड महीन और सिर मोटा तथा गाढ़ा होजाय और दवा लाभ न करे तो चाहिये कि चुप्त को गर्म पानी में पिघलाकर उस पानी से गर्म गर्म कुल्ले करें जिससे सूजन नर्म होकर नष्ट होजाय और नर्म होने के पीछे दोष के भागों को समेटने वाली दवाओं के काढे से जैसे उसारेल्हैवुचीस सुक और लाजू उस में मिलाकर कुल्ले करें जिसमें और मवाद कौव्वे पर न गिरे और जिस बीमारके कौव्वे में गर्मी उत्पन्न होजाने से लाली और गर्मी मालूम हो तो हरी मकोय और हरे धनिये के पानी से कुल्ले करें और जब कोई फिटकिरी की दवा ढीले कौव्वे के उठाने में लाभदायक न हो और उसकी जड बहुत पतली और सिर की तरफ से बडी होजाय और गोलाई में अगूर के समान और रग सफेद हो और गलेपर पडे रहने से रोगी के दम घुटने का भय हो तो उचित है कि जितना बढगया हो उसको काटदें और इसी तरह से यदि कौआ बढजाय और उसकी जड पतली और किनारे चूहे की पूछ के समान हों और ढीला होजाय अभिप्राय यह है कि जिस तरह से हो जब काटना चाहें तो पहले देह से मवाद को निकाले और सब न काटना चाहिये किन्तु अपने प्रमाण से जितना विशेष होगया हो उतनाही काटना चाहिये क्योंकि जो विशेष कटजायगा तो खून बन्द न होने का भय है और गले में इतना खून उतरजाय कि गला और फेफडा भरजाय और बीमार उसी घडी मरजाय और कदाचित् कडी सूजन और गलेकी सूजन मृत्युकारक हो और हकीमोंने इसी कारण से उसके काटने में जल्दी नहीं की और उसके काटने का काम पडे तो यह भी समझलेना चाहिये कि जैसा उस को जड से काटना वर्जित है वैसा ही कम काटना भी अच्छा नहीं क्योंकि इस सूजन में कष्ट वैसा ही रहता है और काटने की दो रीति हैं एक तो लोहे से दूसरी दवासे। लोहेसे तो इस तरह पर कटता है कि रोगी सूर्य के सन्मुख बैठे और जितना उचित हो मुख को खोलें और जर्राह उसकी जीभ को अपनी उंगली से नीचे की तरफ दबाकर कौव्वे को जहां से वह अपनी असली दशा से बढगया है उस औजार से जिसका नाम मासिकतुरहुदात् (कौव्वे के पकडने का औजार) है पकडले और बंद हुए कैची या नश्तर से का

के स्थान के अनुसार यह दोनों बिल्कुल जाते रहते हैं वा कठिन होजाते हैं जैसा उसका वर्णन किया जायगा । प्रायः श्वास के रुकने का कारण कण्ठके नल्में होता है परन्तु समीप होने के कारण से अन्नवाही नलके कार्यों में भी उपद्रव उत्पन्न होजाता है वा प्रायः अन्नवाही नल में उत्पन्न होजाता है परन्तु समीप होने के कारण से श्वासवाही मार्ग और फेफड़े के मुखमें भी उपद्रव पैदा होजाता है और समीप होने के कारण से उस समय भी कष्ट होता है जब कारण बहुत बड़ा हो और समीप के अंगों को दबाले और यह बात प्रगट है कि जिस अंगमें बीमारी का मवाद होता है उसी अंगके कार्यों में विशेष हानि होती है जैसे श्वास के नलमें उपद्रव हो और कारणके बलवान् होने से अन्न वाही नलमें भी कष्ट पहुचे तो इस सूरत में यद्यपि श्वास लेने और ग्रास निगलने में कठिनता होगी परन्तु श्वास रुकनेकी अधिकता ग्रासके निगलनेसे विशेष होगी और इसी तरहसे इसके विरुद्ध अर्थात् जो ग्रास निगलनेके मार्गमें उपद्रव हो तो कारण के बलवान् होनेसे श्वासके अंगों में भी समीप होने के कारण से कष्ट पहुचेगा परन्तु ग्रास निगलने के अंगों में कष्ट अधिक होगा परन्तु जब कि कारण की अधिकता पासवाले अंगके कार्यको भी नष्ट करदे क्योंकि ऐसी दशा में दोनों के कार्य में हानि समान होगी और श्वास का रुक कर आना और गले का घुटना जैसी २ जगह होता है उसी के अनुसार उसके चार भेद हैं । पहला भेद तो यहहै कि लौजितैन (दो मांसहैं जीभकी जड़में) और गले और उन बाहरी अंगूलों (वह मछलियां जो बहुधा पिंडली और बाहुपर उत्पन्न होती हैं) में जो मुख और जीभ के निकटहैं और लौजितैन पर सूजन उत्पन्न हो और इस रोग को मुतलक खुनाक (केवल श्वासकी रुकावट) ही कहते हैं और उसका चिन्ह यह है कि जब रोगी मुख और जीभ बाहर निकाले तो सूजन दिखाई दे और यह दूसरे भेदकी अपेक्षा जिसका नाम खुनाक कलबी है विशेष आरोग्य है और लौजितैन जिनको नानफतानभी कहते हैं मांसके पट्ठे के दो टुकड़े हैं जो गले के दोनों तरफसे जीभकी जड़के समीप जमेहुए हैं और उनसे यह लाभ है कि हवाको नाकमें खींचने के समय एक साथ नहीं जानेदेते हैं किंतु धीरे २ जाने देते हैं खुनाक मुतलकका पहला भेद चार प्रकार पर बांटागया है पहला तो यह है कि सूजन का मवाद खून हो और उसका चिन्ह यह है कि मुख लाल हो और जो रगें गले और सिरके और पासमें हैं खूनसे भरजांय और कूदने लगें और गले में जलन हो और मुखका

के स्थान के अनुसार यह दोनों बिल्कुल जाते रहते हैं वा कठिन होजातेहैं जैसा उसका वर्णन किया जायगा। प्रायः श्वास के रुकने का कारण कण्ठके नल्में होता है परन्तु समीप होने के कारण से अन्नवाही नलके कार्यों में भी उपद्रव उत्पन्न होजाता है वा प्रायः अन्नवाही नल में उत्पन्न होजाता है परन्तु समीप होने के कारण से श्वासवाही मार्ग और फेफड़े के मुखमें भी उपद्रव पैदा होजाता है और समीप होने के कारण से उस समय भी कष्ट होता है जब कारण बहुत बड़ा हो और समीप के अगों को दबाले और यह बात प्रगट है कि जिस अगमें बीमारी का मवाद होता है उसी अगके कार्यों में विशेष हानि होती है जैसे श्वास के नलमें उपद्रव हो और कारणके बलवान् होने से अन्न वाही नलमें भी कष्ट पहुचे तो इस सूरत में यद्यपि श्वास लेने और ग्रास निगलने में कठिनता होगी परन्तु श्वास रुकनेकी अधिकता ग्रासके निगल्नेसे विशेष होगी और इसी तरहसे इसके विरुद्ध अर्थात् जो ग्रास निगलनेके मार्गमें उपद्रव हो तो कारण के बलवान् होनेसे श्वासके अगों में भी समीप होने के कारण से कष्ट पहुचेगा परन्तु ग्रास निगल्ने के अगों में कष्ट अधिक होगा परन्तु जब कि कारण की अधिकता पासवाले अगके कार्यको भी नष्ट करदे क्योंकि एसी दशा में दोनों के कार्य में हानि समान होगी और श्वास का रुक कर आना और गले का घुटना जैसी २ जगह होता है उसी के अनुसार उसके चार भेद है। पहला भेद तो यहहै कि लौजितैन (दो मांसहैं जीभकी जड़में) और गले और उन बाहरी अजूलों (वह मछलियां जो बहुधा पिंडली और बाहुपर उत्पन्न होती हैं) में जो मुख और जीभ के निकटहैं और लौजितैन पर सूजन उत्पन्न हो और इस रोग को मुतलक खुनाक (केवल श्वासकी रुकावट) ही कहते हैं और उसका चिन्ह यह है कि जब रोगी मुख और जीभ बाहर निकाले तो सूजन दिखाई दे और यह दूसरे भेदकी अपेक्षा जिसका नाम खुनाक कलबी है विशेष आरोग्य है और लौजितैन जिनको नानफ्तानभी कहते हैं मांसके पट्टे के दो टुकड़े हैं जो गले के दोनों तरफसे जीभकी जड़के समीप उगेहुए हैं और उनसे यह लाभ है कि हवाको नाकमें खींचने के समय एक साथ नहीं जानेदेते हैं किंतु धीरे २ जाने देते हैं खुनाक मुतलकका पहला भेद चार प्रकार पर बांटागया है पहला तो यह है कि सूजन का मवाद खून हो और उसका चिन्ह यह है कि मुख लाल हो और जो रगें गले और सिरके और पासमें हैं खूनसे भरजांय और कूदने लगें और गले में जलन हो और मुखका

तो मवाद के पकाने और निकालने की तरफ आरूढ हो और जो ऐसे समय में हकीम बीमार के पास पहुंचे फिर जो उचित समझे तो फस्द न खोलें क्योंकि इसमें रोगी के निर्बल होजाने का सदेह है और भोजन देने की आवश्यकता पडे और जिस रोगी को ग्रास निगलना कठिन हो तो उससे भोजन कराना कष्ट देना है और जबकि सूजन बाहर की ओर प्रगट हो तो उसपर नश्तर से पछने लगावें जिससे उसी अंग से खून निकल आवे और जो दवा मवाद को पकानें और निकालने के लिये लाभदायक हैं उनसे कुल्ले किया करें जैसे अजीर, मुनक्का, मेथी के बीज, अलसी के बीज पानीमें औटा कर ताजा दूध और अमलतास का शीरा मिलाकर काम में लावें और जो वस्तु मवादको पकाती और नर्म करती है और दर्द को रोकती हैं वह सब इस रोग में लाभदायक हैं और तीसरा या चौथा दिन इस रोगमें अन्तका समय होता है और ऐसेही जो इस समय गुलरोगन में निर्मल मोम पिघलाकर और पुरानी रुई पानी में भिगोकर यह मोम का तेल उसपर लगाकर गलेके आस पास रक्खें तौ अति उत्तम है और जब सूजन में लाली न रहे और पीलापन आजाय और ढीली होजाय तो जान लेवें कि मवाद पक गया है और खूनकी पीव बन गई है फिर जो अपने आप फूट जाय तो अति उत्तम है नहीं तो सूजन के फोडने वाले कुल्ले करावें उनकी विधि यह है कि पापडी लोन, हींग, अबाबील की बीट लेकर ताजे दूध में और गर्म तेलों में मिला कर उससे कुल्ले करें और जो माजू, अनार के फूल, फिटकिरी, अनार की छाल या और ऐसी ही विषय कारक वस्तुओं को पानी में औटा करके कुल्ला करेंतो सूजनको फोड देती है क्योंकि उसके भागों को अधिकता से इकट्ठा करती है और जो सूजन के फूटने में देर हो जाय तो फिर जो योग्य होवे सूजन को उंगली से दबावें या एक औजार से दबावें जो सलाई के समान होता है और उसकी नोंक एसी पैनी होती है जैसे नश्तर की नोंक और एक औजार पोला होता है उसको मिलनिद्दी (गुप्त सलाई) कहते हैं उससे गलेकी सूजनको चीरदें जिससे पीव निकल जाय और पूरी रीति यह है कि जबतक दवासे काम निकले तबतक लोहे के औजार से काम न लें और जब सूजन फूट जाय तो गौ का घी या बनफशा का तेल गर्म करके पानी में मिलाकर उससे कुल्ले करें जिससे घाव धुलकर साफ हो जाय और ताजे दूध और शहद से भी कुल्ले करना ऐसा ही लाभदायक है इस के उपरान्त जब घाव मवाद से साफ हो जाय तब कसमाजू (माँ) १ भाग

तो मवाद के पकाने और निकालने की तरफ आरम्भ हो और जो ऐसे समय में हकीम बीमार के पास पहुंचे फिर जो उचित समझे तो फस्द न खोले क्योंकि इसमें रोगी के निर्बल होजाने का संदेह है और भोजन देने की आवश्यकता पड़े और जिस रोगी को ग्रास निगलना कठिन हो तो उसको भोजन कराना कष्ट देना है और जबकि सूजन बाहर की ओर प्रगट हो तो उसपर नश्तर से पछने लगावें जिससे उसी अंग से खून निकल आवे और जो दवा मवाद को पकानें और निकालने के लिये लाभदायक हैं उनसे कुल्ले किया करें जैसे अंजीर, मुनक्का, मेथी के बीज, अलसी के बीज पानीमें औटा कर ताजा दूध और अमलतास का शीरा मिलाकर काम में लावें और जो वस्तु मवादको पकाती और नर्म करती है और दर्द को रोकती हैं वह सब इस रोग में लाभदायक हैं और तीसरा या चौथा दिन इस रोगमें अन्तका समय होता है और ऐसेही जो इस समय गुलरोगन में निर्मल मोम पिघलाकर और पुरानी रुई पानी में भिगोकर यह मोम का तेल उसपर लगाकर गलेके आस पास रक्खदें तो अति उत्तम है और जब सूजन में लाली न रहे और पीलापन आजाय और ढीली होजाय तो जान लेवें कि मवाद पक गया है और खूनकी पीब बन गई है फिर जो अपने आप फूट जाय तो अति उत्तम है नहीं तो सूजन के फोड़ने वाले कुल्ले करावें उनकी विधि यह है कि पापड़ी लोन, हींग, अबाबील की बीट लेकर ताजे दूध में और गर्म तेलों में मिला कर उससे कुल्ले करें और जो माजू, अनार के फूल, फिटकिरी, अनार की छाल या और ऐसी ही विबंध कारक वस्तुओं को पानी में औटा करके कुल्ला करेंतो सूजनको फोड़ देती है क्योंकि उसके भागों को अधिकता से इकट्ठा करती है और जो सूजन के फूटने में देर हो जाय तो फिर जो योग्य होतो सूजन को उंगली से दबावें या एक औजार से दबावें जो सलाई के समान होता है और उसकी नोंक पतली पैनी होती है जैसे नश्तर की नोंक और एक औजार पोला होता है उसको मिलनिट्टी (गुप्त सलाई) कहते हैं उससे गर्मेकी सूजनको चीरदें जिससे पीब निकल जाय और पूरी रीति यह है कि जबतक दवासे काम निकले तबतक लोह के औजार से काम न लें और जब सूजन फूट जाय तो गौ का घी या बनफशा का तेल गर्म करके पानी में मिलाकर उससे कुल्ले करें जिससे घाव धुलकर साफ हो जाय और ताजे दूध और शहद से भी कुल्ले कराना ऐसा ही लाभदायक है इस के उपरान्त जब घाव मवाद से साफ हो जाय तब कसमाजू (माँई) १ भाग

रोग बुरा होता है और जब श्वास रुकने वाले रोगी के मुख में झाग आवे तो बहुधा बचने की आशा जाती रहती है और कभी झाग आने पर भी आरोग्यता की आशा नहीं जाती और यह उस समय होता है कि बीमार की भूख की शक्ति अपनी असली दशा पर रहे परन्तु जिस समय रोगी का मुख हराहो और आंख के गढे काले होजांय तो उसी समय रोगी मरजाता है और ऐसे ही जो नाडी छोटी हो और हाथ और पाव बडे और जीभ मोटी और काली होजाय तो मौत के निकट आने के चिन्ह हैं और जो श्वास के रुकने और गले की सूजन के साथ ज्वर हो तो बडे भयकी बात है और जब कि गर्म ज्वर में बोहरान के दिन गले में सूजन प्रगट हो तो उसका बडा भय है और जिस समय रोगी का एक श्वास दो बार में पूरा हो और हरबार के श्वास में छाती और नथने हिलें तो अत्यन्त भय होता है और इन रूपों को गले में सूजन के होने और श्वास के रुकने के सब भेदों में याद रखना चाहिये। दूसरा भेद यह है कि सूजन का मवाद पित्त हो और उसका चिन्ह प्यास की अधिकता, मुखमें खुश्की और कडवापन, नींद का न आना, जलन और टीस के साथ दर्द होना आदि जैसे उस गले की सूजन में जो खून के कारण से हो दर्द खिचावट के साथ होता है और ऐसे ही उस गलेकी सूजन में पित्त के कारण से हो बहुत टीस के साथ दर्द होता है और पित्त वाली गले की सूजन में श्वास का रुकजाना खून वाली गलेकी अपेक्षा बहुत कम होता है क्योंकि पित्त की न्यूनता से सूजन की लम्बाई चौडाई बहुत कम होतीहै (इलाज) उन्हीं उपायों के साथ जिनका उस गलेकी सूजनमें जो खून के कारण से होवे वर्णन किया गया है फस्द खोलें और मेवों के काढे या खिसाढे में अमलतास का शीरा और शीरखिश्त मिलाकर तबियत को नर्म करें और मवाद के निकालने के उपरान्त आरम्भ में मसूर के काढे, शहतूत का रुव्व, काहूके बीज का शीरा कासनी के बीज का शीरा, या अन्य देसी ठंढी दवाओं से कुल्ले करें जिनका वर्णन ऊपर होचुका है और दूसरे या तीसरे दिन उन दवाओं से कुल्ले करें जिनका वर्णन खून उत्पन्न होनेवाली कंठकी सूजन में वर्णन होचुका है और जो गलेकी सूजन पित्त के कारण से हो। उस में नर्म करने की आवश्यकता बहुत कम है और ठंढा अधिक पहुंचाना योग्य है इसलिये [illegible] पानी और खुर्फाका शीरा विशेष लाभदायक है और जब [illegible] को पहुंचे तो रूई इसी पानी में

रोग बुरा होता है और जब श्वास रुकने वाले रोगी के मुख में झाग आवे तो बहुधा बचने की आशा जाती रहती है और कभी झाग आने पर भी आरोग्यता की आशा नहीं जाती और यह उस समय होता है कि बीमार की भूख की शक्ति अपनी असली दशा पर रहे परन्तु जिस समय रोगी का मुख हराहो और आंख के गढे काले होजांय तो उसी समय रोगी मरजाता है और ऐसे ही जो नाडी छोटी हो और हाथ और पाव बड़े और जीभ मोटी और काली होजाय तो मौत के निकट आने के चिन्ह हैं और जो श्वास के रुकने और गले की सूजन के साथ ज्वर हो तो बड़े भयकी बात है और जब कि गर्म ज्वर में बौहरान के दिन गले में सूजन प्रगट हो तो उसका बड़ा भय है और जिस समय रोगी का एक श्वास दो बार में पूरा हो और हरबार के श्वास में छाती और नथने हिलें तो अत्यन्त भय होता है और इन रूपों को गले में सूजन के होने और श्वास के रुकने के सब भेदों में याद रखना चाहिये। दूसरा भेद यह है कि सूजन का मवाद पित्त हो और उसका चिन्ह प्यास की अधिकता, मुखमें खुश्की और कडवापन, नींद का न आना, जलन और टीस के साथ दर्द होना आदि जैसे उस गले की सूजन में जो खून के कारण से हो दर्द खिचावट के साथ होता है और ऐसे ही उस गलेकी सूजन में पित्त के कारण से हो बहुत टीस के साथ दर्द होता है और पित्त वाली गले की सूजन में श्वास का रुकजाना खून वाली गलेकी अपेक्षा बहुत कम होता है क्योंकि पित्त की न्यूनता से सूजन की लम्बाई चौडाई बहुत कम होतीहै (इलाज) उन्हीं उपायों के साथ जिनका उस गलेकी सूजनमें जो खून के कारण से होवे वर्णन किया गया है फस्द खोलें और मेवों के काढे या खिसादे में अमलतास का शीरा और शीरखिश्त मिलाकर तबियत को नर्म करें और मवाद के निकालने के उपरान्त आरम्भ में मसूर के काढे, शहतूत का रुब्ब, काहूके बीज का शीरा कासनी के बीज का शीरा, या अन्य ऐसी ही दवाओं से कुल्ले करें जिनका वर्णन ऊपर होचुका है और दूसरे या तीसरे दिन उन दवाओं से कुल्ले करें जिनका वर्णन खून उत्पन्न होनेवाली कंठकी सूजन में वर्णन होचुका है और जो कंठकी सूजन पित्त के कारण से हो। उस में नर्म करने की आवश्यकता बहुत कम है और यहां अधिक पहुंचाना योग्य है इसलिये [illegible] का पानी और खुर्फा का शीरा विशेष लाभदायक है और जब [illegible] को पहुंचे तो [illegible] उसी पानी में

कुल्ले करें और जब रोग अन्तको पहुँचे तो सफेद गाय मांसन के तेलमें मिला-
वें और गले के बाहरकी तरफ लगावे और इस कारणसे कि फस्द के खोलने
से सब मवाद निकलजाताहै फिर जो रोगीकी दशा निकम्मी होतो हफ्तअन्दाम
की फस्द खोलें और शरारू की फस्द भी खोलसकते हैं मुख्यकर जिस रोगी
के कफमें गर्मी हो और रोगी जवान हो और तीक्ष्ण विरेचन की विधि यह है
कि भुसी,सोया, अकलीलुल मलिक, स्पर्ग और अजीर लेकर पानी में औ
टाकर छानलें फिर पापडीनोंन नमक गुड और कांजी उसमें मिलाकर
काममें लावें । अखरोट के छिलके सतके निकालने की विधि यह है
कि तर अखरोट के छिलके लेकर कूटकर उनका पानी निचोड कर औटावें
जब आधा रहजाय तब उस औटे हुये पानीसे आधा बूरा मिलाकर फिर औटावें
और झाग उतार डालें और काममें लावें। किताब शरह अस्वाब वाले ने लिखा
है कि यह सत सूजनके लिये जो गले और मुखमें उत्पन्न हो अतिउत्तम इलाजहै
चौथा भेद यह है कि जो सूजन बादी के कारण से उत्पन्न हो उसका चिह्न
सूजन में कठोरता कडापन और मुख का स्वाद कडवा व कसैला और मुखमें
खुश्की और चहरे का रंग काला हो और सूजन की जगह खिचावट का
होना प्रायः सब प्रकार की सूजनों में होता है परन्तु बादी वाली सूजन में
सब से अधिक होताहै क्योंकि उसमें मवाद बहुत जमा हुआ और गाढा होताहै
इसी लिये यह सूजन थोडी २ उत्पन्न होती है और इस जगह में उसका
उत्पन्न होना अद्भुत है क्योंकि बहुधा बादी का खून गर्म सूजन के बदलने
से उत्पन्न होता है और गर्म सूजन इस जगह में इतनी नहीं ठहरती है कि उसमें
से हलका मवाद नष्ट होजाय और बाकी गाढा होकर बादी होजाय और
क्योंकि देहमें यह जगह ऊंची है और बादी अपनी तबियत से नीचे की ओर
झुकी हुई है और इनके अतिरिक्त उसका मवाद भी गाढा है तो अपने आप
भी सूजन का कारण नहीं होसकती है परन्तु कभी २ होजाती है (इलाज)
फस्द खोलें और रगमें चौडा चीरा लगावें जिससे बादीका खून जो
गाढा है अच्छी तरह से निकल जाय इसीलिये हकीमों ने इसमें बासलीक
की फस्द खोलना ग्रहण किया है यह चौडा होने के कारणसे अधिक लाभ
दायक है और मध्यमश्रेणी की दस्तावर दवा या मारजफरका या अफतीमून
के काढे से तबियत को नर्मकरें और अजीर के दाने में या अखरोट के छिलके
के सतमें या कांजी में मेथी का लुआब और अमलतासका गूदा मिलाकर कुल्ले

कुल्ले करें और जब रोग अन्तको पहुँचे तो सफेद गाय मोसन के तेलमें मिला-वें और गले के बाहरकी तरफ लगावे और इस कारणसे कि फस्द के खोलने से सब मवाद निकलजाताहै फिर जो रोगीकी दशा निकम्मी होतो हफतअन्दाम की फस्द खोलें और शरारू की फस्द भी खोलसकते हैं मुख्यकर जिस रोगी के कफमें गर्मी हो और रोगी जवान हो और तीक्ष्ण विरेचन की विधि यह है कि भुसी,सोया, अफतीमून मलिक, स्पर्ग और अजीर लेकर पानी में औटाकर छानलें फिर पापडीनोन नमक गुड और कांजी उसमें मिलाकर काममें लावें । अखरोट के छिलके सत्तके निकालने की विधि यह है कि तर अखरोट के छिलके लेकर कूटकर उनका पानी निचोड कर औटावें जब आधा रहजाय तब उस औटे हुये पानीसे आधा बूरा मिलाकर फिर औटावें और झाग उतार डालें और काममें लावें। किताब शरह अस्बाब वाले ने लिखा है कि यह सत सूजनके लिये जो गले और मुखमें उत्पन्न हो अतिउत्तम इलाजहै चौथा भेद यह है कि जो सूजन बादी के कारण से उत्पन्न हो उसका चिह्न सूजन में कठोरता कडापन और मुख का स्वाद कड़वा व कसैला और मुखमें खुश्की और चहरे का रंग काला हो और सूजन की जगह खिचावट का होना प्रायः सब प्रकार की सूजनों में होता है परन्तु बादी वाली सूजन में सब से अधिक होताहै क्योंकि उसमें मवाद बहुत जमा हुआ और गाढा होताहै इसी लिये यह सूजन थोडी २ उत्पन्न होती है और इस जगह में उसका उत्पन्न होना अद्भुत है क्योंकि बहुधा बादी का खून गर्म सूजन के बदलने से उत्पन्न होता है और गर्म सूजन इस जगह में इतनी नहीं ठहरती है कि उसमें से हलका मवाद नष्ट होजाय और बाकी गाढा होकर बादी होजाय और क्योंकि देहमें यह जगह ऊंची है और बादी अपनी तबियत से नीचे की ओर झुकी हुई है और इनके अतिरिक्त उसका मवाद भी गाढा है तो अपने आप भी सूजन का कारण नहीं होसकती है परन्तु कभी २ होजाती है (इलाज) फस्द खोलें और रगमें चौड़ा चीरा लगावें जिससे बादीका खून जो गाढा है अच्छी तरह से निकल जाय इसीलिये हकीमों ने इसमें बासलीक की फस्द खोलना ग्रहण किया है वह चौड़ा होने के कारणसे अधिक लाभ दायक है और मध्यमश्रेणी की दस्तावर दवा या मासजफक्रा या अफतीमून के काढे से तबियत को नर्मकरें और अंजीर के दाने में या अखरोट के छिलके में रातमें या कांजी में मेथी का लुआब और अमलतासका गूदा मिलाकर कुल्ले

मार्ग में ऊपर की तरफ भी सूजन न हो क्योंकि जो फेंफड़े के सिरकी सूजन बड़ी हो या कंठ के ऊपर की तरफ में भी सूजन हो तो सूजन के बड़े होने से दोनों के कार्यों में समीप होने के कारण से हानि पहुंचेगी परन्तु इस कारण से कि मवाद की जगह में असली रोग है और समीप होने से ऊपरी हानि के उत्पन्न होने में अन्तर होता है जैसे जो बड़ी सूजन केवल नर्खरे में हो तो श्वास को बिलकुल रोक लेती है और बहुधा समीप होने के कारण से कंठ में भी तंगी आजाती है परन्तु निगलने को इतना नहीं रोकती कि बिलकुल न निगलसके और इसी प्रकार पर इस के विरुद्ध होता है और क्योंकि श्वास जीवन के चिन्हों का साथी है तो नर्खरे की सूजन मारडालने वाले रोगों में से है क्योंकि श्वास की आवश्यकता प्रत्येक जीवधारी के लिये हर समय आवश्यकीय है और गले की सूजनका यह चिन्ह है कि बहुधा रोगीका मुख खुला रहे और जीभ मुख से बाहर निकल आवे और श्वास बहुत कठिन से आवे और कारण के अनुसार चिन्ह प्रगट हों जैसा कि वर्णन होचुका है और हम यह भी कहचुके हैं कि जिस मवाद में गर्मी न हो तो वह इस जगह पैदा नहीं होसकता है [इलाज] जो कुछ पहले भेद में फस्द और तबियत को नर्म करने आदि का वर्णन कर दियागया है उन्हीं रीतों से इस में भी दवा और भोजन का सेवन करें और लेप और सिंगी और धारे लगाने से मवाद को बाहर की तरफ खींचने में अधिक परिश्रम करें और जिस गलेकी सूजन में निगलने की चीज़ें गले में न उतर सकें तो हुकना करना चाहिये जैसा कि खुनाक़ (नर्खरा) की सूजन में उसका वर्णन आवेगा। दूसरा भेद यह है कि गर्दन के मनके अपनी जगह से हटजाय और भीतर की तरफ उतर जाय और गले में सूजन उत्पन्न करें और मनके के हटजाने के दो कारण हैं। पहिला कारण तो गिरपड़ना और चोट का लगना है। दूसरा कारण मनकों की गद्दियों में या नर्खरे में या उसकी पट्टियों में जिन को [illegible] कहते हैं जो भीतर छिपे हुए हैं या उस अंतर में जो नर्खरा के भीतर है मा [illegible] की [illegible] के आने जाने के मार्ग और नर्खरा के मध्य में है [illegible] और मनका भीतर की तरफ खिंचजाय इसलिये कि इन के ऐंठने और पट्टों के कारण से [illegible] खिंचा [illegible] [illegible] की तरफ खिंचजावें [illegible] होनेके कारणसे भीतरकी तरफ खिंचे। और

मार्ग में ऊपर की तरफ भी सूजन न हो क्योंकि जो फेंफड़े के सिरकी सूजन बड़ी हो या कंठ के ऊपर की तरफ में भी सूजन हो तो सूजन के बड़े होने से दोनों के कार्यों में समीप होने के कारण से हानि पहुंचेगी परन्तु इस कारण से कि मवाद की जगह में असली रोग है और समीप होने से ऊपरी हानि के उत्पन्न होने में अन्तर होता है जैसे जो बड़ी सूजन केवल नर्खरे में हो तो श्वास को बिलकुल रोक लेती है और बहुधा समीप होने के कारण से कंठ में भी तंगी आजाती है परन्तु निगलने को इतना नहीं रोकती कि बिलकुल न निगलसकें और इसी प्रकार पर इस के विरुद्ध होता है और क्योंकि श्वास जीवन के चिन्हों का साथी है तो नर्खरे की सूजन मारडालने वाले रोगों में से है क्योंकि श्वास की आवश्यकता प्रत्येक जीवधारी के लिये हर समय आवश्यकीय है और गले की सूजनका यह चिन्ह है कि बहुधा रोगीका मुख खुला रहे और जीभ मुख से बाहर निकल आवे और श्वास बहुत कठिन से आवे और कारण के अनुसार चिन्ह प्रगट हों जैसा कि वर्णन होचुका है और हम यह भी कहचुके हैं कि जिस मवाद में गर्मी न हो तो वह इस जगह पैदा नहीं होसकता है [इलाज] जो कुछ पहले भेद में फसद और तलियन को नर्म करने आदि का वर्णन कर दियागया है उन्हीं रीतों से इस में भी दवा और भोजन का सेवन करें और लेप और सिंगी और धारे लगाने से मवाद को बाहर की तरफ खींचने में अधिक परिश्रम करें और जिस गलेकी सूजन में निगलने की चीजें गले में न उतर सकें तो पहुंचाना करना चाहिये जैसा कि जुबह (नर्खरा) की सूजन में उसका वर्णन आवेगा। दूसरा भेद यह है कि गर्दन के मनके अपनी जगह से हटजाय और भीतर की तरफ उतर जाय और गले में सूजन उत्पन्न करें और मनके के हटजाने के दो कारण हैं। पहिला कारण तो गिरपड़ना और चोट का लगना है। दूसरा कारण मनकों की पट्टियों में या नर्खरे में या नसकी पट्टियों में जिन को अजला कहते हैं जो भीतर छिपे हुए हैं या उस अजले में जो नर्खरा के भीतर है या मअक्लीमि जो भोजन के आने जाने के मार्ग और नर्खरा के मध्य में है और मनका भीतर की तरफ [illegible] इसलिये कि इन के [illegible] और पट्टों के कारण से [illegible] और [illegible] होनेके कारणसे भीतरकी तरफ खिंचजावें। और

मार्ग में ऊपर की तरफ भी सूजन न हो क्योंकि जो फेंफड़े के सिरकी सूजन बड़ी हो या कंठ के ऊपर की तरफ में भी सूजन हो तो सूजन के बड़े होने से दोनों के कार्यों में समीप होने के कारण से हानि पहुंचेगी परन्तु इस कारण से कि मवाद की जगह में असली रोग है और समीप होने से ऊपरी हानि के उत्पन्न होने में अन्तर होता है जैसे जो बड़ी सूजन केवल नर्खरे में हो तो श्वास को बिल्कुल रोक लेती है और बहुधा समीप होने के कारण से कंठ में भी तंगी आजाती है परन्तु निगलने को इतना नहीं रोकती कि बिल्कुल न निगलसके और इसी प्रकार पर इस के विरुद्ध होता है और क्यों कि श्वास जीवन के चिन्हों का साथी है तो नर्खरे की सूजन मारडालने वाले रोगों में से है क्योंकि श्वास की आवश्यकता प्रत्येक जीवधारी के लिये हर समय आवश्यकीय है और गले की सूजनका यह चिन्ह है कि बहुधा रोगीका मुख खुला रहे और जीभ मुख से बाहर निकल आवे और श्वास बहुत कठिन से आवे और कारण के अनुसार चिन्ह प्रगट हों जैसा कि वर्णन होचुका है और हम यह भी कहचुके हैं कि जिस मवाद में गर्मी न हो तो वह इस जगह प्रवेश नहीं होसकता है [इलाज] जो कुछ पहले भेद में फसद और तबियत को नर्म करने आदि का वर्णन कर दियागया है उन्हीं रीतों से इस में भी दवा और भोजन का सेवन करें और लेप और सिंगी और पारे लगाने से मवाद को बाहर की तरफ खींचने में अधिक परिश्रम करें और जिस गले की सूजन में निगलने की चीजें गले में न उतर सकें तो बहाना करना चाहिये जैसा कि हुकनह (नर्खरा) की सूजन में उसका वर्णन आवेगा। दूसरा भेद यह है कि गर्दन के मनके अपनी जगह से हटजाय और भीतर की तरफ उतर जाय और गले में सूजन उत्पन्न करें और मनके के हटजाने के दो कारण हैं। पहिला कारण तो गिरपड़ना और चोट का लगना है। दूसरा कारण मनकों की मछलियों में या नर्खरे में या उसकी मछलियों में [illegible] को भगन्दर करते हैं जो भीतर छिपे हुए हैं या उस भगन्दर में जो नर्खरा के भीतर है या उस मछलीमें जो भोजन के आने जाने के मार्ग और नर्खरा के मध्य में है सूजन उत्पन्न हो और मनका भीतर की तरफ खिंचजाय इसलिये कि इस [illegible] में और गर्दन के मनकों और पट्ठों के कारण से आपस में खिंचा हुआ है जिस मनका पर सूजन और पट्ठे उन [illegible] की तरफ खिंचजानेसे भी अनुमान है कि मनके उनके समीप होनेके कारणसे भीतरकी तरफ खिंचेंगे। तो

मार्ग में ऊपर की तरफ भी सूजन न हो क्योंकि जो फेंफडे के सिरकी सूजन बड़ी हो या कंठ के ऊपर की तरफ में भी सूजन हो तो सूजन के बड़े होने से दोनों के कार्यों में समीप होने के कारण से हानि पहुंचेगी परन्तु इस कारण से कि मवाद की जगह में असली रोग है और समीप होने से ऊपरी हानि के उत्पन्न होने में अन्तर होता है जैसे जो यही सूजन केवल नर्खरे में हो तो श्वास को बिल्कुल रोक लेती है और बहुधा समीप होने के कारण से कंठ में भी तंगी आजाती है परन्तु निगलने को इतना नहीं रोकती कि बिलकुल न निगलसके और इसी प्रकार पर इस के विरुद्ध होता है और क्यों कि श्वास जीवन के चिन्हों का साथी है तो नर्खरे की सूजन मारडालने वाले रोगों में से है क्योंकि श्वास की आवश्यकता प्रत्येक जीवधारी के लिये हर समय आवश्यकीय है और गले की सूजनका यह चिन्ह है कि बहुधा रोगीका मुख खुला रहे और जीभ मुख से बाहर निकल आवे और श्वास बहुत कठिन से आवे और कारण के अनुसार चिन्ह प्रगट हों जैसा कि वर्णन होचुका है और हम यह भी कहचुके हैं कि जिस मवाद में गर्मी न हो तो वह इस जगह प्रवेश नहीं होसकता है [इलाज] जो कुछ पहले भेद में फसद और तबियत को नर्म करने आदि का वर्णन कर दियागया है उन्हीं रीतों से इस में भी दवा और भोजन का सेवन करें और लेप और सिंगी और पारे लगाने से मवाद को बाहर की तरफ खींचने में अधिक परिश्रम करें और जिस गलेकी सूजन में निगलने की चीजें गले में न उतर सकें तो पहाना करना चाहिये जैसा कि ख़ुनाक़ (नर्खरा) की सूजन में उसका वर्णन आवेगा। दूसरा भेद यह है कि गर्दन के मनके अपनी जगह से हटजायँ और भीतर की तरफ उतर जाय और गले में सूजन उत्पन्न करें और मनके के हटजाने के दो कारण हैं। पहिला कारण तो गिरपड़ना और चोट का लगना है। दूसरा कारण मनकों की पसलियों में या नर्खरे में या उसकी पसलियों में जिन को अजसाम कहते हैं जो भीतर छिपे हुए हैं या उस भजले में जो नर्खरा के भीतर है या उस मजलीसे जो भोजन के आने जाने के मार्ग और नर्खरा के मध्य में है एक सूजन उत्पन्न हो और मनका भीतर की तरफ खिचजाय इसलिये कि इस बायकों से और गर्दन के बन्धनों और पट्ठों के कारण से आपस में खिंचा हुआ है और जिस समय यह बन्धन और पट्ठे उन जोड़ों की तरफ खिंच जायेंगे तो आवश्यक है कि मनके उनके समीप होने के कारण से भीतरकी तरफ खिंचें। तो

पिसी हुई दवाओं को उस लुआबमें मिलाकर इस मनके पर लेप करदें जिससे उसको उसी दशापर बचाये रक्खे और उचित है कि उंगली या औजारसे न हटावे किन्तु इससे पहले जिस जगह में मनकेके हटजाने से गढ़ा होगया हो तो वहां मवादको समेटनेवाली दवा लगावें जिससे वह आप मनकेको खींचकर असली दशापर लेआवें और जबतक दवासे मनका खिचसकै और उठसकै तबतक उंगली डालना और औजार लगाना कभी अच्छा नहीं है क्योंकि यहां सूजन होगी तो उंगली और औजारके लगाने से उसको कष्ट पहुंचेगा और हकीम तिबरी बयान करता है कि एक बच्चेकी गर्दनका मनका हटगयाथा तो एक दाई ने बारीक चमड़ेका टुकड़ा कीर (एकतर चीजहै काले रंगकी लाली लियेहुए) लसेद कर धूपमें रखदिया जब कीर नर्म होगया और पिघलगया तबउस को बच्चेकी गर्दनपर लगादिया जबवहसूखगया तोसूखतेही तुर्त मनका अपनीजगह पर आगया और जो उसजगह सिंगी लगाकर मुखसे बलपूर्वक खींचने पर भी मनका खिच आताहै और यह कार्य मिलावटके (इलाज) में भी बहुत लाभ दायकहै जैसा खुबह (नखेरा) की सूजनमें वर्णन किया जायगा और गले की सूजनमें जो उचित होतो सूजन को गुप्त सलाई से चीरदे और जो गले की सूजन कि मनकों के हट जानेसे उत्पन्न होतो जब उसमें चार दिन व्यतीत होजांय और हाथ और पांव सुन्न न हो और उनकी ज्ञानशक्ति नष्ट न हो तो रोगी के बचने की आशाहै सो सावधानी की बातहै कि चौथे दिनके उ परान्त फस्द और विरेचन काममें लावें क्योंकि ख़ुनाक़ फ़लबी सब गले की सूजनों के भेदों से बहुत बुराहै और बहुधा रोगी को चार दिनके भीतर मार डालता है [सूचना] जब गलेकी सूजनमें यह सब उपाय और इलाज जिनका वर्णन होचुका है कुछ लाभदायक न हों और श्वासके न आनेके कारणसे जीने की आस न रहे तो उसके बचने की आशा गलेको चीरने से हो सकती है और इसकी विधि यहहै कि बीमार का सिर पीछे की तरफ झुकावें और गले की खाल लोहेके औजारोंसे उठालें और गले से अलग करलें और चीरदें और कपड़े के छल्लों दोनों पेरोंके मध्यमें जब मनका भी इस खालके सींगके समान अलग करके बांधदें जिससे रोगी श्वास लेनेलगे और मरनेका भय न रहे और जब गर्दनके मनके और सूजनके उपायसे निश्चिन्त होतो घाव को ऐसी तरहपर सीवें कि झिल्ली और नर्म हड्डी में धमक न पहुंचे परन्तु जो हन्नरों में भी सूजन होगई होतो यह इलाज भी न करना चाहिये। तीसरा

पिसी हुई दवाओं को उस लुआबमें मिलाकर इस मनके पर लेप करदें जिससे उसको उसी दशापर बचाये रक्खे और उचित है कि उंगली या औजारसे न हटावें किन्तु इससे पहले जिस जगह में मनकेके हटजाने से गढ़ा होगया हो सो वहां मवाद्को समेटनेवाली दवा लगावें जिससे वह आप मनकेको खींचकर असली दशापर लेआवें और जबतक दवासे मनका खिचसके और उठसके तबतक उंगली डालना और औजार लगाना कभी अच्छा नहींहै क्योंकि जहां सूजन होगी तो उंगली और औजारके लगाने से उसको कष्ट पहुंचेगा और हकीम तिबरी बयान करताहै कि एक बच्चेकी गर्दनका मनका हटगयाथा तो एक दाई ने बारीक चमड़ेका टुकड़ा कीर (एकतर चीजहै काले रंगकी लाली लियेहुए) लसेद कर धूपमें रखदिया जब कीर नर्म होगया और पिघलगया तबउस को बच्चेकी गर्दनपर लगादियाजबवहसूखगया तोसूखतेही तुर्त मनका अपनीजगह पर आगया और जो उसजगह सिंगी लगाकर मुखसे बलपूर्वक खींचने पर भी मनका खिच आताहै और यह कार्य मिलावटके (इलाज) में भी बहुत लाभ दायकहै जैसा जुबह (नर्खरा) की सूजनमें वर्णन किया जायगा और गले की सूजनमें जो उचित होतो सूजन को गुप्त सलाई से चीरदे और जो गले की सूजन कि मनकों के हट जानेसे उत्पन्न होतो जब उसमें चार दिन व्यतीत होजाय और हाथ और पांव सुन्न न हो और उनकी ज्ञानशक्ति नष्ट न हो तो रोगी के बचने की आशाहै सो सावधानी की बातहै कि चौथे दिनके उ परान्त फस्द और विरेचन काममें लावें क्योंकि ख़ुनाक कलबी सब गले की सूजनों के भेदों से बहुत बुराहै और बहुधा रोगी को चार दिनके भीतर मार डालता है [सूचना] जब गलेकी सूजनमें यह सब उपाय और इलाज जिनका वर्णन होचुका है कुछ लाभदायक न हों और श्वासके न आनेके का रणसे जीने की आस न रहे तो उसके बचने की आशा गलेको चीरने से हो सकती है और उसकी विधि यहहै कि बीमार का सिर पीछे की तरफ हटावें और गले की खाल लोहेके औजारोंसे हटालें और गले से अलग करलें और चीरदें और कपड़े के छल्ले दोनों पेरोंके मध्यमें जब मनका भी इस खालके सीके समान अलग करके बांधदें जिससे रोगी श्वास लेनेलगे और मरने का भय न रहे और जब गर्दनके मनके और सूजनके उपायसे निश्चिन्त होतो चीर को ऐसी तरहपर सीवें कि झिल्ली और नर्म हड्डी में धमक न पहुंचे परन्तु आ इलाजों में भी सूजन होगई होतो यह इलाज भी न करना चाहिये । तीसरा

क्योंकि यह सूरत यूनानी हर्फ लाम के समान है और इस हड्डी की यह क्यारी गयी है कि नरखरे के अजले (मछलियां) और बन्धन इसी से मिलते हैं और नरखरे की पोल में एक ऐसा शरीर है जो खुलता भी है और बन्द भी हो जाता है और इसी से शब्द उत्पन्न होता है और जानना चाहिये कि नरखरे के भीतर एक ऐसी चिकनी और चेपदार रतूबत है कि उसको तर रखती है और आवाज उसी तरी के कारण से बाहर आती है यही कारण है कि जिस समय रतूबत खुश्क होजाती है तो जब तक कि गलेको तर न करे तब तक शब्द नहीं निकलता जैसे किसी किसी मनुष्य को तपे मुहर्रका की दशा और गर्म हवा में देखने का काम पड़ा करता है (इलाज) फस्द खोलें और उन्हीं उपायों से खून निकालें जिनका कठ की सूजी सूजनमें वर्णन हो चुका है और उन दस्तावर दवाओं से तबियत को नर्म करें जो गर्मी को बुझाती हैं और जब तक पके तबतक इसी तरह से कभी तो फस्द खोलकर १७॥ या ३५ माशे रोगीकी शक्तिके अनुसार खून निकालें और कभी तबियत को नर्म करें जिससे शक्ति भी बनी रहै और प्रयोजन भी सिद्ध हो और जो कुछ निगलना उचित हो तो जौ का पानी थोड़ा २ दिये जांय और जब पेट का मवाद निकल चुके तो मवाद के खींचने वाली दवाएँ जैसे कुटकी, पापड़ी नोंन, जुन्देबेदस्तर और गन्धक गले के बाहर लेप करें क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मवाद बाहरकी तरफ खिंच आवे और दूसरे उपायोंका वर्णन ख्नाकेबार हो चुका है हकीम लोग जैसी दशा देखें वैसी ही दवा काममें लावें और जिस रोगी को किसी चीज का निगलना कठिन हो तो ऐसा उपाय करें कि जो निगलने में सहायता करे और यह इस प्रकार का होता है कि गर्दन के मनके पर सिंगी लगावें और यह प्रगट है कि इस उपाय से कुछ मार्ग चौड़ा होता है फिर जबतक कि सिंगी लगी हुई है तो जिस चीजका पतलापन हो सो उसका निगलना योग्य है (सूचना) हकीम राजी ने कहा है कि जब दूखने देर वालों का श्वास विशेषता से रुके तो मेरी सम्मति में आता है कि फस्द न खोलें और रोगी को ठंडे मकान में बैठालें यहां तक कि गला खुल जाय और उचित है कि इस उपाय से आदमी बिना खाये बीस दिन तक जीता रहै और गले का फूलना और श्वास का रुकना यद्यपि अधिक हो तो भी निस्सन्देह इस काम में छुट जाता है और यह प्रगट है कि बहुत ठंडा मकान रखने के लिये और भूख और प्यास के लिये रोकना है और जो कुछ चमकता है

क्योंकि यह मूरत यूनानी हर्फ लाम के समान है और इस हड्डी की धार भारी नहीं है कि नरखरे के अजले (मछलियां) और बन्धन इसी से मिलते हैं और नरखरे की पोल में एक ऐसा शरीर है जो खुलता भी है और बन्द भी हो जाता है और इसी से शब्द उत्पन्न होता है और जानना चाहिये कि नरखरे के भीतर एक ऐसी चिकनी और चेपदार रतूबत है कि उसको तर रखती है और आवाज उसी तरी के कारण से बाहर आती है यही कारण है कि जिस समय रतूबत खुश्क होजाती है तो जब तक कि गलेको तर न करें तब तक शब्द नहीं निकलता जैसे किसी किसी मनुष्य को तपे मुहर्रका की दशा और गर्म हवा में देखने का काम पड़ा करता है (इलाज) फस्द खोलें और उन्हीं उपायों से खून निकालें जिनका वर्णन पहिली सूजनमें वर्णन हो चुका है और उन दस्तावर दवाओं से तबियत को नर्म करें जो गर्मी को बुझाती हैं और जब तक पके तबतक उसी तरह से कभी तो फस्द खोलकर १७॥ वा ३५ माशे रोगीकी शक्तिके अनुसार खून निकालें और कभी तबियत को नर्म करें जिससे शक्ति भी बनी रहै और प्रयोजन भी सिद्ध हो और जो कुछ निगलना उचित हो तो जौ का पानी थोड़ा २ दिये जांय और जब पेट का मवाद निकल चुके तो मवाद के खींचने वाली दवाएँ जैसे कुटकी, पापड़ी नोन, जुन्देबेदस्तर और गन्धक गले के बाहर लेप करें क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि मवाद बाहरकी तरफ खिंच आवे और दूसरे उपायोंका वर्णन ब्यौरेवार हो चुका है हकीम लोग जैसी दशा देखें वैसी ही दवा काममें लावें और जिस रोगी को किसी चीज का निगलना कठिन हो तो ऐसा उपाय करें कि जो निगलने में सहायता करे और वह इस प्रकार का होता है कि गर्दन के मनके पर सिंगी लगावें और यह प्रगट है कि इस उपाय से कुछ मार्ग चौड़ा होता है फिर जबतक कि सिंगी लगी हुई है तो जिस चीजका पतलापन हो तो उसका निगलना योग्य है (गूराना) हकीम राजी ने कहा है कि जब दुबले देह वालों का ख्वाक पिछेपना से रुके तो मेरी सम्मति में आता है कि फस्द न खोलें और रोगी को ठंडे मकान में बैठावें यहां तक कि गला खुल जाय और उचित है कि इस उपाय से आदमी बिना खाये बीस दिन तक जीता रहे और गले का फूलना और श्वास का रुकना यद्यपि अधिक हो तो भी निस्सन्देह इस काम में सुख पाता है और यह प्रगट है कि बहुत ठंडा मकान दमके लिये और भूख और प्यास के लिये रोकता है और जो कुछ दमकता है

से यह रोग बहुत कम उत्पन्न होता है इससे प्रायः बहुत सी पुस्तकों में इसका वर्णन छूट गया है । इसके सात भेद हैं पहला तो यह है जो अजला [मछली] नरखरे को खोलता है वह ढीला होजाय फिर उस अजले का हिलना चलना जाता रहे यद्यपि सूजन न हो और यह प्रगट है कि जब उसका हिलना जाता रहेगा तो मार्ग छोटा होजायगा और प्रयोजन के अनुसार श्वास न आवेगा दूसरा भेद यह है कि नरखरे के भीतर की ओर के अजले में बहुत सी खुश्की उत्पन्न हो और इस कारण से हवाको न खींचसके जो कि उसका काम है इस कारण से आदमी के श्वास में तंगी आवेगी यद्यपि मार्ग खुलाहुआ हो तीसरा भेद यह है कि फेंफड़े की सूजन या पीव फेंफड़े या सीने के छेदों में उत्पन्न होजाय और गले के घुटनेका कारण हो । चौथा भेद यह है कि आमाशय में या आंतों में बहुत कीड़े उत्पन्न हों और इस कारण से श्वास का आना कठिन होजाय पांचवां भेद यह है कि आमाशय में और बारीक आंतों में और उनके सिवाय इसप्रकार के अंगोंमें खून ठिठरजाय और इससे श्वास के आनेमें उपद्रव हो । छटा भेद यहहै कि कोई ऐसीदवा खानेका काम पड़े जो प्रकृति के अनुसार गले में सूजन उत्पन्न करती हो जैसे सम्मारूग जो कुम्भनी का एक भेद है या अन्यप्रकार के विष । सातवां भेद यह है कि न्हाना श्वास के रुकने का कारण होजाय और प्रत्येक भेद के लिये एक चिह्न है जैसे जो अजला न हिलेगा तो आदमी को भीतर की तरफ श्वास लेने की शक्ति नहोगी और ऐसे ही जो भीतर के अजले की खुश्की कारण होगी तो इस अजले की खुश्की के कारण भी पहले बीतचुके होंगे और सब फेंफड़े की सूजन और फेंफड़े और सीने में पीव का इकट्ठा होना और कीड़ों का उत्पन्न होना और खून का ठिठरना श्वास के रुकने या गले में सूजन होने का कारण होतो प्रत्येक के वर्णन से जो अपनी २ जगह में लिखा हुआ है प्रगट होगा और लगातार न्हाना और कुम्भनीका खाना चिह्न की आवश्य कता नहीं रखता [इलाज] हेतु के दूर करने में परिश्रम करें जो श्वास का रुकना अथवा गले की सूजन जल्दी न्हाने के कारण से उत्पन्न हो तो उसका इलाज नीबू और नारंगी के शर्बत से करें और नरखरे के ढीले होने को दूसरे कारण में वर्णन करेंगे और जानना चाहिये कि दब्ह खुनाक [गले की सूजन] और खुबद [नरखरे की सूजन] के बोलने में दर्शियोन सिद्धता की है उनमें से कोई तो ऐसी सूजन जो नरखरा के ऊपरी अवयवों में या केकड़े

से यह रोग बहुत कम उत्पन्न होता है इससे प्रायः बहुत सी पुस्तकों में इसका वर्णन छूट गया है। इसके सात भेद हैं पहला तो यहहै जो अजला [मछली] नरखेरे को खोलता है वह ढीला होजाय फिर उस अजले का हिलना चलना जाता रहे यद्यपि सूजन न हो और यह प्रगट है कि जब उसका हिलना जाता रहेगा तो मार्ग छोटा होजायगा और प्रयोजन के अनुसार श्वास न आवेगा दूसरा भेद यह है कि नरखेरे के भीतर की ओर के अजले में बहुत सी खुश्की उत्पन्न हो और इस कारण से हवाको न खींचसके जो कि उसका काम है इस कारण से आदमी के श्वास में तंगी आवेगी यद्यपि मार्ग खुलाहुआ हो तीसरा भेद यह है कि फेंफडे की सूजन या पीव फेंफडे या सीने के छेदों में उत्पन्न होजाय और गले के घुटनेका कारण हो। चौथा भेद यह है कि आमाशय में या आंतों में बहुत कीडे उत्पन्न हों और इस कारण से श्वास का आना कठिन होजाय पांचवां भेद यह है कि आमाशय में और बारीक आंतों में और उनके सिवाय इसप्रकार के अगोंमें खून ठिठरजाय और इससे श्वास के आनेमें उपद्रव हो। छठा भेद यहहै कि कोई ऐसीदवा खानेका काम पडे जो प्रकृति के अनुसार गले में सूजन उत्पन्न करती हो जैसे सभारूग जो कुम्भनी का एक भेद है या अन्यप्रकार के विष। सातवां भेद यह है कि न्हाना श्वास के रुकने का कारणहोजाय और प्रत्येक भेद के लिये एक चिन्ह है जैसे जो अजला न हिलेगा तो आदमी को भीतर की तरफ श्वास लेने की शक्ति नहोगी और ऐसे ही जो भीतर के अजले की खुश्की कारण होगी तो इस अजले की खुश्की के कारण भी पहले बीतचुके होंगे और जब फेंफडे की सूजन और फेंफडे और सीने में पीव का इकट्ठा होना और कीडों का उत्पन्न होना और खून का ठिठरना श्वास के रुकने या गले में सूजन होने का कारण होतो प्रत्येक के वर्णन से जो अपनी २ जगह में लिखा हुआ है प्रगट होगा और लगातार न्हाना और कुम्भनीका खाना चिन्ह की आवश्य कता नहीं रखता [इलाज] हेतु के दूर करने में परिश्रम करे जो श्वास का रुकना अथवा गले की सूजन ठन्ढी न्हाने के कारण से उत्पन्न हो तो उसका इलाज नीबू और नारंगी के शर्बत से करे और नरखेरे के ढीले होने को दूसरे कारण में वर्णन करेंगे और जानना चाहिये कि शब्द खुनाक [गलेकी सूजन] और कुबह [नरखेरे की सूजन] के बोलने में दर्शावोन विरुद्धता की है उनमें से कोई तो ऐसी सूजन जो नरखेरा के ऊपरी अजलों में या हेकरे

या अकहल की फस्द खोलें । जौ का शीरा, नशास्ता, बनफशा के तेल का हरीरा बनाकर पीवें जिससे जलन थमजाय और ठंढा पानी पीने से बचता रहे मुख्यकर जब कि फुन्सियों में घाव होजांय और मेवाओं के पानी से तबियत को नर्म करें और रोगी को रात के समय ईसबगोल का गुनगुना लुआब और जो भोजन पीने के लायक हो उसको ग्रहण करें और जो भोजन शुष्क खट्टा या तेज हो उसको बिल्कुल त्याग देवें और जिस समय मवाद को पकाने की आवश्यकता पड़े तो जैसा इलाज गले की सूजन के पकाने के लिये है वही इलाज इस रोग में भी करें और जब मवाद पक जाय और कफ में पीब निकलने लगे तो वही उपाय काम में लावें जो गले की सूजन के फूटने के उपरांत काम में आते हैं और बहुधा उनका वर्णन होचुका है । प्रगट हो कि जब फुन्सियों का मवाद पककर कफ में पीब निकले तो शहद के पानी से कुल्ले करें और उन्नाब, बनफशा मुलहठी रातको गावजवां के अर्क में भिगो दें दूसरे दिन छानकर शर्बत बनफशा मिलाकर प्रति दिन प्रातः काल के समय रोगी को पिलाया करें और यह गोली मुखमें रक्खें और इनका लुआब निकालें गोलियों के बनाने की विधि यह है कि मुलहठी, समग अरबी, (एक गोंद) कतीरा, खितमी के बीज, ककड़ी खीरे की मिंगी, महीन पीसकर ईसबगोल के लुआब में गोलियां बनाले । और यह कुल्ला गले की फुन्सियों को लाभ दायक है । कुल्ला करने की विधि यह है कि जमादा (काली छाप) सूखा पोदीना, मकोय छिली हुई मुलहठी सफेद कथा पानी में औटाकर कुल्ला करे और रोग के अन्त में जब मवाद निकलने लगे तो थोड़ा सिर्का गुनगुने पानी में मिलाकर घूट भर भर कर पीवें और उसी से कुल्ला करें जिस से उस जगह को धोकर साफ करदे और जो सिर्के की तेजी से कष्ट पहुंचे तो गुल्रोगन या बनफशा का तेल या अलसी का लुआब पीवें और उसीसे कुल्लाकरें और बाकी फुन्सियों का दर्द रोकने के लिये मोमका तेल या मरहम अफियन (एक संयोगिक नुसखा) से इस तरहपर इलाजकरें कि केवल प्रत्येक दवा या अंडे की जर्दी में मिलाकर गुनगुना करके घूट २ पीवें और मुख में भी [illegible] कि गले की फुन्सियां बहुत बड़ा रोग उत्पन्न कर[illegible] बनी हुई हैं तो जिस समय कि उस जगह में फस्द और दस्तावर दवाएं और सफ़

या अकहल की फस्द खोलें । जौ का शीरा, नशास्ता, बनफशा के तेल का हरीरा बनाकर पीवें जिससे जलन थमजाय और ठंडा पानी पीने से बचता रहै मुख्यकर जब कि फुन्सियों में घाव होजांय और मेवाओं के पानी से तबियत को नर्म करें और रोगी को रात के समय ईसबगोल का गुनगुना लुआब और जो भोजन पीने के लायक हो उसको ग्रहण करें और जो भोजन शुष्क खट्टा या तेज हो उसको बिलकुल त्याग देवें और जिस समय मवाद को पकाने की आवश्यकता पड़े तो जैसा इलाज गले की सूजन के पकाने के लिये है वही इलाज इस रोग में भी करें और जब मवाद पक जाय और कफ में पीव निकलने लगे तो वही उपाय काम में लावें जो गले की सूजन के फूटने के उपरांत काम में आते हैं और बहुधा उनका वर्णन होचुका है । अगर ऐसा हो कि जब फुन्सियों का मवाद पककर कफ में पीव निकले तो शहद के पानी से कुल्ले करें और उन्नाब, बनफशा मुलहटी रातभर गावजबां के अर्क में भिगो दें दूसरे दिन छानकर शर्बत बनफशा मिलाकर प्रति दिन प्रातः काल के समय रोगी को पिलाया करें और यह गोली मुखमें रक्खें और इनका लुआब निकालें गोलियों के बनाने की विधि यह है कि मुलहटी, समग अरबी, (एक गोंद) कतीरा, खितमी के बीज, ककड़ी खीरे की मिंगी, महीन पीसकर ईसबगोल के लुआब में गोलियां बनाले । और यह कुल्ला गले की फुन्सियों को लाभ दायक है । कुल्ला करने की विधि यह है कि जमादा (काली छोप) सूखा पोदीना, मकोय छिली हुई मुलहटी सफेद कत्था पानी में औटाकर कुल्ला करे और रोग के अन्त में जब मवाद निकलने लगे तो थोड़ा सिर्का गुनगुने पानी में मिलाकर घूट भर भर कर पीवें और उसी से कुल्ला करें जिस से उस जगह को धोकर साफ करदे और जो सिर्के की तेजी से कष्ट पहुंचे तो गुलरोगन या बनफशा का तेल या अलसी का लुआब पीवें और उसीसे कुल्लाकरें और यावत फुन्सियों का दर्द रोकने के लिये मोमका तेल या मरहम अफियन (एक संयोगिक नुसखा) से इस तरहपर इलाजकरें कि केवल मत्येक दवा या अंडे की जर्दी में मिलाकर गुनगुना करके घूट २ पीवें और मुख में भी [illegible] कि इनमें की फुन्सियां बहुत बड़ा रोग उत्पन्न कर [illegible] से [illegible] बनी हुई है तो जिस समय कि उस जा[illegible]
में फस्द और दस्तावर दवाई और मक[illegible]

तो बडी विपत्ति लाता है और सूजन उत्पन्न करता है और कदाचित् वा टुकडा जो चिपटा हुआ है आमाशय में गिरपडे और अपने निकम्मेपन और विषैलेपन के कारण से खूनकी वमन और छिलन उत्पन्न करे और जो जोंक छुडाने से पहिले सिरके में नोंन मिलाकर या सिर्के में हींग मिलाकर उससे कुल्ले करें जिससे वह सुस्त हो जाय तो अति उत्तम होगा परन्तु जिस रोगीके किसी अंग में भीतर की तरफ दूर चिपटी हो और दिखाई न दे तो कुल्ला के सिवाय और कुछ उसका इलाज नहीं हो सकता और सिर्का और नोंन और अंगूरी सिर्का और हींग इसमें अति उत्तम दवा है और जो जला हुआ ऊन और अफीम सिर्के में मिलाकर कुल्ले करें तो बहुत गुणकारी होगा और हकीम तिबरी ने कहा है कि जो सोसन की जड को पीसलें और सिर्के या तेल में मिलाकर उससे कुल्ले करें तो झट पट जोंक को मार डालता है और जोंक के मारने में कोई दवा इससे उत्तम नहीं है और बहुत अच्छा उपाय तो यह है कि काली मिट्टी (तालाब का काला गारा) थैली में भरकर बीमारके मुख में रखदें जिससे जोंक उस मिट्टी के लोभ में अपनी जगह छोड कर उस तरफ आवे क्योंकि उसको उस मिट्टी से स्नेह है फिर जब उसके निकलनेकी चाल मालूम होतो मिट्टीको मुखसे निकालडालें और जोंकको चिमटीसे पकडकर निकाल लेवे और यह विधि किताब शरह अस्बाबके लेखकने दादे न निकाली है परन्तु जो जोंक आमाशय में उतर जाय या उस औजार से छुडाते समय टूटकर दूसरा टुकडा आमाशय में जा पडे तो हींग, कमून, अफसन्तीन, कलौंजी, बाकला, कुटकी, बायबिडंग, सरलस इन सब को लेकर सिर्के में मिलाकर औटावे और छानकर रोगी को पिलावे और इस प्रकार के रोगी के खाने की चीजें लहसन, प्याज, पोदीना, राई और कर्नब होनी चाहिये अर्थात् जिस मनुष्य को वमन सहज में आजाय तो उसको इस प्रकार की चीजें खिला कर वमन करावे और वमन की दवा पिलावे और जिस मनुष्यको वमन का आना कठिन हो तो दस्तावर दवाएँ जैसा कि उसका वर्णन हुआ है और जो जोंक नाक से नाक की तरफ चढगई हो तो कलौंजी कडवी कनेरी और कुटकी सिरके में औटा कर और छान कर उस सिर्के को नाक में डालें और रोगी नाक से ऊपर सुडक ले और जिन चीजों को कुल्लों के लिये वर्णन किया है इस समय भी उनको काम में लाना चाहिये और जिन उपायों से जोंक नि

तो यडी विपत्ति लाता है और सूजन उत्पन्न करता है और कदाचित् वा टुकडा जो चिपटा हुआ है आमाशय में गिरपडे और अपने निकम्मेपन और विपेलेपन के कारण से खूनकी वमन और छिलन उत्पन्न करै और जो जोंके छुडाने से पहिले सिरके में नोंन मिलाकर या सिर्के में हींग मिलाकर उससे कुल्ले करें जिससे यह सुस्त हो जाय तो अति उत्तम होगा परन्तु जिस रोगीके किसी अंग में भीतर की तरफ दूर चिपटी हो और दिखाई न दे तो कुल्ला के सिवाय और कुछ उसका इलाज नहीं हो सकता और सिर्का और नोन और अंगूरी सिर्का और हींग इसमें अति उत्तम दवा है और जो जला हुआ ऊन और अफीम सिर्के में मिलाकर कुल्ले करें तो बहुत गुणकारी होगा और हकीम तिबरी ने कहा है कि जो सोसन की जड को पीसलें और सिर्के या तेल में मिलाकर उससे कुल्ले करें तो झट पट जोंक को मार डालता है और जोंक के मारने में कोई दवा इससे उत्तम नहीं है और बहुत अच्छा उपाय जो यह है कि काली मिट्टी (तालाब का काला गारा) थैली में भरकर बीमारके मुख में रखदें जिससे जोंक उस मिट्टी के लोभ में अपनी जगह छोड कर उस तरफ आवै क्योंकि उसको उस मिट्टी से स्नेह है फिर जब उसके निकलनेकी चाल मालूम होतो मिट्टीको मुखसे निकालडालें और जोंकको चिमटीसे पकडकर निकाल लेवै और यह विधि किताब बारह अस्बाबके लेखकने दांतें न निकाली है परन्तु जो जोंक आमाशय में उतर जाय या उस औजार से छुडाने समय टूटकर दूसरा टुकडा आमाशय में जा पडे तो शीर, ऐमून, अफसन्तीन, कलौंजी, बाकला, कुटकी, बायबिडंग, सरलस इन सब को लेकर सिर्के में मिलाकर औटावे और छानकर रोगी को पिलावे और इस प्रकार के रोगी के खाने की चीजें लहसन, प्याज, पोदीना, राई और कर्नब होनी चाहिये अर्थात् जिस मनुष्य को यमा सहज में आजाय तो उसको इस प्रकार की चीजें खवा कर वमन करावे और वमन की दवा पिलावे और जिस मनुष्यको वमन का आना कठिन हो तो दस्तावर दवाएँ देना कि उसका वर्णन हुआ है और जो जोंक नाक से नाक की तरफ चढगई हो तो कलौंजी कटेरी कनेरी और कुटकी सिर्के में औटा कर और छान कर उस सिर्के को नाक में डालें और रोगी नाक से ऊपर खींच ले और जिन चीजों को कुल्लों के लिये वर्णन किया है इस समय भी उनको काम में लाना चाहिये और जिन उपायों से जोंक नि

ठहरें जिससे उसपर से शहद घुलकर उतरजाय फिर धागेको खींचले (दूसरीविधि) सूखा हुआ अंजीर धागे में बांध कर थोड़ा सा चबाकर निगल ले तो उसको निकाल लाताहै और जो वह चुभी हुई चीज एक काल तक उसी जगह रहै और न भीतर जाय न बाहर निकले तो चाहिये कि ३॥ माशे साबुन में बीज कूटकर गर्म पानीके साथ रोगीको पिया करें और यह दवा परीक्षा की हुई है उस चीजको निस्सन्देह बाहर खींच लेती है और जब उस चीजका निकालना योग्य हो तो आमाशय में न गिरना चाहिये क्योंकि आमाशय में उतर जाने से भय है कि आमाशय या आंत को छील डाले और जिन उपायोंके करनेसे कांटा निकालते समय हलक छिल जाय तो ठंडे लुआबसे कुल्ले करें ठंडे लुआब जैसे बिहीदाना, खितमी के बीज, ईसबगोल, तुलसी के बीज पानीमें औटाकर और छान कर कुल्ले करें [कुल्ला करनेकी दूसरी विधि] ईसबगोल बिहीदाने का लुआब गौके दूध में निकालें फिर गुनगुना करके कुल्ले करें और जो रोग और लुआब योग्य और उचित है उसको घूंट भर २ कर पीवे और जो दर्द अधिक हो और देह मवादसे भरा हुआ मालूम हो तो फस्द खोलें जिससे मवाद दर्द की जगह पर न झुके और कुल्ला विशेष करावें जिससे सूजन उत्पन्न न हो और लेसदार चीजों के सिवाय जिनमें तेजी न हो और कोई चीज न खाय जिससे हलु बढजाय ।

छटाप्रकरण

सुई के निगलने का वर्णन

उसके निकलने की यह विधि है कि चुम्बक पत्थर ३॥ माशे महीन पीस कर एक चमचा शराब में मिलावे और प्रातःकाल पीवे और जब आधा पग बीत जाय तो सनायमक्की १२॥ माशे, गुलाब के फूल, बनफशा मलकर ९ माशे मिलावें ३० इन सब को एक गिलास में औटावे जब आधा बाकी रहे तो छान ले और शीरखिश्त खानी ६७॥ माशे, उस में मिलाकर और छानकर गुनगुना पीवे और घी से सहायता करे और जब दवा का गुण पूरा हो चुके तो कन्द का गुलाबसर्बत, तुलसी के बीजके संग पिलावे और चनेके पानीका भोजन दें

सातवा प्रकरण।

गलेके रुकजाने का वर्णन ।

जानना चाहिये कि शरीर के भीतर एक मकान कैसा हुआ सा है

ठहरें जिससे उसपर से शहद घुलकर उतरजाय फिर धागेको खींचले (दूसरीविधि) सूखा हुआ अंजीर धागे में बांध कर थोडा सा चबाकर निगल ले तो उसको निकाल लाताहै और जो वह चुभी हुई चीज एक काल तक उसी जगह रहे और न भीतर जाय न बाहर निकले तो चाहिये कि ३॥ माशे हालून में थोडा कूटकर गर्म पानीके साथ रोगीको पिया करें और यह दवा परीक्षा की हुई है वस चीजको निस्सन्देह बाहर खींच लेती है और जब उस चीजका निकालना योग्य हो तो आमाशय में न गिरना चाहिये क्योंकि आमाशय में उतर जाने से भय है कि आमाशय या आंत को छील डाले और जिन उपायोंके करनेसे कांटा निकालते समय हलक छिल जाय तो ठंढे लुआबसे कुल्ले करें ठंढे लुआब जैसे बिहीदाना, खितमी के बीज, ईसबगोल, तुलसी के बीज पानीमें औटाकर और छान कर कुल्ले करें [कुल्ला करनेकी दूसरी विधि] ईसबगोल बिहीदाने का लुआब गौके दूध में निकालें फिर गुनगुना करके कुल्ले करे और जो हरीरा और लुआब योग्य और उचित है उनको घूंट भर २ कर पीवे और जो दर्द अधिक हो और देह मवादसे भरा हुआ मालूम हो तो फस्द खोलें जिससे मवाद दर्द की जगह पर न झुके और कुल्ला विशेष करावें जिसे सूजन उत्पन्न न हो और लसदार चीजों के सिवाय जिनमें तेजी न हो और कोई चीज न खाय जिससे हलक बढ़जाय ।

छठाप्रकरण
सुई के निगलने का वर्णन

उसके निकलने की यह विधि है कि चुम्बक पत्थर ३॥ माशे महीन पीस कर एक चमचा शराब में मिलावे और प्रातःकाल पीवे और जब आधा पहर बीत जाय तो सनायमक्की २२॥ माशे, गुलाब के पुष्प, बनफशा प्रत्येक ९ माशे मिश्री ३० इन सब को एक गिलास में औटावे जब आधा बाकी रहे तो छान ले और शीरखिश्त साफी ६७॥ माशे, उस में मिलाकर और छानकर गुनगुना पीवे और बत्ती से सहायता करे और जब दवा का गुण पूरा हो चुके तो उन्द का गुलाबशर्बत, तुलसी के बीजके संग पिलावे और चनेके पानीका भोजन दें

सातवा प्रकरण।
गलेमें दबजाने का वर्णन ।

जानना चाहिये कि शरीर के भीतर एक मवण्ण कैसा हुआ सा है

दम घुटने लगताहै जैसा गलेकी सूजनमें वर्णन होचुकाहै (इलाज) जो कुछसा तवें प्रकरणमें वर्णन कियागयाहै उसीके अनुसार इसमें भी इलाज करना चाहिये

नवां प्रकरण

अन्नवाही नलमें खुजली होने का वर्णन ।

कभी जले हुए गाढे तेल जलन उत्पन्न करने वाले दोष आमाशय में इकट्ठे होजाते हैं और उसमें से भाफ के परमाणु उठकर कंठ की तरफ आते हैं और कंठ के मुखमें ऐसी खुजली उत्पन्न होती है कि बीमार उस जगह को खुजाने के लिये खखारने और सिर और गर्दन को फेरने से एक घडी नहीं रुक सकता है (इलाज) आमाशय के मवाद के निकालने के लिये सोया, लोबिया और मूली के बीज पानी में औटावे और छानकर सिकंजवीन मिलाकर पीवै और वमन करें और दोष के काटने के लिये प्याज की बनी हुई सिकंजवीन और पुराने सिर्के से कुल्ले करें और ताजे दूध में खांड मिलाकर घूट २ करके पीवे जिससे जलन और खुजली थमजाय और इस रोगमें गाजर की मीठी शराब सब चीजों से विशेष लाभदायक है । गाजर को छीलकर हड्डी से साफ करके छोटे २ टुकडे काटले फिर तवेली में डालकर प्रमाण के अनुसार पानी डाले और ढककर मढे हुए चून से लहेसकर दृढता से बंद करदें और मन्दी अग्नि पर औटावें । जब ठंडी होजाय तो गाजर का अर्क निचोडें उसका आधा सफेद कंद मिला कर शर्बत की तरह पकालेवें ।

दसवां प्रकरण ।

कंठावयव और फेंफड़े के [illegible] का वर्णन

फेंफडे के मुखके फडकने का यह चिन्ह [illegible] २ में बातें [illegible] की बात मुखही में रहजाय और मुखसे न नि[illegible] [illegible] ता है और हर समय न[illegible] [illegible] सदा न[illegible] क्योंकि फडकने का का[illegible] गाढे [illegible] और समय तक रुकती है जब [illegible] विशे[illegible] नष्ट जब तक कारण शेष रहे [illegible] के [illegible] जाती है और अच्छी । हो जाता है तो अपनी [illegible] फिर न पलट जावे और

दम घुटने लगताहै जैसा गलेकी सूजनमें वर्णन होचुकाहै (इलाज) जो कुछसा तवें प्रकरणमें वर्णन कियागयाहै उसीके अनुसार इसमें भी इलाज करना चाहिये

नवां प्रकरण

अन्नवाही नलमें खुजली होने का वर्णन ।

कभी जले हुए गाढे तेल जलन उत्पन्न करने वाले दोष आमाशय में इकट्ठे होजाते हैं और उसमें से भाफ के परमाणु उठकर कंठ की तरफ आते है और कंठ के मुखमें ऐसी खुजली उत्पन्न होती है कि बीमार उस जगह को खुजाने के लिये खखारने और सिर और गर्दन को फेरने से एक घडी नहीं रुक सकता है (इलाज) आमाशय के मवाद के निकालने के लिये सोया, लोबिया और मूली के बीज पानी में औटावे और छानकर सिकंजवीन मिलाकर पीवै और वमन करें और दोष के काटने के लिये प्याज की बनी हुई सिकंजवीन और पुराने सिर्के से कुल्ले करें और ताजे दूध में खांड मिलाकर घूंट २ करके पीवे जिससे जलन और खुजली थम जाय और इस रोगमें गाजर की मीठी शराब सब चीजों से विशेष लाभदायक है । गाजर को छीलकर हड्डी से साफ करके छोटे २ टुकडे काटले फिर तवेली में डालकर प्रमाण के अनुसार पानी डाले और ढकना मढे हुए चून से लहेसकर दृढता से बंद करदें और मन्दी अग्नि पर औटावें । जब ठंडी होजाय तो गाजर का अर्क निचोडें उसका आधा सफेद कंद मिला कर शर्बत की तरह पकालेवें ।

दसवां प्रकरण ।

कठावयव और फेंफडे के [illegible] का वर्णन

फेंफडे के मुखके फडकने का यह चिन्ह [illegible] २ में बातें [illegible]
की बात मुखही में रहजाय और मुखसे न नि[illegible] पे[illegible]
ता है और हर समय न[illegible] [illegible]ह का[illegible] सदा न[illegible]
क्योंकि फडकने का का[illegible] गाढे [illegible] और
समय तक रुकती है ज[illegible] [illegible]विष[illegible] नए [illegible]
जब तक कारण शेष र[illegible] के [illegible]
जाती है और अच्छी [illegible]
हो जाता है तो अपनी [illegible]
फिर न पलट जावे और [illegible]

के तलुओं पर मलें और अब चैतन्य होजाय तो बनफशा का तेल और गर्म पानी से कुल्ले करावें और जो मुख में झाग आगये हों तो इलाज न करें और जीवन की आशा न रक्खें और जिस मनुष्य का गला सूजन के कारण स घुट गया हो और मुख में झाग आगये हों तो उसके भी जीने की आशा नहीं है।

तेरहवां प्रकरण

कठिनता से निकलने का वर्णन

यह इस प्रकार का होता है कि खाने और पीने की चीजें कठिन से निग लीजाती हैं और उसका कारण या तो यहहै कि भोजनके आने जाने का मार्ग छोटा होजाताहै जैसे गले की सूजन और कठनाली के दबजाने में वर्णनहो चुका है अथवा कठनाली की सादा दुष्ट प्रकृति हो जैसा इस प्रकरणमें उसका वर्णन किया जाताहै। जानना चाहिये कि निगलने का काम दो शक्तियों से पूरा होताहै एक स्वाभाविक आकर्षणशक्तिसे जो नसेंरे और आमाशय में है दूसरी अपनी इच्छासे निकालनेवाली शक्तिके द्वारा जो कठके अवयवोंमें है और यह बात प्रगटहै कि कार्य पूरा उसी समय होता है जब उस अंग की प्रकृतिमें स मानता हो फिर जब कि कठमें आठों दुष्ट प्रकृतियोंमेंसे कोई प्रकृति जो समा नता से बाहरहैं उत्पन्न होतो वह आकर्षणशक्ति निर्बल होजायगी जो भोजनको मुखसे आमाशय की तरफ खींचती है और अवश्य भोजनका नीचे उतरनों कठिन होगा और पीनेवाली पतली वस्तुओं के सिवाय और सब वस्तु बहुत देरमें कठसे उतरकर आमाशयमें जायगी और आदमी को उसका ठहरना और देरमें नीचे उतरना मालूम हुआ करताहै और इस प्रकारके कठिनसे निगलने में दर्द बिलकुल नहीं होता परन्तु उसमें जिसका कारण सूजन या कोई और वस्तु मार्ग को दबाने वाली हो जैसा ऊपर वर्णनहो चुकाहै और यह पहचानना कि कौनसी दुष्ट प्रकृतिहै तो प्रत्येकके चिन्होंमें मालूम हो सकता है जैसे जो दुष्ट प्रकृति गर्म होतो प्यासकी अधिकता होगी और ठंडे पानीके पीनेसे लाभ होगा और जो ठंडी दुष्टप्रकृति होगी तो प्यास न होगी और गर्म पानी के पीने में लाभ होगा और जो तर दुष्टप्रकृति होगी तो मुखमें तरी और बहुत पानी भर आना उसका साक्षी होगा और जो खुश्क दुष्टप्रकृति होगी तो गर्मी से मुख में सूखापन रहेगा और तर चीजों से लाभ होगा और जो दुष्ट प्रकृति सयोगिक होतो दोनों के चिन्ह प्रगट होंगे जैसा वर्णन होचुका है (इलाज) प्रकृति को असली दशापर लानेके लिये ना

के तलुओं पर मलें और जब चैतन्य होजाय तो बनफशा का तेल और गर्म पानी से कुल्ले करावें और जो मुख में झाग आगये हों तो इलाज न करें और जीवन की आशा न रक्खें और जिस मनुष्य का गला सूजन के कारण से घुट गया हो और मुख में झाग आगये हों तो उसके भी जीने की आशा नहीं है।

तेरहवां प्रकरण

कठिनता से निकलने का वर्णन

यह इस प्रकार का होता है कि खाने और पीने की चीजें कठिन से निगलीजाती हैं और उसका कारण या तो यहहै कि भोजनके आने जाने का मार्ग छोटा होजाताहै जैसे गले की सूजन और कंठनाली के दबजाने में वर्णनहो चुका है अथवा कंठनाली की सादा दुष्ट प्रकृति हो जैसा इस प्रकरणमें उसका वर्णन किया जाताहै। जानना चाहिये कि निगलने का काम दो शक्तियों से पूरा होताहै एक स्वाभाविक आकर्षणशक्तिसे जो नलेरे और आमाशय में है दूसरी अपनी इच्छासे निकालनेवाली शक्तिके द्वारा जो कंठके अवयवोंमें है और यह बात प्रगटहै कि कार्य पूरा उसी समय होता है जब उस अंग की प्रकृतिमें समानता हो फिर जब कि कंठमें आठों दुष्ट प्रकृतियोंमेंसे कोई प्रकृति जो समानता से बाहरहै उत्पन्न होतो वह आकर्षणशक्ति निर्बल होजायगी जो भोजनको मुखसे आमाशय की तरफ खींचती है और अवश्य भोजनका नीचे उतरनी कठिन होगा और पीनेवाली पतली वस्तुओं के सिवाय और सब वस्तु बहुत देरम कंठसे उतरकर आमाशयमें जायगी और आदमी को उसका ठहरना और देरमें नीचे उतरना मालूम हुआ करताहै और इस प्रकारके कठिनसे निगलनेमें दर्द बिलकुल नहीं होता परन्तु उसमें जिसका कारण सूजन या कोई और वस्तु मार्ग को दबाने वाली हो जैसा ऊपर वर्णनहो चुकाहै और यह पहचानना कि कौनसी दुष्ट प्रकृतिहै तो प्रत्येकके चिन्होंमें मालूम हो सकता है जैसे जो दुष्ट प्रकृति गर्म होतो प्यासकी अधिकता होगी और ठंडे पानीके पीनेसे लाभ होगा और जो ठंडी दुष्टप्रकृति होगी तो प्यास न होगी और गर्म पानी के पीने से लाभ होगा और जो तर दुष्टप्रकृति होगी तो मुखमें तरी और बहुत पानी भर आना उसका साक्षी होगा और जो खुश्क दुष्टप्रकृति होगी तो रोगी के मुख में सूखापन रहेगा और तर चीजों से लाभ होगा और जो दुष्ट प्रकृति संयोगिक होतो दोनों के चिन्ह प्रगट होंगे जैसा वर्णन होचुका है (इलाज) प्रकृति को असली दशापर लानेके लिये ना

समय चिल्लावें तो उसका शब्द ऐसा निकले जैसे गुंजका शब्द होता है और जो कारण पहले बीत चुके हैं वह प्रत्येक रोग के पूरे साक्षी हैं और ऐसाही जिस समय शब्द निकलने के दूसरे संयोगिक अंगों में उपद्रव होता है तो शब्द में भी हेतु की विरुद्धता से अन्तर प्रगट होताहै जैसे पर्दा और छाती और मुखके अवयवोंमें और उन वस्तुओंमें जो उनमेंहैं। फिर जो कारण बलवान नहो तो शब्द बदलजाताहै और जो बलवान होतो शब्द बिल्कुल नष्ट होजाताहै और जानना चाहिये कि शब्दके नष्ट होनेसे बातें करना बंद नहीं होताहै इस लिये जबतक स्वास अच्छी तरहसे आताहै तबतक बातकरना योग्यहै और नष्ट होनेके समय बहुधा रोगी बात करता है परन्तु कानमें नहीं पहुचती और इस कारणको हम पांच भेदों में वर्णन करतेहैं। पहला भेद शब्दके बदलने और नष्ट होने में है जिस समय यह उपद्रव प्रगट होतो उसका उपाय जल्द करना चाहिये क्योंकि जो यह बीमारी रह गई तो इलाज कठिन होजायगा (इलाज) जो खुश्की के कारण से विपत्ति हो तो ईसबगोल का लुआब बूरे में मिलाकर गुनगुना गुनगुना पिलावें और मोटे मुर्ग का शोरबा, पालक, खब्बाजी का काढा और अंडे की अधभुनी जर्दी भोजन में दे और गुनगुने मीठे पानी से न्हाना लाभदायक है और जो कोई काम जैसे ज्वर और उस के समान वर्जित न हो ताजा दूध बूरे के साथ या विना बूरे का और मक्खन देना चाहिये और अच्छी दवा तो यह है कि मीठा अनार लेकर नये कपडे में लपेट कर भूभल में दाबदे जब पकजाय तो उसका मुख खोलकर भीतर से हिलावें और पका हुआ जुल्लाब और थोडासा बनफशा का या बादाम का तेल इसी अनार में डालकर मिलावें फिर उसको गुनगुना ठहर २ कर पीवे और जो विपत्ति का कारण तरी हो तो कनेव का चाटना लाभदायक है और जिस रोगी को तरी की अधिकता हो तो थोडीसी हींग, कर्नेव की चटनी में मिलालें और लहसन, गन्दना, मेथी का औटा हुआ पानी और कनेव की हरी टहनियां चबावें और उसका पानी थोडा २ चाटना यह सब इस प्रकारके रोगमें लाभदायकहैं [कर्नेवकी चटनी बनानेकी विधि] कर्नेव की हरी पत्तियों को औटाकर उसका पानी निचोडलें और छानकर शहद में मिला कर गाढाकरले और सोंठ हींग तथा अजीरकी चटनी में भी ऐसाहीगुणहै[सोंठकी चटनी बनानेकी विधि] ३५० माशे सोंठ ताजे दूधमें भिजोदें और हररोज दूध बदलते रहें यहांतक कि नर्म होजाय फिर उसको कूटकर नर्म करें और

समय चिल्लावें तो उसका शब्द ऐसा निकले जैसे गुंजका शब्द होता है और जो कारण पहले बीत चुके हैं वह प्रत्येक रोग के पूरे साक्षी हैं और ऐसाही जिस समय शब्द निकलने के दूसरे संयोगिक अंगों में उपद्रव होता है तो शब्द में भी हेतु की विरुद्धता से अन्तर प्रगट होताहै जैसे पर्दा और छाती और मुखके अवयवोंमें और उन वस्तुओंमें जो उनमेंहैं। फिर जो कारण बलवान् नहो तो शब्द बदलजाताहै और जो बलवान होतो शब्द बिल्कुल नष्ट होजाताहै और जानना चाहिये कि शब्दके नष्ट होनेसे बातें करना बंद नहीं होताहै इस लिये जबतक स्वास अच्छी तरहसे आताहै तबतक बातकरना योग्यहै और नष्ट होनेके समय बहुधा रोगी बात करता है परन्तु कानमें नहीं पहुचती और इस कारणको हम पांच भेदों में वर्णन करतेहैं। पहला भेद शब्दके बदलने और नष्ट होने में है जिस समय यह उपद्रव प्रगट होतो उसका उपाय जल्द करना चाहिये क्योंकि जो यह बीमारी रह गई तो इलाज कठिन होजायगा (इलाज) जो खुश्की के कारण से विपत्ति हो तो ईसबगोल का लुआब बूरे में मिलाकर गुनगुना गुनगुना पिलावें और मोटे मुर्ग का शोरवा, पालक, खब्बाजी का काढा और अंडे की अधभुनी जर्दी भोजन में दे और गुनगुने मीठे पानी से न्हाना लाभदायक है और जो कोई काम जैसे ज्वर और उस के समान वर्जित न हो ताजा दूध बूरे के साथ या विना बूरे का और मक्खन देना चाहिये और अच्छी दवा तो यह है कि मीठा अनार लेकर नये कपड़े में लपेट कर भूभल में दाबदे जब पकजाय तो उसका मुख खोलकर भीतर से हिलावें और पका हुआ जुल्लाब और थोडासा बनफशा का या बादाम का तेल इसी अनार में डालकर मिलावें फिर उसको गुनगुना ठहर २ कर पीवे और जो विपत्ति का कारण तरी हो तो कर्नेब का चाटना लाभदायक है और जिस रोगी को तरी की अधिकता हो तो थोडीसी हींग, कर्नेब की चटनी में मिलालें और लहसन, गन्दना, मेथी का औटा हुआ पानी और कर्नेब की हरी टहनियां चबावें और उसका पानी थोडा २ चाटना यह सब इस प्रकारके रोगमें लाभदायकहैं [कर्नेबकी चटनी बनानेकी विधि] कर्नेब की हरी पत्तियों को औटाकर उसका पानी निचोडलें और छानकर शहद में मिला कर गाढाकरले और सोंठ हींग तथा अजीरकी चटनी में भी ऐसाहीगुणहै [सोंठकी चटनी बनानेकी विधि] २५० माशे सोंठ ताजे दूधमें भिजोदें और हररोज दूध बदलते रहें यहांतक कि नर्म होजाय फिर उसको कूटकर नर्म करें और

समग अरबी [एक गोंद] १०॥ माशे, कतीरा १४ माशे, सफेद खशखाश और काली खशखाश १७॥ माशे, सबको महीन पीसकर उसमें मिलाकर चटनी तय्यार करें। तीसरा कारण सादा सर्द दुष्ट प्रकृति है जो फेंफड़े के मुखके सिरको सकोड देवे और उसके भागों को इकट्ठा करदे तो इस कारण से उसमें कड़ापन और खुरखुरापन उत्पन्न हो और शब्द बन्दलजाय उसका चिन्ह यह है कि जाडों में और उतरी हवा में यह रोग उत्पन्न हो और इस में भी खखार अर्थात् मुख से तरी और कफ नहीं निकलता है [इलाज] मिर्चे, हींग, राई, केसर, चारों तोल में बराबर लेकर शहदमें पकावें जिसमें बन्द होजाय और प्रति दिन प्रातःकाल के समय एक रीठे की गोली के स मान खाय और जब राई सदा मुखमें रक्खे और उसकी विधि यह है कि भुनी राई, मिर्चे, मुर, मिअयेसाइला, गन्दाविरोजा लेकर महीन पीसकर शहद में गोलियां बनालें चौथा कारण तर दुष्ट प्रकृति है जो फेंफड़े के सिर और मुखमें उत्पन्न हो और उसको ढीला करदे और यह ढीलापन इस हद तक नहीं पहुंचता है कि कपकपी उत्पन्न करे और बोली कांपने लगे या बिल्कुल बन्द होजाय किन्तु इतना हुआ करताहै कि कुछ शब्द बैठ जाय और कुछ नहीं बैठता है और जानना चाहिये कि जब फेंफड़े के मुख और फेंफड़े के सिर में हवा टकराती है तो उससे शब्द उत्पन्न होता है इसी लिये इनका कड़ा शरीर उत्पन्न हुआ है क्योंकि बात करने के समय पहले तो हवा फेंफड़े से निकलती है और फेंफड़े के मुख में आकर टकराती है कि इस जगह से दूसरीबार निकल कर फेंफड़ेके सिरमें टकरातीहै और इस जगह फेंफड़ेके सिरका हिलाना उसको शब्द बनाताहै और तालु और जीभ और काग और दांतोंकी शक्ति से अक्षर उत्पन्न होते हैं सो जिस समय फेंफड़ेका सिर ढीला होजाता है वो जैसा कम और विशेष ढीला होताहै वैसेही शब्दमें हानि आती है या बिल्कुल नष्ट होजाता है और उसका चिन्ह यह है कि फेंफड़े के सिरकी जगहमें रोगीको भारापन मालूमहो और दर्द और खुरखुरापन मालूमहो [इलाज] अनीसून सौंफ, सौसनकीजड पानीमें औटाकर उस पानी में शहद मिलाकर कुल्ले करें। अजमोदके बीज, खीरा के पत्ते, सोया, अनीसून, गावजुबां, उन्नाव, सौंफ, पानी में औटालें और छानकर शर्बत बनफशा मिलाकर घूट भर २ कर पीवें इसरोगमें यह नुसखा लाभदायक है और सौंफका शहद में मुरब्बा बना कर और कलौंजी शहद में मिलाकर खाय। अजमोद के बीज, सौंफके बीज,

समग अरबी [एक गोंद] १०॥ माशे, कतीरा १४ माशे, सफेद खशखाश और काली खशखाश १७॥ माशे, सबको महीन पीसकर उसमें मिलाकर चटनी तय्यार करें। तीसरा कारण सादा सर्द दुष्ट प्रकृति है जो फेंफड़े के मुखके सिरको सकोड देवे और उसके भागों को इकट्ठा करदे तो इस कारण से उसमें कड़ापन और खुरखुरापन उत्पन्न हो और शब्द बदलजाय उसका चिन्ह यह है कि जाड़ों में और उतरी हवा में यह रोग उत्पन्न हो और इस में भी खखार अर्थात् मुख से तरी और कफ़ नहीं निकलता है [इलाज] मिर्च, हींग, राई, केसर, चारों तोल में बराबर लेकर शहदमें पकावें जिससे बन्द होजाय और प्रति दिन प्रातःकाल के समय एक रीठे की गोली के स मान खाय और जब राई सदा मुखमें रक्खे और उसकी विधि यह है कि भू नी राई, मिर्च, मुर,मिअयेसाइला, गन्दाबिरोजा लेकर महीन पीसकर शहद में गोलियां बनालें चौथा कारण तर दुष्ट प्रकृति है जो फेंफड़े के सिर और मुखमें उत्पन्न हो और उसको ढीला करदे और यह ढीलापन इस हद तक नहीं पहुंचता है कि कपकपी उत्पन्न करे और बोली कांपने लगे या बिल्कुल बन्द होजाय किन्तु इतना हुआ करताहै कि कुछ शब्द बैठ जाय और कुछ नहीं बैठता है और जानना चाहिये कि जब फेंफड़े के मुख और फेंफड़े के सिर में हवा टकराती है तो उससे शब्द उत्पन्न होता है इसी लिये इनका कड़ा शरीर उ त्पन्न हुआ है क्योंकि बात करने के समय पहले तो हवा फेंफड़े से निकलती है और फेंफड़े के मुख में आकर टकरावी है कि इस जगह से दूसरीवार निकल कर फेंफड़ेके सिरमें टकरातीहै और इस जगह फेंफड़ेके सिरका हिलाना उसको शब्द बनाताहै और तालु और जीभ और काग और दांतोंकी शक्ति से अक्षर उत्पन्न होते हैं सो जिस समय फेंफड़ेका सिर ढीला होजाता है वो जैसा कम और विशेष ढीला होताहै वैसेही शब्दमें हानि आती है या बिल्कुल नष्ट होजाता है और उसका चिन्ह यह है कि फेंफड़े के सिरकी जगहमें रोगीको भारीपन मालूमहो और दर्द और खुरखुरापन मालूमहो [इलाज] अनीसून सौंफ, सोसनकीजड़ पानीमें औटाकर उस पानी में शहद मिलाकर कुल्ले करें। अजमोदके बीज, खीरा के पत्ते, सोया, अनीसून, गावजुबां, उन्नाव, सौंफ, पानी में औटालें और छानकर शर्बत बनफ्शा मिलाकर घूंट भर २ कर पीवें इसरोगमें यह नुसखा लाभदायक है और सौंफका शहद में मुरब्बा बना कर और कलौंजी शहद में मिलाकर खाय। अजमोद के बीज, सौंफके बीज,

उस जगह से मवाद निकलजाय और गले की सूजन के इलाज की तरफ आरूढ हो और आत्रिया उसको कहते हैं कि खमीरीरोटी को कूट कर पानी में औटावें और उसको विलायती लोग रिश्ता कहते हैं और हवारी ऐस आटे का नाम है जो गेंहू से नशास्ता सा बनालें और एक हकीम कहता है कि धोप की किताबों से ऐसा ही मालूम होता है कि आत्रिया ऐसी चीज़ है जिस को हिन्दुस्तान में सेमई कहते हैं यद्यपि ज्यों की त्यों वह न हो परन्तु उसी प्रकार की है।

तीसरा भेद -- कांपने वाले शब्द का वर्णन।

यह दो प्रकार का होता है एक तो कपकपी के सदृश । दूसरा फड़कने के सदृश । कांपना तो सर्वदा एकही तरह रहा करता है अगका फड़कना कभी होता है और कभी नहीं (इलाज) मवादके निकालने के लिये मा जून लौगाजिया, या अफतीमून के काढे में मिलाकर पीवें और जुल्लाब भी देवें और कांजी, यारज फयकरा और पहाडी मुनका के काढे से कुल्ले करें और अच्छे २ भोजन खांय जैसे कलिया, अनारदाना, कांजी का कलिया सलोनी मछली और जिन भोजनों में राई पड़ी हो और जहा तक होसके गा. लने पुकारने, बात करने, हसने, क्रोध करने, बहुत दौड़ने, बहुत कूदने, बहुत चलने और बहुत हाथ पांव हिलाने से बचे और उचित है कि ऐसे रोगीको चित्त लिटाकर उसकी छाती पर कोई बोझदार चीज उसकी शक्तिके अनु सार रखदें । वह एक तख्ता होता है जो सीसे वा अन्य ऐसी ही वस्तु स बनाया जाता है और योग्य है कि इसी तरह पर लेटा हुआ बात करे और दिन भर में कई बार यही काम किया करे । प्रगट हो कि कांपते हुए शब्द का कारण फेंफडे का मुख उस अवयव में होता है जो फेंफडे क मुख पर रक्खा हुआहै और किताब शरह अस्वाब के बनाने वाले के वर्णन के अनुसार इसके दो भेद हैं एक तो कांपना । दूसरे फड़कना । जानना चाहिये कि हड्डी में फड़कन नहीं होती है परंतु मास, खाल्स सिल्ली आदि खिच सकने वाले अवयवों में फड़कन होती है और अगका फड़कना गाढ़े मवाद के कारण स उत्पन्न होता है जैसे उस कफ से जा कठके अवयव और फेफडे के मुख में उत्पन्न होजाय और कांपना उस रोग को कहते हैं कि चाह करने वाली म क्ति फेंफडे के सिर को हिलाना और शब्द करना चाहती है और गाढा मवाद गिरने के कारण स विश्राम ढूढता है और नीचे की तरफ झुकता है तो इस

उस जगह से मवाद निकलजायँ और गले की सूजन के इलाज की तरफ आरूढ़ हो और आत्रिया उसको कहते हैं कि खमीरीरोटी को कूट कर पानी में औटावें और उसको विलायती लोग रिश्ता कहते हैं और हमारी ऐस आटे का नाम है जो गेंहू से नशास्ता सा बनालें और एक हकीम कहता है कि छोप की किताबों से ऐसा ही मालूम होता है कि आत्रिया ऐसी चीज़ है जिस को हिन्दुस्तान में सेमई कहते हैं यद्यपि ज्यों की त्यों वह न हो परन्तु उसी प्रकार की है।

तीसरा भेद -- कांपने वाले शब्द का वर्णन।

यह दो प्रकार का होता है एक तो कपकपी के सदृश। दूसरा फड़कने के सदृश। कांपना तो सर्वदा एकही तरह रहा करता है अगका फड़क ना कभी होता है और कभी नहीं (इलाज) मवादके निकालने के लिये मा जून लौगाजिया, या अफ्तीमून के काढ़े में मिलाकर पीवें और जुलाब भी देवें और कांजी, यारज फयकरा और पहाड़ी मुनक्का के काढ़े से कुल्ले करें और अच्छे २ भोजन खांय जैसे कलिया, अनारदाना, कांजी का कलिया सलोनी मछली और जिन भोजनों में राई पड़ी हो और जहा तक होसके गा. लने पुकारने, बात करने, हसने, क्रोध करने, बहुत दौड़ने, बहुत कूदने, बहुत चलने और बहुत हाथ पांव हिलाने से बचे और उचित है कि ऐसे रोगीको चित्त लिटाकर उसकी छाती पर कोई बोझदार चीज उसकी शक्तिके अनु सार रखदें। वह एक तख्ता होता है जो सीसे या अन्य ऐसी ही वस्तु से बनाया जाता है और योग्य है कि इसी तरह पर लेटा हुआ बात करे और दिन भर में कई बार यही काम किया करे। प्रगट हो कि कांपते हुए शब्द का कारण फेंफड़े का मुख उस अवयव में होता है जो फेंफड़े के मुख पर रक्खा हुआहै और किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले के वर्णन के अनुसार इसके दो भेद हैं एक तो कांपना। दूसरे फड़कना। जानना चाहिये कि हड्डी में फड़कन नहीं होती है परंतु मास, खाल्ल झिल्ली आदि खिच सकने वाले अवयवों में फड़कन होती है और अगका फड़कना गाढ़े मवाद के कारण से उत्पन्न होता है जैसे उस कफ से जो कण्ठके अवयव और फेफड़े के मुख में उत्पन्न होजाय और कांपना उस रोग को कहते हैं कि चाह करने वाली श क्ति फेंफड़े के सिर को हिलाना और शब्द करना चाहती है और गाढ़ा मवाद गिरने के कारण से विशाप टूटता है और नीचे की तरफ झुकता है सो इस

और वह ऐसा अंग है जो नर्म और पोला है और मांस नर्म हड्डी फॅफड़े के मुख और शरियानवरीदी (वह रग जिससे फॅफड़े से दिल में हवा आती है और यह एक रग है) की टहनियों और वरीद शरियानी (वह रग जो जिगर से ऊंची है) की टहनियों और झिल्ली से मिलकर बना है और यह झिल्ली तमाम फॅफड़े के मुखपर खिंची हुई है और फॅफड़े के दो भाग होगये हैं एक तो दाहिनी ओर और दूसरा बायीं ओर है। दाहिनी तरफ तीनशाखाओं पर बांगी गई है और बांई ओर दो टहनियां हैं। फॅफड़े का अंग सुन्न है परन्तु इस झिल्ली में कुछ ज्ञानशक्ति है और यह सबकी सब दिलके ओर पास आई है और फॅफड़े का लाभ यह है कि हवा को खींचता है और दिलकी प्रकृति के अनुसार बनाकर शिरयान वरीदी के द्वारा जो दिल और फॅफड़ेके मध्यमें रक्खी हुई है दिलमें पहुंचाताहै और दिल उससे ताजा होताहै इसीतरहसे भाफदार हवाको श्वास के दूर करने से बाहर निकाल लेता है इसी लिये उसको जीवन का सोता कहते हैं छाती के भीतरी पर्दे के दो भाग हैं क्योंकि जो एक म कुछ उपद्रव हो तो दूसरा भाग आरोग्य रहताहै और श्वास आना बन्द नहीं होता जो जीवन का कारण है और दोनों भागों में झिल्ली अड़ी हुई है और दोनों भागों के मध्य में कोई मार्ग नहीं क्योंकि इसी झिल्ली में भी कोई मार्ग नहीं है श्वासनली फॅफड़ा और दूसरे अंग जो छाती की चौड़ाई में हैं इसी झिल्ली से एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखते हैं और सीनेके पर्दे का विस्तार सहित पसली की सृजन में वर्णन करेंगे और इस अध्याय में कई प्रकरण हैं ॥

पहिला प्रकरण

श्वास की दशाओं को पहचानने का वर्णन

जानना चाहिये कि श्वास ... यह हैं यथा श्वासनली, फॅफड़े के मुख, पर्दा, छाती और ... है और जानना चाहिये कि श्वासकी गति ना... गति केवल स्वाभाविक है ... गति ... का इसमें अधिकार भी ... और ... है सकता है पर... नाड़ी का ला... तात्पर्य है कि... के उपद्रव दो द...

और वह ऐसा अंग है जो नर्म और पोला है और मांस नर्म हड्डी फॅफड़े के मुख और शरियानवरीदी (वह रग जिससे फॅफड़े से दिल में हवा आती है और यह एक रग है) की टहनियों और वरीद शरियानी (वह रग जो जिगर से ऊंची है) की टहनियों और झिल्ली से मिलकर बना है और यह झिल्ली तमाम फॅफड़े के मुखपर खिंची हुई है और फॅफड़े के दो भाग होगये हैं एक तो दाहिनी ओर और दूसरा बायीं ओर है। दाहिनी तरफ तीनशाखाओं पर बांटी गई है और बाईं ओर दो टहनियां हैं। फॅफड़े का अंग सुन्न है परन्तु इस झिल्ली में कुछ ज्ञानशक्ति है और यह सबकी सब दिलके ओर पास आई है और फॅफड़े का लाभ यह है कि हवा को खींचता है और दिलकी प्रकृति के अनुसार बनाकर शिरयान वरीदी के द्वारा जो दिल और फॅफड़ेके मध्यमें रक्खी हुई है दिलमें पहुचाताहै और दिल उससे ताजा होताहै इसीतरहसे भाफदार हवाको श्वास के दूर करने से बाहर निकाल लेता है इसी लिये उसको जीवन का सोता कहते हैं छाती के भीतरी पर्दे के दो भाग हैं क्योंकि जो एक म कुछ उपद्रव हो तो दूसरा भाग आरोग्य रहताहै और श्वास आना बन्द नहीं होता जो जीवन का कारण है और दोनों भागों में झिल्ली अड़ी हुई है और दोनों भागों के मध्य में कोई मार्ग नहीं क्योंकि इसी झिल्ली में भी कोई मार्ग नहीं है श्वासनली फॅफड़ा और दूसरे अंग जो छाती की चौड़ाई में हैं इसी झिल्ली रा एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखते हैं और सीनेके पर्दे का विस्तार सहित पसली की सूजन में वर्णन करेंगे और इस अध्याय में कई प्रकरण हैं ॥

पहिला प्रकरण

श्वास की दशाओं को पहचानने का वर्णन

जानना चाहिये कि श्वास ... यह हैं यथा श्वासनली, फॅफड़े के मुख, पर्दा, छाती और ... है और जानना चाहिये कि श्वासकी गति ना... गति केवल स्वाभाविक है ... का इसमें अधिकार भी ... सकता है पर ... नाड़ी का ला... तात्पर्य है कि ... के उपद्रव दो द...

राध, दुर्व्यसन वा वस न हो जैसे नींद और बेहोशीमें श्वास लेना और यह श्वास पर्दे की गति से पूरा होता है। दूसरे स्वेच्छा से श्वास लिया जाय तो छातीके अवयवों और गले से श्वास लेने में सहायता होगी जैसा कि बड़े छोटे शीघ्र सुस्त लम्बे छोटे और विरुद्ध श्वास में होता है। श्वास लेने की तो यह दशा थी जो वर्णन हुई परन्तु श्वास लेने की दशा कि किसतरह से लियाजाताहै उस की सूरत यह है कि जब बाहरकी हवा कंठनाली में जाती है तो फेफड़ा अपने प्रमाण के अनुसार बढ़जाता है जिससे उसमें ठहरे और छाती फेफड़े की सहायता करती है अर्थात् श्वास लेती समय चौड़ी होजाती है इस लिये फेफड़े की जगह तंग हो और श्वास लेने में पूरा और विशेष काम फेफड़े का है और छाती के अवयव उस की सहायता करते हैं और श्वास लेने की गति भीतर की तरफ पर्दे से आरम्भ होती है और बाहर की ओर नर्खरे से और जिस समय बाहरकी ओर श्वास लीजाय तो फेफड़े का अंग अपने प्रमाणके अनुसार छोटा होजाता है क्योंकि फेफड़ा छेददार और पोला है जब उसमें हवा भरेगी तो चौड़ा होजायगा और जब बाहर निकलजायगी तो छोटा होजायगा।

दूसराप्रकरण।

अप्राकृतिक श्वासका वर्णन।

यह कितनीही तरहका होता है पहला तो बड़ा होताहै और यह इसप्रकार का होता है कि छाती और फेफड़ा बहुत चौड़ा हो जिससे हवा समान और विशेष खिंचे और इसके तीन कारण हैं एक तो यह कि पूरी शक्ति हो। दूसरे यह है कि संयोगिक अंग आज्ञाकारी रहें, तीसरे यह है कि आवश्यकता विशेष हो, और जिस समय भाफकी हवा के निकालनेकी आवश्यकता विशेष हो तो खुलनेकी गति निर्बलहोजाती है और बंद होनेकी गति विशेष और बलवान् हो जाती है और जब कभी हवा के खिंचने की आवश्यकता विशेष होतीहै तो खुलनेकी गति बलवान् और बंद होनेकी गति निर्बल होजातीहै हकीम जालीनूस ने किताब तशरीह कबीरमें कहाहै कि जबतक जीव निरोगीहै श्वास लेनेमें छातीके नीचे की ओर को हिलाता है फिर जिस समय कोई कठी गति करे या उस को ज्वर आवे तो उन अवयवों को हिलाता है जो पसलियों में हैं और अब इससे विशेष आवश्यकता पड़े तो छाती के ऊपर के भाग को हिलाता है और दूसरा छोटा है और इसके कारण इसके विरुद्ध हैं और कभी ऐसा होता है कि किसी कष्ट या विपत्ति के कारण से श्वासधारी भी पूरी

राध, दुर्व्यसन वा वस न हो जैसे नींद और वे होशीमें श्वास लेना और यह श्वास पर्दे की गति से पूरा होता है। दूसरे स्वेच्छा से श्वास लिया जाय तो छातीके अवयवों और गले से श्वास लेने में सहायता होगी जैसा कि बड़े छोटे शीघ्र सुस्त लम्बे छोटे और विरुद्ध श्वास में होता है। श्वास लेने की तो यह दशा थी जो वर्णन हुई परन्तु श्वास लेने की दशा कि किसतरह से लियाजाताहै उस की सूरत यह है कि जब बाहरकी हवा कंठनाली में जाती है तो फेफड़ा अपने प्रमाण के अनुसार बढ़जाता है जिससे उसमें ठहरे और छाती फेफड़े की सहायता करती है अर्थात् श्वास लेती समय चौड़ी होजाती है इस लिये फेफड़े की जगह तंग हो और श्वास लेने में पूरा और विशेष काम फेफड़े का है और छाती के अवयव उस की सहायता करते हैं और श्वास लेने की गति भीतर की तरफ पर्दे से आरम्भ होती है और बाहर की ओर नर्खरे से और जिस समय बाहरकी ओर श्वास लीजाय तो फेफड़े का अंग अपने प्रमाणके अनुसार छोटा होजाता है क्योंकि फेफड़ा छेददार और पोला है जब उसमें हवा भरेगी तो चौड़ा होजायगा और जब बाहर निकलजायगी तो छोटा होजायगा।

दूसराप्रकरण।

अप्राकृतिक श्वासका वर्णन।

यह कितनीही तरहका होता है पहला तो बड़ा होताहै और यह इसप्रकार का होता है कि छाती और फेफड़ा बहुत चौड़ा हो जिससे हवा समान और विशेष खिंचे और इसके तीन कारण हैं एक तो यह कि पूरी शक्ति हो। दूसरे यह है कि संयोगिक अंग आज्ञाकारी रहें, तीसरे यह है कि आवश्यकता विशेष हो, और जिस समय भाफकी हवा के निकालने की आवश्यकता विशेष हो तो खुलनेकी गति निर्बलहोजाती है और बंद होनेकी गति विशेष और बलवान् हो जाती है और जब कभी हवा के खिंचने की आवश्यकता विशेष होतीहै तो खुलनेकी गति बलवान् और बंद होनेकी गति निर्बल होजातीहै हकीम जालीनूस ने किताब तशरीह कबीरमें कहाहै कि जबतक जीव निरोगीहै श्वास लेनेमें छातीके नीचे की ओर को हिलाता है फिर जिस समय कोई कड़ी गति करे या उस को ज्वर आवे तो उन अवयवों को हिलाता है जो पसलियों में हैं और जब इससे विशेष आवश्यकता पड़े तो छाती के ऊपर के भाग को हिलाता है और दूसरा छोटा है और उसके कारण इसके विरुद्ध हैं और कभी ऐसा होता है कि किसी कष्ट या विपत्ति के कारण से श्वासधारी आ पूरी

लगता है और जिस समय शीघ्र चलने वाले श्वास में दिल के खुलनेकी गति विशेष बलवान् होती है तो ताजी हवा के खींचने की विशेष आवश्यकता होती है और जिस समय दिलके बन्द होने की गति विशेष बलवान् होती है तो उस समय भाफ वाली हवाके निकालनेकी विशेष आवश्यकता है। आठवें सुस्ती से श्वास का लेना है और उसके कारण उसके विरुद्ध है और कभी दर्द के कारण से श्वास देर में आने लगता है। नवें श्वास का लगातार आना और यह ऐसा होता है कि श्वास जो आता है उसके बीचमें काल कम हो और उसका यह कारण है कि आवश्यकता विशेष हो और यह इस लिये होता है कि श्वास के बड़े और शीघ्रगामी होने से आवश्यकता न हो तो इस कारणसे तबियतको बार२ गति करें और कभी बार२ श्वासको आनेका यह कारण होता है कि कोई ऐसी विपत्ति आगई हो कि श्वास के बड़े होने से रोक रक्खे तो इस कारण से तबियत श्वास के बार २ आने की ओर आरूढ़ हो और हकीम बुकरात् कहता है कि लगातार श्वास आने से फेफड़ा सूख जाता है श्वास आने के अगों में आलस्य आजाता है। दसवें को ठंढा श्वास कहते हैं और गर्मी और श्वासका ठंढा होना इस बातका चिन्ह है कि दिलमें सर्दी आगई है और प्राकृतिक गर्मी नष्ट होगई है मुख्यकर जबकि श्वास तर आवे जैसे भीगी हुई और तर हो तो यह असल गर्मी के जाते रहने का चिन्हहै। ग्यारहवें श्वासकी विरुद्धता है और श्वासकी वैसीही विरुद्धताहै जैसे नाड़ीकी विरुद्धता और उसके कारण भी वैसेही हैं जैसे इसके हैं। बारहवें भेदको मुजाअफ कहते हैं और इस प्रकारका श्वास सब प्रकारके श्वासरोगोंसे विरुद्धहै और मुजाअफ इसलिये कहते हैं कि दिलके खुलनेकी गति और दिलके बंद होनेकी गति दो आंतों से पूरी होती है जैसे बच्चों का श्वास रोनेके समय हुआ करता है इसी लिये उसका नाम नफ्सउलबुका है और इसका यह कारण कि आवश्यकता विशेष हो इसलिये एक गतिमें जितनी ताजी हवा भीतर पहुंचे वह पूरी न हो और उसमें सहायता की आवश्यकता हो या उन अंगों में कोई विपत्ति हो और जितनी हवाकी आवश्यकता है तो उतनी एक बार में न लिय सकैं इसकी ऐसी सूरत है कि इस विषय में आराम किया चाहै जिससे जित नी हवाकी आवश्यकता है उतनी ही खिंचसके और यह बहुधा जिगर, तिल्ली की सूजन, खिनाक, बायटों और तेज रोगोंमें हुआ करताहै और बुरा चिन्ह है। तेरहवें भेदको नफसउलमनखरी कहते हैं और मनखर अरबी में नाक के छेद को बोलते हैं और यह ऐसा श्वास होता है कि नाक के नथनों के किनारे को

लगता है और जिस समय शीघ्र चलने वाले श्वास में दिल के खुलनेकी गति विशेष बलवान् होती है तो ताजी हवा के खींचने की विशेष आवश्यकता होती है और जिस समय दिलके बन्द होन की गति विशेष बलवान् होती है तो उस समय भाफ वाली हवाके निकालनेकी विशेष आवश्यकता है। आठवें सुस्ती से श्वास का लेना है और उसके कारण उसके विरुद्ध है और कभी दर्द के कारण से श्वास देर में आने लगता है। नवें श्वास का लगातार आना और यह ऐसा होता है कि श्वास जो आता है उसके बीचमें काल कम हो और उसका यह कारण है कि आवश्यकता विशेष हो और यह इस लिये होता है कि श्वास के बडे और शीघ्रगामी होने से आवश्यकता न हो तो इस कारणसे तबियतको बार२ गति करें और कभी बार२ श्वासका आनेका यह कारण होता है कि कोई ऐसी विपत्ति आगई हो कि श्वास के बडे होने से रोक रक्खे तो इस कारण से तबियत श्वास के बार २ आने की ओर आरूढ हो और हकीम बुकरात् कहता है कि लगातार श्वास आने से फेफडा सूख जाता है श्वास आने के अगों में आलस्य आजाता है। दसवें को ठंढा श्वास कहते हैं और गर्मी और श्वासका ठंढा होना इस बातका चिन्ह है कि दिलमें सर्दी आगई है और प्राकृतिक गर्मी नष्ट होगई है मुख्यकर जबकि श्वास तर आवे जैसे भीगी हुई और तर हो तो यह असल गर्मी के जाते रहने का चिन्हहै। ग्यारहवें श्वासकी विरुद्धता है और श्वासकी वैसीही विरुद्धताई जैसे नाडीकी विरुद्धता और उसके कारण भी वैसेही हैं जैसे इसके हैं। बारहवें भेदको मुजाअफ कहते हैं और इस प्रकारका श्वास सब प्रकारके श्वासरोगोंसे विरुद्ध है और मुजाअफ इसलिये कहते हैं कि दिलके खुलनेकी गति और दिलके बंद होनेकी गति दो आंतों से पूरी होती है जैसे बच्चों का श्वास रोनेके समय हुआ करता है इसी लिये उसका नाम नफ्सउलबुका है और इसका यह कारण कि आवश्यकता विशेष हो इसलिये एक गतिमें जितनी ताजी हवा भीतर पहुंचे वह पूरी न हो और उसमें सहायता की आवश्यकता हो या उन अंगों में कोई विपत्ति हो और जितनी हवाकी आवश्यकता है सो उतनी एक बार में न खिंच सके इसकी ऐसी ग्ररज है कि इस विषय में आराम किया चाहे जिससे जित नी हवाकी आवश्यकता है उतनी ही खिंचसके और यह बहुधा जिगर, तिल्ली की सूजन, खिन्नाब, वांयटों और तेज रोगोंमें हुआ करताहै और बुरा चिन्ह है। तेरहवें भेदको नफसउलमनखरी कहते हैं और मनखर अरबी में नाक के छिद्र को बोलते हैं और यह ऐसा श्वास होता है कि नाक के नथनों के किनारे को

तरबूज का पानी औटा कर शर्बत बनफशा मिलाकर पिलावे और जौ इस जौ के पानी में बादामका तेल या कद्दूके बीजकी मिंगीका तेल या बूरा मिलावे तो अति उत्तम और योग्य है और चाहिये कि तर बनफशा और तर कद्दूके बीजकी मिंगी और ईसबगोल का लुआब और तरबूज का पानी सबको मिलाकर छाती और पसलियोंपर लेप करें और बनफशा खितमी और नीलोफर औटाकर भफारे में डालकर रोगीको उसमें बैठावें और खाने का तरबूज और पके हुए कद्दूका पानी जुलाबके साथ और मीठे अनारका पानी बादाम के तेलके साथ और ईसबगोल का लुआब जुलाबके साथ और आध भुना हुआ मुर्गीका अण्डा और पालकका पानी या शीरा और छिले हुए मूंगका औटा पानी बादामके तेलके साथ खाने पीने को देवें और अप्राकृति क श्वासके भेदोंमें से जिसका कारण गर्मीकी अधिकताहै उसके स्थानकी हवा को खुश्क और तरकरना चाहिये और उसका इलाजभी इसीतरहसे करना योग्यहै और दूसरे भेद जिनका कारण तरी और सर्दी और गाढा या पतला द्रव होतो श्वासके तंग आने का इलाज करना चाहिये जैसा रोगी की प्रकृतिके योग्य हो और ठंडी प्रकृति वाले को आरम्भ में ताजे दूधके साथ बूरा देना लाभदायकहै और जो वादीका मवाद होतो आरम्भमें बूरा हरी साफके पानी में मिलाकर देना लाभदायकहै और जो छाती की पसलियों की निर्बलता इस रोग का कारण होतो नर्गिस और चमेली का तेल मलें और जिस रोगी के पट्ठोंमें मवाद आगया होतो शीह, तुलसी, अफसंतीन, प्रत्येक १ भाग, कड़वे बादाम की मिंगी और बूरा प्रत्येक २ भाग, सबको महीन पीसकर और मि लाकर गोलियां बनालें और प्रतिदिन प्रात कालके समय चार गोलियां खाय और उसके पीछे शहद की बनी हुई सिकंजबीन पीवे और लऊक कर्नेद इस रोगमें गुणकारकहै प्रगट हो कि इस रोग [खिल्लीक सुफडने] का कारण जो खुश्की है तो जो चीज तरी बढावेगी वह इस रोगमें लाभदायक होगी और किताब शामिलुल्सनाआमें लिखाहै कि इस प्रकारके रोगी का प्रतिदिन सवेरे बनफशा दूधमें डालकर और मिसरी मिलाकर पिलावें और यह लेप इस रोग में बहुत लाभदायकहै [लेपके बनाने की विधि] शामी शीशा का छिलका और बीजों समेत कूटले और ईसबगोलके लुआबमें सफेद चन्दन, बाबूने पीसे महीन पीसकर उस कुटी हुई शीशामें मिलाकर लेपकरें [कोरूलीके बनाने की विधि] सफेद पूरे हुए मोम का शीशा के तेलमें पिघलावें फिर खीराके पानी और

तरबूज का पानी औटा कर शर्बत बनफशा मिलाकर पिलावे और जो इस जौ के पानी में बादामका तेल या कद्दूके बीजकी मिंगीका तेल या बूरा मिलावे तो अति उत्तम और योग्य है और चाहिये कि तर बनफशा और तर कद्दूके बीजकी मिंगी और ईसबगोल का लुआब और तरबूज का पानी सबको मिलाकर छाती और पसलियोंपर लेप करें और बनफशा खितमी और नीलोफर औटाकर भफारे में डालकर रोगीको उसमें बैठावें और खाने का तरबूज और पके हुए कद्दूका पानी जुलाबके साथ और मीठे अनारका पानी बादाम के तेलके साथ और ईसबगोल का लुआब जुलाबके साथ और आग भुना हुआ मुर्गीका अण्डा और पालकका पानी या शीशा और छिले हुए मूंगका औटा पानी बादामके तेलके साथ खाने पीने को देवें और अप्राकृति क श्वासके भेदोंमें से जिसका कारण गर्मीकी अधिकताहै उसके स्थानकी हवा को खुश्क और तरग्खना चाहिये और उसका इलाजभी इसीतरहसे करना योग्यहै और दूसरे भेद जिनका कारण तरी और सर्दी और गाढा या पतला द्राव होतो श्वासके तंग आने का इलाज करना चाहिये जैसा रोगी की प्रकृतिके योग्य हो और ठंडी प्रकृति वाले को आरम्भ में ताजे दूधके साथ बूरा देना लाभदायकहै और जो बादीका मवाद होतो आरम्भमें बूरा हरी साफके पानी में मिलाकर देना लाभदायकहै और जो छाती की पसलियों की निर्बलता इस रोग का कारण होतो नर्गिस और चमेली का तेल मलें और जिस रोगी के पट्ठोंमें मवाद आगया होतो शीह, तुलसी, अफसंतीन, प्रत्येक १ भाग, कडुवे बादाम की मिंगी और बूरा प्रत्येक २ भाग, सबको महीन पीसकर और मिलाकर गोलियां बनालें और प्रतिदिन प्रातःकालके समय चार गोलियां खाय और इसके पीछे शहद की बनी हुई सिकंजबीन पीवे और लऊक कर्नेब इस रोगमें गुणकारकहै प्रगट हो कि इस रोग [खिलोक सुकडने] का कारण जो खुश्की है तो जो चीज तरी बढावगी वह इस रोगमें लाभदायक होगी और किताब शामिलुल्सनाआमें लिखाहै कि इस प्रकारके रोगी का प्रतिदिन शर्बत बनफशा दूधमें डालकर और मिसरी मिलाकर पिलावें और यह लेप इस रोग में बहुत लाभदायकहै [लेपके बनाने की विधि] गाजी शीशा की गिरी और बीजों समेत कुल्फे और ईसबगोलके लुआबमें सफेद चन्दन, बाबूने पीसे महीन पीसकर उस कुटी हुई शीशामें मिलाकर लेपकरें [फौरूतीके बनाने की विधि] सफेद पुरी हुई मोम या शीशा के तेलमें पिघलावे फिर नीराके पानी और

तरबूज का पानी औटा कर शर्बत बनफशा मिलाकेर पिवावें और जो इस जौ के पानी में बादामका तेल या कद्दूके बीजकी मिंगीका तेल या बूरा मिलावे सो अति उत्तम और योग्य है और चाहिये कि तर बनफशा और तर कद्दूके बीजकी मिंगी और ईसबगोल का लुआब और तरबूज का पानी सबको मिलाकर छाती और पसलियोंपर लेप करें और बनफशा सिनमी और नीलोफर औटाकर भफारे में डालकर रोगीको उसमें बैठावें और खान को तरबूज और पके हुए कद्दूका पानी जुलाबके साथ और मीठे अनारका पानी बादाम के तेलके साथ और ईसबगोल का लुआब जुलाबके साथ और अध भुना हुआ मुर्गीका अण्डा और पालकका पानी या शीआ और छिले हुए मूंगका औटा पानी बादामके तेलके साथ खाने पीने को देवें और अवाकाबि क श्वासके भेदोंमें से जिसका कारण गर्मीकी अधिकताहै उसके स्थानकी हवा को खुश्क और तरम्खना चाहिये और उसका इलाजभी इसीतरहसे करना योग्यहै और दूसरे भेद जिनका कारण तरी और सर्दी और गाढा या पतला दोष होनो श्वासके तंग आने का इलाज करना चाहिये जैसा रोगी की प्रकृतिके योग्य हो और ठंडी प्रकृति वाले को आरम्भ में ताजे दूधके साथ बूरा देना लाभदायकहै और जो वादीका मवाद होतो आरम्भमें बूरा हरी सौंफके पानी में मिलाकर देना लाभदायकहै और जो छाती की पसलियों की निर्बलता इस रोग का कारण होतो नर्गिस और चमेली का तेल मलें और जिस रोगी के पर्दोंमें मवाद आगया होतो शीह, तुलसी, अफसंतीन, प्रत्येक १ भाग, कडवे बादाम की मिंगी और बूरा प्रत्येक २ भाग, सबको महीन पीसकर और मिलाकर गोलियां बनालें और प्रतिदिन प्रातःकाल समय चार गोलियां खावें और उसके पीछे शहद की बनी हुई सिकंजबीन पीवें और प्रकट करें इस रोगमें गुणकारकहै प्रगट हो कि इस रोग [जिहीक मुफरद] का कारण गर्मी खुश्की है सो जो चीज़ तरी बढावेगी वह इस रोगमें लाभदायक होगी और किताब शामिलुस्सनाआमें लिखाहै कि इस प्रकारके रोगी का शीरखिश्त बनफशा दूधमें डालकर और मिसरी मिलाकर पिवावें और यह लेप इस रोग में बहुत लाभदायकहै [लेपके बनाने का विधि] माजी शीआ का छिलका और बीजों समेत कुटलें और ईसबगोलके लुआबमें सफेद चन्दन घिसकर और महीन पीसकर उस कुटी हुई शीआमें मिलाकर लगावें [शीरबाके बनाने की विधि] मुर्गे भुने हुए मांस को शीआ के रसमें भिगावें फिर औटाकर पानी और

तरबूज का पानी औटा कर शर्बत बनफशा मिलाकर पिलावे और जो इस जौ के पानी में बादामका तेल या कद्दूके बीजकी मिंगीका तेल या बूरा मिलावे सो अति उत्तम और योग्य है और चाहिये कि तर बनफशा और तर कद्दूके बीजकी मिंगी और ईसबगोल का लुआब और तरबूज का पानी सबको मिलाकर छाती और पसलियोंपर लेप करें और बनफशा खितमी और नीलोफर औटाकर भफारे में डालकर रोगीको उसमें बैठावें और खान को तरबूज और पके हुए कद्दूका पानी जुलाबके साथ और मीठे अनारका पानी बादाम के तेलके साथ और ईसबगोल का लुआब जुलाबके साथ और अध भुना हुआ मुर्गीका अण्डा और पालकका पानी या शीआ और छिले हुए मूंगका औटा पानी बादामके तेलके साथ खाने पीने को देवें और श्वासके भेदोंमें से जिसका कारण गर्मीकी अधिकताहै उसके स्थानकी हवा को खुश्क और तर रखना चाहिये और उसका इलाजभी इसीतरहसे करना योग्यहै और दूसरे भेद जिसका कारण तरी और सर्दी और गाढा या पतला दोष होतो श्वासके तंग आने का इलाज करना चाहिये जैसा रोगी की प्रकृतिके योग्य हो और ठंडी प्रकृति वाले को आरम्भ में ताजे दूधके साथ बूरा देना लाभदायकहै और जो बादीका मवाद होतो आरम्भमें बूरा हरी सोंफके पानी में मिलाकर देना लाभदायकहै और जो छाती की पसलियों की निर्बलता इस रोग का कारण होतो नर्गिस और चमेली का तेल मले और जिस रोगी के पट्ठोंमें मवाद आगया होतो गोंद, सुमली, अफसंतीन, प्रत्येक १ भाग, कद्दू बादाम की मिंगी और बूरा प्रत्येक २ भाग, सबको महीन पीसकर और मिलाकर गोलियां बनालें और प्रतिदिन प्रातःकाल समय चार गोलियां खावें और उसके पीछे शहद की बनी हुई सिकंजबीन पीवें और लङ्घन करें इस रोगमें गुणकारकहै प्रगट हो कि इस रोग [सिहीक मुफरद] का कारण गर्मी खुश्की है सो जो चीज़ें तरी बढावेंगी वह इस रोगमें लाभदायक होंगी और सिवाय शामिलइस्तनाआमें लिखाहै कि इस प्रकारके रोगी को प्रतिदिन बनफशा दूधमें डालकर और मिसरी मिलाकर पिलावें और यह लेप इस रोग में बहुत लाभदायकहै [लेपके बनाने की विधि] मास्सी शीआ का छिल्का और बीजों समेत कद्दूके और ईसबगोलके लुआबमें सफेद चन्दन घिसकर और महीन पीसकर इस कूटी हुई शीआमें मिलाकर बनावें [फीरनीके बनाने की विधि] सूखे भुने हुए मांस को शीआ के रसमें भिगोवें फिर औटाकर पानी और

चौदह भेद लिखते हैं और तेरह ही भेदका वर्णन करतेहैं और किसीर पुस्तक में यहां पर चौदह को तेरह के अर्थ में लिखते हैं परन्तु दोनों दशाओं में दूसरे भेद को दो बार लिखते हैं यद्यपि जन्म से उत्पन्न होने वाले स्वास रोग को मिला कर चौदह ही होते हैं पहला भेद यह है कि जन्म से हो और यह इस प्रकार का है कि जन्म से ही छाती छोटी हो इस कारण से स्वास लेनेके अंग चौड़े न होसकें और उसका उपाय नहीं हो सक्ता है दूसरा भेद यह है कि फेफड़े में गाढा कफ आजाय और फेफड़े के मुखको जिसे उरूक रवतना कहते हैं भरदेवे और उसमें भारापन उत्पन्न करै और कफका आना तीन प्रकार का होता है एक तो यह कि फेफड़ा भीतर के और भागों में से कफ को खींचले दूसरे यह कि कफ सिरकी तरफसे उतर आवे। तीसरे यह कि फेफड़ेमें उत्पन्न हो और इसका चिन्ह यह है कि छातीमें खरखराहट हो और रोगीको खांसी हो और उसमें तरी और कफ निकलता रहे और श्वास तंगी से मार और रोगी कुत्ते की तरह जीभ बाहर निकाले मुख्यकर जब गति करै तो उस दशा में स्वास का खिंचना और जीभ को मुख से बाहर निकालना जिसको अर्बीमें लहस कहते हैं विशेष होजाता है और जिस समय इस रोगमें गाढ़ा कफ खांसी में नहीं निकलता और इस रोग का जल्द उपाय नहीं किया जाता तो रोगी दो विपत्तियोंसे निडर नहीं रहसक्ता है एक तो सोते समय दम घुटजाय या लहमी इस्तस्क़ा अर्थात् मांस वाले जलन्धर में फसजाय [इलाज] दापक मुलायम करने के लिये जो चीजें मवाद के निकालने वाली और नर्म करने वाली हैं जैसे शर्वत जूफा, सिकनवीन और गर्म चटनी काम में लावें [शर्वत जूफा बनाने की विधि] सौंफ, अजमोद के बीज प्रत्येक १७॥ माशे, खुश्क जूफा २४॥ माशे, अंजीर २० दाने, मुनक्का दाने निकली हुई ३० दाने, उन्नाव, रिसौंडा प्रत्येक २०, मेथी १४ माशे, सितमी के बीज, नीले सोसन के बीज, दोनों १०॥ माशे, हंसराज २४॥ माशे, दो सेर पानी में औटावें जब एक सेर बाकी रहे तो उतारलें और छानकर सेर भर बूरा और आध सेर गुलकन्द शहरी पीसकर मिलालें फिर पकावें जब शर्बत का सा गाढ़ा होजाय तब उतार लें और आवश्यकता के समय काम में लावें और गर्म चटनी जिसका नुस्खा किताब अक़राबादीन में लिखा है इस रोग में बहुत लाभदायक है (उसकी विधि) दाने निकली मुनक्का, पीली अंजीर, मुलहटी, पापला के बीज, खतमी के बीज, नीठ मरुए के बीज की गिरी, हंसराज, सौंफ, सूखा जूफा, पाखान की

चौदह भेद लिखते हैं और तेरह ही भेदका वर्णन करतेहैं और किसीर पुस्तक में यहां पर चौदह को तेरह के अर्थमें लिखते हैं परन्तु दोनों दशाओं में इस भेद को दो बार लिखते हैं यद्यपि जन्म से उत्पन्न होने वाले स्वास रोग के मिला कर चौदह ही होते हैं पहला भेद वह है कि जन्म से हो और यह इस प्रकार का है कि जन्म से ही छाती छोटी हो इस कारण से स्वास लेनेके अंग चौड़े न होसकें और उसका उपाय नहीं हो सक्ता है दूसरा भेद यह है कि फेंफड़ में गाढा कफ आजाय और फेंफड़े के मुखको जिसे उरूक रायना कहते हैं भरदेवे और उसमें भारापन उत्पन्न करे और कफका आना तीन प्रकार का होता है एक तो यह कि फेंफड़ा भीतर के और अंगों में से कफ को खींचले दूसरे यह कि कफ सिरकी तरफसे उतर आवे। तीसरे यह कि फेंफड़ेमें उत्पन्न हो और इसका चिन्ह यह है कि छातीमें खरखराहट हो और रोगीको खांसी हो और उसमें तरी और कफ निकलता रहे और श्वास तंगी से आवे और रोगी कुत्ते की तरह जीभ बाहर निकाले मुख्यकर जब गति करे तो उस दशा में स्वास का खिंचना और जीभ को मुख से बाहर निकालना जिसको अर्बीमें लहस कहते हैं विशेष होजाता है और जिस समय इस रोगमें गाढ़ा कफ खांसी में नहीं निकलता और इस रोग का जल्द उपाय नहीं किया जाता तो रोगी दो विपत्तियोंसे निडर नहीं रहसक्ता है एक तो सोते समय दम घुटजाय या लहमी इस्तस्का अर्थात् मांस वाले जलन्धर में फसजाय [इलाज] दोषके मुलायम करने के लिये जो चीजें मवाद के निकालने वाली और नर्म करने वाली हैं जैसे शर्बत जूफा, सिकञ्जबीन और गर्म चटनी काम में लावें [शर्बत जूफा बनाने की विधि] सौंफ, अजमोद के बीज प्रत्येक १७॥ माशे, सूखा जूफा २४॥ माशे, अंजीर २० दाने, मुनक्का दाने निकली हुई २० दाने, उन्नाव, लिसौड़ा प्रत्येक २०, मेथी १४ माशे, खितमी के बीज, नीले सोसन के बीज, दोनों १०॥ माशे, हंसराज २४॥ माशे, दो सेर पानी में औटावे जब एक सेर बाकी रहे तो उतारलें और छानकर सेर भर बूरा और आध सेर गुलकन्द शहद पीसकर मिलाले फिर पकावें जब शर्बत सा गाढ़ा होजाय तब उतार लें और आवश्यकता के समय काम में लावें और गर्म चटनी जिसका नुसखा किराय अफाई में लिखा है इस रोग में बहुत लाभदायक है (उसकी विधि) दाने निकली मुनक्का, पीली अंजीर, मुलहटी, पापड़ा के बीज, खतमी के बीज, मीठे कद्दू के बीज की मिंगी, हंसराज, सौंफ, सूखा जूफा, पापड़ा की

दोनों को पीसकर बकरीके गुदे की चर्बी में मिलाकर टिकियां बनावें और जो आग पर रक्खें और मुख को उसकी भाफपर झुका रक्खे और जो समासूर्फा गैतपर उसका धूआ खींचे तो अति उत्तमहै और खटाइयों मेंसे सिर्का इस रोगमें देसकते हैं और इसी तरहसे सिकजबीन मुख्यकर जो शरीर में गर्मी उत्पन्नहो (बड़ेभारी लाभों का वर्णन) इनसे मवादके स्थानका निश्चय होजाय कि मवाद कहां २ है फिर जानलेना चाहिये कि छाती में बोझ का मालूमहोना मुख्य इस बात को बताताहै कि मवाद फेंफडे में है और सीने में जलन और चुभन इसबातको पूर्णरीतिसे निर्णय करताहै कि मवाद अजलों और झिल्लियोंमेंहै और तरी का सहज से निकल आना इस बात का चिन्ह है कि मवाद समीप है और फेंफडे के मुख में है और रतूबतका कठिनता से निकलना और बडी खांसी से निकलना यह बताता है कि मवाद फेंफडे की गहराई में और उसके रोमाञ्चों में है और जो उसके मांसके छेदों में हो तो केवल खांसी में उमसे देरलगे और इस बातको निर्णय कराताहै कि मवाद हिजाब दया फर्गमा में है (यह पर्दा जो दिल और आमाशय के मध्यमें है और जिसका दूसरा नाम हिजाब मुस्त आरज है) कोई २ हकीम कहते हैं कि वह पर्दा कि जिगर और आमाशय के मध्य में है परन्तु यह पिछली कहावत ठीक नहीं है और उसका वर्णन जातुल जन्ब (पसली की सूजन में किया जायगा और गालों में लाली का होना यह बताता है कि मवाद फेंफडे में है और जिस मनुष्य की छाती के छेदों मे मवाद उतरगया हो तो जब एक करवट से दूसरी करवट लेता है तो वह मवाद इस तरफ से उस तरफ में गिरता है और रोगी को उस तरफ में मवाद के गिरने का हाल मालूम होजाता है और खांसी बहुत कम होती है परन्तु देरमें जाती है और ऐसा भी होता है कि दमा फेंफडे की सूजन से बढ़जाता क्योंकि फेंफडे का मांस बहुत नर्म है और जानना चाहिये कि बहुधा ऐसा होता है कि फेंफडे की प्रकृति असलमें जैसा उसके योग्य है उससे विशेष गर्म या विशेष ठंडा या बहुत तर या बहुत खुश्क उत्पन्न हो और बहुधा ऐसा होता है कि स्वाभाविक प्राकृतिक हो परन्तु किसी कारण से अपनी असलीदशासे बदलजाय और ऊपरी प्रकृति उत्पन्नहो या जो जितनीमें उससे विशेष गर्महो या बहुत ठंढी या बहुततर या विशेष खुश्क होजाय और असली प्रकृति और ऊपरी प्रकृति में अन्तर यह है कि असली प्रकृति का [illegible] होताहै जैसा स्वाभाविक प्रकृतिसे सर्वदा प्रगट होताहै और ऊपरी

दोनों को पीसकर बकरीके गुदे की चर्बी में मिलाकर टिकियां बनावें और जो आग पर रक्खें और मुख को उसकी भाफपर झुका रक्खे और जो समासूफी गितपर उसका धुआं खींचे तो अति उत्तमहै और खटाइयों मेंसे सिर्का इस रोगमें देसकते हैं और इसी तरहसे सिकजबीन मुख्यकर जो शरीर में गर्मी उत्पन्नहो (बड़ेभारी लाभों का वर्णन) इनसे मवादके स्थानका निश्चय होजाय कि मवाद कहां २ है फिर जानलेना चाहिये कि छाती में बोझ का मालूमहोना मुख्य इस बात को बताताहै कि मवाद फेंफड़े में है और सीने में जलन और चुभन इसबातको पूर्णरीतिसे निर्णय करताहै कि मवाद अजलों और झिल्लियोंमेंहै और तरी का सहज से निकल आना इस बात का चिन्ह है कि मवाद समीप है और फेंफड़े के मुख में है और रतूबतका कठिनता से निकलना और कड़ी खांसी से निकलना यह बताता है कि मवाद फेंफड़े की गहराई में और उसके रोमाञ्चों में है और जो उसके मांसके छेदों में हो तो केवल खांसी में उसको देरलगे और इस बातको निर्णय कराताहै कि मवाद हिजाब दया फर्गमा में है (यह पर्दा जो दिल और आमाशय के मध्यमें है और जिसका दूसरा नाम हिजाब मुस्त आरज है) कोई २ हकीम कहते हैं कि यह पर्दा कि जिगर और आमाशय के मध्य में है परन्तु यह पिछली कहावत ठीक नहीं है और उसका वर्णन जातुल जन्ब (पसली की सूजन में किया जायगा और गालों में लाली का होना यह बताता है कि मवाद फेंफड़े में है और जिस मनुष्य की छाती के छेदों में मवाद उतरगया हो तो जब एक करवट से दूसरी करवट लेता है तो वह मवाद इस तरफ से उस तरफ में गिरता है और रोगी को उस तरफ में मवाद के गिरने का हाल मालूम होजाता है और खांसी बहुत कम होती है परन्तु देरमें जाती है और ऐसा भी होता है कि दमा फेंफड़े की सूजन से बढ़जाता क्योंकि फेंफड़े का मांस बहुत नर्म है और जानना चाहिये कि बहुधा ऐसा होता है कि फेंफड़े की प्रकृति असलमें जैसा उसके योग्य है उससे विशेष गर्म या विशेष ठंढा या बहुत तर या बहुत खुश्क उत्पन्न हो और बहुधा ऐसा होता है कि स्वाभाविक प्राकृतिक हो परन्तु किसी कारण से अपनी असलीदशासे बदलजाय और ऊपरी प्रकृति उत्पन्नहोगा तो जितनीमें उससे विशेष गर्महो या बहुत ठंढी या बहुततर या विशेष खुश्क होजाय और असली प्रकृति और ऊपरी प्रकृति में अन्तर यह है कि असली प्रकृति का चिन्ह ऐसा होताहै जैसा स्वाभाविक प्रकृतिसे सर्वदा प्रगट होताहै और ऊपरी

उपाय काम में लावे। तीसरा भेद वह है कि फेंफड़े और छाती दिलकी भाफ के परमाणुओं से भर जांय और वे भाफ के परमाणु इन भागों में बट होजाय और इन भाफ के परमाणुओं की अधिकता से हवा के मार्ग छोटे हो जांय और श्वास में तंगी आजाय और उसका चिन्ह यह है कि नाड़ी बड़ी और लगातार चले और प्यास की अधिकता और ठंडे पानी से अच्छी तरह सन्तुष्ट न हो और इस रोग का चिन्ह यह है कि श्वास लगातार आवे और पागलपन, छाती में जलन, हलक और जीभ में खुश्की, मुख का स्वाद नमकीन और कड़वा और सिर्र बहुत हो और रोगी को ठंडी हवा से लाभ और गर्म हवा से हानि हो [इलाज] बायें हाथ की बासलीक की फस्द खोलें और दिल की गर्मी को ठहरावें और इस काम में ईसबगोल का लुआब, शर्बत बनफशा, शर्बत नीलोफर में मिलाकर और जौ का पानी, सेब का शर्बत, चंदन का शर्बत, मेवाओं का शर्बत और सतोष दायक ठंडी चीजें और जो कुछ दिल की गर्म दुष्ट प्रकृति में वर्णन किया जायगा वह सब लाभदायक है और हाथ पांव का मलना और ठंडे पानी में रखना लाभदायक है। किताब दस्तूर उल इलाज में लिखा है कि फस्द खोलने के पीछे जो कोई काम वर्जित न हो तो पछने लगावें और गर्मी के दबाने के लिये सबका शर्बत और चन्दन या खुर्फा के बीज का शीरा और कद्दू का पानी और बिहीदाने का लुआब और मीठे अनार का शर्बत पीना और गुलाब, चन्दन और कपूर का छाती पर लेप करना और सूंघना लाभदायक है। चौथा भेद यह है कि फेंफड़े की गर्म दुष्ट प्रकृति विशेष होकर दमे का कारण हो। [इलाज] प्रकृति के सम्भालने के लिये ठंडी दवा पीने की रीति पर और लेप की विधि पर काम में लावें। पांचवा भेद यह है कि छाती का अवयव ढीला होजाय और खुल न सके और ऐसे ही उस प्राकृतिक गर्मी में निर्बलता आजाय जो कारणकी शक्ति में गति के लिये प्रधान है और उसका चिन्ह श्वास का फूलना, रुक रुक कर आना और नाड़ी की नर्मी है [इलाज] मेथी का काढ़ा शहद में मिलाकर ठंडा कर पीवें और सौसन का तेल, नरगिस का तेल, बकायन का तेल, जावीर मर्वे और कलौंजी गंदीन पीस कर शहद में और सोये के तेल में मिलाकर लेप करें और जो कुछ फालिज [अंग का लकवाई से आधा रह जाना] में वर्णन किया गया है काम में लावें। छठा भेद यह है कि फेंफड़े में खुश्की उत्पन्न हो इस प्रकार से कि प्रधान नाड़ियों के नष्ट हो जाने से सुकड़ जाय और गा

उपाय काम में लावे। तीसरा भेद यह है कि फॅफड़े और छाती दिलकी भाफ के परमाणुओं से भर जांय और ये भाफ के परमाणु इन भागों में घट होजाय और इन भाफ के परमाणुओं की अधिकता से हवा के मार्ग छोटे हो जांय और श्वास में तगी आजाय और उसका चिन्ह यह है कि नाड़ी बड़ी और लगातार चले और प्यास की अधिकता और ठंडे पानी से अच्छी तरह सन्तुष्ट न हो और इस रोग का चिन्ह यह है कि श्वास लगातार आवे और पागलपन, छाती में जलन, हलक और जीभ में खुश्की, मुख का स्वाद नमकीन और कड़वा और सिर्र बहुत हो और रोगी को ठंडी हवा से लाभ और गर्म हवा से हानि हो [इलाज] बाये हाथ की बासलीक की फस्द खोलें और दिल की गर्मी को ठहरावें और इस काम में ईसबगोल का लुआब, शर्बत बनफशा, शर्बत नीलोफर में मिलाकर और जौ का पानी, सेब का शर्बत, नदन का शर्बत, मेवाओं का शर्बत और सतोष दायक ठंडी चीजें और जो कुछ दिल की गर्म दुष्ट प्रकृति में वर्णन किया जायगा वह सब लाभदायक है और हाथ पांव का मलना और ठंडे पानी में रखना लाभदायक है। किताब दस्तूर उल इलाज में लिखा है कि फस्द खोलने के पीछे जो कोई काम वर्जित न हो तो पछने लगावें और गर्मी के दबाने के लिये सवका शर्बत और चन्दन या खुर्फा के बीज का शीरा और कद्दू का पानी और बिहीदाने का लुआब और मीठे अनार का शर्बत पीना और गुलाब, चन्दन और कपूर का छाती पर लेप करना और सूंघना लाभदायक है। चौथा भेद यह है कि फॅफड़े की गर्म दुष्ट प्रकृति विशेष होकर दमे का कारण हो। [इलाज] प्रकृति के सम्भालने के लिये ठंडी दवा पीने की रीति पर और लेप की विधि पर काम में लावें। पांचवां भेद यह है कि छाती का अवयव ढीला होजाय और खुल न सके और ऐसे ही उस प्राकृतिक गर्मी में निर्बलता आजाय जो कारणकी शक्ति में गति के लिये प्रधान है और उसका चिन्ह श्वास का फूलना, कम रुक कर आना और नाड़ी की नर्मी है [इलाज] मेथी का काढ़ा शहद में मिलाकर ठंडा कर पीवें और सोसन का तेल, नरगिस का तेल, अकाकस का तेल, जावित्री और कलौंजी महीन पीस कर शहद में और सोये के तेल में मिलाकर लेप करें और जो कुछ फालिज [अंग का लकवा से मारा रह जाना] में वर्णन किया गया है काम में लावें। छठा भेद यह है कि फॅफड़े में खुश्की उत्पन्न हो इस कारण से कि प्रधान नाड़ियों के नष्ट हो जाने से खुश्क ताप और गर

लिखा था(अमरुसिआ माजूमके बनानेकी विधि)जगली गाजरके बीज अजर्खर, विलसां, किरोमाना (पहाडी किरवियां) सेव, अजमोद के बीज प्रत्येक ३॥ माशे कालीमिर्च, सफेदमिर्च, कडवी कुटकी प्रत्येक आधा भाग, मुर्र, साफी १०॥ माशे इन्बुलगार दो दाने और तुर्कीकेसर प्रत्येक ७ माशे सबको महीन पीसकर छानले और झागदार शहद में मिलाकर दो महीने पीछे ७ माशे काममें लावें और वह गोलियां योग्य हैं जो सुकबीनज और जावशीर से बनाई जाती हैं मुख्यकर जब सुकबीनज को तर तुतली के पानी में मिलाया हो [जावशीर की गोली बनाने की विधि] जावशीर १॥ माशे लेकर सौंफ के पानी में डालदें और १॥ माशे इन्द्रायन का गूदा उसमें मिलावें और शहद के पानी के साथ खवावें और जानना चाहिये कि दूसरी प्रकार के रोग में और इसरोग में जावशीर बहुत लाभदायक है परन्तु पट्ठों को हानि पहुचाताहै उचित है कि जिससमय उसको खाय तो गर्म और सुगन्धित तेल शरीर पर मले जिससे उसकी भाफ के परमाणु पट्ठों में न जासकें और पट्ठों का उसकी हानि का भय न रहे। नवा भेद वह है कि बहुतसा मवाद छाती के छेद में गिरे और उसका चिन्ह दूसरे भेद के लाभों में वर्णन किया गयाहै और इसका इलाज वही है जो जलन्धर का है दशवां भेद वह है कि तेज रोगों में बोहरान के समीप प्रगट हो और मुख्यकर इसका इलाज न करना चाहिये क्योंकि उसी रोग का इलाज लाभदायक है। ग्यारहवां भेद वह है कि फेंफड़े में या दूसरे अगों में जो उसके समीप हैं सूजन उत्पन्न हो जैसे हिजाव हाजिज में हिजाव मुन्सिफ में और हिजाव मुस्तवतन इजला में पसलियों में और जिगरों और तिल्ली में। उसका यह कारण है कि खुलने की गति की जगह तंग होती है और छाती के तंग होने का यही अर्थ है और इस रोग का चिन्ह और इलाज अपनी २ जगह वर्णन किये गये हैं। किताब जुखीरा वाले ने लिखा है जो दमा कि जिगर की सूजन के कारण से उत्पन्न हो तो उसके इलाज में पहले वासलीक वा अकहल की फस्द खोले फिर हरी वारतंग का पानी, कासनज का नितरा पानी, लौकी का पानी, खीरे का पानी, कसूम का नितरा पानी, सिकजवीन में मिलाकर दे और जिगर बलावान हो तो उस दवा में रेवन्दचीनी मिलावे और जो दमा तिल्ली की सूजन के कारण से हो तो बांये हाथ की अनामिका और कनिष्ठका उगली के बीच की फस्द खोले और गावजबां के अर्क में और जगली प्याज [illegible] मिला

लिखा था(अमरुसिआ माजूमके बनानेकी विधि)जगली गाजरके बीज अजर्खर, बिलसां, फिरोमाना (पहाडी किरवियां) सेब, अजमोद के बीज प्रत्येक ३॥ माशे कालीमिर्चे, सफेदमिर्चे, कड़वी कुटकी प्रत्येक आधा भाग, मुर्र, साफी १०॥ माशे हब्बुलगार दो दाने और तुर्कीकेसर प्रत्येक ७ माशे सबको महीन पीसकर छानले और झागदार शहद में मिलाकर दो महीने पीछे ७ माशे काममें लावें और वह गोलियां योग्य हैं जो सुकबीनज और जावशीर से बनाई जाती हैं मुख्यकर जब सुकबीनज को तर तुलली के पानी में मिलाया हो [जावशीर की गोली बनाने की विधि] जावशीर १॥ माशे लेकर सौंफ के पानी में डालदें और १॥ माशे इन्द्रायन का गूदा उसमें मिलावें और शहद के पानी के साथ खवावें और जानना चाहिये कि दूसरी प्रकार के रोग में और इसरोग में जावशीर बहुत लाभदायक है परन्तु पट्ठों को हानि पहुचाताहै उचित है कि जिससमय उसको खाय तो गर्म और सुगन्धित तेल शरीर पर मले जिससे उसकी भाफ के परमाणु पट्ठों में न जासकें और पट्ठों को उसकी हानि का भय न रहे । नवा भेद वह है कि बहुतसा मवाद छाती के छेद में गिरे और उसका चिन्ह दूसरे भेद के लाभों में वर्णन किया गयाहै और इसका इलाज वही है जो जलन्धर का है दशवां भेद वह है कि तेज रोगों में बोहरान के समीप प्रगट हो और मुख्यकर इसका इलाज न करना चाहिये क्योंकि उसी रोग का इलाज लाभदायक है । ग्यारहवां भेद वह है कि फेंफड़े में या दूसरे अगों में जो उसके समीप हैं सूजन उत्पन्न हो जैसे हिजाव हाजिज में हिजाव मुन्सिफ में और हिजाव मुस्तवतन इजला में पसलियों में और जिगर और तिल्ली में । उसका यह कारण है कि खुलने की गति की जगह तंग होती है और छाती के तंग होने का यही अर्थ है और इस रोग का चिन्ह और इलाज अपनी २ जगह वर्णन किये गये हैं । किताब जखीरा वाले ने लिखा है जो दमा कि जिगर की सूजन के कारण से उत्पन्न हो तो उसके इलाज में पहले बासलीक वा अकहल की फस्द खोले फिर हरी बारतंग का पानी, कासनज का नितरा पानी, लौकी का पानी, खीरे का पानी, कसूम का नितरा पानी, सिकजबीन में मिलाकर दे और जिगर बलावान हो तो उस दवा में रेवन्दचीनी मिलावें और जो दमा तिल्ली की सूजन के कारण से हो तो बांये हाथ की अनामिका और कनिष्ठका उगली के बीच की फस्द खोले और [illegible] के अर्क में और जगली प्याज [illegible] मिला

हो और उसका चिन्ह और इलाज कारण के अनुसार दमे के प्रकरण से मालूम करसकते हैं और यह रोग दमे के भेदोंमें से है और हमने इस लिये उसको अलग वर्णन किया है जिससे लाभ वद्दजांय [सूजन] यह विरुद्धता जो हकीमों की सम्मति में पड़ी है कि दमा और जीकुलनफस [श्वासका तंगआना] का एक अर्थ बताते हैं या उनका अर्थ अलग २ है सो दमा के प्रकरण के आरम्भ में इस पर संकेत किया गया है अब इस जगह हम विरुद्धता के प्रमाण को कुछ थोड़ा २ प्रगट करते हैं जानना चाहिये कि शब्दका झगड़ा है और परिणाम में एकही अर्थ है परन्तु जो लोग इन दोनों में अन्तर बताते हैं उनका मततो यह है कि जिस श्वास के कठिन से आने में श्वासके आनेके मार्ग तंगहोजांय हम उसको जियंक कहते हैं और इस दशा में जो हवा नाक में जाती है ता मार्ग नहीं पाती है परन्तु थोड़ासा और योग्य है कि जैसे दमा की हमने ऊपर प्रशंसा की है उसके साथ तंगी न हो और ऐसा भी होसक्ता है कि तंगी हो और दमा न हो जैसा कि किसी २ श्वास के रुकने में देखा जाता है परन्तु जो लोग एकही अर्थ इस विचार से जानते हैं कि यह रोग फेंफड़े के साथ मुख्य किया गया है तो वे कारण के पूर्ण होने का विचार नहीं करते हैं और इस कारणसे इसका परिणाम एकहीहै तो एक को दूसरे से जुदा नहीं जानतेहैं और जैयक उस्सद्र का यह अर्थ है कि चौड़े होने वाले अंग जो श्वास लेने के लिये मुख्य हैं जैसा चाहैं गति न करसकें अर्थात् चौड़े न होसकें ।

पाचवा प्रकरण

सुआल (खांसी) का वर्णन

जानना चाहिये कि सूफी [खांसी] फेंफड़े की गति और उन अंगों की गति है जो श्वास लेने में उसके साथी है जैसे फेंफड़े का मुख और हिजाब हाजिज और हिजाबमुन्सिफ और हिजाब मुस्तबतिनउल जला और छाती के और पसलियों के अजले [मछलियां] और यह गति अप्राकृतिक है कि तबियत उसके द्वारा चिन्ता को इन अंगों से दूर करती है और खांसी फेंफड़े के लिये ऐसी चीज है जैसे दिमाग के लिये छींक। और जानना चाहिये कि खांसी के पूरे कारण चार प्रकार के हैं पहला कारण तो दुष्ट प्रकृति के भेदों में से है चाहैं बिना मवाद के हो चाहै मवाद सहित हो। दूसरा कारण यहहै कि सूजनके भेद घाव और फुन्सियां फेंफड़ेमें उत्पन्न हो। तीसरा कारण यह है कि कोई

हो और उसका चिन्ह और इलाज कारण के अनुसार दमे के प्रकरण से मालूम करसकते हैं और यह रोग दमे के भेदोंमें से है और हमने इस लिये उसको अलग वर्णन किया है जिससे लाभ वद्‌र्जाय [सूजन] यह विरुद्धता जो हकीमों की सम्मति में पड़ी है कि दमा और जीकुलनफस [श्वासका तंगआना], का एक अर्थ बताते हैं या उनका अर्थ अलग २ है सो दमा के प्रकरण के आरम्भ में इस पर संकेत किया गया है अब इस जगह हम विरुद्धता के प्रमाण को कुछ थोड़ा २ प्रगट करते हैं जानना चाहिये कि शब्दका झगड़ा है और परिणाम में एकही अर्थ है परन्तु जो लोग इन दोनों में अन्तर बताते हैं उनका मतलो यह है कि जिस श्वास के कठिन से आने में श्वासके आनेके मार्ग तंगहोजांय हम उसको जियक कहते हैं और इस दशा में जो हवा नाक में जाती है ता मार्ग नहीं पाती है परन्तु थोड़ासा और योग्य है कि जैसे दमा की हमने ऊपर प्रशंसा की है उसके साथ तंगी न हो और ऐसा भी होसक्ता है कि तंगी हो और दमा न हो जैसा कि किसी २ श्वास के रुकने में देखा जाता है परन्तु जो लोग, एकही अर्थ इस विचार से जानते हैं कि यह रोग फेफड़े के साथ मुख्य किया गया है तो वे कारण के पूर्ण होने का विचार नहीं करते हैं और इस कारणसे इसका परिणाम एकहीहै तो एक को दूसरे से जुदा नहीं जानतेहैं और जैयक उस्सद्र का यह अर्थ है कि चौड़े होने वाले अंग जो श्वास लेने के लिये मुख्य हैं जैसा चाहैं गति न करसकें अर्थात् चौड़े न होसकें।

पांचवां प्रकरण

सुआल (खांसी) का वर्णन

जानना चाहिये कि सूफी [खांसी] फेफड़े की गति और उन अंगों की गति है जो श्वास लेने में उसके साथी हैं जैसे फेफड़े का मुख और हिजाब हाजिज और हिजाबमुन्सिफ और हिजाब मुस्तबातिनउल जला और छाती के और पसलियों के अजले [मछलियां] और यह गति अप्राकृतिक है कि सचियत उसके द्वारा चिन्ता को इन अंगों से दूर करती है और खांसी फेफड़े के लिये ऐसी चीज है जैसे दिमाग के लिये छींक। और जानना चाहिये कि खांसी के पूरे कारण चार प्रकार के हैं पहला कारण तो दुष्ट प्रकृति के भेदों में से है चाहैं बिना मवाद के हो चाहै मवाद सहित हो। दूसरा कारण यहहै कि सूजनकभेद घाव और फुन्सियां फेफड़ेमें उत्पन्न हो। तीसरा कारण यह है कि कोई

संतुष्ट करने के लिये जो दवा या भोजन ठंढ पहुंचावे जैसा कि ईसबगोल का लुआब और जौका पानी और खमीरा बनफशा और उनके समान काम में लावें और उचित चटनियों को चाटे और चंदन, कपूर, घीया का छिलका, हरे धनिये के पानी में और काहू के पानी में और गुलाब में मिलाकर लेप करें और कीरूती, अखजर (यह संयोगिक नुसखा है) मलें ऐसी चटनी के बनाने की विधि, जो इस काममें आती है उन्नाव लिसोढा और खितमी के बीज लेकर औटावें जब आधा रहजाय तो छानकर और कंद मिलाकर गाढा करले और लम्बी घीया के बीज की मिंगी, मीठे बादाम की मिंगी, बनफशा और कतीरा महीन पीस कर उसमें मिलावें [कीरूती के बनाने की विधि] सफेद मोम लेकर बनफशा के तेल में उसी तरह के तेल में पिघलावें और काहू का पानी या हरे धनिये का पानी और हरी चीजों का पानी जैसा उचित हो और जो कुछ मिलजाय उसमें मिलाकर हाथ से मलें और हरी चीजों के पानी में घोने के कारण से उसका नाम कीरूती अखजर रक्खा गया है। दूसरा भेद यह है कि पित्त वाला खून फेंफड़े में आजाय और फेंफडा इस से भरजाय और इस कारण से पित्त वाला खून उस समय खिचावट और जलन उत्पन्न करता हैं तो तबियत उसके कष्टके दूर करने के लिये खांसी लाती है और उसका चिन्ह यह है कि श्वास बड़ा और गर्म हो मुखपर लाली प्रगट हो दूसरे चिन्ह और कारण उसके साक्षी हों और बहुधा इस प्रकारके रोगमेंथूक नहीं आता क्योंकि उसमें मवाद पतला होताहै परन्तु कभी ऐसा होता है कि पित्त हो या कफ़ी खांसी तो कुछ थोड़ा सा खांसी में आवे (इलाज] बासलीक की फस्द खोलें और काढ़े और खेसांदे जैसे उचित हों उनसे तबियत को नर्म करें और समानता और संतुष्टता के लिये जो कुछ बिना मवाद की खांसी में वर्णन होचुका है वही इस रोग में भी काम में लावें और जो जिगर में गर्मी होतो जिगर की प्रकृति को संतुष्टकरें जिससे जो खून फेंफड़े को पुष्ट करता है वह सुधरजाय। नीचे लिखाहुआ काढ़ा इस रोगमें लाभदायक है। उन्नाव, लिहसोढा, गावजवां, बनफशा, खित मी के बीज पीली अजीर पानी में औटाकर छानकर शर्बत बनफशा या श र्बत तुरजबीन मिलाकर पीवें।

तुरंजबीन के शर्बत बनानेकी विधि।

बनफशा१तोले, उन्नाब २० दाने, सनायमकी ६ माशे, खितमी ९ माशे पानी में औटाकर छानलें आधपाव तुरजबीन मिलावें।

सतुष्ट करने के लिये जो दवा या भोजन ठंढ पहुंचावे जैसा कि ईसबगोल का लुआब और जौका पानी और खमीरा बनफशा और उनके समान काम में लावें और उचित चटनियों को चाटे और चंदन, कपूर, घीया का छिलका, हरे धनिये के पानी में और काहू के पानी में और गुलाब में मिलाकर लेप करें और कीरूती, अखजर (यह संयोगिक नुसखा है) मलें ऐसी चटनी के बनाने की विधि, जो इस काममें आती है उन्नाव लिसोढा और खितमी के बीज लेकर औटावें जब आधा रहजाय तो छानकर और कंद मिलाकर गाढा करले और लम्बी घीया के बीज की मिंगी, मीठे बादाम की मिंगी, बनफशा और कतीरा महीन पीस कर उसमें मिलावें [कीरूती के बनाने की विधि] सफेद मोम लेकर बनफशा के तेल में उसी तरह के तेल में पिघलावें और काहू का पानी या हरे धनिये का पानी और हरी चीजों का पानी जैसा उचित हो और जो कुछ मिलजाय उसमें मिलाकर हाथ से मलें और हरी चीजों के पानी में धोने के कारण से उसका नाम कीरूती अखजर रक्खा गया है। दूसरा भेद वह है कि पित्त वाला खून फेंफड़े में आजाय और फेंफडा इस से भरजाय और इस कारण से पित्त वाला खून उस समय खिचावट और जलन उत्पन्न करता हैं तो तबियत उसके कष्टके दूर करने के लिये खांसी लाती है और उसका चिन्ह यह है कि श्वास बड़ा और गर्म हो मुखपर लाली प्रगट हो दूसरे चिन्ह और कारण उसके साक्षी हों और बहुधा इस प्रकारके रोगमेंथूक नहीं आता क्योंकि उसमें मवाद पतला होताहै परन्तु कभी ऐसा होता है कि पित्त हो या कड़ी खासी तो कुछ थोडा सा खांसी में आवै (इलाज] बासलीक की फस्द खोलें और काढ़े और टेसाढे जैसे उचित हों उनसे तबियत को नर्म करें और समानता और संतुष्टता के लिये जो कुछ बिना मवाद की खांसी में वर्णन होचुका है वही इस रोग में भी काम में लावें और जो जिगर में गर्मी हो तो जिगर की प्रकृति को संतुष्टकरें जिससे जो खून फेंफडे को पुष्ट करता है वह सुधरजाय। नीचे लिखाहुआ काढ़ा इस रोगमें लाभदायक है। उन्नाब, लिहसोढा, गावजवां, बनफशा, खित मी के बीज पीली अजीर पानी में औटाकर छानकर शर्बत बनफशा या श र्बत तुरजबीन मिलाकर पीवें।

तुरंजबीन के शर्बत बनानेकी विधि।

बनफशा१तोले, उन्नाब २० दाने, सनायमकी ६ माशे, खितमी ९ माशे पानी में औटाकर छानलें आधपाव तुरजबीन मिलावें।

रोकदे (इलाज) नजलें को रोकने के लिये खशखाश का शर्बत पिलावें और खशखाश की छाल और भांगके बीज वाकला का गूदा और अधीरा के पत्ते और काहूके बीज गुलाब के फूल पानी में औटाकर उससे कुल्ले करावें और क्योंकि मवाद भीतरसे बाहरकी तरफ उलट आताहै और इसकारण से फेंफड़े की तरफ न उतरै तो सिर मुड़ाकर खुरखुरे रूमाल से सिरको कठोरता के साथमले यहांतक कि सिरकी खाल लालहोजाय और जो इसउपाय से लाभ नहो तो राई अजीर के काढे में मिलाकर सिरपर लगावें और देरतकलगी रहनेदें जिससे सिरकीखाल में फुन्सियां उत्पन्न होजांय फिरउन फुन्सियों को बहुत दिनों तक अच्छा न होने दें जिससे मवाद इस तरफ निकलता रहै और फेंफड़े पर न गिरने पावै और इसी तरह मवाद को गाढा करने के लिये खांसी की गोली मुखमें रक्खें जिससे मवाद फेंफड़े की तरफ उतरसके ।

खांसीकी गोली बनाने की विधि ।

नशास्ता, कतीरा, मीठे बादाम की मिंगी छिली हुई बाकला, खशखाश के बीज और छाल, समग अरबी [गोंद] गिले इरमनी सब बराबर लेकर महीन पीसलें और ईसब गोलके लुआबमें गोलियां बनालें और सदा मुखमें रक्खें और उसका लुआब निगलें और चाहिये कि बादाम के भीतरका छिल्का जो बारीक और लाल है उसे अलग करके सेवन करें और दूसरे उपाय नजले और जुखाम के अनुसार करें जैसे फस्द का खोलना और तबियत का मुलायम करना और उसके सिवाय जो कुछ उसदशा के योग्य हो और जो चीजें नजले को रोकती हैं उनमें से एक तो यहहै कि खशखाश मुगल्लिस [अंगूरका पानी तीन भाग और पानी एक भाग डालकर औटाया जाय यहांतक कि एक भाग जलजाय और दो भाग बचरहे] के साथ खवावें और गुलाब को नाकसे सुड़कलें और मोहनभोग बादामके तेल से बनाकर खाना और नातिफ [एक मोहनभोग] और फालूदा लाभदायक है और नेंद का तेल सिरपर मलना लाभदायक है फिर उसमें खशखाश छाल सहित पकालें ।

नेंदके तेल के बनाने की विधि ।

नेंदके पत्तों का पानी २ दोभाग तिल्ली का तेल १ भाग दोनों को मिला कर औटावें यहांतक कि तेल बचरहै । चौथा भेद यह है कि सादा ठंढी हुए

रोकदे (इलाज) नजलें को रोकने के लिये खशखाश का शर्वत पिावें और खशखाश की छाल और भांगके बीज बाकला का गूदा और अधीरा के पत्ते और काहूके बीज गुलाब के फूल पानी में औटाकर उससे कुल्ले करावें और क्योंकि मवाद भीतरसे बाहरकी तरफ उलट आताहै और इसकारण से फेंफड़े की तरफ न उतरे तो सिर मुड़ाकर खुरखुरे रूमाल से सिरको कठोरता के साथमले यहांतक कि सिरकी खाल लालहोजाय और जो इसउपाय से लाभ नहो तो राई अजीर के काढे में मिलाकर सिरपर लगावें और देरतकलगी रहनेदें जिससे सिरकीखाल में फुन्सिया उत्पन्न होजाय फिरउन फुन्सियों को बहुत दिनों तक अच्छा न होने दें जिससे मवाद इस तरफ निकलता रहै और फेंफड़े पर न गिरने पावै और इसी तरह मवाद को गाढा करने के लिये खांसी की गोली मुखमें रक्खें जिससे मवाद फेंफड़े की तरफ उतरसके।

खांसीकी गोली बनाने की विधि।

नशास्ता, कतीरा, मीठे बादाम की मिंगी छिली हुई बाकला, खशखाश के बीज और छाल, समग अरबी [गोंद] गिले इरमनी सब बराबर लेकर महीन पीसलें और ईसब गोलके लुआबमें गोलियां बनालें और सदा मुखमें रक्खें और उसका लुआब निगलें और चाहिये कि बादाम के भीतरका छिल्का जो बारीक और लाल है उसे अलग करके सेवन करें और दूसरे उपाय नजले और जुखाम के अनुसार करें जैसे फस्द का खोलना और तबियत का मुलायम करना और उसके सिवाय जो कुछ उसदशा के योग्य हो और जो चीजें नजले को रोकती हैं उनमें से एक तो यहहै कि खशखाश मुगल्लिस [अंगूरका पानी तीन भाग और पानी एक भाग डालकर औटाया जाय यहांतक कि एक भाग जलजाय और दो भाग बचरहे] के साथ खावें और गुलाब को नाकसे सुड़कलें और मोहनभोग बादामके तेल से बनाकर खाना और नातिफ [एक मोहनभोग] और फालूदा लाभदायक है और बेद का तेल सिरपर मलना लाभदायक है फिर उसमें खशखाश छाल सहित पकालें।

बेदके तेल के बनाने की विधि।

बेदके पत्तों का पानी २ दोभाग निम्बी का तेल १ भाग दोनों को मिलाकर औटावें यहांतक कि तेल बचरहै। चौथा भेद यह है कि सादा ठंडी हुई

बीज लेकर औटावें और छानकर शहद में मिलाकर पीवे और जो छाती में गर्मी हो तो सौसन के बीज और लिसोढ़ा और जौ औटाकर और छान कर और तुरजबीन और बादाम का तेल मिलाकर पिवावें (छाती को मल रहित करने वाली माजून) यह गाढे मवाद को पकाती है । खुश्क ज़ूफा, पोदीना, सौसन की जड़, राई, क़िरोमाना (पहाडी किरबिया,) पीपल, अजरा (उटगन,) अनीसून इन सब को बराबर लेकर महीन पीसकर शहद में मिलाले (मवाद को निकालने वाली गोली) मुलहटी १७॥ माशे, पीपल १७॥ माशे, पहाडी किरबिया, मुर्र, कड़वे बादाम की मिंगी प्रत्येक ७ माशे, हींग ३॥ माशे, यह सब छ: दवा हैं शहद के पानी में मिलाकर गोलियां बनालें । अथवा मुलहटी, मिर्च, बूरा सब बराबर २ लेकर सौंफ के पानी में गोलिया बनावें और यह नुसखा जो वर्णन किया जाता है उस खांसी को लाभदायक है जो रात के समय आराम न लेनेदे यथा मुर्र, सिया, कुन्दरू गोंद, प्रत्येक बराबर २ अफीम ९ रत्ती, गोली बनालें प्रत्येक गोली तोल में छः रत्ती हो और रात के समय मुख में रक्खें [सूचना] कभी ऐसा होता है कि चेपदार तरी सिर की तरफ फेंफड़े पर सर्वदा गिरती रहती है और बीमार सिलवाले (फेंफड़ा दुबला होकर घाव होजाय) के समान होता है और जो अन्तर इन दोनों में है तो वह सिल [फेंफड़े का दुबला होना और घाव होना] के प्रकरण में वर्णन किया जायगा [सूचना] पका हुआ दोष उसको कहते हैं जो समान पतला और गाढा अर्थात् न विशेष पतला हो न विशेष गाढा हो परन्तु जो नीला, पीला, पिघले हुये सीसे कासा रंग और काला सड़ीला हो तो दुर्गन्धित का चिन्ह है, पकने का चिन्ह नहीं है । छटा भेद वह है कि फेंफड़े और छाती की तरी खांसी का कारण हो और यह बूढ़ों को और तर प्रकृति वालों को बहुधा उत्पन्न होती है और उसका यह चिन्ह है कि कफ बहुत निकले और गले में चिपट जाय और छाती में खरखराहट हो और मुख्यकर नींद में और जागने के पीछे हुआ करता है इलाज मवाद के पकाने के लिये सौंफ, अजमोद के बीज, मुलहटी, ख़ूराज़ूफा, और हंसराज का काढा बनाकर पीवें और मवाद के पकने के पीछे कफ के निकालने के लिये परिश्रम करें और यह इस प्रकार का होता है कि मूली के बीज और मुलहटी औटाकर और छानकर शहद में मिलाकर पीवें और वमन कर डालें और दस्तों के लिये दस्तावर द

बीज लेकर औटावें और छानकर शहद में मिलाकर पीवे और जो छाती में गर्मी हो तो सौसन के बीज और लिसोढ़ा और जौ औटाकर और छान कर और तुरजबीन और बादाम का तेल मिलाकर पिवावें (छाती को मल रहित करने वाली माजून) यह गाढे मवाद को पकाती है । खुश्क जूफा, पोदीना, सौसन की जड, राई, किरोमाना (पहाडी किरविया,) पीपल, अजरा (उटगन,) अनीसून इन सब को बराबर लेकर महीन पीसकर शहद में मिलाले (मवाद को निकालने वाली गोली] मुलहटी १७॥ माशे, पीपल १७॥ माशे, पहाडी किरविया, मुर्र, कडवे बादाम की मिंगी प्रत्येक ७ माशे, हींग ३॥ माशे, यह सब छ: दवा हैं शहद के पानी में मिलाकर गोलियां बनालें । अथवा मुलहटी, मिर्च, बूरा सब बराबर २ लेकर सौंफ के पानी में गोलिया बनावें और यह नुसखा जो वर्णन किया जाता है उस खांसी को लाभदायक है जो रात के समय आराम न लेनेदे यथा मुर्र, मिया, कुन्दरू गोंद, प्रत्येक बराबर २ अफीम ९ रत्ती, गोली बनालें प्रत्येक गोली तोल में छः रत्ती हो और रात के समय मुख में रक्खें [सूचना] कभी ऐसा होता है कि चेपदार तरी सिर की तरफ फेंफडे पर सर्वदा गिरती रहती है और बीमार सिलवाले (फेंफडा दुबला होकर घाव होजाय) के समान होता है और जो अन्तर इन दोनों में है तो वह सिल [फेंफडे का दुबला होना और घाव होना] के प्रकरण में वर्णन किया जायगा [सूचना] पका हुआ दोष उसको कहते हैं जो समान पतला और गाढा अर्थात् न विशेष पतला हो न विशेष गाढा हो परन्तु जो नीला, पीला, पिघले हुये सीसे कासा रंग और काला मटीला हो तो दुर्गन्धित का चिन्ह है, पकने का चिन्ह नहीं है । छटा भेद यह है कि फेंफडे और छाती की तरी खांसी का कारण हो और यह बूढों को और तर प्रकृति वालों को बहुधा उत्पन्न होती है और उसका यह चिन्ह है कि कफ बहुत निकले और गले में चिपट जाय और छाती में खरखराहट हो और मुख्यकर नींद में और जागने के पीछे हुआ करता है इलाज मवाद के पकाने के लिये सौंफ, अजमोद के बीज, मुलहटी, गूराजूफा, और हसराज का काढा बनाकर पीवें और मवाद के पकने के पीछे कफ के निकालने के लिये परिश्रम करें और यह इस प्रकार का होता है कि मूली के बीज और मुलहटी औटाकर और छानकर शहद में मिलाकर पीवें और वमन कर डालें और दस्तों के लिये दस्तावर द

पीने के पानी में बिही दाने का लुआब मिलावें और भोजनों में से जो चीज तरी बढाने वाली हों जैसे भुसी का हरीरा बादामका तेल और जौका दाना खाने वाली बकरी का दूध, मोटे मुर्ग का मास, बकरी के पाये फालूदा और कद्द के साथ और बादाम का तेल और खसखाश वा अन्य ऐसे द्रव्यों का सेवन करें और जो ज्वर हो तो दूध न पीना चाहिये और ज्वर न हो तो इस रोग में दूध का पीना बहुत अच्छा उपाय है और गुनगुने मीठे पानी से न्हाना और तरी पहुंचाने वाले भफारे में बैठना लाभदायक है। आठवां भेद वह है कि फेंफडे में धूल और धूआ से या जोर से चिल्लाने के कारण से खरखरापन हो [इलाज] चटनी खवावें और हरीरा पिवावें जिससे फेंफडे का खुरखुरापन और कडापन जाता रहे और नर्मी और सफाई प्राप्त हो और तरी बढाने वाली गोली मुख में रक्खें और तरी पहुंचाने वाले तेल घूट भरभर कर पीवैं गलेपर मलें और उन तेलों से टूडी और गुदा को चिकना रक्खें [चटनी के बनाने की विधि] बनफशा, कतीरा, ककडी के बीज की मिंगी, घीआ के बीज की मिंगी, सफेद खशखाश के बीज लेकर महीन पीसकर ईसबगोल और बिही दाने के लुआब में मिलावें और चाटे और जो बनफशा के तेल में बादाम और ऐसी ही अन्य वस्तु मिलादे तो अति उत्तम है [हरीरे के बनाने की विधि] छिले हुये जौ सफेद खशखाश लेकर पानी में पीसले और बूरा और बादाम का तेल मिलाकर हरीरा बनावें और जो कुछ सातवें भेद में वर्णन कियागया है यहां भी वही इलाज लाभदायक है। नवां भेद वह है कि फेंफडे वा छाती का घाव इनकी सूजन या छाती के पर्दों की सूजन और उस पर्दे की सूजन जो दिल और फेंफडे के मध्य में या जिगर और तिल्ली की सूजन या नर्खरेकी सूजन खांसी का कारणहो और इन सबका वर्णन नफस उद्दम (मुखमेंसे खून निकलना] और सिल [फेंफडेका दुबला होना और घाव का होजाना] और सीने की सूजन और फेंफडे की सूजन और पस ली की सूजन, बरसाम [उस झिल्ली की सूजन जो आमाशय और जिगर मध्य में है] और जिगर की सूजन और तिल्ली की सूजन में नर्खरे की सूजन का वर्णन गले की सूजन और श्वास में दिया गया है [सूचना] जिगर और दूसरे भीतरके अंगों इस प्रकार पर उत्पन्न होती है कि की तरफ में सूजन उत्पन्न हो और

पीने के पानी में विही दाने का लुआब मिलावें और भोजनों में से जो चीज तरी बढाने वाली हों जैसे मुर्गी का हरीरा बादामका तेल और जौका दाना खाने वाली बकरी का दूध, मोटे मुर्ग का मास, बकरी के पाये फालूदा और कद के साथ और बादाम का तेल और खसखास वा अन्य ऐसे द्रव्यों का सेवन करें और जो ज्वर हो तो दूध न पीना चाहिये और ज्वर न हो तो इस रोग में दूध का पीना बहुत अच्छा उपाय है और गुनगुने मीठे पानी से न्हाना और तरी पहुंचाने वाले भफारे में बैठना लाभदायक है। आठवां भेद वह है कि फेंफडे में धूल और धूआ से या जोर से चिल्लाने के कारण से खरखरापन हो [इलाज] चटनी खवावें और हरीरा पिलावें जिससे फेंफडे का खुरखुरापन और कडापन जाता रहे और नर्मी और सफाई प्राप्त हो और तरी बढाने वाली गोली मुख में रक्खें और तरी पहुंचाने वाले तेल घूट भरभर कर पीवैं गलेपर मलें और उन तेलों से ठूडी और गुदा को चिकना रक्खें [चटनी के बनाने की विधि] बनफशा, कतीरा, ककडी के बीज की मिंगी, खीआ के बीज की मिंगी, सफेद खशखाश के बीज लेकर महीन पीसकर ईसबगोल और विही दाने के लुआब में मिलावें और चाटे और जो बनफशा के तेल में बादाम और ऐसी ही अन्य वस्तु मिलादे तो अति उत्तम है [हरीरे के बनाने की विधि] छिले हुये जौ सफेद खशखाश लेकर पानी में पीसले और बूरा और बादाम का तेल मिलाकर हरीरा बनावें और जो कुछ सातवें भेद में वर्णन कियागया है यहां भी वही इलाज लाभदायक है। नवां भेद वह है कि फेंफडे वा छाती का घाव इनकी सूजन या छाती के पर्दों की सूजन और उस पर्दे की सूजन जो दिल और फेंफडे के मध्य में या जिगर और तिल्ली की सूजन या नर्खरेकी सूजन खांसी का कारणहो और इन सबका वर्णन नफस उद्दम (मुखमेंसे खून निकलना] और सिल [फेंफडेका दुबला होना और घाव का होजाना] और सीने की सूजन और फेंफडे की सूजन और पसली की सूजन, बरसाम [उस झिल्ली की सूजन जो आमाशय और जिगर मध्य में है] और जिगर की सूजन और तिल्ली की सूजन में नर्खरे की सूजन का वर्णन गले की सूजन और श्वास के दिया गया है [सूचना] जिगर और दूसरे भीतरके अंगों इस प्रकार पर उत्पन्न होती है कि की तरफ में सूजन उत्पन्न हो और

दिलमें पहुंचावें और भीतर की भाफ को बाहर निकालें और फेंफडे को फ्लि का पखा कहते हैं और खासी के कारण के तीन भेद हैं एक तो बादिया यह वह चीजें जो बाहरसे मनुष्यके शरीर पर गिरने वाली हों और विना द्वारा गुण करें। दूसरी वासला [वह चीजें जो शरीर में विना द्वारा असर करें] और तीसरी सावका (वह चीजें जो शरीर में मौजूद हों और द्वारा से गुण करें)

छटा प्रकरण

नफस्सुद्दम (मुखसे खून आने) का वर्णन ।

इसके सात भेद हैं पहला तो वह है कि मुख के भागों में से जैसे मसूडों में और दांतों की जडों में से खून निकले और उसका चिन्ह यह है कि थूकने में खून निकले (इलाज) मवाद के समेटने वाली चीजों से जैसे अधीग, अनार के फूल, माजू, फिटकिरी के काढे से कुल्ले करें और जो इन स्थानों में घाव ताजा हो तो कुन्दरू गोंद, दम्मुल अखवैन [हीरा दूखी गोंद] महीन पीस कर उसपर लगावें जिससे सूख जाय और खून का बहना बन्द होजाय दूसरा भेद यह है कि गले में जोक चिपट जाय और उसके कारण से थूक में खून आवे और जोक के चिपट आने का वर्णन ब्यौरेवार हो चुका है। तीसरा भेद वह है कि सिर में से खून उतर कर तालू और कौव्वे से निकले उसका चिन्ह यह है कि खकार के साथ खून निकले और नकसीर ये दूसरे चिन्ह जैसे मुख लाल होना और आखों के आगे चमक मालूम होना और थूकने के पीछे सिर में हल्कापन मालूम होना और उससे पहले सिर में बोझ होना प्रगट हो और खकारना उस प्रसिद्ध गति को कहते हैं कि जो चीज तालु में से सिर से उतर आती है उसके निकालने के लिये मुख्य है [इलाज] फाल की फस्द खोलें मनकों पर पछने लगवावें और झाऊ, माजू, उसारुल्हैयस्तुत्तीस और अधीरा के पत्ते के काढे से और रुबूब खान्ना से जैसे रुब्ब विही और कचा अगूर और जाअरूर [एक घास है] और गुलाब और इनके समान से कुल्ले करें और जो चीजें ठंडे दोषों के भागों को समेटने वाली नकसीर में वर्णन कीगई हैं उनको सिरके में मिलाकर माथे पर लेप करें और खून निकालने की उस समय आज्ञा है कि खून की अधिकता हो और मवाद के भरने के चिन्ह प्रगट हों और नहीं तो और उपाय [illegible] री हैं। चौथा भेद वह है कि फेंफडे के सिर और फेंफडे के [illegible] त्पन्न हो और उसके कारण से खून आवे और नकसीरा [illegible]

दिलमें पहुंचावें और भीतर की भाफ को बाहर निकालें और फेंफड़े को भिल का पखा कहते हैं और खासी के कारण के तीन भेद हैं एक तो बादिया यह वह चीजें जो बाहरसे मनुष्यके शरीर पर गिरने वाली हों और बिना द्वारा गुण करें। दूसरी वासला [वह चीजें जो शरीर में बिना द्वारा असर करें] और तीसरी सावका (वह चीजें जो शरीर में मौजूद हों और द्वारा से गुण करें)

छटा प्रकरण

नफस्सुद्दम (मुखसे खून आने) का वर्णन।

इसके सात भेद हैं पहला तो वह है कि मुख के भागों में से जैसे मसूड़ों में और दांतों की जड़ों में से खून निकले और उसका चिन्ह यह है कि थूकने में खून निकले (इलाज) मवाद के समेटने वाली चीजों से जैसे अधीरा, अनार के फूल, माजू, फिटकिरी के काढे से कुल्ले करें और जो इन स्थानों में घाव ताजा हो तो कुन्दरू गोंद, दम्मुल अखवैन [हींग दूखी गोंद] महीन पीस कर उसपर लगावें जिससे सूख जाय और खून का बहना बन्द हो जाय दूसरा भेद यह है कि गले में जोक चिपट जाय और उसके कारण से थूक में खून आवे और जोक के चिपट आने का वर्णन ब्योरेवार हो चुका है। तीसरा भेद वह है कि सिर में से खून उतर कर तालू और कौव्वे से निकले उसका चिन्ह यह है कि खकार के साथ खून निकले और नवसीर के दूसरे चिन्ह जैसे मुख लाल होना और आखों के आगे चमक मालूम होना और थूकने के पीछे सिर में हल्कापन मालूम होना और उससे पहले सिर में बोझ होना प्रगट हो और खकारना उस प्रसिद्ध गति को कहते हैं कि जो चीज तालु में से सिर से उतर आती है उसके निकालने के लिये मुख्य है [इलाज] काल्ल की फस्द खोलें मनकों पर पछने लगवावें और झाऊ, माजू, उसारेल्हैयत्तुत्तीस और अधीरा के पत्ते के काढे से और रुबूब खान्ना से जैसे रुब्ब बिही और कचा अंगूर और जाअरूर [एक घास है] और गुलाब और इनके समान से कुल्ले करें और जो चीजें ठंडे दोषों के भागों को समेटने वाली तासीर में वर्णन कीगई हैं उनको सिरके में मिलाकर माथे पर लेप करें और खून निकालने की उस समय आज्ञा है कि खून की अधिकता हो और मवाद के भरने के चिन्ह प्रगट हों और नहीं तो और उपाय [illegible] री हैं। चौथा भेद वह है कि फेंफड़े के सिर और फेंफड़े के [illegible] त्पन्न हो और उसके कारण से खून आवे और नर्लरा [illegible]

का मुख मूसे जाय या विशेष भर जाने से रगें फटजांय । पांचवें यह है कि ठंडी दुष्ट प्रकृति सुकोड़ने वाली फेंफड़े में उत्पन्न हो और उसके भागों को सुकोड़दे तो इस कारण से उसकी कोई रगें फटजांय और फेंफड़े में से खून आने का यह चिन्ह है कि बिना खांसी के न निकले और निर्मल लाल झागदार हो और दर्द न हो क्योंकि फेंफड़े के अंग में सुन्नता है और जो खून फेंफड़ेके मांसमें से आताहै वह कम लाल और पतला होता है और यद्यपि खांसी बहुत कड़ी हो परंतु दर्द मालूम न हो और जो खून रगों के मांस के गलजाने से आता है उसमें भी लाली कम होती है और प्रारम्भ में थोड़ा आता है और प्रति दिन जितना घाव और मांस गलता है और जितना छेद चौड़ा होता है उतना ही बढ़ता जाता है और जो खून रगों के फटजान से आता है वह विशेष लाल होता है और उसमें झाग बहुत कम होते हैं और एक साथ विशेष निकलता है और जो तेजी के कारण से हो तो ज्वर और पहले कारण जिन से खून में तेजी आती है साक्षी हों और जो खून की तेजी से फेंफड़ा घायल होगया हो तो पीला पानी, पीब, छिलके और खाल खून के साथ निकलते हैं और जिसका कारण फेंफड़े की पोल में खून भर जाने से विशेष बढ़जाना है और इस के निकलने से आराम और हलकापन मालूम होता है और पोलके भरजाने के चिन्ह प्रगट होते हैं और जो रक्तज सूजन के कारण से रुधिर उत्पन्न हो तो कुछ थोड़ी कठोरता के साथ निकलता है और फेंफड़े की सूजन के चिन्ह प्रगट होजातेहैं [इलाज] मवादके कम करने के लिये और खून को उस तरफ से फेर देने के लिये बासलीक की फस्द खोलें और जो साफिन की फस्द को बासलीक की फस्द से पहले खोलें तो अति उत्तम होगा और कुर्स फस्तुदम [मुख में खून आने की टिकिया] खाने को देना और बाहु तथा जांघकाबांधना और पिंडली पर सिंगियों का लगाना लाभदायक है। जो विशेष दोष हो तो दुकने से और पीने की दवाओं से उसका निकालना लाभदायक है और प्रकृति को निज दशा पर लाना योग्य है और ऐसा ही जिस रोगी के गर्म कारण हों और खून का बंद करना उचित है तो अकाकिया [गोंद] कुन्दरू गोंद, माजू, अनार के फूल, मुर्द, सम्ग अर्बी (एक गोंद), गिले अरमनी, अफ़ीम, सब बराबर लेकर छाती पर लेप करें और इन दोनों की टिकिया नवाकर तैयार रक्खें जिससे आवश्यकता के समय काम

का मुख सूख जाय या विशेष भर जाने से रगें फटजाय । पांचवें यह है कि ठंडी दुष्ट प्रकृति सुकोड़ने वाली फेंफड़े में उत्पन्न हो और उसके भागों को सुकोड़दे तो इस कारण से उसकी कोई रगें फटजाय और फेंफड़े में से खून आने का यह चिन्ह है कि बिना खांसी के न निकले और निर्मल लाल झागदार हो और दर्द न हो क्योंकि फेंफड़े के अंग में सुन्नता है और जो खून फेंफड़ेके मांसमें से आताहै वह कम लाल और पतला होता है और यद्यपि खांसी बहुत कड़ी हो परंतु दर्द मालूम न हो और जो खून रगों के मांस के गलजाने से आता है उसमें भी लाली कम होती है और प्रारम्भ में थोड़ा आता है और प्रति दिन जितना घाव और मांस गलता है और जितना छेद चौड़ा होता है उतना ही बढ़ता जाता है और जो खून रगों के फटजाने से आता है वह विशेष लाल होता है और उसमें झाग बहुत कम होते हैं और एक साथ विशेष निकलता है और जो तेजी के कारण से हो तो ज्वर और पहले कारण जिन से खून में तेजी आती है साक्षी हों और जो खून की तेजी से फेंफड़ा घायल होगया हो तो पीला पानी, पीव, छिलके और लाल खून के साथ निकलते हैं और जिसका कारण फेंफड़े की पोल में खून भर जाने से विशेष बढ़जाना है और इस के निकलने से आराम और हलकापन मालूम होता है और पोलके भरजाने के चिन्ह प्रगट होते हैं और जो रक्तज सूजन के कारण से रुधिर उत्पन्न हो तो कुछ थोड़ी कठोरता के साथ निकलता है और फेंफड़े की सूजन के चिन्ह प्रगट होजातेहैं [इलाज] मवादके कम करने के लिये और खून को उस तरफ से फेर देने के लिये बासलीक की फस्द खोलें और जो साफिन की फस्द को बासलीक की फस्द से पहले खोलें तो अति उत्तम होगा और कुर्सन फस्तुरम [मुख में खून आने की टिकिया] खाने को देना और बाहु तथा जांघकाबांधना और पिंडली पर सिंगियों का लगाना लाभदायक है। जो विशेष दोष हो तो हुकने से और पीने की दवाओं से उसका निकालना लाभदायक है और प्रकृति को निज दशा पर लाना योग्य है और ऐसा ही जिस रोगी के गर्म कारण हों और खून का बंद करना उचित है तो अकाकिया [गोंद] कुन्दुरू गोंद, माजू, अनार के फूल, मुर्द, समग अर्बी (एक गोंद), गिले अरमनी, अफीम, सब बराबर लेकर छाती पर लेप करें और इन दोनों की टिकिया नवारुब तैयार करलें जिससे आवश्यकता के समय काम

बचता रहे क्योंकि वह सूजन को स्थिर करके उपद्रव उत्पन्न करती है और हरतरह से मवाद के पकाने और अग को मवाद से साफ करने में परिश्रम करें जैसा उसका वर्णन आवेगा और यह बात प्रगट है कि मवाद के भागों को इकट्ठा करने वाली दवाओं का काम में लाना मवाद को रोकता है और मवाद का रुकना सूजन के लिये हानिकारी है सो इस स्थान से इनको त्याग देना योग्य है। छठा भेद यह है कि खून छाती में से आवे और उसका कारण भी वही है कि उसकी रगें बाहरी या भीतरी कार्यों के कारण से फट जांय और सीने से खून आने का यह चिन्ह है कि जमा हुआ खून कड़ी खांसी से थोड़ा २ सा निकले और घाव की जगह दर्द करे और चित लेटने के समय खांसी और दर्द बढ़ जाय (इलाज) बासलीक की फस्द खोलें और नफ-स्सुद्दम की टिकिया खावें और छाती पर भी लेप करें और छाती के घावमें फेफड़े के घाव की अपेक्षा भय कम है और बहुत जल्द अच्छा होता है [सूचना] हकीम जालीनूस कहता है कि एक युवा मनुष्य की रगें विशेष जाड़े के कारण से फट गई थीं मैंने पहले दिन उसकी फस्द खोली और विधि पूर्वक उसके हाथ और पांव मलने के लिये आज्ञा दी और भोजन में हरीरा पिलाया और उसकी छाती पर जिमाद तफसिया रखकर तीनघंटे उसपर रहने दिया जिससे विशेष गर्म न हो और दूसरे दिन जौका पानी और घतक का शोरबा दिया जब प्रकृति समानता पर आई और फेफड़े की सूजन का डर न रहा तो धीरे२ पुराना तिरियाक गधी के दूध के साथ दिया सामान्य गर्म दवा जो विशेष मवाद के रोकने वाली नहीं है ये हैं दालचीनी, बालछड़, तज, नागरमोथा, कुन्दरी, कुन्दरू गोंद, केसर, मस्तगी, मुरै और जरावन्द और इनदवाओं में ठंडी और मवाद के भागों को समेटने वाली दवा जैसे गिलेमख्तूम, गिलेअरमनी, समग अरबी, कतीरा, नशास्ता, कहरवा, मूंगा की जड़, सुनीहुई फिटकिरी, गुलाब के फूल, अनार के फूल, बारह सिंहा का जलाहुआ सींग, एक चौथाई डाले और जो गर्म दवाओं को अंटावें और ७ माशे ठंडी दवाओं में से महीन पीसकर और छान कर इसमें मिला कर पीने से बहुत ही विशेष गुण होता है॥ जिमाद तफसिया के लेप के बनाने की विधि इस तरह लिखी है कि कोई अनारका छिलका, कुन्दरू गोंद अकम [पद्मा के पेड़ का फल] घाव और पुराने दस्तों को लाभदायक है जौ का आटा, अनारके फूल, हरा माजू, चनोंका सत्तू और आसरी पत्ती

बचना रहै, क्योंकि वह सूजन को स्थिर करके उपद्रव उत्पन्न करती है और इसतरह से मवाद के पकाने और अंग को मवाद से साफ करने में परिश्रम करें जैसा उसका वर्णन आवेगा और यह बात प्रगट है कि मवाद के मार्गों को इकट्ठा करने वाली दवाओं का काम में लाना मवाद को रोकता है और मवाद का रुकना सूजन के लिये हानिकारी है सो इस स्थान से इनको त्याग देना योग्य है। छठा भेद वह है कि खून छाती में से आवे और उसका कारण भी वही है कि उसकी रगें बाहरी या भीतरी कार्यों के कारण से फट जांय और सीने से खून आने का यह चिन्ह है कि जमा हुआ खून कड़ी खांसी में थोड़ा २ सा निकले और घाव की जगह दर्द करे और चित लेटने के समय खांसी और दर्द बढ़ जाय (इलाज) बासलीक की फस्द खोलें और नफ-ससुदम की टिकिया खावें और छाती पर भी लेप करें और छाती के घावमें फेंफड़े के घाव की अपेक्षा भय कम है और बहुत जल्द अच्छा होता है [सूचना] हकीम जालीनूस कहता है कि एक युवा मनुष्य की रगें विशेष जाड़े के कारण से फट गई थीं मैंने पहले दिन उसकी फस्द खोली और विधि पूर्वक उसके हाथ और पांव मलने के लिये आज्ञादी और भोजन में हरीरा पिवाया और उसकी छाती पर जिमाद तफसिया रखकर तीनघंटे उसपर रहने दिया जिससे विशेष गर्म न हो और दूसरे दिन जौका पानी और मसूर का शोरबा दिया जब प्रकृति समानता पर आई और फेंफड़े की सूजन का डर न रहा तो धीरे२ पुराना तिरियाक गधी के दूध के साथ दिया सामान्य गर्म दवा जो विशेष मवाद के रोकने वाली नहीं है ये है दालचीनी, बालछड़, तज, नागरमोथा, कुन्दरू गोंद, केसर, मस्तगी, मुरै और जरावन्द और इनदवाओं में ठंडी और मवाद के भागों को समेटने वाली दवा जैसे गिलेमख्तूम, गिलेअरमनी, समग अर्बी, कतीरा, नशास्ता, कहरवा, मूंगा की जड़, सुर्ख़ी, फिटकिरी, गुलनार के फूल, अनार के फूल, बारह सिंहा का जलाहुआ सींग, एक चौथाई डालें और जो गर्म दवाओं को अंदाजें और ७ माशे ठंडी दवाओं में से महीन पीसकर और छान कर इसमें मिला कर पीने से बहुत ही विशेष गुण होता है॥ जिमाद तफसिया के लेप के बनाने की विधि इस तरह लिखी है कि खट्टे अनारका छिलका, कुन्दरू गोंद अकाकिया [बबूल के पेड़ का फल] मांस और पुराने दस्तों को लाभदायक है जौ का आटा, अनारके फूल, हरा माजू, मकोका मांदन और आसरी पत्ती

करने वाली दवा हों मिलाकरदें तो बहुत लाभ दायक है और बारहसिंहा का जला हुआ सींग मवाद के रोकने वाली दवाओं में मिलाकर देना बहुत लाभ दायक है और हरे पोदीना का पानी कुछ थोड़ा लाभदायक है और धनियेके फूल की कली १०॥ माशे, ठंडे पानी के साथ प्रातःकाल और संध्या के समय देना बहुत गुणदायक है और मूग की जड़ तथा सफेद मिट्टी भी लाभदायक है [लाभ] जो यह भयहो कि खून फेंफड़े में जमकर ठिहर जायगा तो पहले ही सिर्का पानी में मिलाकर पीवें परन्तु जिस मनुष्य को खांसी विशेष आती हो तो उसके लिये सिर्का न पीना चाहिये और जो खून जम जाय और खांसी विशेष न हो तो सिर्के और गुलाब से कुल्ले करें और कभी थोड़ासा पीवें और अंजीर की लकड़ी जलाकर उसकी राख पानी में मिलावें और उस पानी को हाशा के साथदें तो जमें हुए खून को साफ करता है और सातर शहद के साथ इस काम में लाभदायक हैं और दूसरे उपाय आमाशय के रोगों में खून और दूध के जमने के प्रकरण में आवेंगे। मुख से खून आने के कारण तीन प्रकार पर है एक तो बादिया, दूसरे सावका, तीसरा बासला परन्तु अस्बाव बादिया [बाहरी कारण] जैसे घाव होजाना या ऊंचे पर से गिरपड़ना या तेज दवा गर्म चर्परे और सलौने भोजन का खाना और चिन्ता और अस्बाव सावका [भीतरी कारण] जैसे सर्दी और तरी जो रगों में बढ़जाती है और इस कारण से रगें भरजांय और रगों में खून रिसने लगे और अस्बाव बासला जैसे रगोंका मुख खुलजाना और फटजाना।

सातवां प्रकरण

थूकमें पीब आने का वर्णन

इसके पांच भेद हैं पहला यह है कि फेंफड़े की सूजन या पसली की सूजन पकर फूटजाय और थूक में पीप आवे इन दोनों रोगों का वर्णन अलग २ प्रकरणमें किया जायगा। दूसरा भेद यहहै कि फेंफड़े में घाव होजाय और उस में से खांसी के साथ पीब निकले और हकीम लोग उसको सिल कहते हैं और इस का वर्णन भी आवेगा। तीसरा भेद यहहै कि आमाशय में फोड़ा उत्पन्न हो और फूटकर वमनके साथ इस तरह पीब निकले जैसे दस्तोंके साथ निकला करती है इसका भी वर्णन आगे होगा। चौथा भेद यहहै कि नरखरेमें या गले में या हलक दूसरे भागों में सूजन आजाय और पीब पड़कर फूटजाय और

करने वाली दवा हों मिलाकरदें तो बहुत लाभ दायक है और बारहसिंहाका जला हुआ सींग मवाद के रोकने वाली दवाओं में मिलाकर देना बहुत लाभ दायक है और हरे पोदीना का पानी कुछ थोड़ा लाभदायक है और धनियेके फूल की कली १०॥ माशे, ठंडे पानी के साथ प्रातःकाल और संध्या के समय देना बहुत गुणदायक है और मूंग की जड़ तथा सफेद मिट्टी भी लाभदायक है [लाभ] जो यह भयहो कि खून फेंफड़े में जमकर ठिटर जायगा तो पहले ही सिर्का पानी में मिलाकर पीवें परन्तु जिस मनुष्य को खांसी विशेष आती हो तो उसके लिये सिर्का न पीना चाहिये और जो खून जम जाय और खांसी विशेष न हो तो सिर्के और गुलाब से कुल्ले करें और कभी थोड़ासा पीवें और अंजीर की लकड़ी जलाकर उसकी राख पानी में मिलावें और उस पानी को हाशा के साथदें तो जमें हुए खून को साफ करता है और सातर शहद के साथ इस काम में लाभदायक हैं और दूसरे उपाय आमाशय के रोगों में खून और दूध के जमने के प्रकरण में आवेंगे। मुख से खून आने के कारण तीन प्रकार पर है एक तो बादिया, दूसरे सावका, तीसरा वासला परन्तु अस्वाव बादिया [बाहरी कारण] जैसे घाव होजाना या ऊंचे पर से गिरपड़ना या तेज दवा गर्म चर्परे और सलौने भोजन का खाना और चिन्ता और अस्वाव सावका [भीतरी कारण] जैसे सर्दी और तरी जो रगों में बढ़जाती है और इस कारण से रगें भरजांय और रगों से खून रिसने लगे और अस्वाव वासला जैसे रगोंका मुख खुलजाना और फटजाना

सातवां प्रकरण

थूकमें पीव आने का वर्णन

उसके पांच भेद हैं पहला यह है कि फेंफड़े की सूजन या पसली की सूजन पकपर फूटजाय और थूक में पीप आवे इन दोनों रोगों का वर्णन अलग २ प्रकरणमें किया जायगा। दूसरा भेद यहहै कि फेंफड़े में घाव होजाय और उस में से खांसी के साथ पीव निकले और हकीम लोग उसको सिल कहते हैं और इस का वर्णन भी आवेगा। तीसरा भेद यहहै कि आमाशय में फोड़ा उत्पन्न हो और फूटकर वमनके साथ इस तरह पीव निकले जैसे दस्तोंके साथ निकला करती है इसका भी वर्णन आगे होगा। चौथा भेद यहहै कि नर्खरेमें या गले में या हलके दूसरे मार्गों में सूजन आजाय और पीव पड़कर फूटजाय और

आठवांप्रकरण

फेंफड़े की सूजन का वर्णन

इसके उत्पन्न होनेकी यह दशा है कि गर्म या ठंढा नजला दिमाग से फेंफड़े पर उतर आवे या गलेकी सूजन जाती रहै और उसका मवाद वहांसे बदलकर फेंफड़ेपर गिरे और उसी जगह ठहरकर सूजन उत्पन्न करे, या पसली की सूजन फेंफड़े की सूजनसे बदल जाय और ऐसा भी होता है कि बिना नजले के और बिना बदलने के हृदय उसी जगह मवाद इकट्ठा होकर सूजन उत्पन्न करे परन्तु यह रोग नजले से बहुधा होता है। किताब इन्तखाबुल अजायब में लिखा है कि फेंफड़े की सूजन का मवाद प्रत्येकदोष से उत्पन्न होजाया करताहै परन्तु कफ से बहुधा उत्पन्न होताहै और किसी किसी किताब में देखागया है कि फेंफड़े की सूजन सड़े हुए कफसे उत्पन्न होती है और खारी कफ से उत्पन्न नहीं होती है हकीम जहीरुलदीनइन्द लुसी के बेटे ने किताबकबीर में कहा है कि फेंफड़े की सूजन का मवाद खून के सिवाय दूसरे दोषों से उत्पन्न नहीं होता है क्योंकि पित्त तो अपनी तेजी और फेंफड़े से जल्दी चले जाने के कारण से सूजन का कारण नहीं होसकता और कफ उसका भोजन है और उससे स्नेह रखता है तो वह भी सूजन का कारण न होगा। जानना चाहिये कि विशेष करके पित्त से उत्पन्न होने वाली फेंफड़े की सूजन सात दिन में आदमी को मार डालती है और जो यह मवाद निकलनेकी तरफ आरूढ़ है तो उसका चिन्ह सातवें दिन प्रगट होगा जो बोहरान जैयद का दिन है और जानना चाहिये कि मवादका फेंफड़ेकी तरफ जाना सब जानेवाली चीजोंसे बहुत बुराहै क्योंकि फेंफड़ा रक्षक और पोषक है और दिलसे बहुत निकट है और वह मवाद जो उसमें गिरता है सो जबतक पककर दूर न हो उसमें लाभ प्रगट न होगा और इसकी बीमारी कठिन है और बहुतसे रोग उत्पन्न करती है जैसाकि आगे वर्णन कियाजायगा और कभी इसका मवाद रहै और झिल्लियों में गिरकर पसली में सूजन उत्पन्न करता है और कभी इस रोगी के कूजा और पहुंचे में भीतर की तरफ उंगलियों के सिरे तक सुन्न होजाना है और कभी ऐसा होता है कि दिलकी तरफ हवपर पागलपन और बेहोशी उत्पन्न करदेता है और कभी दिमाग की तरफ आकर सरसाम उत्पन्न करता है और कभी फेंफड़े की सूजन में पानीसी तरियां इकट्ठी होजाती हैं और उसकी दशा

आठवांप्रकरण

फेफड़े की सूजन का वर्णन

इसके उत्पन्न होनेकी यह दशा है कि गर्म या ठंडा नजला दिमाग से फेफड़े पर उतर आवे या गलेकी सूजन जाती रहे और उसका मवाद वहांसे बदलकर फेफड़ेपर गिरे और उसी जगह ठहरकर सूजन उत्पन्न करे या पसली की सूजन फेफड़े की सूजनसे बदल जाय और ऐसा भी होता है कि बिना नजले के और बिना बदलने के हृदय उसी जगह मवाद इकट्ठा होकर सूजन उत्पन्न करे परन्तु यह रोग नजले से बहुधा होता है। किताब इन्तखाबउल अजायब में लिखा है कि फेफड़े की सूजन का मवाद प्रत्येकदोष से उत्पन्न होजाया करताहै परन्तु कफ से बहुधा उत्पन्न होताहै और किसी किसी किताब में देखागया है कि फेफड़े की सूजन सड़े हुए कफसे उत्पन्न होती है और खारी कफ से उत्पन्न नहीं होती है हकीम जहीरउद्दीनइन्द लुसी के बेटे ने किताबयवसैर में कहा है कि फेफड़े की सूजन का मवाद खून के सिवाय दूसरे दोषों से उत्पन्न नहीं होता है क्योंकि पित्त तो अपनी तेजी और फेफड़े से जल्दी चले जाने के कारण से सूजन का कारण नहीं होसकता और कफ उसका भोजन है और उससे स्नेह रखता है तो वह भी सूजन का कारण न होगा। जानना चाहिये कि विशेष करके पित्त से उत्पन्न होने वाली फेफड़े की सूजन सात दिन में आदमी को मार डालती है और जो वह मवाद निकलनेकी तरफ आरूढ़ है तो उसका चिन्ह सातवें दिन प्रगट होगा जो बोहरान जैयद का दिन है और जानना चाहिये कि मवादका फेफड़ेकी तरफ जाना सब जानेवाली चीजोंसे बहुत बुराहै क्योंकि फेफड़ा रक्षक और पोषक है और दिलसे बहुत निकट है और वह मवाद जो उसमें गिरता है सो जबतक पककर दूर न हो उसमें लाभ प्रगट न होगा और दिलकी बीमारी कठिन है और बहुतसे रोग उत्पन्न करती है जैसाकि आगे वर्णन कियाजायगा और कभी उसका मवाद पर्दे और झिल्लियों में गिरकर पसली में सूजन उत्पन्न करता है और कभी इस रोगी के हुजा और पट्ठे में भीतर की तरफ उंगलियों के सिरे तक सुन्न होजाना है और कभी ऐसा होता है कि दिलकी तरफ हलकर पागलपन और बेहोशी उत्पन्न करदेता है और कभी दिमाग की तरफ जाकर सरसाम उत्पन्न करता है और कभी फेफड़े की सूजन में पानीसी तरियां इकट्ठी होजाती हैं और उसकी दशा

तगी हो और छाती के आगे के भाग में भारापन और दर्द मालूम हो तथा आख और मुख लाल हो मुख्यकर गाल ऐसे लाल दिखाई दें कि जैसे किसी चीज से रग दिये हैं विशेष करके जब कि ज्वर की अधिकता हो और आंखें और मुख भरभरा जाय और जीभ खुश्क और प्यास विशेष हो और कभी जीभ में चेपदार गाढी तरी भी चिपट जाती है नाडी लहरें मारती है और खां सी बहुत सताती है और ठंडी हवा को नाक से खींचने के लिये दिल आरूढ हो और इन चिन्होंकी अधिकता या न्यूनता जैसा कारण हो उसीके अनुसार होती है जैसे मडेहुए खून पित्त और कफ की प्रकृतियों में बहुधा वर्णन हो चुका है। जैसे प्यास की अधिकता, टीस, विशेष गर्मी, भारापन का कम होना और ऐसेही अन्य बातें पित्त के लिये मुख्य हैं और इसी तरह से खूनकी प्रकृति भी प्रगट है और क्योंकि कफ गर्मीके आने से अपनी प्रकृति पर नहीं रहता तो गर्म मवादके चिन्ह पाये जाते हैं परन्तु जिस प्रकार पर हो उसकी गर्मी पित्त और खून की गर्मी से बहुत कम है और भारापन विशेष और चेपदार तरी जीभपर बहुत लगी हुई है और ठंडी हवा को नाक से खींचनेकी आवश्यकता तीनों दोषों में हुआ करती है परन्तु जितनी पित्त में विशेष होती है और किसी में इतनी अधिक ता नहीं होती है और जो फेंफड़े की सूजन पित्त की सूजन के सदृश होगी तो श्वास का रुकना उसमें विशेष होगा और भारापन बहुत कम परन्तु छा ती में गर्मी विशेष होगी [लाभ] जिस मनुष्य के फेंफडे के मुख में सूजन और घाव होगा तो पीठ में टीस और हलकासा दर्द मालूम होगा और ज्वर कम उत्पन्न होगा, देह में खुजली मालूम होगी, आवाज तेज होगी और जो सूजन घायल हो जायगी तो मुख की गन्ध जाती रहेगी और मछली की सी गन्धि होजायगी और खांसी में थोडी सी रतूबत निकलेगी और कभी फेंफडे में फुन्सियां निकल आती हैं और उसका चिन्ह यह है कि श्वास विशेषकर शीघ्र तथा लगातार आवेगा, छाती में भारापन मालूम होगा और सीने के भीतर जलन और बडी गर्मी मालूम हो और फेंफडे की सूजन का मवाद पककर निकल आने का यह चिन्ह है कि पकी हुई तरी खांसीमें बिना कष्ट निकल आवेगी और रोगी की दशा दिनपर दिन अच्छी होने लगेगी और चिन्ह कम होजायंगे यहांतक कि फेंफडा मल रहित होजायगा और मवाद की पीप बनजाने का यह चिन्ह है कि पकी हुई तरी न निकले और चिन्ह विशेष बढजाय यहां तक कि पीप हो जाय और फेंफडे के मालीक (लडकने

वगी हो और छाती के आगे के भाग में भारापन और दर्द मालूम हो तथा आंख और मुख लाल हो मुख्यकर गाल ऐसे लाल दिखाई दें कि जैसे किसी चीज से रंग दिये हैं विशेष करके जब कि ज्वर की अधिकता हो और आंखें और मुख भरभरा जाय और जीभ खुश्क और प्यास विशेष हो और कभी जीभ में चेपदार गाढी तरी भी चिपट जाती है नाडी लहरें मारती है और खांसी बहुत सताती है और ठंडी हवा को नाक से खींचने के लिये दिल आरूढ हो और इन चिन्हों की अधिकता या न्यूनता जैसा कारण हो उसीके अनुसार होती है जैसे मशहूर खून पित्त और कफ की प्रकृतियों में बहुधा वर्णन हो चुका है। जैसे प्यास की अधिकता, टीस, विशेष गर्मी, भारापन का कम होना और ऐसेही अन्य बातें पित्त के लिये मुख्य हैं और इसी तरह से खूनकी प्रकृति भी प्रगट है और क्योंकि कफ गर्मी के आने से अपनी प्रकृति पर नहीं रहता तो गर्म मवादके चिन्ह पाये जाते हैं परन्तु जिस प्रकार पर हो उसकी गर्मी पित्त और खून की गर्मी से बहुत कम है और भारापन विशेष और चेपदार तरी जीभ पर बहुत लगी हुई है और ठंडी हवा को नाक से खींचनेकी आवश्यकता तीनों दोषों में हुआ करती है परन्तु जितनी पित में विशेष होती है और किसी में इतनी अधिकता नहीं होती है और जो फेंफड़े की सूजन पित्त की सूजन के सदृश होगी तो श्वास का रुकना उसमें विशेष होगा और भारापन बहुत कम परन्तु छाती में गर्मी विशेष होगी [लाभ] जिस मनुष्य के फेंफड़े के मुख में सूजन और घाव होगा तो पीठ में टीस और हलकासा दर्द मालूम होगा और ज्वर कम उत्पन्न होगा, देह में खुजली मालूम होगी, आवाज तेज होगी और जो सूजन मवाद हो जायगी तो मुख की गन्ध जाती रहेगी और मछली की सी गन्धि होजायगी और खांसी में थोडी सी रतूबत निकलेगी और कभी फेंफड़े में फुन्सियां निकल आती हैं और उसका चिन्ह यह है कि श्वास भिंचकर शीघ्र तथा लगातार आवेगा, छाती में भारापन मालूम होगा और सीने के भीतर जलन और बड़ी गर्मी मालूम हो और फेंफड़े की सूजन का मवाद पककर निकल आने का यह चिन्ह है कि पकी हुई तरी खांसीमें बिना कष्ट निकल आवेगी और रोगी की दशा दिनपर दिन अच्छी होने लगेगी और चिन्ह कम होजायगे यहांतक कि फेंफड़ा मल रहित होजायगा और मवाद की पीप बनजाने का यह चिन्ह है कि पकी हुई तरी न निकले और चिन्ह विशेष बढ़जाय यहां तक कि पीप हो जाय और फेंफड़े के भागीक (लड़कने

की फस्द खोलें और मवाद फेंफड़े के दाहिनी तरफ में है या बांयी तरफ उस के पहचानने की यह विधि है कि ज्वरके समय ध्यान दे कि कोनसी तरफ का गाल विशेष लाल हो जाता है और छातीका भारापन कोनसी तरफ में मालूम होता है फिर जिस तरफ का गाल लाल हो और जिस तरफ में भारापन मालूम हो तो उसी तरफ सूजन है और ऐसेही जिस करवटपर रोगी लेटे और उस समय मुखमें रतूबत विशेष आवे तो जान सकते हैं कि मवाद फेंफड़ेके इसीतरफ में है जैसे जो सूजन उसकी दाहिनी तरफ में हो तो दाहिनी करवटपर लेटनेसे थूक और रतूबत विशेष निकलेगी और ऐसेही उसके विरुद्ध। और साफिन की फस्द के खोलने के पीछे जो हफ्त अन्दाम की फस्दको बासलीककी फस्द से पहिले खोलें तो अति उत्तम होगा और खूनको शक्ति के अनुसार निकलना चाहिये जैसे जो रोगी बलवान् हो तो तीन दिनका अन्तर देकर दूसरी फस्द खोलनी चाहिये और जो आरम्भमें बासलीक की फस्द से आरम्भ करें तो चाहिये कि सूजन दूसरी ओर से फस्द खोलें और परिणाम में उचित स्थान में से खोलें और फस्द खोलने और मवाद कम होने के पीछे कदाचित् छाती में पछने लगाने की आवश्यकता होती है जिससे जो मवाद बच रहा है वह कम होजाय और बाहर की तरफ आजाय और हकीम जालीनूस कहता है कि जो ज्वर बहुत गर्म हो तो दस्तावर दवा न देवे और केवल फस्द ही खोले क्योंकि फस्द खोलने में भय नहीं और दस्तावर दवाओं के देने में बड़ाभय है क्योंकि कभी ऐसा होता है कि दस्तावर दवाएं मवाद को हिलाकर दस्त नहीं लाती हैं और दर्द बढ़ जाता है और कदाचित् दस्त बहुत बढ़ जाते हैं जिस मनुष्य के अंग लटकने की जगह में और मुख्य फेंफड़े में सूजन हो तो फस्द खोलनी लाभदायक होगी और लटकी हुई जगह के सूज जाने का यह चिन्ह है कि गर्दन की हसली के समीप दर्द मालूम हो और जिस मनुष्य की पसलियों की तरफ दर्द हो तो उसको दस्तावर दवा विशेष लाभदायक होगी और जो हकीम ठीक समझे तो फस्द भी खोले और मवाद को गहराई में से निकालने वाली दवा भी दे उसके देखने से निश्चय होगा और उस सूजन में कि जो नजले से उत्पन्न हो कीफाल की फस्द खोलना लाभदायक है। और इन सब रोगों में मवाद के गाढ़े करने वाले शर्बत जैसा दयाकूजा दें और जिन चीजों से मवाद रुक जाता है जैसे कासनी का पानी न देना चाहिये। किताब शफाई के बनाने वाले ने लिखा है कि यूनान में दयाकूजा शर्बत स

की फस्द खोलें और मवाद फेंफड़े के दाहिनी तरफ में है या बांयी तरफ उस के पहचानने की यह विधि है कि ज्वरके समय ध्यान दे कि कोनसी तरफ का गाल विशेष लाल हो जाता है और छातीका भारापन कोनसी तरफ में मालूम होता है फिर जिस तरफ का गाल लाल हो और जिस तरफ में भारापन मालूम हो तो उसी तरफ सूजन है और ऐसेही जिस करवटपर रोगी लेटे और उस समय मुखमें रतूबत विशेष आवे तो जान सकते हैं कि मवाद फेंफड़ेके इसीतरफ में है जैसे जो सूजन उसकी दाहिनी तरफ में हो तो दाहिनी करवटपर लेटनेसे थूक और रतूबत विशेष निकलेगी और ऐसेही उसके विरुद्ध। और साफिन की फस्द के खोलने के पीछे जो हफ्त अन्दाम की फस्दको बासलीककी फस्द से पहिले खोलें तो अति उत्तम होगा और खूनको शक्ति के अनुसार निकलना चाहिये जैसे जो रोगी बलवान् हो तो तीन दिनका अन्तर देकर दूसरी फस्द खोलनी चाहिये और जो आरम्भमें बासलीक की फस्द से आरम्भ करें तो चाहिये कि सूजन दूसरी ओर से फस्द खोलें-और परिणाम में उचित स्थान में से खोलें और फस्द खोलने और मवाद कम होने के पीछे कदाचित् छाती में पछने लगाने की आवश्यकता होती है जिससे जो मवाद बच रहा है वह कम होजाय और बाहर की तरफ आजाय और हकीम जालीनूस कहता है कि जो ज्वर बहुत गर्म हो तो दस्तावर दवा न देवै और केवल फस्द ही खोलें क्योंकि फस्द खोलने में भय नहीं और दस्तावर दवाओं के देने में बड़ाभय है क्योंकि कभी ऐसा होता है कि दस्तावर दवाएँ मवाद को हिलाकर दस्त नहीं लाती है और दर्द बढ़ जाता है और कदाचित् दस्त बहुत बढ़ जाते हैं जिस मनुष्य के अंग लटकने की जगह में और मुख्य फेंफड़े में सूजन हो तो फस्द खोलनी लाभदायक होगी और लटकी हुई जगह के सूज जाने का यह चिन्ह है कि गर्दन की हसली के समीप दर्द मालूम हो और जिस मनुष्य की पसलियों की तरफ दर्द हो तो उसको दस्तावर दवा विशेष लाभदायक होगी और जो हकीम ठीक समझे तो फस्द भी खोले और मवाद को गहराई में से निकालनेवाली दवा भी दे उसके देखने से निश्चय होगा और उस सूजन में कि जो नजले से उत्पन्न हो कीफाल की फस्द खोलना लाभदायक है। और इन सब रोगों में मवाद के गाढे करने वाले शर्बत जैसा दयाकूजा दर्य और जिन चीजों से मवाद रुक जाता है जैसे कासनी का पानी न देना चाहिये। किताब शफाई के बनाने वाले ने लिखा है कि यूनान में दयाकूजा शर्बत स

कालु आब पतले लुआब के साथ ठहरा २ कर पिलावें और गुनगुने पानी से छाती और पसलियों पर तरेड़ा दें जिससे श्वास समानता से आवे और जो दर्द होतो भी थम जायगा [लाभ] जबकि सूजन में पीव पड़जाय और फूटने का समय समीप आवे तो श्वास का रुककर आना, छाती का भारापन और दर्द विशेष होजाय और जिसदिन फूटजाय तो ज्वर जाड़े से आवे फिर जो अच्छी तरह से मवाद न निकला हो तो पीव के निकालने में परिश्रम करें जैसा कि नफ़्सउलमिद्दा [थूकमें पीव आना] में वर्णन किया गया है और इसप्रकरण के अन्त में भी वर्णन किया जायगा और जानना चाहिये कि बहुधा ऐसा होता है कि फेंफड़ेकी सूजन बहुत पकजानेसे पहले किसी कारण से जैसा बहुत क्रोध, कठिन परिश्रम, उबकाई लेना आदि कर्मों से फूटजाय और केवल खून वा कभी पीव के साथ आने लगे तो इस सूरत में उसीसमय फस्द खोलनी चाहिये और मुखमें खून आने के इलाज की तरफ आरूढ़ होना चाहिये। दूसरा भेद यह है कि सूजन का मवाद सादा अर्थात् बेसदा हुआ कफहो तो लुआब की अधिकता चहरेपर लाली का न होना, श्वास विशेष तंग होना, छाती की गर्मी का कम होना, और मुख भरभराया हुआ दिखाई देना और ज्वर तथा भारापन का प्रगट होना ये लक्षण होते हैं और जानना चाहिये कि भीतर के अंगों की कोई सूजन बिना ज्वर के नहीं होती परन्तु विशेषता और न्यूनता मवादके अनुसार होती है और कभी ऐसा होता है कि फेंफड़े में पानी कीसी तरी इकट्ठी हो जाती है और रोगी की दशा जलन्धर वाले कीसी होजाय और हल्कासा ज्वर हरसमय रहने लगे। आरम्भ में गर्म सूजन के इलाज की तरफ आरूढ़ हो अर्थात् तबियत को मुलायम करें और जब मवाद के हटाने वाली दवाओं का लेप करें जिससे कदाचित मवाद हट जावे और जब कई दिन बीत जांय और ज्वर जाता रहे औररोगमेंकमी होने लगे तो जो कुछ कफ वाली खांसीमें वर्णन किया गया है। अर्थात् पकाना और मवाद का निकालना यही इस दूसरे प्रकार के रोगमें काम में लावें और जूफा, अंजीर तथा मेथी का काढ़ा पिलावें और भोजन बाकले का पानी, जौ का पानी, गेहूं का पानी, गेहूं की हरी का सीरा शहद और पकि साग खवावें और जो मवाद रुका हुआ हो तो ९ माशे बनफशा, मुनक्का बेदाने ५० मुलहटी १ तोले और ५ दाने अंजीर पानी में औटावें और इस काढ़े में अ मलतास जितना चाहें डालदें और छानकर बादाम का तेल डालकर पिलावें

कालु आव पतले लुआब के साथ ठहरा २ कर पिलावें और गुनगुने पानी से छाती और पसलियों पर तरेड़ादें जिससे श्वास समानता से आवे और जो दर्द होतो भी थम जायगा [लाभ]जबकि सूजन में पीव पड़जाय और फूटने का समय समीप आवे तो श्वास का रुककर आना, छाती का भारापन और दर्द विशेष होजाय और जिसदिन फूटजाय तो ज्वर जाड़े से आवे फिर जो अच्छी तरह से मवाद न निकला हो तो पीव के निकालने में परिश्रम करें जैसा कि नफ्सउलमिद्दा [थूकमें पीव आना] में वर्णन किया गया है और इसप्रकरण के अन्त में भी वर्णन किया जायगा और जानना चाहिये कि बहुधा ऐसा होता है कि फेंफड़ेकी सूजन बहुत पकजानेसे पहले किसी कारण से जैसा बहुत क्रोध, कठिन परिश्रम, उबकाई लेना आदि कर्मो से फूटजाय और केवल खून वा कभी पीव के साथ आने लगे तो इस सूरत में उसीसमय फस्द खोलनी चाहिये और मुखमें खून आने के इलाज की तरफ आरूढ़ होना चाहिये। दूसरा भेद यह है कि सूजन का मवाद सादा अर्थात् बेसदा हुआ कफहो तो लुआब की अधिकता चहरेपर लाली का न होना, श्वास विशेष तंग होना, छाती की गर्मी का कम होना, और मुख भरभराया हुआ दिखाई देना और ज्वर तथा भारापन का प्रगट होना ये लक्षण होते हैं और जानना चाहिये कि भीतर के अंगों की कोई सूजन बिना ज्वर के नहीं होती परन्तु विशेषता और न्यूनता मवादके अनुसार होती है और कभी ऐसा होता है कि फेंफड़े में पानी कीसी तरी इकट्ठी हो जाती है और रोगी की दशा जलन्धर वाले कीसी होजाय और हल्कासा ज्वर हर समय रहने लगे। आरम्भ में गर्म सूजन के इलाज की तरफ आरूढ़ हो अर्थात् तबियत को मुलायम करें और जब मवाद के हटाने वाली दवाओं का लेप करें जिससे कदाचित मवाद हट जावे और जब कई दिन बीत जांय और ज्वर जाता रहे औररोगमें कमी होने लगे तो जो कुछ कफ वाली खांसीमें वर्णन किया गयाहै। अर्थात् पकाना और मवाद का निकालना यही इस दूसरे प्रकार के रोगमें काम में लावे और जूफा, अंजीर तथा मेथी का काढ़ा पिलावें और भोजन बाकले का पानी, जौ का पानी, गेहूं का पानी, गेहूं की भूसी का सीरा शहद और मीठे साग खवावें और जो मवाद रुका हुआ हो तो ९ माशे बनफशा, मुनक्का बेदाने ५० मुलहटी १ तोले और ५ दाने अंजीर पानी में औटावें और इस काढ़े में जितना चाहें शहद और छानकर बादाम का तेल मिलाकर पिलावें

लाभदायक है और कभी इन चटनियों में कोई ज्ञानशक्ति के नष्टकरने वाली वस्तु मिलालेते हैं जैसे खशखाश की छाल और खुरासानी अजवायन जिससे खांसी रुकजाती है और जब मवाद बिल्कुल पकगया हो तो उसके फोड़ने का उपाय करें और यह इस प्रकार का होता है कि लुबनी का धूआं करें और मुख खोलकर उस पर रक्खें जिससे धूआं गले में पहुंचे और रोगी को कुर्सी पर बैठना और उसके मूढों को ओर से हिलाना, मछली का शोरबा पीना यारज फयकरा और इन्द्रायन के गूदे की गोलियां बनाकर रातके समय मुख में रखना जिससे धीरे २ पानी होकर गले में जाय और हींग, जावशीर के साथ डालकर देना इससे लाभदायक है और राई को शहद के पानी में देनाभी ठीक है और कोई २ हकीम खाने के पीछे वमन करादेते हैं जिससे उसकी गति से सूजन फूट जाय परन्तु उसमें भय है क्योंकि कदाचित् विशेष खोलदे और मवाद को एक साथ हटावे और गलाघुट जाय। जानना चाहिये कि पुराने हकीम पकाने वाले और खोलने वाले उपाय सात दिन के पीछे काम में लाये हैं परन्तु ज्ञानवान हकीम को चाहिये कि ऐसे मार्ग में न चले कि गिरपड़े किंतु ऐसी सावधानी करें जिससे गर्मी और सूजन विशेष न हो और रोग पर रोग न बढ़े और जब सूजन खुलजाय और पीव आने लगें और रोगी को अपने देह में हलकापन मालूम हो तो छाती के साफ करने के लिये जो कुछ तर खांसी और श्वास के तंग आने में वर्णन किया गया है और थूक में पीव आने में वर्णन हो चुका है काम में लावें और उचित है कि फेंफड़े की पीव, जिगर की रगके द्वारा जिगरमें जाय और वहां से मलमूत्र के द्वारा निकल जाय जैसा कि छाती में पीव के पद होने के विषय में इसका वर्णन आवेगा।

नवां प्रकरण

सिल अर्थात फेंफड़े में पीव पडजाने का वर्णन।

जानना चाहिये कि यह रोग उन लोगों को उत्पन्न होता है जिनके दिमाग से चेपदार रतूबतें फेंफड़े पर गिरती रहती हैं यह श्वास को तंग और विशेष खांसी उत्पन्न करता है और जो घाव फेंफड़े में उत्पन्न होता है तो बहुत कम अच्छा होता है। यह रोग बहुत दिनों तक रहता है और कभी तरुण अवस्था तक बाकी रहता है। यह रोग ठंडे उत्तरी देशों में गर्मी तथा जाड़े की ऋतु में और पूर्वी देशों में खरीफ की ऋतु में उत्पन्न होता है और यह रोग जिस म

लाभदायक है और कभी इन चटनियों में कोई ज्ञानशक्ति के नष्टकरने वाली वस्तु मिलालेते हैं जैसे खशखाश की छाल और खुरासानी अजवायन जिससे खांसी रुकजाती है और जब मवाद बिल्कुल पकगया हो तो उसके फोड़ने का उपाय करें और यह इस प्रकार का होता है कि लुबनी का धूआं करें और मुख खोलकर उस पर रक्खें जिससे धूआं गले में पहुंचे और रोगी को कुर्सी पर बैठना और उसके मूढों को जोर से हिलाना, मछली का शोरबा पीना यारज फयकरा और इन्द्रायन के गूदे की गोलियां बनाकर रातके समय मुख में रखना जिससे धीरे २ पानी होकर गले में जाय और हींग, जावशीर के साथ डालकर देना इससे लाभदायक है और राई को शहद के पानी में देनाभी ठीक है और कोई २ हकीम खाने के पीछे वमन करादेते हैं जिससे उसकी गति से सूजन फूट जाय परन्तु उसमें भयहै क्योंकि कदाचित् विशेष खोलदे और मवाद को एक साथ हटावे और गलाघुट जाय। जानना चाहिये कि पुराने हकीम पकाने वाले और खोलने वाले उपाय सात दिन के पीछे काम में लाये हैं परन्तु ज्ञानवान हकीम को चाहिये कि ऐसे मार्ग में न चले कि गिरपड़े किंतु ऐसी सावधानी करें जिससे गर्मी और सूजन विशेष न हो और रोग पर रोग न बढ़े और जब सूजन खुलजाय और पीव आने लगें और रोगी को अपने देह में हलकापन मालूम हो तो छाती के साफ करने के लिये जो कुछ तर खांसी और श्वास के तंग आने में वर्णन किया गया है और थूक में पीव आने में वर्णन हो चुका है काम में लावें और उचित है कि फेफड़े की पीव, जिगर की रगके द्वारा जिगरमें जाय और यहां से मलमूत्र के द्वारा निकल जाय जैसा कि छाती में पीव के बंद होने के विषय में इसका वर्णन आवेगा।

नवां प्रकरण

सिल अर्थात् फेंफड़े में पीव पड़जाने का वर्णन।

जानना चाहिये कि यह रोग उन लोगों को उत्पन्न होता है जिनके दिमाग से चेपदार रतूबतें फेफड़े पर गिरती रहती हैं यह श्वास को तंग और विशेष खांसी उत्पन्न करता है और जो घाव फेफड़े में उत्पन्न होता है सो बहुत कम अच्छा होता है। यह रोग बहुत दिनों तक रहता है और कभी तरुण अवस्था तक बाकी रहता है। यह रोग ठंडे उत्तरी देशों में गर्मी तथा जाड़े की ऋतु में और पूर्वी देशों में खरीफ की ऋतु में उत्पन्न होता है और यह रोग जिन म

कभी रातके समय या दूसरे समय पसीना आवै जब शरीरका घटना अवको पहुंचे नौं नख ठंडे हो जांय जैसा तपेदिकमें वर्णन कियागयाहै और जब किसीका अंत आप हुचता है तो पांव की पीठ सूज जाती है और फेफड़े के मुख के टुकड़े और रगोंके तार और टुकड़े वा ततु पीवमें आनेलगतेहैं और जोदोष निकलताहै वह बहुतगाढ़ाहोकर बन्द होता है और मूर्ख हकीम यह संदेह कर लेता है कि आरोग्य होगया इस दशा में रोगी चार दिन से अधिक नहीं जी सकता है और बहुधा ऐसा होताहै कि फेफड़े के घाव के अन्तमें खांसी प्रगट होकर साफ खून आने लगे इस दशा में जो खांसी और खून के बंद करने का उपाय किया जाय तो फेफड़े में रुककर रोगी को मारडालता है और बंद न करें तो खून के बहुत बहने से रोगी मरजाता है और जब सिलवाले (फेफड़े के घाव वाले) के दोनों जब ड़ों पर बाकले के दाने के सदृश कोई वस्तु उत्पन्न होजाय तो रोगी ५० दिन में मरजायगा और जब अंगूठे पर हरापन उत्पन्न होजाय और माथे पर लाल फुन्सियां निकल आवैं और उसमें से चिकना पीला पानी निकलता रहै तो चौथे दिन मरजायगा और जब सिर में बाकले का दानासा निकल आवै और उसका रंग काला हो और दर्द न करै और गहरी नींद आवै तो चालीस घंटे या चालीस दिन में मरजायगा [सूचना] क्योंकि दिमाग की तरी स्वास रोगी के फेफड़े पर सदा उतरा करती है इससे किसीर की दशा फेफड़े के घाव वाले की सी होजाती है इस लिये कुछ हकीम उसको भी सिल कहते हैं परन्तु यह कृत्रिम है जैसा कि ऊपर वर्णन होचुका है। इस लिये अब हम कृत्रिम और और सिल अर्थात् फेफड़े के घावों का अन्तर वर्णन करते हैं अन्तर यह है कि इस प्रकार का दमा वे ज्वर हुआ करता है और उसमें क फ वा तरी के सिवाय खांसी में और कुछ नहीं निकलता किन्तु यह सिल के विरुद्ध है जिसमें तपेदिक अवश्य होता है और थूक में पीव का निकलना उसका प्रभाव है और क्योंकि कभी रतूबत पीव से बहुत कुछ मिलती है इसमें इन दोनों में अन्तर प्रगट करना योग्य हुआ जिससे दोनों पहचान लिये जांय सो पीव का चिन्ह यह है कि दुर्गन्धित हो और जब पानी डालैं तो कुछ देर के पीछे नीचे बैठ जाय और जिस पीव में प्रदाह विदित है और दुर्गन्धित हो तो जलाने की आवश्यकता नहीं दुर्गन्धि के कारण से थूकने के समय आप उसकी दुर्गन्धि नाकमें आती है नहीं तो जबतक आग में न जलावें तब तक उसकी दुर्गन्धि मालूम न होगी और पीव की दुर्गन्धि ऐसी होती है जैसे

o

कभी रातके समय या दूसरे समय पसीना आवे जब शरीरका पटना अवको पहुंचेगी नख ठंढे हो जांय जैसा तपेदिकमें वर्णन कियागयाहै और जब किसीका अंत आप हुंचता है तो पांव की पीव सूज जाती है और फेफड़े के मुखके टुकड़े और रगोंके तार और टुकड़ेवा तंतु पीवमें आनेलगतेहैं और जोदोष निकलताहै वह बहुतगाढ़ाहोकर बन्द होता है और मूर्ख हकीम यह संदेह कर लेता है कि आरोग्य होगया इस दशा में रोगी चार दिन से अधिक नहीं जी सकता है और बहुधा ऐसा होताहै कि फेफड़े के घाव के अन्तमें खांसी प्रगट होकर साफ खून आने लगे इस दशा में जो खांसी और खून के बंद करने का उपाय किया जाय वो फेफड़े में रुककर रोगी को मारडालता है और बंद न करें तो खून के बहुत बहने से रोगी मरजाता है और जब सिलवाले (फेफड़े के घाव वाले) के दोनों जंघ हों पर बाकले के दाने के सदृश कोई वस्तु उत्पन्न होजाय तो रोगी ५० दिन में मरजायेगा और जब अंगूठे पर हरापन उत्पन्न होजाय और माथे पर लाल फुन्सियां निकल आवें और उसमें से चिकना पीला पानी निकलता रहै तो चौथे दिन मरजायगा और जब सिर में बाकले का दानासा निकल आवे और उसका रंग काला हो और दर्द न करै और गहरी नींद आवे तो चालीस घंटे या चालीस दिन में मरजायगा [सूचना] क्योंकि दिमाग की तरी श्वास रोगी के फेफड़े पर सदा उतरा करती है इससे किसीर की दशा फेफड़े के घाव वाले की सी होजाती है इस लिये कुछ हकीम उसको भी सिल कहते हैं परन्तु यह कृत्रिम है जैसा कि ऊपर वर्णन होचुका है । इस लिये अब हम कृत्रिम और और सिल अर्थात् फेफड़े के घावों का अन्तर वर्णन करते हैं अन्तर यह है कि इस प्रकार का दमा में ज्वर हुआ करता है और उसमें क थो तरी के सिवाय खांसी में और कुछ नहीं निकलता किन्तु यह सिल के विरुद्ध है जिसमें तपेदिक अवश्य होता है और थूक में पीव का निकलना उसका प्रभाव है और क्यों कभी रतूबत पीव से बहुत कुछ मिलती है इसमें इन दोनों में अन्तर प्रगट करना योग्य हुआ जिससे दोनों पहचान लिये जांय सोपीव का चिन्ह यह है कि दुर्गन्धित हो और जब पानी डाली तो कुछ देर के पीछे नीचे बैठ जाय और जिस पीव में सड़ाहट विशेष है और नुश्वान हो तो जलाने की आवश्यकता नहीं दुर्गन्धि के कारण से थूकने के समय आप उसकी दुर्गन्धि नाकमें आती है नहींतो जबतक आग में न जलावें तब तक उसकी दुर्गन्धि मालूम न होगी और पीव की दुर्गन्धि ऐसी होती है जैसे

कभी रातके समय या दूसरे समय पसीना आवै जब शरीरका यटना अंतको पहुंचेतो नख उडे हो जाय जैसा तपेदिकमें वर्णन कियागयाहै और जब किसीका अत आप हुंचता है तो पांव की पीव सूज जाती है और फेंफडे के मुख के टुकडे और रगोंके तार और टुकडेवा तंतु पीवमें आनेलगतेहैं और जोदोष निकलताहै यह बहुतगाढाहोकर बन्द होता है और मूर्ख हकीम यह संदेह कर लेता है कि आरोग्य होगया इस दशा में रोगी चार दिन से अधिक नहीं जी सकता है और बहुधा ऐसा होताहै कि फेंफडे के घाव के अन्तमें खांसी प्रगट होकर साफ खून आने लगे इस दशा में जो खांसी और खून के बंद करने का उपाय किया जाय तो फेंफडे में रुककर रोगी को मारडालता है और बंद न करैं तो खून के बहुत बहने से रोगी मरजाता है और जब सिलवाले (फेंफडे के घाव वाले) के दोनों जब डों पर बाकले के दाने के सदृश कोई वस्तु उत्पन्न होजाय तो रोगी ५२ दिन में मरजावेगा और जब अंगूठे पर हरापन उत्पन्न होजाय और माथेपर लाल फुन्सियां निकल आवैं और उसमें से चिकना पीला पानी निकलता रहै तो चौथे दिन मरजायगा और जब सिर में बाकले का दानासा निकल आवै और उसका रंग काला हो और दर्द न करै और गहरी नींद आवै तो चालीस घंटे या चालीस दिन में मरजायगा [सूचना] क्योंकि दिमाग की तरी प्रयास रोगी के फेंफडे पर सदा उतरा करती है इससे किसीर की दशा फेंफडे के घाव वाले की सी होजाती है इस लिये कुछ हकीम उसको भी सिल कहते हैं परन्तु यह कृत्रिम है जैसा कि ऊपर वर्णन होचुका है । इस लिये अब हम कृत्रिम और और सिल अर्थात् फेंफडे के घावों का अन्तर वर्णन करते हैं अन्तर यह है कि इस प्रकार का दमा वे ज्वर हुआ करता है और उसमें क थी तरी के सिवाय खांसी में और कुछ नहीं निकलता किन्तु यह सिल के विरुद्ध है जिसमें तपेदिक अवश्य होता है और थूक में पीव का निकलना उसका प्रभाव है और क्यों कभी रतूबत पीव से बहुत कुछ मिलती है इससे इन दोनों में अन्तर प्रगट करना योग्य हुआ जिससे दोनों पहचान लिये जांय सापीव का चिन्ह यह है कि दुर्गन्धित हो और जब पानी डालो तो कुछ देर के पीछे नीचे बैठ जाय और जिस पीव में सड़ाहट विशेष है और मुम्मन हो तो गलाने की आवश्यकता नहीं दुर्गन्धि के कारण से थूकने के समय आप उसकी दुर्गन्धि नाकमें आती है नहीं तो जबतक आप मेज न मलावें तब तक उसकी दुर्गन्धि मालूम न होगी और पीव की दुर्गन्धि ऐसी होती है कि

कभी रातके समय या दूसरे समय पसीना आवै जब शरीरका घटना अंतको पहुंचेतो नख ठंडे हो जांय जैसा तपेदिकमें वर्णन कियागयाहै और जब किसीका अंत आप हुंचता है तो पाव की पीव सूज जाती है और फेंफडे के मुखके टुकडे और रगोंके तार और टुकडेवा तंतु पीवमें आनेलगतेहैं और जोदोष निकलताहै वह बहुतगाढाहोकर बन्द होता है और मूर्ख हकीम यह संदेह कर लेता है कि आरोग्य होगया इस दशा में रोगी चार दिन से अधिक नहीं जी सकता है और बहुधा ऐसा होताहै कि फेंफडे के घाव के अन्तमें खांसी प्रगट होकर साफ खून आने लगै इस दशा में जो खांसी और खून के बंद करने का उपाय किया जाय तो फेंफडे में रुककर रोगी को मारडालता है और बंद न करें तो खून के बहुत बहने से रोगी मरजाता है और जब सिलवाले (फेंफडे के घाव वाले) के दोनों जब डों पर थाकले के दाने के सदृश कोई वस्तु उत्पन्न होजाय तो रोगी ५२ दिन में मरजायगा और जब अगूठे पर हरापन उत्पन्न होजाय और माथे पर लाल फुन्सियां निकल आवें और उसमें से चिकना पीला पानी निकलता रहै तो चौथे दिन मरजायगा और जब सिर में बाकले का दानासा निकल आवै और उसका रंग काला हो और दर्द न करै और गहरी नींद आवै तो चालीस घंटे या चालीस दिन में मरजायगा [सूचना] क्योंकि दिमाग की तरी बवासे रोगी के फेंफडे पर सदा उतरा करती है इससे किसीर की दशा फेंफडे के घाव वाले की सी होजाती है इस लिये कुछ हकीम उसको भी सिल कहते हैं परन्तु यह कृत्रिम है जैसा कि ऊपर वर्णन होचुका है। इस लिये अब हम कृत्रिम और और सिल अर्थात् फेंफडे के घावों का अन्तर वर्णन करते हैं अन्तर यह है कि इस प्रकार का दमा वे ज्वर हुआ करता है और उसमें क भी तरी के सिवाय खांसी में और कुछ नहीं निकलता किन्तु यह सिल के विरुद्ध है जिसमें तपदिक अवश्य होता है और थूक में पीव का निकलना उसका स्वभाव है और क्योंकि कभी रतूबत पीव से बहुत कुछ मिलती है इससे इन दोनों में अन्तर प्रगट करना योग्य हुआ जिससे दोनों पहचान लिये जांय सापीव का चिन्ह यह है कि दुर्गन्धित हो और जब पानी डालें तो कुछ देर के पीछे नीचे बैठ जाय और जिस पीव में सडाहट विशेष है और दुर्गन्धि हो तो गलाने की आवश्यकता नहीं दुर्गन्धि के कारण से थूकने के समय आप उसकी दुर्गन्धि नाकमें आती है नहीं तो जबतक आग में न जलावें तब तक उसकी दुर्गन्धि मालूम न होगी और पीव की दुर्गन्धि ऐसी होती है जैसे

घाव हरा होने से अच्छा नहीं होता और ऐसे ही फेंफडे की रगें बहुत चौडी और कडी हैं और जो चीरा और घाव इस प्रकार की रगों में हो तो उस का अच्छा होना कठिन है और ऐसाही दवा का असर इस अंग में पहुच ने तक रोगी बहुत निर्बल होजाता है और ठंडी चीजें आपही प्रवेश नहीं होसकती और गर्म चीजें दर्द को बढाती हैं और घाव के लिये सूखी दवा चाहिये और उनकी खुश्की ज्वर को हानि करती है और जो घाव फेंफडे के मुख में होजाता है इसका भी इलाज नहीं होसकता परंतु जिसका अच्छा होना योग्य है वह घाव वह है जो फेंफडे के मुखकी भीतर की झिल्ली में हो और उसके मांस में न पहुचे (लाभ) सिल (फेंफडे का घाव और दुबला होना) की बीमारी बहुत कम अच्छी होती है परंतु अच्छा उपाय बन पडे तो समय भी बहुत मिलता है और योग्य है कि तरुण अवस्था से ढलती हुई जवानी तक रक्खे और हकीम हकीमेअलउल रईस कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा है कि इस रोग में प्रायः तेईस बरस तक जीती रही और यह रोग सर्द देशों में जाडे की ऋतु में बहुत उत्पन्न होता है और बहुतों को १८ बरस की उमर से तीस बरस की उमर तक और बहुधा ऐसे लोगों को उत्पन्न होता है कि उनकी छाती छोटी होजाय और गर्दन लम्बी आगे की तरफ झुकी हुई और नरखरा बाहर को उठा हुआ और हो उनके कंधों पर मांस नहीं होता और पीठकी तरफ मुर्गेके पर की तरह निकलेहुए होते हैं और ऐसे लोगों को मुजन्ह (परदार) कहते हैं और तरी प्रकृतिवाले बहुधाइस विपत्तिमें पडा करते हैं (इलाज) आरम्भ में बासलीक की फस्द उस तरफ से खोलें कि जिस तरफ में दर्द मालूम हो यदि कोई कार्य वर्जित न हो और नहीं तो पछने लगावें और जिस रोग का कुछ मवाद सिरसे फेंफडे की तरफ गिरता हो तो कीफाल की फस्द भी खोलें और जौ का चून कीकरों के साथ पका हुआ इस रोग में लाभदायक है। किताब अमरायमुल इन्तिसाब में लिखा है कि पछिने इस रोग में बहुत लाभदायक है और जो रोगी को उनसे ग्लानि से घृणा होतो बकरीके कण्ठ में पाये फीफडकी जगह कामयें लावें और जो तासीपन नामे होनी जौ के पानी में इस्बगोल मिलावें और कुर्सकाफूर देवें उसकी विधि यह है कि गिलिअरमनी, नशास्ता, गुल्लाबके फूल, प्रत्येक १४ मासे, मस्तगी इस्पग़ोल प्रत्येक २१ मासे, और भुने हुए पीफडे, गुर्दा, संदल सफेद सीसा में धोय की मिगी, ककड़ी खीरा के बीज की मिंगी, प्रत्येक ३५ मासे, गिल माखूम

घाव हरा होने से अच्छा नहीं होता और ऐसे ही फेंफड़े की रगें बहुत चौड़ी और कड़ी हैं और जो चीरा और घाव इस प्रकार की रगों में हो तो उस का अच्छा होना कठिन है और ऐसाही दवा का असर इस अंग में पहुच ने तक रोगी बहुत निर्बल होजाता है और ठंडी चीजें आपही प्रवेश नहीं होसकती और गर्म चीजें दर्द को बढ़ाती हैं और घाव के लिये सूखी दवा चाहिये और उनकी खुश्की ज्वर को हानि करती है और जो घाव फेंफड़े के मुख में होजाता है इसका भी इलाज नहीं होसकता परंतु जिसका अच्छा होना योग्य है वह घाव वह है जो फेंफड़े के मुखकी भीतर की झिल्ली में हो और उसके मांस में न पहुचे (लाम) सिल (फेंफड़े का घाव और दुबला होना) की बीमारी बहुत कम अच्छी होती है परंतु अच्छा उपाय बन पड़े तो समय भी बहुत मिलता है और योग्य है कि तरुण अवस्था से ढलती हुई जवानी तक रक्खे और हकीम हकीमेखउल रईस कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा है कि इस रोग में भाष' तेईस बरस तक जीती रही और यह रोग सर्द देशों में जाड़े की ऋतु में बहुत उत्पन्न होता है और बहुतों को १८ बरस की उमर से तीस बरस की उमर तक और बहुधा ऐसे लोगों को उत्पन्न होता है कि उनकी छाती छोटी होजाय और गर्दन लम्बी आग की तरफ झुकी हुई और नर्खरा बाहर को उठा हुआ और हो उनके कंधों पर मांस नहीं होता और पीठकी तरफ मुर्गके पर की तरह निकालेहुए होते हैं और ऐसे लोगों को मुजन्ह (परदार) कहते हैं और ठंडी प्रकृतिवाले बहुधाइस विपत्तिमें पड़ा करते हैं (इलाज) आरम्भ में बासलीक की फस्द उस तरफ से खोलें कि जिस तरफ में दर्द मालूम हो यदि कोई कार्य वर्जित न हो और नहीं तो पछने लगावें और जिस रोग का कुछ मवाद सिरसे फेंफड़े की तरफ गिरता हो तो कीफाल की फस्द भी खोलें और जी का चून खीरडों के साथ पका हुआ इस रोग में लाभदायक है। किताब अमायबुल इन्तिखाब में लिखा है कि खीरड़े इस रोग में बहुत लाभदायक है और जो रोगी को उनके खाने से घृणा होतो यकृतीके कण के पाये कीरडकी जगह काममें लावें और जो तासियत नर्म होती जौ के पानी में इस्बगोल मिलावें और कुर्स कहरुवा देवें उसकी विधि यह है कि गिलिइरमनी, नशास्ता, गुल्नारके फूल, प्रत्येक १४ माशे, कहरुवा इसबगोल प्रत्येक २१ माशे, और भुने हुए खीरड़े, गुर्ज, सफेद चन्दन खीरा के बीज की मिंगी, ककड़ी खीरा के बीज की मिंगी, प्रत्येक ३५ माशे, गिल मख्तूम

को लगावें और जो रोगी की शक्ति निर्बल हो तो जौ के पानी में कौकदा हिरन का यघा और बकरी के पाये पकाकर देसकते हैं और जो तबियत नर्म हो और रोकने की आवश्यकता हो तो मौलसिरी का शर्बत दें और अधीरा जौ के पानी में औटावें और जो खासी विशेष हो तो जौ के पानी में और रोगी के पीने की चीजों में काहू के बीज औटालें और जो शरीर में मवाद हो तो फस्द खोलने के पीछे अमलतास के काढे से तबियत को नर्म करें और जो छाती में तरी या खुश्की जैसी रोगी की दशा हो उसके अनुसार जो कुछ कि खासी के प्रकरण में वर्णन किया गया है वही उपाय काम में लावें और इस रोग में मेह का पानी सब पानियों से अति उत्तम है और हकीम शैखउलरईस कहता है कि जो कुछ मैंने इस रोग में परीक्षा की है वह ताजा गुलकन्द है जो उसी साल का बना हो और उसके खाने की यह विधि है कि जितनी शक्ति हो खाय यहां तक कि जो रोगी रोटी के साथ साग की तरह से खाय तो अति उत्तम है और यही कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा कि यह रोग उसको पड़ गया और उसको अपने जीवन की आशा न रही मैंने उसका इलाज गुल्कन्द से किया तो वह बिल्कुल अच्छी हो गई और फिर उस पर मांस चढा और मोटी हो गई और उसीका वाक्य है कि नहीं मालूम कितना गुलकंद मैंने उसको खवाया और मैं डरता हूं कि कदाचित् कोई मेरी बात पर भरोसा न करै और इस इलाज में भोजन तीतर का मास देना चाहिये और बटेर, लवा, चकोर और चिड़िया का मांस यह सब भुने हुए और बिना तेल और ताजी मछली भुनी हुई अच्छी हैं और जो इस बीच में ज्वर और गर्मी उत्पन्न हो तो जौ का पानी और कद्दू पर सतोष करै और जान लेना चाहिये कि दूध पिलाने के समय कई बातों की रक्षा करनी चाहिये और वह इस प्रकार की हैं कि ज्वर न हो और जो स्त्री का दूध दें तो आज्ञा दें कि उसकी छाती से चूस ले और जो गधी का दूध दें तो चाहिये कि गधी जवान हो और जिसका बच्चा चार पांच महीने का हो गया हो और जिस गिलास में दूध हो तो उसको कई बार पानी से धावें और गिलास ऐसा हो कि पीने से जल्द पवित्र हो जाय और दूध को न मोलें जैसे पानी आदि का गिलास जिसमें रांगे की कलई की गई हो और जब दूध दुहना चाहैं तब गधी को रोगी के पास लावें जिससे दूध को दोहतेही रोगीको पिलादेवें और दूध दोहनके समय प्यालेको

को लगावें और जो रोगी की शक्ति निर्बल हो तो जौ के पानी में कीकड़ा हिरन का बचा और बकरी के पाये पकाकर देसक्ते हैं और जो तबियत नर्म हो और रोकने की आवश्यकता हो तो मौलसिरी का शर्बत दें और अपीरा जौ के पानी में औटावें और जो खासी विशेष हो तो जौ के पानी में और रोगी के पीने की चीजों में काहू के बीज औटालें और जो शरीर में मवाद हो तो फस्द खोलने के पीछे अमलतास के काढ़े से तबियत को नर्म करें और जो छाती में तरी या खुश्की जैसी रोगी की दशा हो उसके अनुसार जो कुछ कि खासी के प्रकरण में वर्णन किया गया है वही उपाय काम में लावें और इस रोग में मेह का पानी सब पानियों से अति उत्तम है और हकीम गालवउलरईस कहता है कि जो कुछ मैंने इस रोग में परीक्षा की है वह ताजा गुलकद है जो उसी साल का बना हो और उसके खाने की यह विधि है कि जितनी शक्ति हो खाय यहां तक कि जो रोगी रोटी के साथ साग की तरह से खाय तो अति उत्तम है और यही कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा कि यह रोग उसको बढ़ गया और उसको अपने जीवन की आशा न रही मैंने उसका इलाज गुलकन्द से किया तो वह बिल्कुल अच्छी हो गई और फिर उस पर मांस चढ़ा और मोटी हो गई और उसीका वाक्य है कि नहीं मालूम कितना गुलकंद मैंने उसको खवाया और मैं डरता हूं कि कदाचित् कोई मेरी बात पर भरोसा न करें और इस इलाज में भोजन तीतर का मांस देना चाहिये और बटेर, लवा, चकोर और चिड़िया का मांस यह सब भुने हुए और बिना तेल और ताजी मछली भुनी हुई अच्छी है और जो इस बीच में ज्वर और गर्मी उत्पन्न हो तो जौ का पानी और कीकड़े पर सतोष करें और जान लेना चाहिये कि दूध पिलाने के समय कई बातों की रक्षा करनी चाहिये और वह इस प्रकार की हैं कि ज्वर न हो और जो स्त्री का दूध दें तो आज्ञा दें कि उसकी छाती से चूस ले और जो गधी का दूध दें तो चाहिये कि गधी जवान हो और जिसका बच्चा चार पांच महीने का हो गया हो और जिस गिलास में दूध हो तो उसको कई बार पानी से धावें और गिलास ऐसा हो कि धोने से जल्द पवित्र हो जाय और दूध को न सोखे जैसे चीनी आदि का गिलास जिसमें रांगे की कलई की गई हो और जब दूध दुहना चाहें तब गधी को रोगी के पास लावें जिससे दूध को दोहकर रोगीको पिलादवें और दूध दोहनके समय प्यालेको

और जब गुलकन्द और दूसरी चीजों के काम में लाने से श्वास रुकने लगे तो योग्य चाटने की चीजों से उपाय करें और सफ़ूफ सरतान (पिसी दवा जिसमें कीकड़ा पड़ा हो) भी लाभदायक है (उसकी विधि) कीकड़े की राख जिसका वर्णन हो चुका है ३५ माशे, समग़ अरबी, गिलेफ़ारसी प्रत्येक १७॥ माशे , सफेद और काली खशखाश प्रत्येक ८॥ माशे, कतीरा १०॥ माशे, सब को पीस कर महीन करलें और सात माशे गधीका दूध या उनाब या खशखाश के शर्बत के साथ दें और कीकड़े के जलाने की यह विधि है कि उक्त कीकड़े को मिट्टी के पात्र में रखकर उसका मुख नमक और राख मिली हुई मिट्टी से कड़ा बद करदें और एक रात दिन चूल्हे में अथवा भट्टी में रक्खें फिर निकाललें और उस जले हुए कीकड़े को जिसकी राख हो गई हो महीन पीस कर उक्त दवाओं के साथ काम में लावें ।

दसवां प्रकरण

छाती में पीब के रुक जाने का वर्णन ।

छाती में पीब का रुक जाना इस प्रकार का होता है कि छाती की सूजन या पसली की सूजन या फेंफड़े की सूजन फूट जाय और उसकी पीब उस जगहमें जो छाती और फेंफड़ेके मध्यमें है इकट्ठी होजाय और अपने गाढ़ेपन से उस पर्दे के मोटे होने के कारणसे जो फेंफड़े पर लिपटा हुआ है फेंफड़ेमें न टपक सके जिससे खखार में निकलजाय या मलमूत्र के मार्गसे निकलजाय और यह बात प्रगट है कि जो कुछ छाती के भीतर से थूकमें आता है उसका प्राकृतिक मार्ग फेंफड़ा है और जो कुछ फेंफड़े में हो या उसमें आवे उसके निकलनेका मार्ग फेंफड़ेका मुख है और मुखके मार्गसे बाहर आताहै परन्तु कभी फेंफड़े की पीब जिगर की रग में जो उसके भोजन का मार्ग है आती है और वहांसे जिगरमें उतर आतीहै फिर जो पतली होतीहै सो मूत्रके द्वारासे निकल जाती है और नहीं तो आंतों की तरफ चली जाती है इसलिये हकीमोंने कहा है थूक में पीब आने के रोग में मलमूत्र में पीब आने लगे और तिन मार्गों में मलमूत्र आता है यह सूजन से आरोग्य हो तो आरोग्यता का चिन्ह है और फेंफड़े से जिगरपर मवादके उतर आने की पहचान है और इस दशा में इस कारणसे कि पीब दिल के ऊपर को आता है तो थोड़ा सा पागलपन भी उत्पन्न हो जाता है क्योंकि जो कुछ जिगर से फेंफड़े में पहुंचता है दिल के मार्ग से आता है और पीब के उतर आने की भी यही रीति है

और जब गुलकन्द और दूसरी चीजों के काम में लाने से श्वास रुकने लगे तो योग्य चाटने की चीजों से उपाय करें और सफूफ सरतान (पिसी दवा जिसमें कीकड़ा पड़ा हो) भी लाभदायक है (उसकी विधि) कीकड़े की राख जिसका वर्णन हो चुका है २५ माशे, समग अरबी, गिलेअरमनी प्रत्येक १७॥ माशे, सफेद और काली खशखाश प्रत्येक ८॥ माशे, कतीरा १०॥ माशे, सब को पीस कर महीन करलें और सात माशे गधी का दूध या उन्नाब या खशखाश के शर्बत के साथ दें और कीकड़े के जलाने की यह विधि है कि उक्त कीकड़े को मिट्टी के पात्र में रखकर उसका मुख नमक और राख मिली हुई मिट्टी से कड़ा बंद करदें और एक रात दिन चूल्हे में अथवा भट्टी में रक्खें फिर निकाललें और उस जले हुए कीकड़े की जिसकी राख हो गई हो महीन पीस कर उक्त दवाओं के साथ काम में लावें।

दसवां प्रकरण

छाती में पीब के रुक जाने का वर्णन।

छाती में पीब का रुक जाना इस प्रकार का होता है कि छाती की सूजन या पसली की सूजन या फेफड़े की सूजन फूट जाय और उसकी पीब उस जगहमें जो छाती और फेफड़ेके मध्यमें है इकट्ठी होजाय और अपने गाढ़े पन से उस पर्दे के मोटे होने के कारणसे जो फेफड़े पर लिपटा हुआ है फेफड़ेमें न टपक सके जिससे खकार में निकलजाय या मल्मूत्र के मार्गसे निकलजाय और यह बात प्रगट है कि जो कुछ छाती के भीतर से धुसमें आता है उसका प्राकृतिक मार्ग फेफड़ा है और जो कुछ फेफड़े में हो या उसमें आवे उसके निकलनेका मार्ग फेफड़ेका मुख है और मुखके मार्गसे बाहर आताहै परन्तु कभी फेफड़े की पीब जिगर की रग में जो उसके भोजन का मार्ग है आती है और वहांसे जिगरमें उतर आतीहै फिर जो पतली होतीहै तो मूत्रके द्वारासे निकल जाती है और नहीं तो आंतों की तरफ चली जाती है इसलिये हकीमोंने कहा है थूक में पीब आने के रोग में मल्मूत्र में पीब आने लगे और तिन मार्गों में मल्मूत्र आता है वह सूजन से आरोग्य हो तो आरोग्यता का चिन्ह है और फेफड़े से जिगरपर मवादके उतर आने की पहचान है और इस दशा में इस कारणे से कि पीब दिल के ऊपर से आता है तो थोड़ा सा पागलपन भी उत्पन्न हो जाता है क्योंकि जो कुछ जिगर से फेफड़े में पहुंचता है दिल के मार्ग से आता है और पीब के उतर आने की भी यही रीति है

जिससे जल्द निकलजावें और जो मल मूत्र दोनों में आती है तो यह अद्भुत होती है कभी तो मूत्र के बहाने में परिश्रम करें और कभी दस्तों में परिश्रम करें या वह चीजें कि उसमें दोनों असर हों और मूत्र मलके लाने वाली दवाएं जैसी प्रकृति आयुर्वल ऋतु और दशा हो उसके अनुसार देनी चाहियें (लाभ) जब कि पीव पतली होजाय और फेफड़े पर टपकने लगे और थूक में सहज से न निकले और चिन्हों में न्यूनता न आवे और फेफड़े से जिगर की तरफ न झुके और मलमूत्र न निकले तो उसमें दो रीति होती हैं एक तो यह कि गले में सूजन होकर और श्वास रुककर रोगी मृत्यु को प्राप्त हो उसका यह चिन्ह है कि श्वास बहुत तंग होने लगे और थूकमें कुछ न निकले। दूसरे यह है कि फेफड़े में सूजन उत्पन्न हो और फेफड़े का अंग सड़ कर गलजाय उसका चिन्ह यह है कि सूजन फूटने पर चालीस दिन व्यतीत होने पर भी पीव साफ न हो इसलिये किताब शरह अस्बाब के बनाने वालेने कहाहै कि इस रोगमें से एक बात प्रगट होतीहै या तो गले में सूजन होजाय या फेफड़े में पीववाला घाव होजाय या लगातार थूकमें मवाद निकलकर साफ होजाय या मलमूत्रके मार्गसे जैसा कि कहागया है निकलजाय और जब उक्त उपायों से प्रयोजन सिद्ध नहो और फेफड़े की तरफ से पीव न टपके तो चाहियें कि छाती में जिस जगह कि पीव का स्थान है किसी पकले शस्त्रसे दागदें जिससे थोड़ी२ पीव टपकने की तरह दाग की जगहसे छाती की हड्डियोंमें से टपकती रहे (सूचना) जिस रोगीके इस रोग का मवाद मलमूत्रमें आनेलगे तो उचितहै कि जो चीजें कि मुख्य अर्थात् मार्गके बन्द करनेवाली और गाढ़ा करने वाली हैं उनको छोड़दें और परमेश्वर इसलिये है कि पीव सहजमें आती रहे और किसी अंगमें न ठहरे और दूसरी विपत्ति न लावे ॥

ग्यारहवा प्रकरण

पसलीकी सूजनों का

यहां उन सूजनों का ... जो पसलियों ... और छाती के
पट्ठोंमें और पसलियों ... भागों में होती ... इन अंगों में
उत्पन्न होतीहैं उनके नाम ... सिर्फ ...
पायगा परन्तु इन सब। ... बना ...
उनमें से प्रत्येक का सानेसरी ... लिखा अ ...

जिससे जल्द निकलजावें और जो मल मूत्र दोनों में आती है तो यह अद्भुत होती है कभी तो मूत्र के बहाने में परिश्रम करें और कभी दस्तों में परिश्रम करें या वह चीजें कि उसमें दोनों असर हों और मूत्र मलके लाने वाली दवाएं जैसी प्रकृति आयुर्वेल ऋतु और दशा हो उसके अनुसार देनी चाहियें (लाभ) जब कि पीब पतली होजाय और फेंफड़े पर टपकने लगे और थूक में सहज से न निकले और चिन्हों में न्यूनता न आवें और फेंफड़े से जिगर की तरफ न झुके और मलमूत्र न निकले तो उसमें दो रीति होती हैं एक तो यह कि गले में सूजन होकर और श्वास रुककर रोगी मृत्यु को प्राप्त हो उसका यह चिन्ह है कि श्वास बहुत तंग होने लगे और थूकमें कुछ न निकले । दूसरे यह है कि फेंफड़े में सूजन उत्पन्न हो और फेंफड़ का अंग सड़ कर गलजाय उसका चिन्ह यह है कि सूजन फूटने पर चालीस दिन व्यतीत होने पर भी पीब साफ न हो इसलिये किताब शरह अस्बाब के बनाने वालेने कहाहै कि इस रोगमें से एक बात प्रगट होतीहै या तो गले में सूजन होजाय या फेंफड़े में पीबवाला घाव होजाय या लगातार थूकमें मवाद निकलकर साफ होजाय या मलमूत्रके मार्गसे जैसा कि कहागया है निकलजाय और जब उक्त उपायों से प्रयोजन सिद्ध नहो और फेंफड़े की तरफ से पीब न टपके तो चाहिये कि छाती में जिस जगह कि पीब का स्थान है किसी पतले शस्त्रसे दागदे जिससे थोड़ी२ पीब टपकने की तरह दाग की जगहसे छाती की हड्डियोंमें से टपकती रहे (सूचना) जिस रोगीके इस रोग का मवाद मलमूत्रमें आनेलगे तो उचितहै कि जो चीजें कि गुदा अर्थात् मार्गके बन्द करनेवाली और गाढ़ा करने वाली हैं उनको छोड़दें और मतलब इसलिये है कि पीब सहजमें आती रहे और किसी अंगमें न ठहरे और दूसरी निर्बलता न आवे ॥

जिससे जल्द निकलजावें और जो मल मूत्र दोनों में आती है तो या मरहम होती है कभी तो मूत्र के बहाने में परिश्रम करें और कभी दस्तों में परिश्रम करें या वह चीजें कि उसमें दोनों असर हों और मूत्र मलके लाने वाली दवाएँ जैसी प्रकृति आयुर्बल ऋतु और दशा हो उसके अनुसार देनी चाहियें (लाभ) जब कि पीब पतली होजाय और फेफड़े पर टपकने लगे और थूक में सहज से न निकलै और चिन्हों में न्यूनता न आवे और फेफड़े से जिगर की तरफ न झुके और मलमूत्र न निकले तो उसमें दो रीति होती हैं एक तो यह कि गले में सूजन होकर और श्वास रुककर रोगी मृत्यु को प्राप्त हो उसका यह चिन्ह है कि श्वास बहुत तंग होने लगे और थूकमें कुछ न निकलै । दूसरे यह है कि फेफड़े में सूजन उत्पन्न हो और फेफड़े का अंग सड़ कर गलजाय उसका चिन्ह यह है कि सूजन फूटने पर चालीस दिन व्यतीत होने पर भी पीब साफ न हो इसलिये किताब शरह असबाब के बनाने वालेने कहाहै कि इस रोगमें से एक बात प्रगट होतीहै या तो गले में सूजन होजाय या फेफड़े में पीबनाल्मा पार होजाय या लगातार थूकमें मवाद निकलकर साफ होजाय या मलमूत्रके मार्गसे जैसा कि कहागया है निकलजाय और जब उक्त उपायों से प्रयोजन सिद्ध नहो और फेफड़े की तरफ से पीब न टपके तो चाहिये कि छाती में जिस जगह कि पीब का स्थान है किसी पतले शस्त्रसे दागदे जिससे थोड़ी२ पीब टपकने की तरह दाग की जगहसे छाती की हड्डियोंमें से टपकती रहै (सूचना) जिस रोगीके इस रोग का मवाद मलमूत्रमें आनेलगें तो चाहिये कि जो चीजें कि गुदा अर्थात् मार्गके बन्द करनेवाली और गाढ़ा करने वाली हैं उनको छोड़दें और यह भय इसलिये है कि पीब सहजमें आती रहै और किसी जगहमें न ठहरे और दूसरी विपत्ति न लावे ॥

ग्यारहवां प्रकरण

पसलीकी सूजनों का वर्णन

यहां उन सूजनों का वर्णन है जो पसलियों की झिल्लियोंमें और छाती के पट्ठोंमें और पसलियों के मध्यके भागों में होतीहैं ॥ जो सूजन इन अंगों में उत्पन्न होतीहै उनके नामों में जाननेवाले हकीमोंकी विरुद्धताहै जैसा आगे वर्णन किया जायगा परन्तु इसवास्ते किताब शरह असबाबके बनानेवालेकी कहावतके अनुसार उनमें से प्रत्येकका भिन्नभिन्न वर्णन किया जाताहै (नाम) पसलीकी द

जिससे जल्द निकलजावें और जो मल मूत्र दोनों में आती है तो यह मरहम होती है कभी तो मूत्र के बहाने में परिश्रम करें और कभी दस्तों में परिश्रम करें या वह चीजें कि उसमें दोनों असर हों और मूत्र मलके लाने वाली दवाएँ जैसी प्रकृति आयुर्बल ऋतु और दशा हो उसके अनुसार देनी चाहियें (लाभ) जब कि पीब पतली होजाय और फेंफड़े पर टपकने लगे और थूक में सहज से न निकले और चिन्हों में न्यूनता न आवे और फेंफड़े से जिगर की तरफ न झुके और मलमूत्र न निकले तो उसमें दो रीति होती हैं एक तो यह कि गले में सूजन होकर और श्वास रुककर रोगी मृत्यु को प्राप्त हो उसका यह चिन्ह है कि श्वास बहुत तंग होने लगे और थूकमें कुछ न निकले । दूसरे यह है कि फेंफड़े में सूजन उत्पन्न हो और फेंफड़े का अंग सड़ कर गलजाय उसका चिन्ह यह है कि सूजन फूटने पर चालीस दिन व्यतीत होने पर भी पीब साफ न हो इसलिये किताब शरह असबाब के बनाने वालेने कहाहै कि इस रोगमें से एक बात प्रगट होतीहै या तो गले में सूजन होजाय या फेंफड़े में पीबवाला घाव होजाय या लगातार थूकमें मवाद निकलकर साफ होजाय या मलमूत्रके मार्गसे जैसा कि कहागया है निकलजाय और जब उक्त उपायों से प्रयोजन सिद्ध नहो और फेंफड़े की तरफ से पीब न टपके तो चाहिये कि छाती में जिस जगह कि पीब का स्थान है किसी पतले शस्त्रसे दागदे जिससे थोड़ी२ पीब टपकने की तरह दाग की जगहमें छाती की हड्डियोंमें से टपकती रहे (सूचना) जिस रोगीके इस रोग का मवाद मलमूत्रमें आनेलगे तो उचितहै कि जो चीजें कि कुछ अर्थात् मार्गके बन्द करनेवाली और गाढा करने वाली हैं उनको छोड़दे और यह भय इसलिये है कि पीब सहजमें आती रहे और किसी अंगमें न ठहरे और दूसरी विपत्ति न लावे ॥

ग्यारहवां प्रकरण

पसलीकी सूजनों का वर्णन

यहां उन सूजनों का वर्णन है जो पसलियों की झिल्लियोंमें और छाती के पट्ठोंमें और पसलियों के मध्यके भागों में होतीहैं ॥ जो सूजन इन अंगों में उत्पन्न होतीहैं उनके नामों में पहिलेके हकीमोंकी विरुद्धताहै जैसा आगे वर्णन किया जायगा परन्तु यहांपर किताब शरह असबाबके बनानेवालेकी रायके अनुसार उनमें से प्रत्येकका मशहूर अलग वर्णन किया जाताहै (जात) पसलीकी सू

मवाद प्रवेश नहीं होसक्ता परन्तु पसलियों का अस्वाभाविक सूजन में जो पसलियों के अजले के मध्य में होती है उन अजलों का सूजजाना उचित है जो केवल खूनसे उत्पन्न हो क्योंकि अजलों (मछलियों) के भाग नर्मी और कठोरता में विरुद्ध है इसकारण से उसमें केवल खून और बादी वा खून और कफ का प्रवेश होना योग्य है इसी कारण से हम इसको चार भेदों में वर्णन करते हैं ।

पहिला भेद पसली की रक्तज सूजन का वर्णन ।

इसका चिन्ह खिंचावट बोझका पसलियोंके नीचे मालूम होना और मुखपर लालीहै इसमें नाड़ी बड़ी शीघ्र और बारर चलती है श्वास विशेष गर्मी से आताहै और थूकमें लाली होती है हकीम किरशीने कहा है कि थूक का रंग मवाद को बताता है अर्थात् मवाद की लाली तो खून के कारणसे है पीला पन पित्तके कारण से और लाली और पीलापन रक्त पित्त के इकट्ठा होने से है और कालापन जो बाहर से कोई धूआं आदि उसको काला न करदे तो बादी के कारण से है और ऐसेही ज्वर की बारी का अधिकता से पहचान सकते हैं कि किस प्रकार का मवाद है (इलाज) आरम्भ में मवाद के कम करने के लिये और यहां से फेरदेने के लिये दूसरी तरफ से बासलीक की फस्द खोलें और तीसरे दिन पीछे फिर फस्द खोलें परन्तु उसी तरफ से जिससे जो मवाद उसी अंगमें ठहरा हुआ है निकलजाय और किर्मीर हकीम के समीप यह है कि दूसरी फस्द में इतना खून निकालें कि खूनमें कालापन प्रगट हो या बिलकुल काला निकलने लगे और जब ऐसा खून आने लगे और शक्ति सहायक होतो निकलने दें क्योंकि रोग का मवाद है और कोई बहुत खून निकालने के लिये आज्ञा नहीं देते और अति उत्तम यह है कि रोगी की दशा को देखें जो इस इलाज के लायक हैं तो इस में पहिले कि खून में कालापन प्रगट हो रग को बंद न करें परन्तु धीरे २ निकालें जिससे बेहोशी न हो जाय और जो शक्ति हीन हो और इस सूरत में कुछ कालापन प्रगट न हो तो जितना योग्य हो निकालें और बन्द करदें और कालापन की परीक्षा न करें और बहुधा ऐसा होता है कि मवादकी गर्मी एक दिन में विशेष न रहे इसी लिये किताब अक्सीर का बनाने वाला लिखता है कि पहिले दिन दूसरी तरफ से खून निकालें एक दिन रात के पीछे दूसरी तरफ से इस लिये कि दूसरी ओर की फस्द मवाद के ठहरने न देवे

मवाद प्रवेश नहीं होसक्ता परन्तु पसलियों का अस्वाभाविक सूजन में जो पसलियों के अजले के मध्य में होती है उन अजलों का सूजजाना उचित है जो केवल खूनसे उत्पन्न हो क्योंकि अजलों (मछलियों) के भाग नर्मी और कठोरता में विरुद्ध हैं इसकारण से उसमें केवल खून और बादी या खून और कफ का प्रवेश होना योग्य है इसी कारण से हम इसको चार भेदों में वर्णन करते हैं ।

पहिला भेद पसली की रक्तज सूजन का वर्णन ।

इसका चिन्ह खिंचावट बोझका पसलियोंके नीचे मालूम होना और मुखपर लालीहै इसमें नाडी बडी शीघ्र और बारर चलती है श्वास विशेष तंगी से आताहै और थूकमें लाली होती है हकीम किरशीने कहा है कि थूक का रंग मवाद को बताता है अर्थात् मवाद की लाली तो खून के कारणसे है पीला पन पित्तके कारण से और लाली और पीलापन रक्त पित्त के इकट्ठा होने से है औरकालापन जो बाहर से कोई धूआं आदि उसको काला न करदे तो बादी के कारण से है और ऐसेही ज्वर की बारी का अधिकता से पहचान सकते हैं कि किस प्रकार का मवाद है (इलाज) आरम्भ में मवाद के कम करने के लिये और यहां से फेरदेने के लिये दूसरी तरफ से बासलीक की फस्द खोलें और तीसरे दिन पीछे फिर फस्द खोलें परन्तु उसी तरफ से जिससे जो मवाद उसी अगमें ठहरा हुआ है निकलजाय और जिमीर हकीम के समीप यह है कि दूसरी फस्द में इतना खून निकालें कि खूनमें कालापन प्रगट हो या बिलकुल काला निकलने लगे और जब ऐसा खून आने लगे और शक्ति सहायक होतो निकलने दे क्योंकि रोग का मवाद है और कोई बहुत खून निकालने के लिये आज्ञा नहीं देते और अति उत्तम यह है कि रोगी की दशा को देखे जो इस इलाज के लायक है तो इस से पहिले कि खून में कालापन प्रगट हो रग को बंद न करें परन्तु धीरे २ निकालें जिससे बेहोशी न हो जाय और जो शक्ति हीन हो और उस सूरत में कुछ कालापन प्रगट न हो तो जितना योग्य हो निकालें और फस्द करदें और कालापन की परीक्षा न करें और बहुधा ऐसा होता है कि मवादकी गर्मी एक दिन में निकल न सके इसी लिये किताब अर्बाह का बनानेवाला लिखता है कि पहिले दिन दूसरी तरफ से खून निकालें एक दिन रात के पीछे दूसरी तरफ से इस लिये कि दूसरी ओर की फस्द मवाद के ठहरने के देखें

दूसरी फस्द के खोलने की आज्ञा सूनी में केवल इसलिये है कि खून दूर हो जाय सो जो बुद्धिमान हकीम यह जाने कि मवाद बहुत नहीं है और खिंच आने का भय भी नहीं है तो हो सक्ता है कि सूनी में भी आरम्भ में दूसरी ओर से फस्द खोलें प्रगट हो कि जब तक फस्द या दस्तों से मवाद न निकाला गया हो तब तक कोई शर्बत बनफशा आदि न दें क्योंकि शर्बत आमाशय और आंतों में अपना असर नहीं करता है किन्तु छाती और उनके ओर पास में भाफ के परमाणु उत्पन्न कर देता है हां जो और उचित दवा मिला कर काम में लावें तो अति उत्तम है और जो तबियत के नर्म करने की आवश्यकता हो और उचित हो तो नीचे लिखा खिसांदा मिवाये यथा बनफशा, गावजबां, उन्नाव, लिसोढा, दाने निकली मुनक्का, मुलहटी, खितमी, खब्बाजी अजीर, जूफा, सौसन की जड, अमलतास का गूदा शीरखिश्त, बादाम का तेल इनका खिसांदा बनावे। तबियत के नर्म करने के लिये हुकना भी अति उत्तम है उसकी विधि यह है कि बनफशा, नीलोफर, गेहूं की भुसी, खितमी, खब्बाजी, उन्नाव, लिसोढा, चुकन्दर का पानी, अमलतास, तुरजबीन, कांजी, गुलरोगन, विधिपूर्वक काम में लावें और सब सूजनों के रोग में दस्तावर दवा पिलाने की अपेक्षा हुकने से तबियत को नर्म करना अति उत्तम है और यह लाभ हर जगह याद रखना चाहिये कि पसली की रक्त पित्त से उत्पन्न हुई सूजन का इलाज एकसा है और दोनों में खून का निकलना लाभदायक है सो रक्त की सूजन में तो प्रगट है और पित्त की सूजन में इस कारण से भी कि फस्द खोलने में दस्तावर दवा के देने से भय बहुत कम है हकीम लोग उसकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि ऐसा हो जाता है कि दस्तावर दवा अपना प्रभाव नहीं करती है और दोषों को हिलाकर घबराहट उत्पन्न कर देती है और लाभ यह है कि पसली की पित्तज सूजन में दर्द की जगह देखे जो दर्द छाती की हड्डियों की तरफ और गर्दन की हसलीकी तरफ झुका हुआ हो तो जुल्लाब देना अति उत्तम है और जो पसलियों के सिरों की तरफ और आमाशय की तरफ झुका हुआ हो तो जुल्लाब देना अति उत्तम है और जबतक कि आवश्यकता विशेष न हो तबतक प्यास को बुझाने के लिये खुर्फा और तरबूज का पानी आदि काम में न लावें क्योंकि यह पकने को रोकेगा और कफ को निकलने न देगा किन्तु ऐसी दवा देना चाहिये जो कफ को सहज से निकाले और पकने का कारण हो जैसे शर्बत जूफा आदि और सच तो यह है कि क-

दूसरी फस्द के खोलने की आज्ञा सूनी में केवल इसलिये है कि खून दूर हो जाय सो जो बुद्धिमान हकीम यह जाने कि मवाद बहुत नहीं है और खिंच आने का भय भी नहीं है तो हो सक्ता है कि सूनी में भी आरम्भ में दूसरी ओर से फस्द खोलें प्रगट हो कि जब तक फस्द या दस्तों से मवाद न निकाला गया हो तब तक कोई शर्बत बनफशा आदि न दें क्योंकि शर्बत आमाशय और आंतों में अपना असर नहीं करता है किन्तु छाती और उनके और पास में भाफ के परमाणु उत्पन्न कर देता है हां जो और उचित दवा मिला कर काम में लावें तो अति उत्तम है और जो तबियत के नर्म करने की आवश्यकता हो और उचित हो तो नीचे लिखा लिसाढ़ा पिलावै यथा बनफशा, गावजवां, उन्नाव, लिसौढा, दाने निकली मुनक्का, मुलहटी, खितमी, खब्बाजी अजीर, जूफा, सौसन की जड, अमलतास का गूदा शीरखिश्त, बादाम का तेल इनका लिसांढा बनावे। तबियत के नर्म करने के लिये हुकना भी अति उत्तम है उसकी विधि यह है कि बनफशा, नीलोफर, गेहूं की भुसी, खितमी, खब्बाजी, उन्नाव, लिसौढा, चुकन्दर का पानी, अमलतास, तुरजबीन, कांजी, गुलरोगन, विधिपूर्वक काम में लावें और सब सूजनों के रोग में दस्तावर दवा पिलाने की अपेक्षा हुकने से तबियत को नर्म करना अति उत्तम है और यह लाभ हर जगह याद रखना चाहिये कि पसली की रक्त पित्त से उत्पन्न हुई सूजन का इलाज एकसा है और दोनों में खून का निकलना लाभदायक है सो रक्त की सूजन में तो प्रगट है और पित्त की सूजन में इस कारण से भी कि फस्द खोलने में दस्तावर दवा के देने से भय बहुत कम है हकीम लोग उसकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि ऐसा हो जाता है कि दस्तावर दवा अपना प्रभाव नहीं करती है और दोषों को हिलाकर घबराहट उत्पन्न कर देती है और उत्तम यह है कि पसली की पित्तज सूजन में दर्द की जगह देखे जो दर्द छाती की हड्डियों की तरफ और गर्दन की हसलीकी तरफ झुका हुआ हो तो जुल्लाब देना अति उत्तम है और जो पसलियों के सिरों की तरफ और आमाशय की तरफ झुका हुआ हो तो जुल्लाब देना अति उत्तम है और जबतक कि आवश्यकता विशेष न हो तबतक प्यास को बुझाने के लिये खर्फा और तरबूज का पानी आदि काम में न लावें क्योंकि यह पकने को रोकेगा और कफ को निकलने न देगा किन्तु ऐसी दवा देना चाहिये जो कफ को सहज से निकाले और पकने का कारण हो जैसे शर्बत जूफा आदि और सच तो यह है कि कफ

वर्णन किये गये हैं प्रगट होंगे और जानना चाहिये कि पसली की सूजन की तथा उनके अन्य प्रकारों की दशा ऐसीही होती है जैसी दूसरी सूजनों की दशा होती है और सब सूजनों की दशा तीन कारणों से रहित नहीं है या तो नष्ट होजाय या पीव पड़जाय या कड़ी होजाय परन्तु यह पसली की सूजन कभी २ होती है जो कड़ी हो और फूटकर साफ होजाय और जिस सूजन में पहले दिन से कची पतली रतूबत आने लगे तो जानना चाहिये कि जल्द पककर साफ होजायगी और यह चौथे दिन पकजाती है ऐसेही मवाद का देर में निकलना रोगके बढनेका चिन्ह है और जिस रोगी के थूक में पहले दूसरे या तीसरे दिन मवाद प्रगट होंगे उसके पीछे सात दिन में साफ होजायगी और जो चौदह दिन में साफ न होगी तो पीव पड़जायगी और जो पीव चालीस दिन में साफ न होगी तो सिल अर्थात् फेंफडे में घाव उत्पन्न करेगी और जिस रोगीकी पसली की सूजन का मवाद पीव होजाय तो उसकी दशा वही होगी जिसे फेंफडे के घाव और सूजनके प्रकरण में वर्णन करचुके हैं और जो पसलीकी सूजन सुगम है तो उसके साफ होनेमें बहुतसे बहुत चौदह अथवा बीस दिन लगेंगे और जो पसली की सूजन कड़ी है तो वह जल्दी से जल्दी चालीस दिन से साठ दिनतक साफ होजातीहै परन्तु इस समय तक शरीरमें शक्ति कठिनता से रहती है और ज्वर इतना विशेष गर्म होताहै मवाद उतनाही जल्द पकताहै और जल्द निकल जाताहै और पीव पड़ने का यह चिन्ह है कि दर्द में विशेषता श्वास में तंगी, ज्वर में बहुत गर्मी, शक्ति में निर्बलता, जीभ में खुरखुरापन, मुख में सूखापन, भूखका नष्ट होना, नींदका न आना, बेहोशी की बातें करना और पसलियों में भारापन आदि होते हैं और विशेष पीव के पीछे ज्वर और दर्द कम होजाय और पसलियों में विशेष भारापन मालूम हो और फूटने के समय नाड़ी चौड़ी और ज्वर तेज होजाता है और जाड़ा विशेष चढ आता है और सूजन फूटजाती है और प्रगट है कि जब यह चिन्ह अच्छे चिन्हों के उपरान्त प्रगट हुए हों अथवा कफ में गाढापन और रंग अच्छा हो और अच्छे चिन्ह पायेजांय तो मनुष्य कार्य में पीव पड़नेका चिन्ह है और जब ऐसा हो तो कुछ भय न करै और जो यह चिन्ह पीव पड़नेके कारणसे न हो तो उनके पीछे न्यूनता न होगी और रोगी जल्द मरजायगा और जब कि पस्द, दस्तों और कफके निकलने से दर्द और दूसरे चिन्ह नष्ट न हो और इसके सिवाय शक्ति बलवान्हो और आरोग्यताके चिन्ह प्रगट हों तो जानना चाहिये कि सूजन में पीव पड़जायगा

वर्णन किये गये हैं प्रगट होंगे और जानना चाहिये कि पसली की सूजन की तथा उनके अन्य प्रकारों की दशा ऐसीही होती है जैसी दूसरी सूजनों की दशा होती है और सब सूजनों की दशा तीन कारणों से रहित नहीं है या तो नष्ट होजाय या पीव पड़जाय या कड़ी होजाय परन्तु यह पसली की सूजन कभी २ होती है जो कड़ी हो और फूटकर साफ होजाय और जिस सूजन में पहले दिन से कची पतली रतूबत आने लगे तो जानना चाहिये कि जल्द पककर साफ होजायगी और यह चौथे दिन पकजाती है ऐसेही मवाद का ढेर में निकलना रोगके बढनेका चिन्ह है और जिस रोगी के थूक में पहले दूसरे या तीसरे दिन मवाद प्रगट होंगे उसके पीछे सात दिन में साफ होजायगी और जो चौदह दिन में साफ न होगी तो पीव पड़जाय- गी और जो पीव चालीस दिन में साफ न होगी तो सिल अर्थात् फेंफड़े में घाव उत्पन्न करेगी और जिस रोगीकी पसली की सूजन का मवाद पीव होजाय तो उसकी दशा वही होगी जिसे फेंफडे के घाव और सूजनके प्रकरण में वर्णन करचुके हैं और जो पसलीकी सूजन सुगम है तौ उसके साफ होनेमें बहुतसे बहुत चौदह अथवा बीस दिन लगेंगे और जो पसली की सूजन कड़ी है तो वह जल्दी से जल्दी चालीस दिन से साठ दिनतक साफ होजातीहै परन्तु इस समय तक शरीरमें शक्ति कठिनता से रहती है और ज्वर इतना विशेष गर्म होताहै मवाद उतनाही जल्द पकताहै और जल्द निकल जाताहै और पीव पड़ने का यह चिन्ह है कि दर्द में विशेषता श्वास में तंगी, ज्वर में बहुत गर्मी, शक्ति में निर्बलता, जीभ में खुरखुरापन, मुख में सूखापन, भूखका नष्ट होना, नींदका न आना, बेहोशी की बातें करना और पसलियों में भारापन आदि होते हैं और विशेष पीव के पीछे ज्वर और दर्द कम होजाय और पसलियों में विशेष भारापन मालूम हो और फूटने के समय नाड़ी चौड़ी और ज्वर तेज होजाता है और जाड़ा विशेष चढ आता है और सूजन फूटजाती है और प्रगट है कि जब यह चिन्ह अच्छे चिन्हों के उपरान्त प्रगट हुए हों अ- थवा कफ में गाढ़ापन और रंग अच्छा हो और अच्छे चिन्ह पायेजांय तो बहुधा कार्य में पीव पड़नेका चिन्ह है और जब ऐसा हो तो कुछ भय न करे और जो यह चिन्ह पीव पड़नेके कारणसे न हो तो उनके पीछे न्यूनता न होगी और रोगी जल्द मरजायगा और जब कि पस्द, दस्तों और कफके निकलने से दर्द और दूसरे चिन्ह नष्ट न हो और इसके सिवाय शक्ति बरवानहो और आरोग्यताके चिन्ह प्रगट हों तौ जानना चाहिये कि सूजन में पीव पड़जायगा

निर्वलताके कारण से निकालने लगै और ऐसे दूर करने का कारण वमन या क्रोध आदि का तीक्ष्ण वेग होताहै और पकावसे पहले इसका दूर होना अच्छा नहीं होताहै किंतु उसमें भय होताहै (विशेष द्रष्टव्य) जब कि लेपों और सिकावसे दर्द कम नहो किन्तु वढजाय तो जानना चाहिये कि शरीर मवाद से भराहुआ है और मवादके निकालने की आवश्यकताहै मुख्यकर फस्द की और जब कि फस्द खोलें और आवश्यकतानुसार खून निकालै और जुलाब दें और फिर भी रोगके चिन्ह न जांयतो पीव पड़ने का चिन्हहै फिर दूसरी वार फस्द न खोलना चाहिये क्योंकि दूसरी वार फस्द खोलनेसे शक्ति निर्वल होजायगी और खून की गर्मी की सहायता जाती रहेगी और सूजन कची रहजायगी और कष्ट विशेष पहुचावेगी और जो विना फस्द खोलनेके मवाद पकजाय और कफ अच्छा आवे और शक्तिमें निर्वलता होतो फस्द न खोलें और जिस रोगीके लिये मवादके निकालने की आवश्यकता पडे तो हुकना अति उत्तम है और जो रोगी की शक्ति ज्यों की त्यों है और फस्द खोलनेके पीछे अचेत होजाय या श्वास तंग होतो जानना चाहिये कि रोग का मवाद कम नहीं हुआ इसलिये इस सूजन में हुकने का उपाय उचितहै और बहुधा ऐसा होताहै कि प्रत्येकवार या दो वार तबियत खुलजाय और फस्द की आवश्यकता न रहै और जब देखें कि मवाद पकगया तो पीव पडनेसे पहिले उसके दूर करने का उपाय करें और गर्म पानी और पतला जौका आटा घूरे और मक्खनके साथ या शहदके साथ खाना और उसी करवट लेटना कफ को थूक में निकालने की सहायता करताहै, तथा छाती और पसली को मलरहित करता है ॥

मवाद को पकाने वाले लेप की विधि ।

वनफशा, खितमी प्रत्येक १ भाग, सौसन की जड दो भाग, जौका आटा, बाकला का आटा प्रत्येक १॥ भाग, वाबूना १ भाग, इन सब को मोम और वनफशा के तेल में मिलावै जैसी कि रीति है और जो गर्मी कम हो तो वनफशा के तेल की जगह सौसन या नर्गिस का तेल मिलावें और जो गर्मी विशेष हो तो अलसी के बीज, नीलोफर के पत्ते, सफेद फूल के पत्ते, तर मीठी पीआ के पत्ते मयपुख्ता के वदले में बढावें । किताव दस्तूरुल इलाज में लिखा है कि गर्मी को शान्त करना इस के सब रोगों में अवश्य है । गर्मी के शान्त करने के लिये ईसबगोल का लुआब, लम्बी घीआ के

निर्बलताके कारण से निकालने लगे और ऐसे दूर करने का कारण वमन वा क्रोध आदि का तीक्ष्ण वेग होताहै और पकावसे पहले इसका दूर होना अच्छा नहीं होताहै किंतु उसमें भय होताहै (विशेप द्रष्टव्य) जब कि लेपों और सिकावसे दर्द कम नहो किन्तु वढजाय तो जानना चाहिये कि शरीर मवाद से भराहुआ है और मवादके निकालने की आवश्यकताहै मुख्यकर फस्द की और जब कि फस्द खोलें और आवश्यकतानुसार खून निकाले और जुला वदें और फिर भी रोगके चिन्ह न जांयतो पीव पड़ने का चिन्हहै फिर दूसरी वार फस्द न खोलना चाहिये क्योंकि दूसरी वार फस्द खोलनेसे शक्ति निर्बल होजायगी और खून की गर्मी की सहायता जाती रहेगी और सूजन कची रहजायगी और कष्ट विशेप पहुचावेगी और जो विना फस्द खोलनेके मवाद पकजाय और कफ अच्छा आवै और शक्तिमें निर्बलता होतो फस्द न खोलें और जिस रोगीके लिये मवादके निकालने की आवश्यकता पडे तो हुकना अति उत्तम है और जो रोगी की शक्ति ज्यों की त्यों है और फस्द खोलनेके पीछे अचेत होजाय या श्वास तंग होतो जानना चाहिये कि रोग का मवाद कम नहीं हुआ इसलिये इस सूजन में हुकने का उपाय उचितहै और बहुधा ऐसा होताहै कि प्रत्येकवार या दो वार तवियत खुलजाय और फस्द की आवश्यकता न रहै और जब देखें कि मवाद पकगया तो पीव पड़नेसे पहिले उसके दूर करने का उपाय करें और गर्म पानी और पतला जौका आटा घूरे और मक्खनके साथ या शहदके साथ खाना और उसी करवट लेटना कफ को थूक में निकालने की सहायता करताहै, तथा छाती और पसली को मलरहित करता है ॥

मवाद को पकाने वाले लेप की विधि ।

वनफशा, खितमी प्रत्येक १ भाग, सौसन की जड़ दो भाग, जौका आटा, बाकला का आटा प्रत्येक १॥ भाग, बाबूना १ भाग, इन सब को मोम और बनफशा के तेल में मिलावें जैसी कि रीति है और जो गर्मी कम हो तो बनफशा के तेल की जगह सौसन या नर्गिस का तेल मिलावें और जो गर्मी विशेप हो तो अलसी के बीज, नीलोफर के पत्ते, सफेद फूल के पत्ते, तर मीठी घीआ के पत्ते मयपुख्ता के बदले में बढावें । किताव दस्तूरुल इलाज में लिखा है कि गर्मी को शान्त करना इस के सब रोगों में अवश्य है । गर्मी के शान्त करने के लिये ईसवगोल का लुआब, लम्बी घीआ के

तेजी नहीं आजाती तब तक झिल्लियों में आकर सूजन उत्पन्न नहीं करसक्ता इसी कारण से पसली की सूजन बादी और कफ के मवाद से बहुत कम उत्पन्न होती है और इस में बोझ के साथ दर्द, हलका ज्वर चुभन कम होती है और थूक सफेद होता है परन्तु आरम्भ में कुछ थोड़ी लाली लिये होता है क्योंकि कफ में खून मिल जाता है और कफ के सब भेदों से अच्छा है क्यों कि कफ में गर्मी और तेजी बहुत कम है और इसके सिवाय जल्द पक जाता है (इलाज) फस्द खोले और जो कुछ पहले भेदों में वर्णन किया गया है तबियत का मुलायम करना और लेप तरेडे और गर्मी की सतुष्टता के लिये जैसी आवश्यकता हो काम में लावैं परन्तु चाहिये कि गर्मी की शांति के लिये अधिकता न करे जिससे मवाद में गाढ़ापन और कच्चापन न पढ़े और रोगी को आज्ञा दे कि जो के पानी में थोड़े से चने और सौंफ औटा कर पीवे और शर्बत जूफा चाटे जिससे मवाद निकल जाय और नर्म हो जाय।

अस्वाभाविक पसली की सूजनों का वर्णन।

इसे मुगालत और गैरसही भी कहतेहैं और यह इसप्रकारका होता है कि जो अजले पसलियों के मध्य में है वह सूजजाय या उस झिल्ली में जो पसलियों को ऊपर से ढके हुए है और उनपर लगी हुई है सूजन उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि छाती में सब चौदह पसलियां हैं प्रत्येक तरफ सात सात हैं और दो क मध्य में एक अजला (मछली) है और छाती इन्हीं अजलों से फैलती और सुकड़ती है सो इस दशा में सब अजलें बारह हैं जो पसलियों के मध्य में हैं जैसे वह झिल्ली जो पसलियों के भीतर है वैसीही दूसरी झिल्ली उनकी पीठ पर है सो जो सूजन इन अजलों में या ऊपर की झिल्ली में होती है उसका नाम जातुल गैर खालिस होता है जैसे कि भीतर की झिल्ली की सूजन का और भीतर वाले पर्दे की सूजन का नाम खालिस है और गैर खालिस के कारण वही है जो खालिस में वर्णन किये गयेहैं मुख्य कर के गैर खालिस भीतर की झिल्ली की सूजनों के हैं परन्तु अजले की सूजन इसके विरुद्ध है वह केवल खूनसे भी होती है और पहले सर्ग में भी इसकी ओर संकेत किया गया है अब जान लेना चाहिये कि जो सूजन अजले में होगी तो उसका यह चिन्ह है कि चुभन और नाड़ी का शीघ्र और लगातार चलना गैर खालिस पसली की सूजन के कारण से बहुत कम होगा और थूकमें मवाद नहीं आता है और श्वास तंग होजाता है और कभी २ अजलों

तेजी नहीं आजाती तब तक झिल्लियों में आकर सूजन उत्पन्न नहीं करसक्ता इसी कारण से पसली की सूजन वादी और कफ के मवाद से बहुत कम उत्पन्न होती है और इस में बोझ के साथ दर्द, हलका ज्वर चुभन कम होती है और थूक सफेद होता है परन्तु आरम्भ में कुछ थोडी लाली लिये होता है क्योंकि कफ में खून मिल जाता है और कफ के सब भेदों से अच्छा है क्यों कि कफ में गर्मी और तेजी बहुत कम है और इसके सिवाय जल्द पक जाता है (इलाज) फस्द खोले और जो कुछ पहले भेदों में वर्णन किया गया है तबियत का मुलायम करना और लेप तरेडे और गर्मी की सतुष्टता के लिये जैसी आवश्यकता हो काम में लावै परन्तु चाहिये कि गर्मी की शांति के लिये अधिकता न करे जिससे मवाद में गाढापन और कच्चापन न पडे और रोगी को आज्ञा दे कि जौ के पानी में थोडे से चने और सौंफ औटा कर पीवे और शर्बत जूफा चाटे जिससे मवाद निकल जाय और नर्म हो जाय ।

अस्वाभाविक पसली की सूजनों का वर्णन ।

इसे मुगालत और गैरसही भी कहतेहैं और यह इसप्रकारका होता है कि जो अजले पसलियों के मध्य में है वह सूजजाय या उस झिल्ली में जो पसलियों को ऊपर से ढके हुए हैं और उनपर लगी हुई हैं सूजन उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि छाती में सब चौदह पसलियां हैं प्रत्येक तरफ सात सात हैं और दो के मध्य में एक अजला (मछली) है और छाती इन्हीं अजलों से फैलती और सुकडती है सो इस दशा में सब अजलें ग्यारह हैं जो पसलियों के मध्य में हैं जैसे वह झिल्ली जो पसलियों के भीतर है वैसीही दूसरी झिल्ली उनकी पीठ पर है सो जो सूजन इन अजलों में या ऊपर की झिल्ली में होती है उसका नाम जातुल गैर खालिस होता है जैसे कि भीतर की झिल्ली की सूजन का और भीतर वाले पर्दे की सूजन का नाम खालिस है और गैर खालिस के कारण वही है जो खालिस में वर्णन किये गयेहैं मुख्य कर के गैर खालिस भीतर की झिल्ली की सूजनों के हैं परन्तु अजले की सूजन इसके विरुद्ध है वह केवल खूनसे भी होती है और पहले सर्ग में भी इसकी ओर संकेत किया गया है अब जान लेना चाहिये कि जो सूजन अजले में होगी तो उसका यह चिन्ह है कि चुभन और नाडी का शीघ्र और लगातार चलना गैर खालिस पसली की सूजन के कारण से बहुत कम होगा और थूकमें मवाद नहीं आता है और श्वास तंग होजाता है और कभी २ अजलों

तो इसी लिये इस रोग वाले को उचित है कि कोई गति न करे क्योंकि गति में बड़े २ श्वास लेने की आवश्यका पड़ती है और कठिनता के कारण उसी समय श्वास घुटकर मृत्यु को प्राप्त होजाता है और क्यों कि यह रोग श्वास घुटने के कारण से मृत्यु की दशा को पहुंचा देता है इससे इसका नाम खानका रक्खा गयाहै। इसके अन्य चिन्ह यह हैं कि रोगी किसी दशा पर न लेट सकें और जब खांसी आवे तो कष्ट की अधिकता से अचेत होजाय (इलाज) जो कुछ पहले सर्ग में वर्णन होचुका है काम में लावें और दोनों हाथों की फस्द खोलना उचित समझें।

चौथा सर्ग शूशा का वर्णन।

इसका यह अर्थ है कि जो पर्दा पसलियों के भीतर है उसमें सूजन उत्पन्न हो और कोई २ शूसा को जातुलजन्बसही कहते हैं। शूशा का चिन्ह यह है कि रोगी गति न कर सके और किसी प्रकार न लेट सके और जानना चाहिये कि शूसा की पीव छाती और फेफड़े की तरफ बहुतकम चढ़ा करती है क्योंकि फेफड़ा इस पर्दे से बहुत देर तक नहीं मिलता और यह बात प्रगट है कि फेफड़ा बहुत से मवाद को उन अंगों से जो उसके समीप और उससे मिले हुए हैं उससमय खींचता है जो बड़ी देर तक मिले रहें और इसके कारण भी वही हैं कि जो जातुल जन्ब सही में वर्णन किये गये हैं और ऐसेही प्रत्येक कारण के चिन्ह उक्त वर्णन से प्रगट हैं (इलाज) अति उत्तम उपाय यह है कि पहले जुलाब दे उन्नाव, अजीर, खितमी बनफशा लिसौड़ा, इसराज, मुनक्का दाने निकली, मीठे आलू, चुकन्दर का पानी, गेहूं की भूसी, अमल तास, लाल बूरा, गुलरौगन, इनको विधिपूर्वक काम में लावें और उन लेपों के लगाने से कि जो मवाद के नष्ट करने वाले हों या खींचने वाले हों या मवाद के अधिक पकाने वाले हों सावधानी रक्खें क्योंकि यह हानिकारक हैं और हर प्रकार से इसबात का परिश्रम करें कि मवाद त्वचा के ऊपर निकल आवे इसकी यह रीति है कि धारे या सिंगियां लगावें और उसके पीछे अजीर और राई का लेपकरें जिससे सूजन पायल होजाय और पीव निकल जाय और बाकी इलाज उसी प्रकार का है जो जातुलजन्ब (पसली की सूजन) में वर्णन किया गया है अब जानना चाहिये कि जो कारण बलवान हो तो बासलीक की फस्द खोलना अवश्य है और दुबना फस्द खोलने और दस्तों के कराने से इसलिये अति उत्तम है कि उनमें

ती इसी लिये इस रोग वाले को उचित है कि कोई गति न करे क्योंकि गति में पड़े २ श्वास लेने की आवश्यका पड़ती है और कठिनता के कारण उसी समय श्वास घुटकर मृत्यु को प्राप्त होजाता है और क्यों कि यह रोग श्वास घुटने के कारण से मृत्यु की दशा को पहुंचा देता है इससे इसका नाम खानका रक्खा गयाहै। इसके अन्य चिन्ह यह हैं कि रोगी किसी दशा पर न लेट सकें और जब खांसी आवे तो कष्ट की अधिकता से अचेत होजाय (इलाज) जो कुछ पहले सर्ग में वर्णन होचका है काम में लावें और दोनों हाथों की फस्द खोलना उचित समझें।

चौथा सर्ग शूशा का वर्णन।

इसका यह अर्थ है कि जो पर्दा पसालियों के भीतर है उसमें सूजन उत्पन्न हो और कोई २ शूसा को जातुलजन्बसही कहते हैं। शूशा का चिन्ह यह है कि रोगी गति न कर सके और किसी प्रकार न लेट सके और जानना चाहिये कि शूसा की पीव छाती और फेफड़े की तरफ बहुतकम बहा करती है क्योंकि फेफड़ा इस पर्दे से बहुत देर तक नहीं मिलता और यह बात प्रगट है कि फेफड़ा बहुत से मवाद को उन अंगों से जो उसके समीप और उससे मिले हुए हैं उससमय खींचता है जो बड़ी देर तक मिले रहें और इसके कारण भी वही हैं कि जो जातुल जन्ब सही में वर्णन किये गये हैं और ऐसेही प्रत्येक कारण के चिन्ह उक्त वर्णन से प्रगट हैं (इलाज) अति उत्तम उपाय यह है कि पहले जुलाब दे उन्नाब, अजीर, खितमी बनफशा लिसौड़ा, हसराज, मुनक्का दाने निकली, मीठे आलू, चुकन्दर का पानी, गेहूं की भूसी, अमल तास, लाल बूरा, गुलरोगन, इनको विधिपूर्वक काम में लावें और उन लेपों के लगाने से कि जो मवाद के नष्ट करने वाले हों या खींचने वाले हों या मवाद के अधिक पकाने वाले हों सावधानी रक्खें क्योंकि यह हानिकारक हैं और हर प्रकार से इसबात का परिश्रम करें कि मवाद त्वचा के ऊपर निकल आवे इसकी यह रीति है कि धारे या सिंगिया लगावें और उसके पीछे अजीर और राई का लेपकरें जिससे सूजन पायल होजाय और पीव निकल जाय और बाकी इलाज उसी प्रकार का है जो जातुल्जन्ब (पसली की सूजन) में वर्णन किया गया है अब जानना चाहिये कि जो कारण बलवान हो तो बासलीक की फस्द खोलना अवश्य है और दूसना फस्द खोलने और दस्तों के कराने से इसलिये अति उत्तम है कि उसमें

कशा, बाबूना, सोया, अलसी के बीज, मैंथी के बीज, जौं का चून सब का चूर्ण बना कर थोडे से पानी में आटा ले और मीठा तेल मिला कर दर्द की जगह गुनगुना लेप करै।

पांचवां सर्ग जातुस्सदर और जातुल अर्ज का वर्णन।

जानना चाहिये कि छाती में एक पर्दा है जो अजामुलकुम अर्थात् छाती के मध्य की हड्डियों के बराबर और साम्हने से निकला है और उस का दूसरा किनारा गजरूफ हजरी है इस के दो भाग हो गये हैं एक भाग तो पिछली तरफ और एक छाती की तरफ है और यह दोनों उस जगह तक पहुंचे हैं जहां हसली मिली है और वहां जाकर आपस में मिल गये हैं और असल में यह दोनों झिल्ली हैं जो इस जगह में बटगई हैं सो वह भाग जो छाती पर रक्खा है सूजजाय तो उसे जातुस्सदर कहते हैं और जो उस भाग में जो पीठ की तरफ गुडियों पर रक्खा हुआ है सूजजाय तो जाआतुल अर्ज कहते हैं। फिर जातुस्सदर का यह चिन्ह है कि रोगी को अधिक दर्द दोनों हसलियों के मिलने की जगह से आमाशय के मुख तक मालम हो और सीने के बल लेटना पावों की ओर देखना और सिर उठाना सभव न हो परंतु करवट से और चित्त लेट सकै और यह जगह जहां गर्दन की हनली के दोनों सिरे आपस में मिले हैं और यह ऐसी जगह है कि जब आदमी अप ने सिरको झुकावे तो बिना सदेह थोडीसी उस जगह पहुंच जाय और जातुल अर्ज का यह चिन्ह है कि दोनों कन्धों के मध्य में दर्द मालूम हो और चित्त न लेट सकै और दाये या बांये न मुड सकै और जब खांसी आवे तो दर्द अधिकता से हो करवटें बदलना और घबराहट बढजाय और उसके हेतु और लक्षण वही हैं जो पसली की सूजन में वर्णन किये गये हैं और वैसाही इलाज है परन्तु जानना चाहिये कि सीने की सूजन में लेप की दवा सीने पर और जातुल अर्ज में दोनों कन्धों के नीचे में लगानी चाहिये।

बरसाम का वर्णन।

यह शब्द सरसाम (सिरकी सूजन) के शब्द के समान फारसी और यूनानी शब्द से मिलकर बना है बर सीने को कहते हैं और साम सूजन को कहते हैं। और यह इस प्रकार का होता है कि जो पर्दा आमाशय और जिगर के मध्य में अडा हुआ है सूजजाय और यह वह पर्दा है कि जो उस हिजाब हाजिज से साथ सम्बन्ध रखता है जो अन्नवाही और श्वासवाही मार्गों के मध्य में है

फशा, बाबूना, सोया, अलसी के बीज, मेंथी के बीज, जौं का चून सब का चूर्ण बना कर थोड़े से पानी में आटा ले और मीठा तेल मिला कर दर्द की जगह गुनगुना लेप करे।

पांचवां सर्ग जातुस्सदर और जातुल अर्ज का वर्णन।

जानना चाहिये कि छाती में एक पर्दा है जो अजामुलक्रुम अर्थात् छाती के मध्य की हड्डियों के बराबर और साम्हने से निकला है और उस का दूसरा किनारा गजरूफ हजरी है इस के दो भाग हो गये हैं एक भाग तो पिछली तरफ और एक छाती की तरफ है और यह दोनों उस जगह तक पहुंचे हैं जहां हसली मिली है और वहां जाकर आपस में मिल गये हैं और असल में यह दोनों झिल्ली हैं जो इस जगह में बटगई हैं सो वह भाग जो छाती पर रक्खा है सूजजाय तो उसे जातुस्सदर कहते हैं और जो उस भाग में जो पीठ की तरफ गुड़ियों पर रक्खा हुआ है सूजजाय तो जाआतुल अर्ज कहते हैं। फिर जातुस्सदर का यह चिन्ह है कि रोगी को अधिक दर्द दोनों हसलियों के मिलने की जगह से आमाशय के मुख तक मालूम हो और सीने के बल लेटना पावों की ओर देखना और सिर उठाना संभव न हो परंतु करवट से और चित्त लेट सके और यह जगह जहां गर्दन की हसली के दोनों सिरे आपस में मिले हैं और यह ऐसी जगह है कि जब आदमी अपने सिरको झुकावे तो बिना संदेह थोड़ीसी उस जगह पहुंच जाय और जातुल अर्ज का यह चिन्ह है कि दोनों कन्धों के मध्य में दर्द मालूम हो और चित्त न लेट सके और दाये वा बांये न मुड़ सके और जब खांसी आवे तो दर्द अधिकता से हो करवटें बदलना और घबराहट बढ़जाय और उसके हेतु और लक्षण वही हैं जो पसली की सूजन में वर्णन किये गये हैं और वैसाही इलाज है परन्तु जानना चाहिये कि सीने की सूजन में लेप की दवा सीने पर और जातुल अर्ज में दोनों कन्धों के नीचे में लगानी चाहिये।

बरसाम का वर्णन।

यह शब्द सरसाम (सिरकी सूजन) के शब्द के समान फारसी और यूनानी शब्द से मिलकर बना है बर सीने को कहते हैं और साम सूजन को कहते हैं। और यह इस प्रकार का होता है कि जो पर्दा आमाशय और जिगर के मध्य में अड़ा हुआ है सूजजाय और यह वह पर्दा है कि जो उस हिजाब हाजिज से साथ सम्बन्ध रखता है जो अन्नवाही और श्वासवाही मार्गों के मध्य में है

चिन्ह जो सरसाम में हुआ करते हैं प्रगट होते हैं [इलाज] वासलीक और इन्ती की फस्द खोलें और पिंडलियों पर सिंगियां पछनों के साथ लगावें और दर्द और टीस की जगहपर मवाद के पकाने वाली और नष्ट करने वाली चीजों का लेप करें जैसे बाबूना, बनफशा, खितमी के बीज, उन्नाव, लिसौढा, अलसी के बीज, गर्म पानी में मिला कर और नर्म हुकना से तबियत को नर्म करें और जो तबियतके नर्म करनेके लिये नीलोफर, बनफशा, खितमी के बीज, उन्नाव, लिसौढा औटा करके और तुरजबीन मिला कर पिवावें तो अति उत्तम है बहुधा कहा गया है कि इन अंगों की सूजन में जिसका इस प्रकार में वर्णन होता है हुकना जुल्लाब के पीने से अति उत्तम है और उसमें बहुत कम भय है और उक्त उपायों में से जिनकी आवश्यकता हो ग्रहण करे और जिन कामों का वर्णन हुआ है सब जगह याद रक्खें और उसमें से भी जो बहुधा पहले सर्ग में लिखे गये हैं उनका याद रखना आवश्यकीय है जिससे कुछ चिन्ता न रहे और जानना चाहिये कि जिस समय यह रोग सब इकट्ठे हो जाते हैं तो रोगी की आरोग्यता की आशा बहुत कम हुआ करती है और प्रगट है कि पसली की सूजन का एक और भेद है कि इसमें श्वास और कफ आना दोनों सहज होते हैं परन्तु पीठ की तरफ ऐसा दर्द होता है जैसे किसीने लकडी मारदी है और मूत्र में खून और पीव मिला हुआ आता है और इसका रोगी बहुत कम बचता है वह पांचवें या सातवें दिन मर जाता है और चौदह दिन तक तो बहुत ही कम जीता है और जो सातवें दिन से चैन में रहे तो बहुधा अच्छा हो जाता है और एक और भेद है उसमें दोनों कन्धों के मध्य में लाली हो जाती है और कन्धे गर्म हो जाते हैं और रोगी बैठा नहीं रह सक्ता है फिर जो ऐसे रोगी का पेट गर्म हो जाय और मलकी हाजत होतो जल्द मर जायगा और जो सातवां दिन व्यतीत हो जाय और थूक में तरह तरह का मवाद निकले तो जीने की आशा होती है और तीन दिन तक भी मरने से निडर नहीं हो सक्ता और एक और भेद है कि उसमें खिचाव और दर्द पलक के साथ गर्दन की हसली से पिंडली तक होता है और मूत्र साफ होता है और मवाद थूक में आया करता है और यह रोग बहुत बुरा है और उसका चिन्ह यह है कि मवाद ऊपर की तरफ आरूढ हो और सरसाम के चिन्ह प्रगट होने लगें फिर जो सातवां दिन बीत गया तो परमात्मा की कृपा से उस विपत्ति से छूट जायगा [सूचना] प्रगट है कि जब सूजन का कारण-

चिन्ह जो सरसाम में हुआ करते हैं प्रगट होते हैं [इलाज] बासलीक और इन्ती की फस्द खोलें और पिंडलियों पर सिंगियां पछनों के साथ लगावें और दर्द और टीस की जगहपर मवाद के पकाने वाली और नष्ट करने वाली चीजों का लेप करें जैसे बाबूना, बनफशा, खितमी के बीज, उन्नाव, लिसौढा, अलसी के बीज, गर्म पानी में मिला कर और नर्म हुकना से तबियत को नर्म करें और जो तबियतके नर्म करनेके लिये नीलोफर, बनफशा, खितमी के बीज, उन्नाव, लिसौढा औटा करके और तुरजबीन मिला कर पिवावें तो अति उत्तम है बहुधा कहा गया है कि इन अंगों की सूजन में जिसका इस प्रकार में वर्णन होता है हुकना जुल्लाब के पीने से अति उत्तम है और उसमें बहुत कम भय है और उक्त उपायों में से जिनकी आवश्यकता हो ग्रहण करे और जिन कामों का वर्णन हुआ है सब जगह याद रक्खें और उसमें से भी जो बहुधा पहले सर्ग में लिखे गये हैं उनका याद रखना आवश्यकीय है जिससे कुछ चिन्ता न रहे और जानना चाहिये कि जिस समय यह रोग सब इकट्ठे हो जाते हैं तो रोगी की आरोग्यता की आशा बहुत कम हुआ करती है और प्रगट है कि पसली की सूजन का एक और भेद है कि इसमें श्वास और कफ आना दोनों सहज होते हैं परन्तु पीठ की तरफ ऐसा दर्द होता है जैसे किसीने लकडी मारदी है और मूत्र में खून और पीव मिला हुआ आता है और इसका रोगी बहुत कम बचता है वह पांचवें या सातवें दिन मर जाता है और चौदह दिन तक तो बहुत ही कम जीता है और जो सातवें दिन से चैन में रहे तो बहुधा अच्छा हो जाता है और एक और भेद है उसमें दोनों कन्धों के मध्य में लाली हो जाती है और कन्धे गर्म हो जाते हैं और रोगी बैठा नहीं रह सक्ता है फिर जो ऐसे रोगी का पेट गर्म हो जाय और मलकी हाजत होतो जल्द मर जायगा और जो सातवां दिन व्यतीत हो जाय और थूक में तरह तरह का मवाद निकले तो जीने की आशा होती है और तीन दिन तक भी मरने से निडर नहीं हो सक्ता और एक और भेद है कि उसमें खिचाव और दर्द पलक के साथ गर्दन की हसली से पिंडली तक होता है और मूत्र साफ होता है और मवाद थूक में आया करता है और यह रोग बहुत बुरा है और उसका चिन्ह यह है कि मवाद ऊपर की तरफ आरूढ हो और सरसाम के चिन्ह प्रगट होने लगें फिर जो सातवां दिन बीत गया तो परमात्मा की कृपा से उस विपत्ति से छूट जायगा [सूचना] प्रगट है कि जब सूजन का कारण—

कारण पहले हो और छाती में सर्दी और घुकदन पायी जाय (इलाज) छाती में गर्मी पहुचाने के लिये सौसन और कूठ के तेल में जुन्दे बेदस्तर मिलावें और छाती पर मले और तुलसी, सातर, पोदीना, अफसनतीन, हींग और जुन्देबेदस्तर महीन पीस कर शहद और अखरोट के तेल में मिला कर छाती पर लेप करे और पुरानी शराब में थोडीसी हींग मिलावे और रोगी को ठहर २ कर पीने की आज्ञा दे और गर्म पानी से और गर्म रूखडियों के औटाये पानी से सिकाव करना अधिक लाभदायक है और इस रोगके इलाज में देर न करनी चाहिये क्योंकि कभी अचानक रोगी को मार डालता है क्योंकि इन अंगोंकी सर्दी दिल में पहुंचकर उसको ठंढा कर देती है और असली गर्मी को यहां तक नष्ट कर देती है कि श्वास रुक जाता है क्योंकि अंगों के जोड़ उसके आधीन हैं (लाभ) कभी अफीम का खाना जमुदुसद्र को उत्पन्न करता है क्योंकि अफीम सर्दी और खुश्की के कारण से असली गर्मी को जमा देती है और रतूबत में गाढापन, जमाव और खुश्की लाती है इसी कारणसे इसके खानेवाले को हाथ पांव की सर्दी और सुन्न और गले की तंगी जीभ का बंधना और ऐसेही अन्य चिन्ह हुआ करते हैं और कभी ऐसा होता है कि मारभी डालता है और कभी ऐसा भी होता है कि जो सीसे का धुआं जो गलाने के समय उठता है जमुदुसद्र उत्पन्न करदेता है क्योंकि सीसे का धूआं दिलको ठंढा करके गर्मी को दबाता है और नाडियों को खुश्क करके श्वासवाही अंगों को सकोड देता है और श्वासको छोटा करदेता है और कभी गले पर सूजन उत्पन्न करता है और यह रोग जो अफीम के पीने से या सीसे का धुआं नाकमें जाने से उत्पन्न होतो उसका उपाय यह है कि कारणको दूर करें और जो चीजें उसके विरुद्ध हैं काम में लावें और गर्म तर रूखडियों के काढोंसे सिकाव करना सब बातों से अधिक लाभदायक है और बाकी उपाय जो कुछ पहले भेद में वर्णन होचुके हैं उनको काम में लावें ।

दसवां अध्याय

दिलके रोगों का वर्णन ।

कलबको फारसी में दिल कहते हैं और यह एक अंग है जो मांस, पट्ठे, झिल्ली और बारीक रगों से मिलकर बना है और दिलकी रगें दूसरों से ज्यादा

कारण पहले हो और छाती में सर्दी और घुकदन पायी जाय (इलाज) छाती में गर्मी पहुंचाने के लिये सौसन और कूठ के तेल में जुन्दे बेदस्तर मिलावे और छाती पर मले और तुलसी, सातर, पोदीना, अफसनतीन, हींग और जुन्देबेदस्तर महीन पीस कर शहद और अखरोट के तेल में मिला कर छाती पर लेप करे और पुरानी शराब में थोड़ीसी हींग मिलावे और रोगी को ठहर २ कर पीने की आज्ञा दे और गर्म पानी से और गर्म रूखड़ियों के औटाये पानी से सिकाव करना अधिक लाभदायक है और इस रोगके इलाज में देर न करनी चाहिये क्योंकि कभी अचानक रोगी को मार डालता है क्योंकि इन अंगोंकी सर्दी दिल में पहुंचकर उसको ठंढा कर देती है और असली गर्मी को यहां तक नष्ट कर देती है कि श्वास रुक जाता है क्योंकि अंगों के जोड़ उसके आधीन हैं (लाभ) कभी अफीम का खाना जमूदुसदर को उत्पन्न करता है क्योंकि अफीम सर्दी और खुश्की के कारण से असली गर्मी को जमा देती है और रतूबत में गाढ़ापन, जमाव और खुश्की लाती है इसी कारणसे इसके खानेवाले को हाथ पांव की सर्दी और सुन्न और गले की तंगी जीभ का बंधना और ऐसेही अन्य चिन्ह हुआ करते हैं और कभी ऐसा होता है कि मारभी डालता है और कभी ऐसा भी होता है कि जो सीसे का धुआं जो गलाने के समय उठता है जमूदुसदर उत्पन्न करदेता है क्योंकि सीसे का धूआं दिलको ठंढा करके गर्मी को दबाता है और नाड़ियों को खुश्क करके श्वासवाही अंगों को सकोड़ देता है और श्वासको छोटा करदेता है और कभी गले पर सूजन उत्पन्न करता है और यह रोग जो अफीम के पीने से या सीसे का धुआं नाकमें जाने से उत्पन्न होतो उसका उपाय यह है कि कारणको दूर करें और जो चीजें उसके विरुद्ध हैं काम में लावें और गर्म तर रूखड़ियों के काढ़ोंसे सिकाव करना सब बातों से अधिक लाभदायक है और बाकी उपाय जो कुछ पहले भेद में वर्णन होचुके हैं उनको काम में लावें।

दसवां अध्याय

दिलके रोगों का वर्णन।

कल्बको फारसी में दिल कहते हैं और यह एक अंग है जो मांस, पट्ठे, झिल्ली और बारीक रगों से मिलकर बना है और दिलकी रगें इसमें से दसों

और दिलकी रूहकीखानहै इसलिये परमात्माने उसकी जगह छाती और फेंफडेके मध्यमें जो मनुष्यके शरीरमेंसबजगहसे दृढहै नियतकीहै औरउसके चारोंतरफ थोडासा झुकनेमें बहुतसे लाभहैं एकतो यहहै कि वह जगह दिलकी गर्मीकिसाथ इकट्ठी होजाती और उसमें गर्मी बढ जाती और दूसरी तरफ गर्मीसे खाली रहती और इस कारण से बहुत विपत्ति प्रगट होती और ऐसेही सर्दीके कारणसे तिल्ली की मादी में समानता न आती (अधिक लाभ) जिस जीवधारी का दिल बहुत बडा होता है वह बडा शूरवीर और बहुत बलवान होता है परन्तु यह नियम है कि इस में गर्मी भी हो क्योंकि जो दिल की गर्मी कम होगी तो दिल का बडा होना लाभदायक न होगा जैसे खरगोश। और जो गर्मी विशेष हो यद्यपि दिल बहुत छोटा हो वह जीव बहुत शूरवीर होता है जैसे पशुओं में दीखता है परन्तु बहुधा यही होता है कि बडे दिलवाला जीव शूरवीर होता है अब जान लेना चाहिये कि दिल के रोग कई प्रकार पर हैं और प्रत्येक का अलग२ प्रकरण में वर्णन किया जाता है।

पहिला प्रकरण।

दिल की दुष्ट प्रकृति का वर्णन।

उसके चार भेद हैं पहला वह है कि गर्म हो और उसका चिन्ह यह है कि नाडी बडी और शीघ्र और गहरी हो और बारर चलती हो और छाती गर्म हो और प्यास की अधिकता, चिन्ता, घबराहट और जलन हर समय हो और ठंडी हवा से आराम पावै और देह दुबली हो इस लिये कि दिल की दुष्ट प्रकृति सब शरीर में प्रवेश होजाती है (इलाज) कपूर की टिकिया और ठंडे शर्बत जो दिलके अनुसार हों जैसे शर्बत रीवास शर्बत अनार, शर्बत चंदन इत्यादि पिलावें और चंदन, कपूर गुलाब छाती पर लगावें और मकान की हवा को ठंडा करें ठंडी सुगन्धित चीजें सुंघावें और ठंडी चीजें खवावें और जब मवाद का भर जाना कारण हो तो फसद का खोलना उचित समझें (लाभ) दिल की दुष्ट प्रकृति के भेदों में याद रखना चाहिये कि जो मवाद के कारण से हो और कोई कार्य वर्जित न हो तो पहले मवाद के निकालने का उपाय करें और जब फसद के खोलने की आवश्यकता पडे और उचित न हो तो दोनों कन्धों के मध्य में पछने लगाना चाहिये और फसद और दस्तों में ज्वर के होने और न होने की रक्षा रखनी चाहिये और जैसी आवश्यकता हो वैसी ही ठंडी चीजें ग्रहण करे जैसे जो गर्मी वि

और दिलकी रूहकीखानहै इसलिये परमात्माने उसकी जगह छाती और फेंफड़ेके मध्यमें जो मनुष्यके शरीरमेंसबजगहसे दृढ़है नियतकीहै औरउसके बाईतरफ थो डासा झुकनेमें बहुतसे लाभहैं एकतो यहहै कि वह जगह दिलकी गर्मीकेसाथ इकट्ठी होजाती और उसमें गर्मी बढ जाती और दूसरी तरफ गर्मीसे खाली रहती और इस कारण से बहुत विपत्ति प्रगट होती और ऐसेही सर्दीके कारणसे तिल्ली की बादी में समानता न आती (अधिक लाभ) जिस जीवधारी का दिल बहुत बडा होता है वह बडा शूरवीर और बहुत बलवान होता है परन्तु यह नियम है कि इस में गर्मी भी हो क्योंकि जो दिल की गर्मी कम होगी तो दिल का बडा होना लाभदायक न होगा जैसे खरगोश। और जो गर्मी विशेष हो यद्यपि दिल बहुत छोटा हो वह जीव बहुत शूरवीर होता है जैसे पशुओं में दीखता है परन्तु बहुधा यही होता है कि बडे दिलवाला जीव शूरवीर होता है अब जान लेना चाहिये कि दिल के रोग कई प्रकार पर हैं और प्रत्येक का अलग२ प्रकरण में वर्णन किया जाता है।

पहिला प्रकरण।

दिल की दुष्ट प्रकृति का वर्णन।

उसके चार भेद हैं पहला यह है कि गर्म हो और उसका चिन्ह यह है कि नाडी बडी और शीघ्र और गहरी हो और बारर पलैवीं हो और छाती गर्म हो और प्यास की अधिकता, चिन्ता, घबराहट और जलन हर समय हो और ठंडी हवा से आराम पावै और देह दुबली हो इस लिये कि दिल की दुष्ट प्रकृति सब शरीर में प्रवेश होजाती है (इलाज) कपूर की टिकिया और ठंडे शर्बत जो दिलके अनुसार हों जैसे शर्बत रीबास शर्बत अनार, श्वेत चंदन इत्यादि पिलावें और चंदन, कपूर गुलाब छाती पर लगावें और मकान की हवा को ठंडा करें ठंडी सुगन्धित चीजें सुंघायें और ठंडी चीजें खवावें और जब मवाद का भर जाना कारण हो तो फसद का खोलना उचित समझें (लाभ) दिल की दुष्ट प्रकृति के भेदों में याद रखना चाहिये कि जो मवाद के कारण से हो और कोई कार्य वर्जित न हो तो पहले मवाद के निकालने का उपाय करें और जब फसद के खोलने की आवश्यकता पडे और उचित न हो तो दोनों कन्धों के मध्य में पछने लगाना चाहिये और फसद और दस्तों में ज्वर के होने और न होने की रक्षा रखनी चाहिये और जैसी आवश्यकता हो वैसी ही ठंडी चीजें ग्रहण करें जैसे जो गर्मी वि

लावे (मीठे अनारके शर्वतके बनानेकी विधि) मीठे अनारका पानी १ सेर सफेद कन्द १ सेर मिलाकर जैसा शर्वतहोताहै बनाले। दूसरा भेद यहहै कि दिलकी दुष्ट प्रकृति ठंडी हो उसका चिन्ह यहहै कि नाडी छोटी सुस्त और विरुद्ध हो और श्वास निर्मल आवे और शरीर की शक्ती कम हो जाय और रंग और मुख की चेष्टा जाती रहे और भय, डर, दुर्बलता और निश्चेष्टता उत्पन्न हो और गर्म चीजें चखने, छूने और सूंघनेमें लाभदायकहो (इलाज) दिवाल मुश्क गर्म और मुफर्रह जो मालीखोलियामें वर्णन कियागयाहै खाय और दिल को पुष्ट करने वाले शर्बत जैसे बादरजबोया शर्बत (बिल्लीलोटन का शर्बत) और ऊद का शर्बत पीवे कि उसमें केशर, कस्तूरी, अम्बर, बालछड और गुलाबके फूलहों और चकोर, मुर्गी,कबूतर तथा चिडियोंका मांसदालची नी, केसर, लौंग और ऊदसे सुगधित करके खानेकोदें और बालछड,नागरमोथा, दारूचीनी, लौंग, गुलाब के फूल, दौना मरुवा के पानी में और तुलसी, बाद रजबोया के पानी में मिला कर छाती पर लेप करें और ठंडे भोजनों से और ठंडे पानी से बचता रहे और शहद का पानी पीवे कि जिसको शहद २ भाग, गुलाब १ भाग, शारब सबये सतान मदी आग पर सबको मिलाकर बनावें तो अधिक लाभदायक है मुख्यकर जो लौंग, बालछड, ऊद, अगर केसर, जितनी उचित हो लेकर और कूट कर अलसी के टुकडे में बांधकर इस शहद के पानी में छोडदें यहांतक कि उबल जाय और उतना ही शर्बत चार तोले से सात तोले तक देवें। तीसरा भेद यह है कि सुश्क दुष्ट प्रकृति दिलमें उत्पन्न हो और उसका चिन्ह यह है कि नाडी कडी छोटी और लगातार चले और देह घुलजाय और दुबली होजाय और इस प्रकार का दुबलापन पहले से बहुत कम होता है और इसमें रोगी भय खुशी क्रोध और चिन्ता का गुण जल्द नहीं मानता और जब असर मानता है तो बडी देर तक वह गुण रहता है और नींद का न आना और सूखी खांसी का उत्पन्न होना इसके लक्षण हैं (इलाज) जौ के पानीमें बादाम का तेल मिलाकर और बूरा डालकर पीवे और भोजनों में से जो भोजन ठंडे और तर हों बनावें और जब ज्वर न हो तो ताजे दूध का पानी सब चीजों से अधिक लाभ दायक है और जिस रोगी को ज्वर हो तो जौका पाट और बादाम का तेल अति उत्तम है और खुश्की के दूर करने के लिये कीरूती अस्फर छाती पर मलना अधिक लाभ दायक है उसकी विधि यह है कि सफेद मोम को लेकर

लावे (मीठे अनारके शर्बतके बनानेकी विधि) मीठे अनारका पानी १ सेर सफेद कन्द १ सेर मिलाकर जैसा शर्बतहोताहै बनालें। दूसरा भेद वहहै कि दिलकी दुष्ट प्रकृति ठंडी हो उसका चिन्ह यहहै कि नाडी छोटी सुस्त और विरुद्ध हो और श्वास निर्मल आवे और शरीर की शक्ती कम हो जाय और रंग और मुख की चेष्टा जाती रहे और भय, डर, दुर्बलता और निश्चेष्टता उत्पन्न हो और गर्म चीजें चखने, छूने और सूंघनेमें लाभदायकहो (इलाज) दिमाल मुश्क गर्म और मुफर्रह जो मालीखोलियामें वर्णन कियागयाहै खाय और दिल को पुष्ट करने वाले शर्बत जैसे बादरजबोया शर्बत (बिल्लीलोटन का शर्बत) और ऊद का शर्बत पीवे कि उसमें केसर, कस्तूरी, अम्बर, बालछड और गुलाबके फूलहों और चकोर, मुर्गी,कबूतर तथा चिडियोंका मांसदालची नी, केसर, शीग और ऊदसे सुगंधित करके खानेकोदें और बालछड,नागरमोथा, दालचीनी, लौंग, गुलाब के फूल, दौना मरुवा के पानी में और तुलसी, बाद रजबोया के पानी में मिला कर छाती पर लेप करें और ठंडे भोजनों से और ठंडे पानी से बचता रहै और शहद का पानी पीवै कि जिसको शहद २ भाग, गुलाब १ भाग, शारब सबके समान मंदी आग पर सबको मिलाकर बनावें तो अधिक लाभदायक है मुख्यकर जो लौंग, बालछड, ऊद, अगर केसर, जितनी उचित हो लेकर और कूट कर अलसी के टुकडे में बांधकर इस शहद के पानी में छोडदें यहांतक कि उबल जाय और उतना ही शर्बत चार तोले से सात तोले तक देवै। तीसरा भेद यह है कि खुश्क दुष्ट प्रकृति दिलमें उत्पन्न हो और उसका चिन्ह यह है कि नाडी कडी छोटी और लगातार चले और देह घुलजाय और दुर्बल होजाय और इस प्रकार का दुबलापन पहले से बहुत कम होता है और इसमें रोगी भय खुशी क्रोध और चिन्ता का गुण जल्द नहीं मानता और जब असर मानता है तो बडी देर तक वह गुण रहता है और नींद का न आना और सूखी खांसी का उत्पन्न होना इसके लक्षण हैं (इलाज) जौ के पानीमें बादाम का तेल मिलाकर और पूरा डालकर पीवे और भोजनों में से जो भोजन ठंडे और तर हों खावें और जब ज्वर न हो तो ताजे दूध का पानी सब चीजों से अधिक लाभ दायक है और जिस रोगी को ज्वर हो तो जौका पाट और बादाम का तेल अति उत्तम है और खुश्की के दूर करने के लिये कीरुती अरसनर छाती पर मलना अधिक लाभ दायक है उसकी विधि यह है कि सफेद मोम को लेकर

वह है कि शरीर में इतना रुधिर बढ़जाय कि उससे शरीर के अवयव बढ़जाय यद्यपि उसमें सड़ाहट नहो परन्तु भर जाने के कारण से दिल में घबराट उत्पन्न करै और उसका चिन्ह यह है कि खून की अधिकता के चिन्ह प्रगट हों जैसे रगों का खिंचना और फूलजाना, नाड़ी का बड़ा होना, मूत्र का गाढ़ा होना और अगों में थकान आदि होते हैं (इलाज) बासलीक की फसद बायें हाथ में खोलें जिससे बहुत जल्द लाभ प्राप्त हो तथा दही और कपूर की टिकिया खाय और भोजनों में से बिना मांस के भोजें पर संतोष करें और जो कोई कार्य फसद को वर्जित हो तो पिंडलियों पर और उसके उपरान्त दोनो कन्धों के मध्य में पछने लगवावें और वीर्य का निकलना कि उसके पीछे थकान नहो अधिक लाभ दायक है और समानता के लिये जो कुछ गर्म हुए प्रकृति में वर्णन कियागया है वह लाभदायक है (कहावत) एक मनुष्य प्रति वर्ष धड़कन के रोग में फसजाया करता था और हकीम जालीनूस उसकी फसद खोला करता था चौथे वर्ष धड़कन होने से पहले फसद खोली फिर धड़कन न हुई। और जो प्रकृति में गर्मी की अधिकता हो तो जो कुछ पित्त की घबराहट में ठंडे उपायों का वर्णन आवेगा वही काम में लावें परन्तु जो शक्ति निर्बल हो तो ... और ठंडे शर्बत असली गर्मी को हानि पहुचाते हैं फिर थोड़ासा ... इलायची महीन पीसकर भोजन और शर्बतों में मिलावें। तीसरा ... पित्त ... का ...

आकर धड़कन का ... उसका ...
प्यास की अधिकता अ... तथा अन्य ...
यह रोग बहुत कम ... (इलाज) ... पित्त ...
कु का काढ़ा बनफशा ... का ...
गर्मी को संतुष्ट करें और ... तो वे ...
काले और चंदनी पोशाक ... गर्मी
कि दिल में फुन्सी और ...
द ... रत्ती, कपूर २ रत्ती,
हैं और जो कुछ सूनी में वर्णन
इन दोनों प्रकारों का एक ही इ...
में बहुतसा खून निकलें और पि...

वह है कि शरीर में इतना रुधिर बढ़जाय कि उससे शरीर के अवयव बढ़जाय यद्यपि उसमें सड़ाहट नहो परन्तु भर जाने के कारण से दिल में घबराट उत्पन्न करै और उसका चिन्ह यह है कि खून की अधिकता के चिन्ह मगट हों जैसे रगों का खिचना और फूलजाना, नाड़ी का बड़ा होना, मूत का गाढ़ा होना और अगों में थकान आदि होते हैं (इलाज) बासलीक की फसद बायें हाथ में खोलें जिससे बहुत जल्द लाभ प्राप्त हो तथा दही और कपूर की टिकिया खाय और भोजनों में से बिना मास के शोर्बे पर संतोष करें और जो कोई कार्य फसद को वर्जित हो तो पिंडलियों पर और उसके उपरान्त दोनो कन्धों के मध्य में पछने लगवावें और वीर्य का निकलना कि उसके पीछे थकान नहो अधिक लाभ दायक है और समानता के लिये जो कुछ गर्म दुष्ट प्रकृति में वर्णन कियागया है वह लाभदायक है (कहावत) एक मनुष्य प्रति वर्ष धड़कन के रोग में फसजाया करता था और हकीम जालीनूस उसकी फसद खोला करता था चौथे वर्ष धड़कन होने से पहले फसद खोली फिर धड़कन न हुई। और जो प्रकृति में गर्मी की अधिकता हो तो जो कुछ पित्त की घबराहट में ठंड उपायों का वर्णन आवेगा वही काम में लावें परन्तु जो शक्ति निर्बल हो तो ... और ठंडे शर्बत असली गर्मी को हानि पहुचाते हैं फिर थोड़ासा ... इलायची महीन पीसकर भोजन और शर्बतों में मिलावें। तीसरा ... पित्त ...

आकर धड़कन का ... उसका ... का ...
प्यास की अधिकता ... तथा अन्य ...
यह रोग बहुत कम ... (इलाज) ... पित्त ...
कु का काढ़ा धनकशा ... का
गर्मी को संतुष्ट करें और ... तो ये
खालें और चंदनी पोशाक ... गर्मी
कि दिल में कुन्सी और ...
द रत्ती, कपूर २ रत्ती,
है और जो कुछ सूनी में वर्णन
इन दोनों प्रकारों का एक ही इ...
में बहुतसा खून निकले और पि...

कि कफ का मवाद धडकन का कारण हो और बहुधा इस कारण से होता है कि रतूवत दिल में जम जाती है और जानना चाहिये कि दिल के रोगों का मवाद दिलकी रगों में होता है या उसकी झिल्लीके भीतर होता है सो जो मवाद दिल और झिल्ली के समीप होता है वह बहुधा तरी होती है और जो बादी का मवाद दिलकी रगोंमें होता है उसको सुदा कहते हैं और दिलके कानों की सूजन में इस विवादका वर्णन किया जायगा और जो धडकन कि कफ के कारण से हो उसका यह चिन्ह है कि श्वास में तंगी आजाय और नाड़ी नर्म हो जाय और नामर्दी और अचेतता की सी दशा प्रगट हो और रोगी यह समझे कि उसका दिल पानी में डूब जाता है (इलाज) पहिले इस्तमखीकून की गोली से जिसमें यारज मिला हो अथवा हुब्ब कोकाया से मवाद को निकालें और जो यारजफयकरा और अफतीमून महीन पीसकर ३॥ माशे शहद की यनी शिकञ्जबीन में मिलावें और खवावें तो लाभदायक है जो रतूवत हो तो यारज लौगाजिया और स्यादरीतूस देना उचित है और जिस मनुष्य को वमन करावें तो मवाद के निकलने के पीछे दिवालमुश्क मउमी और मीठी और माजून आराम देने वाली गर्म देनी चाहिये। स्यादरीतूस एक माजून है जो हकीमों ने जालीनूस से पहिले एक बादशाह के लिये बनाई थी और उसी के नाम पर इस माजून का नाम रक्खागया है उसकी विधि यह है एलुआ ५२॥ माशे, गारीकून ७० माशे, केसर, दालचीनी, बन, मस्तगी, बिलसांका तेल प्रत्येक १०॥ माशे, रेवन्द चीनी ५। माशे, ऊदबिलसां करफयून, काली और सफेद मिर्च, पीपल, रूमी पखान, भेद, बिल्सां की गोली, सेव, अजखर, हमामा प्रत्येक ७ माशे, कमादरी तूस, कुटकी, अफती मून प्रत्येक १४ माशे, उसारून, तज, सकमूनियां, प्रत्येक २१ माशे, बालछड़ १२ माशे इन दवाओं को महीन पीस कर बिल्सां के तेल में चिकना करले और सब दवाओं से तेल में तिगुना शहद मिला कर माजून बनाले इसकी मात्रा १८ माशे की है और इसकी शक्ति चार बरस तक बाकी रहती है अब एक लेप की विधि लिखते हैं जो ठंडी भडकन को दूर करता है। कूठ बालछड़, दालचीनी, केशर सबको महीन पीस के मौलसरी के पानी और तुल्सी की शराब में मिला कर दिलपर लगावें और जानलें कि ठंडी धड़कनके साथ तरी हो या न हो केवल शराब रिहानी थोडी दे सक्ते हैं यह और चीजों से विशेष लाभदायक है। (ठंडी धड़कन वाले का अपथ्य [illegible]) कहरवा,

कि कफ का मवाद धड़कन का कारण हो और बहुधा इस कारण से होता है कि रतूबत दिल में जम जाती है और जानना चाहिये कि दिल के रोगों का मवाद दिलकी रगों में होता है या उसकी झिल्लीके भीतर होता है सो जो मवाद दिल और झिल्ली के समीप होता है वह बहुधा तरी होती है और जो वादी का मवाद दिलकी रगोंमें होता है उसको सुद्दा कहते हैं और दिलके कानों की सूजन में इस विवादका वर्णन किया जायगा और जो धड़कन कि कफ के कारण से हो उसका यह चिन्ह है कि श्वास में तंगी आजाय और नाड़ी नर्म हो जाय और नामर्दी और अचेतता की सी दशा प्रगट हो और रोगी यह समझे कि उसका दिल पानी में डूब जाता है (इलाज) पहिले इस्तमखीकून की गोली से जिसमें यारज मिला हो अथवा हुब्ब कोकाया से मवाद को निकालें और जो यारजफयकरा और अफतीमून महीन पीसकर ३॥ माशे शहद की घनी शिकज़बीन में मिलावें और खवावें तो लाभदायक है जो रतूबत हो तो यारज लोगाज़िया और स्यादरीतूस देना उचित है और जिस मनुष्य को वमन करावें तो मवाद के निकलने के पीछे दिवालमुश्क कड़वी और मीठी और माजूम आराम देने वाली गर्म देनी चाहिये। स्यादरीतूस एक माजून है जो हकीमों ने जालीनूस से पहिले एक बादशाह के लिये बनाई थी और उसी के नाम पर इस माजून का नाम रक्खागया है उसकी विधि यह है एलुआ ५२॥ माशे, गारीकून ७० माशे, केसर, दालचीनी, बन, मस्तगी, बिलसांका तेल प्रत्येक १०॥ माशे, रेवन्द चीनी ५। माशे, ऊदबिल्सां करफयून, काली और सफेद मिर्च, पीपल, रूमी पत्रान, मेद, बिल्सां की गोली, सेव, अजखर, हमामा प्रत्येक ७ माशे, कमादरी तूस, कुटकी, अफ्तीमून प्रत्येक १४ माशे, उसारून, तज, सकमूनियां, प्रत्येक २१ माशे,बालछड़ १२ माशे इन दवाओं को महीन पीस कर बिल्सां के तेल में चिकना करले और सब दवाओं से तेल में तिगुना शहद मिला कर माजून बनालें इसकी मात्रा १८ माशे की है और इसकी शक्ति चार बरस तक बाकी रहती है अब एक लेप की विधि लिखते हैं जो ठंढी धड़कन को दूर करता है। कूठ बालछड़, दालचीनी, लेफर सबको महीन पीस ले मौल्सरी के पानी और तुरसी की शराब में मिला कर दिलपर लगावें और जानलें कि ठंढी धड़कनके साथ तरी हो या न हो केवल शराब रिहानी थोड़ी दे सक्ते हैं यह और चीजों से विशेष लाभदायक है। (ठंढी धड़कन वाले का पथ्य[illegible]) कहरुबा,

यह है तुर्बुद, अफ्तीमून, सनाय मक्की, पित्त पापड़ा, प्रत्येक १ भाग एल्वा २ भाग, लाजवर्द मगसूल, दो तिहाई मस्तगी १ भाग, गुलाबके फूल तिहाई भाग यह सब आठ दवा हैं इनको महीन पीसकर मीठे सेव के पानी में गोलियां बनालें इसकी मात्रा १४ माशे है और जो रोग का मवाद केवल बादी हो तो हुक्न सवियार दें जिससे दिमाग और दिल के ओर पासको पवित्र करदें । ऐसे जुलाब की विधि जो बादी के मवाद को पवित्र करता है । छोटी हरड़ बड़ी हरड़, प्रत्येक ३॥ माशे, अफ्तीमून, लौंग प्रत्येक १॥। माशे, दिबाल बुस्क कड़वी, १०॥ माशे, इन पांचो भागों को मिलाकर तीन दिन तक रक्खें जिससे अच्छी तरह मिलजांय फिर शराब रिहानी में घोरकर ग्रहण करें और किसी २ नुसखों में लौंग की जगह हिजरे अरमनी ३ रत्ती पड़ा हुआ है और इसमें गुनगुने पानी से न्हाना लाभदायक है शेष उपाय माली खोलिया के प्रकरण से मालूम होंगे । छटा भेद यह है कि शरीर से बहुत सा खून या वीर्य के निकलने या निकालने का काम पड़े या कोई दोष विशेष निकल जाय या खाने पीने से निकम्मा उपाय प्रगट हो और खून बहुत कम उत्पन्न और पतला हो और बिगड़ जाय और धड़कन उत्पन्न करे और जब शरीर से कोई तरी विशेष निकलती है तो दिलमें निर्बलता बढ़जातीहै और जब दिल निर्बल हो जाताहै तो दिल प्रत्येक छोटी वस्तुका गुण ग्रहण करता है यहां तक कि भोजन की भाफ के परमाणुओं से कष्ट पाता है और घबड़ा जाता है हकीम शेखबू अलीसिनाने कहा है निस्सन्देह प्रत्येक प्रकृति अधिक निर्बलता का कारण है और जो निर्बलता कि दिल में उत्पन्न होती है जब तक कि उस में शक्ति बाकी है घबड़ाया करता है जैसे कि अपने ऊपर से कष्ट को दूर करता है फिर इसी का नाम धड़कन है (इलाज) जैसा कारण हो वैसाही इलाज है जो कुछ कि उसको हानिकारक है उसके काम में लाने से रोगी को रोक दे और जो कारण प्रगट हो तो उसके नष्ट करने में परिश्रम करे फिर खून के उत्पन्न होने के लिये अच्छे भोजन खवावे और जो कुछ कि लाभ दायक हो ग्रहण करे और दिल को आराम पहुंचाने वाली दवाओं के काम में लाने का यत्न करे । सातवां यह है कि दिल की ज्ञानशक्ति तेज और बलवान हो जाय इस कारण से जो थोड़ासा भी कष्ट उसमें पहुंचे तो उसका असर शीघ्र ग्रहण करले और उसके उपाय के लिये घबड़ायें जैसे गर्म और ठंडी दवा, भय, प्रसन्नता, चिन्ता यद्यपि कम

यह है तुर्बुद, अफ्तीमून, सनाय मक्की, पित्त पापड़ा, प्रत्येक १ भाग एल्वा २ भाग, लाजवर्द मगसूल, दो तिहाई मस्तगी १ भाग, गुलाबके फूल तिहाई भाग यह सब आठ दवा हैं इनको महीन पीसकर मीठे सेव के पानी में गोलियां बनालें इसकी मात्रा १४ माशे है और जो रोग का मवाद केवल बादी हो सो हुक्न सवियार दें जिससे दिमाग और दिल के ओर पासको पवित्र करदें। ऐसे जुलाब की विधि जो बादी के मवाद को पवित्र करता है। छोटी हरड़ बड़ी हरड, प्रत्येक ३॥ माशे, अफतीमून, लौंग प्रत्येक १॥। माशे, दियाल मुश्क कड़वी, १०॥ माशे, इन पांचो भागों को मिलाकर तीन दिन तक रक्खें जिससे अच्छी तरह मिलजांय फिर शराब रिहानी में घोलकर ग्रहण करें और किसी २ नुसखों में लौंग की जगह हिजरे अरमनी ३ रत्ती पड़ा हुआ है और इसमें गुनगुने पानी से न्हाना लाभदायक है शेष उपाय माली खोलिया के प्रकरण से मालूम होंगे। छटा भेद यह है कि शरीर से बहुत सा खून या वीर्य के निकलने या निकालने का काम पड़े या कोई दोष विशेष निकल जाय या खाने पीने मे निकम्मा उपाय प्रगट हो और खून बहुत कम उत्पन्न और पतला हो और बिगड़ जाय और धड़कन उत्पन्न करै और जब शरीर से कोई तरी विशेष निकलती है तो दिलमें निर्बलता बढ़जातीहै और जब दिल निर्बल हो जाताहै तो दिल प्रत्येक छोटी वस्तुका गुण ग्रहण करता है यहां तक कि भोजन की भाफ के परमाणुओं से कष्ट पाता है और घबड़ा जाता है हकीम बोअलि अलीसेनाने कहा है निस्सदेह प्रत्येक प्रकृति अधिक निर्बलता का कारण है और जो निर्बलता कि दिल में उत्पन्न होती है जब तक कि उस में शक्ति बाकी है धड़काया करता है जैसे कि अपने ऊपर से कष्ट को दूर करता है फिर इसी का नाम धड़कन है (इलाज) जैसा कारण हो वैसाही इलाज है जो कुछ कि उसको हानिकारक है उसके काम में लाने से रोगी को रोक दे और जो कारण प्रगट हो सो उसके नष्ट करने में परिश्रम करे फिर खून के उत्पन्न होने के लिये अच्छे भोजन खाने और जो कुछ कि लाभ दायक हो ग्रहण करे और दिल को आराम पहुंचाने वाली दवाओं के काम में लाने का यत्न करे। सातवां यह है कि दिल की ज्ञानशक्ति तेज और बलवान हो जाय इस कारण से जो थोड़ासा भी कष्ट उसमें पहुंचे तो उसका असर शीघ्र ग्रहण करले और उसके उपाय के लिये पकड़ाये जैसे गर्म और तरी दवा, भय, प्रसन्नता, चिन्ता यद्यपि कम

ने की शक्ति के निकम्मी होने से आदमी अचेत हो जाता है और जानना चाहिये कि जो धड़कन के कारण बलवान् होते हैं तो अचेतता उत्पन्न करते हैं और जो बहुत बलवान् हुआ करते हैं तो रोगी को मार डालते हैं प्रगट हो कि जब मूर्छा के कारण से आत्मा बिल्कुल नष्ट होजायगी तो एक घड़ी में रोगी मर जायगा और रंग का पीला होना और हाथ पांव का ठंडा होना, नाड़ी का निर्बल होना अचेतता का चिन्ह है। जो अचेतता कड़ी होगी तो रोगी आंख न खोल सकैगा और जो ऐसे रोगी को पुकारें तो उसको सुनाई देता है परन्तु जवाब देने की शक्ति नहीं रखता। परन्तु सक्ते वाले को पुकारें तो उसे सुनाई भी नहीं देता है। बे होशी एक ऐसी दशा है कि दिलकी तरफ भाफ के परमाणु और धुआं और निकम्मे दोष और पसलियों के भीतर की झिल्ली सबकी सब सूजजाने से उत्पन्न होती है। मूर्छा दो प्रकार की है एक तो यह कि आत्माका नष्ट होना उसका कारण हो। दूसरे यह है कि आत्माका घुट जाना और घुटजाना उसका कारण हो और यह दोनों दशा अर्थात् आत्मा का नष्ट होना और घुटजाना दिल और उसकी शक्ति की निर्बलताका कारण हो जाता है क्योंकि रूह शक्तियों का घोड़ा है और जब उसमें उपद्रव उत्पन्न होता है तो सब शक्तियां निर्बल हो जाती हैं और जिन कारणों से आत्मा नष्ट होती है उनके तीन भेद हैं एक तो विशेष मवाद का निकलना। दूसरे खुशी या आनन्द जैसे विषयानन्द आदि और जानलेना चाहिये कि जिस समय अति आनन्द अकस्मात् हो जाता है तो दिल प्रमाण से विशेष खिलता है इस कारण से आत्मा निकल जाती है और दिल वैसाही खिला रह जाता है और अचेतता उत्पन्न होजाती है और मार डालती है। तीसरे बड़ा दर्द जैसे कुलन्ज का दर्द आदि और बड़े बड़े दर्दों में आत्मा के नष्ट होने का यह कारण है कि तबियत शक्ति और आत्मा को समानता के लिये दर्द की जगह भेजती है और इस कारण से दिल ठंडा होजाता है और रूह नष्ट होजाती है और अचेतता उत्पन्न होकर मार डालती है और गर्म विषों का खाना भी दिलकी आत्माको नष्ट करता है और सब नष्ट करने वाले कारण वर्णन किये जायगे और आत्मा के घुटजाने के कारण दो प्रकार पर हैं एक तो मवाद का विशेष भरजाना मुख्यकर शराब पीने से, दूसरे चिन्ता और भय का विशेष होना अकस्मात् हो इस कारण से दिल सुकड़ जाय और बन्द होजाय और आत्मा घुटजाय और ठंडे विषोंका खाना और सर्दी तथा अबखर नाम भाफें रगों में बुरे से होने से भी

ने की शक्ति के निकम्मी होने से आदमी अचेत हो जाता है और जानना चाहिये कि जो धड़कन के कारण बलवान् होते हैं तो अचेतता उत्पन्न करते हैं और जो बहुत बलवान् हुआ करते हैं तो रोगी को मार डालते हैं प्रगट हो कि जब मूर्छा के कारण से आत्मा बिल्कुल नष्ट होजायगी तो एक घड़ी में रोगी मर-जायगा और रंग का पीला होना और हाथ पांव का ठंढा होना, नाड़ी का निर्बल होना अचेतता का चिन्ह है। जो अचेतता कड़ी होगी तो रोगी आंख न खोल सकैगा और जो ऐसे रोगी को पुकारै तो उसको सुनाई देता है परन्तु जवाब देने की शक्ति नहीं रखता। परन्तु सक्ते वाले को पुकारै तो उसे सुनाई भी नहीं देता है। बे होशी एक ऐसी दशा है कि दिलकी तरफ भाफ के परमाणु और धुआं और निकम्मे दोष और पसलियों के भीतर की झिल्ली सबकी सब सूजजाने से उत्पन्न होती है। मूर्छा दो प्रकार की है एक तो वह कि आत्माका नष्ट होना उसका कारण हो। दूसरे यह है कि आत्माका रुक जाना और घुटजाना उसका कारण हो और यह दोनों दशा अर्थात् आत्मा का नष्ट होना और घुटजाना दिल और उसकी शक्ति की निर्बलताका कारण हो जाता है क्योंकि रूह शक्तियों का बोझा है और जब उसमें उपद्रव उत्पन्न होता है तो सब शक्तियां निर्बल हो जाती हैं और जिन कारणों से आत्मा नष्ट होती है उनके तीन भेद हैं एक तो विशेष मवाद का निकलना। दूसरे खुशी या आनन्द जैसे विषयानन्द आदि और जानलेना चाहिये कि जिस समय अति आनन्द अकस्मात् हो जाता है तो दिल प्रमाण से विशेष खिलता है इस कारण से आत्मा निकल जाती है और दिल पसाही खिला रह जाता है और अचेतता उत्पन्न होजाती है और मार डालती है। तीसरे पड़ा दर्द जैसे कुलन्ज का दर्द आदि और बड़े कड़े दर्दों में आत्मा के नष्ट होने का यह कारण है कि तबियत शक्ति और आत्मा को समानता के लिये दर्दकी जगह भेजती है और इस कारण से दिल ठंढा होजाता है और रूह नष्ट होजाती है और अचेतता उत्पन्न होकर मार डालती है और गर्म विषों का खाना भी दिलकी आत्माको नष्ट करता है और सब नष्ट करने वाले कारण वर्णन किये जायगे और आत्मा के घुटजाने के कारण दो प्रकार पर हैं एक तो मवाद का विशेष भरजाना खुसूसकर शराब पीने से, दूसरे चिन्ता और भय का विशेष होना अकस्मात् हो इस कारण से दिल शुकड़ जाय और बन्द होजाय और आत्मा घुटजाय और ठंढे विषोंका खाना और बर्गेदी तथा अबहर नाम वाली रगों में गुरे से होने से भी

में से है जैसा उसका वर्णन हो चुका है और जो अचेतता तपगिव खालिस के आरम्भ में उत्पन्न होती है और उस ज्वर के आरम्भ में और उस सूजन के आरम्भ में कि जो रोगी केदिल में हो तो वह भी मवाद के निकलने के समान है परन्तु यह उन ज्वरोंके विरुद्ध है कि जिनकी अचेतता मवाद के भरजाने के भेदों में से है क्यों कि गिव खालिस में बेहोसीका कारण कष्ट तेजी और जलन है कि जिनसे गर्मी उत्पन्न होती है और शक्ती और आत्मा नष्ट हैं और जिस रोगी के भीतरी अंग में सूजन हो तो यही कारण है क्यों कि जब भीतर के अंग में सूजन होगी तो ज्वर की बारी के समय मवाद उसकी तरफ आरूढ़ होता है और दर्द बढ़ आता है और शक्ती के जाते रहने से अचेतता उत्पन्न होती है दूसरे ज्वरों के विरुद्ध जिनमें अचेतता का कारण रूह का घटजाना है इस कारण से कि मवाद उबलकर विक्षेप होता है मुख्यकर जो मवाद गाढ़ा है या दिल के समीप है। तीसराभेद उस अचेततावाके वर्णन में है कि कष्ट देने वाले भाफ के परमाणु या विषैली दशा का दिल में पहुंचना इसका कारण हो और इस कारण का मवाद चाहे बाहर हो चाहें शरीर में ही कई प्रकार का होता है एक तो यह है कि किसी अंग में निकम्मा मवाद इकट्ठा होजाय और उससे बुरे २ भाफ के परमाणु उठकर दिल में आवें और विशित दोषों से उत्पन्न हुई अचेतता का वर्णन मिथित प्रकरण में सविस्तर वर्णन किया जायगा। दूसरे यह है कि विषैले जीवों के काटने और डंक मारने से मुख्यकर जब कि दिलकी रग पर काटे या डंक लगे तो विषैली निकम्मी दशा दिलकी तरफ प्रवेश हो और इस दशा के कारण से जो आत्मा के जीवन के विरुद्ध है अचेतता उत्पन्न हो तीसरे यह है कि दुर्गन्धित भाफ के परमाणु जैसे निकम्मा और गन्दी जगह के तथा भीगे हुऐ चमड़ों के भाफ के परमाणुओं के सूंघने का काम पड़े या ऐसी चीजें जो विशेष असर करती है और बलवान और तेज वस्तु सूंघी जांय और इस कारण से अचेतता उत्पन्न हो परन्तु इसकी अचेतता ऐसे मनुष्य को उत्पन्न होती है जिसके दिल की शक्तियों में अच्छी तरह निर्बलता जमगई हो क्यों कि निर्बलता की दशायें थोड़ी चीज से चाहरो हो या भीतरी हर अंग कष्टकारक गुण शीघ्र ग्रहण करलेता है मुख्यकर दिल और दिमाग जो शरीर के सब अंगों से श्रेष्ठ है जैसे खफकान (धड़कन) में इसका वर्णन किया गया है और यह भी वर्णन होचुका है कि जिस अचेतता का कारण

में से है जैसा उसका वर्णन हो चुका है और जो अचेतता तपगिव खालिस के आरम्भ में उत्पन्न होती है और उस ज्वर के आरम्भ में और उस सूजन के आरम्भ में कि जो रोगी के दिल में हो तो वह भी मवाद के निकलने के समान है परन्तु यह उन ज्वरों के विरुद्ध है कि जिनकी अचेतता मवाद के भरजाने के भेदों में से है क्यों कि गिव खालिस में वेहोसीका कारण कष्ट तेजी और जलन है कि जिनसे गर्मी उत्पन्न होती है और शक्ती और आत्मा नष्ट हैं और जिस रोगी के भीतरी अंग में सूजन हो तो यही कारण है क्यों कि जब भीतर के अंग में सूजन होगी तो ज्वर की वारी के समय मवाद उसकी तरफ आरूढ़ होता है और दर्द बढ़ आता है और शक्ती के जाते रहने से अचेतता उपन्न होती है दूसरे ज्वरों के विरुद्ध जिनमें अचेतता का कारण रूह का घटजाना है इस कारण से कि मवाद उबलकर विक्षेप होता है मुख्यकर जो मवाद गाढ़ा है या दिल के समीप है। तीसराभेद उस अचेततांके वर्णन में है कि कष्ट देने वाले भाफ के परमाणु या विषैली दशा का दिल में पहुंचना इसका कारण हो और इस कारण का मवाद चाहे बाहर हो चाहे शरीर में ही कई प्रकार का होता है एक तो यह है कि किसी अंग में निकम्मा मवाद इकट्ठा होजाय और उससे बुरे २ भाफ के परमाणु उठकर दिल में आवें और मिश्रित दोषों से उत्पन्न हुई अचेतता का वर्णन मिश्रित प्रकरण में सविस्तर वर्णन किया जायगा। दूसरे यह है कि विषैले जीवों के काटने और डंक मारने से मुख्यकर जब कि दिलकी रग पर काटे या डंक लगे तो विषैली निकम्मी दशा दिलकी तरफ प्रवेश हो और इस दशा के कारण से जो आत्मा के जीवन के विरुद्ध है अचेतता उत्पन्न हो तीसरे यह है कि दुर्गंधित भाफ के परमाणु जैसे निकम्मा और गन्दी जगह के तथा भीगे हुये चमड़ों के भाफ के परमाणुओं के सूंघने का काम पड़े या ऐसी चीजें जो विशेष असर करती है और बलवान और तेज वस्तु सूंघी जांय और इस कारण से अचेतता उत्पन्न हो परन्तु इसकी अचेतता ऐसे मनुष्य को उत्पन्न होती है जिसके दिल की शक्तियों में अच्छी तरह निर्बलता जमगई हो क्यों कि निर्बलता की दशायें थोड़ी चीज से चाहरो हो या भीतरी हर अंग कष्टकारक गुण शीघ्र ग्रहण करलेता है मुख्यकर दिल और दिमाग जो शरीर के सब अंगों से श्रेष्ट है जैसे खफकान (धड़कन) में इसका वर्णन किया गया है और यह भी वर्णन होचुका है कि जिस अचेतता का कारण

इसके विषय की बातें दूसरे भेदों के नीचे लिखी गई हैं परन्तु लाभों की अधिकता के लिये इस जगह सविस्तर वर्णन कीजाती है जान लेना चाहिये कि जो रोग दूसरे अंगों के संयोगसे उत्पन्न होते हैं उनमें से कोई तो दिमाग के संयोग से होते हैं और कोई जिगर के संयोग से और कोई आमाशय, आंत, गर्भस्थान, पर्दे और फेफड़ेके संयोगसे और कोई सब संयोगसे होतेहैं जो अचेतता कि सब शरीर के संयोग से उत्पन्न होती है वह इस प्रकार की होती है कि जैसे तपे मुहर्रका आदिमें धड़कन और अचेतता होजाती है और जो अचेतता कि दिमाग के संयोग से उत्पन्न होतीहै तो उसकी यह दशाहै कि दिमाग निर्बल होजाय और उसकी निर्बलता से जो पट्ठे की छाती के अजलोंमें जो श्वास आने के संयोगिक अगंई मिलेहुए हैं निर्बल होजांय और श्वास अपनी असली दशाके अनुसार न आवें और ताजी हवा दिलमें अच्छी तरह न पहुंचे और भीतरकी भाफ दिलमें से बहुत न निकले इस कारणसे दिल की दुष्ट प्रकृतिसे धड़कन और अचेतता उत्पन्न हो और जो अचेतता जिगर के संयोगसे उत्पन्न होती है वह पांच प्रकारपरहै एक तो यहहै कि जिगर निर्बल होजाय और इस कारणसे दिल को भोजन का विशेष भाग न पहुंचे। दूसरे यहहै कि जिगरमें बादी का खून उत्पन्न हो और इस कारणसे कि जब बादी का भोजन निकम्मे दिमाग और दिलमें पहुंचे तो धड़कन और बुरे २ सोच और अचेतता उत्पन्न करें। तीसरे यहहै कि जिगरमें कफ का खून उत्पन्नहो और कफके उत्पन्न करने वाले भोजन दिमाग और दिलमें विपत्ति उत्पन्न करें। चौथे यहहै कि जिगरमें गर्म या ठंढा रुधिर उत्पन्न हो और दिलमें पहुंचे और इस कारणसे दुष्ट प्रकृति उत्पन्न हो। पांचवें यहहै कि जिगरमें गर्म और ठंढी सूजन उत्पन्न हो और इस कारणसे सब भीतरी अंगोंमें जहां झिल्लियां आपसमें मिलीहुईहैं दिलकी झिल्लीमें कष्ट पहुंचे और जो अचेतता आमाशय के मुखके संयोगसे उत्पन्नहो वह तीन प्रकार की होती है एक तो यह है कि आमाशय में निकम्मा दोष उत्पन्न होजाय और उसके समीप होनेसे दिलको रंज पहुंचे और धड़कन और अचेतता उत्पन्न हो। दूसरे यहहै कि किसी बड़े दोषके हिलनेसे जो वमनके निकलनेलगै धड़कन और अचेतता उत्पन्नहो। तीसरे यहहै कि आमाशयमें दर्द उठे और समीप होनेके कारणसे दिलमें दर्द पहुंचे कदाचित् मार भी डाले (लाभ) जानना चाहिये कि आमाशय विरुद्ध दोषों की खानहै तो ऐसा होसक्ताहै कि उसमें बादी का उत्पन्न करने वाला ठंढा, गाढ़ा, और तेज मवाद इकट्ठा होजाय और और आमाशयके मुखमें घाव और फुन्सियां भी उत्पन्न हो और जब कि आमाशय दिलके समीप है और

इसके विषय की बातें दूसरे भेदों के नीचे लिखी गई हैं परन्तु लाभों की अधिकता के लिये इस जगह सविस्तर वर्णन कीजाती है जान लेना चाहिये कि जो रोग दूसरे अंगों के संयोगसे उत्पन्न होते हैं उनमें से कोई तो दिमाग के संयोग से होते हैं और कोई जिगर के संयोग से और कोई आमाशय, आंत, गर्भस्थान, पर्दे और फेफड़ेके संयोगसे और कोई सब संयोगसे होतेहैं जो अचेतता कि सब शरीर के संयोग से उत्पन्न होती है वह इस प्रकार की होती है कि जैसे तपे मुहरेका आदिमें धड़कन और अचेतता होजाती है और जो अचेतता कि दिमाग के संयोगसे उत्पन्न होतीहै तो उसकी यह दशाहै कि दिमाग निर्बल होजाय और उसकी निर्बलता से जो पट्ठे की छाती के असलोंमें जो श्वास आने के संयोगिक अगहैं मिलेहुए हैं निर्बल होजांय और श्वास अपनी असली दशाके अनुसार न आवें और ताजी हवा दिलमें अच्छी तरह न पहुंचे और भीतरकी भाफ दिलमें से बहुत न निकले इस कारणसे दिल की दुष्ट प्रकृतिसे धड़कन और अचेतता उत्पन्न हो और जो अचेतता जिगर के संयोगसे उत्पन्न होती है वह पांच प्रकारपरहै एक तो यहहै कि जिगर निर्बल होजाय और इस कारणसे दिल को भोजन का विशेष भाग न पहुंचे। दूसरे यहहै कि जिगरमें बादी का खून उत्पन्न हो और इस कारणसे कि वह बादी का भोजन निकम्मे दिमाग और दिलमें पहुंचे वो धड़कन और बुरे २ सोच और अचेतता उत्पन्न करे। तीसरे यहहै कि जिगरमें कफ का खून उत्पन्नहो और कफके उत्पन्न करने वाले भोजन दिमाग और दिलमें विपत्ति उत्पन्न करें। चौथे यहहै कि जिगरमें गर्म या ठंढा रुधिर उत्पन्न हो और दिलमें पहुंचे और इस कारणसे दुष्ट प्रकृति उत्पन्न हो। पांचवें यहहै कि जिगरमें गर्म और ठंढी सूजन उत्पन्न हो और इस कारणसे सब भीतरी अगोंमें जहां झिल्लियां आपसमें मिलीहुईहैं दिलकी झिल्लीमें कष्ट पहुंचे और जो अचेतता आमाशय के मुखके संयोगसे उत्पन्नहो वह तीन प्रकार की होती है एक तो यह है कि आमाशय में निकम्मा दोष उत्पन्न होजाय और उसके समीप होनेमें दिलको रंज पहुंचे और धड़कन और अचेतता उत्पन्न हो। दूसरे यहहै कि किसी थके दोषके हिलनेसे जो वमनके निकलनेलगे धड़कन और अचेतता उत्पन्नहो। तीसरे यहहै कि आमाशयमें दर्द उठे और समीप होनेके कारणसे दिलमें दर्द पहुंचे कदाचित् मार भी डाले (लाभ) जानना चाहिये कि आमाशय विरुद्ध दोषों की खानहै तो ऐसा होसक्ताहै कि उसमें बादी का उत्पन्न करने वाला ठंढा, गाढ़ा, और तेज मवाद इकट्ठा होजाय और और आमाशयके मुखमें घाव और फुन्सियां भी उत्पन्न हो और जब कि आमाशय दिलके समीप है और

में न्यूनता वा अधिकता होती है और सक्ता इसके विरुद्ध है कि कितनाही उस. को पुकारें उसे ज्ञान नहीं होता और मूर्छा तथा सुबात का अन्तर सुबात (अचेत नींद) में वर्णन करचुके हैं और मुख्य चिन्ह जिनसे यह पहचाना जाता है कि किस कारणमें है यह बहुधा कारणके पहले होने से मालूम होजाता है परन्तु यहां भी वर्णन किया जाता है जानना चाहिये कि जिस रोगी की अचेतता का कारण मवाद का भरना हो तो रगें दबी हुई और नाड़ी बलवान होतीहै परन्तु मवाद के भरजाने के कारणसे भारापन और तरी होगी और जिस रोगी को आत्माके निकलनेसे मूर्छा होतीहै तो नाड़ी निर्बल छोटी और सुस्त होतीहै और जिस रोगी को वरीदी अथवा अवहर रगों के बंद होने से मूर्छा होती है तो अधिक मूर्छा के कारणों में से कोई और कारण प्रगट नहीं होता जैसे आमाशय की निर्बलता और गर्भस्थान के भिंच जाने से उत्पन्न होती है हकीम बुकरात ने कहा है कि जिस मनुष्य को विशेष अचेतता वारम्बार हो और प्रत्यक्ष में कोई कारण न दिखाई दे तो अकस्मात् मर जाता है और प्रत्यक्ष का कारण यह है कि दिल की शक्ति निर्बल हो या न्हाने के स्थान में बहुत देर तक ठहरे या आमाशय की निर्बलतावाला निरन्न मुख (खाली पेट) न्हाय यहां तक कि आमाशय में पित्त गिरे और कष्ट पहुंचावे और उस के संयोग से दिल को कष्ट पहुंचे या दिल की ज्ञानशक्ति बलवान हो जाय और थोड़ीसी बात से कष्ट पावे फिर जब कि प्रत्यक्ष कारणों में से कोई सा कारण न हो और मूर्छा अधिक उत्पन्न होती है तो समझ सक्ते हैं कि वरीदी या अवहर रगों के मार्ग मवाद आदिसे बन्द हो गये हैं जिसको सुद्दा कहते हैं फिर जो यह अचेतता बार २ होती हो तो इस से आरोग्य होना ध्यान में नहीं आता और जिस रोगी की दिल की ज्ञानशक्ति बलवान होने से उत्पन्न हो तो इस को विना कारण के उत्पन्न होती है और विना तेज इलाज के नष्ट होजाती है और जल्द उत्पन्न होजाती है और जल्द जाती रहती है और बहुधा यह अचेता उत्पन्न हल्की होती है और जिस रोगी को संयोग के कारण से या किसी और कारणसे जिनका वर्णन विस्तार पूर्वक होचुका है होती हो तो कारण का पहिले होना तथा जैसे २ चिन्ह प्रत्येकके प्रगट किये गये हैं और प्रत्येक अपने २ स्थान पर वर्णन किये गये हैं उसके साक्षी होंगे और पश्कन की अध्याय से बहुधा प्रयोजन मालूम हो जायगे (पहिचान) जिस मनुष्यके मुखका रंग अचेतता की दशामें हरा होजाय और सिर और

में न्यूनता वा अधिकता होती है और सक्ता इसके विरुद्धहै कि कितनाही उस को पुकारें उसे ज्ञान नहीं होता और मूर्छा तथा सुबात का अन्तर सुबात (अचेत नींद) में वर्णन करचुकेहैं और मुख्य चिन्ह जिनसे यह पहचाना जाता है कि किस कारणसेहै यह बहुधा कारणके पहले होने से मालूम होजाता है परन्तु यहां भी वर्णन किया जाता है जानना चाहिये कि जिस रोगी की अचेतता का कारण मवाद का भरना हो तो रगें दबी हुई और नाडी बलवान होतीहै परन्तु मवाद के भरजाने के कारणसे भारापन और तरी होगी और जिस रोगी को आत्माके निकलनेसे मूर्छा होतीहै तो नाडी निर्बल छोटी और सुस्त होतीहै और जिस रोगी को वरीदी अथवा अवहर रगों के बंद होने से मूर्छा होती है तो अधिक मूर्छा के कारणों में से कोई और कारण प्रगट नहीं होता जैसे आमाशय की निर्बलता और गर्भस्थान के भिच जाने से उत्पन्न होती है हकीम बुकरात ने कहा है कि जिस मनुष्य को विशेष अचेतता बारम्बार हो और प्रत्यक्ष में कोई कारण न दिखाई दे तो अकस्मात् मर जाता है और प्रत्यक्ष का कारण यह है कि दिल की शक्ति निर्बल हो या न्हाने के स्थान में बहुत देर तक ठहरे या आमाशय की निर्बलतावाला निरन्न मुख (खाली पेट) न्हाय यहां तक कि आमाशय में पित्त गिरे और कष्ट पहुचावे और उस के संयोग से दिल को कष्ट पहुचे या दिल की ज्ञानशक्ति बलवान हो जाय और थोडीसी बात से कष्ट पावे फिर जब कि प्रत्यक्ष कारणों में से कोई सा कारण न हो और मूर्छा अधिक उत्पन्न होती है तो समझ सक्ते हैं कि वरीदी या अवहर रगों के मार्ग मवाद आदिसे बन्द हो गये हैं जिसको सुद्दा कहते हैं फिर जो यह अचेतता बार २ होती हो तो इस से आरोग्य होना ध्यान में नहीं आता और जिस रोगी की दिल की ज्ञानशक्ति बलवान होने से उत्पन्न हो तो इस को विना कारण के उत्पन्न होती है और विना तेज इलाज के नष्ट होजाती है और जल्द उत्पन्न होजाती है और जल्द जाती रहती है और बहुधा यह अचेता उत्पन्न हल्की होती है और जिस रोगी को संयोग के कारण से या किसी और कारणसे जिनका वर्णन विस्तार पूर्वक होचुकाहै होती हो तो कारण का पहिले होना तथा जैसे २ चिन्ह प्रत्येकसे प्रगट किये गये हैं और प्रत्येक अपने २ स्थान पर वर्णन किये गये हैं उसके साक्षी होंगे और बहुरन की अध्याय से बहुधा प्रयोजन मालूम हो जायगे (पचाकाम) जिस मनुष्यके मुखका रंग अचेतता की दशामें हरा होजाय और सिर और

अचेतता का कारण हुआ जैसा सब का वर्णन ऊपर हो चुका है और यह मूर्च्छा मवाद के रुकने के भेद में से है और मवाद के निकलने के कारण में नहीं है और जो अचेतता तबियत के भ्रम से होती है उस का कारण जमा हुआ खून नहीं होता । वह थोड़े समयमें दूरहो जाताहै जैसे फस्द खोलते ही जब थोड़ासा खून निकले तब अचेतहो जाय फिरखून बन्द होने से पहले चेत आजाय इस लिये कि तबियत उस दशाको जान लेती है और जब कि तबियत आपस में विरुद्ध हैं प्रत्येक मनुष्य की तबियत पहली फस्द में अनजान नहीं बन सक्ती क्योंकि किसी २ की प्रकृति में न जानने के सिवाय जैसा काम आपड़े उससे घबडाहट नहीं होती चित्त में शान्ति रहती है जैसा बहुधा मनुष्योंमें देखाभी जाताहै (इलाज) जानना चाहिये कि इसमें रोगीकी दशा को मूर्छा की दशामें चैतन्यताके समय जान सक्ताहै और जो यह मूर्छाके समय पहुंचे तो ऐसा उपायकरें कि कारण नष्टहो जाय और शक्ति तथा रूहकी सहायताकरें और तबियत को चौकावें इसमें शक्ति और आत्मा की सहायता इस प्रकार की हुआ करती है कि प्रकृति के अनुकूल उचित और हेतु विपरीत औषधों को सुघावें और गलेमें टपकावें जो मूर्छावाले की प्रकृति गर्म है तो कपूर, चंदन, गुलाब कपड़ी खीरा ठंडी करके और थोड़ी कस्तूरी मिलाकर सुघावें जिससे कस्तूरी प्राकृतिक गर्मी की सहायताकरे और कपूर चंदन गुलाब ऊपरी गर्मी और ज्वरको कम करें और गुलाब ठंडा करके गलेमें टपकावें और छाती तथा मुखपर जोरसे छिड़कें और ठंडे पानी में थोड़ी सी पतली शराब या मांस का पानी मिलाकर गलेमें टपकाना और मुखपर ठंडे पानी का छींटा देना अच्छा है और बहुधा चेत होनेपर चंदनी पोशाक पहरना और उचित भोजन और मद्य पीना लाभदायक है और जो अचेतता वाले की ठंडी प्रकृतिहै तो कस्तूरी अम्बर, रेहान और जिन भोजनों में सुगन्धित चीजें हों जैसे इलायची, लौंग दालचीनी, केसर और उनके समान सुघावें और दिवाल मुश्क या दो रत्ती कस्तूरी शराब में मिलाकर गर्म करके गलेमें टपकावें और आमाशय के मुखपर नार्देन का तेल और मस्तगी का तेल मलें और कदाचित् ऐसा हो कि अचेतता वाले ने निर्जल उपवास रक्खा हो या किसी कारण से भूखा रहा हो तो शराब इसको न दें क्योंकि खाली पेट में शराब बांयटे सिरदर्द और पक्षाघात उत्पन्न करती है सो जो ऐसाही हो तो उसका इलाज सुगन्धित भोजनों की सुगन्धि से या थोड़े से मांस के पानी से करें और जो

अचेतता का कारण हुआ जैसा सब का वर्णन ऊपर हो चुका है और यह मूर्च्छा मवाद के रुकने के भेद में से है और मवाद के निकलने के कारण में नहीं है और जो अचेतता तबियत के भ्रम से होती है उस का कारण जमा हुआ खून नहीं है । यह थोडे समयमें दूरहो जाताहै जैसे फस्द खोलते ही जब थोडासा खून निकले तब अचेतहो जाय फिरखून बन्द होने से पहले चेत आजाय इस लिये कि तबियत उस दशाको जान लेती है और जब कि तबियत आपस में विरुद्ध हैं प्रत्येक मनुष्य की तबियत पहली फस्द में अनजान नहीं बन सक्ती क्योंकि किसी २ की प्रकृति में न जानने के सिवाय जैसा काम आपडे उससे घबडाहट नहीं होती चित्त में शान्ति रहती है जैसा बहुधा मनुष्योंमें देखाभी जाताहै (इलाज) जानना चाहिये कि हकीम रोगीकी दशा को मूर्छा की दशामें चैतन्यताके समय जान सक्ताहै और जो यह मूर्छा के समय पहुचे तो ऐसा उपायकरें कि कारण नष्टहो जाय और शक्ति तथा रूहकी सहायताकरें और तबियत को चौकावें इसमें शक्ति और आत्मा की सहायता इस प्रकार की हुआ करती है कि प्रकृति के अनुकूल उचित और हेतु विपरीति औषधों को सुघावें और गलेमें टपकावें जो मूर्छावाले की प्रकृति गर्महै तो कपूर, चदन,गुलाब ककडी खीरा ठढी करके और थोडी कस्तूरी मिलाकर सुघावें जिससे कस्तूरी प्राकृतिक गर्मी की सहायताकरै और कपूर चदन गुलाब ऊपरी गर्मी और ज्वरको कम करें और गुलाब ठढा करके गलेमें टपकावें और छाती तथा मुखपर जोरसे छिडकें और ठडे पानी में थोडी सी पतली शराब या मांस का पानी मिलाकर गलेमें टपकाना और मुखपर ठडे पानी का छींटा देना अच्छा है और बहुधा चेत होनेपर चदनी पोशाक पहरना और उचित भोजन और खाना पीना लाभदायकहै और जो अचेतता वाले की ठढी प्रकृतिहै तो कस्तूरी अम्बर, रेहान और जिन भोजनों में सुगन्धित चीजें हो जैसे इलायची, लौंग दालचीनी, केसर और उनके समान सुघावें और दिवाल मुश्क या दो रत्ती कस्तूरी शराब में मिलाकर गर्म करके गलेमें टपकावें और आमाशय के मुखपर नार्दैन का तेल और मस्तगी का तेल मलें और कदाचित् ऐसा हो कि अचेतता वाल्ने निर्जल उपवास रक्खा हो या किसी कारण से भूखा रहा हो तो शराब इसको न दें क्योंकि खाली पेट में शराब बायटे सिरदर्द और पक्षघात उत्पन्न करती है सो जो ऐसाही हो तो उसका इलाज सुगन्धित भोजनों की सुगन्धि से या थोडे से मांस के पानी से करें और जो

तरतूसी की तरफ सम्बन्धित है कि जिसको फौलन भी कहते हैं किताब
क़राबादीनवकायी में इसकी विधि इस प्रकार पर लिखी गई है अकरक़रा,
फरफयून, बालछड़, ३॥ माशे, केसर १७॥ माशे, भांग के बीज सफेद ७०
माशे इन दवाओं को महीन पीसकर शहद आवश्यकतानुसार लेकर उसमें
दवाओं को मिलालें इसकी मात्रा बलवान के लिये एक अखरोट के समान,
और निर्बल के लिये बाकला के दाने के बराबर और लड़कों के लिये चना
की बराबर है (लाभ) अचेतता के बहुतसे भेदों में जो बहुत पसीना आने
के कारणसे उत्पन्नहो वमन कराना हानि करताहै और हाथ पांव का मलना,
गर्म रखना और आमाशय के मुख पर गर्म तेल मलना पाखाना बांधने न
देना लाभदायक है और जो अचेतता की दशा में सर्दी खाने या बड़े छरे-
रों से भीतर के अंगों में सर्दी आजाय तो फलाफली और उसके समान दवा
दें और किताब क़राबादी न कादरी में लिखा है (फलाफली के बनाने की
विधि) काली और सफेद मिर्च, पीपल प्रत्येक ७० माशे, ऊद बिल्सां ३५
माशे, बालछड़, दमामा प्रत्येक १४ माशे, सोंठ, अजमोद के बीज, सीसिया
लयूस (हींगके बीज), नज, उसारूनगमन (पहाड़ी सौसन) प्रत्येक ३॥
माशे, कूटछानकर तिगुने शहद में मिलाकर माजून बनावें । इसकी मात्रा
गर्म पानी के साथ ३॥ माशे है जिन लोगों को आमाशय की निर्बलताके
कारणसे या पित्तके अधिक होनेसे फस्दमें या उसके उपरांत अचेतता होजाय तो
योग्यहै कि फस्द खोलनेके पहले ऐसे शर्बतदें कि आमाशयको पुष्टि करें और
पित्तकी तेजी दबावें जैसे शर्बत अनार सेवका रुब्ब और नींबूका रुब्ब और जो
गर्भस्थान का घुटना निर्बलता का कारण हो तो इन की सुगन्धि उसको न
सुघावें और दूसरे उपाय जो उसके योग्य हैं काम में लावें और जिस प्रकार
की दवाओं की गन्धि आमाशय और उसकी प्रकृति के अनुसार हो सुंघावें
जैसे कस्तूरी, [illegible] और [illegible] और उनके समान गर्भस्थानके घुटने के
वर्णन में इसका ठीक २ वर्णन आवेगा जिस ज्वरों के भीतर मूर्छा हो और
उसके कारण से ज्वरों के आरम्भ में अचेतता उत्पन्न हो तो योग्य है कि जब
ज्वर का असर मालूम हो तब हाथ पांव दृढ़ बांधदें और मलें और गर्म पानी
से [illegible] भीतर व बाहर की तरफ [illegible] और
सोने भी न दें क्योंकि नींद से [illegible] और गर्मी भीतर की तरफ [illegible]
होती है और इस कारण से प्रकार भी भीतर की तरफ जाता है और मूर्छा

तरतूसी की तरफ सम्बन्धित है कि जिसको फोलन भी कहते हैं किताब क़राबादीनवकायी में इसकी विधि इस प्रकार पर लिखी गई है अक़रक़रा, फरफयून, वालछड़, ३॥ माशे, केसर १०॥ माशे, भांग के बीज सफेद ७० माशे इन दवाओं को महीन पीसकर शहद आवश्यकतानुसार लेकर उसमें दवाओं को मिलालें इसकी मात्रा बलवान के लिये एक अखरोट के समान, और निर्बल के लिये बाकला के दाने के बराबर और लड़कों के लिये चना की बराबर है (लाभ) अचेतता के बहुतसे भेदों में जो बहुत पसीना आने के कारणसे उत्पन्नहो वमन कराना हानि करताहै और हाथ पांव का मलना, गर्म रखना और आमाशय के मुख पर गर्म तेल मलना सोकाना बोलने न देना लाभदायक है और जो अचेतता की दशा में सर्दी खाने या बड़े छेदों से भीतर के अंगों में सर्दी आजाय तो फलाफली और उसके समान दवा दें और किताब कराबादी न कादरी में लिखा है (फलाफली के बनाने की विधि) काली और सफेद मिर्च, पीपल प्रत्येक ७० माशे, ऊद बिलसां ३५ माशे, वालछड़, हमामा प्रत्येक १४ माशे, सोंठ, अजमोद के बीज, सीसिया लयूस (हींगके बीज), नज, उसारूलरावन (पहाड़ी सोसन) प्रत्येक ३॥ माशे, कूटछानकर तिगुने शहद में मिलाकर माजूम बनावें । इसकी मात्रा गर्म पानी के साथ ३॥ माशे हैं जिन लोगों को आमाशय की निर्बलताके कारणसे या पित्तके अधिक होनेसे फस्दमें या उसके उपरांत अचेतता होजाय तो योग्यहै कि फस्द खोलनेके पहले ऐसे शर्बत दें कि आमाशयको पुष्टि करें और पित्तकी तेजी दबावें जैसे शर्बत अनार सेवका रुब्ब और नीबूका रुब्ब और जो गर्भ स्थान का घुटना निर्बलता का कारण हो तो इत्र की सुगन्धि उसको न सुघावें और दूसरे उपाय जो उसके योग्य हैं काम में लावें और जिस प्रकार की दशाओं की संधि आमाशय और उसकी प्रकृति के अनुसार हो सुघावें जैसे अक़रक़रा, हरमल और हींग और उनके समान गर्भस्थानके घुटने के वर्णन में इसका ठीक २ वर्णन आवेगा जिस रोगी के भीतर सूजन हो और उसके कारण से रोग के आरम्भ में अचेतता उत्पन्न हो तो योग्य है कि जब तक इसका मालूम हो तब हाथ पांव दृढ़ बांधें और मलें और गर्मी, सर्दी से निकलने को लिये दवाएं भीतर व बाहर की तरफ दिया जावे और सोने भी न दें क्योंकि नींद में गर्मी और गर्मी भीतर की तरफ जाती है और इस कारण से मवाद भी भीतर की तरफ जाता है और सूजन

जो दवा काम में लावें प्रकृति को असली हालतपर लाने वाली हो या मवादके निकालने वाली हो ऐसी चीजों के साथ मिलावें कि आत्मा को शक्ति दें और दिल से सम्बन्धित हो और जब ठंढ पहुंचाने की आवश्यकता पड़े तो बहुत परिश्रम उचित नहीं है क्योंकि दिल आत्मा का स्थान है और आत्मा गर्म है विशेष सर्दी पहुचाने में भय है कि शेष आत्मा बुझजाय क्योंकि ऊपरी गर्मीके कारण से जो दिल में आपड़ी है आत्मा में कमी आगई है इसी कारण से कपूर की टिकिया जो पहिले हकीमों ने दिल की गर्म दुष्ट प्रकृति के लिये बनाई है बिना केसर के काम में नहीं लाते और जो कुछ मवाद के निकालने के लिये नियत किया है बिना गावजवां के नहीं देते या कोई और चीज उसके समान उसमें मिला देते हैं क्यों कि वह समझते हैं कि परमात्मा ने तबियत को शरीर की आरोग्यता और रक्षा के लिये नियत किया है और विशेष चतुराई से नियत समय में शरीर में उसका गुण करने की आज्ञा दी है सो केसर की टिकिया जब कि खाई जाती है तो तबियत केसर की शक्ति को दवाओं से अलग करके आत्मा में पहुची है कि उससे आत्मा में प्रकाश और शक्ति आजाती है और कपूर तथा दूसरी दवाओं की शक्ति मुख्य दिल में पहुचाती है जिससे उसकी गर्म प्रकृति में समानता आजाय परन्तु ऐसे उपाय तबियत शक्ति पर निर्भर है क्योंकि जो तबियत बलवान् न होगी तो कोई भी इलाज लाभदायक न होगा और ऐसेही केसर को दिलकी ठंढी दवा में मिला देना और भी लाभदायक है कि केसर की शक्ति ठंढी दवाओं की शक्ति को दिल में पहुचाती है इसलिये कि ठंढी दवा मफ्तेह नहीं होती और जान लेना चाहिये कि जो दवा दिल को लाभदायक हैं वे बहुत हैं परन्तु जो बहुत मुख्य है यहां उनका वर्णन किया जाता है और जो न गर्म हैं न ठंढी वे ये हैं याकूत, फीरोजा, सोना, चांदी, गावजवां, और गर्म ये हैं दरूनज (बिच्छू के समान) जदवार (निर्बिसी), कस्तूरी, अम्बर, जुरंबाद (कपूर), रेशम, बहमन लाल और सफेद, लौंग, कच्ची ऊद, बादरजबोया, और उसके बीज, तुम्मी और उसके बीज, नीबू के पत्ता और छिलका, पतरज, सासन (पहाड़ी सोसन) और ठंढी दवा यह हैं मोती कहरुबा, (सुनहरी गोंद) मूंगा की जड़, कपूर, चन्दन, बहमोमन, गिले मख्तूम, स्वेद मव, मूल्या और तर धनियां और सफेदियों में से आराम देने वाली चांदी लाभदायक है और आराम पहुंचाने वाली दवाओं के मुख्ये हिसाब

जो दवा काम में लावें प्रकृति को असली हालतपर लाने वाली हो या मवादके निकालने वाली हो ऐसी चीजों के साथ मिलावें कि आत्मा को शक्ति दें और दिल से सम्बन्धित हो और जब ठंढ पहुंचाने की आवश्यकता पड़े तो बहुत परिश्रम उचित नहीं है क्योंकि दिल आत्मा का स्थान है और आत्मा गर्म है विशेष सर्दी पहुचाने में भय है कि शेष आत्मा बुझजाय क्योंकि ऊपरी गर्मीके कारण से जो दिल में आपड़ी है आत्मा में कमी आगई है इसी कारण से कपूर की टिकिया जो पहिले हकीमों ने दिल की गर्म दुष्ट प्रकृति के लिये बनाई है बिना केसर के काम में नहीं लाते और जो कुछ मवाद के निकालने के लिये नियत किया है बिना गावजबां के नहीं देते या कोई और चीज उसके समान उसमें मिला देते हैं क्यों कि वह समझते हैं कि परमात्मा ने तबियत को शरीर की आरोग्यता और रक्षा के लिये नियत किया है और विशेष चतुराई से नियत समय में शरीर में उसका गुण करने की आज्ञा दी है सो केसर की टिकिया जब कि खाई जाती है तो तबियत केसर की शक्ति को दवाओं से अलग करके आत्मा में पहुची है कि उससे आत्मा में प्रकाश और शक्ति आजाती है और कपूर तथा दूसरी दवाओं की शक्ति मुख्य दिल में पहुचाती है जिससे उसकी गर्म प्रकृति में समानता आजाय परन्तु ऐसे उपाय तबियत शक्ति पर निर्भर है क्योंकि जो तबियत बलवान न होगी तो कोई भी इलाज लाभदायक न होगा और ऐसेही केसर को दिलकी ठंडी दवा में मिला देना और भी लाभदायक है कि केसर की शक्ति ठंडी दवाओं की शक्ति को दिल में पहुचाती है इसलिये कि ठंडी दवा मवेश नहीं होती और जान लेना चाहिये कि जो दवा दिल को लाभदायक हैं वे बहुत हैं परन्तु जो बहुत मुख्य है यहां उनका वर्णन किया जाता है और जो न गर्म हैं न ठंडी वे ये हैं याकूत, फीरोजा, सोना, चांदी, गावजबां, और गर्म ये हैं दरूनज (बिच्छू के समान) जदवार (निर्बिसी), कस्तूरी, अम्बर, जुरबाद (कपूर), रेशम, बहमन लाल और सफेद, लौंग, कच्ची ऊद, बादरनजबोया, और उसके बीज, तुल्मी और उसके बीज, नीबू के पत्ता और छिलका, पतरज, सासन (पहाड़ी सोसन) और ठंडी दवा यह हैं मोती कहरबा, (मुसहरी गोंद) मूंगा की जड़, कपूर, चन्दन, बडमोचन, गिलि मखतूम, स्पंदू सब, गुल्म और तर धनियां और सफोतियों में से आराम देने वाली मारुती लाभदायक है और आराम पहुंचाने वाली दवाओं के मुख्ये सिवाय

के दस्त उत्पन्न हों या नकसीर जारी होजाय वा बवासीर का खून बहने लगे तो अच्छा होजाता है।

पांचवां प्रकरण

दिलके दोनों कानो की सूजनका वर्णन

इसका अर्थ सविस्तर वर्णन कियागया है कि दिलके दो कान हैं जान लेना चाहिये कि यह रोग गर्म रोगों और पुराने ज्वरों के उपरान्त उत्पन्न होता है और उसके यह चिन्ह है कि छाती फेफड़ा और आमाशय के मुख के समीप जहां दिल के दो कानों की जगह है रोगी को बोझ मालूम हो और प्राय. मूर्छा की दशा उत्पन्न हो और मुख बहुत पीला पड़जाय और आखोंपर भरभराहट मालूम हो और डिम्बकी गति अच्छी जारी न होसके और इससे कि परिधि तक पहुचे केन्द्रकी तरफ पलटजाय और इसरोगीका पक्का चिन्ह यहहै कि उक्तरोग पहल होचुकेहों और यह सूजन इस प्रकारकी होतीहै कि गर्म रोगोंके कारणसे रूह और गर्मी नष्ट होजाय और दिलकी शक्ति निर्बल होजाय उसकारणसे भोजनमें अधिक परिश्रम न करसके और तबियतके अनुसार शरीरके फोक न निकलसके इस कारणसे दिलमें बुरेर फोक इकट्ठे होजांय क्योंकि दिल श्रेष्ठ है और उसकी अपेक्षा उसकी झिल्ली और दोनों कान निकृष्ट हैं तबियत इस निकम्मे फोकको निकृष्टकी तरफ लौटा देतीहै तब अवश्य दिलके पर्दे में या उन दो कानों में सूजन उत्पन्न हो जैसा मवादका झुकाव हो और यह सूजन ठहरीहै क्योंकि गर्म सूजन दिलमेंहो या पर्देमें या उसकेदोनों कानों में छुट्टी नहीं देती उसी समय मारडालती है और मुख्य दिलपे यद्यपि ठंढी सूजन हो मारडालने वालीहै परन्तु ठंढी सूजन जो मुख्य दिलमें नहो और जल्द उपाय किया जाय तो इलाज हो सकता है और न हो तो आदमी भांति दिन दुबला होता जाता है यहां तक कि मर जाता है। इमीद जालीनूस कहताहै कि मेरे पास एक बन्दर था वह प्रतिदिन दुबला होताथा मैंने जब उसको मारडाला और उसके पेट को चीर डाला तो उसके दिल के पर्दे में कड़ी सूजन देखी सो मैंने जानलिया कि इसके दुबले होनेका यही कारण था। जानना चाहिये कि बन्दर के अग मनुष्य जैसे होते हैं इसलिये इमीद जालीनूसने बहुतसे बन्दर इकट्ठे किये थे और जब किसी परीक्षा में कोई बात कठिन दिखाई देतीथी तो बन्दर को मारकर देख लेता था (इलाज) मवाद के मुन्जिज करने और निकालने के लिये बाबूना, अकलीलुल मलिक, इज़खर, गेहूं की भूसी का काढ़ा

के दस्त उत्पन्न हों या नकसीर जारी होजाय या बवासीर का खून बहने लगे तो अच्छा होजाता है।

पांचवां प्रकरण

दिलके दोनों कानो की सूजनका वर्णन

इसका अर्थ सविस्तर वर्णन कियागया है कि दिलके दो कान हैं जान लेना चाहिये कि यह रोग गर्म रोगों और पुराने ज्वरों के उपरान्त उत्पन्न होता है और उसके यह चिन्ह है कि छाती फेफड़ा और आमाशय के मुख के समीप जहां दिल के दो कानों की जगह है रोगी को बोझ मालूम हो और प्राय. मूर्छा की दशा उत्पन्न हो और मुख बहुत पीला पड़जाय और आंखोंपर भरभराहट मालूम हो और हिलकी गति अच्छी जारी न होसके और इससे कि परिधि तक पहुचे केन्द्रकी तरफ पलटजाय और इसरोगीका पक्का चिन्ह यहहै कि उक्तरोग पहले होचुकेहों और यह सूजन इस प्रकारकी होतीहै कि गर्म रोगोंके कारणसे रूह और गर्मी नष्ट होजाय और दिलकी शक्ति निर्बल होजाय उसकारणसे भोजनमें अधिक परिश्रम न करसके और तबियतके अनुसार शरीरसे फोक न निकलसके इस कारणसे दिलमें बुरेर फोक इकट्ठे होजांय क्योंकि दिल श्रेष्ठ है और उसकी अपेक्षा उसकी झिल्ली और दोनों कान निकृष्ट हैं तबियत इस निकम्मे फोकको निकृष्टकी तरफ लौटा देतीहै तब अवश्य दिलके पर्दे में या उन दो कानों में सूजन उत्पन्न हो जैसा पथरका भूकाल हो और यह सूजन ठंडीहै क्योंकि गर्म सूजन दिलमेंहो या पर्दोंमें या उसके दोनों कानों में छुट्टी नही देती उसी समय मारडालती है और मुख्य दिलमें यदपि ठंडी सूजन हो मारडालने वालीहै परन्तु ठंडी सूजन जो मुख्य दिलमें नहो और जल्द उपाय किया जाय तो इलाज हो सकता है और न हो तो आदमी भांति दिन दुबला होता जाता है यहां तक कि मर जाता है। हकीम जालीनूस कहताहै कि मेरे पास एक बन्दर था वह प्रतिदिन दुबला होताथा मैंने जब उसको मारडाला और उसके पेट को चीर डाला तो उसके दिल के पर्दे में बड़ी सूजन देखीतो मैंने जानलिया कि उसके दुबले होनेका यही कारण था। जानना चाहिये कि बन्दर के अंग मनुष्य जैसे होते हैं इसलिये हकीम जालीनूसने बहुतसे बन्दर इकट्ठे किये थे और जब किसी परीक्षा में कोई बात कठिन दिखाई देतीथी तब बन्दर को मारकर देख लेता था (इलाज) मवाद के मुन्जिज करने और निकालने के लिये बाबूना, अफसंतीन, इकलीलुलमलिक, इजखर, गेहूं की भूसी और पानी

असलीसून उत्पन्नहो और जिस प्रकारकी लाभदायक माजूनोंका वर्णन मार्नी खोलिया में होचुकाहै उनसे दिलको पुष्टकरें और जानलें कि तिरियाक कबीर इसरोग में बहुत लाभदायकहै इस किताबके बनानेवालेने जो वातनाशक काढ़ा वर्णन कियाहै उसकी यह विधिहै सनायमकी २४।। माशे, गुलाबके फूल १४माशे अफ्तीमून (अकाशबेल) पोटली में बांधकर पीली और काली हरड़ का छिल्का प्रत्येक १७।। माशे, बिसफायेज (खगाली एक लकड़ी है) छिली हुई मुलहटी, और सौंफ प्रत्येक ७ माशे, उस्तखद्दूस (धारू) और इसराज, पित्त पापड़ा, गावजवां, बादरजबोया (बिल्लीलोटन) बनफशा नीलोफर प्रत्येक १०।। माशे बिना दानेकी मुनक्का, लिसोढ़ा प्रत्येक ३० दाने, तीन पाव पानी में औटावें जब आधा रहजाय तो छानकर आफ्तावी गुल कंद १०।। माशे, अमलतासका गूदा बादामके तेलमें मिलाकर तुरंजबीन प्रत्येक १७।। माशे उस निर्मल पानी में घोलकर पीवें यह बलवान् प्रकृति वाले मनुष्य के लिये एक मात्राहै ।

सातवां प्रकरण

दिलके छिलजाने का वर्णन ।

यह इस प्रकारका है कि आदमी को मालूम हो कि कोई चीज उसके दिलको छीलती है और सोचकी अधिकता से अचेत होकर गिर पड़े और फिर जल्द चैतन्य होजाय इसलिये कि कारण निर्बल है और जल्द नष्ट होजाता है और यह रोग ऐसे मनुष्य को होता है जो बहुत समय तक पित्त के दस्तों में फसा रहता है यहांतक कि जो तरियां जमने के समीप हैं निकलने लगें या उसके उत्पन्न होती हैं कि जिसके दिमाग से गर्म और तेज फोक आमाशय पर या दिलपर गिरें जैसो कि इसमें दो कारण विरुद्ध हैं और प्रगट है कि दिमागकी तरियां बहुधा आमाशय परही गिरा करतीहैं और दिलपर नहीं गिरती परन्तु फेफड़ेके द्वारा गिरतीहैं और जब फेफड़ेमें आती हैं तो बहुधा खांसी में निकलजाती हैं और दिलकीतरफ नहींजातीं और कभी फेफड़े की निर्बलता से खांसी में नहीं निकलतीं और दिलपर आपड़ती हैं तो [illegible] मारडालती हैं इसलिये किताब उसके अनुसार का [illegible] कदर [illegible] अतिरिक्त यह है कि दिल को आमाशय पर अ[illegible] [illegible]रियां इस आमाशय पर पित्त के गिरने से होते हैं [illegible] आमाशय की छील डालते हैं यह [illegible]

असलीखून उत्पन्नहो और जिस प्रकारकी लाभदायक माजूनोंका वर्णन मार्लीखोलिया में होचुकाहै उनसे दिलको पुष्टकरें और जानलें कि तिरियाक फर्वार इसरोग में बहुत लाभदायकहै इस किताबके बनानेवालेने जो बातनाशक काढ़ा वर्णन कियाहै उसकी यह विधिहै सनायमकी २४॥ माशे, गुलाबके फूल १४माशे अफ्तीमून (अकाशबेल) पोटली में बांधकर पीली और काली हरड़ का छिलका प्रत्येक १७॥ माशे, बिसफायेज (खगाली एक लकड़ी है) छिली हुई मुलहटी, और सौंफ प्रत्येक ७ माशे, उस्तखद्दूस (धारू) और ईसराज, पित्त पापड़ा, गावजबां, बादरजबोया (बिल्लीलोटन) बनफशा नीलोफर प्रत्येक १०॥ माशे बिना दानेकी मुनक्का, लिसोढ़ा प्रत्येक ३० दाने, तीन पाव पानी में औटावें जब आधा रहजाय तो छानकर आफतावी गुलकंद १०॥ माशे, अमलतासका गूदा बादामके तेलमें मिलाकर तुरंजबीन प्रत्येक १७॥ माशे उस निर्मल पानी में घोलकर पीवें यह बलवान् प्रकृति वाले मनुष्य के लिये एक मात्राहै ।

सातवां प्रकरण

दिलके छिलजाने का वर्णन ।

यह इस प्रकारका है कि आदमी को मालूम हो कि कोई चीज उसके दिलको छीलती है और सोचकी अधिकता से अचेत होकर गिर पड़े और फिर जल्द चैतन्य होजाय इसलिये कि कारण निर्बल है और जल्द नष्ट होजाता है और यह रोग ऐसे मनुष्य को होता है जो बहुत समय तक पित्त के दस्तों में फसा रहता है यहांतक कि जो तरियां जमने के समीप है निकलने लगें या उसके उत्पन्न होती है कि जिसके दिमाग से गर्म और तेज फोक आमाशय पर या दिलपर गिरें जैसी कि इसमें दो कहावत विरुद्धहैं और प्रगट है कि दिमागकी तरियां बहुधा आमाशय परही गिरा करतीहैं और दिलपर नहीं गिरतीं परन्तु फेफड़ेके द्वारा गिरतीहैं और जब फेफड़ेमें आती हैं तो बहुधा खांसी में निकलजाती हैं और दिलकीतरफ नहींजातीं औरकभी फेफड़े की निर्बलता से खांसी में नहीं निकलतीं और दिलपर आपड़ती हैं तो [illegible] मारडालती हैं इसलिये [illegible] कहावत का [illegible] अतिरिक्त यह है कि दिल को आमाशय पर [illegible] तरियां इस आमाशय पर पित्त के गिरने से होते हैं [illegible] आमाशय की छीलें डालते हैं तब [illegible]

असलीसून उत्पन्नहो और जिस प्रकारकी लाभदायक माजूनोंका वर्णन मॉली खोलिया में होचुकाहै उनसे दिलको पुष्टकरें और जानले कि तिरियाक कबीर इसरोग में बहुत लाभदायकहै इस किताबके बनानेवालेने जो बातनाशक काढ़ा वर्णन कियाहै उसकी यह विधिहै सनायमकी २५॥ माशे, गुलाबके फूल १४माशे अफ्तीमून (अक्षासयेल) पोटली में बांधकर पीली और काली हरड़ का छिलका प्रत्येक १७॥ माशे, बिसफायेज (खगाली एक लकड़ी है) छिली हुई मुलहटी, और सौंफ प्रत्येक ७ माशे, उस्तखद्दूस (धारू) और हैसराज पित्त पापड़ा, गावजवां, बादरंजबोया (बिल्लीलोटन) बनफशा नीलोफर प्रत्येक १०॥ माशे बिना दानेकी मुनक्का, लिसौढ़ा प्रत्येक ३० दाने, तीन पाव पानी में औटावें जब आधा रहजाय तो छानकर आफताबी गुल-कन्द १०॥ माशे, अमलतासका गूदा बादामके तेलमें मिलाकर तुरंजबीन प्रत्येक १७॥ माशे उस निर्मल पानी में घोलकर पीवें यह बलवान् प्रकृति वाले मनुष्य के लिये एक मात्राहै।

सातवां प्रकरण

दिलके छिलजाने का वर्णन।

यह इस प्रकारका है कि आदमी को मालूम हो कि कोई चीज उसके दिलको छीलती है और सोचकी अधिकता से अचेत होकर गिर पड़े और फिर जल्द चैतन्य होजाय इसलिये कि कारण निर्बल है और जल्द नष्ट होजाता है और यह रोग ऐसे मनुष्य को होता है जो बहुत समय तक पित्त के दस्तों में फसा रहता है यहांतक कि जो तरियां जमने के समीप हैं निकलने लगें या उसके उत्पन्न होती है कि जिसके दिमाग से गर्म और तेज फोक आमाशय पर या दिलपर गिरें जैसी कि इसमें दो कारण विरुद्ध और प्रगट हैं कि दिमागकी तरियां बहुधा आमाशय परही गिरा करतीहैं और दिलपर नहीं गिरतीं परन्तु फेफड़ेके द्वारा गिरतीहैं और जब फेफड़ेमें आती हैं तो बहुधा खांसी में निकलजाती हैं और दिलकीतरफ नहीजातीं और कभी फेफड़े की निर्बलता से खांसी में नहीं निकलती और दिलपर जापड़ती हैं तो कष्ट मारडालती हैं इसलिये किताब करने वाला करता है कि अधिकतर यह है कि दिल को आमाशय पर आरूढ़ करें क्योंकि कभी घी दस्त आमाशय पर पित्त के गिरने से होते हैं, और जब बढ़जाते हैं आमाशय की और डालते हैं तब रोगी को मालूम होता है कि ज्यादा

असलीखून उत्पन्नहो और जिस प्रकारकी लाभदायक माजूनोंका वर्णन पाली खोलिया में होचुकाहै उनसे दिलको पुष्टकरें और जानलें कि तिरियाक कबीर इसरोग में बहुत लाभदायकहै इस किताबके बनानेवालेने जो वातनाशक काढ़ा वर्णन कियाहै उसकी यह विधिहै सनायमकी २४॥ माशे, गुलाबके फूल १४माशे अफ्तीमून (अकाशबेल) पोटली में बांधकर पीली और काली हरड़ का छिल्का प्रत्येक १७॥ माशे, विसफायेज (खगाली एक लकड़ी है) छिली हुई मुलहटी, और सौंफ प्रत्येक ७ माशे, उस्तखद्दूस (धारु) और हंसराज पित्त पापड़ा, गावजवां, बादरंजबोया (बिल्लीलोटन) बनफशा नीलोफर प्रत्येक १०॥ माशे बिना दानेकी मुनक्का, लिसौढा प्रत्येक ३० दाने, तीन पाव पानी में औटावें जब आधा रहजाय तो छानकर आफताबी गुलकंद १०॥ माशे, अमलतासका गूदा बादामके तेलमें मिलाकर तुरंजबीन प्रत्येक १७॥ माशे उस निर्मल पानी में घोलकर पीवें यह बलवान् प्रकृति वाले मनुष्य के लिये एक मात्राहै ।

सातवां प्रकरण

दिलके छिलजाने का वर्णन ।

यह इस प्रकारका है कि आदमी को मालूम हो कि कोई चीज उसके दिलको छीलती है और सोचकी अधिकता से अचेत होकर गिर पडे और फिर जल्द चैतन्य होजाय इसलिये कि कारण निर्बल है और जल्द नष्ट होजाता है और यह रोग ऐसे मनुष्य को होता है जो बहुत समय तक पित्त के दस्तों में फसा रहता है यहांतक कि जो तरियां जमने के समीप है निकलने लगें या उसके उत्पन्न होती है कि जिसके दिमाग से गर्म और तेज फोक आमाशय पर या दिलपर गिरें जैसी कि इसमें दो कहावत विरुद्धहै और प्रगट है कि दिमागकी तरियां बहुधा आमाशय परही गिरा करतीहै और दिलपर नहीं गिरतीं परन्तु फेफड़ेके द्वारा गिरतीहैं और जब फेफड़ेमें आती हैं तो बहुधा खांसी में निकलजाती हैं और दिलकीतरफ नहींजातीं और कभी फेफड़े की निर्बलता से खांसी में नहीं निकलती और दिलपर जापड़ती हैं तो कफका मारडालती है इसलिये किताब करह अस्बाब का बनाने वाला कहता है कि अतिउत्तम यह है कि दिल को आमाशय पर आरूढ़ करें क्योंकि कभी दिलौ दर्द आमाशय पर पित्त के गिरने से होते हैं, और जब रद्दमादे से हो आमाशय की तीक्ष्ण डालते हैं तब रोगी को मालूम होता है कि उसका

रता है और उसका दिल फड़का करता है और इस रोग का यह कारण है कि तरी इकट्ठी होकर उस झिल्ली में बन्द हो गई है जो दिल पर लिपटी हुई है यही कारण है कि जब मनुष्य उसतरी की सर्दी का ध्यान करता है जो दिलके और पास आगई है तो अपने दिलको जानता है कि पानी में पड़ा है और जब उसके मालूम होने से दिल कष्ट पाता है तो फड़कने की गति पर हिलता है इसी लिये पहले हकीम लोग इस रोग को धड़कन के भेदों में जानते हैं (इलाज) तरियों के नष्ट होने और निकालने के लिये शुद्ध अयारजात या अन्य ऐसी ही दवाएं और परिश्रम करें और गुलाब के फूल, बालछड़, केसर लेकर बादरंज बोया (बिल्ली लोटन) के पानी में मिलाकर छाती पर लेप करें और दिल में गर्मी पहुंचाने और उसकी तरियों के निकालने के लिये अति उत्तम उपाय यह है कि रोगी को धूप में लावें (लाभ) कभी यह तरियां जो दिलपर छागई हैं अपनी असली दशासे भिन्न होजाती हैं और असमान गर्मी से खुश्कहोकर दिल पर चिपट जाती हैं और उसको दबाती हैं और असली दशाको चौड़े होने से रोकती हैं इस दशा में श्वास के आने जाने में अन्तर पड़ जाता है और छाती भारी रहती है और तबियत में क्रोध आता है और उसका यह उपाय है कि छाती को नर्म करने वाली चीजें और मोम का लेप लगावें जिससे खुश्की जाती रहे फिर जिस तरह वर्णन किया है मवादको निकाले और दिलको दृढ़ करनेके लिये परिश्रम करें।

दसवां प्रकरण

दिलके खिचने का वर्णन

यह इस प्रकार का है कि मनुष्य ऐसा समझे कि जैसे दिल नीचे की तरफ खिचाजाता है और इस रोग का कारण यह है कि जिगर के लटकने की जगहमें कोई दोष आजाय इस कारणसे लटकन की जगह तक खिचजाय और क्योंकि दिल जिगरसे संयोग रखता है उसके लटकने की जगहके खिचने से दिल भी खिचने लगे और कदाचित् खिचाव मालूम होनेसे जिससे घोर कष्ट और अचेतता कीसी दशा उत्पन्न हो (इलाज) उन रोगोंमें जाय की निकालें और उनके योगपत्रों और गर्मीके स्नान और दूसरे स्थिर दोष को दवाना सकते हैं।

रता है और उसका दिल फड़का करता है और इस रोग का यह कारण है कि तरी इकट्ठी होकर उस झिल्ली में बन्द हो गई है जो दिल पर लिपटी हुई है यही कारण है कि जब मनुष्य उसतरी की सर्दी का ध्यान करता है जो दिलके और पास आगई है तो अपने दिलको जानता है कि पानी में पड़ा है और जब उसके मालूम होने से दिल कष्ट पाता है तो फड़कने की गति पर हिलता है इसी लिये पहले हकीम लोग इस रोग को धड़कन के भेदों में जानते हैं (इलाज) तरियों के नष्ट होने और निकालने के लिये शुष्क अयारजात या अन्य ऐसी ही दवाएं और परिश्रम करें और गुलाब के फूल, बालछड़, केसर लेकर बादरंज बोया (बिल्ली लोटन) के पानी में मिलाकर छाती पर लेप करें और दिल में गर्मी पहुंचाने और उसकी तरियों के निकालने के लिये अति उत्तम उपाय यह है कि रोगी को क्रोध में लावें (लाभ) कभी यह तरियां जो दिलपर छागई हैं अपनी असली दशासे विशेष होती हैं और असमान गर्मी से सूखकर दिल पर चिपट जाती हैं और उसको दबाती हैं और असली दशाको चौड़े होने से रोकती हैं इस दशा में श्वास के आने जाने में अन्तर पड़ जाता है और शक्ती मारी रहती है और तबियत में क्रोध आता है और उसका यह उपाय है कि छाती को नर्म करने वाली चीजें और मोम का लेप लगावें जिससे खुश्की जाती रहे फिर जिस तरह वर्णन किया है मवादको निकाले और दिलको कष्ट करनेके लिये परिश्रम करें।

दसवां प्रकरण

दिलके खिचने का वर्णन

यह इस प्रकार का है कि मनुष्य ऐसा समझे कि जैसे दिल नीचे की तरफ खिचाजाताहै और इस रोग का कारण यहहै कि जिगर के लटकने की जगहमें कोई दोष आजाय इस कारणसे लटकन की जगह खिचजाय और क्यों कि दिल जिगरसे सयोग रखताहै उसके लटकने की जगहके खिचने से दिल भी खिचने लगे और कदाचित् खिचाव मालूम होनेसे जिसमें मूर्छा कष्ट और अचेतना कीसी दशा उत्पन्न हो (इलाज) उन रोगोंसे जिन की निशानी भी उसके योग्यहों और रोगोंके लक्षण और दूसरे जिगरोंके दोष की पहचान सकते हैं।

की तरफ आरूढ़ नहो। दूसरा भेद यहहै जिसमें रुधिर की अधिकतासे दूध कम होजाता है और यह ऐसा होताहै कि खून शरीरमें बहुत बढ़जाय और उसमें कुछ खराबी न आवे परन्तु तबियत उस की अधिकतासे उस को पचा न सके और उसको दूध न बना सके और खून की अधिकता का चिन्ह प्रगटहै (इलाज) फस्द खोलें और ऐसी चीज खाने को देवें जो रुधिर को कमकरें और दूध उत्पन्न करें और तबियत को शुद्ध करें और जो गाढ़ा खून को खराब करे उससे बचता रहै जिस से किसी और विपत्तिमें न पड़े और बहुधा विशेष भय या बड़ी चिन्ता या बच्चे की प्रीति का कम होना या कोई और कारण दूधकी कमी का कारण हो जो प्रकृति को दूध के उत्पन्न करने से रोकता हो और इसके सिवाय शरीर में श्रेष्ठ और उत्तम रुधिर हो परन्तु दूध कम होजाय और इसका चिन्ह यह है कि रुधिर कम उत्पन्न हो और निकम्मे चिन्हों में से कुछभी प्रगट नहो और उसके कारण प्रगट हों (इलाज) कारण को दूर करें और पुष्टिकारक तथा सतोषदायक दवा देवें जिससे प्रकृति दूध उत्पन्न करने पर आरूढ़ हो। तीसरा भेद यह है जिसमें खून के निकम्मे होने से दूध कम उत्पन्न होता है और यह दो प्रकार का है एक तो यहहै कि तीनों दोषों में से कोई दोष रुधिर में मिलजाय और उसको बिगाड़ दे और यह बात प्रगट है कि निकम्मे रुधिर से दूध बहुत कम उत्पन्न होता है दूसरे यह है कि सादा दुष्ट प्रकृति देह में उत्पन्न होकर रुधिर को बिगाड़ दे और केवल छाती में सयोगित हो फिर रुधिर को उस तरफ न भेजै यद्यपि श्रेष्ठ हो और इसको हम दोनों भेदों में वर्णन करते हैं। पहला भेद उस बिगड़े हुए खूनके वर्णनमें है जो दोषों की अधिकतासे हो और पित्त की अधिकता का यह चिन्ह है कि दूध पतला और पीला हो और गन्ध में तेजी और जलन हो और कफकी अधिकता का यह चिन्ह है कि दूध बहुत सफेद और पानीसा हो और स्वाद तथा गन्ध में खट्टा हो और बादी की अधिकता का यह चिन्ह है कि दूध बहुत गाढ़ा हो और उसकी रंगत में मैलापन मालूम हो और बहुत कम हो और [illegible] की अधिकता से दूध गाढ़ा होता है और [illegible] निकलना कठिन है (इलाज) जो कुछ [illegible] में दूधके इसके [illegible] का वर्णन किया है [illegible] [illegible] और पतला हो और [illegible] के साथ नहीं होती तो इसका [illegible] देना न कि गाढ़ा (इलाज) जो दोष अधिक हो उसको निकाले और न

है (दूध को बढ़ाने वाला लेप) बाकला का चून ३५ माशे, कूंठ और छनी हुई तुलसी १७॥ माशे, दोनों को तुलसी के पानी में गूंद कर स्तन पर लेप करें (अन्य लेप) तुलसी के बीज, जौका चून, बाकला का चून, पोदीना, फांतनज (एक प्रकार का पोदीना) और तुलसी महीन पीस कर छाती पर लेप करें ।

दूसरा प्रकरण

दूध की अधिकता और बहने का वर्णन ।

जानना चाहिये कि दूध का बहुत बहना कई कारण से हानिकारी है एक तो यह है कि शरीर को निर्बल करता है क्योंकि दूध का मवाद खून है और इस का विशेष निकलना निर्बलता उत्पन्न करता है दूसरे इस बात का भय है कि अधिकता के कारण से छातियों में रुकजाय और उसमें बाहर की सर्दी पहुंच कर उसको गाढ़ा करडाले इस कारण से निकम्मा होजाय और बहुधा खट्टा भी होजाता है तीसरे यह है कि स्तनों में विशेष खून जो असली गर्मी को दबाले इस कारण से गर्मी उसमें अपना कार्य न करसके और विपत्ति उत्पन्न हों । चौथे यह है कि कदाचित् रिताबत की अधिकता में कुच में सूजन या दूसरे रोग उत्पन्न हों अभिप्राय यह है कि जब दूध की अधिकता हो तो उसका उपाय करना चाहिये परन्तु जिस रोगी स्त्री को निर्बलता और दूसरी विपत्ति न घेर आवे क्योंकि कोई २ स्त्रियां ऐसी होती हैं जो बहुतसा खाती हैं और उनके शरीर में खून बहुत उत्पन्न होता है इस कारण से दूध बढ़जाता है और उस पर भी बहुत विपत्ति नहीं आती सो ऐसी स्त्रियों के लिये दूध को कम करने वाली चीजें काम में न लावें और जो यह जाने कि कोई दूसरी विपत्ति उत्पन्न होजायगी तो भोजन कम करें और ऐसी वस्तु खावें जो खून को सुखादें इस कारण से दूध कमहोजायगा और जानना चाहिये कि दूध की अधिकता के कारण न्यूनता के कारण के विरुद्ध हैं और कभी ऐसा भी होता है कि स्त्रियों का बिना गर्भ के स्तनों में दूध उत्पन्न होजाता है और दर्द उठाता है मुख्य कर जब रजस्वला का रुधिर बंद होगया हो और ऐसा भी होता कि जवान मर्द के स्तन में जवानी के समय दूध उत्पन्न होजाता है और दर्द उठाता है (इलाज) जो दवाएं खून को सुखाने वाली गाढ़ करने वाली, वीर्य को कम करने वाली और जो रुधिर को घटाने वाली दवाएं हैं लाभदायक हैं क्योंकि रुधिर का दूध ही स्तनों गर्भस्थान की ओर

है (दूध को बढ़ाने वाला लेप) बाकला का चून ३५ माशे, कूट और छनी हुई तुलसी १०॥ माशे, दोनों को तुलसी के पानी में गूंद कर स्तन पर लेप करें (अन्य लेप) तुलसी के बीज, जौका चून, बाकला का चून, पोदीना, फांतनज (एक प्रकार का पोदीना) और तुतली महीन पीस कर छाती पर लेप करें ।

दूसरा प्रकरण

दूध की अधिकता और बहने का वर्णन ।

जानना चाहिये कि दूध का बहुत बहना कई कारण से हानिकारी है एक तो यह है कि शरीर को निर्बल करता है क्योंकि दूध का मवाद खून है और इस का विशेष निकलना निर्बलता उत्पन्न करता है दूसरे इस बात का भय है कि अधिकता के कारण से छातियों में रुकजाय और उसमें बाहर की सर्दी पहुंच कर उसको गाढ़ा करडाले इस कारण से निकम्मा होजाय और बहुधा खट्टा भी होजाता है तीसरे यह है कि स्तनों में विशेष खून जो असली गर्मी को दबाले इस कारण से गर्मी उसमें अपना कार्य न करसके और विपत्ति उत्पन्न हों। चौथे यह है कि कदाचित् खिचावट की अधिकता से कुच में सूजन या दूसरे रोग उत्पन्न हों अभिप्राय यह है कि जब दूध की अधिकता हो तो उसका उपाय करना चाहिये परन्तु जिस रोगी स्त्री को निर्बलता और दूसरी विपत्ति न घेर आवे क्योंकि कोई २ स्त्रियां ऐसी होती हैं जो बहुतसा खाती हैं और उनके शरीर में खून बहुत उत्पन्न होता है इस कारण से दूध बढ़जाता है और उस पर भी बहुत विपत्ति नहीं आती सो ऐसी स्त्रियों के लिये दूध को कम करने वाली चीजें काम में न लावें और जो यह जाने कि कोई दूसरी विपत्ति उत्पन्न होजायगी तो भोजन कम करें और ऐसी वस्तु खाय जो खून को सुखादें इस कारण से दूध कम होजायगा और जानना चाहिये कि दूध की अधिकता के कारण न्यूनता के कारण के विरुद्ध हैं और कभी ऐसा भी होता है कि स्त्रियों का बिना गर्भ के कुच में दूध उत्पन्न होजाता है और दर्द उठता है मुख्य कर जब रजस्वला होना बंद होगया हो और ऐसा भी होता है कि जवान मर्द के स्तन में मवाद के समय दूध उत्पन्न होजाता है और दर्द उठाता है (इलाज) जो दवाई को सुखानेवाली नष्ट करने वाली, मींद का कम करने वाली और जो रुधिर को घटाने वाली दवाइयें लाभदायक हैं क्योंकि रुधिर का दूध ही बनता गर्भस्थान की राह

रण से सूजन हो जाय तो जो कुछ सूजन के लिये कह दिया है आवश्क तानुसार काम में लावे मूग और मुनका के दाने का लेप आरम्भ में योग्य है जिससे अग पुष्ट करै और मवाद को आने से रोक दे और जब आरम्भ से जाता रहे तो जैसा समयानुसार हो काम में लावें।

छटा प्रकरण

स्तनके दबीला (बडीसूजन) का वर्णन।

अलसीके बीज, तिल, सौसन के बीज, मीअयेतर (बनफसा की तरजड) कबूतर की बीट, पापड़ी नोन, रातियांज (एक गोंद) बराबर लेकर पीसलें और तिल्ली का तेल और गौकी नली का गूदा मयपुख्ता में मिलाकर लेप करें और शेष उपाय बड़ी सूजन के प्रकरणमें ढूंढलें और जो चीरने की आवश्यता पडेतो लोहेके औजारोंसे चीरडालें और जो घाव कि उस जगह उत्पन्नहो उसका वैसाही इलाज करें जैसा मुख और जीभ के घाव में वर्णन किया है क्यों कि कोमल अगों के घाव का इलाज समान है।

सातवा प्रकरण

स्तनो के अत्यन्त दीर्घ होजाने का वर्णन।

सफेदा, काशगरी, खड़िया मट्टी, प्रत्येक ७ माशे लेकर दोनों को बग के पत्ते के पानी में (बग एक पेड यमनी का छिलका या पत्ता है) या उसके बीज के काढ़े में मिलाकर थोड़ासा मस्तगी का तेल उसमें डालकर भांति मर्दीने में तीन दिन लेप करें और लेप के समय अलसी का टुकड़ा माजूके पानी में भिगोकर ठंडा करें और स्तन पर रक्खें और न्हाने के स्थानमें कम जाय (दूसरा लेप) पवित्र मट्टी जि[illegible] में हर [illegible] माशे शूकरी (एक घास की जड) ७ मा[illegible] में मिल[illegible] दि-न तक लेप करें (दूसरा नुसखा) [illegible] (सफेद [illegible] (गोंद) सफेदा [illegible] बराबर लेकर [illegible] बग (ए[illegible]) का पानी निचोड[illegible] लेप कर जैतून के [illegible] के [illegible] में घिस जाय न[illegible] करे (खूब [illegible] है उसका [illegible] है [illegible] करते हैं औरइस

रण से सूजन हो जाय तो जो कुछ सूजन के लिये कह दिया है आवश्यकतानुसार काम में लावे मूग और मुनका के दाने का लेप आरम्भ में योग्य है जिससे अंग पुष्ट करै और मवाद को आने से रोक दे और जब आरम्भ से जाता रहै तो जैसा समयानुसार हो काम में लावें।

छटा प्रकरण

स्तनके दबीला (बडीसूजन) का वर्णन।

अलसीके बीज, तिल, सौसन के बीज, मीअयेतर (बनफसा की तरजड) कबूतर की बीट, पापड़ी नोन, रातियांज (एक गोंद) बराबर लेकर पीसलें और तिली का तेल और गौकी नली का गूदा मयपुख्ता में मिलाकर लेप करें और शेष उपाय बड़ी सूजन के प्रकरणमें ढूढलें और जो चीरने की आवश्यता पड़ेतो लोहेके औजारोंसे चीरडालें और जो घाव कि उस जगह उत्पन्नहो उसका वैसाही इलाज करें जैसा मुख और जीभ के घाव में वर्णन किया है क्यों कि कोमल अगों के घाव का इलाज समान है।

सातवा प्रकरण

स्तनो के अत्यन्त दीर्घ होजाने का वर्णन।

सफेदा, काशगरी, खड़िया मट्टी, प्रत्येक ७ माशे लेकर दोनों को बग के पत्ते के पानी में (बग एक पेड यमनी का छिलका या पत्ता है) या उसके बीज के काढ़े में मिलाकर थोड़ासा मस्तगी का तेल उसमें डालकर प्रति महीने में तीन दिन लेप करें और लेप के समय अलसी का टुकड़ा माजूके पानी में भिगोकर ठंडा करें और स्तन पर रक्खें और न्हाने के स्थान में कम जाय (दूसरा लेप) पवित्र मट्टी जि[illegible] में हर [illegible] माशे शूकरां (एक घास की जड) ७ मा[illegible] में मिल[illegible] दि-न तक लेप करें (दूसरा नुसखा) [illegible] (सफद [illegible] (गोंद) सफेदा [illegible] बराबर लेकर [illegible] बग (प[illegible]) का पानी निचोड़[illegible] लेप [illegible] कर जैतून के [illegible] के [illegible] में घिस जाय [illegible] करे ([illegible] है उसका [illegible] है [illegible] कहते हैं औरइस

अशरा है) और आमाशय की गहराई में नखेरे के सामने है और क्योंकि भोजन की रुचि और पचाव आमाशय में मुख्य है और सब अंगोंको उसकी तरफ इच्छा है तो उसको सयोगिक अंग कहते हैं उसमें विपत्ति आने से सब अंगों में विपत्ति प्रवेश हो जाती है इसी लिये हर रोगके इलाजमें उसकी रक्षा अवश्य है जैसा कि नियत हो चुका है और इस अध्याय में कई प्रकरण हैं पट्ठे की प्रकृति ठंढी है और मांस की प्रकृति गर्म है और भोजन आमाशय की गहराई में ठहरता है तो उसके पकाने के लिये गर्मी की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि सर्दीसे कोई चीज नहीं पकती है इसलिये उसजगह मांस विशेष किया गया है और जबकि आमाशय के मुखको खाने पीनेकी चीजोंके खेंचन की आवश्यकता विशेषहै तो बुद्धि इस कार्यको चाहनेवाली हुई कि उसजगह पट्ठे विशेष हों इसलिये कि पट्ठे को खींचें तो खिंच जाता है और नहीं फिसलता और यह मांस के विरुद्ध है कि उसमें यह बात नहीं होती है।

पहला प्रकरण

आमाशय की दुष्ट प्रकृति का वर्णन

इसके बारह भेद हैं पहिले भेद में सादा गर्मी का वर्णन है उसका यह चिन्ह है कि प्यास, मुख में खुश्की, भूख का कम होना, जली डकार का आना और अच्छे भोजन जैसे पक्षियों का मांस वा अन्य ऐसी ही वस्तु जो गर्म कम हो बिगड़जाय परन्तु बड़े गाढ़ भोजन अच्छी तरह पचजाय और कारण का पहिले हो जाना साक्षी हो जैसे खाने पीने की गर्म चीजों और गर्म दवाओं का खाना और काम में लाना या गर्म हवा में बहुत रहना (इलाज) ऐसे रुब्ब और शर्बत पिलावे जो गर्मी की दवाई जैसे शर्बत अनार, कच्चे अंगूर का शर्बत, नींबू का शर्बत, रुब्ब, रीवास, सेवका रुब्ब, बिही का रुब्ब, गाढ़े और खट्टे भोजन जैसे हरीस (वह मांस जो सिर्के और सागों और मसालोंके साथ बनाये जांय) और सिक्बाज (वह भोजन जिसमें मांस और गर्म मसाले और साग पड़े हुए हों) और हसरमिया (वह भोजन जिसमें अंगूर डाला गया हो) और सुमाकिया (वह भोजन जिसमें तुतरंग के पेड़का फल पड़ा हुआ हो) आवश्यक है। बागों की ओलाड़। परन्तु जो आमाशय निर्बल हो तो बिही की मिठजबीन और शर्बत अनार सिर्के और रुम्मानिया (वह भोजन जिसमें अनार पड़ा हो) और नारंकिया (वह भोजन जिसमें नारंगी पड़ी हो) और हसरमिया (वह भोजन जिसमें

अशरा है) और आमाशय की गहराई में नरखेरे के सामने है और क्योंकि भोजन की रुचि और पचाव आमाशय में मुख्य हैं और सब अंगोंको उसकी तरफ इच्छा है तो उसको सयोंगिक अंग कहते हैं उसमें विपत्ति आने से सब अंगों में विपत्ति प्रवेश हो जाती है इसी लिये हर रोगके इलाजमें उसकी रक्षा अवश्य है जैसा कि नियत हो चुका है और इस अध्याय में कई प्रकरण है पट्ठे की प्रकृति ठंढी है और मास की प्रकृति गर्म है और भोजन आमाशय की गहराई में ठहरता है तो उसके पकाने के लिये गर्मी की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि सर्दीसे कोई चीज नहीं पकती है इसलिये उसजगह मास विशेष किया गया है और जबकि आमाशय के सुखको खाने पीनेकी चीजोंके खेंचन की आवश्यकता विशेषहै तो बुद्धि इस कार्यको चाहनेवाली हुई कि उस जगह पट्ठे विशेष हों इसलिये कि पट्ठे को खींचें तो खिंच जाता है और नहीं फिसलता और यह मांस के विरुद्ध है कि उसमें यह बात नहीं होती है।

पहला प्रकरण

आमाशय की दुष्ट प्रकृति का वर्णन

इसके बारह भेद हैं पहिले भेद में सादा गर्मी का वर्णन है उसका यह चिन्ह है कि प्यास, मुख में खुश्की, भूख का कम होना, जली डकार का आना और अच्छे भोजन जैसे पक्षियों का मांस वा अन्य ऐसी ही वस्तु जो गर्म कम हो बिगड़जाय परन्तु बड़े गाढ़ भोजन अच्छी तरह पचजाय और कारण का पहिले हो आना साक्षी हो जैसे खाने पीने की गर्म चीजों और गर्म दवाओं का खाना और काम में लाना या गर्म हवा में बहुत रहना (इलाज) ऐसे रुब्ब और शर्बत पिलावें जो गर्मी को दबावें जैसे शर्बत अनार, कच्चे अंगूर का शर्बत, नींबू का शर्बत, रुब्ब, रीवास, सेबका रुब्ब, बिही का रुब्ब, गाढ़े और खट्टे भोजन जैसे हरीस (वह मांस जो सिर्के और सागों और मसालोंके साथ बनाये जांय) और सिकबाज (वह भोजन जिसमें मांस और गर्म मसाले और साग पड़े हुए हों) और हसरमिया (वह भोजन जिसमें अंगूर डाला गया हो) और सुमाकिया (वह भोजन जिसमें तुतरूंक पेड़का फल पड़ा हुआ हो) लाभदायक है। बागों की औलादों। परन्तु जो आमाशय निर्बल हो तो बिही की सिकंजबीन और शर्बत अनार खिलावें और रुम्मानिया (वह भोजन जिसमें अनार पड़ा हो) और नारंजिया (वह भोजन जिसमें नारंगी पड़ी हो) और हसरमिया (वह भोजन जिसमें

अशरा है) और आमाशय की गहराई में नवेरे के सामने है और क्योंकि भोजन की रुचि और पचाव आमाशय में मुख्य है और सब अगोंको उसकी तरफ इच्छा है तो उसको सयोगिक अग कहते हैं उसमें विपत्ति आने से सब अगों में विपत्ति प्रवेश हो जाती है इसी लिये हर रोगके इलाजमें उसकी रक्षा अवश्य है जैसा कि नियत हो चुका है और इस अध्याय में कई प्रकरण हैं पट्ठे की प्रकृति ठडी है और मास की प्रकृति गर्म है और भोजन आमाशय की गहराई में ठहरता है तो उसके पकाने के लिये गर्मी की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि सर्दीसे कोई चीज नहीं पकती है इसलिये उसजगह मास विशेष किया गया है और जबकि आमाशय के मुखको खाने पीनेकी चीजोंके खैंचने की आवश्यकता विशेषहै तो बुद्धि इस कार्यको चाहनेवाली हुई कि उसजगह पट्ठे विशेष हों इसलिये कि पट्ठे को खींचें तो खिंच जाता है और नहीं फिसलता और यह मांस के विरुद्ध है कि उसमें यह बात नहीं होती है ।

पहला प्रकरण

आमाशय की दुष्ट प्रकृति का वर्णन

इसके बारह भेद हैं पहिले भेद में सादा गर्मी का वर्णन है उसका यह चिन्ह है कि प्यास, मुख में खुश्की, भूख का कम होना, जली डकार का आना और अच्छे भोजन जैसे पक्षियों का मांस वा अन्य ऐसी ही वस्तु जो गर्म कम हो बिगड़जाय परन्तु ठडे गाढ़े भोजन अच्छी तरह पचजाय और कारण का पहिले हो जाना साक्षी हो जैसे खाने पीने की गर्म चीजों और गर्म दवाओं का खाना और काम में लाना या गर्म हवा में बहुत रहना (इलाज) ऐसे रुब्ब और शर्बत पिलावें जो गर्मी को दबावें जैसे शर्बत अनार, कच्चे अगूर का शर्बत, नीबू का शर्बत, रुब्ब, रीबास, सेवका रुब्ब, बिही का रुब्ब, गाढ़े और खट्टे भोजन जैसे करीस (वह मांस जो सिर्के और सागों और मसालोंके साथ बनाये जाय) और सिक्बाज (वह भोजन जिसमें मांस और गर्म मसाले और साग पड़े हुए हों) और हसरमिया (वह भोजन जिसमें अगूर डाला गया हो) और समाकिया (वह भोजन जिसमें तुतम्ग के पेड़का फल पड़ा हुआहो) लाभदायक है । बागकी आलूड़ी।परन्तु जो आमाशय निर्बल होतो बिहीकी सिकजबीन और शर्बत अनार पिलावें और रुम्मानिया (वह भोजन जिसमें अनार पड़ा हो) और नारंजिया (वह भोजन जिसमें नारङ्ग पड़ी हो) और हमर मिरो (वह भोजन जिसमें

अशरा है) और आमाशय की गहराई में नवीरे के सामने है और क्योंकि भोजन की रुचि और पचाव आमाशय में मुख्य है और सब अंगोंको उसकी तरफ इच्छा है तो उसको सयोंगिक अंग कहते हैं उसमें विपत्ति आने से सब अंगों में विपत्ति प्रवेश हो जाती है इसी लिये हर रोगके इलाजमें उसकी रक्षा अवश्य है जैसा कि नियत हो चुका है और इस अध्याय में कई प्रकरण हैं पट्ठे की प्रकृति ठंडी है और मास की प्रकृति गर्म है और भोजन आमाशय की गहराई में ठहरता है तो उसके पकाने के लिये गर्मी की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि सर्दीसे कोई चीज नहीं पकती है इसलिये उसजगह मास विशेष किया गया है और जबकि आमाशय के मुखको खाने पीनेकी चीजोंके खचने की आवश्यकता विशेषहै तो बुद्धि इस कार्यको चाहनेवाली हुई कि उसजगह पट्ठे विशेष हों इसलिये कि पट्ठे को खींचें तो खिंच जाता है और नहीं फिसलता और यह मांस के विरुद्ध है कि उसमें यह बात नहीं होती है ।

पहला प्रकरण

आमाशय की दुष्ट प्रकृति का वर्णन

इसके बारह भेद हैं पहिले भेद में सादा गर्मी का वर्णन है उसका यह चिन्ह है कि प्यास, मुख में खुश्की, भूख का कम होना, जली डकार का आना और अच्छे भोजन जैसे पक्षियों का मांस वा अन्य ऐसी ही वस्तु जो गर्म कम हो बिगड़जाय परन्तु ठंडे गाढ़े भोजन अच्छी तरह पचजांय और कारण का पहिले हो जाना साक्षी हो जैसे खाने पीने की गर्म चीजों और गर्म दवाओं का खाना और काम में लाना या गर्म हवा में बहुत रहना (इलाज) ऐसे रुब्ब और शर्बत पिलावें जो गर्मी को दबावें जैसे शर्बत अनार, कच्चे अंगूर का शर्बत, नीबू का शर्बत, रुब्ब, रीवास, सेवका रुब्ब, बिही का रुब्ब, गाढ़े और खट्टे भोजन जैसे करीस (वह मांस जो सिर्के और सागों और मसालोंके साथ बनाये जाय) और सिकबाज (वह भोजन जिसमें मांस और गर्म मसाले और साग पड़े हुए हों) और हसरमिया (वह भोजन जिसमें अंगूर डाला गया हो) और समाकिया (वह भोजन जिसमें तुतम के पेड़का फल पड़ा हुआ हो) लाभदायक है । वागकी आलूबुखारा परन्तु जो आमाशय निर्बल हो तो बिही की सिकंजबीन और शर्बत अनार पिलावें और रुम्मानिया (वह भोजन जिसमें अनार पड़ा हो) और नारंजिया (वह भोजन जिसमें नारंगी पड़ी हो) और हमर मिरो (वह भोजन जिसमें

उन पिसीहुई दवाओं को मिलाकर थोड़ीसी अम्बर और कस्तूरी गुलाब में घोलकर चढ़ावे इस की मात्रा ७ माशे है और इस दवा की शक्ति बीस बरस तक बनी रहती है और यह ऐसी अद्भुत दवाहै कि इसके समान और दवा नहीं है परन्तु आरोग्यता की दशामें खाय परन्तु रोगके समय मवादके निकल जाने और मवाद को अपनी असली दशापर आजाने के उपरान्त। किताब तरचीहवाले की कहावत है कि साना गर्म दुष्टप्रकृतिवाले रोगी को प्रतिदिन सवेरे के समय सादा खट्टी सिकंजबीन ३५ माशे लेकर इतनेही गुलाबमें मिलाकर या कच्चे अगूर का शर्बत, नारंगी का शर्बत या रुब्बरीबास या सेबका रुब्ब या नीबू का शर्बत जो इनमें से मिलासके ३५ माशेसे लेकर ५२॥माशेतक गुलाबमें मिलाकर बर्फसे ठंडा करके पिलावे या ठंडा पानी और दही बर्फ मिलाकर पीना लाभदायकहै ऐसे रोगी को भोजन शोरबा जरश्क या इमली या आलूबुखारा, बादाम की मिंगी और शकर मिलाकरदें। दूसरा भेद पित्त की गर्म दुष्ट प्रकृतिके वर्णनमें है उसका यह चिन्हहै कि मुखमें कड़वापन, जी मिचलाना, उबकाई और मलमूत्रमें पित्त का आना तथा भोजनके उपरान्त जलीहुई डकार आती है जिसमें धूआं का स्वाद मालूम हो और ऐसी दुर्गन्धि आने लगती है जैसे बिगड़ीहुई मछली की गन्धि या जैसे सड़ीहुई मिंगियों की गन्ध तथा अखरोट की बिगड़ीहुई मिंगीके समान मालूमहो और कभी जगार की गन्ध आती है और यह इस बात का चिन्हहै कि गर्मी विशेषहै और जान लेना चाहिये कि जिस का आमाशय गर्म होताहै उस को भोजन की इच्छा बहुत कम होती है और पचाव बहुत होताहै परन्तु जब दुष्ट प्रकृति बहुत बढ़ जाती है तो शक्तियों को निर्बल करदेती है और पचाव भी निर्बल होजाताहै और कभी ऐसा भी होताहै कि बहुत गर्म हो और फिरभी शक्ति बाकी रहै और गर्मी की अधिकता और मवाद की अधिकतासे रगों के मुख खुलजांय और कोई २ अंग नष्ट होजांय और भोजन विशेष कियाजाय और जो कुछ पच गयाहै और निकल गयाहै तबियत उसका बदला मांगे और भूख की अधिकता हो फिर उस भूखमें सतोष नहीं होताहै और आमाशय खाली होनेमें मुखसे लुआब आने लगताहै और खानेके पीछे लुआब का आना बन्द होजाताहै (लाभ) जो आमाशय हलका हो और जी मिचलाय और जलन और प्यास की अधिकता हो तो जानना चाहिये कि मवाद बहुत पतलाहै और जब मवाद बहुत होताहै तो हर समय जी मिचलाताहै और जो

उन पिसीहुई दवाओं को मिलाकर थोड़ीसी अम्बर और कस्तूरी गुलाब में घोलकर चढ़ावे इस की मात्रा ७ माशे है और इस दवा की शक्ति बीस बरस तक बनी रहती है और यह ऐसी अद्भुत दवाहै कि इसके समान और दवा नहीं है परन्तु आरोग्यता की दशामें खाय परन्तु रोगके समय मवादके निकल जाने और मवाद को अपनी असली दशापर आजाने के उपरान्त। किताब तरचीहवाले की कहावत है कि सादा गर्म दुष्टप्रकृतिवाले रोगी को प्रतिदिन सवेरे के समय सादा खट्टी सिकंजबीन ३५ माशे लेकर इतनेही गुलाबमें मिलाकर या कच्चे अंगूर का शर्बत, नारंगी का शर्बत या रुब्बरीवास या सेवका रुब्ब या नीबू का शर्बत जो इनमें से मिलसके ३५ माशेसे लेकर ५२॥माशेतक गुलाबमें मिलाकर बर्फसे ठंढा करके पिलावे या ठंढा पानी और दही बर्फ मिलाकर पीना लाभदायकहै ऐसे रोगी को भोजन शोरबा जरश्क या इमली या आलू बुखारा, बादाम की मिंगी और शकर मिलाकरदें। दूसरा भेद पित्त की गर्म दुष्ट प्रकृतिके वर्णनमें है उसका यह चिन्हहै कि मुखमें कड़वापन, जी मिचलाना, उबकाई और मलमूत्रमें पित्त का आना तथा भोजनके उपरान्त जलीहुई डकार आती है जिसमें धूआं का स्वाद मालूम हो और ऐसी दुर्गन्धि आने लगती है जैसे बिगड़ीहुई मछली की गन्धि या जैसे सड़ीहुई मिंगियोंकी गन्ध तथा अखरोट की बिगड़ीहुई मिंगीके समान मालूमहो और कभी जगार की गन्ध आती है और यह इस बात का चिन्हहै कि गर्मी विशेषहै और जान लेना चाहिये कि जिस का आमाशय गर्म होताहै उस को भोजन की इच्छा बहुत कम होती है और पचाव बहुत होताहै परन्तु जब दुष्ट प्रकृति बहुत बढ़ जाती है तो शक्तियों को निर्बल करदेती है और पचाव भी निर्बल होजाताहै और कभी ऐसा भी होताहै कि बहुत गर्म हो और फिरभी शक्ति बाकी रहै और गर्मी की अधिकता और मवाद की अधिकतासे रगों के मुख खुलजांय और कोई २ अंग नष्ट होजांय और भोजन विशेष कियाजाय और जो कुछ पच गयाहै और निकल गयाहै तबियत उसका बदला मांगे और भूख की अधिकता हो फिर उस भूखमें संतोष नहीं होताहै और आमाशय खाली होनेमें मुखसे लुआब आने लगताहै और खानेके पीछे लुआब का आना बन्द होजाताहै (लाभ) जो आमाशय हलका हो और जी मिचलाय और जलन और प्यास की अधिकता हो तो जानना चाहिये कि मवाद बहुत पतलाहै और जब मवाद बहुत होताहै तो हर समय जी मिचलाताहै और जो

और उसे मवाद जो उसपर गिरता है ग्रहण न करे और जिस रोगी के मवाद आमाशय का पोल में हो तो उबकाई और दस्त लाभदायक हैं परन्तु जो मवाद का झुकाव आमाशय के मुख पर होता है तो उबकाई का लाभ विशेष है और वमन का उपाय यह है कि ताजी मछली खाकर जौ के पानी से वमन करावे और सिकंजबीन जौ के आटे में मिलालें तो अति उत्तम है और केवल सिकंजबीन गर्म पानी के साथ भी वमन लाती है और मवाद को काटती है और उबकाई के प्रकरण में उस मवाद के निकालने की विधि जिसको आमाशय ने पिया है या नहीं पिया है अच्छी तरह वर्णन की गई है और मवाद के निकलने के पीछे जो बदलने की आवश्यकता हो तो जो कुछ कि सादा में वर्णन किया है उसमें से ग्रहण करे जो सिर्का और बूरा तोल में बराबर लेकर सिकंजबीन बनावे तो उसकी प्रकृति समान है और जो सिर्का और शहद से बनावे और आवश्यकतानुसार और दवाएँ भी मिलावे तो उसकी प्रकृति उन दवाओं की प्रकृति के अनुसार होगी। किताब अक्सीर आज़म में लिखा है कि इस रोग में वमन कराना विशेष लाभदायक है और जिस मनुष्य को वमन न आवे या कठिन से आवे या मवाद आमाशय की गहराई में हो तो अफसन्तीन का काथ मिलावें कि मवाद दस्तों के द्वारा निकलजाय उस की विधि यह है अफसन्तीन १७॥ माशे, इमली, गुलाब के फूल ७० माशे, सब दवाओं को १४०० माशे पानी में औटाकर जब ३५० माशे रहजाय तो छानकर १०५ माशे तुरंजबीन (खुरासानी ओस) मिलाकर फिर साफ करें और घुला हुआ एलुवा ३॥ माशे डालकर पिलावें और जो तुरंजबीन के बदले बूरा डाले तो भी उत्तम है या इमली ७० माशे, काले आलू २० दाने, गुलाब के फूल ७ माशे, हरा पोदीना ३ डाली सब दवाओं को गुलाब में औटाकर छानकर १०५ माशे तुरंजबीन मिलाकर साफ करके १२ रत्ती सफेद चीनी मिलाकर पीवें और जो इस काढ़े से दस्त न आवे तो हरड का काढ़ा दें और अति उत्तम यह है कि यारज फयकरा पीली हरड के साथ इस तरह काम में लावें कि यारज फयकरा ३॥ माशे, पीली हरड ७ माशे, कतीरा १॥॥ माशे, कासनी के पानी में मिलाकर गोली बनावें और जो इस दवा से घिन करे तो चूर्ण का गुटिका ४॥ माशे दें और उस पर खट्टी सिकंजबीन ३५ माशे बिना पानी मिलाये देना चाहिये (लाभ) बहुधा ऐसा होता है कि आमाशय तो पवित्र है और मवाद को ग्रहण नहीं करता परन्तु भूख की दशा में आधीन होकर

और उसे मवाद जो उलटकर गिरता है ग्रहण न करें और जिस रोगीके मवाद आमाशय का पोल्ह में हो तो उबकाई और दस्त लाभदायक हैं परन्तु जो मवादका झुकाव आमाशय के मुख पर होता है तो उबकाई का लाभ विशेष है और वमन का उपाय यह है कि ताजी मछली खाकर जौ के पानी से वमन करावे और सिकंजबीन जौ के आट में मिलालें तो अति उत्तम है और केवल सिकंजबीन गर्म पानी के साथ भी वमन लातीहै और मवाद को काटती है और उबकाई के प्रकरण में उस मवाद के निकालने की विधि जिसको आमाशय ने पिया है या नहीं पिया है अच्छी तरह वर्णन की गई हैं और मवाद के निकलने के पीछे जो बदलने की आवश्यकता हो तो जो कुछ कि सादा में वर्णन कियाहै उसमें से ग्रहण करें जो सिर्का और बूरा तोल में बराबर लेकर सिकंजबीन बनावेतो उसकी प्रकृति समान है और जो सिर्का और शहद से बनावे और आवश्यकतानुसार और दवाएँ भी मिलावे तो उसकी प्रकृति उन दवाओं की प्रकृति के अनुसार होगी। किताब अकसीर आजम में लिखा है कि इस रोग में वमन कराना विशेष लाभदायक है और जिस मनुष्य को वमन न आवे या कठिन से आवे या मवाद आमाशय की गहराई में हो तो अफसन्तीन का काथ मिलावें कि मवाद दस्तों के द्वारा निकलजाय उस की विधि यह है अफसन्तीन १७॥ माशे, इमली, गुलाब के फूल ७० माशे, सब दवाओं को १४०० माशे पानी में औटाकर जब ३५० माशे रहजाय तो छानकर १०५ माशे तुरंजबीन (खुरासानी ओस) मिलाकर फिर साफ करें और धुला हुआ एलुआ ३॥ माशे बढ़ाकर पिलावें और जो तुरंजबीन के बदले बूरा डालें तो भी उत्तम है या इमली ७० माशे, काले आलू २० दाने, गुलाब के फूल ७ माशे, दश पोदीना २ दाने सब दवाओं को गुलाब में औटाकर छानकर १०५ माशे तुरंजबीन मिलाकर साफ करके १० रत्ती रेवंद चीनी मिलाकर पीवें और जो इस काढ़े से दस्त न आवे तो दस्त का काढ़ा दें और अति उत्तम यह है कि यारज फयकरा पीली हरड के साथ इस तरह काम में लावें कि यारज फयकरा ३॥ माशे, पीली हरड ७ माशे, कतीरा १॥। माशे, कासनी के पानी में मिलाकर गोलियां बनावें और जो इस दवा से घिन करें तो चूर्ण का गुड़ १०॥ माशे दें और उस पर खट्टी सिकंजबीन ३५ माशे बिना पानी मिलाये देना चाहिये (लाभ) बहुधा ऐसा होता है कि आमाशय तो पवित्र है और मवाद को ग्रहण नहीं करता परन्तु भूख की दशा में आधीन होकर

सब शरीर में पित्त भरा हुआ हो तो माउलजुब्न से मवाद -निकालना चाहिये और जो देश, काल, आयु और बल अनुकूल हों तो बासलीककी फस्द खोलें फिर माउलजुब्न काम में लावें और पित्तपापड़ा तथा अफ़सन्तीन का काढ़ा इस विषय में अधिक लाभदायक है उसकी विधि यह है कि अफसन्तीन रूमी १७॥ माशे, गुलाब के फूल, २४॥ माशे, पित्तपापड़ा ७ माशे, काले आलू २५, बेदाने की मुनक्का ७ माशे, इमली ७० माशे, इन सब को तीन सेर पानी में औटालें और जब ७०० माशे पानी रहजाय तो छान कर रखदें और प्रतिदिन सवेरे के समय १४० माशे ३५ माशे बूरे और ३॥ माशे एलवा के साथ दें। तीसरा भेद गर्म तर दुष्ट प्रकृतिके वर्णनमें है इसमें मवाद तरी के साथ होता है उसका यह चिन्ह है कि क्षुधा समानता पर हो और मुखसे बहुत लार निकले मुख्यकर भूख* के समय और जब आमाशय खाली हो और जी विशेष मिचलावे और जो चीज खाई जाय इसमें दुर्गन्ध आवे और

* भूखकी समानताका जो इस भेद में वर्णन किया है किताब शरह अस्बाबका बनाने वाला इसको नहीं मानता है और कहता है कि केवल गर्मी ही भूख को कम कर देती है इस कारण से आमाशय को ढीला करती है और मवाद को दिल की तरफ बहाती है तो फिर क्यों नहीं कि जब इस गर्मी के साथ तरी हो और ढीला करने और तरी के बहाने में सहायता करे और उर्दू भाषा में अनुवाद करने वाला लिखता है कि मेरी सम्मति में ऐसा आता है कि जो ध्यान पूर्वक देखा जाय तो किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले का यह निषेध ठीक नहीं हो सकता क्योंकि गर्मी तरी सहित की विधि किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले के समीप तरी के पिघलने पर सहायता करती है और यह बात विरुद्ध है क्योंकि जब तरी गर्मी के साथ संयोगिक होती है तो गर्मी की तेजी को तोड़ देती है और जब गर्मी टूट जाती है तो पिघलने की अधिकता योग्य नहीं है और भूख [illegible] सूरत में होती है और जो कोई मनुष्य यह कहे कि [illegible] हानि पहुं[illegible] लिये यह है कि मवाद को आमाशय में इकट्ठा [illegible] गर्मी के [illegible] समीप के अंगों और उसके और पास से मवाद [illegible] तरी गर्मी के साथ संयोगिक हो यद्यपि गर्[illegible]
मवाद वाली [illegible] नष्ट
यह कहेंगे [illegible] इस
अंगों में से [illegible] हानिकारक [illegible] हुये
वह तबियत [illegible]
आजाय [illegible]
[illegible]

सब शरीर में पित्त भरा हुआ हो तो माउलजुब्न से मवाद निकालना चाहिये और जो देश, काल, आयु और बल अनुकूल हों तो बासलीककी फस्द खोलें फिर माउलजुब्न काम में लावें और पित्तपापड़ा तथा अफसन्तीन का काढ़ा इस विषय में अधिक लाभदायक है उसकी विधि यह है कि अफसन्तीन रूमी १७॥ माशे, गुलाब के फूल, २४॥ माशे, पित्तपापड़ा ७ माशे, काले आलू २५, बेदाने की मुनक्का ७ माशे, इमली ७० माशे, इन सब को तीन सेर पानी में औटालें और जब ७०० माशे पानी रहजाय तो छान कर रखदें और प्रतिदिन सवेरे के समय १४० माशे २५ माशे पूरे और ३॥ माशे एलवा के साथ दें। तीसरा भेद गर्म तर दुष्ट प्रकृतिके वर्णनमें है इसमें मवाद तरी के साथ होता है उसका यह चिन्ह है कि क्षुधा समानता पर हो और मुखसे बहुत लार निकलै मुख्यकर भूख* के समय और जब आमाशय खाली हो और जी विशेष मिचलावे और जो चीज खाई जाय उसमें दुर्गन्ध आवे और

---

* भूखकी समानताका जो इस भेद में वर्णन किया है किताब शरह अस्बाबका बनाने वाला इसको नहीं मानता है और कहता है कि केवल गर्मी ही भूख को कम कर देती है इस कारण से आमाशय को ढीला करती है और मवाद को दिल की तरफ बहाती है तो फिर क्यों नहीं कि जब इस गर्मी के साथ तरी हो और ढीला करने और तरी के बहाने में सहायता करे और उर्दू भाषा में अनुवाद करने वाला लिखता है कि मेरी सम्मति में ऐसा आता है कि जो ध्यान पूर्वक देखा जाय तो किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले का यह निषेध ठीक नहीं हो सक्ता क्योंकि गर्मी तरी सहित की विधि किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले के समीप तरी के पिघलने पर सहायता करती है और यह बात विरुद्ध है क्योंकि जब तरी गर्मी के साथ संयोगिक होती है तो गर्मी की तेजी को तोड़ देती है और जब गर्मी टूट जाती है तो पिघलने की अधिकता योग्य नहीं है और भूख [illegible] सूरत में होती है और जो कोई मनुष्य यह कहे कि [illegible] हानि पहुंचे [illegible] के लिये यह है कि मवाद को आमाशय में इकट्ठा [illegible] गर्मी है [illegible] समीप के अंगों और उसके और पास से मवाद [illegible] तरी गर्मी के साथ संयोगिक हो यद्यपि गर्मी [illegible] मवाद वाली [illegible] यह कहेंगे [illegible] अंगों में से [illegible] हानिकारी [illegible] वह तबियत [illegible] आजाय [illegible]

कर पिवावे जिससे आमाशय की प्रकृतिमें सर्दी और तरी पहुचे और पथरीले पानी की मछली और हलके जानवरों के पर भी इसी किस्मसे हैं और तरी पहुचाने वाली चीजों को आमाशय पर मले और तरेडे देवे और जब कि खुश्क दुष्टप्रकृति जमजाती है तो उसका नष्ट करना उचित नहीं परन्तु तमाम शरीर को तरी पहुंचाना योग्यहै इस कामके लिये शीतल स्नान की जगह शीतकारक भपारे और शीतल तेल काममें लावे और तर भोजनों का सेवन करै तथा पित्त की गर्मी में भी उसी प्रकार की तरफ संकेत कियागयाहै(लाभ) तरी पहुचाने के लिये गौ का दूध अधिक लाभदायकहै और प्रकृति का स हायकहै क्योंकि उसके दूधमें और आदमीके दूधमें सम्बन्धहै जो इस का रणसे कि मनुष्य की प्रकृतिके अधिक अनुकूल होताहै और दूसरे जानवरों के दूधसे अधिक लाभ देताहै और जिनके दूध पतले और जल्द पहुच जातेहैं वह इसके विरुद्धहैं उनसे यह काम प्राप्त नहीं होताहै। पांचवा भेद बिना म-वाद वाली गर्म तर दुष्टप्रकृतिके वर्णनमें है इसका चिन्ह यहहै कि सदा भोजन में अन्तर पडता रहै और इस कारणसे कि आमाशय की तरी पिघलतीहै मुख से पानी बहै और सिरकी तरफ भाफके परमाणु चढ़े क्योंकि गर्मी इस तरी में गुणकरती है जानलैना चाहिये कि दुष्टप्रकृति जबतक बलवान् नहो हानि नहीं करती इसीलिये किताब शरह अस्बावके बनाने वालेने कहाहै कि पचाव गर्मी और तरीसेंही होताहै परन्तु जब कि ये समानावस्थासे बढजांय (इलाज) इत्रीफल आदि दवाओं को काममें लावे जिससे सर्दी और खुश्की पहुचे और दूसरे उपायमें भी यही ध्यान रक्खे। छठा भेद सादा सर्द दुष्टप्रकृतिके वर्णनमेंहै उसके कई चिन्ह हैं एक तो यहहै कि पचाव निर्बल होजाय और जानलैना चाहिये कि पचाव का अर्थ यहहै कि भोजन की दशा बदल जाय और पकजाय और पूरा पचाव जभी होताहै कि भोजनके गाढे पतले भाग फैलजांय और पतले भाग गाढे होजांय और चेपदार कटजांय और फैलजांय तथा बिखरेहुए इकट्ठे होजाय और ये सब गतिहै और गति बिना गर्मीके नहीं होतीहै। दूसरे यहहै कि इसके सिवाय पचाव निर्बल हो और भूख विशेषहो और भूख की अधिकता या तो इस कारणसे है कि सर्दी आमाशयके मुख को सकोड़ देती है और इकट्ठा करदेतीहै फिर खेंचनेवाली शक्ति अवश्य बलवान् होजाती है या इस कारणसेहै कि अंगोंके पचाव की निर्बलताके कारणसे नि शेष भाग नहीं पहुचता है सो वह अवश्य रगों से भोजनकी रुचि करते हैं और

कर पिवावे जिससे आमाशय की प्रकृतिमें सर्दी और तरी पहुचे और पयरीके पानी की मछली और हलके जानवरों के पर भी इसी किस्मसे हैं और तरी पहुचाने वाली चीजों को आमाशय पर मलै और तरेड़े देवै और जब कि खुश्क दुष्टप्रकृति जमजाती है तो उसका नष्ट करना उचित नहीं परन्तु तमाम शरीर को तरी पहुंचाना योग्यहै इस कामके लिये शीतल स्नान की जगह शीतकारक भपारे और शीतल तेल काममें लावै और तर भोजनों का सेवन करै तथा पित्त की गर्मी में भी उसी प्रकार की तरफ संकेत कियागयाहै(लाभ) तरी पहुचाने के लिये गौ का दूध अधिक लाभदायकहै और प्रकृति का सहायकहै क्योंकि उसके दूधमें और आदमीके दूधमें सम्बन्धहै जो इस कारणसे कि मनुष्य की प्रकृतिके अधिक अनुकूल होताहै और दूसरे जानवरों के दूधसे अधिक लाभ देताहै और जिनके दूध पतले और जल्द पहुच जातेहैं वह इसके विरुद्धहै उनसे यह काम प्राप्त नहीं होताहै । पांचवा भेद विना मवाद वाली गर्म तर दुष्टप्रकृतिके वर्णनमें है इसका चिन्ह यहहै कि सदा भोजन में अन्तर पड़ता रहै और इस कारणसे कि आमाशय की तरी पिघलतीहै मुख से पानी बहै और सिरकी तरफ भाफके परमाणु चढ़े क्योंकि गर्मी इस तरी में गुणकरती है जानलैना चाहिये कि दुष्टप्रकृति जबतक बलवान् नहो हानि नहीं करती इसीलिये किताब शरह अस्बाबके बनाने वालेने कहाहै कि पचाव गर्मी और तरीसेही होताहै परन्तु जब कि ये समानावस्थासे बढ़जाय (इलाज) इत्रीफल आदि दवाओं को काममें लावे जिससे सर्दी और खुश्की पहुचे और दूसरे उपायमें भी यही ध्यान रक्खे । छठा भेद सादा सर्द दुष्टप्रकृतिके वर्णनमेंहै उसके कई चिन्ह हैं एक तो यहहै कि पचाव निर्बल होजाय और जानलैना चाहिये कि पचाव का अर्थ यहहै कि भोजन की दशा बदल जाय और पकजाय और पूरा पचाव जभी होताहै कि भोजनके गाढ़े पतले भाग फैलजांय और पतले भाग गाढ़े होजांय और चेपदार कटजांय और फैलजांय तथा बिखरेहुए इकट्ठे होजाय और ये सब गतिहै और गति विना गर्मीके नहीं होतीहै । दूसरे यहहै कि इसके सिवाय पचाव निर्बल हो और भूख मिटेसही और भूख की अधिकता या तो इस कारणसे है कि सर्दी आमाशयके मुख को सकोड़ देती है और इकट्ठा करदेतीहै फिर खेंचनेवाली शक्ति अवश्य बलवान् होजाती है या इस कारणसेहै कि अगोंके पचाव की निर्बलताके कारणसे निशेष भाग नहीं पहुचता है तो वह अवश्य रगों से भोजनकी रुचि करते हैं और

(नागेश्वर एक घासकी फली है), तालेश्वर (जैतूनके पत्ता) सातर फारसी प्रत्येक ७ माशे अजमोद के बीज, रूमी सौंफ और हिन्दी सौंफ प्रत्येक १७॥ माशे, कच्चीऊद, मस्तगी, हीमुलमजूस (एक फूल जिसको जाफरी कहते हैं) मुलहठी प्रत्येक ३५ माशे, वहमन सफेद जौदान (एक लकड़ी धूजदान) कद्दू व बादामकी मिंगी प्रत्येक ५२॥ माशे, सबको महीन पीसकर निर्मल शहद में मिलाकर माजूम बनावें और चालीस दिनके पीछे शक्ति और आयुर्बलके अनुसार खवावें। हकीम तिवरी का वाक्य है कि यह माजूम हकीम इरानियों ने बनाई है और यदि किसी की प्रकृति के अनुकूल न हो तो काम में लाने के पहिले और दूसरी बारमें तीन दिनका अन्तर देवें और मात्रा भी कम करें और यह माजूम श्रेष्ठ है हकीम जाबर कतीफ इरानी ने इसको बनाया है और इसका नाम माजूम अस्वद रक्खा है और तिरयाक मैदा भी कहते हैं जैसाकि ऊपर वर्णन किया है। सातवां भेद सादा सर्दी और खुश्क दुष्ट प्रकृतिके वर्णनमें है इसका चिन्ह वही है जो सादा सर्दी में वर्णन किया गया है और जो कुछ सादा खुश्की में वर्णन होगा दोनों ये इकट्ठे होकर प्रगट हों जान लेना चाहिये कि इस प्रकारके रोग का इलाज कठिन है क्योंकि खुश्कीका दूर होना विना गर्मी पहुचाने और तरी पहुंचानेके योग्य नहीं है और दशा यह है कि गर्मी खुश्कीको बढ़ाती है तरी सर्दीकी सहायता करती है और गर्मीको निर्बल करती है (इलाज) ऐसे दवाई या भोजन जो गर्मी और तरीमें समान हो काममें लावें जिससे उनका लाभ विना हानि के प्राप्त हो जैसे जौ के घाट में थोड़ा सा साफ किया हुआ शहद मिलाकर खवावें और शर्बत गावजवां और मीठे अनारका शर्वत और शर्वत जूफा पिलावे और मोमका तेल मस्तगी और नार दैन के तेलसे कीरती बनाकर आमाशयपरमलै और गधी,बकरीकादूध निर्मलशहदमें मिलाकर और पले हुए मोटे मुर्गेका शोरबा तथा गेहूंकी रोटीकी भी आज्ञा है और जिस चीज़ की आवश्यकता हो उसको रुचिके अनुसार ग्रहण करें जैसा कि अलग अलग लिखा है। आठवां भेद सर्दी और खुश्कीके वर्णनमें है इसमें मवादके साथ वादी होती है और उसका चिन्ह भूखकी अधिकता, पचावमें निर्बलता,वादी की अधिकता, आमाशय में जलन और खट्टापन मुख्य कर भूख की दशा में होते हैं क्योंकि भोजन बादी के मवादके साथ मिल जाता है इसलिये उसकी तेजी जिस से जलन और खटाई उत्पन्न होती है भोजन करने के पीछे टूट जाती है और यह भी इस प्रकार का चिन्ह है कि कभी २ वमन में वादी नि-

(नागेश्वर एक घासकी कली है), तालेश्वर (जैतूनके पत्ता) सातर फारसी प्रत्येक ७ माशे अजमोद के बीज, रूमी सोंफ और हिन्दी सोंफ प्रत्येक १७॥ माशे, कची ऊद, मस्तगी, ईसुलमजूस (एक फूल जिसको जाफरी कहते हैं) मुलेहठी प्रत्येक ३५ माशे, वहमन सफेद औदान (एक लकड़ी धूजदान) फड वे बादामकी मिंगी प्रत्येक ५२॥ माशे, सबको महीन पीसकर निर्मल शहद में मिलाकर माजूम बनावें और चालीस दिनके पीछे शक्ति और आयुर्बलके अनुसार खवावें। हकीम तिवरी का वाक्य है कि यह माजूम हकीम ईरानियों ने बनाई है और यदि किसी की प्रकृति के अनुकूल न हो तो काम में लाने के पहिले और दूसरी बारमें तीन दिनका अन्तर देवै और मात्रा भी कम करें और यह माजूम श्रेष्ठ है हकीम जावर कतीफ ईरानी ने इसको बनाया है और ईसका नाम माजूम अस्वद रक्खा है और तिरयाक मैदा भी कहते हैं जैसाकि ऊपर वर्णन किया है। सातवां भेद सादा सर्दी और खुश्क दुष्ट प्रकृतिके वर्णनमें है इसका चिन्ह वही है जो सादा सर्दी में वर्णन किया गया है और जो कुछ सादा खुश्की में वर्णन होगा दोनों ये इकट्ठे होकर प्रगट हों जान लेना चाहिये कि इस प्रकारके रोग का इलाज कठिन है क्योंकि खुश्कीका दूर होना विना गर्मी पहुचाने और तरी पहुचानेके योग्य नहीं है और दशा यह है कि गर्मी खुश्कीको बढ़ाती है तरी सर्दीकी सहायता करती है और गर्मीको निर्बल करती है (इलाज) ऐसे दवाई या भोजन जो गर्मी और तरीमें समान हो कामेंमें लावें जिससे उनका लाभ विना हानि के प्राप्त हो जैसे जौ के घाट में थोड़ा सा साफ किया हुआ शहद मिलाकर खवावें और शर्बत गावजवां और मीठे अनारका शर्बत और शर्बत जूफा पिवावे और मोमका तेल मस्तगी और नार देन के तेलसे कीरात़ी बनाकर आमाशयपरमलें और गधी,बकरीकादूध निर्मलशहदमें मिलाकर और पले हुए मोटे मुर्गेका शोरबा तथा गेहूंकी रोटीकी भी आहार और जिस चीज की आवश्यकता हो उसको रुचिके अनुसार ग्रहण करें जैसा कि अलग अलग लिखा है। आठवां भेद सर्दी और खुश्कीके वर्णनमेंहै इसमें मवादके साथ बादी होतीहै और उसका चिन्ह भूखकी अधिकता, पचावमें निर्बलता,बादी की अधिकता, आमाशय में जलन और खट्टापन मुख्य कर भूख की दशा में होते हैं क्योंकि भोजन बादी के मवादके साथ मिल जाता है इसलिये उसकी तेजी जिस से जलन और खटाई उत्पन्न होती है भोजन करने के पीछे टूट जाती है और यह भी इस प्रकार का चिन्ह है कि कभी २ वमन में बादी नि-

औटाई हुई चीजों में डालें फिर दो एक उफान देकर जब कि शहद कीसी गाढ़ी होजाय तो उतारकर पोटलीको निकालकर खूब निचोड लें और शर्वतको ठंढा करके रखदे और आवश्यकता के समय ३५ माशे काम में लावे। नवां भेद सादा सर्द तरी के वर्णन में है उसका यह चिन्ह है कि शरीर में सफेदी, ढीलापन और चलने फिरने में आलस्य मालूम हो और मल नर्म आवे और जो कुछ कि सादा सर्दी और तरी में वर्णन किया गया है प्रगट हो (इलाज) जो कुछ गर्म और खुश्क हो काम में लावे जैसे भुनाहुआ मांस गर्म मसाले के साथ खवावे। कम्मूनी, फलाफली, कुर्सगुल, जवारिश ऊद, सोंठ का मुरब्बा आदि सेवन करें और कूट का तेल और नारदेन का तेल अम्बक (एक सफेद फूल का तेल) आमाशय पर मले किताब इलाज उल अमराज में कुर्स गुलके बनाने की विधि इस प्रकार पर लिखी है कि गुलाब के फूल ३५ माशे, मुलहटी, गाफिस, अफसन्तीन, प्रत्येक १४ माशे, मस्तगी बालछड़, तगर, कच्ची अगर, अजखर मकी, प्रत्येक ३॥ माशे कूटछान कर गुलाबमें टिकिया बनावें। दसवां भेद सर्दी और तरी के वर्णनमें है जो कफ का मवाद उसमें हो उसके कई चिन्हहैं एक तो यहहै कि खानेकी रुचि बहुत कम हो क्योंकि कफ आमाशय को बहुत सुस्त कर देता है आमाशय के मुख और वादी के मध्य में अड जाता है और हाल यह है कि मुख की गाढ़ी वादी से होती है दूसरे यहहै कि तेज भोजन तबियत की रुचि के अनुसार हों उसका यह कारण है कि तबियत उस मवाद के दूर करने के लिये ऐसी चीज चाहती है जो गर्म और खुश्क हो और मवाद को तोड डाले सो ऐसे काम में तेज चीज आती है। तीसरे यह है कि जी मिचलाने की विपत्ति हो क्योंकि आमाशय मवाद के दूर करने के लिये हिलता है और वह चेपदार होने के कारण से नहीं निकलता। चौथे प्यास नहो और यह बात बहुधा होती है क्योंकि जब खारी कफ होगा तो झूठी प्यास उत्पन्न होगी। पांचवें यह कि पेटमें अफरा भी होता है कि इस ऊपरी प्रकृति के साथ असल प्रकृति गर्म हो क्योंकि जब ऐसा होगा तो प्रकृति असल भोजन ग्रहण करती है और गर्मी के असरसे गाढे भाफके परमाणु जिनमें गर्मी कम है भोजन में से उठते हैं और उसी समय ऊपरी सर्दी उनमें असर करती है सो इस कारण से उन भाफ के परमाणुओं से अग्नि निकल जाती है जब अग्नि, की भाफ निकल जाती है तो भाफ के परमाणु की वादी बन जाती है और

औटाई हुई चीजोंमें डालें फिर दो एक उफान देकर जब कि शहद कीसी गाढ़ी होजाय तो उतारकर पोटलीको निकालकर खूब निचोड लें और शर्वतको ठढा करके रखदे और आवश्यकता के समय ३५ माशे काम में लावे। नवां भेद सादा सर्द तरी के वर्णन में है उसका यह चिन्ह है कि शरीर में सफेदी, ढीलापन और चलने फिरने में आलस्य मालूम हो और मल नर्म आवे और जो कुछ कि सादा सर्दी और तरी में वर्णन किया गया है प्रगट हो (इलाज) जो कुछ गर्म और खुश्क हो काम में लावे जैसे भुनाहुआ मांस गर्म मसाले के साथ खवावे। कम्मूनी, फलाफली, कुर्सगुल, जवारिश ऊद, सोंठ का मुरब्बा आदि सेवन करे और कूट का तेल और नारदैन का तेल अम्बक (एक सफेद फूल का तेल) आमाशय पर मले किताब इलाज उल अमराज में कुर्स गुलके बनाने की विधि इस प्रकार पर लिखी है कि गुलाब के फूल ३५ माशे, मुलहटी, गाफिस, अफसन्तीन, प्रत्येक १४ माशे, मस्तगी बालछड़, तगर, कची अगर, अजखर मकी, प्रत्येक ३॥ माशे कूटछान कर गुलाबमें टिकिया बनावें। दसवां भेद सर्दी और तरी के वर्णनमें है जो कफ का मवाद उसमें हो उसके कई चिन्हहैं एक तो यहहै कि खानेकी रुचि बहुत कम हो क्योंकि कफ आमाशय को बहुत सुस्त कर देता है आमाशय के मुख और बादी के मध्य में अड जाता है और हाल यह है कि मुख की गति बादीसे होती है दूसरे यहहै कि तेज भोजन तबियत की रुचि के अनुसार हों उसका यह कारण है कि तबियत उस मवाद के दूर करने के लिये ऐसी चीज चाहती है जो गर्म और खुश्क हो और मवाद को तोड डाले सो ऐसे काम में तेज चीज आती है। तीसरे यह है कि जी मिचलाने की बिपाधि हो क्योंकि आमाशय मवाद के दूर करने के लिये हिलता है और वह चेपदार होने के कारण से नहीं निकलता। चौथे प्यास नहो और यह बात बहुधा होती है क्योंकि जब खारी कफ होगा तो झूठी प्यास उत्पन्न होगी। पांचवें यह कि पेटमें अफरा भी होता है कि इस ऊपरी प्रकृति के साथ असल प्रकृति गर्म हो क्योंकि जब ऐसा होगा तो प्रकृति असल भोजन ग्रहण करतीहै और गर्मी के असरसे गाढ़े भाफके परमाणु जिनमें गर्मी कम है भोजन में से उठते हैं और उसी समय ऊपरी सर्दी उनमें असर करती है सो इस कारण से उन भाफ के परमाणुओं से अग्नि निकल जाती है जब अग्नि की भाफ निकल जाती है तो भाफ के परमाणु की बादी बन जाती है और

के दर्द में नहीं गिनी है और क्योंकि बादी और पित्त वाला मवाद जलन का भरा हुआ है इसलिये बहुधा आमाशय का दर्द इन्हीं से होता है और यह भी उचित है कि दूसरे दोष से उत्पन्न हो जाता है क्योंकि जो निकम्मा दोष आमाशय में इकठ्ठा हो तो बड़ा ही कष्टकारक और असहनीय दर्द होता है और इसके कारण, चिन्ह और इलाज पहिले प्रकरणमें वर्णन होचुके हैं यहां देखलो। किताब अक्सीरआजम में लिखा है कि आमाशय संयोगिक अंग और भोजन के पकाने का स्थान है इससे उचित है कि उसके दर्द के इलाज में देर न करें क्योंकि यह बड़ी विपत्तियों का कारण है और इसका इलाज पूर्ण रीति से यह है कि भांग के बीज की राख, दालचीनी और सोंठ महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करना आमाशय के दर्द के सब रोगों में लाभदायक है और इसी तरह असल नर्वसी १२ रत्ती पिस कर गर्म जुलाब में मिला कर थोड़े दिन पीना और उचित हुकनों तथा प्रकृति की रक्षाके अनुसार मवाद का निकालना उचित है इसमें दस्तावर दवा हलकी होनी चाहिये और भोजन को सम्भालना भी उचित है और जो दवा दर्दको थामे उसका लेप करें जैसे अलसी के बीज १०॥ माशे, तर जूफा ७ माशे, और बिहीके तेल की मोमरोगनी में मिला कर लेप करें और हकीम लोग कहते हैं कि जो दर्द आमाशय का अधिक हो तो स्पंज को गर्म सिर्के में भिगो कर आमाशय पर रक्खे और पुराने दर्द के लिये सीसे की गोली निगलना परीक्षा की हुई है और इसी तरह गर्दन में मूंगा लटकाना और पीसकर पीना लाभदायक है और कहरवा गले में लटकाना भी वैसा ही लाभदायक है। दूसरा भेद यह है कि आमाशय में सूजन या घाव उत्पन्न हो और दर्द उत्पन्न करे उसका वर्णन पीछे किया जायगा और शेख बूअली सेनाने कहा है कि बड़े प्रकारका अनारी हजम मिराकबत्न (पेटकी बड़ी झिल्ली) के मध्यमें इस तरहसे रक्खे कि नाभिके चारों ओर बराबर आजाय और एक घटातक वैसेही छोड़ देना आमाशय के दर्दको उसी समय थाम देती है और यह मेरा परीक्षा किया हुआ है और सिकनबीन गर्म पानी में पीना उसको बहुत से दर्दों के लिये अधिक लाभदायक है और मेरी जांचमें भी आया है और यह भी परीक्षा किया हुआ है कि असल नर्वसी १२ रत्ती पीस कर गर्म जुलाब के साथ कई दिन तक पीनेसे दर्दका रोकनी है और पोस्त मगदाने मुर्ग प्रकृति के अनुसार दर्द को खोदेते हैं और दालचीनी की जड़ की राख सोंठ के साथ आमाशयपर लेप करना आमाशय के दर्द में लिये

के दर्द में नहीं गिनी है और क्योंकि बादी और पित्त वाला मवाद जलन का भरा हुआ है इसलिये बहुधा आमाशय का दर्द इन्हीं से होता है और यह भी उचित है कि दूसरे दोष से उत्पन्न हो जाता है क्योंकि जो निकम्मा दोष आमाशय में इकट्ठा हो तो बड़ा ही कष्टकारक और असहनीय दर्द होता है और इसके कारण, चिन्ह और इलाज पहिले प्रकरणमें वर्णन होचुके हैं वहां देखलो। किताब अक्सीरआजम में लिखा है कि आमाशय संयोगिक अंग और भोजन के पकाने का स्थान है इससे उचित है कि उसके दर्द के इलाज में देर न करें क्योंकि यह बड़ी विपत्तियों का कारण है और इसका इलाज पूर्ण रीति से यह है कि भांग के बीज की राख, दालचीनी और सोंठ महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करना आमाशय के दर्द के सब रोगों में लाभदायक है और इसी तरह असल नर्वसी १२ रत्ती घिस कर गर्म जुलाब में मिला कर थोड़े दिन पीना और उचित हुकनों तथा प्रकृति की रक्षाके अनुसार मवाद का निकालना उचित है इसमें दस्तावर दवा हलकी होनी चाहिये और भोजन को सम्भालना भी उचित है और जो दवा दर्दको थामे उसका लेप करें जैसे अलसी के बीज १०॥ माशे, तर जूफा ७ माशे, और बिहीके तेल की कीरूती में मिला कर लेप करें और हकीम लोग कहते हैं कि जो दर्द आमाशय का अधिक हो तो स्पंज को गर्म सिर्के में भिगो कर आमाशय पर रक्खें और पुराने दर्द के लिये सीसे की गोली निगलना परीक्षा की हुई है और इसी तरह गर्दन में मूंगा लटकाना और पीसकर पीना लाभदायक है और कहरवा गले में लटकाना भी वैसा ही लाभदायक है। दूसरा भेद यह है कि आमाशय में सूजन या घाव उत्पन्न हो और दर्द उत्पन्न करे उसका वर्णन पीछे किया जायगा और शेखबूअली सेनाने कहा है कि बड़े प्रकारका अनारी हजम मिराकबत्न (पेटकी बड़ी झिल्ली) के मध्यमें इस तरहसे रक्खें कि नाभिके चारों ओर बराबर आजाय और एक घड़ीतक वैसेही छोड़ देना आमाशय के दर्दको उसी समय थाम देती है और यह मेरा परीक्षा किया हुआ है और सिकञ्जबीन गर्म पानी में पीना उसको बहुत से दर्दों के लिये अधिक लाभदायक है और मेरी जांचमें भी आया है और यह भी परीक्षा किया हुआ है कि असल नर्वसी १२ रत्ती पीस कर गर्म जुलाब के साथ कई दिन तक पीनेसे दर्दको थामती है और पोस्त सगदाने मुर्ग प्रकृति के अनुसार दर्द को खोदेते हैं और दालचीनी की जड़ की राख सोंठ के साथ आमाशयपर लेप करना आमाशय के दर्द में लिए

तथा शराबको विना नियमके पीना वादीको उत्पन्न करनेकेकारणहैं।दूसरेअसली गर्मी की न्यूनताहै और यह प्रगटहै कि जब गर्मी निर्बल होगी तो तरियों को न पचा सकैगी और जो भाफके परमाणु उस मवादसे उठें उनको न पचासकै सो वही भाफ के परमाणु आमाशय और पेट में रहैं और अग्नि के भाग के निकल जानेसे वादी बन जाय और बहुधा ऐसा होताहै कि मवाद के नर्म करनेवाली और फैलाने वाली कोई दवा खाई जाय और वह आमाशय की तरी को नष्ट करने लगे इसकारण से रिहा और भापके परमाणु उत्पन्न हों और कभी वादी के उत्पन्न होने का यह कारण होताहै कि आमाशय भोजन से रहित हो उसकी ऐसी दशा है कि आमाशय में गाढी तरी हो जब आमाशय भोजनरहित होतो तबियत उस तरी की तरफ आरूढ होकर उसको नष्ट करने लगेगी और भाफके परमाणु और हवा जो आमाशय और सोतों के मध्य में है हिलकर रिहा (वादी) उत्पन्न करै और यह दर्द भोजन करने से रुकजाता है और कभी वादी उत्पन्न होनेका कारण तिल्ली के रोग और बादी की अधिकता होतीहै और जानलेना चाहिये कि जिन लोगों को मालीखोलिया पेटकी झिल्ली के कारण से होता है उनके आमाशय में वादी बहुधा उत्पन्न होतीहै और दिलकी झिल्लीके रोगका कारण बहुधा दशाओं में गर्म दुष्ट प्रकृति होती है जो आमाशय में हो और भाफके परमाणु उठ आवें और वादी के आने जाने के मार्ग किसी दोष आदि से बंद हो जांय यहां तक कि उसके कारण रिहा (हवा) आंतों में न उतर सके और आमाशय की तरफ पलट जाय फिर कुछ तो दिमाग की तरफ चढ़जाय और कुछ खट्टी होकर डकारों में निकल आवै जानना चाहिये कि कोई पेट की झिल्ली ऐसी होती है कि खाने के पीछे उनके आमाशय में दर्द हो जाता है और जब भोजन आमाशयसे उतर जाता है तो दर्द जाता रहता है ऐसे वे रोगी होते हैं कि जिनका आमाशय निर्बल होगया हो और पेटकी कोई २ झिल्ली और भी होती है कि जब भोजन करते हैं तो कई घंटे तक आमाशय में दर्द हो जाता है और बिना खट्टी डकार के नहीं मिटता इसका यह कारण है कि झिल्ली में से वादी आमाशय पर गिरती है और आमाशय की गहराई में ठहर जाती है फिर भोजन करने के बहुत देर पीछे भोजन उसके साथ मिलजाय तो वाणी का मवाद पिघलकर ऊपर आजाय और इस कारण से कि आमाशय के ऊपर की तरफ अधिक ज्ञानशक्ति है [illegible] से कष्ट पावै

तथा शराबको बिना नियमके पीना बादीको उत्पन्न करनेकेकारणहैं।दूसरेअसली गर्मी की न्यूनताहै और यह प्रगटहै कि जब गर्मी निर्बल होगी तो तरियों को न पचा सकेगी और जो भाफके परमाणु उस मवादसे उठें उनको न पचासके सो वही भाफ के परमाणु आमाशय और पेट में रहें और अग्नि के भाग के निकल जानेसे बादी बन जाय और बहुधा ऐसा होताहै कि मवाद के नर्म करनेवाली और फैलाने वाली कोई दवा खाई जाय और वह आमाशय की तरी को नष्ट करने लगे इसकारण से रिहा और भापके परमाणु उत्पन्न हों और कभी बादी के उत्पन्न होने का यह कारण होताहै कि आमाशय भोजन से रहित हो उसकी ऐसी दशा है कि आमाशय में गाढी तरी हो जब आमाशय भोजनरहित होतो तबियत उस तरी की तरफ आरूढ होकर उसको नष्ट करने लगेगी और भाफके परमाणु औरहवा जो आमाशय और सोतों के मध्य में है हिलकर रिहा (बादी) उत्पन्न करें और यह दर्द भोजन करने से रुकजाता है और कभी बादी उत्पन्न होनेका कारण तिल्ली के रोग और बादी की अधिकता होतीहै और जानलेना चाहिये कि जिन लोगों को मालीखोलिया पेटकी झिल्ली के कारण से होता है उनके आमाशय में बादी बहुधा उत्पन्न होतीहै और दिलकी झिल्लीके रोगका कारण बहुधा दशाओं में गर्म दुष्ट प्रकृति होती है जो आमाशय में हो और भाफके परमाणु उठ आवें और बादी के आने जाने के मार्ग किसी दोष आदि से बंद हो जांय यहां तक कि उसके कारण रिहा (हवा) आंतों में न उतर सके और आमाशय की तरफ पलट जाय फिर कुछ तो दिमाग की तरफ चढ़जाय और कुछ खट्टी होकर डकारों में निकल आवे जानना चाहिये कि कोई पेट की झिल्ली ऐसी होती है कि खाने के पीछे उनके आमाशय में दर्द हो जाता है और जब भोजन आमाशयसे उतर जाता है तो दर्द जाता रहता है ऐसे वे रोगी होते हैं कि जिनका आमाशय निर्बल होगया हो और पेट की कोई २ झिल्ली और भी होती है कि जब भोजन करते हैं तो कई घंटे तक आमाशय में दर्द हो जाता है और बिना खट्टी डकार के नहीं मिटता इसका यह कारण है कि झिल्ली में से बादी आमाशय पर गिरती है और आमाशय की गहराई में ठहर जाती है फिर भोजन करने के बहुत देर पीछे भोजन उसके साथ मिलजाय तो बादी का मवाद पिघलकर ऊपर आजाय और इस कारण से कि कि आमाशय के ऊपर की तरफ अधिक ग

पचने से रोकदे और इस कारण से रिहा ठहर जांय तो यह सन्देह हो कि प्रकृति गर्म है और सर्दी लाभदायक है और दशा इस के विरुद्ध हो और ऐसा ही बहुधा होता है कि कोई गर्म चीज़ भाफ के परमाणु को नष्ट कर दे और रिहा (हवा) को तोड़ दे तो इस बात का सन्देह हो कि प्रकृति ठंडी है और गर्मी लाभदायक है और दशा इस बातके विरुद्ध है सो हकीम को उचित है कि और चिन्ह ढूंढे और उन पर भरोसा करे और ऐसे छोटे लाभों पर लिप्त न हो क्यों कि यद्यपि किसी चिन्ह ने लाभ किया परन्तु उसकी असल दशा के अनुसार हानि पहुंचेगी। प्रगट हो कि आमाशय पर हाथ के रखने से गुड़गुड़ाहट इस कारण से मालूम होती है कि जो रिहा आमाशय में इकट्ठी है हाथ के रखने से अलग २ हो जाती है तो हवा का शब्द मालूम होता है और जो आमाशय में हवा भरी होगी तो आमाशय फूलाहुआ मालूम होगा और उसके भाग भी खिचे हुऐ मालूम होंगे और कभी हवा डकार में निकलती है और यह विशेष होता है कि भोजन मवाद के फैलाने और नर्म करने वाली गर्म दवा के साथ खाय और दवा आमाशय की तरी को नष्ट करने लगे तो भाफ के परमाणु और रिहा उत्पन्न हो। चौथा भेद वह आमाशय का दर्द है जो किसी ऐसे कष्टदायक भोजन के खाने से उत्पन्न हो कि आमाशय को अपनी असलियत से या गर्म जलाने वाली दवा से कष्ट दे और उसका चिन्ह प्रगट है (इलाज) इसमें वमन कराये जिससे उक्त भोजन निकल जाय फिर देखे जो दर्द का कारण भोजन की अधिकता हो तो कई दिन तक थोड़े २ भोजन कईबार खवावे जिससे आमाशय पर बोझ न हो और जो दवा की बुराई दर्द का कारण हो तो ऐसे उचित और श्रेष्ठ भोजन दें जो आमाशय के अनुसार हों। पांचवां भेद वह आमाशयका दर्द है जिसका कारण आमाशयकी निर्बलता हो और प्रगट है कि जब पचाव निर्बलहो और भोजनमें खराबी आजाय तो दर्द उत्पन्न होजाताहै और ऐसे भोजन से रिहा भी उत्पन्न होते हैं और आमाशय में खिचाव और दर्द उत्पन्न होताहै और इस प्रकार का चिन्ह यह है कि खाने के उपरांत दर्द उठे और घिनावपन या दस्तोंके न रुके और इसलिये हकीम राजी कहताहै कि जो आमाशय भोजन से कष्ट पाताहै यह विशेष निर्बल है इस कारणसे उसको निकालना पड़ताहै क्योंकि उसको सहार नहीं सकता सोजो निर्बलता उसके ऊपरकी तरफ होगी तो उसको वमनमें निकालदेगा और जो नीचेकी तरफ

पचने से रोकदे और इस कारण से रिहा ठहर जांय तो यह सन्देह हो कि प्रकृति गर्म है और सर्दी लाभदायक है और दशा इस के विरुद्ध हो और ऐसा ही बहुधा होता है कि कोई गर्म चीज़ भाफ के परमाणु को नष्ट कर दे और रिहा (हवा) को तोड़ दे तो इस बात का सन्देह हो कि प्रकृति ठंढी है और गर्मी लाभदायक है और दशा इस बातके विरुद्ध है सो हकीम को उचित है कि और चिन्ह ढूंढे और उन पर भरोसा करे और ऐसे छोटे लाभों पर लिप्त न हो क्यों कि यद्यपि किसी चिन्ह ने लाभ किया परन्तु उसकी असल दशा के अनुसार हानि पहुंचेगी। प्रगट हो कि आमाशय पर हाथ के रखने से गुड़गुड़ाहट इस कारण से मालूम होती है कि जो रिहा आमाशय में इकट्ठी है हाथ के रखने से अलग २ हो जाती है तो हवा का शब्द मालूम होता है और जो आमाशय में हवा भरी होगी तो आमाशय फूलाहुआ मालूम होगा और उसके भाग भी खिचे हुये मालूम होंगे और कभी हवा डकार में निकलती है और यह विशेष होता है कि भोजन मवाद के फैलाने और नर्म करने वाली गर्म दवा के साथ खाय और दवा आमाशय की तरी को नष्ट करने लगे तो भाफ के परमाणु और रिहा उत्पन्न हो। चौथा भेद वह आमाशय का दर्द है जो किसी ऐसे कष्टदायक भोजन के खाने से उत्पन्न हो कि आमाशय को अपनी असलियत से या गर्म जलाने वाली दशा से कष्ट दे और उसका चिन्ह प्रगट है (इलाज) इसमें वमन करावे जिससे उक्त भोजन निकल जाय फिर देखे जो दर्द का कारण भोजन की अधिकता हो तो कई दिन तक थोड़े २ भोजन कईबार खवावे जिससे आमाशय पर बोझ न हो और जो दशा की बुराई दर्द का कारण हो तो ऐसे उचित और श्रेष्ठ भोजन दें जो आमाशय के अनुसार हों। पांचवां भेद वह आमाशयका दर्द है जिसका कारण आमाशयकी निर्बलता हो और प्रगट है कि जब पचाव निर्बल्हो और भोजनमें खराबी आजाय तो दर्द उत्पन्न होनाहै और ऐसे भोजन से रिहा भी उत्पन्न होते हैं और आमाशय में खिचाव और दर्द उत्पन्न होताहै और इस प्रकार का चिन्ह यह है कि खाने के उपरांत दर्द उठे और बिनावमन या दस्तोंके न रुके और इसलिये हकीम राजी कहताहै कि जो आमाशय भोजन से कष्ट पाताहै वह विशेष निर्बल है इस कारणसे उसको निकालना पड़ताहै क्योंकि उसको सहार नहीं सकता सोजो निर्बलता उसके ऊपरकी तरफ होगी तो उसको वमनमें निकालदेगा और जो नीचेकी तरफ

जर्नेब समग अग्वी, विलिया, खशखाशके भुने बीज, बाल्छड, अधीरा जा गरमोया, काला जीरा भुनाहुआ प्रत्येक ३॥ माशे कपूर अजमायन १॥। माशे छोटी इलायची, बेलगिरी, जरश्क, चन्दन सफेद महीन पीसकर पिस्ताका छिलका छिला हुआ, भुना धनियां, वंशलोचन, गुलाब के फूल प्रत्येक ७ माशे सूखी विही ४ तोले इन दवाओं को कूट पीसकर मीठे अनारका शर्बत ४ तोले और दवाओं से तिगुना सफेदखंद गाढ़ा करके आंवलेका मुरब्बा २ दाने पीसकर दवाओंके साथ मिलाकर माजूम बनावे इस की मात्रा ४॥ माशे है और कभी विशेष पुष्टताके लिये कस्तूरी, अम्बर, सोने चांदीके वर्क प्रत्येक १॥। माशे केवड़ेके अर्क में घोलकरके बनाते हैं। छटा भेद उस आमाशयके दर्दके वर्णनमें है जो प्रातः कालके समय खाली पेटमें बढ़जाय और भोजन करनेसे थमजाय और यह तीन प्रकारका है एक तो यहहै कि रिहा बढ़जाय और खाली होने की दशामें वादी उत्पन्न होने का कारण वादीके रोगमें वर्णन हो चुकाहै। दूसरे यहहै कि आमाशयके खाली होनेके कारण पित्त जिगरसे आमाशय पर गिरे और क्योंकि वह हल्का नर्म और भागदार है आमाशयके ऊपर की तरफमें आजाय और इसकी जलन मालूम होय फिर जब भोजनकरें तो पित्त बैठजाय और दर्द रुकजाय। तथा मुखके कडुवेपन और वमनमें पित्तके निकलनेसे और खटाईके लाभदायक होनेसे पहचाना जाता है कि इसका कारण पित्त है और दूसरे चिन्ह पित्तवाले भी उस पर साक्षी हों। तीसरे यहहै कि जब आमाशय खाली हो तो तिल्लीसे वादी आमाशयके मुख पर गिरे जैसा कि इसका स्वभावहै और इस कारणसे कि वादीमें तेजी होगी या विशेष होजायगा या आमाशयके मुखकी ज्ञानशक्ति पहले की अपेक्षा विशेष बलवान होगई होगी इससे काट पावें और दर्द मालूम हो और जिस मनुष्यके आमाशयमें यह कारण मौजूद हो तो उसके आमाशयके मुखमें जलन होती है और भोजन करने से मिटजाती है और बहुधा ऐसा भी होताहै कि पित्तका दोष जलन करें और उन चिन्हों से जो प्रत्येकके लिये मुख्यहैं इन दोनोंमें अन्तर हो सकताहै (इलाज) यह पूर्वोक्त वादी जिस का मवाद गाढ़ी रतूबतहै मूल की गर्मीसे पचकर वादी उत्पन्न करती है जैसा कि हम वादी के विषयमें कह चुके हैं तो उसका उपाय मवादका निकालनाहै और शुद्धता भी उसी तरह पर करें जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं और

जर्नेव समग अग्वी, विलिया, खशखाशके भुने बीज, बालछड, अधीरा आ गरमोया, काला जीरा भुनाहुआ प्रत्येक ३॥ माशे कपूर अजमायन १॥॥ माशे छोटी इलायची, बेलगिरी, जरश्क, चन्दन सफेद महीन पीसकर पिस्ताका छिलका छिला हुआ, भुना धनियां, वंशलोचन, गुलाब के फूल प्रत्येक ७ माशे सूखी विही ४ तोले इन दवाओं को कूट पीसकर मीठे अनारका शर्बत ४ तोले और दवाओं से तिगुना सफेदखंद गाढ़ा करके आंवलेका मुरब्बा २ दाने पीसकर दवाओंके साथ मिलाकर माजूम बनावे इस की मात्रा ४॥ माशे है और कभी विशेष पुष्टताके लिये कस्तूरी, अम्बर, सोने चांदीके वर्क प्रत्येक १॥॥ माशे केवड़ेके अर्क में घोलकरके बनाते हैं। छटा भेद उस आमाशयके दर्दके वर्णनमें है जो प्रातः कालके समय खाली पेटमें बढ़जाय और भोजन करनेसे थमजाय और यह तीन प्रकारका है एक तो यहहै कि रिहा बढ़जाय और खाली होने की दशामें बादी उत्पन्न होने का कारण बादीके रोगमें वर्णन हो चुकाहै। दूसरे यहहै कि आमाशयके खाली होनेके कारण पित्त जिगरसे आमाशय पर गिरै और क्योंकि वह हलका नर्म और झागदार है आमाशयके ऊपर की तरफमें आजाय और उसकी जलन मालूम होय फिर जब भोजनकरैं तो पित्त बैठजाय और दर्द रुकजाय। तथा मुखके कड़वेपन और वमनमें पित्तके निकलनेसे और खटाईके लाभदायक होनेसे पहचाना जाता है कि इसका कारण पित्त है और दूसरे चिन्ह पित्तवाले भी उस पर साक्षी हों। तीसरे यहहै कि जब आमाशय खाली हो तो तिल्लीसे बादी आमाशयके मुख पर गिरै जैसा कि इसका स्वभावहै और इस कारणसे कि बादीमें तेजी होगी या विशेष होजायगी या आमाशयके मुखकी ज्ञानशक्ति पहले की अपेक्षा विशेष बलवान होगई होगी इससे कष्ट पावै और दर्द मालूम हो और जिस मनुष्यके आमाशयमें यह कारण मौजूद हो तो उसके आमाशयके मुखमें जलन होती है और भोजन करने से मिटजाती है और बहुधा ऐसा भी होताहै कि पित्तका दोष जलन करै और उन चिन्हों से जो प्रत्येकके लिये मुख्यहैं इन दोनोंमें अन्तर हो सकताहै (इलाज) यह कफयुक्त बादी जिस का मवाद गाढ़ी रतूबतहै भूख की गर्मीसे पचकर बादी उत्पन्न करती है जैसा कि हम बादी के विषयमें कह चुके हैं तो उसका उपाय मवादका निकालनाहै और शुद्धता भी इसी तरह पर करै जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं और

आदि काम में लावें फिर जो यह कष्टकारक गर्मी है तो चाहिये कि अयार ज से कई बार में उसका मवाद निकालें और उस रोगी के भोजन में देर न करें किन्तु उचित है कि भूख के आरम्भ होते ही ऐसा उपाय करना उचित है कि मेवाओं का रुब्ब या ठंडे पानी और गुलाब में रोटी भिगो कर खवावे और क्षुधाशक्ति के तेज होने का कारण ठंडा दोष हो तो बहुधा वांयटे और कपकपी उत्पन्न होनी चाहिये कि निर्मल शराब और सुगन्धित दवायें मवाद के समेटने वाली और मुलायम करने वाली और श्रेष्ठ करने वाली से आमाशय की पुष्टिता के उपरान्त दोष को निकाले (सूचना) कभी आमाशय का दर्द आंतों में उतर जाता है और कूलंज उत्पन्न करता है और कभी अचानक मार डालता है क्योंकि उसका कष्ट दिल में पहुंचता है हकीम शेखबू अली सैना ने उसका वर्णन किया है अभिप्राय यह है कि आमाशय के दर्द के इलाज में सुस्ती न करे क्योंकि यह अंग संयोगिक है और उसकी विपत्ति से बहुतसी विपत्ति उत्पन्न होती हैं और अंग विशेष हो जाती है तो उस में सूजन उत्पन्न होती है । प्रगट हो कि हकीम शेखबू अली सैना की कहावत है कि आमाशय का दर्द अचानक रोगी को मार डालता है क्योंकि उसका कष्ट दिल में पहुंचता है और कभी इस कारण से मृत्यु का भय होता है कि जिस मनुष्य के आमाशय में विशेष दर्द हो तो अन्तमें सूजन उत्पन्न हो जाती है और बहुधा गर्भवती स्त्रियों को गर्भस्थान के भिचने के कारण से आमाशयके दर्दके सिवाय आमाशयके मुख में दर्द उत्पन्न होता है

तीसरा प्रकरण

पाचनशक्ति की निर्बलता, उपद्रव और अजीर्ण का वर्णन ।

जान लेना चाहिये कि इन तीनों के कारण एकसे हैं परन्तु इतना अन्तर है कि जो कारण निर्बल हो तो निर्बलता लाता है और जो बलवान् हो तो अजीर्ण और मध्यम हो तो निकम्मा पचाव उत्पन्न करता है सो निर्बलता का अर्थ तो यह है कि आमाशय में भोजन विशेष समय तक रहे और प्रकृति के अनुसार आंतों की तरफ न उतरे और उसका यह चिन्ह है कि भोजन करने के उपरांत बहुत देर तक आमाशयमें बोझ और खिचाव रोगी को मालूम हो और डकार में भोजन का स्वाद मालूम होय और यह प्रगट है कि जब पचानेवाली शक्ति निर्बल होगी तो भोजन के आते ही उसमें असर न करेगी और जब तक भामाशयकी असली दशा न बदलेगी और अपनी

आदि काम में लावें फिर जो यह कष्टकारक गर्मी है तो चाहिये कि अयार ज से कई बार में उसका मवाद निकालें और उस रोगी के भोजन में देर न करें किन्तु उचित है कि भूख के आरम्भ होते ही ऐसा उपाय करना उचित है कि मेवाओं का रुब्ब या ठंडे पानी और गुलाब में रोटी भिगो कर खवावे और क्षुधाशक्ति के तेज होने का कारण ठंडा दोष हो तो बहुधा वांयटे और कपकपी उत्पन्न होनी चाहिये कि निर्मल शराब और सुगन्धित दवायें मवाद के समेटने वाली और मुलायम करने वाली और श्रेष्ठ करने वाली से आमाशय की शुद्धता के उपरान्त दोष को निकाले (सूचना) कभी आमाशय का दर्द आंतों में उतर जाता है और कूलंज उत्पन्न करता है और कभी अचानक मार डालता है क्योंकि उसका कष्ट दिल में पहुंचता है हकीम शेखबू अली सैना ने उसका वर्णन किया है अभिप्राय यह है कि आमाशय के दर्द के इलाज में सुस्ती न करे क्योंकि यह अंग संयोगिक है और उसकी विपत्ति से बहुतसी विपत्ति उत्पन्न होती हैं और जब विशेष हो जाती है तो उस में सूजन उत्पन्न होती है। प्रगट हो कि हकीम शेखबू अली सैना की कहावत है कि आमाशय का दर्द अचानक रोगी को मार डालता है क्योंकि उसका कष्ट दिल में पहुंचता है और कभी इस कारण से मृत्यु का भय होता है कि जिस मनुष्य के आमाशय में विशेष दर्द हो तो अन्तमें सूजन उत्पन्न हो जाती है और बहुधा गर्भवती स्त्रियों को गर्भस्थान के खिंचने के कारण से आमाशयके दर्दके सिवाय आमाशयके मुख में दर्द उत्पन्न होता है

तीसरा प्रकरण

पाचनशक्ति की निर्बलता, उपद्रव और अजीर्ण का वर्णन।

जान लेना चाहिये कि इन तीनों के कारण एकसे हैं परन्तु इतना अन्तर है कि जो कारण निर्बल हो तो निर्बलता लाता है और जो बलवान् हो तो अजीर्ण और मध्यम हो तो निकम्मा पचाव उत्पन्न करता है सो निर्बलता का अर्थ तो यह है कि आमाशय में भोजन विशेष समय तक रहे और प्रकृति के अनुसार आंतों की तरफ न उतरे और उसका यह चिन्ह है कि भोजन करने के उपरांत बहुत देर तक आमाशयमें बोझ और खिंचाव रोगी को मालूम हो और डकार में भोजन का स्वाद मालूम होय और यह प्रगट है कि जब पचानेवाली शक्ति निर्बल होगी तो भोजन के आते ही उसमें अ सर न करेगी और जब तक भामाकी असली दशा न बदलेगी और भपनी

चुका है कि तीनों के कारण एक से हैं प्रगट हो कि पचावें आमाशय की गहराई में होता है उसके मुखमें नहीं होता क्यों कि आमाशय के मुख में पठे हैं और गहराई में मांस है । इसका कारण वर्णन होचुका है और भोजन की रुचि आमाशय के मुखसे सम्बन्ध रखती है । जानना चाहिये कि पचाव का विगडना सब रोगों की जड और रोगों का सोत है क्योंकि पचाव के विगड़ने से वहुतसे रोग उत्पन्न होते हैं। हकीम शेखबूअली ने कहा है कि पचाव के विगडजानेसे वहुधा निकम्मे रोग उत्पन्न होते हैं जैसे मिर्गी, मालीखौलिया मिराकी इत्यादि और जानना चाहिये कि जब आमाशय ऐसा निर्वलहो कि भोजनकी दशा न पटलसके और प्रायःयह निर्वलता तरीकी अधिकता और विशेषता के कारणसे है तब हकीमजाली नूस इसरोगमें यह मोमका तेल काममें लाया है मोम२६ माशे,नारदैन का तेल ३५ माशे, दोनों को मिलाकर लेपकरें और जो आमाशय ऐसा निर्वल हो कि भोजनको न रोकसके तो एलवा, मस्तगी, कचे अगूर का निचडा हुआ पानी प्रत्येक ४॥ माशे मिलाकर आमाशय पर मलें और उक्त हकीम निश्चय करता है कि नीचे लिखा हुआ विही शिकञ्जवीनका नुसखा आमाशय के सम्पूर्ण रोगोंको जिनमें गर्मी और खश्की अधिकताके साथ न हो विशेष लाभदायक है (उसकी विधि) सेर भर विहीकी पानी और आधसेर पुराना सिर्का और शहद जितना चाहै सबको मिलाकर गाढाकरके सौंठ ७० माशे, महीन पीसकर बुरककर काम में लावें और नीचे लिखी हुई दवा गुणमें उसके समान है छुनी हुई विही १॥ सेर शहद १॥ सेर इन दोनों को मिलाकर मिर्च १०५ माशे, पहाडी अजमोदके वीज ३५ माशे महीन पीसकर मिलावें और जोर से बोलना आदि पेटको हलानेवाली वस्तु आमाशयकी निर्बलता में लाभदायक है और दवाउलखरश्क भी लाभदायक है (उसकीविधि) का लीं हरड गौके घी में भूनकर ३५ माशे, सुखाहुआ हाऊम १७॥ माशे और अजमाइन, सातर प्रत्येक १०॥ माशे सुखाहुआ लोहे का मैल ३५ माशे महीन पीसकर चूर्ण बनाकर तेज शराब के साथ ७ माशे लें। पहला भेद यह है कि सादा दुष्प्रकृति हो। दूसरा भेद यह है कि आमाशय में बुरे दोषों का उत्पन्न होना या दूसरे अंग से उसमें गिरना उसका कारण और सादा दुष्ट प्रकृति के सबभेदों के चिन्ह और इलाज आमाशय के दर्द में वर्णन किये गये हैं और हम इस जगह भी सादा और मवादवालों का अन्तर वर्णन करते हैं और यह प्रगट है कि इन कारणों से विशेष रोग का निदान

चुका है कि तीनों के कारण एक से हैं प्रगट हो कि पचावें आमाशय की गहराई में होता है उसके मुखमें नहीं होता क्यों कि आमाशय के मुख में पठे हैं और गहराई में मांस है । इसका कारण वर्णन होचुका है और भोजन की रुचि आमाशय के मुखसे सम्बन्ध रखती है । जानना चाहिये कि पचाव का बिगड़ना सब रोगों की जड़ और रोगों का सोत है क्योंकि पचाव के बिगड़ने से बहुतसे रोग उत्पन्न होते हैं। हकीम शेखबूअली ने कहा है कि पचाव के बिगड़जानेसे बहुधा निकम्मे रोग उत्पन्न होते हैं जैसे मिर्गी, मालीखौलिया मिराकी इत्यादि और जानना चाहिये कि जब आमाशय ऐसा निर्बलहो कि भोजनकी दशा न पलटसके और प्रायः यह निर्बलता तरीकी अधिकता और विशेषता के कारणसे है तब हकीमजाली नूस इसरोगमें यह मोमका तेल काममें लाया है मोम२६ माशे,नारदैन का तेल ३५ माशे, दोनों को मिलाकर लेपकरें और जो आमाशय ऐसा निर्बल हो कि भोजको न रोकसके तो एलवा, मस्तगी, कच्चे अंगूर का निचड़ा हुआ पानी प्रत्येक ४॥ माशे मिलाकर आमाशय पर मलें और उक्त हकीम निश्चय करता है कि नीचे लिखा हुआ विही शिकञ्जबीनका नुसखा आमाशय के सम्पूर्ण रोगोंको जिनमें गर्मी और खुश्की अधिकताके साथ न हो विशेष लाभदायक है (उसकी विधि) सेर भर विहीका पानी और आधसेर दुगना सिर्का और शहद जितना चाहे सबको मिलाकर गाढ़ाकरके सोंठ ७० माशे, महीन पीसकर बुरककर काम में लावें और नीचे लिखी हुई दवा गुणमें उसके समान है भुनी हुई विही १॥ सेर शहद १॥ सेर इन दोनों को मिलाकर मिर्च १०५ माशे, पहाड़ी अजमोदके बीज ३५ माशे महीन पीसकर मिलावें और जोर से बोलना आदि पेटको हलानेवाली वस्तु आमाशयकी निर्बलता में लाभदायक है और दवाउलमरशक भी लाभदायक है (उसकीविधि) काली हरड़ गौके घी में भूनकर ३५ माशे, भुनाहुआ हालूम १७॥ माशे और अजमाइन, सातर प्रत्येक १०॥ माशे सुधाहुआ लोहे का मैल ३५ माशे महीन पीसकर चूर्ण बनाकर तेज शराब के साथ ७ माशे लें। पहला भेद यह है कि सादा दुर्भक्षति हो। दूसरा भेद यह है कि आमाशय में बुरे दोषों का उत्पन्न होना या दूसरे अंग से उसमें गिरना उसका कारणों और साथ दुष्ट प्रकृति के सबभेदों के चिन्ह और इलाज आमाशय के दर्द में वर्णन किये गये हैं और हम इस जगह भी साथ और पदार्थों का भण्डार वर्णन करते हैं और यह प्रगट है कि इन कारणों से विशेष रोग का निदान

सगीर और कबीर का लाभ इस रोगमें बहुत बड़ा है और मोई तथा सिरीकी शराव लाभदायक है और पालतू मुर्गेके सगदानेकी भीतरी खाल बहुत लाभ-दायक है उसे मांससे जुदा करके लटकावें जिससे सूखजाय फिर कूटलें, और उसमें से २॥ माशे इत्रीफलमें वा मौल्सरी या सिही की शराव में मिलाकर दें सगयशव आमाशयपर लटकाना प्रकृतिके अनुसार लाभदायक है और जो १॥ माशे के अंदाज से पीसकर माजूममें मिलाकर दें तो विशेष लाभदायक है और वालछड़, नागरमोथा, गन्दपेल और मस्तगी विहीके पानी में मिलाकर आमाशयपर लगावें और नार्दैन का तेल आमाशय पर मलें और मुर्गे आदिके मांस में दालचीनी, केसर और जीरा डालकर भोजन बनावें और सिमाक और नीबू का पानी या अनार के पानी से खट्टा करें और तीतर तथा बटेर आमाशयके सब रोगोंमें उचित है परन्तु इस प्रकारके रोगमें तो बहुत लाभदायक है तथा मस्तगी का तेल आमाशय पर मलना लाभदायक है और अखरोट की माजून जो माजून जौजी के नाम से प्रसिद्ध है लाभदायक है और यह परीक्षा किया हुआ है उसकी विधि यह है कि अनार के, फूल, मस्तगी प्रत्येक १३॥ माशे अफसन्तीन, एलवा प्रत्येक ९ माशे, गुलाब के फूल २२॥ माशे, लौंग, नागर-मोथा, वालछड़ प्रत्येक ७ माशे महीन पीस कर गुलाबमें या शराबमें मिलाकर लेप करें। अब इनभेद हेतुओं से पहचानने का वर्णन करते हैं जो पचाव के बिगड़ जानेसे होते हैं। जानलेना चाहिये कि यह पचाव सब रोगोंकी जड़ और सोतहै इससे पचावके कार्योंमें सचेत रहें और उसके कारणों का अवश्य उपाय करें जैसा कि कहा जायगा ये बस कारण तीन प्रकारके हैं एक तो भोजनके ऊपर वाली विपत्ति। दूसरे खाने पीने में कुरीति होना। तीसरे भोजन करने पर दवाका प्रभाव। भोजनके उपद्रव दो प्रकार के हैं एक तो यह है कि निकम्मी दशा के कारणसे हो दूसरे यह है कि विशेषता के कारण से हो और जो भोजन निकम्मी दशा का है उसके कई प्रकार हैं एक तो यह है कि अपनी असली दशा में निकम्मेपनको प्राप्त ग्रहण करें जैसे कि खट्टा दूध और ताजी मछली। दूसरे यह है कि गाढ़ेपनके कारण से इलाज को देर में ग्रहण करें जैसे भैंस का मांस। तीसरे यह है कि बहुत गर्म हो जैसा कि शहद। या बहुत ठंडा हो जैसे रूब्बा खीरा। चौथे यह है कि दुर्गन्धित हो और तबियत को रुचि न हो और प्रगट है कि जिस भोजन की निकम्मी गन्ध है उसको मनुष्य की तबियत ग्रहण नहीं करती और जिस भोजन से तबियत में घृणा आवे और उसकी तरफ आरूढ़ न हो

सगीर और कबीर का लाम इस रोगमें बहुत बड़ा है और मोर्द तथा ख़िरोनी शरब लाभदायक है और पालतू मुर्गेके सगदानकी भीतरी खाल बहुत लाभ दायक है उसे मांससे जुदा करके लटकावें जिससे सूखजाय फ़िर कूटलें, और उसमें से २॥ माशे इत्रीफलमें वा मोंन्सरी या ख़िही की शराव में मिलाकर दें सगयशव आमाशयपर लटकाना प्रकृतिके अनुसार लाभदायक है और जो १॥ माशे के अंदाज से पीसकर माजूममें मिलाकर दें तो विशेष लाभदायक है और बालछड़, नागरमोथा, गन्दपेल और मस्तगी बिहीके पानी में मिलाकर आमा शयपर लगावें और नार्दैन का तेल आमाशय पर मलें और मुर्गे आदिके मांस में दालचीनी, केसर और जीरा डालकर भोजन बनावें और सिमाक और नीबू का पानी या अनार के पानी से खट्टा करें और तीतर तथा बटेर आमा शयके सब रोगोंमें उचित है परन्तु इस प्रकारके रोगोंमें तो बहुत लाभदायक है तथा मस्तगी का तेल आमाशय पर मलना लाभदायक है और अखरोट की माजून जो माजून जौजी के नाम से प्रसिद्ध है लाभदायक है और यह परीक्षा किया हुआ है उसकी विधि यह है कि अनार के फ़ूल, मस्तगी प्रत्येक १३॥ माशे अफसन्तीन, एलवा प्रत्येक ९ माशे, गुलाब के फूल २२॥ माशे, लौंग, नागर- मोथा, बालछड़ प्रत्येक ७ माशे महीन पीस कर गुलाबमें या शराबमें मिलाकर लेप करें। अब इनरोग हेतुओं से पहचानने का वर्णन करते हैं जो पचाव के बिगड़ जानेसे होते हैं। जानलेना चाहिये कि यह पचाव सब रोगोंकी जड़ और रोगोंसे इससे पचावके रोगोंमें सचेत रहें और उसके कारणों का जल्द उपाय करें जैसा कि कहा जायगा ये वक्त कारण तीन प्रकारके हैं एक तो भोजनमें ऊपरवाली विपत्ति। दूसरे खाने पीने में कुरीति होना। तीसरे भोजन करने पर दवा का प्रभाव। भोजनके उपद्रव दो प्रकार के हैं एक तो यह है कि निकम्मी दशा के कारणसे हो दूसरे यह है कि विशेषता के कारण से हो और जो भोजन निकम्मी दशा का है उसके कई प्रकार हैं एक तो यह है कि अपनी असली दशा में निकम्मेपनको ग्रहण करे जैसे कि खट्टा दूध और ताजी मछली। दूसरे यह है कि गाढ़ेपनके कारण से इलाज को देर में ग्रहण करें जैसे भैंस का मांस। तीसरे यह है कि बहुत गर्म हो जैसा कि शहद। या बहुत ठंडा हो जैसे एरण्डा। चौथे यह है कि दुर्गन्धित हो और तबियत को रुचि न हो और प्रगट है कि जिस भोजन की निकम्मी गन्ध है उसको मनुष्य की तबियत ग्रहण नहीं करती और जिस भोजन से तबियत में घृणा आवे और उसकी तरफ आकर्ष न हो

रिही को भिजो दें फिर औटा कर जब जल जाय तो आध सेर शहद और कन्द मिलाकर दाल चीनी, बंशलोचन, गुलाबकेफूल, पिस्ता के छिल्का मस्तगी, अगर, छोटीइलायची के दाने, पोदीना के पत्ते, जायफल, जावित्री प्रत्येक १४ माशे, लौंग, बालछड़, नीबूकाछिलका, प्रत्येक १०॥ माशे, सोंठ, मिर्च, पीपल, कपूर, केसर प्रत्येक ३॥ माशे, अम्बर, कस्तूरी प्रत्येक १॥। माशे निर्मल गुलाब में धोकर जवारिस बनावें इसकी मात्रा १४ माशे तक है (सूचना) भोजन में जो खराबी होजाती है उस में विशेषताका उपद्रव निकम्मी दशा के उपद्रव की अपेक्षा बहुत कम हानिकारक है क्यों कि अधिक भोजन का अच्छा भाग शरीरमें पहुंचता है जितने पर आमाशयने अपना काम कियाहोगा यद्यपि बाकीबेपचा रहै। परन्तुयह निकम्मीदशाविरुद्ध है जो तबियतके समीप रहै और शरीरको कष्ट देती है । और खाने पीनेका कुरीतियों में एकतो यह है जो गाढ़े भोजन हल्के भोजन से पहले खाये जांय और हलका और श्रेष्ठ भोजन जोकि जल्द पचजाता है बहुत जल्द पचजाय और क्योंकि गाढ़ा उसके नीचे है उतर न सके और उसीजगह ऊपर रहै और बहुत ठहरने से बिगड़ जाय फिर उस गाढ़े को भी निकम्मा करदे क्यों कि जब निकम्मा अच्छे के साथ मिलै तो उसको भी बिगाड़देताहै। दूसरे यहहै कि भरे पेटपर भोजन कर लियाजाय उस समय तबियत भोजन के पचाव में आरूढ़ रहतीहै या इसी प्रकार की ऐसी चीज के पीने का काम पड़े कि पचाववाली शक्ति की गर्मी को बुझादे और भोजन और आमाशय के मध्य में अंतर डालदें । तीसरे यह है कि पहले कोई अजीर्ण करने वाली चीज खाय उसके उपरान्त कोई पचाव की चीज खाय और यह पचाववाली चीज उस अजीर्णवाली से विशेष होकर पचाव से पहले फैलादे और जानलेना चाहिये कि कभी ऐसा होताहै कि यह उपाय असर नहीं करता क्योंकि पहले वाली चीज विशेष अजीर्ण करनेवाली हो और पचानेवाली चीजकी शक्ति से न हटे और जबतक कि भोजन का पचाव पूरा न हो पचाव वाली चीजको भी ठहराले और पचाव भी अच्छा हो और अजीर्ण करनेवाली चीजों का भोजन करने के उपरान्त काम पड़े और पचाव को बिगाड़दें और देरमें पचनेवाले भोजनोंके खानेपर बहुत जगना तथा शीघ्र पचनेवाले भोजनों के पीछे बहुत सोना हानिकारकहै (लाभ) आमाशय की गर्माईमें भोजनके पहुंचनेसे पहले इसकी गर्मी पचाव और सहायता करती है

रिही को भिजो दें फिर औटा कर जब जल जाय तो आध सेर शहद और कन्द मिलाकर दाल चीनी, बंशलोचन, गुलाबकेफूल, पिस्ता के छिलका मस्तगी, अगर, छोटीइलायची के दाने, पोदीना के पत्ते, जायफल, जा विन्त्री प्रत्येक १४ माशे, लौंग, बालछड़, नीबूकाछिलका, प्रत्येक १०॥ माशे, सोंठ, मिर्च, पीपल, कपूर, केसर प्रत्येक ३॥ माशे, अम्बर, कस्तूरी प्रत्येक १॥। माशे निर्मल गुलाब में धोकर जवारिस बनावें इसकी मात्रा १४ माशे तक है (सूचना) भोजन में जो खराबी होजाती है उस में विशेषताको उपद्रव निकम्मी दशा के उपद्रव की अपेक्षा बहुत कम हानिकारक है क्यों कि अधिक भोजन का अच्छा भाग शरीरमें पहुंचता है जितने पर आमाशयने अपना काम कियाहोगा यद्यपि बाकीबचा रहै । परन्तुयह निकम्मीदशाविरुद्ध है जो तबियतके समीप रहै और शरीरको कष्ट देती है । और खाने पीनेकी कुरीतियों में एकतो यह है जो गाढ़े भोजन हल्के भोजन से पहले खाये जांय और हलका और श्रेष्ठ भोजन जोकि जल्द पचजाता है बहुत जल्द पचजाय और क्योंकि गाढ़ा उसके नीचे है उतर न सके और उसीजगह ऊपर रहै और बहुत ठहरने से बिगड़ जाय फिर उस गाढ़े को भी निकम्मा करदे क्यों कि जब निकम्मा अच्छे के साथ मिले तो उसको भी बिगाड़देताहै। दूसरे यहहै कि भरे पेटपर भोजन कर लियाजाय उस समय तबियत भोजन के पचाव में आरूढ़ रहतीहै या इसी प्रकार की ऐसी चीज के पीने का काम पड़े कि पचाववाली शक्ति की गर्मी को बुझादें और भोजन और आमाशय के मध्य में अंतर डालदें । तीसरे यह है कि पहले कोई अजीर्ण करने वाली चीज खाय उसके उपरान्त कोई पचाव की चीज खाय और यह पचाव वाली चीज उस अजीर्णवाली से विशेष होकर पचाप से पहले फैलादे और जानलेना चाहिये कि कभी ऐसा होताहै कि यह उपाय असर नहीं करता क्योंकि पह ले वाली चीज विशेष अजीर्ण करनेवाली हो और पचानेवाली चीजकी शक्ति से न टूटे और जबतक कि भोजन का पकाव पूरा न हो पचाव वाली चीजको भी ठहराले और पचाव भी अच्छा हो और अजीर्ण करनेवाली चीजों का भोजन करने के उपरान्त काम पड़े और पचाव को बिगाड़दें और देरमें पचनेवाले भोजनोंके खानेपर बहुत जगना तथा शीघ्र पचनेवाले भोजनों के पीछे बहुत सोना हानिकारकी (लाभ) आमाशय की गरमीभी भोजनके पहुंचनेसे पहले हल्की गर्मी पचाव और सहायता करती है

घिही को भिजो दें फिर औटा कर जब जल जाय तो आध सेर शहद और फन्द मिलाकर दाल चीनी, बंसलोचन, गुलाबकेफूल, पिस्ता के छिल्का मस्तगी, अगर, छोटीइलायची के दाने, पोदीना के पत्ते, जायफल, जा वित्री प्रत्येक १४ माशे, लौंग, बालछड़, नीबूकाछिलका, प्रत्येक १०॥ मा शे, सोंठ, मिर्च, पीपल, कपूर, केसर प्रत्येक ३॥ माशे, अम्बर, कस्तूरी प्रत्येक १॥। माशे निर्मल गुलाब में घोकर जवारिस बनावें इसकी मात्रा १४ माशे तक है (सूचना) भोजन में जो खराबी होजाती है उस में विशेषताका उपद्रव निकम्मी दशा के उपद्रव की अपेक्षा बहुत कम हानिकारक है क्यों कि अधिक भोजन का अच्छा भाग शरीरमें पहुंचता है जितने पर आमाशयने अपना काम कियाहोगा यद्यपि बाकीबेपचा रहै। परन्तुयह निकम्मीदशाविरुद्ध है जो तबियतके समीप रहैं और शरीरको कष्ट देती है। और खाने पीनेकी कुरीतियों में एकतो यह है जो गाढ़े भोजन हल्के भोजन से पहले खाये जांय और हलका और श्रेष्ठ भोजन जोकि जल्द पचजाता है बहुत जल्द पचजाय और क्योंकि गाढ़ा उसके नीचे है उतर न सके और उसीजगह ऊपर रहै और बहुत ठहरने से बिगड़ जाय फिर उस गाढ़े को भी निकम्मा करदे क्यों कि जब निकम्मा अच्छे के साथ मिले तो उसको भी बिगाड़देताहै। दूसरे यहहै कि भरे पेटपर भोजन कर लियाजाय उस समय तबियत भोजन के पचाव में आरूढ़ रहतीहै या इसी प्रकार की ऐसी चीज के पीने का काम पड़े कि पचाववाली शक्ति की गर्मी को बुझादें और भोजन और आमाशय के मध्य में अंतर डालदे। तीसरे यह है कि पहले कोई अजीर्ण करने वाली चीज खाय उसके उपरान्त कोई पचाव की चीज खाय और यह पचाव वाली चीज उस अजीर्णवाली से विशेष होकर पचाव से पहले फैलादे और जानलेना चाहिये कि कभी ऐसा होताहै कि यह पचाव असर नहीं करता क्योंकि पह- ले वाली चीज विशेष अजीर्ण करनेवाली हो और पचानेवाली चीजकी शक्ति से न हटे और जबतक कि भोजन का पकाव पूरा न हो पचाव वाली चीजको भी ठहराले और पचाव भी अच्छा हो और अजीर्ण करनेवाली चीजों का भोजन करने के उपरान्त काम पड़े और पचाव को बिगाड़दे और ऐसेमें पचनवाले भोजनोंके खानेपर बहुत जगना तथा शीघ्र पचनेवाले भोजनों के पीछे बहुत सोना हानिकारकहै (स्नान) आमाशय की गहराईमें भोजनके पहुंचनेसे पहले इसकी गति पचाव और सहायता करती है

पिट्टी को भिजो दें फिर औटा कर जब जल जाय तो आध सेर शहद और कन्द मिलाकर डाल चीनी, बंसलोचन, गुलाबकेफूल, पिस्ता के छिल्का मस्तगी, अगर, छोटीइलायची के दाने, पोदीना के पत्ते, जायफल, जा वित्री प्रत्येक १४ माशे, लौंग, बालछड़, नीबूकाछिलका, प्रत्येक १०॥ मा शे, सोंठ, मिर्च, पीपल, कपूर, केसर प्रत्येक ३॥ माशे, अम्बर, कस्तूरी प्रत्येक १॥। माशे निर्मल गुलाब में धोकर जवारिस बनावें इसकी मात्रा १४ माशे तक है (सूचना) भोजन में जो खराबी होजाती हैं उस में विशेषताका उपद्रव निकम्मी दशा के उपद्रव की अपेक्षा बहुत कम हानिकारक है क्यों कि अधिक भोजन का अच्छा भाग शरीरमें पहुंचता है जितने पर आमाशयने अपना काम कियाहोगा यद्यपि बाकीबेपचा रहै। परन्तुयह निकम्मीदशाविरुद्ध है जो तबियतके समीप नहीं और शरीरको कष्ट देती है। और खाने पीनेकी कुरीतियों में एकतो यह है जो गाढ़े भोजन हल्के भोजन से पहले खाये जांय और हलका और श्रेष्ठ भोजन जोकि जल्द पचजाता है बहुत जल्द पचजाय और क्योंकि गाढ़ा उसके नीचे है उतर न सके और उसीजगह ऊपर रहै और बहुत ठहरने से बिगड़ जाय फिर उस गाढ़े को भी निकम्मा करदे क्यों कि जब निकम्मा अच्छे के साथ मिले तो उसको भी बिगाड़देताहै। दूसरे यहहै कि भरे पेटपर भोजन कर लियाजाय उस समय तबियत भोजन के पचाव में आरूढ़ रहतीहै या इसी प्रकार की ऐसी चीज के पीने का काम पड़े कि पचाववाली शक्ति की गर्मी को बुझादे और भोजन और आमाशय के मध्य में अवर डालदे। तीसरे यह है कि पहले कोई अजीर्ण करने वाली चीज खाय उसके उपरान्त कोई पचाव की चीज खाय और यह पचाववाली चीज उस अजीर्णवाली से विशेष होकर पचाय से पहले फैलादे और जानलेना चाहिये कि कभी ऐसा होताहै कि यह पचाव असर नहीं करता क्योंकि पह- ले वाली चीज विशेष अजीर्ण करनेवाली हो और पचानेवाली चीजकी शक्ति से न हटे और जबतक कि भोजन का पकाव पूरा न हो पचाव वाली चीजको भी ठहराले और पचाव भी अच्छा हो और अजीर्ण करनेवाली चीजों का भोजन करने के उपरान्त काम पड़े और पचाव को बिगाड़दें और ऐसेमें पचनेवाले भोजनोंके खानेपर बहुत जगना तथा शीघ्र पचनेवाले भोजनों के पीछे बहुत सोना हानिकारकहै (स्नान) आमाशय की गहराईमें भोजनके पहुंचनेसे पहले इसकी गति पचाव और सहायता करती है

कि आमाशयमें चार शक्ति हैं एक खींचनेवालीशक्ति दूसरी ठहरनेवाली शक्ति तीसरी पचानेवाली शक्ति, और चौथी दूर करने वाली शक्ति और आमाशयके कार्योंका पूर्ण होना उन शक्तियोंकी आरोग्यता पर निर्भर है जबकि इन शक्तियों में खराबी पैदा होगी तो आमाशय के कार्य कारण के अनुसार कि एक शक्ति में हो या विशेष में और बलवान् हो या निर्बल नष्ट हो जायगी और हर शक्तिकी निर्बलता का चिन्ह उसके इलाजके साथ हम अलग वर्णन करते हैं यद्यपि कुछ वर्णन होचुका है उससे उसका तात्पर्य प्रगट है परन्तु यह मवाद प्रधान है और उससे बहुतसे लाभ प्रगट होते हैं।

ग्रहण शक्ति की निर्बलता का वर्णन।

जानलेना चाहिये कि ग्रहणशक्ति या खींचने वाली शक्तिको सर्दी और तरी निर्बल करती है और गर्मी और खुश्की उसकी सहायता करती है और उसके निर्बल होने का यह चिन्ह है कि भोजन आमाशय के मुखसे देरमें उतरे और छाती में भारीपन मालूम हो और कदाचित् घबराहट और बेचैनी और करवटें बदलना और धड़कन और आंखोंके सामने अंधेरी और घुमेर आना उत्पन्न हो और कभी जी मिचलावे और वमन उत्पन्न हो (इलाज) नीबू का शर्बत मेवाओंका शर्बत, सेवका शर्बत, चंदनका शर्बत, विहीकी शराब, तथा मुलायम और हल्के जल्द पचने वाले भोजन जैसे मुर्ग बटेर और चकोरका मांस और उसके समान दालचीनी, केसर और जीरे आदिसे सुगन्धित करके दे जिससे ग्रहणशक्ति बलवान् होजाय और खानेके पीछे धीरे २ परिश्रम करना दाहिनी करवटसे लेटना और हाथ पांवका मलना भोजनको आमाशयके मुखसे नीचे उतरनेपर सहायता करताहै और जो चीज आमाशयकी दवाओंको तोड़डाले वह भी लाभदायक होगी। किताब अकसीरआजममें लिखाहै कि कभी २ खींचने वाली शक्तिकी निर्बलता सर्दी और तरीसे उत्पन्न होतीहै तब योग्य है कि गर्म और खुश्क जवारिशें जैसे जवारिश कम्मूनी, जवारिश मस्तगी और जवारिश फलाफली आदि देवें और गुलाबकी गुलकन्द, शर्बतकन्द, जवारिश, सोंठका मुरब्बा और ऐसीही दवाएँ खावें और मस्तगी रूमी, सौंफ, अनसून के बीज पानी में औटाकर छानकर मिश्री मिलाकर पीवें और जो कुछ गर्म और खुश्क हो ऐसे होवें और भीतर का भुना मांस खावें और जन्दबेदस्तर (एक मगर कुत्ता का तेल) और नारदीन (रूमी बालछड़ का तेल) आमाशय पर मलें और यह मामूल कलाकन्द हिन्दी के नाम से प्रसिद्ध है इस विषय में अधिक गुणकारी

कि आमाशयमें चार शक्ति हैं एक खींचनेवालीशक्ति दूसरी ठहरनेवाली शक्ति तीसरी पचानेवाली शक्ति, और चौथी दूर करने वाली शक्ति और आमाशयके कार्योंका पूर्ण होना उन शक्तियोंकी आरोग्यता पर निर्भर है जबकि इन शक्तियों में खराबी पैदा होगी तो आमाशय के कार्य कारण के अनुसार कि एक शक्ति में हो या विशेष में और बलवान् हो या निर्बल नष्ट हो जायगी और हर शक्तिकी निर्बलता का चिन्ह उसके इलाजके साथ हम अलग वर्णन करते हैं यद्यपि कुछ वर्णन होचुका है उससे उसका तात्पर्य प्रगट है परन्तु यह प्रवाद प्रधान है और उससे बहुतसे लाभ प्रगट होते हैं।

ग्रहण शक्ति की निर्बलता का वर्णन।

जानलेना चाहिये कि ग्रहणशक्ति या खींचने वाली शक्तिको सर्दी और तरी निर्बल करती है और गर्मी और खुश्की उसकी सहायता करती है और उसके निर्बल होने का यह चिन्ह है कि भोजन आमाशय के मुखसे देरमें उतरे और छाती में भारीपन मालूम हो और कदाचित् घबराहट और बेचैनी और करवटें बदलना और धड़कन और आंखोंके सामने अंधेरी और घुमेर आना उत्पन्न हो और कभी जी मिचलावे और वमन उत्पन्न हो (इलाज) नीबू का शर्बत मेवाओंका शर्बत, सेवका शर्बत, चंदनका शर्बत, विहीकी शराब, तथा सुल्तान और हल्के जल्द पचने वाले भोजन जैसे मुर्ग बटेर और चकोरका मांस और उसके समान दालचीनी, केसर और जीरे आदिसे सुगन्धित करके दे जिससे ग्रहणशक्ति बलवान् होजाय और खानेके पीछे धीरे २ परिश्रम करना दाहिनी करवटसे लेटना और हाथ पांवका मलना भोजनको आमाशयके मुखसे नीचे उतरनेपर सहायता करताहै और जो चीज आमाशयकी हवाओंको तोड़दाले वह भी लाभदायक होगी। किताब अक्सीरआजममें लिखाहै कि कभी २ खींचने वालीशक्तिकी निर्बलता सर्दी और तरीसे उत्पन्न होजाहै तब योग्य है कि गर्म और खुश्क जवारिशें जैसे जवारिश कम्मूनी, जवारिश मस्तगी और जवारिश [illegible] आदि देवै और गुलाबकी टिकिया, शर्बतऊद, जवारिश, सोंठका मुरब्बा और ऐसीही दवाएं खांय और मस्तगी रूमी, सौंफ, अजमोद के बीज पानी में औटाकर छानकर मिश्री मिलाकर पीवें और जो कुछ गर्म और खुश्क हो जैसे मुर्ग और तीतर का भुना मांस खांय और [illegible] (एक प्रकार का तेल) और नारदैन (रूमी [illegible] का तेल) आमाशय पर मलें और यह मासूम कलाहका हिन्दी के नाम से प्रसिद्ध है इस विषय में अधिक का

जो आमाशय के मुख में आगई है या आमाशय का अंग निर्बल होगया है दूसरे यह है कि जो भोजन खाये वह जल्द आमाशय से आँतों में उतर आवे और आमाशय के मुख में तरी के होने का यह चिन्ह है कि यद्यपि भोजन कम करें। यदि यह भय हो कि चलने फिरने से भोजन उलट जायगा और आमाशयके निर्बल होनेका यह चिन्हहै कि जबतक भोजन से न भरजाय तबतक यह दशा नहो और गर्म मवादका और मलरहित गर्म दुष्टप्रकृतिका चिन्ह पहले अध्यायमें वर्णन कियागयाहै और घाव और फुन्सियोंका चिन्हभी वर्णन किया जायगा(इलाज)जो रोगका कारण गर्म मवाद होतो पहले उसको धीरे२आमाशय से निकाले पीछे विही का रुब्ब, सेवका रुब्ब और नीबूका शर्बत काम में लावें और जौ का घाट बाजरे के साथ रांधकरदें और जो बहुत समय व्यतीत होजाय तो गौ की छाछ लोहे से बुझाकर दें या बंशलोचन, गुलाब के फूल, और अनारके फूल, कुर्त (एक घास जिसको कल्कोरसैन भी कहते हैं) तरासीस, और कहरवा पीसकर उसमें से १ाा माशे २२ाा माशे छाछ में डालकर दें और भोजन चांवल और छिला बाजरा, ममूर और कच्चे अंगूर का पानी अनार के पानी से खट्टा करें और आमाशय परचंदन, बंशलोचन अनार के फूल, गुलाब के फूल, मादे के पत्ता, विही के छिलके सेवके छिल्का का लेप करें और जो गर्म दुष्ट प्रकृति बेमवाद हो तो मवादके निकालने की आवश्यकता नहीं और शेष यही उपाय है जो रोग का कारण फिसलने वाली तरी हो तो पहले मवाद को वमन के द्वारा निकालें या पारज फ़यकरा से दस्तों को निकालें और मवाद के निकलने के पीछे जवारिश जौनीदें और शर्बत मोर्द, विही की शराब और इतरीफल सगीर योग्य है और सुक, कच्ची अगर अनार के फूल और लौंग आदि का आमाशय पर लेप करें और मुलायम, हलके तथा सुगन्धित भोजन खांय जैसे चकोर, बत्तख, तीतर, बटेर, चिड़िया और खरगोश का मांस भूनकर और काला शाह सफेद जीरा, और अजमायन आदि से सुगन्धित करके खाय (जवारिश जौजी के बनाने की विधि) काबली हरड़, काली हरड़ लेकर कूटें और गौ के घी में भून लें फिर यह भुनी हुई हरड़ ३५ माशे लेकर और हुब्बुलग़ार (अर्थात् हाऊन) भुना हुआ १ाा माशे, अजमायन, मारूर मस्तंग १ाा माशे, मोरे का फल सिर में भुना हुआ ३ाा माशे, इन दवाओं को मसालेह के सिवाय कूट लें और शहद में मिलालें इसकी मात्रा १ाा माशे है।

जो आमाशय के मुख में आगई है या आमाशय का अंग निर्बल होगया है दूसरे यह है कि जो भोजन खाये वह जल्द आमाशय से आंतों में उतर आवे और आमाशय के मुख में तरी के होने का यह चिन्ह है कि यद्यपि भोजन कम करें। यदि यह भय हो कि चलने फिरने से भोजन उलट जायगा और आमाशयके निर्बल होनेका यह चिन्हहै कि जबतक भोजन से न भरजाय तबतक यह दशा नहो और गर्म मवादका और मलरहित गर्म दुष्टप्रकृतिका चिन्ह पहले अध्यायमें वर्णन कियागयाहै और घाव और फुन्सियोंका चिन्हभी वर्णन किया जायगा(इलाज)जो रोगका कारण गर्म मवाद होतो पहले उसको धीरे२आमाशय से निकाले पीछे बिही का रुब्ब, सेवका रुब्ब और नींबूका शर्बत काम में लावें और जौ का घाट बाजरे के साथ रांधकरदें और जो बहुत समय व्यतीत होजाय तो गौ की छाछ लोहे से बुझाकर दें या वंशलोचन, गुलाब के फूल, और अनारके फूल, कुर्त (एक घास जिसको फल्कोरसेन भी कहते हैं) तरासीस, और कहरवा पीसकर उसमें से १७॥ माशे २२७॥ माशे छाछ में डालकर दें और भोजन चांवल और छिला बाजरा, मसूर और कच्चे अंगूर का पानी अनार के पानी से खट्टा करें और आमाशय परचन्दन, वंशलोचन अनार के फूल, गुलाब के फूल, मार्द के पत्ता, बिही के छिलके सेवके छिल्का का लेप करें और जो गर्म दुष्ट प्रकृति बेमवाद हो तो मवादके निकालने की आवश्यकता नहीं और शेष यही उपाय है जो रोग का कारण फिसलने वाली तरी हो तो पहले मवाद को वमन के द्वारा निकालें या यारज फयकरा से दस्तों को निकालें और मवाद के निकलने के पीछे जवारिशें औनीदें और शर्बत मोर्द, बिही की शराब और इतरीफल सगीर योग्य हैं और सुक, कच्ची अगर अनार के फूल और लौंग आदि का आमाशय पर लेप करें और मुलायम, हलके तथा सुगन्धित भोजन खायें जैसे चकोर, बया, तीतर, बटेर, चिड़िया और खरगोश का मांस भूनकर और कालादाना सफेद जीरा, और अजवाइन आदि से सुगन्धित करके खायें (जवारिश जो जी के बनाने की विधि) काबली हरड़, काली हरड़ लेकर कूटें और गौ के घी में भून लें फिर यह भुनी हुई हरड़ ३५ माशे लेकर और हब्बुलग़ार (अर्थात् हाऊबेर) भुना हुआ १७॥ माशे, अजवाइन, मालर मस्तंगी १७॥ माशे, मोटे पा मेर्द [illegible] में भुना हुआ २॥ माशे, सब दवाओं को बारीक करके मिलाय कूट लें और सब का ग्रद में मिलावें इसकी मात्रा १७॥ माशे है।

ठंडी दुष्प्रकृति हानिकरती है परन्तु खुश्क दुष्प्रकृति बहुत बुरी होती है इसमें पिघलने की नौबत पहुंच जाती है और तर दुष्प्रकृतिसे जलन्धर भी होजाता है और जो भोजन नहीं पचताहै उसमें दो बातें अवश्य होती हैं एक तो यह कि वैसे ही अपनी दशापर रहै और बिना पचे निकलै आवै और शरीर को उससे कुछ लाभ न पहुंचे तथा दुबला और निर्बल होजाय या उसकी दशामें थोडासा अन्तर पडनेसे बिगडजाय और शरीर को उसमें से भोजन न मिले सो यह न्यूनता दूसरे पचावमें या तीसरे या चौथे में उत्पन्न होती बुरे२ राग उत्पन्न होंगे जैसे सफेद दाग, सीप, बडी सूजन, जलन्धर और हड्डीपर मांस का कम उत्पन्न होना और खुजली, नमला, आतशक आदि और पचावकी निर्बलता का चिन्ह उसके कारण और इलाजके वर्णनके साथ वर्णन किये गयेहैं जानलेना चाहिये कि बाई करवट लेटना आमाशय को गर्म करता है क्योंकि जिगर आमाशयपर आ मिलता है और दाहिनी करवट लेटना आमाशय को जल्द खाली करता है क्योंकि आमाशय की सूरत ऐसी है कि जब उसमें कैलूस पूरा हो चुके तो उसमेंसे रक्त मासारीका (यह बारीक रगें जो आंतों और आमाशयसे मिलीहुई हैं) के मार्गों से जिगरमें आजाय और जो दवा कि पचाव की पुष्टताके लिये मुख्यहै मुख्यतर जो ठंडी प्रकृति हो वह यह है इत रीफल सगीर और कबीर, जवारिशऊद, सगीरानियाँ, पुरानी शराबमें या शहदके पानीमें मिलाकर देना और आमाशयपर गर्म लेप रखना लाभदायक है और गर्म और जल्दी पचनेवाले भोजन देना चाहिये और जो प्रकृति गर्म हो तो बिही की शराब और बिही सिकंजबीन और खट्टे अनार का शर्बत देना चाहिये (लाभ) ईसीम नालीनूस इसबात को निर्णय करताहै कि बिही की बनी सिकंजबीन जिसमें कुछ थोडीसी सोंठ पीसकर मिलावे तो उस आमाशयके सब रोगों को जो विशेष गर्म नहो लाभदायकहै और उसका प्रमाण यहहै कि एक सेर सिकंजबीनमें है३॥ माशे सोंठ मिलावै ॥

निस्सारक शक्ति की निर्बलता का वर्णन ।

जानलेना चाहिये कि दूर करनेवाली शक्ति को तरी खिंचाहुआ सर्दी कम देती है और बहुधा ऐसा होताहै कि भोजन आरोग्य आमाशयमें १२ घंटे में १५ घंटेतक रहताहै और दूर करनवाली शक्ति की निर्बलता का चिन्ह यह है कि आमाशय में भोजन देरतक रहे और भोजन की गन्ध डकार में मालूमहो क्योंकि जबतक आमाशयमें भोजन होताहै तो डकारमें उसकी गंध

ठंडी दुष्प्रकृति हानिकरती है परन्तु खुश्क दुष्प्रकृति बहुत बुरी होती है इसमें पिघलने की नौबत पहुंच जाती है और तर दुष्प्रकृतिसे जलन्धर भी होजाता है और जो भोजन नहीं पचताहै उसमें दो बातें अवश्य होती हैं एक तो यह कि वैसे ही अपनी दशापर रहे और बिना पचे निकल आवे और शरीर को उससे कुछ लाभ न पहुंचे तथा दुबला और निर्बल होजाय या उसकी दशामें थोडासा अन्तर पडनेसे बिगडजाय और शरीर को उसमें से भोजन न मिले तो यह न्यूनता दूसरे पचावमें या तीसरे या चौथे में उत्पन्न हो तो बुरे २ रोग उत्पन्न होंगे जैसे सफेद दाग, सीप, बडी सूजन, जलन्धर और हड्डीपर मांस का कम उत्पन्न होना और खुजली, नमला, आतशक आदि और पचावकी निर्बलता का चिन्ह उसके कारण और इलाजके वर्णनके साथ वर्णन किये गयेहैं जानलेना चाहिये कि बाईं करवट लेटना आमाशय को गर्म करता है क्योंकि जिगर आमाशयपर आ मिलता है और दाहिनी करवट लेटना आमाशय को जल्द खाली करता है क्योंकि आमाशय की सूरत ऐसी है कि जब उसमें कैलूस पूरा हो चुके तो उसमेंसे सत्त मासारीका (यह बारीक रगें जो आंतों और आमाशयसे मिलीहुई हैं) के मार्गों से जिगरमें आजाय और जो दवा कि पचाव की पुष्टताके लिये मुख्यहैं मुफ्रपर जो ठंडी प्रकृति हो वह यह है इत रीफल सगीर और कबीर, जवारिशऊद, सगीरानियां, पुरानी शराबमें या अदरक के पानीमें मिलाकर देना और आमाशयपर गर्म लेप रखना लाभदायक है और गर्म और जल्दी पचावबाले भोजन देना चाहिये और जो प्रकृति गर्म हो तो बिही की शराब और बिही सिकंजबीन और खट्टे अनार का शर्बत देना चाहिये (लाभ) हकीम जालीनूस इसबात को निर्णय करताहै कि बिही की यनी सिकंजबीन जिसमें कुछ थोडीसी सोंठ पीसकर मिलावे तो उस आमाशयके सब रोगों को जो विशेष गर्म नहो लाभदायकहै और उसका प्रमाण यहहै कि एक सेर सिकंजबीनमें ३॥ मासे सोंठ मिलावे ॥

निस्सारक शक्ति की निर्बलता का वर्णन ।

जानलेना चाहिये कि दूर करनेवाली शक्ति की गरी खिंचेहुए सर्दी कम देती है और बहुधा ऐसा होताहै कि भोजन आरोग्य आमाशयमें १२ घंटे से १८ घंटेतक रहताहै और दूर करनेवाली शक्ति की निर्बलता का चिन्ह यह है कि आमाशय में भोजन देरतक रहे और भोजन की गन्ध डकार में मालूमहो क्योंकि जबतक आमाशयमें भोजन होगाहै तो डकारमें उसकी गंध

ठंडी दुष्टप्रकृति हानिकरती है परन्तु सुदके दु
पिघलने की नौबत पहुंच जाती है और तर
है और जो भोजन नहीं पचताहै उसमें दो
कि वैसे ही अपनी दशापर रहै और बिना
उससे कुछ लाभ न पहुचे तथा दुबला और
थोडासा अन्तर पडनेसे बिगडजाय और
सो यह न्यूनता दूसरे पचावमें या तीसरे
उत्पन्न होंगे जैसे सफेद दाग, सीप, बह
का कम उत्पन्न होना और खुजली, न
निर्बलता का चिन्ह उसके कारण
गयेहैं जानलेना चाहिये कि बाईं करवट
क्योंकि जिगर आमाशयपर आ मिलत
को जल्द खाली करता है क्योंकि भा
कैलूस पूरा हो चुके तो उसमेंसे सब
और आमाशयसे मिलीहुई है) के मा
पचाव की पुष्टताके लिये शुरूपहै ह
रैफल सगीर और कबीर, जवारि
शहदके पानीमें मिलाकर देना और
है और गर्म और जल्दी पचा
हो तो बिही की शराब और बिही
देना चाहिये (लाभ) हकीम न
की बनी सिकंजबीन जिसमें कुछ
माशयके सर्द रोगों को जो बि
यहहै कि एक सेर सिकंजबीनमें

निस्सारक ॥

जानलेना चाहिये कि दू
देती है और बहुधा ऐसा
१५ घन्टेतक रहताहै और दू
यह है कि आमाशय में
में मालूमहो क्योंकि जबतक

मिलाकर निरन्न मुख पिलाना परीक्षा किया हुआ है और थोड़ीसी कस्तूरी विही की शराब या मुरब्बों में मिलाकर खाना और मयसौसन (वह शराब जिसमें सौसन गुलाब सहित औटाई गई हो) या गुलाब या अर्धीरा या पानी जिसमें मस्तगी और लादन मिलालिया हो आमाशय पर मलना लाभदायक है ।

चौथा प्रकरण

विशूचिका का वर्णन ।

यह निकम्मे अपक मवाद की गति होती है जो शरीरसे अधिकता के साथ पलट आता है और दूर करने वाली शक्तिकी विशेषता से वमन और दस्तों के द्वारा निकलता है और कभी वमन नहीं आती और सब मवाद अतड़ियों की तरफ़ जाता है और दस्तों में निकलता है परन्तु जीमिचलाना कभी बन्द नहीं होता और विशूचिका तेज रोगों में से और भयानक है और बहुधा ऐसा होता है कि दस्तों में इतनी अधिकता हो कि नाड़ी गिरजाय और रोग की अधिकता इतनी बढ़जाय कि जो कुछ रोगी को दें वही बहुत शीघ्र वमन के द्वारा डाल दे और प्यास की अधिकता हो बांयटे आने लगे और अंग ठंडे होजांय और इन कामों के सिवाय जो अच्छा उपाय किया जाय तो आरोग्य होजाय सो जो हकीम कि इस का इलाज करे वह इलाज का परीक्षक चतुर और बहुत बुद्धिवान होना चाहिये जिस से रोग की अधिकता से न डरे और इलाज ध्यानपूर्वक करे यद्यपि नाड़ी निर्बल होजाय और वमन तथा बांयटेभी आवैं परन्तु जबतक चहरे का रंग अपनी असली दशा पर हो और श्वास की गति ठीक २ होतो न डरे और इलाज से न रुके । जान लेना चाहिये कि हैजा (विशूचिका) बहुधा बहुत खानेसे होता है परन्तु लड़कों को बहुत आरोग्य होता है और जब जवानों और बूढ़ों को उत्पन्न होता है तो शोचनीय है मुख्य कर जो रोगी पच्चास साल और कड़े मांस वाला हो (लाभ) कोई ऐसे होतेहैं कि उनको हैजा बहुधा उत्पन्न हो और उस से लाभ पावें और उन के शरीर बुरे दोषों से साफ़ हो जांय और कोई ऐसे होते हैं कि उन में इस बात का बल ही नहीं होता और हैजे की आदत नहीं होती उन लोगों का एक साथ उत्पन्न होना भयानक है और यह हैजे का रोग गर्मी की ऋतु में बहुधा उत्पन्न होता है और जिन महीनोंमें गर्मी की अधिकता होती है उसमें विशेष होता है और जाड़ों में कभी

मिलाकर निरन्न दूध पिलाना परीक्षा किया हुआ है और थोड़ीसी कस्तूरी बिही की शराब या मुरब्बों में मिलाकर खाना और मयसौसन (वह शराब जिसमें सौसन गुलाब सहित औटाई गई हो) या गुलाब या अधीरा या पानी जिसमें मस्तगी और लादन मिलालिया हो आमाशय पर मलना लाभदायक है ।

चौथा प्रकरण

विशूचिका का वर्णन ।

यह निकम्मे अपक्व मवाद की गति होती है जो शरीरसे अधिकता के साथ पलट आता है और दूर करने वाली शक्तिकी विशेषता से वमन और दस्तों के द्वारा निकलता है और कभी वमन नहीं आती और सब मवाद अंतड़ियों की तरफ़ जाता है और दस्तों में निकलता है परन्तु जीमिचलाना कभी बन्द नहीं होता और विशूचिका तेज रोगों में से और भयानक है और बहुधा ऐसा होता है कि दस्तों में इतनी अधिकता हो कि नाड़ी गिरजाय और रोग की अधिकता इतनी बढ़जाय कि जो कुछ रोगी को दें वही बहुत शीघ्र वमन के द्वारा डाल दे और प्यास की अधिकता हो वांयटे आने लगें और अंग ठंडे होजांय और इन कामों के सिवाय जो अच्छा उपाय किया जाय तो आरोग्य होजाय सो जो हकीम कि इस का इलाज करे वह इलाज का परीक्षक चतुर और बहुत बुद्धिवान होना चाहिये जिस से रोग की अधिकता से न डरे और इलाज ध्यानपूर्वक करे यद्यपि नाड़ी निर्बल होजाय और वमन तथा वांयटेभी आनेहों परन्तु जबतक चहरे का रंग अपनी असली दशा पर हो और श्वास की गति ठीक २ होतो न डरे और इलाज से न रुके । जान लेना चाहिये कि हैजा (विशूचिका) बहुधा बहुत खानेसे होता है परन्तु लड़कों को बहुत आरोग्य होता है और जब जवानों और बूढ़ों को उत्पन्न होता है सो सोचनीय है मुख्य कर जो रोगी कम्पाल रोग और कड़े मांस वाला हो (लाग) कोई ऐसे होतेहैं कि उनको हैजा बहुधा उत्पन्न हो और उस से लाभ पावें और उन के शरीर बुरे दोषों से साफ़ हो जांय और कोई ऐसे होते हैं कि उन में इस बात का बल ही नहीं होता और हैजे की आदत नहीं होती उन लोगों का एक साथ उत्पन्न होना भयानक है और यह हैजे का रोग गर्मी की ऋतु में बहुधा उत्पन्न होता है और जिन महीनोंमें गर्मी की अधिकता होती है उसमें विशेष होता है और जाड़ों में कभी

हुआ मवाद जो शरीर में और रगों में इकट्ठा हो गया है वह धीरे २ पलटकर निकलता है और अच्छा मवाद जो मौजूद है तो खाली होने के कारण से वह भी निकलता है और इसके कई चिन्ह हैं एक तो यह है कि आमाशय में कठोरता उत्पन्न हो और कदाचित् समीप होने के कारण से उसका असर दिल में पहुचे और दिल में भी कठोरता उत्पन्न हो। दूसरे यह कि फुरहरी का कष्ट हो। तीसरे यह है कि अधिक प्यास हो और पानी पीने से संतुष्ट न हो। चौथे यह है कि वमनमें कड़वा पित्त निकाले और कभी उक्त चिन्ह मवाद के बिगड़जाने और बुराई के अनुसार बढ़जाते हैं और आमाशय और आतों में दर्द उत्पन्न हो और दर्दकी अधिकता से घबराहटहो और इधर उधर विशेष करवटें बदले और नाक पतली होजाय और हाथ पांव ठंडे होजांय और कभी यह चिन्ह बहुत बढ़जाते हैं यहां तक कि अचेतता होजाती है और नाड़ी धीमी होकर गिरजाती है और कदाचित रोगी मरभीजाताहै। किताबका मिलुस्सनाआ के बनाने वाले ने लिखा है कि जब हैजा उत्पन्न हो तो योग्यहै कि जबतक शक्ति रहे और मरने का भय नहो वमन और दस्तों के बंदकरने की तरफ आरम्भ नहो किंतु उचित यहहै कि तबियत की सहायताकरे जिससे आमाशय निकम्मे बेपचेहुए मवादके कोठों से बिलकुल स्वच्छ होजाय और अच्छी तरहसे मवाद निकलनेलगे फिर जब देखें कि दस्तोंकी अधिकताहै और निर्बलता होगई है तो शर्बत अनार पोदीना गिराहुआ, खट्टे अनार का पानी बिही का पानी, या सेव का शर्बत, या बिही का शर्बत और अधौरा का शर्बत बिहीके पानीमें मिलाकरदें और पिस्ता के छिलका सेवके शर्बतके साथ काम दायकहै और कभी याकूत पिसकर गुलाबके साथ काम में लावे इलाज में बहुत परिश्रमकरें जिससे निकम्मा मवाद जितना बाकीहै निकलजाय और इसी तरह होताहै कि बहुतसा गर्म पानीदें जिससे खुलकर वमन आजाय और आमाशय को निकम्मे भोजनसे पवित्र करदे और सिकंजबीन को गर्म पानीमें मिलाकें कि उसके निकालनेमें सहायता करती है लेकिन गुलाब और बादका पानी न देना चाहियें इसके दो कारणहैं एक तो यह है कि ये दोनों गर्म आमाशयमें बिगड़ जातेहैं और पित्त बनजातेहैं दूसरे यहहै कि दोनों पथ्य का काम देते हैं। हैजेवाले को जो प्यास कि भोजन की बहार की है वहां देखने चाहिये कि हैजे का पूरा उपाय भोजन का बन्दकरनाहै परन्तु जब कि विशेष निर्बलता होजाय और शेष भी काम में न आवे इसलिये कि आमाशय को निर्बलकरताहै और

हुआ मवाद जो शरीर में और रगों में इकट्ठा हो गया है वह धीरे २ पलटकर निकलता है और अच्छा मवाद जो मौजूद है तो खाली होने के कारण से वह भी निकलता है और इसके कई चिन्ह हैं एक तो यह है कि आमाशय में कठोरता उत्पन्न हो और कदाचित् समीप होने के कारण से उसका असर दिल में पहुंचे और दिल में भी कठोरता उत्पन्न हो। दूसरे यह कि फुरहुरी का कष्ट हो। तीसरे यह है कि अधिक प्यास हो और पानी पीने से संतुष्ट न हो। चौथे यह है कि वमनमें कड़वा पित्त निकाले और कभी उक्त चिन्ह मवाद के बिगड़जाने और बुराई के अनुसार बढ़जाते हैं और आमाशय और आंतों में दर्द उत्पन्न हो और दर्दकी अधिकता से घबराहटहो और इधर उधर विक्षेप करवटें बदले और नाक पतली होजाय और हाथ पांव ठंडे होजांय और कभी यह चिन्ह बहुत बढ़जाते हैं यहां तक कि अचेतता होजाती है और नाड़ी धीमी होकर गिरजाती है और कदाचित रोगी मरभीजाताहै। किताबका मिलुस्सनाआ के बनाने वाले ने लिखा है कि जब हैजा उत्पन्न हो तो योग्यहै कि जबतक शक्ति रहे और मरने का भय नहो वमन और दस्तों के बन्दकरने की तरफ आरम्भ नहो किंतु उचित यहहै कि तबियत की सहायताकरै जिससे आमाशय निकम्मे बेपचेहुए मवादके फोकों से बिलकुल स्वच्छ होजाय और अच्छी तरहसे मवाद निकलनेलगै फिर जब देखें कि दस्तोंकी अधिकताहै और निर्बलता होगई है तो शर्बत अनार पोदीना गिराहुआ, खट्टे अनार का पानी बिही का पानी, या सेब का शर्बत, या बिही का शर्बत और अंबीरा का शर्बत बिहीके पानीमें मिलाकरदें और पिस्ता के छिल्का सेवके शर्बतके साथ काम लायकरैं और कभी काफूर पिसकर गुलाबके साथ काम में लावें इलाज में बहुत परिश्रमकरैं जिससे निकम्मा मवाद जितना बाकीहै निकलजाय और इसी तरह होताहै कि बहुतसा गर्म पानीदें जिससे खुलकर वमन आजाय और आमाशय को निकम्मे भोजनसे पवित्र करदें और सिकंजबीन को गर्म पानीमें मिलावें कि उसके निकालनेमें सहायता करती है लेकिन गुलाब और शहदका पानी न देना चाहियें इसके दो कारणहैं एक तो यह है कि ये दोनों गर्म आमाशयमें बिगड़ जातेहैं और पित्त बनजातेहैं दूसरे यहहै कि दोनों पथ्य का काम देते हैं। रोगवाले को जो भास कि भोजन की मकार की है नहीं देखरनो क्योंकि हैजे का पूरा इलाज भोजन का बन्दकरनाहै परन्तु जब कि बिलकुल निर्बलता होजाय और हेज भी काम में न लावे इसलिये कि आमाशयको निर्बल करताहै और

ता उत्पन्न हो और अचेत होजाय तो उसके अजले, सिर, कान और नाककी मालिश करें और कनपटी के बालों को खीचें और मांस का पानी शराब और कस्तूरी गले में टपकावें और जो हाथ पांव में बांयटे आने प्रगट हो तो तेल गर्म करके एक कपडा उसमें चिपना करें और आमाशय तथा अन्य जोडों पर रक्खें और बनफशा के तेल और साफ मोम से तेल बनावें और खितमी महीन पीसकर उस मोम के तेल में मिलावें और पुरानी रुई भिगो कर निचोडदें और यह मोम का तेल आमाशय पर मलें और गर्दन के पीछे जहां अग की मछलियों के उत्पन्न होने की जगह है और दूसरे अगकी मछलियों पर रक्खें (सूचना) हैजा चाहे किसी कारण से हो हैजे वालों को किसी तरह की गति करना चाहिये और कोई चीज जो भोजन के समान हो न खानी चाहिये परन्तु जब आवश्यकता पडे और सोना चाहें क्योंकि हैजे के रोग में कोई इलाज सोने और न खाने के समान नहीं और जो नींद न आवे तो लेटे रहना चाहियें जिससे दोष ठहरे रहें और कदाचित् नींद भी आजाय और जिस कारण से कि नींद आवे उसको काम में लावें सूंघने से या लेप से या पीने से और जब हैजे से आरोग्यता हो तो उसके पीछे जबतक शक्ति आवे भोजन बहुत थोडे, बहुत हलके और योग्य खाने चाहिये। किताब अकसीर आजमके बनानेवाले ने हकीम अजल खां की बनाई किताबों में से लिखा है कि हैजे में बेहोसी और हाथ पांव ठंडे होने का कारण यह होता है कि भाप के परमाणु और निकम्मे पदार्थ दिलकी तरफ जाते हैं और फिर आत्मा सब शरीर से सिमट कर दिलकी तरफ के दूर करने के लिये चली जाती है इससे बेहोशी उत्पन्न होती है और मुखका रंग हरा और शरीर का रंगजर्द काला होजाता है चाहिये कि पांवपर चारे लगावें और सुगंधित चीजें सुघावें। किताब खुला सतुल हिकमत का लिखनेवाला कहता है कि जो हैजे में बेहोशी उत्पन्न हो और दांत ऐसे भिचजाय कि गुलाब या कोई और दूसरी चीज उसके गलेमें न डालसके तो उचित है कि बासलीक या अकहलकी फस्द खोलें इनमें से जो रग दिखाईदेती हो और थोडा खून निकालें और जब चेतमें आवे तो तुरंत में दस्तदें और विशेष खून न निकालें और किताब खुलासतुल इलाजके लिखने वालेने लिखा है कि इस बेहोशीके लिये जो बहुधा हैजेमें उत्पन्न होती है एक लोहेके टुकडे को आगमें लाल करके आतुरे पर छिडक दूरसे और

ता उत्पन्न हो और अचेत होजाय तो उसके अजले, सिर, कान और नाकको मालिश करें और कनपटी के बालों को खींचें और मांस का पानी शराब और कस्तूरी गले में टपकावें और जो हाथ पांव में बांयटे आने प्रगट हो तो तेल गर्म करके एक कपड़ा उसमें चिपना करें और आमाशय तथा अन्य जोड़ों पर रक्खें और बनफ्शा के तेल और साफ मोम से तेल बनावें और खितमी महीन पीसकर उस मोम के तेल में मिलावें और पुरानी रुई भिगो कर निचोड़दें और यह मोम का तेल आमाशय पर मलें और गर्दन के पीछे जहां अंग की मछलियों के उत्पन्न होने की जगह है और दूसरे अंगकी मछलियों पर रक्खें (सूचना) हैजा चाहे किसी कारण से हो हैजे वालों को किसी तरह की गति करना चाहिये और कोई चीज जो भोजन के समान हो न खानी चाहिये परन्तु जब आवश्यकता पड़े और सोना चाहे क्योंकि हैजे के रोग में कोई इलाज सोने और न खाने के समान नहीं और जो नींद न आवे तो लेटे रहना चाहिये जिससे दोष ठहरे रहें और कदाचित् नींद भी आजाय और जिस कारण से कि नींद आवे उसको काम में लावें सूंघने से या लेप से या पीने से और जब हैजे से आरोग्यता हो तो उसके पीछे जबतक शक्ति आवे भोजन बहुत थोड़े, बहुत हलके और योग्य खाने चाहिये । किताब अक्सीर आजमके बनानेवाले ने हकीम अजल खां की बनाई किताबों में से लिखा है कि हैजे में बेहोशी और हाथ पांव ठंडे होने का कारण यह होता है कि भाप के परमाणु और निकम्मे मवाद दिलकी तरफ जाते हैं और फिर आत्मा सब शरीर से सिमट कर दिलकी तरफ के दूर करने के लिये चली जाती है इससे बेहोशी उत्पन्न होती है और मुखका रंग हरा और शरीर का रंगजर्द काला होजाता है चाहिये कि पांवपर चारे लगावें और सुगंधित चीजें सुंघावें । किताब खुलासतुल हिकमत का लिखनेवाला कहता है कि जो हैजे में बेहोशी उत्पन्न हो और दांत ऐसे भिचजांय कि गुलाब या कोई और दूसरी चीज उसके गलेमें न डालसकें तो उचित है कि बासलीक या अकहलकी फस्द खोलें इनमें से जो रग दिखाईदेती हो और थोड़ा खून निकालें और जब चेतमें आवे तो तुरंत में टकदें और विशेष खून न निकालें और किताब तुहफतुल इलाजके लिखने वालेने लिखा है कि उस बेहोशीके लिये जो बहुधा हैजेमें उत्पन्न होती है एक लोहेके टुकडे को आगमें लाल करके गायके दूध विशेष डालकर और

जो उसमें कोई ऐसी दशा आजाय कि अंग उसको भोजन के लिये न ग्रहण करे अवश्य उसको तबियत प्रत्येक ओर से निकालती है और हैजा उत्पन्न होता है और इसमें तथा पहिले दोनों भेदों में यह अन्तर है कि उनमें भी निकम्मे भोजन को निकालना प्रकृति पर निर्भर है जब तक वे आमाशय में हैं और उसके संयोग से शरीर के निकम्मे या अच्छे दोष भी निकलें। परंतु इस तीसरे भेद के विरुद्ध है कि उसमें मवाद का पलटना उस निकम्मे भोजन के निकालने का आधीन नहीं जिसको आमाशय निकालता है किन्तु तबियत मुख्य कर उन दोषों के निकालने में परिश्रम करती है जो शरीर के चारों ओर रगों में है और इसका चिन्ह तीन प्रकार पर है एक तो यह है कि हैजे के होने से कई दिन पहिले अजीर्ण का काम पड़ा हो और पेट में बहुत सी बादी इकट्ठी हो क्योंकि पहिले जब तक भोजन आमाशय में न बिगड़ जायगा उससे निकम्मे दोष उत्पन्न न होंगे। दूसरे यह कि जब हैजा आरम्भ हो तो टूंडी में दर्द और मरोड़ा उत्पन्न हो और यह कार्य बहुधा ऐसा होता है कि पूरा नहीं होता। तीसरे यह है कि दस्त विशेष हों और वमन बहुत कम और कभी होती भी नहीं है और वमन का न होना जब होगा कि गाढ़ा मवाद नीचे बैठ जाय निस्सन्देह इस जगह दस्त वमन से विशेष होता है क्योंकि आंतें फोकों के निकालने के लिये तत्पर होती हैं और क्योंकि तबियत आमाशय का पक्ष करती है क्योंकि यह आंतों से श्रेष्ठ है (इलाज) सोद का पानी गर्म करके पिलावें जिससे आमाशय की चेपदार तरियों से धो डालें फिर वमन या दस्तों के द्वारा उसको निकालें और जो इससे मवाद न निकले तो विही का जुलाब या अन्य ऐसी ही वस्तु उस समय देवें जब कि ठीक बादी हो और मवादके निकलनेके उपरान्त जो दस्त आते हों तो उनके बंद करनेके इलाज और वमन बन्द होजांय और प्रथम उपाय जिससे हैजेसे बचे यह है कि सोना, पेटको किसी गर्म चीजसे ढांकना, हाथपांवको मलना और मर्दन करना और प्रथम पथ्य के उपरान्त न्हानेके स्थानमें जाना अवश्य है जिससे दस्त बिल्कुल बन्द होजांय और अंगोंमें तरीयाको और जोकुछ मवादके निकलनेसे उत्पन्न हुई है नष्ट होजाय और जो गाढ़ा मवाद रगोंमें बन्द हो वह भी नर्म होजाय और जब हैजे से आरोग्यता हो तो योग्य है कि किसी अल्प पचाव करने वाली चीज का भोजन करावें जैसे पक्षियों का मांस और जो कोई कार्य वर्जित नहीं तो भोजन को अनार में खट्टी और कच्चे अंगूर के पानी से खट्टा करें और क्योंकि शक्ति आजाय

जो उसमें कोई ऐसी दशा आजाय कि अंग उसको भोजन के लिये न ग्रहण करे अवश्य उसको तबियत प्रत्येक ओर से निकालती है और हैजा उत्पन्न होता है और इसमें तथा पहिले दोनों भेदों में यह अन्तर है कि उनमें भी निकम्मे भोजन को निकालना प्रकृति पर निर्भर है जब तक वे आमाशय में हैं और उसके संयोग से शरीर के निकम्मे या अच्छे दोष भी निकलें। परंतु इस तीसरे भेद के विरुद्ध है कि उसमें मवाद का पलटना उस निकम्मे भोजन के निकालने का आधीन नहीं जिसको आमाशय निकालता है किन्तु तबियत मुख्य कर उन दोषों के निकालने में परिश्रम करती है जो शरीर के चारों ओर रगों में है और इसका चिन्ह तीन प्रकार पर है एक तो यह है कि हैजे के होने से कई दिन पहिले अजीर्ण का काम पड़ा हो और पेट में बहुत सी बादी इकट्ठी हो क्योंकि पहिले जब तक भोजन आमाशय में न बिगड़ जायगा उससे निकम्मे दोष उत्पन्न न होंगे। दूसरे यह कि जब हैजा आरम्भ हो तो टूंडी में दर्द और मरोड़ा उत्पन्न हो और या अर्थ बहुधा ऐसा होता है कि पूरा नहीं होता। तीसरे यह है कि दस्त विशेष हों और वमन बहुत कम और कभी होती भी नहीं है और वमन का न होना जब होगा कि गाढ़ा मवाद नीचे बैठ जाय निस्सन्देह इस जगह दस्त वमन से विशेष होता है क्योंकि आंतें फोगों के निकालने के लिये तत्पर होती हैं और क्योंकि तबियत आमाशय का पक्ष करती है क्योंकि यह आंतों से श्रेष्ठ है (इलाज) सोये का पानी गर्म करके पिलावें जिससे आमाशय को चेपदार तरियों से धो डालें फिर वमन या दस्तों के द्वारा उसको निकालें और जो इससे मवाद न निकले तो हिरेही का जुलाब या अन्य ऐसी ही वस्तु उस समय देवें जब कि शक्ति बाकी हो और मवादके निकलनेके उपरान्त जो दस्त आते हों तो रातृष करें जिससे दस्त और वमन बन्द होजांय और उत्तम उपाय जिससे हैजेसे बचे यह है कि सोना, पेटको किसी गर्म चीजसे ढांकना, हाथपांवको मलना और नर्म रखना और मकमल के उपरान्त न्हानेके स्थानमें जाना अवश्य है जिससे दस्त बिल्कुल बन्द होजांय और अंगोंमें तरी मालूम हो और जो सुस्ती मवादके निकलनेसे उत्पन्न हुई है वह दूर होजाय और जो गाढ़ा मवाद रगोंमें बन्द हो वह भी नर्म होजाय और जब ऐसे से आरोग्यता हो तो योग्य है कि किसी अन्द पचाव करने वाली चीज का भोजन करावें जैसे पक्षियों का मांस और जो कोई कार्य बाधित भयो तो भोजन को अनार में खार्वें और कच्चे अंगूर के पानी से खट्टा करें और जबकि शक्ति आजाय

पांचवां प्रकरण

भोजन की रुचि के नष्ट होने का वर्णन।

भोजन की रुचि में न्यूनता वा नष्ट होनेका कारण शक्तिकी निर्बलता के अनुसार है जो कारण निर्बल है तो भूख कम होजायगी और जो कारण बलवान होगा तो जाती रहेगी अर्थात् खाने की रुचि कभी न होगी और असल में दोनों का एक ही कारण है और इस कारण से कि भूख के उपद्रवों के कारण बहुत हैं इसलिये हम प्रत्येक को अलग में वर्णन करते हैं। जान लेना चाहिये कि सची भूख वह है कि शरीर के अवयव भूखे हों और रगों से चूसने की विधि पर भोजन चाहैं और रगें आमाशय से चाहैं फिर तबियत जो बादी को आमाशय के मुख की तरफ भेजती है उसकी ज्ञानशक्ति के अधिक होने के कारण से भूख को जानजाती है और बादी का खट्टा होना कसैलापन और रगों के चूसने से असर करता है और उस के भाग सुकड़जाते हैं और तबियत भोजन मांगती है जिससे उसका यह कष्ट दूरहो और सची भूख यही है सो जब कि इन उक्त कारणों में से किसी कार्य में खराबी आने के अनुसार खाने की रुचि नष्ट या कम होजायगी जैसा उसके भेदों में इसका वर्णन किया जायगा। पहला भेद उस भूख की निर्बलता के वर्णन में है जो गर्म सादा दुष्ट प्रकृति के आमाशय के मुख में आने से उत्पन्न हो और प्रगट है कि इस दशा में आमाशय का मुख सुस्त होजाता है और उसकी सब शक्तियां निर्बल होजाती हैं और गर्मी के कारण मवाद पतला होकर उसमें इकट्ठा होजाता है और दूर करनेवाली शक्ति की निर्बलता से नहीं निकलता तथा उसके भरजाने से शक्ति जाती रहती है और यही कारण है कि दक्षिणी हवा और गर्मी की ऋतु भूख की अधिकता को नष्ट करदेती है और उत्तरी हवा तथा जाड़े की ऋतु क्षुधाको चैतन्य करती हैं इस कारण से सर्दी आमाशय में अजीर्ण करके उसे सकोड़ देतीहै और इसका चिन्ह यह है कि डकार में धुआं कैसी गन्धि आवै और कीचड़ की गन्धि होती है और प्यास बहुतहो और जो भोजन कि प्रकृति में गर्म हों उनसे तबियत घृणा करे और ठंडे पानी पीनेकी रुचि करे और उससे आराम पावै (इलाज) ठंडी और अजीर्ण कारक वस्तुओं से आमाशय को शमन करे जैसा कि आमाशय की दुष्ट प्रकृतिमें वर्णन किया है। किताब दस्तूरउल इलाज में लिखा है कि ठंडी और अजीर्ण कारक वस्तुओं में सिकंजबीन, और

पांचवां प्रकरण

भोजन की रुचि के नष्ट होने का वर्णन।

भोजन की रुचि में न्यूनता वा नष्ट होनेका कारण शक्तिकी निर्बलता के अनुसार है जो कारण निर्बल है तो भूख कम होजायगी और जो कारण बलवान होगा तो जाती रहेगी अर्थात् खाने की रुचि कभी न होगी और असल में दोनों का एक ही कारण है और इस कारण से कि भूख के उपद्रवों के कारण बहुत हैं इसलिये हम प्रत्येक को अलग में वर्णन करते हैं। जान लेना चाहिये कि सच्ची भूख यह है कि शरीर के अवयव भूखे हों और रगों से चूसने की विधि पर भोजन चाहैं और रगें आमाशय से चाहैं फिर तबियत जो बादी को आमाशय के मुख की तरफ भेजती है उसकी ज्ञान-शक्ति के अधिक होने के कारण से भूख को जानजाती है और बादी का खट्टा होना कसैलापन और रगों के चूसने से असर करता है और उस के भाग सुकड़जाते हैं और तबियत भोजन मांगती है जिससे उसका यह कष्ट दूरहो और सच्ची भूख यही है सो जब कि इन उक्त कारणों में से किसी कार्य में खराबी आने के अनुसार खाने की रुचि नष्ट या कम होजायगी जैसा व सके भेदों में इसका वर्णन किया जायगा। पहला भेद उस भूख की निर्बल-ता के वर्णन में है जो गर्म सादा दुष्ट प्रकृति के आमाशय के मुख में आने से उत्पन्न हो और प्रगट है कि इस दशा में आमाशय का मुख सुस्त होजाता है और उसकी सब शक्तियां निर्बल होजाती हैं और गर्मी के कारण मवाद पतला होकर उसमें इकट्ठा होजाता है और दूर करनेवाली शक्ति की निर्ब-लता से नहीं निकलता तथा उसके भरजाने से शक्ति जाती रहती है और यही कारण है कि दक्षिणी हवा और गर्मी की ऋतु भूख की अधिकता को नष्ट करदेती है और उत्तरी हवा तथा जाड़े की ऋतु क्षुधाको चैतन्य करती है इस कारण से सर्दी आमाशय में अजीर्ण करके उसे सकोड़ देती है और इसका चिन्ह यह है कि डकार में धूआं कैसी गन्धि आवे जैसे दीपक की गन्धि होती है और प्यास बहुतहो और जो भोजन कि प्रकृति में गर्म हों उनसे तबियत घृणा करे और ठंढे पानी पीनेकी रुचि करै और उनसे लाभ पावै (इलाज) ठंढी और अजीर्ण कारक वस्तुओं से आमाशय को शमन करै जैसा कि आमाशय की दुष्ट प्रकृतिमें वर्णन किया है। सिवाय इसके [illegible] इलाज में लिखा है कि ठंढी और अजीर्ण कारक वस्तुओं में [illegible], और

पांचवा प्रकरण

भोजन की रुचि के नष्ट होने का वर्णन ।

भोजन की रुचि में न्यूनता वा नष्ट होनेका कारण शक्तिकी निर्वलता के अनुसार है जो कारण निर्वल है तो भूख कम होजायगी और जो कारण वलवान होगा तो जाती रहेगी अर्थात् खाने की रुचि कभी न होगी और असल में दोनों का एक ही कारण है और इस कारण से कि भूख के उपद्रवों के कारण बहुत है इसलिये हम प्रत्येक को अलग में वर्णन करते हैं। जान लेना चाहिये कि सची भूख वह है कि शरीर के अवयव भूखे हों और रगों से चूसने की विधि पर भोजन चाहैं और रगें आमाशय से चाहैं फिर तबियत जो बादी को आमाशय के मुख की तरफ भेजती है उसकी ज्ञान शक्ति के अधिक होने के कारण से भूख को जानजाती है और बादी का खट्टा होना कसैलापन और रगों के चूसने से असर करता है और उस के भाग सुकड़जाते हैं और तबियत भोजन मांगती है जिससे उसका यह कष्ट दूरहो और सची भूख यही है सो जब कि इन उक्त कारणों में से किसी कार्य में खराबी आने के अनुसार खाने की रुचि नष्ट या कम होजायगी जैसा उसके भेदों में इसका वर्णन किया जायगा। पहला भेद उस भूख की निर्वलता के वर्णन में है जो गर्म सादा दुष्ट प्रकृति के आमाशय के मुख में आने से उत्पन्न हो और प्रगट है कि इस दशा में आमाशय का मुख सुस्त होजाता है और उसकी सब शक्तियां निर्वल होजाती है और गर्मी के कारण मवाद पतला होकर उसमें इकट्ठा होजाता है और दूर करनेवाली शक्ति की निर्वलता से नहीं निकलता तथा उसके भरजाने से शक्ति जाती रहती है और यही कारण है कि दक्षिणी हवा और गर्मी की ऋतु भूख की अधिकता को नष्ट करदेती है और उत्तरी हवा तथा जाड़े की ऋतु क्षुधाको चैतन्य करती है इस कारण से सर्दी आमाशय में अजीर्ण करके उसे सकोड़ देतीहै और इसका चिन्ह यह है कि डकार में धुआं कीसी गन्धि आवे जैसे कीचड़ की गन्धि होती है और प्यास बहुतहो और जो भोजन कि प्रत्यक्ष में गर्म हों उनसे तबियत घृणा करे और ठंडे पानी पीनेकी रुचि करें और उससे लाभ पावैं (इलाज) ठंडी और अजीर्ण कारक वस्तुओं से आमाशय को समान करें जैसा कि आमाशय की दुष्ट प्रकृतिमें वर्णन कियाहै। किताब दस्तूरउल इलाज में लिखाहै कि ठंडी और अजीर्ण कारक वस्तुओं में सेवका खर्बत, नीबू

पांचवा प्रकरण

भोजन की रुचि के नष्ट होने का वर्णन।

भोजन की रुचि में न्यूनता वा नष्ट होनेका कारण शक्तिकी निर्वलता के अनुसार है जो कारण निर्वल है तो भूख कम होजायगी और जो कारण बलवान होगा तो जाती रहेगी अर्थात् खाने की रुचि कभी न होगी और असल में दोनों का एक ही कारण है और इस कारण से कि भूख के उपद्रवों के कारण बहुत हैं इसलिये हम प्रत्येक को अलग में वर्णन करते हैं। जान लेना चाहिये कि सची भूख वह है कि शरीर के अवयव भूखे हों और रगों से चूसने की विधि पर भोजन चाहैं और रगैं आमाशय से चाहैं फिर तबियत जो बादी को आमाशय के मुख की तरफ भेजती है उसकी ज्ञान शक्ति के अधिक होने के कारण से भूख को जानजाती है और बादी का खट्टा होना कसैलापन और रगों के चूसने से असर करता है और उस के भाग सुकड़जाते हैं और तबियत भोजन मांगती है जिससे उसका वह कष्ट दूरहो और सची भूख यही है सो जब कि इन उक्त कारणों में से किसी कार्य में खराबी आने के अनुसार खाने की रुचि नष्ट या कम होजायगी जैसा उसके भेदों में इसका वर्णन किया जायगा। पहला भेद उस भूख की निर्बलता के वर्णन में है जो गर्म सादा दुष्ट प्रकृति के आमाशय के मुख में आने से उत्पन्न हो और प्रगट है कि इस दशा में आमाशय का मुख सुस्त होजाता है और उसकी सब शक्तियां निर्वल होजाती है और गर्मी के कारण मवाद पतला होकर उसमें इकट्ठा होजाता है और दूर करनेवाली शक्ति की निर्बलता से नहीं निकलता तथा उसके भरजाने से शक्ति जाती रहती है और यही कारण है कि दक्षिणी हवा और गर्मी की ऋतु भूख की अधिकता को नष्ट करदेती है और उत्तरी हवा तथा जाड़े की ऋतु क्षुधाको चैतन्य करती है इस कारण से सर्दी आमाशय में अजीर्ण करके उसे सफोद देतीहै और इसका चिन्ह यह है कि डकार में धूआं कीसी गन्धि आवै जैसे कीचड़ की गन्धि होती है और प्यास बहुतहो और जो भोजन कि प्रकृति में गर्म हो उनसे तबियत घृणा करे और ठंडे पानी पीनेकी रुचि करे और उससे लाभ पावै (इलाज) ठंडी और अजीर्ण कारक वस्तुओं से आमाशय को समान करै जैसा कि आमाशय की दुष्ट प्रकृतिमें वर्णन कियाहै। किताब दस्तूरउल इलाज में लिखाहै कि ठंडी और अजीर्ण कारक वस्तुओं में सेवका शर्बत, नीबू

मिचलावै और वमन विशेष आवे और ठंढे पानीकी रुचि बहुत हो और दोष के अनुसार मुखका स्वाद कडवा या खारीहो (इलाज) वमन और दस्तों के द्वारा आमाशयके मवादको निकालै जिससे इस दोषसे जो रोगका कारण है पवित्र होजाय। चौथा भेद यहहै कि बहुतसा चेपदार दोष आमाशय में इकट्ठा होजाय और यह इकट्ठा होना भोजन की रुचि को लाभदायक है क्यों कि आमाशयके अग और इस बादी के मध्य में जो आमाशयके मुखपर गिरकर छिलन उत्पन्न करती है तब उक्त मवाद रुक कर भूखको नष्ट करदेता है और उसका यह चिन्ह है कि प्यास और जलन न हो और रोगी ऐसी चीज के खाने की रुचि करै जो प्रत्यक्ष में गर्म है और जब उसको खाय तो कष्ट, अफरा, जी मिचलाना और खिचाव उत्पन्न करै और जब तक डकार न आवें आराम न पावे और गर्म तथा तेज चीजके खानसे जो कष्ट और अफरा आदि उत्पन्न होताहै उसका यह कारण है कि मवाद को हिलाता है और उससे भाफ उठतीहै और इस कारण से कि मवाद गाढ़ा और चेपदार है सेव का सब आमाशय स नहीं निकल सक्ता (इलाज) पहले मवाद के नर्म करने के लिये राई, तरातेज, किम की जड़ और रूमी सौंफ औंटा कर साफ पानी में थोड़ा सा नोंन और शहद मिला कर पिलावे और जब मवाद नर्म हो जाय और पकजाय तब उस के निकालने के लिये सोया, मूली के बीज और मुलहटी औंटा कर सफेद नोंन, सहद की बनी सिकंजबीन इस काढ़े में मिलाकर गुनगुना पिलावें और सहायता करैं कि वमन होकर मवाद निकलजाय और जो वमन करना उचित नहो तो जुलाब दें जैसा कि आमाशय की दुष्ट प्रकृति में इसका वर्णनहो चुकाहै और मवाद के निकलने के उपरान्त पुष्टकारक माजून दे कि फिर मवाद को ग्रहण न करै। पांचवां भेद-यह है कि आमाशय में दुर्गन्धित दोष इकट्ठा हो जाय और तबियत उस के निकालने से लिप्त होकर भोजन की रुचि न करै इस कारण से भूख न हो और इसका यह चिन्ह है कि बहुत जी मिचलावै, शरीर से दुर्गन्ध आवै और मल गाढ़ा आवे और जब कि पुतों नेन सोवा हो और आमाशय की पोल में रु का हुआ हो या जो पुतों में हो और बहुत से भोजन करने से उस में मि लगयाहो या होसक्ताहै कि वमनमें भी दुर्गन्धित मवाद निकले (इलाज) मवादके निकालनेके लिये वमन करैं और दस्तके लानवाली दवा पीवे इसके उपरान्त ऐसा मुरब्बा और जवारिश उद खाय जिससे आमाशयमें शक्ति और सुगन्धि प्राप्त हो

मिचलावे और वमन विशेष आवे और ठंडे पानीकी रुचि बहुत हो और दोष के अनुसार मुखका स्वाद कड़वा या खारीहो (इलाज) वमन और दस्तों के द्वारा आमाशयके मवादको निकाले जिससे इस दोषसे जो रोगका कारण है पवित्र होजाय। चौथा भेद यहहै कि बहुतसा चेपदार दोष आमाशय में इकट्ठा होजाय और यह इकट्ठा होना भोजन की रुचि को लाभदायक है क्यों कि आमाशयके अग और इस बादी के मध्य में जो आमाशयके मुखपर गिरकर छिलन उत्पन्न करती है तब उक्त मवाद रुक कर भूखको नष्ट करदेता है और उसका यह चिन्ह है कि प्यास और जलन न हो और रोगी ऐसी चीज के खाने की रुचि करे जो प्रत्यक्ष में गर्म है और जब उसको खाय तो कष्ट, अफरा, जी मिचलाना और खिचाव उत्पन्न करे और जब तक डकार न आवे आराम न पावे और गर्म तथा तेज चीजके खानसे जो कष्ट और अफरा आदि उत्पन्न होवाहै उसका यह कारण है कि मवाद को हिलाता है और उससे भाफ उठतीहै और इस कारण से कि मवाद गाढ़ा और चेपदार है सब का सब आमाशय से नहीं निकल सक्ता (इलाज) पहले मवाद के नर्म करने के लिये राई, तरातेज, किम की जड़ और रूमी सौंफ औटा कर साफ पानी में थोड़ा सा नोंन और शहद मिला कर पिलावे और जब मवाद नर्म हो जाय और पकजाय तब उस के निकालने के लिये सोया, मूली के बीज और मुलहटी औटा कर सफेद नोंन, सहद की बनी सिकनजबीन इस काढ़े में मिलाकर गुनगुना पिलावे और सहायता करे कि वमन होकर मवाद निकलजाय और जो वमन करना उचित नहो तो जुलाब दें जैसा कि आमाशय की दुष्ट प्रकृति में इसका वर्णनहो चुकाहै और मवाद के निकलने के उपरान्त पुष्टकारक माजून दे कि फिर मवाद को ग्रहण न करे। पांचवां भेद- यह है कि आमाशय में दुर्गन्धित दोष इकट्ठा हो जाय और तबियत उस के निकालने से लिप्त होकर भोजन की रुचि न करे इस कारण से भूख न हो और इसका यह चिन्ह है कि बहुत जी मिचलावे, शरीर से दुर्गन्ध आवे और मल गाढ़ा आवे और जब कि पुर्ती नेन सोवा हो और आमाशय की पोल में रु का हुआ हो या जो पुर्तों में हो और बहुत से भोजन करने से उस में मि लगयाहो मा होसक्ताहै कि वमनमें भी दुर्गन्धित मवाद निकले (इलाज) मवादके निकालने केलियवमन करें औरदस्तके लानवाली दवा पीये इसके उपरान्तादिवाल मुश्क और नशारिख ऊद खाय जिससे आमाशयमें शक्ति और सुगन्धि मास हो

कि कफ और चेपदार तरी को निकाले ग्रहण करै और हुब्ब इफादिया, हुब्ब सिब्र, और विही की जवारिश के जुल्लाब से मवाद को निकालें फिर जवारिश फलाफली और इतरीफल कवीर और हुब्बे मुनासिक दें और यह दवा काममें लावें गन्दबेलकी जड़ १ भाग, बालछड़ अगर प्रत्येक आधा भाग महीन पीसकर ७ माशे के लगभग गर्म पानी और विही की पुष्टकारक शराब के साथ लाभदायक है और जिन भोजनों में सिर्का, किरविया, काली मिर्च, दालचीनी हो ग्रहण करें और इग्रपहीया कहता है कि जब ठंडे गाढ़े दोष आमाशय की पोलमें आकर भूखको नष्ट करदें तो चाहिये कि भूखको बढ़ाने वाली और वमन कराने वाली दवा काममें लावें और वमन के पीछे दस्त लाने वाली दवाओं की विधिपर उनको ग्रहण करें और जो दोष आमाशय के अग में घुसे हुऐ हों तो यारज फयकरा और हुब्ब सिब्र (एलवा की गोली) से मवाद को निकालें और मवाद के निकलनेके पीछे जवारिश फलाफली, कम्मूनी, हरड़का मुरब्बा, सोंठका मुरब्बा और शका फल (सतानी) का मुरब्बा दें। आठवां भेद यह है कि जिगर निर्बल होजाय उसमें या मासरीकारग में गांठ पड़जाय इस कारणसे कैलूस जिगरकी तरफ अच्छी तरह न खिंचे जैसी निर्बलता थोडी या बहुतहो और जितनी गांठ हो उसके अनुसार आमाशय वैसाही भगरहै और भोजन की रुचि न करै और इसका चिन्ह यह है कि रोगी प्रतिदिन दुबला होताजाय और कई रंगके दस्त आवैं कभी सफेद कभी हरे और कभी पीले सिवाय इसके कोई चीज रंग करने वाली न खाय और जानलेना चाहिये कि जब कैलूस जैसा कि है वैसाही आतों की तरफ उतर आवे और जिगर की तरफ न खिंचे तो मल का रंग सफेद होताहै और जब कि कैलूसमेंसे थोडासा आतों और आमाशय की बारीक रगोंमें आता है और वहां ठहरकर जिगरमें जाने से पहले पलट आवे तो मल हरा आता है क्योंकि आतों और आमाशय की बारीक रगोंकी गर्मी ने उस में असर किया है और जो कुछ उसमें ठहरे हरा होजाय और मलका पीत रंग पित्तके मिलने से होता है (इलाज) जिगरकी निर्बलता के कारण नष्ट करने और गांठ के खोलने में परिश्रम करै जिससे आमाशय का भोजन जिगरकी तरफ प्रवेश हो जैसा जिगरके रोगों के अध्याय में उसका वर्णन कियाजायगा और प्रगट है कि यह रोग जब गांठ के कारण से उत्पन्न हो तो उसका उपाय सहज है परन्तु जो जिगरकी निर्बलता से उत्पन्न होता है वह

कि कफ और चेपदार तरी को निकाले ग्रहण करै और हुब्ब इफादिया, हुब्ब सिब्र, और बिही की जवारिश के जुल्लाब से मवाद को निकालें फिर जवारिश फलाफली और इतरीफल कबीर और हुब्बे मुनासिक दें और यह दवा काममें लावें गन्दबेलकी जड़ १ भाग, बालछड़ अगर प्रत्येक आधा भाग महीन पीसकर ७ माशे के लगभग गर्म पानी और बिही की पुष्टकारक शराब के साथ लाभदायक है और जिन भोजनों में सिर्का, किरविया, काली मिर्च, दालचीनी हो ग्रहण करें और इब्नयहीया कहता है कि जब ठंडे गाढ़े दोष आमाशय की पोलमें आकर भूखको नष्ट करदें तो चाहिये कि भूखको बढ़ाने वाली और वमन कराने वाली दवा काममें लावें और वमन के पीछे दस्त लाने वाली दवाओं की विधिपर उनको ग्रहण करें और जो दोष आमाशय के अंग में घुसे हुये हों तो ग्रारज फयकरा और हुब्ब सिब्र (एलवा की गोली) से मवाद को निकालें और मवाद के निकलनेके पीछे जवारिश फलाफली, कम्मूनी, हरड़का मुरब्बा, सोंठका मुरब्बा और शका फल(सतानी)का मुरब्बा दे। आठवां भेद यह है कि जिगर निर्बल होजाय उसमें या मासरीकारग में गांठ पड़जाय इस कारणसे कैलूस जिगरकी तरफ अच्छी तरह न खिचे जैसी निर्बलता थोडी या बहुतहो और जितनी गांठ हो उसके अनुसार आमाशय वैसाही भगरहै और भोजन की रुचि न करै और इसका चिन्ह यह है कि रोगी प्रतिदिन दुबला होताजाय और कई रगके दस्त आवें कभी सफेद कभी हरे और कभी पीले सिवाय इसके कोई चीज रंग करने वाली न खांय और जानलेना चाहिये कि जब कैलूस जैसा कि है वैसाही आंतों की तरफ उतर आवे और जिगर की तरफ न खिचे तो मल का रंग सफेद होताहै और जब कि कैलूसमेंसे थोडासा आंतों और आमाशय की बारीक रगोंमें आता है और वहां ठहरकर जिगरमें जाने से पहले पलट आवे तो मल हरा आता है क्योंकि आंतों और आमाशय की बारीक रगोंकी गर्मी ने उस में असर किया है और जो कुछ उसमें ठहरे हरा होजाय और मलका पीर रंग पित्तके मिलने से होता है (इलाज) जिगरकी निर्बलता के कारण नष्ट करने और गांठ के खोलने में परिश्रम करै जिससे आमाशय का भोजन जिगरकी तरफ प्रवेश हो जैसा जिगरके रोगों के अध्याय में उसका वर्णन किया जाचुका और प्रगट है कि यह रोग जब गांठ के कारण से उत्पन्न हो तो उसका उपाय सहज है परन्तु जो जिगरकी निर्बलता से उत्पन्न होता है वह

भेद यह है कि आमाशय के मुख की ज्ञानशक्ति नष्ट होजाय इस कारण से रगों के चूसने का असर और वादी की जलन मालूम न हो फिर यद्यपि आमाशय भोजन चाहे और वादी उसपर गिरे परन्तु भूख न हो और इस का चिन्ह यह है कि आमाशय के सब कार्य बिल्कुल आरोग्य हों क्योंकि पाचक, निरोध और निस्सारक शक्तियां आरोग्य होती हैं उसमें कोई विपत्ति नहीं होती और इसमें तथा नवें भेद में यह अन्तर है कि इसमें बहुधा खट्टी और कसैली चीजें खांय परन्तु कभी खाने की इच्छा न हो और तेज चीजें जो खाई जांय यद्यपि फलाफली की जवारिश हो उनकी जलन से कुछ खबर न हो और गुण प्रगट न हो और हिचकी और जी न मिचलावै यद्यपि बिना कुछ खायेही तेज चीजोंके खानेका काम पड़े परन्तु ये बातें नवें भेदके विरुद्ध हैं क्योंकि जो उस मार्ग में जो आमाशय और तिल्ली के मध्य में है गांठ पड़ने से उत्पन्न होती है क्योंकि उसमें ज्ञानशक्ति ज्यों की त्यों है और खटाई का खाना भूख लाता है (लाभ) आमाशय के मुख की ज्ञानशक्ति के नष्ट होने का यह कारण है कि उस पट्ठे में जो आमाशय के मुख की तरफ दिमाग से आया है कष्ट पहुंचे और यह पट्ठा दिमागी पट्ठों के जोड़ मेंसे एक है (इलाज) माजून, तेल और उचित सुगंधित पदार्थों से दिमाग की पुष्टता करें और जो पट्ठे में विपत्ति आने का कारण प्रमाद हो तो पहिले दिमागको गोलियों और उचित पारजों से साफ करें और जो पुष्टकारक दवा मुख्य हैं उनके काम में लाने से उसको समान करे और जो पट्ठे की विपत्ति का कारण सादा दुष्ट प्रकृति हो तो प्रवाद के निकालने की आवश्यकता नहीं प्रगट हो कि जो माजून दिल और दिमाग को बल देती हैं और इसमें लाभदायक हैं उसकी विधि किताब करावादीन कादरी में इस प्रकार पर लिखी है। दारचीनी, बालछड़, पिस्ता के छिलका, आमपाल, गुलास (जंगली अनार की जड़) बहमन लाल और सफेद, सतावरी, दवाछा, हरड़ का छिलका, बादरञ्जबोया, गावजबां प्रत्येक ३॥ माशे, मस्तगी, जरनब (झाड़ी घास) छोटी इलायची, सोंठ, लौंग, तगर, तेजपात, कबाब चीनी, नींबू के छिलका दरूनज, कमी, कपूर, चंदन लाल और सफेद, मिर्च की गोटी, रूमी सौंफ, पोदीना, आबिर्शा याली हरड़, पूर्नीदा, केसर, कहरबा, अनबिंधे मोती, उतरे हुए मूंगा प्रत्येक१।माशे कूपाका नागरमोथा, गुलाब के फूल प्रत्येक १४ माशे, चांदी सोविया, तुसयतुसाछिक (एक नद) दूरदी ऐन सफेद और लाल (एक घास के बीज) प्रत्येक १७॥

भेद यह है कि आमाशय के मुख की ज्ञानशक्ति नष्ट होजाय इस कारण से रगों के चूसने का असर और वादी की जलन मालूम न हो फिर यद्यपि आमाशय भोजन चाहै और वादी उसपर गिरे परन्तु भूख न हो और इस का चिन्ह यह है कि आमाशय के सब कार्य बिल्कुल आरोग्य हों क्योंकि पाचक, निरोध और निस्सारक शक्तिया आरोग्य होवी हैं उसमें कोई विपत्ति नहीं होती और इसमें तथा नवें भेद में यह अन्तर है कि इसमें बहुधा खट्टी और कसैली चीजें खांय परन्तु कभी खाने की इच्छा न हो और तेज चीजें जो खाई जांय यद्यपि फलाफली की जवारिश हो उनकी जलन से कुछ खबर न हो और गुण प्रगट न हो और हिचकी और जी न मिचलावै यद्यपि बिना कुछ खायेही तेज चीजोंके खानेका काम पड़े परन्तु ये बातें नवें भेदके विरुद्ध हैं क्योंकि जो उस मार्ग में जो आमाशय और तिल्ली के मध्य में है गांठ पड़ने से उत्पन्न होती है क्योंकि उसमें ज्ञानशक्ति ज्यों की त्यों है और खटाई का खाना भूख लाता है (लाभ) आमाशय के मुख की ज्ञानशक्ति के नष्ट होने का यह कारण है कि उस पट्ठे में जो आमाशय के मुख की तरफ दिमाग से आया है कष्ट पहुचे और यह पट्ठा दिमागी पट्ठों के जोड़ मेंसे एक है (इलाज) माजून, तेल और उचित सुगंधित पदार्थों से दिमाग की पुष्टिता करें और जो पट्ठे में विपत्ति आने का कारण मवाद हो तो पहिले दिमागको गोलियों और उचित पारजों से साफ करें और जो पुष्टिकारक दवा मुख्य है उनके काम में लाने से उसको समान करे और जो पट्ठे की विपत्ति का कारण सादा दुष्ट प्रकृति हो तो मवाद के निकालने की आवश्यकता नहीं प्रगट हो कि जो माजून दिल और दिमाग को बल देती हैं और इसमें लाभदायक हैं उसकी विधि किताब करावादीन कादरी में इस प्रकार पर लिखी है। दारचीनी, बालछड़, पिस्ता के छिलका, जायफल, गुलनार (जगली अनार की जड़) बहमन लाल और सफेद, सतावरी, बपाछा, हरड़ का छिलका, बादरञ्जबोया, गावजबां प्रत्येक ३॥ माशे, मस्तगी, बरनव (अंडी घास) छोटी इलायची, सोंठ, लौंग, तगर, तेजपात, कबाब चीनी, नींबू के छिलका दरूनज, कमी, कपूर, चंदन लाल और सफेद, मिर्चकी गोटी, रूमी सौंफ, पोदीना, आंबिर्या काली हरड़, पुनीदाना, केसर, कहरवा, अनबिधे मोती, उतरे हुए मूंगा प्रत्येक्का चूरा, नागरमोथा, गुलाब के फूल प्रत्येक १४ माशे, शाही रोमिया, तुख्मसुसाविक (एक जड़) बुदरी ऐन सफेद और लाल(एक घास के बीज) प्रत्येक १७॥

होती है और इसी कारण से किसी २ निर्बल मनुष्य की भूख बहुत कम होजाती है और ऐसेंही जिस मनुष्य को विशेष दस्त आते हैं दूसरे यह कि शराब पीनेकी जो टेव पड़गई हो उसको छोड़दें इस कारणसे भी भूख निर्बल होजाती है क्योंकि शराब अपने सतके होने से दिमाग को पुष्ट करती है उसके कारणसे आमाशय का मुख बादी की छिलन को पूर्ण रीतिसे जानलेताहै जो उसपर गिरती है और जब इस काम की अधिक समय तक टेव पड़जाय फिर उसको एक साथ छोड़ दें तो शक्ति की आरोग्यता में निर्बलता आजाती है क्योंकि स्वाभाविक काम जो उसको उभारता था वह जातारहा। तीसरे यहहै कि सोच और चिन्ता उत्पन्न हो कर भूख को घटादें क्योंकि अभाकाति कारण सब शक्तियों को सुस्त और निर्बल करते हैं (सूचना) कभी भूख बन्द होती है फिर थोड़ासा भोजन करने पर भूख उत्पन्नहो इसके दो कारण हैं एक तो यहहै कि भोजनके आनेसे शक्ति चैतन्य होती है और शक्तिके चैतन्य होने का यह अर्थ है कि आकर्षण शक्ति खींचने के लिये उभर आवे। यह बात ऐसी है जैसी तुर्क लोग कहा करते हैं कि " इश्तहायहे दनदानस्त " अर्थात् भूख दांतों के नीचेहै। दूसरे यह भी सम्भवहै कि यह भोजन जो आमाशयमें जाताहै इस दशाके विरुद्ध हो जो भूख को कम करताहै जैसे गर्मी से भूख कम होजाय और भोजन ठंडे खांय तो यह भोजन गर्मी की समानता करताहै और खाने की रुचि उत्पन्न होती है और इसी प्रकार की बातहै कि गर्म आमाशय ठंडा पानी भूख और पचाव का कारण होताहै और कभी आतों के पीछे चढ़कर आमाशयके मुख पर आकर तबियत को लिप्त करनेके कारणसे भूख को कम करदें जैसे भूख की अधिकता और खराब भोजनोंसे कोमल प्रकृति वाले को प्रगट होताहै। रुचि की न्यूनता का एक और भेदहै कि जो भोजन मौजूद न होतो भूख लगै और जब भोजन आवे तो भूख जाती रहे और खराब भोजन भी न हो इसका कारण आकर्षण शक्ति की निर्बलता है और जब कि इस ग्यारहवें भेदका उपाय दूसरे भेदों की अपेक्षा जिनका यहां वर्णन हुआ है अच्छी तरह प्रगट है तो उसका इलाज विशेषता के भयसे हमने वर्णन नहीं किया है (लाभ) उन दवाओं का वर्णन करते हैं जो खाने में रुचिको उत्पन्न करती हैं जिनमें सिकंजबीन, मारुत सुगन्धित शराब, नीबू की शराब, अगमी प्याज का बना हुआ सिर्का, और भिन्न सिर्के में सोया हुआ और पोदीना सिर्के में रखा हुआ और गुलकंद, प्याज, लहसन, अमरूद, सेब और सिमाक इत्यादि हैं

होती है और इसी कारण से किसी २ निर्बल मनुष्य की भूख बहुत कम होजाती है और ऐसेही जिस मनुष्य को विशेष दस्त आते हैं दूसरे यह कि शराब पीनेकी जो टेव पड़गई हो उसको छोड़दें इस कारणसे भी भूख निर्बल होजाती है क्योंकि शराब अपने सतके होने से दिमाग को पुष्ट करती है उसके कारणसे आमाशय का मुख बादी की छिलन को पूर्ण रीतिसे जानलेताहै जो उसपर गिरती है और जब इस काम की अधिक समय तक टेव पड़जाय फिर उसको एक साथ छोड़ दें तो शक्ति की आरोग्यता में निर्बलता आजाती है क्योंकि स्वाभाविक काम जो उसको उभारता था वह जातारहा। तीसरे यहहै कि सोच और चिन्ता उत्पन्न हो कर भूख को घटादें क्योंकि अप्राकृति कारण सब शक्तियों को सुस्त और निर्बल करते हैं (सूचना) कभी भूख बन्द होती है फिर थोड़ासा भोजन करने पर भूख उत्पन्नहो इसके दो कारण हैं एक तो यहहै कि भोजनके आनेसे शक्ति चैतन्य होती है और शक्तिके चैतन्य होने का यह अर्थ है कि आकर्षण शक्ति खींचने के लिये उभर आवे। यह बात ऐसी है जैसी तुर्क लोग कहा करते हैं कि " इश्तहावहे दनदानस्त " अर्थात् भूख दांतों के नीचेहै। दूसरे यह भी समवहै कि यह भोजन जो आमाशयमें जाताहै इस दशाके विरुद्ध हो जो भूख को कम करताहै जैसे गर्मी से भूख कम होजाय और भोजन ठंडे खांय तो यह भोजन गर्मी की समानता करताहै और खाने की रुचि उत्पन्न होती है और इसी प्रकार की बातहै कि गर्म आमाशय ठंडा पानी भूख और पचाव का कारण होताहै और कभी आतों के फीके पड़कर आमाशयके मुख पर आकर तबियत को लिप्त करनेके कारणसे भूख को कम करदें जैसे भूख की अधिकता और खराब भोजनोंसे कोमल प्रकृति वाले को प्रगट होताहै। रुचि की न्यूनता का एक और भेदहै कि जो भोजन मौजूद न होतो भूख लगे और जब भोजन आवे तो भूख जाती रहे और खराब- भोजन भी न हो इसका कारण आकर्षण शक्ति की निर्बलता है और जब कि इस ग्यारहवें भेदका उपाय दूसरे भेदों की अपेक्षा जिनका यहां वर्णन हुआ है अच्छी तरह प्रगट है तो उसका इलाज विशेषता के भयसे हमने वर्णन नहीं किया है (अब) उन दवाओं का वर्णन करते हैं जो खाने में रुचिको ला देती हैं जैसे की सिकनजबीन, मादा सुगन्धित शराब, नीबू की शराब, जंगली प्याज का बना हुआ सिर्का, और जिस सिर्के में सोया हुआ और पोदीना सिर्के में रखा हुआ और गुलकन्द, प्याज, लहसन, अमरूद, सेब और सिमाक हुब्बुल आस

किम सिर्के में रचाया हुआ हो और ऐलाकी तथा जरजानी हकीम कहते हैं कि इन मार्गों की गांठ का खोलना तेज और खट्टी चीजों से चाहिये जैसे काली मिर्च लहसन और प्याज सिर्का में रची हुई, और सब प्रकार की कांजी और राई पड़ी हुई सलगम और हींग इस विषय में लाभदायक हैं और यारज फयकरा थोड़ी सी आकाशबेल मिलाकर गांठ की खोलने वाली और गांठों की पवित्र करने वाली है और ऐसे रोगी का भोजन सालन, शोर्बा, रुम्मानियां, इसरमियां और समाकिया होता है।

छटा प्रकरण।

भूख में उपद्रव होने का वर्णन।

बहुत से हकीम इस उपद्रव को दहम अर्थात् भोजन का अच्छा न लगना कहते हैं- परन्तु कोई २ हकीम दहम उससे कहते हैं जिससे खाने की चीजों से बुरी दशा वाली चीजों की इच्छा हो और भूख में खराबी होना उसको कहते हैं कि अखाद्य वस्तुओं के खाने की इच्छा हो जैसे मिट्टी कोयला ठीकरा सफेदा चूना और ऐसी अन्य चीजें। और इन दोनों शब्दों का यह अन्तर है और शरह असबाब का अनुवादक हकीम मुहम्मद अकबर कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा है जो पुरानी रुई को खाया करती थी सर्वदा उसी को चबाती- थी और बहुधा उसको निगल लेती थी और यह रोग गर्भवती स्त्रियों के बहुधा उत्पन्न होता है मुख्य कर गर्भ के आरम्भ में तीन महीने व्यतीत होने तक और कदाचित् तीन महीने के उपरान्त भी रहता है और जिस स्त्री के गर्भ में लड़का होता है उसको इस प्रकार की भूख उस गर्भवती स्त्री की अपेक्षा जिसके गर्भ में लड़की है बहुत कम होती है और भूख में खराबी उत्पन्न होने का यह कारण है कि बुरा दोष आमाशय में इकट्ठा होकर आमाशय की चुन्नटों में चिपट जाता है फिर तबियत ऐसी चीज की- इच्छा करती है जो उस निकम्मे दोष के विरुद्ध हो और किसी २ ने कहा है कि बुरी चीजों की भूख इस कारण से होती है कि आमाशय में निकम्मे दोष इकट्ठे हो जाते हैं और अपनी सी वस्तु की इच्छा करते हैं इस बात पर अबू माहिर हकीम इस तरह निर्णय करता है कि एक स्त्री के आमाशय में पड़ी सूजन थी और हरताल के खाने की इच्छा रखती थी और कठिन से उसके खाने से रुकती थी जब यही सूजन फूटी तो वमन में ऐसे दोष निकले थे जो लाल और पीली हरताल के रंग और गंध के समान थे और इसी प्रकार

किया सिर्के में रचाया हुआ हो और ऐलाकी तथा जरजानी हकीम कहते हैं कि इन मार्गों की गांठ का खोलना तेज और खट्टी चीजों से चाहिये जैसे काली मिर्च लहसन और प्याज सिर्का में रची हुई, और सब प्रकार की कांजी और राई पड़ी हुई सलगम और हींग इस विषय में लाभदायक हैं और यारज फयकरा थोड़ी सी आकाशबेल मिलाकर गांठ को खोलने वाली और गांठों को पवित्र करने वाली है और ऐसे रोगी का भोजन सालन, शोर्वा, रुम्मानियां, इसरमियां और समाकिया होता है।

छटा प्रकरण।

भूख में उपद्रव होने का वर्णन।

बहुत से हकीम इस उपद्रव को दहम अर्थात् भोजन का अच्छा न लगना कहते हैं- परन्तु कोई २ हकीम दहम उससे कहते हैं जिससे खाने की चीजों से बुरी दशा वाली चीजों की इच्छा हो और मुख में खराबी होना उसको कहते हैं कि अखाद्य वस्तुओं के खाने की इच्छा हो जैसे मिट्टी कोयला ठीकरा सफेदा चूना और ऐसी अन्य चीजें। और इन दोनों शब्दों का यह अन्तर है और शरह अस्बाब का अनुवादक हकीम मुहम्मद अकबर कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा है जो पुरानी रुई को खाया करती थी सर्वदा उसी को चबाती थी और बहुधा उसको निगल लेती थी और यह रोग गर्भवती स्त्रियों के बहुधा उत्पन्न होता है मुख्य कर गर्भ के आरम्भ में तीन महीने व्यतीत होने तक और कदाचित् तीन महीने के उपरान्त भी रहता है और जिस स्त्री के गर्भ में लड़का होता है उसको इस प्रकार की भूख उस गर्भवती स्त्री की अपेक्षा जिसके गर्भ में लड़की है बहुत कम होती है और भूख में खराबी उत्पन्न होने का यह कारण है कि बुरा दोष आमाशय में इकट्ठा होकर आमाशय की चुन्नटों में चिपट जाता है फिर तबियत ऐसी चीज की इच्छा करती है जो उस निकम्मे दोष के विरुद्ध हो और किसी २ ने कहा है कि बुरी चीजों की भूख इस कारण से होती है कि आमाशय में निकम्मे दोष इकट्ठे हो जाते हैं और अपनी सी वस्तु की इच्छा करते हैं इस काम पर अबू माहिर हकीम इस तरह निर्णय करता है कि एक स्त्री के आमाशय में बड़ी सूजन थी और हरताल के खाने की इच्छा रखती थी और कठिन से उसके खाने से रुकती थी जब वही सूजन फूटी तो वमन में ऐसे दोष निकले थे जो लाल और पीली हरताल के रंग और गंध के समान थे लेकिन बुद्धिमा

फिर सिर्के में रचाया हुआ हो और ऐलाकी तथा जरजानी हकीम कहते हैं कि इन मार्गों की गांठ का खोलना तेज और खट्टी चीजों से चाहिये जैसे काली मिर्च लहसन और प्याज सिर्का में रची हुई, और सब प्रकार की कांजी और राई पड़ी हुई सलगम और हींग इस विषय में लाभदायक है और यारज फयकरा थोड़ी सी आकाशबेल मिलाकर गांठ की खोलने वाली और गांठों को पवित्र करने वाली है और ऐसे रोगी का भोजन सालन, शोर्वा, रुम्मानियां, हसरमियां और समाकिया होता है।

छटा प्रकरण।

भूख में उपद्रव होने का वर्णन।

बहुत से हकीम इस उपद्रव को दहम अर्थात् भोजन का अच्छा न लगना कहते हैं परन्तु कोई २ हकीम दहम उससे कहते हैं जिससे खाने की चीजों से बुरी दशा वाली चीजों की इच्छा हो और भूख में खराबी होना उसको कहते हैं कि अखाद्य वस्तुओं के खाने की इच्छा हो जैसे मिट्टी कोयला ठीकरा सफेदा चूना और ऐसी अन्य चीजें। और इन दोनों शब्दों का यह अन्तर है और शरह अस्बाब का अनुवादक हकीम मुहम्मद अकबर कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा है जो पुरानी रुई को खाया करती थी सर्वदा उसी को चबाती थी, और बहुधा उसको निगल लेती थी और यह रोग गर्भवती स्त्रियों के बहुधा उत्पन्न होता है मुख्य कर गर्भ के आरम्भ में तीन महीने व्यतीत होने तक और कदाचित् तीन महीने के उपरान्त भी रहता है और जिस स्त्री के गर्भ में लड़का होता है उसको इस प्रकार की भूख उस गर्भवती स्त्री की अपेक्षा जिसके गर्भ में लड़की है बहुत कम होती है और भूख में खराबी उत्पन्न होने का यह कारण है कि बुरा दोष आमाशय में इकट्ठा होकर आमाशय की झुर्रियों में चिपट जाता है फिर तबियत ऐसी चीज की इच्छा करती है जो उस निकम्मे दोष के विरुद्ध हो और किसी २ ने कहा है कि बुरी चीजों की भूख इस कारण से होती है कि आमाशय में निकम्मे दोष इकट्ठे हो जाते हैं और अपनी सी वस्तु की इच्छा करते हैं इस बात पर अबूमाहिर हकीम इस तरह निर्णय करता है कि एक स्त्री के आमाशय में [illegible] [illegible] थी और हरताल के खाने की इच्छा रखती थी और कठिन रो उसके खाने से रुकती थी जब बड़ी [illegible] हुई तो वमन में ऐसे दोष निकले [illegible] गाढ़े और पीले हरताल के रंग और गन्ध के समान थे [illegible]

फिर सिर्के में रचाया हुआ हो और ऐलाकी तथा जरजानी हकीम कहते हैं कि इन मार्गों की गांठ का खोलना तेज और खट्टी चीजों से चाहिये जैसे काली मिर्च लहसन और प्याज सिर्के में रची हुई, और सब प्रकार की कांजी और राई पड़ी हुई सलगम और हींग इस विषय में लाभदायक है और यारज फयकरा थोड़ी सी आकाशबेल मिलाकर गांठ की खोलने वाली और गांठों की पवित्र करने वाली है और ऐसे रोगी का भोजन सालन, शोर्वा, रुम्मानियां, हसरमियां और समाकिया होता है।

छटा प्रकरण।

भूख में उपद्रव होने का वर्णन।

बहुत से हकीम इस उपद्रव को दहम अर्थात् भोजन का अच्छा न लगना कहते हैं परन्तु कोई २ हकीम दहम उससे कहते हैं जिससे खाने की चीजों से बुरी दशा वाली चीजों की इच्छा हो और भूख में खराबी होना उसको कहते हैं कि अखाद्य वस्तुओं के खाने की इच्छा हो जैसे मिट्टी कोयला ठीकरा सफेदा चूना और ऐसी अन्य चीजें। और इन दोनों शब्दों का यह अन्तर है और शरह अस्बाब का अनुवादक हकीम मुहम्मद अकबर कहता है कि मैंने एक स्त्री को देखा है जो पुरानी रुई को खाया करती थी सर्वदा उसी को चबाती थी, और बहुधा उसको निगल लेती थी और यह रोग गर्भवती स्त्रियों के बहुधा उत्पन्न होता है मुख्य कर गर्भ के आरम्भ में तीन महीने व्यतीत होने तक और कदाचित् तीन महीने के उपरान्त भी रहता है और जिस स्त्री के गर्भ में लड़का होता है उसको इस प्रकार की भूख उस गर्भवती स्त्री की अपेक्षा जिसके गर्भ में लड़की है बहुत कम होती है और भूख में खराबी उत्पन्न होने का यह कारण है कि बुरा दोष आमाशय में इकट्ठा होकर आमाशय की सुन्नटों में चिपट जाता है फिर तबियत ऐसी चीज की इच्छा करती है जो उस निकम्मे दोष के विरुद्ध हो और किसी २ ने कहा है कि बुरी चीजों की भूख इस कारण से होती है कि आमाशय में निकम्मे दोष इकट्ठे हो जाते हैं और अपनी सी वस्तु की इच्छा करते हैं इस बात पर अबू माहिर हकीम इस तरह निर्णय करता है कि एक स्त्री के आमाशय में मर्ज़ [illegible] थी और हरताल के खाने की इच्छा रखती थी और कठिन रो उसके [illegible] से रुकती थी जब बड़ी मुद्दत हुई तो वमन में ऐसे दोष निकलते थे [illegible] और पीली हरताल के रंग और गंध के समान थे [illegible]

अर्थात् जो कुछ तबियत से होगा तो बुरी चीजों के खाने से हानि न होना उसका साक्षी होगा और जो कुछ दोष की इच्छा से होगा उसमें दोष के अनुकूल रुचि होगी और तबियत की इच्छा नहीं हो तो निर्बलता और आफतों का प्रगट होना उसका साक्षी है क्योंकि मवाद तबियत पर अधिकार रखता है और जानलेना चाहिये कि गर्भवती स्त्रियों को जो आरम्भ में यह रोग उत्पन्न होता है उसका यह कारण है कि उनका रज बच्चेके भोजन के लिये बन्द होजाता है और जबकि बच्चा उससमय में निर्बल होजाता है उसमें से सबरज का भोजन नहीं करसकता उसमें से थोड़ासा मवाद आमाशय में आपड़ता है क्योंकि वह बहनेवाली तरी है सो तबियत ऐसी चीजकी इच्छा करती है जो उसको सुखा दें फिर इसदशा के विरुद्ध वस्तु प्रिय होती है और रोग गर्भवती स्त्रियों को बहुधा चौथे महीने जो जाता रहता है उसका यह कारण है कि जब पेट में बच्चा बलवान और बड़ा होजाता है उसके खर्चमें विशेष भोजन आता है और इसकाल में इकट्ठे दोष कुछ वमन में भी निकल जाते हैं और कुछ पककर नष्ट होते हैं इसलिये गर्भवती स्त्रियों का खाना बहुत कम होजाताहै और यह दशा उस गर्भवती स्त्रीको जिसके गर्भमें लड़की है उससे जिसके पेटमें लड़का है इस कारण से विशेष होती है कि जो बच्चा नर है उसकी गर्मी बलवान है इस कारण से लड़की की अपेक्षा विशेष भोजन पाता है और इसी कारण से फोक भी बहुत कम रहते हैं और बहुधा ऐसा होता है कि स्त्रीका शरीर निकम्मे दोषों से साफ और पवित्र हो और पेट में बच्चा बलवान हो तथा कुदरती रीति से विशेष भोजन करने का काम पड़े इस कारण से कुछ इच्छा झूठी उत्पन्न हो और जी मिचलाना और वमन उत्पन्न हो जबतक बच्चा गर्भ में रहता है तनीन कहलाता है (इलाज) प्रति मास एकबार या दोबार वमन लाने वाली दवा पीकर वमन करें और जब वमन कराना चाहे तो पहले खारी मछली खवावें पीछे वमनकारक दवा पिलावे और कभी २ दस्तावर दवा भी काम में लावें और मवाद के निकलने के उपरान्त योग्य सवारियों से आमाशय की पुष्टता करें। इस जगह वमन कारक दवायें हैं यथा शहद का पानी, मूली जिसमें हुई सिकञ्जबीन, सोयाका पानी, और मूली के बीज इसमें से जो कुछ मिलजाय लाभदायक है। और आमाशय के ताकत करने के लिये [illegible] करने वाली दवा ये हैं यथा [illegible] और पन्ना की गोली और इन दवाओं को गुलकंद, [illegible]।

अर्थात् जो कुछ तबियत से होगा तो बुरी चीजों के खाने से हानि न होना उसका साक्षी होगा और जो कुछ दोष की इच्छा से होगा उसमें दोष के अनुकूल रुचि होगी और तबियत की इच्छा नहीं हो तो निर्बलता और आफतों का प्रगट होना उसका साक्षी है क्योंकि मवाद तबियत पर अधिकार रखता है और जानलेना चाहिये कि गर्भवती स्त्रियों को जो आरम्भ में यह रोग उत्पन्न होता है उसका यह कारण है कि उनका रज बच्चेके भोजन के लिये बन्द होजाता है और जबकि बच्चा उससमय में निर्बल होजाता है उसमें से सबरज का भोजन नहीं करसकता उसमें से थोड़ासा मवाद आमाशय में आपड़ता है क्योंकि वह बहनेवाली तरी है सो तबियत ऐसी चीजकी इच्छा करती है जो उसको सुखा दें फिर इसदशा के विरुद्ध वस्तु प्रिय होती हैं और रोग गर्भवती स्त्रियों को बहुधा चौथे महीने जो आता रहता है उसका यह कारण है कि जब पेट में बच्चा बलवान और बड़ा होजाता है उसके खर्चमें विशेष भोजन आता है और इसकाल में इकट्ठे दोष कुछ वमन में भी निकल जाते हैं और कुछ पककर नष्ट होते हैं इसलिये गर्भवती स्त्रियों का खाना बहुत कम होजाताहै और यह दशा उस गर्भवती स्त्रीको जिसके गर्भमें लड़की है उससे जिसके पेटमें लड़का है इस कारण से विशेष होती है कि जो बच्चा नर है उसकी गर्मी बलवान है इस कारण से लड़की की अपेक्षा विशेष भोजन पाता है और इसी कारण से फोक भी बहुत कम रहते हैं और बहुधा ऐसा होता है कि स्त्रीका शरीर निकम्मे दोषों से साफ और पवित्रहो और पेट में बच्चा बलवान हो तथा कुदरती रीति से विशेष भोजन करने का काम पड़े इस कारण से कुछ इच्छा झूठी उत्पन्न हो और जी मिचलाना और वमन उत्पन्न हो जबतक बच्चा गर्भ में रहता है तबीब फरमाता है (इलाज) प्रति मास एकबार या दोबार वमन लाने वाली दवा पीकर वमन करें और जब वमन कराना चाहे तो पहले खारी मछली खवावें पीछे वमनकारक दवा पिलावै और कभी २ दस्तावर दवा भी काम में लावें और मवाद के निकलने के उपरान्त योग्य जवारिशों से आमाशय की पुष्टता करें। इस जगह वमन कारक दवायें हैं यथा शहद का पानी, मूली सिर्के हुई सिकञ्जबीन, सोयाका पानी, और मूली के बीज इनमें से जो कुछ मिकदार लाभदायक है। और आमाशय के दृढ करने के लिये जरूर करने वाली ज्वा ये हैं यथा याकूत का रुब और कन्या की गोली और इन दवाओं को गुर्द, पिस्ता काफूर।

बनायाहुआ अफ्तीमूनका शर्बत और माउलजुब्न मिलाकर पिलाया और आध सेर कचे चुकन्दर और पावभर मिश्री खवातापा और उसपर दो तीननार सुलेमानी नमक और भोजन सूखी रोटी शोरबा में भिगोकर दी (लाभ) गर्भवती स्त्रियोंको और उनके सिवाय जिनको बुरी चीजों की इच्छा मुख्य कर मिट्टी खाने की होजाती है उनको कपूतरके बचे की हड्डी और तीतरके बचे की हड्डी और चकोरके बच्चे की हड्डी और घरके पलेहुए मुर्गे के बच्चे की भुनी हुई हड्डी को चबाना और उसका पानी निगलना उसको नष्ट करदेताहै और उनकी बुरी भूखके दूर करने में और उसकी गर्मी के सतुष्ट करनेमें उक्त जानवरों की भुनी हुई हड्डी अधिक गुणकारीहैं मुख्यकर जो थोड़ीसी मिर्च और नोंन पीसकर पानी में डालें और उक्त हड्डी को उस नोंनके पानी में भिगोकर चबावें और बछड़े का मांस और हिरनका मांस भूनकर नोंन और अजमाइन लगाकर चबाना और उसका पानी निगलना भी यही काम करता है और मिट्टी की इच्छा को दबाता है और मस्तगी, रूमी सौंफ, अलेकुलबतम, जीरा, अजमाइन चबाकर उसका पानी निगललेना लाभदायक है और बहुतसे हकीमों ने कहा है कि बुरी भूख के नष्ट होने के लिये अतिउत्तम उपाय यह है कि प्रातःकाल विना कुछ खाये कबूतर का बचा भुनाहुआ खाय और भोजन करने के उपरांत थोड़ासा परिश्रम करें और कड़वे बादाम का खाना लाभदायक है और हकीम लोग कहते हैं कि मीठा तेल पीना लाभदायक है अभिप्राय यह है कि इस विषय में परीक्षा पर भरोसा करना चाहिये और मिट्टी के बदले में ऐसी वस्तुओं का सेवन करें जिससे मिट्टी की इच्छा दब जाय। वह वस्तु ये हैं यथा भुनाहुआ नशास्ता और वंशलोचन तथा भुनाहुआ पिस्ता और शाह बलूत दस्तोंके लिये लाभदायकहै और मुनक्का दाने निकली हुई और किशमिस लाभदायक है।

सातवां प्रकरण

जूउलकल्ब का वर्णन.

यह ऐसा रोग है कि भोजन करने की इच्छा अपनी असली दशा से विशेष हो जाती है और यद्यपि भोजनकी अधिकता में कुछ २ रीति से पेटभर कर किया जाय परन्तु भूख कम न हो और जो अन्य मनुष्य उसके भोजन में भागी हों तो तृष्णा की अधिकता उससे बढ़कर कर, स्वभाव कुत्ते जैसे कुत्तों का स्वभाव इसी कारण से इस रोग का यह नाम रक्खा गया है इस रोग

बनायाहुआ अफ्तीमूनका शर्बत और माउलजुब्न मिलाकर पिलाया और आध सेर कचे चुकन्दर और पावभर मिश्री खवालाया और ऊपर दो तीनबार सुलेमानी नमक और भोजन सूखी रोटी शोरवा में भिगोकर दी (लाभ) गर्भवती स्त्रियोंको और उनके सिवाय जिनको बुरी चीजों की इच्छा मुख्य कर मिट्टी खाने की होजाती है उनको कबूतरके बचे की हड्डी और तीतरके बचे की हड्डी और चकोरके बच्चे की हड्डी और घरके पलेहुए मुर्गे के बच्चे की भुनी हुई हड्डी को चबाना और उसका पानी निगलना उसको नष्ट करदेताहै और उनकी बुरी भूखके दूर करने में और उसकी गर्मी के सतुष्ट करनेमें उक्त जानवरों की भुनी हुई हड्डी अधिक गुणकारीहै मुख्यकर जो थोड़ीसी मिर्च और नोंन पीसकर पानी में डालें और उक्त हड्डी को उस नोंनके पानी में भिगोकर चबावें और बछड़े का मांस और हिरनका मांस भूनकर नोंन और अजमाइन लगाकर चबाना और उसका पानी निगलना भी यही काम करता है और मिट्टी की इच्छा को दवाता है और मस्तगी, रूमी सौंफ, अलेकुलबतम, जीरा, अजमाइन चबाकर उसका पानी निगललेना लाभदायक है और बहुतसे हकीमों ने कहा है कि बुरी भूख के नष्ट होने के लिये अतिउत्तम उपाय यह है कि प्रातःकाल बिना कुछ खाये कबूतर का बचा भुनाहुआ खाय और भोजन करने के उपरांत थोड़ासा परिश्रम करें और कड़वे बादाम का खाना लाभदायक है और हकीम लोग कहते हैं कि मीठा तेल पीना लाभदायक है अभिप्राय यह है कि इस विषय में परीक्षा पर भरोसा करना चाहिये और मिट्टी के बदले में ऐसी वस्तुओं का सेवन करें जिससे मिट्टी की इच्छा दब जाय। वह वस्तु ये हैं यथा भुनाहुआ नशास्ता और बेदबोधन तथा भुनाहुआ पिस्ता और शाह बलूत दस्तोंके लिये लाभदायकहै और भुनका दाने निकसी हुई और किसमिस लाभदायक है।

सातवां प्रकरण

जूउलकल्ब, का वर्णन.

यह ऐसा रोग है कि भोजन करने की इच्छा अपनी असली दशा से विशेष हो जाती है और यद्यपि भोजनकी अधिकता में बुरी २ रीति से पेटभर कर खियाजाय परन्तु भूख कम न हो और जो अन्य मनुष्य उसके भोजन में भागी हो तो तृष्णा की अधिकता उसमें बढ़कर, भूकने लगे जैसे कुत्तों का स्वभाव इसी कारण से इस रोग का यह नाम रक्खा गया है इस रोग

ऐवं इनमेंसे पीसनेवाली चीजों को पीसकर धनियेके पानीमें मिलाकर टि किया बनाकर खाना कई दिनतक भोजनसे रुचि हटादेताहै और जो हिरन की कलेजी सिर्के में कई दिनतक भिगोकर सुखादें (अथवा) गिले हरदनी खुर्फाके बीज, घीआके बीज की गिरी, ककड़ीके बीज की गिरी, जौका सत् समग अरबी और इन दवाओंमेंसे किसी दवाकी आधी तोल पिस्ता की गिरी और तिल सबको महीन पीसकर तेलमें टिकिया बनाकर खवावे और इन टिकियाओं को एक बार खानेसे ७ दिनतक भूख नहीं लगती और हकीम शेखबूअली सैना कहताहै कि १२५ माशे बनफशाके तेलमें मोम मिलाकर पीना दसदिन तक भूख नहीं लगाती (लाभ) ठंडी दुष्टप्रकृति जो आमाशयके मुख में उत्पन्न होती है और जो विशेष हो या आमाशयके सब भागों में हो तो भूख को खोदेती है क्योंकि इस दशामें आमाशयका मुख रगोंके चूसने का और बादीके गिरने का असर न मानेगा और उसका कार्य बिलकुल नष्ट हो जायगा इसीलिये इसमें यह कह दियाहै कि विशेष नहीं (इलाज) गर्म मा- जून देवें जिससे आमाशयके मुखमें गर्मी पहुंचे जैसे पुष्ट कारक गिरी, अख- रोट और फजनोश (एक शराब) और सदा कहवारहे कि मस्तगी, रूमी सौंफ, जीरा और अजवायन चबायाकरें और रूमी बालछड़, लौंग, जायफल गुलाबके फूलों का आमाशयपर लेपकरें और जो कफ वाली दुष्टप्रकृति होतो पहले कुल्फ कोकाया और हुब्बयारजसे उसके मवाद को निकालें और हकीम लोग कहते हैं कि मीठी शराब इस में लाभदायकहै क्योंकि शराब ठंडी प्रकृति को गर्म करती है और गाढ़े दोष को पकाती और नर्म करती है और उसको उस की जगहसे टाल देती है और इस जगह मीठेका इसलिये भरोसा किया है कि मवादके रोकनेवाली और कसैली भूख को बढ़ाती है और उसकी स- हायताकरती है और सब उपायोंसे अति उत्तम यहहै कि मीठी शराब किसी पि ष्टर्ना चीजके साथ देवें जिससे जो अजीर्ण आमाशयके मुखमें सर्दीसे या सर्द दोषके कारणसे उत्पन्नहुआहै उसको चिकनाई ढीला करनेके कारण से नष्ट करे और मवाद चिकनाई के कारण ढीला होकर शराब का गुण अच्छीतरह माने और जिस रोगी के शरीरमें दूसरे अंगों की प्रकृति गर्म हो और उसके कारणसे भोजन अंगों की तरफ खिंचने वाले हों और आमाशयमें भरनेसे यह रोग पैदा होता है जैसा वर्णन किया गयाहै और उसका उपाय यहहै कि भो- जनके लिये ऐसी चीज ग्रहण करें कि देरमें अजीर्ण हो जैसे हरीसा और वि

ऐवं इनमेंसे पीसनेवाली चीजों को पीसकर धनियेके पानीमें मिलाकर टि किया बनाकर खाना कई दिनतक भोजनसे रुचि हटादेताहै और जो हिरन की कलेजी सिर्के में कई दिनतक भिगोकर सुखादे (अथवा) गिले इस्दनी खुर्फाके बीज, खीराके बीज की मिंगी, ककड़ीके बीज की मिंगी, सौंफ सब समग अरबी और इन दवाओंमेंसे किसी दवाकी आधी तोल पिस्ता की मिंगी और तिल सबको महीन पीसकर तेलमें टिकिया बनाकर खिलावे और इन टिकियाओं को एक बार खानेसे ७ दिनतक भूख नहीं लगती और हकीम बूअलीसैना कहताहै कि १२५ माशे बनफशाके तेलमें मोम मिलाकर पीना दसदिन तक भूख नहीं लगाती (लाभ) ठंडी दुष्टप्रकृति जो आमाशयके मुख में उत्पन्न होती है और जो विशेष हो या आमाशयके सब भागों में हो तो भूख को खोदेती है क्योंकि इस दशामें आमाशयका मुख रगोंके चूसने का और बादीके गिरने का असर न मानेगा और उसका कार्य बिलकुल नष्ट हो जायगा इसीलिये इसमें यह कह दियाहै कि विशेष नहो (इलाज) गर्म मा-जून देवें जिससे आमाशयके मुखमें गर्मी पहुंचे जैसे जुवारिश मिश्री, अख-रोट और फजनोश (एक शराब) और सदा कहतारहै कि मस्तगी, रूमी सौंफ, जीरा और अजवायन चबायाकरैं और रूमी बालछड़, लौंग, जायफल गुलाबके फूलों का आमाशयपर लेपकरैं और जो कफ वाली दुष्टप्रकृति होतो पहले हुब्ब कोकाया और हुब्बयारजसे उसके मवाद को निकाले और हकीम लोग कहते हैं कि मीठी शराब इस में लाभदायकहै क्योंकि शराब ठंडी प्रकृति को गर्म करती है और गाढ़े दोष को पकाती और नर्म करती है और उसको उस की जगहसे टाल देती है और इस जगह मीठेका इसलिये भरोसा किया है कि मवादके रोकनेवाली और कसेली भूख को बढ़ाती है और उसकी स-हायताकरती है और सब उपायोंसे अति उत्तम यहहै कि मीठी शराब किसी चि कनी चीजके साथ देवें जिससे जो अजीर्ण आमाशयके मुखमें सर्दीसे या खट्टे दोषके कारणसे उत्पन्नहुआहै उसकी चिकनाई ढीला करनेके कारण से मेह करैं और मवाद चिकनाई के कारण ढीला होकर शराब का गुण अच्छी तरह माने और जिस रोगी के शरीरमें दूसरे अंगों की प्रकृति गर्म हो और उसके कारणसे भोजन अंगों की तरफ खिंचने वाले हों और आमाशयमें सर्दीहै यह रोग कदा होता है जैसा वर्णन किया गयाहै और इसका उपाय यहहै कि भो-जनके लिये ऐसी चीज ग्रहण करै कि देरमें भेद हो जैसे हरीसा और कि

अधिकता जो सारे अगों की दुष्ट प्रकृति से उत्पन्न होती है दो प्रकार की है एक तो यह है कि दुष्ट प्रकृति सब अगों की ठहराने वाली शक्ति को निर्बल करदे और सब शरीर के रोमांच खोलदे फिर भोजन शरीर में पहुंचकर अल्द पचजाय और रोमांचों के द्वारा निकल जाय और भोजन की आवश्यकता बाकी रहै दूसरे यह है कि दुष्ट प्रकृति सब शरीर में विशेष हो जाय और उस तरी को जिससे अग भोजन खाते हैं सर्वदा खर्च करैं इस कारण से सम्पूर्ण अगों की खींचने वाली शक्ति को खींचने की आवश्यकता रहै यहां तक कि चूसने का असर आमाशय के मुख तक आकर ठहरै और यह रोग उत्पन्न हो और यह रोग जब बहुत से मवादों के निकलने के उपरान्त उत्पन्न होता है अथवा शरीर के रोमांच खुलने से और मवाद के नष्ट होने की अधिकता से उत्पन्न होता है तो इसी प्रकार से होता है (लाभ) बहुधा ऐसा होता है कि सब शरीर के रोमांच खुलें या मवाद के निकलने की अधिकतासे अग भोजन की रुचि करने वाले हो जांय । किताब कामिलुस्सनाआ का बनाने वाला कहता है कि यह रोग मवाद आदि के निकलने के उपरान्त उत्पन्न होतो उस रोगी को भोजन विशेष जिन से खून उत्पन्न हो दिन भर में तीन चार बार खवावें जिससे आमाशय पर भारापन न हो और जल्दी पचजाय और उसके शरीर के रोमांचों को बद करदें जिससे कोई चीज न निकले जैसे ठंडे पानी से न्हाना और फिटकिरी पानी में औटाकर उस पानीमें न्हाना और ठंडे स्थानों में बैठना और अधौराका तेल, गुलरोगन और बेदके तेल से शरीर को मलना आदि और हकीम आलियास का बेटा कहता है कि जो यह रोग मवाद के निकलने या बहुत दिन भूखे रहने से उत्पन्न हो और सम्पूर्ण अंग भोजन की रुचि करें और दुबले मनुष्यों की भूख भी इसीमें शामिल हैं तो चाहिये कि रोगी को परिश्रम भ्रमण सवारी पर चढ़ना, क्रोध खुशी, चिन्ता, भय, स्त्री सगम, कूदना, भागना और सब मवाद के नष्ट करनेवाले कामोंसे बचावें और तबियतके मुलायम करनेकी रक्षा करे। हकीम [illegible] कहता है कि जो यह रोग मवाद के निकलने या नष्ट होनेकी अधिकता से उत्पन्न हो जैसा कि दुबले और निर्बल मनुष्यों को बहुधा हो जाता है [illegible] [illegible] है कि मीठी और चिकनी चीजें मक्खन और [illegible] प्रकार का [illegible] [illegible] मुर्गी और मुर्गी का मेस और गोश्त [illegible] [illegible] तरी [illegible] न पहुंचानी चाहिये क्योंकि आमाश[illegible]

अधिकता जो सारे अगों की दुष्ट प्रकृति से उत्पन्न होती है दो प्रकार की है एक तो यह है कि दुष्ट प्रकृति सब अगों की ठहराने वाली शक्ति को निर्बल करदे और सब शरीर के रोमांच खोलदे फिर भोजन शरीर में पहुंचकर अल्द पचजाय और रोमांचों के द्वारा निकल जाय और भोजन की आवश्यकता बाकी रहे दूसरे यह है कि दुष्ट प्रकृति सब शरीर में विशेष हो जाय और उस तरी को जिससे अंग भोजन खाते हैं सर्वदा खर्च करैं इस कारण से सम्पूर्ण अगों की खींचने वाली शक्ति को खींचने की आवश्यकता रहै यहां तक कि चूसने का असर आमाशय के मुख तक आकर ठहरै और यह रोग उत्पन्न हो और यह रोग जब बहुत से मवादों के निकलने के उपरान्त उत्पन्न होता है अथवा शरीर के रोमांच खुलने से और मवाद के नष्ट होने की अधिकता से उत्पन्न होता है तो इसी प्रकार से होता है (लाभ) बहुधा ऐसा होता है कि सब शरीर के रोमान्च खुलें या मवाद के निकलने की अधिकतासे अंग भोजन की रुचि करने वाले हो जांय । किताब कामिलुस्सनाआ का बनाने वाला कहता है कि यह रोग मवाद आदि के निकलने के उपरान्त उत्पन्न होतो उस रोगी को भोजन विशेष जिन से भूख उत्पन्न हो दिन भर में तीन चार बार खवावें जिससे आमाशय पर भारापन न हो और जल्दी पचजाय और उसके शरीर के रोमाचों को बंद करदें जिससे कोई चीज न निकले जैसे ठंडे पानी से न्हाना और फिटकिरी पानी में औटाकर उस पानीमें न्हाना और ठंडे स्थानों में बैठना और अधौराका तेल, गुलरोगन और बेदके तेल से शरीर को मलना आदि और हकीम आलियास का बेटा कहता है कि जो यह रोग मवाद के निकलने या बहुत दिन भूखे रहने से उत्पन्न हो और सम्पूर्ण अंग भोजन की रुचि करें और दुबले मनुष्यों की भूख भी इसीमें शामिल है तो चाहिये कि रोगी को परिश्रम भ्रमण सवारी पर चढ़ना, क्रोध खुशी, चिन्ता, भय, स्त्री संगम, कूदना, भागना और सब मवाद के नष्ट करनेवाले कामोंसे बचावे और तबियतके हुलायम करनेकी रक्षा करे । हकीम [illegible] कहता है कि जो यह रोग मवाद के निकलने या नष्ट होनेकी अधिकता से उत्पन्न हो जैसा कि दुबले और निर्बल मनुष्यों को बहुधा हो जाता है [illegible] [illegible] है कि मीठी और चिकनी चीजें मक्खन और [illegible] का [illegible] [illegible] और मुर्गी का मेल और गोश्त [illegible] [illegible] [illegible] विशेष न पहुंचानी चाहिये क्योंकि आमाश[illegible]

लहसन भुना हुआ, खबीस (यह मलीदा जो घी की चुपड़ी रोटी के टूकर के बूरा मिलाकर बनावे) फालूदा, और लौंजीना खवावे जो गाढ़ा खून उत्पन्न करे और रोमाचों में चिपटजाय इस कारण से भोजन अंगों की तरफ जल्दी न खिंचे और यह प्रगट है कि जब आमाशय खाने से भरा रहेगा तो आमाशय का मुख रगों के चूसने के गुण और अंगों की रुचि को न मानेगा और शेष उपाय इस प्रकार के हैं जिनका वर्णन गर्मी के कारण से रोमांचों के बन्द होने के प्रकरण में होचुका है खबीसा और लौंजीना एक प्रकार का हलुआ है (सूचना) जब कि इसमें बिनादस्तावर दवाओं के पीने से दस्त आवें तो आरोग्यता का चिन्ह है क्योंकि इससे मालूम होता है कि अंगों को आवश्यकता नहीं रही है और खट्टी डकार का आना भी अच्छा चिन्ह है क्योंकि इस बात को बताता है कि भोजन आमाशय में ठहरता है और यही प्रयोजन है । जान लेना चाहिये कि खाने की रुचि जो ऐसे निर्बल मनुष्यों को जो बहुत समय तक ज्वर में ग्रसित रहे हों उत्पन्न हो जाती है यह इसी प्रकार की होती है कि अंग भोजन की रुचि करते हैं (सूचना) जो चीज तेज और खरी हो और जो चीज गर्म और गांठ के खोलने वाली हो ऐसी चीज इस में त्याग देवे क्योंकि ऐसी चीज निकालने वाली होती है (सेब की शराब के बनाने की विधि) यह इस रोग में लाभदायक है सेब अस्फहानी छीलके और बीज निकालकर मूसलसे ओखली में कूटकर दश सेर पानी निकाले और पकावें और जब दो सेर रहजाय तो सफेद कन्द मिलाकर मध शर्बत कासा गाढ़ा होजाय तो उतारलें और कोई हकीम सेबके पानी को औटाते हैं और उससे आधी सफेद कन्द मिलाते हैं और जो गाढ़ होने के समय थोड़ासा गुलाब मिलालें तो अति उत्तम होगा । चौथा भेद यह है कि कफ का दोष दिमाग से आमाशय के मुखपर गिरे और इस जगह आमाशय की निर्बलता की गर्मी से खट्टा होजाय और खट्टे होने के कारण से आमाशय के मुख में जलन और सुजनी उत्पन्न हो और अत्यन्त भूख लगती तबियत रतुप न हो उत्पन्न हो इसका चिन्ह यह है कि खट्टी डकार आवें और जमना प्राप्त होजुके और मन विशेष आवे और नर हो और प्यास कम हो और जो कुछ खाय पचा तो उसी समय निकलजाय और उसी प्रकार तबियत भी [illegible] की भांति करे (इलाज) पहले तो नजले को बन्द करदे जिससे कारण बन्द होजाय फिर मवाद के निकालने के लिये [illegible] और [illegible]

लहसन भुना हुआ, खबीस (वह मलीदा जो घी की चुपड़ी रोटी के टूकड़ कर के बूरा मिलाकर बनावे) फालूदा, और लौंजीना खवावे जो गाड़ा खून उत्पन्न करे और रोमाचों में चिपटजाय इस कारण से भोजन अगों की तरफ जल्दी न खिचे और यह प्रगट है कि जब आमाशय खाने से भरा रहेगा तो आमाशय का मुख रगों के चूसने के गुण और अगों की रुचि को न मानेगा और शेष उपाय इस प्रकार के हैं जिनका वर्णन गर्मी के कारण से रोमांचों के बन्द होने के प्रकरण में होचुका है खबीसा और लौंजीना एक प्रकार का हलुआ है (सूचना) जब कि इसमें बिनादस्तावर दवाओं के पीने से दस्त आवें तो आरोग्यता का चिन्ह है क्योंकि इससे मालूम होता है कि अगों को आवश्यकता नहीं रही है और खट्टी डकार का आना भी अच्छा चिन्ह है क्योंकि इस बात को बताता है कि भोजन आमाशय में ठहरता है और यही प्रयोजन है। जान लेना चाहिये कि खाने की रुचि जो ऐसे निर्बल मनुष्यों को जो बहुत समय तक ज्वर में ग्रसित रहे हों उत्पन्न हो जाती है वह इसी प्रकार की होती है कि अग भोजन की रुचि करते हैं (सूचना) जो चीज तेज और खरी हो और जो चीज गर्म और गांठ के खोलने वालीहो ऐसी चीज इस में त्याग देवे क्योंकि ऐसी चीज निकालने वाली होतीहै।(सेब की शराब के बनाने की विधि) यह इस रोग में लाभदायक है सेब असफहानी छीलके और बीज निकालकर मूसल्से ओखली में कूटकर दश सेर पानी निकालें और पकावें और जब दो सेर रहजाय तो सफेद कन्द मिलाकर सब शर्बत कासा गाढ़ा होजाय तो उतारलें और कोई हकीम सेवके पानी को औटाते हैं और उससे आधी सफेद कन्द मिलाते हैं और जो गाढ़ होने के समय थोड़ासा गुलाब मिलालें तो अति उत्तम होगा। चौथा भेद यह है कि कफ का दोष दिमाग से आमाशय के मुखपर गिरै और इस जगह आमाशय की निर्बलता की गर्मी से खट्टा होजाय और खट्टे होने के कारण से आमाशय के मुख में खिचन और सुरसुरी उत्पन्न हो और अत्यन्त भूख जिसको शहवत कल्बी न हो उत्पन्न हो इसका चिन्ह यह है कि खट्टी डकार आवें और नमना पान होजुके और मन विक्षेप आवे और वह हो और प्यास कम हो और जो कुछ खाय पाखाना तो वसी समय निकलजाय और इसी तरह तबियत भी ... करे (इलाज) पहले ... को बन्द करदें जिससे कारण बन्द होजाय फिर कफ के निकालने के लिये यारज फकरा और एलुवा

है और इस कारणसे ज्ञानशक्ति भी नष्ट होजाती है तो रगों के घुसने और बादी के जलनेसे आमाशय का मुख चैतन्य नहीं होता जिससे खानेकी रुचि उत्पन्न हो और इसका चिन्ह यह है कि प्रतिदिन निर्बलता विशेष हो और शक्ति कम होती जाय और शरीर दुबला होता जाय इसलिये कि नष्ट हुई चीजका बदलना नहीं आता है और भूख न लगे और जब आमाशयके मुखपर हाथ रक्खें तो और अंग की अपेक्षा शीतल मालूम हो परन्तु यह चिन्ह अन्त में प्रगट होता है क्योंकि सर्दी विशेष होजाती है और असली गर्मी दबजाती है और अचेतता भी इसरोगमें होजाती है इस कारणसे आत्मा नष्ट होती है और भोजन नहीं पहुचता और आमाशय के संयोग से दिल कष्ट पाता है हकीम इन्ताकी कहता है कि अचेततासे चेतमें लानेका यह उपाय है कि ठंडे पानी आदिका मुख पर छींटा दें और छींक लाने वाली सुगन्धित चीजें जैसे मिर्च और चमेली के फूल में मिलाकर सूंघना लाभदायक है और आराम होने के उपरान्त सूखी रोटी निर्मल शराब और गुलाब, सेब विही का पानी और खट्टे मीठे अनार का पानी मिला कर शक्ति के अनुसार पिवाना लाभ दायक है और इस रोग में मांस की सुगन्धि को पंखे की हवा से नाक में पहुचाना चैतन्यता और भोजनकी रुचि के लिये लाभदायक है और वक्त पानी को मिलाकर और कभी केवल एक या दो चीजोंके पानीसे इस प्रकार के रोगी के लिये भोजन बनाते हैं और समाक (तुवरक के पेड या फल) धनिया नीबू और नीबू का छिलका मिलाकर मांस आदि पर छिड़क कर काम में लाना परीक्षा की हुई चीजोंमें से है और चंदन अगर तथा तुल सी का आमाशयपर लेपकर और बेद के पानी गुलाब और अर्कतराके पानीसे मुख धोया करें और जान लेना चाहिये कि इस प्रकारकी जुअुल बकर (बैल की सी भूख) सहव तरुल्ली (कुत्ते की सी भूख) इन दोनों रोगों के उप रान्त उत्पन्न होती है क्योंकि जब तक आमाशय के मुख में सर्दी विशेष नहीं है जबतक विशेष भूख जिस से तबियत सन्तुष्ट नहीं उत्पन्न होगी है जैसा कहचुके हैं और जब अधिक होजाती है तो जुअुल बकर उत्पन्न करती है जैसा कि हम कहचुके हैं और यह रोग और दोनों रोगों की अपेक्षा विशेष उत्पन्न होताहै और बहुधा उन रोगों को उत्पन्न होताहै जो विशेष जाडेमें यात्रा करतेहैं और सर्दी खाते हैं मुख्यकर इससे पहले भूखे रहे या भोजन कम खाया और यह प्रगट है कि विशेष सर्दी आमाशयके मुख को सकोड़ देती है और उसकी ज्ञानशक्ति और

है और इस कारणसे ज्ञानशक्ति भी नष्ट होजाती है तो रगों के धूसने और बादी के जलनेसे आमाशय का मुख चैतन्य नहीं होता जिससे खानेकी रुचि उत्पन्न हो और इसका चिन्ह यह है कि प्रतिदिन निर्बलता विशेष हो और शक्ति कम होती जाय और शरीर दुबला होता जाय इसलिये कि नष्ट हुई चीजका बदलना नहीं आता है और भूख न लगे और जब आमाशयके मुखपर हाथ रक्खें तो और अंग की अपेक्षा शीतल मालूम हो परन्तु यह चिन्ह अन्त में प्रगट होता है क्योंकि सर्दी विशेष होजाती है और असली गर्मी दबजाती है और अचेतता भी इसरोगमें होजाती है इस कारणसे आत्मा नष्ट होती है और भोजन नहीं पहुचता और आमाशय के संयोग से दिल कष्ट पाता है हकीम इलाकी कहता है कि अचेततासे चेतमें लानेका यह उपाय है कि ठंडे पानी आदिका मुख पर छींटा दें और छींक लाने वाली सुगन्धित चीजें जैसे मिर्च और चमेली के फूल में मिलाकर सूंघना लाभदायक है और आराम होने के उपरान्त सूखी रोटी निर्मल शराब और गुलाब, सेब बिही का पानी और खट्टे मीठे अनार का पानी मिला कर शक्ति के अनुसार पिवाना लाभ दायक है और इस रोग में मांस की सुगन्धि को पसे की हवा से नाक में पहुचाना चैतन्यता और भोजनकी रुचि के लिये लाभदायक है और उक्त पानी को मिलाकर और कभी केवल एक या दो चीजोंके पानीसे इस प्रकार के रोगी के लिये भोजन बनाते हैं और समाक (तुवक्न के पेड़ या फल) धनिया नीबू और नीबू का छिलका मिलाकर मांस आदि पर छिड़क कर काम में लाना परीक्षा की हुई चीजोंमें से है और चंदन अगर तथा गुलनी का आमाशयपर लेपकरे और बेद के पानी गुलाब और अफीतके पानीसे मुख धोया करे और जान लेना चाहिये कि इस प्रकारकी जुज्उल बकर (बैल की सी भूख) सहब कलबी (कुत्ते की सी भूख) इन दोनों रोगों के उपरान्त उत्पन्न होती है क्योंकि जब तक आमाशय के मुख में सर्दी विशेष नहीं है जबतक विशेष भूख जिस से तबियत सन्तुष्ट नहो उत्पन्न होती है जैसा कहचुके हैं और जब अधिक होजाती है तो जुज्उल बकर उत्पन्न करती है जैसा कि हम कहचुके हैं और यह रोग और दोनों रोगों की अपेक्षा विशेष उत्पन्न होताहै और बहुधा उन रोगों को उत्पन्न होताहै जो विशेष आदेमें पाया करतेहैं और सर्दी वाले हैं मुख्यकर इसमें पहले भूख रहे या भोजन कम खाय और यह मगर्ज कि है केवल सर्दी आमाशयके मुख को मलीन देती है और उसकी ज्ञानशक्ति और

है और इस कारणसे ज्ञानशक्ति भी नष्ट होजाती है जो रगों के घुसने और बादी के जलनेंसे आमाशय का मुख चैतन्य नहीं होता जिससे खानेकी रुचि उत्पन्न हो और इसका चिन्ह यह है कि प्रतिदिन निर्बलता विशेष हो और शक्ति कम होती जाय और शरीर दुबला होता जाय इसलिये कि नष्ट हुई चीजका बदलना नहीं आता है और भूख न लगे और जब आमाशयके मुखपर हाथ रक्खें तो और अंग की अपेक्षा शीतल मालूम हो परन्तु यह चिन्ह अन्त में प्रगट होता है क्योंकि सर्दी विशेष होजाती है और असली गर्मी दबजाती है और अचेतता भी इसरोगमें होजाती है इस कारणसे आत्मा नष्ट होती है और भोजन नहीं पहुंचता और आमाशय के संयोग से दिल कष्ट पाता है हकीम इन्ताकी कहता है कि अचेततासे चेतमें लानेका यह उपाय है कि ठंडे पानी आदिका मुख पर छींटा दें और छींक लाने वाली सुगन्धित चीजें जैसे पिर्च और चमेली के फूल में मिलाकर सुंघना लाभदायक है और आराम होने के उपरान्त सूखी रोटी निर्मल शराब और गुलाब, सेब बिही का पानी और खट्टे मीठे अनार का पानी मिला कर शक्ति के अनुसार पिवाना लाभ दायक है और इस रोग में मांस की सुगन्धि को पत्ते की हवा में नाक में पहुंचाना चैतन्यता और भोजनकी रुचि के लिये लाभदायक है और इक पानी को मिलाकर और कभी केवल एक या दो चीजोंसे पानीस इस प्रकार के रोगी के लिये भोजन बनाते हैं और समाक (तुतरा के पेड़ का फल) धनिया नींबू और नींबू का छिलका मिलाकर मांस आदि पर छिड़क कर काम में लाना परीक्षा की हुई चीजोंमें से है और चंदन अगर तथा मुश्की का आमाशयपर लेपकरें और बेद के पानी गुलाब और अर्कारके पानीसे मुख धोया करें और जान लेना चाहिये कि इस प्रकारकी जुउल बकर (बैल की सी भूख) सहत कल्बी (कुत्ते की सी भूख) इन दोनों रोगों के उप रान्त उत्पन्न होतीं हैं क्योंकि जब तक आमाशय के मुख में सर्दी विशेष नहीं है तबतक विशेष भूख जिस से तबियत सतुष्ट नहो उत्पन्न होती है जैसा कहचुके हैं और जब अधिक होजाती है तो जुउल बकर उत्पन्न करती है जैसा कि हम कहचुके और यह रोग और दोनों रोगों की अपेक्षा विशेष उत्पन्न होताहै और बहुधा उन लोगों को उत्पन्न होताहै जो विशेष जाडेमें यात्रा करतेहैं और यहीं मालूम है मुख्यकर इससे पहले भूखे रहें या भोजन कम खाँय और यह प्रगटहै कि विशेष सर्दी आमाशयके मुख को बिगाड़ देती है और उसकी ज्ञानशक्ति और

है और इस कारणसे ज्ञानशक्ति भी नष्ट होजाती है जो रगों के घुसने और बादी के जलनेसे आमाशय का मुख चैतन्य नहीं होता जिससे खानेकी रुचि उत्पन्न हो और इसका चिन्ह यह है कि प्रतिदिन निर्बलता विशेष हो और शक्ति कम होती जाय और शरीर दुबला होता जाय इसलिये कि नष्ट हुई चीजका बदलना नहीं आता है और भूख न लगे और जब आमाशयके मुखपर हाथ रक्खें तो और अंग की अपेक्षा शीतल मालूम हो परन्तु यह चिन्ह अन्त में प्रगट होता है क्योंकि सर्दी विशेष होजाती है और असली गर्मी दबजाती है और अचेतता भी इसरोगमें होजाती है इस कारणसे आत्मा नष्ट होती है और भोजन नहीं पहुंचता और आमाशय के संयोग से दिल कष्ट पाता है हकीम इन्ताकी कहता है कि अचेततासे चेतमें आनेका यह उपाय है कि ठंढे पानी आदिका मुख पर छींटा दें और छींक लाने वाली सुगन्धित चीजें जैसे पिर्ने और चमेली के फूल में मिलाकर सुंघना लाभदायक है और आराम होने के उपरान्त सूखी रोटी निर्मल शराब और गुलाब, सेब बिही का पानी और खट्टे मीठे अनार का पानी मिला कर शक्ति के अनुसार पिवाना लाभ दायक है और इस रोग में मांस की सुगन्धि को पके की हवा से नाक में पहुंचाना चैतन्यता और भोजनकी रुचि के लिये लाभदायक है और उक्त पानी को मिलाकर और कभी केवल एक या दो चीजोंके पानीस इस प्रकार के रोगी के लिये भोजन बनाते हैं और सुमाक (तुतड़ग के पेड़ का फल) धनिया नीबू और नीबू का छिलका मिलाकर मांस आदि पर छिड़क कर काम में लाना परीक्षा की हुई चीजोंमें से है और चंदन अगर तथा मुश्की का आमाशयपर लेपकरें और बेद के पानी गुलाब और अर्फीराके पानीसे मुख धोया करें और जान लेना चाहिये कि इस प्रकारकी जुउल बकर (बैल की सी भूख) सहव तकल्बी (कुत्ते की सी भूख) इन दोनों रोगों के उपरान्त उत्पन्न होती है क्योंकि जब तक आमाशय के मुख में सर्दी विशेष नहीं है तबतक विशेष भूख जिस से तबियत सन्तुष्ट नहो उत्पन्न होती है जैसा कहचुके हैं और जब अधिक होजाती है तो जुउल बकर उत्पन्न करती है जैसा कि इस कारणें और यह रोग और दोनों रोगों की अपेक्षा विशेष उत्पन्न होताहै और बहुधा उन रोगों को उत्पन्न होताहै जो विशेष जाड़ेमें यात्रा करते हैं और सर्दी खाते हैं मुख्यकर इससे पहले भूखे रहें या भोजन कम खाय और यह प्रगटहै कि विशेष सर्दी आमाशयके मुख को प्रकाशहीन करती है और उसकी ज्ञानशक्ति और

के समय चैतन्य करने पीछे उपाय जिनका वर्णन पहले भेद में होचुका है
काम में लावें और चैतन्यता की दशा में आमाशय की पवित्रता ऐसी चीज़
से करें कि जो रोग के मवाद के योग्य हो और शुष्कता में परिश्रम करें और
कफकी दशामें गर्म चीजें काम में लावें और उचित है कि मवाद के निकालने
में शक्ति का ध्यान अवश्य रक्खें यहां तक कि जो शक्ति को ठहराव न हो तो बन्द करदें
इसीलिये हकीम लोग कहते हैं कि इसका इलाज बहुत कठिन है क्योंकि आमाशय
के मवाद का निकालना योग्य है और निर्बलता उसके निकालनेको रोकती
है जैसा किताब का बनाने वाला कहता है कि इसमें मवाद का निकालना
बहुतही कठिन है क्योंकि यह बिना वमन और दस्तों के नहीं होसकता और
शक्ति को कम होना और अचेतता का होना इसको रोकता है।

नवां प्रकरण।

समय पर भोजन न मिलने से मूर्छा का वर्णन।

यह इस प्रकार पर है कि मनुष्य को भूखे रहने की शक्ति न हो और
जो भूख के समय भोजन न मिले तो अचेत होजाय यह रोग ऐसे मनुष्य को
होता है जिस के आमाशय के मुख में विशेष निर्बलता हो और उसमें साथ
उसमें और सब अंग में विशेष गर्मी उत्पन्न हो इसलिये कि सब अंग गर्म होंगे
तो खेंच और पचाव विशेष होगा और इस कारण से कि आमाशय निर्बल
है रगों के चूसने से कष्ट पावेगा और जब कि दिल के आमाशय के मुख से
सम्बन्ध रखता है तो उसके कष्ट से कष्ट पावेगा और अवश्य अचेतता उत्पन्न
होगी और उसका चिन्ह है कि जब भूख हो और खाने में देरलगे तो
अचेतता उत्पन्न हो और प्यास की अधिकता और तबियत में सुस्ती और
जो कुछ आमाशय की गर्म हुए प्रकृति में वर्णन कियागया है मगर हो
(इलाज) अचेतता की दशा में वही उपायकरें कि बेहोशी के लिये जिसका
वर्णन हो चुका है और चैतन्य होने के समय कारण के नष्ट करने में परिश्रम
करें और जो भोजन कि मसाला और शोरबे में डले हों और आमाशय के
मुख के लिये पुष्टि कारक हो खावें जैसे कि रोटी और खट्टे मीठे अनार के
पानी और सेब के पानी में अथवा ऐसे ही पानियों में तर करें और
योग्य है कि भोजन तयार रहै जिससे भूखके समय देर न हो और चाहिये कि खाने
में सुस्ती न करें जिससे दूसरे रोग न उपजें और हकीम लोग कहते हैं कि जो
जल्द उपाय न कियाजायगा तो अन्तमें मिर्गी होजायगी और हकीम जिद्दी कह

के समय चैतन्य करने वाले उपाय जिनका वर्णन पहले भेद में होचुका है काम में लावें और चैतन्यता की दशा में आमाशय की पवित्रता ऐसी चीज़ से करें कि जो रोग के मवाद के योग्य हो और पुष्टता में परिश्रम करें और कफकी दशामें गर्म चीजें काम में लावें और उचित है कि मवाद के निकालने में शक्ति का ध्यान अवश्य रक्खें यहां तक कि जो शक्ति को ठहराव नहोतो बन्द रक्खें इसीलिये हकीम लोग कहतेहैं कि इनका इलाज बहुत कठिनहै क्योंकि आमाशय के मवाद का निकालना योग्य है और निर्बलता उसके निकालनेको रोकती है जैसा किताब का बनाने वाला कहता है कि इनमें मवाद का निकालना बहुतही कठिन है क्योंकि यह बिना वमन और दस्तों के नहीं होसकता और शक्ति की कम होना और अचेतता का होना इसको रोकता है ।

नवां प्रकरण

समय पर भोजन न मिलने से मूर्छा का वर्णन ।

यह इस प्रकार पर है कि मनुष्य को भूखे रहने की शक्ति न हो और जो भूख के समय भोजन न मिले तो अचेत होजाय यह रोग ऐसे मनुष्य को होता है जिस के आमाशय के मुख में विशेष निर्बलता हो और उसमें साथ उसमें और सब अंग में विशेष गर्मी उत्पन्न हो इसलिये कि सब अंग गर्म होंगे तो रेचि और पचाव विशेष होगा और इस कारण से कि आमाशय निर्बल है रगों के चूसने से कष्ट पावेगा और जब कि दिल के आमाशय के मुख से सम्बन्ध रखता है तो उसके कष्ट से कष्ट पावेगा और अवश्य अचेतता उत्पन्न होगी और उसका चिन्ह है कि जब भूख हो और खाने में देरलगे तो अचेतता उत्पन्न हो और प्यास की अधिकता और तबियत में सुस्ती और जो कुछ आमाशय की गर्म हुए प्रकृति में वर्णन कियागया है मगर हो (इलाज) अचेतता की दशा में यही उपायहै कि चेतआने के लिये जिसका वर्णन हो चुका है और चैतन्य होने के समय कारण के नष्ट करने में परिश्रम करें और जो भोजन कि बलदा और शीघ्र में पचे हों और आमाशय के मुख के लिये पुष्टि कारक हो खवावें जैसे कि रोटी और खट्टे मीठे अनार के पानी और सेब के पानी में अन्य ऐसे ही पानियों में तर करें और योग्यहै कि भोजन तयार रहें जिससे भूखके समय देर न हो और चाहिये कि रास्ता में मुसाफ़िरी न करें जिससे दूसरे रोग न उपजावें और हकीम लोग कहतेहैं कि जो अन्य उपाय न कियाजायगातो अन्तमें मिर्गी होजायगी और हकीम जिरजी। कर

पिलावें और लहसन शहद में मिलाकर खाय और भोजनमें मुर्गेका भुनाहुआ मांस और चना का पानी ले और खांड और बादाम के तेल से बनेहुए सारे लाभदायक हैं और जो चीजें मवाद को गाढ़ा करती हैं जैसे हरीरा, कट पाया और गाढ़े मेवा आदि त्याग देवै और जानलें कि इस विषय में हकीमों की एक सम्मति है कि जिस प्यास का कारण खारी कफ हो जो आमाशयमें उत्पन्नहो या उन महीन रगों में जो आंतों और आमाशय के मध्य में हैं गांठ पड़जाना इसका कारण हो तो उसके काटने में लहसन मुख्य है। किताब अक्सीरे अजारजमशाही वाले ने लिखा है कि प्यास की अधिकता या तो किसी अंग की दुष्ट प्रकृति से होती है या सब शरीर की दुष्ट प्रकृति प्यास उत्पन्न करती है या बाहरी कारणों में से कोई कारण प्यास की अधिकता का हेतु होता है परन्तु किसी अंग की दुष्ट प्रकृति कि जिससे प्यास की अधिकता हो नसेरा है और आमाशय और अंतड़ियां कि जिनको अवसायसायम कहते हैं और जिगर, गुर्दा, दिल और फेफड़ा और बाहर की दुष्ट प्रकृति के चार भेद हैं एक तो खारी गाढ़े भोजन का खाना। दूसरे खारी नदी का पानी और गर्म दवा खाना। तीसरे पुरानी शराब पीना। चौथे गर्म हवा में ठहरना। जो अंतड़ियों के कारण से प्यास उत्पन्न हो तो पहिले बासलीक की फस्द खोलना चाहिये और इर्दके फाड़े के साथ माउल्जुबन, साढ़े दस माशे पीली हड़ और [illegible] रत्ती सांभर नोंन चूरा और मकमूनियां मिलाकर मवाद निकालना इसका इलाज है और मवाद के निकालने के उपरान्त १५ दिन तक मठेका पीना लाभदायक है और हकीम सदीद काजरूनी कहता है कि जो प्यास गाढ़े या चेपदार कफसे होवो शहद का पानी या गर्म पानी और चूरा या जुलाब मुलहटी और सौंफ गोंद और सिकन्जबीन इन दोष के पतला करने, काटने, पचाने और नष्ट करने के लिये हैं और जो खारी दोष प्यास का कारण हो तो जौ का पानी मवाद के निकालने और धोने और शुद्ध करने तथा मज्जन, मदकाब और [illegible] के लिये हैं और इसी प्रकार की सब नीति [illegible] या वमन से मवादके निकालनेके उपरान्त हैं और हकीम [illegible] ने कहा है कि कभी गाढ़े चेपदार [illegible] के लिये सौंठ के मुरब्बे की आवश्यकता होती है और नींबू का मुरब्बा और सिकंजबीन बहुत लाभदायक है और यह प्यास [illegible] प्यास का एक भेद है और हकीम लोग कहते हैं कि [illegible] खाना प्यासको शुद्ध करनेवाला है और हकीम इबनेजुहर [illegible] कहता है कि जो प्यास खारी गाढ़े कफ से उत्पन्न हो तो गर्म पानी पीकर वमन करै और मवाद के निकलने के उपरान्त [illegible] या गुलकन्द काम में लावें और हलके भोजन [illegible] इसका

ने वाली शक्ति निर्बल होगी तो भोजन और पानी जिगरकी तरफ जैसा चा हिये न खिंचैगा इस कारणसे फिर भोजन और पानी अंगोंमें न पहुंचने से अंगोंमें गर्मी उत्पन्न हो और पानी की रुचि भी उत्पन्न हो छटा भेद वह है जिगरमें गांठ पड़जाय और सूजन की विधिपर पानीको अंगों की तरफ आने से रोकदे जैसा जलन्धर में प्रगट होता है। सातवां भेद वह है कि गर्म दुष्ट प्रकृति गुर्दे में उत्पन्न हो और उसके कारणसे गुर्दा जिगरसे पतलेपन को प्रमाण से विशेष खींचें और वैसाही उसको मसाने की तरफ निकालदे इसी तरह पर सर्वदा खींचने और निकालने में आरूढ़ रहे और जब कि पानीपन जिगर में न ठहरसके और शरीर में प्रवेश नहो और ऊपरकी तरफ न जासकें तथा पानीकी रुचि बाकी रहे और पानीका पीना और हवाका कान में जाना कुछ लाभदायक न हो जैसा जया बीतुस (वह रोग जिसमें मनुष्य पानी पीता है और तुर्त पेशाब के द्वारा निकलजाता है) में होता है और इस प्रकार के चिन्ह और इलाजों का वर्णन इस अंगके रोगों में आवेगा। आठवां भेद वह है कि पुरानी शराब के पीने या खारी पानी पीने से या लहसन और प्याज के खाने से और ऐसे भोजन से जो प्रत्यक्ष में गर्म हो प्यास उत्पन्न हो और प्रगट है कि यह चीजें आमाशय को गर्म करती हैं परन्तु खारी पानी इसके सिवाय उसका कड़वापन और खारी होने के कारण से तबियत चाहती है कि ठंडे पानी सेआमाशय को धोडाले बहुधा यह पानी पेट को नर्म और तरीयों को निकालताहै और खुश्की बढ़ाता है फिर तबियत विशेष पानी की इच्छा करती है (इलाज) जौका पानी अथवा गर्मी को कम करने वाली दवा जैसे ईसबगोल, बिही दानेका लुआब, खट्टी मीठी तरबूज और ककड़ी का पानी, खुर्फा का शीरा, खट्टे मीठे सेवका रुब्ब आलूका पानी और कच्चे अंगूरका रुब्ब और जो इन दवाओं को बर्फ में ठंडा करलेंद तो विशेष लाभदायक हो और जो यह जाने कि खूनमें विशेष गर्मी आगई है और ठंडके पहुंचने से सहजमें कम नहीं होती है तो फस्द खोलें जबकि आयु, वर्ष ऋतु और प्रकृति अनुकूल और सहायक हों। नवां भेद वह है कि जुलाब की दवाओं से विशेष दस्तआवें और इसी कारण से फसाद के निकलने की अधिकता असली तरियों को निकालती है और खुश्की को लाती है और तरी पहुंचाने के लिये पानी की रुचि उत्पन्न करती है (इलाज) इसरमियात बर्फमें ठंडा करलेंदे और दस्तों के बन्द करने का उपाय करें इस तरह पर कि सत्तू और सूखी रोटी अनारके पानीमें मिलाकर

ने वाली शक्ति निर्बल होगी तो भोजन और पानी जिगरकी तरफ जैसा चा हिये न खिंचैगा इस कारणसे फिर भोजन और पानी अंगोंमें न पहुंचने से अगोंमें गर्मी उत्पन्न हो और पानी की रुचि भी उत्पन्न हो छटा भेद यह है जिगरमें गांठ पड़जाय और सूजन की विधिपर पानीको अंगों की तरफ जाने से रोकदे जैसा जलन्धर में प्रगट होता है। सातवां भेद यह है कि गर्म दुष्ट प्रकृति गुर्दे में उत्पन्न हो और उसके कारणसे गुर्दा जिगरसे पतलेपन को प्रमाण से विशेष खींचें और वैसाही उसको मसाने की तरफ निकालदे इसी तरह पर सर्वदा खींचने और निकालने में आरूढ़ रहै और जब कि पानीपन जिगर में न ठहरसके और शरीर में प्रवेश नहो और ऊपरकी तरफ न जासकै तथा पानीकी रुचि बाकी रहै और पानीका पीना और हवाका कान में जाना कुछ लाभदायक न हो जैसा जया बीतुस (यह रोग जिसमें मनुष्य पानी पीता है और तुर्त पेशाब के द्वारा निकलजाता है) में होता है और इस प्रकार के चिन्ह और इलाजों का वर्णन इस अंगके रोगों में आवैगा। आठवां भेद यह है कि पुरानी शराब के पीने या खारी पानी पीने से या लहसन और प्याज के खाने से और ऐसे भोजन से जो प्रत्यक्ष में गर्म हो प्यास उत्पन्न हो और प्रगट है कि यह चीजें आमाशय को गर्म करती हैं परन्तु खारी पानी इसके सिवाय उसका कड़वापन और खारी होने के कारण से तबियत चाहती है कि ठंडे पानी सेआमाशय को धोडाले बहुधा यह पानी पेट को नर्म और तरीयों को निकालताहै और खुश्की बढ़ाता है फिर तबियत विशेषपानी की इच्छा करती है (इलाज) जौका पानी अथवा गर्मी को कम करने वाली दवा जैसे ईसबगोल, बिही दानेका लुआब, छम्बी पीया तरबूज और ककड़ी का पानी, खुर्फा का शीरा, खट्टे मीठे सेवका रुब्ब आलूका पानी और कच्चे अंगूरका रुब्ब और जो इन दवाओं को बर्फ में ठंडा करलेंद तो विशेष लाभदायक हो और जो यह जाने कि खूनमें विशेष गर्मी आगई है और ठंडके पहुंचने से सहजमें कम नहीं होती है तो फसद खोलें जबकि आयु, वर्ष ऋतु और प्रकृति अनुकूल और सहायक हों। नवां भेद यह है कि जुलाब की दवाओं से विशेष दस्तआवें और इसी कारण से फसाद के निकलने की अधिकता असली तरीयों को निकालती है और खुश्की को लाती है और तरी पहुंचाने के लिये पानी की रुचि उत्पन्न करतीहै (इलाज) इसरमियात बर्फमें ठंडा करलेंदे और दस्तों के बन्द करने का उपाय करें इस तरह पर कि सत्तू और सूखी रोटी अनारके पानीमें मिलाकर

पानी पीवें पेट फूलता जाय और कुछ न निकले और यह बहुधा मार डालता है। ग्यारहवां भेद यह है कि फरफयून खाने का काम पड़े और उस के खाने से इसलिये प्यास उत्पन्न होती है कि फरफयून विशेष गर्म है और असली तरियों को पचा लेता है और इसके सिवाय मनुष्य की प्रकृति के योग्य नहीं है (इलाज) इन दोनों भेदों का यह उपाय है कि दूध, घी, जौ का दलिया बनफशा के तेल के साथ और ककड़ी, लौकी और तरबूज का पानी आदि तरी करनेवाली वस्तु पीने को देवे और दिलकी पुष्टताके लिये आराम करने वाली दवाएं दे जिस से विषका कष्ट दूर हो और जान लेना चाहिये कि गौ का घी सब तेलों से अति उत्तम है और ककड़ी का पानी प्यास को कम करता है और ताजा खीरा लेकर कपड़े में लपेटे और उसपर मिट्टी लपेट कर रात को भाड़ में रक्खे प्रातःकाल मिट्टी को साफ करके उसका पानी निचोड़ कर काममें लावे। बारहवां भेद यह है कि कोई गाढ़ी चेपदार चीज जैसे ताजी मछली, हरीसा वस्लापाया आदि खाय और इन चीजों से प्यास उत्पन्न होने के कई कारण हैं एक तो यह है कि तबियत गर्मी को आमाशय की तरफ गाढ़े भोजनके काटने और नर्म करने के लिये आरूढ़हो और प्रगट है कि जब गर्मी आमाशयकी तरफ आरूढ होती है तो पानीकी रुचि उत्पन्न होती है दूसरे यह है कि कोई गाढ़ी चेपदार चीज मासारीका में चिपट जाय और पानी के जाने से फिर तबियत पानी की रुचि करे कि पानीकी सहायता सेउसको काट डाले और जिगर की तरफ लौटा दे क्योंकि पानी पतले करने में मुख्य है सो जब तक वह सब भोजन सुरत नहीं बदलता है तबतक प्यास बनी रहतीहै और यह बहुधा बिना इलाज के अपने आप कई बार पानी पीने से कम होजाती है और कभी इलाज की आवश्यकता पड़तीहै इलाज यह है कि मवाद के काटने निकालने और नर्म करने में परिश्रम करें जिस तरह झूठी प्यास में वर्णन किया गया है और सिकजबीन गर्म पानी में मिलाकर पीना अच्छा उपाय है। तेरहवां भेद यह है कि बर्फ खाने से प्यास उत्पन्न हो और बर्फ से जो प्यास उत्पन्न होती है उसके कारण में हकीमों की दशा विरुद्ध है हकीम करेशी कहताहै कि बर्फ यद्यपि छूनेसे मलास में ठंढा है परन्तु भीतरसे गर्म गुणदायक है क्योंकि पृथक् भागों से मिला हुआहै सो जब शरीर में प्रवेश होतीहै तो शरीर की गर्मी से उसकी ऊपरी सर्दी नष्ट होजाती है और उसकी गर्मी पलटकर फिर आतीहै यह इस तरह होताहै कि जैसे गर्म दवाको कामि मर्दी तिस ठंढा करके खाय जब शरीर की गर्मी से उसकी सर्दीका असरनष्टहो तो गर्मी पलट आवे और बुद्धिमान लोग यह कहते हैं कि बर्फ आमाशय के

पानी पीवें पेट फूलता जाय और कुछ न निकले और यह बहुधा मार डालता है। ग्यारहवा भेद यह है कि फरफयून खाने का काम पड़े और उस के खाने से इसलिये प्यास उत्पन्न होती है कि फरफयून विशेष गर्म है और असली तरियों को पचा देता है और इसके सिवाय मनुष्य की प्रकृति के योग्य नहीं है (इलाज) इन दोनों भेदों का यह उपाय है कि दूध, घी, जौं का दलिया बनफशा के तेल के साथ और कक्ड़ी, लौकी और तरबूज का पानी आदि तरी करनेवाली वस्तु पीने को देवे और दिलकी पुष्टताके लिये आराम करने वाली दवाएँ दे जिस से विषका कष्ट दूर हो और जान लेना चाहिये कि गौ का घी सब तेलों से अति उत्तम है और ककड़ी का पानी प्यास को कम करता है और ताजा खीरा लेकर कपड़े में लपेटे और उसपर मिट्टी लपेट कर रात को भाड़ में रक्खे प्रातःकाल मिट्टी को साफ करके उसका पानी नि चोड़ कर काममें लावे। बारहवां भेद यह है कि कोई गाढ़ी चेपदार चीज जैसे ताजी मछली, हरीसा पसेन्दापाचा आदि खाय और इन चीजों से प्यास उत्पन्न होने के कई कारण हैं एक तो यह है कि तबियत गर्मी को आमाशय की तरफ गाढ़े भोजनके काटने और नर्म करने के लिये आरूढ़ हो और प्रगट है कि जब गर्मी आमाशयकी तरफ आरूढ होती है तो पानीकी रुचि उत्पन्न होती है दूसरे यह है कि कोई गाढ़ी चेपदार चीज मासारीकामें चिपट जाय और पानी के जाने से फिर तबियत पानी की रुचि करे कि पानीकी सहायता सेउसकोकाट डाले और जिगर की तरफ लौटा दे क्योंकि पानी पतले करने में मुख्य है सो जब तक वह सब भोजन सुरत नहीं बदलता है तबतक प्यास बनी रहतीहै और यह बहुधा विना इलाज के अपने आप कई बार पानी पीने से कम होजाती है और कभी इलाज की आवश्यकता पड़तीहै इलाज यह है कि मवाद के काटने निकालने और नर्म करने में परिश्रम करें जिस तरह झूठी प्यास में वर्णन किया गया है और सिकञ्जबीन गर्म पानी में मिलाकर पीना अच्छा उपाय है। ते-रहवां भेद यह है कि बर्फ खाने से प्यास उत्पन्न हो और बर्फ से जो प्यास उत्पन्न होती है उसके कारण में हकीमों की दशा विरुद्ध है हकीम करेनी कहताहै कि बर्फ यद्यपि छूनेसे मलास में ठंढा है परन्तु भीतरसे ग र्म गुणदायक है क्योंकि धूपके भागों से मिला हुआहै सो जब शरीर में प्रवेश होता है तो शरीर की गर्मी से उसकी ऊपरी सर्दी नष्ट होजाती है और उसकी गर्मी पलटकर फिर आतीहै यह इस तरह होताहै कि जैसे गर्म दवायें। हकीम ई.तिरे ठंढा करके खाय जब शरीर की गर्मी में उसकी सर्दीका असरनष्टहो तो गर्मी पलट आवे और बुद्धिमान लोग यह कहते हैं कि बर्फ आमाशय के

नेमें सुगन्धित अजीर्ण कारक दवाओं जैसे चंदन, मामीसा और मुसता अकरो, जका पानी और ऐसी ही अन्य चीजों का आमाशय पर सूजन की जगह लेपकरें जो सूजन अगली तरफ में हो तो दाहनी तरफ दवा लगावें और जो पिछली तरफ में हो तो गुर्दे की जगह पर रक्खें और तीन दिन पीछे जौकाचून, खितमी और गुलाब के जीरे में या कासनी के पानी में लेपकरें और भोजनों में से केवल जौका पानी पीवें और जब तक बढ़ने का समय व्यतीत न हो यही उपाय करते रहें और जो तबियत में अजीर्ण हो तो अमलतास का गूदा कासनी के पानी में या मकोय और कासनी के बीज को इमली और गुलाब के फूलके काढ़े में दें और इन दवाओं की तोल नियत करना हकीम के देखने पर निर्भर है और क्योंकि अमलतास पेटको नर्म करके मवाद को सुखादेता है और भीतर के अंगों की सूजन के लिये अधिक लाभदायक है इससे इस काममें उसकी प्रशंसा करते हैं और कभी थोड़ीसी हरड़ उसके साथ मिलादेते हैं जिससे अजीर्ण के कारण आमाशय की शक्ति की रक्षाकरे। हकीम सवेदी काफेस औरजनीन आदिकी कहावतोंकोलिखताहै किजको यका पानी, जौका आटा और गुलाब का जीरा इन सबको मिलाकर लेप करना और इसी तरह रसौत और भुनी बिही का लेप करना और कपूर तथा जरम्बका पीना और अजनापुखेल (एक घास जिस की पत्ती गन्दना की सी होती है) का लेप करना और पीना योग्य है और हकीम अली शरीफ लिखता है कि आमाशय की गर्म सूजन में फस्द बासलीक की खोलने के उपरान्त हरी कासनी का पानी और हरी मकोय का पानी प्रत्येक १० तोले रातके समय एक बर्तनमें रक्खे सबेरेके समय उसका नितरा पानी लेकर गुलकन्द दो तोले मिलाकर दें और तीन चार दिन अमलतासका गूदा ६ तोले ईसबगोल का लुआब बादाम का तेल मिलाकर पिलावें जिससे मवाद निकल जाय और सफेद चंदन और मकोय की पत्ती के पानी में मिलाकर लेपकरें और जो पित्त अधिक होतो बनफशाके फूल, नीलोफरकेफूल, ऐलसांटा, मकोय, खितमी, खब्बाजी कासनी, जरश्क, आलूबुखारा दाने निकली मुनक्का, गावजबां, गुलकन्द, गुलाबकी तरह भिगावें उक्त पानियों में अमलतास का गूदा तुरजबीन (खुरासानीओस) इमली भी मिलालें और रसौत, मकोय, गुलाबके फूल, बनफशाके फूल, प्रत्येक १ माशे महीन पीसकर मकोय के पानी में मिलाकर लेपकरें। अभिप्राय यह है कि विशेष वमन विरेचन से बचाता रहे जिससे सूजन न बढ़जाय और अंग में यद्यपि घटने पर हो तो कोई ऐसी चीज जो पचा कर नर्म करदें जैसे खितमी मेंथी, अलसी, बाबूना या गुलाब का जीरा, बाबूदद, नागर मोथा

नेमें सुगन्धित अजीर्ण कारक दवाओं जैसे चंदन, मामीसा और मुस्ता अकरो जका पानी और ऐसी ही अन्य चीजों का आमाशय पर सूजन की जगह लेपकरें जो सूजन अगली तरफ में हो तो दाहनी तरफ दवा लगावें और जो पिछली तरफ में हो तो गुर्दे की जगह पर रक्खें और तीन दिन पीछे जौंकाचून, खितमी और गुलाब के जीरे में या कासनी के पानी में लेपकरें और भोजनों में से केवल जौंका पानी पीवें और जब तक बढ़ने का समय व्यतीत न हो यही उपाय करते रहें और जो तबियत में अजीर्ण हो तो अम- लतास का गूदा कासनी के पानी में या मकोय और कासनी के बीज को इमली और गुलाब के फूलके काढ़े में दें और इन दवाओं की तोल नियत करना हकीम के देखने पर निर्भर है और क्योंकि अमलतास पेटको नर्म करके मवाद को सुखादेता है और भीतर के अंगों की सूजन के लिये अधिक लाभ- दायक है इससे इस काममें उसकी प्रशंसा करते हैं और कभी थोड़ीसी इरक उसके साथ मिलादेते हैं जिससे अजीर्ण के कारण आमाशय की शक्ति की रक्षाकरे। हकीम सवेदी रूफिस औरजनीन आदिकी कहावतोंकोलिखता है किजौंको यका पानी, जौंका आटा और गुलाब का जीरा इन सबको मिलाकर लेप करना और इसी तरह रसौत और अनी विही का लेप करना और कपूर तथा अरसका पीना और अजनाबुखैल (एक घास जिस की पत्ती गन्दना की सी होती है) का लेप करना और पीना योग्य है और हकीम अली शरीफ लिखता है कि आमाशय की गर्म सूजन में फस्द बासलीक की खोलने के उपरान्त हरी कासनी का पानी और हरी मकोय का पानी प्रत्येक १० तोले रातके समय एक बर्तनमें रक्खे सवेरेके समय उसका नितरा पानी लेकर गुलकन्द दो तोले मिलाकर दें और तीन चार दिन अमलतासका गूदा ६ तोले ईसबगोल का लुआब बादाम का तेल मिलाकर पिलावें जिससे मवाद निकल जाय और सफेद चंदन और मकोय की पत्ती के पानी में मिलाकर लेपकरें और जो पित्त अधिक होतो बनफशाके फूल, नीलोफरकेफूल, इसौटा, मकोय, सिवमी, खब्बाजी कासनी, नरदक, आलूबुखारा दाने निकली मुनक्का, गांवजबां, गुलकन्द, गुलाबकी तरह पिघावें उक्त पानियों में अमलतास का गूदा तुरंजबीन (खुरासानीओस) इमली भी मिलालें और रसौत, मकोय, गुलाबके फूल, बनफशाके फूल, प्रत्येक १ माशे महीन पीसकर मकोय के पानी में मिलाकर लेपकरें। अभिप्राय यह है कि विशेष वमन विरेचन से बचता रहे जिससे सूजन न बढ़जाय और अंग में यथापि घटने पर हो तो कोई ऐसी चीज जो पचा कर नर्म करदें जैसे खि तमी मेंथी, अलसी, बाबूना या गुलाब का जीरा, बाबछद, नागर मोथा

कारणसे सूजन बढ़ती है उन जड़ोंके पानीकी विधि जो यहां लाभदायक है यह है कासनी की जड़, सौंफ की जड़, मुलहटी और सौंफ लेकर औटावें और गुलकन्द मिलाकर पीवें और हकीम ऐलाकी तथा गुरजानी कहते हैं कि सूजनके आरम्भ में प्रतिदिन प्रातः कालके समय७ माशे अजमोदके पानीमें बादाम का तेल मिलाकरदें और सातदिन पीछे अकलीलुलमलिक का काढ़ादेना चाहिये या देसी सौंफ की जड़ रूमी सौंफ प्रत्येक १०॥ माशे, फुका (वह शराव जिसमें नशा न हो) गन्द बेल, मस्तगी, अजमोद के बीज प्रत्येक ७ माशे, हंसराज१७माशे,औटाकर छानकर प्रतिदिन प्रातःकालके समय १३५माशेकेसमान और बेद अजीरका तेल७माशे और बादामका तेल१०॥माशे मिलाकर काम में लावें और शर्बतजूफा जिसमें अकलीलउलमलिकका काढ़ा मिलाहो अधिक लाभदायक है और कुछ हकीम कहते हैं कि मस्तगी, जायफल, गन्दबेल, शुकाई और ग्राफिस का लेप करना और पीना लाभदायक है और इसी तरहसे सलारस शहद स्परक, चिरायता और स्कलूकन्द्रयून का लेप करना सबको मिलाकर या केवल एक एक दवा लाभदायक है। चौथा भेद यह है कि बादीके कारण से हो और बादी की सूजन का यह चिन्ह है कि सूजन में कठोरता, तेजी, चिन्ता, शरीर का रंग बदल जाना और आंखें सूखजाना हो और यह सूजन बहुधा बदलती रहती है अर्थात् कोई सा मवाद हो अन्त में बादी हो जावा और कभी ऐसा भी होताहै कि आरम्भ में बादीसे भी उत्पन्न हो (इलाज) पहिले तो प्रकृति की रक्षा से मवाद के पकाने में परिश्रम करें जैसे जो प्रकृति में गर्मी हो तो सौंफ का पानी और अजमोद का पानी तथा अमलतास मिला कर थोड़ा सा बादाम का तेल बढ़ाकर दें और जो गर्मी न हो तो बेद अजीर का तेल और जड़ों का पानी पिलावें और सम्पूर्ण मवाद के पकनेके पीछे या रजात कबीर काम में लावें क्योंकि विशेष वस्तु के लाने वाली दवा मवाद के पकने से पहिले देना रोग बढ़ाता है और सूजन को ... विशेष ... कर फेना है और लेप की दवा नर्म, मवाद के निका... सुगंधि... होनी चाहिए और उनमें कुछ विषता भी हो जैसे ... मन्त्र... अलसी के बीज, बाबूना, कद्दू की ... , गूगल, ... उन... कनेव के पानी में और सुगंधि ... या गी ... गुन... और मोम में मिलाकर काम ...) ... है आमाशय की पर्दी सूजन में ... गी ... ना... फाढ़े में या जड़ों के साथ ... बहुत ... और ... सूजन पुरानी हो जाय अर्थात ...

कारणसे सूजन बढ़ती है उन जड़ोंके पानीकी विधि जो यहां लाभदायक है यह है कासनी की जड़, सौंफ की जड़, मुलहटी और सौंफ लेकर औटावें और गुलकन्द मिलाकर पीवें और हकीम ऐलाकी तथा गुरजानी कहते हैं कि सूजनके आरम्भ में प्रतिदिन प्रातः कालके समय७ माशे अजमोदके पानीमें बादाम का तेल मिलाकरदें और सातदिन पीछे अकलीलुलमालिक का काढ़ादेना चाहिये या देसी सौंफ की जड़ रूमी सौंफ प्रत्येक १०॥ माशे, फुका (वह शराब जिसमें नशा न हो) गन्द बेल, मस्तगी, अजमोद के बीज प्रत्येक ७ माशे, हंसराज१७माशे,औटाकर छानकर प्रतिदिन प्रातःकालके समय १३५माशेकेसमान और बेद अजीरका तेल७माशे और बादामका तेल१०॥माशे मिलाकर काम में लावें और शर्बतजूफा जिसमें अकलीलउलमलिकका काढ़ा मिलाहो अधिक लाभदायकहै और कुछ हकीम कहते हैं कि मस्तगी, जायफल, गन्दनेल, शुकाई और ग्राफिस का लेप करना और पीना लाभदायक है और इसी तरहसे सलारस शहद स्परक, चिरायता और स्कूलकन्द्रयून का लेप करना सबको मिलाकर या केवल एक एक दवा लाभदायक है। चौथा भेद यह है कि बादीके कारण से हो और बादी की सूजन का यह चिन्ह है कि सूजन में कठोरता, तेजी, चिन्ता, शरीर का रंग बदल जाना और आंखें सूखजाना हो और यह सूजन बहुधा बदलती रहती है अर्थात् कोई सा मवाद हो अन्त में बादी हो जाता और कभी ऐसा भी होताहै कि आरम्भमें बादीसे भी उत्पन्न हो (इलाज) पहिले तो प्रकृति की रक्षा से मवाद के पकाने में परिश्रम करें जैसे जो प्रकृति में गर्मी हो तो सौंफ का पानी और अजमोद का पानी तथा अमलतास मिला कर थोड़ा सा बादाम का तेल बढ़ाकर दें और जो गर्मी न हो तो बेद अजीर का तेल और जड़ों का पानी पिलावें और सम्पूर्ण मवाद के पकनेके पीछे या रजात कबीर काम में लावें क्योंकि विशेष दस्त के लाने वाली दवा मवाद पकने से पहिले देना रोग बढ़ाता है और सूजन को [illegible] विशेष कर कर लेना है और लेप की दवा नर्म, मवाद के निका[illegible] गुणि होनी चाहिए और उनमें कुछ विषता भी हो जैसे [illegible] अलसी के बीज, बाबूना, कद्दू [illegible], गुग्गल, अ[illegible] गुग्ग कनेर के पानी में और मुर्गियों [illegible] या गी [illegible] और मोम में मिलाकर काम [illegible] आमाशय की पर्दो सूजन में [illegible] और है काढ़े में या नदी के साथ [illegible] बहुत सूजन पुरानी हो जाय अर्थात [illegible]

आवश्यकता पड़े तो एलवा कासनी के पानी में और यारज फयकरा दे सक्ते हैं जिससे आमाशय से सब पीव साफ होजाय और उस समय खाने के लिये जौका पानी और हरीरा कीसी अन्य चीज जो उचित हो दें और मुर्गे का शोरवा, सोया और मैथी के साथ देसकते हैं और जब कि सब पीव साफ होजाय और कुछ बाकी न रहे तो घाव के भरने का यत्न इस तरह से करें कि जो दवा घावको भरलाती हैं जैसे हीरा दूखी गोंद अनार के फूल, कहरवा, गिले इरमनी, गुलाब के फूल लेकर कूटलें और खावें परन्तु दवाओं को बहुत महीन न करें जिससे आमाशय में बहुत देरतक ठहरें जैसा कि जवारिशों की दवाओं में वर्णन हुआ है कि आमाशय में अधिक देरतक ठहरने के लिये महीन नहीं करते (सूचना) जब कि आमाशय में सूजन उत्पन्न हो तो उसके नष्ट करने का उपाय उस रीति से करें जैसा कि सूजनों के प्रकरण में वर्णन किया गया है जिससे सूजन न होजाय और जो नष्ट न हो और मवाद इकट्ठा होने लगे तो पकाने फोड़ने और साफ करने में परिश्रम करें और फोड़ने और साफ करने का वर्णन होचुका है परन्तु मवाद के पकाने का यह उपाय है कि मवाद के पकाने वाला लेप आमाशय पर रक्खें क्योंकि मवाद के पकने में ढील न हो और जो सूजन कड़ी हो जाय तो उसको नर्म करें (मवाद के पकाने वाले लेप की विधि) मेथी के बीज, कनूचा के बीज, कड़वे बादाम की मिंगी कूटलें और बेद अजीर के तेल में मिलाकर लेप करें (दूसरा नुसखा) यह मवाद के नर्म करने के लिये परीक्षा किया हुआ है नरहीकून ३५ माशे, मेथी ५२॥ माशे, कनूचा के बीज ७० माशे, कूट लें और ताजे दूध में औटावें जब नर्म हो जाय तो थोड़ा सा तिलों का तेल या गुलरोगन उसमें मिलाकर गुनगुना काम में लावें। जिस रोगी का पीव और खून वमन में आवे तो आरोग्यता की अपेक्षा मृत्यु का विशेष भय है प्रगट हो कि जब आमाशय में सूजन मालूम हो तो उसके नष्ट करने का उपाय करें और जब मवाद इकट्ठा होजाय और पकजाय तो उसके फोड़ने में जल्दी करें और दुब्लयेमेदा जिसका अर्थ आमाशय के फोड़े का भी है शरीर का दुबला होना, ज्वरकी अधिकता, प्यास, आमाशय और दिल में दर्द होना, दस्त वमन, हाथ पांव का ठंढा होना, करने के समय दर्द, [illegible] और बुद्धिका बिगड़ना उसका चिन्ह है और कोई २ [illegible] कहते हैं कि फूट वाली सूजन आमाशय में इकट्ठी होजाय तो यह लेप करें जिससे जल्दी पकजाय मकलीय उकलीलुल्मलिक, बाबूना, [illegible] के बीज म[illegible] के बीज इकलीलुलमलिक, मकोय, [illegible], [illegible]

आवश्यकता पड़े तो एलवा कासनी के पानी में और यारज फयकरा दे सक्ते हैं जिससे आमाशय से सब पीव साफ होजाय और उस समय खाने के लिये जौका पानी और हरीरा कोसी अन्य चीज जो उचित हो दें और मुर्ग का शोरवा, सोया और मैथी के साथ देसकतेहैं और जब कि सब पीव साफ होजाय और कुछ बाकी न रहे तो घाव के भरने का यत्न इस तरह से करै कि जो दवा घावको भरलाती हैं जैसे हीरा दूखी गोंद अनार के फूल, क-हरवा, गिले इरमनी, गुलाब के फूल लेकर कूटलें और खावें परन्तु दवाओं को बहुत महीन न करें जिससे आमाशय में बहुत देरतक ठहरें जैसा कि ज-वारिशों की दवाओं में वर्णन हुआ है कि आमाशय में अधिक देरतक ठहरने के लिये महीन नहीं करते (सूचना) जब कि आमाशय में सूजन उत्पन्न हो तो उसके नष्ट करने का उपाय उस रीति से करें जैसा कि सूजनों के प्रकरण में वर्णन किया गया है जिससे सूजन न होजाय और जो नष्ट न हो और म वाद इकट्ठा होने लगे तो पकाने फोड़ने और साफ करने में परिश्रम करें और फोड़ने और साफ करने का वर्णन होचुका है परन्तु मवाद के पकाने का यह उपाय है कि मवाद के पकाने वाला लेप आमाशय पर रक्खें क्योंकि मवाद के पकने में ढील न हो और जो सूजन कड़ी हो जाय तो उसको नर्म करें (मवाद के पकाने वाले लेप की विधि) मैथी के बीज, कनूचा के बीज, कड़वे बादाम की मिंगी कूटलें और बेद अजीर के तेल में मिलाकर लेप करें (दूसरा नुसखा) यह मवाद के नर्म करने के लिये परीक्षा किया हुआ है नरहीकून ३५ मासे, मैथी ५७॥ मासे, कनूचा के बीज ७० मासे, कूट लें और ताजे दूध में औटावें जब नर्म हो जाय तो थोड़ा सा तिली का तेल या गुलरोगन उसमें मिलाकर गुनगुना काम में लावें। जिस रोगी का पीव और खून वमन में आवै तो आरोग्यता की अपेक्षा मृत्यु का विशेष भय है प्रगट हो कि जब आमाशय में सूजन मालूम हो तो उसके नष्ट करने का उपाय करें और जब मवाद इकट्ठा होजाय और पकजाय तो उसके फोड़ने में जल्दी करें और दुब्बलयेमेदा जिसका अर्थ आमाशय के फोड़े का भी है शरीर का दु-बला होना, ज्वरकी अधिकता, प्यास, आमाशय और दिल में दर्द होना, दस्त वमन, हाथ पांव का ठंढा होना, करने के समय दर्द, चित्त व्याकु और बुद्धिका बिगड़ना उसका चिह्न है और कोई २ पिछले हकीम लिखते हैं कि जब वाली सूजन आमाशय में इकट्ठी होजाय तो यह लेप करें जिससे जल्दी पकजाय अकलीलुलमलिक, बाबूना, [illegible] के बीज अ लसी के बीज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

जुलाब दे जिससे उसका मैल धोडालें फिर घावके भरलानेवाली दवा जैसे कुर्स-कहरवा और अजीर्णकारक दवाओंको रसके साथ दें और किताव अजाइबुल इन्तिखावमें लिखा है कि एल्वा कासनी के पानी में मिलाकर पीना लाभदायक है दूसरी दवा-जो आमाशय के घाव को भरकर सुखा दे यह है कहरवा, गिले इरमनी, हीराबुखी गोंद, सादनज मगमूल सब चीजें तोल में समान लेकर महीन पीस कर थोड़ी २ चूर्ण की विधि पर फांकें और ऐसी दवाओं के देने के समय मवाद के निकालने से निर्भय न रहें किन्तु कभी ऐसी दवा दें कि घाव को साफ करें और कभी इस तरह की चीजें खांय कि घाव को भर लावें और यह इसलिये है कि मैल साफ होता रहै क्योंकि जबतक मैल है घाव नहीं भर सकता परन्तु मवादके निकालनेकी जो बलवान् दवा हैं उनसे बचे जिससे रोग न बढ़ने पावे और जबतक घाव पुराना न हो यारज से साफ नहीं कर सकते और जब इन रोगों में मवाद के निकालनेकी आवश्यकता पड़े तो अमलतास का शीरा कासनी के साथ सब चीजों से अति उत्तम है और जो तबियत नर्म हो तो अजीर्ण कारक वंशलोचन की टिकिया और मेवाओं के निचुड़े हुए सत्त और जौ का सत्तू लाभदायक है और जो कुछ नरखरके घाव और फुन्सी के प्रकरण में वर्णन किया है वही इसका इलाज है।

पन्द्रहवां प्रकरण।

नफखा [पेट के अफर आने] का वर्णन।

इसके तीन कारण हैं पहला कारण तो यह है कि तरी सादा दुष्ट प्रकृति आमाशय में उत्पन्न हो और उसकी प्राकृतिक गर्मी को निर्बल करदे इस कारण से पूरा पकाव न हो और भाफ के परमाणु अधिक उत्पन्न हों और गाढ़े बन कर रिहा (वादी) बन जांय और पेटमें अफरा उत्पन्न करे जैसे कि हवा से भरी मश्क होती है और यह कारण आमाशयके कारणसे है। दूसरा कारण यह है कि खाने के कारण से हो यह इस प्रकार का होता है कि ऐसा भोजन करें कि आमाशय की गर्मी उस के पूरे पकाव के आधीन हो जब कि पकाव उत्पन्न हो और यह भोजन चार प्रकार का होता है एक तो समानता से विशेष हो, दूसरे उस में तरी विशेष हो जैसे लम्बी घीया और ककड़ी और यह प्रगट है कि जब भोजन प्रमाण से अधिक होगा तो तबियत उसको न पचा सकेगी और आमाशय की पोल में न समा सकेगी और जो भोजन में तरी विशेष होगी तो बहुधा रुचि अनुसार खांय जब उस में गर्मीका असर हो तो उस में से गाढ़े भाफ के परमाणु उठें और गर्मी इनको नष्ट न कर सके और अफरा उत्पन्न हो। तीसरे यह है कि यह भोजन अपने आप वादी उत्प

जुलाब दे जिससे उसका मैल धोडालें फिर घावके भरलानेवाली दवा जैसे क़ुर्स-कहरबा और अजीर्णकारक दवाओंको रसके साथ दें और किताव अजाइबुल इन्तिखावमें लिखा है कि एल्वा कासनी के पानी में मिलाकर पीना लाभदायक है दूसरी दवा-जो आमाशय के घाव को भरकर सुखा दे यह है कहरबा, गिले इरमनी, हीरादुखी गोंद, सादनज मगमूल सब चीजें तोल में समान लेकर महीन पीस कर थोड़ी २ चूर्ण की विधि पर फांकें और ऐसी दवाओं के देने के समय मवाद के निकालने से निर्भय न रहें किन्तु कभी ऐसी दवा दें कि घाव को साफ करें और कभी इस तरह की चीजें खांय कि घाव को भर लावें और यह इसलिये है कि मैल साफ होता रहै क्योंकि जबतक मैल है घाव नहीं भर सकता परन्तु मवादके निकालनेकी जो बलवान् दवा हैं उनसे बचै जिससे रोग न बढ़ने पावे और जबतक घाव पुराना न हो यारज से साफ नहीं कर सकते और जब इन रोगों में मवाद के निकालनेकी आवश्यकता पड़े तो अमलतास का शीरा कासनी के साथ सब चीजों से अति उत्तम है और जो त बियत नर्म हो तो अजीर्ण कारक बंशलोचन की टिकिया और मेवाओं के निचुड़े हुए सत्त और जौ का सत्तू लाभदायक है और जो कुछ नरखरके घाव और फुन्सी के प्रकरण में वर्णन किया है वही इसका इलाज है ।

पन्द्रहवां प्रकरण ।

नफखा [पेट के अफर आने] का वर्णन ।

इसके तीन कारण हैं पहला कारण तो यह है कि ठंढी सादा दुष्ट प्रकृति आमाशय में उत्पन्न हो और उसकी प्राकृतिक गर्मी को निर्बल करदे इस कारण से पूरा पकाव न हो और भाफ के परमाणु अधिक उत्पन्न हों और गाढ़े बन कर रिह (बादी) बन जांय और पेटमें अफरा उत्पन्न करे जैसे कि हवा से भरी मश्क होती है और यह कारण आमाशयके कारणसे है । दूसरा कारण यह है कि खाने के कारण से हो यह इस प्रकार का होता है कि ऐसा भोजन करे कि आमाशय की गर्मी उस के पूरे पकाव के आधीन हो जब कि पकाव उत्पन्न हो और वह भोजन चार प्रकार का होता है एक तो समानता से विशेष हो, दूसरे उस में तरी विशेष हो जैसे कद्दू खीरा और ककड़ी और यह प्रगट है कि जब भोजन प्रमाण से अधिक होगा तो तबियत उसको न पचा सकेगी और आमाशय की पोल में न समा सकेगी और जो भोजन में तरी विशेष होगी तो बहुधा रुचि अनुसार खांय जब उस में गर्मीका असर हो तो उस में से गाढ़े भाफ के परमाणु उठें और गर्मी उनको नष्ट न कर सके और अफरा उत्पन्न हो । तीसरे यह है कि वह भोजन अपने आप बादी उत्प

माशे, नौसादर ३ तोले तुर्बुद सफेद ४ तोले, सौंठ, अनार दाना खट्टा प्र० ३१॥ माशे कूट पीसकर लीली गूगल, हींग प्र० १०॥ माशे गन्दना का पानी डालकर मिलावें मूमली की जड़ छाल, सहजना मलेश २४॥ माशे पीस कर खाने का नोन, लाहोरी नोन प्र० ५ तोले, हरा गन्दना ९ तोले इन दवाओं को थोड़ा मिलाकर धूप में रक्खे इस को सूखने के पीछे महीन पीस कर एक माशे से ३ माशे तक लें

सोहलवा प्रकरण

डकार का वर्णन

यह शब्दयहुवा अफरे के समय निकलताहै जब कि आमाशयकी हवा मुखकी तरफ चढ आती है इसको डकार कहते हैं शरह अस्वाय के बनाने वाले ने कहा है कि यह एक ऐसी दशा है कि जब आमाशय की हवा मुख के मार्ग से निकलती है तब उत्पन्न होती है और डकार के दो भेद हैप्राकृतिक और अप्राकृतिक सो प्राकृतिक तो यह है कि समानतापर हो और थोड़ी सी आमाशय में इकट्ठा होकर उस में से निकले और उस के कारण से आमाशय का खिचाव दूर होजाय और पचाव अच्छा हो और जो डकार कि पानी के धीरे और खींच कर पीने से और भोजन के जल्द खाने से होती है वह इसी प्रकार की होती है क्योंकि इन दोनों दशाओं में पानी और भोजन के साथ खिचकर हवा भी गले में चली जाती है और आमाशय के मुख में इकट्ठी होती है फिर उस को तबियत मुख के मार्ग से निकालती है और उस के साथ आमाशय की हवा भी निकल जाती है और जो डकार गन्ना चूसने से आती है वह भी ऐसी ही है जैसे खिचकर पानी पीने से आती है और अप्राकृतिक भी उन्ही कारणों से उत्पन्न होती है जिनका वर्णन अफरा में हो चुका है और उसकी यह हानि है कि पचाव बिगड़ जाय जैसा कि हकीम लोग कहते है कि डकार जब बढ़ जाती है तो पचाव को बिगाड़ देती है क्योंकि भोजन को उभारती है हकीम मसीह कहता है कि जो डकार की अधिकता आमाशय में हवाओं के इकट्ठा होजाने से हो तो वमन करें और कर्पासबीज, गाजर, तुलसी के पत्ते, किर्विया, पोदीना, अजमायन, काला जीरा, पहाड़ीपोदीना सफेद जीरा, पम्बगी, सोंफ के काढ़े पीना लाभ दायक है और सोंठ मा हाशी गुलकन्द में मिला कर खाना लाभ दायक है और हकीम बेरन घृमनी लिखता है कि जिस मनुष्य को खट्टी डकार आवे तो शराब के साथ पन्नाकदी का खाना लाभदायक है और कभी ४॥ माशे सूखा पनियां खा

माशे, नौसादर २ तोले तुर्बुद सफेद ४ तोले, सौंठ, अनार दाना खट्टा प्र० ३१॥ माशे कूट पीसकर लीली गूगल, हींग प्र० १०॥ माशे गन्दना का पानी डालकर मिलावें मूसली की जड़ छाल, सहजना प्रत्येक २४॥ माशे पीस कर खाने का नोन, लाहोरी नोन प्र० ५ तोले, हरा गन्दना ९ तोले इन दवाओं को थोड़ा मिलाकर धूप में रक्खे इस को सूखने के पीछे महीन पीस कर एक माशे से ३ माशे तक लें

सोहलवा प्रकरण

डकार का वर्णन

यह शब्दयहुधा अफरे के समय निकलताहै जब कि आमाशयकी हवा मुखकी तरफ चढ़ आती है इसको डकार कहते हैं शरह अस्वाब के बनाने वाले ने कहा है कि यह एक ऐसी दशा है कि जब आमाशय की हवा मुख के मार्ग से निकलती है तब उत्पन्न होती है और डकार के दो भेद हैं प्राकृतिक और अप्राकृतिक सो प्राकृतिक तो वह है कि समानतापर हो और थोड़ी सी आमाशय में इकट्ठा होकर उस में से निकले और उस के कारण से आमाशय का खिचाव दूर होजाय और पचाव अच्छा हो और जो डकार कि पानी के धीरे और खींच कर पीने से और भोजन के जल्द खाने से होती है वह इसी प्रकार की होती है क्योंकि इन दोनों दशाओं में पानी और भोजन के साथ खिचकर हवा भी गले में चली जाती है और आमाशय के मुख में इकट्ठी होती है फिर उस को तबियत मुख के मार्ग से निकालती है और उस के साथ आमाशय की हवा भी निकल जाती है और जो डकार गन्ना चूसने से आती है वह भी ऐसी ही है जैसे खिचकर पानी पीने से आती है और अप्राकृतिक भी उन्हीं कारणों से उत्पन्न होती है जिनका वर्णन अफरा में हो चुका है और उसकी यह हानि है कि पचाव बिगड़ जाय जैसा कि हकीम लोग कहते हैं कि डकार जब बढ़ जाती है तो पचाव को बिगाड़ देती है क्योंकि भोजन को उभारती है हकीम मसीह कहता है कि जो डकार की अधिकता आमाशय में हवाओं के विशेष होजाने से हो तो वमन करे और स्मौसांफ, गाजर, मुतली के पत्ते, किर्विया, पोदीना, अजमायन, काला जीरा, पहाड़ीपोदीना सफेद जीरा, मस्तगी, सोंफ के काढ़े पीना लाभ दायक है और सतेश म हागी गुलकन्द में मिला कर खाना लाभ दायक है और हकीम सेरतूअनो सैना कहता है कि जिस मनुष्य को खट्टी डकार आवे तो शराब के साथ पञ्चफली का खाना लाभदायक है और कमी ९॥ माशे सूखा पनिया का

माशे, नौसादर ३ तोले तुर्बुद सफेद ४ तोले, सोंठ, अनार दाना खट्टा प्र० ३१॥ माशे कूट पीसकर टीली गूगल, हींग प्र० १०॥ माशे गन्दना का पानी डालकर मिलावें मूसली की जड छाल, सहजना प्रत्येक २४॥ माशे पीस कर खाने का नोन, लाहोरी नोन प्र० ५ तोले, हरा गन्दना ९ तोले इन दवाओं को थोड़ा मिलाकर धूप में रक्खे इस को सूखने के पीछे महीन पीस कर एक माशे से ३ माशे तक लें

सोहलवां प्रकरण

डकार का वर्णन

यह शब्द बहुधा अफरे के समय निकलताहै जब कि आमाशयकी हवा मुखकी तरफ चढ आती है इसको डकार कहते हैं शरह अस्बाव के बनाने वाले ने कहा है कि यह एक ऐसी दशा है कि जब आमाशय की हवा मुख के मार्ग में निकलती है तब उत्पन्न होती है और डकार के दो भेद हैं प्राकृतिक और अप्राकृतिक सो प्राकृतिक तो वह है कि समानतापर हो और थोड़ी सी आमाशय में इकट्ठा होकर उस में से निकले और उस के कारण से आमाशय का खिचाव दूर होजाय और पचाव अच्छा हो और जो डकार कि पानी के पीने और खींच कर पीने से और भोजन के जल्द खाने से होती है वह इसी प्रकार की होती है क्योंकि इन दोनों दशाओं में पानी और भोजन के साथ खिचकर हवा भी गले में चली जाती है और आमाशय के मुख में इकट्ठी होती है फिर उस को तबियत मुख के मार्ग से निकालती है और उस के साथ आमाशय की हवा भी निकल जाती है और जो डकार गन्ना चूसने से आती है वह भी ऐसी ही है जैसे खिचकर पानी पीने से आती है और अप्राकृतिक भी उन्ही कारणों से उत्पन्न होती है जिनका वर्णन अफरा में हो चुका है और उसको यह हानि है कि पचाव बिगड जाय जैसा कि हकीम लोग कहते हैं कि डकार जब बढ जाती है तो पचाव को बिगाड देती है क्योंकि भोजन को उभारती है हकीम मसीह कहता है कि जो डकार की अधिकता आमाशय में हवाओं के विशेष होजाने म हो तो वमन करें और कर्मीर्गाफ, गाजर, तुलसी के पत्ते, फिरिंगा, पोदीना, अजमायन, काला जीरा, पहाड़ीपोदीना सफेद जीरा, मस्तगी, लौंग के काढे पीना लाभ दायक हैं और सर्वदा नारंगी गुलकन्द में मिला कर खाना लाभ दायक है और हकीम अग्रधूमरो ऐसा कहता है कि जिस मनुष्य को खट्टी डकार आवें तो हरान के साथ फलाफली का खाना लाभदायक है और कभी ४॥ माशे मस्तगी पानीमें मि

माशे, नौसादर ३ तोले तुर्बुद सफेद ४ तोले, सौंठ, अनार दाना खट्टा प्र० ३॥ माशे कूट पीसकर टीली गूगल, हींग प्र० १०॥ माशे गन्दना का पानी डालकर मिलावें मूसली की जड छाल, सहजना प्रत्येक २४॥ माशे पीस कर खाने का नोन, लाहोरी नोन प्र० ५ तोले, हरा गन्दना ९ तोले इन दवाओं को थोडा मिलाकर धूप में रक्खे इस को सूखने के पीछे महीन पीस कर एक माशे से ३ माशे तक लें

सोहलवां प्रकरण

डकार का वर्णन

यह शब्द बहुधा अफरे के समय निकलता है जब कि आमाशय की हवा मुखकी तरफ चढ आती है इसको डकार कहते हैं शरह अस्बाब के बनाने वाले ने कहा है कि यह एक ऐसी दशा है कि जब आमाशय की हवा मुख के मार्ग में निकलती है तब उत्पन्न होती है और डकार के दो भेद हैं प्राकृतिक और अप्राकृतिक सो प्राकृतिक तो वह है कि समानतापर हो और थोड़ी सी आमाशय में इकट्ठा होकर उस में से निकले और उस के कारण से आमाशय का खिचाव दूर होजाय और पचाव अच्छा हो और जो डकार कि पानी के पीने और खींच कर पीने से और भोजन के जल्द खाने से होती है यह इसी प्रकार की होती है क्योंकि इन दोनों दशाओं में पानी और भोजन के साथ खिंचकर हवा भी गले में चली जाती है और आमाशय के मुख में इकट्ठी होती है फिर उस को तबियत मुख के मार्ग से निकालती है और उस के साथ आमाशय की हवा भी निकल जाती है और जो डकार गन्ना चूसने से आती है यह भी ऐसी ही है जैसे खिंचकर पानी पीने से आती है और अप्राकृतिक भी उन्ही कारणों से उत्पन्न होती है जिनका वर्णन अफरा में हो चुका है और उसकी यह हानि है कि पचाव बिगड जाय जैसा कि हकीम लोग कहते हैं कि डकार जब बढ जाती है तो पचाव को बिगाड देती है क्योंकि भोजन को उभारती है हकीम मसीह कहता है कि जो डकार की अधिकता आमाशय में हवाओं के विशेष होजाने से हो तो वमन करें और कभी गाफ, गाजर, तुलसी के पत्ते, सिकिया, पोदीना, अजमायन, काला जीरा, पहाडीपोदीना सफेद जीरा, मस्तगी, लौंग के काढे पीना लाभ दायक है और सर्वदा दगुर्की गुलकन्द में मिला कर खाना लाभ दायक है और हकीम शाह यूअली सैना कहता है कि जिस मनुष्य को खट्टी डकार आवे तो शराब के साथ फलाफली का खाना लाभदायक है और कभी ४॥ माशे गरवा पानियां मा

मुखके द्वारा निकल जाय और जी मिचलाना उस गति का नामहै जो वमन की गति पर हो परन्तु कोई चीज न निकले सो वमन में तो दूर करने वाली शक्ति और मवाद भी गति करते हैं और उबकाई में दूर करने वाली शक्ति गति करती है और मवाद नहीं हिलता है इससे निस्सारक शक्ति दोनों में एकसी हैं परन्तु मवाद की गति में भेद है। बलवान गति में वमन और निर्बल गति में उबकाई होती है जी मिचलाना तबियत के बिगड़जाने से होता है इससे वमन और उबकाई आने लगती है इसका हर समय होना न होना मवाद की दशाओं पर निर्भर है जैसे जो मवाद आमाशय में उत्पन्न होता है तो जी हर समय मिचलाया करता है और जो किसी और अंग से उस पर गिरता है तो कभी २ मिचलाता है और दूसरे अंग से उस पर गिरने पर भी सदा जी मिचलाया करता है कारण यह है कि आमाशय उसको खींचले और वह नष्ट न हो। सो प्रतिदिन मिचलाना या न मिचलाना आमाशयमें मवाद के होने और न होने पर निर्भर है हकीम लोग इस भूख के नष्ट होने में बताते हैं। इन बातों के हेतु निकम्मे दोष या बुरे भोजन हैं जो अपने निकम्मे पन से आमाशय को कष्ट देते हैं अथवा प्रमाण से अधिक भोजन करने के कारण आमाशय में भारीपन हो उसी के अनुसार उक्त गतियों में से कोई गति उत्पन्न हो जो मवाद आमाशय की पोल में और पुर्तों के भीतर ठहर जाता है तो उबकाई और विशेष दर्द करता है और जो आमाशय के मुख की तरफ झुका हुआ होता है तो जी मिचलाना उत्पन्न होता है और मवेसी आदि के खाने से वमन हो जाती है किसी २ वस्तु का ध्यान दुर्गन्धित स्थानों की दुर्गन्धि, निकम्मे भोजन आदि भीतरी या बाहरी कारण के अनुसार उसके नौ भेद होते हैं और हम सबकोही अलगर वर्णन करते हैं।

(१) मुख्य आमाशय में ही पित्त उत्पन्न हो इसमें पित्त की अधिकता, प्यास आमाशय में विशेष गर्मी और वमनमें कड़वापन आदि लक्षण होते हैं (इलाज) मवादके निकालनेके लिये प्राकृतिक अनुसार वमन या नर्म दस्तों का प्रयोग करे। वमनके लिये सिकंजबीन और गर्म पानी पिलावें और दस्तों के लिये इमली का काढ़ा और आलूबुखारे के साथ बारीक शकर मिलावें जब मवाद आमाशय की गहराईकी तरफ झुकाहो और पुर्तों में न मिला हो तो उसके निकालने और हलका करना आवश्यक है परन्तु जो मवाद आमाशय में है तो उसके निकालने में वमन का कराना आवश्यक है मुख्यकर जब कि आमाशयके मुखकी तरफ झुकाहुआ हो इससे वमन होना उत्तम है और मवाद के निकलने के पीछे जो मवाद बाकी हो और उसका निकालना आवश्य

मुखके द्वारा निकल जाय और जी मिचलाना उस गति का नामहै जो वमन की गति पर हो परन्तु कोई चीज न निकले सो वमन में तो दूर करने वाली शक्ति और मवाद भी गति करते हैं और उबकाई में दूर करने वाली शक्ति गति करती है और मवाद नहीं हिलता है इससे निस्सारक श क्ति दोनों में एकसी हैं परन्तु मवाद की गति में भेद है। बलवान गति में वमन और निर्बल गति में उबकाई होती है जी मिचलाना तबियत के बिगड़जाने से होता है इससे वमन और उबकाई आने लगती है इसका हर समय होना न होना मवाद की दशाओं पर निर्भर है जैसे जो मवाद आमाशय में उत्पन्न होता है तो जी हर समय मिचलाया करता है और जो किसी और अंग से उस पर गिरता है तो कभी २ मिचलाता है और दूसरे अंग से उस पर गि रने पर भी सदा जी मिचलाया करता है कारण यह है कि आमाशय उसको खींचलें और वह नष्ट न हो। सो प्रतिदिन मिचलाना या न मिचलाना आमाशय मवाद के होने और न होने पर निर्भर है हकीम लोग इस भूख के नष्ट होने में बताते हैं। इन बातों के हेतु निकम्मे दोष या बुरे भोजन हैं जो अपने निकम्मे पन से आमाशय को कष्ट देते हैं अथवा प्रमाण से अधिक भोजन करने के कारण आमाशय में भारीपन हो उसी के अनुसार उक्त गतियों में से कोई गति उत्पन्न हो सो मवाद आमाशय की पोल में और पुर्तों के भीतर ठहर जाता है तो उबकाई और विशेष दर्द करता है और जो आमाशय के मुख की तरफ झुका हुआ होता है तो जी मिचलाना उत्पन्न होता है और मक्खी आदि के खाने से वमन हो जाती है किसी २ वस्तु का ध्यान दुर्ग न्धित स्थानों की दुर्गन्धि, निकम्मे भोजन आदि भीतरी वा बाहरी कारण के अनुसार उसके नौ भेद होते हैं और हम प्रत्येकको अलगर वर्णन करते हैं।

(१) मुख्य आमाशय में ही पित्त उत्पन्न हो इसमें पित्त की अधिकता, प्यास आमाशय में विशेष गर्मी और वमनमें कड़वापन आदि लक्षण होते हैं (इलाज) मवादके निकालनेके लिये प्रकृति के अनुसार वमन या नर्म दस्त का प्रयोग करें। वमनके लिये सिकंजबीन और गर्म पानी पिलावें और दस्तों के लिये इमली का काढ़ा और आलूबुखारे के साथ खमीर बनफशा खवावें जब मवाद आमाशय की गहराईकी तरफ झुका हो और पुर्तों में भी न छिपा हो तो उसके निकालने और दूर करना आवश्यक है परन्तु जो मवाद आमाशय में है तो उसके निकालने में वमन हर तरह आवश्यक है मुख्यकर जब कि आमाशयके मुखकी तरफ झुका हुआ हो इससे वमन होना उत्तम है और मवाद के निकलने के पीछे जो मवाद बाकी हो और उसका निकालना आवश्य

तरफ झुकाहुआ हो तो सोयाका काढ़ा और शहद की बनी सिकञ्जबीन पीकर वमनकरें और जो यह दवा लाभदायक न हो और मवाद पुर्तों में घुसा हुआ हो तो मूली के बीज, नमक, राई और शहद उसमें मिलावें और जो मवाद आमाशय की गहराई में हो तो विरेचक दवा पिलावें। इसमें एल्यार्की गोली, मस्तगी की गोली, यारज फयकरा और हब्बुल इफाबेरा योग्यहै और विरेचनके पीछे वह शर्बत अनार जिसमें पोदीना पड़ा हो लौंग, अगर और गुलाब के फूलसे सुगन्धित करके पिलावें जिससे आमाशय पुष्ट हो। हर्ड का मुरब्बा, सौंठका मुरब्बा और गुलकन्द सौंफके साथ लाभदायक है और जवारिश ऊद, मस्तगी और मीठी दिवाल मुश्क भी लाभदायक है। (हब्बुल अफाविया की विधि) सौंठ, लौंग, पीपल, जरश्क, मस्तगी, सकमूनियां भुनी हुई ये सब दवा ४॥ माशे कूट छानकर चनेके समान गोलियां बनावें । इसकी मात्रा १ गोली है (लाभ) जो मवाद पुर्तों में नहीं खिंचा होता परन्तु जल्द हलकी दवाओं से उखड़ सकता है और नहीं तो बिना पुष्टकारक दवाओं के नहीं उखड़ेगा (आमाशय को कफ रहित करने वाली गोली) यारज फयकरा २१ माशे, काली हर्ड, काबलीहर्ड, मस्तगी प्रत्येक ७ माशे, फुलशी टिकिया, साम्हर नोंन, प्रत्येक १०॥ माशे, सूखा पोदीना, जायफल, रूमी सौंफ अजमायन, कालाजीरा, लौंग प्रत्येक ३॥ माशे, तुर्बुद २४॥ माशे, अफसन्तीन के शर्बत या विही की शराब के पानीमें मिलाकर गोलियां बनाकर ३॥ माशे से २४॥ माशे तक या अफसन्तीन का शर्बत या विहीकी शराब के साथ दे (पुष्टकारक चूर्ण) अगर, लौंग, मस्तगी, सूखा पोदीना प्रत्येक ७ माशे कूट और छानकर ३॥ माशे के लगभग में ३५ माशे गुलकन्द मिलाकर खवावें। (वमन नाशक और पुष्टकारक लेप) सुक, चिरायता, मस्तगी, बालछड़, अगर, लौंग, जायफल और थोड़ीसी केसर कूटकर सोसनकी शराबमें सानकर आमाशयपर लेप करें। (मय सोसन की विधि) सोसन को गुलाब में औटावें जब थोड़ासा रहजाय तो उसको मय सोसन और मयसी कहते हैं। (सूचना) मवाद के पकने में पहिले भोजन और अजीर्ण कारक अर्थात जिनका स्वाद दुर्गन्ध होवे न दें क्योंकि ये हानि पहुंचाते हैं (३) आमाशय में पानी उत्पन्न हो। इसमें खट्टी वमन, तृषा का न होना, आमाशय में गुड़गुड़ाहट और भड़क आदि लक्षण होते हैं उसकी वमन से पानी पड़ता [illegible] है और इस पर मक्खियां नहीं बैठती हैं (इलाज) इसमें कफ नाशक दवा देवें और मवाद को थोड़े देर दूसरे से [illegible] और मवाद के निकलने के पहिले अजीर्ण कारक चीजों से बचें और कम खावें पानी कम पि-

तरफ झुकाहुआ हो तो सोयाका काढ़ा और शहद की बनी सिकंजबीन पीकर वमनकरें और जो यह दवा लाभदायक न हो और मवाद पुर्तों में घुसा हुआ हो तो मूली के बीज, नमक, राई और शहद उसमें मिलावें और जो मवाद आमाशय की गहराई में हो तो विरेचक दवा पिलावें। इसमें एल्याराज गोली, मस्तगी की गोली, यारज फयकरा और हब्बुल इफाबिया योग्यहै और विरेचनके पीछे वह शर्बत अनार जिसमें पोदीना पड़ा हो लौंग, अगर और गुलाब के फूलसे सुगन्धित करके पिलावें जिससे आमाशय पुष्ट हो। हर्र का मुरब्बा, सोंठका मुरब्बा और गुल्कन्द सौंफके साथ लाभदायकहै और जवारिश ऊद, मस्तगी और मीठी दिवाल मुश्क भी लाभदायक है। (हब्बुल अफाबिया की विधि) सोंठ, लौंग, पीपल, जरऊद, मस्तगी, सकमूनियां भुनी हुई ये सब दवा ४॥ माशे कूट छानकर चनेके समान गोलियां बनावें । इसकी मात्रा १ गोली है (लाभ) जो मवाद पुर्तों में नहीं खिंचा होता बहुत जल्द हलकी दवाओं से उखड़ सकता है और नहीं तो बिना पुष्टकारक दवाओं के नहीं। एल्यारा (आमाशय को कफ रहित करने वाली गोली) यारज फयकरा २१ माशे, काली हर्ड, काबलीहर्ड, मस्तगी प्रत्येक ७ माशे, फूलकी टिकिया, साम्भर नोंन, प्रत्येक १०॥ माशे, सूखा पोदीना, जायफल, रूमी सौंफ अजमायन, कालाजीरा, लौंग प्रत्येक ३॥ माशे, तुर्बुद २४॥ माशे, अफसन्तीन के शर्बत या बिही की शराब के पानीमें मिलाकर गोलियां बनाकर ३॥ माशे से २४॥ माशे तक या अफसन्तीन का शर्बत या बिहीकी शराब के साथ दें (पुष्टकारक चूर्ण) अगर, लौंग, मस्तगी, सूखा पोदीना प्रत्येक ७ माशे कूट और छानकर ३॥ माशे के लगभग में ३५ माशे गुल्कन्द मिलाकर खवावें। (वमन नाशक और पुष्टकारक लेप) सुक, निरायता, मस्तगी, बालछड़, अगर, लौंग, जायफल और थोड़ीसी केसर इनको मौसनकी शराबमें सानकर आमाशयपर लेप करें। (मय मौसन की विधि) सौसन को गुलाब में भिगावें जब थोड़ासा रसजाय तो उसको मय सौसन और मयसी कहते हैं। (सूचना) मवाद के पकने में पहिले भोजन और अजीर्ण कारक अर्थात् जिनका सार दरगमा होने न दें क्योंकि ये हानि पहुंचाते हैं (३) आमाशय में पानी उत्पन्न हो। इसमें खट्टी वमन, क्षुधाका न होना, आमाशय में गुड़गुड़ाहट और अफरा आदि लक्षण होते हैं उसकी वमन से पानी पड़पड़ा उठता है और इस पर मक्खियां नहीं बैठतीं हैं (इलाज) इसमें कफ नाशक दवा देवें और मवाद को थोड़े वेग द्वारा से सौंफ की सफा बनावें और मवाद के निकलने के पहिले अजीर्ण कारक चीजों से बचें और कफ वाली बादी वमन के [illegible] -

पहले आमाशयको पुष्ट न करना चाहिये क्योंकि आमाशय मवाद को ग्रहण न करेगा तो उचित है कि यही मवाद पोषक अंग की तरफ फिरकर अधिक विपत्ति उत्पन्न करेगा। पांचवां भेद यह है कि मवाद सब शरीर से निचुड कर आमाशय पर गिरे। यह बात बहुधा ज्वरोंमें उत्पन्न होती है और उस की यह पहचान है कि ज्वर के साथ उत्पन्न होता है और उसके जाते रहने से जाता रहता है (इलाज) सब शरीर का मवाद निकालें परन्तु उस के साथ ज्वर का ध्यान रक्खें। छठा भेद यह है कि भोजन के निकम्मे होने से वमन और जी मिचलाना उत्पन्न हो। भोजन का निकम्मा होना तीन प्रकार का है (१) आमाशय की शक्ति से विशेष खाना।(२)विशेष नमकीन चिरपिरे, खारी, खट्टे भोजन आदि (३) कुढब भोजन जैसे गाढे भोजन के ऊपर हलके और नर्म भोजन खाना (इलाज) निकम्मे भोजन को वमन आदि से जिसतरह बन पडे आमाशय से निकालदें और पीछे आमाशय को शक्ति दें और पथ्य से रहे हकीम गीलानी लिखता है कि इस निकम्मे भोजन को गर्म पानी पीकर कईवार वमन के द्वारा निकालदें और सिर पर तेल टपकावें और पेट और पसली पर गर्म कपडे से सिकाव करें और हाथ पांव जैतून के तेल से मलें और उन पर गर्म पानी से तरेडेदें और बहुत सोने को कहदें और जो वमन की अधिकता हो तो दिन भर कुछ न खावें और न्हाने के स्थान में लेजाय और दो तीन दिन तक खाने पीने को कम दें जिसमें असली दशा पर आजाय और जो इस में कुछ निर्बलता होजाय तो पुष्टाई के लिये उचित भोजन देवे और मिट्टी की [illegible] खवावें [illegible] इमा
कहता है कि जो किसी वमनकारक दवा [illegible] वमन [illegible] पत्ती
वस्तुसे जो जी मिचलानेको रोके और आमा[illegible]
है जिसमें अजीर्णता [illegible] होन[illegible]
अमरूद और सेब [illegible] गर्म है फिर [illegible]
और दारचीनी यह [illegible] जिस [illegible]
न हो तो गर्म पानी [illegible] में [illegible]
जाय। सातवां भेद [illegible]
स्पन्न होने से भोजन [illegible]
आमाशयको पुष्ट करें [illegible]
आमाशयकी निर्बलतासे [illegible]
नीबूका शर्बत और [illegible]
प्रकृति हो तो [illegible]

पहले आमाशयको पुष्ट न करना चाहिये क्योंकि आमाशय मवाद को ग्रहण न करेगा तो उचित है कि यही मवाद पोषक अंग की तरफ फिरकर अधिक विपत्ति उत्पन्न करेगा । पांचवां भेद यह है कि मवाद सब शरीर से निचुड़ कर आमाशय पर गिरे । यह बात बहुधा ज्वरोंमें उत्पन्न होती है और उस की यह पहचान है कि ज्वर के साथ उत्पन्न होता है और उसके जाते रहने से जाता रहता है (इलाज) सब शरीर का मवाद निकालें परन्तु उस के साथ ज्वर का ध्यान रक्खें। छठा भेद यह है कि भोजन के निकम्मे होने से वमन और जी मिचलाना उत्पन्न हो । भोजन का निकम्मा होना तीन प्रकार का है (१) आमाशय की शक्ति से विशेष खाना ।(२)विशेष नमकीन चिरपिरे, खारी, खट्टे भोजन आदि (३) कुढब भोजन जैसे गाढे भोजन के ऊपर हलके और नर्म भोजन खाना (इलाज) निकम्मे भोजन को वमन आदि से जिसतरह बन पड़े आमाशय से निकालदें और पीछे आमाशय को शक्ति दें और पथ्य से रहे हकीम गीलानी लिखता है कि इस निकम्मे भोजन को गर्म पानी पीकर कईवार वमन के द्वारा निकालदें और सिर पर तेल टपकावें और पेट और पसली पर गर्म कपड़े से सिकाव करें और हाथ पांव जैतून के तेल से मलें और उन पर गर्म पानी से तरेड़ेदें और बहुत सोने को कहदें और जो वमन की अधिकता हो तो दिन भर कुछ न खवावें और न्हाने के स्थान में लेजाय और दो तीन दिन तक खाने पीने को कम दें जिससे असली दशा पर आजाय और जो इस में कुछ निर्बलता होजाय तो पुष्टाई के लिये उचित भोजन देवे और [illegible] खवावें [illegible] ईसा कहता है कि जो किसी वमनकारक दवा [illegible] वमन [illegible] पानी वस्तुसे जो जी मिचलानेको रोके और आमा[illegible] है जिसमें अजीर्णता और [illegible] होने [illegible] अमरूद और सेव [illegible] पीजे [illegible] और दालचीनी यह [illegible] गर्म है फिर [illegible] न हो तो गर्म पानी [illegible] जिस[illegible] जाय । सातवां भेद [illegible] में [illegible] उत्पन्न होने से भोजन [illegible] नहीं [illegible] आमाशयको पुष्ट नहीं [illegible] आमाशयकी निर्बलतासे [illegible] नीबूका शर्बत और [illegible] प्रकृति हो तो [illegible]

टाने सहित खाना लाभदायक है।
(सूचना) जो विपत्ति आमाशय में हो तो दवा एक साथ खवावें और जो कण्ठनाली में हो तो ठहरा कर पिलावें किन्तु थोड़ीसी मुख में लेकर धीरे २ गले में जानेदें और पीठ तकिया पर लगावें जैसे चित्त लेटते हैं यह सब काम इसलिये हैं कि रोग की जगह पर दवा कुछ देर ठहरे और जो दवाको आमाशय में बहुत देर ठहराना उचित हो तो चहुत महीन न करें और मवाद के लौटाने के लिये हुकना काममें लाना और पिंडलियों पर सिंगिया लगाना लाभदायक है और यह रोग भयानक नहीं है। अजीर्ण और खून के रोकने के लिये यह टिकिया विशेष लाभदायक है (विधि) कुन्दरू गोंद और खुर्फा के बीज प्रत्येक १०॥ माशे, और अनार के फूल, सिमाक, सफेद चंदन प्रत्येक १४ माशे, अकाकिया, कहरबा, प्रत्येक ३॥ माशे, कूट छानकर तुतफा या गुलाब में मिलाकर गोलियां बनावें और काले खुर्फा के बीज के भुने हुए शीरे के साथ ३॥ माशे दें। दूसरा भेद यह है कि जिगर, तिल्ली, या सिरमें कोई विपत्ति पहुंचे और वहां से खून आमाशय में उतर कर वमन में निकले, अगर जो खून जिगर से आया है तो उसमें दुर्गन्धि होगी और यह बात बहुधा जरान तारिया अर्थात् जिगर के दस्तों में पायी जाती है। जिगर के दस्तों में वमन के द्वारा रुधिर निकलना प्रायः रोगी को मार डालता है और जो खून तिल्ली से आता है तो रंगकाला होगा और बहुधा यह रुधिर * कुछ गाढ़ा और खट्टा भी होता है परन्तु सिरसे आमाशय में बिना नकसीर के रुधिर नहीं आसकता और इसमें पहले नकसीर अवश्य चलती है और ऐसे ही वमन में दिमाग के रुधिर के आनेका यह चिन्ह है यह कभी २ खकार के समय नाक और मुखमे निकल जाता है (इलाज) जिस अगमें विपत्ति हो उसी अग का इलाज करें और मवाद को दूसरी ओर से निकालदें इसमें प्रथम भेद में कहे हुए उपायों का विशेष ध्यान रक्खे। इन रोगों में फसद से उत्तम कोई चीज नहीं है और जब तक मवाद विशेष भरा हुआ न हो कभी अधिक खून न निकालें किन्तु थोड़ा २ कई बारमें निकालना चाहिये जिससे काम निकल आवे औरहानि न हो यदि कोई कार्य वर्जित न हो तो फसद खोलने में देर न करें क्योंकि आरम्भ में फसद के न खोलने से विशेष लाभ नहीं होता और जो जिगर से वमन में खून आवे तो जरावन्द की टिकियादें (जिगर को हुर

---

* किताब दस्तूरउल इलाज में लिखा है तिल्ली का खून बहुधा रुकावटके विशेष गाढ़ापन लिये होता है क्योंकि तिल्ली का खून बहुधा बादी का होता है और मानना चाहिये कि जो वमन में खून आने के साथ ज्वर भी हो तो विशेष भयानक और निकम्मा है और जो ज्वर न हो तो डर नहीं।

दाने सहित खाना लाभदायक है।
(सूचना) जो विपत्ति आमाशय में हो तो दवा एक साथ खवावें और जो कंठनाली में हो तो ठहरा कर पिलावें किन्तु थोड़ीसी मुख में लेकर धीरे २ गले में जानेदें और पीठ तकिया पर लगावें जैसे नित्त लेटते हैं यह सब काम इसलिये है कि रोग की जगह पर दवा कुछ देर ठहरे और जो दवाको आमाशय में बहुत देर ठहराना उचित हो तो बहुत महीन न करें और मवाद के लौटाने के लिये छुकना काममें लाना और पिंडलियों पर सिंगिया लगाना लाभदायक है और यह रोग भयानक नहीं है। अजीर्ण और खून के रोकने के लिये यह टिकिया विशेष लाभदायक है (विधि) कुन्दरू गोंद और खुर्फा के बीज प्रत्येक १०॥ माशे, और अनार के फूल, सिमाक, सफेद चंदन प्रत्येक १४ माशे, अकाकिया, कहरबा, प्रत्येक ३॥ माशे, कूट छानकर बुतङ्ग या गुलाब में मिलाकर गोलियां बनावें और काले खुर्फा के बीज के भुने हुए शीरे के साथ ३॥ माशे दें। दूसरा भेद यह है कि जिगर, तिल्ली, या सिरमें कोई विपत्ति पहुंचे और वहां से खून आमाशय में उतर कर वमन में निकले, अगर जो खून जिगर से आया है तो उसमें दुर्गन्धि होगी और यह बात बहुधा जरान तारिया अर्थात् जिगर के दस्तों में पायी जाती है। जिगर के दस्तों में वमन के द्वारा रुधिर निकलना प्रायः रोगी को मार डालता है और जो खून तिल्ली से आता है तो रंगकाला होगा और बहुधा यह रुधिर * कुछ गाढ़ा और खट्टा भी होता है परन्तु सिरसे आमाशय में बिना नकसीर के रुधिर नहीं आसकता और इसमें पहले नकसीर अवश्य चलती है और ऐसे ही वमन में दिमाग के रुधिर के आनेका यह चिन्ह है यह कभी २ खकार के समय नाक और मुखसे निकल जाता है (इलाज) जिस अंगमें विपत्ति हो उसी अंग का इलाज करें और मवाद को दूसरी ओर से निकालदें इसमें प्रथम भेद में कहे हुए उपायों का विशेष ध्यान रक्खें। इन रोगों में फसद से उत्तम कोई चीज नहीं है और जब तक मवाद विशेष भरा हुआ न हो कभी अधिक खून न निकालें किन्तु थोड़ा २ कई बारमें निकालना चाहिये जिससे काम निकल आवे औरहानि न हो यदि कोई कार्य वर्जित न हो तो फसद खोलने में देर न करें क्योंकि आरम्भ में फसद के न खोलने से विशेष लाभ नहीं होता और जो जिगर से वमन में खून आवे तो जराबन्द की टिकियाईं (जिगर को पुष्ट

---

* किताब दस्तूरउल इल्लाजमें लिखा है तिल्ली का खून बहुधा स्याहरंग लिवाय गाढ़ापन लिये होता है क्योंकि तिल्ली का खून बहुधा सौदा का होता है और जानना चाहिये कि जो वमन में खून आने के साथ ज्वर भी हो तो विशेष भिन्नभेद और निकम्मा है और जो ज्वर न हो तो डर नहीं।

है इसलिये जो आवश्यकता पड़े तो उसका खोलना भी योग्य है और जिस रोगी को रगों की खुश्की का कारण हो तो पीने की दवा और लेप से तरी पहुंचावें और जब तक मवाद का लौटाना बिना निकालनेके हो सके तो निकालें परंतु यह बात उस समय है जब यह मालूम हो कि मवादके कारणसे खुश्की है और यह बात याद रक्खें कि जब वमन में खून आने की दशा में फसद खोलें और खून के निकलने से रोगी को आराम मालूम हो तो बन्द न करें और विशेष निकालें और बहुधा ऐसा होता है कि वमन में रुधिरके निकलने की दशा में रुधिर दूध की तरह आमाशय में जम जाता है। इसका वर्णन आगे होगा हकीम मुहम्मद जकरिया कहता है कि मैंने एक मनुष्य को देखा जिसकी वमन में अखरोट से बड़ा एक मांस का टुकड़ा निकला और आरोग्य रहा मेरे विचार में यह आता है कि आमाशयमें कोई बड़ा मस्सा या नासूर था और उसकी जड़ बारीक होगई थी वह वमन के वेग से टूट कर निकल आया इस रोग में विशेष गुणकारक और आमाशयको आरोग्य रखने वाली दवा यह है माजू, अनारके फूल प्रत्येक ७ माशे, अफीम १०॥ रत्ती, बारतंग के पानी में मिलाकर प्रतिदिन बिना कुछ खाये थोड़ीसी खालें (दूसरी दवा) बकरे का खून आधसेर, और उसके बराबर तेज सिरके मिलाकर हलका औटावें और तीन दिन बिना कुछ खाये पीवें यह वमन में खून आने के लिये परीक्षा किया हुआ है और अंगूर की पत्ती का पानी पीना लाभदायक है और चौलाई, बारतंग का पानी, तुलसी का पानी, खुर्फा की पत्ती, और पानी तथा कुर्स की टिकिया रगों के फटजाने में लाभदायक है। (कुर्स की टिकिया की विधि) सादनामगामूल हीरा दुखी गोंद, प्रत्येक १०॥ माशे, अनार के फूल, माजू प्रत्येक ७ माशे, बारह सिंहा का सींग जलाहुआ ३॥ माशे, केसर सादन प्रत्येक १॥। माशे, हसरान ३॥ माशे सब दवाओं को कूट छानकर बारतंग के पानी में मिलाकर टिकिया बना लें इसकी मात्रा युवा के लिये ३॥ माशे है और उक्त दवाओं में से किसी दवाके पानी में खावे दहमरगा (एक माजून) विशेष लाभदायक है यह आमाशय, जिगर, गर्भस्थान की सर्दी, निर्बल अंगों की सुस्ती और रुधिर आदि के बहाने के लिये काममें लाई जाती है (विधि) तुख्म के बीज, ५॥ माशे, मस्तगी, कुन्द्र किरमानी, केसर अफ्लीमून उन्मुलमिर, बालछड़, काली मिर्च ३५ माशे, रेवंद चीनी मरातेदगरीम, नरायट हुड़हरिज प्रत्येक ५२ माशे, लौंग सौंफ, कूट पद्माख प्रत्येक २०५ माशे, सौंठ २१ माशे, इन्द्री गनेद, गुलाब के फूल, कासा दाना प्रत्येक १२६॥ माशे, पुदना ४९ माशे, मधीन पीसकर आवश्यकता के

है इसलिये जो आवश्यकता पड़े तो उसका खोलना भी योग्य है और जिस रोगी को रगों की खुश्की का कारण हो तो पीने की दवा और लेप से तरी पहुंचावें और जब तक मवाद का लौटाना विना निकालनेके हो सके तो निकालें परंतु यह बात उस समय है जब यह मालूम हो कि मवादके कारणसे खुश्की है और यह बात याद रक्खें कि जब वमन में खून आने की दशा में फसद खोलें और खून के निकलने से रोगी को आराम मालूम हो तो बन्द न करें और विशेष निकालें और बहुधा ऐसा होता है कि वमन में रुधिरके निकलने की दशा में रुधिर दूध की तरह आमाशय में जम जाता है। इसका वर्णन आगे होगा हकीम मुहम्मद जकरिया कहता है कि मैंने एक मनुष्य को देखा जिसकी वमन में अखरोट से बड़ा एक मांस का टुकड़ा निकला और आरोग्य रहा मेरे विचार में यह आता है कि आमाशयमें कोई बड़ा मस्सा या नासूर था और उसकी जड़ बारीक होगई थी वह वमन के वेग से टूट कर निकल आया इस रोग में विशेष गुणकारक और आमाशयको आरोग्य रखने वाली दवा यह है माजू, अनारके फूल प्रत्येक ७ माशे, अफीम १०॥ रत्ती, बारतंग के पानी में मिलाकर प्रतिदिन विना कुछ खाये थोड़ीसी खालें (दूसरी दवा) बकरे का खून आधसेर, और उसके बराबर तेज सिर्का मिलाकर हलका औटावें और तीन दिन विना कुछ खाये पीवें यह वमन में खून आने के लिये परीक्षा किया हुआ है और अंगूर की पत्ती का पानी पीना लाभदायक है और चौलाई, बारतंग का पानी, तुल्सी का पानी, खुर्फा की पत्ती, और पानी तथा सुर्मा की टिकिया रगों के फटजाने में लाभदायक है। (सुर्मा की टिकिया की विधि) सादनामशामूल हीरा दूखी गोंद, प्रत्येक १०॥ माशे, अनार के फूल, माजू प्रत्येक ७ माशे, बारह सिंहा का सींग जलाहुआ ३॥ माशे, केसर लादन प्रत्येक १॥। माशे, रसवत ३॥ माशे सब दवाओं को कूट छानकर बारतंग के पानी में मिलाकर टिकिया बना लें इसकी मात्रा युवा के लिये ३॥ माशे है और उक्त दवाओं में से किसी दवाके पानी में दें दबीदुलवर्द [illegible] (एक माजून) विशेष लाभदायक है यह आमाशय, जिगर, गर्भस्थान की सर्दी, [illegible] अंगों की सुस्ती और रुधिर आदि के बहान के लिये काममें लाई जाती है (विधि) [illegible] के बीज, ८१ माशे, मस्तगी, [illegible], केसर [illegible], बालछड़, काली मिर्च ३५ माशे, [illegible] [illegible], [illegible] प्रत्येक ८० माशे, [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] प्रत्येक २०५ माशे, सोंठ २१ माशे, [illegible] [illegible], गुलाब के फूल, [illegible] दाना प्रत्येक १२६॥ माशे, [illegible] ४९ माशे, [illegible] [illegible] आवश्यकता के

को बिगाड़ने वाली वस्तुओं को त्यागदे अब उन दवाओं का वर्णन करते हैं जो इस विषय में अधिक लाभ दायक हैं सिर्का आमाशय, आंतों और फुकने में जमे हुए रुधिर को पिघलाकर बहा देता है। और बकरी का दूध उस खून को जो अंग की पोलों में जमजाता है बहा देता है पोदीना कूटकर और उसका पानी बूरे में मिलाकर पिलावें तो दूध की हानि को और उसके जमने को रोक देता है, हींग सिकंजवीन में मिलाकर पिलावें तो दूध के जमाने के लिये लाभदायक है और जो सूखा पोदीना १७॥ माशे किसी को खवावें तो उसी समय जमे हुए दूध को बहा देता है। खरगोश का पनीर बच्चे को खवाना उस की वमनके लिये जो दूधके जमने से उत्पन्न होतीहै रोक देताहै इस विषयमें पनीर सर्वोत्तम होताहै। अजीर की लकड़ी की राख पानीमें डालदें जब बैठजाय तो निंतरा पानी एक बर्तनमें लें और दूसरी बार और राख उस में डालें और कई बार इसी तरह करें फिर वह पानी पीवे तो दूध को बहादेता है। कई को कूटकर नर्मकरें और खवाने से जो दूध आमाशय में जमगया हो बह जायगा और बहता हो तो जम जायगा॥

बाईसवा प्रकरण

हिचकी का वर्णन।

जब आमाशयके मुखकी गति के साथ आमाशयके भीतरके भाग ऊपरको हिलते हैं तब आमाशय की गहराई उसके मुखकी तरफ खिंचती है इसी का नाम हिचकी रक्खा है। यह गति सुकड़ने और फैलने से इस तरह मिली है कि पहले तो आमाशय का रेग और उसकी झिल्लियां सिमटकर पहले भाग ती हैं फिर वैसेही उस कष्ट के हटाने के लिये उसके सब भागों में और चारों क झिल्लियों में फैलावट होती है इससे वास्तव में हिचकी में दो गति हैं। और यह रोग आठ प्रकार का होता है। पहला यहहै कि गर्म और तर दोषों मेंसे कोई दोष वा तीक्ष्ण भोजन या दवा आमा[illegible] मुख में जलन करके हिचकी उत्पन्न करे उसका यह चिन्ह है [illegible] मुखमें [illegible]
उसमें कारण व्यतीत होचुके हों जैसे पीली [illegible] वमन [illegible]
कोई तेज दवा या तेज भोजन खाया हो और [illegible] अधिक
तो उसके सब चिन्ह मगर [illegible] हिचकी की [illegible] पानी
के अनुसार होती है [illegible] पहले [illegible]
मन करे फिर ईसबग[illegible] [illegible] या मी[illegible]
के साथ पिलावे तिस[illegible] की प्रकृति
नम करे और भोजन [illegible] में [illegible]

को बिगाड़ने वाली वस्तुओं को त्यागदे अब उन दवाओं का वर्णन करते हैं जो इस विषय में अधिक लाभ दायक हैं सिर्का आमाशय. आंतों और फुकने में जमे हुए रुधिर को पिघलाकर बहा देता है। और बकरी का दूध उस खून को जो अंग की पोलों में जमजाता है बहा देता है पोदीना कूटकर और उसका पानी बूरे में मिलाकर पिलावें तो दूध की हानि को और उसके जमने को रोक देता है, हींग सिकंजवीन में मिलाकर पिलावें तो दूध के जमाने के लिये लाभदायक है और जो सूखा पोदीना १७॥ माशे किसी को खवावें तो उसी समय जमे हुए दूध को बहा देता है। खरगोश का पनीर बच्चे को खवाना उस की वमनके लिये जो दूधके जमने से उत्पन्न होतीहै रोक देताहै इस विषयमें पनीर सर्वोत्तम होताहै। अजीर की लकड़ी की राख पानीमें डालदें जब बैठजाय तो नितरा पानी एक बर्तनमें लें और दूसरी बार और राख उस में डाले और कई बार इसी तरह करे फिर वह पानी पीवे तो दूध को बहादेता है। कई को कूटकर नमककेँ और खवाने से जो दूध आमाशय में जमगया हो बह जायगा और बहता हो तो जम जायगा ॥

बाईसवा प्रकरण

हिचकी का वर्णन।

जब आमाशयके मुखकी गति के साथ आमाशयके भीतरके भाग ऊपरको हिलते हैं तब आमाशय की गहराई उसके मुखकी तरफ खिंचती है इसी का नाम हिचकी रक्खा है। यह गति सुकड़ने और फैलने से इस तरह मिली है कि पहले तो आमाशय का रंग और उसकी झिल्लियां सिमटकर कष्टसे भाग ती हैं फिर वैसेही उस कष्ट के हटाने के लिये उसके सब भागों में और सारी क झिल्लियों में फैलावट होती है इससे वास्तव में हिचकी में दो गति हैं। और यह रोग आठ प्रकार का होता है। पहला यहहै कि गर्म और तज दोनों मेंसे कोई दोष वा तीक्ष्ण भोजन या दवा आमा[illegible] मुख में जलन करके हिचकी उत्पन्न करे उसका यह चिन्ह है [illegible] मुखमें [illegible]
उसमें कारण व्यतीत होचुके हों जैसे पहिले [illegible] वमन [illegible]
कोई तेज दवा या तेज भोजन खाया हो और [illegible]
तो उसके सब चिन्ह प्रगट [illegible] हिचकी की [illegible] अधिक [illegible]
के अनुसार होती है [illegible] पहले [illegible] पानी [illegible]
मन करे फिर ईसबगो[illegible] [illegible]य का मे[illegible]
के साथ पिलावे नि[illegible] की प्रकृति [illegible]
जम करे और भोजन [illegible] [illegible] में [illegible]

उखाड़ने के लिये छींक विशेष गुणकारी है तीसरा भेद यह है कि आमा शय में तरी विशेष हो और उस पर चिपट जाय फिर आमाशय उसके निकाल- ने में परिश्रम करे उस का यह चिन्ह है कि मुख में पानी भर आवे और आ- माशयमें भारापन हो और पचाव बिगड़ जाय और भोजन खट्टा होजाय(इलाज) इस में वमनकारक और मलनिस्सारक दवा देवे और यहां सब दस्तावर दवाओं से उत्तम यारजात है हिचकी के मवाद के निकालने में छींक का लाना विशेष गुणकारी है । चौथा भेद यह है कि गाढ़े भोजनों के अधिक सेवन से आमाशयमें भारापन हो और आमाशय उस के दूर करने में परिश्रम करे और हिचकी आने लगे उसका यह चिन्ह है उक्त भोजन के खाने के पीछे हिचकी उत्पन्न हो और बहुधा ऐसा होता है कि परिश्रम और स्नान करना छोड़ने से भी आमाशय में मवाद बढ़कर इस रोग का कारण होता है (इलाज) गर्म गर्म पानी पीकर भोजन को निकाल दें और थोड़े समय तक कम भोजन खाय और जठराग्निको तेजकरे इसमें शारीरिक परिश्रम और स्नान करना उचित है । पांचवां भेद यह है कि ठंडी दुष्ट प्रकृति आमाशय में उत्पन्न होकर हिचकी उत्पन्न करे। इसके तीन कारण हैं एक तो यह है कि जब दुष्ट प्रकृति आमा शय में उत्पन्न हो और इस कारण से जब अन्न न पच सके और आमाशय को कष्ट दे फिर आमाशय उसके दूर करने का यत्न करे। दूसरे यह है कि सर्दी आमाशय के भागों को सकोड़ कर उसे कष्ट देती है और फिर तबियत उसको चौड़ा करने की गति करती है और अपनी असली दशा पर लाकर कष्ट को दूर करती है । तीसरे यह है कि सर्दी आमाशय के विरुद्ध है और आमा शय अपनी विरुद्ध और कष्टकारक वस्तुओं को दूर करना चाहता है और इस का यह चिन्ह है कि प्यास कम हो और गर्म चीजों की तरफ रुचि हो यह दशा बहुधा बुड्ढों को उत्पन्न होती है क्योंकि उनकी गर्मी निर्बल होती है (इलाज) आमाशय में गर्मी पहुंचाने के लिये अजमोद के बीज जंगली गाजर के बीज, जीरा, रूमी सौंफ, सोंठ, पोदीना, बालछड़, बच, जुन्दबेदस्तर जंगली प्याज के सिर्के में मिलाकर खवाय और इन्हीं दवाओं को पुराने जै- तून में आमाशय पर भी मले और मुर्गी मांस जीरा दालचीनी सोंठ के साथ पकाकर खाय और जान लेना चाहिये कि जोर से उलटना चीखना, क्रो- ध, भय, शोक, मसगा, आल्हाद और चिन्ता करना तथा श्वास का त्याग रोकना इस रोग में विशेष लाभदायक है । [illegible] लिखा है । कि जो हिचकी सादा सर्दी से हो तो वे दवा लाभदायक होंगी जो तरी वाली हिचकी में वर्णन की गई हैं और इन्हीं का गर्म, मसूड़ों और दाढ़ियों पर

उखाड़ने के लिये छींक विशेष गुणकारी है तीसरा भेद यह है कि आमा
शय में तरी विशेष हो और उस पर चिपट जाय फिर आमाशय उसके निकाल-
ने में परिश्रम करे उस का यह चिन्ह है कि मुख में पानी भर आवे और आ-
माशयमें भारापन हो और पचाव बिगड़ जाय और भोजन खट्टा होजाय(इलाज)
इस में वमनकारक और मलनिस्सारक दवा देवे और यहां सब दस्तावर
दवाओं से उत्तम यारजात है हिचकी के मवाद के निकालने में छींक का लाना
विशेष गुणकारी है । चौथा भेद यह है कि गाढ़े भोजनों के अधिक सेवन से
आमाशयमें भारापन हो और आमाशय उस के दूर करने में परिश्रम करे और
हिचकी आने लगे उसका यह चिन्ह है वक्त भोजन के खाने के पीछे हिचकी
उत्पन्न हो और बहुधा ऐसा होता है कि परिश्रम और स्नान करना छोड़ने से
भी आमाशय में मवाद बढ़कर इस रोग का कारण होता है (इलाज) कुन्ट
गर्म पानी पीकर भोजन को निकाल दें और थोड़े समय तक कम भोजन खाय
और जठराग्निको तेजकरे इसमें शारीरिक परिश्रम और स्नान करना उचित है
। पांचवां भेद यह है कि ठंडी दुष्ट प्रकृति आमाशय में उत्पन्न होकर हिचकी
उत्पन्न करे.। इसके तीन कारण हैं एक तो यह है कि जब दुष्ट प्रकृति आमा
शय में उत्पन्न हो और इस कारण से सब अन्न न पच सके और आमाशय
को कष्ट दे फिर आमाशय उसके दूर करने का यत्न करे। दूसरे यह है कि
सर्दी आमाशय के भागों को सकोड़ कर उसे कष्ट देती है और फिर तबियत
उसको चौड़ा करने की गति करती है और अपनी असली दशा पर लाकर कष्ट
को दूर करती है । तीसरे यह है कि सर्दी आमाशय के विरुद्ध है और आमा
शय अपनी विरुद्ध और कष्टकारक वस्तुओं को दूर करना चाहता है और इस
का यह चिन्ह है कि प्यास कम हो और गर्म चीजों की तरफ रुचि हो यह
दशा बहुधा वृद्धों को उत्पन्न होती है क्योंकि उनकी गर्मी निर्बल होती है
(इलाज) आमाशय में गर्मी पहुंचाने के लिये अजमोदके बीज जंगली गाजर
के बीज, जीरा, रूमी सौंफ, सोंठ, पोदीना, बालछड़, बच [illegible]
जंगली प्याज के सिर्के में मिलाकर खवाय और [illegible] दवाओं को पुराने घी
[illegible] में आमाशय पर भी रक्खे और मुर्गी मांस [illegible] सोंठ के साथ
पकाकर खाय और जान लेना चाहिये कि रोग से उत्पन्न [illegible]
प, पुष्प मोर मसूरा, आन्नाद और चिन्ता करना तथा श्वास का प्राण रोकना
इस रोग में विशेष लाभदायक है । [illegible]
[illegible] सर्दी, [illegible] ये दवा लाभदायक होंगी जो [illegible]
हिचकी में वर्णन की गई हैं और उन्हीं का [illegible] और [illegible] पर

कारण यह है कि उसको दूर करता है और इनमें मुकद्द जाने का कारण खुश्की है और फैलजाने का कारण उसका वीक करना है। ऐसी हिचकी खराब होती हैं क्योंकि यह सब अवयवों की तरी के नष्ट होने से उत्पन्न होती है यदि यह थोड़े दिनकी है और मवाद कम निकला हो तो साध्य है और जो बहुत दिनकी हो और मवाद भी बहुत निकल चुका हो तो असाध्य है और शक्ति में विशेष निर्बलता आगई हो तो इसके उपाय के लिये अधिक दिन चाहिये और रोगी का इतने समय तक बचना कठिन है (इलाज)बाहर और भीतर से तरी पहुचावें और पीने को नर्म वस्तु जैसे ताजा दूध जौका दालिया, घीआ का पानी बूरे और बादाम के तेल के साथ दें और बहुत से मीठे अनार का पानी, ईसब गोलका लुआब, बिही दाने का लुआब, बनफशा के तेल के साथ लाभदायक होता है और बनफशा का तेल नाकसे सुकड़ना और गर्दन की गुद्दियों पर मलना लाभदायक है और भोजन में मांसका पानी, मुर्गी का अंडा अधभुना गाढ़ा जौकादलिया दें जो गर्मी की अधिकता या मवाद के निकलने से उत्पन्न हो तो ठंडा गुलाब, ईसबगोल का लुआब, गुलरौगन, बनफशा का तेल, तरबूज का पानी ककड़ी का पानी, वा लम्बी घीआ का पानी, और खुर्फा के बीज का शीरा थोड़ासा लुआब और बनफशा का तेल , घीआ के बीजकी गिरी का तेल,या बादाम का तेल आदि मिलाकर पिलावें और खाने के लिये जौका पानी बादाम का तेल,और मिश्री मिलाकर दें और जो हिचकी मवाद के निकलने से उत्पन्न हो तो असाध्य है और इसका यह इलाज है कि बादाम का तेल जौके पाट में मिलाकर पिलावें और ईसब गोलका लुआब शर्बत खशखाश के साथ और मुर्गे के बच्चों का शोरबा भोजन में दें। हिचकी की दवाओं का वर्णन। सेपती को कूटकर उसका पानी पिलाना (अथवा) पोदीना का पानी या खट्टे अनार का पानी (अथवा) जरावन्द मुदहरिज कूटकर पानी के साथ फांकना(अथवा)विशेष ठंडा पानी पीना(अथवा)जुन्दबेदस्तर सिर्के के साथ देना(अथवा)शक्कर चीनी और मस्तगी दोनोंका वाथ हिचकी को दूर करता है अजमोद के बीज, असली गाजर के बीज, पिस्ता के छिलका, पत, मर्मी सौंफ पोदीना, तगर, जामनी अजमोद, नागरमोथा, जुन्दबेदस्तर, गौंद, जरावन्द, सुम्बुली, अजवाइन,कुन्दुम गोंद पहाड़ी सौसन सातर नम्माम ईसब-गोल का लुआब, जौका दलिया, मीठे बादाम का तेल ॥ ये दवा हिचकी को दूर करती हैं इनको रोग के अनुसार ग्रहण करें।

कारण यहहै कि उसको दूर करता है और इनमें मुकद जाने का कारण खुश्की है और फैलजाने का कारण उसका ठीक करना है। ऐसी दिपकी खराब होती हैं क्योंकि यह सब अवयवों की तरी के नष्ट होने से उत्पन्न होती है यदि यह थोडे दिनकी है और मवाद कम निकला हो तो साध्य है और जो बहुत दिनकी हो और मवाद भी बहुत निकल चुका हो तो असाध्य है और शक्ति में विशेष निर्बलता आगईहो तो इसके उपाय के लिये अधिक दिन चाहिये और रोगी का इतने समय तक बचना कठिन है (इलाज)बाहर और भीतर से तरी पहुचावें और पीने को नर्म वस्तु जैसे ताजा दूध जौका दलिया, घीआ का पानी बूरे और बादाम के तेल के साथ दें और बहुत से मीठे अनार का पानी, ईसब गोलका लुआब, बिही दाने का लुआब, बनफशा के तेल के साथ लाभदायक होता है और बनफशा का तेल नाकसे सुकडना और गर्दन की गुद्दियों पर मलना लाभदायक है और भोजन में मांसका पानी, मुर्गी का अंडा अधगुना गाढा जौकादलिया दें जो गर्मी की अधिकता या मवाद के निकलने से उत्पन्न हो तो ठंडा गुलाब, ईसबगोल का लुआब, गुलरोगन, बनफशा का तेल, तरबूज का पानी ककडी का पानी, या लम्बी घीआ का पानी, और खुर्फा के बीज का शीरा थोडासा लुआब और बनफशा का तेल, घीआ के बीजकी गिरी का तेल, या बादाम का तेल आदि मिलाकर पिलावें और खाने के लिये जौका पानी बादाम का तेल,और मिश्री मिलाकर दें और जो हिपकी मवाद के निकलने से उत्पन्न हो तो असाध्य है और इसका यह इलाज है कि बादाम का तेल जौके घाट में मिलाकर पिलावें और ईसब गोलका लुआब शर्बत खशखाश के साथ और मुर्गे के बच्चों का शोरवा भोजन में दें। हिपकी की दवाओं का वर्णन। सेपरी को कूटकर उसका पानी पिलाना (अथवा) पोदीना का पानी या खट्टे अनार का पानी (अथवा) जराबन्द मुदहिज कूटकर पानी के साथ फांकना(अथवा)विशेष ठंढा पानी पीना(अथवा)कुन्दुरबेदुस्तर शिकें के साथ देना(अथवा)दाल चीनी और मस्तगी दोनोंका लाभ हिपकी को दूर करता है अजमोद के बीज, जंगली गाजरके बीज, पिस्ता के छिलका, बच, कर्मी सौंफ पोदीना, तगर, जंगली अजमोद, नागरमोथा, कुन्देबेदस्तर, हींग, जराबन्द, सुमगी, अजवायन, कुन्दुर गोंद बतारी मीसन तातर नरमाम ईसब-गोल का लुआब, जौका दलिया, मीठे बादाम का तेल॥ ये दवा हिपकी को दूर करती हैं इनको रोग के अनुसार ग्रहण करें।

है वह घबराहट और बेचैनी उत्पन्न करके उबकाईका कारण होता है और जब आमाशय के मुख में उत्पन्न होता है तो जी मिचलाता है। जब आमाशय निर्बल होता है या मवाद थोड़ा या पतला हो वा अंग में घुस जाता है तो उस का निकलना सहज नहीं और वह वमन में नहीं निकलता है। आमाशय की गर्मी के लक्षण उसकी दुष्ट प्रकृति तथा वमन और उबकाई के प्रकरण में स विस्तर वर्णन किये गये हैं (इलाज) मवाद के निकालने के लिये गुनगुना पानी और सिकंजबीन पीकर वमन करें और ककड़ी के पानी में शर्बत बिही या शर्बत सेब मिलाकर पिलावें जिससे गर्मी कम हो और जौके सत्तूमें थोड़ा सा वंसलोचन और गुलाब मिलाकर खवावें और चंदन, गुलाब, कपूर और घीया के छिलके का आमाशय पर लेप करें और बाकी उपाय वमन के प्रकरण में से आवश्यकता के अनुसार ग्रहण करें। दूसरा भेद यह है कि वह ठंडा मवाद जो नमकीन, खट्टा या खारी हो और आमाशय में दुर्गन्धि इकट्ठी करके बेचैनी और घबराहट उत्पन्न करें उसका चिह्न आमाशय की दुष्ट प्रकृति तथा कफ और बादी की वमन से प्रगट होगा (इलाज) मवाद के निकालने के लिये शहद की बनी हुई सिकंजबीन, सोया के काढ़े के साथ मिलाकर वमन करावें और मवाद का नर्म करने और पिघलाने वाली चीजें जैसे सौंफका पानी और अफसन्तीनका शर्बत काममें लावें जिससे मवाद निकल जाय इसमें वमन कराने की यह विधि है मूली के बीज पानी में औटाकर और पीकर वमन करें फिर नींबू का शर्बत और खट्टे मीठे अनार का शर्बत जिसमें पोदीना पड़ाहो [illegible] करें तो विशेष लाभदायक है।

पच्चीस[illegible]

आमाशय के [illegible] वर्णन

इसका यह [illegible] है कि यकृत [illegible] आमाश[illegible] न कि [illegible]
बेगीरी पड़[illegible] जमने वाले [illegible] होती [illegible]
कारण ठंडा [illegible] है तो आमा[illegible] हो [illegible]
आगिरे फिर [illegible] आमाशय [illegible] वस[illegible]
होती तो अन[illegible] उत्पन्न [illegible] मि[illegible]
का कष्ट रहे। [illegible] है कि [illegible]
लविगन में भर्ती [illegible] [illegible] यह [illegible]
उत्पन्न के कारण [illegible] और [illegible]
सरेमां आमाशयमें [illegible]

है यह घबराहट और बेचैनी उत्पन्न करके उबकाईका कारण होता है और जब आमाशय के मुख में उत्पन्न होता है तो जी मिचलाता है । जब आमाशय नि र्बल होता है या मवाद थोड़ा या पतला हो वा अंग में घुस जाता है तो उस का निकलना सहज नहीं और यह वमन में नहीं निकलता है । आमाशय की गर्मी के लक्षण उसकी दुष्ट प्रकृति तथा वमन और उबकाई के प्रकरण में प्र विस्तर वर्णन किये गये हैं (इलाज) मवाद के निकालने के लिये गुनगुना पानी और सिकंजबीन पीकर वमन करें और ककड़ी के पानी में शर्बत बिही या शर्बत सेब मिलाकर पिलावें जिससे गर्मी कम हो और जौके सत्तूमें थोड़ा सा वंशलोचन और गुलाब मिलाकर खवावें और चंदन, गुलाब, कपूर और घीया के छिलके का आमाशय पर लेप करें और बाकी उपाय वमन के प्र करण में से आवश्यकता के अनुसार ग्रहण करें । दूसरा भेद यह है कि यह ठंडा मवाद जो नमकीन, खट्टा या खारी हो और आमाशय में दुर्गन्धि इकट्ठी करके बेचैनी और घबराहट उत्पन्न करे उसका चिन्ह आमाशय की दुष्ट प्र कृति तथा कफ और खट्टी की वमन से प्रगट होगा (इलाज) मवाद के नि- कालने के लिये शहद की बनी हुई सिकंजबीन, सोया के काढ़े के साथ पि लाकर वमन करावें और मवाद का नर्म करने और पचाने वाली चीजें और सौंफका पानी और अफसन्तीनका शर्बत काममें लावें जिससे मवाद निकल जाय इसमें वमन कराने की यह विधि है मूली के बीज पानी में भिगोकर और पीकर वमन करें फिर नींबू का शर्बत और खट्टे मीठे अनार का शर्बत जिसमें पोदीना पड़ाहो [illegible] करें तो विशेष लाभदायक है ।

पच्चीस[illegible]

आमाशय के [illegible] वर्णन

इसका यह [illegible] है कि यकफन [illegible] आमाश[illegible] [illegible] न कि बैनीही पड़[illegible] शमने वाले [illegible] होती [illegible] कारण ठंडा [illegible] है सो आमा[illegible] [illegible] हो [illegible] आखिर फिर [illegible] आमाशय [illegible] उस[illegible] होती तो अन्[illegible] उत्प[illegible] मि[illegible] का कष्ट रहे । [illegible] है कि [illegible] सविस्तर में वर्णा[illegible] [illegible] मव[illegible] जन्न के कारण [illegible] और [illegible] सरेसा आमाशयमें [illegible]

की बादी से उत्पन्न हो वह भूख में बढ़जाती है और जब पेट भरा हो तब थमजाती है (इलाज) प्रथम प्रकार के रोग में सोया और मूली के पानी में शहद और नोन मिलाकर वमन करे और हलका भुना हुआ मांस मसालेदार खावे और जठराग्नि को बढ़ाने का उपाय करे और जो रोग का कारण वह बादी है जो तिल्ली से गिरती है तो उसँल्म अथवा बायें हाथसे बासलीकपी फस्द खोलें पीछे सिकंजबीन बुजूरी पिलावें और हर्डका मुरब्बा और आंवलेका मुरब्बा खाने को देवें (पुष्टिकारक माजून की विधि) जायफल, जावित्री लौंग दालचीनी, बालछड़, नागरमोथा, छिला आंवला, छोटी इलायचीके दाने यह सब दवा तोल में बराबर लेकर सफेद कन्द और शहद की चासनी में उक्त दवाओं को मिलाकर माजून तैयार करें । किताब इलाज उलअमराज में लिखा है कि हर्ड का मुरब्बा आमाशय को पुष्ट करने वाला, कोष्ठ को नर्म करने वाला तथा बवासीर को लाभदायक है और हकीम लोग कहते हैं कि जो एक साल बराबर उसको सेवन करे और बीच में कोई खट्टी वस्तु न खाय तो बाल सफेद नहीं होवे ।

अट्ठाईसवां प्रकरण ।

आमाशय की खुजली और खुरचन का वर्णन ।

इसके दो कारण हैं (१) खुजली उत्पन्न करने वाला कोई खारयुक्त तेज दोष किसी अंग से आमाशय पर गिरे जैसे सिरसे नजला आमाशय पर गिरता है । (२) छोटी २ फुंसियां खाज और खुजली के समान आमाशय के भीतरी भागमें उत्पन्न हों । इन दोनों में यह अन्तर है कि जो खुजली और खुरचन फुन्सियों के उत्पन्न होने से हो तो भोजन बिना पचे वमन या दस्तों में निकले और जो कुछ आमाशय की फुंसियों के प्रकरण में कहा जायगा प्रगट होगा । भोजन के न पचने का यह कारण है कि आमाशय फुंसियों के कष्ट से भोजन को नहीं दबाता है और जिस रोगी के आमाशय में दोष के गिरनेसे खुजली उत्पन्न हो उसके लक्षण [illegible] होंगे और भोजन पचकर निकलेगा। (इलाज) जो फुन्सियों के कारण से हो तो [illegible] की चिकित्सा जिस में [illegible] न हो ग्रहण करें और अनार की गोली का चूर्ण और [illegible] लाभदायक है और बाकी उपाय आमाशय के [illegible] की फुंसियों के प्रकरण में से ग्रहण करें और आमाशय की फुंसियों का भी इस का वर्णन हुआ है । (अनार की गोली का चूर्ण । अनार दाना भुना हुआ २५ माशे, [illegible] और [illegible], [illegible] भुना हुआ, [illegible], [illegible]

की बादी से उत्पन्न हो वह भूख में बढ़जाती है और जब पेट भरा हो तब थमजाती है (इलाज) प्रथम प्रकार के रोग में सोया और मूली के पानी में शहद और नोन मिलाकर वमन करें और हलका भुना हुआ मांस मसालेदार खावें और जठराग्नि को बढ़ाने का उपाय करें और जो रोग का कारण वह बादी है जो तिल्ली से गिरती है तो उसैलम अथवा बायें हाथसे बासलीकयी फस्द खोलें पीछे सिकञ्जबीन बुजूरी पिवावें और हर्डका मुरब्बा और आंवलेका मुरब्बा खाने को देवें (पुष्टिकारक माजून की विधि) जायफल, जावित्री लौंग दालचीनी, बालछड़, नागरमोथा, छिला आंवला, छोटी इलायचीके दाने यह सब दवा तोल में बराबर लेकर सफेद कन्द और शहद की चाशनी में उक्त दवाओं को मिलाकर माजून तैयार करें। किताब इलाज उलअमराज में लिखा है कि हर्ड का मुरब्बा आमाशय को पुष्ट करने वाला, कोष्ठ को नर्म करने वाला तथा बवासीर को लाभदायक है और हकीम लोग कहते हैं कि जो एक साल बराबर उसको सेवन करे और बीच में कोई खट्टी वस्तु न खाय तो बाल सफेद नहीं होवे।

अट्ठाईसवां प्रकरण।

आमाशय की खुजली और खुरचन का वर्णन।

इसके दो कारण हैं (१) खुजली उत्पन्न करने वाला कोई क्षारयुक्त तेज दोष किसी अंग से आमाशय पर गिरे जैसे सिरसे नजला आमाशय पर गिरता है। (२) छोटी २ फुन्सियां खाज और खुजली के समान आमाशय के भीतरी भागमें उत्पन्न हों। इन दोनों में यह अन्तर है कि जो खुजली और खुरचन फुन्सियों के उत्पन्न होने से हो तो भोजन बिना पचे वमन या दस्तों से निकले और जो कुछ आमाशय की फुन्सियों के प्रकरण में कहा जायगा प्रगट होगा। भोजन के न पचने का यह कारण है कि आमाशय फुन्सियों के कष्ट से भोजन को नहीं दबाता है और जिस रोगी के आमाशय में दोष के गिरनेसे खुजली उत्पन्न हो उसके लक्षण छिपाहुए होंगे और भोजन पचकर निकलेगा। (इलाज) जो फुन्सियों के कारण से हो तो संशोधन की चिकित्सा जिस में [illegible] न हो ग्रहण करें और अनार की गोली का चूर्ण और [illegible] कुन्दरमस्तगी [illegible] लाभदायक है और बाकी उपाय आमाशय की फुन्सियों के प्रकरण में से ग्रहण करें और आमाशय की फुन्सियों [illegible] का वर्णन हुआ है। (अनार की गोली का नुसखा। अनार दाना भुना हुआ ३५ माशे, सन्दल और गुलाब, चिरौंजी [illegible] भुना हुआ, कतीरा, [illegible]

आमाशय की बनावटके सुस्त होनेके वर्णनमें है यह रोग अधिक दर्द या परिश्रमसे वा वमन और दस्तों की अधिकताके कष्टसे आमाशयमें उत्पन्न होता है इसमें आमाशयके सब काम बिगड़ जाते हैं और कोई रोग इस रोगसे विशेष बुरा नहीं है (लक्षण) कभी भोजन न पचै और अच्छे भोजन और उपाय उपाय लाभदायक न हो और मल समयपर आवै और कभी इतना अजीर्ण होजाय कि विना झुकने वा जुलाबके दूर न हो और शरीर दुबला निर्बल और पेट की झिल्ली दुबली तथा भूख कम होजाय और आमाशय पर बोझ मालूम हो (इलाज) अफीरा का शर्बत, इतरीफल कबीर, इतरीफल सगीर और जवारिशऊद आदि सुगन्धित दवा देवै और मस्तगी का तेल आदि आमाशय पर मलै और तीतर और बटेर का मांस आदि भोजनदे। और जानलेना चाहिये कि सगदाने (घरके मुर्गेके भीतर की खाल) इस रोगमें परीक्षा की हुई है उसको मांससे अलग करके लटकावें यह प्रकृतिके अनुसार लाभदायक है और इस को पीसकर १॥ माशेके लगभग किसी योग्य वस्तुमें मिलाकर खवावें और जो चीज आमाशय की बनावटके सुस्त होनेके लिये लाभदायक है उसके ढीले होने को भी लाभदायक और गुण कारी है (जवारिशऊद की विधि) अगर १७॥ माशे, छोटी बड़ी इलायची, बालछड़ प्र० ७ माशे, केसर ३॥ माशे इनदवाओं को महीन पीसकर शहदमें मिलावै जो समय हो आमाशय पर लेप करे तो विशेष लाभदायक है और जो १॥ माशे गिनकर इस माजूनके साथ ग्रहण करै तो विशेष लाभदायक है कभी तेलके पीने और चिकनी और लेसदार वस्तुओं के खानेसे आमाशय ढीला और सुस्त होजाता है इसमें सिकी और मेव सुगन्धित शराब. अजीर्ण कारक भोजनोंमें भुना हुआ दलिया और कबाब आदि देवै और जो ढीले होने के साथ मलके निकालने की आवश्यकता हो तो समाकिया आदि देवै और हकीम मासोया का बेटा कहता है कि इतरीफल सगीर लोहे के मैल वाहिल स्वीकार करें क्योंकि यह पतली झिल्लियों और रगों को पुष्ट करता है और हकीम इब्नजकी कहता है कि नीचे लिखी दवा इस विषय में परीक्षा की हुई है जौका सत्तू १ भाग, पिस्ता की गिरी, चिलगोजा की गिरी आधा भाग, बादाम की गिरी चौथाई भाग महीन पीसकर कभी गुलकन्द और कभी इमली और कभी सिरके साथ भोगकरदे और मस्तगी का तेल आदि आमाशय पर मलै।

तीसरा प्रकरण

आमाशयके खिंचाव का वर्णन।

कैसा खिंचाव पदार्थके भरजाने या पदार्थके निकलनेके साथ भागोंमें होजाता

आमाशय की बनावटके सुस्त होनेके वर्णनमें है यह रोग अधिक दर्द या परिश्रमसे वा वमन और दस्तों की अधिकताके कारणसे आमाशयमें उत्पन्न होता है इसमें आमाशयके सब काम बिगड़ जाते हैं और कोई रोग इस रोगसे विशेष बुरा नहीं है (लक्षण) कभी भोजन न पचे और अच्छे भोजन और उत्तम उपाय लाभदायक न हो और मल समयपर आवे और कभी इतना अजीर्ण होजाय कि विना हुकने वा जुलाबके दूर न हो और शरीर दुबला निर्बल और पेट की झिल्ली दुबली तथा भूख कम होजाय और आमाशय पर बोझ मालूम हो (इलाज) अंधीरा का शर्बत, इतरीफल कबीर, इतरीफल सगीर और जवारिशऊद आदि सुगन्धित दवा देवे और मस्तगी का तेल आदि आमाशय पर मलें और तीतर और बटेर का मांस आदि भोजनदें। और जानलेना चाहिये कि सगदाने (घरके मुर्गेके भीतर की खाल) इस रोगमें परीक्षा की हुई है उसको मांससे अलग करके लटकावें यह प्रकृतिके अनुसार लाभदायक है और इस को पीसकर १॥ माशेके लगभग किसी योग्य वस्तुमें मिलाकर खवावें और जो चीज आमाशय की बनावटके सुस्त होनेके लिये लाभदायकहै उसके ढीले होने को भी लाभदायक और गुण कारी है (जवारिशऊद की विधि) अगर १७॥ माशे, छोटी बड़ी इलायची, बालछड़ १० ७माशे, कैसर ३॥ माशे इनदवाओं को महीन पीसकर शहदमें मिलावें जो समय पर आमाशय पर ठहरावे तो विशेष लाभदायकहै और जो १॥ माशे गिनकर इस माजूनके साथ ग्रहण करें तो विशेष लाभदायकहै कभी तेलके पीने और चिकनी और लेसदार वस्तुओं के खानेसे आमाशय ढीला और सुस्त होजाताहै इसमें सिर्का और तेज सुगन्धित शराब, अजीर्ण कारक भोजनोंमें भुना हुआ कलिया और कबाब आदि देवे और जो ढीले होने के साथ मलके निकालने की आवश्यकता हो तो समाकिया आदि देवे और हकीम मासोया का वेदा करना है कि इतरीफल सगीर लोहे के मैल सहित स्वीकार करें क्योंकि यह पसली झिल्लियों और रगों को पुष्ट करताहै और हकीम इस्ताकी कहता है कि नीचे लिखी दवा इस विषय में परीक्षा की हुई है जौंका सत्तू १ भाग, पिस्ता की गिरी, चिलगोजा की गिरी आधा भाग, बादाम की गिरी चौथाई भाग महीन पीसकर कभी गुलकन्द और कभी इमली और कभी सिर्के साथ भोजनदें और मस्तगी का तेल आदि आमाशय पर मलें।

तीसवां प्रकरण

आमाशयके विगाड़ का वर्णन।

जैसा विचार पचानेके करजाने या दवाइके निकालनेमें साव भागोंमें होजाता है

चेपदार तरी आमाशय पर लिपट कर उसकी शुन्नटों को भरदे इससे ऊपरी भाग साफ होजाय और भोजन आमाशयके ऊपरी भागसे फिसलजाय(मुजन) आमाशय में भोजन न ठहरे और उसमें आते ही बिना पचे आंतों की तरफ उतरजाय शुष्कपकर जो भोजन के पीछे गतिका काम पड़े क्योंकि गति उसके उतारने में सहायता करती है और बहुधा रोगी को ऐसा मालूम होता है कि भोजन एक साथ आमाशयसे आंतों में पत्थर की तरह गिरपड़ता है (इलाज) खरनूब और कुन्दरू गोंद की जवारिश खावें और गर्म पानी त्याग देवें क्योंकि यह आमाशय को ढीला करता है और सफाई को बढ़ाता है और तरीको निकालने वाली सूखी वस्तु जैसे बेर का चून, चांवल का चून, माजूर का चून देवें (जवारिश खरनूब के बनाने की विधि) खरनूब निल्ली लेकर उसका बीज निकाल डालें और काला जीरा सिर्केमें भिगो कर भूनलें और गिमार अर्धीरा, बेर का चून, पल्लूत, भुनाहुआ धनियां, मस्तगी यह आठ दवा हैं सबको बराबर लेकर छान लें परन्तु महीन न करें किन्तु दरदरी रक्खें जैस जवारिशकी दवाओं किया करते हैं फिर शहदमें मिलाकर आवश्यकतानुसार काममें लावें (कुन्दरू गोंद की जवारिश के बनाने की विधि) कुन्दरूगोंद अनार के फूल मस्तंगी ३५ माशे, मिर्च, अजवाइन, बालछड़, सफेद सोंठ मस्तंगी ७ माशे इन सातों दवाओंको उक्त रीतिसे कूट छानकर पुराने शहदमें मिलावें। हकीम इल्लाकी कहता है कि इसमें सर्वांगि कारक तथा तरी को नाश करने वाली दवाओं का डालना विशेष लाभदायक है जैसे पजनोन, अर्धीरा, बोकरपा आदि और तिरियाक अरबा खाना और लोहे का बुझा पानी पीना लाभ दायक है और हकीम माहीनूस कहता है कि ग्रहण शक्ति की पुष्टि के लिये तिरियाक कबीर विशेष गुणदायक है और जो न मिलेतो तिरियाक अरबा देवे और जवारिश खरनूब और कुन्दरूगोंद की जवारिश लाभदायक है और सर्द पानी से बचना और माजूर और चांवल दोनों को भूनकर चूर्ण की रीतिसे ग्रहन करना यह रतूबत के लिये लाभदायक है। साधारण सर्दी और सर्दीमें गर्मी बढ़ाने और शुष्क करनेके लिये कम्मूनी, फलाफली, [illegible] और तीता जवारिश उद तथा कुछ आमाशय की सर्दी और तर दूर करनेके लिये वमन दिलाई जाय में पावें और इसलिये आमाशय में एक अधिक [illegible] जाय तो वमन करावें क्योंकि कारण गर्म दवाओं की जवारिश देवें (४) आमाशय बिना [illegible] आमाशयका रोग उस समय होता है जब शरीर में पित्त की अधिकता हो और अब उस को आमाशय की तरफ निकालें (इलाज) इसमें ज्वार, जुवा, बिगड़ हुआ

और खुरचती है और इसका चिन्ह यह है कि भूख विशेष होजाय और आमाशय के मुखमें खटाई की जलन सर्वदा मालूम हुआ करै और बिना खाना खाये तथा थोड़े तेल पीने के न थमें (इलाज) बांये हाथसे बासलीक की फस्द खोलें और अकाशबेल के काढ़े से दस्त करावें और गर्म और अजीर्ण कारक चीजों से तिल्ली पर सिकाव करें जिससे उसमें से मवाद न निकल सके और तिल्ली कोखुरखुरे रूमालों से मलै और जो सिंगी लगाकर खींचें तथा वारे लगावें तो अति उत्तम होगा और प्रातः काल के समय इस से पहले कि बादी आमाशय के मुखपर गिरकर भूख उत्पन्न करै उचित है कि चिकना हरीरा पिलावें और जो बादी आमाशय के मुखपर गिरै तो उस-को कष्ट न पहुचे जैसा मूरा, बादाम का तेल और बकरे के गुर्दे की चर्बी का हरीरा बनाकरदें और जो बादाम के तेल के बदले तिली का तेल मिलावें तो वही फलदायक है। छटा भेद यह है कि आमाशय और आतों के भीतर के पुर्त में फुन्सियां या घाव उत्पन्न हों फिर जब भोजन करे और उन घाव और फुन्सियों के निकट पहुचे तो जलन उत्पन्न करै मुख्य जो इस भोजन का स्वाद खट्टा या नमकीन हो फिर इस कारण से दूर करने वाली शक्ति उसको दूर करे यहा तक कि आमाशय में कुछ बाकी न रहै और आमाशय उस भोजन से बिलकुल रहित होजाय और इसका यह चिन्ह है कि मुख में फु-न्सिया हों क्योंकि इसका भाग आमाशय के भाग से मिला हुआ है और गर्मी, सूखापन और दुर्गन्धि मुख में उत्पन्न हो और भोजन करने के पीछे आमाशय में दर्द और जलन उत्पन्न होजाय मुख्य कर जब चर्परा भोजन हो और जिस जगह आमाशय में भोजन का बोझ मालूमहो और जलन और तेजी भी उसी जगह मालूम हो और जितना भोजन नीचे जाने लगै दर्द भी नीचे की तरफ उतरने लगै यहा तक कि वह भोजन दशा न बदलने पावै और सब निकलजाय अथवा उसमें थोड़ी सी दशा बदलजाय और दशा का बद-लना और न बदलना फुन्सियों की न्यूनता और अधिकता पर निर्भर है क्योंकि आमाशय में जिस जगह फुन्सियां और घाव हैं वह भोजन से अच्छी तरह नहीं मिलती और जो जगह आरोग्य है वह भोजन पर आमिलती है और भोजन भी उससे अलग जाता है उतना ही उसको पचाती है परतु जब कि दूर करने वाली शक्ति के करने से ठहर नहीं सकना इससे किसी दशा में पूरा पचाव नहीं होता यद्यपि आमाशय की किसी जगह में फुन्सियां और घाव हों जैसा कि हमने वर्णन किया है और पीला पतला पानी दस्तों में निकलता है मुख्यकर जब कि घाव और

और खुरचती है और इसका चिन्ह यह है कि भूख विशेष होजाय और आमाशय के मुखमें खटाई की जलन सर्वदा मालूम हुआ करै और बिना खाना खाये तथा थोड़े तेल पीने के न थमें (इलाज) वांये हाथसे बासलीक की फस्द खोलें और अकाशवेल के काढ़े से दस्त करावें और गर्म और अजीर्ण कारक चीजों से तिल्ली पर सिकाव करै जिससे उसमें से मवाद न निकल सके और तिल्ली कोखुरखुरे रूमालों से मलै और जो सिंगी लगाकर खीचें तथा वारे लगावें तो अति उत्तम होगा और प्रातः काल के समय इस से पहले कि बादी आमाशय के मुखपर गिरकर भूख उत्पन्न करै उचित है कि चिकना हरीरा पिलावें और जो बादी आमाशय के मुखपर गिरे तो उस-को कष्ट न पहुचे जैसा बूरा, बादाम का तेल और बकरे के गुर्दे की चर्बी का हरीरा बनाकरदें और जो बादाम के तेल के बदले तिली का तेल मिलावें तो वही फलदायक है। छटा भेद यह है कि आमाशय और आतों के भीतर के पुर्त में फुन्सियां या घाव उत्पन्न हों फिर जब भोजन करै और उन घाव और फुन्सियों के निकट पहुचे तो जलन उत्पन्न करै मुख्य जो इस भोजन का स्वाद खट्टा या नमकीन हो फिर इस कारण से दूर करने वाली शक्ति उसको दूर करे यहा तक कि आमाशय में कुछ बाकी न रहै और आमाशय उस भोजन से बिलकुल रहित होजाय और इसका यह चिन्ह है कि मुख में फु-न्सिया हों क्योंकि इसका भाग आमाशय के भाग से मिला हुआ है और गर्मी, रूखापन और दुर्गन्धि मुख में उत्पन्न हो और भोजन करने के पीछे आमाशय में दर्द और जलन उत्पन्न होजाय मुख्य कर जब चर्परा भोजन हो और जिस जगह आमाशय में भोजन का बोझ मालूमहो और जलन और तेजी भी उसी जगह मालूम हो और जितना भोजन नीचे जाने लगे दर्द भी नीचे की तरफ उतरने लगे यहा तक कि वह भोजन दशा न बदलने पावे और सब निकलजाय अथवा उसमें थोड़ी सी दशा बदलजाय और दशा का बद-लना और न बदलना फुन्सियों की न्यूनता और अधिकता पर निर्भर है क्योंकि आमाशय में जिस जगह फुन्सियां और घाव हैं वह भोजन से अच्छी तरह नहीं मिलती और जो जगह आरोग्य है वह भोजन पर आमिलती है और भोजन भी उससे अलग जाता है उतना ही उसको पचाती है परन्तु जब कि दूर करने वाली शक्ति के करने से ठहर नहीं सकता इससे किसी दशा में पूरा पचाव नहीं होता यद्यपि आमाशय की किसी जगह में फुन्सियां और घाव हों जैसा कि हमने वर्णन किया है और पीला पतला पानी [illegible] दस्तों में निकलता है मुख्यकर जब कि घाव और [illegible]

उतर कर आमाशयमें आकर भोजन को निकम्मा करदे फिर उसको तबियत दस्तों में निकाले उसके साथ भोजन भी फिसलजाय उसको दिमाग के दस्त कहते हैं और इसका यह कारण है कि दिमाग में फोकों की अधिकता है और गलेके मार्ग से आमाशयमें उतर आवै और जानना चाहिये कि जब दिमाग में मवाद इकट्ठा हो जाता है तो उसको तबियत निकालती है उसमें से कुछ तो नाक के द्वारा निकल आता है और थोडा गले में आताहै उसमें से कुछ तो मुखके द्वारा मनुष्यकी आवश्यकता से निकलआताहै और कुछ जो पतला है फेंफड़े की तरफ आता है और जो गाढ़ा है आमाशय पर गिरता है और यह रोग जब पुराना होजाता है तो आमाशय की प्रकृति को बिगाड़ देता है और पचाव की न्यूनता और शक्ति में निर्बलता आजाती है उसके उपरांत अंगका पिघलना उत्पन्न होता है और मृत्यु निकट आजातीहै और इस प्रकारके दस्तोंको सम्पूर्ण हकीम नहीं जानते इसकारण से रोगी मरजाताहै और इसका चिन्ह यह है कि सोने के पीछे दस्त लगातार आवें और जब आमाशय नजलों से पवित्र हो तो दस्त बन्द होजाय और आमाशय में नजले के इकट्ठे होने से फिर दस्त आने लगें और सर्वदा यही दशा रहे और नजले के और चिन्ह भी कारण के अनुसार प्रगट हों जैसे जो नजले का मवाद पित्त हो तो दिमाग और आमाशय में विशेष जलन उत्पन्न हो और प्यास, मुखमें कड़वा-पन, तालू और नखरा और आमाशय के मुख में खुजली हो और जो कफ हो तो बिगडे हुए तेल और निकम्मे मीठे की सी गन्ध आवै और मुखका लुआब गाढ़ा और जमा होना उसका साक्षी हो और जो बादी हो तो मुख में और गले में खट्टापन और सिरमें भारीपन और दिमाग से लोहे की सी गन्धि आवै और जो नजले का मवाद खून हो तो आंखें लाल और इन्द्रियां भारी और मुखका स्वाद मीठा कुछ थोड़ा खारीपन के साथ हो और दुर्गन्धि का होना उसको निर्णय करता है और दिमाग के बिगडजाने के जो कुछ चिन्ह बहुधा वर्णन हुए हैं कारण के अनुसार प्रगट हों (इलाज) दशा के अनुसार फसद दस्त और पछने से दिमाग के मवाद को निकालें और मवाद के निकलने के पीछे उसकी प्रकृति के सम्भालने के लिये सूंघने की और छींकलाने वाली दवायें लेप और तरेडे जिनका वर्णन दिमाग के रोगों में प हुचा हुआ है ग्रहण करें और मवाद को विरुद्ध ओर से खींचें यह इस तरह से होता है कि सिर मुड़ावे और उसको खुरखुरे कपड़ों से मलें और अरक्क का उसपर लेप करें और इसी तरह पांव और पिंडलियों को तेल और न मक से मलें और बाबूना और स्पर्क औटाकर भपारादें और दिमाग साफ

उतर कर आमाशयमें आकर भोजन को निकम्मा करदे फिर उसको तबियत दस्तों में निकाले उसके साथ भोजन भी फिसलजाय उसको दिमाग के दस्त कहते हैं और इसका यह कारण है कि दिमाग में फोकों की अधिकता है और गलेके मार्ग से आमाशयमें उतर आवै और जानना चाहिये कि जब दिमाग में मवाद इकठ्ठा हो जाता है तो उसको तबियत निकालती है उसमें से कुछ तो नाक के द्वारा निकल आता है और थोड़ा गले में आताहै उसमें से कुछ तो मुखके द्वारा मनुष्यकी आवश्यकता से निकलआताहै और कुछ जो पतला है फेंफड़े की तरफ आता है और जो गाढ़ा है आमाशय पर गिरता है और यह रोग जब पुराना होजाता है तो आमाशय की प्रकृति को बिगाड़ देता है और पचाव की न्यूनता और शक्ति में निर्बलता आजाती है उसके उपरांत अंगका पिघलना उत्पन्न होता है और मृत्यु निकट आजातीहै और इस प्रकारके दस्तोंको सम्पूर्ण हकीम नहीं जानते इसकारण से रोगी मरजाताहै और इसका चिन्ह यह है कि सोने के पीछे दस्त लगातार आवें और जब आमाशय नजलों से पवित्र हो तो दस्त बन्द होजाय और आमाशय में नजले के इकठ्ठे होने से फिर दस्त आने लगें और सर्वदा यही दशा रहे और नजले के और चिन्ह भी कारण के अनुसार प्रगट हों जैसे जो नजले का मवाद पित्त हो तो दिमाग और आमाशय में विशेष जलन उत्पन्न हो और प्यास, मुखमें कड़वापन, तालू और नर्खरा और आमाशय के मुख में खुजली हो और जो कफ हो तो बिगड़े हुए तेल और निकम्मे मीठे की सी गन्ध आवै और मुखका लुआब गाढ़ा और जमा होना उसका साक्षी हो और जो बादी हो तो मुख में और गले में खट्टापन और सिरमें भारीपन और दिमाग से लोहे की सी गन्धि आवै और जो नजले का मवाद खून हो तो आंखें लाल और इन्द्रियां भारी और मुखका स्वाद मीठा कुछ थोड़ा खारीपन के साथ हो और दुर्गन्धि का होना उसको निर्णय करता है और दिमाग के बिगड़जाने के जो कुछ चिन्ह बहुधा वर्णन हुए हैं कारण के अनुसार प्रगट हों (इलाज) दशा के अनुसार फसद दस्त और पछने से दिमाग के मवाद को निकालें और मवाद के निकलने के पीछे उसकी प्रकृति के सम्भालने के लिये सूंघने की और छींकलाने वाली दवायें लेप और तरेड़े जिनका वर्णन दिमाग के रोगों में प्र हुआ हुआ है ग्रहण करें और मवाद को विरुद्ध ओर से खींचें यह इस तरह से होता है कि सिर मुड़ावें और उसको खुरखुरे कपड़ों से मलें और अरन्ड का उसपर लेप करें और इसी तरह पांव और पिंडलियों को तेल और नमक से मलें और बाबूना और स्पर्क औटाकर भपारादें और दिमाग साफ

अच्छा रहताहै मैंने उससे पूछा कि सोनेके उपरान्त भी यही दशा प्रगट रहती है उसने कहा निस्सन्देह सो मैंने जानलिया कि गर्म नजला दिमागसे गिरता है तो मैंने उससे कहा कि राई और फरफयून सिरपर मलें उसने वैसाही किया दस्त बंद होगये (लाभ) जबतक कि मनुष्य जागता है जो कुछ दिमाग से गलें में गिरता है विचारशक्ति से उसको खकारकर थूकमें निकाल देताहै और आमाशय की तरफ जाने से रोकता है यही कारण है कि जागने के समय इस प्रकार के दस्तका कष्ट नहीं होता जबतक कि पहले सोनेका काम न हो । हकीम खजदी कहता है कि मवाद के निकालने के उपरान्त कुछे जो नजले के प्रकरण में किये हैं स्वीकार करें और पानी न पीना चाहिये और जब सोकरउठै तो वमन कराना उचित है और दिन का सोना मुख्यकर जाड़े की ऋतु में नजला उत्पन्न करता है और सिर मुड़ाना और खुरखुरे कपड़ों से मलना लाभ-दायक है और साबुन और पापड़ी नोंन से सिर धोना लाभदायक है और जो रोगी का दिमाग गर्म है तो शर्बत खशखाश और यह चटनी योग्य है (उसकी विधि) आधसेर खशखाश कूटकर ढाईसेर पानीमें एक रातदिन भिगो कर फिर मुलायम आग पर औटाकर जब आधा रहजाय तो मलकर छानकर आधसेर मिश्री और शहद और आध सेर मयफकतज (औटाया-हुआ अंगूरका पानी)मिलाकर गढ़ियावे और १७॥ माशे कतीरा महीनपीसकर मिलाकर चटनी बनावे । इसके शेष छःभेद पुस्तक के अन्तमें वर्णन किये जायगे ।

इतिपूर्वार्द्धम् ।

अच्छा रहताहै मैंने उससे पूछा कि सोनेके उपरान्त भी यही दशा प्रगट रहती है उसने कहा निस्सन्देह सो मैंने जानलिया कि गर्म नजला दिमागसे गिरता है तो मैंने उससे कहा कि राई और फरफयून सिरपर मलें उसने वैसाही किया दस्त बंद होगये (लाभ) जबतक कि मनुष्य जागता है जो कुछ दिमाग से गले में गिरता है विचारशक्ति से उसको खकारकर थूकमें निकाल देताहै और आमाशय की तरफ जाने से रोकता है यही कारण है कि जागने के समय इस प्रकार के दस्तका कष्ट नहीं होता जबतक कि पहले सोनेका काम न हो। हकीम खजदी कहता है कि मवाद के निकालने के उपरान्त कुछे जो नजले के प्रकरण में किये हैं स्वीकार करें और पानी न पीना चाहिये और जब सोकरउठे तो वमन कराना उचित है और दिन का सोना मुख्यकर जाड़े की ऋतु में नजला उत्पन्न करता है और सिर मुड़ाना और खुरखुरे कपड़ों से मलना लाभदायक है और साबुन और पापड़ी नोंन से सिर धोना लाभदायक है और जो रोगी का दिमाग गर्म है तो शर्बत खशखाश और यह चटनी योग्य है (उसकी विधि) आधसेर खशखाश कूटकर ढाईसेर पानीमें एक रातदिन भिगो कर फिर मुलायम आग पर औटाकर जब आधा रहजाय तो मलकर छानकर आधसेर मिश्री और शहद और आध सेर मयफकतज (औटाया-हुआ अंगूरका पानी)मिलाकर गढ़ियावे और १७॥ माशे कतीरा महीनपीसकर मिलाकर चटनी बनावे। इसके शेष छःभेद पुस्तक के अन्तमें वर्णन किये जायगे।

इतिपूर्वार्द्धम्।

गई है॥ये शाखा जो निकलकर आईहैं उनका नाम मासारीका है॥ और यही भोजनके पचानेका यत्रहै यहां भोजन इस तरह पाकोन्मुख होताहै कि आमाशय और अमआ और इन रगों में प्रविष्ट होकर उन भीतरकी रगोंमें आता है जो जिगरमें फैलीहुई है इस प्रकार कैलूसके सब विभागोंको जिगरके समस्त विभागों से मिलना पड़ताहै। जैसी आमाशयमें पोलहै जहां कैलूस इकट्ठा होताहै वैसी पोल जिगरमें नहींहै और जिगर जो साफ कैलूसको खैंचताहै वह ठोसहै जैसे स्पंज पानीको पीताहै॥ इसी तरह जिगरके ऊपरके भागसे भी एक रग निकली है उसको "अजवफ" कहतेहैं उसकी कुछ शाखा तो जिगरमें ही फैलगईहैं और शेष बाहर निकलकर दो शाखाओंमें विभक्त होगईहैं एक तो ऊपरकी ओर चढ़कर ऊपरके देहमें फैलगई हैं और दूसरी उतरकर नीचेके देहमें विभक्त हुईहैं॥ और कैलूस का जिगर में रुधिर होकर उन्हीं शाखाओं के द्वारा सब शरीर में जाता है और यह अजवफ आयुर्वेदकी जड़है और उसकीदोनोंशाखाओंसेजिनकावर्णनकियागया है और भी दो शाखा गुरदों की ओर पानीके निकलनेके लिये निकली है उन दोनों शाखोंको "ताळईन" कहते हैं और मकारे की ओर बाब के ऊपर एक रास्ताहै जो पित्ते की तरफ आता है जिससे सफरा यानी रुधिरका झाग जिसको पित्त कहतेहैं उसमें चलाजाय और "मकार" की ओरसे और एक रास्ता भी तिहाल अर्थात् तिल्लीकी तरफ आताहै जिससे सौदा अर्थात् वादी की तलछट उसमें से निकल जाय और इसी प्रकार जिगरसे एक रग दिलमें आईहै जिसके कारण जिगरको दिलसे और दिलको जिगरसे लाभ पहुंचे॥ कोई कहतेहैं कि रग दिल मेंसे निकल कर जिगर में जामिली है सारांश यह है कि हरसूरतसे दिल और जिगर में इस रगके सम्बन्ध से मेलहै और दिल और जिगर के शाखाओं में मेल नहीं है यद्यपि जिगरमें कोई पट्ठा नहीं है परन्तु एक पट्ठा आमाशय से जि गर में आयाहै और वह पट्ठा बहुत बारीकहै इस कारण आमाशयमें जिगरकी मिलावटसे कम रोग होते हैं परतु जब कोई बड़ा विकार जिगर में पैदा हो तो आमाशयमें भी जिगर के सबबसे खेद होना सम्भवहै॥ "अनायपुल इन्तिसाव" में लिखाहै कि मुख्य अंग तीनहैं दिल, जिगर और दिमाग रूह हैवानी शक्ति दिल में है, रूहनफसानी शक्ति दिमागमें और रूहतबई शक्तिका सबब जिगरमें है और जिगर ऐसा अंग है कि आमाशय से कैलूसको परिपक्व करने के लिये खैंच लेता है॥ और इस खैंचने का यत्र "अरूक मासारीका" है जो बारीक रगे हैं जिनको "बाबुल्कबद" कहते हैं और जिगरका मांस एक थराहै इसमें और कोई पोल नहीं है कि उसमें

गई है॥ ये शाखा जो निकलकर आई हैं उनका नाम मासारीका है॥ और यही भोजनके पचानेका यत्र है यहां भोजन इस तरह पाकोन्मुख होताहै कि आमाशय और अमआ और इन रगों में प्रविष्ट होकर उन भीतरकी रगोंमें आता है जो जिगरमें फैलीहुई है इस प्रकार कैलूसके सब विभागोंको जिगरके समस्त विभागों से मिलना पड़ताहै। जैसी आमाशयमें पोलहै जहां कैलूस इकट्ठा होताहै वैसी पोल जिगरमें नहींहै और जिगर जो साफ कैलूसको खैंचताहै वह ठोसहै जैसे स्पज पानीको पीताहै॥ इसी तरह जिगरके ऊपरके भागसे भी एक रग निकली है उसको "अजवफ,, कहतेहैं उसकी कुछ शाखा तो जिगरमें ही फैलगईहैं और शेष बाहर निकलकर दो शाखाओंमें विभक्त होगईहैं एक तो ऊपरकी ओर चढ़कर ऊपरके देहमें फैलगई हैं और दूसरी उतरकर नीचेके देहमें विभक्त हुईहैं॥ और कैलूस का जिगर में रुधिर होकर उन्हीं शाखाओं के द्वारा सब शरीर में जाता है और यह अजवफ आयुर्वेदकी जड़है और उसकीदोनोंशाखाओंसेजिनकावर्णनकियागया है और भी दो शाखा गुरदों की ओर पानीके निकलनेके लिये निकली है उन दोनों शाखों को "ताळईन,, कहते हैं और मकारे की ओर बाब के ऊपर एक रास्ताहै जो पित्ते की तरफ आता है जिससे सफरा यानी रुधिरका झाग जिसको पित्त कहतेहैं उसमें चलाजाय और "मकार,, की ओरसे और एक रास्ता भी तिहाल अर्थात् तिल्लीकी तरफ आताहै जिससे सौदा अर्थात् बादी की तलछट उसमें से निकल जाय और इसी प्रकार जिगरसे एक रग दिलमें आईहै जिसके कारण जिगरको दिलसे और दिलको जिगरसे काम पहुचें॥ कोई कहतेहैं कि रग दिल मेंसे निकल कर जिगर में जामिली है सारांश यह है कि हरसूरतसे दिल और जिगर में इस रगके सम्बन्ध से मेलहै और दिल और जिगर के शाखाओं में मेल नहीं है यद्यपि जिगरमें कोई पट्ठा नहीं है परन्तु एक पट्ठा आमाशय से जि गर में आयाहै और वह पट्ठा बहुत बारीकहै इस कारण आमाशयमें जिगरकी मिलावटसे कम रोग होते हैं परतु जब कोई बड़ा विकार जिगर में पैदा हो तो आमाशयमें भी जिगर के सबबसे खेद होना सम्भवहै॥ "अजायबुल इन्सिसाब,, में लिखाहै कि मुख्य अग तीनहैं दिल, जिगर और दिमाग रूह हैवानी शक्ति दिल में है, रूह नफसानी शक्ति दिमागमें और रूहतबई शक्तिका सबब जिगरमें है और जिगर ऐसा अग है कि आमाशय से कैलूसको परिपक्व करने के लिये खैंच लेता है॥ और इस खैंचने का यत्र "अरूक मासारीका,, है जो मारूरम रगें हैं जिनको "बाबुल्बद,, कहते हैं और जिगरका मांस एक थगहै उसमें और कोई पार नहीं है कि उसमें

देना चाहिये और अगर दोषके बिगड़नेसे है तो उसी दोषके अनुसार उसको निकाल देवै। यदि रुधिरके कारणसे है तो फस्द खोलै मुख्यकरके 'बासलीक, और 'अवती, में से रुधिर निकालै और अगर कोई ऐसा कारणहो कि जिसमें फस्द खोलना हानिकारक हो तो पछना लगादेवै और हरड़ तथा अमलतास का काथ पान कराके तबियत को नरम कर देवै और इस के सिवाय जो उचित समझा जाय जैसे, इमली, आलूबुखारे का पानी, तुरंजबीन या खांड मिलाकर देवै। और इसी के सदृश जो कुछ और होवै वह देवै, और जो चिकित्सा रुधिर विकारमें कही गई है वही पित्तमें काम आती है परन्तु इस रोगमें फस्दकी आवश्यकता नहीं होती है। यदि किसी तरह आवश्यकता समझी ही जाय तो कुछ हानि भी नहीं है। और रुधिरविकार की अपेक्षा पित्तविकार में गर्मी के कम करनेकी अधिक आवश्यकता होती है, और कलेजे को ठंढ पहुचानेके लिये जो काममें आताहै वह यह है कासनी का पानी, सिकजबीन, दोनों प्रकारके अनारोंका रस, चन्दनका शर्बत, ककड़ी खीरेके बीजका रस, ईसबगोल का लुआब, इन सबको सिकंजबीन के साथ देवै। तथा इसी तरहकी और औषधमी जो ठंडी और तरहों पिवाई जा सक्ती हैं परन्तु ये औषधिया ऐसी होनी चाहिय जो जिगर के अनुकूल हों। घीया और खीरे का पानी, जौ और मयूर का चून, सुपारी, चन्दन और गुलाबके फूल इन सबका जिगर पर लेप करै। और ठंढ की कमीवेशी आवश्यकताके अनुसार प्रमाणके साथ देवै और जहा कहीं अधिक ठंढकी आवश्यकता हो तो ठंडा दही और जौ का पानी, इनमें कैकड़ा पकाकर देवै। और खुरफे के बीजोंका रस वंशलोचनके साथमें देना भी गुणदायक है। यह बातभी जानलेनी चाहिये कि केवल कासनी का अर्क या अमलतास का गूदा दोनों को मिलाकर देवै ये दोनों जिगर के रोगोंमें बहुत लाभकारक हैं। जहां गांठ समझी जाय वहां बिजूरी शर्बत, दीनार शर्बत, चूके का शर्बत और अमलतास का गूदा इनको देकर उस गांठ को दूर कर देवै। जहां कहीं तबियत नर्म हो तो वंशलोचन की टिकिया कब्ज करनेवाली, सेब तथा बिहीका मुरब्बा देना चाहिये और इस दशा में चूकेका शर्बत भी बहुत उत्तम होताहै। तथा इस रोगमें ऐसा पथ्य न देवै जो कब्ज करे क्योंकि वह हानिकारक है विशेष करके जहां गुद्दा अर्थात् गांठ पड़ने का डरहो। तथापि जरिश्क और अनारका अर्क जिगरको गुणदायक है। यदि तबियत बहुत नर्म हो और कुछ कब्ज की आवश्यक्ता हो तो उड़द और भुने हुए चावल, जरिश्क, सिमाक के साथ देवै। यदि तबियत में कब्ज हो

देना चाहिये और अगर दोषके बिगड़नेसे है तो उसी दोषके अनुसार उसको निकाल देवै। यदि रुधिरके कारणसे है तो फस्द खोलै मुख्यकरके 'बासलीक, और 'अवती, में से रुधिर निकाले और अगर कोई ऐसा कारणहो कि जिसमें फस्द खोलना हानिकारक हो तो पछना लगादेवै और हरड़ तथा अमलतास का क्वाथ पान कराके तबियत को नरम कर देवै और इस के सिवाय जो उचित समझा जाय जैसे, इमली, आलूबुखारे का पानी, तुरंजबीन या खांड मिलाकर देवै। और इसी के सदृश जो कुछ और होवै वह देवें, और जो चिकित्सा रुधिर विकारमें कही गई है वही पित्तमें काम आती है परन्तु इस रोगमें फस्दकी आवश्यकता नहीं होती है। यदि किसी तरह आवश्यकता समझी ही जाय तौ कुछ हानि भी नहीं है। और रुधिरविकार की अपेक्षा पित्तविकार में गर्मी के कम करनेकी अधिक आवश्यकता होती है, और कलेजे को ठंढ पहुचानेके लिये जो काममें आताहै वह यह है कासनी का पानी, सिकंजबीन, दोनों प्रकारके अनारोंका रस, चन्दनका शर्बत, ककड़ी खीरेके बीजका रस, ईसबगोल का लुआब, इन सबको सिकंजबीन के साथ देवै। तथा उसी तरहकी और औषधमी जो ठंडी और तरहों पिवाई जा सक्ती हैं परन्तु ये औषधिया ऐसी होनी चाहिय जो जिगर के अनुकूल हों। घीया और खीरे का पानी, जौ और मसूर का चून, सुपारी, चन्दन और गुलाबके फूल इन सबका जिगर पर लेप करै। और ठंढ की कमीवेशी आवश्यकताके अनुसार प्रमाणके साथ देवै और जहा कहीं अधिक ठंढकी आवश्यकता हो तो ठंढा दही और जौ का पानी, इनमें कँकड़ा पकाकर देवै। और खुरफे के बीजोंका रस वंशलोचनके साथमें देना भी गुणदायक है। यह बातभी जानलेनी चाहिये कि केवल कासनी का अर्क या अमलतास का गूदा दोनों को मिलाकर देवै ये दोनों जिगर के रोगोंमें बहुत लाभकारक हैं। जहां गांठ समझी जाय वहां बिजूरी शर्बत, दीनार शर्बत, चूके का शर्बत और अमलतास का गूदा इनको देकर उस गाठ को दूर कर देवै। जहां कहीं तबियत नर्म हो तो वंशलोचन की टिकिया कब्ज करनेवाली, सेव तथा बिहीका मुरब्बा देना चाहिये और इस दशा में चूकेका शर्बत भी बहुत उत्तम होताहै। तथा इस रोगमें ऐसा पथ्य न देवै जो कब्ज करे क्योंकि वह हानिकारक है विशेष करके वहां गुद्दा अर्थात् गांठ पड़ने का डरहो। तथापि जरिश्क और अनारका अर्क जिगरको गुणदायक है। यदि तबियत बहुत नर्म हो और कुछ कब्ज की आवश्यकता हो तो दरूद और भुने हुए चावल, जरिश्क, सिमाक के साथ देवै। यदि तबियत में कब्ज हो

फिलासफा और इत्रीफल भी इस रोग में उचित है. और दोषों के निकालने में बहुत अधिकता न करें जिससे बीमार बहुत निर्बल न होजाय. यदि दस्त बहुत आवें तौ सिपन्दान के बीज, रेहां के बीज, गोंद अर्बी. तीन तीन दिरम भूनकर गुलाब के जल में भिगाकर देवै।

विशेष दृष्टव्य--यह बात जानने की है कि आसानासिया और दबा उल करकम दोनों कई द्रव्यों क सयोग से बने हुए हैं इन के बनाने की विधि इलाजुल अमराज आदि किताबों में लिखी हैं।

तीसरा भेद वहहै कि प्रकृति के दोष में खुश्की तथा जिगर में खुश्की होने के ये लक्षण हैं कि मुख और जिन्हा में सूखापन. प्यास, नाडी में शीघ्रता. रुधिर की कमी. दस्त का कम होना. ये लक्षण होते हैं। फिर अगर इसमें बात विकार भी हो तौ डर, रज और बुरे बुरे विचार पैदा होते हैं।

चिकित्सा-- दोषरहित विकारों में ठंड पहुचाना काफी है. और दोषयुक्त में अफतीमून का मवाय या माउलजोबन आदि से दोष को निकालनाचाहिये।और ठंड पहुचाने के लिये खुर्फेके बीजोंका रस शर्बत नीलोफर और शर्बत खशखास के साथ पान करावै। बनफशेका तेल, घीये का तेल.बादामका तेल मोम कासनी का पानी,खुर्फे का अर्क मिलाकर लेप तयार करें और विधिपूर्वक जिगर पर लेप करे। पथ्य के लिये बकरी के बच्चे की भेजी,और इलायची के दाने और कद्दू जौ पालक. खतमी के पत्ते और काहू देवे। घी की जगह बादाम का तेल काम में लाना चाहिये। और घी या बकरे के मांस के साथ गुणदायक है और ताजी मछली भी लाभकारक है और अगर प्रतिदिन प्रातःकाल खुर्फे का रस, मिश्री और बादाम के तेल का हरीरा बनाकर पान करावें तो बहुत अच्छा है परन्तु उचित है कि अधिक ठंडी औषध न देवै जिससे जलोदर रोग न होजाय।

चौथा भेद वहहै कि प्रकृति का दूषित होना तरी से हो और जिगर में तरी होनेके लक्षण यह हैं कि मुख और पलकों का भद्दभद्दा जाना. मांस का ढीला होना।नींद आना लारका अधिक टपकना,इन्द्रियों में निष्कामता मूत्र में सफेदी, पाचन शक्ति का बिगड़ना, जिह्वा में तरी होना और तबियत का नर्म होना, प्यासका न होना और सूखी वस्तुओंसे कुछ लाभ मालूम होना।

चिकित्सा-- खुश्की पहुचाने के लिये प्रति दिन सोंफ, किरफस के बीज

फिलासफा और इत्रीफल भी इस रोग में उचित है. और दोषों के निकालने में बहुत अधिकता न करें जिससे बीमार बहुत निर्बल न होजाय. यदि दस्त बहुत आवें तो सिपन्दान के बीज, रेहां के बीज, गोंद अर्बी. तीन तीन दिरम भूनकर गुलाब के जल में भिगाकर देवै।

विशेष दृष्टव्य--यह बात जानने की है कि आसानासिया और दवाउल करकम दोनों कई द्रव्यों के संयोग से बने हुए हैं इन के बनाने की विधि इलाजुल अमराज़ आदि किताबों में लिखी हैं।

तीसरा भेद वहहै कि प्रकृति के दोष में खुश्की तथा जिगर में खुश्की होने के ये लक्षण हैं कि मुख और जिव्हा में सूखापन. प्यास, नाड़ी में शीघ्रता. रुधिर की कमी. दस्त का कम होना. ये लक्षण होते हैं। फिर अगर इसमें वात विकार भी हो तो डर, रंज और बुरे बुरे विचार पैदा होते हैं।

चिकित्सा-- दोषरहित विकारों में ठंढ पहुचाना काफी है. और दोषयुक्त में अफतीमून का मवाय या माउलजोवन आदि से दोष को निकालनाचाहिये।और ठंढ पहुचाने के लिये खुर्फेके बीजोंका रस शर्बत नीलोफर और शर्बत खशखास के साथ पान करावै। बनफशेका तेल, घीये का तेल.बादामका तेल मौम कासनी का पानी, खुर्फे का अर्क मिलाकर लेप तयार करें और विधिपूर्वक जिगर पर लेप करै। पथ्य के लिये बकरी के बच्चे की भेजी, और इलायची के दाने और कद्दू जो पालक. खतमी के पत्ते और काहू देवे। घी की जगह बादाम का तेल काम में लाना चाहिये। और घी या बकरे के मांस के साथ गुणदायक है और ताजी मछली भी लाभकारक है और अगर प्रतिदिन प्रातःकाल खुर्फे का रस, मिश्री और बादाम के तेल का हरीरा बनाकर पान करावें तो बहुत अच्छा है परन्तु उचित है कि अधिक ठंडी औषध न देवै जिससे जलोदर रोग न होजाय।

चौथा भेद वहहै कि प्रकृति का दूषित होना तरी से हो और जिगर में तरी होनेके लक्षण यह हैं कि मुख और पलकों का भड़मड़ा जाना. मांस का ढीला होना। नींद आना लारका अधिक टपकना, इन्द्रियों में निष्कामता मूत्र में सफेदी, पाचन शक्ति का बिगड़ना, जिह्वा में तरी होना और तबियत का नर्म होना, प्यासका न होना और सूखी वस्तुओं से कुछ लाभ मालूम होना।

चिकित्सा-- खुश्की पहुचाने के लिये प्रति दिन सौंफ, किरफस के बीज

कारण दृढ है तो निर्बलता चारों शक्तियों में व्याप्त होजायगी नहीं तो किसी २ शक्ति में कारण के न्यूनाधिक होने के अनुसार निर्बलता होगी । यह बात भी जानना उचितहै कि ग्रहणशक्ति और पाचनशक्ति बहुधा सर्दी वा तरीके कारण निर्बल होती हैं और निरोधशक्ति तरी से तथा निःसारक शक्ति में खुश्की से निर्बलता होतीहै और प्रत्येककी निर्बलताके लक्षण आगे वर्णन किये जायंगे ॥

अब जिगर की निर्बलताके लक्षण चाहे वे किसी कारण से क्यों नहीं बहुधा इस तरह हैं कि मल कम निकलता है और विष्टा का रंग मांस के धोये हुये जल के सदृश होता है और देह निर्बल होक्षुधा कमहो अथवा सर्वथा जाता रहै क्योंकि भूख का जाता रहना जिगर की निर्बलता पर निर्भरहै । और दाहिनी ओर से जहां से कलेजा प्रारम्भ होता है उस छोटी पसली तक जो सब पसलियों से नीचे है एक मन्दी मन्दी वेदना हुआ करती है विशेष करके जब पथ्य जिगर की ओर उतरै मुह का रंग और बदन का रंग पीला, सफेद वा काला सा होजाता है और बहुत करके तो हरा वा सफेद पड़ जाता है अब हम उन लक्षणों का वर्णन करते हैं जो प्रत्येक शक्तियों से संबंध रखते हैं यह बात जान लेना उचित है कि ग्रहण शक्ति का यह लक्षण है कि विष्टा सफेद नर्म और अधिक निकलता है, देह निर्बल हो, फिर अगर अभी तक मूत्र का रंग रंगीन और न गाढा न पतला हो तो जानना चाहिये कि ग्रहणशक्ति में ही उपद्रव है तथा अन्य शक्तियां उपद्रवरहित हैं । विशेष कर के यदि आमाशय स्वच्छ हो और यदि मूत्र की द्रवता और रंग जैसा होना चाहिये वैसा न हो तो समझ लेना चाहिये कि उपद्रव पाचनशक्ति में पहुंच गया, विशेष करके अगर आमाशय में भी उपद्रव हो । और पाचनशक्ति की निर्बलता के लक्षण यह हैं कि देह शिथल पड़ जाती है, मुह भद्भद्दा जाता है, वर्ण में विकार हो जाता है और विष्टा का रंग मांस का धोवन सा होजाता है, मूत्र सफेद होता है रुधिर पतला पड़जाताहै अर्थात् फस्द खोलने पर रुधिर पतला निकलताहै । और मूजिज़ नामक पुस्तक में लिखा है कि विष्टा से ग्रहणशक्ति मालूम होती है और पेशाब से पाचन शक्ति मालूम होती है तथा निरोध शक्ति का यह लक्षण है कि जिगर की ओर रस के जाने पर भोजन के भर जाने से कुछ थोड़ा सा बोझ जो जिगर में मालूम हुआ करता है वह थोडीसी देर में जाता रहै और जितनी देर तन्दुरुस्ती अर्थात् स्वस्थता की दशा में भोजन के पूर्णरीति से पचने तक बोझ मालूम हुआ करता था और यह अब मालूम न हो क्योंकि यह बोझ कैलूस अर्थात् रस के

कारण दृढ है तो निर्बलता चारों शक्तियों में व्याप्त होजायगी नहीं तो किसी२ शक्ति में कारण के न्यूनाधिक होने के अनुसार निर्बलता होगी। यह बात भी जानना उचितहै कि ग्रहणशक्ति और पाचनशक्ति बहुधा सर्दी वा तरीके कारण निर्बल होती हैं और निरोधशक्ति तरी से तथा निःसारक शक्ति में खुश्की से निर्बलता होतीहै और प्रत्येककी निर्बलताके लक्षण आगे वर्णन किये जायगे॥

अब जिगर की निर्बलताके लक्षण चाहे वे किसी कारण से क्यों नहों बहुधा इस तरह हैं कि मल कम निकलता है और विष्टा का रग मास के धोये हुऐ जल के सदृश होता है और देह निर्बल होक्षुधा कमहो अथवा सर्वथा जाता रहे क्योंकि भूख का जाता रहना जिगर की निर्बलता पर निर्भरहै। और दाहिनी ओर से जहां से कलेजा प्रारम्भ होता है उस छोटी पसली तक जो सब पसलियों से नीचे है एक मन्दी मन्दी पेदना हुआ करती है विशेप करके जब पथ्य जिगर की ओर उतरे मुह का रग और बदन का रग पीला, सफेद वा काला सा होजाता है और बहुत करके तो हरा वा सफेद पड़ जाता है अब हम उन लक्षणों का वर्णन करते है जो प्रत्येक शक्तियों से सबध रखते हैं यह बात जान लेना उचित है कि ग्रहण शक्ति का यह लक्षण है कि विष्टा सफेद नर्म और अधिक निकलता है, देह निर्बल हो, फिर अगर अभी तक मूत्र का रग रगीन और न गाढा न पतला हो तो जानना चाहिये कि ग्रहणशक्ति में ही उपद्रव है तथा अन्य शक्तियां उपद्रवरहित हैं। विशेप कर के यदि आमाशय स्वच्छ हो और यदि मूत्र की द्रवता और रग जैसा होना चाहिये वैसा न हो तो समझ लेना चाहिये कि उपद्रव पाचनशक्ति में पहुच गया, विशेप करके अगर आमाशय में भी उपद्रव हो। और पाचनशक्ति की निर्बलता के लक्षण यह हैं कि देह शिथल पड़ जाती है, मुह मड़भड़ा जाता है, वर्ण में विकार हो जाता है और विष्टा का रग मास का धोवन सा होजाता है, मूत्र सफेद होता है रुधिर पतला पड़जाताहै अर्थात् फस्द खोलने पर रुधिर पतला निकलताहै। और मूजिज नामक पुस्तक में लिखा है कि विष्टा से ग्रहणशक्ति मालूम होती है और पेशाब से पाचन शक्ति मालूम होती है तथा निरोध शक्ति का यह लक्षण है कि जिगर की ओर रस के जाने पर भोजन के भर जाने से कुछ थोड़ासा बोझ जो जिगर में मालूम हुआ करता है वह थोड़ीसी देर में जाता रहे और जितनी देर तन्दुरुस्ती अर्थात् स्वस्थता की दशा में भोजन के पूर्णरीति से पचने तक बोझ मालूम हुआ करता था और यह अब मालूम न हो क्योंकि यह बोझ कलूस अर्थात् रस के

चाहिये जो उनके लिये उत्तम है। और कलेजेका ध्यान रखना आवश्यकीय बात है और क्योंकि कलेजे की निर्बलता बहुधा सर्दी और तरीसे पैदा हुआ करती है तो वैद्योंने उसका ऐसा प्रबंध किया है कि कलेजे की निर्बलता की चिकित्सा उन गर्म औषधोंसे करतेहैं जो कब्ज करनेवाली और सुगंधित होती हैं जैसे दालचीनी, कफूर, अम्बर, केसर आदि खाने और मालिश करनेमें काममें लावें—और मुनका बीज सहित कूट कर दालचीनी आदि से सुगंधित करके खिलाना उचित है।

विशेष द्रष्टव्य—जालीनूस उस आदमीको हृद्रोगकी निर्बलतासे पीड़ित बताता है जो उसके जिगरकी क्रियाओंमें सूजन या दराड़के सबबसे निर्बलता पैदा हो अब हम उन द्रव्योंका वर्णन करतेहैं जो प्रत्येक शक्तिकी निर्बलता पर निर्भर हैं जानलेना चाहिये कि पाचनशक्तिको तिर्याक अर्बा और सजीरियाना का खाना सिब्र, गुलनार, अनारके छिलके, लावन कूटछानकर गुलाबमें मिला कर जिगर पर लेप करने से शक्ति बढ़ती है और जिगर की ग्रहणशक्ति को अफसन्तीन मस्तगी और गुलाबकेफूल, मूरदके पानी में मिलाकर लेप करनेसे भी शक्ति बढ़तीहै और यहां कब्ज करनेवाली औषध नहीं देसक्तेहैं परन्तु जिगर की शक्ति बढ़ाने वाली औषध देसक्तेहैं। और किसी तरहसे गांठके दूर करने में सुस्ती न करें। चकोर, मुर्ग और बटेर के मांस में अंगूर का रस मिला कर खाने को देवे। और कलेजे की निरोध शक्ति को जवारिश खांजी बिहीके मुरब्बे के साथ शक्ति बढ़ाती है और कब्ज करने वाली सुगंधित दवायें इसमें गुणकारक हैं और जीरा सेब के पानी के साथ मिलाकर लेप करना लाभदायकहै और निस्सारक शक्तिको मालजोवन और सिकञ्जबीन और हरड़ का मुरब्बा बल देतेहैं और यहां वसलमकी फस्द खोलना अच्छा है तथा हल्के मांस और मुर्गे के आधे भुने हुए अंडे की जर्दी खाना लाभदायक है, और दालचीनी, कालीमिर्च और सोंठ इनको डालकर भोजन करना गुणकारक है।

विशेषद्रष्टव्य—प्रगटहो कि निरोधशक्ति में निर्बलता तरीके कारण होती है इसलिये कि निरोधशक्ति की क्रिया कब्ज करने वाली है और कब्ज बिना खुश्कीके नहीं होताहै और तरीका काम नर्म करदेनाहै सो अवश्य ही तरी निरोधशक्ति का निर्बल करदगी, और जब ग्रहणशक्ति में निर्बलता होगी तब देह शिथिल होजायगी इसलिये भोजनसत्त्व देहमें अच्छी तरह व्याप्त न होगा चाहिये

चाहिये जो उनके लिये उत्तम है। और कलेजेका ध्यान रखना आवश्यकीय बात है और क्योंकि कलेजे की निर्बलता बहुधा सर्दी और तरीसे पैदा हुआ करती है तो वैद्योंने उसका ऐसा प्रबंध किया है कि कलेजे की निर्बलता की चिकित्सा उन गर्म औषधोंसे करतेहैं जो कब्ज करनेवाली और सुगंधित होती हैं जैसे दालचीनी, कफार, अम्बर, केसर आदि खाने और मालिश करनेमें काममें लावें—और मुनका बीज सहित कूट कर दालचीनी आदि से सुगंधित करके खिलाना उचित है।

विशेष द्रष्टव्य—जालीनूस उस आदमीको हृद्रोगकी निर्बलतासे पीड़ित बताता है जो उसके जिगरकी क्रियाओंमें सूजन या दरारके सबबसे निर्बलता पैदा हो अब हम उन द्रव्योंका वर्णन करतेहैं जो प्रत्येक शक्तिकी निर्बलता पर निर्भर हैं जानलेना चाहिये कि पाचनशक्तिको तिर्याक अर्बा और सजीरियाना का खाना सिब, गुलनार, अनारके छिलके, लावन कूटछानकर गुलाबमें मिला कर जिगर पर लेप करने से शक्ति बढ़ती है और जिगर की ग्रहणशक्ति को अफसन्तीन मस्तगी और गुलाबकेफूल, मुरदके पानी में मिलाकर लेप करनेसे भी शक्ति बढ़तीहै और यहां कब्ज करनेवाली औषध नहीं देसक्तेहैं परन्तु जिगर की शक्ति बढ़ाने वाली औषध देसक्तेहैं। और किसी तरहसे गांठके दूर करने में सुस्ती न करैं। चकोर, मुर्ग और बटेर के मांस में अंगूर का रस मिला कर खाने को देवें। और कलेजे की निरोध शक्ति को जवारिश खोजी बिहीके मुरब्बे के साथ शक्ति बढ़ाती है और कब्ज करने वाली सुगंधित दवायें इसमें गुणकारक हैं और जीरा सेब के पानी के साथ मिलाकर लेप करना लाभदायकहै और निस्सारक शक्तिको मालमोवन और सिकन्जबीन और हरड़ का मुरब्बा बल देतेहैं और यहां बसलमकी फस्द खोलना अच्छा है तथा हल्के मांस और मुर्ग के आधे भुने हुए अंडे की जर्दी खाना लाभदायक है, और दालचीनी, कालीमिर्च और सोंठ इनको डालकर भोजन करना गुणकारक है।

विशेषद्रष्टव्य—प्रगटहो कि निरोधशक्ति में निर्बलता तरीके कारण होती है इसलिये कि निरोधशक्ति की क्रिया कब्ज करने वाली है और कब्ज बिना खुश्कीके नहीं होताहै और तरीका काम नर्म करदेनाहै सो अवश्य ही तरी निरोधशक्ति को निर्बल करदेगी, और जब ग्रहणशक्ति में निर्बलता होगी तब पेट शिथिल होजायगी इसलिये भोजनसन पेटमें अच्छी तरह स्थाम न होगा प्यारे

समय तक रहेंगी और बढ़जायगी तो उसमें सड़ाहट उत्पन्न होगी और ज्वरको भी उत्पन्न करेगी और इसी तरह जब सूजन के कारण गांठ हुईहोंगी, तीसरी बात यहहै कि उसमें वेदना नहो और यह भी उस समय होताहै जब गांठ पूरी नहोवें और सूजन भी नहो। चौथी बात यहहै कि दस्त मांसके धोवनके सदृशहो। पांचवें यह है कि विष्टा बहुत निकले और उसमें अधिक भाग आंवका हो और यह उस समय हुआ करता है कि जब गांठ नीचे के भाग में हुआ करती हैं इसलिये जब गांठ नीचे के भागमें होंगी तब कैलूस अर्थात् रस जिगरकी ओर न जायगा और चौके घावकी धोवनकी तरह निकल जायगा और कभी ऊपर के भागकी गांठ में विष्टा कम आवाहै। छठी बात यहहै कि मूत्र पतला प्रमाण [illegible] कारण है। यह बात उस समय होती है जब गांठ ऊपरके भागमें होंवे [illegible] अधिकतर पतला या कम होना गांठकी अधिकता के अनुसार [illegible] लेना चाहिये कि यह भाव कलेजेकी गांठ पर निर्भर है [illegible] कमहो और उसका रंग ऐसा पीला हो जैसा पीलिया रोग [illegible] बहुधा श्वासमें रुकावट होजाय, क्योंकि कलेजा श्वासनली के [illegible] ताहै और जहां कहीं रगोंका मुख्य पैदाइश में तंग [illegible] तो बहुधा थोड़ी विरुद्धता से गांठका पड़ना बचपन से [illegible]

चिकित्सा--यदि गांठ ऊपर के भाग में हो तो [illegible]

जिस रोगी की प्रकृति उष्ण हो उसे ककड़ी खीरा के बीज [illegible] कासिनी के बीज, परस्यावशा (हंसराज [illegible]) [illegible] मिला कर देवै और ऐसा ही बारतंग [illegible] कर देवै। और जिस रोगी की प्रकृति शीत [illegible] अजमोद कासनी के पानी में मिलाकर लेप [illegible] के भाग में होती जुलाब देवै तो जिस रोगी की [illegible] पा (मेवोंका अर्क) पानी रेवन्दचीनी मिलाकर [illegible] पा गुल कासनी के क्वाथ में या उस के अनुसार [illegible] [illegible] पान कराना बहुत लाभदायक है। और [illegible] कराना उत्तम है। और जिस रोगी की प्र[illegible] [illegible] दवा की जड़ सौंफ अजमोद, इजखर [illegible]

* सुपारी से बड़ा और स्वाद में खट्टा होता [illegible]

चौथा प्रकरण ।

मासारीका की गांठ का वर्णन ।

मासारीका में गांठ पड़जाने का यह लक्षण है कि आमाशय और पेट में और जहां कि कलेजे की गहराई है वहां बीमार को दर्द और बोझ मालूमहो और विष्ठा कैलूस के सदृश होवे और जिगर की गांठ और सूजन तथा निर्बलता के लक्षण बिल्कुल नहीं और देह घटने लगे तथा निर्बल पड़जाय क्योंकि उस की ओर भोजन का जाना बन्द होजाता है, फिर अगर गांठ पूरी नहीं है तो धीरे२ निर्बलता प्रगट हो और अगर गांठ पूरी होतो निर्बलता शीघ्र प्रगट होती है ।

चिकित्सा—जो कुछ कलेजे की गहराई की गांठ के लिये मुख्य है इस जगह काम में लावै और प्रकृति का ध्यान भी रखना चाहिये तथा हर रीतिसे उचित है कि पहिले गांठ के खोलनेवाली और उसके काटनेवाली दवा दवें । इसके पीछे विरेचनकर्त्ता दवा देवे चाहे कलेजे की गांठ हो चाहे गहराईमें हो-

विशेष द्रष्टव्य—दस्तूर उल इलाज में लिखा है कि खोलनेवाली और काटनेवाली औषधों से उनका ग्रहण है जैसे सौंफ की जड़, कासनी की जड़, गोखरू, खर्बूजे के बीज, मकोय सूखी, अमरलता के बीज पोटलीमें बांधकर मूली के बीज, गाजर के बीज, सौंफ, सौंफ के अर्क में जोश देकर छानकर सिकनबीन सादा मिलाकर पान करावें और अगर मल के निकालने की आवश्यकता हो तो मकोय, सौंफ, कासनी के बीज, गोखरू, कासनी की जड़, बेदानेकी मुनक्का रेवन्दचीनी, परशावशा, इन सबको मकोय के अर्क में भिगोवे फिर छानकर अमलतास का गूदा, तुरंजबीन खुरासानी, इनको हरी मकोय का फाड़ा हुआ पानी, हरी कासनी का फाड़ा हुआ पानी, मीठे बादाम का तेल, मिलाकर पान करावें ।

पांचवां प्रकरण ।

कलेजे के फूलजाने का वर्णन ।

उसका यह कारण है कि जिगर के भागों में या उसकी झिल्लियोंमें अथवा दोनों में बुरे भोजन की भाफ इकट्ठी होजाय और अधिकता के कारण अथवा बन्द होजानके कारण निकल न सके फिर खराब होकर हवाके पैदा होनेसे फूला यह हो उसके ये लक्षण हैं कि दाहिनी ओर नीचे को कुछ जोरदार दर्द पैदा

चौथा प्रकरण।

मासारीका की गांठ का वर्णन।

मासारीका में गांठ पड़जाने का यह लक्षण है कि आमाशय और पेट में और जहां कि कलेजे की गहराई है वहां बीमार को दर्द और बोझ मालूमहो और विष्ठा कैलूस के सदृश होवे और जिगर की गांठ और सूजन तथा निर्बलता के लक्षण बिल्कुल नहीं और देह घटने लगे तथा निर्बल पड़जाय क्योंकि इस की ओर भोजन का जाना बन्द होजाता है, फिर अगर गांठ पूरी नहीं है तो धीरे२ निर्बलता प्रगट हो और अगर गांठ पूरी होतो निर्बलता शीघ्र प्रगट होती है।

चिकित्सा—जो कुछ कलेजे की गहराई की गांठ के लिये मुख्य है इस जगह काम में लावे और प्रकृति का ध्यान भी रखना चाहिये तथा हर रीतिसे उचित है कि पहिले गांठ के खोलनेवाली और उसके काटनेवाली दवा देवे। इसके पीछे विरेचनकर्त्ता दवा देवें चाहे कलेजे की गांठ हो चाहे गहराईमें हो—

विशेष द्रष्टव्य—दस्तूर उल इलाज में लिखा है कि खोलनेवाली और काटनेवाली औषधों से उनका ग्रहण है जैसे सोंफ की जड़, कासनी की जड़, गोखरू, खर्बूजे के बीज, मकोय सूखी, अमरलता के बीज पोटलीमें बांधकर मूली के बीज, गाजर के बीज, सौंफ, सौंफ के अर्क में जोश देकर छानकर सिकञ्जबीन सादा मिलाकर पान करावे और अगर मल के निकालने की आवश्यकता हो तो मकोय, सौंफ, कासनी के बीज, गोखरू, कासनी की जड़, बेदानेकी मुनक्का रेवन्दचीनी, परशावशा, इन सबको मकोय के अर्क में भिगोवे फिर छानकर अमलतास का गूदा, तुरञ्जबीन खुरासानी, इनको हरी मकोय का फाड़ा हुआ पानी, हरी कासनी का फाड़ा हुआ पानी, मीठे बादाम का तेल, मिलाकर पान करावे।

पांचवां प्रकरण।

कलेजे के फूलजाने का वर्णन।

उसका यह कारण है कि जिगर के भागों में या उसकी झिल्लियोंमें अथवा दोनों में बुरे भोजन की भाफ इकट्ठी होजाय और अधिकता के कारण अथवा बन्द होजानेके कारण निकल न सके फिर खराब होकर हवाके पेंच होनेसे फूला सा हो उसके ये लक्षण हैं कि दाहिनी ओर नीचे को कुछ जोरदार दर्द पैदा

रोग के वर्णन में दी गई हैं उसी जगह देख लेना चाहिये।

विशेष द्रष्टव्य—प्रगट हो कि अगर कलेजे का दर्द अधिक होता हो तौ रोग के दूर करने के लिये बासलीक नामक रगकी फस्त खोलें और नमक, गेंहू की भुसी और बाजरे से इसको सेकें और सातर (एक प्रकारकी घास) इकलाल उलमलक (परग) बाबूने के फूल, बनफशा, मर्जनजोश (दौनामरुवा) और ऐसा ही कोई और द्रव्य डाल कर तरड़ा देवें।

सातवां प्रकरण

शरकह अर्थात् कलेजे के दर्द का वर्णन

वह इस तरहहै कि बिना कुछ खाये या बहुत परिश्रमके पीछे या चलने फिरने की हरारत से देह गरम हो या हम्माम से निकल कर ठंडा पानी पी लिया हो और वह पानी जिगर में पहुंचे यद्यपि अभी तक आमाशय की उष्णता से गरम न हो और कलेजे में रहजाय और उसमें दर्द सख्त पैदाहो और ये रोग जल्द जाता रहताहै यदि इसका उपायशीघ्र कियाजाय।यदिहकीम उसके इलाजमें गलतीकरेंतो परिणाममेंजलधरया हृदयमें सूजन उत्पन्नहो जाती है और उसके ये लक्षणहैं कि जिन कामों का वर्णन किया है जब उनके पीछे ठंडे पानी पीने का काम पड़ गया हो तौ तत्काल ऐसा तीक्ष्ण दर्द पैदा होता है कि वह सह्य नहो सके और उसका यह उपाय है कि उसी समय एक कपड़ा गरम पानी में भिगोकर कलेजेपर रखदेवे और सम्बुल और मस्तगीका लेपकरें और गर्म पानी से तरड़ा देवें और गरम पानी में शराब मिलाकर पीनेको देवे तौ उसी दिन रोगीको आराम होजायगा।

आठवां प्रकरण

कलेजे की सूजन का वर्णन

इसके कई भेद हैं और उसके लक्षण ज्वर, प्यास, बोझ, दर्द, जलन उस जगह होते हैं भूख जाती रहती है धरातीय के नीचे सूजन का प्रकट होना जिह्वा और मुख का लाल पड़ जाना। और सूखी खांसी का उत्पन्न होना हिचकी आना। और हिचकी उस समय आती है कि सूजन इतनी बड़ी हो जो आमाशय के मुख को दबा देवे और ये लक्षण गहरा, और ऊपर के भाग की सूजन से मिली होती है और मुख्य गहराई की सूजन का यह चिन्ह है कि पित्तकी वमन और मूर्छा तथा मुखों में गर्मी मालूम हो पेट में अग्निगत होतीहै परन्तु यह काम प्राय: हुआ करता है और अगर यत्न नहो और दस्त आवे तौ

रोग के वर्णन में दी गई हैं उसी जगह देख लेना चाहिये।

विशेष द्रष्टव्य—प्रगट हो कि अगर कलेजे का दर्द अधिक होता हो तो रोग के दूर करने के लिये बासलीक नामक रगकी फस्त खोलें और नमक, गेंहू की भुसी और बाजरे से इसको सेकें और सातर (एक प्रकारकी घास)इकलाल उलमलक (परग) बाबूने के फूल, वनफशा, मर्जनजोश (दौनामरुवा) और ऐसा ही कोई और द्रव्य डाल कर तरड़ा देवै।

सातवां प्रकरण

शरकह अर्थात् कलेजे के दर्द का वर्णन

वह इस तरहहै कि बिना कुछ खाये या बहुत परिश्रमके पीछे या चलने फिरने की हरारत से देह गरम हो या हम्माम से निकल कर ठंडा पानी पी लिया हो और वह पानी जिगर में पहुंचे यद्यपि अभी तक आमाशय की उष्णता से गरम नहो और कलेजे में रहजाय और उसमें दर्द सख्त पैदाहो और ये रोग जल्द जाता रहताहै यदि इसका उपायशीघ्र कियाजाय।यदिहकीम उसके इलाजमें गलतीकरेंतो परिणाममेंजलधरया हृदयमें सूजन उत्पन्नहो जाती है और उसके ये लक्षणहैं कि जिन कामों का वर्णन किया है जब उनके पीछे ठंडे पानी पीने का काम पड़ गया हो तो तत्काल ऐसा तीक्ष्ण दर्द पैदा होता है कि वह सह नहो सके और उसका यह उपाय है कि उसी समय एक कपड़ा गरम पानी में भिगोकर कलेजेपर रखदेवै और सम्बुल और मस्तगीका लेपकरें और गर्म पानी से तरड़ा देवें और गरम पानी में शराब मिलाकर पीनेको देवै तो उसी दिन रोगीको आरामहोजायगा।

आठवां प्रकरण

कलेजे की सूजन का वर्णन

इसके कई भेद हैं और उसके लक्षण ज्वर, प्यास, शोष, दर्द, जलन उस जगह होते हैं भूख जाती रहती है पसलीके नीचे सूजन का प्रकट होना जिह्वा और मुख का लाल पड़ जाना। और सूखी खांसी का उत्पन्न होना हिचकी आना। और हिचकी उस समय आती है कि सूजन इतनी बड़ी हो जो आमाशय के मुख को दबा देवै और ये लक्षण गहरा., और उपर के भाग की सूजन से मिली होती है और मुख्य गहराई की सूजन का यह चिन्ह है कि पित्तकी वमन और मूर्छा तथा मूत्रों में मली मालूम हो पेट में पनिलगत होतीहै परन्तु यह काम बहुधा हुआ करता है और अगर वमन नहो और दस्त आवें तो

और यदि पूरी रीतिसे दोषोंको निकालचुके हो तो उसी लेपमें कपूरभी मिला देना चाहिये। और जब तीसरा दिन व्यतीत होजाय तो ऊपर वाली औषधोंमें बाबूना, इकलील, जौका चून ये भी मिलादेवे जिससे रुकावटके साथ पिघलभी जाय किन्तु रुधिरकी सूजनमें केवल रोकनेवाली वस्तुओंका प्रयोग न करें विशेष करके अधिकतासे तथा फस्दके पहिले जिससे दोष कड़े न होजांय और इसी तरह दोष के निकालनेसे पहिले केवल पिघलाने वाली वस्तुओंसे बचना आवश्यकीयहै जिससे सूजन और दर्द न बढ़नेपावे और इस विषयमें जो कुछ ठहराने वाली और पिघलाने वाली वस्तुओं को मिलाकर लेप करे जैसे-रक्तचन्दन और सफेद चन्दन, सुपारी, गुलाब के फूल, इनको सितावर, अकलीम, और बाबूनेका तेल मिलाकर लेपकरे परन्तु समयका विचारना आवश्यकहै जैसे प्रारम्भ में वा प्रारम्भके पास ऐसा करना चाहिये कि रोकनेवाली दवा बलवानहों उनके पीछे पिघलानेवाली हों जैसी कि चिकित्साकी विधि है। और अगर दोष गहराई में हो तो मूत्रकरक औषध बहुत कम देनी चाहिये और प्रकृति को नर्म करने के लिये यदि आवश्यकता हो तो मेवेके पानीका प्रयोग करे। और इस दशामें अमलतासका गूदा कासनीके रसके साथ वा उसके सदृश अन्य औषध लाभदायक होतीहैं और यदि दोष ऊपरकी ओर हो तो मूत्रलानेवाली दवाऐं देवें और जुलाब न देवें परन्तु तबियतमें कब्ज न रहने देवें क्योंकि कब्ज से कष्ट बढ़ता है और जहां कहीं कि सूजन के साथ दस्त हो तो नीचे लिखी हुई टिकिया देवै उसकी विधि यह है चूके के बीज, बदालोनन, गुलाब के फूल, जरिश्क प्रत्येक ५ दिरम, लाख, जिराबन्द, प्रत्येक १ दिरम, कसर आधा दिरम इन सबको कूट छानकर टिकिया बनालेवे और प्रत्येक टिकिया १ मिस्काल की होवे। और रुब्बरीवास (रीवास का मुरब्बा) वा अनार की चासनी उसकी जगह काम में आसक्ती है परन्तु फस्द खोलने के पीछे॥

विशेषद्रष्टव्य—दस्तूर उल इलाज में ऐसे रोगों के उपाय की यह विधि लिखी है कि अगर रोगीमें शक्ति हो तो फस्द खोले और आवश्यकता के अनुसार एक बार या कई बार करके रुधिर निकाले और बिना फस्द या दस्त कराने के रोकने वाली औषधें न देनी चाहियें और तबियतके नर्म करने वाली औषधोंका देनाभी दोषोंके निकालनेसे पहिले निषेध है क्योंकि इससे सूजन और दर्द बढ़ता है।

और यदि पूरी रीतिसे दोषोंको निकालचुके हो तो उसी लेपमें कपूरभी मिला देना चाहिये। और जब तीसरा दिन व्यतीत होजाय तो ऊपर वाली औषधोंमें बाबूना, इकलील, जौका चून ये भी मिलादेवै जिससे रुकावटके साथ पिघलभी जाय किन्तु रुधिरकी सूजनमें केवल रोकनेवाली वस्तुओंका प्रयोग न करै विशेष करके अधिकतासे तथा फस्दके पहिले जिससे दोष कड़े न होजाय और इसी तरह दोष के निकालनेसे पहिले केवल पिघलाने वाली वस्तुओंसे बचना आवश्यकीय है जिससे सूजन और दर्द न बढ़नेपावै और इस विषयमें जो कुछ ठहराने वाली और पिघलाने वाली वस्तुओं को मिलाकर लेप करै जैसे-रक्तचन्दन और सफेद चन्दन, सुपारी, गुलाब के फूल, इनको सिताबर, अकलील, और बाबूनेका तेल मिलाकर लेपकरै परन्तु समयका विचारना आवश्यक है जैसे प्रारम्भ में वा प्रारम्भके पास ऐसा करना चाहिये कि रोकनेवाली दवा बलवान् हो उनके पीछे पिघलानेवाली हों जैसी कि चिकित्साकी विधि है। और अगर दोष गहराई में हो तो मूत्रकरक औषध बहुत कम देनी चाहिये और प्रकृति को नर्म करने के लिये यदि आवश्यकता हो तो मेवेके पानीका प्रयोग करै। और इस दशामें अमलतासका गूदा कासनीके रसके साथवा उसके सदृश अन्य औषध लाभदायक होतीहैं और यदि दोष ऊपरकी ओर हो तो मूत्रलानेवाली दवायें देवैं और जुलाब न देवै परन्तु तबियतमें कब्ज न रहने देवैं क्योंकि कब्ज से कष्ट बढ़ता है और जहां कहीं कि सूजन के साथ दस्त हो तो नीचे लिखी हुई टिकिया देवै उसकी विधि यह है चूके के बीज, बदारोजन, गुलाब के फूल, जरिदक प्रत्येक ५ दिरम, लाख, जिरावन्द, प्रत्येक १ दिरम, कसर आधा दिरम इन सबको कूट छानकर टिकिया बनालेवै और प्रत्येक टिकिया १ मिस्काल की होवै। और रुब्बरीवास (रीवास का मुरब्बा) वा अनारकी चासनी उसकी जगह काम में आसक्ती है परन्तु फस्द खोलने के पीछे ॥

विशेषद्रष्टव्य—दस्तूर उल इलाज में ऐसे रोगों के उपाय की यह विधि लिखी है कि अगर रोगीमें शक्ति हो तो फस्द खोले और आवश्यता के अनुसार एक बार या कई बार करके रुधिर निकाले और बिना फस्द या दस्त कराने के रोकने वाली औषधें न देनी चाहियें और तबियतके नर्म करने वाली औषधोंका देनाभी दोषोंके निकालनेसे पहिले निषेध है क्योंकि इससे सूजन और दर्द बढ़ता है।

पिघलाने वाला है बाबूना, इकलीलुलमलिक, मेथी के बीज,जौका आटा,चन्दन रोगनगुल इनको मिलाकर लेप करे। ,

तीसरा भेद कफकी सूजनका वर्णन।

उसके लक्षण ये हैं कि मुख, जिव्हा और विष्टा सफेद होजातेहैं मुखका भुड़भुड़ाना, मुख के मांस का ढीला पड़जाना, प्यास की कमी, दर्द और ज्वर का कम होना। और अगर सूजन ऊपरी भागमें हो तो उस जगह नर्म सूजन मालूम हो और यह बात जानना चाहिये कि कफ की सूजन में बोझ अधिक होता है और दर्द कम होता है और इस बातके लक्षण कि सूजन ऊपर के भाग में है वा नीचे के में इसका वर्णन प्रथम भेद में होचुका है।

चिकित्सा--गहराई में हुकना करे और एक दिरम इयारिज फैंकरा और आधादिरम गारीकून की गोलियां बनाकर सोते समय खाने को देवै और सबेरे के समय अफसन्तीन की टिकिया या रेवन्दचीनी की टिकिया देवें और ऊपरी भागमें मूत्रकारक औषध देवें जैसे अजमोद, अनीसून, सौंफ अजवायन, कासनी की जड़ का काथ, सिकजबीन बिजूरी गर्म मिलाकर देवें और जब दस्तों से और मूत्रके निकालने से मल निकल चुके तब जिगर में गर्मी पहुंचाने के लिये गुलाब के फूल अनीसून अजमोद, फुकाह असखर मस्तगी सम्बुल, असारून रेवन्दचीनी, लाख ,मुलहा, मजीठ और केसर इन सबकी टिकिया बना कर खानेको देवै और बटेर और तीतरको चने और जैतूनके तेल तथा दालचीनी के साथ पकाकर खाने को देवै परन्तु दोषों के निकालनसे पहिले खाने के लिये चनेके पानीके सिवाय,शाभूग या बादाम की मिंगी के शीरेके सिवाय और कुछ खाने को न दे।

हुकने की तर्कीब।

जो गराई की सूजन में काम आती है, अजमोद की जड़ सौंफ की जड़, गन्दना की जड़, फुकाह, गन्दना अनीसून, गाफिस जूफा, पोदीना,गारीकून, तुर्बुद (निसोथ) बिनतूरयून, और अजीर इनको जोश देकर छान लेवें और लाल खांड मिलाकर हुकना करे और कलेजेपर लेप करनेके वास्ते कस्तूरी और केसर, सोसन के तेल में मिलाकर सब औषधों से उत्तम है॥

विशेष दृष्टव्य-- करावादीनकादरीमें कुर्स, अफसन्तीन की विधि इस तरह लिखी है कि अजमोद मिलाकर असारून,पीछे बादाम की मिंगी इन को बारीक पीसकर केवल पानी में टिकिया बना लेवें।

पिघलाने वाला है बाबूना, इकलीलुलमलिक, मेथी के बीज, जौका आटा, चन्दन रोगनगुल इनको मिलाकर लेप करे। ।

तीसरा भेद कफकी सूजनका वर्णन।

उसके लक्षण ये हैं कि मुख, जिव्हा और विष्टा सफेद होजातेहैं मुखका भुड़भुड़ाना, मुख के मांस का ढीला पड़जाना, प्यास की कमी, दर्द और ज्वर का कम होना। और अगर सूजन ऊपरी भागमें हो तो उस जगह नर्म सूजन मालूम हो और यह बात जानना चाहिये कि कफ की सूजन में बोझ अधिक होता है और दर्द कम होता है और इस बातके लक्षण कि सूजन ऊपर के भाग में है वा नीचे के में इसका वर्णन प्रथम भेद में होचुका है।

चिकित्सा--गहराई में हुक्ना करे और एक दिरम इयारिज फैकरा और आधादिरम गारीकून की गोलियां बनाकर सोते समय खाने कोदेवै और सवेरे के समय अफसन्तीन की टिकिया या रेवन्दचीनी की टिकिया देवें और ऊपरी भागमें मूत्रकारक औषध देवें जैसे अजमोद, अनीसून, सौंफ अजवायन, कासनी की जड़ का क्वाथ, धिकजमीन पिजूरी गर्म मिलाकर देवें और जब दस्तों से और मूत्रके निकालने से मल निकलचुके तब जिगर में गर्मी पहुचाने के लिये गुलाब के फूल अनीसून अजमोद, फुकाह असखर मस्तगी सम्बुल, असारून रेवन्दचीनी, लाख, मुलका, मजीठ और केसर इन सबकी टिकिया बना कर खानेको देवै और बटेर और तीतरको चने और जैतूनके तेल तथा दालचीनी के साथ पकाकर खाने को देवें परन्तु दोषों के निकालनसे पहिले खाने के लिये चनेके पानीके सिवाय, या मूग या बादाम की गिरी के शीरेके सिवाय और कुछ खाने को न दे।

हुकने की तर्कीब।

जो गराई की सूजन में काम आती है, अजमोद की जड़ सौंफ की जड़, गन्दना की जड़, फुकाह, गन्दना अनीसून, गाफिस जूफा, पोदीना, गारीकून, तुर्बुद (निसोथ) फितरासालीयून, और अजीर इनको जोश देकर छान लेवे और लाल खांड मिलाकर हुकना करे और कलेजेपर लेप करनेके वास्ते कस्तूरी और केसर, सोसन के तेल में मिलाकर सब औषधों से उत्तम है॥

विशेष दृष्टव्य-- क्रावादीनकादरीमें कुर्स, अफसन्तीन की विधि इस तरह लिखी है कि अजमोद मिलाकर असारून, मीठे बादाम की गिरी ■ को बारीक पीसकर केवल पानी में टिकिया बना लेवें।

दालचीनी और जैतूनके तेलसे पकायाजाय और जब गर्मी नहो तो कलेजेकी कठोर सूजनको नर्म करने में ऊटनीका दूध पानकरना बहुत गुणकारकहै। विशेष करके इस रीति से कि ऊटनी के दूधको एक प्याले में लेकर कंद से मीठा करके कावली हरड़का चूरा और छोटी हरड़का चूरा प्रत्येक ३ दिरम अजमोदके बीज, अनीसून, सौंफ प्रत्येक ३॥ माशे बनाकर दोदो मिस्काल अर्थात् ९ माशे खिलाकर उसके ऊपर दूध पिलावै।

दवा उळकरकुमकी विधि।

सुम्बुल, केशर प्रत्येक दो दिरम अर्थात् ७ माशे, दालचीनी, मुरशुद्ध की हुई कड़वी कूठ, फुकाह, अजखर, प्रत्येक १ दिरम इन छः दवाओं को कूट छानकर शुद्ध सहद में मिला लेवै।

आसानासियाकी विधि।

केशर, कड़वी कूठ, सम्बुल, मुर साफकी हुई, ऊद बलसान, अफीम, सलीखा, तज, प्रत्येक १ दिरम, उस्सारै गाफिस २ दिरम, मंदककी जड़ २ दिरम, ये सब दवा कूटछानकर तिगुना शहद मिलावै।

आसानासियाका अर्थ—मोक्षकारक और रोग नाशकहै और कोई २ इसका यह अर्थ करते हैं कि इसे दवा उज्जेय कहते हैं क्योंकि जिस दवामें भेड़ियेका कलेजा पड़ताहै उसको आसानासिया कहते हैं और अर्बी भाषामें जेवको भेड़िया कहतेहैं।

विशेष द्रष्टव्य—यहां छोटे आसानासियाका नुस्खा लिखागयाहै इस लिये भेड़ियेका-कलेजा-नहीं पड़ताहै। बड़े आसानासिया में पड़ताहै॥

गूगलकी टिकियाकी तर्कीब।

गुलाबके फूल ५ दिरम, बालछड़ २ दिरम, मस्तगी, केसर, मुर प्रत्येक १ दिरम, कूठ, कड़वे बादाम, प्रत्येक दो दिरम, गूगल ३ दिरम, इन सब आठ दवाओंको शहदमें मिलाकर टिकिया बनावै।

जरिश्ककी टिकियाकी विधि।

उस्सारै गाफिस, लाख धुलाहुआ, रेवन्दचीनी, अमलतासके बीज, हुम्मदी, का सन, बंशलोचन, कासनीका बीज, मस्तंगी, बालछड़ प्रत्येक ३ दिरम, जरिश्क मुनक्का, खर्पूजेकी गिरी, ककड़ी खीरेकी मिंगी प्रत्येक ४ दिरम, गुलाबके फूल गुलजर्दीन प्रत्येक ६ दिरम, केशर १॥ दिरम इन सबको कूटछानकर तुरमवीन के पानी में मिलाकर टिकिया बनावै ये सब १६ दवाहैं। यह टिकिया कफकी सूजन में भी गुणकारकहै।

दालचीनी और जैतूनके तेलसे पकायाजाय और जब गर्मी नहो तो कलेजेकी कठोर सूजनको नर्म करने में ऊटनीका दूध पानकरना बहुत गुणकारकहै। विशेष करके इस रीति से कि ऊटनी के दूधको एक प्याले में लेकर कंद से मीठा करके कावली हरड़का चूरा और छोटी हरड़का चूरा प्रत्येक ३ दिरम अजमोदके बीज, अनीसून, सौंफ प्रत्येक ३॥ माशे बनाकर दोदो मिस्काल अर्थात् ९ माशे खिलाकर उसके ऊपर दूध पिलावै।

दवा उळकरकुमकी विधि।

सुम्बुल, केशर प्रत्येक दो दिरम अर्थात् ७ माशे, दालचीनी, मुरशुद्ध की हुई कड़वी कूठ, फुकाह, अजखर, प्रत्येक १ दिरम इन छः दवाओं को कूट छानकर शुद्ध शहद में मिला लेवै।

आसानासियाकी विधि।

केशर, कड़वी कूठ, सम्बुल, मुर साफकी हुई, ऊद बलसान, अफीम, सलीखा, तज, प्रत्येक १ दिरम, उस्सारै गाफिस २ दिरम, मंदककी जड़ ३ दिरम, ये सब दवा कूटछानकर तिगुना शहद मिलावै।

आसानासियाका अर्थ-मोक्षकारक और रोग नाशकहै और कोई २ इसका यह अर्थ करते हैं कि इसे दवा उब्जेय कहते हैं क्योंकि जिस दवामें भेड़ियेका कलेजा पड़ताहै उसको आसानासिया कहते हैं और अर्बी भाषामें जेवको भेड़िया कहतेहैं।

विशेष द्रष्टव्य—यहां छोटे आसानासियाका नुसखा लिखागयाहै इस लिये भेड़ियेका-कलेजा-नहीं पड़ताहै। बड़े आसानासिया में पड़ताहै॥

गूगलकी टिकियाकी तर्कीब।

गुलावके फूल ५ दिरम, बालछड़ २ दिरम, मस्तगी, केशर, मुर प्रत्येक १ दिरम, कूठ, कड़वे बादाम, प्रत्येक दो दिरम, गूगल ३ दिरम, इन सब आठ दवाओंको शहदमें मिलाकर टिकिया बनावै।

जरिश्ककी टिकियाकी विधि।

उस्सारै गाफिस, लाख धुलाहुआ, रेवन्दचीनी, अमलतासके बीज, हुमरटी का सत, बंशलोचन, कासनीका बीज, मस्तगी, बालछड़ प्रत्येक ३ दिरम, जरिश्क मुनक्का, खर्पूजेकी मिंगी, ककड़ी खीरेकी मिंगी प्रत्येक ४ दिरम, गुलाबके फूल गुरजबीन प्रत्येक ६ दिरम, केशर १॥ दिरम इन सबको कूटछानकर तुरमवीन के पानी में मिलाकर टिकिया बनावै ये सब १६ दवाई। यह टिकिया कफकी सूजन में भी गुणकारकहै।

सूजन अर्द्ध चन्द्राकार होती है और स्पष्ट दिखाई नहीं देती विशेष करके अगर जब गहराई की ओर हो अथवा बीमार मोटा हो क्योंकि मोटे आदमियों में यद्यपि सूजन कलेजे के ऊपर के भाग में हो तौभी दृष्टि नहीं आती और दूसरे रोग जो कलेजेकी सूरत के कारण होतेहैं जैसे मूत्र और दस्तका बन्द होना, भूखका जाना और उसके सिवाय तमाम लक्षण दिखाईदें यह अजलातकी सूजनके विरुद्ध है जो कि आयतक्षेत्रके समान होतीहै या चौड़ी होतीहै अथवा तिरछी भी होतीहै और चाहे वह किसी तरहकी हो उसका एक सिरा मोटा होताहै और दूसरा सिरा पतला होताहै जैसे चूहे की पूंछ। इसकी सूरत अर्द्धचन्द्राकार कभी नहीं होती और बहुधा दिखाई भी देनेलगती है और कलेजे की सूजनके लक्षणोंमें से एक भी उसमें नहीं पायाजाता क्योंकि कलेजा निरोगी है और जब सूजन अजलातमें पैदाहो तो श्वासकी रुकावट होगी और साहिब इकसराई ने कहाहै कि जब यह मालूमहो कि मिराक (पेटकी खालके नीचेवालेपर्दे को कहते हैं) पतला और शुष्क हुआ जाताहै तो जानलेना चाहिये कि कलेजेकी सूजनहै।

चिकित्सा—इस रोगमें पूरा उपाय यहहै कि प्रारम्भ में फस्द खोलकर जुलाब देवें और रोकनेवाली दवाओंका लेपकरें और केवल रोकनेवाली औषधों के देनेसे दोषके कठोर होजानेका भय न करें और अन्तमें केवल पिघलानेवाली दवाओंका लेपकरें और शक्तिके कम होजानेका भी भय न करें, कलेजेकी सूजन इसके विरुद्ध होतीहै कि उसमें रोकनेवाली औषधोंका प्रयोग प्रारम्भ में और केवल पिघलाने वाली औषधों का प्रयोग अन्तमें निषेध है।

विशेषदृष्टव्य—जब दोष इकट्ठा होने लगे और उसमें पीव पड़जाय तो शीघ्रही नश्तरसे चीरडालें और इस बातके लिये न ठहरा रहे कि दवाओंसे पक कर फूटजायगा क्योंकि देर करनेमें इस बातका डरहै कि बहुत देरकरनेसे अजले और मिराक (पेटके भीतरका पर्दा) को खायजायगा और सड़ादेगा औरइसबात का भी डरहै कि शायद भीतरकी ओर फूटजाय और आंतों तक पहुंचजाय ॥

दसवां प्रकरण

कलेजेकी ऊंची सूजनका वर्णन

यह दबीला (फोड़ा) बहुधा गरम सूजनके पीछे कठोरता उत्पन्न हुआ करती है जैसा कि बहुधा कलेजे में ठंडी सूजन के पीछे कठोरता होजातीहै और जानना चाहिये कि कौनसी सूजन ऐसी जगह पर होती है वह तीन प्रकारों से पृथक्

सूजन अर्द्ध चद्राकार होती है और स्पष्ट दिखाई नहीं देती विशेष करके अगर जब गहराई की ओर हो अथवा बीमार मोटा हो क्योंकि मोटे आदमियों में यद्यपि सूजन फलेजे के ऊपर के भाग में हो तौभी दृष्टि नहीं आती और दूसरे रोग जो फलेजेकी सूरत के कारण होतेहैं जैसे मूत्र और दस्तका बन्द होना, भूखका जाना और उसके सिवाय तमाम लक्षण दिखाईदें यह अजलातकी सूजनके विरुद्ध हैं जो कि आयतक्षेत्रके समान होतीहै या चौड़ी होतीहै अथवा तिरछी भी होतीहै और चाहे वह किसी तरहकी हो उसका एक सिरा मोटा होताहै और दूसरा सिरा पतला होताहै जैसे चूहे की पूंछ। इसकी सूरत अर्द्धचन्द्राकार कभी नहीं होती और बहुधा दिखाई भी देनेलगती है और कलेजे की सूजनके लक्षणोंमें से एक भी उसमें नहीं पायाजाता क्योंकि कलेजा निरोगी है और जब सूजन अजलातमें पैदाहो तो श्वासकी रुकावट होगी और साहिब इकसराई ने कहाहै कि जब यह मालूमहो कि मिराक (पेटकी खालके नीचेवालेपर्दे को कहते हैं) पतला और शुष्क हुआ जाताहै तो जानलेना चाहिये कि कलेजेकी सूजनहै।

चिकित्सा—इस रोगमें पूरा उपाय यहहै कि प्रारम्भ में फस्द खोलकर जुलाब देवें और रोकनेवाली दवाओंका लेपकरें और केवल रोकनेवाली औषधों के देनेसे दोषके कठोर होजानेका भय न करें और अन्तमें केवल पिघलानेवाली दवाओंका लेपकरें और शक्तिके कम होजानेका भी भय न करें, कलेजेकी सूजन इसके विरुद्ध होतीहै कि उसमें रोकनेवाली औषधोंका प्रयोग प्रारम्भ में और केवल पिघलाने वाली औषधों का प्रयोग अन्तमें निषेध है।

विशेषदृष्टव्य—जब दोष इकट्ठा होने लगे और उसमें पीव पड़जाय तो शीघ्रही नश्तरसे चीरडालें और इस बातके लिये न ठहरा रहे कि दवाओंसे पक कर फूटजायगा क्योंकि देर करनेमें इस बातका डरहै कि बहुत देरकरनेसे अजले और मिफाक (पेटके भीतरका पर्दा) को खायजायगा और सड़ादेगा औरइसबात का भी डरहै कि शायद भीतरकी ओर फूटजाय और आंतों तक पहुंचजाय॥

दसवां प्रकरण

कलेजेकी ऊची सूजनका वर्णन

यह दबीला (फोड़ा) बहुधा गरम सूजनके पीछे कठोरता उत्पन्न हुआ करताहै जैसा कि बहुधा कलेजे में ठंढी सूजन के पीछे कठोरता होजातीहै और जानना चाहिये कि जौनसी सूजन ऐसी जगह पर होती है वह तीन दशाओं से पृथक्

सूजन अर्द्ध चद्राकार होती है और स्पष्ट दिखाई नहीं देती विशेष करके अगर जब गहराई की ओर हो अथवा बीमार मोटा हो क्योंकि मोटे आदमियों में यद्यपि सूजन कलेजे के ऊपर के भाग में हो तौभी दृष्टि नहीं आती और दूसरे रोग जो कलेजेकी सूरत के कारण होतेहैं जैसे मूत्र और दस्तका बन्द होना, भूखका जाना और उसके सिवाय तमाम लक्षण दिखाईदें यह अजल्लातकी सूजनके विरुद्ध हैं जो कि आयतक्षेत्रके समान होतीहै या चौड़ी होतीहै अथवा तिरछी भी होतीहै और चाहे वह किसी तरहकी हो उसका एक सिरा मोटा होताहै और दूसरा सिरा पतला होताहै जैसे चूहे की पूंछ। इसकी सूरत अर्द्धचन्द्राकार कभी नहीं होती और बहुधा दिखाई भी देनेलगती है और कलेजे की सूजनके लक्षणोंमें से एक भी उसमें नहीं पायाजाता क्योंकि कलेजा निरोगी है और जब सूजन अजलातमें पैदाहो तो श्वासकी रुकावट होगी और साहिब इकसराई ने कहाहै कि जब यह मालूमहो कि मिराक (पेटकी खालके नीचेवालेपर्दे को कहते हैं) पतला और शुष्क हुआ जाताहै तो जानलेना चाहिये कि कलेजेकी सूजनहै।

चिकित्सा—इस रोगमें पूरा उपाय यहहै कि आरम्भ में फस्द खोलकर जुलाब देवै और रोकनेवाली दवाओंका लेपकरै और केवल रोकनेवाली औषधों के देने से दोषके कठोर होजानेका भय न करें और अन्तमें केवल पिघलानेवाली दवाओंका लेपकरें और शक्तिके कम होजानेका भी भय न करें, कलेजेकी सूजन इसके विरुद्ध होतीहै कि उसमें रोकनेवाली औषधोंका प्रयोग आरम्भ में और केवल पिघलाने वाली औषधों का प्रयोग अन्तमें निषेध है।

विशेषद्रष्टव्य—जब दोष इकट्ठा होने लगे और उसमें पीब पड़जाय तो शीघ्रही नश्तरसे चीरडालें और इस बातके लिये न ठहरा रहे कि दवाओंसे पक कर फूटजायगा क्योंकि देर करनेमें इस बातका डरहै कि बहुत देरकरनेसे अजले और सिफाक (पेटके भीतरका पर्दा) को खाजायगा और सड़ादेगा औरइसबात का भी डरहै कि शायद भीतरकी ओर फूटजाय और आंतों तक पहुंचजाय॥

दसवां प्रकरण

कलेजेकी ऊची सूजनका वर्णन

यह दबीला (फोड़ा) बहुधा गरम सूजनके पीछे कठोरता उत्पन्न हुआकरताहै जैसा कि बहुधा कलेजे में ठंढी सूजन के पीछे कठोरता होजातीहै और जानना चाहिये कि जौनसी सूजन ऐसी जगह पर होती है वह गीले दवाओं से पृथक्

सूजन अर्द्ध चन्द्राकार होती है और स्पष्ट दिखाई नहीं देती विशेष करके अगर जब गहराई की ओर हो अथवा बीमार मोटा हो क्योंकि मोटे आदमियों में यद्यपि सूजन कलेजे के ऊपर के भाग में हो तौभी दृष्टि नहीं आती और दूसरे रोग जो कलेजेकी सूरत के कारण होतेहैं जैसे मूत्र और दस्तका बन्द होना, भूखका मारना और उसके सिवाय समाय लक्षण दिखाईदें यह अजलातकी सूजनके विरुद्ध है जो कि आयतक्षेत्रके समान होतीहै या चौड़ी होतीहै अथवा तिरछी भी होतीहै और चाहे वह किसी तरहकी हो उसका एक सिरा मोटा होताहै और दूसरा सिरा पतला होताहै जैसे चूहे की पूंछ। इसकी सूरत अर्द्धचन्द्राकार कभी नहीं होती और बहुधा दिखाई भी देनेलगती है और कलेजे की सूजनके लक्षणोंमें से एक भी उसमें नहीं पायाजाता क्योंकि कलेजा निरोगी है और जब सूजन अजलातमें पैदाहो तो श्वासकी रुकावट होगी और साहिब इकसराई ने कहाहै कि जब यह मालूमहो कि मिराक (पेटकी खालके नीचेवालेपर्दे को कहते हैं) पतला और शुष्क हुआ जाताहै तो जानलेना चाहिये कि कलेजेकी सूजनहै।

चिकित्सा—इस रोगमें पूरा उपाय यहहै कि प्रारम्भ में फस्द खोलकर जुलाब देवें और रोकनेवाली दवाओंका लेपकरे और केवल रोकनेवाली औषधों के देनेसे दोषके कठोर होजानेका भय न करें और अन्तमें केवल पिघलानेवाली दवाओंका लेपकरें और शक्तिके कम होजानेका भी भय न करें, कलेजेकी सूजन इसके विरुद्ध होतीहै कि उसमें रोकनेवाली औषधोंका प्रयोग प्रारम्भ में और केवल पिघलाने वाली औषधों का प्रयोग अन्तमें निषेध है।

विशेषद्रष्टव्य—जब दोष इकट्ठा होने लगे और उसमें पीब पड़जाय तो शीघ्रही नश्तरसे चीरडालें और इस बातके लिये न ठहरा रहे कि दवाओंसे पक कर फूटजायगा क्योंकि देर करनेमें इस बातका डरहै कि बहुत देरकरनेसे अजले और सिफाक (पेटके भीतरका पर्दा) को खायजायगा और सड़ादेगा औरइसबात का भी डरहै कि शायद भीतरकी ओर फूटजाय और आंतों तक पहुंचजाय॥

दसवां प्रकरण

कलेजेकी ऊची सूजनका वर्णन

यह दबीला (फोड़ा) बहुधा गरम सूजनके पीछे कठोरता उत्पन्न हुआकरताहै जैसा कि बहुधा कलेजे में ठंढी सूजन के पीछे कठोरता होजातीहै और जानना चाहिये कि जौनसी सूजन ऐसी जगह पर होती है वह गर्म दवाओं से पृथक्

क्योंकि दोषका आंतोंमें इकट्ठा होना विशेष करके प्रधान अंग अर्थात् जिगरमें इकट्ठा होना बुराहै और जब यह उपाय लाभ न करें अथवा किसी और कारण से इस उपायको न करसकें और दोष इकट्ठा होतो पकानेवाली औषधोंका लेप करें जिससे शीघ्र पकजाय और जब पककर फूटे और मूत्र वा विष्ठा वा वमन के साथ निकले तो ऐसी दवा देवे कि जिससे यह फोड़ा बिल्कुल जातारहै और यह वस्तु इस काममें आतीहैं शर्वत कन्दको गुलाबमें मिलाकर या सिकञ्जबीन या केवल जौका आटा शहदके साथ प्रयोग करना गुणकारकहै, और इसीतरह ककड़ी खीराके बीजोंका रस, खर्बूजेके बीजका रस, उन्नावका शर्बत खशखशका शर्बत और नीलोफरका शर्बत इनमें मिलाकर देवे और इसीतरह जूफा, अजमोदकी जड़, सोंफ, अनीसून और मिश्रीका जुलाब बनाकर और उक्त औषधोंका लेप गर्मीके प्रमाणसे और ज्वरके होने न होनेका ध्यान देकर और रोगी की दशा देख कर प्रयोग करै और जब इन दवाओंके पीने पर दो घड़ी व्यतीत होजांय तो कोई ऐसी वस्तु जो पेटके घावोंको भुरादेवे इन्हीं औषधों के साथ मिलाकर पिलादेवे कि जो उसे कलेजे में पहुचावे घावको भरनेवाली और मांस को जमानेवाली दवा कुन्दर और दम्मुल अखवैन है और नीचे लिखी हुई दवा बहुत लाभदायक है ।

मस्तगी, कासनी के बीज, गिले अरमनी, प्रत्येक १ मिस्काल, कुन्दर, दम्मुल अखवैन, गुलाब के फूल, बंसलोचन प्रत्येक २ मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बना लेवे इसकी मात्रा २ दिरमकी है और इसके साथकी औषधें अर्थात् भरलानेवाली दवा को कलेजेमें पहुचाने वाली दवा ये है यथा कासनीके बीज, अजमोद के बीज आदि, सिकञ्जबीन, या शहद के पानी में मिलाकर देवे इसी तरह विवध और कलेजे की शक्ति के लिये चन्दन, बारतमके पत्ते, मस्तगी, रेवन्दचीनी इनका लेप करै और शक्ति की रक्षाके लिये सुगंधित विषघातक औषधे जैसे ऊद, केसर या अन्य इनके सदृश, दवाओंको लेप या तेल आदि में मिलाकर काममें लावें और जो भोजन इस रोगमें देसके हैं वह यह हैं पर्वतके पानीकी मछली और हरीरा, मैदाकी रोटीका गूदा, बादाम रोगन और खांड़ मे बनाकर देवे और आधी भुनी हुई अंडे की जर्दी भी देवे पक्षियों का मांस खाना दूध क्न्द मिला हुआ भी गुणकारक है ॥

विशेषवक्तव्य—अगर दोष आंतों की ओर झुका हो तो इसका उ

क्योंकि दोषका आंतोंमें इकट्ठा होना विशेष करके प्रधान अंग अर्थात् जिगरमें इकट्ठा होना बुराहै और जब यह उपाय काम न करैं अथवा किसी और कारण से इस उपायको न करसकें और दोष इकट्ठा होतो पकानेवाली औषधोंका लेप करें जिससे शीघ्र पकजाय और जब पककर फूटै और मूत्र या विष्ठा या वमन के साथ निकले तो ऐसी दवा देवै कि जिससे यह फोड़ा बिल्कुल जातारहै और यह वस्तु इस काममें आतीहैं श्वेत कन्दको गुलाबमें मिलाकर या सिकंजबीन या केवल जौका आटा शहदके साथ प्रयोग करना गुणकारकहै,और इसीतरह ककड़ी खीराके बीजोंका रस, खर्बूजेके बीजका रस, उन्नाबका शर्बत खशखशका शर्बत और नीलोफरका शर्बत इनमें मिलाकर देवै और इसीतरह जूफा, अजमोदकी जड़, सौंफ, अनीसून और मिश्रीका जुलाब बनाकर और उक्त औषधोंका लेप गर्मीके प्रमाणसे और ज्वरके होने न होनेका ध्यान देकर और रोगी की दशा देख कर प्रयोग करे और जब इन दवाओंके पीने पर दो घड़ी व्यतीत होजांय तो कोई ऐसी वस्तु जो पेटके घावोंको भरादेवै इन्हीं औषधों के साथ मिलाकर पिलादेवै कि जो उसे कलेजे में पहुंचावै घावको भरनेवाली और मांस को जमानेवाली दवा कुन्दर और दम्मुल अखवैन है और नीचे लिखी हुई दवा बहुत लाभदायक है ।

मस्तगी, कासनी के बीज, गिले अरमनी, प्रत्येक १ मिस्काल, कुन्दर, दम्मुल अखवैन, गुलाब के फूल, वंशलोचन प्रत्येक २ मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बना लेवै इसकी मात्रा २ दिरमकी है और इसके साथकी औषधें अर्थात् भरलानेवाली दवा को कलेजेमें पहुंचाने वाली दवा ये हैं यथा कासनीके बीज, अजमोद के बीज आदि, सिकंजबीन, या शहद के पानी में मिलाकर देवै इसी तरह विषघ और कलेजे की शक्ति के लिये चन्दन, मारलगके पत्ते, मस्तगी, रेवन्दचीनी इनका लेप करें और शक्ति की रक्षाके लिये सुगंधित विषघ्नकारक औषधें जैसे ऊद, केसर या अन्य इनके सदृश, दवाओंको लेप या तैल आदि में मिलाकर काममें लावे और जो भोजन इस रोगमें देसक्ते हैं वह यह हैं पर्वतमें पानीकी मछली और हरीरा, मुर्गाबी रोगीका गुर्दा, बादाम रोगन और गोंद से बनाकर देवै और आधी भुनी हुई भेड़ की अंड़ी भी देवै पक्षियों का मांस खाना दूध शकर मिला हुआ भी गुणकारक है ॥

विशेषवृत्तान्त—अगर दोष आंतों की ओर झुका हो तो इसका सु

क्योंकि दोषका आंतोंमें इकट्ठा होना विशेष करके प्रधान अंग अर्थात् जिगरमें इकट्ठा होना बुराहै और जब यह उपाय लाभ न करे अथवा किसी और कारण से इस उपायको न करसकें और दोष इकट्ठा होतो पकानेवाली औषधोंका लेप करें जिससे शीघ्र पकजाय और जब पककर फूटै और मूत्र या विष्ठा या वमन के साथ निकले तो ऐसी दवा देवें कि जिससे यह जोड़ बिल्कुल जातारहै और यह वस्तु इस काममें आतीहैं शर्वत कन्दको गुलाबमें मिलाकर या सिकञ्जबीन या केवल जौका आटा शहदके साथ प्रयोग करना गुणकारकहै,और इसीतरह ककड़ी खीराके बीजोंका रस, खर्बूजेके बीजका रस, उन्नाबका शर्वत खशखशका शर्वत और नीलोफरका शर्वत इनमें मिलाकर देवें और इसीतरह जूफा, अजमोदकी जड़, सौंफ, अनीसून और मिश्रीका जुलाब बनाकर और उक्त औषधोंका लेप गर्मीके प्रमाणसे और ज्वरके होनेन होनेका ध्यान देकर और रोगी की दशा देख कर प्रयोग करै और जब इन दवाओंके पीने पर दो पहर व्यतीत होजाय तो कोई ऐसी वस्तु जो पेटके घावोंको पुरादेवे इन्हीं औषधों के साथ मिलाकर पिलादेवे कि जो उसे कलेजे में पहुंचावे घावको भरनेवाली और मांस को जमानेवाली दवा कुन्दर और दम्मुल अखवैन हैं और नीचे लिखी हुई दवा बहुत लाभदायक है।

मस्तगी, कासनी के बीज, गिले अरमनी, प्रत्येक १ मिस्काल, कुन्दर, दम्मुल अखवैन, गुलाब के फूल, बंशलोचन प्रत्येक २ मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बना लेवें इसकी मात्रा २ दिरमकी है और इसके साथकी औषधें अर्थात् भरलानेवाली दवा को कलेजेमें पहुंचाने वाली दवा ये हैं यथा कासनीके बीज, अजमोद के बीज आदि, सिकञ्जबीन, या शहद के पानी में मिलाकर देवें इसी तरह सिवाय और कलेजे की शक्ति के लिये चन्दन, बारतंगके पत्ते, मस्तगी, रेवन्दचीनी इनका लेप करें और शक्ति की रक्षाके लिये सुगंधित विषनाशक औषधें जैसे ऊद, केसर या अन्य इनके सदृश, दवाओंको तेल या तेल आदि में मिलाकर काममें लावें और जो भोजन इस रोगमें देसकते हैं वह यह हैं पथ्यमें पानीकी मछली और हरीरा, मैदाकी रोटीका गूदा, बादाम रोगन और खांड़ से बनाकर देवें और आधी भुनी हुई अंडे की जर्दी भी देवे पत्तियों का मांस खाना दूध मिश्री मिला हुआ भी गुणकारक है॥

विशेषदृष्टव्य—अगर दोष आंतों की ओर झुका हो तो इसका उ

क्योंकि दोषका आंतोंमें इकट्ठा होना विशेष करके प्रधान अंग अर्थात् जिगरमें इकट्ठा होना बुराहै और जब यह उपाय लाभ न करे अथवा किसी और कारण से इस उपायको न करसकें और दोष इकट्ठा होतो पकानेवाली औषधोंका लेप करें जिससे शीघ्र पकजाय और जब पककर फूटै और मूत्र या विष्टा वा वमन के साथ निकले तो ऐसी दवा देवें कि जिससे वह फोड़ा बिल्कुल जातारहै और यह वस्तु इस काममें आतीहैं पर्वत कन्दको गुलाबमें मिलाकर या सिकंजबीन या केवल जौका आटा शहदके साथ प्रयोग करना गुणकारकहै, और इसीतरह ककड़ी खीराके बीजोंका रस, खर्बूजेके बीजका रस, उन्नाबका शर्बत खशखशका शर्बत और नीलोफरका शर्बत इनमें मिलाकर देवें और इसीतरह जूफा, अजमोदकी जड़, सौंफ, अनीसून और मिश्रीका जुलाब बनाकर और उक्त औषधोंका लेप गर्मीके प्रमाणसे और ज्वरके होने न होनेका ध्यान देकर और रोगी की दशा देख कर प्रयोग करें और जब इन दवाओंके पीने पर दो घड़ी व्यतीत होजाय तो कोई ऐसी वस्तु जो पेटके घावोंको पुरादेवे इन्हीं औषधों के साथ मिलाकर पिलादेवें कि जो उसे कलेजे में पहुंचावे घावको भरनेवाली और मांस को जमानेवाली दवा कुन्दर और दम्मुल अखवैन हैं और नीचे लिखी हुई दवा बहुत लाभदायक है ।

मस्तगी, कासनी के बीज, गिले अरमनी, प्रत्येक १ मिस्काल, कुन्दर, दम्मुल अखवैन, गुलाब के फूल, वंशलोचन प्रत्येक २ मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बना लेवें इसकी मात्रा २ दिरमकी है और इसके साथकी औषधें अर्थात् भरलानेवाली दवा को कलेजेमें पहुंचाने वाली दवा ये हैं यथा कासनीके बीज, अजमोद के बीज आदि, सिकंजबीन, या शहद के पानी में मिलाकर देवें इसी तरह विवध और कलेजे की शक्ति के लिये चन्दन, बारतंगके पत्ते, मस्तगी, रेवन्दचीनी इनका लेप करें और शक्ति की रक्षाके लिये सुगंधित विशेषकारक औषधें जैसे ऊद, केसर या अन्य इनके सदृश, दवाओंको लेप या सेक आदि में मिलाकर काममें लावें और जो भोजन इस रोगमें देसकते हैं वह यह हैं पथरीले पानीकी मछली और हरीरा, भेड़की रानोंका गूदा, बादाम रोगन और खांड़ से बनाकर देवें और आधी गुनी हुई अंडे की जर्दी भी देवें पक्षियों का मांस ताजा दूध कन्द मिला हुआ भी गुणकारक है ॥

विशेषवृत्तान्त—अगर दोष आंतों की ओर झुका हो तो इसका उ

चिकित्सा—जोकुछ दोषयुक्त उष्णता लिये हुए मिजाज में वर्णन हुआ है अर्थात् फस्द खोलना, दस्त देना, मूत्र कारक औषधों का प्रयोग, तथा टंड पहुंचाना आदि सब ही इस रोग में किये जाते हैं और उचितहै कि शर्बत और पथ्यादिक आवश्यकता के अनुसार काम में लावें।

बारहवां प्रकरण।

कलेजे के धड़कने का वर्णन।

यह ऐसा रोग है कि इस में कलेजा तड़फता हुआ और फड़कनेकी तरह उछलता मालूम होता है और यह रोग भी बहुत कम होता है इसलिये बहुधा पुस्तकों में इन उक्त दोनों रोगों का वर्णन नहीं मिलताहै और इस रोगका एक यह कारण है कि कलेजे में गांठ पड़जाती है और उसका यह लक्षण है कि किसी समय आदमी को अपना कलेजा उछलता मालूम हो और ऐसा मालूम हो कि कोई उस में उंगली मारता है और यह दशा एक क्षण मात्र रह कर दूर होजाती है और जिस समय यह दशा दूर होने लगै तब फिरकी और भाफ सी चढ़ती हुई मालूम देने लगती है और कभी २ फड़कने में कलेजेमें भारापन का सा कष्ट मालूम होता है और ऐसाभी होता है कि ललाट पर पसीना आजाताहै

चिकित्सा—कलेजे की गांठ खोलने के लिये सिकञ्जबीन बिज़ूरी, पर्माग, केसर आदि जिसमें वे उचित औषधें मिली हों जो गांठ को खोल सकती हों देना चाहिये और दोषों को निकालने के लिये अफ़्तमून, अमरबेल, बाबूना, शाहतरा, सितावर, गाफिस, काम में लाना चाहिये और जो कुछ ग्रन्थि रोग में वर्णन करचुके हैं वह भी आवश्यकता के अनुसार काम में लावें।

तेरहवां प्रकरण।

कलेजे में पथरी पड़नेका वर्णन।

इसका वर्णन आगे लिखा जायगा-और इसके ये लक्षणहैं कि जिस समय भोजन आमाशयमें परिपक्व होजाय और रतूबत कैलूस (रस) कलेजेकी ओर जाने लगैगी वमन आने लगैगी और कलेजे में चरक तथा चटका रहा करेगी और वमन और कलेजेका सामान्य रीतिसे नहीं और यह इसलिये कहागया है कि थोड़े समय ऐसा होता है कि कलेजे के कुछ भागों में छलनेसे कंकड़ पत्थर मालूम होते हैं और बड़ी पथरी तथा रेत की जगह होतीहै और इसी तरह

चिकित्सा—जोकुछ दोषयुक्त उष्णता लिये हुए मिजाज में वर्णन हुआ है अर्थात् फस्द खोलना, दस्त देना, मूत्र कारक औषधों का प्रयोग, तथा सेंक पहुंचाना आदि सब ही इस रोग में किये जाते हैं और उचितहै कि शर्बत और पथ्यादिक आवश्यकता के अनुसार काम में लावै।

बारहवां प्रकरण।

कलेजे के धड़कने का वर्णन।

यह ऐसा रोग है कि इस में कलेजा तड़फता हुआ और फड़फनेकी तरह उछलता मालूम होता है और यह रोग भी बहुत कम होता है इसीलिये बहुधा पुस्तकों में इन उक्त दोनों रोगों का वर्णन नहीं मिलताहै और इस रोगका एक यह कारण है कि कलेजे में गांठ पड़जाती है और उसका यह लक्षण है कि किसी समय आदमी को अपना कलेजा उछलता मालूम हो और ऐसा मालूम हो कि कोई उस में उंगली मारता है और यह दशा एक क्षण मात्र रह कर दूर होजाती है और जिस समय यह दशा दूर होने लगै तब सिरकी और भाफ सी चढ़ती हुई मालूम देने लगती है और कभी २ फड़कने में कलेजेमें भारीपन का सा कष्ट मालूम होता है और ऐसाभी होता है कि ललाट पर पसीना आजाताहै

चिकित्सा—कलेजे की गांठ खोलने के लिये सिकञ्जबीन बिजूरी, मर्जाग, केसर आदि जिसमें वे उचित औषधें मिली हों जो गांठ को खोल सकती हों देना चाहिये और दोषों को निकालने के लिये अमलतास, अमरबेल, बाबूना, शाहतरा, सितावर, गाफिस, काम में लाना चाहिये और जो कुछ ग्रन्थि रोग में वर्णन करचुके हैं वह भी आवश्यकता के अनुसार काम में लावें।

तेरहवां प्रकरण।

कलेजे में पथरी पड़नेका वर्णन।

इसका वर्णन आगे लिखा जायगा—और इसके ये लक्षण हैं कि जिस समय भोजन आमाशयमें परिपक्व होजाय और स्वच्छ किलूस (रस) कलेजेकी ओर जाने लगैगी वमन आने लगैगी और कलेजे में भारीपन तथा पीड़ा रहा करैगी और वमन और कलेजेका सामान्य रीतिसे नहीं और यह इसलिये कहागया है कि किसी समय ऐसा होता है कि कलेजे के कुछ भागों में इनका प्रभाव मालूम होता है और कभी पथरी तथा रेत की जगह होतीहै और इसी तरह

चाहिये जैसे आधी पकी हुई मुर्गीके अंडेकी जर्दी, और मुर्गा और बकरी का बच्चा और चकोर का मांस और थोड़ार पथ्य कईवार के और मिसर देना चाहिये और कलेजे के अनुकूल ऐसी औषधें जो मूत्रकारक, विरेचक और कलेजे को साफ करने वाली हों और जो नर्म करनेवाली तथा पिघलाने वाली हों उनका प्रयोग करना चाहिये जैसे शर्बत बिजूरी, माउलउसूल, इयारिज फयकरा आदि।

पन्द्रवां प्रकरण।

कलेजे की ओरसे होने वाले दस्तों का वर्णन।

यह छः प्रकारके होतेहैं, १पीपकेसे रंगके, २ मांसके धोवनके से रंगके ३ रुधिरमिश्रित, ४ पित्तमिश्रित, ५ सदीदी अर्थात् घाव के पानी के सदृश और ६ ख्वासिरा

प्रथम प्रकार के दस्तोंका वर्णन।

इसका यह कारण है कि जब जिगर का व्रण फूटजाता है तब दस्तमें पीप आने लगता है और उसका वर्णन हो चुका है।

दूसरा प्रकार—इसमें रोगीको ऐसे दस्त आते हैं जैसे मांसका धोयाहुआ जल। और कलेजे की निर्बलता इसका कारण है इसका वर्णन भी ऊपर होचुका है। कोई२ हकीम कहते हैं कि ऐसे दस्त मांसभक्षणसे दूर होजाते हैं और इस बातका हकीमों ने अनुभव भी किया है।

तीसरा प्रकार—इसमें रुधिर मिले हुए दस्त आते हैं इसको कजूसन्ता-रिया कबदी कहते हैं और यह तीन कारण से पैदा होते हैं एकतो स्वाभाविक रुधिर का बन्द होजाना जैसे नकसीर, रजोधर्म आदि। इसके कारण कलेजेमें रुधिर भरजाता है और फटदेने लगता है फिर यह स्वाभाविक आंतोंकी ओर चलाजाय। दूसरा कारण यह है कि कोई बड़ा अंग जैसे हाथ या पांव कटजाय और जो रुधिर उसकी पुष्टाईके लिये आयाकरता है वह उलटा फिरकर कलेजेकी ओर आजाय और कलेजेमेंसे आंतोंकी ओर चलाजाय और इसतरह के दस्त थोड़े दिन पीछे कम होजाते हैं और यह भी जान लेना चाहिये कि बहुत समय तक इस अंगको दृढ़ बांधना भी काटडालने के समानही है क्योंकि रुधिर बहने से बन्द होजाता है और कूसन्तारिया पैदा करता है।

---

* कूसन्तारिया कबदी उन दस्तोंको कहते हैं जो कलेजेकी ओरसे आते हैं और कलेजेके दोष उसमेंमिलेहोतेहैं।कूसन्तारिया यूनानीभाषामेंआंतोंके घावको कहतेहैं

चाहिये जैसे आधी पकी हुई मुर्गीके अंडेकी जर्दी, और मुर्गी और बकरी का पचा और चकोर का मांस और थोड़ा२ पथ्य कईवार के और भिजर२ देना चाहिये और कलेजे के अनुकूल ऐसी औषधें जो मूत्रकारक, विरेचक और कलेजे को साफ करने वाली हों और जो नर्म करनेवाली तथा पिघलाने वाली हों उनका प्रयोग करना चाहिये जैसे शर्बत बिजूरी, माउलमुल, इयारिज फयकरा आदि।

पन्द्रवां प्रकरण।

कलेजे की ओरसे होने वाले दस्तों का वर्णन।

यह छः प्रकारके होतेहैं, १पीपकेसे रंगके, २ मांसके धोवनके से रंगके ३ रुधिरमिश्रित, ४ पित्तमिश्रित, ५ सदीदी अर्थात् घाव के पानी के सदृश और ६ ख्वासिरा

प्रथम प्रकार के दस्तोंका वर्णन।

इसका यह कारण है कि जब जिगर का व्रण फूटजाता है तब दस्तमें पीप आने लगता है और उसका वर्णन हो चुका है।

दूसरा प्रकार—इसमें रोगीको ऐसे दस्त आते हैं जैसे मांसका धोयाहुआ जल। और कलेजे की निर्बलता इसका कारण है इसका वर्णन भी ऊपर होचुका है। कोई२ हकीम कहते हैं कि ऐसे दस्त मांसभक्षणसे दूर होजाते हैं और इस बातका हकीमों ने अनुभव भी किया है।

तीसरा प्रकार—इसमें रुधिर मिले हुए दस्त आते हैं इसको *कुरूसता-रिया कबदी कहते हैं और यह तीन कारण से पैदा होते हैं एकतो स्वाभाविक रुधिर का बन्द होजाना जैसे नकसीर, रजोधर्म आदि। इसके कारण कलेजेमें रुधिर भरजाता है और फटदेने लगता है फिर यह स्वाभाविक आंतोंकी ओर चलाजाय। दूसरा कारण यह है कि कोई बड़ा अंग जैसे हाथ वा पांव कटजाय और जो रुधिर उसकी पुष्टाईके लिये आयाकरता है वह उलटा फिरकर कलेजेकी ओर आजाय और कलेजेमेंसे आंतोंकी ओर चलाजाय और इसतरह के दस्त थोड़े दिन पीछे कम होजाते हैं और यह भी जान लेना चाहिये कि बहुत समय तक टूटे अंगको दृढ़ बांधना भी काटडालने के समानही है क्योंकि रुधिर रुकने से बन्द होजाता है और कुरूसन्तारिया पैदा करता है।

---

*कुरूसन्तारिया कबदी उन दस्तोंको कहते हैं जो कलेजेकी ओरसे आते हैं और कलेजेके दोष उसमें मिलेहोते हैं। कुरूसन्तारिया मूनामी भाषामें आंतोंके घावको कहते हैं

निकाल दिया करता है परन्तु पाचकशक्ति और निस्सारकशक्ति की निर्बलता के कारण कलेजेमें इतनी शक्ति नहीं है कि उसको आंतों की ओर निकाल देवे । फिर कैलूस कलेजेमें लौट जाता है और कुछ पककर मासारीका रगोंमें जाकर आंतोंकी ओर आकर मांसके धोवन केसे दस्त पैदा करता है । तीसरा भेद यह है कि यातो कलेजे की सूजन फट जाय वा कलेजे की रगों में से कोई रग फटजाय वा कटजाय और किसी बाह्य वा आभ्यन्तर आघात के कारण दोष आंतोंकी ओर झुके तो पीवके से वा रुधिर कैसे दस्त आवेंगे ॥

चिकित्सा—उचितहै कि जब तक निर्बलता न मालूमहोने लगे तब तक रुधिरके जोशके दस्तोंको न रोके क्योंकि इनके बन्द करनेमें यह भयहै कि कहीं ऐसा नहो जो दोष किसी ऐसे दूसरे अवयव में न जापड़े जो आंतों से उत्तम हो जैसे दिल वा मस्तिष्क । इस लिये उत्तम यह है कि निर्बलता होने से पहले ही फस्त खोलदे जिससे तबियत हलकी होजाय और जब निर्बलता पैदा होजाती है और उस समय हकीम ने रोगीको पाया तो उसे उचित है कि दोष को किसी और जगह टाल देवे. निकाल देनेका प्रयत्न न करे यदि इस समय भी उचित समझे तो फस्द खोल देवे, परन्तु इतना रुधिर निकालना चाहिये कि जितना दस्तमें आता है उससे बहुत कम हो । जिससे बिना किसी प्रकार के हानि पहुंचानेके काम होवे, और दोषको फेर देनेकी यह विधि है कि दोनों हाथ और पांव और छातियां और अण्डकोष कसकर बांध देवे और यह भी जानलेवे कि जब रुधिरमें प्रबलताहो और वह आंतोंको छील डालेगा तो तभी समय उसके फेरदेने का प्रयत्न करे, यदि निर्बलता का डर हो और जब फेर चुके और दस्त होतेही रहे तो कब्ज करनेवाली वस्तु देवे, जैसे कहरवा की टिकिया. खुरफे के बीजोंका रस, बारतग के पानी में मिलाकर देवे अथवा इस के सदृश अन्य औषध देवे भोजन का कमकरना इस रोगमें बहुत आवश्यकीय है विशेष करके आदि में तो कम करना ही चाहिये जब कि इसमें कुछ खरखरा भी अवहो गया जो दस्त वा कारण से होते हों तो प्रथम घाव और उसके कष्टको दूर करने का प्रयत्न करे । फिर कब्ज करनेवाली टिकिया और घावको पुरानेवाली टिकिया देवे ॥

कब्ज करने वालीटिकियाकी विधि । पत्रलोधन, गेहूंका निशास्ता, दम्मुल अरवैन, गिले अर्मनी, रेवन्दचीनी, गुलनार, बढ़ी दाहीकारम प्रत्येक दो

निकाल दिया करता है परन्तु पाचकशक्ति और निस्सारकशक्ति की निर्बलता के कारण कलेजेमें इतनी शक्ति नहीं है कि उसको आंतों की ओर निकाल देवे । फिर कैलूस कलेजेमें लौट जाता है और कुछ पककर मासारीका रगोंमें जाकर आंतोंकी ओर आकर मांसके धोवन केसे दस्त पैदा करता है । तीसरा भेद यह है कि यातो कलेजे की सूजन फट जाय वा कलेजे की रगों में से कोई रग फटजाय वा फटजाय और किसी बाह्य वा आभ्यन्तर आघात के कारण दोष आंतोंकी ओर झुके तो पीवके से वा रुधिर कैसे दस्त आवेंगे ॥

चिकित्सा—उचितहै कि जब तक निर्बलता न मालूम होने लगे तब तक रुधिरके जोशके दस्तोंको न रोके क्योंकि इनके बन्द करनेमें यह भयहै कि कहीं ऐसा नहो जो दोष किसी ऐसे दूसरे अवयव में न जापड़े जो आंतों से उत्तम हो जैसे दिल वा मस्तिष्क । इस लिये उत्तम यह है कि निर्बलता होने से पहले ही फस्त खोलदे जिससे तबियत हलकी होजाय और जब निर्बलता पैदा होजाती है और उस समय हकीम ने रोगीको पाया तो उसे उचित है कि दोष को किसी और जगह टाल देवे. निकाल देनेका प्रयत्न न करे यदि इस समय भी उचित समझे तो फस्द खोल देवे, परन्तु इतना रुधिर निकालना चाहिये कि जितना दस्तमें आता है उससे बहुत कम हो । जिससे बिना किसी प्रकार के हानि पहुंचानेके लाभ होवे, और दोषको फेर देनेकी यह विधि है कि दोनों हाथ और पांव और छातियां और अण्डकोष कसकर बांध देवे और यह भी जानलेवे कि जब रुधिरमें प्रबलताहो और वह आंतोंको छील डालेगा तो उसी समय उसके फेरदेने का प्रयत्न करे, यदि निर्बलता का डर हो और जब फेर चुके और दस्त होतेही रहें तो कब्ज करनेवाली वस्तु देवे, जैसे कहरवा की टिकिया. खुरफे के बीजोंका रस, बारतंग के पानी में मिलाकर देवे अथवा इस के सदृश अन्य औषध देवे भोजन का कमकरना इस रोगमें बहुत आवश्यकीय है विशेष करके आदि में तो कम करना ही चाहिये जब कि इसमें कुछ खराबी भी अवश्य गया जो दस्त बारके कारण से होने हो तो प्रथम घाव और उसके कष्टको दूर करने का प्रयत्न करे । फिर कब्ज करनेवाली टिकिया और घावको सुखानेवाली टिकिया देवे ॥

कब्ज करनेवालीटिकियाकी विधि । गुलरोगन, गेरुवा निशास्ता, दम्मुल अखवैन, गिले अर्मनी, कैबन्दर्यानी, गुलनार, बड़ी हाईकारम अनमेंसे

का बदल देना आवश्यकीय है जिससे दोषोंके जल जाने पर भी कलेजा और दिल न जले और उस जगह उसैलम की फस्द दाहिनी ओर खोलना बहुत गुणकारक है और इन दस्तों को धीरे २ बन्द करना चाहिये ॥

छटा भेद ।

खासरी दस्तों का वर्णन ।

ये दस्त तलछट अर्थात् गाद जैसे होते हैं । खासिर गाढ़ी वस्तु और ऊपरी भाग को कहते हैं जो रंगमें और द्रवता में गाद के सदृश हो । इसके भी तीन कारण हैं एक तो यह है कि कलेजे का फोड़ा पकनेसे पहिले फूटजाय क्योंकि अगर पक कर फूटे तो जो कुछ इसमें निकलता हो वह न बहुत गाढ़ा होगा न बहुत पतला होगा—दूसरा भेद यह है कि कलेजेमें कोई गांठ हो और घुलकर दस्तोंमें निकले और यह बात प्रत्यक्ष है कि कलेजेकी गांठ बहुत दिन रहनेके कारण वहां की गर्मी सी तलछट सी हो जाती है । तीसरा यह है कि बहुत अधिकता के साथ कैलूस में जलन पड़े जैसे प्यासकी अधिकतासे प्रगट होताहै और यह बातभी प्रत्यक्ष है कि जलन की अधिकता से स्वच्छ कैलूसमें जोकुछ अच्छा भाग होताहै वह नष्ट होजाता है और जो दुर्गन्धियुक्त कीचड़ के समान गाढ़ा है जैसे गाद हो वही शेष रहजाता है और कारणका प्रथम होना उसका लक्षण है और आंतों में ऐंठा भी न होगा ॥

चिकित्सा—जैसा कारण हो उसीके अनुसार उसका उपाय करे और बन्द करनेमें जल्दी न करे जबतक कि अधिक निर्बलताका भय नहो और जो कुछ पित्त के दस्तों में कहागया है उसीके अनुसार इसकी चिकित्सा होतीहै । हकीम लोग कहते हैं कि इस पोदीने की माजून लाभदायक है और थोड़ी सी ऐसी शराब जिसका तृतीयांश जलगया हो पचने के पीछे लाभदायक है और खुरदरे कपड़े से देहका मर्दन करना भी लाभदायक है और कलेजेका पचाव भी गुणदायक है ॥

विशेषद्रष्टव्य—कलेजे के दस्त जो पित्त, सर्द पानी तथा गाद से आते हैं ये बहुत दिन पीछे आतोंको छील डालतेहैं और इनका लक्षण येहै कि कभी गाढ़ दोष रुधिरके साथ मिलकर आवें या कभी चिकनाई मिले आवें और कभी रोगीको दस्तोंके पीछे आराम हो और कभी मरोड़की अधिकतासे आंतोंके घावपर दस्तोंके लगनेसे आंतोंमें पीर वेदना होती है जिससे मूर्छाभी आजाती

का बदल देना आवश्यकीय है जिससे दोषोंके जल जाने पर भी कलेजा और दिल न जले और उस जगह उसैलम की फस्द दाहिनी ओर खोलना बहुत गुणकारक है और इन दस्तों को धीरे २ बन्द करना चाहिये ॥

छटा भेद ।

खासरी दस्तों का वर्णन ।

ये दस्त तलछट अर्थात् गाद जैसे होते हैं । खासिर गाढ़ी वस्तु और ऊपरी भाग को कहते हैं जो रगमें और द्रवता में गाद के सदृश हो । इसके भी तीन कारण हैं एक तो यह है कि कलेजे का फोड़ा पकनेसे पहिले फूटजाय क्योंकि अगर पक कर फूटे तो जो कुछ इसमें निकलता हो वह न बहुत गाढ़ा होगा न बहुत पतला होगा–दूसरा भेद यह है कि कलेजेमें कोई गांठ हो और खुलकर दस्तोंमें निकले और यह बात प्रत्यक्ष है कि कलेजेकी गांठ बहुत दिन रहनेके कारण वहां की गर्मी से तलछट सी हो जाती है । तीसरा यह है कि बहुत अधिकता के साथ कैलूस में जलन पड़े जैसे प्यासकी अधिकतासे प्रगट होताहै और यह बातभी प्रत्यक्ष है कि जलन की अधिकता से स्वच्छ कैलूसमें जोकुछ अच्छा भाग होताहै वह नष्ट होजाता है और जो दुर्गन्धियुक्त कीचड़ के समान गाढ़ा है जैसे गाद हो वही शेष रहजाता है और कारणका प्रथम होना उसका लक्षण है और आंतों में ऐंठा भी न होगा ॥

चिकित्सा–जैसा कारण हो उसीके अनुसार उसका उपाय करे और बन्द करनेमें जल्दी न करे जबतक कि अधिक निर्बलताका भय नहो और जो कुछ पित्त के दस्तों में कहागया है उसीके अनुसार इसकी चिकित्सा होतीहै । हकीम लोग कहते हैं कि इस पोदीने की माजून लाभदायक है और थोड़ी सी ऐसी शराब जिसका तृतीयांश जलगया हो पचने के पीछे लाभदायक है और खुरदुरे कपड़े से देहका मर्दन करना भी लाभदायक है और कलेजेका पचाव भी गुणदायक है ॥

विशेषद्रष्टव्य—कलेजे के दस्त जो पित्त, सर्द पानी तथा गाद से आते हैं वे बहुत दिन पीछे आंतोंको छील डालतेहैं और इनका लक्षण यहहै कि कभी शुद्ध दोष रुधिरके साथ मिलकर आवें वा कभी बिनामिले आवें और कभी रोगीको दस्तोंके पीछे आराम हो और कभी चरकी अधिकताके आंतोंके खावसे दस्तोंके आतेसे आंतोंमें पीर वेदना होती है जिससे मूर्छाभी आजाती

हाजत के समय और मरोड़ावट होता है । तीसरे यह कि कलेजे के दस्तों में देह कृश होता चलाजाता है और दिन पर दिन निर्बलता बढ़ती जाती है और इमाई इसके विरुद्ध है क्योंकि जब उसमें दस्त पुराने पड़ जांय और बहुत आने लगें तब उस समय देह निर्बल होजाती हैं । चौथे यह कि कलेजे के दस्त विशेष कर के जब रुधिर के हों तब कलेजे की गरमी और तरी के कारण दुर्गन्ध युक्त होतेहैं । परन्तु इमाई दस्त इसके विरुद्ध हैं क्योंकि उनमें दुर्गन्ध नहीं होती क्यों कि आंतों में सर्दी और खुश्की होती है परन्तु जब आंतों में घाव पैदा हो । पांचवे यह कि कलेजे के दस्तों में रोगके आदि से अन्त तक केवल रुधिर आता है अथवा मांसके धोवन कासा जल निकलता है और कभी२ प्रथम मांस केसे धोवन का जल आवे और फिर रुधिर कासा आने लगे अथवा किसी तरह से हो परन्तु उसमें आंतों की खराब तरी नहीं होती है परन्तु जब कि पुराने होजांय और बहुत दिन के पीछे आंतों का ऊपरी भाग भी छिलजाय तब कलेजे की रुधिर आंतों की खराबी रतूबत के साथ मिलकर आती है और यह बात म रोड़ वाले रुधिर के दस्तों के विरुद्ध है क्योंकि उसमें पहिले पित्त आता है और थोड़े दिन पीछे खराब रतूबत और छिलके से और फिर रुधिर और मिट्टी क से इकट्ठे फिर पीब और मैल आने लगते हैं और कभी इमाई में भी आदि में केवल रुधिर इस कारण से आता है कि रुधिर के जोश की अधिकता से आंतों की रगों का मुंह खुल जाता है परन्तु यह रुधिर बहुत अधिक नहीं आता है पर न्तु थोड़ा२ आया करता है इस लिये मूर्ख को सन्देह होता है कि यह रुधिर बवासीर का है यद्यपि वह उसका नहीं होता सारांश यह है कि कलेजे और आंतों के दस्तों में बहुत बड़ा प्रत्यक्ष अन्तर है ।

सोलहवा प्रकरण

सूयउल किनिया का वर्णन ।

यह रोग जलन्धर का पूर्वरूप है और जिगर [illegible] के कारण रोग होता है और कभी कभी आमाशय की नि[illegible] जगह [illegible] भी होता है और इस रोग का यह लक्षण है कि [illegible] और [illegible] चेहरे आंख के पलके [illegible] हैं और [illegible] में [illegible] हाथ लिये हुए पीलाई [illegible] कभी कभी [illegible] और इसी तरह फेफड़े [illegible] भा [illegible]

हाजत के समय और नेरुकावट होता है। तीसरे यह कि कलेजे के दस्तों में देह कृश होता चलाजाता है और दिन पर दिन निर्बलता बढती जाती है और इमाई इसके विरुद्ध है क्योंकि जब उसमें दस्त पुराने पड़ जांय और बहुत आने लगें तब उस समय देह निर्बल होजातीहै। चौथे यह कि कलेजे की दस्त विशेष कर के जब रुधिर के हों तब कलेजे की गरमी और तरी के कारण दुर्गन्ध युक्त होतेहैं। परन्तु इमाई दस्त इसके विरुद्ध हैं क्योंकि उनमें दुर्गन्ध नहीं होती क्यों कि आंतों में सर्दी और खुश्की होती है परन्तु जब आंतों में घटाव पैदा हो। पांचवें यह कि कलेजे के दस्तों में रोगके आदि से अन्त तक केवल रुधिर आता है अथवा मांसके धोवन कामा जल निकलता है और कभी२ प्रथम मांस केसे धावन का जल आवे और फिर रुधिर कासा आने लगे अथवा किसी तरह से हो परन्तु उसमें आंतों की खराब तरी नहीं होती है परन्तु जब कि पुराने होजांय और बहुत दिन के पीछे आंतों का ऊपरी भाग भी छिलजाय तब कलेजे की रुधिर आंतों की खराबी रतूबत के साथ मिलकर आती है और यह बात म रोड़ वाले रुधिर के दस्तों के विरुद्ध है क्योंकि उसमें पहिले पित्त आता है और थोड़े दिन पीछे खराब रतूबत और छिलके से और फिर रुधिर और मिट्टी के से टुकड़े फिर पीव और मैल आने लगते हैं और कभी इमाई में भी आदि में केवल रुधिर इस कारण से आता है कि रुधिर के जोश की अधिकता से आंतों की रगों का मुंह खुल जाता है परन्तु यह रुधिर बहुत अधिक नहीं आता है पर न्तु थोड़ा२ आया करता है इस लिये मूर्ख को सन्देह होता है कि यह रुधिर बवासीर का है यद्यपि यह उसका नहीं होता सारांश यह है कि कलेजे और आंतों के दस्तों में बहुत बड़ा प्रत्यक्ष अन्तर है।

सोलहवा प्रकरण

सूयउल कनिया का वर्णन।

यह रोग जलन्धर का पूर्वरूप है और जिगर [illegible] के कारण रोग होता है और कभी कभी आमाशय की नि[illegible] कारण [illegible] भी होता है और इस रोग का यह लक्षण है कि [illegible] और [illegible] गदले आने के पहले [illegible] है और [illegible] में [illegible] दर्द लिये हुए पीलापन [illegible] कभी कभी [illegible] और इसी तरह केवल [illegible] की भा [illegible]

सिक धर्म्मके बन्द होनेपर उसके खोलनेके लिये मूत्रकारक औषध देवे जबतक वर्ने फस्द न खोले। और इसी तरह अगर बवासीरका रुधिर मुख्य केपोंके कर ने से जारी होजाय तो बहुत अच्छा होताहै। इस सबके करनेका कारण यहहै कि फस्दमें बहुतही सावधानीकी आवश्यकताहै क्योंकि इस बीमारी में बिना आवश्यकता रुधिरका निकालदेना उसके हेतुको पुष्ट करताहै और रोगको भी दुगुना करदेता है।

अवश्य ज्ञातव्य—इस रोग में मलके निकालने का उपाय बार बार करते हैं और जुलाब में सुगंधित दवा जैसे ऊद मस्तगी और सुम्बुल ये मिलानी चाहिये जिससे आमाशय में बल बढ़े। क्योंकि इस रोग में आमाशयको बलिष्ठ रखना बहुत ही आवश्यकीय है अगर मन में भी निर्बलता हो और यह मालूम होने लगे कि घूघल कनिया जड़ पकड़ गया है और इससे जलंधर होना चाहता है तो अर्बी ऊटनीका दूध बकरीके मूत्रमें या एक दांग सिकनबीन के साथ देवे। और हकीमलोग इसकी मात्रा दो दांग और और आधे दिरम तक भी लिखतेहैं। और फलोंमें अनार और नाशपाती की शराब देना उचित है तथा तज, सम्बुल दालचीनी, बूरा (सुहागा) जरावन्द गोल इन सबको गुलाब जलमें पीसकर कलेजे पर लेपकरना उत्तम है। तथा मस्तगी का तेल, सोसनका तेल, सोयका तेल इनका आमाशय पर मर्दन करना गुणकारक है।

सत्रहवां प्रकरण।

जलंधर का वर्णन।

यह रोग मलसे उत्पन्न होता है इसका मल ऊपरी और ठंडा होताहै या कि बाहर और भीतर के जोड़ोंके कोनोंमें आकर जोड़ोंमें मन्थर डालदेताहै और सूजन भी उत्पन्न करता है। जलंधर रोग तीन प्रकार का होता है यथा–१ जह्मी, २ जकी और ३ तिबली। इनमें से प्रत्येक का वर्णन आगे करेंगे।

दृष्टव्य——जिस रोग में दोष बाहरके जोड़ों में होता है वह जह्मी है। और जिसमें दोष भीतर के जोड़ों में होता है वह जकी और तिबली है।

लहमीकावर्णन—इस रोगमें मल मांसके भीतर के छिद्रोंमें जाकर रुकता है इसीसे इसरोगको लह्मी कहते हैं और इसका लक्षण यहहै कि सबदेह दीली और गुलगुलाय तथा रूप भी आब और उंगलीसे दाबने पर दबजाय और एक लक्षणयह दबाने का चिन्ह बैठारी नीचे रहा आता है। फिर धीरे

सिक धर्म्मके बन्द होनेपर उसके खोलनेके लिये मूत्रकारक औषध देवै अथवा बने फस्द न खोले। और इसी तरह अगर बवासीरका रुधिर मुख्य केपोंके द्वारा ने से जारी होजाय तो बहुत अच्छा होताहै। इस सबके कहनेका कारण यहहै कि फस्दमें बहुतही सावधानीकी आवश्यकताहै क्योंकि इस बीमारी में बिना आवश्यकता रुधिरका निकालदेना उसके हेतुको पुष्ट करताहै और रोगको भी दुगुना करदेता है।

अवश्य ज्ञातव्य—इस रोग में मलके निकालने का उपाय बार बार करते हैं और जुलाब में सुगंधित दवा जैसे ऊद मस्तगी और सुम्बुल ये मिलानी चाहिये जिससे आमाशय में बल बढ़े। क्योंकि इस रोग में आमाशयको बलिष्ठ रखना बहुत ही आवश्यकीय है अगर मन में भी निर्बलता हो और यह मालूम होने लगे कि सूदल कानिया जड़ पकड़ गया है और इससे जलपर होना चाहता है तो अर्बी ऊटनीका दूध बकरीके मूत्रमें या एक दांग सिकन्जबीन के साथ देवै। और हकीमलोग इसकी मात्रा दो दांग और और आधे दिरम तकभी लिखतेहैं। और फलोंमें अनार और नाशपाती की शराब देना उचित है तथा तज, सम्बुक दालचीनी, बूरा (सुहागा) जरावन्द गोल इन सबको गुलाब जलमें पीसकर कलेजे पर लेपकरना उत्तम है। तथा मस्तगी का तेल, सोसनका तेल, सौंफका तेल इनका आमाशय पर मर्दन करना गुणकारक है।

सत्रहवां प्रकरण।

जलंधर का वर्णन।

यह रोग मलसे उत्पन्न होता है इसका मल ऊपरी और ठंढा होताहै या कि बाहर और भीतर के ओटोंके कोनोंमें आकर जोड़ोंमें अन्तर डालदेताहै और सूजन भी उत्पन्न करता है। जलंधर रोग तीन प्रकार का होता है यथा—१ जहमी, २ जकी और ३ तिबली। इनमें से प्रत्येक का वर्णन आगे करेंगे।

दृष्टव्य——जिस रोग में दोष बाहरके जोड़ों में होता है वह लहमी है। और जिसमें दोष भीतर के जोड़ों में होता है वह जकी और तिबली है।

लहमीकावर्णन—इस रोगमें मल मांसके भीतर के छिद्रोंमें जाकर रुकता है इसीसे इसरोगको लहमी कहते हैं और इसका कारण यहहै कि सबरोग दैर्घ्य और गुलरोगाय तथा कृष्ण भी जाय और उगमींसे हारने पर दबाव और एक सामर्थ्यक दबाने का चिन्ह बैठाती नींव रखा आया है। फिर धीरे

तथा या अस्तव्यस्त हो जाना अथवा पेट और पेनिस, या कमर का दर्द या पद्योंमें उपद्रव जलधर रोग को उत्पन्न करदेते इसलिये इस अध्याय के अन्त में इनका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जायगा।

उक्त रोगकी चिकित्सा--प्रथमतो रोग के हेतुओं को दूर करना उचित है पीछे जो प्रधान उपद्रव अर्थात जिगरकी सर्दी और निर्बलता का उपाय उन दवाओं से करै जिनका वर्णन जिगर की दूषित प्रकृतिके शीतग्रस्त हो जाने में वर्णन किया गया है। जैसे माजून, लेप, उष्ण भोजन आदि। जब जिगरकी प्रकृति ठीक हो जाय और उसमें गर्मी आजाय तब सूखी दवाओं का लेप करै उससे रतूबत दूरहो जाय। इस रोगमें पसीना लानेवाली या रेतमें दबाने वाली तदबीर करनी चाहिये। जिस रोगीके जलधर के साथमें गर्मी हो तो जो कुछ दूषित प्रकृतिकी गर्मी के विषय में जो उपाय लिखे हैं उनको काम में लावें जिससे गर्मी रुक जावे पीछे जलधर की चिकित्सा करना प्रारम्भ करै। दस्तों का लाना, मूत्र लाना, पसीना देना, तथा रतूबतों का सुखाना ये उसके प्रधान उपाय हैं परन्तु उचित यह है कि जो बहुत गर्म हो उनसे बचना चाहिये और यद्यपि इन रोगों का वर्णन पृथक् पृथक् रोगों के साथमें वर्णन किया गया है तथापि सुभीते के लिये इसप्रकार भी वर्णन करते हैं।

यदि आमाशयकी निर्बलता और उसकी ठंढ इस रोगका हेतु हो तो प्रथम वमन करावै और फिर गुलकन्द और अनीसून खानेको देवै और दस्तों के लिये अफ्तमोनीकी गोलियां देवै और प्रकृति को ठीक करने के लिये माजून दिरदम देवै और इसी तरह अन्य हेतुओं को भी रोक सकते हैं और उन का वर्णन प्रत्येक के साथमें किया गया है तथा इस अध्याय के अन्तमें भी जलधरके तीनों प्रकार का वर्णन करने के पीछे इनका भी वर्णन होगा और उसके उपद्रवों का यही उपाय है जो कलेजे की शीतल दुष्ट प्रकृति में वर्णन हुआ है। दस्तों में से बहुत लाभदायक रेवन्द चीनी की गोलियां हैं और यह जिगरकी वार अनुभव कीगई हैं

रेवन्द चीनी की गोली बनाने की विधि।

रेवन्द आधा दिरम, गिलोय मर्दन की दिरम, मिरायन्द गोल दो दांग, गुलाब आधा दिरम, अफ्तीमून एक दांग, इन सबको पीसकर दो गोलियां बनावै. ..इस मात्राको खाकर अफ्सन्तीन और अनीसूनका काथ पीना बहुत गुणदायक

बना या अस्तव्यस्त हो जाना अथवा पेट और पेडू, या कमर का दर्द या पद्रोग उपद्रव जलधर रोग को उत्पन्न करदेते हैं इसलिये इस अध्याय के अन्त में इनका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जायगा ।

उक्त रोगकी चिकित्सा--प्रथमतो रोग के हेतुओं को दूर करना उचित है पीछे जो प्रधान उपद्रव अर्थात् जिगरकी सर्दी और निर्बलता का उपाय उन दवाओं से करैं जिनका वर्णन जिगर की शीतल प्रकृति के शीतग्रस्त हो जाने में वर्णन किया गया है । जैसे माजून, लेप, उष्ण भोजन आदि । जब जिगरकी प्रकृति ठीक हो जाय और उसमें गर्मी आजाय तब ऐसी दवाओं का लेप करै जिससे रतूबत दूर हो जाय । इस रोगमें पसीना लानेवाली या रेतमें दबाने वाली तदबीर करनी चाहिये । जिस रोगीके जलधर के साथमें गर्मी हो तो जो कुछ दूषित प्रकृतिकी गर्मी के विषय में जो उपाय लिखे हैं उनको काम में लावें जिससे गर्मी रुक जावे पीछे जलधर की चिकित्सा करना प्रारम्भ करैं । दस्तों का लाना, मूत्र लाना, पसीना देना, तथा रतूबतों का सुखाना ये उसके प्रधान उपाय हैं परन्तु उचित यह है कि जो बहुत गर्म हो उनसे बचना चाहिये और यद्यपि इन रोगों का वर्णन पृथक् पृथक् रोगों के साथमें वर्णन किया गया है तथापि सुभीते के लिये इसप्रकार भी वर्णन करते हैं ।

यदि आमाशयकी निर्बलता और उसकी ठंढक इस रोगका हेतु हो तो प्रथम वमन करावै और फिर गुलकन्द और अनीसून खानेको देवें और दस्तों के लिये अलनसारीहूनकी गोलियां देवें और प्रकृति को ठीक करने के लिये माजून जिरवण देवें और इसी तरह अन्य हेतुओं को भी रोक सकते हैं और इन का वर्णन प्रत्येक के साथमें किया गया है तथा इस अध्याय के अन्तमें भी जलधरके तीनों प्रकार का वर्णन करने के पीछे इनका भी वर्णन होगा और उसके उपद्रवों का यही उपाय है जो पसीने की शीतल दुष्ट प्रकृति में वर्णन हुआ है । दस्तों में से बहुत लाभदायक रेवन्द चीनी की गोलियां हैं और यह जिगरकी बीमारी पर अनुभव कीगई हैं

रेवन्द चीनी की गोली बनाने की विधि ।

रेवन्द आधा दिरम, गिलोय सत्त्व आधा दिरम, गिलयन्द गोन्द दो दाग, गुलाब आधा दिरम, अनीसून एक दांग, इन सबको पीसकर दो गोलियां करावै. इन गोलियों से आहार, अग्निपाचन और अनीसूनका काम पीला बहुत गुणदायक

चाहिये तथा इस बातका जानना भी आवश्यकीय है कि सुर्खी के लिये हम्माम में जावे जिससे पसीना आवे परन्तु पानी को काम में न लावे। जब पसीना आने लगें तब उनको कपड़ेसे पोंछता रहे जिससे पसीना खूब आवाहै और इसी तरह हम्माम में गर्म फ़र्श पर लेटना और सूरज की ओर पीठ करके बैठना, और गन्धक आदि के झरनों के पानीमें बैठना और नदीके पानी से देह को धोना तथा गर्म तनूर (चूल्हा) में बैठना लाभदायक है।

नमक को पानी में डालकर कई दिन तक धूप में रखने से नदी के पानी का काम देता है। विशेष द्रष्टव्य—सूयउल कानियां में जिन जिन बातों का वर्णन किया है वे सब जगह गुणकारक हैं और ज़हमी में तिर्याकफारूक शहद के पानी में मिलाकर खाना सबसे उत्तम है और अगर तिर्याक फारूक न मिले तो तिर्याक जर्बा देवे इसकी मात्रा एक मिस्काल है इससे कम या अधिक न हो। और सर्द पानी के पीने से बचना अवश्य है और यदि संतोष न हासके तो छोटे मुख के पात्र में पानी भरकर चूसने की तरह पानी पीवे और यह भी उचित है कि उस पानी को गर्म करके ठंढा करलियाजाय और जानलेना चाहिये कि हकीमों की समझ में ज़हमी जलन्धर और मेदों से अधिक दुस्साध्य नहीं है और यही बात ठीक और सच है।

(विशेष द्रष्टव्य) दस्तूर उल इलाज में इस प्रथम प्रकार के इलाज की यह विधि लिखी है कि पहिले देह से भोजन के व्यर्थ अंशों को दूर करे और जिगर की प्रकृति की दुष्टता को मध्यावस्था में लावे और इसकी यह विधि है कि खाने को भोजन न देवे और संतोष के अर्थ पर ही संतोष करना चाहिये। और जहां तक बन सके पानी पीना छोड़ देवे और प्यास को रोके और इसमें शारीरिक परिश्रम इतना करना चाहिये जिससे स्वाभाविक गर्मी बढ़जाय जलोदर उत्कर्ष के साथ हो तो देह में नमन, रंग में पीलापन, देह में दुबला पन, भूख का दूर होजाना वमन का होना, छाती का उभरना और मूत्रमें अधिक मैला होना, इसके लक्षण हैं तथा यह याद रखलेना चाहिये कि प्रायः भाषामें इस्तस्का शब्दका प्रयोग करते हैं गर्मीन यहहै कि स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता इस रोग का कारण है। तथा गर्मीकी निर्बलता का कारण यह है कि जब स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता और गर्मी की अधिकता होजाती है तब यह रोग होता है। क्योंकि यह भोजन के अवयवों पर अपना प्रभाव जमा देती है और भोजन को पचने नहीं देती है और

चाहिये तथा इस बातका जानना भी आवश्यकीय है कि सुस्ती के लिये हम्माम में जावे जिससे पसीना आवे परन्तु पानी को काम में न लावे। जब पसीना आने लगें तब उनको कपड़ेसे पोंछता रहे जिससे पसीना खूब आवाहै और इसी तरह हम्माम में गर्म फ़र्श पर लेटना और सूरज की ओर पीठ करके बैठना, और गन्धक आदि के झरनों के पानीमें बैठना और नदीके पानी से देह को धोना तथा गर्म तनूर (चूल्हा) में बैठना लाभदायक है।

नमक को पानी में डालकर कई दिन तक धूप में रखने से नदी के पानी का काम देता है। विशेष द्रष्टव्य–मूयज्जल कानियां में जिन जिन बातों का वर्णन किया है वे सब जगह गुणकारक हैं और लहमी में तिर्याकफारूक शहद के पानी में मिलाकर खाना सबसे उत्तम है और अगर तिर्याक फारूक न मिले तो तिर्याक जर्वा देवे इसकी मात्रा एक मिस्काल है इससे कम या अधिक न हो। और सर्द पानी के पीने से बचना अवश्य है और यदि सं- तोष न हासके तो छोटे मुख के पात्र में पानी भरकर चूसने की तरह पानी पीवे और यह भी उचित है कि उस पानी को गर्म करके ठंढा करलियाजाय और जानलेना चाहिये कि हकीमों की समझ में लहमी जलन्धर और भेदों से अधिक दुस्साध्य नहीं है और यही बात ठीक और सच है।

(विशेष द्रष्टव्य) दस्तूर उल इलाज में इस प्रथम प्रकार के इलाज की यह विधि लिखी है कि पहिले देह से भोजन के व्यर्थ अंशों का दूर करे और जिगर की प्रकृति की दुष्टता को मध्यावस्था में लावे और इसकी यह विधि है कि खाने को भोजन न देवे और सन्तोष के अर्थ पर ही सन्तोष करना चाहिये। और जहां तक बन सके पानी पीना छोड़ देवे और प्यास को रोके और इसमें शारीरिक परिश्रम इतना करना चाहिये जिससे स्वाभाविक गर्मी बढ़जाय जलोदर जलन्धर के साथ हो तो देह में नरमन, रंग में पीलापन, देह में ढीला पन, भूख का दूर होजाना वमन का बोझा होना, छाती का उभरना और मूत्रमें अधिक गेरी होना, इसके स्पर्श? तथा यह बात जानलेना चाहिये कि सर्व भाषामें इस्तस्का शब्दका [illegible] करते हैं [illegible] कि स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता इस रोग का कारण है। तथा गर्मी की निर्बलता का कारण यह है कि जब स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता और सर्दी की अधिकता होजाती है तब यह रोग होता है। क्योंकि यह भोजन के अवयवों पर अपना प्रभाव जमा देती है और भोजन को पचने नहीं देती है और

चाहिये तथा इस बातका जानना भी आवश्यकीय है कि खुश्की के लिये ह
म्माम में जावें जिससे पसीना आवे परन्तु पानी को काम में न लावें। जब
पसीना आने लगे तब उनको कपड़ेसे पोंछता रहे जिससे पसीना खूब आवाहै
और इसी तरह हम्माम में गर्म फर्श पर लेटना और सूरजकी ओर पीठ क
रके बैठना, और गन्धक आदि के झरनों के पानीमें बैठना और नदीके पानी
से देह को धोना तथा गर्म तनूर (चूल्हा) में बैठना लाभदायक है।

नमक को पानी में डालकर कई दिन तक धूप में रखने से नदी के पानी
का काम देता है। विशेष द्रष्टव्य—मूजहल कानियों में जिन जिन बातों का
वर्णन किया है वे सब जगह गुणकारक हैं और लहमी में तिर्याकफारूक
शहद के पानी में मिलाकर खाना सबसे उत्तम है और अगर तिर्याक फारूक
न मिलें तो तिर्याक जवों देवें इसकी मात्रा एक मिस्काल है इससे कम या
अधिक न हो। और सर्द पानी के पीने से बचना अवश्य है और यदि स
तोष न होसके तो छोटे मुख के पात्र में पानी भरकर चूसने की तरह पानी
पीवे और यह भी उचित है कि उस पानी को गर्म करके ठंडा करलियाजाय
और जानलेना चाहिये कि हकीमों की समझ में लहमी जलधर और ढेबों से
अधिक दुस्साध्य नहीं है और यही बात ठीक और सच है।

(विशेष द्रष्टव्य) दस्तूर उल इलाज में इस प्रथम प्रकार के इलाज की
यह विधि लिखी है कि पहिले देह से भोजन के व्यर्थ अंशों को दूर करे
और जिगर की प्रकृति की दुष्टता को मध्यावस्था में लावे और इसकी यह
विधि है कि खाने को भोजन न देवें और मकोय के अर्क पर ही सन्तोष क-
रना चाहिये। और जहां तक बन सके पानी पीना छोड़ देवे और प्यास
को रोके और इसमें शारीरिक परिश्रम इतना करना चाहिये जिससे
स्वाभाविक गर्मी फैलजाय जलोदर जलांश के साथ हो तो देह में गमन,
रंग में पीलापन, देह में दुबला पन, भूख का दूर होजाना वमन का थोड़ा
होना, छाती का उभरना और मूत्रमें अधिक गर्मी होना, इसके लक्षण हैं तथा यह बात
जानलेना चाहिये कि अरबी भाषामें इस्तस्का पानीके मांगनेको कहतेहैं तथापि पहिले
कि स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता इस रोग का कारण है। तथा गर्मीकी निर्ब
लता का कारण यह है कि जब स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता और सर्दी की
अधिकता होजाती है तब यह रोग होता है। क्योंकि यह भोजन के जलांशों
पर अपना प्रभाव जमा देती है और भोजन को पचन नहीं होने देती है और

चाहिये तथा इस बातका जानना भी आवश्यकीय है कि सुदकी के लिये हम्माम में जावें जिससे पसीना आवे परन्तु पानी को काम में न लावें । जब पसीना आने लगे तब उनको कपड़ेसे पोंछता रहे जिससे पसीना खूब आजावे और इसी तरह हम्माम में गर्म फर्श पर लेटना और सूरजकी ओर पीठ करके बैठना, और गन्धक आदि के झरनों के पानीमें बैठना और नदीके पानी से देह को धोना तथा गर्म तनूर (चूल्हा) में बैठना लाभदायक है ।

नमक को पानी में डालकर कई दिन तक धूप में रखने से नदी के पानी का काम देता है । विशेष द्रष्टव्य—मूयज्जल कानियों में भिन्न भिन्न बातों का वर्णन किया है वे सब जगह गुणकारक हैं और लहमी में तिर्याकफारूक शहद के पानी में मिलाकर खाना सबसे उत्तम है और अगर तिर्याक फारूक न मिले तो तिर्याक जदी देवे इसकी मात्रा एक मिस्काल है इससे कम या अधिक न हो । और सर्द पानी के पीने से बचना अवश्य है और यदि संतोष न होसके तो छोटे मुख के पात्र में पानी भरकर चूसने की तरह पानी पीवे और यह भी उचित है कि उस पानी को गर्म करके ठंडा करलियाजाय और जानलेना चाहिये कि हकीमों की समझ में लहमी जलधर और भेदों से अधिक दुस्साध्य नहीं है और यही बात ठीक और सच है ।

(विशेष द्रष्टव्य) दस्तूर उल इलाज में इस प्रथम प्रकार के इलाज की यह विधि लिखी है कि पहिले देह से भोजन के व्यर्थ अंशों को दूर करे और जिगर की प्रकृति की दुष्टता को मध्यावस्था में लावे और इसकी यह विधि है कि खाने को भोजन न देवे और मकोय के अर्क पर ही संतोष करना चाहिये । और जहां तक बन सके पानी पीना छोड़ देवे और प्यास को रोके और इसमें शारीरिक परिश्रम इतना करना चाहिये जिससे स्वाभाविक गर्मी बढ़जाय जलंधर जलोदर के साथ हो तो देह में गलन, रंग में पीलापन, देह में दुबला पन, भूख का दूर होजाना वमन का होना, छाती का उभरना और मूत्रमें अधिक गर्मी होना, इसके लक्षण हैं तथा यह बात जानलेना चाहिये कि भारी मात्रामें इस्तस्का पानीके मांगनेका कारण नहीं है लेकिन यही कि स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता इस रोग का कारण है । तथा नफीसी लिखें तृष्णा का कारण यह है कि जब स्वाभाविक गर्मी की निर्बलता और गर्मी की अधिकता होजाती है तब यह रोग होता है । क्योंकि यह भोजन के जलयों पर अपना प्रभाव जमा देती है और भोजन को पक्व नहीं होने देती है और

पानी के चलने का शब्द होवे जैसे मशक में पानी बोला करता है कभी कभी ऐसा भी होता है कि हाथ पाँव और पपोटे तथा मूत्रस्थान पर सूजन पैदा हो जाय और जब यह रोग जड़ पकड़ जाता है तब खांसी और श्वास में कठिनता उत्पन्न होती है फिर अगर उसके साथ ज्वर नहो तब प्यास का न होना, देह तथा मूत्र के रंग का सफेद होना, सर्दी लगना. इस रोग के लक्षण हैं

(प्रश्न) जो फ़ज़ूलत अर्थात् मल देह में स्वभाव के विरुद्ध रुकजाता है तब वह सड़जाया करता है और विशेष करके यह बात उस समय होती है जब वह पकता नहीं है सो जलधर रोग में पेटके भीतर जो मल इकट्ठा होजाता है वह क्यों नहीं सड़ता है?

(उत्तर) मलके सड़जाने का यह कारण है कि जब वह एकही स्थान पर रुका रहै और उसके निकलने के लिये कोई मार्ग न हो जैसे बन्द तालाव का पानी उस समय दुर्गन्ध युक्त होजाता है जब उसमें नया पानी तो आता नहीं है और पहिला उसी में रुका रहता है और इसीलिये उसमें और भी कीड़े आदि उत्पन्न होजाते हैं परन्तु जलधर में यह बात नहीं है उसका पानी चलता फिरता रहता है तथा कमबढ़ भी होजाता है इस लिये इसमें सड़ाहट उत्पन्न नहीं होती।

जलधर की चिकित्सा।

अगर यह रोग जिगर की सूजन से हुआ हो यहाँ कठोर हो इसके उपाय का वर्णन इसीके साथ होचुका है उसी के अनुसार चिकित्सा करे अगर कोई दूसरा कारण हो तो गर्मी और सर्दी का विचार करके जिगर की प्रकृति को ठीक करे, और अफ़रा आदि में भी यह विचार करना चाहिये, जैसे अगर गर्मी हो तो सिकंजबीन और कासनी आदि के पानी से उसको ठीक करे और दस्तों के लिये [illegible], देवे और अगर गर्मी न हो तो ठीक करने के लिये सिकंजबीन [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] देवे और दस्तों के लिये [illegible] और [illegible] के पेटों में [illegible] दूर करने के लिये अमलतास का गूदा, गुलाब और बादाम के तेल के साथ देना ठीक है।

अन्य हकीमों का मत।

कुछ हकीम लोग कहते जलधर के पेट के पानी को [illegible] [illegible], और [illegible] के पानी से दूर करते हैं और जान [illegible] कि यह,

पानी के चलने का शब्द होवै जैसे मशक में पानी बोला करता है कभी कभी ऐसा भी होता है कि हाथ पांव और पपोटे तथा मूत्रस्थान पर सूजन पैदा हो जाय और जब यह रोग जड़ पकड़ जाता है तब खांसी और श्वास में कठिनता उत्पन्न होती है फिर अगर उसके साथ ज्वर न हो तब प्यास का न होना, देह तथा मूत्र के रंग का सफेद होना, सर्दी लगना. इस रोग के लक्षण हैं।

(प्रश्न) जो फजूल अर्थात् मल देह में स्वभाव के विरुद्ध रुक जाता है तब वह सड़जाया करता है और विशेष करके यह बात उस समय होती है जब वह पकता नहीं है सो जलधर रोग में पेट के भीतर जो मल इकट्ठा होजाता है वह क्यों नहीं सड़ता है?

(उत्तर) मल के सड़जाने का यह कारण है कि जब वह एकही स्थान पर रुका रहै और उसके निकलने के लिये कोई मार्ग न हो जैसे बन्द तालाब का पानी उस समय दुर्गन्धयुक्त होजाता है जब उसमें नया पानी तो आता नहीं है और पहिला उसी में रुका रहता है और इसीलिये उसमें और भी कीड़े आदि उत्पन्न होजाते हैं परंतु जलधर में यह बात नहीं है उसका पानी चलता फिरता रहता है तथा कमबढ़ भी होजाता है इस लिये इसमें सड़ांद उत्पन्न नहीं होती।

जलधर की चिकित्सा।

अगर यह रोग जिगर की सूजन से हुआ हो यानी कठोर हो इसके उपाय का वर्णन उसीके साथ होचुका है उसी के अनुसार चिकित्सा करै अगर कोई दूसरा कारण हो तो गर्मी और सर्दी का विचार करके जिगर की प्रकृति को ठीक करै, और अफारा आदि में भी यह विचार करना चाहिये, जैसे अगर गर्मी हो तो सिकंजबीन और कासनी आदि के पानी से उसको ठीक करै और दस्तों के लिये हिम्बिहियानकस्ड़ देवै और अगर गर्मी न हो तो ठीक करने के लिये सिकंजबीन बिजूरी, अर्क सौंफ, जवारिश अमीरवरद, जवारश अनीसून देवै और दस्तों के लिये हिम्बिदयानकर्थं देवै और आमाशय में रोगों में कफादि दूर करने के लिये अमलतास का गूदा, गुलाब और बादाम के तेल के साथ देना ठीक है।

अन्य हकीमों का मत।

कुछ हकीम लोग कहते हैं जलधर के पेट के पानी को बकरी का दूध पिलाकर, और पसीने के द्वारा से दूर करते हैं और जान लेना चाहिये कि वर्द,

किलकिलानज वरिष्टकी विधि ।

मानरयूनके पत्तों को सातदिन सिरकेमें भिगोकर सुखालेवे, बड़ी हरड़का छिलका, इन दोनोंमेंसे प्रत्येक पांच दिरम, उस्मारह अफसन्तीन तीन दिरम, सोसन की जड़, गुलाबके फूल, कासनी की जड़, ककड़ी की गिरी, गुलदर्द का सत, प्रत्येक दो दिरम, तुरंजबीन, अमलतास का गूदा, चीनी प्रत्येक पन्द्रह दिरम, ये सब ग्यारह दवाई । इनमें से तुरंजबीन, अमलतास का गूदा और चीनी इन को गरमपानी में घोलदेवें और छानकर औटावें यहां तक कि गाढ़ी होजाय । फिर दूसरी दवाएँ कूटछानकर उसमें मिलादेवें ।

किलकिलानज गर्म की विधि ।

हरड़, बहेड़ा, आंवला, पीपल, अजमोदके बीज, शीतरज, रेवन्द चीनी, किरमानी जीरा, इन्द्रानी नमक, इन्द्रजौ, नमकहिन्दी, सेंधा नमक, अजवायन प्रत्येक तीन दिरम, निसोथ, एक रतल, आंवला, मुनक्का, वायविडंग और नमक खमीर, ये सब अठारह दवा हैं । आंवले को २४ रतल पानीमें औटावें जब पानी आठ रतल रहजाय तब उसे निकाल देवें और उस छने हुए पानी में चार रतल कन्द डालकर फिर औटादेवें यहां तक कि उसकी शहद की सी चासनी हो जावै । फिर इस में एक रतल पिस्ता गाजी तेल डालकर ऐसा मिलावें कि खूब मिलकर पक्का होजाय, शेष दवाओं को कूटछान कर उस में मिला देवें ।

जलन्धर का पानी निकालने में दवाउल्करकम, माजूनलक सगीर और कबीर, भी ऐसाही प्रभाव रखती हैं जैसे किलकिलानज आदि ॥ यह बात भी जान लेनी चाहिये कि जो दवा जलंधरमें देवे उसको बहुत बारीक कर लेनी चाहिये जिससे इसका बल परवन के पत्ते से पहिले कलेजे के ऊपरी भाग में पहुंचे और सब से उत्तम पथ्य इस में मोटे मुर्ग के बच्चे का शोरवा होता है तथा और शोरबे अच्छे मसाले मिला कर देवे अगर उचित समझे तो उन में दारचीनी और सिरके भी मसाले भी डाल देवें । यह बात जान लेनी चाहिये कि सिर्फ जलन्धर वालों की प्यास को रोकनाहै और पेट को भरा रखना है तथा गर्म जलन्धर को शान्त पहुंचाताहै और जब तक दोष पक न हो तब तक ठंडी के दूधका प्रयोग न करें और अनारका पानी और पूर्वोक्त पत्तोंका पानी सकंजबीन में मिलाकर सदैव पीना इस रोगमें बहुत गुण दिखाता है क्योंकि सुननेमें आता है कि एक जलंधर वाली औरत नदी पासही ठीक होगई थी उसने बहुत से अनार खाये और वह बचगई ।

किलकिलानज वस्तिकी विधि।

मानरयूनके पत्तों को मातदिन सिर्केमें भिगोकर सुखालेवे, बड़ी हरड़का छिलका, इन दोनोंमेंसे प्रत्येक पाच दिरम, उस्मारह अफसन्तीन तीन दिरम, सोसन की जड़, गुलाबके फूल, कासनी की जड़, कचरी की गिरी, गुल्करी का सत, प्रत्येक दो दिरम, तुरंजबीन, अमलतास का गूदा, चीनी प्रत्येक पन्द्रह दिरम, ये सब ग्यारह दवाई। इनमें से तुरंजबीन, अमलतास का गूदा और चीनी इन को गरमपानी में घोलदेवें और छानकर औटावें यहां तक कि गाढ़ी होजाय। फिर दूसरी दवाएं कूटछानकर उसमें मिलादेवें।

किलकिलानज गर्म की विधि।

हरड़, बहेड़ा, आंवला, पीपल, अजमोदके बीज, नीतरज, रेवन्द चीनी, किरमानी जीरा, इन्द्रानी नमक, इन्द्रायण, नमकहिन्दी, सेंधा नमक, अजवायन प्रत्येक तीन दिरम, निसोथ, एक रतल, आंवला, गुनचा, वायविडंग और नमक खमीर, ये सब अठारह दवा हैं। आंवले को २४ रतल पानीमें औटावें जब पानी आठ रतल रहजाय तब उसे निकाल देवें और उस छने हुए पानी में चार रतल कन्द डालकर फिर औटादेवें यहां तक कि उसकी शहद की सी चासनी हो जावे। फिर इस में एक रतल गीरा गानी तेल डालकर ऐसा मिलावें कि खूब मिलकर पकवा होजाय, शेष दवाओं को कूटछान कर उस में मिला देवें।

जलन्धर का पानी निकालने में दवाउल्करकम, माजूनलक सगीर और कबीर, भी ऐसाही प्रभाव रखती हैं जैसे किलकिलानज आदि॥ यह बात भी जान लेनी चाहिये कि जो दवा जलंधरमें देवे उसको बहुत बारीक कर लेनी चाहिये जिससे इसका बल मरजन के पत्ते से पहिले कलेजे के ऊपरी भाग में पहुंचे और सब से उत्तम पथ्य इस में मोटे मुर्गे के बच्चे का शोरवा होता है तथा और जोरवे अच्छे मसाले मिला कर देवे अगर बस्तर नहीं तो उन में दारचीनी और सिरके की रूगाई भी डाल देवें। यह बात जान लेनी चाहिये कि सिर्फ जलन्धर वालों की प्यास को रोकनाही और शोथ को मिटाना है तथा गर्म जलन्धर को शाम पहुंचाता है और जब तक दोष रह म हो तब तक ऊंटनी के दूधका प्रयोग न करे और अनारका पानी और पूर्वोक्त पकोड़ा पानी सकंजबीन मिलाकर में मिलाकर सदैव पीना इस रोगमें बहुत गुण दिखलाता है जालीनूस कहता है कि एक जलंधर वाली औरत नहीं अच्छी होती थी उसने बहुत से अनार खाये और वो बचगई।

तिल्ली की चिकित्सा

इन न रखनेवाली रतूबतों के लिये जिनसे कि रगों में हवा पैदा होती है निकाल देनेवाली दवा देनी चाहिये जिनका वर्णन ऊपर होचुका है और यह बातें प्रकृतिके अनुसार ही करनी चाहिये और उचितहै कि इसमें कोमल वमन देवें और ऐसी वस्तु देवें जो जिगर को अधिक गर्म न करे। क्योंकि जिगर के अधिक गर्म होने से भाफ उठती है और तृषा उत्पन्न होती है विशेष करके जब रोगी की प्रकृति गर्म होतीहै इसीलिये हकीम लोग कहते हैं कि जब गर्म वस्तुओं का प्रयोग करें तब अवश्यही जिगर पर ठंडे द्रव्यों का लेप करें। जिससे भाफ का डर न रहे और दस्त कराने के पीछे हवाओं के निकाल देने का उपाय करें। हवाओं के निकालने की यह रीति है कि कुन्दरु और जीरा आदि चबाना चाहिये जिससे डकार आवें। और हवा को निकाल देनेवाली माजून और जैसे 'सजरीनिया' और 'कन्दादीहून' खाने को देवें। गोरस, नमक और सुर्मी इनसे लेप करना चाहिये, और यह लेप भी चारों ओर करना चाहिये जिसका पहलीमें वर्णन हुआ है और सुर्मी सूखी हुई, रस्सन, सौंफ, अजमोद के बीज, सुहागा, लाल खांड, इनको तुलसी के पानी में बत्ती बनाकर गुदा में रक्खें।

जानना चाहिये कि इस प्रकार की चिकित्सा में दस्तकारक और मूत्रकारक औषधों का बहुत प्रयोग न करें किन्तु अपानजर्दक[illegible] साफ करें और मूत्रकारक औषधों की अधिकता से भाफ उठने लगती है और इसकारण से तृषा भी लगती है। यह बात प्रगट है कि इसरोग में अधिक पानी पीना बहुत हानिकारक है। गेहूं की भूसी, नमक और चना इनमें सेकरे और इन्हीं दवाओं का लेपभी करें और पत्थर 'पक्कचार' लगावें।

तिल्ली के दूसरे भेद का वर्णन

इसको 'इस्त' कहते हैं, नर्मनिकली जलधर में रतूबत और हवा मिलजाती हैं और यह गाढ़ीहवा छेप रहजाती है जिसका निकलनाकठिनहै औरइसकारणसे कठोरता बहुत होजाती है। इसदूसरेमें तिल्ली जलधरको [illegible] कहते हैं, कोईने तिल्ली और इसका एकही अर्थ है और जलधर रोगी को 'मदफून' कहते हैं यदि यह जलधर तिल्ली कारणसे क्यों नहो परन्तु इसीमेंहै इसमें दशाहो जाता है। तिल्लीसे इस पहचानने का यह लक्षण है कि ऐसी अवस्था में दर्द रहता बहुतायत पड़ा गिरा और रोगी की दशा अच्छी होजाय और पूरी

तिल्ली की चिकित्सा

इन न रुकनेवाली दस्तूतों के लिये जिनमें कि रगों में हवा पैदा होती है निकाल देनेवाली दवा देनी चाहिये जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है और यह बातें प्रकृतिके अनुसार ही करनी चाहिये और उचित है कि इसमें कोमल यतन करें और ऐसी वस्तु देवें जो जिगर को अधिक गर्म न करे। क्योंकि जिगर के अधिक गर्म होने से भाफ उठती है और तृषा उत्पन्न होती है विशेष करके जब रोगी की प्रकृति गर्म होतीहै इसीलिये हकीम लोग कहते हैं कि जब गर्म वस्तुओं का प्रयोग करें तब अवश्यही जिगर पर ठंडे द्रव्यों का लेप करें। जिसमें भाफ का डर न रहे और दस्त कराने के पीछे हवाओं के निकाल देने का उपाय करें। हवाओं के निकालने की यह रीति है कि कुन्दर और जीरा आदि चबाना चाहिये जिससे डकार आवें। और हवा को निकाल देनेवाली माजून और जैसे 'सजरीनिया' और 'कन्दादीकून' इत्यादि को देवें। गोरस, नमक और भूसी इनमें सेक करना चाहिये, और यह सेक भी चारों ओर करना चाहिये जिसका वर्णन जलन्धरमें हुआ है और तुलसी सूखी हुई, स्पन्द, सौंफ, अजमोद के बीज, सुहागा, लाल खांड, इनको तुलसी के पानी में बत्ती बनाकर गुदा में रक्खें।

जानना चाहिये कि इस प्रकार की चिकित्सा में दस्तकारक और मूत्रकारक औषधों का बहुत प्रयोग न करें किन्तु यथायोग्य [illegible] करें और मूत्रकारक औषधों की अधिकता से भाफ उठने लगती है और इसकारण से तृषा भी लगती है। यह बात प्रगट है कि इसरोग में अधिक पानी पीना बहुत हानिकारक है। गेहूं की भूसी, नमक और चना इनमें सेककरें और इन्हीं दवाओं का लेपभी करें और ऊपर 'पम्पना' लगावें।

तिल्ली के दूसरे भेद का वर्णन

इसको 'दम' कहते हैं, क्योंकिइसमें जलन्धर में रतूबत और हवा मिलजाती है और यह गाढ़ी हवा शेष रहजाती है जिसका निकलना कठिनहै और इसकारणसे यह रोगभी बहुत होजाता है। इसदृष्टान्तसे तिल्ली जलन्धरको दम कहते हैं, क्योंकि तिल्ली और [illegible] एकही अर्थ है और जलन्धर रोगी को 'दफ्फ' कहते हैं चाहे वह जलन्धर किसी प्रकारका क्यों नहो परन्तु इसीलिये प्रायः [illegible] आता है। तिल्लीसे इसका [illegible] का यह लक्षण है कि [illegible] प्रकारका [illegible] पेट [illegible] जिगर और [illegible] की दवा अच्छी होजाय और पूरी

(दूसरी सूचना) ऊंटनी का दूध (विशेष करके अर्बी ऊंटनी का) जलंधर में बहुत गुणकारक होता है, तथा अन्न और जल के बदले में यही दूध पीवे और पहिले दिन ४० दिरम से प्रारम्भ करे और प्रति दिन १० दिरम बढ़ाता रहे जितना जी की रुचि में आवे और कोई २ हकीम यह कहते हैं कि जलन्धर में दूध ठंडे होने के कारण हानि पहुंचाता है तो इस बात पर भरोसा न करना चाहिये क्योंकि इस दूधका गुण ही ऐसा है जैसे कासनी ठंडी है और इसे जिगर के ठंडे रोगों में देते हैं और इसी तरह शकमूनिया जो गर्म है वह पित्त के रोग में दिया जाता है। परन्तु दूध देते समय इस बातका ध्यान रक्खे कि पेटमें दूध न जमजाय और उसके देनेसे पहिले और पीछे ऐसे द्रव्य दिया करें जिनसे दूध जमने न पावे जैसे सिकंजबीन आदिकी गोलियां। इस रोगमें ऊंट और बकरी का मूत्र भी लाभदायक है।

जलोदर का पांचवां भेद।

इसमें उस जलंधर का वर्णन है कि जो इन्हीं तीनों के मेल से उत्पन्न होवे, यद्यपि तीनों लक्षण जुदे २ वर्णन किये गये हैं परन्तु यहां सहज में समझने के कारण फिर भी लिखते हैं। (पहला भेद) वह जलन्धर है जो तिल्ली की निर्बलता से पैदा हो (चिकित्सा) इस रोग में बादी निकालने का जुलाब देवै और तिल्ली को उन दवाओं से बल पहुंचावे जिनका वर्णन तिल्ली की निर्बलताके विषय में होगा (दूसरा भेद) वह जलन्धर है जो फेफड़ेकी गर्मीसे उत्पन्न हो, उसका लक्षण यह है कि माथा घूमै खांसी रहती है और पांव सूजजाते हैं (चिकित्सा) इस रोग में सर्बत जूफा और गुलकन्द देवें (तीसरा भेद) वह जलोदर जो कलेजे की मासारीका रगोंमें मिला हो उसका लक्षण यह है कि नाड़ि नर्म रहती है और आंतों से मल निकलता है (चिकित्सा) इस रोगमें सर्बत बिजूरी और अनार का पानी देवै और जिगरको बल पहुंचानेका यत्न करै (चौथा भेद) वह जलन्धर है जो गुर्दे या मसानेके दोषसे हो या उनकी गर्मी से हो और उसके लक्षण और उसकी चिकित्सा उन्हीं के अनुसार है।

(पांचवां भेद) वह जलोदर जो गर्भ स्थानके मेल से हो अर्थात् मासिक रुधिर के बंद होजाने से होजाय। इसके लक्षण इसके प्रकरण में वर्णन किये हैं और इस जगह भी लिखे हैं।

(छठा भेद) वह जलोदर जो देह में अग्नि की अधिकता से उत्पन्न हो उसके यह लक्षण हैं कि कलेजेका खून पट होजाय और अन्दर से खून न निकला हो।

(दूसरी सूचना) ऊंटनी का दूध (विशेष करके अर्बी ऊंटनी का) जलंधर में बहुत गुणकारक होता है, तथा अन्न और जल के बदले में यही दूध पीवे और पहिले दिन ४० दिरम से प्रारम्भ करे और प्रति दिन १० दिरम बढ़ाता रहे जितना जी की रुचि में आसके और कोई २ हकीम यह कहते हैं कि जलन्धर में दूध ठंडे होने के कारण हानि पहुंचाता है तो इस बात पर भरोसा न करना चाहिये क्योंकि इस दूधका गुण ही ऐसा है जैसे कासनी ठंडी है और इस जिगर के ठंडे रोगों में देते हैं और इसी तरह शकमूनिया जो गर्म है वह पित्त के रोग में दिया जाता है। परन्तु दूध देते समय इस बातका ध्यान रक्खें कि पेटमें दूध न जमजाय और उसके देनेसे पहिले और पीछे ऐसे द्रव्य दिया करें जिनसे दूध जमने न पावे जैसे सिकंजबीन आदिकी गोलियां। इस रोगमें ऊंट और बकरी का मूत्र भी लाभदायक है।

जलोदर का पांचवा भेद।

इसमें उस जलंधर का वर्णन है कि जो इन्हीं तीनों के मेलसे उत्पन्न होवे, यद्यपि तीनों लक्षण जुदे २ वर्णन किये गये हैं परन्तु यहां सहज में समझने के कारण फिर भी लिखते हैं। (पहला भेद) यह जलंधर है जो तिल्ली की निर्बलता से पैदा हो (चिकित्सा) इस रोग में बादी निकालने का जुलाब देवे और तिल्ली को उन दवाओं से बल पहुंचावे जिनका वर्णन तिल्ली की निर्बलताके विषय में होगा (दूसरा भेद) यह जलंधर है जो फेंफड़ेकी सर्दीसे उत्पन्न हो, उसका लक्षण यह है कि सादा सूखी खांसी रहती है और पांव सूजजाते हैं (चिकित्सा) इस रोग में सर्वदा जूफा और गुलकन्द देवें (तीसरा भेद) यह जलो-दर जो कलेजे की मासारीका रगोंसे मिला हो उसका लक्षण यह है कि नाड़ि नर्म रहती है और आंतों से मल निकलता है (चिकित्सा) इस रोगमें सर्वदा सिकंजी और अनार का पानी देवे और जिगरको बल पहुंचानेका यत्न करे (चौथा भेद) यह जलन्धर है जो गुर्दे या आमाशयके दुर्बल हो या उनकी गर्मी से हो और उसके लक्षण और उसकी चिकित्सा उन्हीं के अनुसार है।

(पांचवां भेद) यह जलोदर जो गर्म स्थानके मेल से हो अर्थात् प्रायः शरीर के अंग [illegible] से होजाय। इसके लक्षण इसी प्रकरण में वर्णन किये हैं और इनका उपाय भी लिखे हैं।

(छठा भेद) यह जलोदर जो देह में रुधिर की अधिकता से उत्पन्न हो इसके यह लक्षण हैं कि बवासीर का खून बंद होजाय और फस्द से खून न निकला हो।

में विकार, आंतों में कष्ट इत्यादि। (सूचना) जो पीलिया रोग चहरातीं की तरह सातवें दिनसे पहिले उत्पन्न होता है वह अच्छा नहीं होता है (इलाज) मल को बाहर निकालने का उपाय करे, उसकी यह रीति है कि रोगीको गर्म पानी में बिठावें और केवल सिकंजबीन कासनी के शीरे में मिलाकर पिलावें अथवा इस रोग में दस्त कराना लाभदायक है।

(विशेष वक्तव्य) अमायजुल इलितमात में पीलिया की उत्पत्ति इस प्रकारपर लिखी है कि जाड़े की ऋतु में उत्तर की हवा चलने के समय यह बहुधा उत्पन्न होता है, कारण यह है कि देह के सूक्ष्म छिद्र बन्द होजाते हैं और गर्मी ऋतु में दक्षिणी हवा के चलने पर उत्पन्न होजाता है और कभी गर्म वस्तुओं के सेवन से उत्पन्न होता है, यह थोड़े दिन रहता है और जो पीलिया पीपल, राई, दालचीनी आदि गर्म दवाओं के खाने से होता है इसका यह कारण है कि पित्त तीक्ष्णता के कारण से सब पित्त को रुधिर से साफ करके ग्रहण नहीं करता और कलेजे से रुधिर के साथ सब अवयवों में जाकर देह और रुधिर के रंग को पीला कर देता है। पीलापन प्रथम आंखों में दिखाई देता है और फिर सब देह में फैलता चला जाता है।

गर्म दुष्ट प्रकृति से उत्पन्न पीलिया का वर्णन।

गर्मी के कारण भोजनका अस्वाभाविक पित्त बनजाताहै और रुधिर में मिलकर सब देहमें फैलजाताहै इसके वही लक्षण हैं जो जिगरकी दुष्ट प्रकृति में वर्णन किये गये हैं तथा पित्त की वमन, मूत्रमें अधिक पीलापन वा हरारत होती है (इलाज) कलेजे में ठंढ पहुंचाने के लिये मकोह [illegible] अनारका पानी जौका पानी तथा अन्य शर्बत, भोजन, लेप आदि काममें लावे जिनका वर्णन कलेजे की गर्म दुष्ट प्रकृति में होचुका है [illegible] को निकाल [illegible] हरड़ का मुरब्बा और इमलीका पानी [illegible]

में विष, आंतों में कष्ट इत्यादि। (सूचना) जो पीलिया रोग पहरोंमें की तरह सतावें दिनमें पहिले उत्पन्न होता है वह अच्छा नहीं होता है (इलाज) मल को बाहर निकालने का उपाय करे, उसकी यह रीति है कि रोगीको गर्म पानी में बिठावें और केवल सिकंजबीन कासनी के शीरे में मिलाकर पिलावें अथवा इस रोग में दस्त कराना लाभदायक है।

(विशेष रहस्य) अमायपुल इक्तिसाब में पीलिया की उत्पत्ति इस प्रकारपर लिखी है कि जाड़े की ऋतु में उत्तर की हवा चलने के समय यह बहुधा उत्पन्न होता है, कारण यह है कि देह के सूक्ष्म छिद्र बन्द होजाते हैं और गर्मी ऋतु में दक्षिणी हवा के चलने पर उत्पन्न होजाता है और कभी गर्म वस्तुओं के सेवन से उत्पन्न होता है, यह थोड़े दिन रहता है और जो पीलिया पीपल, राई, दालचीनी आदि गर्म दवाओं के खाने से होता है इसका यह कारण है कि पित्त तीक्ष्णता के कारण से सब पित्त को रुधिर से साफ करके ग्रहण नहीं करता और कलेजे से रुधिर के साथ सब अवयवोंमें जाकर देह और रुधिर के रंग को पीला कर देता है। पीलापन प्रथम आंखों में दिखाई देता है और फिर सब देह में फैलता चला जाता है।

गर्म दुष्ट प्रकृति से उत्पन्न पीलिया का वर्णन।

गर्मी के कारण भोजनका अस्वाभाविक पित्त बनजाता है और रुधिर में मिलकर सब देहमें फैलजाता है इसके वही लक्षण हैं जो जिगरकी दुष्ट प्रकृति में वर्णन किएगये हैं तथा पित्त की वमन, मूत्रमें अधिक पीलापन वा स्याही होती है (इलाज) कलेजे में ठंढ पहुंचाने के लिये खट्टे मीठे अनारका पानी जौका पानी तथा अन्य शर्बत, भोजन, लेप आदि खावें जिनका वर्णन कलेजे की गर्म दुष्ट प्रकृति में होचुका है [illegible] को निकाल[illegible]
दस्त का मारा और [illegible] का पानी [illegible] देवे [illegible]
दशा के अनुसार [illegible] का क्वाथ वा [illegible]। आवश्य[illegible]
दस्त कराने के [illegible] भोजन सिद्ध होने [illegible] तक पहुँ[illegible]
न करें।

[illegible]

में विनय, आँतों में कष्ट इत्यादि । (सूचना) जो पीलिया रोग पहुँगने की तरह सतावें जिनसे पहिले उत्पन्न होता है वह अच्छा नहीं होता है (इलाज) मल को बाहर निकालने का उपाय करे, उसकी यह रीति है कि रोगीको गर्म पानी में बिठावें और केवल सिकंजबीन कासनी के शीरे में मिलाकर पिलावें अथवा इस रोग में दस्त कराना लाभदायक है ।

(विशेष वृत्तान्त) अजायबुल इत्तिबाय में पीलिया की उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है कि जाड़े की ऋतु में उत्तर की हवा चलने के समय यह बहुधा उत्पन्न होता है, कारण यह है कि देह के सूक्ष्म छिद्र बन्द होजाते हैं और गर्मी ऋतु में दक्षिणी हवा के चलने पर उत्पन्न होजाता है और कभी गर्म वस्तुओं के सेवन से उत्पन्न होता है, यह थोड़े दिन रहता है और जो पीलिया पीपल, राई, दालचीनी आदि गर्म दवाओं के खाने से होता है इस का यह कारण है कि पित्ता तीक्ष्णता के कारण से सब पित्त को रुधिर से साफ़ करके ग्रहण नहीं करता और कलेजे से रुधिर के साथ सब अवयवों में जाकर देह और रुधिर के रंग को पीला कर देता है । पीलापन प्रथम आँखों में दिखाई देता है और फिर सब देह में फैलता चला जाता है ।

गर्म दुष्ट प्रकृति से उत्पन्न पीलिया का वर्णन ।

गर्मी के कारण भोजनका अप्राकृतिक पित्त बननावाले और रुधिर में मिलकर सब देहमें फैलजावाले इसके वही लक्षण हैं जो जिगरकी दुष्ट प्रकृति में वर्णन किये गये हैं यथा पित्त की वमन, मूत्रमें अधिक पीलापन वा रक्तादि होती है (इलाज) कलेजे में ठंढ पहुंचाने के लिये ठंढे पीले अनारका पानी शीरा शाह तथा अन्य शर्बत, भोजन, लेप आदि काममें लावे जिनका वर्णन कलेजे की गर्म दुष्ट प्रकृति में होचुका है । और पित्त को निकालने के लिये हरड़ का काढ़ा और इमलीका पानी तरञ्जबीन डालकर देवे और रोगी की दशा के अनुसार मेवों का जुलाब वा गोलियां देना भी लाभदायक है और दस्त कराने के पीछे यथोचित सिद्ध होने तक जिगर में ठंढ पहुंचाने का ध्यान न रक्खें ।

तीसरे प्रकार का पीलिया जिगर में सर्द प्रकृति के उत्पन्न न होने से होता है क्योंकि जिगर की ओर सब अङ्गों से पित्त खिंच आते हैं और अर्थात् पित्त का भाग जिगरकी शक्ति ग्रहण कर सब देहमें फैल जाते हैं । यह रोग इस तरह उत्पन्न होता है यद्यपि बाहर से कोई कारण नहीं होता है और एक

चौदहवां यह भेद है जिसमें कि उक्त मार्गों में से किसीमें मांस या मस्सा जमजावे और पीलिया रोग होजाय जैसा इन्हीं मार्गों में गांठ पड़जाने से पीलिया रोग होजाता है और उसके यह लक्षण हैं। कोई दवा गुण न करसके पीलिया रोग उसी तरह रहै और इस प्रकार के पीलिया का इलाज नहीं हो सक्ता क्योंकि बढ़नी मांस और मस्सा लोहे के शस्त्र बिना और किसीसे नहीं कटसक्ता, और वह इस जगहमें काम नहीं करसक्ता

पन्द्रहवां यह भेद है कि गाढ़ा कफ का दुर्लभ पीलिया रोग का कारण होजाय यह इस तरह है कि गाढ़ा कफ आंतों के ऊपरी भाग पर चिपट जाता है इस कारण से इस मार्ग का मुख जहां से पित्त गिरता है रुकजाता है और पित्त नहीं निकलसक्ता और अन्त में देह में पित्त की अधिकता से पीलिया रोग उत्पन्न हो जाता है (चिकित्सा) कफ के दूर करने का उपाय करें और कलेजे के ठीक करने में सावधानी रक्खें। (वि०द०) आंखका पीलापन जो हेतुके दूर होजानेके पीछे छप रहै तो उसके दूर करनेका उपाय यह है कि गुनगुना सिर्का हम्माम में जाकर कईबार सूंघे और अफसन्तीनको पानीमें औटा कर और उस पानी में शिकनजीन मिलाकर कुल्ले करे। (अथवा) कलौंजी, इन्द्रायन का गूदा इनको महीन पीस कर सूंघे और दूध में मिलाकर नाक में डालें जिससे छींक आजावें। (अथवा) चुकन्दरके पानीमें नेसूनका तेल मिला कर गरम करके नाक में टपकाना भी गुणकारक है। (अथवा) सिर्का गुलाब, या खट्टे अनारका अर्क आंखमें डाले। और अगर यह मालूम होवे कि दोष बहुत गाढ़ा है तो अयारज की गोलियां, व कूकाया की गोलियां देकर इसे दूर करें।

काले पीलिया का वर्णन।

यह रोग भी कई प्रकार का होता है, एक तो यह है जिसमें उस मार्ग में गांठ पड़जाती है जो जिगर और तिल्लीके बीचमें है और इस कारणसे कारी [illegible] जिसमें तिल्लीमें नहीं जासकती और रुधिरमें मिलकर [illegible] देहमें फैलजाती है। दूसरे यह कि उस मार्ग में गांठ पड़जावे जो आमाशय [illegible] बीच में है इसलिये काली तिल्लीसे आमाशयके मुख [illegible] बहुतसी इकट्ठी होकर फिर तिल्लीही और आमाशय में [illegible] करना भारी हो और देहमें [illegible] गांठों के ये लक्षण हैं कि [illegible]

चौदहवां यह भेद है जिसमें कि उक्त मार्गों में से किसीमें मांस या मस्सा जमजावे और पीलिया रोग होजाय जैसा इन्हीं मार्गों में गांठ पड़जाने से पीलिया रोग होजाता है और उसके यह लक्षण हैं। कोई दवा गुण न करसके पीलिया रोग उसी तरह रहै और इस प्रकार के पीलिया का इलाज नहीं हो सक्ता क्योंकि बढ़नी मांस और मस्सा लोहे के शस्त्र बिना और किसीसे नहीं कटसक्ता, और वह इस जगहमें काम नहीं करसक्ता

पन्द्रहवां यह भेद है कि गाढ़ा कफ का दुर्लभ पीलिया रोग का कारण होजाय यह इस तरह है कि गाढ़ा कफ आंतों के ऊपरी भाग पर चिपट जाता है इस कारण से इस मार्ग का मुख जहां से पित्त गिरता है रुकजाता है और पित्त नहीं निकलसक्ता और अन्त में देह में पित्त की अधिकता से पीलिया रोग उत्पन्न हो जाता है (चिकित्सा) कफ के दूर करने का उपाय करें और कलेजे के ठीक करने में सावधानी रक्खें। (वि०द०) जो इसका पीलियापन जो हेतुके दूर होजानेके पीछे छप रहै तो उसके दूर करनेका उपाय यह है कि सुगना सिर्का हम्माम में जाकर कईबार सूंघे और अफसन्तीनको पानीमें औटा कर और उस पानी में सिरकचीन मिलाकर कुल्ले करे। (अथवा) कलौंजी, इन्द्रायण का गूदा इनको महीन पीस कर सूंघे और दूध में मिलाकर नाक में डाले जिससे छींक आजावें। (अथवा) चुकन्दरके पानीमें जैतूनका तेल मिला कर गरम करके नाक में टपकाना भी गुणकारक है। (अथवा) सिर्का गुलाब, या लहू मनारका अर्क आंखोंमें डाले। और अगर यह मालूम होवे कि दोष बहुत गाढ़ा है तो अयारज की गोलियां, व कुचाया की गोलियां देकर दोष दूर करें।

काले पीलिया का वर्णन।

यह रोग भी कई प्रकार का होता है, एक तो यह है जिसमें उस मार्ग में गांठ पड़जाती है जो जिगर और तिल्ली के बीचमें है और इस कारणसे काली सिफराहें नहीं आसक्ती और रुधिरमें मिलकर ... देहमें फैलजाती है। दूसरे यह कि उस मार्ग में गांठ पड़जावे जो आमाशय ... बीच में है इसलिये काली तिल्लीसे आमाशयके ... पहुंचती इसकी रोक ... तिल्ली और आमाशय में ... भरना ... और देह ... गांठों के ये लक्षण हैं कि ...

चौदहवां वह भेद है जिसमें कि उक्त मार्गों में से किसीमें मांस या मस्सा जमजावै और पीलिया रोग होजाय जैसा इन्हीं मार्गों में गांठ पड़जाने से पीलिया रोग होजाता है और उसके यह लक्षण हैं। कोई दवा गुण न करसकै पीलिया रोग उसी तरह रहै और इस प्रकार के पीलिया का इलाज नहीं हो सक्ता क्योंकि वढ़ती मांस और मस्सा लोहे के अस्त्र बिना और किसीसे नहीं कटसक्ता, और वह इस जगहमें काम नहीं करसक्ता

पन्द्रहवां वह भेद है कि गाढ़ा कफ का कूलज पीलिया रोग का कारण होजाय यह इस तरह है कि गाढ़ा कफ आंतों के ऊपरी भाग पर चिपट जाता है इस कारण से इस मार्ग का मुख जहां से पित्त गिरता है रुकजाता है और पित्त नहीं निकलसक्ता और अन्त में देह में पित्त की अधिकता से पीलिया रोग उत्पन्न हो जाता है (चिकित्सा) कफ के कूलञ्ज का उपाय करे और कलेजे के ठीक करने में सावधानी रक्खे। (चि०द०) आंखका पीलापन जो हेतुके दूर होजानेके पीछे शेष रहै तो उसके दूर करनेका उपाय यह है कि पुराना सिर्का हम्माम में जाकर कईवार सूंघे और अफसन्तीनको पानीमें औटा कर और उस पानी में सिकंजबीन मिलाकर कुल्ले करे। (अथवा) कलौंजी, इन्द्रायण का गूदा इनको महीन पीस कर सूंघे और दूध में मिलाकर नांक में डाले जिससे छींक आजावे। (अथवा) चुकन्दरके पानीमें जैतूनका तेल मिला कर गरम करके नांक में टपकाना भी गुणकारक है। (अथवा) सिर्का गुलाब, या खट्टे अनारका अर्क आंखोंमें डाले। और अगर यह मालूम होवे कि दोष बहुत गाढ़ा है तो अयारज की गोलियां, व कूकाया की गोलियां देकर उसे दूर करै।

काले पीलिया का वर्णन।

यह रोग भी कई प्रकार का होता है, एक तो यह है जिसमें उस मार्ग में गांठ पड़जाती है जो जिगर और तिल्ली के बीचमें है और इस कारणसे बादी जिगरसे तिल्लीमें नहीं जासक्ती और रुधिरसे मिलकर सब देहमें फैलजाती है दूसरे यह कि उस मार्ग में गांठ पड़जावे जो आमाशयके मुख और तिल्ली के बीच में है इसलिये बादी तिल्लीसे आमाशयके मुखपर न गिरै और तिल्लीमें बहुतसी इकट्ठी होकर फिर तिल्लीकी ओर आजाय और रुधिरसे मिलकर देहमें अपना असर करै और देहके रंगको काला कर देवे और इन दोनों प्रकारकी गांठों के ये लक्षण हैं कि इस प्रकार का पीलिया धीरे २ पैदा होता है और

चौदहवां वह भेद है जिसमें कि उक्त मार्गों में से किसीमें मांस या मस्सा जमजावैं और पीलिया रोग होजाय जैसा इन्हीं मार्गों में गांठ पड़जाने से पीलिया रोग होजाता है और उसके यह लक्षण हैं। कोई दवा गुण न करसकै पीलिया रोग उसी तरह रहै और इस प्रकार के पीलिया का इलाज नहीं हो सक्ता क्योंकि बढ़ती मांस और मस्सा लोहे के अस्त्र बिना और किसीसे नहीं कटसक्ता, और वह इस जगहमें काम नहीं करसक्ता

पन्द्रहवां वह भेद है कि गाढ़ा कफ का कूलज पीलिया रोग का कारण होजाय यह इस तरह है कि गाढ़ा कफ आंतों के ऊपरी भाग पर चिपट जाता है इस कारण से इस मार्ग का मुख जहां से पित्त गिरता है रुकजाता है और पित्त नहीं निकलसक्ता और अन्त में देह में पित्त की अधिकता से पीलिया रोग उत्पन्न हो जाता है (चिकित्सा) कफ के कूलञ्ज का उपाय करे और कलेजे के ठीक करने में सावधानी रक्खै। (वि०द०) आंखका पीलापन जो हेतुके दूर होजानेके पीछे शेष रहै तो उसके दूर करनेका उपाय यह है कि पुराना सिर्का हम्माम में जाकर कईबार सूंघे और अफसन्तीनको पानीमें औटा कर और उस पानी में सिकंजबीन मिलाकर कुल्ले करे। (अथवा) कलौंजी, इन्द्रायण का गूदा इनको महीन पीस कर सूंघे और दूध में मिलाकर नांक में डालै जिससे छींक आजावै। (अथवा) चुकन्दरके पानीमें जैतूनका तेल मिलाकर गरम करके नांक में टपकाना भी गुणकारक है। (अथवा) सिर्का गुलाब, या खट्टे अनारका अर्क आंखोंमें डालै। और अगर यह मालूम होवै कि दोष बहुत गाढ़ा है तो अयारज की गोलियां, व कूकाया की गोलियां देकर उसे दूर करे।

काले पीलिया का वर्णन।

यह रोग भी कई प्रकार का होता है, एक तो यह है जिसमें उस मार्ग में गांठ पड़जाती है जो जिगर और तिल्लीके बीचमें है और इस कारणसे बादी जिगरसे तिल्लीमें नहीं जासक्ती और रुधिरसे मिलकर सब देहमें फैलजाती है दूसरे यह कि उस मार्ग में गांठ पड़जावे जो आमाशयके मुख और तिल्ली के बीच में है इसलिये बादी तिल्लीसे आमाशयके मुखपर न गिरै और तिल्लीमें बहुतसी इकट्ठी होकर फिर तिल्लीकी ओर आजाय और रुधिरसे मिलकर देहमें अपना असर करै और देहके रंगको काला कर देवै और इन दोनों प्रकारकी गांठों के ये लक्षण हैं कि इस प्रकार का पीलिया धीरे २ पैदा होता है और

चौदहवां वह भेद है जिसमें कि उक्त मार्गों में से किसीमें मांस या मस्सा जमजावै और पीलिया रोग होजाय जैसा इन्हीं मार्गों में गांठ पड़जाने से पीलिया रोग होजाता है और उसके यह लक्षण हैं। कोई दवा गुण न करसके पीलिया रोग उसी तरह रहै और इस प्रकार के पीलिया का इलाज नहीं हो सक्ता क्योंकि बढ़ती मांस और मस्सा लोहे के अस्त्र विना और किसीसे नहीं कटसक्ता, और वह इस जगहमें काम नहीं करसक्ता

पन्द्रहवां वह भेद है कि गाढ़ा कफ का कूलंज पीलिया रोग का कारण होजाय यह इस तरह है कि गाढ़ा कफ आंतों के ऊपरी भाग पर चिपट जाता है इस कारण से इस मार्ग का मुख जहां से पित्त गिरता है रुकजाता है और पित्त नहीं निकलसक्ता और अन्त में देह में पित्त की अधिकता से पीलिया रोग उत्पन्न हो जाता है (चिकित्सा) कफ के कूलञ्ज का उपाय करे और कलेजे के ठीक करने में सावधानी रक्खै। (वि०द०) आंखका पीलापन जो हेतुके दूर होजानेके पीछे शेष रहे तो उसके दूर करनेका उपाय यह है कि पुराना सिर्का हम्माम में जाकर कईबार सूंघे और अफसन्तीनको पानीमें औटा कर और उस पानी में सिकञ्जबीन मिलाकर कुल्ले करे। (अथवा) कलौंजी, इन्द्रायण का गूदा इनको महीन पीस कर सूंघे और दूध में मिलाकर नांक में डाले जिससे छींक आजावै। (अथवा) चुकन्दरके पानीमें जैतूनका तेल मिला कर गरम करके नांक में टपकाना भी गुणकारक है। (अथवा) सिर्का गुलाब, या खट्टे अनारका अर्क आंखमें डाले। और अगर यह मालूम होवै कि दोष बहुत गाढ़ा है तो अयारज की गोलियां, व कूकाया की गोलियां देकर उसे दूर करै।

काले पीलिया का वर्णन।

यह रोग भी कई प्रकार का होता है, एक तो वह है जिसमें उस मार्ग में गांठ पड़जाती है जो जिगर और तिल्लीके बीचमें है और इस कारणसे बादी जिगरसे तिल्लीमें नहीं जासक्ती और रुधिरसे मिलकर सब देहमें फैलजाती है दूसरे यह कि उस मार्ग में गांठ पड़जावै जो आमाशयके मुख और तिल्ली के बीच में है इसलिये बादी तिल्लीसे आमाशयके मुखपर न गिरे और तिल्लीमें बहुतसी इकट्ठी होकर फिर तिल्लीकी ओर आजाय और रुधिरसे मिलकर देहमें अपना असर करै और देहके रंगको काला कर देवै और इन दोनों प्रकारकी ॰ के ये लक्षण हैं कि इस प्रकार का पीलिया धीरे २ पैदा होता है और

चौदहवां वह भेद है जिसमें कि उक्त मार्गों में से किसीमें मांस या मस्सा जमजावे और पीलिया रोग होजाय जैसा इन्हीं मार्गों में गांठ पड़जाने से पीलिया रोग होजाता है और उसके यह लक्षण हैं। कोई दवा गुण न करसके पीलिया रोग उसी तरह रहै और इस प्रकार के पीलिया का इलाज नहीं हो सक्ता क्योंकि बढ़ती मांस और मस्सा लोहे के अस्त्र बिना और किसीसे नहीं कटसक्ता, और वह इस जगहमें काम नहीं करसक्ता

पन्द्रहवां वह भेद है कि गाढ़ा कफ का कूलंज पीलिया रोग का कारण होजाय यह इस तरह है कि गाढ़ा कफ आंतों के ऊपरी भाग पर चिपट जाता है इस कारण से इस मार्ग का मुख जहां से पित्त गिरता है रुकजाता है और पित्त नहीं निकलसक्ता और अन्त में देह में पित्त की अधिकता से पीलिया रोग उत्पन्न हो जाता है (चिकित्सा) कफ के कूलञ्ज का उपाय करे और कलेजे के ठीक करने में सावधानी रक्खै। (वि०द०) आंखका पीलापन जो हेतुके दूर होजानेके पीछे शेष रहे तो उसके दूर करनेका उपाय यह है कि पुराना सिर्का हम्माम में जाकर कईबार सूंघे और अफसन्तीनको पानीमें औटा कर और उस पानी में सिकञ्जबीन मिलाकर कुल्ले करे। (अथवा) कलौंजी, इन्द्रायण का गूदा इनको महीन पीस कर सूंघे और दूध में मिलाकर नांक में डाले जिससे छींक आजावे। (अथवा) चुकन्दरके पानीमें जैतूनका तेल मिला कर गरम करके नांक में टपकाना भी गुणकारक है। (अथवा) सिर्का गुलाब, या खट्टे अनारका अर्क आंखोंमे डाले। और अगर यह मालूम होवे कि दोष बहुत गाढ़ा है तो अयारज की गोलियां, व कूकाया की गोलियां देकर उसे दूर करै।

काले पीलिया का वर्णन।

यह रोग भी कई प्रकार का होता है, एक तो वह है जिसमें उस मार्ग में गांठ पड़जाती है जो जिगर और तिल्ली के बीच में है और इस कारणसे बादी जिगरसे तिल्लीमें नहीं जासक्ती और रुधिरसे मिलकर सब देहमें फैलजाती है दूसरे यह कि उस मार्ग में गांठ पड़जावे जो आमाशयके मुख और तिल्ली के बीच में है इसलिये बादी तिल्लीसे आमाशयके मुखपर न गिरै और तिल्लीमें बहुतसी इकट्ठी होकर फिर तिल्लीकी ओर आजाय और रुधिरसे मिलकर देहमें अपना असर करै और देहके रंगको काला कर देवै और इन दोनों प्रकारकी ... के ये लक्षण हैं कि इस प्रकार का पीलिया धीरे २ पैदा होता है और

निकलजावे और कलेजे के ठीक करने के लिये ठंडे शर्बत, पथ्य, और लेपों का प्रयोग करें ।

चौथा यह है कि तिल्ली की ग्रहणशक्ति अथवा उसकी अवरोधकशक्ति अथवा दोनों शक्तियां निर्बल होजांय और इस कारणसे काला पीलिया रोग उत्पन्न हो और तिल्लीकी ग्रहणशक्ति की निर्बलता के लक्षण आंख की सफेदी में मैलापन होना, और भूखका दूर होजाना, आदि हैं। तथा तिल्लीकी अवरोधक शक्ति की निर्बलता का लक्षण यह है कि वमन और दस्तों में बादी की तलछट निकलती है (इलाज तिल्ली को उन दवाओं से बलवान करे कि जिनका तिल्ली की निर्बलता के विषय में वर्णन होगा ।

पांचवे यह है कि तिल्ली की सूजन चाहे यह गर्म हो चाहे कठोर हो पीलिया रोग के उत्पन्न होने का हेतु हो और उसका इलाज तिल्ली की सूजन के विषय में वर्णन किया जायगा छटा यह है कि जब प्रकृति तिल्ली के रोग को उन्मत्तता की रीति से दबाती है तब पीलिया रोग होता है और उसका यह लक्षण है कि यह पीलिया तिल्ली के रोग के पीछे उत्पन्न होता है और उसके उत्पन्न होने से तिल्ली में आराम और कमी मालूम होतीहै (इलाज) इस रोग में प्रकृति को नीचे लिखी रीति से ठीक करे. यथा रोगी को मीठे पानी से स्नान करावे और इसके सिवाय जो पीछे पीलिया रोग में वर्णन किया गया है वह भी काम में लावे और इसी तरह सोये का तेल बाबूनेका तेल सौसनका तेल देह पर मलना लाभदायक है ।

सातवां यह है कि ठंडी दुष्ट प्रकृति अधिकता से कलेजे में उत्पन्न हो और इस कारण से रुधिर तलछट की तरह उसमें जमकर काला होजावे और पीलिया को उत्पन्न करेपरंतु ऐसा कम हुआ करता है और कलेजे की सर्दी के लक्षण तथा उसके इलाज पहले वर्णन करचुके हैं।

विशेष द्रष्टव्य —जब काला और पीला दोनों प्रकार का पीलिया इकट्ठा होजाय तब यह इलाज करना चाहिये कि दोनों हाथों की फस्द खोले और पहली फस्द के तीन दिन पीछे दूसरी फस्द खोले और कोष्ट के नर्म करने के लिये वह काथ देवे जो पित्त और वात के निकालने में प्रधान है और जब बादी की अधिकता हो तब तिल्ली के उपाय पर अधिक दृष्टि देवे और जब ... अधिक हो तब कलेजे के उपाय पर दृष्टि रक्खे ।

...) इस बात के जान लेने के लिये कि गांठ दोनों जगह है या केवल

निकलजावे और कलेजे के ठीक करने के लिये ठंडे शर्बत, पथ्य, और लेपों का प्रयोग करें।

चौथा यह है कि तिल्ली की ग्रहणशक्ति अथवा उसकी अवरोधकशक्ति अथवा दोनों शक्तियां निर्बल होजांय और इस कारणसे काला पीलिया रोग उत्पन्न हो और तिल्लीकी ग्रहणशक्ति की निर्बलता के लक्षण आंख की सफेदी में मैलापन होना, और भूखका दूर होजाना, आदि हैं। तथा तिल्लीकी अवरोधक शक्ति की निर्बलता का लक्षण यह है कि वमन और दस्तों में बादी की तलछट निकलती है (इलाज तिल्ली को उन दवाओं से बलवान करे कि जिनका तिल्ली की निर्बलता के विषय में वर्णन होगा।

पांचवे यह है कि तिल्ली की सूजन चाहे वह गर्म हो चाहे कठोर हो पीलिया रोग के उत्पन्न होने का हेतु हो और उसका इलाज तिल्ली की सूजन के विषय में वर्णन किया जायगा छटा यह है कि जब प्रकृति तिल्ली के रोग को उन्मत्तता की रीति से दबाती है तब पीलिया रोग होता है और उसका यह लक्षण है कि यह पीलिया तिल्ली के रोग के पीछे उत्पन्न होता है और इसके उत्पन्न होने से तिल्ली में आराम और कमी मालूम होतीहै (इलाज) इस रोग में प्रकृति को नीचे लिखी रीति से ठीक करै. यथा रोगी को मीठे पानी से स्नान करावे और इसके सिवाय जो पीछे पीलिया रोग में वर्णन किया गया है वह भी काम में लावे और इसी तरह सोये का तेल बाबूनेका तेल सौसनका तेल देह पर मलना लाभदायक है।

सातवां यह है कि बदी हुए प्रकृति अधिकता से कलेजे में उत्पन्न हो और इस कारण से रुधिर तलछट की तरह उसमें जमकर काला होजावे और पीलिया को उत्पन्न करैपरंतु ऐसा कम हुआ करता है और कलेजे की सर्दी के लक्षण तथा उसके इलाज पहले वर्णन करचुके हैं।

-विशेष द्रष्टव्य -जब काला और पीला दोनों प्रकार का पीलिया इकट्ठा होजाय तब यह इलाज करना चाहिये कि दोनों हाथों की फस्द खोले और पहली फस्द के तीन दिन पीछे दूसरी फस्द खोले और कोष्ट के नर्म करने के लिये यह काथ देवे जो पित्त और वात के निकालने में प्रधान है और जब बादी की अधिकता हो तब तिल्ली के उपाय पर अधिक दृष्टि देवे और जब ... अधिक हो तब कलेजे के उपाय पर दृष्टि रक्खे।

...) इस बात के जान लेने के लिये कि गांठ दोनों जगह है वा केवल

पनसे भूखको उत्पन्न करती है और तिल्ली वादी के रहने की जगह है और उसका यह काम है कि वह वादी को जिगर से निकालती है।

पहिलाभेद तिल्ली की दुष्ट प्रकृति का वर्णन।

इसके कई भेद हैं उनमें से एकतो यह है कि गर्म हो उसका लक्षण यहहै कि प्यास की अधिकता, तिल्ली के स्थान में जलन, पेशाव और दस्त में ललाई वा कालापन होता है, (इलाज) दोष युक्त तिल्ली में बांये हाथ की वासलीक वा उसैलम की फस्द खोलें और कासनी तथा मकोय का पानी देवें और कोष्ठ को नर्म करने के लिये हरड और अमलतास का क्वाथ देवे और जौकाचून, झाऊके पत्तोंके पानी और सिर्के में मिलाकर तिल्ली पर रक्खे और इसकपेचे को सिर्केमें औटाकर जौके आटेमें मिलाकर उसपर रखना गुणकारक है। (अथवा) गेंहू की भुसी वा अंजीर को सिर्के में औटाकर अलग अलग लेपकरना लाभदायक है, और जो तिल्ली दोषयुक्त नहो तो सर्दी पहुंचाना और प्रकृति को स्वस्थ रखना ही ठीक है इसमें दस्तों की आवश्यकता भी कम होती है।

कपूर की टिकिया की विधि

यह इस रोगमें काम देती है यथा गुलाब के फूल चार दिरम, बंसलोचन खर्बूजे की मिंगी, ककड़ी खीरे की मिंगी, खुर्फे के बीज, प्रत्येक ३ दिरम, रेवन्द चीनी, अस्कलीनूस प्रत्येक डेढ़ दिरम, केशर, कपूर, प्रत्येक आधा दिरम, इनसब दवाओं को कूट छानकर बेत या कासनी के पानी में टिकिया बना लेवें।

दूसरा यहहै कि तिल्ली की दुष्ट प्रकृति सर्दहो उसका लक्षण यह है कि इसमें भूखजाती रहती है, प्यास नहीं लगती है तथा पेटमें गुड़गुड़ाहट और डकार बहुत आती हैं और मुखसे पानी बहुत आता है। (इलाज) सिक्जबीन, और वह टिकिया जो बुजूर और गर्म जड़ों से मिली हुई हो, इसका प्रयोगकरे और अंजीर, कुस्त (कूट) तितली के पत्ते पमकी जड़की छाल, झाऊकाफल, असकलीनूस, कड़वे बादाम, कीकर के पत्ते इनको सिरके में मिलाकर तिल्ली पर रक्खें और बिना कुछ खाये मुसल्लिम का खाना, मूलीका पानी, तिर्याकअर्बा और गुलकन्द ये सब लाभदायक हैं। और इसमें उत्तम भोजन यहहै जैसे मुर्गेका मांस जिसमें गर्म दवाओं और उसमें कीकर का सिर्का मिला देवे।

पनसे भूखको उत्पन्न करती है और तिल्ली वादी के रहने की जगह है और उसका यह काम है कि वह वादी को जिगर से निकालती है)।

पहिलाभेद तिल्ली की दुष्ट प्रकृति का वर्णन ।

इसके कई भेद हैं उनमें से एकतो यह है कि गर्म हो उसका लक्षण यहहै कि प्यास की अधिकता, तिल्ली के स्थान में जलन, पेशाव और दस्त में ललाई वा कालापन होता है, (इलाज) दोष युक्त तिल्ली में वांये हाथ की बासलीक वा उसैलम की फस्द खोलें और कासनी तथा मकोय का पानी देवें और कोष्ठ को नर्म करने के लिये हरड और अमलतास का क्वाथ देवै और जौकाचून, झाऊके पत्तोंके पानी और सिर्के में मिलाकर तिल्ली पर रक्खे और इक्लेपेचे को सिर्केमें औटाकर जौके आटेमें मिलाकर उसपर रखना गुणकारक है । (अथवा) गेंहू की भुसी वा अंजीर को सिर्के में औटाकर अलग अलग लेपकरना लाभदायक है, और जो तिल्ली दोषयुक्त नहो तौ सर्दी पहुचाना और प्रकृति को स्वस्थ रखना ही ठीक है इसमें दस्तों की आवश्यकता भी कम होती है ।

कपूर की टिकिया की विधि

यह इस रोगमें काम देती है यथा गुलाब के फूल चार दिरम, बंसलोचन खर्बूजे की मिंगी, ककड़ी खीरे की मिंगी, खुर्फे के बीज, प्रत्येक २ दिरम, रेवन्द चीनी, अस्कलीनूस प्रत्येक डेढ़ दिरम, केशर, कपूर, प्रत्येक आधा दिरम, इनसब दवाओं को कूट छानकर बेत या कासनी के पानी में टिकिया बना लेवें ।

दूसरा यहहै कि तिल्ली की दुष्ट प्रकृति सर्दहो उसका लक्षण यह है कि इसमें भूखजाती रहती है, प्यास नहीं लगती है तथा पेटमें गुड़गुड़ाहट और डकार बहुत आती हैं और मुखसे पानी बहुत आता है । (इलाज) सिक्जबीन, और वह टिकिया जो बुजूर और गर्म जड़ों से मिली हुई हो, इसका प्रयोगकरै और अंजीर, कुस्त (कूट) तितली के पत्ते पप्रकी जड़की छाल, झाऊकाफल, असकलीनूस, कड़वे बादाम, कीकर के पत्ते इनको सिरके में मिलाकर तिल्ली पर रक्खें और बिना कुछ खाये मुसल्लिम का माना, मूलीका पानी, तिर्याकअर्बा और गुलकन्द ये सब लाभदायकहैं । और इसमें उत्तम भोजन यहहै जैसे मुर्गका मांस जिसमें गर्म दवाओं और उसमें कीकर का सिर्का मिला देवै ।

टिकिया देवै जिनका वर्णन आगे करेंगे और पोदीना, सुहागा, तिल्ली झाऊ का फल, पुराने सिर्के में मिलाकर तिल्ली पर रक्खे और चनेका पानी और मसालेदार भुनाहुआ मांस खानेको देवै और जहां कहीं कोष्ठके नर्म करने की आवश्यकता हो तो अफ्तीमून की गोली और अयारज काममें लावें।

टिकिया की विधि

गुलाब के फूल, कब्र की जड़, जिरावन्द, बालछड़, धुलीहुईलाख, अरिश्क इन सब को महीन पीसकर झाऊके पानी में मिलाकर टिकिया बनावें। (पांचवां यह है) कि तिल्ली की दुष्पकृतिगर्मतर हो उसके (लक्षण) बांई पसली में बोझ का मालूमहोना, प्यास और जलन का न होना, कभी कभी देह में ढीलापन कालापन और सुस्ती का प्रगट होना (इलाज) जो कुछ कि गर्म और तर तिल्लीकी प्रकृतियोंके विशयमें अलग २ लिखाहै वह यहां मिलाकर देवै। सिकंजबीन बिजूरी जिसमें कब्र की जड़ की छाल हो उसको पीना चाहिये या गुलाब के फूल, झाऊ का फल, मैदा लकड़ी, चन्दन, झाऊ का पानी सिर्केमें मिलाके लाभदायकहै और इसी तरह जो कुछ कि ठंढा और सूखा हो, (छटे गर्म खुश्क) उसके यह लक्षणहैं, तबीयत में भ्रम, पांव व पिंडलियोंका गर्म होना, प्यासकी अधिकता, जलन, पेशाब साफ व लाल, और उसमें चिकनाई न होना. (चिकित्सा) ठंढी और तर चीज़े जैसे, मकोयके पत्ते, छालसाग, बारंग के पत्ते, ईसबगोल इत्यादि लेपकरै, और प्रकृतिके अनुसार, शर्बत, और भोजन देवै, और जो कुछ गर्म और खुश्कमें अलग २ वर्णन हो चुका है वह सब देवें। (सातवें) यहहै कि प्रकृति ठंढी और तर हो। वह सर्दी और तरीके लक्षणोंसे मिली होती है और उस की चिकित्सा गर्मी और खुश्की का पहुंचानाहै, (आठवें) यह है जो सर्द खुश्क हो और उससे तिल्लीमें कड़ापन और गाढ़ापन पैदा होताहै और तिल्ली के कड़ेपन और गाढ़ेपन का वर्णन दूसरे प्रकरणमें किया जायगा और उसके एक २ जुदे भेद से भी जिनका पहले वर्णन हो चुका है इलाज हो सकता है।

दूसरा भेद तिल्ली की सूजन का वर्णन।

इसके कई भेद हैं (पहिला) गर्म खूनी, उसके लक्षण, दर्द, जलन, तिल्ली में बोझ प्यास, प्रबल ज्वर, जो कि चौथैया के दौरे की तरह बलवान हो, पेशाब में स्याही, और कभी पेट की खालपर जहां तिल्लीकी जगह है स्याही मालूम होती है, (चिकित्सा) बांये हाथसे बासलीक, या हबलुल्मीरा या बरें

टिकिया देवै जिनका वर्णन आगे करेंगे और पोदीना, सुहागा, तितली झाऊ के फल, पुराने सिर्के में मिलाकर तिल्ली पर रक्खे और चनेका पानी और मसालेदार भुनाहुआ मांस खानेको देवे और जहां कहीं कोष्ठके नर्म करने की आवश्यकता हो तो अफ्तीमून की गोली और अयारज काममें लावें ।

टिकिया की विधि

गुलाब के फूल, कब्र की जड़, जिरावन्द, बालछड़, धुलीहुईलाख, जरिश्क इन सब को महीन पीसकर झाऊके पानी में मिलाकर टिकिया बनावै । (पांचवां यह है) कि तिल्ली की दुष्प्रकृतिगर्मतर हो उसके (लक्षण) बांई पसली में बोझ का मालूमहोना, प्यास और जलन का न होना, कभी कभी देह में ढीलापन कालापन और सुस्ती का प्रगट होना (इलाज) जो कुछ कि गर्म और तर तिल्लीकी प्रकृतियोंके विषयमें अलग २ लिखाहै वह यहां मिलाकर देवै । सिकंजबीन बिजूरी जिसमें कब्र की जड़ की छाल हो उसको पीना चाहिये या गुलाब के फूल, झाऊ का फल, मैदा लकड़ी, चन्दन, झाऊ का पानी सिर्केमें मिलाके लाभदायकहै और इसी तरह जो कुछ कि ठंडा और सूखा हो, (छटे गर्म खुश्क) उसके यह लक्षणहैं, तबीयत में कब्ज, पांव व पिंडलियोंका गर्म होना, प्यासकी अधिकता, जलन, पेशाब साफ व लाल, और उसमें चिकनाई न होना. (चिकित्सा) ठंडी और तर चीजें जैसे, मकोयके पत्ते, छालसाग, बारंग के पत्ते, ईसबगोल इत्यादि लेपकरै, और प्रकृतिके अनुसार, शर्बत, और भोजन देवै, और जो कुछ गर्म और खुश्कमें अलग २ वर्णन हो चुका है वह सब देवें । (सातवें) यहहै कि प्रकृति ठंडी और तर हो । वह सर्दी और तरीके लक्षणोंसे मिली होती है और उस की चिकित्सा गर्मी और खुश्की का पहुंचानाहै, (आठवें) यह है जो सर्द खुश्क हो और उससे तिल्लीमें कड़ापन और गाढ़ापन पैदा होताहै और तिल्ली के कड़ेपन और गाढ़ेपन का वर्णन दूसरे प्रकरणमें किया जायगा और उसके एक २ जुदे भेद से भी जिनका पहले वर्णन हो चुका है इलाज हो सकता है ।

दूसरा भेद तिल्ली की सूजन का वर्णन ।

इसके कई भेद हैं (पहिला) गर्म खूनी, उसके लक्षण, दर्द, जलन, तिल्ली में बोझ प्यास, प्रबल ज्वर, जो कि चौथिया के दौरे की तरह बलवान हो, पेशाब में स्याही, और कभी पेट की खालपर जहां तिल्लीकी जगह है सुर्खाई मालूम होती है, (चिकित्सा) बांये हाथसे बासलीक, या इसहुज्जीरा या बसें

का बढ़ना, उसमें थोड़ा २ दर्द होना, जिव्हा, आंख और मुखका सफेद होना पलकों में भरभराहट होना, मूत्र और विष्ठा सीसेकेसे रंगका होजाना(इलाज) कफके निकालने के लिये गोलियां, क्वाथ और हुकनोंका प्रयोग करें। और जुलाब के पीछे कब्र टिकिया, सभालूकी टिकिया, मजीठकी टिकिया आदि जो तिल्ली के अनुकूलहैं देवें। और तिल्ली की अनुकूल दवाओं का उसपर लेप करें जैसे अगूर की लकडी की राख को रोगन गुलमें मिलाकर अथवा अजीर को सिर्के में औटाकर अथवा सुहागा, अक्लील और तितली को गीली पीसकर और शहद और सिर्के में मिलाकर लेप करें। और इन दवाओंमें से जिनका लेपकरें तो उचितहै कि जितनी देरतक लेपको सहसकें रक्खें और फिर उतारलेवें। और गर्म पानी से जिसमें सोया और गेहूं की भुमी औटाई हो तिल्ली को धोवें और अगर बकरी की मेंगनियों की राख तीन भाग और कब्र की जड की भस्म १ भाग सिर्केमें मिलाकर लेप करें तो बहुत गुणकारक है और बहुत अच्छा इलाज चने का पानी, मुर्गा और चकोर का कबाब और पानी का बहुत कम पीना और सर्दी को बढ़ाने वाली तथा मल को पैदा करने वाली वस्तुओं का त्याग देना है।

जुलाब की गोलियों की विधि।

यह गोलिया इसी रोगपर काम आतीहैं, यथा अफतीमून, असकलीनूस, निसोथ, गारीकून, अयारज, उश्क, इन सबको मेंसे बराबर २ लेकर कूटछानकर शहदमें मिला कर गोलियां बना लेवे और बड़ी हरडके क्वाथमें निसोथ और गारीकून मिलाकर देनाभी लाभदायक है और जो वस्तु तिल्ली को दूर करती हैं उनमें से कबरकी जड़की छाल है और अफतीमूनको इसके बराबर कूट छानकर शहद में मिलावें और दो दिरम की मात्रा देवें (अथवा) सोमनकी जड तुलसी के पत्ते, जिरावन्द लम्बी, अफसन्तीन, इनको कूटछान कर चूर्ण बना लेवें और एक मिस्काल से दो मिस्काल तक सिकंजबीन या मूली के पानीके साथ देवें तो यही गुण करता है और हकीम लोग कहते हैं कि अगर झाऊकी लकड़ी का प्याला बनाकर उसमें भोजन करें और पानी पीवें तो तिल्ली गल जाती है। और शूअर्री कहता है कि अगर कमराज, जूफा, सूखीहुई, सभालूके बीज इन सब का बराबर २ कूटछानकर शहद में मिलाकर माजून बनावें, और दो दिरमकी मात्रा देवें तो तिल्ली पिघल जाती है।

हुकने की विधि।

यह इस रोगमें काम देता है, अजमोद की छाल, कबरी जड़की छाल, सौंफ की जड़

का बढ़ना, उसमें थोड़ा २ दर्द होना, जिव्हा, आंख और मुखका सफेद होना पलकों में भरभराहट होना, मूत्र और विष्ठा सीसेकेसे रंगका होजाना (इलाज) कफके निकालने के लिये गोलियां, क्वाथ और हुकनोंका प्रयोग करें। और जुलाब के पीछे कब्र टिकिया, तमालूकी टिकिया, मजीठकी टिकिया आदि जो तिल्ली के अनुकूलहैं देवें। और तिल्ली की अनुकूल दवाओं का उसपर लेप करें जैसे अगूर की लकड़ी की राख को रोगन गुलमें मिलाकर अथवा अंजीर को सिर्के में औटाकर अथवा सुहागा, अकलील और तितली को गीली पीसकर और शहद और सिर्के में मिलाकर लेप करें। और इन दवाओं में से जिनका लेपकरें तौ उचितहै कि जितनी देरतक लेपको सहसकें रक्खें और फिर उठालेवें। और गर्म पानी से जिसमें सोया और गेहूं की भूसी औटाई हो तिल्ली को धोवें और अगर बकरी की मेंगनियों की राख तीन भाग और कब्र की जड़ की भस्म १ भाग सिर्केमें मिलाकर लेप करें तो बहुत गुणकारक है और बहुत अच्छा इलाज चने का पानी, मुर्गा और चकोर का कबाब और पानी का बहुत कम पीना और बादी को बढ़ाने वाली तथा मल को पैदा करने वाली वस्तुओं का त्याग देना है।

जुलाब की गोलियों की विधि।

यह गोलिया इसी रोगपर काम आतीहैं, यथा अफतीमून, असकलीनूस, निसोथ, गारीकून, अयारज, उश्क, इन प्रत्येक मेंसे बराबर २ लेकर कूटछानकर शहदमें मिला कर गोलियां बना लेवें और बड़ी हरड़के क्वाथमें निसोथ और गारीकून मिलाकर देनाभी लाभदायक है और जो वस्तु तिल्ली को दूर करती हैं उनमें से कब्रकी जड़की छाल है और अफतीमूनको इसके बराबर कूट छानकर शहद में मिलावें और दो दिरम की मात्रा देवें (अथवा) सौसनकी जड़ तुलसी के पत्ते, जिरावन्द लम्बी, अफसन्तीन, इनको कूटछान कर चूर्ण बना लेवें और एक मिश्काल से दो मिश्काल तक सिकंजबीन या मूली के पानीके साथ देवें तो यही गुण करता है और हकीम लोग कहते हैं कि अगर झाऊकी लकड़ी का प्याला बनाकर उसीमें भोजन करें और पानी पीवें तो तिल्ली गल जाती है। और बूअली कहता है कि अगर कबराज, जूफा, सूखीहुई, सभालूके बीज इन सब का बराबर २ कूटछानकर शहद में मिलाकर माजून बनावें और दो दिरमकी मात्रा देवें तो तिल्ली गिर जाती है।

हुकने की विधि।

यह इस रोगमें कामदेता है, अजमोद की छाल, कब्रकी जड़की छाल, सौंफकी जड़

वातनाशक जुलाब का चूर्ण

बड़ी हरड, छोटी हरड, काबली हरड़, प्रत्येक तीन दिरम, निसोथ गुलाब के फूल प्रत्येक १ दिरम, कासनी चार दिरम, कुसूस के बीज, अफसन्तीन, अनीसून, सौंफ प्रत्येक १ मिस्काल, अफतीमून २ दिरम, रेवन्दचीनी दो मिस्काल, इरमनी का पत्थर १ दिरम इन सब दवाओं को कूट छानकर दो दिरम लेकर शर्बत बिजूरी के साथ या कन्द के जुलाब के साथ खाने को देवै और इसके पीछे १ प्याला माउलजोवन पान कराना चाहिये ।

और सूजन को दूर करने के लिये सिर्का, तितली, पोदीना इन सबको तथा उश्क को सिर्के में मिलाकर लेप करे और अगर गेहूं की भुसी सिर्के में औटाकर उसमें उश्क डालकर तिल्ली पर रक्खे तो शीघ्र ही तिल्ली दूर होजाती है । इसलिये क्योंकि भुसी तिल्ली के गला देने में और साफ करने में बहुत शीघ्र काम करती है और उश्क कठोर सूजन के पकाने और मुलायम करने और पिघला देने में अधिक लाभदायक है और सिर्का दवाकी शक्ति पहुंचाने में बहुत लाभदायक है और इसी तरह अगर तिल्ली पर शहत मलें और राई को बारीक पीसकर उस पर छिड़क देवै तो तिल्ली शीघ्र दूर होजाती है । और जुलाब के पीछे सम्हालू की टिकिया, और किब्र की टिकिया का खाना अधिक गुणकारक है (अथवा) अजीर और किबू सिर्के में मिला हुआ लाभदायक है और हकीमों ने कहा है कि तिल्ली वाला प्रति दिन प्रात काल अपने ही मूत्र के तीन घुट पीलिया करै तो दस दिनसे पहलेही अच्छा होजायगा । इस रोग में बहुत उत्तम पथ्य शोरबे हैं जो मुर्गे के बच्चे और तीतर आदि के मांस से बनाये जाते हैं, यह शीघ्र पचजाते हैं और यह भी उचित है कि सब भोजनों में किबू का सिर्का कालाजीरा, केसर और दालचीनी डालें जिससे पूर्ण लाभ होवे ॥

(विशेष द्रष्टव्य) इलाजुलअमराज में लिखा है कि जब तिल्ली की सूजन हवाओं के कारणसे हो तो उस समय भरे पेट पर लेप न करना चाहिये और जो लेप इस तिल्ली की कठोरता को दूर करता है वह यह है यथा इकलील, गूगल, बालछड़ मस्तगीरूमी, प्रत्येक तीन २ दिरम अफसन्तीन रूमी चार दिरम, कड़ुआ दो दिरम गुलाब के फूल तीन दिरम, बाबूनाके फूल १॥ दिरम चिरायता १ मिस्काल इन सब को महीन पीसकर ताजा मकोय के अर्क में और सिर्के में मिलाकर लेप करै ।

वातनाशक जुलाब का चूर्ण

बड़ी हरड, छोटी हरड, काबली हरड़, प्रत्येक तीन दिरम, निसोथ गुलाब के फूल प्रत्येक १ दिरम, कासनी चार दिरम, कुसूस के बीज, अफसन्तीन, अनीसून, सौंफ प्रत्येक १ मिस्काल, अफतीमून २ दिरम, रेवन्दचीनी दो मिस्काल, इरमनी का पत्थर १ दिरम इन सब दवाओं को कूट छानकर दो दिरम लेकर शर्वत विजूरी के साथ या कन्द के जुलाब के साथ खाने को देवे और इसके पीछे १ प्याला माउलजोवन पान कराना चाहिये।

और सूजन को दूर करने के लिये सिर्का, तितली, पोदीना इन सबको तथा उश्क को सिर्के में मिलाकर लेप करे और अगर गेहू की भुसी सिर्के में औटाकर उसमें उश्क डालकर तिल्ली पर रक्खें तो शीघ्र ही तिल्ली दूर होजाती है। इसलिये क्योंकि भुसी तिल्ली के गला देने में और साफ करने में बहुत शीघ्र काम करती है और उश्क कठोर सूजन के पकाने और मुलायम करने और पिघला देने में अधिक लाभदायक है और सिर्का दवाकी शक्ति पहुंचाने में बहुत लाभदायक है और इसी तरह अगर तिल्ली पर शहत मलें और राई को बारीक पीसकर उस पर छिड़क देवें तो तिल्ली शीघ्र दूर होजाती है। और जुलाब के पीछे सम्हालू की टिकिया, और किब्र की टिकिया का खाना अधिक गुणकारक है (अथवा) अजीर और किबू सिर्के में मिला हुआ लाभदायक है और हकीमों ने कहा है कि तिल्ली वाला प्रति दिन प्रात काल अपने ही मूत्र के तीन घुट पीलिया करे तो दस दिनसे पहलेही अच्छा होजायगा। इस रोग में बहुत उत्तम पथ्य शोरवे हैं जो मुर्गे के बच्चे और तीतर आदि के मांस से बनाये जाते हैं, यह शीघ्र पचजाते हैं और यह भी उचित है कि सब भोजनों में किबू का सिर्का कालाजीरा, केसर और दालचीनी डालें जिससे पूर्ण लाभ होवे॥

(विशेष द्रष्टव्य) इलाजुलअमराज में लिखा है कि जब तिल्ली की सूजन हवाओं के कारणसे हो तो उस समय भरे पेट पर लेप न करना चाहियें और जो लेप इस तिल्ली की कठोरता को दूर करता है वह यह है यथा इफएलि. गूगल. बालछड़ मस्तगीरूमी, प्रत्येक तीन २ दिरम अफसन्तीन रूमी चार दिरम, कडुआ दो दिरम गुलाब के फूल तीन दिरम, बाबूना के फूल १॥ दिरम चिरायता १ मिस्काल इन सब को महीन पीसकर ताजा मकोय के अर्क में और सिर्के में मिलाकर लेप करें।

(चिकित्सा)तिल्ली की पुष्टता के लिये प्रबल लेपोंका प्रयोगकरै और रोगीसे शारीरिक परिश्रम करावैं और तिल्ली पर सादा सींगिया तुड़वावैं। तथा खुरखुरे कपड़े से तिल्ली को मलें इससे तिल्ली को बल पहुंचता है। तथा अन्य रोग जो तिल्ली की निर्बलता के साथ होते हैं उनका इलाज उन्ही रोगों के अनुसार करैं।

तिल्ली को बल देने वाले लेपकी विधि।

अफ़सन्तीन, बालछड़, करूपाना अजखर, किब्रकी जड़, गुलार के फूल गगल फ़ुकाह, इनको झाऊके पत्तों के पानी में वा सुतली में मिलाकर सिर्का डालकर लेप करे।

पांचवां भेद तिल्लीकी गांठों का वर्णन

गाढ़े मवादके इकट्ठे होजानेसे तिल्ली में गांठ पड़जाती है। इसके लक्षण यह हैं कि तिल्ली में भारापन मालूम होता है परन्तु सूजन दिखाई नहीं देती है। फिर अगर गांठ उस रास्ते में है कि जिसमें से बादी कलेजे से तिल्ली में जाती है तो काला पीलिया रोग पैदा होजाताहै और दूसरे वातज रोग भी पैदा होजाते हैं और जो उसमार्ग में गांठ है कि जिस मार्ग से बादी तिल्ली से आमाशय के मुखपर आती है तो भूखजाती रहती है और व्यर्थ मल के इकट्ठे होजानें से तिल्ली में कठोर सूजन पैदा होजाती है (इलाज) जो कुछ कलेजे की गांठ में वर्णन किया गया है उसी को यहां पर काम में लावे परन्तु गांठ को खोलने वाली दवाओं में से जो बहुत प्रबल हों उन को काम में लावे, क्योंकि गांठ दूर पर होती है और मल बिगड़ा हुआ होता है और इस जगह सिकंजबीन निजूरी और टिकिया काम में लावे और ऐसा ही गुलाब, सौंफ, अजवायन, मकोय मिश्री में बना कर देवें। (विशेष द्रष्टव्य) नीचे लिखा हुआ जुल्लाब इस रोग में बहुत गुणकारक है। यथा अजमोद के बीज, सौंफ, अजखर, करास, तितलीके बीज, इनको सौंफ के अर्कमें भिगोकर मलकर और छानकर तथा मिश्री मिलाकर पीवैं

दूसरी विधि–किब्र की जड़ की छाल और अफ़तीमून दोनों को बराबर लेकर पीसलवैं और तिगुने शहद में मिलावैं।

छटा भेद तिल्ली के फूलजाने का वर्णन।

यह तिल्ली की सूजन हवाओं के कारणसे होती है और तिल्ली की सर्दी तथा बादी की अधिकतासे उत्पन्न होतीहै तथा पाचक, और निस्सारक

(चिकित्सा) तिल्ली की पुष्टता के लिये प्रबल लेपोंका प्रयोगकरे और रोगीसे शारीरिक परिश्रम करावें और तिल्ली पर सादा सींगिया तुड़वावें। तथा खुरखुरे कपड़े से तिल्ली को मलें इससे तिल्ली को बल पहुंचता है। तथा अन्य रोग जो तिल्ली की निर्बलता के साथ होते हैं उनका इलाज उन्हीं रोगों के अनुसार करें।

तिल्ली को बल देने वाले लेपकी विधि।

अफ़सन्तीन, बालछड़, करफ़्स, नाना अजखर, किब्रकी जड़, गुलाब के फूल गगल फ़ुक़ाह, इनको झाऊके पत्तों के पानी में वा तुतली में मिलाकर सिर्का डालकर लेप करे।

पाचवा भेद तिल्लीकी गाठों का वर्णन

गाढ़े मवादके इकट्ठे होजानेसे तिल्ली में गाठ पड़जाती है। इसके लक्षण यह हैं कि तिल्ली में भारापन मालूम होता है परन्तु सूजन दिखाई नहीं देती है। फिर अगर गाठ उस रास्ते में है कि जिसमें से बादी कलेजे से तिल्ली में जाती है तो काला पीलिया रोग पैदा होजाता है और दूसरे वातज रोग भी पैदा होजाते हैं और जो उसमार्ग में गाठ है कि जिस मार्ग से बादी तिल्ली से आमाशय के मुखपर आती है तो भूखजाती रहती है और व्यर्थ मल के इकट्ठे होजाने से तिल्ली में कठोर सूजन पैदा होजाती है (इलाज) जो कुछ कलेजे की गाठ में वर्णन किया गया है उसी को यहां पर काम में लावे परन्तु गाठ को खोलने वाली दवाओं में से जो बहुत प्रबल हों उन को काम में लावे, क्योंकि गांठ दूर पर होती है और मल बिगड़ा हुआ होता है और इस जगह सिकंजबीन निजूरी और टिकिया काम में लावे और ऐसा ही गुलाब, सौंफ, अजवायन, मकोय मिश्री में बना कर देवें। (विशेष दृष्टव्य) नीचे लिखा हुआ जुलाब इस रोग में बहुत गुणकारक है। यथा अजमोद के बीज, सौंफ, अनख़र, कासम, तितलीके बीज, इनको सौंफ के अर्कमें भिगोकर मलकर और छानकर तथा मिश्री मिलाकर पीवें

दूसरी विधि–किब्र की जड़ की छाल और अफ्तीमून दोनों को बराबर लेकर पीसलवें और तिगुने शहद में मिलावें।

छटा भेद तिल्ली के फूलजाने का वर्णन।

यह तिल्ली की सूजन हवाओं के कारणसे होती है और तिल्ली की सर्दी तथा बादी की अधिकतासे उत्पन्न होतीहै तथा पाचक, और निस्सारक

जो कुछ उसमें आता है उसमें से साफ जल्दी से कलेजे की ओर खिचजाता है दूसरी बात यह है कि पित्ते का मार्ग भी इसी में खुला हुआ है और वह पित्तज पित्ते में से मल के धोने के लिये आंतों में आता है तो पहिले साइम मर जाता है और तेज तथा निर्मल होनेके कारण और बिना किसी प्रकारके मल से मिलने के कारण जो कुछ उसे मिलता है उसे शीघ्र ही धो डालता है इन दो कारणों से यह आंत प्राय॰ खाली रहती है और यह आंत बीमारीकी दशा में बहुत तग और इकट्ठी हो जाती है और उसके पीछे इफ्तीक है यह सब आंतों से पतली और लम्बी है और उसमें रेशे, पेच और टेढ़ापन बहुत है और उसकी लम्बाई और टेढ़ेपन से यह गुण है कि उसमें मल देरतक रहे और जल्दी न निकले इस कारण से जो कुछ उसमें निर्मल अन्न है उसे मासारीका ग्रहण कर ले और देर तक उसमें रहने से आदमी को जल्दी २ भोजन करने की इच्छा न हो उसके पीछे ऐवर है। इसे ऐवर इस कारण से कहते हैं कि उसमें एक मार्ग से अधिक मार्ग नहीं है और जो कुछ उसमें इस मार्ग के द्वारा जाता है फिर उसी मार्ग से उलटा फिर आता है और यह आंत थैली की सूरत की है और दाहिनी तरफ अधिक झुकी हुई है और पीठकी ओर कम है और उसमें एकमार्ग होनेका यह लाभ है कि उसमें अधिक फोक रुका रहे इस कारणसे आदमीको हर घड़ी मलविसर्जनकी इच्छा न रहे और यह आंत दूसरी गिलाज आंतोंसे ऐसा मेल रखती है जैसे आमाशय पतली आंतों से रखता है क्योंकि जो कुछ आमाशय में अच्छी तरह नहीं पचता है दूसरी गर्मी से पच जाता है और इसी कारणसे कलेजेकी ओर काला दक्षिण भाग अधिक झुका हुआ है जिससे उसमें जो कुछ है वह कलेजेकी गर्मीसे अच्छी तरह पकजाय, और फितक के रोगमें बहुधा यही आंत अण्डकोषों में उतर आती है क्योंकि यह किसी पट्ठेसे बधी हुई नहीं है उसके पीछे कालूनहै बहुधा कुलज का दर्द उसमें उत्पन्न होता है और यह शब्द कूल्न फोलून से बनाया गया है ॥ कोलून आंत बहुत मोटी है यह पहिले दाहिनी तरफ झुककर फिर बाई तरफ आकर नीचे की तरफ झुक गई है और बाईं रान के पुट्ठे तक पहुंची है और फिर दाहिनी तरफ फिर गई है और हड्डी के अन्तिम सिरे के बराबर होकर नीचे की तरफ आकर मुस्तकीम में जामिली है और यहां कि बाई तरफ आई है यहीं तिल्ली के पास पतली होगई है यही कारण है कि तिल्ली की मूजम में मल और हवा सुगमता से नहीं आती है और इसके

जो कुछ उसमें आता है उसमें से साफ जल्दी से कलेजे की ओर खिचजाता है दूसरी वात यह है कि पित्ते का मार्ग भी इसी में खुला हुआ है और वह पिचज पित्ते में से मल के धोने के लिये आंतों में आता है तो पहिले साइम भर जाता है और तेज तथा निर्मल होनेके कारण और बिना किसी प्रकारके मल से मिलने के कारण जो कुछ उसे मिलता है उसे शीघ्र ही धो डालता है इन दो कारणों से यह आंत प्राय: खाली रहती है और यह आंत बीमारीकी दशा में बहुत तंग और इकट्ठी हो जाती है और उसके पीछे दकीक है यह सब आंतों से पतली और लम्बी है और उसमें रेशे, पेच और टेढ़ापन बहुत है और उसकी लम्बाई और टेढ़ेपन से यह गुण है कि उसमें मल देरतक रहे और जल्दी न निकले इस कारण से जो कुछ उसमें निर्मल अंश है उसे मासारीका ग्रहण कर ले और देर तक उसमें रहने से आदमी को जल्दी २ भोजन करने की इच्छा न हो उसके पीछे ऐवर है। इसे ऐवर इस कारण से कहते हैं कि उसमें एक मार्ग से अधिक मार्ग नहीं है और जो कुछ उसमें इस मार्ग के द्वारा जाता है फिर उसी मार्ग से उलटा फिर आता है और यह आंत थैली की सूरत की है और दाहिनी तरफ अधिक झुकी हुई है और पीठकी ओर कम है और उसमें एक मार्ग होनेका यह लाभ है कि उसमें अधिक फोक रुका रहे इस कारण से आदमीको हर घड़ी मलविसर्जनकी इच्छा न रहे और यह आंत दूसरी गिलाज आंतोंसे ऐसा मेल रखती है जैसे आमाशय पतली आंतों से रखता है क्योंकि जो कुछ आमाशय में अच्छी तरह नहीं पचता है दूसरी गर्मी से पच जाता है और इसी कारणसे कलेजेकी ओर काला दक्षिण भाग अधिक झुका हुआ है जिससे उसमें जो कुछ है वह कलेजेकी गर्मीसे अच्छी तरह पकजाय, और फितक के रोगमें बहुधा यही आंत अण्डकोषों में उतर आती है क्योंकि यह किसी पट्ठेसे बंधीहुई नहीं है उसके पीछे कालून है बहुधा कुलन्ज का दर्द उसमें उत्पन्न होता है और यह शब्द कूलन्ज कोलन से बनाया गया है ॥ कोलून आंत बहुत मोटी है यह पहिले दाहिनी तरफ झुककर फिर बाईं तरफ आकर नीचे की तरफ झुक गई है और बाईं रान के पुतड़े तक पहुंची है और फिर दाहिनी तरफ फिर गई है और हड्डी के अन्तिम सिरे के बराबर होकर नीचे की तरफ आकर मुस्तकीम में जामिली है और यही कि बाईं तरफ आई है यहीं तिल्ली के पास पतली होगई है यही कारण है कि तिल्ली की मूसम में मल और हवा सुगमता से नहीं आती है और इसके

पहिला भेद आतों के खूनी दस्तों का वर्णन ।

ये दस्त आंतों की रगोंके मुख खुलनेसे होत हैं और इनके भी दो भेद हैं एकतो यह कि गिलाज नामक रगों की आंत खुल जांय, उसका यह लक्षण है कि प्रत्येकवार दस्त में मिलाहुआ रुधिर आवे और फिर केवल विष्ठा निकले और बवासीरके भी कोई लक्षण नहीं, जैसे गुदामें दर्द भारापन और खुजली और विष्ठाके पीछे रुधिर की बूंदों का आना और इससे पहिले विष्ठामें मिल कर न आना दूसरी बात यहहै कि दकाक नामी रगों के मुख खुलजांय, इस के ये लक्षणहैं कि प्रत्येक बार पहिले विष्ठा होवे उसके पीछे रुधिर में मिला-हुआ हो तथा दर्द मरोड़ा और कलेजे के दस्तोंके चिन्ह जैसे बारीसे रुधिर का आना और रुधिरका मांसधोवनसा धोवनहोजाय या केवल रुधिरही आवैऔरइस के सिवाय जो कुछ उचितहै और जुसन्तारिया कबदीमें कहचुकेहैं वह बिलकुल प्रगट नहो (चिकित्सा) अगर रुधिर अधिक है और बल भी है तो बासलीक का फस्द खोलें,उसके पीछे दस्तों के रोकने के लिये रीवासकासत,इस्बगोलास का सत, सेवका मुरब्बा नासपाती का मुरब्बा, बंसलोचनकी दस्तबन्द करने वाली और कहरवाकी टिकिया आदि देवे। और अगर नीचेकी आंतोंमें रोगहो तो कब्ज करने वाली दवाओं से हुकना करें और उचित यहहै कि अफीम आदि नशालाने वाली चीज न देवें क्योंकि उसमें बड़ा डर होता है और अगर बहुत आवश्य-कता हो तो बत्ती की रीति से प्रयोग करे विशेष करके उस मनुष्य के लिये जिसकी नाड़ी कम चलती हो और अगर उससे काम न चले और दवा पीने की आवश्यकता हो तो जबतक अफीम को जुन्दबेदस्तर और केसर के साथ न मिलायें तबतक न देवें और इसरोग में गिलेअर्मनी आधा दिरम शर्बत इस्बगोलास और शर्बत इन्जुवार के साथ अधिक लाभदायक है और नीचे लिखी गोली परीक्षाकी हुई हैं अनारका छिलका,कलमाजू गिलेअरमनी प्रत्येक बराबरले इसकी मात्रा दोदिरमहै और पेटपर गर्म लोटा लगाना और चार घड़ी रखना दस्तोंके रोकने में गुणकारक है और जो कुछ अफीम को बिना केसर और जुदेबे दस्तर के काम में लाने को कहा गया है यह सावधानी के लिये है नहीं तो बहुधा अफीम की गोलियां बिना केसर और जुदेबेदस्तर के भी दीगई है और कोई हानि नहींहुई है । (लाभ) प्रगट होकि इस भेद में कब्ज करनेवाली दवाओं के हुकने से नीचे लिखी हुए हुकने का ग्रहण है उसकी विधि यह है धानरा कुटा हुआ गुलनार, निसास्ता, मसूर छिली हुई, चावल, बबूल

पहिला भेद आतों के खूनी दस्तों का वर्णन ।

ये दस्त आंतों की रगोंके मुख खुलनेसे होत हैं और इनके भी दो भेद हैं एकतो यह कि गिलाज नामक रगों की आंत खुल जांय. उसका यह लक्षण है कि प्रत्येकवार दस्त में मिलाहुआ रुधिर आवे और फिर केवल विष्ठा निकले और बवासीरके भी कोई लक्षण नहीं, जैसे गुदामें दर्द भारापन और खुजली और विष्ठाके पीछे रुधिर की बूदों का आना और इससे पहिले विष्ठामें मिल कर न आना दूसरी बात यहहै कि दकाक नामी रगों के मुख खुलजांय. इस के ये लक्षणहैं कि प्रत्येक बार पहिले विष्ठा होवे उसके पीछे रुधिर में मिला-हुआ हो तथा दर्द मरोड़ा और कलेजे के दस्तोंके चिन्ह जैसे बारीसे रुधिर का आना और रुधिरका मांसकासा धोवनहोजाय या केवल रुधिरही आवेऔरइस के सिवाय जो कुछ उचितहै और जुसन्तारिया कवदीमें कहचुकेहैं वह बिलकुल प्रगट नहो (चिकित्सा) अगर रुधिर अधिक है और बल भी है तो बासलीक का फस्द खोलैं,उसके पीछे दस्तों के रोकने के लिये रीवासकासत,इस्बगोल का सत, सेवका मुरब्बा नाशपाती का मुरब्बा, बंसलोचनकी दस्तबन्द करने वाली और कहरवाकी टिकिया आदि देवें। और अगर नीचेकी आंतोंमें रोगहो तो कब्ज करने वाली दवाओं से हुकना करै और उचित यहहै कि अफीम आदि नशालाने वाली चीज न देवें क्योंकि उसमें बड़ा डर होता है और अगर बहुत आवश्य-कता हो तो बत्ती की रीति से प्रयोग करै विशेष करके उस मनुष्य के लिये जिसकी नाड़ी कम चलती हो और अगर उससे काम न चले और दवा पीने की आवश्यकता हो तो जबतक अफीम को जुन्दबेदस्तर और केसर के साथ न मिलायें तबतक न देवें और इसरोग में गिलेअर्मनी आधा दिरम शर्बत इस्बगोल और शर्बत इन्जुबार के साथ अधिक लाभदायक है और नीचे लिखी गोली परीक्षाकी हुई हैं अनारका छिलका,फनमाजू गिलेअरमनी प्रत्येक बराबरले इसकी मात्रा दोदिरमहै और पेटपर गर्म लोटा लगाना और चार घड़ी रखना दस्तोंके रोकने में गुणकारक है और जो कुछ अफीम को बिना केसर और जुदेबे दस्तर के काम में लाने को कहा गया है यह सावधानी के लिये है नहीं तो बहुधा अफीम की गोलियां बिना केसर और जुदेबेदस्तर के भी दीगई है और कोई हानि नहींहुई है । (लाभ) प्रगट होकि इस भेद में कब्ज करनेवाली दवाओं के हुकने से नीचे लिखे हुए हुकने का वर्णन है उसकी विधि यह है मानरा कुटा हुआ गुलनार, निसास्ता, मसूर छिली हुई, चांवल, बकाय

छिद्रके द्वारा निकल कर पेटमें इकट्ठा होजाता है और कभी मल के इकट्ठे होने से पेट बहुत बढ़जाता है जैसा जलोदरमें होता है और बहुधा इससे पहिले मौत आजाती है और जबकि आंतों में से मद्य की सी गाद निकलने लगे तो मृत्यु की सूचना करती है । (लाभ) पित्त के लक्षण ये हैं रंगत का पीलापन, मुख का कड़वापन और प्यास की अधिकता जिव्हामें खुरखरापन, विष्ठा में पित्तका निकलना, विष्ठाके समय जलनका होना, भूखका न होना और आंतोंमें जलन और चुभन का होना आदि (इलाज) अगर अभी तक पित्त गिरता हो तो उसको पहिले रोकदें क्योंकि वही मरोड़का कारणहै और उसकी यह रीतिहै कि खट्टे रुब्ब देवे जैसे अनार का रुब्ब, रीवास का रुब्ब आदि और भोजन में खट्टे अंगूर का पानी मिलाकर देवे और अगर दोष दिल, जिगर वा दिमाग में हो तो उसको दूर करनेका प्रयत्न करे और उसके अनुसार औषधोंसे विरेचन करावे और जब कारण दूर होजावे तो मरोड़े की चिकित्सा पर ध्यान दें और उस की यह विधि है कि ठंडे लुआबदार बीज भूनकर दें और चेपदार चीजें जैसे सफूफ मुकलियासा इत्यादि काम में लावें और ठंडी चेपदार चीजों से हुकना करें जिससे यह आंतों के भीतर चिपट जाय और उनकी रगों के मुख बन्द करदे । और जानना चाहिये कि ऊपर की आंतों में मरोड़ हो तो पीने की दवाओं का अधिक गुण है और जो नीचे की आंतों में हो तो हुकना जल्दी गुण करताहै क्योंकि दवाका असर रोगके स्थानमें जल्दी पहुंचता है ।

सफूफ मुकलियासा की विधि ।

ईसबगोल बीस दिरम, रेहान के बीज, कनोचे के बीज, बारतंग, अर्बी गोंद, गिले अर्मनी, खसखस के बीज प्रत्येक १५ दिरम, चूके के बीज, कुर्फ निशास्ता प्रत्येक ७ दिरम इनमें से बीजों को भून ले और इनके सिवाय सब दवाओं को कूट कर मिलावे और आवश्यकता के अनुसार ठंडे पानी के साथ देवे । मुकलियासा यूनानी शब्द है इसके दो अर्थ हैं एक तो सफूफ कुर्स यहां इसी का ग्रहण है और दूसरे हब्बुल रशाद को भी कहते हैं इस लिये जिस सफूफ में हब्बुल रशाद हो वह मुकलियासा कहलाता है ।

कब्ज करने वाले हुकने की विधि ।

भुने जौ का आटा, चावल, मसूर छिली हुई, गुलनार, अनार का छिलका, हब्बुलआस, प्रत्येक बराबर लेकर उबाल कर छानलें और अर्बी गोंद, निशास्ता दम्मुल अखवैन, रिब्ब तुर्बीस का रसवत, जलाहुआ कागज, भुनी हुई सीपी कांसा बारीक करके मिलावे और बकरी के गुर्दे की चर्बी तथा अंडे की जर्दी मिला कर हुकना करे ।

छिद्रके द्वारा निकल कर पेटमें इकट्ठा होजाता है और कभी मल के इकट्ठे होने से पेट बहुत बढ़जाता है जैसा जलोदरमें होता है और बहुधा इससे पहिले मौत आजाती है और जबकि आंतों में से मद की सी गाद निकलने लगे तो मृत्यु की सूचना करती है । (लाभ) पित्त के लक्षण ये हैं रंगत का पीलापन, मुख का कड़वापन और प्यास की अधिकता जिव्हामें शूखापन, विष्ठा में पित्तका निकलना, विष्ठाके समय जलनका होना, भूखका न होना और आंतोंमें जलन और चुभन का होना आदि (इलाज) अगर अभी तक पित्त गिरता हो तो उसको पहिले रोकदें क्योंकि वही मरोड़का कारणहै और उसकी यह रीतिहै कि खट्टे रुब्ब देवे जैसे अनार का रुब्ब, रीवास का रुब्ब आदि और भोजन में खट्टे अंगूर का पानी मिलाकर देवे और अगर दोष दिल, जिगर वा दिमाग में हो तो उसको दूर करनेका प्रयत्न करें और उसके अनुसार औषधोंसे विरेचन करावें और जब कारण दूर होजावे तो मरोड़े की चिकित्सा पर ध्यान दें और उस की यह विधि है कि ठंडे लुआबदार बीज भूनकर दें और चेपदार चीजें जैसे सफूफ मुकलियासा इत्यादि काम में लावें और ठंडी चेपदार चीजों से हुकना करें जिससे वह आंतों के भीतर चिपट जाय और उनकी रगों के मुख बन्द करदे । और जानना चाहिये कि ऊपर की आंतों में मरोड़ हो तो पीने की दवाओं का अधिक गुण है और जो नीचे की आंतों में हो तो हुकना जल्दी गुण करताहै क्योंकि दवाका असर रोगके स्थानमें जल्दी पहुंचता है ।

सफूफ मुकलियासा की विधि ।

ईसबगोल बीस दिरम, रेहान के बीज, कनोचे के बीज, बारतंग, अर्बी गोंद, गिले अर्मनी, खसखस के बीज प्रत्येक १५ दिरम, चूके के बीज, कुर्स निशास्ता प्रत्येक ७ दिरम इनमें से बीजों को भून ले और इनके सिवाय सब दवाओं को कूट कर मिलावे और आवश्यकता के अनुसार ठंडे पानी के साथ देवे । मुकलियासा यूनानी शब्द है इसके दो अर्थ हैं एक तो सफूफ मुजरी यहां इसी का ग्रहण है और दूसरे हब्बुल रशाद को भी कहते हैं इस लिये जिस सफूफ में हब्बुल रशाद हो वह मुकलियासा कहलाता है ।

कब्ज करने वाले हुकने की विधि ।

भुने जौ का आटा, चांवल, मसूर छिली हुई, गुलनार, अनार का छिलका, हब्बुलास, प्रत्येक बराबर लेकर उबाल कर छानलें और अर्बी गोंद, निशास्ता दम्मुल अखवैन, सिब्र तुर्बीत का ठसलाग, जलाहुआ कागज, जली हुई सीपी कांसा बारीक करके मिलावे और बकरी के गुर्दे की चर्बी तथा अंडे की जर्दी मिला कर हुकना करे ।

गाढ़े मलको खींच लेता है और इससे आंत छिलजाती है और उसका (लक्षण) यह है कि प्रथम इसी कफके दस्तआते हैं और हवा तथा गुड़गुड़ाहट अधिकता से होती है और मल तथा रुधिर के साथ कफ निकलता है और आंतों में भारापन तथा दर्द भी हो और वह दर्द नाभि से ऊपरही रहे और मन्द २ हुआ करता है। तथा कफ के अन्य लक्षण भी इसके साथ हों और ये दस्त बहुधा नजले और जुकाम के पीछे हुआ करते हैं और एक महीने में आंतों में घाव करदेते हैं (चिकित्सा) प्रथम रोग के हेतु को दूर करदेवे और मलको बढ़ाने से रोके फिर छिलन के लिये चेपदार वस्तु जैसे रेहाके बीज जंगली तुलसी के बीज वारतंग, इत्यादि देवे (अथवा) छोटी हरड़ को घी में भूनकर कूटछानकर १ दिरम के प्रमाण में बराबर का सफेद कन्द मिलाकर खाने को देवे तो बहुत ही गुणकारक है। (हुकना) इक्लीलास, अनार के छिलके, बबूल की छाल, इन सब को पानी में गरम करके और छानकर और फिटकरी तथा जला हुआ कागज और केसर, जस्तका सफेदा इन सब को महीन पीसकर उस में मिलाकर हुकना करे और मिलाने की दवाओं का प्रमाण औटानेवाली दवाओं की अपेक्षा एक तिहाई चाहिये और दवा तथा उसके प्रमाण की न्यूनता और अधिकता वैद्य की सम्मति पर निर्भर है उसे उचित है कि रोगी की दशा के अनुसार प्रयोग करे। और जब दर्द बहुत होता हो और रोगी को बेचैनी बहुत हो और आंतों में ऐंठन अधिक होती हो तो इस हुकने में आधे चने की बराबर अफीम मिला देने से दर्द उसी समय ठहर जाता है।

तीसरा भेद यह है कि यानी आंतों पर गिरे और [illegible] आंतें छिलजांय [illegible] तो जान लेवे कि यह छिलन जलेहुये सौदा से हुआ क[illegible] [illegible] यह [illegible] बुरी है और सब हकीम लोग कहते हैं कि इससे आंतों [illegible] घाव हो[illegible]
(लक्षण) पेटमें सदा पोचिश रहती [illegible] बेचैनी की अ[illegible] [illegible]
और विष्ठा के साथ मांदा आवे [illegible]
सहत होता है और इस [illegible]
और वह यानी जिसमें यह [illegible] जब [illegible]
इसकी खराई से फदफदा आ[illegible] है [illegible]
होते हैं। (इलाज) इसमें प्रथम [illegible] दूर
[illegible] फिर इन वस्तुओं में गिल्ली [illegible]

गाढ़े मलको खींच लेता है और इससे आंत छिलजाती है और उसका (लक्षण) यह है कि प्रथम इसी कफके दस्तआते हैं और हवा तथा गुड़गुड़ाहट अधिकता से होती है और मल तथा रुधिर के साथ कफ निकलता है और आंतों में भारापन तथा दर्द भी हो और वह दर्द नाभि से ऊपरही रहे और मन्द २ हुआ करता है। तथा कफ के अन्य लक्षण भी इसके साथ हों और ये दस्त बहुधा नजले और जुकाम के पीछे हुआ करते हैं और एक महीने में आंतों में घाव करदेते हैं (चिकित्सा) प्रथम रोग के हेतु को दूर करदेवे और मलको बढ़ाने से रोके फिर छिल्लन के लिये चेपदार वस्तु जैसे रेहांके बीज जंगली तुलसी के बीज वारतंग, इत्यादि देवे (अथवा) छोटी हरड़को घीमें भूनकर कूटछानकर १ दिरम के प्रमाण में बराबर का सफेद कन्द मिलाकर खाने को देवे तो बहुत ही गुणकारक है। (हुकना) इक्लुलास, अनार के छिलके, बलूत की छाल, इन सब को पानी में गरम करके और छानकर और फिटकरी तथा जला हुआ कागज और केसर, जस्तका सफेदा इन सब को महीन पीसकर उस में मिलाकर हुकना करे और मिलाने की दवाओं का प्रमाण औटानेवाली दवाओं की अपेक्षा एक तिहाई चाहिये और दवा तथा उसके प्रमाण की न्यूनता और अधिकता वैद्य की सम्मति पर निर्भर है उसे उचित है कि रोगी की दशा के अनुसार प्रयोग करे। और जब दर्द बहुत होता हो और रोगी को बेचैनी बहुत हो और आंतों में ऐंठन अधिक होती हो तो इस हुकने में आधे चने की बराबर अफीम मिला देने से दर्द उसी समय ठहर जाता है।

तीसरा भेद यह है कि वादी आंतों पर गिरे और [illegible] आंतें छिलजांय तो जान लेवे कि यह छिल्लन जलेहुये सौदामें हुआ क[illegible] यह चुभती है और सब हकीम लोग कहते हैं कि इससे आंतों [illegible] घाव होते [illegible] (लक्षण) पेटमें सदा पीनिश रहती [illegible] बेचैनी की अ[illegible] और विष्ठा के साथ सौदा आवे [illegible] [illegible] सदच होता है और इस [illegible] और वह वादी जिसमें यह [illegible] जब [illegible] उसकी खराई से पटपटा आ[illegible] है [illegible] होती है। (इलाज) इसमें प्रथम [illegible] दूर [illegible] फिर इन वस्तुओं में मिली [illegible]

दस्तों के कारण से जो खुर्सट पैदा होती है वह यातो-दवा की तीक्ष्णता से होती है जो किसी अवयव से आंतों पर आवे और यह खुरसट औरों की अपेक्षा सुसाध्य है। यह प्रायः चारदिन से अधिक नहीं रहती है यदि रोगी किसी प्रकार का खाने पीने में कुपथ्य न करे। (इलाज) इसरोग में ठंडी कब्ज करने वाली चीजें देवै जैसे सफूफुचीन और मुकलिआसा आदि। (अथवा) केवल खट्टे दही में गर्म लोहा बुझाकर देना सबसे उत्तम है। अथवा चांवल के साथ खाने को देवै और जान लेना चाहिये कि जो खुर्सट कठिन रोगों के पीछे होजाती है उसमें रोगी कम बचता है।

सफूफुचीन की विधि।

ईसबगोल, रेहां के बीज, कनौंचे के बीज, निशास्ता, चूके के बीज भुने हुए अर्बी गोंद गिलेअर्मनी, बंसलोचन, इन सब को बराबर लेकर इनमें से बीजों के सिवाय सबको महीन पीस कर बादाम रौंगन या गुल रौगन में सान कर तथा गुलाव में तर कर के २ दिरम या कमती बढ़ती खाने को देवैं (विशेष द्रष्टव्य) इस नुसखे में दवाओं के कम बढ़ करने तथा बीजों के भूनने न भून ने का काम हकीम की बुद्धिपर निर्भर है।

तीसरा प्रकर्ण आंतों में से पीव और पानी निकलने के विषयमें।

इस के दो भेद हैं, एक तो यह है कि आंतों की सूजन में पीव पड़ कर सूजन फूटजाय, दूसरी यह कि आंतों के छिलने से घाव होजाय औ ये बातें प्रायः गलाज नाम वाली आंतों में होती है और यह रोग भी साध्य है, तथा यह दकाक नाम वाली आंतों में कम होता है यदि पैदा होजाता है तो दुस्साध्य होता है क्योंकि यह आमाशय और कलेजे के निकट है, विशेष करके यदि वह घाव साइम में हो और क्योंकि सायम बहुत ही पतली होती है। आंतोंसे पीव आने के ये लक्षण हैं कि उस में प्रथम से ही सूजन हो वा खुर्सट हो और प्रत्येक के भिन्न २ लक्षण दिखाई देते हैं। (इलाज) प्रथम ही आंतोंकी सफाई के लिये नर्म करने वाली दवाओं से हुकना करें।

हुकने की विधि।

सिमाक, अनार के छिलके, मसूर, चांवल, जौ इनको अधकूटे कर के पानीमें औटा कर साफ करें और थोड़ा सा तिना धुला भुना मिलाकर हुकना करें और यदि निकम्मा तथा दुर्गन्ध युक्त पीव निकले तो घावका कारण समझो और 'मूजिज' का ग्रन्थकार लिखता है कि विष्टे में छिलके आदि के निकलने

दस्तों के कारण से जो खुर्सट पैदा होती है वह यातो दवा की तीक्ष्णता से होती है जो किसी अवयव से आंतों पर आवै और यह खुरसट औरों की अपेक्षा सुसाध्य है। यह प्रायः चारदिन से अधिक नहीं रहती है यदि रोगी किसी प्रकार का खाने पीने में कुपथ्य न करे। (इलाज) इसरोग में ठेही कब्ज करने वाली चीजें देवै जैसे सफूफ़ुचीन और मुकल्लिआसा आदि। (अथवा) केवल खट्टे दही में गर्म लोहा बुझाकर देना सबसे उत्तम है। अथवा चांवल के साथ खाने को देवै और जान लेना चाहिये कि जो खुर्सट कठिन रोगों के पीछे होजाती है उसमें रोगी कम बचता है।

सफूफ़ुचीन की विधि।

ईसबगोल, रेहां के बीज, कनोंचे के बीज, निशास्ता, चूके के बीज भुने हुए अर्बी गोंद गिलेअर्मनी, बंशलोचन, इन सब को बराबर लेकर इनमें से बीजों के सिवाय सबको महीन पीस कर बादाम रौगन वा गुल रौगन में सान कर तथा गुलाब में तर कर के २ दिरम या कमती बढ़ती खाने को देवै (विशेष द्रष्टव्य) इस नुसखे में दवाओं के कम बढ़ करने तथा बीजों के भूनने न भूनने का काम हकीम की बुद्धिपर निर्भर है।

तीसरा प्रकर्ण आंतों में से पीव और पानी निकलने के विषयमें।

इस के दो भेद हैं, एक तो यह है कि आंतों की सूजन में पीव पड़ कर सूजन फूटजाय, दूसरी यह कि आंतों के छिलने से घाव होजाय औ ये बातें प्रायः गलाजा नाम वाली आंतों में होती है और यह रोग भी साध्य है, तथा यह दकाक नाम वाली आंतों में कम होता है यदि पैदा होजाता है तो दुस्साध्य होता है क्योंकि वह आमाशय और कलेजे के निकट है, विशेष करके यदि वह घाव साइम में हो और क्योंकि सायम बहुत ही पतली होती है। आंतोंसे पीव आने के ये लक्षण हैं कि उस में प्रथम से ही सूजन हो वा खुर्सट हो और प्रत्येक के भिन्न २ लक्षण दिखाई देते हैं। (इलाज) प्रथम ही आंतोंकी सफाई के लिये नर्म करने वाली दवाओं से हुकना करें।

हुकने की विधि।

सिमाक, अनार के छिलके, मसूर, चांवल, जौ इनको अधकूटे कर के पानीमें औटा कर साफ करें और थोड़ा सा दिना हुआ भूना मिलाकर हुकना करै और यदि निकम्मा तथा दुर्गन्ध युक्त पीव निकले तो घाबरा कारण समझो और 'मूजिज' का ग्रन्थकार लिखता है कि विष्टे में छिलके आदि के निकलने

गुणकारक है और जहां कहीं भोजन की अत्यन्त आवश्यकता हो तो औंकी भुमी मिलेहुए चूनका शीरालें और इसे दूधमें पकाकर और मिश्री मिलाकर देवें और बकरी के पाव अर्थात् गौंद के साथ लाभदायक हैं (सूचना) जहां कहीं मद्ध के निकल्ने से खराश हो और अभीतक अच्छी न हुई होतो उचित है कि पहिले उस कारण को जिनसे खराश होती है उन औषधों से दूर करें जो अपने२स्थान पर वर्णन का गईहै उसकेपीछे मद्ध और आतोंके घावके साफ करें

चौथा प्रकरण पेचिश के विषय में ।

मलदूर करने के लिये सीधी आत की चेष्टा स्वतंत्र है कि उसके त्यागने में कुछ अधिकार नहीं होता है और उसके साथ कुछ नहीं निकलता है, परन्तु नासिका के मलके सदृश एक चेपदार थोड़ासा मल निकलता है और कभी कभी निर्मल रुधिर में मिलकर आता है और उसके कई भद है । पहला भेद यह है कि उसमें सूजनयुक्त खारी मल सीधी आंत पर आकर चुभन के कारण से विष्टा के दूर करने पर उस आंत को झुका देताहै ऊपर वर्णन किये हुए मलका ऐंठे के साथ निकलना, पेटका फूलना, उसमें गुड़गुड़ा हट होना, प्यास कम लगना और विष्टा के जगह में जलन होना ये उसके लक्षण हैं (चिकित्सा) इस रोग में ये दवाइयां दीजाती हैं जो कफ के मरोरे में वर्णन कीगयी हैं और यह चूर्ण भी गुणकारक है चारों बीज की मिंगी भुनी हुई दो मिस्काल, कुंदर आधा दिरम, जमानी एक दिरम, इन तीनों को महीन करके गुनगुने पानीके साथ देवें अथवा जब दस्तकी हाजत हो और कुछ न निकले और दर्द अधिक हो तो गंधक बकरी की चर्बी में कूटकर आग पर डालकर और एक सछिद्र तवा उस पर ढक्कर रोगी को [illegible] पर ऐसी रीति बिठावे कि उसका धुआं गुदाके द्वारा [illegible] पहुंचे ([illegible] की बत्ती की विधि) कुन्दरु, मुर, केसर सो[illegible] [illegible] और छान कर शयाफ बनावें और आवश्यक[illegible] पर [illegible] काम में लावें । दूसरा [illegible] है कि जो पित्त [illegible] पेचिश पैदा [illegible] उसका लक्षण पित्तका [illegible] गुदा में [illegible] होना, [illegible] का लगना, ठंडे पानी [illegible] । (चि[illegible] [illegible] मरोड़े में वर्णन किया [illegible] । यहां [illegible] और जानना चाहिये कि [illegible] और सि[illegible] से अधिक गुणकारक है ।

गुणकारक है और जहा कहीं भोजन की अत्यन्त आवश्यकता हो तो आंशी भुसी मिलेहुए चूनका शीरालें और इसे दूधमें पकाकर और मिश्री मिलाकर देवें और बकरी के पाव अर्थी गाव के साथ लाभदायक हैं (सूचना) जहां कहीं मद्द के निकलने से खराश हो और अभीतक अच्छी न हुई होतो उचित है कि पहिले उस कारण को जिनसे खराश होती है उन औषधों से दूर करें जो अपने२स्थान पर वर्णन का गईहैं उसकेपीछे मद्द और आतोंके घावके साफ करें

चौथा प्रकरण पेचिश के विषय में ।

मलदूर करने के लिये सीधी आत की चेष्टा स्वतंत्र है कि उसके त्यागने में कुछ अधिकार नहीं होता है और उसके साथ कुछ नहीं निकलता है, परन्तु नासिका के मलके सदृश एक चेपदार थोड़ासा मल निकलता है और कभी कभी निर्मल रुधिर में मिलकर आता है और उसके कई भेद है। पहला भेद यह है कि उसमें सूजनयुक्त खारी मल सीधी आंत पर आकर चुभन के कारण से विष्टा के दूर करने पर उस आंत को झुका देताहै ऊपर वर्णन किये हुए मलका ऐंठे के साथ निकलना, पेटका फूलना, उसमें गुड़गुड़ा हट होना, प्यास कम लगना और विष्टा के जगह में जलन होना ये उसके लक्षण हैं (चिकित्सा) इस रोग में ये दवाइया, दीजाती है जो कफ के मरोड़े में वर्णन कीगयी हैं और यह चूर्ण भी गुणकारक है चारों बीज की गिरी भुनी हुई दो गिरकाल, कुंदर आधा दिरम, जमानी एक दिरम, इन तीनों को महीन करके गुनगुने पानीके साथ देवें अथवा जब दस्तकी हाजत हो और कुछ न निकले और दर्द अधिक हो तो गंधक बकरी की चर्बी में डूबकर आग पर डालकर और एक सछिद्र तरा उस पर डखकर रोगी की [illegible] पर बैठी [illegible]

फटजावे तौ बहुतही अच्छाहै नहींतो फोड़नेवाली बत्ती काममें लावे जिससे वह फट जावे और जब फूटजाय तो जो कुछ आंतों से पीब के आने में हम वर्णन कर चुके हैं काम में लावे और जब पीब साफ होजावे तब घावके भरनेका यत्न करै (लेप की विधि) यह लेप आदिमें गुणकारकहै और गर्मीको बंद करता है लाल और सफेद चंदन को कासनी तथा सौंफ के पानी में पीस कर और कपूर मिलाकर गुदापर लेपकरै (अथवा) अंडेकी जर्दी गुलरोगन और थोड़ासा मुर्दासन मिलाकर गुदापर रखना और शिफाफ लगाना दर्द को बंद करनेके लिये अनुभव किया हुआ है और ठंडे दोष से आंतोंमें सूजन कम पैदा होतीहै और कुलंज की सूजनों में आंतों की सूजन अलग २ वर्णन की गई हैं । चौथा भेद वह है कि सूखा विष्टा दकाक़ आंतों में बंद हो और कठिन से निकले और पेचिस का कारण होजाय और कांखने की आवश्यकता हो और खराब हवा उससे निकलकर अत्यन्त दर्द पैदा करदे और कूंथने के कारण से छिल्के और मल निकले । उसके लक्षण पेट में भारापन, सदा दर्द का रहना, मरोड़ का उठना, थोड़ा थोड़ा सूखा विष्टा मेंगनी के सदृश निकलना और पहिले सूखे भोजनों का खाना, ये लक्षण हैं (लाभ) कभी इस पेचिस को वैद्य दस्त समझते हैं क्योंकि उसमें मल और छिलके निकलते हैं और इसी कारण से कब्ज करने वाली औषधें देदेते हैं और इससे रोगी मर जाता है । इससे यह बात अवश्य है कि झूठी और सच्ची पेचिस का अन्तर वर्णन किया जावे और उसकी यह विधि है कि ईसब गोल या और कोई बीज रोगी को पिलावें फिर अगर वह बीज आंतों में से न निकले और पेट में रहजाय तो जानना चाहिये कि झूठी पेचिस है और आंतों में रुका हुआ मल बीज को नहीं निकलने देता और बीज अगर विष्टा के साथ बाहर निकल आवे तो सच्ची पेचिस का चिन्ह है (चिकित्सा) ऐसी औषध दें जिनसे मल निकल जावे तथा शर्बत बनफशा और अमलतास बादाम के तेल में मिलाकर तथा अन्य ऐसी वस्तु जिनसे सूखा रुका हुआ मल निकल आवे और नर्म हुकना काम में लावे और कभी केवल गर्म पानी का पीना ही सर्वोत्तम है क्योंकि वह शरीर के अवयवों को ढीला और प्रकृति को नर्म करता है (लि॰ ह॰) पेचिस चाहे किसी तरह की हो उसके बंद करने में जल्दी न करें और जब ठीक २ मालूम हो जाय और कारण दूर होचुके तब उसकी चिकित्सा करै (लाभ) इस ग्रन्थकार ने झूठी पेचिस का वर्णन नहीं किया है इस लिये

फटजावे तो बहुतही अच्छा है नहींतो फोड़नेवाली बत्ती काममें लावे जिससे वह फट जावे और जब फूटजाय तो जो कुछ आंतों से पीब के आने में हम वर्णन कर चुके हैं काम में लावे और जब पीब साफ होजावे तब घावके भरनेका प्रयत्न करै (लेप की विधि) यह लेप आदिमें गुणकारकहै और गर्मीको बंद करता है लाल और सफेद चंदन को कासनी तथा सौंफ के पानी में पीस कर और कपूर मिलाकर गुदापर लेपकरै (अथवा) अंडेकी जर्दी गुलरोगन और थोड़ासा मुर्दासन मिलाकर गुदापर रखना और निफाक लगाना दर्द को बंद करनेके लिये अनुभव किया हुआ है और ठंडे दोष से आंतोंमें सूजन कम पैदा होतीहै और कूलंज की सूजनों में आंतों की सूजन अलग २ वर्णन की गई हैं। चौथा भेद वह है कि सूखा विष्ठा दफाऊ आंतों में बंद हो और कठिन से निकले और पेचिस का कारण होजाय और कोथने की आवश्यकता हो और खराब हवा उससे निकलकर अत्यन्त दर्द पैदा करदे और कूथने के कारण से छिल्के और मल निकले। उसके लक्षण पेट में भारीपन, सदा दर्द का रहना, मरोड़ का उठना, थोड़ा थोड़ा सूखा विष्ठा मेंगनी के सदृश निकलना और पहिले सूखे भोजनों का खाना, ये लक्षण हैं (लाभ) कभी इस पेचिस को वैद्य दस्त समझते हैं क्योंकि उसमें मल और छिलके निकलते हैं और इसी कारण से कब्ज करने वाली औषधें देदेते हैं और इससे रोगी मर जाता है। इससे यह बात अवश्य है कि झूठी और सच्ची पेचिस का अन्तर वर्णन किया जावे और उसकी यह विधि है कि ईसब गोल या और कोई बीज रोगी को पिलावें फिर अगर वह बीज आंतों में से न निकले और पेट में रहजाय तो जानना चाहिये कि झूंठी पेचिस है और आंतों में रुका हुआ मल बीज को नहीं निकलने देता और बीज अगर विष्ठा के साथ बाहर निकल आवे तो सच्ची पेचिस का चिन्ह है (चिकित्सा) ऐसी औषध दें जिनसे मल निकल जावे तथा अर्वत धनफशा और अमलतास बादाम के तेल में मिलाकर तथा अन्य ऐसी वस्तु जिनसे सूखा रुका हुआ मल निकल आवे और नर्म हुकना काम में लावें और कभी केवल गर्म पानी का पीना ही सर्वोत्तम है क्योंकि वह शरीर के अवयवों को ढीला और प्रकृति को नर्म करता है (लि ह.) पेचिस चाहे किसी तरह की हो उसके बंद करने में जल्दी न करें और जब ठीक २ मालूम हो जाय और कारण दूर होचुके तब उसकी चिकित्सा करै (लाभ) इस ग्रन्थकार ने झूंठी पेचिस का वर्णन नहीं किया है इस लिये

और गिले अर्मनी देवें और तर्गीहुल अर्वाह में लिखा है कि दस्तों की बीमारी में जिसके साथ पेचिश की अधिकता थी आंत के सदृश कोई वस्तु १२ अंगुल के बराबर गुदा से निकली और तीनदिन पीछे काली होकर गिरपड़ी और उस रोग से दो आदमी अच्छे हुए और तीन चार मरगये। इस में यह अनुमान किया जाता है कि वह सीधी आंत का भीतर वाला पर्दाथा और इलाविये कबीर में वर्णन कियागया है कि पेचिश के रोगियों में से कई रोगियों के बड़ा दर्द हुआ और उसके पीछे उनकी गुदा से विष्ठा में पथरियां निकलीं।

चौथा प्रकरण मरोड़े का वर्णन।

इसके कई भेद हैं पहला यह है कि आंतों में दुष्ट हवा बन्द होजावे और बोझके कारण दर्द पैदा हो उसके लक्षण पेटका फूलना, गुड़गुड़ाहट का होना और बिना भारापन के पेटमें बोझ मालूम होना और हवा के निकलनेसे आराम पाना (चिकित्सा) अयारज वा सिकञ्जबीन की गोलियां और माजून सहर यारा इत्यादि देवें जिससे कच्चा दोष निकलकर आंत साफहोजावे और हवाओं के निकालने के लिये अजमोद के बीज, अनीसून, सौंफ, अजवायन इत्यादि जो कुछ कि हवाको तोड़ने वाली हैं देवें और अगर आमाशय की निर्बलता से बादी उत्पन्न हो तो कमूनी की माजून या इत्रीफल गार की माजून देवें और ठंडे पानी और पेट फुलाने वाली चीजों से बचें। दूसरा भेद यह है कि आंतों पर पित्त गिरकर चुभन के कारण कष्ट पैदा करे और उसके लक्षण दर्द जलन के साथ होना प्यास का होना, विष्ठा पीला निकलना, गुदा में जलन और आंत में भारीपन कम होना (चिकित्सा) ठंडे लुआबदार। बीज जैसे ईसबगोल, रैहान के बीज, बारतंग इत्यादि गुलरोगन में चिकना करके ठंडे पानीके साथ दें और उचित है कि बीजों को बिनाभुने काम में लावें फिर अगर इसी विधि से आराम होजाय तो अच्छा है और नहीं तो पित्त के निकालने के लिये अमलतास शीरखिश्त इत्यादि कासनी या मकोय के पानी में मिलाकर पिलावें। तीसरा भेद यह है कि आंतों की प्रकृति में उष्ण द्रव उत्पन्न होकर मरोड़ा पैदा करे और उसके लक्षण दर्द गर्मी जलन और प्यास का अधिक होना, भारीपन होना और विष्ठा में जर्दी का न होना क्योंकि भारीपन और विष्ठा का रंग पित्तमात्र से नहीं होता है (चिकित्सा) प्रकृति के बदलने के लिये ठंडी और तरावट की औषधें दें (नुसखा) ईसबगोल गुलनार के भुने मलकर गुलरोगन और खट्टे मीठे अनार का पानी

और गिले अर्मनी देवें और तर्जीहुल अर्वाह में लिखा है कि दस्तों की बी-मारी में जिसके साथ पेचिश की अधिकता थी आंत के सदृश कोई वस्तु १२ अंगुल के बराबर गुदा से निकली और तीनदिन पीछे काली होकर गिरपड़ी और उस रोग से दो आदमी अच्छे हुए और तीन चार मरगये । इस में यह अनुमान किया जाता है कि वह सीधी आंत का भीतर वाला पर्दाथा और इलाविये कबीर में वर्णन कियागया है कि पेचिश के रोगियों में से कई रोगियों के बड़ा दर्द हुआ और उसके पीछे उनकी गुदा से विष्टा में पथरियां निकलीं।

चौथा प्रकरण मरोड़े का वर्णन ।

इसके कई भेद हैं पहला वह है कि आंतों में दुष्ट हवा बन्द होजावे और बोझके कारण दर्द पैदा हो उसके लक्षण पेटका फूलना, गुड़गुड़ाहट का होना और विना भारापन के पेटमें बोझ मालूम होना और हवा के निकलनेसे आ-राम पाना (चिकित्सा) अयारज या सिकनवीन की गोलियां और माजन सहर यारा इत्यादि देवें जिससे कचा दोष निकलकर आंत साफहोजावे और हवाओं के निकालने के लिये अजमोद के बीज, अनीसून, सौंफ, अजवायन इत्यादि जो कुछ कि हवाको तोड़ने वाली है देवें और अगर आमाशय की निर्बलता से बादी उत्पन्न हो तो कमूनी की माजून या इत्रुफगार की माजून देवें और ठंडे पानी और पेट फुलाने वाली चीजों से बचें । दूसरा भेद यहहै कि आंतों पर पित्त गिरकर चुभन के कारण कष्ट पैदा करे और उसके लक्षण दर्द जलन के साथ होना प्यास का होना, विष्टा पीला निकलना, गुदा में जलन और आंत में भारीपन कम होना (चिकित्सा) ठंडे लुआबदार । बीज जैसे ईसबगोल, रेहान के बीज, बारतंग इत्यादि गुलरोगन में चिकना करके ठंडे पानीके साथ दें और उचित है कि बीजों को विनाभुने काम में लावें फिर अगर इसी विधि से आराम होजाय तो अच्छा है और नहीं तो पित्त के निकालने के लिये अमलतास शीरखिश्त इत्यादि कासनी या मकोय के पानी में मिलाकर पिलावें । तीसरा भेद यह है कि आंतों की प्रकृति में उप-द्रव उत्पन्न होकर मरोड़ा पैदा करे और उसके लक्षण यह हैं गर्मी जलन और प्यास का अधिक होना, भारीपन होना और विष्टा में जरी का न होना क्योंकि भारीपन और विष्टा का रंग विनामल के नहीं होता है (चिकित्सा) प्रकृतिके बदलने के लिये ठंडी और गाढ़ाकारक औषधें दें (नुसखा) रंग बगोल गुलाब के अर्क में मलकर गुलरोगन और खट्टे मिठे अनार का पानी

अनीसून, बारीक पीसकर सफेद कन्द मिलावें और प्रतिदिन प्रातःकाल के समय एक जौकी बराबर खिलावें और अगर आत ठंढी और मेजा गर्म हो तो यह वा अन्य ऐसी गर्म औषधों को कभी न देवै और इस भेद में यह हुकना गुणकारक है (उसकी विधि) कितूरयून, काला जीरा पिसाहुआ, मेथी, अजमोद के बीज, सोया, तितली सूखीहुई, प्रत्येक २ दिरम पानी में उबालकर छानकर सिकंजबीन, गूगल आधा दिरम घोलकर तितली का तेल दो दिरम मिलाकर हुकना करें और एक हुकने के छःघड़ी पीछे दूसरा हुकना करें। छठा भेद यहहै कि सूखा विष्ठा आतों में बन्द होजाय और किंचने से न निकले उसके लक्षण और चिकित्सा मलयुक्त कूलज से प्रगट होंगे। सातवां भेद यहहै कि आंतों में सूजन के कारण मरोड़ा पैदा हो यहभी सूजन के कूलज से प्रगट होता है। आठवा भेद यहहै कि कीड़ों के कारण मरोड़ा हो इसका वर्णन अलग किया जायगा। नवां भेद यह है कि दस्त लाने वाली दवाओं के पीने के पीछे मरोड़ा उत्पन्न हो (चिकित्सा) गर्म पानी पिलावें जिससे औषधि की सहायता हो और अगर दस्त न आवें और आमाशय और आंतों में दर्द अधिक हो तो वमन करावें और अगर दस्त आचुके हों तथा औषधि की तेजी से दर्द बाकी हो तो ईसबगोल का लुआब खत्मी का लुआब, इत्यादि काममें लावें और गुलरोगनमल और कभी ऐसा होता है कि दस्तों की दवा से दस्त नहीं आते और दर्द अधिक होता है और बेचैनी बहुत होती है तो इसमें फस्दकी आवश्यकता होती है (लाभ) दस्तूरुल्इलाज में लिखा है कि अगर बल वान विरेचन देनेपर दस्त न आवे और बेहोशी उत्पन्न हो तो उसी समय वमन करादें और अगर इस विधि से आराम नहो तो बासलीक या अकहल की फस्द खोलना गुणकारक है और अगर इससे भी काम न निकले तो नर्म हुकने काममें लावें और थोड़ा गुलाब पिलावें। जानना चाहिये कि मरोड़ा और पेचिश आंतों के दर्द को कहते हैं जो हवा या मूखे मल से या तेज और चरपरी वस्तुओं के खाने से या नमकीन दोषों के आंतों पर गिरने के कारण से उत्पन्न होता है।

पांचवां प्रकरण।

आंतों के फूलने और गुड़गुड़ाहट का वर्णन।

इसमें दो भेद हैं प्रथम तो यहहै कि पेट फुलानेवाले भोजन जैसे लोबिया इत्यादि अधिक करे या भोजन अच्छा नहो जैसे भैंस का मांस और इस कारण से वो

अनीसून, बारीक पीसकर सफ़ेद कन्द मिलावें और प्रतिदिन प्रातःकाल के समय एक जौकी बराबर खिलावें और अगर आन ठंढी और भेजा गर्म हो तो यह वा अन्य ऐसी गर्म औषधों को कभी न देवै और इस भेद में यह हुकना गुणकारक है (उसकी विधि) किंतूरयून, काला जीरा पिसाहुआ. मेथी, अजमोद के बीज. सोया, तितली सूखीहुई, प्रत्येक २ दिरम पानी में उबालकर छानकर सिकबीनज, गूगल आधा दिरम घोलकर तिल्ली का तेल दो दिरम मिलाकर हुकना करें और एक हुक्ने के छःघडी पीछे दूसरा हुकना करें। छठा भेद यहहै कि सूखा विष्टा आंतों में बन्द होजाय और किंचने से न निकले उसके लक्षण और चिकित्सा मलयुक्त कूलज से प्रगट होंगे। सातवां भेद यहहै कि आंतों में सूजन के कारण मरोड़ा पैदा हो यहभी सूजन के कूलज से प्रगट होता है। आठवा भेद यहहै कि कीडों के कारण मरोड़ा हो इसका वर्णन अलग किया जायगा। नवां भेद यह है कि दस्त लाने वाली दवाओं के पीने के पीछे मरोड़ा उत्पन्न हो (चिकित्सा) गर्म पानी पिलावें जिससे औषधि की सहायता हो और अगर दस्त न आवें और आमाशय और आंतों में दर्द अधिक हो तो वमन करावें और अगर दस्त आचुके हों तथा औषधि की तेजी से दर्द बाकी हो तो ईसबगोल का लुआब खत्मी का लुआब, इत्यादि काममें लावें और गुलरोगनबल और कभी ऐसा होता है कि दस्तों की दवा से दस्त नहीं आते और दर्द अधिक होता है और बेचैनी बहुत होती है तो इसमें फस्दकी आवश्यकता होती है (लाभ) दस्तूरुलइलाज में लिखा है कि अगर बलवान विरेचन देनेपर दस्त न आवें और बेहोशी उत्पन्न हो तो उसी समय वमन करादें और अगर इस विधि से आराम नहो तो बासलीक या अकहल की फस्द खोलना गुणकारक है और अगर इससे भी काम न निकले तो नर्म हुकने काममें लावें और थोडा गुलाब पिलावे। जानना चाहिये कि मरोड़ा और पेचिश आंतों के दर्द को कहते हैं जो हवा या रूखे मल से या तेज और चरपरी वस्तुओं के खाने से या नमकीन दोषों के आंतों पर गिरने के कारण से उत्पन्न होता है।

पांचवां प्रकरण।

आंतों के फूलने और गुड़गुड़ाहट का वर्णन।

इसके दो भेद हैं एकतो यहहै कि पेट फुलानेवाले भोजन जैसे लोबिया इत्यादि अधिक करें या भोजन अच्छा नहो जैसे भैंस का मांस और इस कारण से वो

मान करती है और वमन को रोकती है और शरद भागा भी इसी गुण की है जानना चाहिये कि जब तक शियाफ और फूपने से प्रकृति सुल्माय तो वमन न कराना चाहिये और इस में बड़ा डर है लेकिन प्रकृति के सुल्न जाने के पीछे औषधों के पानी में बैठना बहुत गुणकारक है और जब कुल्न सुल्जाय तो एक रात दिन भोजन न करे किंतु रोगी सहसके तो एक दो दिन और भी नदे क्योंकि भोजन न करना वमन न करने के बराबर है और उस कफ को निकाल देता है जो विरेचन के पीछे बच रहता है और इस में चूड़े मुर्ग, चकोर या चिड़िया या जवान बकरी के मास में चनेका पानी मिला कर और दालचीनी, सौंफ, जीरा, ककाली और पोदीना डालकर भोजन करावै और इसके पीछे एक घूट कामा का पानी पिलाना बहुत गुणकारक है और भुसी का शीरा जिस में कलौंजी, अजवायन, और कालीजीरी मिली हो। इसको गौके घीके संग देना गुणकारक है और खाने के पीछे अधिक न डोलै किंतु भोजन कम करना चाहिये, और पानी भी कम पीना आवश्यकीय है और अगर पानी की जगह, शहदका पानी, या सौंफका अर्क, और गुल्कन्दका अर्क मिलाकर दे तो उत्तम है।

बत्ती की विधि।

—यह इसरोगमें गुणकारक है—निसोत, इन्द्रायण, नौन, लाल शक्कर, सुहागा राई-इनसब को बराबर लेकर चार अंगुल लम्बी बत्ती बनावें और कुछ वैद्य लोग कहते हैं कि छः अंगुल की बत्ती बनानी चाहिये जिससे नन्दी साफ होजाय।

दूसरा प्रयोग।

यह कूलंज को खोलता है और पीठके दर्द को बन्द करता है सुहागा, राई, गूगल, जावशीर, साबुन, सोंठ, नमक हिन्दी, जिनकी इन्सेज व बीज फलुआ इनसब को बराबर लेकर बत्ती बनावें और कभी ऐसा भी होता है कि केवल साबुन की बत्ती की सूरत में बनाकर गुदा[illegible]।

[illegible] की विधि [illegible]

यह कल्ज कूलंज [illegible] करता है [illegible] या नमक, पाय[illegible] मिश्राल, केवें और लिम[illegible] या मुर्दार[illegible] पानी [illegible] पाड़ी मान विरसा[illegible] चार [illegible] कामये मावें [illegible] पापा[illegible]

मान करती है और वमन को रोकती है और शहद भी इसी गुण की है जानना चाहिये कि जब तक शियाफ और हुकने से प्रकृति खुलजाय तो वमन न कराना चाहिये और इस में बड़ा डर है लेकिन प्रकृति के खुल जाने के पीछे औषधों के पानी में बैठना बहुत गुणकारक है और जब कूलन खुलजाय तो एक रात दिन भोजन न करे किंतु रोगी सहसके तो एक दो दिन और भी नदे क्योंकि भोजन न करना वमन न करने के बराबर है और उस कफ को निकाल देता है जो विरेचन के पीछे बच रहता है और इस में मुर्ग, चकोर या चिड़िया या जवान बकरी के मास में चनेका पानी मिला कर और दालचीनी, सौंफ, जीरा, ककाली और पोदीना डालकर भोजन करावे और इसके पीछे एक घूट कामा का पानी पिलाना बहुत गुणकारक है और भुसी का शीरा जिस में कलोंजी, अजवायन, और कालीजीरी मिली हो। इसको गौके घीके सग देना गुणकारक है और खाने के पीछे अधिक न डोलें फिर भोजन कम करना चाहिये, और पानी भी कम पीना आवश्यकीय है और अगर पानी की जगह, शहदका पानी, या सौंफका अर्क, और गुलाबका अर्क मिलाकर दे तो उत्तम है।

बत्ती की विधि।

—यह इसरोगमें गुणकारक है—निसोत, इन्द्रायण, नौन, लाल शकर, सुहागा राई-इनसब को बराबर लेकर चार अंगुल लम्बी बत्ती बनावे और कुछ वैद्य लोग कहते हैं कि छः अंगुल की बत्ती बनानी चाहिये जिससे जल्दी साफ होजाय।

दूसरा प्रयोग।

यह कूलंज को खोलता है और पीठके दर्द को बन्द करता है सुहागा, राई, गूगल, जावशीर, साबुन, सोंठ, नमक हिन्दी, सिकर्री इलेज व पीस पलुआ इनसब को बराबर लेकर बत्ती बनावें और कभी ऐसा भी होता है कि केवल साबुन को बत्ती की सूरत में बनाकर गुदा में ... ।

दर्दों में अवयव के स्थान से और दर्द के प्रमाण से और प्रत्येक के आवश्यक रोगों में अन्तर-प्रत्यक्ष है जैसे कि गर्भस्थानका दर्द होना नीचेकी ओर झुका हुआ होता है और ऋतु धर्मका बंद होना उसका प्रमाण है और इसके सिवाय जो कुछ इसके हेतुओं में वर्णन किया गया है जो कि दर्द कूलंज के विरुद्ध है जो बहुधा सामरा के बीच में तथा नाभि और पेडू के बीच में होता है और कीड़ों का दर्द बहुत हल्का होता है और जहां कीड़े रेंगते हैं वहीं दर्द भी होताहै और इसी प्रकार कीड़ोंका गिरना, इसका प्रमाणहै। आमाशय कलेजे और तिल्ली के दर्दों में इन अवयवों की दूरी से अन्तर प्रगट होता है इसमें वर्णन की आवश्यकता नहीं है। जानलेना चाहिये कि भूख का जाता रहना और पिंडलियों में दर्द का होना क़ूलंज के प्रधान लक्षण हैं।

(विशेष द्रष्टव्य) बहुधा ऐसा होताहै कूलंज दूसरे रोगोंमें बदल होजाता है जैसे फालिज (अर्द्धांग) गठिया, पीठ का दर्द, उन्मत्तता, बवासीर, मिर्गी जलोदर, आदि कोई २ हकीम यह कहते हैं कि कूलंज एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को होजाता है जैसे मरी आदि संक्रामक रोग होते हैं।

(वि० द०) इलाजुल्अमराज में माजून नहर यारा की विधि इसतरह लिखी है—लौंग, दालचीनी, तज, तगर, बालछड़, छोटी इलायची, मस्तगी बड़ी इलायची, पलसानके बीज, और जायफल प्रत्येक ४॥ दिरम सक्मूनियां तीन दिरम, निसौथ सफेद, काला दाना, प्रत्येक ८ दिरम, सफेद मिश्री सब दवाओं के बराबर इन सबको बारीक पीसकर शहदमें मिलाकर माजून बनावे इसकी मात्रा चार मिस्काल गर्म पानी के साथ देवे।

दूसरा भेद जिसमें खराब हवा आंतोंके भीतर उपजाय और आंतोंमें बोझ और मार्ग को तंग करने से क़ूलंज को उत्पन्न करदे (लक्षण) शूमन के साथ दर्द का होना, दर्द का जगह बदलना, अच्छी तरह डकार का न आना, इन लक्षणों से पहिले बहुत ठंडे और पेटके फुलानेवाले भोजनों का करना, ताजा मेवों का खाना जैसे अंगूर और ककड़ी आदि। प्रथम पेटका फूलना, पेटमें गुड़गुड़ाहट होना, और इस दर्द की स्वाभाविक दशा ऐसी होती है कि चल ने या खाने से बढ़ जाता है और फिर थोड़ी देर पीछे मन्दा पड़जाता है। अधिक होने का कारण तो यह है कि खाने से बुरी हवा निकलती है क्योंकि उसमें भोजन से और चलने से गर्मी पहुंचती है और मंद होने का यह कारण है कि अच्छी हवा आजाती है और हवायें निकल जाती हैं क्योंकि रोकने और पकने के मेदे शुरू हैं और कभी इस रोग में ऐसा भी होता है कि जहां

दर्दों में अवयव के स्थान से और दर्द के प्रमाण से और प्रत्येक के आवश्यक रोगों में अन्तर-प्रत्यक्ष है जैसे कि गर्भस्थानका दर्द होना नीचेको और झुका हुआ होता है और ऋतु धर्मका बंद होना उसका प्रमाणहै और इसके सिवाय जो कुछ इसके हेतुओं में वर्णन किया गया है जो कि दर्द कूलन्ज के विरुद्ध है जो बहुधा सामरा के बीच में तथा नाभि और पेडू के बीच में होता है और कीड़ों का दर्द बहुत हलका होता है और जहां कीड़े रेंगते हैं वहीं दर्द भी होताहै और इसी प्रकार कीड़ोंका गिरना, इसका प्रमाणहै। आमाशय कलेजे और तिल्ली के दर्दों में इन अवयवों की दूरी से अन्तर प्रगट होता है इसमें वर्णन की आवश्यकता नहीं है। जानलेना चाहिये कि भूख का जाता रहना और पिंडलियों में दर्द का होना क़ूलन्ज के प्रधान लक्षण हैं।

(विशेष द्रष्टव्य) बहुधा ऐसा होताहै कूलंज दूसरे रोगोंमें बदल होजाता है जैसे फालिज (अर्द्धांग) गठिया, पीठ का दर्द, उन्मत्तता, बवासीर, मिर्गी जलोदर, आदि कोई २ हकीम यह कहते हैं कि कूलज एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को होजाता है जैसे गरी आदि संक्रामक रोग होते हैं।

(वि० द०) इलाजुल्अमराज में माजून नहर यारा की विधि इसतरह लिखी है—लौंग, दालचीनी, तज, तगर, बालछड़, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, पलसानके बीज, और जायफल प्रत्येक ४॥ दिरम सकमूनियां तीन दिरम, निसौत सफेद, काला दाना, प्रत्येक ८ दिरम, सफेद मिश्री सब दवाओं के बराबर इन सबको बारीक पीसकर शहदमें मिलाकर माजून बनावे इसकी मात्रा चार मिस्काल गर्म पानी के साथ देवे।

दूसरा भेद जिसमें खराब हवा आंतोंके भीतर उपजाय और आंतोंमें बोझ और मार्ग को तंग करने से क़ूलंज को उत्पन्न करदे (लक्षण) शुमन के साथ दर्द का होना, दर्द का जगह बदलना, अच्छी तरह डकार का न आना, इन लक्षणों से पहिले बहुत बादी और पेटके फुलानेवाले भोजनों का करना, ताजा मेवों का खाना जैसे अंगूर और ककड़ी आदि। प्रथम पेटका फूलना, पेटमें गुड़गुड़ाहट होना, और इस दर्द की स्वाभाविक दशा ऐसी होती है कि पल में या सकने से बढ़ जाता है और फिर थोड़ी देर पीछे मन्दा पड़जाता है। अधिक होने का कारण तो यह है कि मलने से मुर्दा हवा निकलती है क्योंकि उसमें भेदन से और मलने से गर्मी पहुंचती है और मंद होने का यह कारण है कि गन्दी हवा भाजाती है और हवायें निकल जाती हैं क्योंकि रोकने और मलने के मेदे शुरू हैं और कभी इस रोग में ऐसा भी होता है कि जहां

दस्त न होने देवे और जुलाब का काम यहहै कि वह मलको ऊपर से नीचे उतारता है और जब मलको मार्ग न मिलैगा तौ बड़ी हानि होगी। और रीही कूलंज का एक और भेदहै जो पेटपर बादी के गिरने से और उसके फूलजानेसे पैदा होता है जैसाकि उन्मत्त रोगमें हुआ करता है यथा खट्टी डकार आना विनाही कठोर दर्द के पेट फूलजाना ये उसके लक्षण हैं। (इलाज) बादीके निकालदेने के लिये अफतीमून का क्वाथ देवे और दवाओं से निकालदेने के लिये जो कुछ हुकने, बत्ती तथा तेल मलने का वर्णन किया है वे भी सब काममें लावे (सूचना) वह लेप तथा सेकने की वस्तु और माजून तथा भोजन जो कफके दर्द में वर्णन किये गये हैं वे इस रीही कूलंज में भी गुण कारक हैं और पेटपर गर्म ल्हाट का फेरना भी बहुत गुणदायक है और जब दर्द अधिकता के साथ होवै तब दोचावल भर फिलोनिया देवै।

नीचे उस बत्ती की विधि लिखते हैं जो मलका एक साथ पक्का देती और दर्द को बन्द करती है और नींद लाने के लिये लाभकारक है, यथा जुंद बेदस्तर, केसर, सिकबीनज, मुरे, अफीम, इनसबको बराबर लेकर गालिया बनावैं।

तीसरा भेद सूजन के कूलंज का वर्णन।

यह कई तरह का होता है पहलो यहहै कि आंतों में रुधिर की सूजन पैदा हो और मार्ग को तोर देवै और मल तथा हवा को न निकलने देवै, तथा ज्वर को भी पैदा कर देवै (लक्षण) तीव्र ज्वर, प्यास, नसोंका फूलना सूजन में बोझ, दर्द और धड़क मालूम होना तथा धीरे२ सूजन पैदा होना तथा मलके गिरने के अनुसार सूजन का बढ़ना कभी२ दर्द इस अधिकता से होना कि सूजन मार्ग बन्द होजाय यह लक्षण होते हैं। (चिकित्सा) इस रोग में ज्वाहिन हाथ की बासलीक या [illegible] की फस्द खोलना उचितहै और कई बार करके यदि २ रुधिर निकाले और अगर पेशाब बन्द हो तो [illegible] की फस्द खोल देवै और [illegible] बो रमे [illegible] द्रव्य देवे जिससे मल आंतों में न [illegible] [illegible] भी अधिक नहीं क्योंकि [illegible] [illegible] कभी २ सूजन वाले [illegible] है। [illegible] लिये आतू- [illegible] इनका [illegible] [illegible] गुण [illegible]

दस्त न होने देवे और जुलाब का काम यह है कि वह मलको ऊपर से नीचे उतारता है और जब मलको मार्ग न मिलैगा तो बड़ी हानि होगी। और रीही कूलंज का एक और भेद है जो पेटपर बादी के गिरने से और उसके फूलजानेसे पैदा होता है जैसाकि उन्मत्त रोगमें हुआ करता है यथा खट्टी डकार आना विनाही कठोर दर्द के पेट फूलजाना ये उसके लक्षण हैं। (इलाज) बादीके निकालदेने के लिये अफ्तीमून का क्वाथ देवें और हवाओं के निकालदेने के लिये जो कुछ हुकने, बत्ती तथा तेज मलने का वर्णन किया है वे भी सब काममें लावें (सूचना) यह लेप तथा सेकने की वस्तु और माजून तथा भोजन जो कफके दर्द में वर्णन किये गये है वे इस रीही कूलंज में भी गुण कारक हैं और पेटपर गर्म ल्हाट का फेरना भी बहुत गुणदायक है और जब दर्द अधिकता के साथ होवे तब दोचावल भर फिलौनिया देवे।

नीचे उस बत्ती की विधि लिखते हैं जो मलरोग एक साथ पका देती और दर्द को बन्द करती है और नींद लाने के लिये लाभकारक है, यथा शुद्ध येदस्तर, केसर, सिकंजबीन, बुरे, अफीम, इनसबको बराबर लेकर गालियां बनावें।

तीसरा भेद सूजन के कूलंज का वर्णन।

यह कई तरह का होता है पहलो यह है कि आंतों में शरीर की सूजन पैदा हो और मार्ग को रोक देवे और मल तथा हवा को न निकलने देवे, तथा ज्वर को भी पैदा कर देवे (लक्षण) तीव्र ज्वर, प्यास, नसोंका फूलना सूजन में बोझ, दर्द और खटक मालूम होना तथा धीरे २ सूजन पैदा होना तथा मलके गिरने के अनुसार सूजन का बढ़ना कभी २ दर्द इस अधिकता से होना कि मूत्रका मार्ग बन्द होजाय ये लक्षण होते हैं। (चिकित्सा) इस रोग में बासिन हाथ की बासलीक या अकहलकी फस्द खोलना उचित है और कई बार करके गाढ़ा २ रुधिर निकाले और अगर पेशाब बन्द हो तो साफिन की फस्द खोल देवे और [illegible] को ऐसे [illegible] देवे जिससे मल आंतों में न गिरने पावे [illegible] अधिक नहीं क्योंकि आराम न [illegible] कभी २ सूजन वाले दूजन का [illegible] है। [illegible] नहीं करते [illegible] [illegible] इनका [illegible] गुण [illegible]

गरी सफेदा मिलाकर दें और थोड़े दिन तक केवल इसी शोर्वे का सेवन करें और दूसरे भोजनों से बचता रहै, जिससे जो कुछ पारे से बाल न मसा घट हुई होगी वह सब दूर होजायगी । इसमें यह बात है कि पारेके पीनेसे एक या दो दिन पहिले से साधारण शोर्वे में चिकनाई डालकर देवें जिस से दस्त के पीने का गुण भी प्रगट हो और किसी प्रकार की हानि न होवे ।
(वि०द०)कभी ऐसा भी होता है कि पारा पीने के पीछे पेटके दबाने से नहीं निकलता है इस सबब से दर्द बहुत अधिकता और भारीपन से होजाये और रोगी बेचैन होजाता है उस समय यह करना चाहिये कि बीमार को उलटा लटकावें कि सिर नीचे की ओर पांव ऊपरकी ओर हों और देर तक इसी तरह रक्खें जिससे कुल पारा मुखके मार्ग से निकल आवे और फुका हुआ पारा कभी नहीं देना चाहिये क्योंकि वह घातक है, क्योंकि यह रगों में चढ़जाता है और बे धोये भी काम में न लावें क्योंकि हानि पहुंचाता है । पारे के धोने की यह विधि है, कि पारे को ओंडी खरलमें डाले और अरण्ड के पत्तों का पानी उसपर डालें और देर तक मलें फिर उस पानी को फेंक कर पारे का प्रयोग करें और जहां कहीं अरण्ड और मकोय के पत्तों का पानी न मिले तो त्रिफला को एक रात दिन मीठे पानी में भिगो रक्खें फिर उस पानी में पारेको इतना मलें कि साफ होजाय। दूसरी विधि यह है पारा १,० मिसकाल एक रतल पानी में हांडी में डालकर कोयले की आग पर उबालें और जितना पानी कम हो उतना और डालें और इसी तरह उबालें कि पानी में पारे की स्याही का रंग आजावे और पारे में जो कुछ बुरी चीजें और चिकनी मिट्टी मिली हुई है उससे साफ होजावे ।

(वि०द०) वह दर्द कूलंज जो अण्डकोशों में आंत के उतर आने और फितक के सबब से उत्पन्न हो उसमें जब उन विधियों से जिनका वर्णन किया गया है आंत को अपने स्थान पर लावें फिर वही उपाय जो कि फितक और आंत के उतर आने में वर्णन करेंगे और पट्टी का आंत पर ऐसी तरह बांधना कि आंतको अपने स्थानसे न हटनेदे आवश्यक है । फितक की जगह पर कब्ज करने वाली औषधियों का रखना और उस जगह को बांधना गुणकारक है ।

पांचवां भेद सिफली कूलंज के विषय में ।

जब सिफिल आंतों में रुकजाता है तो कूलंज को उत्पन्न करता है और विष्ठा बन्द होने के भी कारण हैं । कभी यह है कि भोजन स्वाभाविक [illegible]

गरी सफेदा मिलाकर देवें और थोड़े दिन तक केवल इसी शोर्वे का सेवन करें और दूसरे भोजनों से बचता रहे, जिससे जो कुछ पारे के बाद न मसा पट हुई होगी वह सब दूर होजायगी । इसमें यह बात है कि पारेके पीनेस एक या दो दिन पहिले से साधारण शोर्वे में चिकनाई डालकर देवें जिस से इसके पीने का गुण भी प्रगट हो और किसी प्रकार की हानि न होवे ।

(वि०८०)कभी ऐसा भी होता है कि पारा पीने के पीछे पेटके द्वाने से नहीं निकलता है इस सबब से दर्द बहुत अधिकता और भारीपन से होताहै और रोगी बेचैन होजाता है उस समय यह करना चाहिये कि बीमार को उलटा लटकायें कि सिर नीचे की ओर पांव ऊपरकी ओर हों और देर तक इसी तरह रक्खें जिससे कुल पारा मुखके मार्ग से निकल आवे और फुका हुआ पारा कभी नहीं देना चाहिये क्योंकि वह घातक है, क्योंकि यह रगों में चढ़जाता है और बे धोये भी काम में न लावें क्योंकि हानि पहुंचाता है । पारे के धोने की यह विधि है, कि पारे को औंडी खरलमें डाले और अरण्ड के पत्तों का पानी उसपर डाले और देर तक मलें फिर उस पानी को फेंक कर पारे का प्रयोग करें और जहां कहीं अरण्ड और मकोय के पत्तों का पानी न मिले तो त्रिफला को एक रात दिन मीठे पानी में भिगो रक्खें फिर उस पानी में पारेको इतना मले कि साफ होजाय। दूसरी विधि यह है पारा १० मिस्काल एक रतल पानी में हांडी में डालकर कोयले की आग पर उबालें और जितना पानी कम हो उतना और डालें और इसी तरह उबालें कि पानी में पारे की स्याही या रंग आजावे और पारे में जो कुछ बुरी चीजें और चिपकी मिट्टी मिली हुई है उससे साफ होजावे ।

(वि०८०) वह दर्दकूलंज जो अण्डकोशों में आंत के उतर आने और फितक के सबब से उत्पन्न हो उसमें जब उन विधियों से जिनका वर्णन किया गया है आंत को अपने स्थान पर लावें फिर वही उपाय जो कि फितक और आंत के उतर आने में वर्णन करेंगे और पट्टी का आंत पर ऐसी तरह बांधना कि आंतको अपने स्थानसे न हटनेदे आवश्यक है । फितक की जगह पर कब्ज करने वाली औषधियों का रखना और उस जगह को बांधना गुणकारक है।

पांचवां भेद सिफली कूलंज के विषय में ।

जब गिलिज आंतों में रुकजाता है तो कूलंज को उत्पन्न करता है और विष्ठा बन्द होने के भी कारण हैं । कभी यह है कि जब स्वाभाविक गुण

नमक और साबुन आदि तीक्ष्ण द्रव्यों की बत्ती चढ़ाने से भी आँतों में कष्ट न होवे और मलेक वस्तु के खानेसे पेट फूल जावे । और जरा यह रोग मूत्र के अधिक निकलने से होता है उसका यह लक्षण है कि मूत्र और तरी के निकलने के पीछे क़ूलज पैदा होवे और अगर इसमें अफ़ाराके साथ दुबलापन होने लगे तो उसका लक्षण यह है कि गर्म हवा या रोमकूपों का खुलना या पसीने की अधिकता आदिसे तथा ऐसा परिश्रम या कार्य करनेसे जिससे देह क्षय होती हो जैसे लुहार वा हलवाई का काम करना आदि जहाँ कहीं पित्ताशय और आंत के बीच वाले मार्ग में गांठ पड़ जाने से यह रोग हो तो विष्ठाका सफेद होना, पेट फूलना, पीलिया रोगका उत्पन्न होना आदि लक्षण होते हैं । और जो कृमिरोग के कारण दर्द होताहै उसमें बिना सा थे दर्द घबड़ाहट आदि का होना ये लक्षण हैं तथा अन्य लक्षण इसके विषय में वर्णन किये जायगे । अगर यह दर्द क़ूलन की निर्बलता के कारण से होता है तो इसके लक्षण ये हैं कि बत्ती या हुकन के बिना विष्ठा न निकले ।

(इलाज) पूर्ण रीतिसे या कम प्रथम गलज दूर करके मल निकालदेवे इस काम के लिये बादाम का तेल और आबज़ामा गरम करके पान करावे और गर्म शिरवा शोर्बा जो मलको निकालदेवे खानको देवे जैसे मुर्ग वा मोटी मुर्गीका शोर्बा । जो आंतमें गर्मी वा खुश्की हो तो खतमिया, बनफ्शा, कासनी के बीज तुरंजबीन और मिश्री इनका लुआब लाभदायक है । (अथवा) शर्बत बनफ्शा गर्म पानी में और बिहीदाने के लुआब में और कद्दूके पानी में और खुर्फेके बीजका शीरा, और तुरंजबीन ये बहुत गुणकारक हैं (अथवा) बनाशे का तेल तथा खितमी और कनीर का लुआब पेटपर मलना गुणदायक है । इसमें चिकने शोर्बे के बतने में घी डालकर इसे पान करावे । और जब दस्त को फिसलने वाले द्रव्यों का सेवन कराया जाय और मल नर्म होजाय तो उचित है कि रोगी धीरे २ एक पांवसे उठने जिससे मल निकलजावे और यदि इस उपाय से भी न निकले तो नीचे लिखा हुआ काथ देवे ।

क्वाथ की विधि ।

बाबूना, सुर्ती, सौं, खितमी, कद्दू, इनको सबको आवश्यकतानुसार लेकर क्वाथ करके छानलेवे फिर इसमें बादामका तेल अलसीका, आबज़ामा अमलतास का गूदा मिलाकर गुनगुना करना, इत्यादि ।

(अथवा) जहाँ आंत में गर्मी और खुश्की का कारण हो तो यह है

नमक और साबुन आदि तीक्ष्ण द्रव्यों की बत्ती चढ़ाने से भी आंतों में कष्ट न होवे और मलरोधक वस्तु के खानेसे पेट फूल जावें। और जहां यह रोग मूत्र के अधिक निकलने से होता है उसका यह लक्षण है कि मूत्र और तरी के निकलने के पीछे कूलंज पैदा होवे और अगर रेहमें अधिकताके साथ ढुलकापन होने लगे तो उसका लक्षण यह है कि गर्म दवा या रोमकूपों का खुलना या पसीने की अधिकता आदिसे तथा ऐसा परिश्रम वा कार्य करनेसे जिससे देह रूक्ष होती हो जैसे लुहार वा हलवाई का काम करना आदि जहां कहीं पित्ताशय और आंत के बीच वाले मार्ग में गांठ पड़ जाने से यह रोग हो तो विष्ठाका सफेद होना, पेट फूलना, पीलिया रोगका उत्पन्न होना आदि लक्षण होते हैं। और जो कृमिरोग के कारण दर्द होता है उसमें बिना खाये दर्द घबड़ाहट आदि का होना ये लक्षण हैं तथा अन्य लक्षण इसके विषय में वर्णन किये जायगे। अगर यह दर्द कूलंज की निर्बलता के कारण से होता है तो इसके लक्षण ये हैं कि बत्ती वा हुकने के बिना विष्ठा न निकले।

(इलाज) पूर्ण रीतिसे वा काम प्रथम कब्ज दूर करके मल निकालदेवे इस काम के लिये बादाम का तेल और आबशामा गरम करके पान करावे और गर्म दिरुना आंतों जो मलको निकालदेवे खानको देवें जैसे मुर्ग वा मोटी मुर्गीका शोर्वा। जो आंतमें गर्मी वा खुश्की हो तो बनफशा, मकोय, कासनी के बीज गुलनरीन और मिश्री इनका जुलाब लाभदायक है। (अथवा) शर्बत बनफशा गर्म पानी में और बिहीदाने के लुआब में और कद्दूके पानी में और खुर्फेके बीजका शीरा, और गुलनर्गीन ये बहुत गुणकारक हैं (अथवा) बनफ्शे का तेल तथा खितमी और कतीरे का लुआब पेटपर मलना गुणदायक है। इसमें चिकने शोर्वे के बघने में घी डालकर रोगी पान करावे। और सब पेट को फिसलने वाले द्रव्यों का सेवन कराया जाय और जब कर्म हो जाय तो उचित है कि रोगी धीरे २ एक पांवसे उठने जिससे मल निकलजावे और यदि इस उपाय से भी न निकले तो नीचे लिखा हुआ काम देवें।

पथ्य की विधि।

[illegible], मुर्गी, घी, [illegible], [illegible], [illegible] आवश्यकतानुसार [illegible] पकाकर करके [illegible] फिर इसमें बादामका तेल [illegible], [illegible] [illegible] का [illegible] मिलाकर गुनगुना [illegible], [illegible]।

(अथवा) जहां आंत में गर्मी और खुश्की का [illegible] हो [illegible]

नमक और साबुन आदि तीक्ष्ण द्रव्यों की बत्ती चढ़ाने से भी आंतों में कष्ट न होवे और प्रत्येक वस्तु के खानेसे पेट फूल जावे। और जहां यह रोग मूत्र के अधिक निकलने से होता है उसका यह लक्षण है कि मूत्र और तरी के निकलने के पीछे कब्ज पैदा होवे और अगर देहमें अधिकाई साथ दुबलापन होने लगे तो उसका लक्षण यह है कि गर्म दवा या रोमकूपों का खुलना या पसीने की अधिकता आदिसे तथा ऐसा परिश्रम या कार्य करनेसे जिससे देह कृष होगी हो जैसे लुहार या हलवाई का काम करना आदि जहां कहीं पित्ताशय और आंत के बीच वाले मार्ग में गांठ पड़ जाने से यह रोग हो तो विष्टा का सफेद होना, पेट फूलना, पीलिया रोगका उत्पन्न होना आदि लक्षण होते हैं। और जो कृमिरोग के कारण दर्द होताहै उसमें बिना कारण दर्द घबराहट आदि का होना ये लक्षण हैं तथा अन्य लक्षण इसके विषय में वर्णन किये जायगे। अगर यह दर्द कूलून की निर्बलता के कारण से होता है तो इसके लक्षण ये हैं कि बत्ती या हुकने के बिना विष्टा न निकले।

(इलाज) पूर्ण रीतिसे या कम मथम कब्ज दूर करके मल निकालदेवे इस काम के लिये बादाम का तेल और आबकामा गरम करके पान करावे और गर्म चिकना शोर्बा जो मलको निकालदेवे खानेको देवे जैसे मुर्गे वा मोटी मुर्गीका शोर्बा। जो आंतमें गर्मी वा रुक्षता हो तो बनफशा, सफेद, काशनी के बीज तुरंजबीन और मिश्री इनका जुलाब लाभदायक है। (अथवा) गर्म बनफशा गर्म पानी में और बिहीदाने के लुआब में और कद्दू के पानी में और खुर्फेके बीजका शीरा, और तुरंजबीन ये बहुत गुणकारक हैं (अथवा) बनफशे का तेल तथा खितमी और कतीरे का लुआब पेटपर मलना गुणदायक है। इसमें चिरचेटे के बदले में घी डालकर इसेही पान करावे। और जब मल को फिसलाने वाले द्रव्यों का सेवन कराया जाय और मल नर्म होजाय तो उचित है कि गेर्मा धीरे २ एक पांवसे उछले जिससे मल निकलजावे और यदि इस उपाय से भी न निकले तो नीचे लिखा हुआ हाथ देवे।

हकना की विधि।

बनफशा, सुर्मी, मां, खितमी, कद्दू, इलब असलो आवश्यकतानुसार : काढ़ा करके छानलेवे फिर उसमें बादामका तेल, सामग्रीक, आबकामा खांड का चूर्ण मिलाकर गुनगुना हुकना, करे।

(अथवा) नारी अंगमें गर्मी और रूक्षता का कारण हो, न. २६ ई

नमक और साबुन आदि तीक्ष्ण द्रव्यों की बत्ती चढ़ाने से भी आंतों में कष्ट न होवे और प्रत्येक वस्तु के खानेसे पेट फूल जावे। और जहां यह रोग मल के अधिक निकलने से होता है उसका यह लक्षण है कि मल और तरी के निकलने के पीछे कब्ज पैदा होवे और अगर देहमें आकस्मात् साथ दुबलापन होने लगे तो उसका लक्षण यह है कि गर्म हवा या रोमकूपों का खुलना या पसीने की अधिकता आदिसे तथा ऐसा परिश्रम या काम करनेसे जिससे देह कृश होगी हो जैसे लुहार या हलवाई का काम करना आदि जहां वहां पित्ताशय और आंत के बीच वाले मार्ग में गांठ पड़ जाने से यह रोग हो तो विष्ठा सफेद होना, पेट फूलना, पीलिया रोगका उत्पन्न होना आदि लक्षण होते हैं। और जो कृमिरोग के कारण दर्द होताहै उसमें बिना वा ये दर्द घबराहट आदि का होना ये लक्षण हैं तथा अन्य लक्षण इसके विषय में वर्णन किये जायगे। अगर यह दर्द कूलन की निर्बलता के कारण से होता है तो इसके लक्षण ये हैं कि बत्ती या हुकने के बिना विष्ठा न निकले।

(इलाज) पूर्ण रीतिसे या कम मथय कब्ज दूर करके मल निकालदेवें इस काम के लिये बादाम का तेल और आबकामा गरम करके पान करावें और गर्म निकला शोर्बा जो मलको निकालदेवे खानेको देवें जैसे मुर्गे वा मोटी मुर्गीका शोर्बा। जो आंतमें गर्मी वा रुक्षता हो तो बनफशा, सफेद, कासनी के बीज तुरंजबीन और मिश्री इनका जुशांद लाभदायक है। (अथवा) गर्म मन दाना गर्म पानी में और बिहीदाने के लुआब में और कद्दूके पानी में और खुर्फेके बीजका शीरा, और तुरंजबीन में बहुत गुणकारक है (अथवा) बनफशे का तेल तथा खितमी और कनेर का लुभाव पेटपर मलना गुणदायक है। इसमें चिरमें गोर्व के बदले में घी डालकर इसे पान करावें। और जब मल को फिसलना वाले द्रव्यों का सेवन कराया जाय और मल न हो तोजाय तो उचित है कि रोगी धीरे २ एक घोंसे उठले जिससे मल निकलआवे और यदि इस उपाय से भी न निकले तो नीचे लिखा हुआ काम देवे।

मवाध की विधि।

खतपाना, सुर्गी, मौ, खितमी, मर्द, इनके मलोंमें आवश्यकतानुसार लेकर क्वाथ करके छानलेवें फिर उसमें वालामाता नमक, मायमकौ, आदि मल प्रमत्थान का चूर्ण मिलाकर गुनगुना हुक्ना दे।

(अथवा) जो आंत में गर्मी और खुश्की हो का शान्त है। नं. ३२६

(अथवा) नाशपाती को कूटकर उसका पानी निचोड़कर इस पानी में आधा रोगनगुल मिलाकर गर्म करै जिससे तेल शेष रहजाय फिर इस तेलमें सफेद मोम मिलाकर मलना उत्तम है। और अगर पित्ताशय और आंत के बीच के भाग में गांठ पड़ने के कारण से दर्द हो तो उसके खोलने का उपाय करै जैसा कि पीलिया रोग में कहचुके हैं। यदि इस रोग के कारण कीड़े हों तो उसके मारडालने का उसरीति से प्रयत्न करै जैसा कि उनके विषयमें आवेगा अगर आंतों की निर्बलता इस रोग का कारण हो तो वैसा उपाय करै जो आंतों के विषयमें कहागया है तथा खट्टी और कब्ज करनेवाली चीजों तथा ठंढे पानी से बचेरहैं। और तज, दालचीनी, बालछड़, छरीला, अजमोदके बीज, बिसवासा, जायफल, इन सबके क्वाथमें बादाम का तेल मिलाकर पान करावै और दस्तोंके लिये इयारज फैकरा देवे और उत्तम पथ्य इस रोगमें मोटे मुर्गे के मांस का बना पका हुआ पानी होताहै ॥

छटा भेद पित्तज कूलज का वर्णन ।

यह कूलेज पित्तके मलके आंतोंके भीतर इकट्ठा होजानेसे होताहै परन्तु यह रोग बहुत कम होताहै क्योंकि पित्त का मल इतना नहीं कि जिससे आंत भरजावें और इस प्रकारके लक्षण तथा चिकित्सा को पित्तके कारण जो मरोड़ा होताहै उसके वर्णनमें देखलो। सातवां भेद यह है जो किसी अवयवके मेलके कारण से हो उसे "कूलंज अर्जी" कहते हैं और इसके भेदोंमें से एक तो यहहै जो मसाने की सूजनके संयोगसे पैदा होताहै,दूसरे यह कि गुर्दे की सूजन के संयोगसे उत्पन्न हो, तीसरे यह कि कलेजे, तिल्ली, और पर्दों की सूजनके मेल से हो, चौथे यह कि गर्भस्थानके मेलसे हो और इस प्रकारके लक्षण तथा इलाज को इनमेंसे प्रत्येक अंग की चिकित्सामें देखलेवें। और यह भी ऊपर कहे हुए आंतों के दर्द से मिलजाता है तथा इसमें जो कुछ अन्तर है उसका वर्णन करचुके हैं।

विशेष वक्तव्य—कूलंज का एक और भेदहै उसे ईलाऊस कहते हैं और [illegible] सब भेदोंसे बुराहै और इस रोगकी दशा उस समय बहुत बिगड़ [illegible] है जब मुख के द्वारा विष्ठा निकलने लगता है तथा दर्द और [illegible] [illegible] आने लगती है यह रोग ऊपर वाली दुबली आंतों में होता है तथा इन्हीं कारणों से जिनका कूलंज में वर्णन किया गया है [illegible] की आदिमें ही पैदा होजाताहै और कभी ईलाऊस होजाताहै और [illegible]

(अथवा) नाशपाती को कूटकर उसका पानी निचोड़कर इस पानी में आधा रोगनगुल मिलाकर गर्म करे जिससे तेल शेष रहजाय फिर इस तेलमें सफेद मोम मिलाकर मलना उत्तम है । और अगर पित्ताशय और आंत के बीच के भाग में गांठ पड़ने के कारण से दर्द हो तो उसके खोलने का उपाय करे जैसा कि पीलिया रोग में कहचुके हैं । यदि इस रोग के कारण कीड़े हों तो उसके मारडालने का उसरीति से यत्न करें जैसा कि उनके विषयमें आवेगा अगर आंतों की निर्बलता इस रोग का कारण हो तो वैसा उपाय करें जो आंतों के विषयमें कहागया है तथा खट्टी और कब्ज करनेवाली चीजों तथा ठंढे पानी से बचेरहें । और सज, दालचीनी, बालछड़, छरीला, अजमोदके बीज, बिसबासा, जायफल, इन सबके काथमें बादाम का तेल मिलाकर पान करावे और दस्तोंके लिये इयारज फैकरा देवे और उत्तम पथ्य इस रोगमें मोटे मुर्गे मांस का घना पका हुआ पानी होताहै ॥

छठा भेद पित्तज कूलज का वर्णन ।

यह कूलंज पित्तके गाढ़े आंतोंके भीतर इकट्ठा होजानेसे होताहै परन्तु यह रोग बहुत कम होताहै क्योंकि पित्त का मल इतना नहीं कि जिससे आंत भरजावें और इस प्रकारके लक्षण तथा चिकित्सा को पित्तके कारण जो मरोड़ा होताहै उसके वर्णनमें देखलो । सातवां भेद वहहै जो किसी अवयवके मेलके कारण से हो उसे "कूलंज मर्जी" कहते हैं और उसके भेदोंमें से एक तो यहहै जो मसाने की सूजनके संयोगसे पैदा होताहै, दूसरे यह कि गुर्दे की सूजन के संयोगसे उत्पन्न हो, तीसरे यह कि कलेजे, तिल्ली, और पर्दों की सूजनके मेल में हो, चौथे यह कि गर्भस्थानके मेलसे हो और इस प्रकारके लक्षण तथा इलाज को इनमेंसे प्रत्येक अंग की चिकित्सामें देखलेवें । और यह भी ऊपर कहे हुए आंतों के दर्द से मिलजाता है तथा उसमें जो कुछ अन्तर है उसका वर्णन करचुके हैं ।

विशेष वृत्तान्त—कूलंज का एक और भेदहै उसे ईलाऊस कहते हैं और यह कूलंजके सब भेदोंसे बुराहै और इस रोगकी दशा उस समय बहुत बिगड़ जाती है जब मुख के द्वारा विष्ठा निकलने लगता है तथा डेकार और डकार में दुर्गन्धि आने लगती है यह रोग ऊपर वाली दुबली आंतों में पैदा होता है तथा इन्हीं कारणों से जिनका कूलंज में वर्णन किया गया है कभी तो आदिमें ही पैदा होजाताहै और कभी कूलंज ईलाऊस होजाताहै और कभी

तथा ह्यात और इस प्रकार के कीड़ों की यह पहचान है कि रोगी यदि हम्माम में इतना बैठे कि देह गर्म होजाय और प्यास की अधिकता हो तब एक पर्फेका टुकड़ा या थोड़ासा बहुत ठंडा पानी एक पात्र में भरकर रोगी के पेट पर मले। ऐसा करने से यदि नाभि के ऊपर जगह कूदी मालूम हो तो ह्यात नामक कीड़े होते हैं और यदि नाभि के नीचे की जगह कूदी हो तो कद्दूदाने होते हैं (चिकित्सा) जो कुछ दवा कीड़ों के मारडालने के विषय में ऊपर कही गई हैं वे सब इसमें भी लाभदायक हैं तथा इससे भी अधिक तीक्ष्ण दवा देवे क्योंकि इन कीड़ों का स्थान ह्यातके स्थान से बहुत नीचा है और अगर पीने की दवा देंगे तो गिज़ाननामी आतों तक पहुंचने में दवा की शक्ति कम होजायगी और अच्छी तरह काम न देगी इसी लिये इस रोग में हुकना बहुत गुणकारक है। जब कीड़े निकल जांय तब उसके पीछे आबकामा बिना कुछ खाये पीना चाहिये जिससे कि लेसदार रतूबत जिससे कीड़े पैदा होजाते हैं निकल जावे तथा हरीसा, पायचा और ताजा पनीर, दूध आदि रतूबत पैदा करने वाले द्रव्यों का सेवन न करे और अगर प्रति दिन रात्रि के समय केवल सिर्का, वा किसी गुणकारक औषधों का निथरा हुआ पानी, उसमें निवाजकर पान करावें तो कीड़े दूर होजाते हैं।

कद्दूदाने तथा गोलकीड़ों को नाशकरने वाली दवा।

चिरमगाजुर्की, वायविडंग, छिली हुई दिरम, प्रत्येक १ मिस्काल, नमक हिंदी १॥ दांग, निसोथ १ दिरम, इन्द्रायन का छिलका १ दांग इन सबको बारीक पीसकर पूर्वोक्त रीति से दूध या और किसी द्रव्यमें मिलाकर देवे। (अथवा) वायविडंग छिलीहुई ७ दिरम, निसोथ २ दिरम, मुनक्का ५ दिरम, काला दाना १ दिरम इनसबको मिलाकर आवश्यकतानुसार खाने को देवे और जो

---

* दस्तूर इलअमराज में लिखा है कि अगर रात को सोते समय इस दवा का प्रयोग किया जाय तो पेट के कीड़े निकल आते हैं (विधि) वायविडंग ८ दिरम, निसोथ बादाम के तेल में चिकना किया हुआ दो दिरम, अमरबेल की मिंगियां छिला गुड़ की एलुआ १० दिरम इन सब दवाओं को बारीक पीसकर रात के समय खाने को देवे और जो रोगी को दवा खाने से अनिच्छा हो तो नीचे लिखा हुकना देवे यथा कालादाना बाबूना इन्द्रायन मस्तगी ५ दिरम, अमरबेलकामगज़ दिरम नागरमोथा के पत्ते १ मुट्ठी इन सब का एक प्याले पानी में उबाल कर काढ़ा रहने पर छान ले फिर इस में आबकामा और बादाम का तेल मिला कर हुकना करें।

सोलहवां अध्याय।

गुदा के रोगों का वर्णन।

प्रथम प्रकरण बवासीर का वर्णन।

बवासीर दो प्रकार की होती है, एक यह है कि गुदा की रगों के सिर पर गाढ़े गाढ़े के रुधिरसे मस्से पैदा होजांय—ये मस्से सात प्रकार के होते हैं—यथा एक तो यह है कि जिसका सिरा फूल जाय और उसमेंसे कुछ मल टपके दूसरे यह कि उसमें शाखा और जड़ हो इसको 'नख्ल' अथवा पेड़ कहते हैं। (३) अंगूर के दाने के अनुसार गोल और चौड़े हों इनको "इनबी" कहते हैं (४) यह कि अंजीर के अनुसार हों इनको 'तीनी' कहते हैं (५) छोटे और कठोर हों जैसे मसूर और चना इनको 'अदसी' कहते हैं (६) लम्बे और कठोर हों जैसे छुहारेकी गुठली इनको 'तमरी' कहते हैं और (७) लम्बे और नर्म शहतूत के सदृश हों इसको "तूती" कहते हैं और तूती का सिर लाल और दाना की सूरत होता है और जड़ पतली होती है तथा इनमें से मस्से दो तरह के होते हैं एक तो वह जिनसे पीब रिसता है दूसरे न रिसने वाले इन दोनोंके होने पर भी ये या तो गुदाके बाहर होते हैं या भीतर होते हैं तथा जो गुदा के भीतर होते हैं उनका इलाज कठिन है और अंधी वह है कि जिसके भीतर छिद्र न हो और उसमें से कुछ न निकले और खूनी वह है कि जिसमें छिद्र हों और उसमें से पीला पानी और लोहू निकले। जानना चाहिये कि मस्सोंमें दर्द चुभनके साथ होना और जलन होना पित्त रुधिर का लक्षण है और चुभन और अधिक भारीपन का मालूम होना गाढ़े रुधिर का लक्षण है (इलाज) अगर अधिक रुधिर इसका कारण हो तो बासलीक अथवा साफिन अथवा बासिल की आवश्यकतानुसार फस्द खोले और दो दो चूतड़ों के बीचमें जोंक लगावे और प्रकोप नर्म करनेके लिये हरड़ और आलूबुखारे का शर्बत देवे और कद्दू और खीरे के बीज कूटके उपाय देवें और जिन वस्तुओं के खाना करने से गाढ़ा रुधिर पैदा होवे उनको देवे जैसे [illegible] के साथ [illegible] तथा [illegible] गाढ़ी वस्तु जैसे गोश्त और हिरन का मांस, [illegible] मछली इत्यादि मने और [illegible] इत्यादि इस रोग में ध्यान देवें [illegible] का औषध देवें दर्द का हल्का, [illegible]

और जब तक कि दवा सूखजाय तब तक रोगी इस तरह लेटा रहे और अगर सलाई जासके तो एक बारीक सलाई लेकर उसपर रुई लपेटे और अर्बी गोंदके पानी में भिगोकर सियाफ की पिसी हुई दवाओं में भरकर घाव में रक्खें।

सियाफ गर्व की विधि

एलुआ, कुन्दर, दम्मुलअखवैन, सुर्मा, फिटकरी, गुलनार, मस्तंगी एक दिरम, जंगार कूट छान कर गुलाब के जल में सियाफ बनावे। दूसरा भेद यह है कि घाव आंत के भीतर पहुंच गयाहो और उसका लक्षण यह है कि हवा और विष्टा अपने आप इस नासूर के मार्ग से निकल आवें इसी तरह अगर घाव में सलाई डाले और गुदा में उंगली लेजाय तो दोनों आंत में मिलजावें परंतु यह मार्ग बहुत तंग हो कि जिस में से सलाई न आ सके और तंग होने के कारण से विष्टा भी उस तर्फ से न निकल सके और इस बात का संदेह होकि घाव आंतके भीतर पहुंचगया है या नहीं तो इन दोनों में यह अमर है कि रुईको बीमार की गुदा में इस तरह रक्खे कि हवा भीतर न घुसने पावे और रोगी श्वासको रोक के नीचे की ओर जोर करे जैसा कि विष्टा के निकालने के लिये करते हैं और घाव पर उंगली रक्खें कि अगर हवा निकलती हुई मालूम होवे तो समझना चाहिये कि घाव आंत के भीतर पहुंच गया है और नहीं तो नहीं और दूसरी विधि इसके जानने की यह है एक नलके सदृश वस्तु लेकर उसका एक सिरा घाव पर लगावे और दूसरी तरफ कोई चीज जलावे जिससे धुआं भीतर जावे फिर अगर रोगी को धुआंकी गर्मी मालूम होवे तो जानना चाहिये कि घाव आंत के भीतर पहुंच गया है और नहीं तो नहीं (चिकित्सा) उचित यह है कि इसका इलाज न करें क्योंकि इसका इलाज करने से रोगी को कष्ट बहुत होता है क्योंकि इसका इलाज काटने से होता है या घाव करने वाली औषधों से और इन दोनों से डरे।

तीसरा प्रकरण गुदाकी सूजनका वर्णन

इसके दो भेद हैं पहला भेद गर्म सूजन के वर्णन में है और दूसरा यह भेद उत्पन्न होता है और [illegible] बाहर नहीं या भी [illegible] अथवा गर्म औषधों के खाने में आने के पीछे या हुकनों के पीछे या कट जाने या चोटके पीछे या बवासीर के काटने के पीछे उत्पन्न हो और इस का लक्षण यह है कि दर्द जलन और पेशाबका बूंद बूंद उतरना और इसके

और जब तक कि दवा सूखजाय तब तक रोगी इस तरह बैठा रहे और अगर सलाई जासके तो एक बारीक सलाई लेकर उसपर रुई लपेटे और अर्बी गोंदके पानी में भिगोकर सियाफ की पिसी हुई दवाओं में भरकर घाव में रक्खें।

सियाफ गर्व की विधि

एलुआ, कुन्दर, दम्मुलअखवैन, सुर्मा, फिटकरी, गुलनार, मस्तंगी एक दिरम, जंगार कूट छान कर गुलाब के जल में सियाफ बनावे। दूसरा भेद यह है कि घाव आंत के भीतर पहुंच गयाहो और उसका लक्षण यह है कि हवा और विष्ठा अपने आप इस नासूर के मार्ग से निकल आवें इसी तरह अगर घाव में सलाई डाले और गुदा में उंगली लेजाय तो दोनों आंत में मिलजायं परंतु यह मार्ग बहुत तंग हो कि जिस में से सलाई न आ सके और तंग होने के कारण से विष्ठा भी उस तर्फ से न निकल सके और इस बात का सन्देह होकि घाव आंतके भीतर पहुंचगया है या नहीं तो इन दोनों में यह अन्तर है कि रुईको बीमार की गुदा में इस तरह रक्खे कि हवा भीतर न घुसने पावे और रोगी श्वासको रोक के नीचे की ओर जोर करे जैसा कि विष्ठा के निकालने के लिये करते हैं और घाव पर उंगली रक्खें कि अगर हवा निकलती हुई मालूम होवे तो समझना चाहिये कि घाव आंत के भीतर पहुंच गया है और नहीं तो नहीं। और दूसरी विधि इसके जानने की यह है एक [illegible] वस्तु लेकर उसका एक सिरा घाव पर लगावे और दूसरी तरफ कोई चीज जलावे जिससे धुआं भीतर जावे फिर अगर रोगी को धुआंकी गर्मी मालूम होवे तो जानना चाहिये कि घाव आंत के भीतर पहुंच गया है और नहीं तो नहीं। (चिकित्सा) उचित यह है कि इसका इलाज न करें क्योंकि इसका इलाज करने से रोगी को कष्ट बहुत होता है क्योंकि इसका इलाज करने से होता है या नाश करने वाली औषधों से और इन दोनों से डरे।

तीसरा प्रकरण गुदाकी सूजनका वर्णन

इसके दो भेद हैं पहला भेद गर्म सूजन के वर्णन में है और दूसरा यही भेद उत्पन्न होता है और मांस हालमें बाहर नहीं या भी आदि में ऐसा हो अथवा गर्म औषधों के बाद में लगाने के दोष या दुर्गन्धि के दोष या का आने या बवासीर के दोष या बवासीर के काटने के दोष उत्पन्न हों और इस का लक्षण यह है कि दर्द जलन और बेचैनका दूर दूर उतरना और इसके

दर्द बहुत अधिक होता है और अगर आंतों के इर्द गिर्द में हो तो उसका यह लक्षण है कि दर्दकी जगह भीतर की तरफ हो और कभी क़ौलंज भी पैदा होजाता है और विष्टा को नहीं निकलने देताहै और कब्ज करदेता है और जो सूजन नलियों में हो तो मूत्र का कठिन से आना इस बात की साक्षी देता है और कभी गुर्दे की सूजन बढ़जाती है और अधिक दर्द होने लगता है और उसका कष्ट भेजे के पर्दों में पहुंचता है (लाभ) मिली हुई तप उस तप को कहते हैं कि रुककर फिर आजावे (इलाज) बासलीक या साफन की फस्द खोले और जौका काढ़ा और शर्बत बनफशा, ईसबगोलका लुआब, और बेदाने का लुआब, खितमी के बीजों का लुआब पिलावे। जौका आटा चन्दन, मामीसा, मकोयका पानी, कासनी का पानी, बनफशा का तेल सब को मिलाकर गुर्दे पर लेप करें और अगर कब्ज हो तो अमलतास का गूदा बादाम का तेल, या खट्टे मीठे अनार और शीरखिस्त से या हरड़ के क्वाथ से कि उसमें उन्नाव, लिहसौड़ा, आलू, बनफशा, कासनी, मकोय, इत्यादि पड़ा हो तबियत को नर्म करें और जब एक सप्ताह व्यतीत होजाय और दोष न पिघले और भारीपन और दर्द अधिक हो और मूत्र पतला हो तो जान लेवे कि दोष जमाहोता है और पकता है ऐसी दशा में चाहिये कि पीने की औषधों से और लेप से दोष फुलाने की चिन्ता करे जैसे अलसी के बीज, का लुआब, खत्मी का लुआब, मैथी के बीज पिलावे और इकलील, खत्मी अलसी मैथी जौका आटा और गर्म पानी और तिली का तेल मिलाकर लेप करें और इसी प्रकारसे आधे गर्म पानी और दोष के फुलानेवाली औषधों के क्वाथ से जोड़पर तरेड़ादें और जब दर्द बंद होजावे और बोझ मालूम हो तो जानलें कि बिलकुल पकगया है सो जो फूटजाय तो अच्छा है नहीं तो फोड़ने का परिश्रम करें और यह इस प्रकार पर है कि फोड़ने बाली औषधि जैसे कबूतर की बीट, कुरसनाका आटा, चक्कीका गुबार प्याज के पानीमें या किसी ऐसीही औषधमें मिलाकर लेपकरें और चूतड़की हड्डियोंको इसतरह फेरे कि सूजनके ऊपर की खाल फटजावे और पीब पेशाब की राहसे बाहर निकल आवे और जब सूजन फूट जावे और पीब पेशाब में प्रगट हो तो चाहिये कि ककड़ी खीरेके बीज का शीरा, खरबूजे के बीज का शीरा और कद्दू के बीज का शीरा और सौंफ के बीज का शीरा मिश्री में मिलाकर देवें जिससे पीब साफ होजावे और शर्बत बनफशा और गधे का दूध अधिक लाभदायक

दर्द बहुत अधिक होता है और अगर आंतों के इर्द गिर्द में हो तो उसका यह लक्षण है कि दर्दकी जगह भीतर की तरफ हो और कभी क़ूलंज भी पैदा होजाता है और विष्ठा को नहीं निकलने देताहै और कब्ज करदेता है और जो सूजन नलियों में हो तो मूत्र का कठिन से आना इस बात की साक्षी देता है और कभी गुर्दे की सूजन बढ़जाती है और अधिक दर्द होने लगता है और उसका कष्ट भेजे के पर्दों में पहुचता है (लाभ) मिली हुई तप उस तप को कहते हैं कि रुककर फिर आजावे (इलाज) बासलीक या साफन की फस्द खोले और जौका काढ़ा और शर्बत बनफशा, ईसबगोलका लुआब, और बेदाने का लुआब, खितमी के बीजों का लुआब पिलावे। जौका आटा चन्दन, मामीसा, मकोयका पानी, कासनी का पानी, बनफशा का तेल सब को मिलाकर गुर्दे पर लेप करें और अगर कब्ज हो तो अमलतास का गूदा बादाम का तेल, या खट्टे मीठे अनार और शीरखिस्त से या हरड़ के क्वाथ से कि उसमें उन्नाब, लिहसौड़ा, आलू, बनफशा, कासनी, मकोय, इत्यादि पड़ा हो तबियत को नर्म करें और जब एक सप्ताह व्यतीत होजाय और दोष न पिघले और भारीपन और दर्द अधिक हो और मूत्र पतला हो तो जान लेवे कि दोष जमाहोता है और पकता है ऐसी दशा में चाहिये कि पीने की औषधों से और लेप से दोष फुलाने की चिन्ता करे जैसे अलसी के बीज, का लुआब, खत्मी का लुआब, मैथी के बीज पिलावे और इकलील, खत्मी अलसी मैथी जौका आटा और गर्म पानी और तिली का तेल मिलाकर लेप करें और इसी प्रकारसे आधे गर्म पानी और दोष के फुलानेवाली औषधों के क्वाथ से जोड़पर तरेड़ादें और जब दर्द बंद होजावे और बोझ मालूम हो तो जानलें कि बिलकुल पकगया है सो जो फूटजाय तो अच्छा है नहीं तो फोड़ने का परिश्रम करें और यह इस प्रकार पर है कि फोड़ने वाली औषधि जैसे कबूतर की बीट, कुरसनाका आटा, चक्कीका गुबार प्याज के पानीमें या किसी ऐसीही औषधमें मिलाकर लेपकरें और चूतड़की हड्डियोंको इसतरह फेरे कि सूजनके ऊपर की खाल फटजावे और पीव पेशाव की राहसे बाहर निकल आवे और जब सूजन फूट जावे और पीव पेशाब में प्रगट हो तो चाहिये कि ककड़ी खीरेके बीज का शीरा, खरबूजे के बीज का सीरा और कद्दू के बीज का सीरा और सौंफ के बीज का सीरा मिश्री में मिलाकर देवें जिससे पीव साफ होजावे और शर्बत बनफशा और गधे का दूध अधिक लाभदायक

मिलाकर लेपकरें और अजमोदके सूखे बीज, अनीसून, हिलीऊन उबाल कर साफकर और शहत का गुलकन्द मिलाकर पिलावें और इस रोग में वमन अधिक गुणकारकहै और अमलतास का गूदा पीनेमें और हुकना करने में भी आंतों की भीतरली सूजनके दूर करनेमें अधिक गुणकारकहै और वैद्य लोग कहते हैं कि पेशाब गाढ़ा होतो कई राततक सोते समय एक दिरम इयारज फैकरे का खाना और पीछे इसके गर्म पानी चारचमचे पीना दोष को निकालताहै और अगर काफी नहो तो यह गोलियां बनावें (विधि) जवानी,जीरा, हरएक आधा दिरम मस्तगी १ दिरम, एलुआ २ दिरम वादरजबोया के पानी अथवा गुलाबमें मिलाकर गोलियां बनाकरदेनेसे देह को रतूबतसे और सूजन के दोषसे रहित करती हैं और इस रोगमें चनेके पानी का भोजन और पक्षिओं का भुना हुआ मास कि जिसमें अजमोद, पोदीना और जीरा मिलाहो खिलावें (लाभ) जानना चाहिये कि गुर्दे की सूजन गर्म हो या ठंडी अगर इस के इलाज में भूल पड जाती है तो बुरे रोग पैदा होजातेहैं क्योंकि गुर्दा एक ऐसा अवयवहै कि जो दोष उसमें थोडे समय तक रहजाताहै तो गुर्देमें पथरी और रेत पैदाकर देताहै और वातज सूजन का इलाज इस तरहकरें कि दोष कठिन नहो और मूलीके बीज, सोयेके बीज,पानी में उबाल कर मलके छानके सिकजबीन मिलाकर वमन करें । तीसरा भेद यहहै कि गुर्द की सूजन कठोर और वातज हो और यह बहुधा गर्म सूजन और कफज सूजनके पीछे होजाता है इलाज में किसी भूलके कारणसे और कभी प्रारम्भमें ही उत्पन्न होताहै उसके लक्षण यह हैं बोझ का अधिक मालूम होना, पेशाब का जर्द और पतला होना और दर्द का कम होना और कमर बन्द के स्थान में दोनों तरफ और दोनों चूतडोंमें सन्नाटे का होना और दोनों पिंडलियों का निर्बलहोना आदि। और यह रोग बहुधा जलधर में जामिलता है और रोगीकी पीठ झुकी हुई होती है सीधी नहीं होसक्ती और कभी ऐसा भी होता है कि दिकका रोग पैदा होजाता है और तिबरीने वर्णन किया है कि इस कठोर सूजन के कारण से दिक उत्पन्न होजाती है इस कारण से कि जो रग गुर्दे से निकलकर हृदय की ओर आई है और इसमें से हृदय को भोजन जाता है वह इस सूजन के कारण से दबजाती है (इलाज) बाबूना इकलील, अलसी के बीज मेथी, खत्मी, गूगल उश्क, रीछकी चर्बी, गौ की पिंडली का गूदा सबको मिलाकर कूटन और कमर पर लेप करें और बाबूना का तेल कुरतुम का तेल नार ,का

मिलाकर लेपकरें और अजमोदके सूखे बीज, अनीसून, हिलीऊन उबाल कर साफकर और शहत का गुलकन्द मिलाकर पिलावें और इस रोग में वमन अधिक गुणकारकहै और अमलतास का गूदा पीनेमें और हुकना करने में भी आँतों की भीतरली सूजनके दूर करनेमें अधिक गुणकारकहै और वैद्य लोग कहते हैं कि पेशाब गाढ़ा होतो कई रावतक सोते समय एक दिरम इयारज फैकरे का खाना और पीछे इसके गर्म पानी चारचमचे पीना दोष को निकालताहै और अगर काफी नहो तो यह गोलियां बनावें (विधि) जवानी, जीरा, हरएक आधा दिरम मस्तगी १ दिरम, एलुआ २ दिरम बादरजबोया के पानी अथवा गुलाबमें मिलाकर गोलियां बनाकरदेनेसे देह को रतुवतसे और सूजन के दोपसे रहित करती हैं और इस रोगमें चनेके पानी का भोजन और पक्षिओं का भुना हुआ मास कि जिसमें अजमोद, पोदीना और जीरा मिलाहो खिलावें (लाभ) जानना चाहिये कि गुर्दे की सूजन गर्म हो या ठंडी अगर इस के इलाज में भूल पड जाती है तो बुरे रोग पैदा होजातेहैं क्योंकि गुर्दा एक ऐसा अवयवहै कि जो दोप उसमें थोडे समय तक रहजाताहै तो गुर्देमें पथरी और रेत पैदाकर देताहै और बातज सूजन का इलाज इस तरहकरें कि दोप कठिन नहो और मूलीके बीज, सोयेके बीज, पानी में उबाल कर मलके छानके सिकंजबीन मिलाकर वमन करें। तीसरा भेद यहहै कि गुर्द की सूजन कठोर और बातज हो और यह बहुधा गर्म सूजन और कफज सूजनके पीछे होजाता है इलाज में किसी भूलके कारणसे और कभी प्रारम्भमें ही उत्पन्न होताहै उसके लक्षण यह हैं बोझ का अधिक मालूम होना, पेशाब का जर्द और पतला होना और दर्द का कम होना और कमर बन्द के स्थान में दोनों तरफ और दोनों चूतडोंमें सन्नाटे का होना और दोनों पिंडलियों का निर्बलहोना आदि। और यह रोग बहुधा जलधर में जामिलता है और रोगीकी पीठ झुकी हुई होती है सीधी नहीं होसक्ती और कभी ऐसा भी होता है कि दिक्का रोग पैदा होजाता है और तिबरीने वर्णन किया है कि इस कठोर सूजन के कारण से दिक उत्पन्न होजाती है इस कारण से कि जो रग गुर्दे से निकलकर हृदय की ओर आई है और इसमें से हृदय को भोजन जाता है वह इस सूजन के कारण से दबजाती है (इलाज) बाबूना इकलील, अलसी के बीज मेथी, खत्मी, गूगल उश्क, रीछकी चर्बी, गौ की पिंडली का गूदा सबको मिलाकर कतन और कमर पर लेप करें और बाबूना का तेल करडम कातेल गार का

दर्द दोनों फधो तक पहुंचेगा और प्यास भी अधिक होगी और अगर इस नली की तरफ होगा जो गुर्दे और मसाने के बीच में है तो कभी दर्द घुटने तक पहुचेगा और यह भीतर की पीव गुदा से आती है या ऊपर के अवयव से तो वह उसी अवयव के विगड़ने से प्रगट होता है जितनी दूर के अवयव से पीव आवेगी उतनी ही पेशाव में अधिक मिली होगी (इलाज) पहले दोष को ही ठीक करें जिससे कवाड़पन और खारीपन दूर होजावे और मिठास आजावे और शर्वत और भोजन प्रत्येक दोष के ठीक करने के लिये कईवार वर्णन होचुके हैं और उत्तम यह है कि अगर कोई बुराई न हो तो बासलीक की फस्द दर्दकी ओर से खोलदें और अगर दोनों ओर को दर्द हो तो दोनों हाथों की फस्द खोलें और जानना चाहिये कि इस रोग में वमन अधिक गुणकारक है क्योंकि दोष उल्टी ओर से निकलता है और यह बात दस्तों के विरुद्ध है कि जितने अधिक बलवान् होते हैं उसी प्रकार हानि करते हैं लेकिन वैद्य लोग हलकी और दोष को नर्म करने वाली औषध की आज्ञादेते हैं जिसमें दोष को उस ओर से आता की ओर को लेआवे और फिर भी दोष को न उभारे और जब देह और दोषों को साफ करचुके तो पेशाव लानेवाली औषधदेवें जिससे घाव साफ होजावें और पेशाव लानेवाली औषधें प्रकृति के अनुसार दीजाती हैं जैसे अगर गर्मी न हो तो ककड़ी खीरेके बीजोंका शीरा, खरबूजेके बीजोंका शीरा, अलसी के बीज इत्यादि शहदया मिश्रीमें मिलाकर देवें और कभी घाव साफ होनेसे पहले पीव जम जाती है और खार खस्क, बाबूना परसियाव सांगुखुब्बाजी के क्वाथमें बैठना और गर्म पानीसे कमर और गुर्देपर तरेड़ा देना लाभकारकहै और जमे हुए जर्द पानी को ठीक करताहै और यह चूर्ण लाभकारक है अजमोद के बीज, सौंफ, अनीसून, जूफा प्रत्येक दो दिरम, कुन्दर ४ दिरम इसमें से दो मिस्काल बीस दिरम शहत के पानी के साथ देवें और अगर दर्द अधिक होतो थोड़ेसे भगके बीज, तुफाक, और अफीम गढ़ा देवें।औरपोस्त खसखास, केपानीमें विठावे और गुलरौगन गुदापर मले और जब घाव साफ होजावे तो उस के भरने में परिश्रम करें और उसकी यह विधि है कि घावके भरनेवाली औषधें जैसे दम्बुलअखवैन,गिले अरमनी, जला हुआ कागज, कुन्दर इत्यादि कहरवा की टिकिया खस २ की टिकिया इत्यादि चे पदार औषधों के साथ जैसे निशास्ता, अर्बीगोंद, और पेशाव के लाने वाली औषधें जसे ककड़ी खीरे के बीज, खरबूजे के बीज, कासनी के बीज, सौंफ, मिलाकर खिलावें और चाहिये कि इस घाव के इलाज में बड़ा परिश्रम करें

दर्द दोनों कधो तक पहुंचेगा और प्यास भी अधिक होगी और अगर इस नली की तरफ होगा जो गुर्दे और मसाने के बीच में है तो कभी दर्द घुटने तक पहुचेगा और यह भीतर की पीव गुदा से आती है या ऊपर के अवयव से तो वह उसी अवयव के विगड़ने से प्रगट होता है जितनी दूर के अवयव से पीव आवेगी उतनी ही पेशाब में अधिक मिली होगी (इलाज) पहले दोष को ही ठीक करें जिससे कवाड़पन और खारीपन दूर होजावे और मिठास आजावे और शर्बत और भोजन प्रत्येक दोष के ठीक करने के लिये कईवार वर्णन होचुके हैं और उत्तम यह है कि अगर कोई बुराई न हो तो बासलीक की फस्द दर्दकी ओर से खोलदें और अगर दोनों ओर को दर्द हो तो दोनों हाथों की फस्द खोलें और जानना चाहिये कि इस रोग में वमन अधिक गुणकारक है क्योंकि दोष उल्टी ओर से निकलता है और यह बात दस्तों के विरुद्ध है कि जितने अधिक बलवान् होते है उसी प्रकार हानि करते हैं लेकिन वैद्य लोग हलकी और दोष को नर्म करने वाली औषध की आज्ञादेते हैं जिसमें दोष को उस ओर से आंतों की ओर को लेआवे और फिर भी दोष को न उभारे और जब देह और दोषों को साफ करचुके तो पेशाब लानेवाली औषधदेवें जिससे घाव साफ होजावें और पेशाब लानेवाली औषधें प्रकृति के अनुसार दीजाती हैं जैसे अगर गर्मी न हो तो ककड़ी खीरेके बीजोंका शीरा, खरबूजेके बीजोंका शीरा, अलसी के बीज इत्यादि शहदया मिश्रीमें मिलाकर देवें और कभी घाव साफ होनेसे पहले पीव जम जाती है और खार खस्क, बायूना परसियाव सांगुखुब्बाजी के क्वाथमें बैठना और गर्म पानीसे कमर और गुर्देपर तरेड़ा देना लाभकारकहै और जमे हुए जर्द पानी को ठीक करताहै और यह चूर्ण लाभकारक है अजमोद के बीज, सोंफ, अनीसून, जूफा प्रत्येक दो दिरम, कुन्दर ४ दिरम इसमें से दो मिस्काल बीस दिरम शहत के पानी के साथ देवें और अगर दर्द अधिक होतो थोड़ेसे भंगके बीज, तुफाक, और अफीम वढ़ा देवें।औरपोस्त खसखास, येपानीमें त्रिठावे और गुलरोगन गुदापर मले और जब घाव साफ होजावे तो उस के भरने में परिश्रम करें और उसकी यह विधि है कि घावके भरनेवाली औषधें जैसे दम्युलअखवैन,गिले अरमनी, जला हुआ कागज, कुन्दर इत्यादि कहरवा की टिकिया खस २ की टिकिया इत्यादि चेपदार औषधों के साथ जैसे निशास्ता, अर्बीगोंद, और पेशाब के लाने वाली औषधें जसे ककड़ी खीरे के बीज, खरबूजे के बीज, कासनी के बीज, सोंफ, मिलाकर खिलावें और चाहिये कि इस घाव के इलाज में बड़ा परिश्रम करें

और यह फुन्सियों का लक्षण है और अगर फुन्सियां गुर्दे में बाहर की ओर हों तो सदा दर्द अधिक रहता है और जो भीतर की ओर पेशाब के मार्गमें हों तो पेशाबके आनेके समय जलन अधिक होती है और फिर बद होजातीहै और प्रगट हो कि फुन्सियां जितनी कम या अधिक होंगी और घाव जितने चौड़े होंगे उसी के अनुसार दर्द में कमी वा अधिकता होगी (इलाज) विरेचन के पीछे बासलीक की फस्द खोलें या गुर्दे के स्थान पर पछने लगावें और सातरा, आलू और लिहसौड़े का काथ तुरजबीन मिलाकर पिलावें जिस से प्रकृति नर्म हो और वमन और नर्म हुकना लाभकारकहै और जिस मनुष्य को वमन करने में कुछ हानि न हो तो चाहिये कि शर्बत वनफशा, शर्बत खस खास और बनादिकबुजुर खाना विशेष करके विरेचन के पीछे और खतमी और बकलैयमानी, पालक और धनियां खाना लाभदायक है और बादामका तेल शियाफे अबीअज में मिलाकर पेशाब के छेद में टपकाना और खारी और गधक के पानीमें जाना और लोहेका बुझाहुआ पानी पीना लाभदायक है (बनादिक बुजुरकी विधि) खरबूजेके बीज दस दिरम, कद्दूके बीजकी मिंगी, खत्मीके बीज, भगके बीज, खुरफा, बादामकी मिंगी, निशास्ता, मुल्हटीकासत, खसखस सफेद प्रत्येक दो दिरम नर्म कूटकर ईसबगोल के लुआब में मिलाकर गोलियां बनावे और जब काममें लाना चाहे तो इसमें गिले अरमनी मिलाले जिससे खुश्की पहुचे और घावभर आवे।

नवां प्रकरण।

जयाबीतस का वर्णन।

यह ऐसा रोग है कि इसमें जैसा पानी पीवे वैसाही कुछ थोड़ी देर में पेशाब के मार्ग से बाहर निकल आता है और इसी कारणसे इस रोग में और सिल २ बोल में अंतर करते हैं और इस रोग के और भी कई नाम हैं जैसा जलकुलकिलिया, सिल २ बोल, दूलाबिया, दवारिया, परकारिया, इस्तिस कार मसाना, और इस्तसका अर्थात् जलोदर का शब्द इसके साथ इस लिये मिलाया है कि जैसा जलोदर में पानी आंतों में जमा होता है वैसाही इस रोग में पानी मसाने में इकट्ठा होजाता है जैसे कि यही दोष है जो अवयव में इकट्ठा होता है और उसके दो भेद हैं। पहिला भेद यह है कि अधिक गर्म उपद्रव गुर्दे में उत्पन्न हो इस कारण से उसकी ग्रहण शक्ति पानी को अधिक ग्रहण करें और निस्सारक शक्ति इस कारणसे कि निर्बल और तंग है उसको न ठहरा सके और निरोधकशक्ति उसको मसाने की ओर निकालदे और गुर्दा

और यह फुन्सियों का लक्षण है और अगर फुन्सियां गुर्दे में बाहर की ओर हों तो सदा दर्द अधिक रहता है और जो भीतर की ओर पेशाब के मार्गमें हों तो पेशावके आनेके समय जलन अधिक होती है और फिर बद होजातीहै और प्रगट हो कि फुन्सियां जितनी कम या अधिक होंगी और घाव जितने चौड़े होंगे उसी के अनुसार दर्द में कमी वा अधिकता होगी (इलाज) विरेचन के पीछे बासलीक की फस्द खोलें या गुर्दे के स्थान पर पछने लगावें और सातरा, आलू और लिहसौड़े का काथ तुरजबीन मिलाकर पिलावें जिस से प्रकृति नर्म हो और वमन और नर्म झुकना लाभकारकहै और जिस मनुष्य को वमन करने में कुछ हानि न हो तो चाहिये कि शर्बत बनफशा, शर्बत खस खास और बनादिकबुजुर खाना विशेष करके विरेचन के पीछे और खतमी और बकलैयमानी, पालक और धनियां खाना लाभदायक है और बादामका तेल शियाफे अबीअज़ में मिलाकर पेशाब के छेद में टपकाना और खारी और गधक के पानीमें जाना और लोहेका बुझाहुआ पानी पीना लाभदायक है (बनादिक बुजुरकी विधि) खरबूजेके बीज दस दिरम, कद्दूके बीजकी मिंगी, खत्मीके बीज, भगके बीज, खुरफा, बादामकी मिंगी, निशास्ता, मुल्हटीकासत, खसखस सफेद प्रत्येक दो दिरम नर्म कूटकर ईसबगोल के लुआब में मिलाकर गोलियां बनावे और जब काममें लाना चाहे तो इसमें गिले अरमनी मिलाले जिससे खुश्की पहुचे और घावभर आवे।

नवा प्रकरण।

जयाबीतस का वर्णन।

यह ऐसा रोग है कि इसमें जैसा पानी पीवे वैसाही कुछ थोड़ी देर में पेशाब के मार्ग से बाहर निकल आता है और इसी कारणसे इस रोग में और सिल २ बोल में अतर करते हैं और इस रोग के और भी कई नाम हैं जैसा जलकुलकिलिया, सिल २ बोल, दूलाबिया, दबारिया, परकारिया, इस्तिस कार मसाना, और इस्तसका अर्थात् जलोदर का शब्द इसके साथ इस लिये मिलाया है कि जैसा जलोदर में पानी आंतों में जमा होता है वैसाही इस रोग में पानी मसाने में इकट्ठा होजाता है जैसे कि यही दोष है जो अवयव में इकट्ठा होता है और उसके दो भेद हैं। पहिला भेद यह है कि अधिक गर्म उपद्रव गुर्दे में उत्पन्न हो इस कारण से उसकी ग्रहण शक्ति पानी को अधिक ग्रहण करें और निस्सारक शक्ति इस कारणसे कि निर्बल और तग है उसको न ठहरा सके और निरोधकशक्ति उसको मसाने की ओर निकालदे और गुर्दा

हिये कि अगर केवल गुर्दे मे ठढ होगी तो उसकी अपेक्षा प्यास अधिक होगी कि तमाम देह में ठढ हो साराश यह है कि चाहे जिस प्रकार हो ठढे जिया बीतस की प्यास गर्म जाबीतसकी प्यास को कदापि नहीं पहुचती है और इन दोनों में अतर प्रगट है इस कारण से कि उनकी प्रसशा जो वर्णन हो चुकी हैं बहुत हैं (इलाज) गुर्दे और देह में गर्मी पहुचाने के लिये मसरूदीतूस और गर्म माजून देवें और गर्म और बलवान तेल जैसे कूट और महलब और साद का तेल, जुदवेदस्तर अकरकरा मिलाकर गुर्दे और पीठ पर मलें और गंधक के सरोवर में बैठना लाभदायक है और विरेचन की आवश्यकता हो तो मूली का क्वाथ और शहदकी सिकजबीन मिलाकर वमन करावें और नर्म करनेवाली औषधों का हुकना करैं और उत्तम भोजन चिड़ियों का मांस भुनाहुआ मांस और पक्षियों का मांस है। उस माजून की विधि जो इस जगह लाभकारक है और इसका नाम मासुकुल बोल अर्थात् पेशाब के रोकने वाली है कुन्दर, शाह बलूत, साद, कुलीजन, कुरफा, ऊद इन छ० औषधों को लेकर शहत में मिला कर देवें इसकी मात्रा दो मिस्काल है (लाभ) जया बीतस यूनानी बोली में डोल को कहते हैं इस कारण से कि पानी को एक तरफ से ग्रहण करता है और दूसरी ओर से निकालता है इसही कारण से इसका यह नाम रक्खा गया है और मौलाना नफीस ने वर्णन कियाहै कि इसको सिल२ बोल कहते हैं और बहरुल जवाहर के ग्रन्थकार का शब्द इस के विरुद्ध है इस कारण से कि सिल २ बोल में पेशाब बिना इरादे आते हैं और जियाबीतस में इरादे के साथ पेशाब आता है और ठीक बात यह है कि मौलाना नफीस का वाक्य ठीक है इस कारण से कि जब निर्बलता की अधिकता होगी और पेशाब की नली में ठढ आजायगी तो पेशाब न रुकसकेगा।

दसवा प्रकरण।

गुर्दे में पथरी और रेत के पडजाने का वर्णन।

वह पथरी और रेत जो गुर्दे में हो इस रोग का कारण कची लहसदार दूषित रतूबत हैं जो पथरीली हो जावें फिर अगर उस में गाढ़ा पन और लहस अधिक है तो पथरी उत्पन्न होती है और अगर इतनी गाढ़ी नहीं हो तो रेत उत्पन्न होती है और कभी पीप और खून से भी पथरी उत्पन्न होती है और पथरी और रेत के उत्पन्न होने का कारण बलवान सुखाने वाली अग्नि जो लहसदार मल को जमाने के पीछे कठोरकर डालती है और जानना चा-

हिये कि अगर केवल गुर्दे मे ठड होगी तो उसकी अपेक्षा प्यास अधिक होगी कि तमाम देह में ठड हो साराश यह है कि चाहे जिस प्रकार हो ठडे जिया बीतस की प्यास गर्म जाबीतसकी प्यास को कदापि नहीं पहुचती है और इन दोनों में अतर प्रगट है इस कारण से कि उनकी प्रसशा जो वर्णन हो चुकी है बहुत हैं (इलाज) गुर्दे और देह में गर्मी पहुचाने के लिये मसरूदीतूस और गर्म माजून देवें और गर्म और बलवान तेल जैसे कूट और महलब और साद का तेल, जुदबेदस्तर अकरकरा मिलाकर गुर्दे और पीठ पर मलें और गंधक के सरोवर में बैठना लाभदायक है और विरेचन की आवश्यकता हो तो मूली का काथ और शहदकी सिकजबीन मिलाकर वमन करावें और नर्म करनेवाली औषधों का हुकना करें और उत्तम भोजन चिड़ियों का मांस भुनाहुआ मांस और पक्षियों का मांस है। उस माजून की विधि जो इस जगह लाभकारक है और इसका नाम मासुकुल बोल अर्थात् पेशाव के रोकने वाला है कुन्दर, शाह बलूत, साद, कुलीजन, कुरफा, ऊद इन छ. औषधों को लेकर शहत में मिला कर देवें इसकी मात्रा दो मिस्काल है (लाभ) जया बीतस यूनानी बोली में डोल को कहते हैं इस कारण से कि पानी को एक तरफ से ग्रहण करता है और दूसरी ओर से निकालता है इसही कारण से इसका यह नाम रक्खा गया है और मौलाना नफीस ने वर्णन कियाहै कि इसको सिल२ बोल कहते हैं और बहरुल जवाहर के ग्रन्थकार का शब्द इस के विरुद्ध है इस कारण से कि सिल २ बोल में पेशाव बिना इरादे आते हैं और जियाबीतस में इरादे के साथ पेशाव आता है और ठीक बात यह है कि मौलाना नफीस का वाक्य ठीक है इस कारण से कि जब निर्बलता की अधिकता होगी और पेशाव की नली में ठड आजायगी तो पेशाव न रुकसकेगा।

दसवा प्रकरण।

गुर्दे में पथरी और रेत के पडजाने का वर्णन।

वह पथरी और रेत जो गुर्दे में हो इस रोग का कारण कची लहसदार दूषित रतूबत हैं जो पथरीली हो जावें फिर अगर उस में गाढ़ा पन और लहस अधिक है तो पथरी उत्पन्न होती है और अगर इतनी गाढ़ी नहीं हो तो रेत उत्पन्न होती है और कभी पीप और खून से भी पथरी उत्पन्न होती है और पथरी और रेत के उत्पन्न होने का कारण बलवान सुखाने वाली अग्नि जो लहसदार मल को जमाने के पीछे कठोरतर डालती है और जानना चा-

वनफशा, तिलोंके पत्ते उबालकर रोगी को उसके क्वाथमें कमर तक बिठावे और इस क्वाथ की औषधों का मल कुतुन, खासरा, और हालवान पर लेप करना लाभकारकहै और जान लेना चाहिये कि जब रोगी औषधोंके पानीमें बैठा हो तो पेशाब लानेवाली औषध पीना जल्द असर करताहै जैसे कि यह बात प्रगटहै और जब रोगी को औषधोंके पानीसे बाहर निकालें तोखैरी का तेल, वनफसे का तेल, सोये का तेल मिलाकर पीठ और कमर औरगुर्दे पर मलें और प्रकृति की गर्मी और ठंढ का ध्यान अवश्य जाने (सूचना)अगर रेत गुर्दे में है तो बलवान औषधों की आवश्यकता नहीं वह उपरोक्त विधियों से दूर होजाती है परन्तु गुर्दे की पथरी दो दशासे रहित नहीं होती एक तो यह कि साफ करनेवाली और तोडनेवाली औषधोंसे टुकडे २ होकर बाहर निकल आवें दूसरा यह कि वैसेही पेशाबके रास्तेसे बिना टूटी बाहर निकल आवे या उन विधियोंसे कि उसके निकालनेके लिये प्रधानहैं इसलिये वैद्योंनेवर्णनकिया है कि जब रोगी औषधोंके क्वाथमेंसे बाहर निकलें तो कुतुन पर तेल मलें और उस को कुछ टहलने की और चूतड हिलाने की और सीढियों परसे उतरने की और एक पैर पर कूदने की आज्ञा देवें और यह सब बातें इस कारणसे हैं कि पथरी बाहर निकलआवें अगर इस विधिसे निकलआवे तो अच्छाहै और जो उस स्थानमें रुकजावे जो गुर्दे और मसानेके बीचमेंहै तो इस विधिसे बाहर निकाले कि जिस स्थानमें पथरीरुकीहुईहै उससे नीचे सिंगी लगाकर जोरसे खींचे जिससे पथरी इधर को आजावे और सिंगी उस जगहसे उठाकरनीचेकीओर ऐसा करते करते खिसकाते लावे कि पथरी मसाने में आजाय और अगर इस बीच में नर्मी के लिये खत्मी के बीज, अलसी, मेथी का लुआब लेकर और कुतुन का तेल मिलाकर आंतोंपर हुक्ना कर और अमलतासका गूदा पानी या खत्मीके क्वाथमें घोलकर बादामका तेल मिलाकर पिलावें तो उत्तमहै और जब पथरी मसाने में आजावे और आप से आप न निकले और रुकजावे तो उस समय यह विधि है कि पेशाबकी जगह को गर्म पानी में रखें और जो लुआब और तेल ऊपर वर्णन होचुके हैं उनमें से जो उचित हो छिद्र में टपकावें और धीरे २ हथेली से अपने पेशाब की जगह को अगली तरफमलें जिससे पथरी निकल आवे और अगर उससमय पेशाब की नली में पथरी के रुकजाने से दर्द अधिक होवे और रोगी बेचैन होजावे तो फिलोनिया दें और इसके सिवाय जो औषध दर्द के बंद करने वाली हों देवें जैसे [illegible] और बरसासा और पुराना तिरयाक जिसमें अफीमकी [illegible]
और ऐसा भी होता है कि पथरी पेशाब के रास्ते से किसी [illegible]

वनफशा, तिलोंके पत्ते उबालकर रोगी को उसके क्वाथमें कमर तक बिठावे और इस क्वाथ की औषधों का मल कुतुन, खासरा, और हालवीन पर लेप करना लाभकारकहै और जान लेना चाहिये कि जब रोगी औषधोंके पानीमें बैठा हो तो पेशाब लानेवाली औषध पीना जल्द असर करताहै जैसे कि यह बात प्रगटहै और जब रोगी को औषधोंके पानीसे बाहर निकालें तोखैरी का तेल, बनफसे का तेल, सोये का तेल मिलाकर पीठ और कमर औरगुर्दे पर मलें और प्रकृति की गर्मी और ठंड का ध्यान अवश्य जाने (सूचना)अगर रेत गुर्दे में है तो बलवान औषधों की आवश्यकता नहीं वह उपरोक्त विधियों से दूर होजाती है परन्तु गुर्दे की पथरी दो दशासे रहित नहीं होती एक तो यह कि साफ करनेवाली और तोडनेवाली औषधोंसे टुकडे २ होकर बाहर निकल आवै दूसरा यह कि वैसेही पेशाबके रास्तेसे बिना टूटी बाहर निकल आवे या उन विधियोंसे कि उसके निकालनेके लिये प्रधानहैं इसलिये वैद्योंनेवर्णनकिया है कि जब रोगी औषधोंके क्वाथमेंसे बाहर निकलें तो कुतुन पर तेल मलें और उस को कुछ टहलने की और चूतड हिलाने की और सीढियों परसे उतरने की और एक पैर पर कूदने की आज्ञा देवै और यह सब बातें इस कारणसे हैं कि पथरी बाहर निकलआवें अगर इस विधिसे निकलआवे तो अच्छाहै और जो उस स्थानमें रुकजावे जो गुर्दे और मसानेके बीचमेंहै तोइस विधिसे बाहर निकाले कि जिस स्थानमें पथरीरुकीहुईहै उससे नीचे सिंगी लगाकर जोरसे खींचे जिससे पथरी इधर को आजावै और सिंगी उस जगहसे उठाकरनीचेकीओर ऐसा करते करते खिसकाते लावे कि पथरी मसाने में आजाय और अगर इस बीच में नर्मी के लिये खत्मी के बीज, अलसी, मेथी का लुआब लेकर और कुतुन का तेल मिलाकर आंतोंपर हुकना कर और अमलतासका गूदा पानी या खत्मीके क्वाथमें घोलकर बादामका तेल मिलाकर पिलावें तो उत्तम है और जब पथरी मसाने में आजावे और आप से आप न निकले और रुकजावे तो उस समय यह विधि है कि पेशाबकी जगह को गर्म पानी में रखें और जो लुआब और तेल ऊपर वर्णन होचुके हैं उनमें से जो उचित हो फिर मैं टपकावें और धीरे २ हथेली से अपने पेशाब की जगह को अगली तरफ मलें जिससे पथरी निकल आवे और अगर उससमय पेशाब की नली में पथरी के रुकजाने से दर्द अधिक होवे और रोगी बेचैन होजावे तो फिलोनियां दें और इसके सिवाय जो औषध दर्द के बंद करने वाली हों देवें जैसे [illegible] और बरसासा और पुराना तिरयाक जिसमें अफीम की [illegible]
और ऐसा भी होता है कि पथरी पेशाब के रास्ते से किसी [illegible]

शहद में मिलावें इसकी मात्रा १ दांग है अजमोद के पानी के साथ देवे और बच्चे के लिये आधा दाग है (लाभ) भोजन करने के बीच में या प्रातःकाल के समय विनाखाये ठंडे पानी का पीलेना पथरी को नहीं उत्पन्न होने देता है और अलसी के विस्तर पर लेटना लाभकारक है और रेशम का विछौना हानि पहुंचाता है और उत्तम विधि यह है कि भोजन के पचने में परिश्रम करें और आमाशय को बलवान् करें और खाली पेट में मिहनत करना और मोतदिल हम्माम में जाना और अच्छा भोजन जैसे बटेर और मुर्गे का बच्चा और बकरी के बच्चे का मांस शोरवेदार और भुसी मिले हुए आटे की रोटी, पालक का साग, कद्दू और ककड़ीके साथ बनाकर खाना लाभदायक है और वैद्य लोग कहते हैं कि अबाबील ने बहुत से लोगों को पथरी और पेशाव की कठिनता से बचादिया है (उसकी विधि) अबाबील के पंख और पर को दूर करके हांडी में डाल कर बादाम के तेल में पकावें और अजमोद का पानी उस पर डालकर धनियां दालचीनी और कुलीजन मिलावें और मलके निकाल देने के पीछे इस औषध का खाना लाभकारक है (बिच्छू के जलाने की विधि) एक मोटे शीशे में बिच्छू रखकर और मिट्टी से कपड़ मिट्टी करके गर्म तंदूर में एक रात या कम रखें और प्रातःकाल को निकाल कर काम में लावे और जान लेना चाहिये कि शीशा बिच्छू के जलाने के कारण मिट्टी के बरतन से उत्तम है क्योंकि मिट्टी का बरतन शक्ति को ग्रहण करलेता है इस कारण से उसकी शक्ति निर्बल होजाती है और दूसरी विधि यह है कि बिच्छू को लोहे की हांड़ी में बंदकरके मोतदिल तंदूर में छःघड़ी रक्खें।

अठारहवां अध्याय

मसाने के रोगों का वर्णन

यह रोग गुर्दे से भी उत्पन्न होते हैं और मसानेसे भी संबंध रखतेहैं और मसाना एक थैली है सूरत बलूत कीसी होती है अर्थात् जिसके दोनों सिरे नोकीले हों और बीचमें चौड़ी हो और उसके दो घेरे हैं भीतर का घेरा तो अस्बी है इसलिये कि पेशाब की आवश्यकता मालूमहो जिससे निस्सारकशक्ति गति करे और बाहर का घेरा लिफाफी है जो रक्षा करताहै जिससे भीतरका घेरा भरने और खिचनेसे फट न जावे और मसाना एक गर्दनहै पेशाबकी ओर को कि जो पेशाब आने का रास्ताहै और यह मसाने की गर्दन मर्दों में तीन

शहद में मिलावें इसकी मात्रा १ दाग है अजमोद के पानी के साथ देवे और बच्चे के लिये आधा दाग है (लाभ) भोजन करने के बीच में या प्रातःकाल के समय विनाखाये ठंढे पानी का पीलेना पथरी को नहीं उत्पन्न होने देता है और अलसी के विस्तर पर लेटना लाभकारक है और रेशम का बिछौना हानि पहुंचाता है और उत्तम विधि यह है कि भोजन के पचने में परिश्रम करें और आमाशय को बलवान् करें और खाली पेट में मिहनत करना और मोतदिल हम्माम में जाना और अच्छा भोजन जैसे बटेर और मुर्गे का बच्चा और बकरी के बच्चे का मांस शोरवेदार और भुसी मिले हुए आटे की रोटी, पालक का साग, कद्दू और ककड़ीके साथ बनाकर खाना लाभदायक है और वैद्य लोग कहते हैं कि अबाबील ने बहुत से लोगों को पथरी और पेशाब की कठिनता से बचादिया है (उसकी विधि) अबाबील के पंख और पर को दूर करके हांडी में डाल कर बादाम के तेल में पकावें और अजमोद का पानी उस पर डालकर धनियां दालचीनी और कुलीजन मिलावें और मलके निकाल देने के पीछे इस औषध का खाना लाभकारक है (बिच्छू के जलाने की विधि) एक मोटे शीशे में बिच्छू रखकर और मिट्टी से कपड़ मि-ट्टी करके गर्म तंदूर में एक रात या कम रखें और प्रातःकाल को निकाल कर काम में लावे और जान लेना चाहिये कि शीशा बिच्छू के जलाने के कारण मिट्टी के बरतन से उत्तम है क्योंकि मिट्टी का बरतन शक्ति को ग्रहण करले-ता है इस कारण से उसकी शक्ति निर्बल होजाती है और दूसरी विधि यह है कि बिच्छू को लोहे की हांड़ी में बंदकरके मोतदिल तंदूर में छःघड़ी रक्खें।

अठारहवां अध्याय

मसाने के रोगों का वर्णन

यह रोग गुर्दे से भी उत्पन्न होते हैं और मसानेसे भी संबंध रखतेहैं और मसाना एक थैली है सूरत बलूत कीसी होती है अर्थात् जिसके दोनों सिरे नो कीले हों और बीचमें चौड़ी हो और उसके दो घेरे हैं भीतर का घेरा ता अस्बी है इसलिये कि पेशाव की आवश्यकता मालूमहो जिससे निस्सारकशक्ति गति करें और बाहर का घेरा मिफाक्नी है जो रक्षा करताहै जिससे भीतरका घेरा भरने और खिचनेसे फट न जावे और मसाना एक गर्दनहै पेशाबकी ओर को कि जो पेशाब आने का रास्ताहै और यह मसाने की गर्दन मर्दों में तीव

बनफशा, खब्बाजी, इत्यादि गर्म करके पेड़ू पर तरेड़ा दें और रोगी को बि ठावें और मैदे की रोटी और छिलेहुए नर्म कूटकर दूध और वनफशा के तेल में मिलाकर लेप करें और शलगम, कम्मकल्ले के पत्ते, वाबूना और ख्वक्र का लेप अच्छा है और जौ का आटा, बनफशा, खतमी, कासनी का पानी, म-कोयका पानी मिलाकर लेप करना लाभकारक है और यह बात अवश्य चा हिये कि इस पिछले लेप को कि जिसकी सब औषध ठंढीहैं काम में लावे तो उसके पीछे कीरूती अर्थात् मोम रोगन लेप की रीति पर मलें जिससे अ-वयवको नर्म करें और जो बुराई ठंढी वस्तुओंसे आईहै उसको दूर करदें और बनफशा के तेल में थोडासा तेल बाबूना का मिलाकर सदा पेड़ू पर मलें तो बहुत उत्तम है और जब घटने लगे और एक सप्ताह व्यतीत होजाय तो के-वल ठंढी चीजों का लेप न करें। पिघलानें वाली औषध जो अधिक गर्म न हो देवें जैसे बाबूना, अलसी के बीज, बाकले का आटा, मयफखतजमें मिला-कर काम में लावे और जितनी मल में नर्मी और इकट्ठा होनेकी शक्ति हो प्रति दिन उतनीही पिघलाने वाली औषधें बढ़ावें फिर अगर पिघलजाय तो अच्छा है और अगर जल्दी इकट्ठा होन लगे तो जैसा गुर्दे की सूजन पकाने और फोड़ने और पीब साफ करने और घाव भरने की विधियोंमें वर्णन किया गया है काम में लावे (लाभ) जब पेशाब बंद होजाय तो ककड़ी खीरे के बीजों का शीरा, ईसबगोल का लुआब दें और खतमी के बीज, खब्बाजी के बीज प्रत्ये क दो दिरम कूटकर शर्बत बनफशा के साथ खिलावें और उस समय में दूध और तिल वाला लेप जो वर्णन हुआ है अधिक लाभकारक है और बाकी इस रोग की वही विधि है जो गुर्दे की सूजन में वर्णन की गई है और पेशा ब के छिद्र में औषधों का टपकाना अधिक लाभकारक है क्योंकि वह जगह निकट है और वह औषध जो टपकाई जाती है ये हैं ईसबगोल का लुआब स्त्री का दूध मिलाकर काम में लावें अगर दर्द अधिक हो तो बन्द करने के लिये कादू को कूट कर और एक दांग अफीम और आधा दांग केशर मिलाकर रोगन बादाम के साथ लेप करें और जब दर्द बंद होजाय तो जल्द लेप को हटादें और दूध से तरेड़ा देना भी दर्द को बंद करता है और यह अन्तर कि मसान की गर्म सूजन रक्तज है वा पित्तज यहहै कि जो प्यास और दर्दकी अधिकता हो तो पित्तज है और जो बोझ की अधिकता और मसाने की फुलावट हो तो रक्तज है। और जान लेना चाहिये कि ये रोग पित्तज के आदि में प्रबल

वनफशा, खब्बाजी, इत्यादि गर्म करके पेडू पर तरेड़ा दें और रोगी को वि ठावें और मैदे की रोटी और छिलेहुए नर्म कूटकर दूध और वनफशा के तेल में मिलाकर लेप करे और शलगम, कम्मकल्ले के पत्ते, बाबूना और ख्वफ़ का लेप अच्छा है और जौ का आटा, वनफशा, खतमी, कासनी का पानी, मकोयका पानी मिलाकर लेप करना लाभकारक है और यह बात अवश्य चाहिये कि इस पिछले लेप को कि जिसकी सब औषध ठढीहैं काम में लावे तो उसके पीछे कीरूती अर्थात् मोम रोगन लेप की रीति पर मलें जिससे अवयवको नर्म करे और जो बुराई ठढी वस्तुओंसे आईहै उसको दूर करदें और बनफशा के तेल में थोडासा तेल बाबूना का मिलाकर सदा पेडू पर मलें तो बहुत उत्तम है और जब घटने लगे और एक सप्ताह व्यतीत होजाय तो केवल ठढी चीजों का लेप न करें। पिघलानें वाली औषध जो अधिक गर्म न हो देवें जैसे बाबूना, अलसी के बीज, बाकले का आटा, मयफखतमें मिला. कर काम में लावे और जितनी मल में नर्मी और इकट्ठा होनेकी शक्ति हो प्रति दिन उतनीही पिघलाने वाली औषधें घटावें फिर अगर पिघलजाय तो अच्छा है और अगर जल्दी इकट्ठा होन लगे तो जैसा गुर्दे की सूजन पकाने और फोडने और पीब साफ करने और घाव भरने की विधियोंमें वर्णन किया गया है काम में लावे (लाभ) जब पेशाब बद होजाय तो ककड़ी खीरे के बीजों का शीरा, ईसबगोल का लुआब दें और खतमी के बीज, खब्बाजी के बीज प्रत्ये क दो दिरम कूटकर शर्बत वनफशा के साथ खिलावें और उस समय में दूध और तिल वाह। लेप जो वर्णन हुआ है अधिक लाभकारक है और बाकी इस रोग की वही विधि है जो गुर्दे की सूजन में वर्णन की गई है और पेशाब के छिद्र में औषधों का टपकाना अधिक लाभकारक है क्योंकि वह जगह निकट है और वह औषध जो टपकाई जाती है ये हैं ईसबगोल का लुआब स्त्री का दूध मिलाकर काम में लावें अगर दर्द अधिक हो तो बन्द करने के लिये कादू को कूट कर और एक दांग अफीम और आधा दांग केसर मिलाकर रोगन बादाम के साथ लेप करें और जब दर्द बद होजाय तो जल्द लेप को हटादें और दूध से तरेड़ा देना भी दर्द को बंद करता है और यह अन्तर कि सूजन की गर्म सूजन रक्तज है वा पित्तज यहहै कि जो प्यास और दर्दकी अधिकता हो तो पित्तज है और जो बोझ की अधिकता और मसाने की फुलावट हो तो रक्तज है। और जान लेना चाहिये कि यह रोग पित्तज के आदि में प्रबल

लने में परिश्रम न करें ऐसा करने से जो कुछ शुद्ध मलहै निकल जावेगा और जो बाकी है बहुत गाढ़ा होजायगा सो उत्तम यह है कि पेशाब लानेवाली औषधों के साथ मलके फुलाने और नर्म करने का ध्यान अवश्य रक्खे जैसे करमकल्ले का पानी और चने का पानी पिलावें और बाबूना, इकलील, अल-सी, के बीज मेथी, खित्मी, खश्कदाने की मिंगी, पर सियावशां और खब्बके काथ में रोगी को बैठावें और इसीतरह से इस काथ से तरेढा दें और गार, जम्बक का तेल, बतककी चर्बी पेडूपर मले और बाबूना, अलसी के बीज, इस्क और गूगल.गौकी पिंडली के गूदेमें मिलाकर और कूट और जैतूनका तेल मिलाकर लेपकरें और जो कुछ बुराई न हो और पिघलाने वाली नर्म औष-धों के लगाने से सूजन में नर्मी आगई हो तो बासलीक या साफनकी फस्द लाभकारक है।

दूसरा प्रकरण मसाने के रोगों का वर्णन।

इसके तीन कारण हैं एक तो कड़वा दोष घाव करदेने वाला जो कि मसाने पै आकर अपनी तेजी से उसको छीलडाले और दूसरे खुरखुरे पत्थरके टुकड़े जो खराश पैदाकरें तीसरे मसाने की सूजन जो फूटजावे और मसाने के घाव के ये लक्षण हैं कि पेशाब कठिनता और जलन से निकले और दुर्गन्धित हो और उसमें ऐसी चीज हों जैसे साफ छिलके और भुसी। गुर्दे और मसाने के घावका अन्तर गुर्दे के घाव में वर्णन होचुका है और यह बात प्रगटहै कि मसाने के घाव का दर्द अधिक होता है क्योंकि वह अस्बी है और उसकी गति बलवान है (इलाज) देह के दोषों को ठीककरै और फिर उनके पीछेजोकुछगुर्दे के घाव में वर्णन कियागया है मसाने के साफ करने के लिये काममें लावें अर्थात शहद का पानी और ग्वाह का पानी इत्यादि घाव के साफ करने वाली औषधें जो वहां वर्णन की गई हैं देवें और जब नर्द पानी साफ होजाय और पेशाब साफ होने लगे तो घाव के भरने के लिये बंशलोचन की टिकिया काकनुज की टिकिया, कहरुबा की टिकिया, शर्बत खसखास के साथ पिलावें और जब दर्द की अधिकता हो तो सियाफे अबियज स्त्रियों के दूध में मिलाकर पेशाब के छिद्र में टपकावें और जो दर्द अधिक हो तो गिलेअर्मनी, बारह-सिंगे का सींग, सादनज, कुन्दरू इस्फीदाज, स्त्रियों के दूध में मिलाकर पेशाबके छेदमें टपकावें और जो घाव में मैल अधिक हो तो केवल शहद का पानी छेद में टपकाना मैलको शुद्ध करने के लिये लाभकारक है (काकनुज की टिकिया की विधि) यह मसाने के घाव के लिये लाभकारक है ककड़ी खीरे

लने में परिश्रम न करें ऐसा करने से जो कुछ शुद्ध मलहै निकल जावेगा और जो बाकी है बहुत गाढ़ा होजायगा सो उत्तम यह है कि पेशाब लानेवाली औषधों के साथ मलके फुलाने और नर्म करने का ध्यान अवश्य रक्खे जैसे करमकल्ले का पानी और चने का पानी पिलावें और बाबूना, इकलील, अलसी, के बीज मेथी, खित्मी, खशखाने की मिंगी, पर सियावशां और खब्बाके क्वाथ में रोगी को बैठावें और इसीतरह से इस क्वाथ से तरेडा दें और गार, जम्बक का तेल, बतककी चर्बी पेडूपर मले और बाबूना, अलसी के बीज, अश्क और गूगल.गौकी पित्ती के गूदेमें मिलाकर और कूट और जैतूनका तेल मिलाकर लेपकरें और जो कुछ बुराई न हो और पिघलाने वाली नर्म औषधों के लगाने से सूजन में नर्मी आगई हो तो बासलीक या साफनकी फस्द लाभकारक है।

दूसरा प्रकरण मसाने के रोगों का वर्णन।

इसके तीन कारण हैं एक तो कड़वा दोष घाव करदेने वाला जो कि मसाने में आकर अपनी तेजी से उसको छीलडाले और दूसरे खुरखुरे पत्थरके टुकड़े जो खराश पैदाकरें तीसरे मसाने की सूजन जो फूटजावे और मसाने के घाव के ये लक्षण हैं कि पेशाब कठिनता और जलन से निकले और दुर्गन्धित हो और उसमें ऐसी चीज हों जैसे साफ छिलके और भुसी। गुर्दे और मसाने के घावका अन्तर गुर्दे के घाव में वर्णन होचुका है और यह बात प्रगटहै कि मसाने के घाव का दर्द अधिक होता है क्योंकि वह अस्बी है और उसकी गति बलवान है (इलाज) देह के दोषों को ठीककरे और फिर उनके पीछेजोकुछगुर्दे के घाव में वर्णन कियागया है मसाने के साफ करने के लिये काममें लावें अर्थात शहद का पानी और खांड का पानी इत्यादि घाव के साफ करने वाली औषधें जो वहां वर्णन की गई हैं देवें और जब नई पानी साफ होजाय और पेशाब साफ होने लगे तो घाव के भरने के लिये वंशलोचन की टिकिया काकनुज की टिकिया.कहरुवा की टिकिया, शर्बत खसखास के साथ पिलावें और जब दर्द की अधिकता हो तो सिफाके अफियम स्त्रियों के दूध में मिलाकर पेशाब के छिद्र में टपकावें और जो दर्द अधिक हो तो गिलेअर्मनी, बारहसिंगे का सींग, सादनज, कुन्दुर इस्फीदाज, स्त्रियों के दूध में मिलाकर पेशाबके छेद्रमें टपकावें और जो घाव में मैल अधिक हो तो केवल शहद का पानी छेद्र में टपकाना मैलको शुद्ध करने के लिये लाभकारक है (काकनुज की टिकिया की विधि) यह मसाने के घाव के लिये लाभकारक है कदूदी सीरे

चौथा प्रकरण मसानेके रुधिर के जमजाने का वर्णन ।

यह रोग खूनी पेशाव के पीछे या चोटके पीछे उत्पन्न होताहै और उसके लक्षण बेहोशी, बेचैनी, नाड़ी का छोटा होना और मंदहोना और देहका ठंडा पड़ना और कभी देहमें कपकपी होजाती है जबकि बाहर के अवयव में ठंड बहुत आजाती है (इलाज) केवल सिकञ्जबीन, अनसनी, या थोड़ी अंगूर के पेड़की राख, मिलाकर पिलावे और अगर अंजासिफ, अजमोद के बीज, मूलीके बीज, जंगली तितली इत्यादि जिस औषध में कि काट देनेकी शक्ति होवे पानी में मिलाकर और सिकञ्जबीन मिलाकर देवें तो जल्दी असर होता है और खरगोश का जुस्ता, अंगूर के पेड़की राख पानी में मिलाकर खाना और मसानेपर तरेड़ा देना और छेद में टपकाना लाभकारकहै और इक्लील, हामा, इज़खर, इन्जदान, पोदीना, बाबूना, अकरहान, तितलीके क्वाथ में रोगी को बैठाना और उसके फोकका लेपकरना अधिक लाभकारक है और इसी तरह से हम्माम में अधिक देरतक पैठना और उपरोक्त दवायसे मसाने पर तरेड़ा देना और बाबूने का तेल, मूली का तेल, सोये का तेल मलना लाभकारक है और जबइन विधियों से जमाहुआ खून न बहे तो जो औषध कि बलवान् पेशाब के लाने वाली और पथरीको तोड़नेवालीहो काम में लावै और जान लेना चाहिये कि गधेका सूखा कलेजा और कछुए का पित्ता खाना जमेहुए रुधिर को बहादेता है और काले चने का क्वाथ और तितली पिलाना और झाऊकी रेत और अंजीरके पेड़की रेत पानी में डालकर उसपानी को पेशाबके छिद्र में टपकाना अधिक लाभकारकहै और जब किसी तरह आराम न हो और रोगी के मरजाने का भय हो तो जमेहुए खूनको पथरी की तरह चीरकर निकालडालें और ऐसे रोगी के लिये मुर्गे का शोर्वा चने और दाल चीनी के साथ पकाहुआ उत्तम है ।

पांचवां प्रकरण

मसाने के दर्दका वर्णन ।

इसके सात प्रकार हैं एक तो सूजन, दूसरा घाव, तीसरा खुजली, और इन तीनों का वर्णन होचुका है चौथा पथरी, पांचवां हवा इन दोनों का वर्णन होगा । छटा यह है कि प्रकृति का गर्म या ठंढा उपद्रव मसाने में आकर दर्द कर दे और इस के दो भेद हैं पहला यह है कि गर्म हवा पेशाब लाने वाली औषध और गर्म वस्तुओं के खाने से उत्पन्न हो और उसके लक्षण ये हैं कि प्यास,

चौथा प्रकरण मसानेके रुधिर के जमजाने का वर्णन ।

यह रोग खूनी पेशाब के पीछे या चोटके पीछे उत्पन्न होताहै और उसके लक्षण बेहोशी, बेचैनी, नाड़ी का छोटा होना और बंदहोना और देहका ठंडा पड़ना और कभी देहमें कपकपी होजाती है जबकि बाहर के अवयव में ठंड बहुत आजाती है (इलाज) केवल सिकजबीन, अनसनी, या थोड़ी अंगूर के पेड़की राख, मिलाकर पिलावे और अगर अंजासिफ, अजमोद के बीज, मूलीके बीज, जंगली तितली इत्यादि जिस औषध में कि काट देनेकी शक्ति होवे पानी में मिलाकर और सिकजबीन मिलाकर देवें तो जल्दी असर होता है और खरगोश का जुस्ता, अंगूर के पेड़की राख पानी में मिलाकर खाना और मसानेपर तरेड़ा देना और छेद में टपकाना लाभकारकहै और इक्लील, हामा, इज़खर, इन्जदान, पोदीना, बाबूना, अकरहान, तितलीके क्राथ में रोगी को बैठाना और उसके फोकका लेपकरना अधिक लाभकारक है और इसी तरह से हम्माम में अधिक देरतक बैठना और उपरोक्त दवायसे मसाने पर तरेड़ा देना और बाबूने का तेल, मूली का तेल, सोये का तेल मलना लाभकारक है और जबइन विधियों से जमाहुआ खून न बहे तो जो औषध कि बलवान् पेशाब के लाने वाली और पथरीको तोड़नेवालीहो काम में लावे और जान लेना चाहिये कि गधेका सूखा कलेजा और कछुए का पित्ता खाना जमेहुए रुधिर को बहादेता है और काले चने का क्वाथ और तितली पिलाना और झाऊकी रेत और अंजीरके पेड़की रेत पानी में डालकर उसपानी को पेशाबके छिद्र में टपकाना अधिक लाभकारकहै और जब किसी तरह आराम न हो और रोगी के मरजाने का भय हो तो जमेहुए खूनको पथरी की तरह चीरकर निकालडालें और ऐसे रोगी के लिये मुर्गे का शोर्वा चने और दाल चीनी के साथ पकाहुआ उत्तम है ।

पाचवां प्रकरण

मसाने के दर्दका वर्णन ।

इसके सात प्रकार हैं एक तो खुजन, दूसरा घाव, तीसरा सुजन्मी, और इन तीनों का वर्णन होचुका है चौथा पथरी, पांचवां हवा इन दोनों का वर्णन होगा । छटा यह है कि प्रकृति का गर्म या ठंढा उपद्रव मसाने में आकर दर्द कर दे और इस के दो भेद हैं पहला यह है कि गर्म हवा पेशाब लाने वाली औषध और गर्म वस्तुओं के खाने से उत्पन्न हो और उसके लक्षण ये हैं कि प्यास,

अण्डकोष, रेहानी शराब में मिलाकर खिलावे और मुर्गेका नरखरा जलाकर आधे गर्म पानी के साथ लाभकारक है और सुगन्धित वस्तुओं का लेप करना लाभ कारक है और उस रोग में यह सब औषधें विशेष गुणकरती हैं और जो पट्ठे में खिचावट हो और कोई बुराई न हो तो साफिन की फस्द खोलसक्ते हैं (सूचना) बहुधा ऐसा होता है कि मसाने का हटजाना दूसरे रोगों के साथ मिलाहुआ होता है जैसे सूजन इत्यादि ऐसी दशा में प्रथम दूसरे रोग को दूर करें और फिर मसाने के हटजाने को ठीक करें।

सातवां प्रकरण।

मसाने के फूलने और हवा भरजाने का वर्णन।

यह रोग सूजनसे मिला हुआ होता है पर सूजन नहीं होती और यह दो कारणसे होता है एकतो यह कि पेट फुलाने वाले भोजन जैसे लोबिया, बाकला, इत्यादि का सेवन पेटको फुलादे दूसरे यह कि मसानेमें रतूबत हो जाय और उसके नर्म होनेकी शक्ति नहो और इसमें मसानेमें खिचावट होती है फिर जो फुलाने वाले भोजन इस बात का कारण हैं तौ उसका फूलना स्थान बदलता रहैगा और बोझ न होगा और जो रतूबत के कारण से है तो खिचावट के साथ बोझ मालूम होगा और फूलना एक स्थान से न होगा (इलाज) तीन दिन तक वा अधिक जैसा उसके अनुसार जाने केवल माउल उसूल गर्म देवें या रोगन बेद अजीर मिलाकर देवें और इसके पीछे रोगन बेदअंजीर दो मिस्काल सदा खिलाया करें और रोगन बान, रोगन जम्बक में हींग और सकिया मिलाकर मसाने पर मलें और इसी प्रकार उपरोक्त तेल की पेशाब के छिद्र में पिचकारी लगावें और तितली, पोदीना, स्रज, सोया, गुन्देबेदस्तर इत्यादि जो औषध हवा को तोड़ने वाली है लेप करें और फुलाने वाली और पुट्ठों को निर्बल करने वाली औषधों से बचे और केसर के तेल का खाना और मसाने पर मलना लाभकारक है और जो पेशाब के आने में कठिनता हो तो खरबूजे का सूखा छिलका कुछ नर्म कूट कर मिश्री के साथ खिलावें और रोगी को औषधों के पानी में बिठावें और रतूबत अधिक हो तो वमन करना लाभकारक है तिर्याक सजरीना, मसरूदीतूस और अजीर लाभकारक हैं (लाभ) इस रोग में बत्ती अधिक लाभकारक है (उसकी विधि) अजमोद के बीज, अनीसून, सौंफ, सातर, पीपल, सिकञ्जबीन, सबको मिलाकर बत्ती बनाकर गुदामें रक्खें और माजून कमूनी इस रोगमें अधिक लाभकारक है

अक्कोप, रेहानी शराब में मिलाकर खिलावे और मुर्गेका नरखरा जलाकर आधे गर्म पानी के साथ लाभकारक है और सुगन्धित वस्तुओं का लेप करना लाभ कारक है और उस रोग में यह सब औषधें विशेष गुणकरती हैं और जो पट्ठे में खिचावट हो और कोई बुराई न हो तो साफिन की फस्द खोलसक्ते हैं (सूचना) बहुधा ऐसा होता है कि मसाने का हटजाना दूसरे रोगों के साथ मिलाहुआ होता है जैसे सूजन इत्यादि ऐसी दशा में प्रथम दूसरे रोग को दूर करें और फिर मसाने के हटजाने को ठीक करें।

सातवां प्रकरण।

मसाने के फूलने और हवा भरजाने का वर्णन।

यह रोग सूजनसे मिला हुआ होता है पर सूजन नहीं होती और यह दो कारणसे होता है एकतो यह कि पेट फुलाने वाले भोजन जैसे लोबिया, बाकला, इत्यादि का सेवन पेटको फुलादे दूसरे यह कि मसानेमें रतूबत हो जाय और उसके नर्म होनेकी शक्ति नहो और इसमें मसानेमें खिचावट होती है फिर जो फुलाने वाले भोजन इस बात का कारण हैं तो उसका फूलना स्थान बदलता रहेगा और बोझ न होगा और जो रतूबत के कारण से है तो खिचावट के साथ बोझ मालूम होगा और फूलना एक स्थान से न होगा (इलाज) तीन दिन तक वा अधिक जैसा उसके अनुसार जाने केवल माउल उसूल गर्म देवें या रोगन वेद अजीर मिलाकर देवें और इसके पीछे रोगन वेदअजीर दो मिस्काल सदा खिलाया करें और रोगन बान, रोग़न जम्बक में हींग और सकिया मिलाकर मसाने पर मलें और इसी प्रकार उपरोक्त तेल की पेशाव के छिद्र में पिचकारी लगावें और तितली, पोदीना, स्वज, सोया, जुन्देवेदस्तर इत्यादि जो औषध हवा को तोड़ने वाली है लेप करें और फुलाने वाली और पुट्ठों को निर्बल करने वाली औषधों से बचे और केसर के तेल का खाना और मसाने पर मलना लाभकारक है और जो पेशाव के आने में कठिनता हो तो खरबूजे का सूखा छिलका कुछ नर्म कूट कर मिश्री के साथ खिलावे और रोगी को औषधों के पानी में बिठावें और रतूबत अधिक हो तो वमन करना लाभकारक है तिर्याक सजरीना, मसरूदीतूस और अजीर लाभकारक हैं (लाभ) इस रोग में बत्ती अधिक लाभकारक है (उसकी विधि) अजमोद के बीज, अनीसून, सोंफ, सातर, पीपल, सिकञ्जबीन, सबको मिलाकर बत्ती बनाकर गुदामें रक्खें और माजून कमूनी इस रोगमें अधिक लाभकारक है

अवयव है और ठंडी प्रकृति का है और उसमें बड़ी पथरी पैदा होती है इस लिये जो औषधि अधिक बलवान् हो काम में लावें और वैद्य लोग इस पथरी के लिये वर्णन करते हैं कि कभी मुर्गे के अंडे से अधिक होती है और इस रोग में सबसे अधिक यह लाभदायक है कि पथरी के तोड़ने वाले तेल जैसे बिच्छू का तेल, खश्क का तेल, बाबूना का तेल इत्यादि पेड़ूपर मलें और छिद्र में टपकावें और गुदा में रक्खें और पथरीको तोड़ने वाली औषधें जैसे तिरयाक, सजरीना, मसरूदीतूस और वह औषध कि जिसका नाम यदुल्ला है और पथरी को तोड़ने वाली माजून खिलावें फिर जो पथरी निकल जाय तो अच्छा है नहीं तो आवश्यकताके समय चीरकर निकालें (पथरीको तोड़ने वाली माजून की विधि) वक्सान के दाने, कुल्थी के दाने, स्रेज. अर्थात् अभ्र, बिच्छू की रेत, काकनज की जड़, इन पांचों औषधों को कूटछान कर ताजा खश्क के पानी में गूंद कर छाया में सुखाकर फिर खश्क के पानी में गीला करें और फिर खुश्क करें इसी तरह सात बार करें फिर जो चाहें तो सफूफ या शहद में मिलाकर माजून बनावें और माजून बनाना उत्तम है और जो खश्कका पानी न मिलावें तो भी ठीक है परन्तु इससे औषध अधिक बलवान् होजाती है और इस दवा में से मात्रा १ माशे से तीन माशे तक रोगी की दशा के अनुसार देवें (यदुल्ला औषध की विधि) चार वर्ष की पहाड़ी बकरी लावें और जब कि अंगूरों पर रंग आने के दिन हों पथरी को काटें और पहिले पिछला रुधिर निकल जाने दें और बीच का रख छोड़ें और उसको जमालें फिर उसके छोटे २ टुकड़े फाटकर चलनी में रख कर ऊपर कपड़ा ढक कर धूप में रखदें जिसमें खुश्क होजावे फिर उठाकर रखलें और उसमें से थोड़ासा मूली या अजदोद के पानी के साथ रोगी को खिलावें और जान लेना चाहिये कि असली हजरलयहूद इस रोग में परीक्षा किया हुआ है (बिच्छू के तेल की विधि) जरावंदगोल, जुंतयाना, साद, किब्र की जड़ की छाल प्रत्येक एक औकिया लेवें और कूट छान कर शीशीमें भरलें और एक रतल कड़वे बादाम का तेल उसमें डालें और जो न मिले तो तिलों का तेल डालदें और शीशे को गर्मियों के दिन में एक सप्ताह और जाड़े के दिनों में दो सप्ताह धूप में रक्खें उसके पीछे साफ करें और दस बड़े बिच्छू जीते हुए उस तेल में डालदें और शीशी का मुंह बंद करके दो सप्ताह तक धूप में रक्खें और फिर साफ करके दो तीन बूंद टपकावें और थोड़ा सा पेड़ू

अवयव है और ठढी प्रकृति का है और उसमें बड़ी पथरी पैदा होती है इस लिये जो औषधि अधिक बलवान् हो काम में लावें और वैद्य लोग इस पथरी के लिये वर्णन करते हैं कि कभी मुर्गे के अंडे से अधिक होती है और इस रोग में सबसे अधिक यह लाभदायक है कि पथरी के तोड़ने वाले तेल जैसे बिच्छू का तेल, खश्क का तेल, बाबूना का तेल इत्यादि पेडूपर मलें और छिद्र में टपकावें और गुदा में रक्खें और पथरीको तोड़ने वाली औषधें जैसे तिरयाक, सजरीना, मसरूदीतूस और वह औषध कि जिसका नाम यदुल्ला है और पथरी को तोड़ने वाली माजून खिलावें फिर जो पथरी निकल जाय तो अच्छा है नहीं तो आवश्यकताके समय चीरकर निकालें (पथरीको तोड़ने वाली माजून की विधि) वत्सान के दाने, कुल्थी के दाने, संग. अर्थात् अत्र, बिच्छू की रेत, काफनज की जड़, इन पांचों औषधों को कूटछान कर ताजा खश्क के पानी में गूंद कर छाया में सुखाकर फिर खश्क के पानी में गीला करें और फिर खुश्क करें इसी तरह सात बार करें फिर जो चाहे तो सफूफ या शहद में मिलाकर माजून बनावें और माजून बनाना उत्तम है और जो खश्कका पानी न मिलावें तो भी ठीक है परन्तु इससे औषध अधिक बलवान् होजाती है और इस दवा में से माशा १ माशे से तीन माशे तक रोगी की दशा के अनुसार देवें (यदुल्ला औषध की विधि) चार वर्ष की पहाड़ी बकरी लावें और जब कि अंगूरों पर रंग आने के दिन हों बकरी को काटें और पहिले पिछला रुधिर निकल जाने दें और बीच का रख छोड़ें और उसको जमालें फिर उसके छोटे २ टुकड़े काटकर चलनी में रख कर ऊपर कपड़ा ढक कर धूप में रखदें जिसमें खुश्क होजावे फिर उठाकर रखलें और उसमें से थोड़ासा मूली या अजदोद के पानी के साथ रोगी को खिलावें और जान लेना चाहिये कि असली हजरुलयहूद इस रोग में परीक्षा किया हुआ है (बिच्छू के तेल की विधि) जरावंदगोल, जुंतयाना, साद, किब्र की जड़ की छाल प्रत्येक एक औकिया लेवें और कूट छान कर शीशीमें भरलें और एक रतल कड़वे बादाम का तेल उसमें डालें और जो न मिले तो तिलों का तेल डालदें और शीशे को गर्मियों के दिन में एक सप्ताह और जाड़े के दिनों में दो सप्ताह धूप में रक्खें उसके पीछे साफ करें और दस बड़े बिच्छू जीते हुए उस तेल में डालदें और शीशी का मुंह बंद करके दो सप्ताह तक धूप में रक्खें और फिर साफ करके दो तीन बूंद टपकावें और थोड़ा सा पे

यह लक्षण है कि पेशाब रंगीन हो और पीव और छिलके न हों और अग्नि के तमाम लक्षण प्रगट हों और गर्म दवा और भोजनों का करना इसका साक्षी है (इलाज) ईसबगोल का लुआब, वेदाने का लुआब, खुरफे का शीरा, काहू का सीरा, शर्बत खसखास, शर्बत बनफशा, बनादिकुलबुजुर, जौ का फाड़ा, ककड़ी खीरे के बीजों का शीरा, इत्यादि पिलावें और अंडा आधा भुना हुआ बादाम का तेल और कद्दू का तेल इत्यादि जिस वस्तु का स्वाद बहुत न मालूम हो खिलावें और जो वस्तु खारी, खट्टी, तेज और अधिक गर्म हो उससे बचें और स्त्री के पास बिल्कुल न जाय और इस रोगके इलाज में परिश्रम करें क्योंकि जो रहजाता है वो मसाने और मूत्रस्थान में घाव करदेता है और जो मल अधिक हो और प्रकृति का ठीक करना उत्तम न हो तो फस्द और वमन और नर्म करनेवाली औषधों से आवश्यकताके अनुसार मलको निकालें और जो कुछ कि कलेजे के उपद्रव में वर्णन किया है वह भी काममें लावें और सियाफे अबियज औरतों के दूध में घोलकर बादाम का तेल या गुल रौगन मिलाकर पेशाब के छेद में टपकाना लाभकारक है और जो दर्दकी अधिकता हो तो थोड़ीसी अफीम, भांगके बीज, बनादिकुलबजूर इत्यादि भी पथों में मे देसक्ते हैं। तीसरा भेद यह है कि जो चेपदार मल पेशाबकी दुरस्ती और नलीके ठीक करने के लिये पेशाब में लगी हुई होती है दूर होजावे इस कारणसे कि पेशाब लानेवाली गर्म औषध सेवनकी हो या कोई दूसरा कारण हो कि जिसमें यह मल पिघलगया हो जैसे स्त्रीके पास अधिक जाना इत्यादि और उसके लक्षण यह हैं कि पहले कारणका होना और देह में सूखापन और प्रकृति में अग्नि के लक्षण का न होना (इलाज) कारणके दूर करने के पीछे सियाफे अबियज स्त्री के दूध में घोलकर पेशाबके छेद में टपकावें जिससे पेशाबकी नली में चेप दार मल आजाय और दूसरे लुआब और चेपदार औषधें कि जिनका वर्णन होचुका है खिलावें चौथा भेद यह है कि मुत्रेन्द्री के भीतर घाव होजांय और उसके कारणसे पेशाब में जलन हो और प्रगट है कि पेशाब घावके ऊपर निकलता है सो जलन पैदा करता है और उसका लक्षण यह है कि पेशाब में पीव आवे और भीतर वाले घाव के स्थान में दर्द और गुप्तेन्द्रिय तथा मसानेके घाव में यह अन्तर है कि जो घाव मसाने में होगा तो पेशाब बार बार और कम आवेगा और मूत्र स्थान के घाव में ऐसा नहीं होता है। मूत्रस्थानके घाव का इलाज अलग वर्णन किया जायगा।

यह लक्षण है कि पेशाब रंगीन हो और पीव और छिलके न हों और अग्नि के तमाम लक्षण प्रगट हों और गर्म दवा और भोजनों का करना इसका साक्षी है (इलाज) ईसबगोल का लुआब, बेदाने का लुआब, खुरफे का शीरा, काहू का सीरा, शर्बत खसखास, शर्बत बनफशा, बनादिकुलबुजुर, जौ का काढ़ा, ककड़ी खीरे के बीजों का शीरा, इत्यादि पिलावें और अंडा आधा भुना हुआ बादाम का तेल और कद्दू का तेल इत्यादि जिस वस्तु का स्वाद बहुत न मालूम हो खिलावें और जो वस्तु खारी, खट्टी, तेज और अधिक गर्म हो उससे बचें और स्त्री के पास बिल्कुल न जाय और इस रोगके इलाज में परिश्रम करें क्योंकि जो रहजाता है वो मसाने और मूत्रस्थान में घाव करदेता है और जो मल अधिक हो और प्रकृति का ठीक करना उत्तम न हो तो फस्द और वमन और नर्म करनेवाली औषधों से आवश्यकताके अनुसार मलको निकालें और जो कुछ कि कलेजे के उपद्रव में वर्णन किया है वह भी काममें लावें और सियाफे अबियज औरतों के दूध में घोलकर बादाम का तेल या गुल रौगन मिलाकर पेशाब के छेद में टपकाना लाभकारक है और जो दर्दकी अधिकता हो तो थोड़ीसी अफीम, भांगके बीज, बनादिकुलबजूर इत्यादि औषधों में से देसक्ते हैं। तीसरा भेद यह है कि जो चेपदार मल पेशाबकी दुरस्ती और नलीके ठीक करने के लिये पेशाब में उगी हुई होती है दूर होजावे इस कारणसे कि पेशाब लानेवाली गर्म औषध सेवनकी हो या कोई दूसरा कारण हो कि जिसमे यह मल पिघलगया हो जैसे स्त्रीके पास अधिक जाना इत्यादि और उसके लक्षण यह हैं कि पहले कारणका होना और देह में सूखापन और प्रकृति में अग्नि के लक्षण का न होना (इलाज) कारणके दूर करने के पीछे सियाफे अबियज स्त्री के दूध में घोलकर पेशाबके छेद में टपकावें जिससे पेशाबकी नली में चेप दार मल आजाय और दूसरे लुआब और चेपदार औषधें कि जिनका वर्णन होचुका है खिलावें चौथा भेद यह है कि गुप्तेन्द्री के भीतर घाव होजाय और उसके कारणसे पेशाब में जलन हो और प्रगट है कि पेशाब घावके ऊपर निकलता है तो जलन पैदा करता है और उसका लक्षण यह है कि पेशाब में पीव आवे और भीतर वाले घाव के स्थान में दर्द और गुप्तेन्द्रिय तथा मसानेके घाव में यह अन्तर है कि जो घाव मसाने में होगा तो पेशाब बार बार और कम आवेगा और मूत्र स्थान के घाव में ऐसा नहीं होता है। मूत्रस्थानके घाव का इलाज अलग वर्णन किया जायगा।

पेशाब निकालने की सलाई है और इसका हाल इस प्रकरण के अन्त में वर्णन होगा) काम में लावें लेकिन जो कठोर सूजन उसके साथ होतो सलाई को काम में न लावें क्योंकि दर्द अधिक होजायगा ऐसे समय में जबकि पेशाब बिलकुल बंद हो और मरने का भय हो तो गोली और शरा के बीच में चीरा देना अवश्य है जैसे कि पथरीके निकलने में वर्णन किया गया है और इस चीरेमें एक नलकी छोड़ दें कि पेशाब इस मार्गसे निकलता रहे और रोगी मरने से बचजाय और जो मांस मसानेसे ऊपर उत्पन्न हुआ है तो कोई विधि लाभदायक न होगी सिवाय इस बात के कि नर्म करने वाली औषध में बैठावें कि नली में शायद नर्मी और सुस्ती आकर पेशाब खुलजाय इसी कारण से वैद्य लोग वर्णन करते हैं कि रोगी को चाहिये कि पानी में बैठ और पानी से निकलने के पीछे मेथी का आटा, खुब्बाजी, बनफशा, बाबूना, इकलील, करमकल्ले का पानी, खदक के तेल में मिलाकर मसाने से लेकर कलेजे तक लेप करें जिससे अधिक नर्मी होजावे और जिन औषधों में रोगी को बैठाना चाहिये वह यह हैं बाबूना, बनफशा, खत्मी, गोखरू, करमकल्ले के पत्ते, हसराज, अलसी के बीज, और जो इसके अनुसार हों। तीसरा भेद यह है कि जो पट्ठा मसाने की गर्दनको दबाता है और निचोड़ता है और मसाने की गति और दूर करने का यंत्र है सुस्त होजावे उसका यह लक्षण है कि जब मसाने को दबावें तो पेशाब सुगमता से आवे और बहनेकी रीति पर निकलै और बूंद २ और उछलकर न निकले और पेशाबकी इच्छा दूर होजावे और रोकदेना और निकाल देना बिलकुल बसमें न रहे (इलाज) गर्म माजूनें, जैसे मसरूदीतूस, माजून विलादरी सजरीना, तिरयाक कबीर, माजून मादतुल हयात खावें और नारदीन का तेल, कूट का तेल, तितली का तेल, वेदजीर का तेल, सौसन का तेल मसाने पर मलें और अगर थोड़ा सा जुन्देबेदस्तर और फरफयून इन तेलों में मिला लें तो अधिक लाभ कारक है और दालचीनी, साद,सलीखा.लौंग बिसबासे का घूंट २ करके पीना और मसाने पर सेंका देना लाभकारक है (लाभ) प्रगट होकि माजूनमादतुल हयात को माजून फलासफा भी कहते हैं इसके बनाने वाला हकीम इदरूमाखस है यह उस समयके वैद्योंके कहने के अनुसार बनाई गई है उसकी विधि यह है सोंठ, कालीमिरच पीपल, दालचीनी, आंवला सीतरज, हिन्दी और जिरावन्द गोल, तरीपत उस्मानव, चिलगोजे की गिरी. बाबूने की जड़ आगागारिपल प्रत्येक १० दिरम, बाबूना ५ दिरम, मवीज मुनका २० दिरम, शहद साफ दूना या तिगुना । इसी

पेशाब निकालने की सलाई है और इसका हाल इस प्रकरण के अन्त में वर्णन होगा) काम में लावें लेकिन जो कठोर सूजन उसके साथ होतो सलाई को काम में न लावें क्योंकि दर्द अधिक होजायगा ऐसे समय में जबकि पेशाब बिलकुल बंद हो और मरने का भय हो तो गोली और शरा के बीच में चीरा देना अवश्य है जैसे कि पथरीके निकलने में वर्णन किया गया है और इस चीरेमें एक नलकी छोड़ दें कि पेशाब इस मार्गसे निकलता रहे और रोगी मरने से बचजाय और जो मांस मसानेसे ऊपर उत्पन्न हुआ है सो कोई विधि लाभदायक न होगी सिवाय इस बात के कि नर्म करने वाली औषध में बैठावें कि नली में शायद नर्मी और सुस्ती आकर पेशाब खुलजाय इसी कारण से वैद्य लोग वर्णन करते हैं कि रोगी को चाहिये कि पानी में बैठ और पानी से निकलने के पीछे मेथी का आटा, खुब्बाजी, बनफशा, बाबूना, इकलील, करमकल्ले का पानी, खदक के तेल में मिलाकर मसाने से लेकर कलेजे तक लेप करें जिससे अधिक नर्मी होजावे और जिन औषधों में रोगी को बैठाना चाहिये वह यह हैं बाबूना, बनफशा, खत्मी, गोखरू, करमकल्ले के पत्ते, हसराज, अलसी के बीज, और जो इसके अनुसार हों। तीसरा भेद वह है कि जो पट्ठा मसाने की गर्दनको दबाता है और निचोड़ता है और मसाने की गति और दूर करने का यंत्र है सुस्त होजावे उसका यह लक्षण है कि जब मसाने को दबावें तो पेशाब सुगमता से आवे और बहनेकी रीति पर निकले और बूंद २ और उछलकर न निकले और पेशाबकी इच्छा दूर होजावे और रोकदेना और निकाल देना बिलकुल बसमें न रहे (इलाज) गर्म माजूनें, जैसे मसरूदीतूस, माजून फिलासफा सजरीना, तिरयाक कबीर, माजून मादतुल हयात खावें और नारदैन का तेल, कूट का तेल, तिवली का तेल, बेदजीर का तेल, सौसन का तेल मसाने पर मलें और अगर थोड़ा सा जुंदेबेस्तर और फरफयून इन तेलों में मिला लें तो अधिक लाभ कारक है और दालचीनी, साद, सलीखा, लौंग बिसबासे का घूट २ करके पीना और मसाने पर सेंकना देना लाभकारक है (लाभ) प्रगट होकि माजूनमादतुल हयात को माजून फलासफा भी कहते हैं इसके बनाने वाला हकीम इदरूमाखस है यह उस समयके वैद्योंके कहने के अनुसार बनाई गई है उसकी विधि यह है सोंठ, कालीमिरच पीपल, दालचीनी, आंवला सीतरज, हिन्दी और जिराबन्द गोल, खर्नीयव उस्माजब, पिलगोजे की मिंगी, बाबूने की जड़ नागरमोथा बराबर १० दिरम, बाबूना ५ दिरम, मवीज मुनक्का २० दिरम, शहद साफ दूना या तिगुना । सब

का तेल, बनफसा का तेल, जौंका आटा, इत्यादि खिलावे और जो औषध गर्म हैं और उन में पेशाब निकलने की शक्ति है उन से बचे जिससे तर मल अधिक न निकलजावें और ईसबगोल का लुआब, अर्बी गोंद का लुआब, मूत्रेन्द्रिय के छिद्र में टपकावें जिससे उसकी नली में चेपदार मल आजावे और सियाफें अबी अज स्त्री के दूध में घोल कर थोडा सा बादाम या कद्दू का तेल उसमें मिलाकर डालना अधिक लाभकारक है और जो देहमें से मल अधिक निकले तो विरेचन को आदि में आवश्यक समझो॥छटाभेद यहहै कि अधिक समय तक पेशाब मसाने में रुका रहै चाहे नींद के कारण से हो या किसी और कारण से और मसानेमें पेशाब के रुक रहनेसे खिंचावट और टेढा पन उत्पन्न होजावे और उसकी निस्सारक शक्ति दुर्बल होजाय और उसका लक्षण यह है कि पेशाब रुकने के पीछे उत्पन्न हो (इलाज) अलसी के बीज, मेंथी, कद्दू, करम कल्ले के पत्ते, सर्वां उबाल कर उस के पानी में रोगी को बिठावे और उसके पीछे मसाने को हाथ से दबावे जिससे पेशाब निकल आवे और यह बात प्रगट है कि मसाने को हाथमें दबाना निचोडने का काम देता है और निःसारक शक्ति को उभारने के लिये बलसान का तेल और कूटका तेल पेडू पर मलें और जो इस विधि से पेशाब निकले तो कासातीर काम में लावें और ऐसे रोगी के लिये यह बात अवश्य हैं कि उसके पास ऐसे कारण न होने चाहिये कि जिनसे पेशाब, न निकले सातवा भेद यह है कि मूत्रेन्द्रिय की नली में घाव या फुन्सियां उत्पन्न होजावें और जो उसपर पेशाब के निकलनेसे दर्द होताहो और प्रकृति पेशाब के निकालनेपर ध्यान देवे इसकारणसे पेशाब कठिनतासे थोडाथोडा निकले परन्तु जो रोगी इस दुखको सहजावे तो पेशाब खुलकर आजावे जैसा कि हम ऊपर वर्णन करचुके हैं और उसका लक्षण यह है कि घाव और फुंसियों के लक्षण वर्तमान हों और जो रोगी उसके कष्ट को सहलेवे तो पेशाब सहज में निकल आवेगा और जब कि यह रोग नली के मल के नाश होजाने से उत्पन्न हो तो अग्नि के होने या न होने से अन्तर प्रगट होता है (इलाज) जो कुछ कि मसाने के लिये वर्णन किया गया है काम में लावें और जानना चाहिये कि अफीम,भगके बीज इत्यादि मूत्रेन्द्रिय में छिद्रमें टपकाने से दर्द दूर होजाता है और ईसबगोलका लुआब (अर्बीगोंद) इत्यादिका टपकाना नली के ऊपरके भागपर चेपदार मलको फैलाता है) आठवां भेद यह है कि मसाने की ... [illegible]

का तेल, बनफसा का तेल, जौका आटा, इत्यादि मिलावे और जो औषध गर्म हैं और उन में पेशाब निकलने की शक्ति है उन से बचे जिससे तर मल अधिक न निकलजावे और ईसबगोल का लुआब, अर्बी गोंद का लुआब, मूत्रेन्द्रिय के छिद्र में टपकावें जिससे उसकी नली में चेपदार मल आजावे और सियाफ़ अबी अज स्त्री के दूध में घोल कर थोडा सा बादाम या कद्दू का तेल उसमें मिलाकर डालना अधिक लाभकारक है और जो देहमें से मल अधिक निकले तो विरेचन को आदि में आवश्यक समझे॥छठाभेद यहहै कि अधिक समय तक पेशाब मसाने में रुका रहै चाहै नींद के कारण से हो या किसी और कारण से और मसानेमें पेशाब के रुक रहनेसे खिचावट और टेढ़ा पन उत्पन्न होजावे और उसकी निस्सारक शक्ति दुर्बल होजाय और उसका लक्षण यह है कि पेशाब रुकने के पीछे उत्पन्न हो (इलाज) अलसी के बीज, मेंथी, कर्द, करम कल्ले के पत्ते, खत्मी उबाल कर उस के पानी में रोगी को बिठावे और उसके पीछे मसाने को हाथ से दबावे जिससे पेशाब निकल आवे और यह बात प्रगट है कि मसाने को हाथसे दबाना निचोड़ने का काम देता है और निःसारक शक्ति को उभारने के लिये बलसान का तेल और कूटका तेल पेडू पर मलें और जो इस विधि से पेशाब निकले तो कासातीर काम में लावें और ऐसे रोगी के लिये यह बात अवश्य है कि उसके पास ऐसे कारण न होने चाहिये कि जिनसे पेशाब न निकले सातवा भेद यह है कि मूत्रेन्द्रिय की नली में घाव या फुन्सियां उत्पन्न होजावें और जो उसपर पेशाब के निकलने से दर्द होताहो और प्रकृति पेशाब के निकालनेपर ध्यान देवे इसकारणसे पेशाब कठिनतासे थोडारनिकले परन्तु जो रोगी इस दुखको सहजावे तो पेशाब खुलकर आजावे जैसा कि हम ऊपर वर्णन करचुके हैं और उसका लक्षण यह है कि घाव और फुंसियों के लक्षण वर्तमान हों और जो रोगी उसके कष्ट को सहलेवे तो पेशाब सहज में निकल आवेगा और जब कि यह रोग नली के मल के नाश होजाने से उत्पन्न हो तो अग्नि के होने या न होने से अन्तर प्रगट होता है (इलाज) जो कुछ कि मसाने के लिये वर्णन किया गया है काम में लावें और जानना चाहिये कि अफीम,भगके बीज इत्यादि मूत्रेन्द्रिय के छिद्रमें टपकाने से दर्द दूर होजाता है और ईसबगोलका लुआब (अबीगोंद) इत्यादिका टपकाना नली के ऊपरके भागपर चेपदार मलको फैलाता है) आठवां भेद यह है कि मसाने की गांठपर घाव लगकर सूजने की मक्खियें-

छिद्र में टपकावें और पेडू पर मलें और सुगंधित बलवान् वस्तु जैसे सोंपे के पत्ते, पोदीना के पत्ते, सौसन के पत्ते और सोया का लेप करे और तिरियाक फवीर, मसरूदीतूस, सिंजरीना और माजून माउलहयात् खिलावें और माउलउसूल, बेद अजीर के तेल के साथ खिलावें और जो देह में जोश हो तो वमन करावें (लाभ) करावादीन कादरी में माउलउसूल की विधि इस प्रकार लिखी है कि अजमोद की जड़ की छाल, राजियाने के जड़ की छाल प्रत्येक १० दिरम, किब्र की जड़की छाल, अजमोद के बीज, अनीसून, राजयाने के बीज, इजखर की जड़ प्रत्येक ४ दिरम, असारों, बलसान के दाने प्रत्येक दो दिरम, जुतयाना, सलीखा प्रत्येक २॥ दिरम, ऊदबलसान, पूर्जीदान, इजार स्पद प्रत्येक ३ दिरम, मवीज मुनक्का २० दिरम, सब औषधों को पानी में उबाल कर छानलें इसकी मात्रा ३॥ मिस्काल होती है। तेरहवां भेद यह है कि मसाने का हटजाना पेशाब बंद होजाने का कारण हो और इसका वर्णन किया गया है चौदहवां भेद यह है कि जो अवयव मसाने के पास है जैसे आंत, गर्भस्थान, गुदा, हड्डी और पेडू इत्यादि इनमें पड़ी सूजन हो या गर्भस्थान अपनी जगह से हटजावे या निकल आवे और मांस होन के कारण से पेशाब का मार्ग दब जावे और बंद होजावे और इस भेद के लक्षण और चिकित्सा उसी अवयव के प्रकरण में ढूंढ़ो।

पन्द्रवां भेद यह है कि जो हड्डियां मसानेकी सोपमें हैं वह अपने स्थानसे टलजावें तो इस कारण से मूत्र बंद होजावे और इसका सिलसबोल (पेशाब का बार २ आना) में वर्णन करेंगे (लाभ) कासातीर एक प्रकार की सलाई है जो पेशाब के निकालने के काम में लाई जाती है और वह ऐसी होती है कि सीसे और रांग से या चांदी से एक पोली सलाई बनावें और उसको रोगीकी मूत्रेन्द्रिय की लम्बाई और छिद्रके अनुसार बनावें और उसके एक सिरेमें कई छेद रक्खें उसमें यह लाभ है कि जो गाढ़े खून के कारण से एक छेद बंद हो जावे तो बाकी पेशाबके निकलनेके लिये खुलेरहें और उसके काम में लाने की यह विधि है कि सूफके बीचमें रेशमका डोरा दृढ़ बांधें और फिर सूफ को उस नली के खोलमें जिसका वर्णन किया गया है कामसें लावें और कारीगरी से ऐसा बंद करें कि उनमें हवा न जासके और इस सलाईको छिद्र में उस ओर से लेजावें जिस ओर में छेद है और उसकी लम्बाई तक पहुंचावे उसके पीछे रेशम के डोरे को जिसका एक सिरा सूफ में बंधा हुआ है

छिद्र में टपकावें और पेड़ू पर मलें और सुगंधित बलवान् वस्तु जैसे सांपे के पत्ते, पोदीना के पत्ते, सौसन के पत्ते और सोया का लेप करे और तिरियाक फवीर, मसरूदीतूस, सिंजरीना और माजून माइतुलहयात् खिलावें और माउलउसूल, वेद अजीर के तेल के साथ खिलावें और जो देह में जोश हो वो वमन करावें (लाभ) करावादीन कादरी में माउलउसूल की विधि इस प्रकार लिखी है कि अजमोद की जड़ की छाल, राजियाने के जड़ की छाल प्रत्येक १० दिरम, किम्र की जड़की छाल, अजमोद के बीज, अनीसून, राजयाने के बीज, इजखर की जड़ प्रत्येक ४ दिरम, असारों, बलसान के दाने प्रत्येक दो दिरम, जुतयाना, सलीखा प्रत्येक २॥ दिरम, ऊदबलसान, पुर्जीदान, इजार स्पद प्रत्येक ३ दिरम, मवीज मुनक्का २० दिरम, सब औषधों को पानी में उबाल कर छानलें इसकी मात्रा ३॰ मिस्काल होती है। तरहवां भेद यह है कि मसाने का हटजाना पेशाब बंद होजाने का कारण हो और इसका वर्णन किया गया है चौदहवां भेद वह है कि जो अवयव मसाने के पास है जैसे आंत, गर्भस्थान, गुदा, हड्डी और पेड़ू इत्यादि इनमें बड़ी सूजन हो या गर्भस्थान अपनी जगह से हटजावे या निकल आवे और मांस होने के कारण से पशाब का मार्ग दब जावे और बंद होजावे और इस भेद के लक्षण और चिकित्सा उसी अवयव के प्रकरण में देखो।

पन्द्रवां भेद यह है कि जो हड्डियां मसानेकी सोपमें हैं वह अपने स्थानसे टलजावें तो इस कारण से मूत्र बंद होजावे और इसका सिलर बोल (पेशाब का धार २ आना) में वर्णन करेंगे (लाभ) कासातीर एक प्रकार की सलाई है जो पेशाब के निकालने के काम में लाई जाती है और यह ऐसी होती है कि सीसे और रांग से या चांदी से एक पोली सलाई बनावें और उसको रोगीकी मूत्रेन्द्रियकी लम्बाई और छिद्रके अनुसार बनावें और उसके एक सिरेमें कई छेद रक्खें उसमें यह लाभ है कि जो गाढ़े खून के कारण से एक छेद बंद हो जावे तो बाकी पेशाबके निकलनेके लिये खुलेरहें और उसके काम में लाने की यह विधि है कि सूफके बीचमें रेशमका डोरा दृढ़ बांधें और फिर सूफ को उस नली के सोतमें जिसका वर्णन किया गया है काममें लावें और कारीगरी से ऐसा बंद करें कि उनमें हवा न जासके और इस सलाईको छिद्र में उस ओर से लेजावें जिस ओर में छेद है और उसकी लम्बाई तक पहुंचावे उसके पीछे रेशम के डोरे को जिसका एक सिरा सूफ में बंधा हुआहै

और गुदामें रखना अधिक लाभकारकहै (गर्म मासकूल बोलटीकिया की विधि) बलूत, कुन्दर मत्येक १० दिरम, साद, सुरफा, कुलीजन, रासन, वज, करवा मत्येक एक मिस्काल कूटकर दो दिरम पुरानी शराब या मुसल्लिस के साथ देवे और काकला एक मिस्काल प्रतिदिन खाना लाभकारक है और चने का पानी गर्म औषधोंमें पकाकर सेवन करना लाभकारकहै । तीसरा भेद यहहै कि सूजन या पथरी या रुधिर का जमजाना या मसाने की खुजली या घाव और उसके अनुसार जो वर्णन किये गये हैं पेशाब की बूंद टपकने का कारण हो और उसके लक्षण और चिकित्सा पेशाब के बंद होने के प्रकरणमें ढूंढलो ।

बारहवां प्रकरण सिलसिलबोलका वर्णन।

यह रोग इस प्रकार का है कि पेशाब बे मालूम निकलजाय और यह कई प्रकार का होताहै पहला भेद यह है कि मसाना वा यह पट्ठा जो उस पर मढ़ा हुआ है ठंढ और तरी के कारण से ढीला हो जाय और उसका यह लक्षण है कि पेशाब में सफेदी हो और जलन न हो और प्रकृति के सब ठंढे उपद्रवों के लक्षण प्रगट हों और बहुधा यह भेद ठंढे और गीले रोगों के अंतमें उत्पन्न होता है (चिकित्सा) गर्म और कब्ज करने वाली औषधें जैसे साद कुन्दर, कुलीजन, इत्यादि देवे और इसके अनुसार जो मसानेमें गर्मी पहुंचावे और नीचे की तरी को सुखावे और ठंढी और कब्ज करने वाली वस्तुओं में जैसे बलूत की छाल, गुलनार, हब्बुलआस इत्यादि मिला कर देवे और मुश्क, जुदबेदस्तर गर्म तेलों में मिलाकर मसाने और पेडू पर मलें फिर सबसे उत्तम इतरीफल कबीर का खाना और विशेषकर के जो इतरीफल की औ षधों को गौ के घी में भून ले और बलूत की छाल, मस्तगी, साद, छोटीहड़ें यह इनका चूर्ण बनाकर खाना लाभकारक है और वैद्य लोग कहते हैं कि लोमड़ी का भुना हुआ मांस इस रोग का और पीठ के दर्दको अधिक लाभ कारक है दूसरा भेद यह है कि वह हड्डी जो मसाने की नींव में है चोट के कारण से बाहर की तरफ या भीतर की ओर टलजाय और जानना चाहिये कि जिस सूरत में हड्डियां बाहर की ओर टलजायगी तो यह दो लक्षणों से बाहर नहीं हैं एक तो यह कि मसाने की रगें फट जाय और उसके यह लक्षण हैं कि हड्डियां उभर कर ऊंची होजाय और इसकी चिकित्सा असमर्थ है क्योंकि टूटी रगें ठीक नहीं हो सकती दूसरा यह कि यह रगें अपने स्थान से बाहर हों और न टूटें मगर रगोंकी खिंचावट से जो हड्डियों के दूर होजाने

और गुदामें रखना अधिक लाभकारकहै (गर्म मासकुल बोलटीकिया की विधि) बलूत, कुन्दर प्रत्येक १० दिरम, साद, सुरफा, कुलीजन, रासन, बज, करंबा प्रत्येक एक मिस्काल कूटकर दो दिरम पुरानी शराब या मुसल्लिस के साथ देवे और फाकला एक मिस्काल प्रतिदिन खाना लाभकारक है और चने का पानी गर्म औषधोंमें पकाकर सेवन करना लाभकारकहै । तीसरा भेद यहहै कि सूजन या पथरी या रुधिर का जमजाना या मसाने की खुजली या घाव और उसके अनुसार जो वर्णन किये गये हैं पेशाव की बूंद टपकने का कारण हो और उसके लक्षण और चिकित्सा पेशाब के बंद होने के प्रकरणमें देखलो ।

बारहवां प्रकरण सिलसिलबोलका वर्णन।

यह रोग इस प्रकार का है कि पेशाब बे मालूम निकलजाय और यह कई प्रकार का होताहै पहला भेद यह है कि मसाना वा वह पट्ठा जो उस पर मढ़ा हुआ है ठंढ और तरी के कारण से ढीला हो जाय और उसका यह लक्षण है कि पेशाव में सफेदी हो और जलन न हो और प्रकृति के सब ठंढे उपद्रवों के लक्षण प्रगट हों और बहुधा यह भेद ठंढे और गीले रोगों के अवमें उत्पन्न होता है (चिकित्सा) गर्म और कब्ज करने वाली औषधें जैसे साद, कुन्दर, कुलीजन, इत्यादि देवे और इसके अनुसार जो मसानेमें गर्मी पहुंचावे और नीचे की तरी को सुखावें और ठंढी और कब्ज करने वाली वस्तुओं में जैसे बलूत की छाल, गुलनार, हब्बुलास इत्यादि मिला कर देवे और मुश्क, जुदबेदस्तर गर्म तेलों में मिलाकर मसाने और पेडू पर मलें फिर सबमें उत्तम इतरीफल कबीर का खाना और विशेषकर के जो इतरीफल की औ पधों को गौ के घी में भून ले और बलूत की छाल, मस्तगी, साद, छोटीहड़ें यद इनका चूर्ण बनाकर खाना लाभकारक है और वैद्य लोग कहते हैं कि लोमड़ी का भुना हुआ मांस इस रोग का और पीठ के दर्दको अधिक लाभ कारक है दूसरा भेद यह है कि वह हड्डी जो मसाने की नींव में है चोट के कारण से बाहर की तरफ या भीतर की ओर टलजाय और जानना चाहिये कि जिस सूरत में हड्डियां बाहर की ओर टलजावेंगी तो यह दो सूरतों से बाहर नहीं हैं एक तो यह कि मसाने की रगें फट जांय और उसके यह लक्षण हैं कि हड्डियां उभर कर ऊंची होजांय और इसकी चिकित्सा असम्भव है क्योंकि टूटी रगें ठीक नहीं हो सकती दूसरा यह कि यह रगें अपने स्थान से बाहर हों और न टूटें मगर रगोंकी खिंचावट से जो हड्डियों के दूर होजाने

और गुदामें रखनां अधिक लाभकारकहै (*गर्भ पासकूल चोळटिकिया की विधि*) बलूत, कुन्दुर प्रत्येक १० दिरम, साद, सुरफा, कुलीजन, रासन, बज, कहरबा प्रत्येक एक मिश्काल कूटकर दो दिरम पुरानी शराब या मुसल्लिस के साथ देवे और काकला एक मिश्काल प्रतिदिन खाना लाभकारक है और चने का पानी गर्म औषधोंमें पकाकर सेवन करना लाभकारकहै । तीसरा भेद यहहै कि सूजन या पथरी या रुधिर का जमजाना या मसाने की खुजली या घाव और उसके अनुसार जो वर्णन किये गये हैं पेशाव की बूंद टपकने का कारण हो और उसके लक्षण और चिकित्सा पेशाव के बंद होने के प्रकरणमें ढूंढलो ।

बारहवां प्रकरण सिळसिलवोलका वर्णन।

यह रोग इस प्रकार का है कि पेशाव वे मालूम निकलजाय और यह कई प्रकार का होताहै पहला भेद यह है कि मसाना वा वह पट्ठा जो उस पर मढ़ा हुआ है ठंढ और तरी के कारण से ढीला हो जाय और उसका यह लक्षण है कि पेशाव में सफेदी हो और जलन न हो और प्रकृति के सब ठंढे उपद्रवों के लक्षण प्रगट हों और बहुधा यह भेद ठंढे और गीले रोगों के अवमें उत्पन्न होता है (चिकित्सा) गर्म और कब्ज करने वाली औषधें जैसे साद कुन्दुर, कुलीजन, इत्यादि देवे और उसके अनुसार जो मसानेमें गर्मी पहुचावें और नीचे की तरी को सुखावें और ठंढी और कब्ज करने वाली वस्तुओं में जैसे बलूत की छाल, गुलनार, हब्बुलास इत्यादि मिला कर देवे और मुश्क, जुंदबेदस्तर गर्म तेलों में मिलाकर मसाने और पेडू पर मले फिर सबसे उत्तम इतरीफल कबीर का खाना और विशेषकर के जो इतरीफल की औषधों को गौ के घी में भून ले और बलूत की छाल, मस्तगी, साद, छोटीहड़ कद इनका चूर्ण बनाकर खाना लाभकारक है और वैद्य लोग कहते हैं कि लोमड़ी का भुना हुआ मांस इस रोग को और पीठ के दर्दको अधिक लाभ कारक है दूसरा भेद यह है कि वह हड्डी जो मसाने की सीध में है चोट के कारण से बाहर की तरफ या भीतर की ओर टलजाय और जानना चाहिये कि जिस सूरत में हड्डियां बाहर की ओर टलजांयगी तो वह दो लक्षणों से बाहर नहीं है एक तो यह कि मसाने की रगें फट जांय और उसके यह लक्षण हैं कि हड्डियां उभर कर ऊंची होजांय और इसकी चिकित्सा असम्भव है क्योंकि टूटी रगें ठीक नहीं हो सकतीं,दूसरा यह कि वह रगें अपने स्थान से बाहर हों और न टूटें मगर रगोंकी खिंचावट से जो हड्डियों के दूर हो जानें

और गुदामें रखनी अधिक लाभकारकहै (गर्म मासकुल बोलटिकिया की विधि) बलूत, कुन्दर प्रत्येक १० दिरम, साद, सुरफा, कुलीजन, रासन, वज, कहरबा प्रत्येक एक मिस्काल कूटकर दो दिरम पुरानी शराब या मुसल्लिस के साथ देवे और काकला एक मिस्काल प्रतिदिन खाना लाभकारक है और चने का पानी गर्म औषधोंमें पकाकर सेवन करना लाभकारकहै । तीसरा भेद यहहै कि सूजन या पथरी या रुधिर का जमजाना या मसाने की खुजली या घाव और उसके अनुसार जो वर्णन किये गये हैं पेशाब की बूंद टपकने का कारण हों और उसके लक्षण और चिकित्सा पेशाब के बंद होने के प्रकरणमें ढूंढलो ।

बारहवां प्रकरण सिलसिलबोलका वर्णन।

यह रोग इस प्रकार का है कि पेशाब बे मालूम निकलजाय और यह कई प्रकार का होताहै पहला भेद यह है कि मसाना या वह पट्ठा जो उस पर मढ़ा हुआ है ठंढ और तरी के कारण से ढीला हो जाय और उसका यह लक्षण है कि पेशाब में सफेदी हो और जलन न हो और प्रकृति के सब ठंढे उपद्रवों के लक्षण प्रगट हों और बहुधा यह भेद ठंढे और गीले रोगों के अवमें उत्पन्न होता है (चिकित्सा) गर्म और कब्ज करने वाली औषधें जैसे साद कुन्दर, कुलीजन, इत्यादि देवे और उसके अनुसार जो मसानेमें गर्मी पहुंचावें और नीचे की तरी को सुखावें और ठंढी और कब्ज करने वाली वस्तुओं में जैसे बलूत की छाल, गुलनार, हब्बुलास इत्यादि मिला कर देवे और मुश्क, जुंदबेदस्तर गर्म तेलों में मिलाकर मसाने और पेडू पर मले फिर सबसे उत्तम इतरीफल कबीर का खाना और विशेषकर के जो इतरीफल की भी चभों को गौ के घी में भून ले और बलूत की छाल, मस्तगी, साद, छोटीहड़ कद इनका चूर्ण बनाकर खाना लाभकारक है और वैद्य लोग कहते हैं कि लोमड़ी का भुना हुआ मांस इस रोग को और पीठ के दर्दको अधिक लाभ कारक है दूसरा भेद यह है कि वह हड्डी जो मसाने की सीध में है चोट के कारण से बाहर की तरफ या भीतर की ओर टलजाय और जानना चाहिये कि जिस मूरत में हड्डिया बाहर की ओर टलजावेंगी तो वह दो लक्षणों से बाहर नहीं है एक तो यह कि मसाने की रगें कट जाय और उसके यह लक्षण हैं कि हड्डियां उभर कर ऊंची होजांय और इसकी चिकित्सा असम्भव है क्योंकि टूटी रगें ठीक नहीं हो सकतीं, दूसरा यह कि वह रगें अपने स्थान से बाहर हों और न टूटें मगर रगोंकी खिंचावट से जो हड्डियों के दूर होजावें

चौदहवां प्रकरण पेशाब में रुधिर का आना

उसके तीन भेद हैं पहला भेद यह है कि कोई नस गुर्दे में से खुलजावे या फटजावे और इस भेद का यह लक्षण है कि साफ रुधिर बिना दर्द के निकले और पीला पानी और मैल कुछ नहो फिर जो रगों का मुख खुला है तो थोड़ा २ रुधिर उसमें से निकले और जो रग फटगई है तो बहुत सा रुधिर एक साथ निकल आवे और गुर्दे पर चोटका पहुंचना और तेज विषी की औषधों और वस्तुओं का खाना इस बात की साक्षी देवे और जानना चाहिये कि जौनसा खूनी पेशाब गुर्दे की रग के खुलने या फटजाने से होता है तो कभी रुधिर बवासीर की तरह एक ठीक समय पर निकला करता है और जब वह होजाता है तो गुर्दे की रगों के भरजाने से पूतड़ की हड्डियों की ओर दर्द मालूम होता है और जब रुधिर निकलने लगता है तो दर्द कम हो जाता है और रगों के भरजाने तक रहता है (चिकित्सा) बासलीक और साफन की फस्द खोले और कहरुवा की टिकिया और बोल उद्दम (खूनी पेशाब) की टिकिया और नफस उद्दम (खून का थूकना) की टिकिया दें और उन्नाब का शर्बत सूखे धनिये के साथ और खसखास का शर्बत, रीवाज और काकनुज लाभ कारक है और वैद्य लोग कहते हैं कि गुदा और पेडूपरपछने लगाना लाभकारक है और जो रुधिर की तेजी इस रोग का कारण होतो ठंढे पानी से मसाने पै तरेड़ा देवें और खट्टे भोजनों का खाना और न्हाना अधिक परिश्रम करना और जल्दी २ चलना इस रोगमें अधिक हानि कारक है (बोल उद्दम टिकिया की विधि) खीरे के बीज की मिंगी चार दिरम, निशास्ता, कतीरा, गुलनार, सुर्ख, दम्मुलअखैन अर्थात् गोंद मस्तक एक दिरम कूटछानकरखुरफा या बारतंग के पानी में टिकिया बनाकर आवश्यकता के अनुसार देवें दूसरा भेद यहहै कि गुर्दा या कलेजा निर्बल होजाय इस कारणसे रुधिर अच्छी तरह अलग न हो और पेशाब के साथ निकले उसका लक्षण यह है कि पेशाब मांसके धोवन के अनुसार निकले और फिर जो गुर्दे की निर्बलताके से होगा तो सफेदी के साथ होगा और जो कुछ गाढ़ा होगा और जो कलेजे की निर्बलता से होगा तो सुर्खी के साथ पतला होगा (चिकित्सा) जो कुछ कलेजे और गुर्दे की निर्बलता में वर्णन किया गया है उसे आवश्यकता के अनुसार काम में लावें। तीसरा भेद यह है कि पेशाब के मार्गस्थ की रगों में घाव उत्पन्न हो इस कारणसे रक्तज पेशाब आनेलगे और

चौदहवां प्रकरण पेशाव में रुधिर का आना

उसके तीन भेद हैं पहला भेद यह है कि कोई नस गुर्दे में से खुलजावे या फटजावे और इस भेद का यह लक्षण है कि साफ रुधिर बिना दर्द के निकले और पीला पानी और मैल कुछ नहो फिर जो रगों का मुख खुला है तो थोड़ा २ रुधिर उसमें से निकले और जो रग फटगई है तो बहुत सा रुधिर एक साथ निकल आवे और गुर्दे पर चोटका पहुंचना और तेज विषैली औषधों और वस्तुओं का खाना इस बात की साखी देवे और जानना चाहिये कि जौनसा खूनी पेशाव गुर्दे की रग के खुलने या फटजाने से होता है तो कभी रुधिर बवासीर की तरह एक ठीक समय पर निकला करता है और जब बंद होजाता है तो गुर्दे की रगों के भरजाने से चूतड़ की हड्डियों की ओर दर्द मालूम होता है और जब रुधिर निकलने लगता है तो दर्द कम हो जाता है और रगों के भरजाने तक रहता है (चिकित्सा) बासलीक और साफन की फस्द खोलें और कहरुवा की टिकिया और बोल उद्दम (खूनी पेशाव) की टिकिया और नफ्स उद्दम (खून का थूकना) की टिकिया दें और उन्नाब का शर्बत सूखे धनिये के साथ और खसखास का शर्बत, रीबाज और काकनुज लाभ कारक हैं और वैद्य लोग कहते हैं कि गुदा और पेड़ूपरपछने लगाना लाभकारक है और जो रुधिर की तेजी इस रोग का कारण होतो ठंडे पानी से मसाने पै तरेड़ा देवें और खट्टे भोजनों का खाना और न्हाना अधिक परिश्रम करना और जल्दी २ चलना इस रोगमें अधिक हानि कारक है (बोल उद्दम टिकिया की विधि) खीरे के बीज की मिंगी चार दिरम, निशास्ता, कतीरा, गुलनार, कुर्स, दम्मुलअखवैन अर्बी गोंद मस्तक एक दिरम कुर्स्फ़ानकरसुरफा या बारतंग के पानी में टिकिया बनाकर आवश्यकता के अनुसार देवें दूसरा भेद यहहै कि गुर्दा या कलेजा निर्बल होजाय इस कारणसे रुधिर अन्न से अच्छी तरह अलग न हो और पेशाव के साथ निकले उसका लक्षण यह है कि पेशाव मांसके धोवन के अनुसार निकले और फिर जो गुर्दे की निर्बलताके से होगा तो सफेदी के साथ होगा और जो कुछ गाढ़ा होगा और जो कलेजे की निर्बलता से होगा तो सुर्खी के साथ पतला होगा (चिकित्सा) जो कुछ कलेजे और गुर्दे की निर्बलता में वर्णन किया गया है उसे कारण के अनुसार काम में लावें। तीसरा भेद यह है कि पेशाव के मार्गकी रगों में घाव उत्पन्न हो इस कारणसे रक्तज पेशाव आनेलगे और

प्रत्येक अवयव से जो मुख्य हो या न हो पर शाखा इन रगों में आमिली है और ये सब अंडकोष में पहुची हैं और ईश्वर की शक्ति इस तरह है कि जब वह मल अंडकोष में आता है तो कुछ सफेद और गाढा होजाता है जैसे छाती में रुधिर का दूध बनजाता है और सब वैद्य यह बात कहते हैं कि मर्द और स्त्री में वीर्य है और इस बात की साक्षी कि वीर्य का मलकानकी पिछली रगोंमें से आता है यह है कि परीक्षा करने से मालूम हुआ है कि इनरगोंके फादडाल ने से मनुष्यकी उत्पत्ति बंद होजातीहै और ऐसाही इनरगोंका रुधिर दूधकेअनुसार होता है और इस बात की साक्षी कि वीर्य प्रत्येक अवयव से टपककर आता है यहहै कि जितनी निर्बलता उसके कम निकलने से होती है उतना रुधिर के निकलने से चाहे दूना हो नहीं होती और यही कारण है कि जो अवयव पिताका निर्बल होता है वही लड़के का भी होता है और वीर्य के कम होने का भी यह लक्षण है कि कठिनता से निकले और तंग हो फिर जो वीर्य की कमीका यह लक्षणहो कि वीर्य निकलनेकी नली सूखी और दुर्बलहै तो उसका यह लक्षण है कि मनी गाढी हो और तर भोजनों से और पानी में जाने से लाभ मालूम हो और जो कमी का यह कारण है कि वीर्य की नली में सर्दी है तो उसका यह लक्षण है कि वीर्य बहुत गाढ़ा ठंढा और जमा हुआ हो और बहुत मिहनत के पीछे निकले और भूखा रहने से और बीच की गति करने से और कठोर औषध और गर्म हवा से लाभ पहुंचे और इसी भेद की बात है कि कुछ मनुष्यों को स्त्री के पास जाने के पीछे देरतक ठहरना होता है क्योंकि उस स्थान और गति की गर्मी पहुचती है और जो इस कारण से कमी है कि वीर्य की नली में गर्मी है तो उसका यह लक्षण है कि वीर्य जर्द और गाढा हो और सहज से निकले और ठंढी वस्तुओं से लाभ हो अंडकोष बढे हुए हों और उसकी नसें उभरी हुई हों (लाभ) जब कि अग्नि अधिक होगी तो वीर्य गाढा होगा क्योंकि अधिक गर्मी जलाकर सुखा देतीहै और जो अधिक नहोतो वीर्यपतलाहोगा क्योंकि अग्निविधमानरपान्नाकर देतीहै जबतककि अधिकनहो और जो कमीका यहकारणहै कि वीर्यकी नलीमेंतरीहै तो उसका यह लक्षण है कि वीर्य पतला और अधिक हो और मूत्रेन्द्री में सुस्ती हो और पानी इत्यादि से हानि हो और सूखी वस्तु लाभकारक हों और पेशाब सफेद और गाढा हो और जो तरी और खुश्की या तरी या गीलापन या गर्मी और ठण्ढी कम होने का कारण हो तो उसका लक्षण इन

प्रत्येक अवयव से जो मुख्य हो या न हो पर शाखा इन रगों में आमिली हैं और ये सब अंडकोष में पहुची हैं और ईश्वर की शक्ति इस तरह है कि जब वह मल अंडकोष में आता है तो कुछ सफेद और गाढा होजाता है जैसे छाती में रुधिर का दूध बनजाता है और सब वैद्य यह बात कहते हैं कि मर्द और स्त्री में वीर्य है और इस बात की साक्षी कि वीर्य का मलकानकी पिछली रगोंमें से आता है यह है कि परीक्षा करने से मालूम हुआ है कि इनरगोंके फाडडाल ने से मनुष्यकी उत्पत्ति बंद होजातीहै और ऐसाही इनरगोंका रुधिर दूधकेअनुसार होता है और इस बात की साक्षी कि वीर्य प्रत्येक अवयव से टपककर आता है यहहै कि जितनी निर्बलता उसके कम निकलने से होती है उतना रुधिर के निकलने से चाहे दूना हो नहीं होती और यही कारण है कि जो अवयव पिताका निर्बल होता है वही लड़के का भी होता है और वीर्य के कम होने का भी यह लक्षण है कि कठिनता से निकले और तंग हो फिर जो वीर्य की कमीका यह लक्षणहो कि वीर्य निकलनेकी नली सूखी और दुर्बलहै तो उसका यह लक्षण है कि मनी गाढी हो और तर भोजनों से और पानी में जाने से लाभ मालूम हो और जो कमी का यह कारण है कि वीर्य की नली में सर्दी है तो उसका यह लक्षण है कि वीर्य बहुत गाढा ठंढा और जमा हुआ हो और बहुत मिहनत के पीछे निकले और भूखा रहने से और बीच की गति करने से और कठोर औषध और गर्म हवा से लाभ पहुंचे और इसी भेद की बात है कि कुछ मनुष्यों को स्त्री के पास जाने के पीछे देरतक ठहरना होता है क्योंकि उस स्थान और गति की गर्मी पहुंचती है और जो इस कारण से कमी है कि वीर्य की नली में गर्मी है तो उसका यह लक्षण है कि वीर्य जर्द और गाढा हो और सहज से निकले और ठंढी वस्तुओं से लाभ हो अंडकोष थके हुए हों और उसकी नस उभरी हुई हो (लाभ) जब कि अग्नि अधिक होगी तो वीर्य गाढा होगा क्योंकि अधिक गर्मी जलाकर सुखा देतीहै और जो अधिक नहोतो वीर्यपतलाहोगा क्योंकि अग्निपिघलाकरपतलाकर देतीहै जबतककि अधिकनहो और जो कमीका यहकारणहै कि वीर्यकी नलीमेंतरीहै तो उसका यह लक्षण है कि वीर्य पतला और अधिक हो और मूत्रेन्द्री में सुस्ती हो और पानी इत्यादि से हानि हो और सूखी वस्तु लाभकारक हों और पेशाब सफेद और गाढा हो और जो तरी और खुश्की या सर्दी या गीलापन या गर्मी और खुश्की कम होने का कारण हो तो उसका लक्षण इन

खाना काम शक्ति को बढ़ाता और वीर्य को गाढ़ा करता है (लाभ) मालूम हो कि यह लेप लाभकारक है उसकी (विधि) दालचीनी, कबाबा, कूट, अकरकरा, सफेद कनेर की जड़, प्रत्येक एक दाम सबको अधकुट करके एक रात दिन सेर भर पानी में भिगो कर औटावे जब तीन भाग जलजाय और एक भाग बाकी रहे तो छानकर उसकी आधी तोल मीठा तेल मिलाकर फिर औटावे यहां तक कि पानी जल जाय और जब पानी जल जाय और तेल बाकी रहे तो ठंढा करके रखलें और उसका मर्दन करें और उससे काम शक्ति और मूत्रेन्द्रिय की वृद्धि होती है और जो गर्मीका कारण होतो जो वस्तु कि वीर्य की नली को बंद करती हैं उनको काममें लावें जैसे दूध, दही, खुर्फे का शीरा और उसके अनुसार पिलावें और गर्म भोजन और गर्म दवाओंसे बचें और अण्डकोषको बनफशा और बादामके तेलसे चिकना रक्खें और भोजनके लिये कलिया, ककड़ी पड़ाहुआ बकरीके बच्चे का मांस, पालक का साग खानेको दें इत्यादि और जो वीर्य की नलियों की तरी का कारण होतो सूखी औषध जैसे इतरीफल इत्यादि काम में लावें और भुनाहुआ मांस मसालेदार, कबाब तथा तीतर, मुर्गे और चिड़ियाका मांस सबसे उत्तम भोजन है दालचीनी, सातर, जीरा, और तिलली सबसे उत्तम मसाले हैं और वैद्य लोग कहते हैं कि जो आदमी सदा चिड़ियों का मांस खावे और पानी की जगह दूध पीवे तो उसका वीर्य अधिक होजाता है और फरफयून का तेल और कूट का तेल कि जिसमें साद मिला हुआ हो मूत्रस्थान पर मलना लाभकारक है और इसी प्रकार से गर्म और सूखी औषधें तथा नीचे लिखा लेप लाभकारक है सुहागा ? मिर्च काल महीन पीसकर और दूध में मिलाकर १ रात दिन रक्खें और छाया में सुखावें और बैल का पित्त और शहद मिलाकर आवश्यकता के समय मूत्रेन्द्रिय पर चारों ओर मलें और गीली औषधों से बचे और जो कुछ मिले हुए कारण हों तो उसके अनुसार जहां प्रत्येक कारण का वर्णन किया गया है चिकित्सा करें और बहुधा ऐसा होता है कि दो कारण इकठे होजाते हैं परन्तु दो से अधिक नहीं होते हैं। तीसरा भेद यह है कि वीर्य रुककर अपनी जगह से न सरके और इस कारण से कामशक्ति बंद हो जावे और यह भेद बहुधा उन लोगों में उत्पन्न होता है जो अफीम, भांग और पोस्त इत्यादि नशे की वस्तु खाते हैं उसके यह लक्षण हैं कि वीर्य अधिक निकले और गाढ़ा तथा ठिठरा हुआ हो और रुकावट पूरी न हो बल्कि बहुत मेहनत के

खाना काम शक्ति को बढ़ाता और वीर्य को गाढ़ा करता है (लाभ) मालूम हो कि यह लेप लाभकारक है उसकी (विधि) दालचीनी, कबाबा, कूट, अकरकरा, सफेद कनेर की जड़, प्रत्येक एक दाम सबको अधकुट करके एक रात दिन सेर भर पानी में भिगो कर औटावे जब तीन भाग जलजाय और एक भाग बाकी रहे तो छानकर उसकी आधी तोल मीठा तेल मिलाकर फिर औटावे यहां तक कि पानी जल जाय और जब पानी जल जाय और तेल बाकी रहे तो ठंढा करके रखलें और उसका मर्दन करें और उससे काम शक्ति और मूत्रेन्द्रिय की वृद्धि होती है और जो गर्मीका कारण होतो जो वस्तु कि वीर्य की नली को बंद करती हैं उनको काममें लावें जैसे दूध, दही, खुर्फे का शीरा और उसके अनुसार खिलावें और गर्म भोजन और गर्म दवा और वर्धे और अण्डकोषको बनफशा और बादामके तेलसे चिकना रक्खें और भोजनके लिये कलिया, ककड़ी पड़ाहुआ बकरीके बच्चे का मांस, पालक का साग खानेको दें इत्यादि और जो वीर्य की नलियों की तरी का कारण हो तो खुश्की औषध जैसे इतरीफल इत्यादि काम में लावें और भुनाहुआ मांस मसालेदार, कबाब तथा तीतर, मुर्ग और चिड़ियाका मांस सबसे उत्तम भोजन है दालचीनी, सातर, जीरा, और तितली सबसे उत्तम मसाले हैं और वैद्य लोग कहते हैं कि जो आदमी सदा चिड़ियों का मांस खावे और पानी की जगह दूध पीवे तो उसका वीर्य अधिक होजाता है और फरफयून का तेल और कूट का तेल कि जिसमें साद मिला हुआ हो मूत्रस्थान पर मलना लाभकारक है और इसी प्रकार से गर्म और खुश्की औषधें तथा नीचे लिखा लेप लाभकारक है सुहागा १ मिस्काल महीन पीसकर और दूध में मिलाकर १ रात दिन रक्खें और छाया में सुखावें और बैल का पित्ता और शहद मिलाकर आवश्यकता के समय मूत्रेन्द्रिय पर चारों ओर मलें और गीली औषधोंसे बचे और जो कुछ मिले हुए कारण हों तो उसके अनुसार जहां प्रत्येक कारण का वर्णन किया गया है चिकित्सा करें और बहुधा ऐसा होता है कि दो कारण इकट्ठे होजाते हैं परन्तु दो से अधिक नहीं होते हैं। तीसरा भेद यह है कि वीर्य रुककर अपनी जगह से न सरके और इस कारण से कामशक्ति बंद हो जावे और यह भेद बहुधा उन लोगों में उत्पन्न होता है जो अफीम, भांग और पोस्त इत्यादि नशे की वस्तु खाते हैं उसका यह लक्षण है कि वीर्य अधिक निकले और गाढ़ा तथा ठिठरा हुआ हो और इच्छा पूरी न हो वरन बहुत मलनेतक

आधिकता होती है और सब प्रकारसे स्वस्थता होने पर भी प्रकृति को कामकी आवश्यकता नहीं होती (सूचना) बहुधा ऐसा होता है कि किसी २ मनुष्य को एकही स्त्री के साथ सहवास करने का स्वभाव अधिक होता है और जब अन्यत्र से काम पड़ता है तो कामेच्छा नहीं होती विशेष करके जोवह स्त्री अविवाहित और युवा हो क्योंकि ऐसे समय पर मूर्ख इतना डरजाता है कि उसके भयसे उसके मनसे अत्यन्त अरुचि उत्पन्न होजाती है जानलेना चाहिये कि जो कभी ऐसा अवसर पड़े तो हृदय में दृढता रक्खें और लज्जा का परित्याग करके क्योंकि लज्जा से सुस्ती बहुत पैदा होती है (चिकित्सा) जिस विधि से होसके अपने विचारों को ठीककरे औरदिल और भेजे के बलवान् करने में परिश्रम करें क्योंकि जो यह बलवान् होंगे तो और किसी बातका डर न रहेगा। छठा भेद वह है कि अधिक परिश्रम के कारण या बहुत समय तक बीमार रहने के कारण या बहुत भूखा रहने से अथवा उन वस्तुओं के सेवन से जो स्वभाविक गर्मी को दूर करती हैं इसी तरह शक्ति निर्बल होकर हृदय में निर्बलता उत्पन्न करती है और प्रगट है कि जब दिल और दिमाग निर्बल होंगे तो वह कामोत्पादकशक्ति उत्पन्न न होगी और निर्बल हो जावेगी और उसका यह लक्षण है कि नाडी में गर्मी और दुर्बलता हो और स्त्री से संभोग बहुत कम कर सकें संभोग से कुछ प्रसन्न भी नहो और पीछे मूर्च्छा सी मालूम हो और जहां कहीं गर्मी हो तो प्यास और पागलपन भी इस रोग में आवश्यक है और इस रोग वाला लज्जा डर और विचारों के कारण से इस काम से रुक जाता है (चिकित्सा) निर्बलता का जैसा कारण हो उसके अनुसार दिलको बलवान् और ठीककरने में परिश्रम करें अर्थात् उन पुष्टाईयों का सेवन करें जो दिलके रोगों में वर्णन की गई हैं और गाने बजाने में लगा रहै, शोच और चिंता से बचें और रूपवती स्त्री को अपने पास रक्खें क्योंकि रूपवती स्त्री का पास रखना कामशक्ति के बढ़ाने में सब औषधों से उत्तम है इसके सदृश और दूसरा कोई वस्तु नहीं है। सातवां भेद वह है कि आमाशय या कलेजा निर्बल होजाय इस कारण से निश्चय रुधिर जिससे वीर्य उत्पन्न होता है बहुत कम पैदा हो [illegible] कारण से [illegible]भोग शक्ति में निर्बलता आजाय और उसका यह [illegible] तथा [illegible]न्य विषयों की चाह कम होजाय और पाचन शक्ति [illegible] [illegible]न्य उपद्रव प्रगटहों (चिकित्सा)

आधिकता होती है और सब प्रकारसे स्वस्थता होने पर भी प्रकृति को कामकी आवश्यकता नहीं होती (सूचना) बहुधा ऐसा होता है कि किसी २ मनुष्य को एकही स्त्री के साथ सहवास करने का स्वभाव अधिक होता है और जब अन्यत्र से काम पड़ता है तो कामेच्छा नहीं होती विशेष करके जोवह स्त्री अविवाहित और युवा हो क्योंकि ऐसे समय पर मूर्ख इतना डरजाता है कि उसके भयसे उसके मनसे अत्यन्त अरुचि उत्पन्न होजाती है जानलेना चाहिये कि जो कभी ऐसा अवसर पडे तो हृदय में दृढता रक्खें और लज्जा का परित्याग करके क्योंकि लज्जा से सुस्ती बहुत पैदा होती है (चिकित्सा) जिस विधि से होसके अपने विचारों को ठीककरै औरदिल और भेजे के बलवान् करने में परिश्रम करें क्योंकि जो यह बलवान् होंगे तो और किसी बातका डर न रहेगा। छटा भेद वह है कि अधिक परिश्रम के कारण या बहुत समय तक बीमार रहने के कारण या बहुत भूखा रहने से अथवा उन वस्तुओं के सेवन से जो स्वभाविक गर्मी को दूर करती हैं इसी तरह शक्ति निर्बल होकर हृदय में निर्बलता उत्पन्न करती है और प्रगट है कि जब दिल और दिमाग निर्बल होंगे तो वह कामोत्पादकशक्ति उत्पन्न न होगी और निर्बल हो जावेगी और उसका यह लक्षण है कि नाडी में गर्मी और दुर्बलता हो और स्त्री से संभोग बहुत कम कर सकें संभोग से कुछ प्रसन्न भी नहो और पीछे मूर्च्छा सी मालूम हो और जहां कहीं गर्मी हो तो प्यास और पागलपन भी इस रोग में आवश्यक है और इस रोग वाला लज्जा डर और विचारों के कारण से इस काम से रुक जाता है (चिकित्सा) निर्बलता का जैसा कारण हो उसके अनुसार दिलको बलवान् और ठीककरने में परिश्रम करें अर्थात् उन पुष्टाईयों का सेवन करें जो दिलके रोगों में वर्णन की गई हैं और गाने बजाने में लगा रहै, शोच और चिंता से बचें और रूपवती स्त्री को अपने पास रक्खें क्योंकि रूपवती स्त्री का पास रखना कामशक्ति के बढाने में सब औषधों से उत्तम है इसके सदृश और दूसरा कोई वस्तु नहीं है। सातवां भेद वह है कि आमाशय या कलेजा निर्बल होजाय इस कारण से कि अच्छा रुधिर जिससे वीर्य उत्पन्न होता है बहुत कम पैदा हो [illegible] कारण से संभोग शक्ति में निर्बलता आजाया और उसका यह [illegible] तथा

अधिकता होती है और सब प्रकारसे स्वस्थता होने पर भी प्रकृति को कामकी आवश्यकता नहीं होती (सूचना) बहुधा ऐसा होता है कि किसी २ मनुष्य को एकही स्त्री के साथ सहवास करने का स्वभाव अधिक होता है और जब अन्यत्र से काम पड़ता है तो कामेच्छा नहीं होती विशेष करके जोवह स्त्री अविवाहित और युवा हो क्योंकि ऐसे समय पर मूर्ख इतना डरजाता है कि उसके भयसे उसके मनसे अत्यन्त अरुचि उत्पन्न होजाती है जानलेना चाहिये कि जो कभी ऐसा अवसर पड़े तो हृदय में दृढ़ता रक्खें और लज्जा का परित्याग करके क्योंकि लज्जा से सुस्ती बहुत पैदा होती है (चिकित्सा) जिस विधि से होसके अपने विचारों को ठीककरें औरदिल और भेजे के बलवान् करने में परिश्रम करें क्योंकि जो यह बलवान् होंगे तो और किसी बातका डर न रहेगा। छटा भेद यह है कि अधिक परिश्रम के कारण या बहुत समय तक बीमार रहने के कारण या बहुत भूखा रहने से अथवा उन वस्तुओं के सेवन से जो स्वभाविक गर्मी को दूर करती हैं इसी तरह शक्ति निर्बल होकर हृदय में निर्बलता उत्पन्न करती है और प्रगट है कि जब दिल और दिमाग निर्बल होंगे तो वह कामोत्पादकशक्ति उत्पन्न न होगी और निर्बल हो जावेगी और उसका यह लक्षण है कि नाड़ी में गर्मी और दुर्बलता हो और स्त्री से संभोग बहुत कम कर सकें संभोग से कुछ प्रसन्न भी नहो और पीछे मूर्च्छा सी मालूम हो और जहां कहीं गर्मी हो तो प्यास और पागलपन भी इस रोग में आवश्यक है और इस रोग वाला लज्जा डर और विचारों के कारण से इस काम से रुक जाता है (चिकित्सा) निर्बलता का जैसा कारण हो उसके अनुसार दिलको बलवान् और ठीककरने में परि-श्रम करें अर्थात् उन पुष्टाईयों का सेवन करें जो दिलके रोगों में वर्णन की गई हैं और गाने बजाने में लगा रहे, शोच और चिंता से बचें और रूपवती स्त्री को अपने पास रक्खें क्योंकि रूपवती स्त्री का पास रखना कामशक्ति के बढ़ाने में सब औषधों से उत्तम है इसके सदृश और दूसरा कोई वस्तु नहीं है। सातवां भेद यह है कि आमाशय या कलेजा निर्बल होजाय इस कारण से कियच्छा रुधिर जिससे वीर्य उत्पन्न होता है बहुत कम पैदा हो और इस कारण से संभोग शक्ति में निर्बलता आजाय और उसका यह लक्षण है कि भोजन तथा अन्य विषयों की चाह कम होजाय और पाचन शक्ति निर्बल हो और प्रकृतिक अन्य उपद्रव प्रगटहों (चिकित्सा) कारण के अनुसार उस अवयव को

आधिकता होती है और सब प्रकारसे स्वस्थता होने पर भी प्रकृति को कामकी आवश्यकता नहीं होती (सूचना) बहुधा ऐसा होता है कि किसी २ मनुष्य को एकही स्त्री के साथ सहवास करने का स्वभाव अधिक होता है और जब अन्यत्र से काम पड़ता है तो कामेच्छा नहीं होती विशेष करके जोवह स्त्री अविवाहित और युवा हो क्योंकि ऐसे समय पर मूर्ख इतना डरजाता है कि उसके भयसे उसके मनसे अत्यन्त अरुचि उत्पन्न होजाती है जानलेना चाहिये कि जो कभी ऐसा अवसर पड़े तो हृदय में दृढता रक्खें और लज्जा का परित्याग करके क्योंकि लज्जा से सुस्ती बहुत पैदा होती है (चिकित्सा) जिस विधि से होसके अपने विचारों को ठीककरै औरदिल और भेजे के बलवान् करने में परिश्रम करें क्योंकि जो यह बलवान् होंगे तो और किसी बातका डर न रहेगा। छटा भेद वह है कि अधिक परिश्रम के कारण या बहुत समय तक बीमार रहने के कारण या बहुत भूखा रहने से अथवा उन वस्तुओं के सेवन से जो स्वभाविक गर्मी को दूर करती हैं इसी तरह शक्ति निर्बल होकर हृदय में निर्बलता उत्पन्न करती हैं और प्रगट है कि जब दिल और दिमाग निर्बल होंगे तो वह कामोत्पादकशक्ति उत्पन्न न होगी और निर्बल हो जायेगी और उसका यह लक्षण है कि नाड़ी में गर्मी और दुर्बलता हो और स्त्री से संभोग बहुत कम कर सकें संभोग से कुछ प्रसन्न भी नहो और पीछे मूर्च्छा सी मालूम हो और जहां कहीं गर्मी हो तो प्यास और पागलपन भी इस रोग में आवश्यक है और इस रोग वाला लज्जा डर और विचारों के कारण से इस काम से रुक जाता है (चिकित्सा) निर्बलता का जैसा कारण हो उसके अनुसार दिलको बलवान् और ठीककरने में परिश्रम करें अर्थात् उन पुष्टाईयों का सेवन करें जो दिलके रोगों में वर्णन की गई हैं और गाने बजाने में लगा रहै, शोच और चिंता से बचें और रूपवती स्त्री को अपने पास रक्खें क्योंकि रूपवती स्त्री का पास रखना कामशक्ति के बढ़ाने में सब औषधों से उत्तम है इसके सदृश और दूसरा कोई वस्तु नहीं है। सातवां भेद वह है कि आमाशय या कलेजा निर्बल होजाय इस कारण से कि अच्छा रुधिर जिससे वीर्य उत्पन्न होता है बहुत कम पैदा हो और इस कारण से संभोग शक्ति में निर्बलता आजाय और उसका यह लक्षण है कि भोजन तथा अन्य विषयों की चाह कम होजाय और पाचन शक्ति निर्बल हो और प्रकृति के अन्य उपद्रव प्रगटहों (चिकित्सा) कारण के अनुसार उस अवयव को

पहली रीति में वर्णन करचुके हैं। दूसरी रीति यहहै कि आदमी बहुत समय तक संभोग न करे इस कारण से मूत्रस्थान में सकोचता हो। प्रगटहै कि सब अवयव एक काम और एक मिहनत से जो उनके लिये अवश्यहैं बलवान होते हैं और उसके छोडदेने से निर्बल होजाते हैं और इसी कारण से वैद्य लोगों ने कहाहै कि संभोग करना बलवान करताहै और मोटापी करताहै और निकम्मा रहने से निर्बल और पतला होजाता है (चिकित्सा) आधा गर्म पानी मूत्रस्थान पर डालें जिससे छिद्र खुलकर नर्म और ढीले हों और तरी पहुंचे उसके पीछे एक समय तक बैठेका दूध धीरे धीरे मूत्रस्थान के ऊपर और उसके चारों ओर मलें और जिफ्त रूमी काम में लावें जिससे इस ओर रुधिर खिचआवे और वहीं आनकर न पिघले और जबतक लाभ नहो बराबर करें। तीसरी रीति यहहै कि ठंड या गर्मी या खुश्की के कारण नीचे की देहमें फूलना और हवा कमबल्पयहो इस कारणसे शिथिलता हो और कुछ न करसके और उसके यह लक्षणहैं कि देहकी शक्तियां बलवान और अवयव स्वस्थहो तथा अफरा नहो और निबन्ध कारक भोजनों और कुपथ्य से लाभ मालूम हों और वीर्य बहुत निकले और ऐसे आदमी की कामशक्ति कभी नहीं जाती है परंतु कम और निर्बल होजाती है और कभी गर्मी की कमी और तरी की हानि से अफरा नहीं होता उसका यह लक्षण है कि खाने और पीने के पीछे विशेष करके उस वस्तु में गर्मी और तरी अधिक हो तो संभोगशक्ति बलवान होजातीहै और कभी गर्मीके नहोने से अफरा नहीं होता और यह बहुधा होताहै और उसका यह लक्षणहै किभूखके समय में जब कि आमाशय खालीहो और जब कि तेज गतिका अवसर पड़े या गर्म भोजन और गर्म औषध काममें लाईजाय तो संभोगशक्ति बलवान होजावे (चिकित्सा) अगर तरीकी कमीका कारणहो तो तरीकेलिये न्हायाकरें और तेल मलें और उसके अनुसार दूसरी विधि काममें लावें और भोजनोंमें से यखनी, ताजा चने, ताजा दूध, थोडी दालचीनी मिलाकर खिलावें औरकामशक्ति बढाने वाली औषधों में जो गर्म नहो काम में लावें और जो औषध गर्म हो उसको गर्मी न खावें क्योंकि अधिक गर्मी रूखापन पैदा करती है और इससे [illegible]

अफरा नहीं पैदा होताहै और जो गर्मी [illegible] होजाने से यह [illegible]
[illegible]करनके लिये गर्म माजून और तेल [illegible] में लावें। [illegible]
है कि पट्ठों में कफज फोकके गिरने [illegible] पानी में आ[illegible]
या बर्फ इत्यादि पर बैठने से इससे [illegible] कारका

पहली रीति में वर्णन करचुके हैं। दूसरी रीति यहहै कि आदमी बहुत समय तक संभोग न करे इस कारण से मूत्रस्थान में सकोचता हो। प्रगटहै कि सब अवयव एक काम और एक मिहनत से जो उनके लिये अवश्यहैं वलवान होते हैं और उसके छोडदेने से निर्बल होजाते हैं और इसी कारण से वैद्य लोगों ने कहाहै कि संभोग करना वलवान करताहै और मोटाभी करताहै और निकम्मा रहने से निर्बल और पतला होजाता है (चिकित्सा) आधा गर्म पानी मूत्रस्थान पर डालें जिससे छिद्र खुलकर नर्म और ढीले हों और तरी पहुंचे उसके पीछे एक समय तक भेडका दूध धीरे धीरे मूत्रस्थान के ऊपर और उसके चारों ओरमलें और जिफ्त रूमी काम में लावें जिससे इस ओर रुधिर खिचआवे और यहीं आनकर न पिघले और जबतक लाभ नहो बराबर करें। तीसरी रीति यहहै कि ठंढ या गर्मी या खुश्की के कारण नीचे की देहमें फूलना और हवा कमवस्तुमही इस कारणसे शिथलता हो और कुछ न करसके और उसके यह लक्षणहैं कि देहकी शक्तियां वलवान और अवयव स्वस्थहो तथा अफरा नहो और निबलकारक भोजनों और कुपथ्य से लाभ मालूम हो और वीर्य बहुत निकले और ऐसे आदमी की कामशक्ति कभी नहीं जाती है परंतु कम और निर्बल होजाती है और कभी गर्मी की कमी और तरी की हानि से अफरा नहीं होता उसका यह लक्षण है कि खाने और पीने के पीछे विशेष करके उस वस्तु में गर्मी और तरी अधिक हो तो संभोगशक्ति वलवान होजातीहै और कभी गर्मीके नहोनेसे अफरा नहीं होता और यह बहुधा होताहै और उसका यह लक्षणहै किमूत्रके समय में जब कि आमाशय खालीहो और जब कि तेज गतिका अवसर पडे या गर्म भोजन और गर्म औषध काममें लाईजाय तो संयोगशक्ति वलवान होजावे (चिकित्सा) अगर तरीकी कमीका कारणहो तो तरीकेलिये न्हायाकरें और तेल मलें और उसके अनुसार दूसरी विधि काममें लावें और भोजनोंमें से बाकला, ताजा चने, ताजा दूध, थोडी दालचीनी मिलाकर खिलावें औरकामशक्ति बढाने वाली औषधों में जो गर्म नतर काम में लावें और जो औषध गर्म हो उसको कभी न खावें क्योंकि अधिक गर्मी सूखापन पैदा करती है और इससे [illegible] में अफरा नहीं पैदा होताहै और जो गर्मी [illegible] होजाने से यह [illegible] गर्भ उसके लिये गर्म माजून और तेल [illegible] में लावें। [illegible]

[illegible] कि पट्ठों में कफज फोकके गिरने [illegible] पानी में औ[illegible]

[illegible] बर्फ इत्यादि पर बैठने से इससे [illegible] कारण का

[illegible]य उस[illegible]

पहली रीति में वर्णन करचुके हैं। दूसरी रीति यहहै कि आदमी बहुत समय तक सभोग न करे इस कारण से मूत्रस्थान में संकोचता हो। प्रगटहै कि सब अवयव एक श्राम और एक मिहनत से जो उनके लिये अवश्यहैं बलवान होते हैं और उसके छोडदेने से निर्बल होजाते हैं और इसी कारण से वैद्य लोगों ने कहाहै कि सभोग करना बलवान करताहै और मोटाभी करताहै और निकम्मा रहने से निर्बल और पतला होजाता है (चिकित्सा) थोधा गर्म पानी मूत्रस्थान पर डालें जिससे छिद्र खुलकर नर्म और ढीले हों और तरी पहुंचे उसके पीछे एक समय तक भेडका दूध धीरे धीरे मूत्रस्थान के ऊपर और उसके चारों ओरमलें और जिफ्त रूमी काम में लावें जिससे इस ओर रुधिर खिंचआवे और यहां आनकर न पिघले और जबतक लाभ नहो बराबर करें। तीसरी रीति यहहै कि ठंढ या गर्मी या खुश्की के कारण नीचे की देहमें फूलना और हवा कमबरपदाहो इस कारणसे शिथलता हो और कुछ न करसके और उसके यह लक्षणहैं कि देहकी शक्तियां बलवान और अवयव स्वस्थहो तथा अफरा नहो और निबन्ध कारक भोजनों और कुपथ्य से लाभ मालूम हों और वीर्य बहुत निकले और ऐसे आदमी की कामशक्ति कभी नहीं जाती है परंतु कम और निर्बल होजाती है और कभी गर्मी की कमी और तरी की हानि से अफरा नहीं होता उसका यह लक्षण है कि खाने और पीने के पीछे विशेष करके उस वस्तु में गर्मी और तरी अधिक हो तो सभोगशक्ति बलवान होजातीहै और कभी गर्मीके नहोनेसे अफरा नहीं होता और यह बहुधा होताहै और उसका यह लक्षणहै कि भूखके समय में जब कि आमाशय खालीहो और जब कि तेज गतिका अवसर पडे या गर्म भोजन और गर्म औषध काममें लाईजाय तो सयोगशक्ति बलवान होजावे (चिकित्सा) अगर तरीकी कमीका कारणहो तो तरीकेलिये न्हायाकरें और तेल मलें और उसके अनुसार दूसरी विधि काममें लावें और भोजनोंमें से बाकला, ताजा चने, ताजा दूध, मोटी दालचीनी मिलाकर खिलावें औरकामशक्तिबढाने वाली औषधों में जो गर्म नहो काम में लावें और जो औषध गर्म हो उसको कभी न खावें क्योंकि अधिक गर्मी सूखापन पैदा करती है और इससे मूत्रस्थान में अफरा नहीं पैदा होताहै और जो गर्मी के दूर होजाने से यह काम हो तो गर्म करनेके लिये गर्म माजून और तेल इत्यादि काम में लावें। चौथी रीति यहहै कि पट्ठों में फकज कोकके गिरने से और ठंढे पानी में अधिक ठहरने से या बर्फ इत्यादि पर बैठने से इससे पट्ठे में एक प्रकार का अर्द्धांग पैदा

पहली रीति में वर्णन करचुके हैं। दूसरी रीति यह है कि आदमी बहुत समय तक सभोग न करे इस कारण से मूत्रस्थान में संकोचता हो। प्रगट है कि सब अवयव एक श्राम और एक मिहनत से जो उनके लिये अवश्य हैं वलवान होते हैं और उसके छोडदेने से निर्बल होजाते हैं और इसी कारण से वैद्य लोगों ने कहा है कि सभोग करना वलवान करता है और मोटाधी करता है और निकम्मा रहने से निर्बल और पतला होजाता है (चिकित्सा) श्राघा गर्म पानी मूत्रस्थान पर डालें जिससे छिद्र खुलकर नर्म और ढीले हों और तरी पहुंचे उसके पीछे एक समय तक भेडका दूध धीरे धीरे मूत्रस्थान के ऊपर और उसके चारों ओर मलें और जिफत रूमी काम में लावें जिससे इस ओर रुधिर खिचआवै और यहां आनकर न पिघले और जबतक लाभ नहो बराबर करें। तीसरी रीति यह है कि ठंड या गर्मी या खुश्की के कारण नींचे की देहमें फूलभा और हवा कमउत्पन्नहो इस कारणसे शिथलता हो और कुछ न करसके और उसके यह लक्षण हैं कि देहकी शक्तियां बलवान और अवयव स्वस्थहो तथा अफरा नहो और निवन्ध कारक भोजनों और कुपथ्य से लाभ मालूम हों और वीर्य बहुत निकले और ऐसे आदमी की कामशक्ति कभी नहीं जाती है परंतु कम और निर्बल होजाती है और कभी गर्मी की कमी और तरी की हानि से अफरा नहीं होता उसका यह लक्षण है कि खाने और पीने के पीछे विशेष करके उस वस्तु में गर्मी और तरी अधिक हो तो सभोगशक्ति बलवान होजाती है और कभी गर्मीके नहोने से अफरा नही होता और यह बहुधा होता है और उसका यह लक्षण है कि भूखके समय में जब कि आमाशय खालीहो और जब कि तेज गतिका अवसर पड़े या गर्म भोजन और गर्म औषध काममें लाईजाय तो सयोगशक्ति बलवान होजावै (चिकित्सा) अगर तरीकी कमीका कारणहो तो तरीकेलिये न्हायाकरें और तेल मलें और उसके अनुसार दूसरी विधि काममें लावें और भोजनोंमें से बाकला, ताजा चने, ताजा दूध, मोठी दालचीनी मिलाकर खिलावें और कामशक्ति बढाने वाली औषधों में जो गर्म नहो काम में लावें और जो औषध गर्म हो उसको कभी न खावें क्योंकि अधिक गर्मी सूखापन पैदा करती है और इससे मूत्रस्थान में अफरा नही पैदा होता है और जो गर्मी के दूर होजाने से यह काम हो तो गर्म करनेके लिये गर्म माजूर और तेल इत्यादि काम में लावें। चौथी रीति यह है कि पट्ठों में कफज फोकके गिरने से और ठंडे पानी में अधिक ठहरने से या बर्फ इत्यादि पर बैठने से इससे पट्ठे में एक प्रकार का अर्द्धांग पैदा

पहली रीति में वर्णन करचुके हैं। दूसरी रीति वहहै कि आदमी बहुत समय तक सभोग न करे इस कारण से मूत्रस्थान में सकोचता हो। मगटहै कि सब अवयव एक काम और एक मिहनत से जो उनके लिये अवश्यहै बलवान होते हैं और उसके छोडदेने से निर्बल होजाते हैं और इसी कारण से वैद्य लोगों ने कहाहै कि सभोग करना बलवान करताहै और मोटाभी करताहै और निकम्मा रहने से निर्बल और पतला होजाता है (चिकित्सा) आधा गर्म पानी मूत्रस्थान पर डालें जिससे छिद्र खुलकर नर्म और ढीले हों और तरी पहुचे उसके पीछे एक समय तक भेड़का दूध धीरे धीरे मूत्रस्थान के ऊपर और उसके चारों ओरमलें और जिफ्त रूमी काम में लावें जिससे इस ओर रुधिर खिचआवे और यहां आनकर न पिघले और जबतक लाभ नहो बराबर करें। तीसरी रीति वहहै कि ठंढ या गर्मी या खुश्की के कारण नीचे की देहमें फूलना और हवा कमतरपैदाहो इस कारणसे शिथलता हो और कुछ न करसके और उसके यह लक्षणहैं कि देहकी शक्तिय. बलवान और अवयव स्वस्थहो तथा अफरा नहो और विबन्ध कारक भोजनों और कुपथ्य से लाभ मालूम हों और वीर्य बहुत निकले और ऐसे आदमी की कामशक्ति कभी नहीं जाती है परंतु कम और निर्बल होजाती है और कभी गर्मी की कमी और तरी की हानि से अफरा नहीं होता उसका यह लक्षण हैं कि खाने और पीने के पीछे विशेष करके उस वस्तु में गर्मी और तरी अधिक हो तो सभोगशक्ति बलवान होजातीहै और कमी गर्मीके नहोने से अफरा नही होता और यह बहुधा होताहै और उसका यह लक्षणहै कि भूखके समय में जब कि आमाशय खालीहो और जब कि तेज गतिका अवसर पडे या गर्म भोजन और गर्म औषध काममें लाईजाय तो सयोगशक्ति बलवान होजावे (चिकित्सा) अगर तरीकी कमीका कारणहो तो तरीकेलिये न्हायाकरें और तेल मलें और उसके अनुसार दूसरी विधि काममें लावें और भोजनोंमें रोगनका, ताजा चने, ताजा दूध, थोडी दालचीनी मिलाकर खिलावें औरकामशक्तिबढाने वाली औषधों में जो गर्म नहीं काम म लावें और जो औषध गर्म हो उसको कभी न खावें क्योंकि अधिक गर्मी सूखापन पैदा करती है और इससे मूत्रस्थान में अफरा नहीं पैदा होताहै और जो गर्मी के दूर होजाने से यह काम हो तो गर्म करनके लिये गर्म माजून और तेल इत्यादि काम में लावें। चौथी रीति यहहै कि पट्ठों में फकज फोकके गिरने से और ठंढे पानी में अधिक ठहरने से या बर्फ इत्यादि पर बैठने से इससे पट्ठे में एक प्रकार-का अर्द्धांग पैदा

पहली रीति में वर्णन करचुके हैं। दूसरी रीति यहहै कि आदमी बहुत समय तक सभोग न करे इस कारण से मूत्रस्थान में सकोचता हो। प्रगटहै कि सब अवयव एक काम और एक मिहनत से जो उनके लिये अवश्यहैं बलवान होते हैं और उसके छोडदेने से निर्बल होजाते हैं और इसी कारण से वैद्य लोगों ने कहाहै कि सभोग करना बलवान करताहै और मोटापी करताहै और निकम्मा रहने से निर्बल और पतला होजाता है (चिकित्सा) थोडा गर्म पानी मूत्रस्थान पर डालें जिससे छिद्र खुलकर नर्म और ढीले हों और तरी पहुंचे उसके पीछे एक समय तक भेड़का दूध धीरे धीरे मूत्रस्थान के ऊपर और उसके चारों ओरमलें और जिफ्त रूमी काम में लावें जिससे इस ओर रुधिर खिचआवे और वहां आनकर न पिघले और जबतक लाभ नहो बराबर करें। तीसरी रीति यहहै कि ठंड या गर्मी या खुश्की के कारण नीचे की देहमें फूलना और हवा कमजरपयदाहो इस कारणसे शिथलता हो और कुछ न करनके और उसके यह लक्षणहैं कि देहकी शक्तियं बलवान और अवयव स्वस्थहो तथा अफरा नहो और निवन्ध कारक भोजनों और कुपथ्य से लाभ मालूम हों और वीर्य बहुत निकले और ऐसे आदमी की कामशक्ति कभी नहीं जाती है परंतु कम और निर्बल होजाती है और कभी गर्मी की कमी और तरी की हानि से अफरा नहीं होता उसका यह लक्षण है कि खाने और पीने के पीछे विशेष करके उस वस्तु में गर्मी और तरी अधिक हो तो सभोगशक्ति बलवान होजातीहै और कभी गर्मीके नहोनेसे अफरा नहीं होता और यह बहुधा होताहै और उसका यह लक्षणहै किभूखके समय में जब कि आमाशय खालीहो और जब कि तेज गतिका अवसर पडे या गर्म भोजन और गर्म औषध काममें लाईजाय तो सयोगशक्ति बलवान होजावे (चिकित्सा) अगर तरीकी कमीका कारणहो तो तरीकेलिये न्हायाकरें और तेल मलें और उसके अनुसार दूसरी विधि काममें लावें और भोजनोंमेंसे याकथा, ताजा चने, ताजा दूध, थोडी दालचीनी मिलाकर खिलावें औरकामशक्तिबढाने वाली औषधों में जो गर्म नहीं काम में लावें और जो औषध गर्म हो उसको कभी न खावें क्योंकि अधिक गर्मी सूखापन पैदा करती है और इससे मूत्रस्थान में अफरा नहीं पैदा होताहै और जो गर्मी के दूर होजाने से यह काम हो तो गर्म करनके लिये गर्म माजून और तेल इत्यादि काम में लावें। चौथी रीति यहहै कि पट्ठों में फलज फाकके गिरने से और ठंडे पानी में अधिक ठहरने से या बर्फ इत्यादि पर बैठने से इससे पट्ठे में एक प्रकार का अर्द्धांग पैदा

दूसरा प्रकरण

मूत्रवाहीनल की वृद्धि का वर्णन

इस प्रकरण में तीन भेद हैं पहला भेद उन वस्तुओं के वर्णन में है जो मूत्रवाही नल की वृद्धि करती हैं जानना चाहिये कि यह काम युवा अवस्याही तक होसकता है और इसके पीछे असंभव है परन्तु पुष्टता हो सकती है इस पुष्टताकी कितनी हीं रीति हैं एक तो यह कि मूत्रस्थान को खुर खुरे कपड़े से कई बार मलें जिससे लाल हो जावे और उसके पीछे जो तेल अनुसार हों विशेष करके चींटियों का तेल लेप करें जिससे छिद्र बंद होजांय और जो रुधिर खिंच आया है वह पिघल न सके और उसके पीछे जिफ्त का लेप करें जिससे उस जगह रुधिर जम जावे और इस काम को कैई बार करें जिससें अधिकता प्रगट हो और दूसरा यह कि मूत्रस्थान को कैई बार गर्म पानीमें धोवे और बलसान का तेल कैई बार मलें । एक विधि यह है जैतूनका तेल सदा मलें और एक विधि यह है कि किरफ के पानी में कैई बार धोवें और या बकरी के घीसे कई बार चिकना करें और सूखे केंचुए या जोंक सोसन के तेल में पीस फिर मलें और अन्य हकीम कहता है कि जोक को गीले नारियल में एक सप्ताह तक बंद रक्खें फिर निकालकर पीसलें और वैद्य लोग कहते हैं कि जिस अवयव को मोटा करना चाहें तो पहले उसको खूब मले और गर्म पानी का उस पर तरेदा दें और धीरे २ उसपर हाथ मारें फिर उस पर लेप करें और जब फूलजाय तो इस विधि को छोड़दें जिससे जो रुधिर खिंच आया है पिघल न जावें। जालीनूस कहता है कि एक हकीम ने एक लघुमूत्रस्थान वाले बालक की इसी विधि से चिकित्सा की थी थोड़े समय में उसका अवयव बढ़गया (चींटीयों के तेल की विधि) बड़े ७ सात चींटे लेकर नरगिस के तेल में डालकर शीशे में रक्खें और उसका मुख बंद करदें और बकरी की मेंगनियों में १ रात दिन दबा रक्खें और साफ करके मूत्रस्थान का सिरा छोड़ कर ऊपर मले उससे दीर्घता होती है और काम शक्ति बढ़ती है और इसी प्रकार बहुत सी विधि हैं परन्तु जो उत्तम और आवश्यकथी सो वर्णन करदी गई हैं । दूसरे भेद में संभोग करने की विधि दशा और समय का वर्णन है और इस भेद में कुछ लाभ लिखे जाते हैं (लाभ) सम्भोग करने के लिये सब समय में वह समय उत्तम है कि जब भोजन आमाशय से निकल जाय और पहला और दूसरा पचाव पूरा होचुके और प्रत्येक आदमी के भोजन का पाचन समय बराबर नहीं इसके लिये कोई समय नहीं है परन्तु

दूसरा प्रकरण

मूत्रवाहीनल की वृद्धि का वर्णन

इस प्रकरण में तीन भेद हैं पहला भेद उन वस्तुओं के वर्णन में है जो मूत्रवाही नल की वृद्धि करती हैं जानना चाहिये कि यह काम युवा अवस्थाही तक होसक्ता है और इसके पीछे असंभव है परन्तु पुष्टता हो सकती है इस पुष्टताकी कितनी हीं रीति हैं एक तो यह कि मूत्रस्थान को खुर खुरे कपड़े से कई बार मलें जिससे लाल हो जावे और उसके पीछे जो तेल अनुसार हों विशेष करके चींटियों का तेल लेप करें जिससे छिद्र बंद होजांय और जो रुधिर खिंच आया है वह पिघल न सके और उसके पीछे जिफ्त का लेप करें जिससे उस जगह रुधिर जम जावे और इस काम को कैई बार करे जिससे अधिकता प्रगट हो और दूसरा यह कि मूत्रस्थान को कैई बार गर्म पानीमें धोवे और बलसान का तेल कैई बार मलें। एक विधि यह है जैतूनका तेल सदा मले और एक विधि यह है कि किरफ के पानी में कैई बार धोवें और या बकरी के घींसे कई बार चिकना करें और सूखे केंचुए या जोंक सोसन के तेल में पीस फिर मलें और अन्य हकीम कहता है कि जोक को गीले नारियल में एक सप्त तक बंद रक्खें फिर निकालकर पीसलें और वैद्य लोग कहते हैं कि जिस अवयव को मोटा करना चाहें तो पहले उसको खूब मले और गर्म पानी का उस पर तरेटा दें और धीरे २ उसपर हाथ मारें फिर उस पर लेप करें और जब फूलजाय तो इस विधि को छोड़दें जिससे जो रुधिर खिंच आया है पिघल न जावें। जालीनूस कहता है कि एक हकीम ने एक लघुमूत्रस्थान वाले बालक की इसी विधि से चिकित्सा की थी थोड़े समय में उसका अवयव बढ़गया (चींटीयों के तेल की विधि) बड़े ७ सात चींटे लेकर नरगिस के तेल में डालकर शीशे में रक्खें और उसका मुख बंद करदें और बकरी की मेंगनियों में १ रात दिन दबा रक्खें और साफ करके मूत्रस्थान का सिरा छोड़ कर ऊपर मलें उससे दीर्घता होती है और काम शक्ति बढ़ती है और इसी प्रकार बहुत सी विधि हैं परन्तु जो उत्तम और आवश्यकथी सो वर्णन करदी गई हैं। दूसरे भेद में संभोग करने की विधि दशा और समय का वर्णन है और इस भेद में कुछ लाभ लिखे जाते हैं (लाभ) सम्भोग करने के लिये सब समय में वह समय उत्तम है कि जब भोजन आमाशय से निकल जाय और पहला और दूसरा पचाव पूरा होचुके और प्रत्येक आदमी के भोजन का पाचन समय बराबर नहीं इसके लिये कोई समय नहीं है परन्तु

दूसरा प्रकरण

मूत्रवाहीनल की वृद्धि का वर्णन

इस प्रकरण में तीन भेद हैं पहला भेद उन वस्तुओं के वर्णन में है जो मूत्रवाही नल की वृद्धि करती हैं जानना चाहिये कि यह काम युवा अवस्थाही तक होसक्ता है और इसके पीछे असम्भव है परन्तु पुष्टता हो सकती है इस पुष्टताकी कितनी ही रीति हैं एक तो यह कि मूत्रस्थान को खुर खुरे कपड़े से कई वार मलें जिससे लाल हो जावे और उसके पीछे जो तेल अनुसार हों विशेष करके चीटियों का तेल लेप करें जिससे छिद्र वद होजांय और जो रुधिर खिंच आया है वह पिघल न सके और उसके पीछे जिफ्त का लेप करें जिससे उस जगह रुधिर जम जावे और इस काम को कैई वार करे जिससे अधिकता प्रगट हो और दूसरा यह कि मूत्रस्थान को कैई वार गर्म पानीमें धोवे और वलसान का तेल कैई वार मलें। एक विधि यह है जैतूनका तेल सदा मलें और एक विधि यह है कि किरफ के पानी में कैई वार धोवें और या वकरी के घीसे कैई वार चिकना करें और सूखे केंचुए या जौंक सोसन के तेल में पीस फिर मलें और अन्य हकीम कहता है कि जोक को गीले नरियल में एक सप्ताह तक वद रक्खें फिर निकालकर पीसलें और वैद्य लोग कहते हैं कि जिस अवयव को मोटा करना चाहें तो पहले उसका खूब मले और गर्म पानी का उस पर तरेदा दें और धीरे २ उसपर हाथ मारें फिर उस पर लेप करें और जब फूलजाय तो इस विधि को छोडदें जिससे जो रुधिर खिंच आया है पिघल न जावें। जालीनूस कहता है कि एक हकीम ने एक लघुमूत्रस्थान वाले वालक की इसी विधि से चिकित्सा की थी थोडे समय में उसका अवयव वढगया (चीटीयों के तेल की विधि) वडे २ सात चीटे लेकर नरगिस के तेल में डालकर शीशे में रक्खें और उसका मुख वद करदें और वकरी की मेंगनियों में १ रात दिन दवा रक्खें और साफ करके मूत्रस्थान का सिरा छोड कर ऊपर मले उससे दीर्घता होती है और काम शक्ति वढती है और इसी प्रकार वहुत सी विधि हैं परन्तु जो उत्तम और आवश्यकथी सो वर्णन करदी गई हैं। दूसरे भेद में सभोग करने की विधि दशा और समय का वर्णन हैं और इस भेद में, कुछ लाभ लिखे जाते हैं (लाभ) सम्भोग करने के लिये सव समय में यह समय उत्तम है कि जव भोजन आमाशय से निकल जाय और पहला और दूसरा पचाव पूरा होचुके और प्रत्येक आदमी के भोजन का पाचन समय वरावर नहीं इसके लिये कोई समय नहीं है परन्तु

दूसरा प्रकरण

मूत्रवाहीनल की वृद्धि का वर्णन

इस प्रकरण में तीन भेद हैं पहला भेद उन वस्तुओं के वर्णन में है जो मूत्रवाही नल की वृद्धि करती हैं जानना चाहिये कि यह काम युवा अवस्थाहीं तक होसक्ता है और इसके पीछे असम्भव है परन्तु पुष्टता हो सकती है इस पुष्टताकी कितनी हीं रीति हैं एक तो यह कि मूत्रस्थान को खुर खुरे कपड़े से कई वार मलें जिससे लाल हो जावे और उसके पीछे जो तेल अनुसार हों विशेष करके चींटियों का तेल लेप करें जिससे छिद्र बंद होजांय और जो रुधिर खिंच आया है वह पिघल न सके और उसके पीछे जिफ्त का लेप करें जिससे उस जगह रुधिर जम जावे और इस काम को कैई वार करे जिससे अधिकता प्रगट हो और दूसरा यह कि मूत्रस्थान को कैई वार गर्म पानीमें धोवे और बलसान का तेल कैई वार मलें । एक विधि यह है जैतूनका तेल सदा मलें और एक विधि यह है कि किरफ के पानी में कैई वार धोवें और या बकरी के घीसे कैई वार चिकना करें और सूखे केंचुए या जौंक सोसन के तेल में पीस फिर मलें और अन्य हकीम कहता है कि जोक को गीले नरियल में एक सप्ताह तक बंद रक्खें फिर निकालकर पीसलें और वैद्य लोग कहते हैं कि जिस अवयव को मोटा करना चाहें तो पहले उसका खूब मले और गर्म पानी का उस पर तरेदा दें और धीरे २ उसपर हाथ मारें फिर उस पर लेप करें और जब फूलजाय तो इस विधि को छोडदें जिससे जो रुधिर खिंच आया है पिघल न जावें। जालीनूस कहता है कि एक हकीम ने एक लघुमूत्रस्थान वाले बालक की इसी विधि से चिकित्सा की थी थोडे समय में उसका अवयव बढगया (चींटीयों के तेल की विधि) बडे २ सात चींटे लेकर नरगिस के तेल में डालकर शीशे में रक्खें और उसका मुख बंद करदें और बकरी की मेंगनियों में १ रात दिन दबा रक्खें और साफ करके मूत्रस्थान का सिरा छोड कर ऊपर मले उससे दीर्घता होती है और काम शक्ति बढती है और इसी प्रकार बहुत सी विधि है परन्तु जो उत्तम और आवश्यकथी सो वर्णन करदी गई है । दूसरे भेद में संभोग करने की विधि दशा और समय का वर्णन है और इस भेद में, कुछ लाभ लिखे जाते हैं (लाभ) सम्भोग करने के लिये सब समय में वह समय उत्तम है कि जब भोजन आमाशय से निकल जाय और पहला और दूसरा पचाव पूरा होचुके और प्रत्येक आदमी के भोजन का पाचन समय बराबर नहीं इसके लिये कोई समय नहीं है परन्तु

दूसरा प्रकरण

मूत्रवाहीनल की वृद्धि का वर्णन

इस प्रकरण में तीन भेद हैं पहला भेद उन वस्तुओं के वर्णन में है जो मूत्रवाही नल की वृद्धि करती हैं जानना चाहिये कि यह काम युवा अवस्थाही तक होसक्ता है और इसके पीछे असंभव है परन्तु पुष्टता हो सकती है इस पुष्टताकी कितनी हीं रीति हैं एक तो यह कि मूत्रस्थान को खुर खुरे कपड़े से कैई वार मलें जिससे लाल हो जावे और उसके पीछे जो तत्व अनुसार हो विशेष करके चीटियों का तेल लेप करें जिससे छिद्र बंद होजांय और जो रुधिर खिच आया है वह पिघल न सके और उसके पीछे जिफ्त का लेप करें जिससे उस जगह रुधिर जम जावे और इस काम को कैई वार करे जिससे अधिकता प्रगट हो और दूसरा यह कि मूत्रस्थान को कैई वार गर्म पानीमें धावे और बलसान का तेल कैई वार मलें। एक विधि यह है जैतूनका तेल सदा मलें और एक विधि यह है कि किरफ के पानी में कैई वार धोवें और या बकरी के घीसे कैई वार चिकना करें और सूखे केंचुए या जौंक सोसन के तेल में पीस फिर मलें और अन्य हकीम कहता है कि जोक को गीले नारियल में एक सप्ता तक धर रक्खें फिर निकालकर पीसलें और वैद्य लोग कहते हैं कि जिस अवयव को मोटा करना चाहें तो पहले उसको खूब मले और गर्म पानी का उस पर तरेडा दें और धीरे २ उसपर हाथ मारें फिर उस पर लेप करें और जब फूलजाय तो इस विधि को छोडदें जिससे जो रुधिर खिच आया है पिघल न जावे। जालीनूस कहता है कि एक हकीम ने एक लघुमूत्रस्थान वाले बालक की इसी विधि से चिकित्सा की थी थोडे समय में उसका अवयव बढगया (चीटीयों के तेल की विधि) बडे २ सात चीटे लेकर नरगिस के तेल में डालकर शीशे में रक्खें और उसका मुख बंद करदें और बकरी की मेंगनियों में १ रात दिन दबा रक्खें और साफ करके मूत्रस्थान का सिरा छोड कर ऊपर मले इससे दीर्घता होती है और काम शक्ति बढती है और इसी प्रकार बहुत सी विधि हैं परन्तु जो उत्तम और आवश्यकथी सो वर्णन करदी गई है। दूसरे भेद में संभोग करने की विधि दशा और समय का वर्णन है और इस भेद में; कुछ लाभ लिखे जाते हैं (लाभ) सम्भोग करने के लिये सब समय में वह समय उत्तम है कि जब भोजन आमाशय से निकल जाय और पहला और दूसरा पचाव पूरा होचुके और प्रत्येक आदमी के भोजन का पाचन समय बराबर नहीं इसके लिये कोई समय नहीं है परन्तु

दूसरा प्रकरण

मूत्रवाहीनल की वृद्धि का वर्णन

इस प्रकरण में तीन भेद हैं पहला भेद उन वस्तुओं के वर्णन में है जो मूत्रवाही नल की वृद्धि करती हैं जानना चाहिये कि यह काम युवा अवस्थाही तक होसकता है और इसके पीछे असंभव है परन्तु पुष्टता हो सकती है इस पुष्टताकी कितनी हीं रीति हैं एक तो यह कि मूत्रस्थान को खुर खुरे कपड़े से कैई वार मलें जिससे लाल हो जावे और उसके पीछे जो तेल अनुसार हों विशेष करके चीटियों का तेल लेप करें जिससे छिद्र बंद होजांय और जो रुधिर खिंच आया है वह पिघल न सके और उसके पीछे जिफ्त का लेप करें जिससे उस जगह रुधिर जम जावे और इस काम को कैई वार करे जिससे अधिकता प्रगट हो और दूसरा यह कि मूत्रस्थान को कैई वार गर्म पानीमें धावे और बलसान का तेल कैई वार मलें। एक विधि यह है जैतूनका तेल सदा मलें और एक विधि यह है कि किरफ के पानी में कैई वार धोवें और या बकरी के घीसे कैई वार चिकना करें और सूखे केंचुए या जौंक सोसन के तेल में पीस फिर मलें और अन्य हकीम कहता है कि जोक को गीले नारियल में एक सप्ताह तक धर रक्खें फिर निकालकर पीसलें और वैद्य लोग कहते हैं कि जिस अवयव को मोटा करना चाहें तो पहले उसको खूब मले और गर्म पानी का उस पर तरेडा दें और धीरे २ उसपर हाथ मारें फिर उस पर लेप करें और जब फूलजाय तो इस विधि को छोडदें जिससे जो रुधिर खिंच आया है पिघल न जावें। जालीनूस कहता है कि एक हकीम ने एक लघुमूत्रस्थान वाले बालक की इसी विधि से चिकित्सा की थी थोडे समय में उसका अवयव बढगया (चीटीयों के तेल की विधि) बडे २ सात चीटे लेकर नरगिस के तेल में डालकर शीशे में रक्खें और उसका मुख बंद करदें और बकरी की मेंगनियों में १ मास दिन दबा रक्खें और साफ करके मूत्रस्थान का सिरा छोड कर ऊपर मले इससे दीर्घता होती है और काम शक्ति बढती है और इसी प्रकार बहुत सी विधि हैं परन्तु जो उत्तम और आवश्यकथी सो वर्णन करदी गई हैं। दूसरे भेद में संभोग करने की विधि दशा और समय का वर्णन है और इस भेद में; कुछ लाभ लिखे जाते हैं (लाभ) सम्भोग करने के लिये सब समय में वह समय उत्तम है कि जब भोजन आमाशय से निकल जाय और पहला और दूसरा पचाव पूरा होचुके और प्रत्येक आदमी के भोजन का पाचन समय बराबर नहीं इसके लिये कोई समय नहीं है परन्तु

बंद न होगा तो बुरे २ रोग उत्पन्न होवेंगे ऐसे पुरुप को अवश्य है कि जब यह बात देखे तो स्त्रीसेवन का परित्याग कर देवै (लाभ) जो संगम कि औषधों के कारण या बहुत आश्लेष से किया जाता है वह अंत में कामशक्ति को निर्बल करदेता है और इसी प्रकार रजस्वला स्त्री तथा कम अवस्थावाली और अविवाहित स्त्रियों से संगम न करना चाहिये क्योंकि इनके सेवन से अनेक प्रकार की भयंकर हानियां उत्पन्न हो जाया करती हैं जैसा कि इस बात के परीक्षा करने वाले जानते हैं परन्तु गुदा में न करना चाहिये क्योंकि यह बहुत बुरा है और मूजज ग्रंथ में लिखा है कि जिन आदमियों की ऐसी प्रकृति होतीहै तो उनकी संतानकी भी वैसीही दुष्ट प्रकृति होजाती है। तीसरा भेद संभोग की हानि के वर्णन में है अथवा वह विधि जिसमें संगम से निर्बलता उत्पन्न न हो जानना चाहिये कि जब संभोग करने से देह में निर्बलता आने लगे तो उसको छोड़ दें और देह के गर्म और ताजा करने में और आराम तथा प्रसन्नता करने में परिश्रम करें और जिस खेल से खुशी हो उसमें लगे और गौ तथा भेड़का दूध पीवे क्योंकि यह संभोगको उभारता है और कामशक्ति को बढ़ाता है इसी प्रकार भूना हुआ मुर्ग का अंडा और दूसरे भोजन और बलवान् करने वाले हलुआ देवै और जब कि संभोगकरने की अधिकता से कपकपी पैदा हो तो भेजे पर तेल मलें और जो उसके अनुसार हो काम में लावें और बान तथा शाद का तेल शरीर पर मलें और जब कि संभोग की अधिकता से गर्मी निर्बल हो और उसके कारण से तरमल में अधिकता मालूम हो तो निकालडालने को आवश्यक जाने और जान लेना चाहिये कि जिन मनुष्यों के पट्ठे निर्बल होते हैं उनमें संभोग से बहुत हानि होती है और जब संभोग की अधिकता से आंखों का प्रकाश निर्बल होजावे तो भेजे पर तेल मलें और बनफशा, बादाम का तेल, कद्दू का तेल नाक में डालें और मीठे पानी में स्नान करें और मीठे पानी में आंखें खोलें और आंखों में गुलाब टपकावें और जबतक निर्बलता बिल्कुल दूर न हो तो संभोग कदापि न करें। (लाभ) अगर कोई पुरुप संभोग के पीछे थोड़ी सी चिकनी और मीठी वस्तु खाले तो उसको संगम से कुछ हानि न होगी और इसी प्रकार से जो कुछ निर्बलता के दूर करने के लिये वर्णन किया गया है उसको आरोग्य के समय काम में लावें तो निर्बलता न होगी और इस काममें गऊ और भैंस का दूध सब से उत्तम है और उसमें थोड़ी सी सोंठ डालकर औटा ले तो बहुत उत्तम है और सब से उत्तम यह है कि

बंद न होगा तो बुरे २ रोग उत्पन्न होवेंगे ऐसे पुरुष को अवश्य है कि जब यह बात देखे तो स्त्रीसेवन का परित्याग कर देवे (लाभ) जो सगम कि औषधों के कारण या बहुत आश्लेष से किया जाता है वह अंत में कामशक्ति को निर्बल करदेता है और इसी प्रकार रजस्वला स्त्री तथा कम अवस्थावाली और अविवाहित स्त्रियों से संगम न करना चाहिये क्योंकि इनके सेवन से अनेक प्रकार की भयंकर हानियां उत्पन्न हो जाया करती है जैसा कि इस शास्त्र के परीक्षा करने वाले जानते हैं परन्तु गुदा में न करना चाहिये क्योंकि यह बहुत बुरा है और मूजज ग्रंथ में लिखा है कि जिन आदमियों की ऐसी प्रकृति होतीहै तो उनकी संतानकी भी वैसीही दुष्ट प्रकृति होजाती है। तीसरा भेद संभोग की हानि के वर्णन में है अथवा वह विधि जिसमें संगम से निर्बलता उत्पन्न न हो जानना चाहिये कि जब संभोग करने से देह में निर्बलता आने लगे तो उसको छोड़ दें और देह के गर्म और ताजा करने में और आराम तथा प्रसन्नता करने में परिश्रम करें और जिस खेल से खुशी हो उसमें लगे और गौ तथा भेड़का दूध पीवे क्योंकि यह संभोगको उभारता है और कामशक्ति को बढ़ाता है इसी प्रकार भुना हुआ मुर्गे का अंडा और दूसरे भोजन और बलवान् करने वाले हलुआ देवै और जब कि संभोग करने की अधिकता से कपकपी पैदा हो तो भेजे पर तेल मलें और जो उसके अनुसार हो काम में लावें और बान तथा शाद का तेल शरीर पर मलें और जब कि संभोग की अधिकता से गर्मी निर्बल हो और उसके कारण में तरमल में अधिकता मालूम हो तो निकालडालने को आवश्यक जाने और जान लेना चाहिये कि जिन मनुष्यों के पट्ठे निर्बल होते हैं उनमें संभोग से बहुत हानि होती है और जब संभोग की अधिकता से आंखों का प्रकाश निर्बल होजावे तो भेजे पर तेल मलें और बनफशा, बादाम का तेल, कद्दू का तेल नाक में डालें और मीठे पानी में स्नान करें और मीठे पानी में आंखें खोलें और आंखों में गुलाब टपकावें और जबतक निर्बलता बिल्कुल दूर न हो तो संभोग कदापि न करै। (लाभ) अगर कोई पुरुष संभोग के पीछे थोड़ी सी चिकनी और मीठी वस्तु खाले तो उसको संगम से कुछ हानि न होगी और इसी प्रकार से जो कुछ निर्बलता के दूर करने के लिये वर्णन किया गया है उसको आरोग्य के समय काम में लावें तो निर्बलता न होगी और इस काम में गऊ और भैंस का दूध सब से उत्तम है और उसमें थोड़ी सी सोंठ डालकर औटा ले तो बहुत उत्तम है और सब से उत्तम यह है कि

बल की उत्पत्ति होती है देसी अजवायन १ सेर गाजर के बीज १ दिरम लौंग १ दिरम, फिटकरी आधा दिरम, कश्राऊद १ दिरम, विसवासा, सहदाना प्रत्येक २ दिरम, सबको महीन पीसकर ३ गुने शहद में मिलाकर माजून बनावे इसकी मात्रा प्रतिदिन ३ दिरम है (हर्षोत्पादक औषध) कबाबा, दालचीनी, अकरकरा, लालमुनका, महीन पीसकर शहद मिलाकर संगम काल से एक घड़ी पहले लेपकरें और समय से पहिले कपड़े से साफ करलेना उचित है।

तीसरा प्रकरण वीर्यके जल्दी निकलजाने का वर्णन।

यह कई प्रकार से होता है एक तो यह कि निस्सारक शक्ति तरी और खुश्की के कारण से निर्बल होजावे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य सफेद और पतला निकले और गर्मीके लक्षण बिलकुल नहीं (चिकित्सा) मलके निकलने के लिये अयारज की टिकिया देवें और वमन कारक औषधोंसे वमन करे मूत्रेन्द्रिय की सीवन और गोलियों पर केसर का तेल, आसका तेल, नर्गिस का तेल, कूटका तेल इत्यादि मलें और जानलेना चाहिये कि शराब फजनोस माजून खबसुल्हदीद अधिक लाभकारक है और वमन अधिक लाभकारक है और उत्तम भोजन और मूखा क़लिया मुतजन दालचीनी सातर और जीरे के साथ देवें (शराब फजनोस की विधि) कच्चे अंगूर का पानी ६ रतल, सिमाक माजू गुलनार गुलाब के फूल कुन्दर सूखा धनिया, सातर साद प्रत्येक १० दिरम हुर्र फिटकरी १ दिरम लोहेका मैल सुधा हुआ ३० मिस्काल इन सब औषधों को कूट छान कर अंगूर के पानी में खवाले जब एक तिहाई पानी रहजावे तब छानकर रख छोड़े इसकी मात्रा रोगी की दशा के अनुसार देवे और फजनोस लोहे के मैल को कहते हैं (माजून खबसुलहदीद की विधि) छोटी हड़ । बहेड़ा । आमला । कालीमिर्चे । पीपल । सोंठ । साद । हिन्दी सातरअ । सम्बुल प्रत्येक १० दिरम गदना के बीज सोये के बीज प्रत्येक ४ दिरम लोहे का मैल सुधा हुआ १०० दिरम सब को कूट छानकर बादाम के तेलसे चिकना करके साफ शहद मिलावे और उसके पीछे दो दिरम मुश्क मिलाकर चीनी के बरतन में रखें और छः महीने के पीछे काम में लावे । इसकी मात्रा दो दिरम है और शक्ति तथा प्रकृति के अनुसार अधिक भी देसकते हैं और लोहे के मैल को साफ करने की यह विधि है कि उसको १४ रात दिन अंगूरी सिर्के में डालकर पीसे

बल की उत्पत्ति होती है देसी अजवायन १ सेर गाजर के बीज १ दिरम लौंग १ दिरम, फिटकरी आधा दिरम, फवाऊद १ दिरम, विसवासा, सह-दाना प्रत्येक २ दिरम, सबको महीन पीसकर ३ गुनें शहद में मिलाकर माजून बनावे इसकी मात्रा प्रतिदिन २ दिरम है (हर्षोत्पादक औषध) क़वावा, दालचीनी, अकरकरा, लालमुनक्का, महीन पीसकर शहद मिलाकर संगम काल से एक घड़ी पहले लेपकरें और समय से पाहिले कपड़े से साफ करलेना उचित है।

तीसरा प्रकरण वीर्यके जल्दी निकलजाने का वर्णन।

यह कई प्रकार से होता है एक तो यह कि निस्सारक शक्ति तरी और खुश्की के कारण से निर्बल होजावे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य सफेद और पतला निकले और गर्मीके लक्षण बिलकुल नहीं(चिकित्सा) मलके निका-लने के लिये अयारज की टिकिया देवें और वमन कारक औषधोंसे वमन करे मूत्रेन्द्रिय की सीवन और गोलियों पर केसर का तेल, आसका तेल, नार्गिस का तेल. कुटका तेल इत्यादि मलें और जानलेना चाहिये कि शराव फजनोस माजून खबसुल्हदीद अधिक लाभकारक है और वमन अधिक लाभकारकहै और उत्तम भोजन और मूखा क़लिया मुतजन दालचीनी सातर और जीरे के साथ देवें (शराव फजनोस की विधि) कच्चे अंगूर का पानी ६ रतल. सिमाक माजू गुलनार गुलाव के फूल कुन्दर भुना धनिया. सातर साद प्रत्येक १० दिरम मुर्दे फिटकरी १ दिरम लोहेका मैल सुधा हुआ ३० मिस्काल इन सब औषधों को कूट छान कर अंगूर के पानी में उवाले जब एक तिहाई पानी रहजावे तब छानकर रख छोड़े इसकी मात्रा रोगी की दशा क अनुसार देवे और फजनोस लोहे के मैल को कहते हैं (माजून खबसुलहदीद की विधि) छोटी हड़े । बहेड़ा । आमला । काली-मिर्च । पीपल । सोंठ । साद । हिन्दी सातरज । सम्बुल प्रत्येक १० दिरम गदना के बीज सोये के बीज प्रत्येक ४ दिरम लोहे का मैल सुधा हुआ १०० दिरम सब को कूट छानकर बादाम के तेलसे चिकना करके साफ शहद मिलावे और उसके पीछे दो दिरम मुश्क मिलाकर चीनी के बरतन में रखें और छः महीने के पीछे काम में लावे । इसकी मात्रा दो दिरम है और शक्ति तथा प्रकृति के अनुसार अधिक भी देसकते हैं और लोहे के मैल को साफ करने की यह विधि है कि उसको १४ रात दिन अंगूरी सिर्के में डालकर पैसी

बल की उत्पत्ति होती है देसी अजवायन १ सेर गानग के बीज १ दिरम लौंग १ दिरम, फिटकरी आधा दिरम, कचाऊद १ दिरम, बिसवासा, सद्दाना प्रत्येक २ दिरम, सबको महीन पीसकर ३ गुनें शहद में मिलाकर माजून बनावे इसकी मात्रा प्रतिदिन ३ दिरम है (हर्षोत्पादक औषध) कबाबा, दालचीनी, अकरकरा, लालमुनका, महीन पीसकर शहद मिलाकर संगम काल से एक खडी पहले लेपकरे और समय से पहिले कपडे से साफ करलेना उचित है।

तीसरा प्रकरण वीर्यके जल्दी निकलजाने का वर्णन।

यह कई प्रकार से होता है एक तो यह कि निस्सारक शक्ति तरी और खुश्की के कारण से निर्बल होजावे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य सफेद और पतला निकले और गर्मीके लक्षण बिलकुल नहीं(चिकित्सा) मलके निकालने के लिये अयारज की टिकिया देवें और वमन कारक औषधोंसे वमन करे मूत्रेन्द्रिय की सीवन और गोलियों पर केसर का तेल, आसका तेल, नर्गिस का तेल कूटका तेल इत्यादि मले और जानलेना चाहिये कि शराब फजनोस माजून खबसुल हदीद अधिक लाभकारक है और वमन अधिक लाभकारकहै और उत्तम भोजन और सूखा कलिया. मुतजन दालचीनी सातर और जीरे के साथ देवें (शराब फजनोस की विधि) कच्चे अंगूर का पानी ६ रतल. सिमाक. माजू गुलनार गुलाब के फूल. कुन्दर सूखा धनियां. सातर साद प्रत्येक १० दिरम मुर्र फिटकरी १ दिरम लोहेका मैल सुधा हुआ ३० मिस्काल इन सब औषधों को कूट छान कर अंगूर के पानी में उबाले जब एक तिहाई पानी रहजावे तब छानकर रख छोडे इसकी मात्रा रोगी की दशा के अनुसार देवे और फजनोस लोहे के मैल को कहते हैं (माजून खबसुलहदीद की विधि) छोटी हर्डे। बहेडा । आमला । कालीमिर्च । पीपल । सोंठ । साद । हिन्दी सातरज । सम्बुल प्रत्येक १० दिरम गदना के बीज सोये के बीज प्रत्येक ४ दिरम लोहे का मैल सुधा हुआ १०० दिरम सब को कूट छानकर बादाम के तेलसे चिकना करके साफ शहद मिलावे और उसके पीछे दो दिरम मुश्क मिलाकर चीनी के बरतन में रखें और छः महीने के पीछे काम में लावे। इसकी मात्रा दो दिरम है और शक्ति तथा प्रकृति के अनुसार अधिक भी देसकते हैं और लोहे के मैल को साफ करने की यह विधि है कि उसको १४ रात दिन अंगूरी सिर्के में डालकर ऐसी

बल की उत्पत्ति होती है देसी अजवायन १ सेर गानर के बीज १ दिरम लौंग १ दिरम, फिटकरी आधा दिरम, कबाऊद १ दिरम, विसवासा, सहदाना प्रत्येक २ दिरम, सबको महीन पीसकर ३ गुनें शहद में मिलाकर माजून बनावे इसकी मात्रा प्रतिदिन ३ दिरम है (हर्षोत्पादक औषध) कबाबा, दालचीनी, अकरकरा, लालमुनक्का, महीन पीसकर शहद मिलाकर संगम काल से एक घड़ी पहले लेपकरें और समय से पहिले कपड़े से साफ करलेना उचित है।

तीसरा प्रकरण वीर्यके जल्दी निकलजाने का वर्णन।

यह कई प्रकार से होता है एक तो यह कि निस्सारक शक्ति तरी और खुश्की के कारण से निर्बल होजावे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य सफेद और पतला निकले और गर्मीके लक्षण बिलकुल नहीं (चिकित्सा) मलके निकलने के लिये अयारज की टिकिया देवें और वमन कारक औषधोंसे वमन करे मूत्रेन्द्रिय की सीवन और गोलियों पर केसर का तेल, आसका तेल, नर्गिस का तेल कुटका तेल इत्यादि मलें और जानलेना चाहिये कि शराब फजनोस माजून खबसुल हदीद अधिक लाभकारक है और वमन अधिक लाभकारकहै और उत्तम भोजन और मुरब्बा गलिया. मुतंजन दालचीनी सातर और जीरे के साथ देवें (शराब फजनोस की विधि) कच्चे अंगूर का पानी ६ रतल. सिमाक. माजू गुलनार गुलाब के फूल. कुन्दर मुखा धनिया. सातर साद प्रत्येक १० दिरम मुर्र फिटकरी १ दिरम लोहेका मैल सुधा हुआ ३० मिस्काल इन सब औषधों को कूट छान कर अंगूर के पानी में उबाले जब एक तिहाई पानी रहजावे तब छानकर रख छोड़े इसकी मात्रा रोगी की दशा के अनुसार देवे और फजनोस लोहे के मैल को कहते हैं (माजून खबसुलहदीद की विधि) छोटी हड़ । बहेडा । आमला । कालीमिर्च । पीपल । सोंठ । साद । हिन्दी सातरज । सम्बुल प्रत्येक १० दिरम गदना के बीज सोंपे के बीज प्रत्येक ४ दिरम लोहे का मैल सुधा हुआ १०० दिरम सब को कूट छानकर बादाम के तेलसे चिकना करके साफ शहत मिलावे और उसके पीछे दो दिरम मुश्क मिलाकर चीनी के बरतन में रक्खें और छः महीने के पीछे काम में लावे । इसकी मात्रा दो दिरम है और शक्ति तथा प्रकृति के अनुसार अधिक भी देसकते हैं और लोहे के मैल को साफ करने की यह विधि है कि उसको १४ रात दिन अंगूरी सिर्के में डालकर ऐसी

कारणों से पुरुषका वीर्य जल्द निकल जाता है तो स्त्री का स्थान ठंडा होना चाहिये और जो ठंडा होतो गर्म होना चाहिये (लाभ) जो पुरुष और स्त्री की प्रकृति एकसी हो और विरुद्धता की आवश्यकता होतो प्रकृति के विरुद्ध औषधों का उचित लेप करे और स्त्री को भी कहे कि उन ही औषधों को अपने स्थान में रक्खै और ठंड के लिये चन्दन और कपूर इत्यादि और गर्मी के रोगों के लिये कबाबा, अकरकरा इत्यादि उत्तम है (लाभ) अब हम कुछ उत्तम औषधों की विधि जो धातुको पुष्टकारक और दृढ़ता उत्पन्न करने वाली हैं कराबा दीन कादरी से वर्णन करते हैं इनमें से आवश्यकता के अनुसार काम में लावें उस औषध की विधि जो सुजाक और वीर्य बहने को उत्तम है इमलीके चीआं भूभल में भूनकर छील ले और महीन पीसकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर सात दिन तक प्रति दिन एक फकी काममें लावें। ऐसी औषध की विधि जो गाढ़ापन पैदा करती है यह है कि नया कायफल (पुराना नहो) भैंस के दूध में घोलकर लेप करे और सुबह शाम गर्म पानी से धोवें। ऐसी गोलियों की विधि जो कामशक्ति को बलवान् और वीर्य को गाढ़ा करती है काकुल दो तोले, अर्बी कटका दूध फटा हुआ, बहमन सफेद ढाई तोला, इन औषधों को महीन पीस कर शहद में मिलाकर २१ गोलियां बनावे और गौके दूध के साथ प्रतिदिन एक गोली खावै ॥

चौथा प्रकरण सहवास की अधिकता का वर्णन

यह कई प्रकार का है एक तो यह है कि देह मोटी हो और रुधिर तथा वीर्य अधिक हो और उसका लक्षण यह है कि सोने में और संगम करनेमें अधिक वीर्य निकलने पर भी देह में कड़ापन और रंगत में ललाई रहे और कामशक्तिमें निर्बलता न हो (लाभ) जो संभोग की अधिकता के साथ देहमें शक्तिहो और प्रकृतिभी स्वस्थ हो और उसके पीछे निर्बलता और हानि नहो तो उसके तोड़ने में परिश्रम न करें जब तक कि आवश्यकता न हो क्योंकि विना आवश्यकता के उसका तोड़ना प्रकृति को निर्बल करता है और शक्ति को घटाता है और जब संभोग की अधिकता से निर्बलता उत्पन्न हो तो उस समय उसकी चिकित्सा आवश्यक है (चिकित्सा) फस्द खोलें और विरेचन करावें और भोजन कम करें और भोजनों में से जो खट्टा हो उसको अधिक खावें और उन्नाब का पानी, मसूरका पानी, कच्चे अंगूर का पानी पक्के अंगूर का पानी, खट्टे अनार का पानी, और नींबूका पिलावें

कारण से पुरुषका वीर्य जल्द निकल जाता है तो स्त्री का स्थान ठंडा होना चाहिये और जो ठंडा होतो गर्म होना चाहिये (लाभ) जो पुरुष और स्त्री की प्रकृति एकसी हो और विरुद्धता की आवश्यकता होतो प्रकृति के विरुद्ध औषधों का उचित लेप करे और स्त्री को भी कहे कि उन ही औषधों को अपने स्थान में रक्खे और ठंड के लिये चन्दन और कपूर इत्यादि और गर्मी के रोगों के लिये कवावा, अकरकरा इत्यादि उत्तम है (लाभ) अब हम कुछ उत्तम औषधों की विधि जो धातुको पुष्टकारक और दृढ़ता उत्पन्न करने वाली हैं करावा दीन कादरी से वर्णन करते हैं इनमें से आवश्यकता के अनुसार काम में लावें उस औषध की विधि जो सुजाक और वीर्य बहने को उत्तम है इमलीके चीआं भूभल में भूनकर छीलले और महीन पीसकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर सात दिन तक प्रति दिन एक फकी काममें लावें। ऐसी औषध की विधि जो गाढ़ापन पैदा करती है यह है कि नया कायफल (पुराना नहो) भैंस के दूध में घोलकर लेप करें और सुबह शाम गर्म पानी से धोवें। ऐसी गोलियों की विधि जो कामशक्ति को बलवान् और वीर्य को गाढ़ा करती है काकुल दो तोले, अर्बी कटका दूध फटा हुआ, बहमन सफेद ढाई तोला, इन औषधों को महीन पीस कर शहद में मिलाकर २१ गोलियां बनावे और गौके दूध के साथ प्रतिदिन एक गोली खावे ॥

चौथा प्रकरण सहवास की अधिकता का वर्णन

यह कई प्रकार का है एक तो यह है कि देह मोटी हो और रुधिर तथा वीर्य अधिक हो और उसका लक्षण यह है कि सोने में और संगम करनेमें अधिक वीर्य निकलने पर भी देह में कड़ापन और रंगत में ललाई रहे और कामशक्तिमें निर्बलता न हो (लाभ) जो संभोग की अधिकता के साथ देहमें शक्तिहो और प्रकृतिभी स्वस्थ हो और उसके पीछे निर्बलता और हानि नहो तो उसके तोड़ने में परिश्रम न करें जब तक कि आवश्यकता न हो क्योंकि बिना आवश्यकता के उसका तोड़ना प्रकृति को निर्बल करता है और शक्ति को घटाता है और जब संभोग की अधिकता से निर्बलता उत्पन्न हो तो उस समय उसकी चिकित्सा आवश्यक है (चिकित्सा) फस्द खोलें और विरेचन करावे और भोजन कम करें और भोजनों में से जो खट्टा हो उसको अधिक खावें और अनार का पानी, मसूरका पानी, कचे अंगूर का पानी पक्के अंगूर का पानी, खट्टे अनार का पानी, और नींबूका पिलावें

से खराब होजाता है और जो सदैव सभोग करता है तो भेजे और पट्ठों में हानि पहुंचती है और इस भेद के यह लक्षण हैं कि प्रधान अवयवों मेंसे किसी अवयव में निर्बलता वर्त्तमान हो और वीर्य के अवयव बलवान हों और जो निर्बलता भेजे में है तो इन्द्रियों में सुस्ती और विचारादि में उपद्रव प्रगट होजाता है और इसी प्रकार दूसरे लक्षण जोकि निर्बलता में मुख्य हैं जब उस अवयव में निर्बलता उत्पन्न हो तो उसके लक्षण प्रगट हों (चिकित्सा) जो इस सूरत में कि वीर्य के अवयव बलवान हैं तो और किसी प्रकार की सर्दी और फुलावट नहीं हो तो नीलोफर के पानी में पीसकर लेप करें और नीलोफर के पानी से तरेड़ा दें और वीर्य की गति के अवयव को प्रमकरदें और यह बात अवश्य है कि ठंढी और सूखी औषधें कामशक्ति बढ़ानेवाली औषधों के साथ मिलाकर काम में लावें जिससे ठंढी औषधों का प्रभाव कामशक्ति बढ़ानेवाली औषधों के साथ उक्त अवयव पर बहुत जल्दी पहुंचता है पांचवां यह कि वीर्यकी नलीमें फुन्सियां पैदाहों और उसके खटके के कारण से संभोगशक्ति अधिक हो और उसका यह लक्षण है कि सभोग से चाहना अधिक बढ़े और वीर्य जल्दी निकलै और स्वाद बहुत अधिक मालूम पड़े और वीर्य निकलनेपर भी शक्ति बनी रहे और जब फुंसियों में घाव होजाय तो उसका यह लक्षण है कि अधिक वीर्य निकलने के पीछे दर्द मालूम हो और घावों के दूसरे लक्षण जैसे छिलका और पविका पेशाब में निकलना आदि (चिकित्सा) जो कुछ हानि न होतो फस्द खोले और विरेचन देवै जिसमें पित्त निकल जाय और प्रकृति के बराबर करने के लिये खुरफे का सीरा, काहू के बीज का सीरा, खसखस के बीजका सीरा, ईसबगोलका लुआब शर्बतबनफशा में मिलाकर पिलावे और रोगी को आज्ञा दे कि गुह्येन्द्रियको अधिक ठंढे जलमें रक्खे । छठा यहकि देहमें फूलन अधिक हो और सभोगका कारणहो जैसा कि उन्मत्त रोगियोंमें प्रगटहै और इस भेदके यह लक्षण है कि गाढ़ेपन की अधिकता और पहले फुलाने वाली औषधों का खाना आदि (चिकित्सा) जो अग्नि की अधिकता से प्रकृतिमें गर्मी और फूलन उत्पन्न हो तो ठंढ लाने वाली औषध देवें जैसे खुरफे के बीज का सीरा काहूके बीज कासनी के बीज, नाशपाती के मुरब्बे में मिलाकर देवें और जो समझा यह कारण हो कि गर्मी में निर्बलता और मल में अधिकताहै तो गोली मलको भगानेवाली और हवाओं को तोड़नेवाली दवा काममें लावें और जो

से खराब होजाता है और जो सदैव संभोग करता है तो भेजे और पट्ठों में हानि पहुंचती है और इस भेद के यह लक्षण हैं कि प्रधान अवयवों मेंसे किसी अवयव में निर्बलता वर्तमान हो और वीर्य के अवयव बलवान हों और जो निर्बलता भेजे में है तो इन्द्रियों में सुस्ती और विचारादि में उपद्रव प्रगट होजाता है और इसी प्रकार दूसरे लक्षण जोकि निर्बलता में मुख्य हैं जब उस अवयव में निर्बलता उत्पन्न हो तो उसके लक्षण प्रगट हों (चिकित्सा) जो इस सूरत में कि वीर्य के अवयव बलवान हैं तो और किसी प्रकार की सर्दी और फुलावट नहीं हो तो नीलोफर के पानी में पीसकर लेप करें और नीलोफर के पानी से तरेड़ा दें और वीर्य की गति के अवयव को नमकरदें और यह बात अवश्य है कि ठंडी और सूखी औषधें कामशक्ति बढ़ानेवाली औषधों के साथ मिलाकर काम में लावें जिससे ठंडी औषधों का प्रभाव कामशक्ति बढ़ानेवाली औषधों के साथ उक्त अवयव पर बहुत जल्दी पहुंचता है पांचवां यह कि वीर्यकी नलीमें फुन्सियां पैदाहों और उसके खटके के कारण से संभोगशक्ति अधिक हो और उसका यह लक्षण है कि संभोग से चाहना अधिक बढ़े और वीर्य जल्दी निकले और स्वाद बहुत अधिक मालूम पड़े और वीर्य निकलनेपर भी शक्ति बनी रहे और जब फुंसियों में घाव होजाय तो उसका यह लक्षण है कि अधिक वीर्य निकलने के पीछे दर्द मालूम हो और घावों के दूसरे लक्षण जैसे छिलका और पीबका पेशाब में निकलना आदि (चिकित्सा) जो कुछ हानि न होतो फस्द खोले और विरेचन देवै जिसमें पित्त निकल जाय और प्रकृति के बराबर करने के लिये खुरफे का सीरा, काहू के बीज का सीरा, खसखस के बीजका सीरा, ईसबगोलका लुआब शर्बतबनफशा में मिलाकर पिलावे और रोगी को आज्ञा दे कि गुह्येन्द्रियको अधिक ठंडे जलमें रक्खे । छठा यहकि देहमें फूलन अधिक हो और संभोगका कारणहो जैसा कि उन्मत्त रोगियोंमें प्रगटहै और इस भेदके यह लक्षण है कि गाढ़ेपन की अधिकता और पहले फुलाने वाली औषधों का खाना आदि (चिकित्सा) जो अग्नि की अधिकता से प्रकृतिमें गर्मी और फूलन उत्पन्न हो तो ठंढ लाने वाली औषध देवें जैसे खुरफे के बीज का सीरा काहूके बीज कासनी के बीज, नाशपाती के मुरब्बे में मिलाकर देवें और जो समभा यह कारण हो कि गर्मी में निर्बलता और मल में अधिकता है तो गाढ़ी मलको सुखानेवाली और हवाओं को तोड़नेवाली दवा काममें लावें और जो

की फस्द उत्तम है और जो भोजन वीर्य और रुधिर को कम पैदा करते हैं कमी के साथ काम में लावें जैसे मसूर, सिरका, काहू का पानी, धनिये का पानी पीवे बनफशा का तेल कद्दू का तेल मिलाकर हड्डियों पर लेप करें। दूसरा भेद यह है कि वीर्यमें गर्मी और तेजी आजाय और चुभनेके कारणसे उसको प्रकृति दूर करना चाहे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य पीला हो और निकलतेसमय जलन उत्पन्नहो और पहिले कारण साक्षीहों और पेशाव जलकर आने लगे (चिकित्सा) ठंडे शर्वत जैसे शर्वत नीलोफर, शर्वत उन्नाव, शर्वत बनफशा गुलनार, काहूकेबीज, खुर्फेकेबीज, ईसबगोल, कासनीकेबीज धनियां और नीलोफर देवे ये दवा वीर्य के ठंडा करने में अधिक गुणकारक हैं (लाभ) ग्रंथ वर्णन करता है कि इस भेद में यह चूर्ण लाभकारक है उसकी विधि काहूके बीज, भंगके बीज, कासनीके बीज, सूखा धनियां, नीलोफरके फूल कूट पीसकर ईसबगोल चढ़ाकर काम में लावें (दूसरी औषध की विधि) तितली के बीज, अनीसून प्रत्येक एक दिरम, गोखरू, जुन्दबेदस्तर, भंग के बीज दम्मुल अखवैन, बंशलोचन प्रत्येक दो दिरम, गुलनार, गुलाबके फूल३दिरम महीन पीसकर ठंडे पानी के साथ काममें लावें। तीसरा भेद यह है कि ठंड और तरी के कारण वीर्य की नली में ढीलापन और सुस्ती आजाय इस कारण से उसके रोकने वाली शक्ति निर्वल हो जाय तो वीर्य को न रोक सकें और वीर्य आप से आप बाहर निकल आवे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य पतला और बिना चैतन्यता होने के निकले और ठंड के दूसरे लक्षण प्रगट हों (लाभ) जो रोकने वाली शक्ति अधिक निर्वल होगी तो जब वीर्य नलीमें आवेगा तब बिना चैतन्यता हुए बाहर निकल जायगा परन्तु जो निर्वलता अधिक न होगी तो वीर्य कुछ गति से निकलेगा तो इस सूरतमें जैसा निर्वलता में अन्तर होगा वैसा ही उसकी दशा में होगा सो कभी तो ऐसा होता है कि चैतन्यता होनेके आदि मेंही वीर्य निकल जाता है और कभी देर तक चैतन्यता होने के पीछे वा सोने के पीछे निकलता है सारांश यह है कि इस रोग में अधिक देर तक चैतन्यता नहीं हो सकती है (चिकित्सा) गर्म औषधें जो वीर्य को कम करती हैं जैसे पंजअंगुस्त के बीज, पोदीना के पत्ते साद, गुलनार, मरुवा, जीरा, तितली के बीज, शहदाना, कलौंजी, सोया मुश्क इत्यादि दवा बनाकर खिलावे और गर्म भोजन खिलावे इसमें माजून कमूनी भी अधिक लाभकारक है चौथा भेद यह है कि वीर्य की नली के

की फस्द उत्तम है और जो भोजन वीर्य और रुधिर को कम पैदा करते हैं कमी के साथ काम में लावें जैसे मसूर, सिरका, काहू का पानी, धनिये का पानी पीवे बनफशा का तेल कद्दू का तेल मिलाकर हड्डियों पर लेप करें। दूसरा भेद वह है कि वीर्यमें गर्मी और तेजी आजाय और चुभनेके कारणसे उसको प्रकृति दूर करना चाहे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य पीला हो और निकलतेसमय जलन उत्पन्नहो और पहिले कारण साक्षीहों और पेशाव जलकर आने लगे (चिकित्सा) ठंडे शर्वत जैसे शर्वत नीलोफर, शर्वत अनाव, शर्वत बनफशा गुलनार, काहूकेबीज, खुर्फेकेबीज, ईसबगोल, कासनीकेबीज धनियां और नीलोफर देवे ये दवा वीर्य के ठंढा करने में अधिक गुणकारक हैं (लाभ) ग्रंथ वर्णन करता है कि इस भेद में यह चूर्ण लाभकारक है उसकी विधि काहूके बीज, भंगके बीज, कासनीके बीज, सूखा धनियां, नीलोफरके फूल कूट पीसकर ईसबगोल चढ़ाकर काम में लावें (दूसरी औषध की विधि) तितली के बीज, अनीसून प्रत्येक एक दिरम, गोखरू, जुन्दवेदस्तर, भंग के बीज दम्युल अखवैन, बंशलोचन प्रत्येक दो दिरम, गुलनार, गुलाबके फूल३दिरम महीन पीसकर ठंढे पानी के साथ काममें लावें। तीसरा भेद यह है कि ठंढ और तरी के कारण वीर्य की नली में ढीलापन और सुस्ती आजाय इस कारण से उसके रोकने वाली शक्ति निर्बल हो जाय तो वीर्य को न रोक सकें और वीर्य आप से आप बाहर निकल आवे और उसका यह लक्षण है कि वीर्य पतला और बिना चैतन्यता होने के निकले और ठंढ के दूसरे लक्षण प्रगट हों (लाभ) जो रोकने वाली शक्ति अधिक निर्बल होगी तो जब वीर्य नलीमें आवेगा तब बिना चैतन्यता हुए बाहर निकल जायगा परन्तु जो निर्बलता अधिक न होगी तो वीर्य कुछ गति से निकलेगा सो इस सूरतमें जैसा निर्बलता में अन्तर होगा वैसा ही उसकी दशा में होगा सो कभी तो ऐसा होता है कि चैतन्यता होनेके आदि मेंही वीर्य निकल जाता है और कभी देर तक चैतन्यता होने के पीछे वा सोने के पीछे निकलता है सारांश यह है कि इस रोग में अधिक देर तक चैतन्यता नहीं हो सकती है (चिकित्सा) गर्म औषधें जो वीर्य को कम करती हैं जैसे पंजकिस्त के बीज, पोदीना के पत्ते साद, गुलनार, मरुवा, जीरा, तितली के बीज, दाद्दाना, कलौंजी, मौथा मुश्क इत्यादि दवा बनाकर खिलावे और गर्म भोजन जिमावे इसमें माजून कमूनी भी अधिक लाभकारक है चौथा भेद यह है कि वीर्य की नली के

चाहिये जैसा कि मर्दों के वीर्य के बहने में वर्णन किया है परन्तु जो गर्भस्थानके मुख में ढीलापन हो तो बद करने वाली औषधों के काथमें बैठना और बलवान् औषधों का पीना और कभी २ वमन करना अधिक लाभककारहै। यह औषध वीर्यके लिये लाभकारक है तितली के बीज पंजकिस्तके बीज गुलनार प्रत्येक बराबर कूट छान के दो दिरम सिकजबीन के साथ दें (दूसरीविधि) मजी और मदी को रोकती है सहदाना भुना हुआ शहत में मिलाकर देवे। यह औषध वीर्य के बहने को रोकती है तितली के बीज ३ दिरम पंजकिस्त के बीज, सोसन की जड़ प्रत्येक २ दिरम, गुलनार, गुलाब के पत्ते प्रत्येक डेढ़ दिरम कूट छानकर२ दिरम, खट्टे दही में या अंगूर के खट्टे पानी में मिलाकर पीवे (दूसरीविधि) यह वीर्य मजी और पेशाब के बहने के लिये लाभकारकहै भंग के बीज, कसीला, गुक, जीरा प्रत्येक २ दिरम, बलूत, काहू के बीज, कूट, साद, प्रत्येक ३ दिरम ज़ुंदे बेदस्तर १ दिरम, खुरफे के बीज ७ दिरम, हर्ड का छिलका, काबली हर्ड का छिलका, आंवला छिला हुआ प्रत्येक ७ दिरम इनका चूर्ण बनाकर शहत में मिलावे इसकी मात्रा ५ दिरम है (लाभ) करावादीन कादरी में फरफयून के तेल की विधि इस प्रकार लिखीहै कि कूट कड़वा १० दिरम अकरकरा ७ दिरम मर्वीज ३ दिरम सबको ४० दिरम शराब में उबाले जब चौथाई बाकी रहै तो छानकर रोगनखैरी मिलाकर फिर उबाले जिससे शराब जलजाय और तेल बाकीरहै फिर २ दिरम फरफयून घोल कर मिलादें और आग से उतार लें और आवश्यकता के समय काम में लावें॥

छटा प्रकरण।

रक्तज वीर्य के निकलने का वर्णन।

कभी वीर्यके बदले में रुधिर निकलताहै उसका यह कारण है कि अंडकोषोंकी पाचन शक्ति में निर्बलता आजातीहै इसकारण से वीर्यको सफेद नहीं करता और बेसाही वीर्य की नली में पहुंचाता है(चिकित्सा)गुर्दे और अंडकोषों को बलवान करें और इसकाम के लिये दोनों अंडकोषों को मस्तगी के तेलसे सिका रखना लाभ दारक है जो गर्मी के कारणसे निर्बलता नहो॥ कबाई में मस्तगी के तेलकी विधि इस प्रकार लिखी है कुमी मस्तगी १० दिरम, जैतून का तेल ५० दिरम या फूलों का तेल या तिलों के तेल में मिलाकर शीशेमें भरकर पानी भरी देग में रक्खे और नीचे आग जलावें जिसमें मस्तगी पिघले और कोई वैद्य मस्तगी को पानी में जोश करके इस पानी को तेल में

चाहिये जैसा कि मर्दों के वीर्य के बहने में वर्णन किया है परन्तु जो गर्भस्थानके मुख में ढीलापन हो तो बंद करने वाली औषधों के काथमें बैठना और बलवान् औषधों का पीना और कभी २ वमन करना अधिक लाभककारहै। यह औषध वीर्यके लिये लाभकारक है तितली के बीज पंजकिस्तके बीज गुलनार प्रत्येक बराबर कूट छान के दो दिरम सिकजबीन के साथ दें (दूसरीविधि) मजी और मदी को रोकती है सहदाना भुना हुआ शहत में मिलाकर देवे। यह औषध वीर्य के बहने को रोकती है तितली के बीज ३ दिरम पंजकिस्त के बीज, सोसन की जड़ प्रत्येक २ दिरम, गुलनार, गुलाब के पत्ते प्रत्येक डेढ़ दिरम कूट छानकर२ दिरम, खट्टे दही में या अंगूर के खट्टे पानी में मिलाकर पीवे (दूसरीविधि) यह वीर्य मजी और पेशाब के बहने के लिये लाभकारकहै भंग के बीज, कसीला, सुमाक, जीरा प्रत्येक २ दिरम, बलूत, काहू के बीज, कूट, साद, प्रत्येक ३ दिरम गुंदे बेदस्तर १ दिरम, खुरफे के बीज ७ दिरम, हड़ का छिलका, काबली हड़ का छिलका, आंवला छिला हुआ प्रत्येक ७ दिरम इनका चूर्ण बनाकर शहत में मिलावे इसकी मात्रा ५ दिरम है (लाभ) करावादीन कादरी में फरफयून के तेल की विधि इस प्रकार लिखीहै कि कूट कड़वा १० दिरम अकरकरा ७ दिरम मवीज ३ दिरम सबको ४० दिरम शराब में उबाले जब चौथाई बाकी रहै तो छानकर रोगनखैरी मिलाकर फिर उबाले जिससे शराब जलजाय और तेल बाकीरहै फिर २ दिरम फरफयून घोल कर मिलादें और आग से उतार लें और आवश्यकता के समय काम में लावें ॥

छटा प्रकरण।

रक्तज वीर्य के निकलने का वर्णन।

कभी वीर्यके बदले में रुधिर निकलताहै उसका यह कारण है कि अंडकोषोंको पाचन शक्ति में निर्बलता आजातीहै इसकारण से वीर्यको सफेद नहीं करता और बेसाही वीर्य की नली में पहुंचाता है(चिकित्सा)गुर्दे और अंडकोषों को बलवान करें और इसकाम के लिये दोनों अंडकोषों को मस्तगी के तेलसे चिकना रखना लाभ कारक है जो गर्मी के कारणसे निर्बलता न हो॥ बकाई में मस्तगी के तेलकी विधि इस प्रकार लिखी है कि मस्तगी १० दिरम, जैतून का तेल ५० दिरम या फूलों का तेल या तिलों के तेल में मिलाकर शीशेमें भरकर पानी भरी देग में रक्खें और नीचे आग जलावें जिसमें मस्तगी पिघले और कोई बैद्य मस्तगी को पानी में जोश करके इस पानी को तेल में

वर्णन हुआ है पिलावें और ठंड हो और वीर्य सफेद और पतला होतो कफ को वमन के साथ निकालने वाली औषधि देवें और तितली आदि के वात नाशक तेल पीठ और पेड़ूपर मलें और जो कुल कि कफजमल के बहने में वर्णन किया है काममें लावें और दस्तों से बचना चाहिये क्योंकि उसमें यह डर है कि मल नीचे को न निकले (लाभ) जब मूत्रेन्द्रिय में हवा होती है तो चैतन्यता के साथ एक प्रकार की गति होती है और जब हवा नस और नली में होती है तो चैतन्यता के साथ गति नहीं होती और जानलेना चाहिये कि कभी बहुत समय तक सगमन के छोड़ देने से नली में वीर्य अधिक होजाताहै इस कारण से चैतन्यता अधिक होती है इसमें वह चिकित्सा करनी चाहिये जो कामेच्छा की अधिकता के प्रकरण में वर्णन की गई है ।

नवां प्रकरण अज़ीता का वर्णन

अजीता उस रोगको कहते हैं कि सभोग के पीछे वीर्य के निकलते समय विष्टा भी निकल जावे और गुदा उसको रोक न सके और यहरोग उनलोगोंको उत्पन्न होता है जो संगम में बहुत मज़ा * उठाते हैं और उनका वीर्य बहुत पतला और तेज होता है और रुधिर पतला पट्ठे सुस्त और रूह बहुत कम होती है और रगें और पट्ठे अधिक निर्बल होते हैं और प्रकृति मैली होती और देखने और छूने से उनको अधिक लज्जा होती है और ऐसे रोगी की सन्तान मूर्ख होती है और कभी यह रोग स्त्रियों को होता है ।

(चिकित्सा) दिल भेजे और पट्ठों को बलवान करै और स्त्रीसंगम से मनको रोकै और जब गमन की इच्छा होतो पहले दस्त जावें जिससे आंत खाली हो जावे और पेटभी खाली होना चाहिये और इस रोग में कब्ज करनेवाली औषधें देना उत्तम है जैसे शराब में जीरा मिलाकर और चकोर भुनेहुए चावल थोड़े घीके साथ पकाकर और अकाकिया, रामक, गुलनार, अर्बीगोंद और कुन्दरसे बत्ती बनाकर सदा काममें लावें और सभोग के समय नाशपाती, अमरूद, तथा नारदीनकातेल गुदापरमलना और कब्ज करनेवाले मरहम लगाना लाभकारक है और इस कारणसे कि अधिक मजापानेमे यह रोग बढ़ता और छूने से आनन्द की प्राप्ति अधिक होतीहै इसलिये वह स्त्री जिसपर इच्छा न हो और जिसकागर्भ

---

* अजायबउल इन्तखाबमें लिखा है कि जिन लोगों को अधिक मजा होता है यह रोग उन लोगों के होता है और उनकी सन्तान मूर्ख होती है और यह बात पंथ और विद्वानों के विरुद्ध है जो सगम करने से बचते हैं इस कारण से उनकी सन्तान विद्वान बलवान और स्वस्थ होती है और उनकी सब इन्द्रियां बलवान होती हैं ।

वर्णन हुआ है पिलावें और ठढ हो और वीर्य सफेद और पतला होतो कफ को वमन के साथ निकालने वाली औषधि देवें और तितली आदि के वात नाशक तेल पीठ और पेड़ूपर मलें और जो कुल कि कफजमल के बहने में वर्णन किया है काममें लावें और दस्तों से बचना चाहिये क्योंकि उसमें यह डर है कि मल नीचे को न निकले (लाभ) जब मूत्रेन्द्रिय में हवा होती है तो चैतन्यता के साथ एक प्रकार की गति होती है और जब हवा नस और नली में होती है तो चैतन्यता के साथ गति नहीं होती और जानलेना चाहिये कि कभी बहुत समय तक सगमन के छोड़ देने से नली में वीर्य अधिक होजाताहै इस कारण से चैतन्यता अधिक होती है इसमें वह चिकित्सा करनी चाहिये जो कामेच्छा की अधिकता के प्रकरण में वर्णन की गई है।

नवां प्रकरण अजीता का वर्णन

अजीता उस रोगको कहते हैं कि सभोग के पीछे वीर्य के निकलते समय विष्ठा भी निकल जावे और गुदा उसको रोक न सके और यहरोग उनलोगोंको उत्पन्न होता है जो सगम में बहुत मज़ा * उठाते हैं और उनका वीर्य बहुत पतला और तेज होता है और रुधिर पतला पट्ठे सुस्त और रूह बहुत कम होती है और रगें और पट्ठे अधिक निर्बल होते हैं और प्रकृति मैली होती और देखने और छूने से उनको अधिक लज्जा होती है और ऐसे रोगी की सन्तान मूर्ख होती है और कभी यह रोग स्त्रियों को होता है।

(चिकित्सा) दिल भेजे और पट्ठों को बलवान करै और स्त्रीसगम से मनको रोके और जब गमन की इच्छा होतो पहले दस्त जावें जिससे आंत खाली हो जावे और पेटभी खाली होना चाहिये और इस रोग में कब्ज करनेवाली औषधें देना उत्तम है जैसे कबाब में जीरा मिलाकर और चकोर भुनेहुए चावल थोड़े घीके साथ पकाकर और अकाकिया, रामक, गुलनार, अर्बीगोंद और छुन्दरसे बत्ती बनाकर सदा काममें लावें और सभोग के समय नाशपाती, अमरूद, तथा नारदीनकातेल गुदापरमलना और कब्ज करनेवाले मरहम लगाना लाभकारक है और इस कारणसे कि अधिक मजापानेमें यह रोग बढ़ता और छूने से आनन्द की प्राप्ति अधिक होतीहै इसलिये वह स्त्री जिसपर इच्छा न हो और जिसकागर्भ

---

* अजायबउल इन्तखाबमें लिखा है कि जिन लोगों को अधिक मजा होता है यह रोग उन लोगों के होता है और उनकी सन्तान मूर्ख होती है और यह बात वैद्य और विद्वानों के विरुद्ध है जो सगम करने से बचते हैं इस कारण से उनकी सन्तान विद्वान बलवान और स्वस्थ होती है और उनकी सब शक्तियां बलवान होती हैं।

उनमें तर मल आता है और जल्दी चिकित्सा होजाती है और पहला भेद इस के विरुद्ध है जो बहुत कम दूर होता है ।

॥ ग्यारहवां प्रकरण ॥

अंडकोप की सूजन का वर्णन ॥

और यह कई प्रकार की होती है जानना चाहिये कि अंडकोप सफेद मांस से बने हैं उनमें बहुत से मार्ग हैं और आतें रगें, और पट्ठे आनकर इनमें मिलगये हैं और एक झिल्ली ऊपर खिची हुई है और वीर्य उन में इकट्ठा होकर पकता है और क्योंकि अंडकोपों का सार भाग सफेद है इस कारण से उन में वीर्य भी सफेद हो जाता है जैसा कि स्त्री धर्म का रुधिर छाती में दूध बनजाता है और वीर्य के उत्पन्न और मिलने का वर्णन कामशक्ति के अध्याय में वर्णन हो चुका है और जानना चाहिये कि पुरुषों के अंडकोप बड़े २ और गोल बाहर की ओर हैं और स्त्रियों के छोटे २ और भीतर को छिपे हुये हैं (लाभ) जो मार्ग गोलियों में से मोरी की तरह निकल कर आये हैं पहले अंडकोपों से कुछ चौड़े होगये हैं और उनमें कहीं तगी आगई है और कहीं सुकड़ गये हैं और इन मार्गों को अर्बी में वीर्य की नली कहते हैं और यह नली अंडकोप के पास से आकर मसाने की गर्दन की ओर झुककर मूत्रवाही नल में आती है और पेशाब का मार्ग उन के ऊपर है और इस का वर्णन उसके बाब में वर्णन किया जायगा पहला भेद गर्म सूजन के वर्णन में है चाहे उसका कारण रुधिर हो चाहे पित्त या संभोग के स्थान में वीर्य का बंद होजाना हो उसके लक्षण सुर्खी और दर्द और छूटने से गर्म होना है फिर जो रक्तज है तो सूजन बड़ी होगी और बोझ मालूम होगा और जो पित्तज है तो गर्मी और जलन की अधिकता होगी और जानना चाहिये कि यह दो प्रकार पर है एक तो यह कि सूजन केवल अंडकोपों की खालमें होगी औरउसकायह लक्षणहै कि रोगोंमें कमी हो और छूने से मालूम हो दूसरा यहकि अंडकोपों के सारभागमें हो और उसका यह लक्षणहै कि रोगों में अधिकताहो और ज्वर और प्यास अधिक हो क्योंकि यह मनसे मिलीहै (चिकित्सा) बासलीक या साफन की फस्द खोलें जो कोई बुराई न हो तो और नहीं तो पिंडली और पीठपर पछने लगाकर सिंगी लगावे और कपड़ा सिर्के और गुलाब और ईसबगोल के लुआब और हरे धनिये के पानी या मकोय के पानी या शाह पस्द के पानी में भिगोकर अंडकोपों पर रक्खें और जो रटके और

उनमें तर मल आता है और जल्दी चिकित्सा होजाती है और पहला भेद इस के विरुद्ध है जो बहुत कम दूर होता है।

॥ ग्यारहवां प्रकरण ॥

अंडकोष की सूजन का वर्णन॥

और यह कई प्रकार की होती है जान्ना चाहिये कि अंडकोष सफेद मांस से बने हैं उनमें बहुत से मार्ग हैं और आतें रगें, और पट्ठे आनकर इनमें मिलगये हैं और एक झिल्ली ऊपर खिची हुई है और वीर्य उन में इकट्ठा हो कर पकता है और क्योंकि अंडकोषों का सार भाग सफेद है इस कारण से उन में वीर्य भी सफेद हो जाता है जैसा कि स्त्री धर्म का रुधिर छाती में दूध बनजाता है और वीर्य के उत्पन्न और मिलने का वर्णन कामशक्ति के अध्याय में वर्णन हो चुका है और जान्ना चाहिये कि पुरुषों के अंडकोष बड़े २ और गोल बाहर की ओर हैं और स्त्रियों के छोटे २ और भीतर को छिपे हुये हैं (लाभ) जो मार्ग गोलियों में से मोरी की तरह निकल कर आये हैं पहले अंडकोषों से कुछ चौडे होगये हैं और उनमें कहीं तंगी आगई है और कहीं सुकड़ गये हैं और इन मार्गों को अर्बी में वीर्य की नली कहतेहैं और यह नली अंडकोष के पास से आकर मसाने की गर्दन की ओर झुककर मूत्रवाही नल में आती है और पेशाब का मार्ग उन के ऊपर है और इस का वर्णन उसके बाब में वर्णन किया जायगा पहला भेद गर्म सूजन के वर्णन में है चाहे उसका कारण रुधिर हो चाहे पित्त या संभोग के स्थान में वीर्य का बंद होजाना हो उसके लक्षण सुर्खी और दर्द और छूटने से गर्म होना है फिर जो रक्तज है तो सूजन बड़ी होगी और बोझ मालूम होगा और जो पित्तज है तो गर्मी और जलन की अधिकता होगी और जानना चाहिये कि यह दो प्रकार पर है एक तो यह कि सूजन केवल अंडकोषों की खालमें होगी औरउसकायह लक्षणहै कि रोगोंमें कमी हो और छूने से मालूम हो दूसरा यहकि अंडकोषों के सारभागमें हो और उसका यह लक्षणहै कि रोगों में अधिकताहो और ज्वर और प्यास अधिक हो क्योंकि यह मनसे मिलीहै (चिकित्सा) बासलीक या साफन की फस्द खोलें जो कोई बुराई न हो तो और नहीं तो पिंडली और पीठपर पछने लगाकर सिंगी लगावे और कपड़ा सिर्के और गुलाब और ईसबगोल के लुआब और हरे धनिये के पानी या मकोय के पानी या काहू कद्दू के पानी में भिगोकर अंडकोषों पर रक्खें और जो रुटके और

भोजनों से उत्तम है (लाभ) दस्तूरुलइलाज में लिखा है कि जो पलास के फूलों को उबालकर उसके पानी से तरेड़ादें और उसके फोक को कुछ गर्म करके गोलियों पर बांधे तो सब भेदों की सूजन को लाभकारक है (दूसरी औषधि) सोये के पत्ते, कर्म कल्ले के पत्ते, मेथी, अलसी के बीज, बारीक पीसकर शहद के पानीमें मिलाकर लेप करें। तीसरा भेद बावज कबीर सूजन है और उसके यह लक्षण हैं कि अवयव में कठोरता और कुछ कालापन हो और दर्द न हो (चिकित्सा) बादी को वमन में निकालदेन वाली औषधें देवें और मलको पकाने के लिये बादी की पकाने वाली औषधि देवें जैसे बालगू, सौंफ, मुलहटी के सबका जुलाब और शहद गुलकन्द इत्यादि और पिघलाने वाली और नर्म करने वाली औषधें जैसे बाबूना, इकलील, करम कल्ले के पत्ते, गौ की पिंडली का गूदा, ऊंट के कुब्ज का गूदा, बतक और मुर्गे की चर्बी और उश्क, मौआसायला, मयफकनज के साथ मिलाकर लेप करें और इनमें से जो औषधि मिलजावे वही उत्तम है और जब सूजन में नर्मी आजाय तो अफ्तीमून का काथ और अफ्तीमून की गोली इत्यादि से मलको निकालें। चौथा भेद वह सूजन है कि जो दवा के कारण से गोलियों की खाल में उत्पन्न हो उसका यह लक्षण है कि वह अवयव फूलजाय और उसमें सुर्खी, बोझ, जलन और कठोरता न हो और इस कारण से कि उसको हलका होना अवश्य है सब भेदों से अलग होता है (चिकित्सा) बाजरा, भुसी और गर्म नमक से सेकें और कमूनीदें और जो इस विधि से दूर न हो तो वमन करें और जो कुछ कफज सूजन में वर्णन कियागयाहै उस पर ध्यान दें (विचार द्रष्टव्य) गर्म सूजन जो गोलियों में उत्पन्न होती है कभी उनका मल खामी की राह से छाती की ओर उतर आताहै और कभी गोली की खाल को खाकर गिरा देता है और दोनों गोलियां नंगी रहजाती है और दूसरी खाल पहली से अधिक कठोर उत्पन्न होती है ॥

बारहवां प्रकरण अंडकोषों के बढ़जाने के वर्णन में।

जानना चाहिये कि गोली कभी बिना सूजन के बढ़जाती है और यह बढ़ना ऐसा है जैसा छाती का बढ़ना (चिकित्सा) जो वस्तु कि ग्रहण शक्ति को निर्बल करडाले उसका लेप करें जैसे सौकरान की जड़, मसूर का पोस्त इकाकिया, हयुलनील, धनिये के पानी में मिलाकर लेप करें और जो सिके भ मेनी और सिर्का उसमें बढ़ावें तो उत्तम है सीसा घिसा हुआ और पत्ती का

भोजनों से उत्तम है (लाभ) दस्तूरुलइलाज में लिखा है कि जो पलास के फूलों को उबालकर उसके पानी से तरेड़ादें और उसके फोक को कुछ गर्म करके गोलियों पर बांधे तो सब भेदों की सूजन को लाभकारक है (दूसरी औषधि) सोये के पत्ते, कर्म कल्ले के पत्ते, मेथी, अलसी के बीज, बारीक पीसकर शहद के पानीमें मिलाकर लेप करें। तीसरा भेद वातज कठोर सूजन है और उसके यह लक्षण हैं कि अवयव में कठोरता और कुछ कालापन हो और दर्द न हो (चिकित्सा) वादी को वमन में निकालदेने वाली औषधें देवें और मलको पकाने के लिये वादी की पकाने वाली औषधि देवें जैसे बालगू, सौंफ, मुलहटी के सवका जुलाब और शहद गुलकन्द इत्यादि और पिघलाने वाली और नर्म करने वाली औषधें जैसे बाबूना, इकलील, करम कल्ले के पत्ते, गौ की पिंडली का गूदा, ऊंट के कुब्ब का गूदा, बतक और मुर्गे की चर्बी और अवक, मांआसायला, मयफकनज के साथ मिलाकर लेप करें और इनमें से जो औषधि मिलजावे वही उत्तम है और जब सूजन में नर्मी आजाय तो अफ्तीमून का काथ और अफ्तीमून की गोली इत्यादि से मलको निकालें। चौथा भेद वह सूजन है कि जो हवा के कारण से गोलियों की खाल में उत्पन्न हो उसका यह लक्षण है कि वह अवयव फूलजाय और उसमें सुर्खी, बोझ, जलन और कठोरता न हो और इस कारण से कि उसको हलका होना अवश्य है सब भेदों से अलग होता है (चिकित्सा) बाजरा, भुसी और गर्म नमक से सेकें और कमूनीदें और जो इस विधि से दूर न हो तो वमन करें और जो कुछ कफज सूजन में वर्णन कियागयाहै उस पर ध्यान दें (विशेष द्रष्टव्य) गर्म सूजन जो गोलियों में उत्पन्न होती है कभी उनका मल खामी की राह से छाती की ओर उतर आताहै और कभी गोली की खाल को खाकर गिरा देता है और दोनों गोलियां नंगी रहजाती हैं और दूसरी खाल पहली से अधिक कठोर उत्पन्न होती है॥

बारहवां प्रकरण अंडकोषों के बढ़जाने के वर्णन में।

जानना चाहिये कि गोली कभी बिना सूजन के बढ़जाती है और यह बढ़ना ऐसा है जैसा छाती का बढ़ना (चिकित्सा) जो वस्तु कि ग्रहण शक्ति को निर्बल करडाले उसका लेप करें जैसे सौकरान की जड़, मसूर का पोस्त हकाका, हुज़ुरुनीम, धनिये के पानी में मिलाकर लेप करें और जो गिले अर्मेनी और सिर्का उसमें बढ़ावें तो उत्तम है सीसा घिसा हुआ और पत्ती का।

और दालचीनी मिलाकर खिलावे और भोजन के लिये चने का पानी देवै तीसरा भेद यह है कि हवासे उत्पन्न हो उसका यह लक्षण है कि दर्द जगहर फिरै और विना बोझ के खिचावट हो (चिकित्सा) बाबूना पोदीना इकलील लेप करें और चमेली के तेल और तिलली के तेल में थोड़ा जुन्दबेदस्तर मिलाकर मलै और चौथा भेद यह है कि कष्ट या चोट से उत्पन्न हो (चिकित्सा) फस्द खोलें वनफशा, नीलोफर, कद्दू और खतमीके पत्ते मकोय इत्यादि जो वस्तु ठंडी और पकानेवाली और नर्म हों और कब्ज करनेवाली न हों लेप करें पां चवां भेद यह है कि सूजन के कारण से उत्पन्न हो और हम वर्णन करचुके हैं सूजन के वर्णन में देखलो ॥

पन्द्रहवां प्रकरण

गोलियों के ऊपर चढजाने और छोटी होजानें का वर्णन

इनका ऊचा होना और चढ़जाना इस प्रकार पर है कि गोली अपनी थैली से पेडू की ओर चढ़जाय और बहुत ऊंची चढ़कर मिराक (पर्दे का नाम है) की ओर आजाय और बाहरसे बिलकुल छिप जावे इस दशा में पेशाव के निकलते समय अधिक दर्द होता है और थोड़ा २ करके निकलता और चलन फिरने में भी कष्ट होताहै और जितनी ऊचे चढ़जाने में कमी होगी उसी के अनुसार रोग में कमी होगी और इस रोग का कारण यह है कि गो- लियों में ठंढ अधिक होकर निर्बलता आजाती है और कभी गर्म रोग के अ- न्त में उत्पन्न होता है और वैद्योंने कहा है कि यह मौतका चिन्ह है और इसका इलाज नहीं होता और गोली का छोटा होना यह है कि गोली आपही इकट्ठी और छोटी होजावे विना इस बात के कि ठंढ से ऊपर की ओर चढ़े और यह ठंढ के कारण से उत्पन्न होताहै (चिकित्सा) सदा स्नान करता रहै जिस से नर्मी आजावे और गर्मी पहुंचे और बाबूना अलसी के बीज, इकलील तथा सुसी के क्वाथ में रोगी को बैठावे और गर्म औषधें जो रुधिर को ग्रहण करती हैं जैसे फरफयून का तेल, पिस्ता, हींग, मरजनोश, मेथी, इकलील बाबूना शहद के पानी में मिलाकर लेप करें जिससे गोली इधर खिंच आवे जैसे फरफयून का तेल, तेल का पिस्ता, हींग, मरजनोश, मेथी, इकलील, बाबूना शहद के पानी में मिलाकर लेप करें जिससे अण्डकोष इधर खिंच आवे और न्हाने के पीछे एक बड़ी सिंगी उस जगह पर रखकर धीरे से खींचे तो भी अण्डकोष खिंच आता है और कामशक्ति बढ़ाने वाली औषध में देना लाभ

और दालचीनी मिलाकर खिलावे और भोजन के लिये चने का पानी देवै तीसरा भेद यह है कि हवासे उत्पन्न हो उसका यह लक्षण है कि दर्द जगहर फिरै और विना बोझ के खिचावट हो (चिकित्सा) बाबूना पोदीना इकलील लेप करें और चमेली के तेल और तितली के तेल में थोड़ा जुन्दबेदस्तर मिलाकर मलै और चौथा भेद यह है कि कष्ट या चोट से उत्पन्न हो (चिकित्सा) फस्द खोलें बनफशा, नीलोफर, कद्दू और खत्मीके पत्ते मकोय इत्यादि जो वस्तु ठंढी और पकानेवाली और नर्म हों और कब्ज करनेवाली न हों लेप करें पांचवां भेद यह है कि सूजन के कारण से उत्पन्न हो और हम वर्णन करचुके हैं सूजन के वर्णन में देखलो ॥

पन्द्रहवां प्रकरण

गोलियों के ऊपर चढजाने और छोटी होजानें का वर्णन

इनका ऊंचा होना और चढ़जाना इस प्रकार पर है कि गोली अपनी थैली से पेड़ू की ओर चढ़जाय और बहुत ऊंची चढ़कर मिराक (पर्दे का नाम है) की ओर आजाय और बाहरसे बिलकुल छिप जावें इस दशा में पेशाब के निकलते समय अधिक दर्द होता है और थोड़ा २ करके निकलता और चलन फिरने में भी कष्ट होताहै और जितनी ऊंचे चढ़जाने में कमी होगी उसी के अनुसार रोग में कमी होगी और इस रोग का कारण यह है कि गोलियों में ठंढ अधिक होकर निर्बलता आजाती है और कभी गर्म रोग के अन्त में उत्पन्न होता है और वैद्योंने कहा है कि यह मौतका चिन्ह है और इसका इलाज नहीं होता और गोली का छोटा होना यह है कि गोली आपही इकट्ठी और छोटी होजावे विना इस बात के कि ठंढ से ऊपर की ओर चढ़े और यह ठंढ के कारण से उत्पन्न होताहै (चिकित्सा) सदा स्नान करता रहै जिस से नर्मी आजावे और गर्मी पहुंचे और बाबूना अलसी के बीज, इकलील तथा भुसी के क्वाथ में रोगी को बैठावे और गर्म औषधें जो रुधिर को प्रवेश करती हैं जैसे फरफयून कातेल, पित्ता, हींग, मरजनोश, मेथी, इकलील बाबूना शहत के पानी में मिलाकर लेप करें जिससे गोली इधर खिंच आवे जैसे फरफयून का तैल, बैल का पित्ता, हींग, मरजनोश, मेथी, इकलील, बाबूना शहत के पानी में मिलाकर लेप करें जिससे अण्डकोष इधर खिंच आवे और नहाने के पीछे एक बड़ी सिंगी उस जगह पर रखकर धीरे से खींचै तो भी अण्डकोष खिंच आता है और कामशक्ति बढ़ाने वाली औषध में देना लाभ

सनोबर की छाल, जलीहुई मुर्दे इत्यादि जो वस्तु कि सुखाने के लायक हों काममें लावें और यह मरहम लाभकारक है कुन्दर, दम्मुलअखवैन, मुर्दे प्रत्येक २ मिस्काल, एलुवा, मुर्दासन, अजरूथ प्रत्येक २ दिरम, गुलरोगन में मिलाकर मरहम बनावे और जो घाव बिगड़ गया हो तो फल्दफयून इत्यादि जो वस्तु कि दूषित मांस को दूर करसके और घाव को अच्छा और सुखादे काम में लावें जैसे आदमी के बालों की राख, एलुवा, कुन्दर, दम्मुलअखवैन, अजरूथ बारीक पीसकर बुरकें और अच्छा होने के पीछे मांस जमाने वाले मरहमों से घाव को भरें (लाभ) जो घाव मूत्रस्थान के भीतर होताहै उसका यह लक्षण है कि पेशाव जलकर कठिनता से निकलता है और रुधिर और बालके टुकड़े उसमें प्रगट होते हैं (चिकित्सा) जो कुछ ताजा घाव में वर्णन कियागया है काम में लावें और जो अधिक नर्म हो काम में लावें क्योंकि अधिक दर्द न हो और बाकी वही विधि है जो हम मसानेके घाव में वर्णन कर चुके हैं और जानलेना चाहिये कि मूत्रका नल पट्ठोंसे रगोंसे और नसों से मिला हुआ है और उसके कोनेमें मांस भराहुआ है और उसमें एक पट्ठा जो पेड़की हड्डी से निकला है और उसमें बहुतसे कोने हैं और उसमें तीन मार्ग हैं एक तो पेशाव का मार्ग दूसरा वीर्य का तीसरा वादी का और यह तीनों मार्ग उसकी जड़ में अलग२ हैं और उसके पीछे वही एक मार्ग है जो सिरे तक आयाहै और चैतन्यता का यह कारण है कि पट्ठेके भीतर और रगोंके भीतर हवा और रूह और रुधिर भर जावे और उसके उठने की शक्ति हृदय से आती है और उसकी गति भेजे के पट्ठे से है भोजन कलेजे से आता है और काम शक्ति की इच्छा का प्रगट होना कलेजे और गुर्दे के मेल से होता है और हृदय सबकी जड़ है और मूत्रस्थान के सिरे में गति अधिक है जिससे आदमीको आनन्द की प्राप्ति होतीहै और बिना इस अवयवके औलाद नहीं होसक्तीहै (लाभ) इस मेढ़के घाव में जब कि घाव पीब इत्यादि से साफ होजावे उसमें बासलीकूनका मरहम जिस को शाहा मरहम भी कहते हैं काम में लावें यह पुरान घावके भरने में अधिक लाभकारक है (उसकी विधि) मुर्दासंग १ रतल महीन पीसकर २ रतल पुराने जैतून के तेलमें और सिर्के में जोकि ३ रतल हो मिलाकर लोहे के बरतन में रखकर नर्म आगपर पकावें और नीमकी लकड़ी से हिलाते रहें जिससे मरहम सा होजाय और एक विधि में मुर्दासन जैतून के तेलकी मात्रा और सिर्का बराबर लिखा हुआ है और जो चाहें कि उसमें अधिक

सनोबर की छाल, जलीहुई मुर्र इत्यादि जो वस्तु कि सुखाने के लायक हों काममें लावें और यह मरहम लाभकारक है कुन्दर,दम्मुलअखवैन,मुर्र मत्येक २ मिस्काल, एलुवा, मुर्दासन, अजरूथ मत्येक २ दिरम, गुल्रोगन में मिलाकर मरहम बनावे और जो घाव बिगड़ गया हो तो फल्दफयून इत्यादि जो वस्तु कि दूषित मांस को दूर करसके और घाव को अच्छा और सुखादे काम में लावें जैसे आदमी के बालों की राख, एलुवा,कुन्दर, दम्मुलअखवैन, अजरूथ बारीक पीसकर बुरकदें और अच्छा होने के पीछे मांस जमाने वाले मरहमों से घाव को भरें (लाभ) जो घाव मूत्रस्थान के भीतर होताहै उसका यह लक्षण है कि पेशाब जलकर कठिनता से निकलता है और रुधिर और बालके टुकड़े उसमें मगट होते हैं (चिकित्सा) जो कुछ ताजा घाव में वर्णन कियागया है काम में लावें और जो अधिक नर्म हो काम में लावें क्योंकि अधिक दर्द न हो और बाकी वही विधि है जो हम मसानेके घाव में वर्णन कर चुके हैं और जानलेना चाहिये कि मूत्रका नल पट्ठोंसे रगोंसे और नसों से मिला हुआ है और उसके कोनेमें मांस भराहुआ है और उसमें एक पट्ठा जो पेड़ूकी हड्डी से निकला है और उसमें बहुतसे कोने हैं और उसमें तीन मार्ग हैं एक तो पेशाब का मार्ग दूसरा वीर्य का तीसरा बादी का और यह तीनों मार्ग उसकी जड़ में अलग२ हैं और उसके पीछे वही एक मार्ग है जो सिरे तक आयाहै और चैतन्यता का यह कारण है कि पट्ठेके भीतर और रगोंके भीतर हवा और रूह और रुधिर भर जावे और उसके उठने की शक्ति हृदय से आती है और उसकी गति भेजे के पट्ठे से है भोजन कलेजे मे आता है और काम शक्ति की इच्छा का मगट होना कलेजे और गुर्दे के मेल से होता है और हृदय सबकी जड़ है और मूत्रस्थान के सिरे में गति अधिक है जिससे आदमीको आनन्द की माप्ति होतीहै और बिना इस अवयवके आल्हाद नहीं होसक्तीहै (लाभ) इस भेदके घाव में जब कि पार पीव इत्यादि से साफ होजावे उसमें पात्नीनूसका मरहम जिस को स्याह मरहम भी कहते हैं काम में लावें यह पुराने घावके भरने में अधिक लाभकारक है (उसकी विधि) मुर्दासंग १ रतल महीन पीसकर २ रतल पुराने जैतून के तेलमें और सिर्के में जोकि ३ रतल हो मिलाकर लोहे के बरतन में रखकर नर्म आगपर पकावें और नीमकी लकड़ी से हिलाता रहे जिसमें मरहम सा होजावे और एक विधि में मुर्दासन जैतून के तेलकी चौथाई और सिर्का बराबर लिखा हुआ है और जो चाहे कि उसमें अधिक

महदी, कतीरा, मौम, गुलरोगन, और अंडेकी जर्दी से बनाया गया है काम में लावें तो अधिक लाभकारकहै और जो अंडेकी जर्दी गुलरोगन में मिलावें और मुर्दासन कूट छानकर उसमें मिलाकर लेपकरें तो अधिक लाभकारक है।

बाईसवा प्रकरण मूत्रस्थानपर मस्सोंके निकल आनेका वर्णन

जो औषधें मस्सों के प्रकरण में वर्णन की जावेंगी काममें लावें और यह लेप लाभकारक है सुहागा जलाहुआ, अगूर की लकडी की राख और उनके अनुसार जो वस्तु कि दूर करने वाली और गाढी रतूवत को साफ करने वाली हों काम में लावें और जो काला दाना और सिर्का, मुर्गे की चर्बी में मिलाकर लेपकरें तो छील डालता है और जो इन विधियों से दूर न होतो काट डालें और खून बद करने के लिये जगार और फिटकिरी महीन पीसकर बुरक देवें।

तेईसवां प्रकरण

मूत्रेन्द्रिय की गाठका वर्णन

यह तीन भेद से होता है पहला भेद यह है कि मूत्र की नली में फुंसी उत्पन्न हों और उसका लक्षण यहहै कि कठिनता से पेशाब जलनके साथ निकलताहै (चिकित्सा) बासलीक की फस्द खोलें और शर्बत बनफसा, ईसबगोल का लुआब, खुर्फे का सीरा और ककड़ी खीरा के शीरे में मिलाकर पिवावें और खरबूजे के बीज का शीरा, शर्बत खशखाश के साथ देना लाभ दायक है और ईसबगोल और बनफशा का तेल और बादाम का तेल मूत्रेन्द्रिय पर लगावें और जब फुन्सिया फूट जांय तो सियाफ अबियज लड़की वाली स्त्रियों के दूध में और गुल रोगन, में घोलकर मूत्रेन्द्रिय के छेद में टपकावे और दर्द का ठहराना उचित हो तो अफीम भी सन्याई में डाल दें और यह घाव शीघ्रता से भरता है क्योंकि पेशाब के आने से साफ रहता है और सुखा देता है। दूसरा भेद यहहै कि चेपदार गाढ़ा दोष मूत्रेन्द्रिय के छेदमें चिपट जाय उस का यह चिन्ह है कि मूत्र कठिनता से आवे और गाढ़ा दोष मूत्रमें प्रगट हो (इलाज) रूमी सौंफ, गाजर के बीज, अजमोद के बीज, खरबूजा के बीज, हाशुन नाकरून (एकप्रकार) सौंफ आदि जो कुछ मूत्र के लाने वाली हों पिवावें और मवाद को नर्म करने और फैलाने के लिये चना सोया और जीरेका पानी जैतून का तेल और कद्दू का शीरा मिलाकर पिलावें और बाबूना अकलीलुल मलिक,

महदी, कतीरा, मौम, गुलरोगन, और अंडेकी जर्दी से बनाया गया है काम में लावें तो अधिक लाभकारकहै और जो अंडेकी जर्दी गुलरोगन में मिलावें और मुर्दासन कूट छानकर उसमें मिलाकर लेपकरें तो अधिक लाभकारक है।

बाईसवा प्रकरण मूत्रस्थानपर मस्सोंके निकल आनेका वर्णन

जो औषधें मस्सों के प्रकरण में वर्णन की जावेंगी काममें लावें और यह लेप लाभकारक है सुहागा जलाहुआ, अगूर की लकडी की राख और उनके अनुसार जो वस्तु कि दूर करने वाली और गाढी रतूबत को साफ करने वाली हों काम में लावें और जो काल दाना और सिर्का, मुर्ग की चर्बी में मिलाकर लेपकरें तो छील डालता है और जो इन विधियों से दूर न होतो काट डालें और खून बंद करने के लिये जगार और फिटकिरी महीन पीसकर बुरक देवें।

तेईसवां प्रकरण

मूत्रेन्द्रिय की गाठका वर्णन

यह तीन भेद से होता है पहला भेद यह है कि मूत्र की नली में फुसी उत्पन्न हों और उसका लक्षण यहहै कि कठिनता से पेशाब जलनके साथ निकलताहै (चिकित्सा) बासलीक की फस्द खोलें और शर्बत बनफसा, ईसबगोल का लुआब, खुर्फे का सीरा और ककड़ी खीरा के शीरे में मिलाकर पिलावें और खरबूजे के बीज का शीरा, शर्बत खशखाश के साथ देना लाभदायक है औरें ईसबगोल और बनफशा का तेल और बादाम का तेल मूत्रेन्द्रिय पर लगावें और जब फुन्सिया फूट जांय तो सियाफ अबियज लड़की वाली स्त्रियों के दूध में और गुल रोगन, में घोलकर मूत्रेन्द्रिय के छेद में टपकावें और दर्द का ठहराना उचित हो तो अफीम भी सफाई में डाल दें और यह घाव शीघ्रता से भरता है क्योंकि पेशाब के आने से साफ रहता है और सुखा देता है। दूसरा भेद यहहै कि चेपदार गाढा दोष मूत्रेन्द्रिय के छदमें चिपट जाय उस का यह चिन्ह है कि मूत्र कठिनता से आवे और गाढा दोष मूत्रमें प्रगट हो (इलाज) रूमी सौंफ, गाजर के बीज, अजमोद के बीज, खरबूजा के बीज, हालून नानखुन (एकयाम) सौंफ आदि जो कुछ मूत्र के लाने वाली हों पिलावें और मवाद को नर्म करने और फैलाने के लिये चना खोया और जीरेका पानी जैतून का तेल और कद्दू का शीरा मिलाकर पिलावें और बाबूना अकलीलुल मलिक,

मिसाय ख़ुवारजी और सिराक़ कहते हैं और अमाले (मछलियां) और दो झिल्ली और इन दोनों झिल्लियों में से एक तो भीतर वाली झिल्ली है जो आमाशय की ओर आंतों से लगी हुई है इस झिल्ली को सर्ब कहते हैं और यूनानी में इबीलस बोलते हैं और दूसरी झिल्ली पेटके ऊपरहै इसको सफ़ाक और यूनानी में बारीतारून कहते हैं क्योंकि वह पोले अंग पर लिपटी हुई है और यह झिल्ली कूख और चड्ढों तक गई है और इन जगह दो छेद बन कर प्रत्येक तरफ़ से एक २ अंड के पास तक उतरकर आया है और इस जगह चौड़ा होकर एक दूसरेसे मिल गयाहै और इन अंडकोषों के ओर पास एक थैली सी होगई है यह पेट के पर्दों की दशा है अब अंडकोषोंके बढ़जाने और आंतों के उतर आने की दशा सुनिये यह यह है कि जब कोई मनुष्य कूदता और खींचता और विशेष बोझ उठाता है उससे झिल्लीको कष्ट पहुंचता है जैसे भरे हुए पेट पर संभोग करने और वमन की कठोरता से और मल के रुकने से खींचने वाली बादी आदि प्रगट हों और निर्बलताके कारण पेट के ऊपर के पर्दे को कष्ट पहुंचे और यह दो दशा से रहित नहीं एक तो यह है कि पेट के ऊपर की झिल्ली टूंडी की जगह से या ऊपर या इससे नीचे फट जाय और पेट की खाल आरोग्य रहे और पेट के भीतर झिल्ली जो आमाशय और आंतों से लगी हुई है और वह आंत जो उसके नीचे है फटजाय आर अपनी जगह छोड़ दे और इस जगह पेट की खालको अपनी चौड़ाई के अनुसार ऊंचा करदे उसको फ़त्क़ मराक़ुल बत्न कहते हैं और फ़त्क़ का अर्थ फटजाना और मराक पेट की खाल को कहते हैं। दूसरा यह है कि वह दो मार्ग जो पेट के ऊपर की झिल्ली में अंग में उत्पन्न हुए हैं इनमें से एक या दोनों किसी कारण से खुलजांय मुख्य कर जहां कहीं कि ढीली रतूबत सहायता करें यही कारण है कि यह भेद बहुधा लड़कों को उत्पन्न होता है क्योंकि इनकी प्रकृति में विशेष तरी है और इनके अंग और झिल्लियां निर्बल हैं और उनको कड़ी गतों का काम पड़ता है अथवा पेट के ऊपर की झिल्ली इस जगह से फट जाय। यहां दो मार्ग वर्णन किये गये हैं अभिप्राय यह है कि चाहे मार्ग खुलजाय चाहे इस जगह से फटजाय परन्तु कोई चीज ऊपर से अंडकोषों में उतर आवे उसको इस रफ़ फ़ीन्न (भदरट) कहते हैं और यह मात पुरुषों ही में हुआ करती है फिर जो पेट के भीतर की झिल्ली उतर आई हो तो उसको अर्बी में फ़ीतुल

गिशाय ख़ारजी और मिराक़ कहते हैं और अगले (मछलियां) और दो झिल्ली और इन दोनों झिल्लियों में से एक तो भीतर वाली झिल्ली है जो आमाशय की ओर आंतों से लगी हुई है इस झिल्ली को सर्व कहते हैं और यूनानी में इबीलस बोलते हैं और दूसरी झिल्ली पेटके ऊपरहै इसको सफ़ाक़ और यूनानी में बारीताऊन कहते हैं क्योंकि वह पोले अंग पर लिपटी हुई है और यह झिल्ली कूल्ह और चड्ढों तक गई है और इस जगह दो छेद बन कर प्रत्येक तरफ से एक २ अंड के पास तक उतरकर आया है और इस जगह चौड़ा होकर एक दूसरेसे मिल गयाहै और इन अंडकोषों के ओर पास एक थैली सी होगई है यह पेट के पर्दों की दशा है अब अंडकोषोंके बढ़जाने और आंतों के उतर आने की दशा सुनिये वह यह है कि जब कोई मनुष्य कूदना और खांचता और विशेष बोझ उठाता है उससे झिल्लीको कष्ट पहुंचता है जैसे भरे हुए पेट पर सभोग करने और वमन की कठोरता से और मल के रुकने से खींचने वाली वादी आदि प्रगट हों और निर्बलताके कारण पेट के ऊपर के पर्दे को कष्ट पहुंचे और यह दो दशा से रहित नहीं एक तो यह है कि पेट के ऊपर की झिल्ली टूंडी की जगह से या ऊपर या इससे नीचे फट जाय और पेट की खाल आरोग्य रहे और पेट के भीतर झिल्ली जो आमाशय और आंतों से लगी हुई है और वह आंत जो उसके नीचे है फटजाय, या अपनी जगह छोड़ दे और इस जगह पेट की खालको अपनी चौड़ाई के अनुसार ऊंचा करदे उसको फ़त्क़ मराक़ुल बत्न कहते हैं और फ़त्क़ का अर्थ फटजाना और मराक़ पेट की खाल को कहते हैं। दूसरा यह है कि वह दो मार्ग जो पेट के ऊपर की झिल्ली में अगले में उत्पन्न हुए हैं इनमें से एक या दोनों किसी कारण से खुलजांय मुख्य कर जहां पाई कि ढीली रतूबत सहायता करें यही कारण है कि यह भेद बहुधा लड़कों को उत्पन्न होता है क्योंकि इनकी प्रकृति में विशेष तरी है और इनके अंग और झिल्लियां निर्बल हैं और उनको कड़ी गतों का काम पड़ता है अथवा पेट के ऊपर की झिल्ली इस जगह से फट जाय। यहां दो मार्ग वर्णन किये गये हैं अभिप्राय यह है कि चाहे मार्ग खुलजाय चाहे इस जगह से फटजाय परन्तु कोई चीज ऊपर से अंडकोषों में उतर आवे उसको हम रफ़ फ़ील (अदरह) कहते हैं और यह बात पुरुषों ही में हुआ करती है फिर जो पेट के भीतर की झिल्ली उतर आई हो तो उसको अर्बी में फ़ीतुल

गिशाय खारजी और मिराक कहते हैं और अजाले (मछालियां) और दो झिल्ली और इन दोनों झिल्लियों में से एक तो भीतर वाली झिल्ली है जो आमाशय की ओर आंतों से लगी हुई है इस झिल्ली को सर्व कहते हैं और यूनानी में इबीलस बोलते हैं और दूसरी झिल्ली पेटके ऊपरहै इसको सफाक और यूनानी में बारीतासून कहते हैं क्योंकि वह पोले अंग पर लिपटी हुई है और यह झिल्ली कूच और चट्टों तक गई है और इस जगह दो छेद बन कर प्रत्येक तरफ से एक २ अंड के पास तक उतरकर आया है और इस जगह चौड़ा होकर एक दूसरेसे मिल गयाहै और इन अंडकोषों के आरपास एक थैली सी होगई है यह पेट के पर्दों की दशा है अब अंडकोषोंके बढ़जाने और आंतों के उतर आने की दशा सुनिये वह यह है कि जब कोई मनुष्य कूदता और खींचता और विशेष बोझ उठाता है उससे झिल्लीको कष्ट पहुचता है जैसे भरे हुए पेट पर संभोग करने और वमन की कठोरता से और मल के रुकने से खींचने वाली वादी आदि प्रगट हों और निर्बलताके कारण पेट के ऊपर के पर्दे को कष्ट पहुचे और यह दो दशा से रहित नहीं एक तो यह है कि पेट के ऊपर की झिल्ली इसी की जगह से या ऊपर या उससे नीचे फट जाय और पेट की खाल आरोग्य रहे और पेट के भीतर झिल्ली जो आमाशय और आंतों से लगी हुई है और यह आंत जो उसके नीचे है फटजाय और अपनी जगह छोड़ दे और इस जगह पेट की खालको अपनी चौड़ाई से अनुसार ऊंचा करदे उसको फतक मराकुल बतन कहते हैं और फतक का अर्थ फटजाना और मराक पेट की खाल को कहते हैं। दूसरा यह है कि वह दो मार्ग जो पेट के ऊपर की झिल्ली के अन्त में उत्पन्न हुए हैं इनमें से एक या दोनों किसी कारण से खुलजांय खुलप कर नहीं पादीं कि ढीली रतूबत सहायता करें यही कारण है कि यह भेद बहुधा लड़कों को उत्पन्न होता है क्योंकि इनकी प्रकृति में विशेष तरी है और इनके अंग और झिल्लियां निर्बल हैं और उनको कड़ी गतों का काम पड़ता है अथवा पेट के ऊपर की झिल्ली इस जगह से फट जाय। यहां दो मार्ग वर्णन किये गये हैं अभिप्राय यह है कि चाहे मार्ग खुलजाय चाहे इस जगह से फटजाय परन्तु कोई चीज ऊपर से अंडकोषों में उतर आवे उसको फत्क फील (अदरद) कहते हैं और यह बात पुरुषों ही में हुआ करती है फिर जो पेट के भीतर की झिल्ली उतर आई हो तो उसका अर्थ में थोउर

गिशाय खारजी और मिराक कहते हैं और अजाले (मछलियां) और दो झिल्ली और इन दोनों झिल्लियों में से एक तो भीतर वाली झिल्ली है जो आमाशय की ओर आंतों से लगी हुई है इस झिल्ली को सर्ब कहते हैं और यूनानी में इबीलस बोलते हैं और दूसरी झिल्ली पेटके ऊपरहै इसको सफाक और यूनानी में बारीताफून कहते हैं क्योंकि वह पोले अंग पर लिपटी हुई है और यह झिल्ली कूल्ह और चड्डों तक गई है और इस जगह दो छेद बन कर प्रत्येक तरफ से एक २ अंड के पास तक उतरकर आया है और इस जगह चौड़ा होकर एक दूसरेसे मिल गयाहै और इन अंडकोषों के और पास एक थैली सी होगई है यह पेट के पर्दों की दशा है अब अंडकोषोंके बढ़जाने और आंतों के उतर आने की दशा सुनिये वह यह है कि जब कोई मनुष्य कूदता और खींचता और विशेष बोझ उठाता है उससे झिल्लीको कष्ट पहुंचता है जैसे भरे हुए पेट पर संभोग करने और वमन की कठोरता से और मल के रुकने से खींचने वाली बाटी आदि मसल हों और निर्बलताके कारण पेट के ऊपर के पर्दे को कष्ट पहुचे और यह दो दशा से रहित नहीं एक तो यह है कि पेट के ऊपर की झिल्ली टूटी की जगह से या ऊपर या समस्त नीचे फट जाय और पेट की खाल आरोग्य रहे और पेट के भीतर झिल्ली जो आमाशय और आंतों से लगी हुई है और वह आंत जो उसके नीचे है फटजाय और अपनी जगह छोड़ दे और इस जगह पेट की खालको अपनी चौड़ाई से अनुसार ऊंचा करदे उसको फतक मराकुल बतन कहते हैं और फतक का अर्थ फटजाना और मराक पेट की खाल को कहते हैं। दूसरा यह है कि वह दो मार्ग जो पेट के ऊपर की झिल्ली के अन्त में उत्पन्न हुए हैं इनमें से एक या दोनों किसी कारण से खुलजाय सुकड़ कर नहीं रहैं कि ढीली रतूबत सहायता करै यही कारण है कि यह भेद बहुधा लड़कों को उत्पन्न होता है क्योंकि इनकी प्रकृति में विशेष तरी है और इनके अंग और झिल्लियां निर्बल हैं और उनको बड़ी गतों का काम पड़ता है अथवा पेट के ऊपर की झिल्ली इस जगह से फट जाय। यहां दो मार्ग वर्णन किये गये हैं अभिप्राय यह है कि चाहे मार्ग खुलजाय चाहे इस जगह से फटजाय परन्तु कोई चीज ऊपर से अंडकोषों में उतर आवे उसको फत लुल फील (अदरह) कहते हैं और यह बात पुरुषों ही में हुआ करती है फिर जो पेट के भीतर की झिल्ली उतर आई हो तो उसका अर्थ में सौउर

पलट जाय तो विशेष कठिनता और परिश्रम से पलटै और कदाचित् आंतों के उतर आने में कारण के बलवान होने से एक कूलंजकासा दर्द उत्पन्न हो जैसा दम कूलंज में कहआये हैं और यह बहुधा मार डालता है क्योंकि कूलंज नहीं खुलता है (लाभ) यह आंत जो अण्डकोषों में उतर आई है और पेटके भीतरकी झिल्ली जो उसके ऊपर है वह भी इसके साथ उतर आतीहै परन्तु जब कि पेट के भीतर की झिल्ली फट जाय तो उस समय केवल आंतही उतर आती है क्योंकि सर्व (भीतर की झिल्ली) अड़ी हुई नहीं होती (इलाज) धीरज और नर्मी से उसको उसकी जगह पर लावें और जल्दी और तेजी नकरें क्योंकि दर्द विशेष और छेद चौड़ा होता है और जो इस उपाय से अपनी जगह पर न जमे तो गर्म पानी का उस पर तरेडादें और गर्म पानी में बैठावें और बाबूना का तैल गर्म करके मलें और जब अपनी जगह पर आजाय तो यह लेप लगावें जिससे फिर न लौटआवे मस्तगी, अजरूत (एक गोंद) कुन्दरू गोंद, सर्व का फल सर्वके पत्ता, अकाकिया (एक गोंद) अनार के फूल दम्बुल अखवैन (हीरा दुखी गोंद) मूल, फिटकरी देवदारु रसोंत प्रत्येक बराबरले और कूट छानकर रेशम माही लेकर मकोय के पानी में घोलकर इसमें मिलावें और एक कपड़े पर लगाकर इस जगह पर रखकर पाटियों से कड़ा बांध दें और तीनदिन तक न खोलें और चाहिये कि रोगी चित्तलेटा रहै और भोजन के लिये मुलायम चीजों पर सन्तोष करें और जब चीरा बन्द होजाय अर्थात् तीन दिन बीतजांयतो आज्ञादें कि धीरेसे उठें और धीरेचलें लेकिन वादीके उत्पन्न करने वाले भोजनोंसे और वादी के मेवाओं से जैसे बाकला लोबिया, मटर अमरूद, सेव, ककड़ी, खीरा, आदि त्याग दवे और ऐसाही सभोग, कूदना, चीखना, और पेटभरे पर चलना, दौड़ना और तेज घोड़े पर चढ़ना और कष्ट कारक तथा खांसी की वस्तुओं से बचे और सर्वदा जवारिशें खाता और माजून इत्रीफल खाया करे और सर्वदा उस छेदको रेशमी कपड़े और पट्टी से जो इसकाममें मुख्य है बचावे वे शुष्यकर चलने फिरने और सभोग के समय और कभी हर तरह और कड़ी गतियोंका उतारना नकरे क्योंकि यह अधिक हानिकारक है । दूसरा लेप जो प्रथम के समान है छरीला, कुन्दरू गोंद, कपास, फूल प्रत्येक ३॥ माशे, मेवर कूटकर और एक रात दिन सिर्के में भिगोदे फिर सरल में रगड़के और घोलाता देवदारु प्रत्येक कूटके इसमें

पलट जाय तो विशेष कठिनता और परिश्रम से पलटे और कदाचित् आँतों के उतर आने में कारण के बलवान होने से एक कूलंजकासा दर्द उत्पन्न हो जैसा हम कूलंज में कहआये हैं और यह बहुधा मार डालता है क्योंकि कूलंज नहीं खुलता है (लाभ) यह आंत जो अंडकोषों में उतर आई है और पेटके भीतरकी झिल्ली जो उसके ऊपर है वह भी इसके साथ उतर आतीहै परन्तु जब कि पेट के भीतर की झिल्ली फट जाय तो उस समय केवल आंतही उतर आती है क्योंकि सर्व (भीतर की झिल्ली) अड़ी हुई नहीं होती (इलाज) धीरज और नर्मी से उसको उसकी जगह पर लावें और जल्दी और तेजी नकरें क्योंकि दर्द विशेष और छेद चौड़ा होता है और जो इस उपाय से अपनी जगह पर न जमे तो गर्म पानी का उस पर तरेड़ा दें और गर्म पानी में बैठावें और बाबूना का तेल गर्म करके मलें और जब अपनी जगह पर आजाय तो यह लेप लगावें जिससे फिर न लौटआवें मस्तगी, अजरूत (एक गोंद) कुन्दरू गोंद, सर्व का फल सर्वके पत्ता, अकाकिया (एक गोंद) अनार के फूल दम्मुल अखवैन (हीरा दूखी गोंद) मूल, फिटकरी देवदारु रसौत प्रत्येक बराबरलें और कूट छानकर रेशम माही लेकर मकोय के पानी में घोलकर इसमें मिलावें और एक कपड़े पर लगाकर इस जगह पर रखकर पाटियों से कसा बांध दें और तीनदिन तक न खोलें और चाहिये कि रोगी चितलेटा रहे और भोजन के लिये मुलायम चीजों पर सन्तोष करें और जब चीरा बन्द होजाय अर्थात् तीन दिन बीतजांयतो आज्ञा दें कि धीरेसे उठें और धीरेचलें लेकिन वादीके उत्पन्न करने वाले भोजनोंमें और वादी के मेवाओं से जैसे गन्दना लोबिया, मटर अमरूद, सेब, ककड़ी, खीरा, आदि त्याग करें और ऐसाही संभोग, कूदना, चीखना, और पर्वतों पर चढ़ना, दौड़ना और तेज घोड़े पर चढ़ना और कष्ट पावे तथा खांसी की वस्तुओं से बचें और सर्वदा जवारिशें खाना। और माजून इत्रीफुल गार खाया करें और सर्वदा उस छेदको रेशमी कपड़े और पट्टी से जो इसकाममें मुख्य है बचारक्खे मुख्यकर चलने फिरने और संभोग के समय और कभी हर तरह और कड़ी गतियोंका उत्साह नकरें क्योंकि यह अधिक हानिकारक है। दूसरा लेप जो प्रथम के समान है छरीला, कुन्दरू गोंद, धमासा, मूल प्रत्येक २॥ माशे, मेथा कूटलें और एक रात दिन सिर्के में भिगोवें फिर सायेमें रखदें और घोजाता देवदारु मसीर क्रम उसमें

होने पर सभोग से बचे और जीरे की जवारिश और माजून इन्बुलशार और सजीरानिया आदि खवावें और सम्हालू, तुलसी, बच, पोदीना, दोनामरुआ पापड़ी नोन आदि का लेप करें और कूटका तेल और जम्बकका तेल, नारदेन का तेल आदि मलें और जम्बक का तेल ३३॥ माशे और कस्तूरी और जुन्दे बेदस्तर सब को मिलाकर रक्खे और उस में से कई बूंद प्रति दिन उस के छेद में टपकावे और जो दवा जलन्धर में वर्णन की गई है काममें लावें और जहां तक होसके स्त्रीसमागम का त्याग करे और आवश्यकता में जबतक पेट/ भोजन से खाली न हो उसपर जल्दी न करे और सभोग तथा गति के समय पहले एक पट्टी बांध दे उन गोलियों के बनाने की विधि जो बादी को नष्ट करती हैं अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, हालून, मस्तगी, केथर, प्रत्येक ७ माशे कावलीहर्ड, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १०॥ माशे, मुकलीमज, (कुन्दल गोंद) गूगल, प्र० ३॥ माशे पोदीना, कूट, कपूर, दरूनज (एकजड़ बीछूके समान) तगर प्रत्येक १॥ माशे, कुन्दल गोंद और गूगल को सौंफ आदि के पानी में घोले और कूट छानकर उस में मिलावे और गोलियां बनाकर प्रतिदिन सबेरे के समय ४॥ माशे खवावें।

चौथा भेद आंतों में पानी उतर आने का वर्णन।

उसका यह चिन्ह है कि पेट में गुड़गुड़ाहट नहो और अण्डकोषकी खाल चमकती हुई हो और पानी से भरी मालूम हो और अंड को हाथों में ले तो बोझल मालूम हो और उसकी खाल थोड़े समय में कड़ी होजाय और जब उस को हिलावें तो पानी के हिलने का शब्द कान में आवे और जो उसको हटाना चाहे तो किसी तरह से न हटे और पेशाब थोड़ा२ और बारर आवे (मूतना) दोनों अंडों की झिल्ली में पानी और तरी दो प्रकार की इकट्ठी होती है एक तो यह है कि तबियत उसे दूर करे दूसरे यह है कि दोनों अंडों की खाल की प्रकृति की सर्दी के कारण इसी जगह उत्पन्न हो और प्रगट है कि जब दोनों अंडोंकी झिल्ली में सर्दी आगई होतो जो भोजन कि उसमें पहुंचेगा उसका पानी बनजायगा यद्यपि पेट के ऊपर की झिल्ली आरोग्य हो और उद पोढ़ा न हो परन्तु दोनों अंडों की झिल्ली बढ़ जायगी और जो कि यह और वह आपस में समान है तो उस को भी माहविक् कील (फ़ातों का बढ़ना) कहते हैं नहीं तो वास्तव में बीज का अर्थ यह है कि कोई चीज़ ऊपर से दोनों अंडों की झिल्ली में उतर आवे पेट के

होने पर सभोग से बचे और जीरे की जवारिश और माजून इत्रीफुलगार और सजीरानिया आदि खवावें और सम्हालू, तुलसी, बच, पोदीना, दोनामरूआ पापड़ी नोंन आदि का लेप करें और कूटका तेल और जम्बकका तेल, नारदैन का तेल आदि मलें और जम्बक का तेल ३३।।। माशे और कस्तूरी और जुन्दे बेदस्तर सब को मिलाकर रक्खे और उस में से कई बूंद प्रति दिन उस के छेद में टपकावे और जो दवा जलन्धर में वर्णन की गई है काममें लावें और जहां तक होसके स्त्रीसमागम का त्याग करे और आवश्यकता में जबतक पेट भोजन से खाली न हो उसपर जल्दी न करै और सभोग तथा रात्रि के समय पहले एक पट्टी बांध दे उन गोलियों के बनाने की विधि जो बादी को नष्ट करती हैं अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, हालून, मस्तगी, केसर, प्रत्येक ७ माशे कावलीहर्ड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १०।। माशे, मुकयीमज, (कुन्दुल गोंद) गूगल, प्र० ३।। माशे पोदीना, कूट, कपूर, दरूनज (एकजड़ बीछूके समान) तगर प्रत्येक १।।। माशे, कुन्दुल गोंद और गूगल को सौंफ आदि के पानी में घोलें और छूट छानकर उस में मिलावें और गोलियां बनाकर प्रतिदिन सबेरे के समय ४।। माशे खवावें ।

चौथा भेद आंतों में पानी उतर आने का वर्णन ।

उसका यह चिन्ह है कि पेट में गुड़गुड़ाहट नहो और अण्डकोष की खाल चमकती हुई हो और पानी से भरी मालूम हो और अंड को हाथों में ले तो बोझल मालूम हो और उसकी खाल थोड़े समय में कड़ी होजाय और जब उस को हिलावें तो पानी के हिलने का शब्द कान में आवे और जो उसको हटाना चाहे तो किसी तरह से न हटै और पेशाब थोड़ा२ और बारर आवे (मूतना) दोनों अंडों की झिल्ली में पानी और तरी दो प्रकार की इकट्ठी होती है एक तो यह है कि तबियत उसे दूर करे दूसरे यह है कि दोनों अंडों की खाल की प्रकृति की सर्दी के कारण इसी जगह उत्पन्न हो और प्रगट है कि जब दोनों अंडों की झिल्ली में सर्दी आगई होतो जो भोजन कि उसमें पहुँचेगा उसका पानी बनजायगा यद्यपि पेट के ऊपर की झिल्ली आरोग्य हो और उद थोड़ा न हो परन्तु दोनों अंडों की झिल्ली बढ़ जायगी और जो कि यह और वह आपस में समान है तो उन को भी प्राकृतिक ढील (कानों का बढ़ना) कहते हैं नहीं तो वास्तव में बीज का अर्थ यह है कि कोई चीज ऊपर से दोनों अंडों की झिल्ली में उतर आवै पेट के

अडकोष की खाल चीर कर पानी निकालने की जगह में लाकर भेद की झिल्ली में फिरावें जिससे अंडकोष की खाल और पेट के ऊपर की झिल्ली को कष्ट पहुचे और आंतें उतर आने की जगह खिचकर तंग होजाय और जो दुबारा पानी न आने पावें और इसके होने की दशा न पहुचे और दाग के समय विशेष सावधानी करें कि दागका शस्त्र फोते की सुपारी तक न पहुचे और दाग के उपरान्त ऐसा इलाज करें कि सुरुड बंधजाय और घाव भर आवे (लाभ) अंडकोष की खाल में से चीरा देकर पानी निकालना विना दग्ध करने के यद्यपि थोडे से दिनको आराम देता है परन्तु फिर रोग उलट आता है।

पांचवा भेद अडकोषोंमें वादी उतर आनेका वर्णन

उसका यह चिन्ह है कि गाढापन कठोरता और खिचाव हो और उसमें और दोनों अंडों की कठोर सूजन में मत्यस में यह अन्तर है कि सूजन का मवाद अगके भीतर प्रवेश होता है चाहे अडकोषों की खाल्में हो चाहे अंडों में और यह मवाद ऐसा नहीं है क्योंकि अंडों की झिल्ली की पोल में होता है (इलाज) वादी के निकालने के लिये आकाश बेलका काढा पिलावें और जो कुछ अंडों की कडी सूजन में वर्णन किया गया है अर्थात् मवाद के नर्म करने वाली दवा और नष्ट करने वाली दवा ग्रहण करें और जुन्देबेदस्तर फरफयून, चमेली का तेल, पायूना का तेल मिलाकर मलना और उसके छेद में टपकाना लाभदायक है और कुन्दरू गोंद की माजून और मारतुलदयान सर्वदा ग्रहण करना अंडवृद्धि और आंतों के उतर आने के सब भेदों में लाभदायक है अनार के फूल, मौलसरी के पत्ता, माजू फलरा ' पूछ, कुन्दरू गोंद, सरू का फल, राल, गूगर और देवदारू, रेशम माही के साथ ग्रहण करें।

छठा भेद पेट के ऊपर की झिल्ली का फटजाना और फतक उरबिया (कोई चीज ऊपर से थाकर इसी जगह रुकगई और अडकोषों में न गई हो) के वर्णन में है इस अध्याय के आरम्भ में उनका अच्छी तरह वर्णन करचुके हैं और यद्यपि यह रोग अच्छा नहीं होता परन्तु इस लिये कि विशेष नहा उपाय लिखा जाता है (इलाज) सदा उस जगह को दृढ पट्टियों से बधा रक्खें और इस जगह की पट्टियों को चौकोन चाहे तीन कोन बनावें और जो दवा जो आंत में हवा उतर आने और भीतर की झिल्ली के उतर आने में वर्णन की गई है बाब में लगावें और जो कुछ यहां वर्णित है यहां भी उसको

अंडकोष की खाल चीर कर पानी निकालने की जगह में लाकर भेद की झिल्ली में फिरावें जिससे अंडकोष की खाल और पेट के ऊपर की झिल्ली को कष्ट पहुंचे और आंते उतर आने की जगह खिंचकर तंग होजाय और जो दुबारा पानी न आने पावे और इसका होने की दशा न पहुंचे और दाग के समय विशेष सावधानी करें कि दागका शस्त्र फोते की सुपारी तक न पहुंचे और दाग के उपरान्त ऐसा इलाज करें कि खुरंट पकजाय और घाव भर आवे (लाभ) अंडकोष की खाल में से चीरा देकर पानी निकालना विना दग्ध करने के यद्यपि थोड़े से दिनको आराम देता है परन्तु फिर रोग उलट आता है ।

पांचवा भेद अंडकोषोंमें वादी उतर आनेका वर्णन

इसका यह चिन्ह है कि गाढ़ापन कठोरता और खिंचाव हो और इसमें और दोनों अंडों की कठोर सूजन में प्रत्यक्ष में यह अन्तर है कि सूजन का मवाद अंगके भीतर प्रवेश होता है चाहे अंडकोषों की खालमें हो चाहे अंडों में और यह मवाद ऐसा नहीं है क्योंकि अंडों की झिल्ली की पोल में होता है (इलाज) वादी के निकालने के लिये आकाश बेलका काढ़ा पिलावें और जो कुछ अंडों की कड़ी सूजन में वर्णन किया गया है अर्थात् मवाद के नर्म करने वाली दवा और नष्ट करने वाली दवा ग्रहण करें और जुन्देबेदस्तर फरफयून, चमेली का तेल, बाबूना का तेल मिलाकर मलना और इसके छिद्र में टपकाना लाभदायक है और कुन्दरू गोंद की माजून और मारतुलदयान सर्वदा ग्रहण करना अंडवृद्धि और आंतों के उतर आने के सब भेदों में लाभदायक है अनार के फूल, मौलसरी के पत्ता, माजूफलका फूल, कुन्दरू गोंद, मरूं का फल, राल, गूगर और देवदारू, रेशम माही के साथ ग्रहण करे ।

छठा भेद पेट के ऊपर की झिल्ली का फटजाना और फतक उर्बिया (कोई चीज ऊपर से आकर इसी जगह रुकगई और अंडकोषों में न गई हो) के वर्णन में है इस अध्याय के आरम्भ में इनका अच्छी तरह वर्णन करचुके हैं और यद्यपि यह रोग अच्छा नहीं होता परन्तु इस लिये कि विशेष यहां उपाय लिखा जाता है (इलाज) सदा उस जगह को दृढ़ पट्टियों से बंधा रक्खें और इस जगह की पट्टियों को चौड़ोन चाहे तीन कोन बनावें और वे दशा जो आंत में हवा उतर आने और भीतर की झिल्ली के उतर आने में वर्णन की गई है याद में लावें और जो कुछ यहां वर्णित है यहां भी उसको

ला हुआ है इसको अरबी में ळफीफुलअमआ कहते हैं और दूसरा पर्दा खा ळसे उत्पन्न किया है जो पेटके ऊपरहै और उसको अर्बीमें हिजाबऊद खारिज कहते हैं और यूनानी कोप में बारी तारून (पेट के ऊपर का पर्दा) और अर्बी में मुस्तद भी कहते हैं और यह पर्दा घर की भीत के समान है और पेटको इससे यह लाभहै कि गर्मी पेटकी रक्षाकरे और गर्मीको बाहर न निकलनेदे जिससे भीतरके अंग गर्मरहें और इस गर्मीके कारण अपना २ काम पूराकरें।

दूसरा प्रकरण।

टूंडी के ऊंचा होने का वर्णन।

यह दो प्रकार का है एक तो वह है कि जन्म से ही उत्पन्न हो यह कुरीति सेवन से होता है इसको उन्हीं दिनों में गद्दियों के बांधने और २ चीजों से ठीक करसकते हैं परंतु जब कि दृढ़ होजाता है तो दवाका गुण नहीं होता। दूसरे भेदके पांच कारण हैं एक तो यह है कि इस जगह किसी कारण से पेट के ऊपर की झिल्ली फटजाय और भीतर की झिल्ली आंतों से निकल आवे और टूंडी को ऊंचा करदे दूसरे यह कि कफ की तरी किसी कारण से टूंडीमें आजाय जैसे कि जलन्धर। तीसरे यह है कि टूंडीमें हवा इकट्ठी हो जाय जैसे वह जलन्धर जिसमें पट ढोल के समान हो। चौथे यह है कि इस खाल के नीचे जो टूंडी के ऊपर है विशेष मांस उत्पन्न हो। पांचवे यहहै कि कोई रग या वह रग जो टूंडी के निकट है फटजाय और उसमें खून निकल कर खाल के नीचे टूंडी के सन्मुख इकट्ठा होजाय और प्रत्येक कारणका एक चिन्ह है जैसे जो पेट के ऊपर की झिल्ली के फटने से टूंडी ऊंची हो तो उस का यह चिन्ह है कि टूंडी शरीर के रंग के समान हो और छूनेसे नर्म मालूम हो और दर्द न करे और दबाने से दबजाय और न्हाने से बढ़जाय परन्तु जहां कहीं पेट के भीतर की झिल्ली फटगई हो और केवल आंतड़ी उभर आवे तो अवश्य है कि दर्द को मुन्चकर मवाद के भरे होने पर और जब अपनी जगह की तरी उसका कारण हो तो उसका यह चिन्ह है कि दर्द न हो और हाथ लगाने से नर्म और तर मालूम हो और यद्यपि शरीर के रंग के समान हो परंतु उसमें नर्माई और सफेदी हो और किसी दशा में भीतर की तरफ न जाय और जितना मवाद का भरजाना और तरी का इकट्ठा होना और खाल में समा सके उसके अनुसार हो सकता है कि उसमें बढ़ाव और अधिकता हो और जो किसी की रगें कट जाने से हो तो उसका चिन्ह यह है

ला हुआ है इसको अरबी में लफीफुलअमआ कहते हैं और दूसरा पर्दा खा लसे उत्पन्न किया है जो पेटके ऊपरहै और उसको अर्बीमें हिजावऊद सारिज कहते हैं और यूनानी कोष में घारी तारून (पेट के ऊपर का पर्दा) और अर्बी में मुस्तद भी कहते हैं और यह पर्दा घर की भीत के समान है और पेटको इससे यह लाभ है कि गर्मी पेटकी रक्षाकरे और गर्मीको बाहर न निकलनेदे जिससे भीतरके अंग गर्मरहें और इस गर्मीके कारण अपना २ काम पूराकरें।

दूसरा प्रकरण।

टूंडी के ऊंचा होने का वर्णन।

यह दो प्रकार का है एक तो वह है कि जन्म से ही उत्पन्न हो यह कुरीति सेवन से होता है इसको उन्हीं दिनों में गद्दियों के बांधने और २ चीजों से ठीक करसकते हैं परंतु जब कि दृढ़ होजाता है तो दवाका गुण नहीं होता। दूसरे भेदके पांच कारण हैं एक तो यह है किइस जगह किसी कारण से पेट के ऊपर की झिल्ली फटजाय और भीतर की झिल्ली आंतों से निकल आवे और टूंडी को ऊंचा करदे दूसरे यह कि कफ की तरी किसी कारण से टूंडीमें आजाय जैसे कि जलन्धर। तीसरे यह है कि टूंडीमें हवा इकट्ठी हो जाय जैसे वह जलन्धर जिसमें पेट ढोल के समान हो। चौथे यह है कि इस खाल के नीचे जो टूंडी के ऊपर है विशेष मांस उत्पन्न हो। पांचवें यहहै कि कोई रग या वह रग जोटूंडी के निकट है फटजाय और उसमें खून निकल कर खाल के नीचे टूंडी के सन्मुख इकट्ठा होजाय और प्रत्येक कारणका एक चिन्ह है जैसे जो पेट के ऊपर की झिल्ली के फटने से टूंडी ऊंची हो तो उस का यह चिन्ह है कि टूंडी शरीर के रंग के समान हो और इसेरा नर्म मालूम हो और दर्द न करे और दबाने से दबजाय और न्हाने से बढ़जाय परन्तु जहां कहीं पेट के भीतर की झिल्ली फटगई हो और केवल आंतड़ी उभर आवे तो अवश्य है कि दर्द करे मुख्यकर मवाद के भरे होने पर और जब भरनी जगह की तरी उसका कारण हो तो उसका यह चिन्ह है कि दर्द न हो और हाथ लगाने से नर्म और तर मालूम हो और यद्यपि शरीर के रंग के समान हो परंतु उसमें नरमाई और सपेदी हो और किसी दशा में भीतर की तरफ न जाय और जितना मवाद का भरजाना और तरी का इकट्ठा होना और खाल में समा सके उसके अनुमान हो सकता है कि उसमें बढ़ाव और अधिकता हो और जो किसी की रगें फट जाने से हो तो उसका चिन्ह यह है

सुन्नत इसलिये हैं कि बच्चे को ठहरा सकें और इस पुर्तमें दो पोल हैं जैसे दो थैली हैं परन्तु गर्दन एक ही है इस लिये मनुष्य के पट में दो बच्चे योग्य है परन्तु और जीवों के गर्भस्थान की नली थनों की गिन्ती पर होती हैं और बहुधा इन्हीं थनोंकी गिन्ती पर बच्चे होतेहैं जैसा कुत्ता बिल्ली इत्यादि। यह पुर्त भीतरकी पतली रगोंमेंखींचने वाली, ठहरानेवाली और दूरकरने वाली शक्तिसे बनाहुआ है अर्थात् जो पतली रगें खींचती ठहराती और दूरकरतीहैं और बाहर का पुर्त भीतरके पुर्तके लिये झिल्ली की विधिपर है जिससे उसकी रक्षा करै और इसकी एक ही नली है और गर्भ स्थान की जगह आंतोंके ऊपर और मसाने के नीचेहै और उसकी ऊंचाई टूंडी के निकट से स्त्री की गुह्येन्द्री तक है और इसका विस्तार प्रथम अधिक नहीं होताहै परन्तु प्रयोगकी अधिकता से बढ़जाताहै इससे इसमें समानवस्था का अवलम्बन करना उत्तम है (लाभ) जानना चाहिये कि गर्भस्थान की अजले की बनावट के सदृश पुर्तदार होती है जिससे बढ़मके और गर्भस्थान का वीर्य के खींचने का स्वभावहै यही कारणहै कि संभोगके समय गुह्यस्थान की तरफ झुकपड़ता है और गर्भस्थान मरका सब अंडकोष और पुरुषेन्द्रिय की सूरत में है भीतर की तरफ उलटगया है इसकी गर्दन तो मूत्रस्थानकी जगह पर है और अग दोनों अंडकोषों की झिल्ली के समान है और स्त्री के अंडकोष भी ऐसेही होते हैं जैसे मर्द के अंडकोष परन्तु मर्द के अंडकोष बड़े और गोल होतेहैं और कुछ लम्बाई लियेहुए दोनों एक थैलीमें होतेहैं और स्त्रियों के छोटे गोल और चपटे होतेहैं और गुह्येन्द्रिय के दोनों तरफ गर्भस्थानके बाहर रक्खे हुए हैं प्रत्येक अंड पर एक जुदी झिल्ली है और एक से दूसरी अलग है और जैसा मनुष्यों में अंड और मूत्रेन्द्रियके मध्यमें एक बड़ा मार्गहै जिससे वीर्य का पात्र कहते हैं स्त्रियों में भी ऐसा होता है परन्तु मर्दों में तो अंडों से ऊपर आकर मसाने की गर्दन की तरफ झुककर जो तीन पेच खाकर मूत्र के छेद में आता है और स्त्रियों में यह पात्र अंड से योनि की तरफ झुका हुआहै जिससे उसमें वीर्य गर्भस्थान में आवै और स्त्री के अंडों का दूसरा काम यह है कि संभोग के समय बड़ा होकर गर्भस्थान की गर्दन को ठहराय रक्खे जिससे पुरुष का वीर्य उसमें आपड़े (लाभ) कन्या और क्वांरी स्त्रियों का गर्भस्थान बहुत छोटा होता है और जब तक बड़ी नहीं होतीं इसकी पांच पूरी नहीं होती और जनने के उपरांत किंचित् चौड़ी होजाती है और वीर्य

तुन्नट इसलिये हैं कि बच्चे को ठहरा सकें और इस पुर्तमें दो पोल हैं जैसे दो थैली हैं परन्तु गर्दन एक ही है इस लिये मनुष्य के पेट में दो बच्चे योग्य हैं परन्तु और जीवों के गर्भस्थान की नली थनों की गिन्ती पर होती हैं और बहुधा इन्हीं थनोंकी गिन्ती पर बच्चे होतेहैं जैसा कुत्ता बिल्ली इत्यादि। यह पुर्त भीतरकी पतली रगोंमेंखींचने वाली, ठहरानेवाली और दूरकरने वाली शक्तिसे बनाहुआ है अर्थात् जो पतली रगें खींचती ठहराती और दूरकरतीहैं और बाहर का पुर्त भीतरके पुर्तके लिये झिल्ली की विधिपर है जिससे उसकी रक्षा करे और उसकी एक ही नली है और गर्भ स्थान की जगह आंतोंके ऊपर और मसाने के नीचेहै और उसकी ऊंचाई टूंडी के निकट से स्त्री की गुह्येन्द्री तक है और इसका विस्तार प्रथम अधिक नहीं होताहै परन्तु प्रयोगकी अधिकता से बढ़जाताहै इससे इसमें समानवस्था का अवलम्बन करना उत्तम है (लाभ) जानना चाहिये कि गर्भस्थान की अजले की बनावट के सदृश पुर्तदार होती है जिससे बढ़मके और गर्भस्थान का वीर्य के खींचने का स्वभावहै यही कारणहै कि संभोगके समय गुह्यस्थान की तरफ झुकपड़ता है और गर्भस्थान सबका सब अण्डकोष और पुरुषेन्द्रिय की सूरत में है भीतर की तरफ उलटगया है इसकी गर्दन तो मूत्रस्थानकी जगह पर है और अग दोनों अण्डकोषों की झिल्ली के समान है और स्त्री के अण्डकोष भी ऐसेही होते हैं जैसे मर्द के अण्डकोष परन्तु मर्द के अण्डकोष बड़े और गोल होतेहैं और कुछ लम्बाई लियेहुए दोनों एक थैलीमें होतेहैं और स्त्रियों के छोटे गोल और चपटे होतेहैं और गुह्येन्द्रिय के दोनों तरफ गर्भस्थानसे बाहर रक्खे हुए हैं प्रत्येक अण्ड पर एक जुदी झिल्ली है और एक से दूसरी अलग है और जैसा मनुष्यों में अण्ड और मूत्रेन्द्रियके मध्यमें एक बड़ा मार्गहै जिसको वीर्य का पात्र कहते हैं स्त्रियों में भी ऐसा होता है परन्तु मर्दों में तो अण्डों से ऊपर आकर मसाने की गर्दन की तरफ झुककर दो तीन बल खाकर मूत्र के छेद में आया है और स्त्रियों में यह पात्र अण्ड से योनि की तरफ झुका हुआहै जिससे उसमें वीर्य गर्भस्थान में आवे और स्त्री के अण्डों का दूसरा काम यह है कि संभोग के समय बड़ा होकर गर्भस्थान की गर्दन को ठहराय रक्खें जिससे पुरुष का वीर्य इसमें जापड़े (लाभ) कन्या और छोटी स्त्रियों का गर्भस्थान बहुत छोटा होता है और जब तक बड़ी नहीं होतीं इसकी वृद्धि पूरी नहीं होती और जनने के उपरांत विशेष चौड़ी होजाती है और वीर्य

स्थान को इस छेद के मुखपर रखकर इस थालीपर बैठें जिससे धूंआ भीतर पहुचे और योनि को इन्द्रायन के काढ़े से धोना विशेष लाभदायक है और ऐसेही गर्भस्थान पर धारे लगाना और उत्तम भोजन कालेया और पक्षियों का मास तवेपर भुना हुआ और गर्म मसाले मिलाकर और मुर्गों के अधभूने अंडे की जर्दी दालचीनी या उटंगन के बीज महीन पीसकर इसपर बुरकदें दूसरा भेद यह है कि गर्भ स्थान की गर्म दुष्टप्रकृति होजाय और वीर्य्य को जलाकर खराब कर डालै और उसका यह चिन्ह है कि रज में गर्मी, गाढ़ापन और कालापन हो और बाल विशेष हो फिर जो सब शरीर में गर्मी है तो शरीर दुबला और रग पीला होगा और सर्दी पहुंचाने के लिये शर्बत बनफशा, शर्बत नीलोफर, शर्बत खशखास, शर्बतसेब शर्बत चदन नीबू और मेवाओं को पिलावें और मुर्गे के बच्चे हिरन और बकरे का मांस और धीया और पालक खवावें और अंडे की जर्दी, मुर्गी और बतखकी चर्बी बनफशाके तेल में मिलाकर स्त्री के मूत्रस्थान के भीतर रक्खे और जहां कहीं पित्त भी विशेष हो तो उसके निकालने में परिश्रम करै जैसा कि उसके योग्य हो । तीसरा-भेद यह है कि खुश्क दुष्ट प्रकृति गर्भस्थानमें उत्पन्न हो और वीर्य को सुखादे उसका यह चिन्ह है कि रजस्वला हो परन्तु बहुत कम और जो खुश्की सब जगह हो तो शरीर दुबला और निबल और मूत्रस्थान सर्वदा खुलारहै और कदाचित् विशेष खुश्की से ऐसा मालूम हो कि खाल सूखी है (इलाज)। शर्बत बनफशा और शर्बत नीलोफर पिलावें और धीया और नीलोफर का तेल और बतक और मुर्गियों की चर्बी मसाने पर और मूत्रस्थान पर मलें और केलाके पेड़ का गूदा और गौका घी और स्त्रियों का दूध या सब मिलाकर एक कपड़ा उसमें सानकर स्त्रीके मूत्रस्थान में रक्खें । चौथा भेद यहहै कि तर दुष्ट प्रकृति गर्भ स्थान में उत्पन्न हो और उसके ठहरानेवाली शक्ति को निर्बल करदाले और सफाई जाताय इस कारण उसमें बहुधा वीर्य न ठहर सके और उसका चिन्ह यह है कि सदा गर्भस्थान में तरी रहै और गर्भ रहै तो क्षीण होजाय और बहुधा तीन महीने से विशेष [illegible] इलाज [illegible] री के निकालने के लिये बारम्बार लगावें और [illegible] , विशे [illegible] गुणकारी है और मुने भोजन जैसे [illegible] गर्म और [illegible] लगावें और इन्द्रायन का गूदा, [illegible]

स्थान को इस छेद के मुखपर रखकर इस थालीपर बैठें जिससे धूआ भीतर पहुचे और योनि को इन्द्रायन के काढ़े से धोना विशेष लाभदायक है और ऐसेही गर्भस्थान पर धारें लगाना और उत्तम भोजन कलिया और पक्षियों का मास तवेपर भुना हुआ और गर्म मसाले मिलाकर और मुर्गे के अधभूने अंडे की जर्दी दालचीनी या बटंगन के बीज महीन पीसकर इसपर बुरकदे दूसरा भेद यह है कि गर्भ स्थान की गर्म दुष्टप्रकृति होजाय और वीर्य्य को जलाकर खराब कर डाले और उसका यह चिन्ह है कि रज में गर्मी, गाढ़ापन और कालापन हो और बाल विशेष हो फिर जो सब शरीर में गर्मी है तो शरीर दुबला और रग पीला होगा और सर्दी पहुंचाने के लिये शर्बत बनफशा, शर्बत नीलोफर, शर्बत खशखास, शर्बतसेब शर्बत चदन नीबू और मेवाओं को पिलावें और मुर्ग के बच्चे हिरन और बकरे का मांस और घीया और पालक खवावें और अंडे की जर्दी, मुर्गी और बतखकी चर्बी बनफशाके तेल में मिलाकर स्त्री के मूत्रस्थान के भीतर रक्खे और जहां कहीं पित्त भी विशेष हो तो उसके निकालने में परिश्रम करै जैसा कि उसके योग्य हो। तीसरा भेद यह है कि खुश्क दुष्ट प्रकृति गर्भस्थानमें उत्पन्न हो और वीर्य को सुखादे उसका यह चिन्ह है कि रजस्वला हो परन्तु बहुत कम और जो खुश्की सब जगह हो तो शरीर दुबला और निर्बल और मूत्रस्थान सर्वदा सूखारहै और कदाचित् विशेष खुश्की से ऐसा मालूम हो कि खाल सूखी है (इलाज)। शर्बत बनफशा और शर्बत नीलोफर पिलावें और घीया और नीलोफर का तेल और बतक और मुर्गियों की चर्बी मसाने पर और मूत्रस्थान पर मलें और केवड़े का गूदा और गौका घी और स्त्रियों का दूध या सब मिलाकर एक फाया उसमें सानकर स्त्रीके मूत्रस्थान में रक्खें। चौथा भेद यह है कि तर दुष्ट प्रकृति गर्भ स्थान में उत्पन्न हो और उसके ठहरानेवाली शक्ति को निर्बल करदाले और सफाई जाजाय इस कारण उसमें बहुधा वीर्य न ठहर सके और उसका चिन्ह यह है कि सदा गर्भस्थान में तरी रहे और गर्भ ठहरे तो क्षीण होजाय और बहुधा तीन महीने से विशेष [illegible] इलाज [illegible]री के निकालने के लिये बारम्बार लगावें और म[illegible] विर[illegible] गुणकारी है और भुने भोजन जैसे [illegible] गर्म और खावें और इन्द्रायन का गूदा, [illegible]

मसाने की पथरी को तोड़कर निकाल देती है (दवा उल्लुक सगीर की विधि) इसके लाभ उल्लुक कबीर के समान हैं लकपगुल, कड़वी कूठ, वेनशाकी शराब और गन्द वेल, तिर्मिस (पीले रंग के बीज बाकला से छोटे होते हैं) हब्बुलगार मेथी, मिर्च म० ३५ माशे, रेवन्द चीनी, ५२॥ माशे, यहसब आठ चीजें हैं इनको कूट छानकर शहद में मिलावें इसकी मात्रा ३॥ माशे है मजरीके फादेके साथ यागर्मपानी के साथग्रहणकरे। सातवां भेद यहहैकि स्त्री विशेष दुर्बलहो यहां तककि अगोंके भोजनका फोकनरहे और रजउत्पन्न न हो जिससेउसबच्चेकाभोजनबने(इलाज)मोटाकरनेकेलियेचिकनेभोजनऔरदवाखावे और आराम तथा शान्ति ग्रहण करे और मोटे करने के उपाय किताब के अन्त में वर्णन किये जायगे। आठवां भेद यह है कि बालक का भोजन अर्थात्रज किसी कारण से बंद होजाय और उसका चिन्ह रजस्वला का बंद होना है (इलाज) जो वस्तु रजको बहाती है और रजो धर्म के बंद होने के विषय में वर्णन की जायगी ग्रहण करें। नवां भेद यह है कि गर्भस्थान में गर्म सूजन वा कठोरता तथा निकम्मे घाव उत्पन्न हों इस कारण से गर्भ न ठहर सके और यह बात प्रगट है कि गर्भ तभी रहता है जब गर्भस्थान आरोग्य और उसके कार्य आरोग्य हों और इन रोगों में से प्रत्येक का चिन्ह और इलाज उनके प्रकरणों में से ढूंढ़लो। दसवां यह है कि बादी हवा गर्भ स्थान में उत्पन्न हो और वीर्य को और बालक को न ठहरने दे उसका यह चिन्ह है कि पेडू सर्वदा फूला हुआ रहे और बादी की चीजों से दुःख पहुंचे और जो गर्भ ठहरजाय तो बड़े होने से पहले गिरजाय और संयोग के समय हवा का शब्द आवे जैसे गुदा से आया करता है (इलाज) सोंफ का पानी, मेद कर तेल, अजीर में मिलाकर पिलावे और जो चीज कि अफराको दूर करती है जैसे गुलाब और सोंफ या अर्क और गुलकंद आदि जो बड़े गर्भस्थान के उपाय में वर्णन किया गया है जैसे गिलास लगाना और गर्म मालून खाना और फतीला (दवाओं को कपड़े में लपेट कर मूत्र के स्थान पर रक्खें) तेल, लेप, भोजन और बादी की काटने वाली दवा ग्रहण करें और बादी उत्पन्न करने वाली चीजों से बचे (लाभ) सोंफ का पानी और मेद अंजीर का तेल इस प्रकार देना चाहिये कि गर्भ रहे और जब कि गर्भ स्थापित हो तो इससे बचना आवश्यकीय है कि गर्भ न गिरजाय क्योंकि यह गर्भ स्थान के फसाद को निकालता है। क्योंकि जो बादी को दूर करती हैं अफरा उत्पन्न

मसाने की पथरी को तोड़कर निकाल देती है (दवा उह्लुक सगीर की विधि) इसके लाभ उल्लफ कबीर के समान हैं लकपगडूल, कड़वी कूठ, चेनशाकी शराब और गन्द वेल, तिर्मिस (पीले रंग के बीज बाकला से छोटे होते हैं) हब्बुलगार मैथी, पिर्च म० ३५ माशे, रेवन्द चीनी, ५२॥ माशे, यहसब आठ चीजें हैं इनको कूट छानकर शहद में मिलावें इसकी मात्रा ३॥ माशे है मजरीके काढ़ेके साथ यागर्मपानी के साथग्रहणकरे। सातवां भेद यहहैकि स्त्री विशेष दुर्बलहो यहां तककि अगोंके भोजनका फोकनरहै और रजउत्पन्न न हो जिससेउसगर्भकाभोजनबने(इलाज)मोटाकरनेकेलियेचिकनेभोजनऔरदवासेवा- वे और आराम तथा शान्ति ग्रहण करै और मोटे करने के उपाय किताब के अन्त में वर्णन किये जायगे। आठवां भेद यह है कि बालक का भोजन अर्थात्रज किसी कारण से बंद होजाय और उसका चिन्ह रजस्वला का बंद होना है (इलाज) जो वस्तु रजको बहाती है और रजो धर्म के बंद होने के विषय में वर्णन की जायगी ग्रहण करें। नवां भेद यह है कि गर्भस्थान में गर्भ सूजन वा कठोरता तथा निकम्मे घाव उत्पन्न हों इस कारण से गर्भ न ठहर सके और यह बात प्रगट है कि गर्भ तभी रहता है जब गर्भस्थान आरोग्य और उसके कार्य आरोग्य हों और इन रोगों में से प्रत्येक का चिन्ह और इलाज उनके प्रकरणों में से ढूंढलो। दसवां यह है कि बादी हवा गर्भ स्थान में उत्पन्न हो और वीर्य को और बालक को न ठहरने दे उसका यह चिन्ह है कि पेडू सर्वदा फूला हुआ रहे और बादी की चीजों से कष्ट पहुंचे और जो गर्भ ठहरजाय तो बड़े होने से पहले गिरजाय और संयोग के समय हवा का शब्द आवे जैसे गुदा से आया करता है (इलाज) जड़ों का पानी, बेद का तेल, अजीर में मिलाकर पिलावे और जो चीज कि अफाराको दूर करती है जैसे गुलाब और सौंफ का अर्क और गुल्कंद आदि जो बड़े गर्भस्थान के उपाय में वर्णन किया गया है जैसे गिलास लगाना और गर्म पानी का और फर्जा (दवाओं को कपड़े में लपेट कर मूत्र के स्थान पर रक्खें) सेंक, लेप, भोजन और बादी की बाहनें वाली दवा ग्रहण करे और बादी उत्पन्न करने वाली चीजों से बचे (स्राव) जड़ों का पानी और बेद अंजीर का तेल इस समय देना चाहिये कि गर्भ नहो और जब कि गर्भ स्थापित हो तो इससे बचना आवश्यकीय है कि गर्भ न गिरजाय क्योंकि यह गर्भ स्थान के मवाद को निकालता है। जवारिश जो बादी को दूर करती है कपूर उत्पन्न

दाई उसको उंगली से सीधा और ठीक करदे जिससे गर्भस्थान स्त्री जननेन्द्रिय के सन्मुख आजाय और चाहिये कि दाई अपनी उंगली पर मोम का तेल या चर्बी आदि कुछ लगाले जिससे गर्भस्थान को कष्ट न पहुंचे और अपनी जगह पर आजाय किताब दस्तूरउल इलाज में गर्भस्थान के सीधे करने का उपाय ऐसा लिखा है कि मवाद के निकलने के उपरान्त कुशल दाई को उचित है कि तिल्ली के तेलमें उंगली चिकनी करके हाथसे गर्भस्थानको सीधा करके उसकी रगों को खींचे इस तरह से थोड़े दिन उपाय करें और जब कि गर्भस्थान छिद्र के सन्मुख आजाय तब उचित है कि स्त्री उसी तरह से लेटी रहे और उसका पुरुष उसमें सगम करे तो परमात्मा की कृपासे गर्भ रहे । तेरहवां भेद यह है कि गर्भस्थान में तो कोई रोग न हो और शरीर आरोग्य हो परन्तु बाहरी या भीतरी कारणों में से कोई कार्य प्रगट हो जो वीर्य को अथवा गर्भस्थान में बालक को न ठहरने दे और यह कई प्रकार का होता है एक तो यह है कि स्त्री स्खलित होने के पीछे जल्द उठे और वीर्य गर्भस्थान में न ठहरा हो । दूसरे यह कि कड़ी गति का काम करे अथवा विशेष भूखे रहने का काम पड़े इस कारणसे ताकत क्षीण होजाय और मवादके निकालने से हानि तो इसलिये होतीहै कि ओतादी निर्बल करता है और काम होने के कारण गर्भस्थानमें भी निर्बलता आजाती है और सगमकी अधिकता से इसलिये हानि होती है कि गर्भस्थान बाहर की ओर गति करता है क्यों कि उसकी प्रकृति वीर्य्य के खींचने को तत्पर रहती है इस कारण से पेट में बच्चा हिल जाता है और गिरपड़ता है नहाने की अधिकता इसलिये हानि करती है कि गर्भस्थान नर्म होकर बालक फिसल जाता है और बालक का दर्दी हवा की आवश्यकता पड़ती है और गर्भस्थान बाहर की तरफ गति करता है (लाभ) क्रोध, चिन्ता, आनन्द, आदि सामान्य कार्य गर्भ के न रहने और बालक के गिरजानेके कारण नहीं होते और परन्तु जब इनमें अधिकता होती है तब कदाचित् गर्भ गिरजानेकी दशा पहुंचजातीहै (इलाज) इन रोगोंमें इन कारणों से बचें जो गर्भ को क्षीण करते और वीर्यको ठहरने नहीं देते और जो [illegible] गर्भ ठहरने के लिये हानिकारक हैं वह उनके इलाज में आवेंगे। चौदहवां भेद यह स्त्री का [illegible] रहना और बालक का न होना है जो पुरुष की ओर से हो पर पुरुषों के रोगों को गिनती में है परन्तु क्योंकि यह रोग स्त्रियों में प्रगट होता है इसी लिये इस अध्याय

दाई उसको उगली से सीधा और ठीक करदे जिससे गर्भस्थान स्त्री जनने न्द्रिय के सन्मुख आजाय और चाहिये कि दाई अपनी उगली पर मोम का तेल या चर्बी आदि कुछ लगाले जिससे गर्भस्थान को कष्ट न पहुचे और अपनी जगह पर आजाय किताब दस्तूरउल इलाज में गर्भस्थान के सीधे करने का उपाय ऐसा लिखा है कि मवाद के निकलने के उपरांत कुशल दाई को उचित है कि तिल्ली के तेलमें उगली चिकनी करके हाथसे गर्भस्थानको सीधा करके उसकी रगों को खींचे इस तरह से थोड़े दिन उपाय करें और जब कि गर्भस्थान छिद्र के सन्मुख आजाय तब उचित है कि स्त्री उसी तरह से लेटी रहै और उसका पुरुष उसमें सगम करै तो परमात्मा की कृपासे गर्भ रहै। तेरहवां भेद यह है कि गर्भस्थान में तो कोई रोग न हो और शरीर आरोग्य हो परन्तु बाहरी या भीतरी कारणों में से कोई कार्य प्रगट हो जो वीर्य को अथवा गर्भस्थान में बालक को न ठहरने दे और यह कई प्रकार का होता है एक तो यह है कि स्त्री स्खलित होने के पीछे जल्द उठे और वीर्य गर्भस्थान में न ठहरा हो। दूसरे यह कि कड़ी गति का काम पड़े अथवा विशेष भूखे रहने का काम पड़े इस कारणसे बालक क्षीण होजाय और मवादके निकालने से हानि तो इसलिये होती है कि आंतोंको निर्बल करता है और काम होने के कारण गर्भस्थानमें भी निर्बलता आजाती है और सगम की अधिकता से इसलिये हानि होती है कि गर्भस्थान बाहर की ओर गति करता है क्यों कि उसकी प्रकृति वीर्य्य के खींचने को तत्पर रहती है इस कारण से पेट में बच्चा हिल जाता है और गिरपड़ता है न्हाने की अधिकता इसलिये हानि करती है कि गर्भस्थान नर्म होकर बालक फिसल जाता है और बालक को ठंढी हवा की आवश्यकता पड़ती है और गर्भस्थान बाहर की तरफ गति करता है (लाभ) क्रोध, चिन्ता, आनन्द, आदि सामान्य कार्य गर्भ के न रहने और बालक के गिरजानेके कारण नहीं होते और परन्तु जब इनमें अधिकता होती है तब कदाचित् गर्भ गिरजानेकी दशा पहुचजाती है (इलाज) इन रोगोंमें इन कारणों से बचै जो गर्भ को रोग करें और नारीको ठहरनेसे रोकतीं और जोड़ों गर्भको ठहरने से रोकें यानि हानि करैं यह उनके उपाय में आवेगा। दूसरा भेद यह गर्भ खाली रहना और बालक का न होना है जो पुरुष की ओर से हो पर पुरुषों के रोगों की गिनती में है परन्तु क्योंकि यह रोग स्त्रियों में प्रगट होता है इसी लिये इस अध्याय

दग्धकरने की किताबमें कहाहै कि इन रगोंका काटना सन्तानोत्पत्ति को नष्ट करता है इसका इलाज असम्भव है और जानलेना चाहिये कि कभी किसी स्त्री के वीर्यमें जन्मसेही एक ऐसी प्रकृति होतीहै कि जमनेके योग्य नहीं होती और उसके सिवाय और कोई कारण नहीं होता जैसा कि किसी२ पेड़ोंमें फल नहीं आता असल में बांझ इसी का नाम है और इसका उपाय नहीं होसकता क्योंकि उसका कारण मालूम नहीं परन्तु जो दवा कि प्रकृतिके अनुसार गर्भके लिये लाभदायक हैं वे परमात्मा की कृपा से लाभदायक होजाती हैं (लाभ) गर्भ न रहना और बालक का न होना पुरुष की तरफ से है या स्त्री की तरफ से इस बात की यह परीक्षा है कि दोनों के वीर्य को अलग २ पानी में डाले जिसका पानीपर ठहरजाय और नीचे न बैठे तो बांझ होना उसी की तरफसे है । दूसरी विधि यह है कि प्रत्येक का मूत्र काहू के पेड़ या पौधा की जड़में अलग२ डाले सो जिसका मूत्र उस पेड़ को सुखादे तो बांझ होना उसीकी तरफ से है । एक विधि यह है कि गेहूं जौ बाकला लाल २ दाने ले और मिट्टी के बर्तन में डालकर आज्ञा दें कि उन पर मूत्र किया करे और पुरुष और स्त्री दोनों का पात्र जुदा २ हो जिसके पात्र में दाने न उगें उसी की तरफ से बांझ होना है और यह परीक्षा मुख्य इसी बांझ होने के लिये की जाती है कि वीर्य्य में जन्म से वह प्रकृति हो जिस से सन्तति न हो सके । औरों की यह परीक्षा नहीं है अब उन दवाओं का वर्णन करते हैं जो प्रकृति के अनुसार गर्भ के रहने पर सहायता करती हैं हाथी दांत का बुरादा ४॥ माशे खाना लाभदायक है (दूसरा नुसखा) हाथी का मूत्र रतिभोग के समय या उसमें पहले पिलाना विशेष गुणकारी है (अन्य नुसखा) हींगके पेड़ का बीज कि जिसको बज्रमी सिपाल्यूस भी कहते हैं उसका खाना परीक्षा किया हुआ है (दूसरा नुसखा) नीचे की दवाओंमें कपड़े को खरगोश का मूत्र के स्थानमें मलन करे गुरु बालछड़, हुमिसल्तुस्सालिब (एक जड़) और मिसरी का तेल, बकान का तेल और सोसन व बेंत से बनाये ।

दूसरा प्रकरण ।

गर्भवती स्त्रियों के उपायों का वर्णन ।

बहुधा गर्भ का गिरना और सन्ततिका न होना और स्त्रियोंका बन्द होना जिससे बाधक निकलता रहता है और मराहुआ बच्चा और बालक उत्पन्न होनेके उपरांत रक्त का बन्द होना, और संतोष दायक उपाय भी बनने के कारण

दग्धकरने की किताबमें कहाहै कि इन रगोंका काटना सन्तानोत्पत्ति को नष्ट करता है इसका इलाज असम्भव है और जानलेना चाहिये कि कभी किसी स्त्री के वीर्यमें जन्मसेही एक ऐसी प्रकृति होतीहै कि जमनेके योग्य नहीं होती और उसके सिवाय और कोई कारण नहीं होता जैसा कि किसी२ पेड़ोंमें फल नहीं आता असल में बांझ इसी का नाम है और इसका उपाय नहीं होसक्ता क्योंकि उसका कारण मालूम नहीं परन्तु जो दवा कि प्रकृतिके अनुसार गर्भके लिये लाभदायक हैं वे परमात्मा की कृपा से लाभदायक होजाती हैं (लाभ) गर्भ न रहना और बालक का न होना पुरुष की तरफ से है या स्त्री की तरफ से इस बात की यह परीक्षा है कि दोनों के वीर्य्य को अलग २ पानी में डालें जिसका पानीपर ठहरजाय और नीचे न बैठे तो बांझ होना उसी की तरफसे है । दूसरी विधि यह है कि प्रत्येक का मूत्र कद्दू के पेड़ या खीरा की जड़में अलग२ डाले सो जिसका मूत्र उस पेड़ को सुखादे तो बांझ होना उसीकी तरफ से है । एक विधि यह है कि गेहूं जौ बाकला लाल २ दाने ले और मिट्टी के बर्तन में डालकर आज्ञा दें कि उन पर मूत्र किया करे और पुरुष और स्त्री दोनों का पात्र जुदा २ हो जिसके पात्र में दाने न उगें उसी की तरफ से बांझ होना है और यह परीक्षा मुख्य इसी बांझ होने के लिये की जाती है कि वीर्य्य में जन्म से यह प्रकृति हो जिस से सन्तति न हो सके । औरों की यह परीक्षा नहीं है अब उन दवाओं का वर्णन करते हैं जो प्रकृति के अनुसार गर्भ के रहने पर सहायता करती हैं हाथी दांत का बुरादा ४॥ माशे खाना लाभदायक है (दूसरा नुसखा) हाथी का मूत्र रतिभोग के समय या उससे पहले पिलाना विशेष गुणकारी है (अन्य नुसखा) ढीगके पेड़ का बीज कि जिसको बदगी सियालपूम भी कहते हैं उसका खाना परीक्षा किया हुआ है (दूसरा नुसखा) नीचे की दवाओंमें कपड़े को खरगोश के मूत्र के स्थानमें भरन करें गुल बाबूनह, इक्लीलुलमलिक (एक जड़) और बिनफ्शा का तेल, बबूल का तेल और सोसन के तेल से बनावे ।

दूसरा प्रकरण ।

गर्भवती स्त्रियों के उपायों का वर्णन ।

बहुधा गर्भ का गिरना और सन्तति का न होना और हिंजों का बन्द होना जिससे शायद निकला करता है और मराहुआ बच्चा और बालक उत्पन्न होनेके उपरान्त रज का बन्द होना, और संतान द्वारा स्राव और जननेके पश्चात

होतो गर्भ में लड़का है और जो मुखका स्वाद कड़वा है तो गर्भ में लड़की है
किताब दस्तूर उलइलाज में लिखा है कि गर्भ के तीन चिन्ह हैं एकतो यहहै
कि स्त्री को अपनी दशा आपही मालूम होती है जैसे पेट में भारापन और
पसव में मीठा २ दर्द और दूसरे हकीम और दाई को मालूम होजाता है।
तीसरे यह कि उसका हाल मालूम हो जैसे घृणा करना और जो कुचों को मर्म
तो आरम्भ के समय दर्द होता है। दूसरा भेद गर्भवती स्त्रियों के उपाय के
वर्णन में है जब कि गर्भ मालूम हो तो उचित है कि स्त्री कूदने और विशेष
बोझ उठाने दौड़ने और चीख मारने और ऐसी चीजों से तथा मवादके भरन
से और क्रोध भय और चिन्ता से और जो चीजें कि रजको बहाती हैं उनके
खाने से अपने तईं बचावे और फस्द और मलके निकालने वाली दवाओं
से बचे मुख्यकर चौथे महीने से पहले और सातवें महीना के पीछे और जहां
कि दस्तों की आवश्यकता पड़े तो मवाद के नर्म करने के लिये अमलतास
आदि देवें और जिस जगह खूनका निकलना अवश्य हो और जो
पछनों से निकल सके तो अति उत्तम है और जो फस्द खोलें तो
थोड़ा २ खून कई बार में निकालें और गर्भवती को चाहिये कि हर
समय निष्काम पड़ी न रहे किन्तु चलती फिरती रहे जिससे कोष पकते रहें
और गर्भवती को संभोग हानि कारक है मुख्य कर जो उसका पुरुष संभोग
करने में बलवान और बड़े आकार वाला हो कि मति समय मूत्रेन्द्रिय का सिरा
गर्भ स्थान के मुख पर टकरावे और ऐसे ही बादी की चीजें जैसे लोबिया
किम, बाकला, चना, अजमोद हानिकारक हैं और चाहिये कि बालक की
रक्षा के लिये जिससे गिरने न पावे और दिल के संतुष्ट करने वाली दवा
देवें जैसे याकूती आदि और तिरियाक मसरूदीतूस, दिवामुश्क, दरूनज और
कपूर खाया करें। प्रकृति की गर्मी और सर्दी का अवश्य ध्यान रक्खें और
पवित्र गोश्त और एक बरस की बकरी का मांस, चिड़ी, तीतर, अमरूद, अ
नार मुनक्का और सुगन्धित शराब लाभदायक है परन्तु जहां कहीं कि जिस
सने पानी नहीं बिसेर हा और बहुधा ऐसा भी होता है तो उचित है कि
बोझा और देखो से और नहाने से बचें और जो अजीर्ण होतो उसके मवाद
के गुणायम करने को उचित नीम से अभिप्राय यह है कि गर्भवती की
तबियत से अजीर्ण होना अच्छा नहीं क्योंकि आंतों का मवाद से भरा रहना
गर्भस्थान के निकट होने के कारण बालक को कष्ट पहुंचाता है और जिसके

होतो गर्भ में लड़का है और जो मुख्का स्वाद कड़वा है तो गर्भ में लड़की है किताब दस्तूर उलइल्लाज में लिखा है कि गर्भ के तीन चिन्ह हैं एकतो यह कि स्त्री को अपनी दशा आपही मालूम होती है जैसे पेट में भारापन और कमर में पीठा २ दर्द और दूसरे हकीम और दाई को मालूम होजाता है। तीसरे मर्द को उसका हाल मालूम हो जैसे घृणा करना और जो कुचों को मर्दे तो आरम्भ के समय दर्द होता है। दूसरा भेद गर्भवती स्त्रियों के उपाय के वर्णन में है जब कि गर्भ मालूम हो तो उचित है कि स्त्री कूदने और विशेष बोझ उठाने दौड़ने और चीख मारने और ऐसी चीजों से तथा मवादके भरन से और क्रोध भय और चिन्ता से और जो चीजें कि रजको बढ़ाती हैं उनके खाने से अपने तईं बचावें और फस्द और मलके निकालने वाली दवाओं से बचें मुख्यकर चौथे महीने से पहले और सातवें महीना के पीछे और जहां कि दस्तों की आवश्यकता पड़े तो मवाद के नर्म करने के लिये अमलतास आदि देवें और जिस जगह खूनका निकलना अवश्य हो और जो पछनों से निकल सके तो अति उत्तम है और जो फस्द खोलें तो थोड़ा २ खून कई बार में निकालें और गर्भवती को चाहिये कि हर समय निष्काम पड़ी न रहे किन्तु चलती फिरती रहे जिससे कोष पकते रहें और गर्भवती को संभोग हानि कारक है मुख्य कर जो उसका पुरुष संभोग करने में बलवान और बड़े आकार वाला हो कि मति समय मूत्रेन्द्रिय का सिरा गर्भ स्थान के मुख पर टकरावे और ऐसे ही वादी की चीजें जैसे लोबिया किस, बाकला, चना, अजमोद हानिकारक हैं और चाहिये कि बालक की रक्षा के लिये जिससे गिरने न पावे और दिल के संतुष्ट करने वाली दवा देवें जैसे याकूती आदि और तिरियाक मसरूदीतूस, दिवालमुश्क, हब्बुलग़ार और पचूर खाया करें। प्रकृति की गर्मी और सर्दी का अवश्य ध्यान रक्खें और पवित्र गोश्त और एक बरस की बकरी का मांस, चिड़ी, तीतर, बटेर, अ नार मुनक्का और सुगन्धित शराब लाभदायक है परन्तु जहां कहीं कि तिस लने वाली तरी विशेष हो और बहुधा ऐसा भी होता है तो उचित है कि खोस्सा और देखो से और खाने से बचें और जो अजीर्ण होतो उसके मवाद के शुद्धापन करने को उचित भाँति पूर्व अभिप्राय यह है कि गर्भवती की तबियत में मरोड़ होना अच्छा नहीं क्योंकि आंतों का मरोड़ से भरा रहना गर्भस्थान के निकट होने के कारण बालक को कष्ट पहुंचाता है और किताब

है (खुजली और गर्मी का उपाय कि जो जननेन्द्रिय के भीतर और बाहर उत्पन्नहो) खितमी का लुआब और मुलतानी का लेपकरना और मुलतानी मिट्टी मठामें और मकोयके शीरे में और तरबूज और कासनीके पानीमें जोनसा समय से मिलजाय मिलाकर उसमें बैठना और उसके भीतर तथा बाहर वर्णन की हुई दवा का लगाना लाभदायक है, इस बात का उपाय कि पीठ और पेट की मछलियां बालक के बोझ और भाफ के परमाणुओं से भरकर खिंचजायँ और उनमें विशेष थकान औरआलस्य उत्पन्नहो इस दशामें गुलरोगन मलना और बकरी की मेंगनी और जौकाचून लेकर उसकी रोटी सेककर एक कपड़े में बांध कर इससे सिकाव करना और नर्म और हल्के भोजन खवाना और पीठ, गर्दन, कन्धा और बांह की मछलियों को जोरसे मलना लाभ देता है। उस खून का उपाय कि जो गर्भ वती स्त्रियों से कुसमय और कुरीति पर जारी हो, मजूर, अनार के फूल, अनार के छिलका, गूलर, अंजीर, दर्द का पानी और सिर्के में औटा करके उसके पानी का बफारा दे और उसके फोक को महीन पीसकर पेड़ पर लेपकरें जो अधिक रुधिर आवे तो सुनहरी गोंद की टिकिया और जो कुछ रक्तके बिन्दु होनेमें आवेगा ग्रहण करे (लाभ) जब कि नवां महीना आरम्भ हो तो चाहिये कि गर्भवती सर्वदा १०॥ माशे मीठे बादाम का तेल बिना कुछ खाये खाय और जो चीज रूखी अजीर्ण कारक और गाढ़ी हो उससे बचे क्योंकि जो ऐसा करगी तो बालक बिना कष्टके उत्पन्न होगा विशेष पवित्र और पेमेंदी जबकि जननेके दिन निकट आजांय तो चाहिये कि न्हाने के स्थान और बफारे में जिसमें कि बर्नेब, मेथी, अलसी, सोया औटाया गया हो बैठे और उसके पेट और पीठ पर सोया का तेल बाबूना का तेल और निर्गी का मलमले और चिकने भोजन और कन्द और बादाममें तेल का हलुआ खवावें जिससे गरम्नाने जनें और उत्पन्न न होने के उपाय का वर्णन आगे आवेगा।

तीसरा भेद।

गर्भ गिरजाने का वर्णन

इसके कारण बहुतसे एक तो कारी नेसे पेट लगना, फिर पसना और बोझा उठाना, गुप्तखार वाले की तरह। दूसरा नीचे जैसे रोग विरष कासः आर फिर विल्ना और न्हाने स्थान में विषेर दास्त और इसी

है (खुजली और गर्मी का उपाय कि जो जननेन्द्रिय के भीतर और बाहर उ. त्पन्नहो) खितमी का लुआब और मुल्तानी का लेपकरना और मुल्तानी मिट्टी मठामें और मकोयके शीरे में और तरबूज और कासनीके पानीमें जोनसा उसमें से मिलजाय मिलाकर उसमें बैठना और उसके भीतर तथा बाहर वर्णन की हुई दवा का लगाना लाभदायक है, इस बात का उपाय कि पीठ और पट की मछलियां बालक के बोझ और भाफ के परमाणुओं से भरकर खिचजांय और उनमें विशेष थकान और आलस्य उत्पन्नहो इस दशामें गुलरोगन मलना और मुर्गी की मेंगनी और जौकाचून लेकर उसकी रोटी सेककर एक कपड़े में बांध कर इससे सिकाव करना और नर्म और हल्के भोजन खवाना और पीठ, गर्दन, कन्धा और बांह की मछलियों को जोरसे मलना लाभ देता है। बस खून का उपाय कि जो गर्भ वती स्त्रियों से कुसमय और कुरीति पर जारी हो, मजूर, अनार के फूल, अनार के छिलका, गूमा अजीर, हई का पानी, और सिर्के में औंटा करके उसके पानी का बफारा दें और उसके फोक को महीन पीसकर पेडू पर लेपकरें जो अधिक रुधिर आवे तो सुनहरी गोंद की टिकिया और जो कुछ रक्तके विरुध होनेमें आवेगा ग्रहण करे (लाभ) जब कि नवां महीना आरम्भ हो तो चाहिये कि गर्भवती सर्वदा १०॥ माशे मीठे बादाम का तेल बिना कुछ खाये खाय और जो चीज खट्टी अजीर्ण कारक और गाढ़ी हो उससे बचे क्योंकि जो ऐसा करगी तो बालक बिना कष्टके उत्पन्न होगा विशेष पवित्र और प्रेमेही जबकि जननेके दिन निकट आजांय तो चाहिये कि न्हाने के स्थान और बफारे में जिसमें कि वर्नब, मैथी, अलसी, सोया औंटाया गया हो बैठे और उसके पेट और पीठ पर सोया का तेल मालना का तेल और मिट्टी का मेलमले और चिकने भोजन और कन्द और बादाम के तेल का हलुआ खवावें जिससे गर्भस्राव न करें और उत्पन्न न होने के उपाय का वर्णन आगे आवेगा।

तीसरा भेद।

गर्भ गिरजाने का वर्णन

इसके कारण बहुतसे पड़ना और डरना और क्रोध में पेट लगना, घि चढ़ना और बोझा उठाना, मुख्यकर पांव की ठोकर। दूसरा भीतरी जैसे रोग विशेष कामना और रिक्त विकृत और जननेन्द्रिय स्थान में शिथिल होजाना और इसी

गर्भ गिरनेकी दशा पहुंचे और यह इस प्रकार पर होताहै कि रुधिर विशेषहो और बालकके भोजनमें थोड़ा खर्च हो फिर वह रुधिर विशेष होकर बालकको फिसलावे। आठवां कारण यहहैकि स्त्रीअत्यंत दुर्बलहो और उसके अंग शूष्मरहैंऔर उसके भोजनमेंसेकुछनबचै जिससे रजबनकर बालकके भोजनमेंबचे ताफिरबालक निर्बल हो और तबियत उसको निकाले । पांचवें कारण से सातवें कारण तक यद्यपि शारीरिक रोग गर्भपात के कारण हैं परन्तु बहुधा लाभ के लिये जुदे२ लिखे गये हैं (लाभ) जिस स्त्री का शरीर समान होताहै और दूसरे तीसरे महीने में उसका गर्भ गिरता है तो मालूम कर सकते हैं कि उसके गर्भ स्थान की रगों के मुख कि जो जुनदों के समान हैं रहटकी तरीसे भरगये हों इस कारणसे बालकको ठहराने वाली शक्ति नहीं रोकसक्ती और जहां बाहरी या भीतरी कारण उसके कारण हों तो उसका चिन्ह प्रगट है और उनसे बचना इसका इलाज है और शारीरिक कारण होता उसका भी चिन्ह प्रगटहै (इलाज) योग्य वस्तुओं से उसको शीघ्र दूर करें और जो तरी के कारण से आमाशय का बुरा सुस्त होगया है तो उसका गर्भ की तरी के पड़ने से और पलक के सूजजाने और मुख में पानी भर आने से पहचान सक्ते हैं और गुर्दा खाना और जड़ों का पानी तथा शर्बत विजूरी पिलावें और ज्वारिश मस्तगी और केसरिया भात और दालचीनी खावें और वमन किया करें और आवश्यकता पड़े तो गोलियों और पारन से मवाद को निकालें और दियाल मुश्क और सजरनिया लाभदायकहै और गर्भस्थान में गालिया केसर का तेल और नम्बक के तेल से हुकना करना लाभदायक है और यह माजून गुणकारी है (विधि) कपूर और दरनज अकरबी प्र० ७ माशे, अनबिंधे मोती, कहरबा, अगर प्र० १०॥ माशे, छरीला, बालछड़, प्र० १॥। माशे, कूटछानकर शहद में मिलावे इसकी मात्रा ४॥ माशे है (चूर्ण) यह गर्भादी गुणकारी है जुन्देबेदस्तर १०॥ माशे, अनसोंट के बीज, सौंफ, रूमी सौंफ, अनसायन, सातर हींग, कुलींजन प्रत्येक ७॥ माशे, कूटछानकर ३॥ माशे खावें । किताब कराबादीन कादरी में ग्रन्थकर्ता ने दियाल्मुश्क के बनाने की विधि इस प्रकार पर लिखी है मोती अनबिंध, कहरबा, मूंगा की जड़, करफा रेशम कतरा हुआ, कपूर, दरनज अकरबी प्रत्येक ४॥माशे पद, मन मरेड, इलायची, बालछड़, लौंग, जेजवार, छरीला प्र० ३॥ माशे जु-न्देबेदस्तर, केसर, सौंफ प्र० ३॥ माशे और कोई २ हकीम जुन्देबेदस्तर ३॥ माशे, और कस्तूरी ३ रत्ती मिलाते हैं इन सब दवाओं को कूटछानकर शहद

का तेल, जम्बक का तेल, जैतून का तेल और मुर्गे और बतक की चर्बी और गौ की पिंडली की चर्बी पेट और पीठ पर मलें और बाबूना. सोया और दोना मरुवा. स्वरग के पानी में औटा कर गर्भवती को उस पानी में बैठावें कि पानी टूंडी तक रहे और जंगली पोदीना और हंसराज औटाकर मिश्री मिलाकर पिलावें और कालादाना जुन्देबेदस्तर और नकछिकनी छींक आने के लिये ग्रहण करें और जब छींक आने लगे तो नाक मुख बन्द कर लें जिससे दूर करने की शक्ति भीतर की ओर प्रवेश हो और बच्चे के निकाल ने की सहायता करें और घोड़े गधे और खिच्चर के सुरकी धूआं देना लाभ दायक है और मोटे मुर्गे का शोरबा पिलाना लाभदायक है। दूसरा यह है कि ठंडी हवा या कोई और सर्दी से आमाशय का मुख सिमट और सुकड़ जाय इसको गर्भस्थानकी सर्दी और सुकड़ने से पहचान सकते हैं (इलाज) गर्मस्नान में लेजाकर गुनगुने पानी में बैठावें और गर्म और प्रवाहक नर्म करनेवाले उक्त तेलको मलें और शहद को कपड़े में लपेट कर गुप्त स्थानपर रखें। तीसरे यह है कि बालक पर लिपटी झिल्ली का मोटा होना कठिनता का कारणहै। जानना चाहिये कि मुशीमिया एक झिल्ली है जो गर्भस्थान में बालक के और पास उत्पन्न होती है जिस में उसकी रक्षा रहती है जैसे चबूतरे के दानेकी रक्षा होतीहै परन्तु इस में विशेष कड़ी और मोटी होती है और बालक जब निकलने के लिये गति करता है और बलवान होता है पीछे झिल्ली फटजाती है और बालक उसमें से निकल आता है पीछे झिल्ली निकलती है सो जो यह झिल्ली विशेष मोटी होतीहै तो जल्दी नहीं फटती तब ऐसा उपायकरे कि बच्चा न मरे क्यों कि निकलने की गति से उस को कष्टपहुंचता है और निकल नहीं सकता इस लिये मरजाने का भय है बहुधा आदमी इसी कारण से मरगये हैं क्योंकि इस बात को किसीने न समझा। दाई को चाहिये कि झिल्ली [illegible] मोप हाथमें रक्खे और तेज छुरा लेकर उस को चीर डालें और इस काम के लिये चतुर दाईको चाहिये कि झिल्ली को फाड़ने के समय गर्भवती और बालक को कष्ट न पहुं चे (इलाज) गर्भवती के लिये मुख्य कर जिसका जनना कठिन हो अच्छी रीति यह है कि जनने के दिन समीप हों तो स्नान के स्थानमें लेजाय और गुनगुना गर्म पानी उसके सिर पर डालें और प्रकार के बैठावें और तेल मलें और [illegible] ढ़ा दे कि थोड़ी दूर चलकर ठहर बैठे और फिर चलावें। गर्मी में दूर्वा और क. बार पेशा करे उस समय [illegible] के बीज का लुआब [illegible] का तेल या गिर्दा के तेल का शीरा या हंसों की चर्बी या बतककी चर्बी इनदवा

रहै तो जानना चाहिये कि बालक मर गया है उसका उपाय शीघ्र करना चाहिये ॥

पांचवा भेद रुके हुए गर्भस्थान और मरे बालक के निकालने का वर्णन

जबकि बालक पेट में मरजाय अथवा बालक पेट में से निकल आवै परन्तु झिल्ली न निकलै और उसका वह लगाम जो डोरेकी तरह उसमें और बालकमें रहता है टूट जाय तो उसके निकालने का जल्द उपाय करें क्योंकि मृत्यु का भय है और बालक के मरजाने का यह चिन्ह है कि पेट में गति मालूम नहो और गर्भवती के हाथ पांव ठंढ होजाय और श्वास लगातार आवै (इलाज) जंगली पोदीना, देवदार, हमराज म० १०॥ माशे तिर्मिस, पोदीना ७ माशे औटाकर ४५ माशे मिश्री मिलाकर पिलावें और नकछिकनी तथा कलौंजी सुंघावें कि छींक आने लगें फिर उसका मुख और नाक बन्द करें जिससे उसकी शक्ति भीतर पहुंचे और जो कुछ गर्भस्थान में है उसको निकाल डालै और जुन्दबेदस्तर, तिर्मिस, हाशा और देवदार कूटकर बैल के पित्ते में मिलाकर ग्रहण करैं और इन्द्रायन का गूदा, कूट और सूखी तुलसी म० १०॥ माशे, और मूल ३॥ माशे, कूट छानकर बैल के पित्ते में मिलाकर टुंडी और पेड़ू पर लेप करैं और धूप और गंदा बिरोजा, जावशीर, जुंदबेदस्तर और कुनैर बैल के पित्ते में गूंदकर टिकिया बनावैं और अंगीठी में जलाकर छेददार ढकनीके द्वारा उसका धूआं मूत्रस्थान में पहुंचावै (दूसरा नुसखा) धूप, जावशीर, कुंदरगोंद बराबर लेकर गोली बनावै और १०॥ माशे उनमें से लगावैं इससे जो कुछ गर्भ स्थान में होता है निकल आता है (दूसरा नुसखा) फ़जीरा, मकर, तुलसी, इन्द्रायन का गूदा म० बराबर कूटकर मूत्रके स्थान पर रक्खे तो बालक गिर पड़ता है (दूसरा नुसखा) जावशीर, जुन्दबेदस्तर कन्दसफेद गौ का पित्ता बराबर लेकर सबको मिलाकर ३॥ माशे गर्म पानी में दे और कुछ देरके उपरान्त छींक आने का उपाय करै जैसा कि वर्णन किया है तो तुर्त बालक और झिल्ली निकल आती है (दूसरा उपाय) रेशम सांपकी कांचली, कपूर की धीर अथवा दोनों मिलाकर धूनी दे तो बालक जल्द निकलता है और जब इस उपाय से बालक न निकलै तो चाहिये कि दाई हाथ भीतर डालकर इस तरह पर बाहर खींच ले कि दूसरे अङ्ग पर विपत्ति न पहुंचे (याद) अहां कहीं कि मरे बालक के निकालने में कोई उपाय लाभदायक न हो तो उसको टुकड़े ?

दूर करता है और चमेली का तेल मलना और मूत्रस्थानमें लगाना लाभदायकहै मुख्य कर जो गर्भस्थान के मुख में कड़ापन भी पाया जाय (दूसरी विधि) खशखश की छाल का पानी पिलावे तो दर्द की अधिकता को उसी समय आराम देता है परन्तु जब तक किसी और दवा से काम निकलै उसको न पिलावे क्योंकि यद्यपि यह दर्द को थामता है परन्तु रज को बन्द करता है और कदाचित् इससे दर्द रुक जाता है परन्तु रजके बन्द होने के कारण पहले से अधिक दर्द फिर उत्पन्न होजाता है वह दवा कि जो दर्द को और गर्भस्थान के मुख की कठोरता को लाभदायक है और रज और झरियों को निकालती है और गर्भस्थान के घाव को निर्मल करती है पवित्र शहद १ भाग गधी का दूध या स्त्री का दूध २ भाग दोनों को मिलाकर चिनगारियों की आग पर जो बहुत दहकी नहीं रक्खे जिससे दूध धीरे २ शहद में प्रवेश हो जाय फिर एक कपड़ा ऊन तथा रुई का भर कर मूत्रस्थान पर रक्खें (लाभ) रज के आने से पहले और संभोग के समय जो दर्द गर्भस्थान में उत्पन्न होता है उसको भी इसी तरह ठहराते हैं जैसा इसमें वर्णन हुआ है ॥

आठवां भेद गर्भ गिरने और बालक निकलने का वर्णन

जानना चाहिये कि जब तक विशेष आवश्यकता न हो इस कार्य में जल्दी न करें मुख्य कर जो उसमें जान पड़गई है और इस काम के लिये जो कुछ मरा बालक और झिल्ली निकालने के लिये कहा गया है वही लाभदायक है और जो कागज की बत्ती बनाकर गर्भस्थान के मुखमें पहुंचावें तो उसी समय बालक गिर पड़ता है मुख्यकर जो इस बत्ती को तेल में या इन्द्रायन के पानी में या उसके काढ़े में तथा बैल के पित्ते में भर लें (दूसरी विधि) हजार स्पन्द के बीज का खाना और मूत्रस्थान पर कपड़े को दवाओंमें लसेदकर रखना और बिलसां का तेल कपड़े में लगाकर मूत्र के स्थान पर रखना या रुक को गिराता है और हींग, गन्दाबिरोजा और [illegible] बहीसा

हुई है और हकीम लोग कहते हैं कि जो गर्भवती स्त्री [illegible]

रक्खे तो इसबात का भय है कि बालक गिरपड़े और इसके [illegible]

लेपकरें अथवा उसमें रुई भरकर मूत्रस्थान में [illegible]

इन्द्रायन के पत्तों के निचुड़े हुए अर्क [illegible]

ऊन उसमें भरकर पेशाब करने के [illegible]

जर्वा की जड़का निचुड़ा हुआ पानी

दूर करता है और चमेली का तेल मलना और मूत्रस्थानमें लगाना लाभदायकहै मुख्य कर जो गर्भस्थान के मुख में कड़ापन भी पाया जाय (दूसरी विधि) खशखश की छाल का पानी पिलावे तो दर्द की अधिकता को उसी समय आराम देता है परन्तु जब तक किसी और दवा से काम निकलै उसको न पिलावे क्योंकि यद्यपि यह दर्द को थामता है परन्तु रज को बन्द करता है और कदाचित् इससे दर्द रुक जाता है परन्तु रजके बन्द होने के कारण पहले से अधिक दर्द फिर उत्पन्न होजाता है वह दवा कि जो दर्द को और गर्भस्थान के मुख की कठोरता को लाभदायक है और रज और सरियों को निकालती है और गर्भस्थान के घाव को निर्मल करती है पवित्र शहद १ भाग गधी का दूध या स्त्री का दूध २ भाग दोनों को मिलाकर चिनगारियों की आग पर जो बहुत दहकी नहो रक्खे जिससे दूध धीरे २ शहद में प्रवेश हो जाय फिर एक कपड़ा ऊन तथा रुई का भर कर मूत्रस्थान पर रक्खें (लाभ) रज के आने से पहले और संभोग के समय जो दर्द गर्भस्थान में उत्पन्न होता है उसको भी इसी तरह ठहराते हैं जैसा इसमें वर्णन हुआ है ॥

आठवा भेद गर्भ गिरने और बालक निकलने का वर्णन

जानना चाहिये कि जब तक विशेष आवश्यकता न हो इस कार्य में जल्दी न करें मुख्य कर जो उसमें जान पड़गई है और इस काम के लिये जो कुछ मरा बालक और झिल्ली निकालने के लिये कहा गया है वही लाभदायक है और जो कागज की बत्ती बनाकर गर्भस्थान के मुखमें पहुंचावें तो उसी समय बालक गिर पड़ता है मुख्यकर जो इस बत्ती को तेल में या इन्द्रायन के पानी में या उसके काढ़े में तथा बैल के पित्ते में भर लें (दूसरी विधि) हजार स्पन्द के बीज का खाना और मूत्रस्थान पर कपड़े को दवाओंमें लसेदकर रखना और विलसां का तेल कपड़े में लगाकर मूत्र के स्थान पर रखना या रक्त को गिराता है और हींग, गन्दाबिरोजा और [illegible] परीक्षा हुई है और हकीम लोग कहते हैं कि जो गर्भवती स्त्री [illegible] रक्खे तो इसबात का भय है कि बालक गिरपड़ें और इसके [illegible] लेपकरें अथवा उसमें रुई भरकर मूत्रस्थान में [illegible] तो बालक इन्द्रायन के पत्तों के निचुड़े हुए अर्क [illegible] ऊन उसमें भरकर पेशाब करने के जवां की जड़का निचुड़ा हुआ पानी

बालक के जनने के दर्द से मरजायगी अथवा किसी बड़े रोग में फसजायगी कि जिसमें गर्भके कारण से मरने का भय हो या गर्भस्थानमें कोई ऐसा रोग हो कि बालक के बड़े होने से पहिले गर्भवती स्त्री की मृत्यु का सन्देह हो तो गर्भ के गिराने का उपाय करे और जानना चाहिये कि जब बालक जनने के दर्द चार दिन तक रहें और बालक न उत्पन्न हो तो जानलें कि मर गया इसी समय गर्भवती के बचाने का उपाय करें और जो उपाय वर्णन होचुकाहै काम में लावें और यह दवा विशेष गुणकारी है यह मरे बालक और झिल्ली को निकालती है (विधि) इन्द्रायन का गूदा, कूट, तुलसी के पत्ता प्र० ७ माशे, सबको महीन करके बैलके पित्तमें मिलाकर ढूंढीसे लेकर पेडू और मूत्र इन्द्रिय आदि तक लेप करें और बच्चे के पेट में मरजाने का चिन्ह यह है कि बालक पेटमें कड़ा होजाय और जब कि गर्भवती स्त्री करवट ले तो यह मालूम हो कि एक पत्थर इधर उधर से गिरता है और पहिलेकी अपेक्षा ढूंढी ठंढी होजाय और छाती दुबली हो जाय और आंख की सफेदी में कालापन आजाय और कभी ऐसा होता है कि कान सिर और नाक सफेद होजाय और होठों का रंग लाल हो ।

नवां भेद गर्भ न रहने का उपाय ।

इसका सम्पूर्ण विधान यह है कि पुरुष मैथुन के समय स्त्री का बहुत आलिंगन न करे और पावोंको ऊंचा न उठावे और वीर्य स्खलित होनेके समय जहांतक होसके मूत्रेन्द्रिय को बाहरकी ओर खिंची रक्खे और इस बातमें परिश्रम करे कि उसका और स्त्रीका साथर वीर्य स्खलित न हो और वीर्य स्खलित होनेके उपरान्त जल्द अलग होजाय और स्त्री भी जल्द उठे और सात बार तथा नौ बार अगली तरफ कूदे और छींकलेवे जिससे वीर्य गर्भस्थानमेंसे निकल पड़े और मूत्रेन्द्रिय का अगभाग तिल्ली के तैल में चिकना करे तो वीर्य को फिसलाता है और गर्भस्थान में नहीं ठहरने देता और अनार के दानों में जो पीला गूदा होता है उसको कूटकर और छिड़किर [illegible] उसमें मिला कर सलाई बनावे और स्त्री संभोगसे पहिले और [illegible] पर कपड़ा यों उसमें [illegible] करके रक्खे तो गर्भ [illegible] के उपरान्त [illegible] को मूत्रस्था[illegible] और [illegible] मूत्रेन्द्रियमें उठाना और मूत्रे[illegible] [illegible] रखना गर्भ रहनेको रोकना

बालक के जनने के दर्द से मरजायगी अथवा किसी बड़े रोग में फसजायगी कि जिसमें गर्भके कारण से मरने का भय हो या गर्भस्थानमें कोई ऐसा रोग हो कि बालक के बड़े होने से पहिले गर्भवती स्त्री की मृत्यु का सन्देह हो तो गर्भ के गिराने का उपाय करें और जानना चाहिये कि जब बालक जनने के दर्द चार दिन तक रहें और बालक न उत्पन्न हो तो जानलें कि मर गया उसी समय गर्भवती के बचाने का उपाय करें और जो उपाय वर्णन होचुके हैं काम में लावें और यह दवा विशेष गुणकारी है यह मरे बालक और झिल्ली को निकालती है (विधि) इन्द्रायन का गूदा, कूट, तुलसी के पत्ता म० ७ माशे, सबको महीन करके बैलके पित्तमें मिलाकर टूंडीसे लेकर पेडू और मूत्रेन्द्रिय आदि तक लेप करें और बच्चे के पेट में मरजाने का चिन्ह यह है कि बालक पेटमें कड़ा होजाय और जब कि गर्भवती स्त्री करवट ले तो यह मालूम हो कि एक पत्थर इधर उधर से गिरता है और पहिलेकी अपेक्षा टूंडी ठंडी होजाय और छाती दुबली हो जाय और आंख की सफेदी में कालापन आजाय और कभी ऐसा होता है कि कान सिर और नाक सफेद होजाय और होठों का रंग लाल हो।

नवां भेद गर्भ न रहने का उपाय।

इसका सम्पूर्ण विधान यह है कि पुरुष संगम के समय स्त्री का बहुत आलिंगन न करे और पावोंको ऊंचा न उठावे और वीर्य स्खलित होनेके समय जहांतक होसके मूत्रेन्द्रिय को बाहरकी ओर खिंची रक्खे और इस बातमें परिश्रम करें कि उसका और स्त्रीका साथर वीर्य स्खलित न हो और वीर्य स्ख लित होनेके उपरान्त जल्द अलग होजाय और स्त्री भी जल्द उठे और सात बार तथा नौ बार अगली तरफ कूदे और छींकलेवै जिससे वीर्य गर्भस्थानमेंसे निकल पड़े और मूत्रेन्द्रिय का अग्रभाग तिल्ली के तेल में चिकना करें तो वीर्य को फिसलाता है और गर्भस्थान में नहीं ठहरने देता और अनार के दानों में जो पीला गूदा होता है उसको कूटकर और पिसकर [illegible] उसमें मिला कर सलाई बनावे और स्त्री सम्भोगसे पहिले और [illegible] पर कपड़ा या रुईमें लपेट करके रक्खे तो गर्भ [illegible] सम्भोग के उपरान्त पिसे को मूत्रस्था[illegible] [illegible] मूत्रेन्द्रियमें लगाना और मूत्रे[illegible] नदर रखना गर्भ रहनेसे रोकता [illegible]

बालक के जनने के दर्द से मरजायगी अथवा किसी बड़े रोग में फसजायगी कि जिसमें गर्भके कारण से मरने का भय हो या गर्भस्थानमें कोई ऐसा रोग हो कि बालक के बड़े होने से पहिले गर्भवती स्त्री की मृत्यु का भदद हो तो गर्भ के गिराने का उपाय करें और जानना चाहिये कि जब बालक जनने के दर्द चार दिन तक रहें और बालक न उत्पन्न हो तो जानलें कि मर गया उसी समय गर्भवती के बचाने का उपाय करें और जो उपाय वर्णन होचुके हैं काम में लावें और यह दवा विशेष गुणकारी है यह मरे बालक और झिल्ली को निकालती है (विधि) इन्द्रायन का गूदा, कूट, तुलसी के पत्ता प्र० ७ माशे, सबको महीन करके बैलके पित्तेमें मिलाकर रूईसे लेकर पेडू और मूत्रेन्द्रिय आदि तक लेप करें और बच्चे के पेट में मरजाने का चिन्ह यह है कि बालक पेटमें कड़ा होजाय और जब कि गर्भवती स्त्री करवट ले तो यह मालूम हो कि एक पत्थर इधर उधर से गिरता है और पहिले की अपेक्षा टूडी ठंडी होजाय और छाती दुबली हो जाय और आंख की सफेदी में कालापन आजाय और कभी ऐसा होता है कि कान सिर और नाक सफेद होजाय और होठों का रंग लाल हो।

नवां भेद गर्भ न रहने का उपाय।

इसका सम्पूर्ण विधान यह है कि पुरुष संगम के समय स्त्री का बहुत आलिंगन न करे और पावोंको ऊंचा न उठावे और वीर्य स्खलित होनेके समय जहांतक होसके मूत्रेन्द्रिय को बाहरकी ओर खिंची रक्खे और इस बातमें परिश्रम करे कि उसका और स्त्रीका साथर वीर्य स्खलित न हो और वीर्य स्खलित होनके उपरान्त जल्द अलग होजाय और स्त्री भी जल्द उठे और सात बार नया नौ बार अगली तरफ कूदे और छींकलेवे जिससे वीर्य गर्भस्थानमेंसे निकल पड़े और मूत्रेन्द्रिय का अग्रभाग तिली के तेल में चिकना करे सो वीर्य को फिसलाता है और गर्भस्थान में नहीं ठहरने देता और अनार के दानों में जो पत्ली गूदा होता है उसको कूटकर और फिटकिरी पीसकर उसमें मिला कर सलाई बनावे और स्त्री संभोगमें पहिले और उसके उपरान्त पूर्वस्थान पर कपड़ा को रवामें नरमदा करके रक्खे तो गर्भ रहने से रोकता है और संभोग के उपरान्त सिर्के का मूत्रस्थानमें रखना और पोदीना संयोग से पहिले मूत्रेन्द्रियमें उठाना और मूलेकी मींगीको शहदमें मिलाकर संभोग के पूर्व स्थानपर रखना गर्भ रहनेको रोकता है और जो सिरसाका मूल और आटेका पुआ

बालक के जनने के दर्द से मरजायगी अथवा किसी बड़े रोग में फसजायगी
कि जिसमें गर्भके कारण से मरने का भय हो या गर्भस्थानमें कोई ऐसा रोग
हो कि बालक के बड़े होने से पहिले गर्भवती स्त्री की मृत्यु का भय हो तो
गर्भ के गिराने का उपाय करें और जानना चाहिये कि जब बालक जनने के
दर्द चार दिन तक रहें और बालक न उत्पन्न हो तो जानलें कि मर गया
उसी समय गर्भवती के बचाने का उपाय करें और जो उपाय वर्णन होचुके हैं
काम में लावें और यह दवा विशेष गुणकारी है यह मरे बालक और झिल्ली
को निकालती है (विधि) इन्द्रायन का गूदा, कूट, तुलसी के पत्ता प्र० ७
माशे, सबको महीन करके बैलके पित्तेमें मिलाकर रूईसी लेकर पेड़ू और मूत्रे-
न्द्रिय आदि तक लेप करें और बच्चे के पेट में मरजाने का चिन्ह यह है कि
बालक पेटमें कड़ा होजाय और जब कि गर्भवती स्त्री करवट ले तो यह मालूम
हो कि एक पत्थर इधर उधर से गिरता है और पहिले की अपेक्षा टूंडी ठंडी
होजाय और छाती दुबली हो जाय और आंख की सफेदी में कालापन
आजाय और कभी ऐसा होता है कि कान सिर और नाक सफेद होजाय
और होठों का रंग लाल हो ।

नवां भेद गर्भ न रहने का उपाय ।

इसका सम्पूर्ण विधान यह है कि पुरुष समागम के समय स्त्री का बहुत
आलिंगन न करे और पांवोंको ऊंचा न उठावे और वीर्य स्खलित होनेके समय
प्रतीत होसके मूत्रेन्द्रिय को बाहरकी ओर खिंची रक्खे और इस बातमें परि-
श्रम करें कि उसका और स्त्रीका साथर वीर्य स्खलित न हो और वीर्य स्ख
लित होनेके उपरान्त जल्द अलग होजाय और स्त्री भी जल्द उठे और सात
बार तथा नौ बार अगली तरफ कूदे और छींकलेवै जिससे वीर्य गर्भस्थानमेंसे
निकल पड़े और मूत्रेन्द्रिय का अग्रभाग तिली के तेल में चिकना करें तो
वीर्य को फिसलाता है और गर्भस्थान में नहीं ठहरने देता और अनार के दानों
में जो पीला गूदा होता है उसको कूटकर और पिचकारी पीसकर उसमें [illegible]
कर सलाई बनावे और स्त्री समागमसे पहिले और उसके उपरांत पूर्व स्थान
पर कपड़ा को [illegible] करके रक्खे तो गर्भ रहने से रोकता है और
संभोग के उपरान्त पित्ते का मूत्रस्थानमें रखना और पोदीना संयोग से पहि-
ले मूत्रेन्द्रियमें उठाना और मूलेकी [illegible] [illegible] मूत्रेन्द्रिय स्था-
नपर रखना गर्भ रहनेको रोकता है और जो सिरस का भूसा और [illegible]

मवाद निकृष्ट उत्पत्ति की सूरत बनजाता है और सच्चे गर्भ में और झूठे गर्भ में यह अंतर है कि रोग में पेट कड़ा और हाथ पांव सुस्त और ढीले रहते हैं और उसकी गति बालक कीसी नहीं होती किंतु जब पेटपर हाथ रक्खे तो एक जगह से दूसरी जगह होजाय और बालक जो अपने आप हिलताहै वह औरऔर प्रकार का होता है और उत्पत्ति का समय बीतजाय और चार पांच वर्ष तक रहै किंतु किसी २ स्त्री को सब उम्र रहता है और इलाज से अच्छा नहीं होता और यह रोग इलाज में दर्द होने और समय व्यतीत होजाने से जलन्धर उत्पन्न करदेता है और झूठे गर्भ और जलन्धर में अन्तर प्रगट है अर्थात् कठोरता और कड़ापन के होने से जो झूठे गर्भ के लिये मुख्य है और जलन्धर के मुख्य के चिन्हों के न होने से और यह रोग कई प्रकार का होता है पहला तो यह है कि गर्भस्थान के मुखमें या अग में बड़ी सूजन उत्पन्न हो इस कारण से रज बन्द होजाय और जो चीज उसके योग्य है उत्पन्न हो और उसके चिन्ह, और इलाजवही हैं जो गर्भस्थान की कठोर सूजन में वर्णन किये जायगे और दूसरा यह है कि बहुत से अधिक गर्म दोष गर्भस्थान पर गिरैं और उनमें से जो कुछ पतले और हलके हैं नष्ट होजाय और बाकी गाढे और जमकर रहजांय और कदाचित् यह गाढा मवाद गर्मी के गुण से छोटे मास के टुकड़े के समान हो जाय और उसका यह चिन्ह है कि गर्भस्थानमें गर्म दुष्ट प्रकृति आजाय उस के उपरान्त झूठा गर्भ उत्पन्न हो और गर्भस्थान के ओर पास गर्मी का होना इस बातको पुष्ट करता है (इलाज) जो गर्मी और खून विशेष है तो बासलीक और साफन की फस्द खोले और जब गर्मी नष्ट होजाय अथवा और प्रकार का मवाद हो तो मवाद के पकाने के लिये प्रतिदिन जौ का पानी, बेद अंजीर का तेल मिलाकर दें और सौंफ, कासनी के बीज, अमलबद के बीज, और हंसराज का काढा गुलकन्द मिलाकर लाभकारक है और मवाद के पचने के उपरान्त यारज की गोली, सुनजन की गोली, कुन्दरू गोंद की गोली, से कई बार मवाद को निकालें और यारज लौगाजिया और यारज जालीनूस लाभदायक है और मवाद के निकलने के पीछे दहमरमा और दवाउल किरदमानीरियाक अरया का काढा, तिर्मिस, देवदारु, पहाड़ी पोदीना आदि के साथ दें जो चीज कि मदे और गीला बालक को निकाल दे जिससे मवाद की जड़ उखड़ जाय और सौंफ, मातर, पहाड़ी किरमिया, बाबूना नागकेशर, अजवाइन के पानी में मिलाकर पेट पर लेप करें और मधेंडी और तुलसी का रस मर्द

मवाद निकृष्ट उत्पत्ति की सूरत बनजाता है और सच्चे गर्भ में और झूठे गर्भ में यह अंतर है कि रोग में पेट कड़ा और हाथ पांव सुस्त और ढीले रहते हैं और उसकी गति बालक कीसी नहीं होती किंतु जब पेटपर हाथ रक्खे तो एक जगह से दूसरी जगह होजाय और बालक जो अपने आप हिलता है वह औरऔर प्रकार का होता है और उत्पत्ति का समय बीतजाय और चार पांच वर्ष तक रहै किंतु किसी २ स्त्री को सब उम्र रहता है और इलाज से अच्छा नहीं होता और यह रोग इलाज में दर्द होने और समय व्यतीत होजाने से जलन्धर उत्पन्न करदेता है और झूठे गर्भ और जलन्धर में अन्तर प्रगट है अर्थात् कठोरता और कड़ापन के होने से जो झूठे गर्भ के लिये मुख्य है और जलन्धर के मुख्य के चिन्हों के न होने से और यह रोग कई प्रकार का होता है पहला तो यह है कि गर्भस्थान के मुखमें या अंग में बड़ी सूजन उत्पन्न हो इस कारण से रज बन्द होजाय और जो चीज उसके योग्य है उत्पन्न हो और उसके चिन्ह और इलाजवही हैं जो गर्भस्थान की कठोर सूजन में वर्णन किये जायगे और दूसरा यह है कि बहुत से अधिक गर्म दोष गर्भस्थान पर गिरैं और उनमें से जो कुछ पवित्र और हलके हैं नष्ट होजाय और बाकी गाढे और जमकर रहजांय और कदाचित् यह गाढा मवाद गर्मी के गुण से छोटे मास के टुकड़े के समान हो जाय और उसका यह चिन्ह है कि गर्भस्थानमें गर्म दुष्ट प्रकृति आजाय उस के उपरान्त झूठा गर्भ उत्पन्न हो और गर्भस्थान के ओर पास गर्मी का होना इस बातको पुष्ट करता है (इलाज) जो गर्मी और खून विशेष है तो बासलीक और साफन की फस्द खोले और जब गर्मी नष्ट होजाय अथवा और प्रकार का मवाद हो तो मवाद के पकाने के लिये प्रतिदिन जौ का पानी, बेद अंजीर का तेल मिलाकर दे और सौंफ, कासनी के बीज, अमलतास के बीज, और कुसीसांप का काढा गुलकन्द मिलाकर लाभकारक है और मवाद के पकने के उपरान्त यारज की गोली, मुक्तजन की गोली, कुन्दरु गोंद की गोली, से कई बार मवाद को निकालें और यारज लोगाजिया और यारज जालीनूस लाभदायक है और मवाद के निकलने के पीछे दहमरमा और दवाउल किब्रमासिरियाक अरबा का काढा, तिर्मिस, देवदारु, पहाडी पोदीना आदि के साथ दे जो चीज कि मरे और जीत बालक को निकाल दे जिससे मवाद की जड उखड़ जाय और जीरा, मातर, पहाडी कलमिया, बाबूना आकजीर, अजमोद मिलाकर पेट पर लेप करें और बबूल और तुलसी का तेल मले

दर्द और कष्ट से भय न करै कि जो कुछ गर्भस्थान में है तीसरे दिन बिल्कुल बाहर आजायगा और परीक्षा किया हुआ है (दूसरा नुसखा) सूल, जावशीर, कुटकी प्रत्येक बराबर बैल के पित्त में मिलाकर सलाई बनावें।

चौथा प्रकरण

अधिक रज के बहने का वर्णन

यह दो प्रकार का है एक तो यह है कि जो रज के दिनों में विशेष खून आवे दूसरे यह है कि यद्यपि रजोधर्म के दिन बीत जांय परन्तु रज बहता रहे अथवा रजस्वला के दिनो के सिवाय उत्पन्न हो और बहा करै उसको इस्त हाजा कहते हैं और कारणों की विरुद्धता से इस रोग के कई भेद हैं पहला भेद यह है कि खून विशेष हो जाय और तबियत उसको इस मार्ग से निकाल दें और उसका चिन्ह शरीर और मुख भर भराया हुआ लाल मालूम होने लगें और रगों का भरा रहना और सिवाय विशेष खून निकलने के शरीर की शक्ति और रंग का न बदलजाना किन्तु कभी ऐसा होता है कि जितना खून निकलताहै उतनी ही शक्ति घटती है इसी कारणसे उसका बन्द करना उचितहै जबतक कि शक्ति में निर्बलता और रंग न बदल जाय और यह बहुधा उसको उत्पन्न होताहै जिसको धन और स्वतंत्रता प्राप्त हो (इलाज)बासलीक की फस्द खोलें जिससे खून कम होजाय और इस ओरसे चलाजाय और आवश्यकताके अनुसार खून न निकले एक बारमें या दो बारमें तथा कईबारमें और दोनोंस्तन कसकर बांधलें और इन को मलें और स्तनोंके नीचे बड़े गिलास लगावें और खून के रोकनेके लिये गुलनारीगोंद की टिकियादें और रजके रोकने वाली सलाई काममें लावें (गुलनारी गोंद की विधि) कतीरा, नशास्ता, सफेद अरबी, ककड़ी, खीराके बीज की गिरी म० ३॥ माशे अनार के फूल ७ माशे अकाकिया कहरवा प्र० ३॥ माशे कूटछान कर बारतंग पानीमें टिकिया बनावें। इस की मात्रा ४ माशे है सुर्फा का शीरा अथवा शर्बत अंजवारके साथदें। शियाफ़ मुमासिक (रज को रोकनेवाली सलाई की विधि), सुर्मा, अनार के फूल, फिटकिरी, सुहागा, कुन्दरगोंद का बुरादा, माजू, अकाकिया, बराबर लेकर कूट छानकर लम्बी बत्ती बनावें और भावरें कि उनमें से एक गर्भस्थानके मुखमें रक्खें और जब वह बहजाय तो दूसरी रक्खें यहां तक कि रज बन्द होजाय और जो माजू कूटकर औटावें और उस

दर्द और कष्ट से भय न करें कि जो कुछ गर्भस्थान में है तीसरे दिन बिल्कुल बाहर आजायगा और परीक्षा किया हुआ है (दूसरा नुसखा) मूल, जावशीर, कुटकी प्रत्येक बराबर बैल के पित्ते में मिलाकर सलाई बनावें।

चौथा प्रकरण

अधिक रज के बहने का वर्णन

यह दो प्रकार का है एक तो यह है कि जो रज के दिनों में विशेष खून आवे दूसरे यह है कि यद्यपि रजोधर्म के दिन बीत जांय परन्तु रज बहता रहै अथवा रजस्वला के दिनो के सिवाय उत्पन्न हो और बहा करै उसको इस्त हाजा कहते हैं और कारणों की विरुद्धता से इस रोग के कई भेद हैं पहला भेद यह है कि खून विशेष हो जाय और तबियत उसको इस मार्ग से निकाल दें और उसका चिन्ह शरीर और मुख भर भराया हुआ लाल मालूम होने लगैं और रगों का भरा रहना और सिवाय विशेष खून निकलने के शरीर की शक्ति और रंग का न बदलजाना किन्तु कभी ऐसा होता है कि जितना खून निकलताहै उतनी ही शक्ति बढ़ती है इसी कारणसे उसका बन्द करना न चाहिये जबतक कि शक्ति में निर्बलता और रंग न बदल जाय और यह बहुधा उसको उत्पन्न होताहै जिसको धन और स्वतंत्रता प्राप्त हो (इलाज) बासलीक की फस्द खोलें जिससे खून कम होजाय और इस ओरसे चलाजाय और आवश्यकताके अनुसार खून न निकले एक बारमें या दो बारमें तथा कईबारमें और दोनों स्तन कसकर बांधलें और इन को मलें और स्तनों के नीचे बड़े गिलास लगावें और खून के रोकनेके लिये सुनहरीगोंद की टिकियादें और रजके रोकने वाली सलाई काममें लावें (सुनहरी गोंद की विधि) कतीरा नशास्ता, समग अरबी, ककड़ी, खीराके बीज की गिरी प्र० ३॥ माशे अनार के फूल ७ माशे अकाकिया कहरबा प्र० ३॥ माशे कूटछान कर बारतंग पानीमें टिकिया बनावें। इस की मात्रा ४ माशे है सुर्फा का शीरा अथवा शर्बत अंजबारके साथदें। शियाफ मुमसिक (रज को रोकनेवाली सलाई की विधि, सुर्मा, अनार के फूल, फिटकिरी, सुहागा, कुन्दकोंदर का बुरादा, माजू, अकाकिया, बराबर लेकर कूट छानकर लम्बी बत्ती बनावें और भिगोवें कि उनमें से एक गर्भस्थानके मुखमें रक्खें और जब वह बहजाय तो दूसरी रक्खें यहां तक कि रज बन्द होजाय और जो माजू कूटकर औटावें और इस

दर्द और कष्ट से भय न करें कि जो कुछ गर्भस्थान में है तीसरे दिन बिल्कुल बाहर आजायगा और परीक्षा किया हुआ है (दूसरा नुसखा) एलुआ, जावशीर, कुटकी प्रत्येक बराबर बैल के पित्त में मिलाकर सलाई बनावें।

चौथा प्रकरण

अधिक रज के बहने का वर्णन

यह दो प्रकार का है एक तो वह है कि जो रज के दिनों में विशेष खून आवे दूसरे यह है कि यद्यपि रजोधर्म के दिन बीत जांय परन्तु रज बहता रहै, अथवा रजस्वला के दिनो के सिवाय उत्पन्न हो और बहा करै उसको इस्तहाजा कहते हैं और कारणों की विरुद्धता से इस रोग के कई भेद हैं पहला भेद वह है कि खून विशेष हो जाय और तबियत उसको इस मार्ग से निकाल दे और उसका चिन्ह शरीर और मुख भर भराया हुआ लाल मालूम होने लगे और रगों का भरा रहना और सिवाय विशेष खून निकलने के शरीर की शक्ति और रंग का न बदलजाना किन्तु कभी ऐसा होता है कि जितना खून निकलताहै उतनी ही शक्ति बढ़ती है इसी कारणसे उसका बन्द करना वर्जितहै जबतक कि शक्ति में निर्बलता और रंग न बदल जाय और यह बहुधा उसको उत्पन्न होताहै जिसको धन और स्वतंत्रता प्राप्त हो (इलाज) रास लीक की फस्द खोलें जिससे खून कम होजाय और इस ओरसे बलागाय और आवश्यकताके अनुसार खून न निकले एक बारमें या दो बारमें तथा कईबारमें और दोनों स्तन कसकर बांधलें और इन को मलें और स्तनोंके नीचे बड़े गिलास लगावें और खून के रोकनेके लिये सुनहरीगोंद की टिकियाबें और रक्त रोकने वाली सलाई काममें लावें (सुनहरी गोंद की विधि) कतीरा नशास्ता, समग अरबी, ककड़ी, खीराके बीज की गिरी प्र० ३॥ माशे अनार के फूल ७ माशे अर्काकिया कहरुबा प्र० ३॥ माशे कूटछान कर बारतंग पानीमें टिकिया बनावें। इस की मात्रा ४ माशे है सुर्फा का शीरा अथवा शर्बत अनारके साथमें। सियाफ मुमासिक (रज को रोकनेवाली) सलाई की विधि, सुर्मा, अनार के फूल, फिटकिरी, सुहागा, कुन्दरगोंद का बुरादा, मस्तू अकाकिया, बराबर लेकर कूट छानकर लम्बी बत्ती बनावें और भिगोवें इ-नमें से एक गर्भस्थानके मुखमें रक्खें और जब वह बहजाय तो दूसरी रक्खे यहां तक कि रज बन्द होजाय और जो मालू कूटकर औटावें और उस

दर्द और कष्ट से भय न करैं कि जो कुछ गर्भस्थान में है तीसरे दिन निस्सन्देह बाहर आजायगा और परीक्षा किया हुआ है (दूसरा नुसखा) पूल, जावशीर, कुटकी प्रत्येक बराबर बैल के पित्त में मिलाकर सलाई बनावें।

चौथा प्रकरण

अधिक रज के बहने का वर्णन

यह दो प्रकार का है एक तो वह है कि जो रज के दिनों में विशेष खून आवे दूसरे यह है कि यद्यपि रजोधर्म के दिन बीत जांय परन्तु रज बहता रहै, अथवा रजस्वला के दिनो के सिवाय उत्पन्न हो और बहा करै उसको इस्त हाजा कहते हैं और कारणों की विरुद्धता से इस रोग के कई भेद हैं पहला भेद यह है कि खून विशेष हो जाय और तबियत उसको इस मार्ग से निकाल दे और उसका चिन्ह शरीर और मुख भर भराया हुआ लाल मालूम होनें लगै और रगों का भरा रहना और सिवाय विशेष खून निकलने के शरीर की शक्ति और रंग का न बदलजाना किन्तु कभी ऐसा होता है कि जितना खून निकलताहै उतनी ही शक्ति बढ़ती है इसी कारणसे उसका बन्द करना वर्जितहै जबतक कि शक्ति में निर्बलता और रंग न बदल जाय और यह बहुधा उसको उत्पन्न होताहै जिसको धन और स्वतन्त्रता प्राप्त हो (इलाज) रास लीक की फस्द खोलें जिससे खून कम होजाय और इस ओरसे सचालगाय और आवश्यकताके अनुसार खून न निकलै एक बारमें या दो बारमें तथा कईबारमें और दोनों स्तन कसकर बांधलें और इन को मलें और स्तनोंके नीचे बड़ सिङ्गाम लगावें और खून के रोकनेके लिये सुनहरीगोंद की टिकियावें और रक्त रोकने वाली सलाई काममें लावें (सुनहरी गोंद की विधि) कतीरा नशास्ता, समग अरबी, ककड़ी, खीराके बीज की मिंगी प्र० ३॥ माशे अनार के फूल ७ माशे अकाकिया कहरुवा प्र० २॥ माशे हूदखान कर बारतंगके पानीमें टिकिया बनावें। इस की मात्रा ४ माशे है सुर्फा का शीरा अथवा शर्बत अनारके साथमें। शियाफ मुमासिक (रज को रोकनेवाली सलाई की विधि, सुर्मा, अनार के फूल, फिटकिरी, सुहागा, कुन्दरगोंद का बुरादा, मस्तूं अकाकिया, बराबर लेकर कूट छानकर लम्बी बत्ती बनावें और भिगावें कि उनमें से एक गर्भस्थानके मुखमें रक्खें और जब वह गलजाय तो दूसरी रक्खे यहां तक कि रज बन्द होजाय और जो मासू कूटकर औंगावें और उस

बैठना और इससे गुदा प्रक्षालन करना, चन्दन अकाकिया, गुलनार के फूल, तुतरुग, अनार की छाल, अधौरा कूट कर पेड़ू पर लेप करना और सुर्मा की सलाई उठाना अधिक लाभदायक है (लाभ) उचित है कि पित्तके निकालने के पीछे हीरादुखी गोंद और तनूर की फिटकरी महीन पीस कर खट्टे अनार के शर्बत में मिलाकर चटावें और अजबार के रेशा, खुर्फा के बीज, शल्केकाह के छिले हुए बीज, अध कुचले, जरिश्क के पानी में भिगोकर छानकर शर्बत अजबार विलायती मिलाकर पिलावें तीसरा भेद यह है कि पानी की तरी शरीर में विक्षेप हो इस कारण से खून पतला होजाय और रगों के मुख सुस्त होजाय इस कारण से बहने लगें और उसका चिन्ह खून का पतला और सुफेद होना और दूसरी प्रकार के चिन्हों का न होना और कफ के सब चिन्हों का प्रगट होना है (इलाज) कई बार वमन करावे और बारजात दे और भोजन और पीने की चीजों में से जो चीज खुश्की उत्पन्न करती हो लाभदायक है और ऐसे ही उचित लेप लगावे और सलाई काम में लावे। चौथा भेद यह है कि पित्त विक्षेप हो और गर्भस्थान की रगों के मुख खोलदे और उसके चिन्ह और इलाज वही हैं जो दूसरे भेद में अर्थात् जहां खून पतला और तेज होजाता है उसका वर्णन होचुका है। पांचवां भेद यह है कि बादी के गर्म दोष उन रगों के मुख खोलदें उसका यह चिन्ह है कि खून काला हो और कदाचित् स्याह या हरा रंग आवे (लाभ) जो साफ और नई रुई आग पर गर्म करके उसको मूत्रमार्ग में रक्खे और सब रात रहने दें और सवेरे के समय उसको निकाल कर छायामें सुखा दें तो इस रुई का रंग हेतु के पहचानने में बलवान् परीक्षा है जैसे जो सफेद है तो यह रतूबत रूकरी है और जो काली या स्याह रंग या हरी हो तो बादी की तरी है और जो पीली हो तो पित्त की तरी है और रुई गर्म करने की इसलिये आवश्यकी है कि दाग का रंग इस पर अच्छी तरह आवे और उसका निर्णय जब होता है कि कारण निर्बल हो और थोड़ा हो और दूसरे चिन्हों से पहचान सके और नहीं तो जहां कहीं कि प्रत्येक के चिन्ह अच्छी तरह प्रगट होतो प्रत्येक के कारण के होने पर प्रत्यक्ष परीक्षा है और इतना कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है (इलाज) बादी के निकालने के लिये आफतून तेल का काढ़ा दे और उचित है कि बासलीक की फस्द खोलें जो कोई बाधे वर्जित न हो और दूसरे भोजन और दवा और सलाई जो वर्णन होचुकी हैं लाभदायक है छठा भेद यह है कि गर्भस्थान के बवासीरी मस्से रज के जारी होने का का

बैठना और इससे गुदा प्रक्षालन करना, चंदन अकाकिया, गुलार के फूल, तुतरग, अनार की छाल, अर्थारा कूट कर पेड़ू पर लेप करना और सुर्मा की सलाई उठाना अधिक लाभदायक है (लाभ) उचित है कि पित्त के निकालने के पीछे हींगदुखी गोंद और तनूर की फिटकरी महीन पीस कर खट्टे अनार के शर्बत में मिलाकर चटावें और अजवार के रेशा, खुर्फा के बीज, फल्ले फार के छिले हुए बीज, अध कुचले, जरिश्क के पानी में भिगोकर छानकर शर्बत अजवार विलायती मिलाकर पिवावें तीसरा भेद यह है कि पानी की तरी शरीर में विशेष हो इस कारण से खून पतला होजाय और रगों के मुख सुस्त होजाय इस कारण से बहने लगें और उसका चिन्ह खून का पतला और सुफेद होना और दूसरी प्रकार के चिन्हों का न होना और कफ के सब चिन्हों का प्रगट होना है (इलाज) कई बार वमन करावे और यारजात दे और भोजन और पीने की चीजों में से जो चीज खुश्की उत्पन्न करती हो लाभदायक है और ऐसे ही उचित लेप लगावे और सलाई काम में लावे। चौथा भेद यह है कि पित्त विशेष हो और गर्भस्थान की रगों के मुख खोलदे और उसके चिन्ह और इलाज वही हैं जो दूसरे भेद में अर्थात् जहां खून पतला और तेज होजाता है उसका वर्णन होचुका है। पांचवां भेद यह है कि बादी के गर्म दोष उन रगों के मुख खोलदें उसका यह चिन्ह है कि खून काला हो और कदाचित् स्याह या हरा रंग आवे (लाभ) जो साफ और नई रुई आग पर गर्म करके उसको मूत्रमार्ग में रखले और सब रात रहने दें और सवेरे के समय उसको निकाल कर छायामें सुखा दें तो इस रुई का रंग हेतु के पहचानने में बलवान् परीक्षा है जैसे जो सफेद है तो यह रतूबत कफकी है और जो काली या स्याह रंग या हरी हो तो बादी की तरी है और जो पीली हो तो पित्त की तरी है और रुई गर्म करने की इसलिये आवश्यकी है कि दोष का रंग इस पर अच्छी तरह आवे और इसका निर्णय जब होता है कि कारण निर्बल हो और थोड़ा हो और दूसरे चिन्हों से पहचान सके और नहीं तो जहां कहीं कि प्रत्येक के चिन्ह अच्छी तरह प्रगट होंतो प्रत्येक के कारण के होने पर प्रत्यक्ष परीक्षा है और इतना कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है (इलाज) बादी के निकालने के लिये आफतीमून का काढ़ा दे और उचित है कि बासलीक की फस्द खोले जो कोई कार्य वर्जित न हो और दूसरे भोजन और दवा और सलाई जो वर्णन होचुकी हैं लाभदायक हैं छठा भेद यह है कि गर्भस्थान के बवासीरी मस्से रज के जारी होने का का

बैठना और इससे गुदा प्रक्षालन करना, पटन अकाकिया, गुलाब के फूल, तुसरुग, अनार की छाल, अधीरा कूट कर पेड़ पर लेप करना और सुर्मा की सलाई उठाना अधिक लाभदायक है (लाभ) उचित है कि पित्तके निकालने के पीछे हीरादुखी गोंद और तनूर की फिटकरी महीन पीस कर खट्टे अनार के शर्बत में मिलाकर चटावें और अजवार के रेशा, खुर्फा के बीज, काले काहू के छिले हुए बीज, अथ कुचले, अरिक के पानी में भिगोकर छानकर शर्बत अजवार विलायती मिलाकर पिलावें तीसरा भेद वह है कि पानी की तरी शरीर में विशेष हो इस कारण से खून पतला होजाय और रगों के मुख सुस्त होजांय इस कारण से बहने लगें और उसका चिन्ह खून का पतला और सुफेद होना और दूसरी प्रकार के चिन्हों का न होना और कफ के सब चिन्हों का प्रगट होना है (इलाज) कई वार वमन करावे और मारजात दे और भोजन और पीने की चीजों में से जो चीज खुश्की उत्पन्न करती हो लाभदायक है और ऐसे ही उचित लेप लगावे और सलाई काम में लावे। चौथा भेद यह है कि पित्त विशेष हो और गर्भस्थान की रगों के मुख खोलदें और उसके चिन्ह और इलाज वही हैं जो दूसरे भेद में अर्थात् जहां खून पतला और तेज होजाता है उसका वर्णन होचुका है। पांचवा भेद यह है कि [illegible] हुआ कि गर्भस्थान [illegible] है कि [illegible]

[illegible] करना है कि गर्भस्थान में गर्द सूजन दोष के सम्पूर्ण पक जाने [illegible] फूट गई और जो पीब सफेद और गाढ़ा और चिकनाई में थोड़ा [illegible] साथ आता है और उसमें दुर्गन्धि नहीं हो तो इस बातका चिन्ह है [illegible] में पवित्र होना है क्योंकि पीब है सफेदी और गाढ़ा [illegible] कि इसमें [illegible] अपना गुन करे और इसका [illegible]

[illegible] और [illegible] है।

से [illegible] की अधिकता और [illegible]

[illegible] बालक के निकलने के [illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

खश्खाश के बीज प्रत्येक १४ माशे, समग अर्बी, कतीरा, नशास्ता मुलहटी प्रत्येक ३॥माशे कूटकर रक्खें और उसमें से १०॥ माशे के प्रमाण से लेकर शर्बत खशखाश और पीस्ती के साथ कि जो मोम और गुलरोगन से बनाई हो दें। और मूत्रके बढ़ानेवाली दवाओं का यह लाभ है कि पीब को मसाने से काटडाले और कीस्नी का यह लाभ है कि मसान के अंग पर चिपट जाय और पीबकी हानि से उस बचावै और जब कि पीब आना सीधी अन्तड़ीपर प्रगट हो तो उसके हटाने के लिये परिश्रम करें जिससे पीब उलटी फिर गर्भस्थान की तरफ जाय और आंतपर न पड़े क्योंकि गर्भस्थान का अंग विशेष कड़ाई पीबकी जलन को अन्तड़ियोंकी अपेक्षा विशेष सह सकताहै क्योंकि गर्भस्थान बलवान शक्ति बहुत थोड़ी रखता है यही कारण है कि हकीमों ने पीब को आंतों की तरफ से हटाकर गर्भस्थान की तरफ लौटाना अच्छा जानाहै। वह हुकना जो पीबको आंतोंपर नहीं गिरने देता है यह है कि चांवल, मसूर, अनार का छिल्का औटाकर उसके काढ़े में गिले अरमनी हीरा दूखीगोंद, समगअरबी, और मुर्गे के अण्डेकी जर्दी जो सिर्के में पकाई हो गुलरोगन मिलाकर आंत में मूत्रमार्ग के द्वारा पहुंचावें और जहां उसमें मांस गल गया हो और पीब हरी या काली अथवा गादके समान तथा पतले पानी के समान आती हो तो उचितहै कि उसके निकालनेके लिये परिश्रम करे जिससे निकम्मे भाग बिल्कुल दूरहोजांय और इसकामके लिये जौका पानी और शहद से तथा साबुन का पानी या मुलहटी के काढ़ेसे गर्भस्थानमें उगीश द्वारा पहुंचाना लाभदायक है और शहद दूध में औटाकर रूई तथा कपड़े उसमें भरकर उसको स्त्री के मूत्रस्थान पर रखना प्रत्येक घाव के लिये जो उस में गर्मी न हो विशेष लाभदायक है जब घाव पवित्र होजाय तो घाव के भरने वाली दवाओं में जिनका वर्णन होचुका है उन्हीके द्वारा गर्भस्थानमें पहुंचावें (लाभ) जब कि विशेष दर्द घाव में उत्पन्न हो तो अफीम और केसर स्त्रियों के दूध में घोल कर कपड़े में सान कर मूत्रस्थान पर रक्खे जिससे दर्द घटजाय और जो घाव गहरा हो तो किसी दवा से गर्भस्थानमें उसीके द्वारा पहुंचावें जिससे गर्भस्थान की गहराई में पहुंचजाय और दर्द को घटावे [illegible] जो [illegible] भी मोम [illegible] मिलाकर शहद और गुलरोगन के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

खशख्वाश के बीज प्रत्येक १४ माशे, समग अर्बी, कतीरा, नशास्ता मुल्हटी प्रत्येक ३॥ माशे कूटकर रक्खें और उसमें से १०॥ माशे के प्रमाण से लेकर शर्बत खशखाश और खीरों के साथ कि जो मांम और गुल्रोगन से बनाई हो दें । और मूत्र के बढ़ानेवाली दवाओं का यह लाभ है कि पीव को मसाने से काटडाले और फीमनी का यह लाभ है कि मसाने के अंग पर चिपट जाय और पीवकी हानि से उस बचावे और जब कि पीव आना सीधी अन्तड़ीपर प्रगट हो तो उसके हटाने के लिये परिश्रम करें जिससे पीव उल्टी फिर गर्भस्थान की तरफ जाय और आतपर न पड़े क्योंकि गर्भस्थान का अंग विशेष कड़ाहै पीवकी जलन को अन्तड़ियोंकी अपेक्षा विशेष सह सकताहै क्योंकि गर्भस्थान बलवान शक्ति बहुत थोड़ी रखता है यही कारण है कि हकीमों ने पीव को आतों की तरफ से हटाकर गर्भस्थान की तरफ लौटाना अच्छा जानाहै। यह हुकना जो पीवको आतोंपर नहीं गिरने देता है यह है कि चांवल, मसूर, अनार का छिलका औटाकर उसके काढ़े में गिले अरमनी हीरा दूखीगोंद, समगअरबी, और मुर्गे के अण्डेकी जर्दी जो सिर्के में पकाई हो गुलरोगन मिलाकर आंत में मूत्रमार्ग के द्वारा पहुंचावें और जहां उसमें मांस गल गया हो और पीव हरी या काली अथवा गादके समान तथा पीले पानी के समान आती हो तो उचितहै कि उसके निकालनेके लिये परिश्रम करें जिससे निकम्मे भाग बिल्कुल दूरहोजाय और इसवास्ते लिये जौका पानी और शहद से तथा साबुन का पानी या मुलहटी के काढ़ेसे गर्भस्थानमें उसीके द्वारा पहुंचाना लाभदायक है और शहद दूध में औटाकर कल तथा घी उसमें मक्खन [illegible] मूत्रस्थान पर रखना प्रत्येक घाव के लिये जो उस में गर्मी न हो विशेष लाभदायक है जब घाव पवित्र होजाय तो आर [illegible] भरने वाली दवाओं से जिनका वर्णन होचुका है उसीके द्वारा गर्भस्थानमें पहुंचावें (लाभ) जब कि विशेष दर्द घाव में उत्पन्न हो तो अफीम और केसर स्त्रियों के दूध में घोल कर कपड़े में सान कर मूत्रस्थान पर रक्खे जिससे दर्द घटजाय और जो घाव गहरा हो तो किसी दवा से गर्भस्थानके उसीके द्वारा पहुंचावें जिससे गर्भस्थान की गहराई में पहुंचजाय और दर्द को घटावे और जो [illegible] मीठे [illegible] मंगाकर शहद और गुलरोगन के [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रग से मालूम हो सकता है कि कौनसा कारण है इस प्रकार पर कि मूत्रमार्ग म ई रखकर अंग का देखे जैसे कि रज के रोग में वर्णन किया है और बहुत कालतक वीर्य का न निकलना उसकी तेजी को निर्णय करता है और दूसरे चिन्ह प्रत्येक के लिये मुख्य हैं वे प्रगट हैं उनसे जानना चाहिये कि गर्भ-स्थान की खुजली कभी इतनी विशेष होजाती है कि शक्ति निर्बल पड़जाती है और इस रोग का प्रभाव है कि रोगी संभोग से संतुष्ट नहीं होता और जितना विशेष करें उतना ही इच्छा विशेष होती है (इलाज) फस्द खोले और कारण के अनुसार मल के निकालने वाली दवाई और प्रलेप में चन्दन ,मामीसा, हस्सारह लहय्युतीस, हरा धनिया, खुर्फा और काहू का लेपकरना और गुल रोगन और बनफशा का तेल मलना लाभकारक है और यह दवा विशेष परीक्षा की हुई है पोदीना के पत्ता, अनार के छिलका और छिली मसूर कूट कर अंगूर की शराब में तथा सिर्के में मिलाकर औटावे और उन इस में भरकर प्रवेश करें और जहां कहीं वीर्य की तेजी इसका कारण हो तो ठंडी तर दवाएं जिन में थोड़ा नशाहो और जो पुरुष कर पुरुषों के रोगों के अध्याय में विशेष कामातुरता में वर्णन किये गये हैं व लाभ दायकहैं और मूत्रस्थानकी खुजलीका भी ऐसाही इलाजकरें जैसाकि वर्णन हुआहै

आठवा प्रकरण ।

गर्भस्थान के बवासीरी मस्से का वर्णन ।

जानना चाहिये कि जैसे मूत्रस्थानमें मस्से उत्पन्न होतेहैं वैसेही गर्भस्थान की गर्दनमें भी बादीके टोपस उत्पन्न होतेहैं और यह मस्से जो बाहर की तरफ होतेहैं तो सहज से दिखाई देते हैं और जो भीतर की तरफ गर्दनमें होतेहैं तो जब गर्भस्थान का मुख खोलते हैं तो मालूम होजाते हैं मुख्यकर जो उसके सन्मुख की रगत फिर [illegible] की तेजी और भरने का समय हो अथवा बन्द होजाय तो गर्भस्थान के बवासीरी मस्से के तो भागना मालूम और दर्द हो और नहीं तो [illegible] लिसदार (गाढ़) पानी जारी होरहता है और वर्णन की हुई दवाओं पानी और गर्मी है और उसमें दर्द नहीं होता है (इलाज) बादी के निकालने के लिये फस्द खोले और आहार मेलका काढ़ा पिलावें और तर भोजन जैसे हिरन का मांस, बकरी के बच्चा का मांस और उसके समान खवावें जिससे खून अपनी असली दशापर आजाय और नरगिस का तेल और सोसन का तेल मलें जिससे नष्ट हो और

रग से मालूम हो सकता है कि कौनसा कारण है इस प्रकार पर कि मूत्रमार्ग म र्दई रखवर अग का देखे जैसे कि रज के रोग में वर्णन किया है और बहुत कालतक वीर्य्य का न निकलना उसकी तेजी को निर्णय करता है और दूसरे चिन्ह प्रत्येक के लिये मुख्य है वे प्रगट हैं उनमे जानना चाहिये कि गर्भ-स्थान की खुजली कभी इतनी विशेष होजाती है कि शक्ति निर्बल पड़जाती है और इस रोग का प्रभाव है कि रोगी संभोग से सन्तुष्ट नहीं होता और जि तना विशेष करे उतना ही इच्छा विशेष होती है (इलाज) फस्द खोले और कारण के अनुसार मल के निकालने वाली दवाएं और प्रत्येक में चन्दन ,मा मीसा. अस्सारह लहय्युतीस. हरा धनिया. खुर्फा और काहू का लेपकरना और गुल रोगन और बनफशा का तेल मलना लाभकारक है और यह दवा विशेष परीक्षा की हुई है पोदीना के पत्ता. अनार के छिलका और छिली मसूर कूट कर अंगूर की शराब में तथा सिर्के में मिलाकर औटावे और उन इस में भरकर प्रवेश करे और जहां कहीं वीर्य्य की तेजी इसका कारण हो तो बड़ी तर दवाएँ जिन में थोड़ा नशाहो और जो मुख्य कर पुरुषों के रोगों के अध्याय में विशेष कामातुरता में वर्णन किये गये हैं व लाभ दायकहैं और मूत्रस्थानकी खुजलीका भी ऐसाही इलाजकरे जैसाकि वर्णन हुआहै

आठवां प्रकरण ।

गर्भस्थान के बवासीरी मस्से का वर्णन ।

जानना चाहिये कि जैसे मूत्रस्थानमें मस्से उत्पन्न होतेहैं वैसेही गर्भस्थान की गर्दनमें भी वासीरके दोषस उत्पन्न होतेहैं और यह मस्से जो बाहर की त रफ होतेहैं तो सहज से दिखाई देते हैं और जो भीतर की तरफ गहराई में होतेहैं तो जब गर्भस्थान का मुख खोलते हैं तो मालूम होजाते हैं मुख्यकर जो उसके सन्मुख और रक्त फिर ना [illegible] की तेजी और बहने का समय हो अथवा बन्द होजाय तो गर्भस्था[illegible] के बवासीरी दस्से में तो भागता साली और दर्द हो और नहीं तो [illegible] तिम्सह (गाद) जाता रहाही जिये जारी हो और वर्णन की हुई रतूबत पानी और पतली है और उसमें दर्द नहीं होताहै (इलाज) पानी के निकालने के लिये फस्द खोले और आहार बलवर्द्धक पिलावें और तर भोजन जैसे हिरन का मांस, बकरी के बच्चा का मांस और उसके समान खवावें जिससे खून अपनी असली दशापर आ जाय और नरगिस का तेल और सोसन का तेल मले जिससे नष्ट हों और

भोजन जैसे मुर्गी का अण्डा अधभुना और मोटे मुर्गे का शोरवा और उसका मांस, जवान बकरी का मांस और दूध और मिठाई विशेष खावें जिससे शरीर को शक्ति हो खून उत्पन्न हो और सोने आराम करने में लिप्त रहे और ऐसे न्हाने के स्थान पर न्हाय जहां गर्मी प्राप्त हो। दूसरा भेद यह है कि खून सर्दी के कारण गाढ़े दोषों के मिलने से गाढ़ा होजाय और उसका चिन्ह शरीर की सुस्ती सफेदी और रगों में ढीलापन और भूख विशेष आवे और कफ का मल आवे इस कारण से कि आमाशय के पचाव में बिगाड़ है और नींद में भारीपन मालूम हो और खून जो आवे तो पतला हो (इलाज) मवाद को मुलायम करने वाली दवा जैसे पारा आदि देवे जिससे गाढ़े दोष निकल जांय और उसके उपरान्त अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ, पहाड़ी पोदीना, आदि औटाकर शहद में तथा कन्द में माजून बनाकर खवावें जिससे खून पतला होकर सुगमता से बहजाय और सोया, दौनामरुवा पोदीना, तुलसी, बाबूना, अकलीलउलमलिक, सातर के काढ़े का भपारा देवें और बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब बिलसां, जायफल, छोटीइलायची, कूट आदि से जिस चीज में अन्तर पड़ा हो और गांठ के खोलने और मवाद के नर्म करने में उचित हो उनसे सिकाव करें और यही सुगन्धित उस दवा आग पर डालकर उसका धुंआ गर्भस्थान में पहुंचावें और जब खून पतला हो जाय तो साफिन और बासिन की फस्द और पिण्डलियों में पछने लगाना अधिक लाभदायक है और रज के आने से दो दिन पहिले ग्रहण करें जिससे यह न हो मवाद पक जाय न निकसे और निर्बलता उत्पन्न न हो और यह फस्द और पछने उस मनुष्य के लिये जिसका शरीर मोटा और मांस से भरा हो विशेष लाभदायक हैं और जो हकीम यत्न करें तो खून के पतले होने के पहले भी स्वीकार करे। तीसरा भेद यह है कि गर्भस्थान की रगों का मुख बन्द होजाय इस कारण से रज न आवे और यह दो प्रकार पर है प्रथम तो यह कि गर्भस्थान में विशेष गर्मी हो और खुश्की और अजीर्ण उत्पन्न हो और गर्भस्थान में जलन और खुश्की का होना उसका साक्षी है (इलाज) शीतल और सिमाक पोस्त के पानी पिसी, खतमी और ताजा कद्दू गाय और भेड़ की चर्बी में मिलाकर न्हावों को दवाई में पकावें एवं स्त्री के मूत्रस्थान पर कई दिन तक रक्खें और मुर्गी का शोरवा लाभदायक है और गर्भस्थान की गर्मी के दूर होने के दूसरे प्रकार

भोजन जैसे मुर्गी का अण्डा अधभुना और मोटे मुर्गे का शोरवा और उसका मांस, जवान बकरी का मांस और दूध और मिठाई विशेष खावैं जिससे शरीर की शक्ति हो खून उत्पन्न हो और सोने आराम करने में लिप्त रहै और ऐसे न्हाने के स्थान पर न्हाय जहां गर्मी मालूम हो। दूसरा भेद यह है कि खून सर्दी के कारण गाढ़े दोषों के मिलने से गाढ़ा होजाय और उसका चिन्ह शरीर की सुस्ती सफेदी और रगों में ढीलापन और मूत्र विशेष आवै और कफ का मल आवै इस कारण से कि आमाशय के पचाव में बिगाड़ है और नींद में भारापन मालूम हो और खून जो आवै तो पतला हो (इलाज) मवाद को मुलायम करने वाली दवा जैसे पारा आदि देवै जिनसे गाढ़े दोष निकल जांय और उसके उपरान्त अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ, पहाड़ी पोदीना, आदि औटाकर शहद में तथा कन्द में माजून बनाकर खावैं जिससे खून पतला होकर सुगमता से बहजाय और सोया, दोनामरूवा पोदीना, तुलसी, बाबूना, अकलीलउलमलिक, सातर के काढ़े का भपारा दें और बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब बिलसां, जायफल, छोटीइलायची, कूट आदि से जिस चीज में अन्तर पड़ा हो और गांठ के खोलने और मवाद के नर्म करने में उचित हो उनसे सिकाव करें और यही सुगन्धित उक्त दवा आग पर डालकर उसका धुंआ गर्भस्थान में पहुंचावें और जब खून पतला हो जाय तो साफिन और बासलीक की फस्द और पिण्डलियों में पछने लगाना अधिक लाभदायक है और रज के आने से दो दिन पहिले ग्रहण करें जिससे यह गाढ़ा मवाद एक साथ न निकले और निर्बलता उत्पन्न न हो और यह फस्द और पछने उस मनुष्य के लिये जिसका शरीर मोटा और मांस से भरा हो विशेष लाभदायक है और जो इसमें यह सन्देह हो खून के पतले होने के पहले भी स्वीकार करे। तीसरा भेद यह है कि गर्भस्थान की रगों का मुख बन्द होजाय इस कारण से रज न आवै और यह कई प्रकार पर है प्रथम तो यह कि गर्भस्थान में विशेष गर्मी हो और खुश्की और अजीर्ण उत्पन्न हो और गर्भस्थान में जलन और खुश्की का होना इसका साक्षी है (इलाज) बीजनिकाल और निशास्ता पोस्त के पानी पिये, खतमी और ताजा कद्दू का गूदा और मंद की चर्बी में मिलाकर दवाओं को कपड़े में लपेटकर स्त्री के गर्भस्थान पर कई दिन तक रक्खें और मुर्गी का शोरवा लाभदायक है और गर्भस्थान की गर्मी के दूर होने के दूसरे प्रकार

भोजन जैसे मुर्गी का अण्डा अधभुना और मोटेमुर्गे का शोरवा और उसका मांस, जवान वकरी का मास और दूध और मिठाई विशेष खावें जिससे शरीर को शक्ति हो खून उत्पन्न हो और सोने आराम करने में लिप्त रहें और ऐसे न्हाने के स्थान पर न्हाय जहां तरी प्राप्तहो । दूसरा भेद यहहै कि खून सर्दी के कारण गाढ़े दोषों के मिलनेसे गाढ़ा होजाय और उसका चिन्ह शरीर की सुस्ती सफेदी और रगों में ढीलापन और मूत्र विशेष आवे और कफ का मल आवे इस कारण से कि आमाशय के पचाव में बिगाड़ है और नींद में भारापन मालूम हो और खून जो आवे तो पतला हो (इलाज) मवाद को मुलायम करने वाली दवा जैसे पारा आदि देवें जिनसे गाढ़े दोष निकल जाय और उसके उपरान्त अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ, पहाड़ी पोदीना, आदि औटाकर शहद में तथा कन्द में माजून बनाकर खवावें जिससे खून पतला होकर सुगमता से बहजाय और सोया, दोनामरुवा पोदीना, तुलसी, बाबूना, अकलीलवलमलिक, सातर के काढ़े का भपारा दें और बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब बिलसां, जायफल, छोटीइलायची, कूट आदि से जिस चीज में अन्तर पड़ाहो और गांठ के खोलने और मवाद के नर्म करने में उचित हो उनसे सिकाव करें और यही सुगन्धित उक्त दवा आग पर डालकर उसका धुंआ गर्भस्थान में पहुंचावें और जब खून पतला हो जाय तो साफिन और मावित्र की फस्द और पिण्डलियों में पछने लगाना अधिक लाभदायक है और रज के आने से दो दिन पहिले ग्रहण करें जिससे यह रज मवाद एक साथ न निकले और निर्बलता उत्पन्न न हो और यह फस्द और पछने उस मनुष्य के लिये जिसका शरीर मोटा और मास से भरा हो विशेष लाभदायक हैं और जो हकीम योग्य समझे तो खून के पतले होने के पहले भी स्वीकार करे। तीसरा भेद यह है कि गर्भस्थान की रगों का मुख बन्द होजाय इस कारण से रज न आवे और यह कई प्रकार पर है प्रथम तो यह कि गर्भस्थान में विशेष गर्मी हो और खुश्की और अजीर्ण उत्पन्न हो और गर्भस्थान में अग्नि और खुश्की का होना उसका साक्षी है (इलाज) शीरखिश्त और मिमाक धोआके बीजकी मिंगी, खब्बाजी और साफ कूटकर शहद और अंडे की जर्दी में मिलाकर दवाओं को कपड़े में दरसेंद कर स्त्री के मूत्रस्थान पर कई दिन तक रक्खें और खुर्फा का सीरा लाभदायक है और गर्भस्थान की गर्मी के दूर होने के दूसरे उपाय

भोजन जैसे मुर्गी का अण्डा अधभुना और मोटेमुर्गे का शोरवा और उसका मांस, जवान बकरी का मास और दूध और मिठाई विशेष खावें जिससे शरीर को शक्ति हो खून उत्पन्न हो और सोने आराम करने में लिप्त रहें और ऐसे न्हाने के स्थान पर न्हाय जहां तरी प्राप्तहो । दूसरा भेद यहहै कि खून सर्दी के कारण गाढ़े दोषों के मिलनेसे गाढ़ा होजाय और उसका चिन्ह शरीर की सुस्ती सफेदी और रगों में लीलापन और मूत्र विशेष आवे और कफ का मल आवे इस कारण से कि आमाशय के पचाव में बिगाड़ है और नींद में भारापन मालूम हो और खून जो आवे तो पतला हो (इलाज) मवाद को मुलायम करने वाली दवा जैसे पारा आदि देवे जिनसे गाढ़े दोष निकल जाय और उसके उपरान्त अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ, पहाड़ी पोदीना, आदि औटाकर शहद में तथा कन्द में माजून बनाकर खवावें जिससे खून पतला होकर सुगमता से बहजाय और सोया, दोनामरुवा पोदीना, तुतली, बाबूना, अकलीलुलमलिक, सातर के काढ़े का भपारा दें और बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब बिलसां, जायफल, छोटीइलायची, कूट आदि से जिस चीज में अन्तर पड़ाहो और गांठ के खोलने और मवाद के नर्म करने में उचित हो उनसे सिकाव करें और यही सुगन्धित उक्त दवा आग पर डालकर उसका धुँआ गर्भस्थान में पहुंचावें और जब खून पतला हो जाय तो साफिन और मावित्र की फस्द और पिण्डलियों में पछने लगाना अधिक लाभदायक है और रज के आने से दो दिन पहिले ग्रहण करें जिससे यह सब मवाद एक साथ न निकले और निर्बलता उत्पन्न न हो और यह फस्द और पछने उस मनुष्य के लिये जिसका शरीर मोटा और मास से भरा हो विशेष लाभदायक हैं और जो हकीम योग्य समझे तो खून के पतले होने के पहले भी स्वीकार करे । तीसरा भेद यह है कि गर्भस्थान की रगों का मुख बन्द होजाय इस कारण से रज न आवे और यह कई प्रकार पर है प्रथम तो यह कि गर्भस्थान में विशेष गर्मी हो और खुश्की और अजीर्ण उत्पन्न हो और गर्भस्थान में अग्नि और खुश्की का होना उसका साक्षी है (इलाज) मोमरोगन और मिमाक घीआके बीजकी मिंगी, सब्जाजी और साफ कूटकर शहद और अंडे की जर्दी में मिलाकर दवाओं को कपड़े में पलेद कर स्त्री के मूत्रस्थान पर कई दिन तक रक्खें और खुर्फा का सीरा लाभदायक है और गर्भस्थान की गर्मी के दूर होने के दूसरे उपाय

भोजन जैसे मुर्गी का अण्डा अधभुना और मोटेमुर्गे का शोरवा और उसका मांस, जवान बकरी का मांस और दूध और मिठाई विशेष खावें जिससे शरीर को शक्ति हो खून उत्पन्न हो और सोने आराम करने में लिप्त रहै और ऐसे न्हाने के स्थान पर न्हाय जहा तरी प्राप्तहो। दूसरा भेद यहहै कि खून सर्दी के कारण गाढ़े दोषों के मिलनेसे गाढ़ा होजाय और उसका चिन्ह शरीर की सुस्ती सफेदी और रगों में लीलापन और मूत्र विशेष आवे और कफ का मल आवे इस कारण से कि आमाशय के पचाव में बिगाड़ है और नींद में भारापन मालूम हो और खून जो आवे तो पतला हो (इलाज) मवाद को मुलायम करने वाली दवा जैसे पारा आदि देवै जिनसे गाढ़े दोष निकल जांय और उसके उपरान्त अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ, पहाड़ी पोदीना, आदि औटाकर शहद में तथा कन्द में माजून बनाकर खवावें जिससे खून पतला होकर सुगमता से बहजाय और सोया, दोनामरुवा पोदीना, तुतली, बाबूना, अकलीलउलमलिक, सातर के काढ़े का भपारा दें और बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब बिलसां, जायफल, छोटीइलायची, कूट आदि से जिस चीज में अन्तर पड़ाहो और गांठ के खोलने और मवाद के नर्म करने में उचित हो उनसे सिकाव करें और यही ... [illegible] दवा ... दवाओंका वर्णन जो रुकेहुए रज को खोलती है और कारणोंके अनुसार दे सक्ते हैं बसूड़ा ७ माशे ४॥ माशे सुरूके साथ देना रज ... करताहै और दवाउलकरक्म शर्बत अथवा सिकंजबीन ... की फस्द के खोलने के उपरांत रज को बहाती ... लीले सौसन की जड़ ९ माशे, पोदीना का पा... माशे, दो बार में देवै तो रज बहने लगता ... , दालचीनी, पहाड़ी पोदीना चाहे अगोनि... पानी में दे तो रज बहने लगता है और का... और हरड़ और इमली, सौंठ या मूल के ... ...क लाभदायक है और लाल लोबिया, मेथी ... अधकुचली १४माशे इन दवाओंको १ ... ...तो साफ करके ८५माशे, सिकंजबीन मिले ... पोदीना, प्र० १४ माशे, देवदारु २८ ...

भोजन जैसे मुर्गी का अण्डा अधभुना और मोटेमुर्गे का शोरवा और उसका मांस, जवान बकरी का मांस और दूध और मिठाई विशेष खावें जिससे शरीर को शक्ति हो खून उत्पन्न हो और सोने आराम करने में लिप्त रहे और ऐसे न्हाने के स्थान पर न्हाय जहां तरी प्राप्तहो। दूसरा भेद यहहै कि खून सर्दी के कारण गाढ़े दोषों के मिलनेसे गाढ़ा होजाय और उसका चिन्ह शरीर की सुस्ती सफेदी और रगों में ढीलापन और मूत्र विशेष आवे और कफ का मल आवे इस कारण से कि आमाशय के पचाव में बिगाड़ है और नींद में भारापन मालूम हो और खून जो आवे वो पतला हो (इलाज) मवाद को मुलायम करने वाली दवा जैसे पारा आदि देवे जिनसे गाढ़े दोष निकल जांय और उसके उपरान्त अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ, पहाड़ी पोदीना, आदि औटाकर शहद में तथा कन्द में माजून बनाकर खवावें जिससे खून पतला होकर सुगमता से बहजाय और सोया, दोनामरुवा पोदीना, तुतली, बाबूना, अकलीलउलमलिक, सातर के काढ़े का बफारा दें और बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब बिलसां, जायफल, छोटीइलायची, कूट आदि से जिस चीज में अन्तर पड़ाहो और गांठ के खोलने औ मवाद के नर्म करने में उचित हो उनसे सिकाव करें और यही [illegible] दवा [illegible] दवाओंका वर्णन जो रुकेहुए रज को खोलती है और कारणोंके अनुसार दे सक्ते हैं षसूढ़ा ७ माशे ४॥ माशे गुरुके साथ देना रज [illegible] करताहै और दवाउलकरक्म शर्बत अथवा सिकञ्जबीन विजूरीके [illegible] की फस्द के खोलने के उपरांत रज को बहाती [illegible] छीले सौसन की जड़ ९ माशे, पोदीना का पा[illegible] माशे, दो बार में देवै तो रज बहने लगता [illegible] न, दालचीनी, पहाड़ी पोदीना चाहे अगोगि[illegible] पानी में दे तो रज बहने लगता है और का[illegible] ा और हरड़ और इमली, सौंठ या मूल के [illegible] सिक लाभदायक है और लाल लोबिया, मैथी [illegible] अधकुचली १४माशे इन दवाओंको १ [illegible] ो साफ करके ८५माशे, सिकञ्जबीन मिले [illegible] पोदीना, म० १४ माशे, देवदारु २८ [illegible]

पर जैसा कि है नीचे की तरफ आजाय और उसकी गर्दन मूत्रस्थान से बाहर होजाय दूसरे यह है कि गर्भस्थान अपनी असली दशा से उलट कर इस तरह पर निकले कि उसका सब अंग प्रत्यक्ष में दिखाई दे और उसकी गर्दन का छेद न प्रगट हो और इस को इन्किलाबुर्रहम (गर्भस्थान का उलट जाना) कहते हैं और गर्भस्थान के निकल आने को अर्बी में अक्र और करन भी कहते हैं और गर्भस्थान के निकल आने वाली स्त्री को अकला करना कहते हैं और गर्भस्थान के निकल आने के कारण बहुत हैं पहलों यह है कि बालक मरा हुआ हो और झिल्ली क़ुदब खिंच जाय। दूसरे यह है कि स्त्री ऊंची जगह से चूतड के बल गिरपड़े तथा भारी बोझ उठावे तथा खींचे अथवा कूदे इस कारण से गर्भस्थान के बन्धन ढीले होजांय अथवा कटजांय तथा मनका अपनी जगह से हटजाय। तीसरा विशेष भय यह है कि निर्बल और ढीले होजाय। चौथे यह है कि कफ की चेपदार तरी गर्भस्थान के बन्धनों में आकर उनको सुस्त और ढीला कर डाले और इस कारण से गर्भस्थान हट-जाय और उलटकर बाहर आजाय और यह कार्य बूढ़ी स्त्री को और जिनकी प्रकृति में तरी है उनको प्रगट होता है क्योंकि उनके शरीरों में विशेष तरी है और गर्भस्थान के निकलने का यह चिन्ह है कि पेड़ और पूतड़ों के मध्य की जगह और पीठ में विशेष दर्द उत्पन्न हो और आगे पीछे खिचाव व पकपी और विनाहट किसी कारण से उत्पन हो और मूत्रमार्ग में एक नर्म चीज उतर आवै फिरजो तरी कफकी है तो गर्भस्थान के निकल आने का कारण हो और गर्भस्थान से तरीका बहना साक्षी हो [सूचना] बहुधा मूर्ख हकीमों को गर्भस्थान और झिल्ली में अन्तर समझना कठिन होता है और अन्तरयहहै कि झिल्ली छोटा अंग और पतली है और गर्भस्थान उसके विरुद्ध है चाहे किसी कारण से उत्पन्न हो पहले आंतों को फोक से पवित्र करे अर्थात् मलके निकालनेवाली दवा ग्रहण करे जिससे उसका त्रास गर्भस्थान पर कम पड़े और ऐसे ही मूत्र के लाने वाली चीजों के ग्रहण करने से मसाने को पवित्र करे और जहां यहीं कि कफकी तरी का कारण हो तो मवाद के निकालने के लिये यारजात को तुर्बुद से पुष्ट करके खवावे और प्रत्येक दशा में आंतों और मसाने के मवाद के निकालनेके उपरान्त चाहिये कि नम्बक का तेल तथा गुलरोगन लेकर थोडासा केसर का तेल और थोडीसी दुर्गन्धित चीजें उसमें मिलाकर गुन गुनी करके कई बूंद गर्भस्थान में टपकावे और जो छेद उसका

पर जैसा कि है नीचे की तरफ आजाय और उसकी गर्दन मूत्रस्थान से बाहर होजाय दूसरे यह है कि गर्भस्थान अपनी असली दशा से उलट कर इस तरह पर निकले कि उसका सब अंग प्रत्यक्ष में दिखाई दे और उसकी गर्दन या छेद न प्रगट हो और इस को इन्किलाबुर्रहम (गर्भस्थान का उलट जाना) कहते हैं और गर्भस्थान के निकल आने को अर्बी में अक्र और क़रन भी कहते हैं और गर्भस्थान के निकल आने वाली स्त्री को अकला करना कहते हैं और गर्भस्थान के निकल आने के कारण बहुत हैं एकतो यह है कि बालक मरा हुआ हो और झिल्ली कुदव खिंच जाय । दूसरे यह है कि स्त्री ऊंची जगह से चूतड के बल गिरपड़े तथा भारी बोझ उठावे तथा खींचे अथवा कूदे इस कारण से गर्भस्थान के बन्धन ढीले होजांय अथवा कटजांय तथा मनका अपनी जगह से हटजाय । तीसरा विशेष भय यह है कि निर्बल और ढीले होजाय । चौथे यह है कि कफ की चेपदार तरी गर्भस्थान के बन्धनों में आकर उनको सुस्त और ढीला कर डाले और इस कारण से गर्भस्थान हट-जाय और उलटकर बाहर आजाय और यह कार्य दूढी स्त्री को और जिनकी प्रकृति में तरी है उनको प्रगट होता है क्योंकि उनके शरीरों में विशेष तरी है और गर्भस्थान के निकलने का यह चिन्ह है कि पेडू और चूतड़ों के मध्य की जगह और पीठ में विशेष दर्द उत्पन्न हो और आगे पीछे खिंचाव व धपकपी और विनादर किसी कारण से उत्पन हो और मूत्रमार्ग में एक नर्म चीज उतर आवै फिरजो तरी कफकी है तो गर्भस्थान के निकल आने का कारण हो और गर्भस्थान से तरीका बहना साक्षी हो [सूचना] बहुधा मूर्ख हकीमों को गर्भस्थान और झिल्ली में अन्तर समझना कठिन होता है और अन्तरयहहै कि झिल्ली छोटा अंग और पतली है और गर्भस्थान उसके विरुद्ध है चाहे किसी कारण से उत्पन्न हो पहले आंतों को फोक से पवित्र करे अर्थात् मलके निकालनेवाली दवा ग्रहण करे जिसमें उसका बोझ गर्भस्थान पर कम पड़े और ऐसे ही मूत्र के लाने वाली चीजों के ग्रहण करने से मसाने को पवित्र करे और जहां कहीं कि कफकी तरी का कारण हो तो मवाद के निकालने के लिये यारजात को गुर्दुद से पुष्ट करके खवावे और प्रत्येक दशा में आंतों और मसान के मवाद के निकालनेके उपरान्त चाहिये कि जम्बक का तेल तथा गुलरोगन लेकर थोडासा केसर का तेल और थोडीसी सुगन्धित चीजें उसमें मिलाकार गुन गुनी करके कई बूंद गर्भस्थान में टपकावे और जो छेद उसका

दवा औटाकर उसमें रक्खें और जब भपारे से निकलै तो अजीर्णकारक दवाऐं पेडू पर और मूत्रमार्ग के ओर पास लेपकरें और लगोट बांध दें जैसा कि वर्णन होचुका है और चाहिये कि सर्वदा अजीर्णकारक लेप लगाते रहैं और थाडे काल के उपरांत एक घंटा मौलसिरी, गुलाब के फूल गदबेल के काढ़े में रक्खे दो दो दिन पीछे यही उपाय नये सिरे से बदलते रहैं यहां तक कि सात दिन पूरे होजाय और मध्य में कभी परिश्रम न चाहिये और जो कुछ कि ऊपर वर्णन किया गया है जैसे छींक आदि फिसलाने वाली चीजों से बचना उचित समझे और सम्भव है कि कभी २ लगोट बांधे तकिया लगाकर बैठे और लंगोट न खोले परन्तु आवश्यकता के समय खोलदें (लाभ) इस रोगमें दुर्गन्धित चीजों का सूंघना सबसे विशेष अनुचित है क्योंकि गर्भस्थान वास्तव में सुगन्धि की इच्छा रखता है और दुर्गन्धि से घृणा करता है जैसा कि जिगर मीठी चीजों की इच्छा रखता है और चीजों से अरुचि रखताहै ॥

सत्रहवां प्रकरण

गर्भस्थान के एकओर झुकआने वर्णन ।

इस के कारण और इलाज गर्भ न रहने और सन्तति न होने में वर्णन किये हैं और रोग की परीक्षा में सन्देह पड़ता है कि रोग कौनसे अंग में है सो हकीम को उचित है कि रोग और अन्तर वाले कारणों में खूब विचार करे जिससे न चूकै और गर्भस्थान के फिर जाने का चिन्ह स्त्रियां उंगली लगाकर जान लेती हैं वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है हां जब स्त्रियों को गर्भस्थान के एक ओर झुक आने के कारण के उपरान्त मरोडा उत्पन्न हो जैसे विशेष भार के खींचने अथवा उठाने का तथा कूदने तथा डरने का अवसर आपड़े तो उचित है कि प्रथम मालूम करे कि गर्भस्थान फिरा हुआ है कि नहीं फिर मरोड़े का इलाज करे ॥

अठारहवां प्रकरण

गर्भस्थान कीसूजनों का वर्णन

इसके तीन भेद हैं कि गर्भस्थान में गर्म सूजन उत्पन्न हो और उसके कारण बहुत हैं प्रथम तो गर्भस्थान पर चोट और धमाका पहुंचे दूसरे रज का रुक जाना तीसरे बालक का गिर पड़ना अर्थात् गर्भहीन होना और उत्पत्ति का कठिन से होना और अधिक संभोग करना और कारपन का उतरना ॥

दवा औटाकर उसमें रक्खें और जब भपारे से निकलै तो अजीर्णकारक दवाएँ पेडू पर और मूत्रमार्ग के ओर पास लेपकरें और लगोट बांध दें जैसा कि वर्णन होचुका है और चाहिये कि सर्वदा अजीर्णकारक लेप लगाते रहें और थाडे काल के उपरांत एक घंटा मौलसिरी, गुलाब के फूल गदबेल के काढ़े में रक्खें दो दो दिन पीछे यही उपाय नये सिरे से बदलते रहें यहां तक कि सात दिन पूरे होजाय और मध्य में कभी परिश्रम न चाहिये और जो कुछ कि ऊपर वर्णन किया गया है जैसे छींक आदि फिसलाने वाली चीजों से बचना उचित समझे और सम्भव है कि कभी २ लगोट बांधे तकिया लगाकर बैठे और लंगोट न खोले परन्तु आवश्यकता के समय खोलदें (लाभ) इस रोगमें दुर्गन्धित चीजों का सूंघना सबसे विशेष अनुचित है क्योंकि गर्भस्थान वास्तव में सुगन्धि की इच्छा रखता है और दुर्गन्धि से घृणा करता है जैसा कि जिगर मीठी चीजों की इच्छा रखता है और चीजों से अरुचि रखताहै ॥

सत्रहवां प्रकरण

गर्भस्थान के एकओर झुकआने वर्णन ।

इस के कारण और इलाज गर्भ न रहने और सन्तति न होने में वर्णन किये हैं और रोग की परीक्षा में सन्देह पड़ता है कि रोग कौनसे अंग में है सो हकीम को उचित है कि रोग और अन्तर वाले कारणों में खूब विचार करै जिससे न चूकै और गर्भस्थान के फिर जाने का चिन्ह स्त्रियां उंगली लगाकर जान लेती हैं वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है हां जब स्त्रियों को गर्भस्थान के एक ओर झुक आने के कारण के उपरान्त मरोड़ा उत्पन्न हो जैसे विशेष भार के खींचने अथवा उठाने का तथा कूदने तथा डरने का अवसर आपड़े तो उचित है कि प्रथम मालूम करै कि गर्भस्थान फिरा हुआ है कि नहीं फिर मरोड़े का इलाज करै ॥

अठारहवां प्रकरण

गर्भस्थान की सूजनों का वर्णन

इसके तीन भेद हैं कि गर्भस्थान में गर्म सूजन उत्पन्न हो और उसके कारण बहुत हैं प्रथम तो गर्भस्थान पर चोट और धमाका पहुंचे दूसरे रज का रुक जाना तीसरे बालक का गिर पड़ना अर्थात् गर्भक्षीण होना और उत्पत्ति का कठिन से होना और अधिक संयोग करना और कारण का उतरना ॥

यक है (सूचना) यदि यह सूजन आरम्भ में होतो केवल मवाद के लौटाने वाली दवाओं का कभी लेप न करें जिससे मवाद पसरा न जाय और जब विशेष होजाय तो बाबूना और खितमी आदि जो चीजें कि मवाद के नर्म करने वाली और नष्ट करने वाली हों लेप की रीति पर ग्रहण करै और उसका काढ़ा तरेड़े की विधि पर देवै और जानना चाहिये कि जब अन्त में पहुंचे तो दो कारण से रहित नहीं एक यह कि नष्ट हो जाय। दूसरे यह है कि इकट्ठा होने लगे और इकट्ठा होने और पकने का यह चिन्ह है कि दर्द विशेष हो जाय और भिन्न २ प्रकारके ज्वर और फुरफुरी उत्पन्न हो और चुभन आदि सब चिन्ह बढ़जांय और उस समय में चाहिये कि गर्म लुआब जैसे मेथी का लुआब, अलसी का लुआब, अम्बू का लुआब, गुन गुना गर्भस्थान के द्वारा पहुंचावें और बाबूना, मेथी, अलसी के बीज, खितमी, बनफशा, बाकला का चून, अंजीर के काढ़े में मिलाकर पेड़ूपर लेपकरें और गुनगुने पानी में बैठावे और यह सब कार्य्य इसलिये हैं कि पकाव में सहायता करै और जब पकजाय तो दो कारणसे रहित नहीं या तो फूटजाय अथवा वैसेही रहै और फोड़ा होजाय सो जो फूटजाय तो चाहिये कि उसके निकालने में सहायता करै और इस काम के लिये शहद के पानी से गर्भस्थान में हुकना करना और कम मूत्र लाने वाली दवा जैसे खरपुजे के बीज ककड़ी खीरा के बीज, कासनी के बीजका काढ़ा पिलाना लाभदायक है और गौका दूध मिश्री मिलाकर पीवके निकालनेके लिये नियत है और चाहिये कि सर्वदा यही उपाय रक्खै जब तक कि घाव पवित्र हो और विशेष मूत्र के बढ़ाने वाली दवा कभी न दें क्योंकि मूत्र लानेवाली दवा मवादको खींचलाती है और घाव विशेष होजाता है और घाव पीपसे पवित्र होजाय तो उसके भरने का उद्योग करे अर्थात् वह उपाय कि जो घावों के अध्याय में वर्णन कीये गये हैं और फोड़ों के अलग प्रकरण में आवेंगे उनको काम में लावें (लाभ) जब गर्भस्थान की सूजन फूटती है तो कभी तो आंतों अथवा मसानेकी तरफ उसका मवाद झुक पड़ता है और तथा मूत्र के साथ पीला पानी निकलता है और इस समय में योग्य है कि मवाद को अंगों से गर्भस्थानकी तरफ फिरावे जैसा गर्भस्थान के घावों में इसका वर्णन आ चुका है। दूसरा भेद यह है कि सर्द सूजन कफ वाली गर्भस्थान में उत्पन्न हो और उसका चिन्ह पेड़ू के आस पास में भारापन होता है (इलाज) पहिले वमन करै और मा उल्उ के पकाने की

यक है (सूचना) यदि यह सूजन आरम्भ में होतो केवल मवाद के लौटाने वाली दवाओं का कभी लेप न करें जिससे मवाद पचरा न जाय और जब विशेष होजाय तो बाबूना और खितमी आदि जो चीजें कि मवाद के नर्म करने वाली और नष्ट करने वाली हों लेप की रीति पर ग्रहण करै और उसका काढ़ा वरेड़े की विधि पर देवै और जानना चाहिये कि जब अन्त में पहुचे तो दो कारण से रहित नहीं एक यह कि नष्ट हो जाय। दूसरे यह है कि इकट्ठा होने लगे और इकट्ठा होने और पकने का यह चिन्ह है कि दर्द विशेष हो जाय और भिन्न २ प्रकारके ज्वर और फुरफुरी उत्पन्न हो और चुभन आदि सब चिन्ह बढ़जांय और उस समय में चाहिये कि गर्म लुआब जैसे मैथी का लुआब, अलसी का लुआब, सब्बू का लुआब, गुन गुना गर्भस्थान के द्वारा पहुचावें और बाबूना, मेथी, अलसी के बीज, सि तमी, बनफशा, बाकला का चून, अंजीर के काढ़े में मिलाकर पेड़ूपर लेपकरै और गुनगुने पानी में बैठावै और यह सब कार्य्य इसलिये हैं कि पकाव में सहायता करै और जब पकजाय तो दो कारणसे रहित नहीं या तो फूटजाय अथवा वैसेही रहै और फोड़ा होजाय सो जो फूटजाय तो चाहिये कि उसके निकालने में सहायता करै और इस काम के लिये शहद के पानी से गर्भ- स्थान में कुरुना करना और कम मूत्र लाने वाली दवा जैसे खरपूजे के बीज ककड़ी खीरा के बीज, कासनी के बीजका काढ़ा पिलाना लाभदायक है और गौका दूध मिश्री मिलाकर पीवके निकालनेके लिये नियत है और चाहिये कि सर्वदा यही उपाय रक्खै जब तक कि घाव पवित्र हो और विशेष मूत्र के ब ढ़ाने वाली दवा कभी न दें क्योंकि मूत्र लानेवाली दवा मवादको खींचलाती है और घाव विशेष होजाता है और घाव पीपसे पवित्र होजाय तो उसके भर ने का उद्योग करे अर्थात् वह उपाय कि जो घावों के अध्याय में वर्णन कीये गये हैं और फोड़ों के अलग प्रकरण में आवेंगे उनको काम में लावें (लाभ) जब गर्भस्थान की सूजन फूटती है तो कभी तो आंतों अथवा मसानेकी तरफ उसका मवाद झुक पड़ता है और तथा मूत्र के साथ पीला पानी निकलता है और उस समय में योग्य है कि मवाद को आगों से गर्भस्थानकी तरफ फिरावें जैसा गर्भस्थान के घावों में उसका वर्णन आ चुका है। दूसरा भेद यह है कि वर्द, सूजन कफ वाली गर्भस्थान में उत्पन्न हो और उसका चिन्ह पेड़ू के आस पास में भारापन होता है (इलाज) पहिले वमन करे और मा उज कि मवाने की

साथ मिलाकर सूजन पर लेप करे और रात दिन में दो बार सोया, कर्नब, अकलीलुलमलिक, खितमी, बनफशा, बाबूना, दौनामरुआ आदि मवाद के नर्म करने वाली चीजों के काढ़े में बैठावें ॥

उन्नीसवां प्रकरण-

गर्भस्थान की बडी और फैली हुई सूजन का वर्णन ।

यह बहुधा गर्भस्थान की गर्म सूजनके उपरान्त उत्पन्न होती है जबकि वह नहीं फूटती और फूटकर मवाद नहीं निकलता और उसका चिन्ह कड़ा रहना, गर्मी, टीसें मारना और छाती के पर्दे तक दर्द का होना और कदाचित आंख का दर्द और आधाशीसी का दर्द और निर्बलता और दुबलापन मुख्य कर पिंडालियों में उत्पन्न हो और पांव की पीठ पर सूजन प्रगट हो और पेट ऐसा होजाया जैसा कि जलन्धर वाले का पेट फूल जाता है और कदाचित् जलन्धर होजाय और जानना चाहिये कि सूजन बड़ी और फैली हुई प्रगट होतीहै और रग उभर आता हैं और उसका रंग लीला और शीसे कासा होता है और कभी गर्भस्थान में घाव भी हो जाता है और उसके घाव का यह चिन्ह है कि पेडू और पट्ठो में और पेट के नीचे और पीठ में दर्द अधिक होता है और बहुधा इसमे से दुर्गन्धित तरी जिसका पकाव समान नहीं होता बहा करती है और इस तरी का रंग सफेदी तथा स्याही तथा लाली तथा हरियाली लिये हुए होता है परन्तु स्याही लिये हुए तो बहुधा होता है और सफेद बहुत कम (इलाज) गर्भस्थान की सूजन सादा हो अथवा उसमें घाव भी हो इलाज नहीं हो सकता परन्तु क्योंकि उसकी हानिसे कोई दूसरी विपत्ति उत्पन्न न हो इस लियें उचित है कि उसके सभालने में परिश्रम करें जैसे जबकि गर्मी और टीसों की अधिकता हो तो ठंडा मरहम जिससे कि दर्द थम जाता है और ठंडे लुआब ग्रहण करे और जब गर्मी ठहर जाय और दर्द कम हो तो नर्म चीजें जो नष्ट करती हैं जैसे मरहम दाखिलीऊन, गुगल और बाबूना का तेल और बतक की चर्बी काममें लावें और ऐसेही मेथी, बाबूना अलसी के बीज, कर्नब के पत्ता के काढ़े से तरेड़ा करें और धीरे २ और नर्मी से कभी २ फस्द खोलें और मरोड़े द्वारा वायु के निकालने वाली दवाईं जिससे वादी कम होजाय और सफाई होती रहे और उचित है कि प्रकृति की तरी पहुंचाने में सहायता करते रहें और जहां कहीं कि सूजन में घाव हो तो चाहिये कि खितमी के पत्ता, कर्नब के पत्ता बनफशा, अलसी के बीज

साथ मिलाकर सूजन पर लेप करै और रात दिन में दो बार सोया, कर्नेब, अकलीलुल्मलिक, खितमी, बनफशा, बाबूना, दौनामरूआ आदि मवाद के नर्म करने वाली चीजों के काढ़े में बैठावें ॥

उन्तीसवां प्रकरण

गर्भस्थान की बडी और फैली हुई सूजन का वर्णन ।

यह बहुधा गर्भस्थान की गर्म सूजनके उपरान्त उत्पन्न होती है जबकि वह नहीं फूटती और फूटकर मवाद नहीं निकलता और उसका चिन्ह कडो रहता, गर्मी, टीसें मारना और छाती के पर्दे तक दर्द का होना और कदाचित आंख का दर्द और आधाशीसी का दर्द और निर्बलता और दुबलापन मुख्य कर पिंडालियों में उत्पन्न हो और पांव की पीठ पर सूजन प्रगट हो और पेट ऐसा होजाया जैसा कि जलन्धर वाले का पेट फूल जाता है और कदाचित् जलन्धर होजाय और जानना चाहिये कि सूजन बड़ी और फैली हुई प्रगट होतीहै और रग उभर आता है और उसका रंग लीला और शीसे कासा होता है और कभी गर्भस्थान में घाव भी हो जाता है और उसके घाव का यह चिन्ह है कि पेडू और चड्डो में और पेट के नीचे और पीठ में दर्द अधिक होता है और बहुधा इसमें से दुर्गन्धित तरी जिसका पकाव समान नहीं होता बहा करती है और इस तरी का रग सफेदी तथा स्याही तथा लाली तथा हरियाली लिये हुए होता है परन्तु स्याही लिये हुए तो बहुधा होता है और सफेद बहुत कम (इलाज) गर्भस्थान की सूजन सादा हो अथवा उसमें घाव भी हो इलाज नहीं हो सकता परन्तु क्योंकि उसकी हानिसे कोई दूसरी विपत्ति उत्पन्न न हो इस लिये उचित है कि उसके सभालने में परिश्रम करें जैसे जबकि गर्मी और टीसों की अधिकता हो तो ठंडा मरहम जिससे कि दर्द कम जाता है और ठंडे लुआब ग्रहण करे और जब गर्मी ठहर जाय और दर्द कम हो तो नर्म चीजें जो नष्ट करती हैं जैसे मरहम दाखिलीऊन, गुगल और बाबूना का तेल और बतक की चर्बी काममें लावें और ऐसेही मेथी, बाबूना अलसी के बीज, कर्नेब के पत्ता के काढ़े से तरेड़ा दें और धीरे २ और गर्मी में कभी २ फस्द खोलें और मजूर्र द्वारा वायु के निकालने वाली दवायें जिससे वादी कम होजाय और सफाई होती रहै और उचित है कि प्रकृति को तरी पहुंचाने में सहायता करते रहैं और जहां यही कि सूजन में घाव हो तो चाहिये कि खितमी के पत्ता, कर्नेब के पत्ता बनफशा, अलसी के बीज

इक्कीसवां प्रकरण

गर्भस्थान के घुटजाने का वर्णन ।

यह ऐसा रोग है कि मृगी और अचेतता के समान होता है अर्थात् इसमें मृगी के चिन्ह भी प्रगट होते हैं जैसे वादी और किसी २ अगोंमें खिचाव इठाव और गिरपड़ना और अचेतता के चिन्ह भी प्रगट होते हैं जैसे हाथ पैर का ठंडा होना और पीला रंग नाड़ी और श्वासका छोटा होना। जानना चाहिये कि यद्यपि इसरोग की उत्पत्ति का स्थान गर्भस्थान है परन्तु जबकि गर्भस्थान का दिमाग और दिलसे अधिक सम्बन्धहै तो गर्भस्थान की विपत्ति दिमाग और दिलमें पहुंचती है यही कारण है कि श्वास का खिंचकर आना और अचेतता और मृगी और धड़कन उत्पन्न होती हैं और मुखमें झाग नहीं आता और इसरोग में दो कारण हैं एकतो यह है कि मवाद के न निकलने से वीर्य्य विशेष होकर पात्रमें इकट्ठा होजाय और उसमें विपैली दशा आजाय और गर्भस्थान कष्ट के भयमें भाफ के ऊपर की तरफ सिमट कर झुकजाय और उसके निकम्मे भाफ के परमाणु दिल और दिमाग की तरफ आवें इस कारण से वर्णन किया हुआ रोग उत्पन्न हो और उसकी अधिकता से गर्भ स्थान में वही दशा जिसका वर्णन ऊपर हो चुका है आजाय और यह रोग बारी पर होजाता है जैसे कि मृगी आती है और जब मवाद विशेष होता है तो प्रतिदिन उत्पन्न होता है और मवेद। आता है और इसकी बारी पहली बारियों के समीप होती है तो मृत्युकारक है और उसका यह चिन्हहै कि जब बारी समीप आपहूंचे तो बुद्धि बिगड़ जाती है और चित्त में खराबी उत्पन्न होजातीहै और सिरमें दर्द आंखों में अंधेरा और रंगमें पीलापन और अगोंमें थकावट उत्पन्न हो और आंखोंमें पानी सा भर आवे और पिंडलियों में निर्बलता उत्पन्न हो और समय निकट आजाय तो कदाचित रोगी को मालूम हो कि कोई चीज पेडू के ओर पास से दिलकी तरफ चढ़कर आती है और मुख और नाक में अनिच्छा, और निकम्मी गति प्रगट हो फिर बुद्धिमें खराबी उत्पन्न होजाय और अचेतहोकर गिर पड़े और ज्ञानशक्ति नष्ट और धन्द बन्द होजाय और इस रोग और मृगी में यह अन्तर है कि इसरोग में बुद्धि विल्कुल नष्ट नहीं होती यही कारण है कि जबइस रोग वालेको चेतहोता है तो जो बातें कि वर्णन की हैं उन सैसे बहुधा बातों को वर्णन किया करते हैं और

इक्कीसवां प्रकरण

गर्भस्थान के घुटजाने का वर्णन ।

यह ऐसा रोग है कि मृगी और अचेतता के समान होता है अर्थात् उसमें मृगी के चिन्ह भी प्रगट होते हैं जैसे वादी और किसी २ अंगोंमें खिचाव इठाव और गिरपड़ना और अचेतता के चिन्ह भी प्रगट होते हैं जैसे हाथ पैर का ठंढा होना और पीला रंग नाड़ी और श्वासका छोटा होना। जानना चाहिये कि यद्यपि इसरोग की उत्पत्ति का स्थान गर्भस्थान है परन्तु जबकि गर्भस्थान का दिमाग और दिलसे अधिक सम्बन्धहै तो गर्भस्थान की विपत्ति दिमाग और दिलमें पहुंचती है यही कारण है कि श्वास का भिचकर आना और अचेतता और मृगी और धड़कन उत्पन्न होती है और मुखमें झाग नहीं आता और इसरोग में दो कारण हैं एकतो यह है कि मवाद के न निकलने से वीर्य्य विशेष होकर पात्रमें इकट्ठा होजाय और उसमें विषैली दशा आजाय और गर्भस्थान कष्ट के भयमें भाफ के ऊपर की तरफ सिमट कर सुकड़जाय और उसके निकलने भाफ के परमाणु दिल और दिमाग की तरफ आवें इस कारण से वर्णन किया हुआ रोग उत्पन्न हो और उसकी अधिकता से गर्भ स्थान में वही दशा जिसका वर्णन ऊपर हो चुका है आजाय और यह रोग वारी पर होजाता है जैसे कि मृगी आती है और जब मवाद विशेष होता है तो प्रतिदिन उत्पन्न होता है और मवेद। आना है और इसकी वारी पहली वारियों के समीप होती है तो मृत्युकारकहै और उसका यह चिन्हहै कि जब वारी समीप आपहुंचे तो बुद्धि बिगड़ जाती है और चिन्ता में खराबी उत्पन्न होजातीहै और सिरमें दर्द आंखों में अंधेरा और रंगमें पीलापन और अंगोंमें थकावट उत्पन्न हो और आंखोंमें पानी सा भर आवे और पिंडलियों में निर्बलता उत्पन्न हो और समय निकट आजाय तो कदाचित रोगी को मालूम हो कि कोई चीज पेडू के ओर पास से दिलकी तरफ चढ़कर आती है और मुख और नाक में अनिच्छा, और निकम्मी गति प्रगट हो फिर दृष्टिमें खराबी उत्पन्न होजाय और अचेतहोकर गिर पड़े और ज्ञानशक्ति नष्ट और शब्द बन्द होजाय और इस रोग और मृगी में यह अन्तर है कि इसरोगमें बुद्धि चित्र कुछ नष्ट नहीं होती यही कारण है कि जबइस रोग वालेको चेतहोता है तो जो बातें कि वर्णन की हैं उन सैसे बहुधा बातों को वर्णन किया करते हैं और

कभीर ज्वर हो उसका चिन्ह है तो उस दशामें गर्मी की चीजोंके ग्रहण करने
की आज्ञा दें सो इस दशा में चैतन्यता के समय बासलीक की फस्द खोलें
और पिंडलियों पर पछने लगाकर सिंगिया खींच अथवा आराग्वलके काढ़े
से प्रकृति को नर्म करें और पेट भरे होनेपर सोया का काढ़ा पिलाकर वमन
करें और ठंडी चीजें जो वीर्य को कम करती और काम को तोड़ती हैं जैसे
शर्बत नीलोफर और खुर्फे का शीरा पिलावें और बारी के समय कपूर चंदन
और नीलोफर सुंघावें और दूसरे उपाय वही हैं जो वर्णन होचुके हैं परन्तु
गर्म चीजों का ग्रहण करना चाहे पिलाने में अथवा सुंघानेमें उचित नहीं और
हकीम साबितने कहा है कि गर्भस्थान के घुटने की दशा में फस्द न खोलें
और जो आवश्यकता पड़े तो [illegible] में न खोलें क्योंकि यह गर्भस्थान के
सब रोगों में बुरा है और साफिन की फस्द खोलने में कुछ हानि नहीं और
हकीम मासोया के बेटे ने कहा है कि टुंडी के नीचे चारे का लगाना
गर्भस्थान को नीचे की तरफ खींचता है और कमर पर पछने लगाना इस रोग
की जड़ उखाड़ता है (लाभ) जो गर्भस्थान का घुटना रजके बंद होने से
उत्पन्न हो तो बारी के समय उसका उपाय वही है कि जो गर्मी और सर्दी
के प्रकरण में वर्णन करचुके हैं और चैतन्यता की दशामें फस्द खोलें और
रजखोलने वाली चीजें दे जैसे कि रजके बंद होजाने में वर्णन की गई हैं
परन्तु जो यह रोग गर्भवती स्त्री को होजाय तो फस्द और दस्त योग्य नहीं
सो जो गर्भ रहने का समय निकट हो तो ठहर जाय कि बालक उत्पन्न होने
के उपरांत अपने आप जाती रहेगी और जो गर्भ रहने के दिन दूर हो तो
हलके और शुद्ध भोजन और तेलोंके मलने पर आरूढ़ हो और प्रकृतिको गर्मी
और सर्दी की रक्षा रक्खे और बारीके समय चेत आने के लिये हाथ पांव के
बांधने और सूंघने की चीजों का और उनके सिवाय अन्य चीजें कि जिनसे बालक
को हानि नहो दें और चैतन्यता की दशा में गुलकन्द गर्भिणी को विशेषगुणकारी है
कि झिल्ली में बालककी रक्षा भी करता है और रोगको दूर करता है और जहां कहीं
बहुत अधिकता हो और रोग की बारी जल्दी [illegible] तो फस्द खोल सकते
हैं और हल्का [illegible] हो सकता है मुख्य करके यथा कि गर्भका तीसरा महीना
बीत जाए और आठवां महीना आरम्भ न हुआ हो और इसरोग में मलने
[illegible] के योग हैं जैसे जो गर्मी की अधिकता हो तो [illegible] पानक
[illegible] और [illegible] योग है और जो सर्दी अधिक हो तो चकोर चिड़िया
बटेर और तीतर का मांस जीरा और दालचीनी मिलाकर देना योग्य है।

कभीर ज्वर हो उसका चिन्ह है तो इस दशामें गर्मी की चीजोंके ग्रहण करने की आज्ञा दें सो इस दशा में चैतन्यता के समय बासलीक की फस्द खोलें और पिंडलियों पर पछने लगाकर सिंगिया खींच अथवा आराशवल्के काढ़े से प्रकृति को नर्म करें और पेट भरे हालेपर सोया का काढ़ा पिलाकर वमन करें और ठंडी चीजें जो वीर्य को कम करती और काम को तोड़ती हैं जैसे शर्बत नीलोफ़र और खुर्फा का शीरा पिलावें और बारी के समय कपूर चंदन और नीलोफर सुघावें और दूसरे उपाय वही हैं जो वर्णन होचुके हैं परन्तु गर्म चीजों का ग्रहण करना चाहे पिलाने में अथवा सुघानेमें उचित नहीं और हकीम साबितने कहा है कि गर्भस्थान के घुटने की दशा में फस्द न खोलें और जो आवश्यकता पड़े तो बहुत में न खोलें क्योंकि यह गर्भस्थान के सब रोगों में बुरा है और साफिन की फस्द खोलने में कुछ हानि नहीं और हकीम मासोया के बेटे ने कहा है कि टूंडी के नीचे बारे का लगाना गर्भस्थान को नीचे की तरफ खींचता है और कमर पर पछने लगाना इस रोग की जड़ उखाड़ता है (लाभ) जो गर्भस्थान का घुटना रजके बंद होने से उत्पन्न हो तो बारी के समय उसका उपाय वही है कि जो गर्मी और सर्दी के प्रकरण में वर्णन करचुके हैं और चैतन्यता की दशामें फस्द खोलें और रजकेबहाने वाली चीजें दें जैसे कि रजके बंद होजाने में वर्णन की गई हैं परन्तु जो यह रोग गर्भवती स्त्री को होजाय तो फस्द और दस्त योग्य नहीं सो जो गर्भ रहने का समय निकट हो तो ठहर जाय कि बालक उत्पन्न होने के उपरांत अपने आप जाती रहेगी और जो गर्भ रहने के दिन दूर हों तो हल्के और शुद्ध भोजन और तेलोंके मलने पर आरूढ़ हो और प्रकृतिको गर्मी और सर्दी की रक्षा रक्खें और बारीके समय चेत आने के लिये हाथ पांव के बांधने और सुंघने की चीजों का और उनके सिवाय अन्य चीजें कि जिनसे बालक को हानि नहो दें और चैतन्यता की दशा में गुलकन्द गर्भरक्षी को विशेषगुणकारी है कि झिल्ली में बालककी रक्षा भी करता है और रोगको दूर करता है और जहां सर्दी बहुत अधिकता हो और रोग की बारी जल्दी २ हो तो फस्द खोल सकते हैं और हल्कासा जुलाब दे सकता है मुख्य कर जबकि गर्भका तीसरा महीना बीत जाए और आठवां महीना आरम्भ न हुआ हो और इसरोग में भोजन पानी के योग्य है जैसे जो गर्मी की अधिकता हो तो कलिया कद्दू पालक छि ? ? और [illegible] योग्य है और जो सर्दी विशेष हो तो चकोर तितिया बटेर और तीतर का मांस जीरा और दालचीनी मिलाकर देना योग्य है।

जिससे गर्भस्थान में गर्मी पहुंचे और हवा को हलका करके तोड़ डाले और जो दवा गर्मी पहुंचाती हैं वे हवा को तोड़ कर निकालती हैं जैसे बाबूना, सोया दोनामरुवा, पोदीना, तुतली, अजमोद के बीज, सौंफ, कन्दामार और जीरा ग्रहण करे। हुकना और फर्जजा (कोई चीज कपड़ा तथा ऊनमें लहमेद कर स्त्री की उस पर रखना) और लेप और सिकाव और भपारे की विधि पर दे और योग्य यह है कि तुतली का तेल, सोया का तेल, टूड़ी के नीचे और छिपे हुए बालों पर मले और जो कुछ जलन्धर में वर्णन किया गया है यहां लाभदायक है (सूचना) जो छाती के रोगों के उपरांत दिलके रोगोंके लिये लिखे गये हैं।

बाईसवां अध्याय।

हाथ पांव और पीठ के रोगों का वर्णन।

जैसे पीठके मनकाओं का अपने स्थान से हटजाना और इसी को दिहाय अफरसा भी कहते हैं और पीठ का दर्द कोख का दर्द गठिया और निकरस (दर्द जो पांव के अगूठे में होता है) और अरकुन्निसा (एक रग है पांवमें जिसमें दर्द होता है) और चूतड़ का दर्द, दवाली (पिंडलीकी रगें) और हाथी कासा पांव होजाना और एड़ी का दर्द आदि इनमें से प्रत्येक रोग अलग २ प्रकरण में वर्णन किया जायगा।

पहिला प्रकरण।

पीठ के मनकाओंका अपने स्थान से हटजानेका वर्णन।

अगली तरफ अथवा पिछली तरफ तथा दोनों तरफ में से एक त रफ मनके हटजांय सो जो अगली तरफ मनका हटजाय तो उसको अरबी में तरसा और हुदबतुलमुकदम और हुदबेमुदकीरी कहते हैं जो हड्डी भी हट जाने में सम्मिलित हो तो कआसरी कहते हैं और जो मनका पिछली तरफ हटजांय तो हुदबतुलमुअक्खर [illegible] और जो दोनों तरफ में से एक तरफ मनके [illegible] तो इल्तवा [illegible] और जो गादी हो मनकाओं के हटजाने [illegible] तो उसको [illegible] अफरसा है और मनकाओं [illegible] जाने [illegible] हैं [illegible] वर्णन अलग भेदों में [illegible] पहला [illegible] जैसे [illegible] जो मनकाओं [illegible] भी

जिससे गर्भस्थान में गर्मी पहुंचे और हवा को हलका करके तोड़ डाले और जो दवा गर्मी पहुंचाती हैं वे हवा को तोड़ कर निकालती हैं जैसे बाबूना, सोया दोनामरुवा, पोदीना, तुतली, अजमोद के बीज, सौंफ, कन्दामार और जीरा ग्रहण करै। हुकना और फर्जजा (कोई चीज कपड़ा तथा ऊनमें लपेट कर स्त्री की उस पर रखना) और लेप और सिकाव और भपारे की विधि पर दे और योग्य यह है कि तुतली का तेल, सोया का तेल, टूड़ी के नीचे और छिपे हुए बालों पर मलै और जो कुछ जलन्धर में वर्णन किया गया है यहां लाभदायक है (सूचना) जो छाती के रोगों के उपरांत दिलके रोगोंके लिये लिखे गये हैं।

बाईसवां अध्याय।

हाथ पांव और पीठ के रोगों का वर्णन।

जैसे पीठके मनकाओं का अपने स्थान से हटजाना और इसी को दिहाय अफरसा भी कहते हैं और पीठ का दर्द कोख का दर्द गठिया और निकरस (दर्द जो पांव के अंगूठे में होता है) और अरकुन्निसा (एक रग है पांवमें जिसमें दर्द होता है) और चूतड़ का दर्द, दवाली (पिंडलीकी रगें) और हाथी का सा पांव होजाना और एड़ी का दर्द आदि इनमें से प्रत्येक रोग अलग २ प्रकरण में वर्णन किया जायगा।

पहिला प्रकरण।

पीठ के मनकाओंका अपने स्थान से हटजानेका वर्णन।

अगली तरफ अथवा पिछली तरफ तथा दोनों तरफ में से एक त रफ मनके हटजांय सो जो अगली तरफ मनका हटजांय तो उसको अरबी में तनसा और हुदबतुलमुकद्दम और हुदबेमुकद्दमी कहते हैं जो इसी भी [illegible] जाने में सम्बन्धित हो तो कआसफी कहते हैं और जो मनका पिछली तरफ हटजांय तो हुदबतुलमुअख्खर [illegible] और जो दोनों तरफ में से एक तरफ मन[illegible] तो इल्तवा[illegible] और जो गाढ़ी हा मनकाओं के हटजाने[illegible] तो उसक[illegible] अफरसा है और मनकाओं [illegible] फ जाने [illegible] हैं औ[illegible] वर्णन अलग भेदों में [illegible] पहला [illegible] गये [illegible] जो मनकाओं [illegible] भी

वाले उपायों का पहले हो चुकना है और जो इस जगह तेल मलें तो शरीर में जल्दी नहीं सूखता है (इलाज) जो कुछ कि रिहा अफरसा में वर्णन किया है ग्रहण करें और गर्म पुष्टकारक तेल जैसे तुलसी का तेल और सर्द और अकरकरा मलना और अजीर्ण कारक दवाओं का जैसा सर्व के फल, अनार के फूल, गार के पत्ता, गुलाब के फूल, छरीला का लेप करना लाभ दायक है। चौथा भेद वह है कि गाढ़ी चेपदार तरी के कारण कि दुष्ट भेजे में आजाने से मनकों के बन्धन खिंच जाय अथवा खुश्की के कारण परन्तु यह बहुत कम होताहै और उसमें भय है और उसका इलाज कठिन होता है और उसके चिन्ह और इलाज को खिचाव और इठावके अध्याय में ढूढ़लेवै। पांच वां भेद वह है कि चोट अथवा धमाका मनकों के हट जाने का कारण हो (इलाज) जो मनके बाहर की तरफ में हट गये हों अथवा एक तरफ में तो गुड़ियों को हाथ से मलकर उसकी जगह हटालावें और जो भीतर की तरफ हट गया हो या किसी तरफ में तो उसको सींगियों से बाहर की तरफ खींच लावें तथा धारे लगावें और राल, गूगल और अकरकरा का मिलाकर लेप करना मनका के हट जाने के लिये लाभदायक है और अब मनका अपनी जगह आकर ठहर जाय तो अजीर्ण कारक औषधियों का लेप करें जिससे वहीं रहे आवें।

दूसरा प्रकरण
पीठ के दर्द का वर्णन।

इसके कई भेद हैं पहला यह है कि सादा दुष्ट प्रकृति पीठ में उत्पन्न हो और उसका चिन्ह दर्द बिना भारापन और सर्दी के मालूम हो और गर्म चीजों से और गति से और मलने से लाभ पावे और दर्द थोड़ा २ उत्पन्न हो और विशेष काल तक रहे (इलाज) प्रकृति के असली दशा पर लाने के लिये जड़ों का पानी आदि और अमरतनियां तिरियाक अरबा, हब्बुलगार, दमरूदी तूस आदि खवावें और कूट का तेल, तुलसी का तेल, और बाबूना का तेल मलें और गूगल, छरीला, मेथी बाबूना, हब्बुलगार, अलसी के बीज का लु, आब, बेद अजीर के तेल में मिलाकर लेप करें और चना का पानी और पक्षियों का मांस गर्म मसाला मिलाकर खवावें। दूसरा भेद यह है कि पीठ की नलियों में कच्चे कफ का दोष उत्पन्न हो अथवा कफ वाला दोष जो शरीर में ठहरा हुआ है कोप और परिश्रम और गर्मी के कारण से गति करे

वाले उपायों का पहले हो चुकना है और जो इस जगह तेल मलें तो शरीर में जल्दी नहीं सूखता है (इलाज) जो कुछ कि रिहा अफरसा में वर्णन किया है ग्रहण करें और गर्म पुष्टकारक तेल जैसे तुलसी का तेल और सर्द और अकरकरा मलना और अजीर्ण कारक दवाओं का जैसा सर्व के फल, अनार के फूल, गार के पत्ता, गुलाब के फूल, छरीला का लेप करना लाभ दायक है। चौथा भेद वह है कि गाढ़ी चेपदार तरी के कारण कि दुष्ट भेजे में आजाने से मनकों के बन्धन खिंच जाय अथवा खुश्की के कारण परन्तु यह बहुत कम होताहै और उसमें भय है और उसका इलाज कठिन होता है और उसके चिन्ह और इलाज को खिंचाव और इठावके अध्याय में ढूंढलेवें। पांचवां भेद वह है कि चोट अथवा धमाका मनकों के हट जाने का कारण हो (इलाज) जो मनके बाहर की तरफ में हट गये हों अथवा एक तरफ में तो गुड़ियों को हाथ से मलकर उसकी जगह हटालावें और जो भीतर की तरफ हट गया हो या किसी तरफ में तो उसको सींगियों से बाहर की तरफ खींच लावें तथा पारे लगावें और राल, गूगल और अकरकरा का मिलाकर लेप करना मनका के हट जाने के लिये लाभदायक है और जब मनका अपनी जगह आकर ठहर जाय तो अजीर्ण कारक औषधियों का लेप करें जिससे वहीं रहे आवें।

दूसरा प्रकरण

पीठ के दर्द कावर्णन।

इसके कई भेद हैं पहला यह है कि सादा दुष्ट प्रकृति पीठ में उत्पन्न हो और उसका चिन्ह दर्द बिना भारापन और सर्दी के मालूम हो और गर्म चीजों से और गति से और मलने से लाभ पावे और दर्द थोड़ा २ उत्पन्न हो और विक्षेप काल तक रहे (इलाज) प्रकृति के असली दशा पर लाने के लिये जड़ों का पानी आदि और मअजनियां गिरियाक अरबा, इक्लुलमार, यमरूदी तूस आदि खवावें और कूट का तेल, तुलसी का तेल, और बाबूना का तेल मलें और गूगल, छरीला, मेथी बाबूना, इक्लुलमार, अलसी के बीज का आटा, बेद अजीर के तेल में मिलाकर लेप करें और चना का पानी और पक्षियों का मांस गर्म मसाला मिलाकर खवावें। दूसरा भेद वह है कि पीठ की नालियों में कच्चे कफ का दोष उत्पन्न हो अथवा कफ शान्त दोष जो शरीर में ठहरा हुआ है क्रोध और परिश्रम और गर्मी के कारण से गति करे

रहता है और तुर्त जाता रहता है और कभी अधिक परिश्रम खुश्की उत्पन्न करने के कारण मनके हटजाने का कारण होता है। चौथा भेद यह है कि गुर्देमें निर्बलता अथवा कोई दूसरा रोग उत्पन्नहो जो उसके निश्टहोरे और सम्बन्धित होने के कारण से पीठके भागों में दर्द उत्पन्नहो उसका यह चिन्हहै कि गुर्देमें निपत्ति पाईजाय और दोनों चूतड़ा के बीच में दर्द और कामकी निर्बलता उसके साक्षी हैं (इलाज) जो कुछगुर्देके रोगों में वर्णन हुआ है चाहे निर्बलताहो अथवा और कुछहो कारणके अनुसार उसकाउपायकरें।पांचवां भेदवहहै कि वहीरग जो पीठकी लंबाई में है खूनसे भरजाय और खिंचावकेकारण दर्दउत्पन्नकरे और उस का यह चिन्हहै कि मनकापीठकेआरम्भसे अर्थातजहांसे किमनका भीकी गर्दनका अन्त है वहां से चूतड़ों के बीच की लम्बाई के अन्त तक दर्द टीस सहित हो और उस जगह गर्मी का होना और खूनके दूसरे चिन्ह उसके साक्षी हैं और चलने के समय दर्दकी अधिकता हो (इलाज) बासलीक की फस्द खोलें और आरम्भ में खट्टे और मीठे अनार का पानी, नीबू का शर्बत, खुर्फा के बीज का शीरा और ककड़ी खीरे के बीज का शीरा सिकंजबीन मिलाकर दें और ठंडे पानी में बैठें जिससे उस जगह में सर्दी पहुंचे और चन्दन,गुलाब और गुलरोगन में थोड़ा सिर्का मिलाकर पीठपर लेपकरे और ठंडे और तर स्थान में रहा करें और ठंडे और तर भोजन जैसे जौका पानी आदि खावें छठा भेद यह है कि पीठ की मछलियों और गांठ और महीन बन्धनों में वादी के आने से दर्द उत्पन्न हो और उसको दूसरे भेदों में वर्णन कर चुके हैं। सातवां भेद यह है कि गर्भस्थान के संयोग से पीठ में दर्द उत्पन्न हो और इसका दर्द किसी २ स्त्रियों को रज आने के निकट उत्पन्न होता है क्योंकि रज अच्छी तरह जारी नहीं होता ([illegible] कि [illegible] बहाती है स्वीकार करें और गुलरोगन पीठपर म[illegible] के [illegible] की विधि कि जो रजको बहाता है अजमोद के बी[illegible] मेथी [illegible] २१॥ मासे [illegible] खीरा के बी[illegible] [illegible] अमर[illegible] खुरासानी सोया [illegible] बीज मलीक [illegible] [illegible] और सात दिन पिवा[illegible]

रहता है और तुर्त जाता रहता है और कभी अधिक परिश्रम खुश्की उत्पन्न करने के कारण मनके हटजाने का कारण होता है। चौथा भेद यह है कि गुर्देमें निर्बलता अथवा कोई दूसरा रोग उत्पन्नहो जो उसके निकटहोने और सम्बन्धित होने के कारण से पीठके भागों में दर्द उत्पन्नहो उसका यह चिन्हहै कि गुर्देमें निपत्ति पाईजाय और दोनों चूतड़ा के बीच में दर्द और कामकी निर्बलता उसके साक्षी हैं (इलाज) जो कुछगुर्देके रोगों में वर्णन हुआ है चाहे निर्बलताहो अथवा और कुछहो कारणके अनुसार उसकाउपायकरें।पांचवां भेदयहहै कि वहीरग जो पीठकी लंबाई में है खूनसे भरजाय और खिचावकेकारण दर्दउत्पन्नकरै और उसे का यह चिन्हहै कि मन कापीठकेआरम्भसे अर्थातजहांसे किमनकाभेजाकी गर्दनका अन्त है वहा से चूतड़ों के बीच की लम्बाई के अन्त तक दर्द टीस सहित हो और उस जगह गर्मी का होना और खूनके दूसरे चिन्ह उसके साक्षी हैं और चलने के समय दर्दकी अधिकता हो (इलाज) बासलीक की फस्द खोलें और आरम्भ में खट्टे और मीठे अनार का पानी, नीबू का शर्बत, खुर्फा के बीज का शीरा और ककड़ी खीरे के बीज का शीरा सिकञ्जबीन मिलाकर दें और ठंडे पानी में बैठें जिससे उस जगह में सर्दी पहुंचे और चन्दन,गुलाब और गुलरोगन में थोड़ा सिर्का मिलाकर पीठपर लेपकरें और ठंडे और तर स्थान में रहा करै और ठंडे और तर भोजन जैसे जौका पानी आदि खावें छठा भेद यह है कि पीठ की मछलियों और मोटे और महीन बन्धनों में वादी के आने से दर्द उत्पन्न हो और उसको दूसरे भेदों में वर्णन कर चुके हैं। सातवां भेद यह है कि गर्भस्थान के संयोग से पीठ में दर्द उत्पन्न हो और इसका दर्द किसी २ स्त्रियों को रज आने के निकट उत्पन्न होता है क्योंकि रज अच्छी तरह जारी नहीं होता (... [illegible] कि [illegible]
बहाती है स्वीकार करें और गुलरोगन पीठपर म[illegible] [illegible] के [illegible]
की विधि कि जो रजको बहाता है अजमोद के बीज [illegible] मेथी [illegible]
३१॥ माशे [illegible] खीरा के बी[illegible] [illegible] अमर[illegible]
खुरासानी सोया के बीज मलंक ९[illegible]
गाढ़ा करें और रात दिन पिवा[illegible]
दा।

भाय इस कारण से जोड़ में फोक इकट्ठे होजांय। दूसरा यह है कि आमाशय का पचाव निर्बल होजाय इस कारण से कच्चे दोष उत्पन्न होकर जाइयें आवें। तीसरा यह है कि कुरीति का काम पड़े जैसा कि एक भोजन पर दूसरा भोजन खांय और निकम्मे भोजन बिना नियम खांय और अधिक मदिरा पान करें और खाने के उपरान्त परिश्रम और सभोग करें और बिना कुछ खाये हम्माम में पानी पीवें और पेट भरे होने पर गर्म पानी से न्हाय इस कारण से मवाद जोड़ोंपर आपड़े चौथा यह है कि जुकाम और नजला विशेष उत्पन्न हो और उसका मवाद जोड़ पर जा पड़े। पांचवां यह है कि किसी मनुष्य को नियम से विरुद्ध मवाद के निकालने का काम पड़ा हो और मवाद विशेष होकर जोड़ों पर आपड़े। छठे यह है कि कब्ज का इलाज ऐसा किया जाय कि आंतें बलवान् हो जांय और फोकें हाथ पांवों के द्वारा निकल कर जोड़ों पर आपड़े। सातवें यह है कि शरीर के अधिक परिश्रम तथा क्रोध आनन्द भय और चिन्ता के कारण से दोष उबल कर जोड़ों पर गिरें। (लाभ) जोड़ों के दर्द का प्रधान कारण यातो दुष्ट प्रकृति सादा है अथवा मवाद वाली और है कि मवाद दोषी हो अथवा सादा हो जैसे रीह और। यह रोग बहुधा कफ से उत्पन्न होताहै और खून से भी बहुत उत्पन्न होता है और रीह और पित्त से बहुत कम और बादी से कभी २ उत्पन्न होता है और इन मवादों में केवल प्रत्येक मवाद इस रोग का कारण होता है अथवा दूसरे मवाद के साथ मिलता है परन्तु बादी के साथ कफ कभी २ मिलजाता है परन्तु पित्त और कफ बहुधा मिल कर इस रोग को उत्पन्न करते हैं और यद्यपि सब जोड़ों का दर्द कारण चिन्ह और इलाज में समान है परन्तु किसी २ जोड़ का मुख्य २ इलाज है उन सबको अलग २ वर्णन करते हैं।

गठिया का वर्णन।

इसका वही अर्थ है जो हकीमोंकी सम्मतिमें ठहरा है अर्थात् वह दर्द और सूजन कि जो हाथ पांव और गांव के जोड़ों में उत्पन्न होती है और इसके कईभेद हैं पहला यह है कि गर्म सादा दुष्ट प्रकृति अथवा ठण्डी तथा खुश्क जोड़ों में अथवा सब शरीर में उत्पन्न हो। सादा का यह चिन्ह है कि धीरे २ और थोड़ी २ उत्पन्न हो और बोझ और सूजन बिलकुल न हो और अंग का रंग शरीर के समान हो फिर शरीर और प्रकृति की गर्मी पर, गर्मी सर्दी पर, और खुश्की पर मालूम होती है (इलाज) जो गर्म दुष्ट प्रकृति हो तो उसके सम्हालनेके लिये सर्द चीजें और नीबूकाअर्क और सिकंजबीन, अनारका

जाय इस कारण से जोड़ में फोक इकट्ठे होजांय। दूसरा यह है कि आमाशय का पचाव निर्बल होजाय इस कारण से कच्चे दोष उत्पन्न होकर जोड़में आवें। तीसरा यह है कि कुरीति का काम पड़े जैसा कि एक भोजन पर दूसरा भोजन खांय और निकम्मे भोजन बिना नियम खांय और अधिक मदिरा पान करें और खाने के उपरान्त परिश्रम और सभोग करे और बिना कुछ खाये हम्माम में पानी पीवें और पेट भरे होने पर गर्म पानी से न्हाय इस कारण से मवाद जोड़ोंपर आपडे चौथा यह है कि जुकाम और नजला विशेष उत्पन्न हो और उसका मवाद जोड़ पर जा पड़े। पांचवां यह है कि किसी मनुष्य को नियम से विरुद्ध मवाद के निकालने का काम पड़ा हो और मवाद विशेष होकर जोड़ों पर आपड़े। छटे यह हैं कि कूलंज का इलाज ऐसा किया जाय कि आंत बलवान् हो जांय और फोकें हाथ पांवों के द्वारा निकल कर जोड़ों पर आपड़े। सातवें यह है कि शरीर के अधिक परिश्रम तथा क्रोध आनन्द भय और चिन्ता के कारण से दोष उबल कर जोड़ों पर गिरें। (लाभ) जोड़ों के दर्द का प्रधान कारण यातो दुष्ट प्रकृति सादा है अथवा मवाद वाली और है कि मवाद दोषी हो अथवा सान्द्र हो जैसे रीह और यह रोग बहुधा कफ से उत्पन्न होताहै और खून से भी बहुत उत्पन्न होता है और रीह और पित्त से बहुत कम और बादी से कभी २ उत्पन्न होता है और इन मवादों में केवल प्रत्येक मवाद इस रोग का कारण होता है अथवा दूसरे मवाद के साथ मिलता है परन्तु बादी के साथ कफ कभी २ मिलजाता है परन्तु पित्त और कफ बहुधा मिल कर इस रोग को उत्पन्न करते हैं और यद्यपि सब जोड़ों का दर्द कारण चिन्ह और इलाज में समान है परन्तु किसी २ जोड़ का मुख्य २ इलाज है उन सबको अलग २ वर्णन करते हैं।

गठिया का वर्णन।

इसका वही अर्थ है जो हकीमोंकी सम्मतिमें उतरा है अर्थात् वह दर्द और सूजन कि जो हाथ पांव और पांव के जोड़ों में उत्पन्न होती है और इसके कईभेद हैं पहला यह है कि गर्म सादा दुष्ट प्रकृति अथवा ठन्डी तथा खुश्क जोड़ों में अथवा सब शरीर में उत्पन्न हो। सादा का यह चिन्ह है कि धीरे २ और थोड़ी २ उत्पन्न हो और बोझ और सूजन बिल्कुल न हो और अंग का रंग शरीर के समान हो फिर शरीर और प्रकृति की गर्मी पर, गर्मी सर्दी पर, और खुश्की पर गाढ़ी होती है (इलाज) जो गर्म दुष्ट प्रकृति हो तो उसके सम्हालनेके लिये गर्द बीजदे और नीबूकाशर्बत और सिकंजबीन, अनारका

गति करैं और फस्द और पछनों के पीछे जब दो या तीन दिन बीतजाय तो ककड़ी के पत्ते का पानी और सिकंजबीन तथा गर्म पानी पीकर वमन करै और जो सिकंजबीन गर्म पानी में मिलाकर ७ माशे खरबूजे की जड़ छानकर इसमें मिलाकर पीवें और वमन करैं तो अति उत्तम है और केवल सिकंजबीन गर्म पानीके साथ देना भी विशेष गुणकारी है और वमन विशेष लाभ दायक है मुख्य कर जहां कहीं कि रोग पांव में हो और जुलाब की आवश्यकता होतो पहले बनफशा, पित्तपापड़ा, इमली, आलू, मुनक्का, हर्ड़ के काढे में बंशलोचन मिलाकर दें और इन दवाओं की तोल का प्रमाण रोगी की दशा के अनुसार रखना चाहिये और उचित है कि शीरखिश्त और तुरंजबीन भी डालदे और कोईर हकीम आवश्यकता के समय सनाय मक्की भी डालते हैं और जहां कहीं कि जलन और गर्मी की अधिकताहो तो नीलोफर पानी तथा खट्टे मीठे अनार का पानी और बादाम का तेल लाभदायक है और इमलीका पानी और आलूबुखारेका पानी और सादा सिकंजबीन और दीजुगी लाभ दायक है और फस्द के पहले अथवा उसके पीछे मवादके लौटाने के लिये लाल और सफेद चन्दन गुलाबकेफूल, सुपारी, मामीसा अकाकिया, सिर्का और कासनी के पानी और हरे धनिये के पानी आदि में मिलाकर दर्द वाले जोड़ पर लेप करै और दर्द की अधिकता में अफीम और जंगली सेव की जड़ और दूसरे सुन्नकरनेवाली दवा काहू के पानी में मिलाकर लेप करै जिससे दर्द थम जाय (ज्ञान) जहां कहीं कि बहुतसा मवाद और विशेषगति हो तो जल्द मवादको निकालें और कुछ देर न करें और इस दशामें मवाद के बलवान लौटानेवाली चीजों का भी लेप न करें उसके दो तात्पर्य हैं एक तो यह है कि जब मवाद बलवान गतिमें हो और मवादके लौटानेवाली दवा काम में लावें तो मवाद गति करनेसे रहजायगा और रगों और जोड़ोंकेदबनेसे दर्द विशेष होगा दूसरे यह है कि जबदर्द विशेषहो और मवादके लौटानेवाली बलवान दवा काममें लावें तो कदाचित मवाद वहां से फिरकर असली अंगोंकी तरफ जाय जिन से शरीर का पोषण होता है इसी कारण से फस्द के खोलने के पहिले ठंढे लेपों से बचना उचित मानते हैं मुख्य कर जहां कहीं कि मवाद बलवान गति करने वाला हो और जो कदाचित् इसी भूल से दर्द विशेष हो और इस बात का भय हो कि मवाद शरीर के पोषक अंगों की तरफ जायगा और वह पाम पोषक अंगों में किसी तरह के बदल आने से मालूम होसक्ती है तो

गति करें और फस्द और पछनों के पीछे जब दो या तीन दिन बीतजांय तो ककड़ी के पत्ते का पानी और सिकंजवीन तथा गर्म पानी पीकर वमन करें और जो सिकंजबीन गर्म पानी में मिलाकर ७ माशे खरबूजे की जड़ कूटछान कर इसमें मिलाकर पीवें और वमन करैं तो अति उत्तम है और केवल सिकंजवीन गर्म पानीके साथ देना भी विशेष गुणकारी है और वमन विशेष लाभ दायक है मुख्य कर जहां कहीं कि रोग पांव में हो और जुलाब की आवश्यकता होतो पहले बनफशा, पित्तपापड़ा, इमली. आलू, मुनक्का, हर्ड़ के काढ़े में बंशलोचन मिलाकर दें और इन दवाओं की तोल का प्रमाण रोगी की दशा के अनुसार रखना चाहिये और उचित है कि शीरखिश्त और तुरंजबीन भी डालदे और कोईर हकीम आवश्यकता के समय सनाय मक्की भी डालते हैं और जहां कहीं कि जलन और गर्मी की अधिकताहो तो जौका पानी तथा खट्टे मीठे अनार का पानी और बादाम का तेल लाभदायक है और इमलीका पानी और आलूबुखारेका पानी और सादा सिकंजबीन और बीजूरी लाभ दायक है और फस्द के पहले अथवा उसके पीछे मवादके लौटाने के लिये लाल और सफेद चन्दन गुलाबकेफूल, सुपारी, मामीसा अकाकिया, सिर्का और कासनी के पानी और हरे धनिये के पानी आदि में मिलाकर कष्ट वाले जोड़ पर लेप करें और दर्द की अधिकता में अफीम और जंगली सेव की जड़ और दूसरे सुन्नकरनेवाली दवा काहूके पानी में मिलाकर लेप करें जिससे दर्द थम जाय (ज्ञान) जहां कहीं कि बहुतसा मवाद और विशेषगति हो तो जल्द मवादको निकालें और कुछ देर न करें और इस दशामें मवाद के बलवान लौटानेवाली चीजों का भी लेप न करें उसके दो तात्पर्य हैं एक तो यह है कि जब मवाद बलवान गतिमें हो और मवादके लौटानेवाली दवा काम में लावें तो मवाद गति करनेमें रुकजायगा और रगों और जोड़ोंके दबनेसे दर्द विशेष होगा दूसरे यह है कि जबदर्द विशेषहो और मवादके लौटानेवाली बलवान दवा काममें लावें तो कदाचित मवाद वहां से फिरकर असली अंगोंकी तरफ जाय जिन से शरीर का पोषण होता है इसी कारण से फस्द के खोलने के पहिले ठंडे लेपों के बचना उचित मानते हैं मुख्य कर जहां कहीं कि मवाद बलवान गति करने वाला हो और जो कदाचित् ऐसी भूल से दर्द विशेष हो और इस बात का भय हो कि मवाद शरीर के पोषक अंगों की तरफ जायगा और यह बात पोषक अंगों में किसी तरह के बदल जाने से मालूम होसक्ती है तो

जोड़ों से दूर करै तौ मृत्यु का कारण हो क्योंकि मवाद दिल और दूसरे पोषक अंगों की तरफ गिर पड़ता है और प्रगट हो कि इस में मवाद के निकलने के पहले तीक्ष्ण विरेचक दवाओं के ग्रहण करने से पोषक अंगों पर मवाद के फिर जाने का भय पित्ती खून के कारण से है क्योंकि पित्त और पित्ती खून शीघ्र गति करता है और तबियत के विशेष विरुद्ध है (इलाज) जो पित्ती खून हो तो पहले फस्द खोलें और पकाव प्रगट होने के पीछे पित्त के निकलने के लिये हरड़ का काढ़ा आदि मवाद और रोगी के बल के अनुसार देवै और जो तबियत नर्म होतो मवाद के पकाने वाली दवा ही ग्रहण करें और मवाद को न छेड़ें और इस रोग में ठंडी चीजें जिनमें अजीर्ण न हो लेप और तरेड़ों में काम लावें जैसे ईसबगोल सिर्के में मिलाकर और पीआ[?] छिलका, खीरा का पानी और सदा गुलाब का पानी काहू का पानी और कपूर आदि और जब दर्द की अधिकता और अचेतता का भय हो तो नशे की दवा जितनी कि दर्द के कम करने में ठीक समझी जाय लेप करें और दर्द के थामने वाली दवा जो इस भेद के अन्त में लिखी जायगी उनका खाना उचित समझें और याद रक्खें कि इस में नष्ट करनेवाले लेपों की आवश्यकता नहीं मुख्यकर जहां कहीं निर्मल पित्त कारण हो क्योंकि पित्त हल्का और बहुत गर्म है और जल्द पच जाता है और ऐसा ही पित्ती खून और दस्तों के पीछे उचित है कि पेशाब के लाने वाली ठंडी दवा जैसे केवल कासनी और ककड़ी खीरा के बीज आदि दें अथवा सिकंजबीन मिलाकर दें और पेशाब के लाने वाली दवाओं का लाभ इन रोगों में मुख्यकर मवाद के निकलने के पीछे विशेष है क्योंकि इस रोग का मवाद दूसरे और तीसरे पचाव का फोक है और जिगर कि जो दूसरे पचाव का स्थान है उस से मवाद के निकलने के लिये और रगों के साफ करने के लिये जो तीसरे पचाव का स्थान है मूत्र के बहानेवाली दवाएं मुख्यकर और सिकंजबीन साद मूली दो बारे [?] के लिये गुण रखती है परन्तु चाहिये कि बहुत खट्टी न हो और मूत्र के लानेवाली गर्म दवा जैसे सौंफ अजमोद कभी न दें क्योंकि मूत्र के लाने वाली गर्म दवा मवाद को जमाती हैं और उसकी रगों को नष्ट करती हैं (लाभ) जब कि दस्तावर दवाओं की आवश्यकता हो और शक्ति पूरा करसकी हो तो शरीर का एक भाग अधिक लोप से साफ करे और कम दस्तलाने वाली दवा न दें और इस काम के लिये यदि ज्वर न हो तो सुरंजान अयिारजफ़ैकरा[?] है (फाय-

जोड़ों से दूर करै तौ मृत्यु का कारण हो क्योंकि मवाद दिल और दूसरे पोषक अंगों की तरफ गिर पड़ता है और प्रगट हो कि इस में मवाद के निकलने के पहले तीक्ष्ण विरेचक दवाओं के ग्रहण करने से पोषक अंगों पर मवाद के फिर जाने का भय पित्ती खून के कारण से है क्योंकि पित्त और पित्ती खून शीघ्र गति करता है और तबियत के विशेष विरुद्ध है (इलाज) जो पित्ती खून हो तो पहले फस्द खोलें और पकाव प्रगट होने के पीछे पित्त के निकलने के लिये हरड़ का काढ़ा आदि मवाद और रोगी के बल के अनुसार देवै और जो तबियत नर्म होतो मवाद के पकाने वाली दवा ही ग्रहण करैं और मवाद को न छेड़ें और इस रोग में ठंढी चीजें जिनमें अजीर्ण न हो लेप और तरेड़ों में काम लावें जैसे ईसबगोल सिर्के में मिलाकर और पोस्त का छिलका, खीरा का पानी और सदा गुलाब का पानी काहू का पानी और कपूर आदि और जब दर्द की अधिकता और अचेतता का भय हो तो नशे की दवा जितनी कि दर्द के कम करने में ठीक समझी जाय लेप करैं और दर्द के थामने वाली दवा जो इस भेद के अन्त में लिखी जायगी उनका खाना उचित समझें और याद रक्खें कि इस में नष्ट करनेवाले लेपों की आवश्यकता नहीं मुख्यकर जहां कहीं निर्मल पित्त कारण हो क्योंकि पित्त हलका और बहुत गर्म है और जल्द पच जाता है और ऐसा ही पित्ती खून और दस्तों के पीछे उचित है कि पेशाब के लाने वाली ठंढी दवा जैसे केशर कासनी और ककड़ी खीरा के बीज आदि दें अथवा सिकंजबीन मिलाकर दें और पेशाब के लाने वाली दवाओं का लाभ इन रोगों में मुख्यकर मवाद के निकलने के पीछे विशेष है क्योंकि इस रोग का मवाद दूसरे और तीसरे पचाव का फोक है और जिगर कि जो दूसरे पचाव का स्थान है उस के मवाद के निकलने के लिये और रगों के साफ करने के लिये जो तीसरे पचाव का स्थान है मूत्र के बढ़ानेवाली दवाएँ मुख्यकर और सिकंजबीन खाई मूली हो खारे पित्त के लिये इस गुण रखती है परन्तु चाहिये कि बहुत खट्टी न हो और मूत्र के लानेवाली गर्म दवा जैसे सौंफ अजमोद कभी न दें क्योंकि मूत्र के लाने वाली गर्म दवा मवाद को जमाती हैं और उनकी नसों को नष्ट करती हैं (लाभ) जब कि दस्तावर दवाओं की आवश्यकता हो और शक्ति पूरा करसकती हो तो शरीर का एक भाग अधिक रोग से साफ करै और कम दस्तलाने वाली दवा न दें और इस काम के लिये यदि ज्वर न हो तो सुरञ्जान अधिक लाभदायक है (लाभ-

के पीछे तबियत के हल्का करने के लिये गर्म हुकना काम में लावें जैसे तुर-नवीन. ननफ्सा उन्नाव. लिसौढा. जो अथ कुचलके करके मवाद के निकालने के पीछे काढ़े कि जिन में सनाय मकी. पीली हड़, उन्नाव, लिसौढा इमली. पित्त पापड़ा, पामनी आलू शिरशमिम शीरखिश्त और तुरंजवीन पड़ी हो काम में लावें और जो दवा दर्द के ठहराने वाली है जैसे मसूर जदी हड्डी. सूरजान सब बराबर पीस कर चूर्ण बनावें । इसकी मात्रा १० माशे, है और यह लेप नशा करने वाला दर्द को ठहराता है रोटी का गूदा अंडे की जर्दी में शूकरा के बीज, अफीम, तथा भांग के बीज महीन पीस कर मिलाकर केसर मिलाकर लेप करै और बाकी उपाय बुद्धिमान हकीम की सम्मति के अनुसार उचित समयमें ग्रहणकरै । चौथा भेद वहहै कि कफसे उत्पन्नहो उसका चिन्ह यह है कि बोझ विशेष मालूम हो और गर्मी और जलन नहो और का २ दर्द हर समय रहे और सूजन शरीर के रंग के समान हो और नर्मी चित् सीसे फासा रंग होजाय और यह सूजन थोड़ीसी नर्म और फैली हुई होतीहै और उसका दर्द चौड़ाई और गहराईमें होताहै और कफके दूसरे चिन्ह प्रगट होते हैं और प्रकृति आयु और वादी तथा कफ और उपायोंका पहले व्यतीत होना इस पर साक्षी होते हैं और गर्म चीजों से लाभ होता है (इलाज) पहले सोया और मुलहटी के काढ़े में शहद मिलाकर पिलावें और वमन करावें यदि गर्म ऋतु नहो और कोई कारण वर्जित नहो और बहुधाऐसाई होता है कि जब वमन में कफ बहुत सा निकलजाय तो दूसरे उपाय की आवश्यकता न पड़े और नहीं तो दस्तावर दवादें और जब दस्तावर दवा देना चाहें तो पहले दोष को पकावें अर्थात् चार दिन तक शहद का बना गुलकंद गुलाब और सौंफ के अर्क में अथवा सौंफ, गुलाब के फूल, मुलहटी के काढ़े में मिलाकर ग्रहण करे और पकाने पानी का पीना इसविषयमें बहुतलाभदायक है और चार दिन में पकने का गुण मूत्र में प्रगट न हो तो तीन दिन और सड़ों का पानी मेद अजीर का तेल मिलाकर दें और चौथे दिन केवल नदोंका पानी बिना मेदअजीर के तेल के साथ दें और जब कि पकाव का असर प्रगट हो तो ४॥ माशे पापड़ और ४॥ माशे तुर्बुद शहद में मिलाकर दें और जब पकाव पूरा प्रगट हो तो सूरजान की गोली और नीमकी गोली तथा मुंतन की गोली से शरीरका मवाद निकालना चाहिये और जबकि फफका मवाद शरीरमें दि भेर होगा और मासभरतक लगातार उसका निकालना शक्तिकी निर्बलता

के पीछे तबियत के हलका करने के लिये गर्म झुकना काम में लावें जैसे तुर-
नबीन, ननफ्सा उन्नाव, लिसौढा, जो अध कुचले करके मवाद के निकालने
के पीछे शाद्रे कि जिन में सनाय मकी, पीली हड़, उन्नाव, लिसौढा इमली,
पित्त पापड़ा, पामनी आलू शिशमिम शीरखिश्त और तुरंजबीन पड़ी हो
काम में लावें और जो दवा दर्द के ठहराने वाली है जैसे मसूर
जड़ी हड़ी, सूरजान सब बराबर पीस कर चूर्ण बनावें। इसकी मात्रा १० माशे,
है और यह लेप नशा करने वाला दर्द को ठहराता है रोटी का गूदा अंडे की
जर्दी में शूकरा के बीज, अफीम, तथा भांग के बीज महीन पीस कर मिलाकर
केसर मिलाकर लेप करें और बाकी उपाय बुद्धिमान हकीम की सम्मति के
अनुसार उचित समयमें ग्रहणकरें। चौथा भेद यह है कि कफसे उत्पन्नहो उसका
चिन्ह यह है कि बोझ विशेष मालूम हो और गर्मी और जलन नहो और
का २ दर्द हर समय रहे और सूजन शरीर के रंग के समान हो और ऐनकी
चित् सीसे कासा रग होजाय और यह सूजन थोड़ीसी नर्म और फैली दर्द
होताहै और उसका दर्द चौड़ाई और गहराईमें होताहै और कफके दूसरे चिन्ह
प्रगट होते हैं और प्रकृति आयु और बादी तथा कफ और उपायोंका पह
ले व्यतीत होना उस पर साखी होते हैं और गर्म चीजों से लाभ होता है
(इलाज) पहले सोया और मुलहटी के काढ़े में शहद मिलाकर पिलावें और
वमन करावें यदि गर्म ऋतु नहो और कोई कार्य वर्जित नहो और बहुधाऐसा
होता है कि जब वमन में कफ बहुत सा निकलजाय तो दूसरे उपाय की
आवश्यकता न पड़े और नहीं तो दस्तावर दवादें और जब दस्तावर दवा देना
चाहे तो पहले दोष को पकावें अर्थात् चार दिन तक शहद का बना गुलकंद
गुलाब और सौंफ के अर्क में अथवा सौंफ, गुलाब के फूल, मुलहटी के काढ़े में
मिलाकर ग्रहण करें और धनाके पानी का पीना इसविषयमें बहुतलाभदायक है
और चार दिन में पकने का गुण मूत्र में प्रगट न हो तो तीन दिन और मकों
का पानी बंद अजीर का तेल मिलाकर दें और चौथे दिन केवल मकोंका पानी
बिना बेदअजीर के मत्र के साथ दें और जब कि पकाव का असर प्रगट हो
तो ४॥ माशे याग्न और ३॥ माशे तुर्बुद शहद में मिलाकर दें और जब पकाव
पूरा प्रगट हो तो सूरजान की गोली और सौंमड़ी गोली तथा मुंतन की गोली
से शरीरका मवाद निकालना चाहिये और जबकि कफका मवाद शरीरमें वि
शेष होताहै और मासभरतक लगातार उसका निकालना अक्लकी निर्बलता

तो चाहिये कि जोड़ों पर मोम का का तेल तवक़ और मुर्गे की चर्बी आदि मलें जिससे मज्जियां और जोड़ उसकी हानि से बचे रहें और हकीम अबूसुहेल लिखता है कि यह रोग कफवाले दोष से होतो उसके मुलायम करने और फैलाने के उपरान्त चीते की गोली मुनतन की गोली और जो गोलियां कि हुबुद गारीकून, यारज फयकरा, और इन्द्रायन का गूदा, सूरजान और माही जोहरा, थूनीदान, चीता, एलवा, हुरमुल, मजीठ, नमक हिंदी, छरीला जवाशीर, सुकबीनजसे बनीहों खवावें फिर अकलीलुलमालिक, मेथी, अलसी, गारके पत्ता, हुरमुल, कनेर के पत्ता, जंगली अनार की जड़के पत्ता, समग़ बतम, बालछड़ का तेल, लेपकी विधिपर लगावें और एलवा ७ माशे, कूट, जरावन्द, मुरदासिंग ३॥ माशे, कूट पीसकर [illegible] र के उबले पानी में मिलाकर लेप करे और केवल चनों को कनेरके पानीमें महीन पीसकर लेप करना लाभदायक है । पांचवां भेद यह है कि बादी का मवाद गठिया का कारण हो और उसका यह चिन्ह है कि दर्द और खिचाव कम हो और सूजन में कठोरता और उसके रंग में नीलापन प्रगटहो और भोजन की रुचि विशेष हो और बादी के सब चिन्ह प्रगट हों और इलाज बहुत कम लाभदायक हो और गर्म तर चीजें लाभ दायक हों (इलाज) जो यह जानें कि बादी खून में निकल आवेगी तो फस्द खोलें और सम्पूर्ण पचाव के उपरान्त बादी के निकालने वाली दवा दें जैसे आकाश बेलका काढ़ा आदि और आकाशबेलकी माजून और जवारिशकमूनी शेष बादी के निकालने के लिये लाभ दायक हैं और चाहिये कि बाबूना मेथी खितमी और मरूसी के बीज, गूगल, जावशीर, राताइनज, और अंजीर एकदिवादें और लेप, इन सब दवाओं को घी के घी में मिलाकर लेप करे [illegible] दिन तक रहदें और नष्ट करदें और सोसन का तेल, कुटकी का तेल, नरगिस गुलाब के फूल, सुर्ख तेल बाबूना का तेल, मोम, चर्बी, बकरी का गुर्दा, मुर्गी और बतक की चर्बी से औषधी बनाकर ग्रहण करे कि उनमें भी वही गुणहै और गर्म और तर तेल मलना और बाबूना और सोंना मरुवा, पोदीना, हाशा जूफा, मेथी के काढ़े से तरेरा और भपारा देना लाभदायक है और इसतरह [illegible] के स्नानगृह में परिश्रम करावें और शरीर को गरमी पहुंचाने से मगुध न रहे और कच्चा मवादके पचानेको आतुरता न करे और गोश्त की मवाद के नष्ट करने वाली और मुलायम करने वाली हो स्वीकार करे और थोड़ा खाना और परिश्रम भोजन करने से पहले लाभदायक है । (सूचना) इस में फसद खोलना उस समय लाभदायक होगा कि बादी के

तो चाहिये कि जोड़ों पर मोम का का तेल तबक और मुर्गे की चर्बी आदि मलें जिससे मजलिश और जोड उसकी हानि से बचे रहें और हकीम अबुसुहेल लिखता है कि यह रोग कफवाले दोष से होतो उसके मुलायम करने और फैलाने के उपरान्त चीते की गोली मुनतन की गोली और जो गोलियां कि तुखुद गारीकून, यारज फयकरा, और इन्द्रायन का गूदा, मूरजान और मादी जोहरा, थूजीदान, चीता, एलवा, हुरमुल, मजीठ, नमक हिंदी, छरीला जयाशीर, तुकर्मीनमसे बनीहों खवावें फिर अकलीलुलमालिक, मेथी, अलसी, गारके पत्ता, हुरमुल, करनब के पत्ता, जगली अनार की जड़के पत्ता, समग बतम, बालछड का तेल, लेपकी विधिपर लगावें और एलवा ७ माशे, कूट, जरावन्द, मुरदहरसिंग ३॥ माशे, कूट पीसकर [illegible] र के उबले पानी में मिलाकर लेप करे और केवल चनों को करनबके पानीमें महीन पीसकर लेप करना लाभदायक है। पांचवां भेद वह है कि यादी का मवाद गठिया का कारण हो और उसका यह चिन्ह है कि दर्द और खिचाव कम हो और सूजन में कठोरता और उसके रंग में लीलापन प्रगटहो और भोजन की चाहे विशेष हो और बादी के सब चिन्ह प्रगट हों और इलाज बहुत कम लाभदायक हो और गर्म तर चीजें लाभ दायक हों (इलाज) जो यह जानें कि बादी खून में निकल आवेगी तो फस्त खोलें और सम्पूर्ण पचाव के उपरान्त बादी के निकालने वाली दवा दें जैसे आकाश बेलका काढ़ा आदि और आकाशबेलकी माजून और जवारिशकमूनी शेष बादी के निकालने के लिये लाभ दायक हैं और चाहिये कि बाबूना मेथी [illegible] और अलसी के बीज, गूगल, जावशीर, रातीनज, और अंजीर यकर्दवादें और [illegible], इन सब दवाओं को घी के घी में मिलाकर लेप करे जिार दिन तक बरदे और नष्ट करदें और सोसन का तेल, कुटकी का तेल, [illegible] गुलाब के फूल, [illegible] बाबूना का तेल, मोम, चर्बी, बकरी का गुर्दा, मुर्गी और बतक की चर्बी से लीम्बी बनाकर ग्रहण करें कि उनमें भी यही गुणहै और गर्म और तर तेल मलना और बाबूना और दौना मरुवा, पोदीना, [illegible] जूफा, मेथी के काढ़े से [illegible] और भपारा देना लाभदायक है और इसतरह [illegible] के स्नानागार में परिश्रम रखनें और शरीर को तरी पहुंचाने से प्रकृत न रहे और कभी मवादके पचानेमें आतुरता न करें और जो भीम की मवाद के नष्ट करने वाली और मुलायम करने वाली हो स्वीकार करें और थोड़ा खाना और परिश्रम भोजन करने से पहले लाभदायक है।
(सूचना) इस में फस्द खोलना उस समय लाभदायक होगा कि बादी के

त्पन्न हुआ हकीमों ने शहर में हर तरह का इलाज किया यहां तक कि स खिया दिया तो भी कुछ लाभ न हुआ किन्तु उस दिन से प्रति दिन विशेष दर्द होने लगा उसके सम्बन्धियों ने मुझसे प्रश्न किया मुझे मालूम होगया कि बादी रोग का कारण है मैंने इसको यों इलाज किया कि माउल जुब्न के साथ बादी का चूर्ण फरमाया और पानी पीने से रोका और गावजबा का अर्क और मकोय उसके बदले पिलाया ईश्वर की कृपा से आरोग्यता प्राप्त हुई। छठा भेद यह है कि रीही मवाद गठिया का कारण हो उसका चिन्ह अधिक सिघाव होना और दर्द का जगहर फिरना है (इलाज) गुलकन्द गुलाब, सौंफ का अर्क और शर्बत बिजूरी दें और पुष्ट कारक तेल जैसे गुलरो गन आदि मले और कफ के निकालने स वे सुध नहीं और रीह के मवाद में बहुत तेजी और गर्मी होतीहै और जबकि विशेष खराबी उत्पन्न करताहै तब हड्डियों में घुसजाता है और उस को खराब कर देता है और तोड़ डालता है और रीह शोक (कांटे की सी रीह) उसका नाम है और उसका यह उपाय है कि खून और पित्त को निकाले। सातवां भेद यह है कि गठिया दो दोष तथा विशेष दोषों के संयोगिक होने से उत्पन्न हो और यह रोग कफ और पित्त के संयोगिक होने से बहुधा उत्पन्न होता है संयोगिक गठिया का यह चिन्ह है कि मलेक के चि ह उसकी न्यूनता और अधिकता के अनुसार म ाह [illegible] और गर्म दवा ठीक और ठंढी क्रमशः लाभदायक हो और कदाचित दवा कभी लाभ करै और फिर कभी यही दवा विरुद्ध मवाद व कारण हानि करै(इलाज) ध्यान से देखे कि कितने दोष मिले हुये हैं फिर उनी के [illegible] । पीदे- वे और इस मुर्रा में वे दवा अधिक बढ़ादे जो किसी गु[illegible]
हों जब तक कि सम्पूर्ण पवाव मग[illegible] के मोल[illegible]
पर शालड न हो यह सब उपाय [illegible] पर निर्भ[illegible]
बड़पाता नहीं है परन्तु जब पप[illegible] संयोगिक [illegible]
त्पन्न होती हैं तो उसका उपाय अ[illegible] है और [illegible]
यार के पहने क उपयोग इस्मों में [illegible] को आ[illegible]
इमोल, रेवन्द चीनी और मसीर[illegible]
दरमनी ३॥ माशे, कनेवजयाँ हुई [illegible] नि[illegible]
[illegible] में मिलाकर लेपकरें और आर्क[illegible]
दाम बराबर लेकर दूध में मिलाकर

त्पन्न हुआ हकीमों ने शहर में हर तरह का इलाज किया यहां तक कि स खिया दिया तो भी कुछ लाभ न हुआ किन्तु उस दिन से प्रति दिन विशेष दर्द होने लगा उसके सम्बन्धियों ने मुझसे प्रश्न किया मुझे मालूम होगया कि बादी रोग का कारण है मैंने इसको यों इलाज किया कि माउल जुब्न के साथ बादी का चूर्ण फकाया और पानी पीने से रोका और गावजबां का अर्क और मकोय उसके बदले पिलाया ईश्वर की कृपा से आरोग्यता प्राप्त हुई। छटा भेद यह है कि रीही मवाद गठिया का कारण हो उसका चिन्ह अधिक खिंचाव होना और दर्द का जगहर फिरना है (इलाज) गुलकन्द गुलाब, सौंफ का अर्क और शर्बत बिजूरी दें और पुष्ट कारक तैल जैसे गुलरो गन आदि मलै और कफ के निकालने से वे सुख नहीं और रीह के मवाद में बहुत तेजी और गर्मी होतीहै और जबकि विशेष खराबी उत्पन्न करतीहै तब हड्डियों में घुसजाता है और उस को खराब कर देता है और तोड़ डालता है और रीह शोक (कांटे की सी रीह) उसका नाम है और उसका यह उपाय है कि खून और पित्त को निकाले। सातवां भेद यह है कि गठिया दो दोष तथा विशेष दोषों के संयोगिक होने से उत्पन्न हो और यह रोग कफ और पित्त के संयोगिक होने से बहुधा उत्पन्न होता है संयोगिक गठिया का यह चिन्ह है कि मलेक के चिन्ह उसकी न्यूनता और अधिकता के अनुसार प्रगट हों और गर्म दवा ठीक और ठंडी कमलाभदायक हो और कदाचित दवा कभी लाभ करे और फिर कभी वही दवा विरुद्ध मवाद के कारण हानि करे (इलाज) ध्यान से देखे कि कितने दोष मिले हुये हैं फिर उसी के [illegible] मीदे- के और इस जुगत से वे दवा अधिक बढ़ादे जो किसी [illegible] [illegible] हो जब तक कि सम्पूर्ण पकाव मवाद [illegible] के मोता[illegible] पर आरूढ़ न हो यह सब उपाय [illegible] पर निर्भ[illegible] यद्यपि [illegible] नहीं है परन्तु जब पका[illegible] संयोगिक [illegible] उत्पन्न होती हैं तो उसका उपाय अ[illegible] [illegible] है औ[illegible] यार के पकने के उपरान्त इस्तों के [illegible] की आ[illegible] रसौत, मेंहदी चन्दन और मानीरू [illegible] इस्बनी ३॥ मासे, मनेबज्जी हुई [illegible] [illegible] में भिगोकर मेथकर और अर्क [illegible] दाम मलकर रेंघर दूध में मिलाकर

त्पन्न हुआ हकीमों ने शहर में हर तरह का इलाज किया यहां तक कि सं खिया दिया तो भी कुछ लाभ न हुआ किन्तु उस दिन से भाते दिन विशेष दर्द होने लगा उसके सम्बन्धियों ने मुझसे प्रश्न किया मुझे मालूम होगया कि बादी रोग का कारण है मैंने इसको यों इलाज किया कि माउल्जुब्न के साथ बादी का चूर्ण फकाया और पानी पीने से रोका और गावजबां का अर्क और मकोय उसके बदले पिलाया ईश्वर की कृपा से आरोग्यता प्राप्त हुई। छठा भेद यह है कि रीही मवाद गठिया का कारण हो उसका चिन्ह अधिक विचार होना और दर्द का जगहर फिरना है (इलाज) गुलकन्द गुलाब, सौंफ का अर्क और शर्बत बिजूरी दें और पुष्ट कारक तैल जैसे गुलरौ गन आदि मलै और कफ के निकालने में से चुक नहीं और रीह के मवाद में बहुत तेजी और गर्मी होवैहै और मवाके विशेष खराबी उत्पन्न करताहै तब हड्डियों में घुसजाता है और उस को खराब करदेता है और तोड़ डालता है और रीह शोक (कांटे की सी रीह) उसका नाम है और उसका यह उपाय है कि खून और पित्त को निकाले। सातवां भेद यह है कि गठिया दो दोष तथा विशेष दोषों के संयोगिक होने से उत्पन्न हो और यह रोग कफ और पित्त के संयोगिक होने से बहुधा उत्पन्न होता है संयोगिक गठिया का यह चिन्ह है कि प्रत्येक के चिन्ह उसकी न्यूनता और अधिकता के अनुसार प्रगट हों और गर्म दवा ठीक और ठंडी कमलाभदायक हो और कदाचित दवा कभी काम करै और फिर कभी वही दवा विरुद्ध मवाद के कारण हानि करै (इलाज) ध्यान से देखें कि कितने दोष मिले हुये हैं फिर उन्हीं के अनुसार दवा भी दे वे और इस नुसखे में वे दवा अधिक बढ़ादे जो किसी मुख्य दोष के मनहूज हो जब तक कि सम्पूर्ण पकाव प्रगट नहीं फस्द के खोलने और जुलाब भेने पर आरूढ़ न हो यह सब उपाय हकीमकी बुद्धि पर निर्भर है लिखने की आ वश्यकता नहीं है परन्तु जब कफ और पित्तके संयोगिक होने से गठिया उत्प न्न होती है तो उसका उपाय अलग लिखा जाता है और वह यह है कि प्र भात के पसीने के उपरांत दस्तों के लिए सूरंजान की गोली या काढ़ा दें और हमाम, पेलवा चन्दन और मालीदा की सब्जी, केसर, गलक ७ माशे, मिश्रि हरली ३॥ माशे, कर्नफली हर्ड १८ माशे मिलाकर महीन कूटकर मकोय के पा नी में मिलाकर लेपकरें और जराकहीं दवाकी अधिकता रहे, केसर और ५ पीस मसाला लेकर दूध में पिसकर काम और गुलरोगन या तिल्ली के तेल में

त्पन्न हुआ हकीमों ने शहर में हर तरह का इलाज किया यहां तक कि सं खिया दिया तो भी कुछ लाभ न हुआ किन्तु उस दिन से माने दिन विशेष दर्द होने लगा उसके सम्बन्धियों ने मुझसे प्रश्न किया मुझे मालूम होगया कि बादी रोग का कारण है मैंने इसको यों इलाज किया कि माउल जुब्न के साथ बादी का चूर्ण फकाया और पानी पीने से रोका और गावजुबां का अर्क और मकोय उसके बदले पिलाया ईश्वर की कृपा से आरोग्यता प्राप्त हुई। छटा भेद यह है कि रीही मवाद गठिया का कारण हो उसका चिन्ह अधिक खिचाव होना और दर्द का जगह२ फिरना है (इलाज) गुलकन्द गुलाब, सौंफ का अर्क और शर्बत बिजूरी दें और पुट्ठ शारक तैल मसे गुलरों गन आदि मले और कफ के निकालने मे ये गुन नहा और रीह के मवाद में बहुत तेजी और गर्मी होवीहै और मवाके विशेष खरारी उत्पन्न करताहै तब हड्डियों में घुसजाता है और उस को खराब करदेताहै और तोड़ डालता है और रीह शोक (कांटे की सी रीह) उसका नाम है और उसका यह उपाय है कि खून और पित्त को निकाले। सातवां भेद यह है कि गठिया दो दोष तथा विशेष दोषों के संयोगिक होने से उत्पन्न हो और यह रोग कफ और पित्त के संयोगिक होने से बहुधा उत्पन्न होता है संयोगिक गठिया का यह चिन्ह है कि प्रत्येक के चिन्ह उसकी न्यूनता और अधिकता के अनुसार प्रगट हों और गर्म दवा ठीक और ठंडी कमशाभदायक हो और कदाचित दवा कभी लाभ करै और फिर कभी वही दवा विरुद्ध मवाद के कारण हानि करै (इलाज) ध्यान से देखें कि कितने दोष मिले हुए हैं फिर उसी के अनुसार दवा भी दे वे और इस नुसखे में वे दवा अधिक बढ़ादे जो किसी मुख्य दोष के मनहूक हों जब तक कि सम्पूर्ण पकाव प्रगट नहो फस्द के खोलने और जुलाब देने पर आरूढ़ न हो यह सब उपाय हकीमकी बुद्धि पर निर्भर है किरन की आ वश्यकता नहीं है परन्तु जब कफ और पित्तके संयोगिक होने से गठिया उत्प न्न होती है तो उसका उपाय अलग लिखा जाता है और वह यह है कि म वाद के पकने के उपरान्त रूक्षों के लिए सूरंजान की गोली या काढ़ा दें और सौंफ, बेलगा चन्दन और मानीसा की जड़ों, केसर, पत्रक ७ माशे, गिलै अरमनी ३॥ माशे, कर्नफली ई १८ माशे लेकर महीन कूटकर मकोय के पा नी में भिगोकर लेपकरैं और जहांकहीं दर्दकी अधिकता होवे, केसर और ४ दाना मदार लेकर दूध में पिसकर लगावें और गुलरोगन या तिली के तेल में

भर लेकर ४॥ माशे, तुर्बुद और ३॥ माशे यारज फयकरा १॥ माशे, नमक मिलाकर खवावें।

पांवके अंगूठे के दर्द का वर्णन।

यह दर्द टकने के जोड़ में और पांव की उंगलियों में उत्पन्न होता है और यह दर्द बहुधा पांव की उंगलियों से मुख्य कर अंगूठे से आरम्भ होता है इसलिये हकीम सुहेल के बेटेने कहा है कि पांव के अंगूठे के जोड़ को नक्रस कहते हैं और इसी शब्द से निकरसका नाम निकला है कभी पैर के नीचे से अथवा पैर के बराबर से उठता है और सब पांव में फैल जाता है और कदाचित् दर्द यहां से ऊपर चढ़े और टकनोंमें पहुंचे और टकना सूजजा और कदाचित् यही दर्द जांघकी तरफ चढजाय और किसी २ के समीप यह है कि जो हाथ के जोड़में और उसकी उंगलियों के जोड़में दर्द और सूजन उत्पन्न होतो उसको भी निकरस कहते हैं अभिप्राय यह है कि दर्द पैर के अंगूठे के जोड़ का विशेष होता है मुख्य कर जिस अंगूठे में होता है और यही बहुधा होता है क्योंकि अंगूठे का जोड़ छोटा है और जो मवाद उसमें आता है नष्ट नहीं होता और विशेष खिंचता है और उसके अधिक शक्तिमान् होने से यह दर्द विशेष होता है और उसकी कठोरता के कारण से जो उसमें आता है सहज में नहीं टलता सो इस आवश्यकता से यद्यपि सूक्ष्म कारण होताहै तबभी बहुत कष्ट होता है और पांव के अंगूठे का दर्द उन रोगों में से है जो वारिस में बच्चे को पहुंचता है और जानलेना चाहिये कि उसका कारण [illegible] और इलाज और किसी मवाद से उसका बहुधा कम उत्पन्न होना [illegible] इसी प्रकार पर है कि जो गठिया में वर्णन हुआ है इसीलिये किताब [illegible] के बनाने वालेने दोनों को एकही जाना है और उसके वर्णन को दुबारा समझ कर उसपर ध्यान नहीं दिया है और गर्मी पर जो इस जगह [illegible] पूरा किया (लाभ) बहुधा ऐसा होता है कि ठंडी दवाओं के पिलाने और लेप करने से अंगूठे के जोड़ के दर्द का इलाज करें और सर्दी में अधिकता करै और जो गर्मी पित्त प्रकृति वाला है तो [illegible] में आता है उसका [illegible] दिम और दिमाग [illegible] और [illegible] गों को इस प्रकार की कुगति उत्पन्न [illegible] मवाद का [illegible] मांदे में [illegible] कारण है और मवाद [illegible] है [illegible] वर्णन किया गया है [illegible]

भर लेकर ४॥ माशे. तुर्बुद और ३॥ माशे पारज कपकरा १॥ माशे, नमक मिलाकर खवावे।

पांवके अंगूठे के दर्द का वर्णन।

यह दर्द टकने के जोड़ में और पांव की उंगलियों में उत्पन्न होता है और यह दर्द बहुधा पाव की उगलियों से मुख्य कर अगूठे से आरम्भ होता है इसलिये हकीम सुहेल क बेटेने कहा है कि पांव के अगूठे के जोड़ को नक़रस कहते हैं और इसी शब्द से निकरसका नाम निकला है कभी पैर के नीचे से अथवा पैर के बराबर से उठता है और सब पांव में फैल जाता है और कदाचित् दर्द यहां से ऊपर चढे और टकनोंमें पहुचे और टखना सूजजा और कदाचित् यही दर्द जांघकी तरफ चढजाय और किसी ? क समीप यदहै किजो हाथ के जोड़में और उसकी उगलियों के जोडमें दर्द और सूजन उत्पन्न होतो उसको भी निकरस कहते हैं अभिप्राय यह है कि दर्द पैर के अंगूठे के जोड़ का विशेष होता है मुख्य कर जिस अगूठे में होता है और यहां बहुधा होता है क्योंकि अगूठे का जोड़ छोटा है और जो मवाद उसमें आता है नष्ट नहीं होता और विशेष खिचता है और उसके अधिक अक्रियावान् होने से यह दर्द विशेष होता है और उसकी कठोरता के कारण से जो उसमें आता है सहज में नहीं टलता सो इस आवश्यकता से यद्यपि सूक्ष्म कारण होताहै तबभी बहुत नष्ट होता है और पांव के अगूठा का दर्द उन रोगों में से है जो बाप से बेटे को पहुचता है और जानना चाहिये कि उसका कारण [illegible] और इल्लाज और किसी मवाद से उसका बहुधा कम उत्पन्न होना अथवा त्यों इसी प्रकार पर है कि जो गठिया में वर्णन हुआ है इसीलिये [illegible] भरताव क बनाने वालन दोनों को एकही जाना है और उसके वर्णन को दुबारा समझ कर उसपर ध्यान नहीं दिया है और कई [illegible] पर जो इस जगह याग्य व पूरा किया (लाभ) बहुधा ऐसा होता है कि ठंडी दवाओं के पिलाने और लेप करने से अगूठे के जोड़ के दर्द का इलाज करें और सर्दी में अधिकता करे और जा गर्मी [illegible] [illegible] में आता है [illegible] [illegible] और [illegible] गों जो इस प्रकार की [illegible] उत्पन्न [illegible] [illegible] कि मवाद का [illegible] [illegible] है और मवाद [illegible] है उन [illegible] वर्णन किया गया है [illegible]

अच्छी तरह किया जाय तो इसनेही उपाय से सब मवाद उखड़ जाताहै और कभी वमन और दस्तों के उपरान्त मूत्रक लानेवाली दवाओं की आवश्यकता पड़ती है और श्रेष्ठ मूत्रके लानेवाली दवा जो कफ वाले घुटने के दर्द में काम आती है यहहै मूली, पखानभेद प्रत्येक ९७॥माशे,जरावन्द मुद्धारेज ३३॥ माशे, तुलसीके बीज आधसेर इनको कूट छान कर उनमें से १०॥ माशे चूरा मिलाकर पानी तथा सौंफ के अर्क के साथदे और सब उपायोंसे उत्तमउपाय यह है कि निर्मल उपवास करें और जो मनुष्य परिश्रम न करता हो उस से परिश्रम करावें परन्तु मवादके निकालने के उपरांत जिसमें परिश्रमकी गर्मी से कारण विशेष न हो और जब इन उपायों से लाभ मालूम न हो तो इस बात का परिश्रम करें कि मवाद जोड़ के भीतर से बाहर की तरफ फिर आवै और इस कामके लिये तूमड़ी लगाना और गन्धकके पानीमें बैठना लाभदायक है और जो विरंजी जड़, अकरकरा, मदारीद, कबूतरकी बीठ और धत्तूरा और मिलावे का शहद घुटने पर जहां कि मवादहै लेपकरै और छोड़दे यहां तक कि दाने उत्पन्न हों और वह जगह घायल होजाय फिर उसको अच्छा न होने दे तब तक कि मवाद उसी मार्ग से धीरे २ निकल जाय और दर्द हलका पड़जाय तो अति उत्तम है और किताब जालीनूसमें लिखा है कि बहुधा ऐसा होता है कि इसरोग में कई बार सिंगियों का लगाना और उनमें बहुत सा खून निकलना मवादको जोड़ की गहराई में से निकालता है और उपाय और कष्टों से बचाता है और जब कोई दवा गुणकारी न हो और कोई उपाय लाभ दायक न हो और रोगको विशेष काल व्यतीत होजाय और जोड़ के उखड़ जाने का भयहो अर्थात् जोड़ का निकलना प्रगट हो तो घुटने पर दाग देना चाहिये और उस दाग देने की यह विधि है कि लोहे का एक टुकड़ा त्रिशूल के समान बनावै जो दो अंगुल चौड़ाहो और दूधारेके [illegible] बीच बराबर उसके किनारे चौड़े हों और इस त्रिशूलके [illegible] और बाहरी किनारे भी ऐसेही चौड़ेहों [illegible] बयान करचुके [illegible] ऐसा मध्यमें अगर लगानाहै और इस [illegible] आवश्यकता के समय इस्तेमाल [illegible] प्याला घुटने पर रखकर [illegible] रखता है जिसमें चार दाग [illegible] रोगी निरोग घुटने की [illegible] की जगह को दाग देते हैं और [illegible]

है और बहुत परीक्षा किया हुआ है कि न्हाने के स्थान में गर्म पानी से न्हाय और तरी पहुंचानेवाले भोजन खावें और तेल, मुर्गे और बतक की चर्बी आदि सात दिन तक मलें उसके पीछे पांव की दर्द वाली रग की फस्द दोनों छोटी उंगलियों के मध्य में विरुद्ध ओर से खोलें और उसके उपरान्त बासलीककी फस्द खोलें और जो कहीं इस दर्दकी अधिकता हो तो गायका तेल, गुलरोगन और तिलीका तेल गर्म करके मलें तो दर्द थमजाता है और बहुधा देखनेमें आताहै कि मवादके निकालने के उपरान्त दागदिया तो पूरी आरोग्यता प्राप्त हुई और दाग की विधि इस रोग में इस प्रकार पर है कि एक लोहे की सींक गर्मकरें और टखनेसे आठ अंगुल ऊपर इरकुन्निसा रगको ढूंढकर उसपर दाग दे बहुधा हिन्दुस्तान के जर्राह इस कारण से कि उस रग से जानकार नहीं हैं पिंडली में चौड़ा दाग लकीर की तरह खींचते हैं इस विचार से कि वहरग इस से बाहर न होगी फिर जो दाग रग पर पहुंचगया तो कभी लाभदायक होता है और जो रगपर न लगा तो कभी लाभदायक नहीं होता और इस रगका यह चिन्ह है कि गांठदार होती है और जब पांव को टखने तक बां-धते हैं तो प्रगट होजाती है और जो पिंडली में यह रग प्रगट न हो तो पांव की दोनों छोटी उंगलियों के मध्य में एक चौड़ा लकीर लोहे की सींक से खींचदें और इस कारण से कि इस जगह मांस बहुत कम है बहुधा तो यही कि दाग देना लाभ देता है क्योंकि रगपर पहुंच जायगा और सावधानी की यह बात है कि इस जगह भी दागदें और पिंडली में भी टखने से आठ ४ गत्ती ऊपर उसी रोगी की उंगलियों से नापकर दागदें और जो दाग लाभ न दे या पिंडली में चीरदें और इस रग को चीमटी से चढ़ायकर काटडालें और दागदें ईश्वर की कृपासे रोगजाता रहेगा और संभोग तथा खटाईसे बचें।

पांचवां प्रकरण

दवाली का वर्णन

यह ऐसा रोग है कि पिंडली की रगें मोटी २ और टेढ़ी २ होजाय और इनमें गांठ पड़जाय और हरी मालूम हों और बादी का मूल उसका कारण होता है जो पिंडली की रगों में आपड़े और यह रोग बहुधा सिपाहियों और बोझ उठाने वालों और पैदल चलने वालों और उन लोगों को होता है जो हाकिम लोगों के सामने बहुधा खड़े रहते हैं और उन लोगों को जिन्हें

है और बहुत परीक्षा किया हुआ है कि न्हाने के स्थान में गर्म पानी से न्हाय और तरी पहुंचानेवाले भोजन खवावें और तेल, मुर्गे और बतक की चर्बी आदि सात दिन तक मलें उसके पीछे पांव की दर्द वाली रग की फस्द दोनों छोटी उंगलियों के मध्य में विरुद्ध ओर से खोलें और उसके उपरान्त बासलीककी फस्द खोलें और जो कहीं इस दर्दकी अधिकता हो तो गायका तेल, गुल्रोगन और तिलीका तेल गर्म करके मले तो दर्द थमजाता है और बहुधा देखनेमें आता है कि मवाद के निकालने के उपरान्त दागदिया तो पूरी आरोग्यता प्राप्त हुई और दाग की विधि इस रोग में इस प्रकार पर है कि एक ओंद की सींक गर्म करें और टखनेसे आठ अंगुल ऊपर इरकुन्निसा रगको ढूंढ़कर उसपर दाग दे बहुधा हिन्दुस्तान के जर्राह इस कारण से कि उस रग से जानकार नहीं हैं पिंडली में चौड़ा दाग लकीर की तरह खींचते हैं इस विचार से कि वह रग इस से बाहर न होगी फिर जो दाग रग पर पहुंचगया तो कभी लाभदायक होता है और जो रगपर न लगा तो कभी लाभदायक नहीं होता और इस रगका यह चिन्ह है कि गांठदार होती है और जब पांव को टखने तक बांधते हैं तो प्रगट होजाती है और जो पिंडली में यह रग प्रगट न हो तो पांव की दोनों छोटी उंगलियों के मध्य में एक चौड़ा लकीर ओंद की सींक से खींचदें और इस कारण से कि इस जगह मांस बहुत कम है बहुधा तो यही कि दाग देना काम देता है क्योंकि रगपर पहुंच जायगा और सावधानी की यह बात है कि इस जगह भी दागदें और पिंडली में भी टखने से आठ ४ गली ऊपर उसी रोगी की उंगलियों से नापकर दागदें और जो दाग लाभ न दे या पिंडली में चीरादें और इस रग को चिमटी से उठाकर काटडालें और दागदें ईश्वर की कृपासे रोगजाता रहेगा और संयोग तथा सटाईसे वर्ष

पाचवा प्रकरण

दवाली का वर्णन

यह ऐसा रोग है कि पिंडली की रगें पड़ी रहें और मोटी हो जाएं और इनमें गांठ पड़जाएं और हरी मालूम हों और पांवों का फूल जाना इसका कारण होता है जो पिंडली की रगों में आपड़े और यह रोग बहुधा सिपाहियों और बोझ उठाने वालों और पैदल चलने वालों और उन लोगों को होता है जो हाकिम लोगों के सामने बहुधा खड़े रहते हैं और उन लोगों को जिनके

है और बहुत परीक्षा किया हुआ है कि न्हाने के स्थान में गर्म पानी से
और तरी पहुंचानेवाले भोजन खवावें और तेल, मुर्गे और बतक
आदि सात दिन तक मले उसके पीछे पांव की दर्द वाली रग की
छोटी उंगलियों के मध्य में विरुद्ध ओर से खोलें और उसके
बासलीककी फस्द खोलें और जहां कहीं इस दर्दकी अधिकता हो तो
तेल, गुलरोगन और तिलीका तेल गर्म करके मले तो दर्द ।
देखनेमें आताहै कि मवादके निकालने के उपरान्त दागदिया तो पूरी
मास हुई और दाग की विधि इस रोग में इस प्रकार पर है कि ए
सींक गर्मकरें और टखनेसे आठ अंगुल ऊपर इरकुन्निसा रगको ढूंढ़क
दे बहुधा हिन्दुस्तान के जर्राह इस कारण से कि उस रग से
हैं पिंडली में चौड़ा दाग लकीर की तरह खींचते हैं इस विचार
इस से बाहर न होगी फिर जो दाग रग पर पहुंचगया तो
होता है और जो रगपर न लगा तो कभी लाभदायक नहीं
रगका यह चिन्ह है कि गांठदार होती है और जब ...
धते हैं तो प्रगट होजाती है और जो पिंडली में यह रग
की दोनों छोटी उंगलियों के मध्य में एक चौड़ी लकीर
खींचदें और इस कारण से कि इस जगह मांस बहुत ...
कि दाग देना लाभ देता है क्योंकि रगपर पहुंच जा...
यह बात है कि इस जगह भी दागदें और पिंडली में
गली ऊपर उसी रोगी की उंगलियों से नापकर ...
... दे यो पिंडली में चीरादें और इस रग को ...
और दागदें ईश्वर की कृपासे रोगजाता रहेगा ।

पांचवा प्रकार
दवाली का ...

यह ऐसा रोग है कि पिण्डली की रंग ...
इनमें गांठ पड़जाय और हरी मालूम हों औ...
होता है जो पिंडली की रगों में आपड़े और
बोझ उठाने वालों और पैदल चलने वा...
को हाकिम लोगों के सामने बहुधा खड़े ...

है और बहुत परीक्षा किया हुआ है कि न्हाने के स्थान में गर्म पानी और तरी पहुचानेवाले भोजन खवावें और तेल, मुर्गे और बतक आदि सात दिन तक मलै उसके पीछे पांव की दर्द वाली रग की छोटी उंगलियों के मध्य में विरुद्ध ओर से खोलें और उसके बासलीककी फस्द खोलें और जहां कहीं इस दर्दकी अधिकता हो तो तेल, गुलरोगन और तिल्लीका तेल गर्म करके मलै तो दर्द　।त. ६
देखनेमें आताहै कि मवादके निकालने के उपरान्त दागदिया तो पूरी मास हुई और दाग की विधि इस रोग में इस प्रकार पर है कि ए सींक गर्मकरें और टखनेसे आठ अंगुल ऊपर इरकुन्निसा रगको ढूंढ़क दे बहुधा हिन्दुस्तान के जर्राह इस कारण से कि उस रग से हैं पिंडली में चौड़ा दाग लकीर की तरह खींचते हैं इस विचार इस से बाहर न होगी फिर जो दाग रग पर पहुचगया तो होता है और जो रगपर न लगा तो कभी लाभदायक नहीं रगका यह चिन्ह है कि गांठदार होती है और जब ...
धते हैं तो प्रगट होजाती है और जो पिंडली में यह रग की दोनों छोटी उंगलियों के मध्य में एक चौड़ी लकीर खींचदें और इस कारण से कि इस जगह मांस बहुत ... कि दाग देना लाभ देता है क्योंकि रगपर पहुच जा... यह बात है कि इस जगह भी दागदें और पिंडली में गली ऊपर उसी रोगी की उंगलियों से नापकर ... दे यो पिंडली में चीरादें और इस रग को ... और दागदें ईश्वर की कृपासे रोगजाता रहेगा ।

पांचवा प्रकार

दवाली का ...

यह ऐसा रोग है कि पिण्डली की रगें ... इनमें गांठ पड़जांय और हरी मालूम हों और ... होता है जो पिंडली की रगों में आपड़े और ... बोझ उठाने वालों और पैदल चलने वा... को हाकिम लोगों के सामने बहुधा खड़े ...

सैना कहता है कि दाउल फील (हाथी के स हाथ पांव होना) रोग बुरा है और यह बहुत कम अच्छा होता है जो कष्ट न दे तो उचित है कि उसको उसकी दशा पर रहने दें और जबकि खूनी हो और घाव भरजाय और मांस के गलने और फोड़े का भय हो तो सिवाय जड़से काट डालने के और कोई इलाज नहीं है और जब आरम्भ में उसका उपाय करें तो उचित है कि वमन फस्द और मल आदि के द्वारा मवाद का निकालना मुख्यकर वमन लाभदायक है और कभी कफ और बादी को निकालते हैं और जो आवश्यकता होती है तो फस्द खोलते हैं फिर अजीर्ण कारक दवाओं का पांवपर लेप करते हैं और जब दृढ़ होजाता है तो इलाज से बहुत कम अच्छा होता है और जानना चाहिये कि सम्पूर्ण इलाज इस रोगका कि जिसमें आरोग्यता की आशा है दवाली के इलाज में विशेष परिश्रम करें और अधिक मवाद के नष्ट करने वाली और पचाने वाली दवाओं को काममें लावें और हकीम लोग कहते हैं कि कतरा (एक तेल) का लेप करना विशेष लाभ दायक है और कभी रसौली पांवमें उत्पन्न होती है औ बढ़कर हाथी के पांव के समान होती है उसका इलाज काटने से होता है और हकीम जालीनूस कहता है कि जिस मनुष्य का खून बिगड़ गया हो और बादी का खून इसमें भराहो जो उसको अधिक पैदल चलने का काम पड़ा हो तो पिंडली की रगें मोटी गठीली और मोटी तथा हाथ पांव हाथी के समान मोटे होजाते हैं क्योंकि तेज दस्तावर दवाओं को सह नहीं सकता है।

सातवा प्रकरण
ऐड़ी के दर्द का वर्णन।

यह कई प्रकार का होता है प्रथम तो यह है कि ऐड़ी में घाव होजाय तथा चोट और धमाके से कष्ट पहुँचे। दूसरा यह है कि तंग मोजे से ऐड़ी दबकर भिचजाय। तीसरा यह है कि गर्म और ठंडा मवाद उसपर आकर गिरे (इलाज) जो घाव उसका कारण है तो मरहम लगावें और जो चोट और धमाका उसका कारण हो तो मामीसा और गिले [illegible] लेकर प्रत्येक अलग पानी तथा गुलाब में घो[illegible] और [illegible] पानी उसपर डालना लाभदायक है और [illegible] लगावें [illegible] पड़े और जो मोजे से दबजाना उसका [illegible] हो तो [illegible] का और मामीसा और गिले [illegible] औ[illegible]

सैना कहता है कि दाउल फील (हाथी के स हाथ पांव होना) रोग बुरा है और यह बहुत कम अच्छा होता है जो कष्ट न दे तो उचित है कि उसको उसकी दशा पर रहने दें और जबकि खूनी हो और घाव भरजाय और मांस के गलने और फोड़े का भय हो तो सिवाय जड़से काट डालने के और कोई इलाज नहीं हैं और जब आरम्भ में उसका उपाय करें तो उचित है कि वमन फस्द और मल आदि के द्वारा मवाद का निकालना मुख्यकर वमन लाभदायक है और कभी कफ और बादी को निकालते हैं और जो आवश्यकता होती है तो फस्द खोलते हैं फिर अजीर्ण कारक दवाओं का पांवपर लेप करते हैं और जब दृढ़ होजाता है तो इलाज से बहुत कम अच्छा होता है और जानना चाहिये कि सम्पूर्ण इलाज इस रोगका कि जिसमें आरोग्यता की आशा है दवाली के इलाज में विशेष परिश्रम करें और अधिक मवाद के नष्ट करने वाली और पचाने वाली दवाओं को काममें लावें और हकीम लोग कहते हैं कि कतरा (एक तेल) का लेप करना विशेष लाभ दायक है और कभी रसौली पांवमें उत्पन्न होती है जो बढ़कर हाथी के पांव के समान होती है उसका इलाज काटने से होता है और हकीम जालीनूस कहता है कि जिस मनुष्य का खून बिगड़ गया हो और बादी का खून इसमें भराहो जो उसको अधिक पैदल चलने का काम पड़ा हो तो पिंडली की रगें मोटी गठीली और मोटी तथा हाथ पांव हाथी के समान मोटे होजाते हैं क्योंकि तेज दस्तावर दवाओं को सह नहीं सक्ती है ।

सातवा प्रकरण
ऐडी के दर्द का वर्णन।

यह कई प्रकार का होता है प्रथम तो यह है कि ऐडी में घाव होजाय तथा चोट और धमाके से कष्ट पहुंचे । दूसरा यह है कि तंग मोजे से ऐडी दबकर भिचजाय । तीसरा यह है कि गर्म और ठंढा मवाद उसपर आकर गिरे (इलाज) जो घाव उसका कारण है तो मरहम लगावें और जो चोट और धमाका उसका कारण हो तो मामीसा और गिले [illegible] लेकर प्रत्येक अलग पानी तथा गुलाब में घो[illegible] और [illegible] पानी उसपर डालना लाभदायक है और [illegible] लगावें [illegible] पड़े और जो मोजे से दबजाना उस[illegible] हो तो [illegible] का और मामीसा और गिले [illegible]

सली अंग जो शरीर का जड और बुनियाद हैं और जो कुछ उस मेंहै तारियां तथा आत्मा उसको घेरे हुए हैं जैसे हड्डी और रगें आदि। दूसरी चीज दोष हैं और तरीयां जो शरीर की पोलों में हैं जैसे हड्डी का गूदा और वीर्य्य आदि असली तरी कि उनका वर्णन दिक में आवेगा। तीसरी रूह है और ज्वर का हवा की तरह शरीर में फैले हुए हैं ये तीनों बातें हम्माम के समान हैं जैसे हड्डी आदि पहिली वस्तु जो शरीर को घेरे हुए हैं ऐसे हैं जैसे हम्मामकी भीतें, ईटें और पत्थर और दूसरी वस्तु जो शरीर को घेरे हुए हैं हम्माम के पानी के समान है और तीसरी आत्मा और भाफ है वह न्हाने के स्थान की हवा की जगह है सो जब ज्वर की गर्मी ठहर कर असली अंगों में लग जाती है तो ऐसा होना है जैसे आगकी गर्मी न्हाने के स्थान की भीत और ईंट पत्थर में लग गई और इस का नाम हुम्मयेदकिया (यह ज्वर जिसकी गर्मी मुख्य असली अंगों में हो) है और जब ज्वरकी गर्मी प्रथम दोषों और दूसरी तरियों में लगती है फिर अंगों में पहुचती हैं उसकी ऐसी उपमा होतीहै किगर्म पानी न्हाने के स्थान की धरती में डालें और न्हाने के स्थान की ईंट, पत्थर और भीतें इससे गर्म होजावें और इसका नाम हुम्मयेखिल्तिया (वह ज्वर कि जो किसी दोष से उत्पन्न हो) है और यहां दोष से शरीर की सब तरी से अर्थ है न कि केवल यही चारों दोष जैसे हकीम करेशी लिखताहै कि दोष से यहां इन चीजों का अर्थ है जो शरीर की तरीमें हों यह नहीं कि दोष के नाम ही से मुख्य हो इसलिये कि कभी ज्वर वीर्य्य के सड़जाने से उत्पन्न होता है और जब गर्मी पहले आत्मा और भाफके परमाणुओं में लगजाय और फिर उनमें से अंगों और दोषोंमें तो उसकी ऐसी उपमा है जैसे न्हाने के स्थान में आग लगावें और उसकी हवा गर्म होजाय फिर उसकीगर्मी से पानी और दीवारें गर्म होजांय और यह हुम्मयेयामिया अर्थात् वह ज्वर कहलाताहै जो एक दिनमें जाताहै (सूचना) यह जो वर्णन किया गया है कि शरीरके संयोगिक होने में तीनों चीजों से गर्मी सम्बंधित होती है और उसके अनुसार प्रत्येक ज्वरका नाम होता है उस सबब से यह अर्थ है कि गर्मी चिपट जाय और ठहर जाय परन्तु यह नहीं कि गर्मी आत्मा और दोषमें लगतीहै वा अंगों में भी पहुंचजाता है परन्तु जिसमें कि पहुंचती है जबतक उसमें नहीं ठहरजाती और अंगों नहीं लगजातीहै तबतक इसनामसे नहीं कहाती है जैसे वह गर्मी जो दोषोंमें लगजातीहै अंगोंकोभी गर्म करदेतीहै जबकि केवल हुम्मये कहतेहैं (ज्वर जो किसी दोषके गर्म होनेसे उत्पन्नहो) है परंतु जब असली अंगोंमें अच्छी तरह लगजातीहै तो दिक होजातीहै और अंगोंकी पेमेंही समझना चाहिये औरज्वर

सली अंग जो शरीर का जड़ और बुनियाद हैं और जो कुछ उस में तरी तथा आत्मा उसको घेरे हुए हैं जैसे हड्डी और रगें आदि। दूसरी चीज दोष हैं और तरीयां जो शरीर की पोलों में हैं जैसे हड्डी का गूदा और वीर्य्य आदि असली तरी कि उनका वर्णन दिक में आवेगा। तीसरी रूह है और ज्वर का हवा की तरह शरीर में फैले हुए हैं ये तीनों बातें हम्माम के समान हैं जैसे हड्डी आदि पहिली वस्तु जो शरीर को घेरे हुए हैं ऐसे हैं जैसे हम्मामकी भीतें, ईंटें और पत्थर और दूसरी वस्तु जो शरीर को घेरे हुए हैं हम्माम के पानी के समान है और तीसरी आत्मा और भाफ है यह न्हाने के स्थान की हवा की जगह है सो जब ज्वर की गर्मी ठहर कर असली अंगों में लग जाती है तो ऐसा होता है जैसे आगकी गर्मी न्हाने के स्थान की भीत और ईंट पत्थर में लग गई और इस का नाम हुम्मयेदक़िया (वह ज्वर जिसकी गर्मी मुख्य असली अंगों में हो) है और जब ज्वरकी गर्मी प्रथम दोषों और दूसरी तर चीजों में लगती है फिर अंगों में पहुंचती है उसकी ऐसी उपमा होवीहै किगर्म पानी न्हाने के स्थान की धरती में डालें और न्हाने के स्थान की ईंट, पत्थर और भीतें इससे गर्म होजाय और इसका नाम हुम्मयेखिल्तिया (वह ज्वर कि जो किसी दोष में उत्पन्न हो) है और यहां दोष से शरीर की सब तरी से अर्थ है न कि केवल वही चारों दोष जैसे हकीम करेशी लिखताहै कि दोष से यहां इन चीजों का अर्थ है जो शरीर की तरीमें हों यह नहीं कि दोष के नाम ही से मुख्य हो इसलिये कि कभी ज्वर वीर्य्य के सड़जाने से उत्पन्न होता है और जब गर्मी पहले आत्मा और भाफके परमाणुओं में लगजाय और फिर उनमें से अंगों और दोषोंमें तो उसकी ऐसी उपमा है जैसे न्हाने के स्थान में आग लगावें और उसकी हवा गर्म होजाय फिर हवाकीगर्मी से पानी और दीवारें गर्म होजांय और यह हुम्मयेयौमिया अर्थात् वह ज्वर कहलाताहै जो एक दिनमें जाताहै (सूचना) यह जो वर्णन किया गया है कि शरीरके स. योगिक होने में तीनों चीजों से गर्मी सम्बन्धित होती है और उसके अनुसार प्रत्येक ज्वरका नाम होता है उस सबब से यह अर्थ है कि गर्मी चिपट जाय और ठहर जाय परन्तु यह नहीं कि गर्मी आत्मा और दोषमें लगतीहै वा अंगों में भी पहुंचजाता है परन्तु जिसमें कि पहुंचती है जबतक उसमें नहीं ठहरजाती और अच्छी नहीं जमजातीहै तबतक उसनामसे नहीं कहाती है जैसे यह गर्मी जो दोषोंमें लगजातीहै अंगोंकोभी गर्म करदेतीहै तथापि केवल हुम्मये मकनीहै (ज्वर जो किसी दोषके गर्म होनेसे उत्पन्नहो) है परंतु जब असली अंगोंमें अच्छी तरह जम जातीहै या दिक होजातीहै और भोगोंको ऐसेही समझना चाहिये और ज्वर

क ज्वर जो दिल की आत्मा से सम्बन्ध रखता है और वह आन्हिक ज्वर जो दिमाग की आत्मा से सम्बन्ध रखता है और इस बात की पहचान कि आन्हिक ज्वर किस आत्मा से सम्बन्ध रखता है यह कि जो कार्य पहले प्रगट होचुके हैं उनका ध्यान करें जैसे पहले अजीर्ण का होना और भोजन शर्बत, और गर्म दवाओं का ग्रहण करना इस बात का चिन्ह है कि इसका सम्बन्ध जिगर की आत्मासे है और पहले क्रोध और आनन्दका होना और न्हाने के स्थान की गर्मी का पहुंचना इस बात का चिन्ह है कि इसका सम्बन्ध दिल वाली आत्मा से है और सोच चिन्ता परिश्रम और नींद इस बातको निर्णय कराते हैं कि जो दिमाग की आत्मा से इसका सम्बन्ध है अब जान लेना चाहिये कि हम इस ज्वरको दो भेदमें वर्णन करते हैं एक तो यह है कि सब भेद चिन्ह और इलाजों पर पूर्णरीतिपर मिलेहुएहों। दूसरे यह है कि उसका प्रत्येकभेद संक्षेप रीतिपर मुख्य हो। पहले भेद में आन्हिक ज्वरों के चिन्हों और इलाजों का पूरी विधि पर वर्णन है जानना चाहिये कि केवल उसके नौ चिन्ह हैं एक तो यह है कि उस में कपकपी न हो और बहुधा तो ऐसा भी होता है कि थोड़ी फुरेरी होजाय और कभी २ कपकपी भी होजाय। दूसरे यह है कि हाथ और पांव ठंडे हो जांय। तीसरे यह है कि उसके आरम्भ में शरीर का टूटना, थकना और ऊंघना बहुत कम हो और इस ज्वर वाला जब न्हाने के स्थान में जाय तो उसको फुरफुरी न आवे और जो आजाय तो जानना चाहिये मुख्ये अफनीहै (यह ज्वर जो किसी गर्म दोष के कारण से है) चौथे यह है कि नाड़ी में कुछ बड़ापन हो और लगातार चलती हो उसमें दबकापन और विरुद्धता न हो और विरुद्धता भी हो तो विधिपूर्वक हो परन्तु यह है कि ज्वर से पहले कोई ऐसा कार्य प्रगट हो कि जिसके कारण से विधि में अन्तर पड़जाय जैसे परिश्रम और भीतर के अंगों की मसल और बहुधा ऐसा होता है कि ठंडी हवा की अधिकता से अथवा उन हेतुओं से जो खुश्की पहुंचाते हैं नाड़ी कड़ी होजाय और उचित है कि नाड़ी के खुलने की गति विशेष शीघ्र और मन्द होने की गति बहुत सुस्त होजाय जो नाड़ी की दशा कठिन से मालूम हो तो श्वास की दशाओं पर ध्यान दें। पांचवें यह कि इसकी गर्मी बहुत तेज नहीं होती किंतु समान होती है जैसा कि गर्मी परिश्रम की समानता से उत्पन्न होती है और जैसे मस्त मनुष्यों को मदिरा पीने से उत्पन्न होजाती है छटे यह है कि मूत्र के पकाव का असर पहले दिन प्रगट हो। सातवें यह है कि

क ज्वर जो दिल की आत्मा से सम्बन्ध रखता है और वह आन्हिक ज्वर जो दिमाग की आत्मा से सम्बन्ध रखता है और इस बात की पहचान कि आन्हिक ज्वर किस आत्मा से सबन्ध रखता है यह कि जो कार्य पहले प्रगट होचुके हैं उनका ध्यान करें जैसे पहले अजीर्ण का होना और भोजन शर्बत, और गर्म दवाओं का ग्रहण करना इस बात का चिन्ह है कि इसका सम्बन्ध जिगर की आत्मासे है और पहले शोच और आनन्दका होना और न्हाने के स्थान की गर्मी का पहुँचना इस बात का चिन्ह है कि इसका सम्बन्ध दिल वाली आत्मा से है और सोच चिन्ता परिश्रम और नींद इस बात को निर्णय करावे हैं कि जो दिमाग की आत्मा से इसका सम्बन्ध है अब जान लेना चाहिये कि हम इस ज्वरको दो भेदमें वर्णन करतेहैं एकतो यहहै कि सब भेद चिन्ह और इलाजों पर पूर्णरीतिपर मिलेहुएहों। दूसरे यहहै कि उसका प्रत्येकभेद संक्षेप विधिपर मुख्य हो। पहले भेद में आन्हिक ज्वरों के चिन्हों और इलाजों का पूरी विधि पर वर्णन है जानना चाहिये कि केवल उसके नौ चिन्ह हैं एक तो यह है कि उस में कपकपी न हो और बहुधा तो ऐसा भी होता है कि थोड़ी फुरेरी होजाय और कभी २ कपकपी भी होजाय। दूसरे यह है कि हाथ और पांव ठंडे हो जांय। तीसरे यह है कि उसके आरम्भ में शरीर का टूटना, थकना और औंघना बहुत कम हो और इस ज्वर वाला जब न्हाने के स्थान में जाय तो उसको फुरफुरी न आवे और जो आजाय तो जानना चाहिये हुम्मये अफनीहै (वह ज्वर जो किसी गर्म दोष के कारण से है) चौथे यह है कि नाड़ी में कुछ बड़ापन हो और लगातार चलती हो उसमें हलकापन और विरुद्धता न हो और विरुद्धता भी हो तो विधिपूर्वक हो परन्तु यह है कि ज्वर से पहले कोई ऐसा कार्य प्रगट हो कि जिसके कारण से विधि में अन्तर पड़जाय जैसे परिश्रम और भीतर के अगों की जलन और बहुधा ऐसा होता है कि ठंडी हवा की अधिकता से अथवा उन हेतुओं से जो खुश्की बढ़ाते हैं नाड़ी कड़ी होजाय और उचित है कि नाड़ी के खुलने की गति विशेष शीघ्र और बन्द होने की गति बहुत सुस्त होजाय जो नाड़ी की दशा कठिन से मालूम हो तो श्वास की दशाओं पर ध्यान दें। पांचवें यह कि इसकी गर्मी बहुत तेज नहीं होती किंतु समान होती है जैसी कि गर्मी परिश्रम की समानता से उत्पन्न होती है और जैसे मस्त मनुष्यों को मदिरा पीने से उत्पन्न होजाती है छठे यह है कि मूत्रके पकाव का असर पहले दिन प्रगट हो। सातवें यह है कि

उसके भीतर भरा हुआ हो । तीसरा वह मनुष्य कि जिसको अजीर्ण के कारण से ज्वर होजाय और आन्हिक ज्वर के अन्त में हम्माम में जाना बहुत गुण करता है मुख्य कर जहां कहीं कि रोमांचों का रुकजाना और खाल का सुकड़ जाना इस का कारण हो परन्तु जुखाम वाले को न चाहिये । परन्तु जिस समय ज्वर हलका पड़जाय और नजला पकजाय तब कुछ हानि नहीं है अजीर्ण वाले को भी हम्माम में जाना ठीक नहीं जब तक कि भोजन न पचजाय और सब आन्हिक ज्वर वालों को हम्माम की हवामें ठहरना योग्य नहीं परन्तु उसके पानी में जब तक चाहे बिना परिश्रम ठहरना उचित है परन्तु जिस मनुष्य की खाल के सुकड़ जाने से ज्वर उत्पन्न हुआ हो तो उसको हम्माम की हवा में विशेष ठहरना और पसीना लाना अधिक लाभदायक है हकीम जुरजानी लिखता है क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के इलाज भोजन के देने और न देने और ठंढा पानी पिवाने और न पिवाने और मवाद के निकालने और न निकालने और न्हाने के स्थान में जाने और न जाने पर निर्भर है इस लिये इन कार्योंका उपाय वर्णन किया जाता है परन्तु इस के रोगी को भोजन से न रोकें परन्तु जिस मनुष्य को कारण अजीर्ण हो उसके सिवाय रोगियों को ऐसा भोजन देना चाहिये जो जल्दी पचजाय और उससे अच्छा दोष उत्पन्न हो मुख्यकर पित्त की प्रकृति वालों को ।

दूसरा भेद आन्हिक ज्वर के लक्षण और इलाज ।

इस के कई भेद हैं - पहिला वह है कि जो अत्यन्त शोक के कारण उत्पन्न हो । अत्यन्त शोक आत्मा को भीतर की तरफ गति कराता है फिर रुके रहने के कारण से गर्म होजाती है और ज्वर उत्पन्न होजाता है और उसके लक्षण ये हैं चिन्ता, आंखों का गढ़जाना, मुख का पीला पड़जाना, अथवा खुश्की तथा सफेदी का होना, नाड़ी में निर्बलता, पित्त और मूत्र में अग्नि जलना और लाल होकर तेजी के साथ आना (इलाज) दिल की सहायता में अधिक परिश्रम करे क्योंकि शोक दिलवाली आत्मा से सम्बन्ध रखता है और दिल इसकी खानि है और इस बात की यह रीति है कि हंसी की बातें कहानियां नये खेल और तमाशे से और अच्छे शब्दों से रोगी का मन आनन्दित हो और सन्तुष्ट करने वाली ठंढी चीज खवावे और छाती पर चन्दन गुलाब और इसबगोल का लुआब खुर्फा के पत्ते और बनफशा के पत्तों का पानी जो कुछ कि मिलजाय थोड़ासा कपूर मिलाकर लेपकरें और ठंढ और तर इत्यादि सुंघावें

उसके भीतर भरा हुआ हो। तीसरा वह मनुष्य कि जिसको अजीर्ण के कारण से ज्वर होजाय और आन्हिक ज्वर के अन्त में हम्माम में जाना बहुत गुण करता है मुख्य कर जहां कहीं कि रोमांचों का रुकजाना और खाल का मुकड़ जाना इस का कारण हो परन्तु जुखाम वाले को न चाहिये। परन्तु जिस समय ज्वर हलका पड़जाय और नजला पकजाय तब कुछ हानि नहीं है अजीर्ण वाले को भी हम्माम में जाना ठीक नहीं जब तक कि भोजन न पचजाय और सब आन्हिक ज्वर वालों को हम्माम की हवामें ठहरना योग्य नहीं परन्तु उसके पानी में जब तक चाहे विना परिश्रम ठहरना उचित है परन्तु जिस मनुष्य की खाल के सुकड़ जाने से ज्वर उत्पन्न हुआ हो तो उसको हम्माम की हवा में विशेष ठहरना और पसीना लाना अधिक लाभदायक है हकीम जुरजानी लिखता है क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के इलाज भोजन के देने और न देने और ठंढा पानी पिवाने और न पिवाने और मवाद के निकालने और न निकालने और न्हाने के स्थान म जाने और न जाने पर निर्भर है इस लिये इन कार्योंका उपाय वर्णन किया जाता है परन्तु इस के रोगी को भोजन से न रोकें परन्तु जिस मनुष्य को कारण अजीर्ण हो उसके सिवाय रोगियों को ऐसा भोजन देना चाहिये जो जल्दी पचजाय और उससे अच्छा दोष उत्पन्न हो मुख्यकर पित्त की प्रकृति वालों को।

दूसरा भेद आन्हिक ज्वर के लक्षण और इलाज।

इस के कई भेद हैं - पहिला वह है कि जो अत्यन्त शोक के कारण उत्पन्न हो। अत्यन्त शोक आत्मा को भीतर की तरफ गति कराता है फिर रुके रहने के कारण से गर्म होजाती है और ज्वर उत्पन्न होजाता है और उसके लक्षण ये हैं चिन्ता, आंखों का गढ़जाना, मुख का पीला पड़जाना, अथवा खुश्की तथा सफेदी का होना, नाड़ी में निर्बलता, पित्त और मूत्र में अग्नि जलना और लाल होकर तेजी के साथ आना (इलाज) दिल की सहायता में अधिक परिश्रम करें क्योंकि शोक दिलवाली आत्मा से सम्बन्ध रखता है और दिल उसकी खानि है और इस बात की यह रीति है कि हंसी की बातें कहानियों नये खेल और तमाशे से और अच्छे शब्दों से रोगी का मन आनन्दित हो और सन्तुष्ट करने वाली ठंढी चीजें खवावे और छाती पर चन्दन गुलाब और इसबगोल का लुआब खुर्फा के पत्ते और बनफशा के पत्तों का पानी जो कुछ कि मिलजाय थोड़ासा कपूर मिलाकर लेपकरें और रुई और सर इत्यादि सुंघावें

इसके भीतर भरा हुआ हो। तीसरा वह मनुष्य कि जिसको अजीर्ण के कारण से ज्वर होजाय और आन्हिक ज्वर के अन्त में हम्माम में जाना बहुत गुण करता है मुख्य कर जहां कहीं कि रोमांचों का रुकजाना और खाल का मुकड़ जाना इस का कारण हो परन्तु जुखाम वाले को न चाहिये। परन्तु जिस समय ज्वर हलका पड़जाय और नजला पकजाय तब कुछ हानि नहीं है अजीर्ण वाले को भी हम्माम में जाना ठीक नहीं जब तक कि भोजन न पचजाय और सब आन्हिक ज्वर वालों को हम्माम की हवामें ठहरना योग्य नहीं परन्तु उसके पानी में जब तक चाहे बिना परिश्रम ठहरना उचित है परन्तु जिस मनुष्य की खाल के सुकड़ जाने से ज्वर उत्पन्न हुआ हो तो उसको हम्माम की हवा में विशेष ठहरना और पसीना लाना अधिक लाभदायक है हकीम जुन्जानी लिखता है क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के इलाज भोजन के देने और न देने और ठंढा पानी पिवाने और न पिवाने और मवाद के निकालने और न निकालने और न्हाने के स्थान म जाने और न जाने पर निर्भर हैं इस लिये इन कार्यों का उपाय वर्णन किया जाता है परन्तु इस के रोगी को भोजन से न रोकें परन्तु जिस मनुष्य को कारण अजीर्ण हो उसके सिवाय रोगियों को ऐसा भोजन देना चाहिये जो जल्दी पचजाय और उससे अच्छा दोष उत्पन्न हो मुख्यकर पित्त की प्रकृति वालों को।

दूसरा भेद आन्हिक ज्वर के लक्षण और इलाज।

इस के कइ भेद हैं - पहिला वह है कि जो अत्यन्त शोक के कारण उत्पन्न हो। अत्यन्त शोक आत्मा को भीतर की तरफ गति कराता है फिर रुक रहने के कारण से गर्म होजाती है और ज्वर उत्पन्न होजाता है और उसके लक्षण ये हैं चिन्ता, आंखों का गढ़जाना, मुख का पीला पड़जाना, अथवा सुर्खी तथा सफेदी का होना, नाड़ी में निर्बलता, पित्त और मूत्र में अग्नि जलना और लाल होकर तेजी के साथ आना (इलाज) दिल की सहायता में अधिक परिश्रम करें क्योंकि शोक दिलवाली आत्मा से सम्बन्ध रखता है और दिल इसकी खानि है और इस बात की यह रीति है कि हसी की बातें कहानियां नये मेल और तमाशे से और अच्छे शब्दों से रोगी का मन आनन्दित हो और सन्तुष्ट करने वाली ठंढी चीजें खवावें और छाती पर चन्दन गुलाब और ईसबगोल का लुआब खुर्फा व पत्ते और बनफशा के पत्तों का पानी जो कुछ कि मिलजाय थोडासा कपूर मिलाकर लपेटें और ठंढे और तर इत्यादि सुघावें

उसके भीतर भरा हुआ हो। तीसरा वह मनुष्य कि जिसको अजीर्ण के कारण से ज्वर होजाय और आन्हिक ज्वर के अन्त में हम्माम में जाना बहुत गुण करता है मुख्य कर जहां कहीं कि रोमांचों का रुकजाना और खाल का मुकड़ जाना इस का कारण हो परन्तु जुखाम वाले को न चाहिये। परन्तु जिस समय ज्वर हलका पड़जाय और नजला पकजाय तब कुछ हानि नहीं है अजीर्ण वाले को भी हम्माम में जाना ठीक नहीं जब तक कि भोजन न पचजाय और सब आन्हिक ज्वर वालों को हम्माम की हवामें ठहरना योग्य नहीं परन्तु उसके पानी में जब तक चाहे बिना परिश्रम ठहरना उचित है परन्तु जिस मनुष्य की खाल के सुकड़ जाने से ज्वर उत्पन्न हुआ हो तो उसको हम्माम की हवा में विशेष ठहरना और पसीना लाना अधिक लाभदायक है हकीम जुर्जानी लिखता है क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के इलाज भोजन के देने और न देने और ठंडा पानी पिवाने और न पिवाने और मवाद के निकालने और न निकालने और न्हाने के स्थान में जाने और न जाने पर निर्भर हैं इस लिये इन कार्यों का उपाय वर्णन किया जाता है परन्तु इस के रोगी को भोजन से न रोकें परन्तु जिस मनुष्य को कारण अजीर्ण हो उसके सिवाय रोगियों को ऐसा भोजन देना चाहिये जो जल्दी पचजाय और उससे अच्छा दोष उत्पन्न हो मुख्यकर पित्त की प्रकृति वालों को।

दूसरा भेद आन्हिक ज्वर के लक्षण और इलाज।

इस के कई भेद हैं - पहिला वह है कि जो अत्यन्त शोक के कारण उत्पन्न हो। अत्यन्त शोक आत्मा को भीतर की तरफ गति कराता है फिर रुक रहने के कारण से गर्म होजाती है और ज्वर उत्पन्न होजाता है और उसके लक्षण ये हैं चिन्ता, आंखों का गड़जाना, मुख का पीला पड़जाना, अथवा सुर्खी तथा सफेदी का होना, नाड़ी में निर्बलता, पित्त और मूत्र में अग्नि जलना और लाल होकर तेजी के साथ आना (इलाज) दिल की सहायता में अधिक परिश्रम करें क्योंकि शोक दिलवाली आत्मा से सम्बन्ध रखता है और दिल उसकी खानि है और इस बात की यह रीति है कि हंसी की बातें कहानियां नये मेल और तमाशे से और अच्छे शब्दों से रोगी का मन आनन्दित हो और सन्तुष्ट करने वाली ठंडी चीजें सुघावें और छाती पर चन्दन गुलाब और इंसबगोल का लुआब सुर्फा व पत्ते और बनफशा के पत्तों का पानी जो कुछ कि मिलजाय थोड़ासा कपूर मिलाकर लपेटें और ठंडे और तर इत्यादि सुघावें

परन्तु जैसा कि सोचकी दशामें दिलकी सहायता करते हैं यहां दिमाग की सहायता करें क्योंकि सोच और चिन्ता दिमाग वाली आत्मा से सम्बन्ध रखती है और इसकी खानि दिमाग है और इस उपाय की विधि यह है कि इत्यादि ताजा फूल और सुगन्धित सुघावें और नाचने गाने कहानी पुस्तकों और सुन्दर स्त्रियों के राग में लिप्त रक्खें और सुन्दर नायका चन्द्रमुखी मौजूद करें। अभिप्राय यह है कि ऐसे काम करें कि जिससे सोच जाता रहे और सोच और चिन्ता में यह अन्तर है कि सोच वा ऐसी दशा है कि जब मनुष्य के हाथ से कोई आवश्यकीय चीज निकलजाय और उस पर वस न चले अथवा कोई बुरा काम देख उसको वर्जित न करसके और न उसमें रज करसके और न उपाय करसके और चिन्ता आत्माकी एक ऐसी दशाहै कि जब मनुष्य किसी कामको करना चाहे और हरतरफसे उसपर हिम्मत लगावे यहां तक उसी की तलाश में लिप्त हो और ज्वर उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि सोच वाले का प्रयोजन या तो हाथसे निकलजाय और उसका मिलना योग्य नहो या उसके आधीन नहो और परवसहो और चिन्ता वालेका प्रयोजन ऐसा नहीं क्योंकि उसका प्राप्त होना योग्य है यद्यपि कठिनसे है। तीसरा भेद यह है कि भयसे उत्पन्न हो इस कारण से आत्मा भीतर की ओर लौट जाती है और उसका चिन्ह भी वही है जो सोचमें वर्णन किया गया है परन्तु नाड़ी की इसमें विरुद्धता, सोच वाले दोष से विशेष होती है (इलाज) जो उपाय कि किताब भीमिया में लिखा गया है उसका काम में लावे और भय को दूर करे और शर्बत वनफसा, शर्बत चन्दन, नेद मुश्क का अर्क और अनार विशेष लाभदायक है चौथा भेद यह है कि सोच की अधिकता से उत्पन्न हो और उसका कारण भी यही है कि आत्मा भीतर की ओर फिर जाती है और इस कारण से गर्म होजाती है और उसका चिन्ह भी यही है कि जो सोच की दशा में वर्णन हुआ है (इलाज) जो कुछ चिन्ता की दशा में वर्णन हो चुका है काम में लाय क्योंकि सोच और चिन्ता दिमाग वाली आत्मा से सम्बन्धित हैं सो यहां दिमाग की रक्षा करना भी अवश्य है। पांचवां भेद विशेष क्रोध के कारण से उत्पन्न हो क्योंकि आत्मा क्रोध से बाहर की ओर गति करती है और गर्म होजाती है और इसका चिन्ह यह है कि रोगी का मुख बल्कि सब शरीर लाल होकर फूलजाय और आंखें भी लाल होजांय और बाहर निकल आवें और नाड़ी तेज हो और श्वास जल्द हो और यद्यपि

परन्तु जैसा कि सोचकी दशामें दिलकी सहायता करते हैं यहां दिमाग की सहायता करें क्योंकि सोच और चिन्ता दिमाग वाली आत्मा से सम्बध रखती है और इसकी खानि दिमाग है और इस उपाय की विधि यह है कि इत्यादि ताजा फूल और सुगन्धित सुघावें और नाचने गाने कहानी पुस्तकों और सुन्दर स्त्रियों के राग में लिप्त रक्खें और सुन्दर नायका चन्द्रमुखी मौजूद करें। अभिप्राय यह है कि ऐसे काम करें कि जिससे सोच जाता रहे और सोच और चिन्ता में यह अन्तर है कि सोच तो ऐसी दशा है कि जब मनुष्य के हाथ से कोई आवश्यकीय चीज निकलजाय और उस पर बस न चले अथवा कोई बुरा काम देख उसको वर्जित न करसके और न उसमें रज करसके और न उपाय करसके और चिन्ता आत्माकी एक ऐसी दशाहै कि जब मनुष्य किसी कामको करना चाहै और हरतरफसे उसपर हिम्मत लगावै यहां तक उसी की तलाश में लिप्त हो और ज्वर उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि सोच वाले का प्रयोजन या तो हाथसे निकलजाय और उसका मिलना योग्य नहो या उसके आधीन नहो और परवसहो और चिन्ता वालेका प्रयोजन ऐसा नहीं क्योंकि उसका प्राप्त होना योग्य है यद्यपि कठिनसे है। तीसरा भेद यह है कि भयसे उत्पन्न हो इस कारण से आत्मा भीतर की ओर लौट जाती है और उसका चिन्ह भी वही है जो सोचमें वर्णन किया गया है परन्तु नाडी की इसमें विरुद्धता, सोच वाले दोष से विशेष होती है (इलाज) जो उपाय कि किताब भीमिया में लिखा गया है उसका काम में लावे और भय को दूर करे और शर्बत बनफशा, शर्बत चन्दन, बेद मुश्क का अर्क और शकर विशेष लाभदायक है चौथा भेद यह है कि सोच की अधिकता से उत्पन्न हो और उसका कारण भी यही है कि आत्मा भीतर की ओर फिर जाती है और इस कारण से गम होजाती है और उसका चिन्ह भी यही है कि जो सोच की दशा में वर्णन हुआ है (इलाज) जो कुछ चिन्ता की दशा में वर्णन हो चुका है काम में लावे क्योंकि सोच और चिन्ता दिमाग वाली आत्मा से सम्बन्धित हैं सो यहां दिमाग की रक्षा करना भी अवश्य है। पांचवां भेद विशेष क्रोध के कारण से उत्पन्न हो क्योंकि आत्मा क्रोध से बाहर की ओर गति करती है और गर्म होजाती है और इसका चिन्ह यह है कि रोगी का मुख बिन्दु सब शरीर लाल होकर फलजाय और आंखें भी लाल होजांय और बाहर निकल आवें और नाडी तेज हो और मूत्र लाल हो और पहुंचा

अर्थात् अजीर्ण के कारण मुख का रंग पीला हो और शरीर टूटने लगे और थका न मालूम हो और नाडी हलकी हो (इलाज) कोई ऐसा उपाय करे कि जो नींद आजाय और नींद आने के लिये बनफशा का तेल और मीठी पीया का तेल नाकमें मले और बाबूना, नीलोफर और जौ का दलिया और खश-खशकी छाल का गुनगुना काढा सिर पर डाले और ऐसेही उक्त काढे को एक थाल में डाले और थोडा सा बनफशा का तेल तथा मीठी पीया की मिंगी का तेल उसमें मिलाकर उसकी भाफपर सिर झुकावे और एक चादर उस पर ढकले जैसा कि प्रसिद्ध है जिससे भाफ न निकले और दिमाग में पहुंचे और जो कुछ विशेष जागने में वर्णन हुआ है वही काममें लावे जिससे नींद आजाय और जब ज्वर कम हाजाय तो न्हानके स्थान में जाना और गुनगुना पानी सिर पर कई बार बहुत सा डालना और भफारे में बैठना लाभदायक है और चाहिये कि सावधानी करे कि पसीना न आजाय और तुर्त न्हानके स्थानसे चल दे और जब न्हानके स्थान से निकले तो हलके और श्रेष्ठ भोजन जो विशेष खून उत्पन्न करें खावे जैसे मुर्गा के अंडे और तर तेल शरीरपरमले और मिश्री गुलाब और बेद मुश्क के अर्क का जुलाब बनाकर पिलाना विशेष लाभदायक है और संभोग तथा सुश्की उत्पन्न करने वाली चीज हानि कारक हैं । हकीम शेखबूअली सेना कहता है कि जो इस प्रकार के रोगी के सिर में दर्द न होतो शराब निस्सन्देह पिलावे क्योंकि विशेष गुणकारीहै और हकीम अब्बास का बेटा कहता है कि ऐसे रोगी का क्षिप्र उपाय से योग्य हो सुंघावे बनफशा, कद्दू और लम्बी पीया का तेल नाक में टपकावे और बन फशा, नीलोफर खशखाश की छाल, अधकुचले जौ के काढे में सिरको सेंके जिससे नींद आजाय और दिमाग में तरी पहुंचे और जबकि ज्वर में थोडीसी न्यूनता हो तो न्हाने के मध्यस्थान में ठहरावे और सिर और सब शरीर पर गर्म पानीडाले और शरीर को मलमले और गुनगुने मीठेपानीके भरारेमभरेहा होकर लगातार शरीर पर पानी डालें फिर थोडी देर ठहरकर उठे और उत्तम भोजन जैसे मुर्गा के बच्चे और चकोर का [illegible] और जो शराब पीनेका स्वभाव होतो थोडीसी [illegible] पानीमें [illegible] पिलावे क्योंकि भोजन जल्द पचजाय क्योंकि [illegible] कारण से [illegible] पचताहै और इस प्रकार शराबके ग्रहण [illegible] में तरीभी [illegible] और [illegible] से लगना चाहिये क्योंकि [illegible]

अर्थात् अजीर्ण के कारण मुख का रंग पीला हो और शरीर टूटने लगे और थका न मालूम हो और नाडी हलकी हो (इलाज) कोई ऐसा उपाय करे कि जो नींद आजाय और नींद आने के लिये बनफशा का तेल और मीठी घीया का तेल नाकमें मलै और बाबूना, नीलोफर और जौ का दलिया और खश-खशकी छाल का गुनगुना काढा सिर पर डाले और ऐसेही उक्त काढे को एक थाल में डाले और थोडा सा बनफशा का तेल तथा मीठी घीया की मिंगी का तेल उसमें मिलाकर उसकी भाफपर सिर झुकावे और एक चादर उस पर ढकले जैसा कि प्रसिद्ध है जिससे भाफ न निकले और दिमाग में पहुंचे और जो कुछ विशेष जागने में वर्णन हुआ है वही काममें लावे जिससे नींद आजाय और जब ज्वर कम होजाय तो न्हानके स्थान में जाना और गुनगुना पानी सिर पर कई बार बहुत सा डालना और भफारे में बैठना लाभदायक है और चाहिये कि सावधानी करे कि पसीना न आजाय और तुर्त न्हानेके स्थानसे चल दे और जब न्हानेके स्थान से निकले तो हलके और श्रेष्ठ भोजन जो विशेष खून उत्पन्न करे खवावे जैसे मुर्गा के अंडे और तर तेल शरीरपरमले और मिश्री गुलाब और बेद मुश्क के अर्क का जुलाब बनाकर पिलाना विशेष लाभदायक है और संभोग तथा खुश्की उत्पन्न करने वाली चीज हानि कारक हैं। हकीम शेखबूअली सेना कहता है कि जो इस प्रकार के रोगी के सिर में दर्द न होतो शराब निस्सन्देह पिलावे क्योंकि विशेष गुणकारीहै और हकीम अब्बास का बेटा कहता है कि ऐसे रोगी का लिये उपाय से योग्य हो सुंघावे बनफशा, कद्दू और लम्बी घीया का तेल नाक में टपकावे और बन फशा, नलिोफर खशखाश की छाल, अधकुचले जौ के काढे में सिरको सेंके जिससे नींद आजाय और दिमाग में तरी पहुंचे और जबकि ज्वर में थोडीसी न्यूनता हो तो न्हाने के मध्यस्थान में ठहरावे और सिर और सब शरीर पर गर्म पानीडाले और शरीर का खूबमले और गुनगुने मीठेपानीके भरारेमप्रवेश होकर लगातार शरीर पर पानी डालें फिर थोडी देर ठहरकर उठे और उत्तम भोजन लेवे मुर्गा के बच्चे और चकोर का [illegible] और जो शराब पीनेका स्वभाव होतो थोडीसी [illegible] पानीमें [illegible] पिलावे जिससे भोजन जल्द पचजाय क्योंकि [illegible] कारण से [illegible] पचताहै और इस प्रकार रोगके प्रथम [illegible] में तरीका [illegible] और [illegible] मे लगना चाहिये क्योंकि [illegible] [illegible]न्न

अर्थात् अजीर्ण के कारण मुख का रंग पीला हो और शरीर टूटने लगे और थका न मालूम हो और नाडी हलकी हो (इलाज) कोई ऐसा उपाय करै कि जो नींद आजाय और नींद आने के लिये बनफशा का तेल और मीठी घीया का तेल नाकमें मले और बाबूना, नलोफर और जौ का दलिया और खश-खशकी छाल का गुनगुना काढा सिर पर डाले और ऐसेही उक्त काढे को एक थाल में डाले और थोडा सा बनफशा का तेल तथा मीठी घीया की मिंगी का तेल उसमें मिलाकर उसकी भाफपर सिर झुकावे और एक चादर उस पर ढकले जैसा कि प्रसिद्ध है जिससे भाफ न निकले और दिमाग में पहुंचे और जो कुछ विशेष जागन में वर्णन हुआ है वही काममें लावे जिससे नींद आजाय और जब ज्वर कम होजाय तो न्हानेके स्थान में जाना और गुनगुना पानी सिर पर कई बार बहुत सा डालना और भफारे में बैठना लाभदायक है और चाहिये कि सावधानी करै कि पसीना न आजाय और तुर्त न्हानेके स्थानसे चल दे और जब न्हानेके स्थान से निकले तो हलके और श्रेष्ठ भोजन जो विशेष खून उत्पन्न करें खवावे जैसे मुर्गी के अंडे और तर तेल शरीरपरमले और मिश्री गुलाब और बेद मुश्क के अर्क का जुलाब बनाकर पिवाना विशेष लाभदायक है और समोग तथा खुश्की उत्पन्न करने वाली चीज हानि कारक हैं । हकीम शेखबूअली सैना कहता है कि जो इस प्रकार के रोगी के सिर में दर्द न होतो शराब निस्सन्देह पिवावे क्योंकि विशेष गुणकारीहै और हकीम अबराम का बेटा कहता है कि ऐसे रोगी का लिये उपाय से योग्य हो सुंघावे बनफशा, कद्दू और लम्बी घीया का तेल नाक में टपकावे और बन-फशा, नलोफर खशखाश की छाल, अधकुचले जौ के काढे स सिरको सेंके जिससे नींद आजाय और दिमाग में तरी पहुंचे और जबकि ज्वर में थोडीसी न्यूनता हो तो न्हान के मध्यस्थान में ठहरावे और सिर और सब शरीर पर गर्म पानीडाले और शरीर को खूबमले और गुनगुने मीठेपानीके भफारेमेंप्रवेश होकर लगातार शरीर पर पानी डालें फिर थोडी देर ठहरकर अच्छे और उत्तम भोजन जैसे मुर्गे के बच्चे और चकोर का मांस दें और जो शराब पीनेका स्वभाव होतो थोडीसी शराब बहुतसे पानीमें मिलाकर पिवावें जिससे भोजन जल्द पचजाय क्योंकि जागने के कारण से भोजन देरमें पचताहै और इस प्रकार शराबके ग्रहण करने से शरीरमें तरीप्राप्त होती है और संभोग से बचना चाहिये क्योंकि शरीरमें खुश्की उत्पन्न करताहै । आठवांभेदवहहैकि

अर्थात् अजीर्ण के कारण मुत्र का रंग पीला हो और शरीर टूटने लगे और थका न मालूम हो और नाडी हलकी हो (इलाज) कोई ऐसा उपाय करे कि जो नींद आजाय और नींद आने के लिये बनफशा का तेल और मीठी घीया का तेल नाकमें मले और बाबूना, नीलोफर और जौ का दलिया और खश-खशकी छाल का गुनगुना काढा सिर पर डाले और ऐसेही उक्त काढे को एक थाल में डाले और थोडा सा बनफशा का तेल तथा मीठी घीया की मिंगी का तेल उसमें मिलाकर उसकी भाफपर सिर झुकावे और एक चादर उस पर ढकले जैसा कि प्रसिद्ध है जिससे भाफ न निकले और दिमाग में पहुंचे और जो कुछ विशेष जागन में वर्णन हुआ है वही काममें लावे जिससे नींद आजाय और जब ज्वर कम होजाय तो न्हानेके स्थान में जाना और गुनगुना पानी सिर पर कई बार बहुत सा डालना और भफारे में बैठना लाभदायक है और चाहिये कि सावधानी करे कि पसीना न आजाय और तुर्त न्हानेके स्थानसे चल दे और जब न्हानेके स्थान से निकले तो हलके और श्रेष्ठ भोजन जो विशेष रस उत्पन्न करें खवावे जैसे मुर्गी के अंडे और तर तेल शरीरपरमले और मिश्री गुलाब और बेद मुश्क के अर्क का जुलाब बनाकर पिलाना विशेष लाभदायक है और संभोग तथा खुश्की उत्पन्न करने वाली चीज हानि कारक हैं । हकीम शेखबूअली सीना कहता है कि जो इस प्रकार के रोगी के सिर में दर्द न होतो शराब निस्सन्देह पिलावे क्योंकि विशेष गुणकारीहै और हकीम अब्राम का बेटा कहता है कि ऐसे रोगी का शिर उपाय से योग्य हो सुंघावे बनफशा, कद्दू और लम्बी घीया का तेल नाक में टपकावे और बन-फशा, नीलोफर खशखाश की छाल, अधकुचले जौ के काढे से सिरको सेंके जिससे नींद आजाय और दिमाग में तरी पहुंचे और जबकि ज्वर में थोडीसी न्यूनता हो तो न्हान के मध्यस्थान में ठहरावें और सिर और सब शरीर पर गर्म पानीडाले और शरीर को खूबमले और गुनगुने मीठेपानीके भफारेमेंप्रवेश होकर लगातार शरीर पर पानी डालें फिर थोडी देर ठहरकर अच्छे और उत्तम भोजन जैसे मुर्गे के बच्चे और चकोर का मांस दें और जो शराब पीनेका स्वभाव होतो थोडीसी शराब बहुतसा पानीमें मिलाकर पिलावें जिसमें भोजन जल्द पचजाय क्योंकि जागने के कारण से भोजन देरमें पचताहै और इस प्रकार शराबके ग्रहण करने से शरीरमें तरीप्राप्त होती है और संभोग से बचना चाहिये क्योंकि शरीरमें खुश्की उत्पन्न करताहै । आधाशीशी दर्दका

उत्पन्न हो और यह भी नियत नहीं है कि यह खून का निकलना हो अथवा किसी और दोष का और अपने आप उत्पन्न हो अथवा इरादे से जैसे कि दस्तावर दवाएँ और वमन लाने वाली दवाओं के उपरांत और फस्द के उपरांत उत्पन्न हो सो दस्तों और वमन के उपरांत तो इस लिये ज्वर उत्पन्न होता है कि आत्मा गर्म होजाती है और दोषों की गति से परिश्रम और मेहनत उठाती है और खून निकालने के उपरांत इस कारण से होजाती है कि पित्त बढजाता है और बाकी खून विशेष गर्म हो जाता है क्यों कि जो तरी उसका सामना करती थी वह नष्ट होगई इस कारण भाफ के परमाणु उत्पन्न होते हैं और आत्मा को गर्म करते हैं और ज्वर उत्पन्न होता है और उसका यह चिन्ह है कि मवाद के निकलने के उपरान्त उत्पन्नहो (इलाज) जो दस्तों और वमन के कारण से ज्वर उत्पन्न होजाय और कारण बाकी हो तो उसको उन चीजों से रोकदें जो उसके योग्य है और वमन तथा दस्तों के प्रकरण में वर्णन किये गये हैं और एक ऊनका टुकड़ा मस्तगी के तेल तथा बालछड़ के तेल में डुबो कर गर्मा गर्म आमाशय के मुख पर रखना विशेष लाभदायक है वह और इसी तरह दूसरे लेप गर्म करके रक्खें क्योंकि जो चीज गुनगुनी है आमाशय के मुख को सुस्त करती है और जहां कहीं कि विशेष गर्मी हो और प्यास उत्पन्न हो तो चंदन गुलाब के फूल, गोंद, जरिश्क और अफीम के पानी में और गुलाब में मिलाकर दिल और जिगर पर लेप करें तो गर्मी थमजाती है और दस्त और वमन रुकजाते हैं और भोजन चांवल अनार दाना, जरिश्क तथा तुतरुश मिलाकर दें और जहां कहीं कि दस्त और वमनकी अधिकता से निर्बलता उत्पन्न होवे मांसका पानी सब चीजोंमें विशेष लाभदायकहै और पतली शराब को भी लाभदायक कहते हैं और इस जगह मांसका वह पानी उत्तम है जो किताब जखीरा ख्वारजमशाहीवाले ने इसकेविषय में लिखा है और जो ज्वर फस्द अथवा नश्तर आदि के उपरांत उत्पन्न होता है तो ऐसा उपाय करें कि विश्राम और दमआराम और उस काम के लिये जो चीज ठंडी और तर है वे लाभ दायक हैं (लाभ) कभी ऐसा होता है कि फस्द खोलें और खून जितना कि निकलना चाहिये उससे कम निकले इस कारण से बंद हुए भाफके परमाणु और दाब उठकर आत्माको गर्म करदें और दैनिक ज्वर उत्पन्न हो ऐसे समय में चाहिये कि उस्से फस्द खोलें और खून निकालें नि-

उत्पन्न हो और यह भी नियत नहीं है कि यह खून का निकलना हो अथवा किसी और दोष का और अपने आप उत्पन्न हो अथवा इरादे से जैसे कि दस्तावर दवाएँ और वमन लाने वाली दवाओं के उपरांत और फस्द के उपरांत उत्पन्न हो सो दस्तों और वमन के उपरांत तो इस लिये ज्वर उत्पन्न होता है कि आत्मा गर्म होजाती है और दोषों की गति से परिश्रम और महनत उठाती है और खून निकालने के उपरांत इस कारण से होजाती है कि पित्त बढ़जाता है और बाकी खून विशेष गर्म हो जाता है क्यों कि जो तरी उसका सामना करती थी वह नष्ट होगई इस कारण भाफ के परमाणु उत्पन्न होते हैं और आत्मा को गर्म करते हैं और ज्वर उत्पन्न होता है और उसका यह चिन्ह है कि मवाद के निकलने के उपरांत उत्पन्न हो (इलाज) जो दस्तों और वमन के कारण से ज्वर उत्पन्न होजाय और कारण बाकी हो तो उसको उन चीजों से रोकदें जो उसके योग्य है और वमन तथा दस्तों के प्रकरण में वर्णन किये गये है और एक ऊनका टुकड़ा मस्तगी के तेल तथा बालछड़ के तेल में डुबो कर गर्मा गर्म आमाशय के मुख पर रखना विशेष लाभदायक है वह और इसी तरह दूसरे लेप गर्म करके रक्खे क्योंकि जो चीज गुनगुनी है आमाशय के मुख को सुस्त करती है और जहां कहीं कि विशेष गर्मी हो और प्यास उत्पन्न हो तो चन्दन गुलाब के फूल, गोंद, जरिश्क और अकीरा के पानी में और गुलाब में मिलाकर दिल और जिगर पर लेप करें तो गर्मी थमजाती है और दस्त और वमन रुकजाते हैं और भोजन चांवल अनार दाना, जरिश्क तथा गुलरुग मिलाकर दें और जहां कहीं कि दस्त और वमनकी अधिकता से निर्बलता उत्पन्न होवो मांसका पानी तर चीजोंमें विशेष लाभदायक है और पक्की शराब को भी लाभदायक कहते हैं और इस जगह मांसका वह पानी उत्तम है जो किताब जखीरा ख्वारज्मशाहीवाले ने इसकेविषय में लिखा है और जो ज्वर फस्द अथवा नश्तर आदि के उपरांत उत्पन्न होता है तो ऐसा उपाय करें कि पित्तका जोर दबजाय और उस काम के लिये जो चीज ठंढी और तर है वे लाभ दायक है (लाभ) कभी ऐसा होता है कि फस्द खोलें और खून जितना कि निकलना चाहिये उससे कम निकले इस कारण से बंद हुए भाफके परमाणु और दाब बढ़कर आत्माको गर्म करदें और दैनिक ज्वर उत्पन्न हो ऐसे समय में चाहिये कि दूसरा फस्द खोलें और खून निकालें नि-

जो मांस का पानी शराब में मिला कर दे तो उसी समय शक्ति को फेर लाता है और इस समय ज्वर की गर्मी से भय न करे क्योंकि इस दशा में शक्ति की रक्षा योग्य है और जब कि रोगी अचेतता से चैतन्य हो और शक्ति आ जाय परन्तु ज्वर बाकी रहे तो उसकी गर्मी को इस प्रकार पर सन्तुष्ट करे कि ठंडे शर्बत और तर सुगन्धित भोजन ग्रहण करे । तेरहवां भेद यह है कि विशेष भूख से उत्पन्न हो उसका यह चिन्ह है कि नाड़ी निर्बल और छोटी हो और कदाचित् कठोरता की तरफ झुकी हो (इलाज) जौ का दलिया और घीआ पालक और बादाम का तेल मिलाकर थोड़ा २ पिलावें और जब यह हरीरा पचजाय तो शोरबा और दूसरे ठंडे और तर भोजन दें और चाहिये कि न्हाने के स्थान में ले जाय और भपारे में बैठावें और इस के उपरांत तर तेल मलें । चौदहवां भेद यह है कि विशेष प्यास से उत्पन्न हो और यह बात प्रकट है कि विशेष भूख और प्यास के कारण से जिगर में गर्मी होती है और भाफ के परमाणु तेज होजाते हैं और आत्मा को गर्म करते हैं (इलाज) आज्ञा दें कि ठंडे पानी से कुल्ला करे और सकारे फिर थोड़ा थोड़ा पीवें और खुर्फा का शीरा इमली का पानी और आलूबुखारे का पानी और खट्टे मीठे अनार का पानी और खट्टी ककड़ी का पानी और अंगूर लाभ दायक है मुख्य कर जो बर्फ में जमाई और जो कोई कार्य्य वर्जित न हो तो ठंडे पानी से न्हाना बहुत ही अच्छा है और चाहिये कि आराम और नींद दें और नर्म तर भोजन खवावें । पन्द्रहवां भेद यह है जो महीन २ रगें सम्पूर्ण शरीर में खिजूर के रेशे के समान फैली हुई हैं उन में गांठ पड़ जाय और इन रगों के मार्ग बन्द हो जांय इस कारण भाफ के परमाणु इकट्ठे होकर गर्म होजांय और आत्माभी गर्म होजाय और ज्वर उत्पन्न हो और उन रगों की गांठ पड़जाने का कारण या तो यह है कि गाढ़ा चेप-दार दोष इस में रुकजाय अथवा खून भरजाय और मार्गों को ढांप दे अभिप्राय यह है कि यह ज्वर दैनिक ज्वर गांठ नाम्ना कहलाता है और इस का पहचानना कठिन है क्योंकि ज्वर गर्म दोष वाले ज्वर के बहुत समान होता है और कदाचित् दोषी ज्वर की तरह टूट जाय और फिर [illegible] और यह ज्वर गांठ की न्यूनता और अधिकता [illegible] ठहरता है [illegible] होती है तो ३ किन्तु ७ दिन तक रहता है [illegible] आलीन [illegible] कि जो गांठ बहुत कम होती है वा जल्द टूटजाती [illegible] कोई [illegible] और कम

जो मांस का पानी शराब में मिला कर दे तो उसी समय शक्ति को फेर लाता है और इस समय ज्वर की गर्मी से भय न करे क्योंकि इस दशा में शक्ति की रक्षा योग्य है और जब कि रोगी अचेतता से चैतन्य हो और शक्ति आ जाय परन्तु ज्वर बाकी रहे तो उसकी गर्मी को इस प्रकार पर सन्तुष्ट करे कि ठंढे शर्बत और तर सुगन्धित भोजन ग्रहण करे। तेरहवां भेद यह है कि विशेष भूख से उत्पन्न हो उसका यह चिन्ह है कि नाडी निर्बल और छोटी हो और कदाचित् कठोरता की तरफ झुकी हो (इलाज) जौ का दलिया और पीला पालक और बादाम का तेल मिलाकर थोडा २ पिलावें और जब यह हरीरा पचजाय तो शोरबा और दूसरे ठंढे और तर भोजन दें और चाहिये कि न्हाने के स्थान में ले जाय और भपारे में बठावें और इस के उपरांत तर तेल मलें। चौदहवां भेद यह है कि विशेष प्यास से उत्पन्न हो और यह बात प्रकट है कि विशेष भूख और प्यास के कारण से जिगर में गर्मी होती है और भाफ के परमाणु तेज होजाते हैं और आत्मा को गर्म करते हैं (इलाज) आज्ञा दे कि ठंढे पानी से कुल्ला करे और सफारे फिर थोडा थोडा पीवें और कुर्फा का शीरा इमली का पानी और आलूबुखारे का पानी और खट्टे मीठे अनार का पानी और खट्टी ककडी का पानी और अंगूर लाभ दायक है मुख्य कर जो बर्फ में जमाई और जो कोई कार्य्य वर्जित न हो तो ठंढे पानी से न्हाना बहुत ही अच्छा है और चाहिये कि आराम और मौन दें और सर्द तर भोजन खवावें। पन्द्रहवां भेद यह है जो महीन २ रगें सम्पूर्ण शरीर में खिजूर के रेशे के समान फैली हुई हैं उन में गांठ पड़ जाय और इन रगों के मार्ग बन्द हो जांय इस कारण भाफ के परमाणु इकट्ठ होकर गर्म होजांय और आत्माभी गर्म होजाय और ज्वर उत्पन्न हो और उन रगों की गांठ पडजाने का कारण या तो यह है कि गाढा चेप-दार दोष इस में रुकजाय अथवा खून भरजाय और मार्गों का छोटा पन है अभिप्राय यह है कि यह ज्वर दैनिक ज्वर गांठ नाम्न कहलाता है और इस का पहचानना कठिन है क्योंकि ज्वर गर्म दाग वाले ज्वर के बहुत समान होता है और कदाचित् दाफी ज्वर की तरह टूट जाय और फिर [illegible] और यह ज्वर गांठ की न्यूनता और अधिकता [illegible] ठहरता है [illegible] होती है तो ३ किन्तु ४ दिन तक रहता है [illegible] आठीन [illegible] कि जो गांठ पहले कम होती है वा जल्द टूटजाती है [illegible] कोई [illegible] और कम

चिपट जाय और इसमें यह बात नहीं है और जो गांठ दोषा के गाढ़े होने से पड़े तो वही इलाज है जो कि मवाद के भरने में वर्णन हुआ है परन्तु फस्द का खोलना कि यहां उसकी आवश्यक्ता नहीं और जो आवश्यक्ता पड़े तो फस्द खोली जाय परन्तु विशेष खून निकालने की कभी आज्ञा नहीं और इस दशामें अफसन्तीन की शराब और सौंफ का काढ़ा और सौंफ के बीज, अजमोद के बीज, और सिकञ्जबीन बिजूरी गर्म और उसके सिवाय जो कुछ कि उत्तम भोजन हो लाभदायक है और जोके दलिये के भोजन में थोड़ी सौंफ औटाकर और भुसी का पानी बादाम के तेल के साथ देना योग्य है और न्हाने के स्थान में बहुत मालिश करना लाभकारी है। सोलहवां भेद यहहै कि खाल सुकड़ी और रोमाञ्च बन्द होजाय इस कारण से गर्मी और भाफके परमाणु भीतर रुकजांय और आत्माको गर्म करदें और ज्वर उत्पन्नहो और यह जो शरीर की खाल खुरखुरी और सुकड़ जाती है और रोमाञ्च बन्द होजातेहैं उसके पांच कारण हैं एक तो मैल जो न्हाने से शरीर में इकट्ठा होजाय, दूसरे गर्द और धूल जो सफर आदिमें शरीर पर जमजाय, तीसरे विशेष सर्दी, चौथे सूरजकी गर्मी जो खालकोजलादे और पांचवें अजीर्ण कारक पानी में न्हाना जैसे सफेद और लालफिटकिरी का पानी और मीठापानी जो विशेष ठण्डाहो और इस प्रकारको यह देनिकज्वर कहते हैं जिसमें एक प्रकार के दाने शरीर में प्रगट होतेहैं और इस ज्वरका यह चिन्ह है कि न्हानके बाद देनेके उपरांत अथवा शरीर पर गर्द धूल जमजानेके उपरांत तथा अजीर्णकारक पानी में न्हाने के उपरांत तथा सर्दी लगने के उपरांत उत्पन्न हो और शरीर की खाल हाथको खुरखुरी मालूम हो और आंख और मुखपर भारी सा फुलाव प्रगटहो और नाड़ी तेजहो और मूत्र पीला आवे और कदाचित् सफेदी ही आवे और खालके सुकड़जानेका चिन्ह यह है कि जब उस पर हाथ रक्खे तो उसकी गर्मी बहुत न मालूमहो और जब एक घण्टा बीत जाय तो गर्मी बहुत विशेष मालूम हो क्योंकि हाथकी गर्मी से रोमाञ्च खुलजाते हैं इसलिये भाफ के परमाणु कुछ बाहरकी तरफ आते हैं तो वह बाहर और [illegible] ऐसा सिवाय गर्म मालूम होती है (इलाज) जब ज्वरा न रहेतो [illegible] और [illegible] शरीर को धीरे २ मलें और गर्म और नम कपड़ा ऊपर डालें कि पसीना आजाय फिर जब [illegible] होजाय तो न्हाने के स्थानमें लेजाय और वहां बहुत देरतक रक्खें और भुसी आदि जो चीज कि मवादको [illegible] है

स्यान में लेजाय और जल्द निकाल डाले फिर आमाशय की पुष्टता के लिये गुलकन्द अथवा विही की बनी सिकञ्जबीन तथा विही की साधारण शराब खवावे और अजीर्ण कारक खट्टी विही का पानी और अजीर्ण कारक खट्टे सेव का पानी और गुलरोगन धीमी आग पर औटावे जब पानी जलकर तेल बच रहे वा एक ऊन का टुकड़ा भिगोकर उस तेल में निचोड़ले कि उसमें से तेल निकलजाय फिर उसको गर्म करके आमाशय के मुख पर रखकर बांधें और जहां कहीं कि मवाद के निकलने में और दाय निकलें और शक्ति निर्बल हो तो न्हाने के स्थान में जाने से रोकें और दस्तों को बंद करदें और इस काम के लिये चर्ण अनार की गोली और नीबू की शराब, अंगूर का शर्बत और अनार का शर्बत आदि खट्टे अजीर्ण कारक चीज या खाना और हसरमिया, सिमाकिया और जरश्किया भोजन में देना लाभदायक है और जो तबियत में अजीर्ण हो और काम कठिन आपड़े तो ऐसे समय म योग्य है कि आवश्यकतानुसार आमाशय और आंतों को साफ करें जैसे जो जी मिचलाता है और भोजन आमाशय में है तो वमन करें और जो ऊपर की आंतों में अथवा आमाशय की गहराई में है तो दस्तावर काढे दें और जो नीचे की आंतों में है तो हुकना और सलाई काम में लावे जैसा २ रोग हो उसीके अनुसार हुकने की विधि कर जैसे जो आंतों में जलन और गर्मी है तो उन्नाव, बनफशा, अधकुटे जौ और बनफशा या तेल बनक की गर्मी और घोल मुग की चर्बीका हुकना बनावें और जो आंतों ५ गुड़गुड़ाहट और हवा हो तो उसके हुकने में अजमोद के बीज, सौंफ, जीरा और पादरी गौन प्रवेश करे और मवाद के निकलनेके उपरांत न्हाना और आमाशय पर पुष्टि कारक लेपोंका लगाना लाभदायक है और बहुधा ऐसा होता है कि चि चिका के लप से विशष गुणकारी लेपोंकी आवश्यकता पड़े और जो पीने आ माशयके मुखपर रक्खें तो चाहियेकि वह_भ्रत्यसमें बहुत गर्म हो क्योंकि गुनगुनी चीज आमाशयको निर्बल करतीहै और दस्तावर दवाओंभी ऐसीही दशाहै जैसी दवा रोगी की प्रकृतिके योग्य हो स्वीकार करें जैसे जो प्रकृति गर्म है और गर्म भोजनसे अजीर्ण हुआ है तो मालओंके पानी में खट्टे मीठे अनारके पानीसे और निसोत मिलाकर और हड़ के मुरब्बे से अजीर्ण को दूर करें और जो प्रकृति सर्दी है और अजीर्ण ठंडे भोजन से हुआ है तो हब्ब अस्तारिया और माजूनादि से तबियत का मुलायम करें (सूरात) इस प्रकार में करन साफ

स्थान में लेजाय और जल्द निकाल डाले फिर आमाशय की पुष्टता के लिये गुलकन्द अथवा बिही की बनी सिकञ्जीन तथा बिही की साधारण शराब खवावै और अजीर्ण कारक खट्टी बिही का पानी और अजीर्ण कारक खट्टे सेव का पानी और गुलरोगन धीमी आग पर औटावे जब पानी जलकर तेल, बच रहे तो एक ऊन का टुकड़ा भिगोकर उस तेल में निचोड़लें कि उसमें से तेल निकलजाय फिर उसको गर्म करके आमाशय के मुख पर रखकर बांधदें और जहां कहीं कि मवाद के निकलने में और दाग निकलें और शक्ति निर्बल हो तो न्हाने के स्थान में जाने से रोकें और दस्तों को बंद करदें और इस काम के लिये चर्ण अनार की गोली और नींबू की शराब, अंगूर का शर्बत और अनार का शर्बत आदि सर्द अजीर्ण कारक चीज़ का खाना और हसरमिया, सिमाकिया और जरश्किया भोजन में देना लाभदायक है और जो तबियत में अजीर्ण हो और काम कठिन आपड़े तो ऐसे समय में योग्य है कि आवश्यकतानुसार आमाशय और आंतों को साफ करें जैसे जो जी मिचलाता है और भोजन आमाशय में है तो वमन करें और जो ऊपर की आंतों में अथवा आमाशय की गहराई में है तो दस्तावर काढ़े दें और जो नीचे की आंतों में है तो हुकना और सलाई काम में लावें जैसा २ रोग हो उसीके अनुसार हुकने की विधि कर जैसे जो आंतों में जलन और गर्मी है तो उन्नाव, बनफशा, अमपुटे जौ और बनफशा का तेल बनक की गरीं और घरेलू मुर्ग की चर्बीका हुकना बनावें और जो आंतों में गुड़गुड़ाहट और हवा हो तो उसके हुकने में अजमोद के बीज, सौंफ, जीरा और पादड़ी सोंफ प्रवेश करे और मवाद के निकलनेके उपरांत न्हाना और आमाशय पर पुष्टि कारक लेपोंका लगाना लाभदायक है और बहुधा ऐसा होता है कि चिकित्सक के लप से विशेष गुणकारी लेपोंकी आवश्यकता पड़े और जो चीज आमाशयके मुखपर रक्खें तो चाहियेंकि वह अत्यन्त बहुत गर्म हो क्योंकि गुनगुनी चीज आमाशयको निर्बल करतीहै और दस्तावर दवाओंमें भी ऐसीही दवाहै जैसी दवा रोगी की प्रकृतिके योग्य हो स्वीकार करें जैसे जो प्रकृति गर्म है और गर्म भोजनसे अजीर्ण हुआ है तो मावाओंके पानी से खट्टे मीठे अनारके पानीसे शीरखिस्त मिलाकर और हड़के मुरब्बे से अजीर्ण को दूर करें और जो प्रकृति सर्दी है और अजीर्ण ठंडे भोजन से हुआ है तो दूध अफतीमिया और मानूयारिक से तरियत का मुलायम करें (मूसरा) इस प्रकार में करद साफ

गर्म हवा दिमाग में पहुचती है वहां से दिलमें और उस जगह से दिलकी रगों में फैल कर आत्मा को गर्म करती है फिर यह ज्वर उत्पन्न हो जाता है और यह ज्वर सूर्यकी गर्मीसे बहुधा उत्पन्न होताहै और जानना चाहिये कि सूरज की गर्मी का असर दिमागवाली आत्मा और दिमाग में विशेष होताहै मुख्यकर जो शरीर में फाक हो क्योंकि वह सूर्य की गर्मी से पिघलता है और उसके भाफ के परमाणु दिमाग में आते हैं और सिर में दर्द लाते हैं और न्हाने के स्थान और आगकी गर्मी का असर दिल में विशेष होता है और इस ज्वर का चिन्ह पहले सूर्य तथा आग की गर्मी का पहुचना तथा विशेष गर्म न्हाने के स्थान में बहुत देर तक रहना और नाडी की शीघ्रता और हलकेपन को निर्णय कराता है और उजाले को बुरा जानना और आंख में लाली और दूसरे अगों की अपेक्षा सिर में जलन और गर्मीका होना फिरजो सूर्य की गर्मी उसका कारण है तो भीतर की अपेक्षा शरीर प्रत्यक्ष में विशेष गर्म मालूम हो और प्यास अधिक नहीं और श्वास अपने ठिकाने पररहै और जो आग और न्हाने के स्थान की गर्मी उसका कारण हो तो प्यास विशेष उत्पन्न हो और बड़े २ श्वास आने लगें (इलाज) गुलरोगन और सिर्का यर में ठंडा करके सिर पर तरेडा दें और चदन, गुलाब और तर धनिये का पानी शीशा में डालकर हिलाकर सुघावें और एक कपड़ा उस में भिगोकर छाती और सिर पर रक्खें और बनफशा का शर्बत, नीलोफर का शर्बत, अगूर का शर्बत, रीबास का शर्बत, सिंही का शर्बत, जो सिकंजबीन और खट्टे मीठे अनार का पानी ठंडा करके थोडासा गुलरोगन उसमें डाल कर पिलावे जिससे प्यास और सिर के दर्द को संतुष्ट करे और जौ का ठंडा पानी खूब मिला हुआ और जौका सत्तू अच्छा भोजन है और जो गर्म पानी में भपारा दें मुख्य कर जो उसमें बाबूना और गावजबान बनफशा नीलोफर और तुल्सी और नेदकी पत्ती औटालें तो अति उत्तम है यह सिर के दर्द को दूर सो देता है और दूसरी ठंडी चीजों की रक्षा रक्खें मकानमें फर्श में और

काम करने में भी और जब ज्वर कम होजाय तो न्हाने के स्थान में जाय यद्यपि नजला और जुकाम क्यों न हो और गुनगुना मीठा पानी बहुतसा उसके सिर पर डालें और गुनगुने भपारे में बैठावें और जो भपारे में बनफशा नीलोफर और थोडासा बाबूना औटाया हुआ हो तो अति उत्तम है फिर उसके सिर पर बनफशा और नीलोफर का तेल लगावें यदि जुकाम का असर

गर्म हवा दिमाग में पहुंचती है वहां से दिलमें और उस जगह से दिलकी रगों में फैल कर आत्मा को गर्म करती है फिर यह ज्वर उत्पन्न हो जाता है और यह ज्वर सूर्यकी गर्मीसे बहुधा उत्पन्न होताहै और जानना चाहिये कि सूरज की गर्मी का असर दिमागवाली आत्मा और दिमाग में विशेष होताहै मुख्यकर जो शरीर में फाक हो क्योंकि वह सूर्य की गर्मी से पिघलता है और उसके भाफ के परमाणु दिमाग में आते हैं और सिर में दर्द लाते हैं और न्हाने के स्थान और आगकी गर्मी का असर दिल में विशेष होता है और इस ज्वर का चिन्ह पहले सूर्य तथा आग की गर्मी का पहुंचना तथा विशेष गर्म न्हाने के स्थान में बहुत देर तक रहना और नाड़ी की शीघ्रता और हलकेपन को निर्णय कराता है और उजाले को बुरा जानना और आंख में लाली और दूसरे अगों की अपेक्षा सिर में जलन और गर्मीका होना फिरजो सूर्य की गर्मी उसका कारण है तो भीतर की अपेक्षा शरीर प्रत्यक्ष में विशेष गर्म मालूम हो और प्यास अधिक नहो और श्वास अपने ठिकाने पररहै और जो आग और न्हाने के स्थान की गर्मी उसका कारण हो तो प्यास विशेष उत्पन्न हो और बड़े २ श्वास आने लगें (इलाज) गुलरोगन और सिर्का यख में ठंढा करके सिर पर तरेड़ा दें और चंदन, गुलाब और तर धनिये का पानी शीशा में डालकर हिलाकर सुंघावे और एक कपड़ा उस में भिगोकर छाती और सिर पर रक्खें और बनफशा का शर्बत, नीलोफर का शर्बत, अंगूर का शर्बत, रीबास का शर्बत, बिही का शर्बत, जो मिश्नाप और खट्टे मीठे अनार का पानी ठंढा करके थोड़ासा गुलरोगन वगैरह डाल कर पिलावे जिससे प्यास और सिर के दर्द को संतुष्ट करें और जो का ठंढा पानी बूरा मिला हुआ और जौका सत्तू अच्छा भोजन है और जो गर्म पानी में भपारा दें मुख्य कर जो उसमें बाबूना और नाख्वेल बनफशा नीलोफर और तुल्मी और बेदकी पत्ती औटालें तो अति उत्तम है यह सिर के दर्द को दूर कर देता है और दूसरी ठंढी चीजों की रक्षा रक्खें मकानमें फर्श में और काम करने में भी और जब ज्वर कम होजाय तो न्हाने के स्थान में जाय यद्यपि नजला और जुकाम क्यों न हो और गुनगुना मीठा पानी बहुतसा उत्तम करके सिर पर डालें और गुनगुने भपारे में बैठावें और जो भपारे में बनफशा नीलोफर और थोड़ासा बाबूना औटाया हुआ हो तो अति उत्तम है फिर उपरान्त सिर पर बनफशा और नीलोफर का तेल लगावें यदि जुकाम का असर

गर्म हवा दिमाग में पहुचती है वहां से दिलमें और उस जगह से दिलकी रगों म फैल कर आत्मा को गर्म करती है फिर यह ज्वर उत्पन्न हो जाता है और यह ज्वर सूर्यकी गर्मीसे बहुधा उत्पन्न होताहै और जानना चाहिये कि सूरज की गर्मी का असर दिमागवाली आत्मा और दिमाग में विशेष होताहै इसपकर जो शरीर में फोक हो क्योंकि वह सूर्य की गर्मी से पिघलता है और उसके भाफ के परमाणु दिमाग में आते हैं और सिर में दर्द लाते हैं और न्हाने के स्थान और आगकी गर्मी का असर दिल में विशेष होता है और इस ज्वर का चिन्ह पहले सूर्य तथा आग की गर्मी का पहुचना तथा विशेष गर्म न्हाने के स्थान में बहुत देर तक रहना और नाडी की शीघ्रता और हलकेपन को निर्णय कराता है और उजाले को बुरा जानना और आंख में लाली और दूसरे अगों की अपेक्षा सिर में जलन और गर्मीका होना फिरजो सूर्य की गर्मी उसका कारण है तो भीतर की अपेक्षा शरीर प्रत्यक्ष में विशेष गर्म मालूम हो और प्यास अधिक नहो और श्वास अपने ठिकाने पररहै और जो आग और न्हाने के स्थान की गर्मी उसका कारण हो तो प्यास विशेष उत्पन्न हो और बडे २ श्वास आने लगें (इलाज) गुलरोगन और सिर्का बर्फ में ठढा करके सिर पर तरेडा दें और चदन, गुलाब और तर धनिये का पानी शीशा में डालकर हिलाकर सुघावें और एक कपडा उस म भिगोकर छाती और सिर पर रक्खें और बनफशा का शबत, नीलोफर का शबत, अगूर का शर्बत, रीवास का शर्बत, विही का शबत, जो भिउनाप और खट्टे मीठे अनार का पानी ठढा करके थोडासा गुलरोगन उसमें डाल कर पिलावें जिससे प्यास और सिर के दर्द को लाभ करे और जौ का ठढा घाट बूरा मिला हुआ और जोका सत् अच्छा भोजन है और जो गर्म पानी में मपागर्दे मुरूप कर जा उसमें बाबूना और गन्दनेल बनफशा नीलाफर और गुलखी और बेदकी पत्ती औटालें तो अति उत्तम है यह सिर के दर्द को तुर्त खो दता है और दूसरी ठढी चीजों की रक्षा रक्खें मकानमें फर्श में और काम करने में भी और जब ज्वर कम होजाय तो न्हाने के स्थान में जाय यद्यपि नन्ना और सुनाम क्यों न हो और गुनगुना मीठा पानी बहुतसा उ-सके सिर पर डालें और गुनगुने मकान में बैठावें और जो मकान में बाबूना नकलेसर और थोडासा बाबूना औटाया हुआ हो तो अति उत्तम है फिर उ-सके सिर पर बनफशा और नीलोफर का तेल लगावें यदि जुकाम का भारा

गर्म हवा दिमाग में पहुचती है वहां से दिलमें और उस जगह मे दिलकी रगों म फैल कर आत्मा को गर्म करती है फिर यह ज्वर उत्पन्न हो जाता है और यह ज्वर सूर्यकी गर्मीसे बहुधा उत्पन्न होताहै और जानना चाहिये कि सूरज की गर्मी का असर दिमागवाली आत्मा और दिमाग में विशेष होताहै इसप्रकार जो शरीर में फोक हो क्योंकि वह सूर्य की गर्मी से पिघलता है और उसके भाफ के परमाणु दिमाग में आते हैं और सिर में दर्द लाते है और न्हाने के स्थान और आगकी गर्मी का असर दिल में विशेष होता है और इस ज्वर का चिन्ह पहले सूर्य तथा आग की गर्मी का पहुचना तथा विशेष गर्म न्हाने के स्थान में बहुत देर तक रहना और नाडी की शीघ्रता और हलकेपन को निर्णय कराता है और उजाले को बुरा जानना और आंख में लाली और दूसरे अंगों की अपेक्षा सिर में जलन और गर्मीका होना फिरजो सूर्य की गर्मी उसका कारण है तो भीतर की अपेक्षा शरीर प्रत्यक्ष में विशेष गर्म मालूम हो और प्यास अधिक नहो और श्वास अपने ठिकाने पररहै और जो आग और न्हाने के स्थान की गर्मी उसका कारण हो तो प्यास विशेष उत्पन्न हो और बडे २ श्वास आने लगें (इलाज) गुलरोगन और सिर्का बर्फ में ठंढा करके सिर पर तरेडा दें और चदन, गुलाब और बेद भमिष का पानी शीशा में डालकर हिलाकर सुघावें और एक कपडा उस म भिगोकर छाती और सिर पर रक्खें और बनफशा का शर्बत, नीलोफर का शर्बत, अगूर का शर्बत, रीवास का शर्बत, विही का शर्बत, जो भिजनाप और खट्टे मीठे अनार का पानी ठंढा करके धोडासा गुलरोगन इसमें डाल कर पिलावें जिससे प्यास और सिर के दर्द को सतुष्ट करे और जौ का ठंढा घाव बूरा मिला हुआ और जौका सत्तू अच्छा भोजन है और जो गर्म पानी में मथागई मुरग कर जा उसमें बाबूना और नन्दबेल बनफशा नीलोफर और गुलखी और बेदकी पत्ती औटालें तो अति उत्तम है यह सिर के दर्द को दुर्र तो दवा है और दूसरी ठंढी चीजों की रक्षा रक्खें मकानमें फर्श में और काम करने में भी और जब ज्वर कम होजाय तो न्हाने के स्थान में जाय यद्यपि गर्मी और सुगाम क्यों न हो और गुनगुना मीठा पानी बहुतसा उ-सके सिर पर डालें और गुनगुने मकान में बैठावें और जो मकान में बाबूना कशीशेर और थोडासा बाबूना औटाया हुआ हो तो अति उत्तम है फिर उ-सके सिर पर बनफशा और नीलोफर का तेल लगावें यदि सुगाम का असर

खोले अथवा पढ़ने लगावें अभिप्राय यह है कि जो कुछ उचित समझें देवें जब ज्वर कम होजाय तो न्हाने के स्थान में लेजाय और गुनगुना पानी सिर पर डालें और भोजन में तीतर और बटेर और घर के पले मुर्गी के बच्चे का मांस अगर का पानी अथवा अनार दाने का पानी तथा जरिश्क से खट्टा करके खवावे । तईसवां भेद यह है कि विशेष मरोड़ा अथवा बार २ कई प्रकार के दस्त आने से दैनिक ज्वर उत्पन्न हो और मरोड़ा और निरुद्ध दस्तों से जो उत्पन्न होता है उसका वही कारण है जो दर्द की दशा और मवाद के निकलने की दशा म वर्णन किया गया है (इलाज) मरोड़े के बचाव और दस्तों के बन्द करने में परिश्रम करें और ज्वर उतर जाने के उपरांत न्हाने के स्थान में जाय (सूचना) इसका पहचानना कि दैनिक ज्वर दूसरे ज्वर से बदल गया है जब कि ज्वर टूटजाय और कुछ पसीना न आवे तथा पसीना तो आवे परन्तु ज्वर का असर शरीर और रगों में बाकी रहे और ज्वर की कमी का समय बढ़जाय और कठिन से टूटे और सिरका दर्द कि जो उत्पन्न हुआ था न जाता रहे तो जानना चाहिये कि दूसरा भेद होगया फिर जो दिलकी रगें गर्म हों और बाकी गर्मी सम्पूर्ण शरीर में समान और हलकी हो और भोजन करने के उपरान्त ज्वर की गर्मी प्रगट हो और नाड़ी समान और ठीक २ हो और कुछ छोटापन और कठोरता उसमें पाई जाय तो इस बातका चिन्ह है कि दैनिक ज्वर बदलकर असली अंगों में चिपट गया है जिस को दिक कहते हैं और जो आंख सुस्त रगें फूली और भरी मालूम हों और नाड़ी बड़ी और गाढ़ा पर चमक हो तो इस बात का चिन्ह है कि दैनिक ज्वर से खूनी ज्वर होगया है और जो फुरफुरी उत्पन्न हो और नाड़ी निरुद्ध और छोटी हो और दिलमें जलन और शरीर में बोझ हो और प्यास बढ़जाय तो इससे मालूम होता है कि दैनिक ज्वर गर्म दोषी ज्वर होगया है अभिप्राय यह है कि जब दैनिक ज्वर बदलता है तब उसकी बाकी के अन्त में अथवा न्यून ता में दूसरे ज्वरों का कोई चिन्ह प्रगट होता है और इसके अनुसार बचाव करें ॥

दूसरा प्रकरण

दोषयुक्त ज्वरों का वर्णन

इसका एक भेद तो वह है जो एक दोष से उत्पन्न हो उसको अफ़ीराद कहते हैं दूसरा वह है कि जो दो अथवा विशेष दोषों के मिलने से उत्पन्न हो

खोले अथवा पढ़ने लगावें अभिप्राय यह है कि जो कुछ उचित समझें देवें जब ज्वर कम होजाय तो न्हाने के स्थान में लेजाय और गुनगुना पानी सिर पर डालें और भोजन में तीतर और बटेर और घर के पले मुर्गी के बच्चे का मांस अगर का पानी अथवा अनार दाने का पानी तथा जरिश्क से खट्टा करके खवावे । तईसवां भेद यह है कि विशेष मरोड़ा अथवा बार २ कई प्रकार के दस्त आने से दैनिक ज्वर उत्पन्न हो और मरोड़ा और निरुद्ध दस्तों से जो उत्पन्न होता है उसका वही कारण है जो दर्द की दशा और मवाद के निकलने की दशा में वर्णन किया गया है (इलाज) मरोड़े के उपाय और दस्तों के बन्द करने में परिश्रम करें और ज्वर उतर जाने के उपरांत न्हाने के स्थान में जाय (सूचना) इसका पहचानना कि दैनिक ज्वर दूसरे ज्वर से बदल गया है जब कि ज्वर टूटजाय और कुछ पसीना न आवे तथा पसीना तो आवे परन्तु ज्वर का असर शरीर और रगों में बाकी रहे और ज्वर की कमी का समय बढ़जाय और कठिन से टूटे और शिरका दर्द कि जो उत्पन्न हुआ था न जाता रहे तो जानना चाहिये कि दूसरा भेद होगया फिर जो दिलकी रगें गर्म हों और बाकी गर्मी सम्पूर्ण शरीर में समान और हलकी हो और भोजन करने के उपरान्त ज्वर की गर्मी प्रगट हो और नाड़ी समान और ठीक २ हो और कुछ छोटापन और कठोरता उसमें पाई जाय तो इस बातका चिन्ह है कि दैनिक ज्वर बदलकर असली अंगों में लिपट गया है जिस को दिक कहते हैं और जो आंख सुर्ख रगें फूली और भरी मालूम हों और नाड़ी बड़ी और गालों पर चमक हो तो इस बात का चिन्ह है कि दैनिक ज्वर से खूनी ज्वर होगया है और जो फुरफुरी उत्पन्न हो और नाड़ी निरुद्ध और छोटी हो और दिलमें जलन और शरीर में बोझ हो और प्यास बढ़जाय तो इससे मालूम होता है कि दैनिक ज्वर गर्म दोषी ज्वर होगया है अभिप्राय यह है कि जब दैनिक ज्वर बदलता है तब उसकी बारी के अन्त में अथवा न्यूनता में दूसरे ज्वरों का कोई चिन्ह प्रगट होता है और इसके अनुसार उपाय करें ॥

दूसरा प्रकरण
दोषयुक्त ज्वरों का वर्णन

इसका पहला भेद तो यह है जो एक दोष से उत्पन्न हो उसको असलिय्यः कहते हैं दूसरा यह है कि जो दो अथवा अधिक दोषों के मिलने से उत्पन्न हो

निकलजाय परन्तु उसकी असली दशा बाकी रहै अर्थात् इस निकम्मेपन से पहले उसका जो कुछ नाम था सड़जाने पर भी वही नाम है और दुर्गन्धित होने के लिये प्रत्यक्ष में तरीका होना अवश्यहै यद्यपि प्रत्यक्षमें खुश्क नहों जैसे पित्त तथा बादी तथा तर मोलसरी के पत्ते और तर गुलाब के पत्ते ऊपर जमा करके रखदें यद्यपि भीतर की गति में खुश्क है परन्तु सड़ जातहैं और प्रगट होकि जो दोष रगोंके बाहर सड़जाता है और कोई और कारण ऐसा नहो कि जिससे दुर्गन्धि की भाफके परमाणुओं में पहुंचे जैसे भीतरी अंगों की सूजन और उसका ज्वर बारी पर आता है और टूट जाता है परन्तु कफका ज्वर यद्यपि टूटजाताहै परन्तु कुछ छिपा हुआ रहजाता है और जो दोष रगों के भीतर सड़जाता है उसका ज्वर हर समय रहताहै और टूटता नहीं है परन्तु कभी टूटजाताहै और कभी विशेष गर्मी और दुर्गन्धि भी सम्पूर्ण रगों में पहुंच जाती है अथवा उन रगों में जो दिल के समीप है तो ज्वर हर समय एकसा रहता है घटता बढ़ता नहीं परन्तु जबकि मवाद रगोंके भीतर भी सड़जाय और बाहर भी एकही प्रकार का अथवा विरुद्ध प्रकार का हो (लाभ) जो मवाद रगोंमें सड़जाता है वह शरीर में अधिक होताहै जैसा कि कफ तो उसका ज्वर प्रतिदिन आता है और जो मवाद शरीर में बहुत कम है जैसे बादी तो उसका ज्वर दो दिन अथवा विशेष छोड़कर आता है और जो मवाद की उत्पत्ति इन के और उसके मध्य में है जैसा कि पित्त तो उसका ज्वर एक दिन नागा देकर आता है परन्तु उस दशा में कफ उसमें मिलजाय अथवा पित्त शरीर में विशेष हो जैसे वह ज्वर जो एकांतर से आवे और जानना चाहिये कि जो मवाद रगों के बाहर सड़जाय और उसमें सूजन भी न उत्पन्न हो तो उसका ज्वर दौरे पर आता है क्योंकि सम्पूर्ण मवाद एकही जगह नहीं किन्तु जिस जगह बड़ा दोष रखा रहता है वहां थोड़ा २ आकर इकट्ठा होता है और वह मवाद जो मंद दोष में आकर गिरता है उसके भाग भी थोड़े २ सड़जातेहैं यहां तक कि इतना इकट्ठा होता है कि उसकी भाफ के परमाणु दिल में आतेहैं और वहां से आत्मा और दिल की रगों में इकट्ठे होते हैं और शरीर में विशेष गर्मी होती है फिर जो असली गर्मी ज्वर की गर्मी से तेज होकर मवाद और ऊपरी गर्मी का नष्ट करने पर आरूढ़ होतीहै यहां तक कि बिल्कुल विकार चीजों को नाश कर डालती है और उस जगह पर पहुंचता है जहां बड़ा दोषहै इस को इस कारण से कि वह विशेष उष्ण नादा और गैसदार है नष्ट नहीं कर सकें

निकलजाय परन्तु उसकी असली दशा बाकी रहे अर्थात् इस निकम्मेपन से पहले उसका जो कुछ नाम था सड़जाने पर भी वही नाम है और दुर्गन्धित होने के लिये प्रत्यक्ष में तरीका होना अवश्य है यद्यपि प्रत्यक्षमें खुश्क नहीं जैसे पित्त तथा बादी तथा तर मोलसरी के पत्ते और तर गुलाब के पत्ते ऊपर जमा करके रक्खें यद्यपि भीतर की शक्ति में खुश्क है परन्तु सड़ जाते हैं और प्रगट होकि जो दोष रगोंके बाहर सड़जाता है और कोई और कारण ऐसा नहीं कि जिससे दुर्गन्धि की भाफके परमाणुओं में पहुंचे जैसे भीतरी अंगों की सूजन और उसका ज्वर बारी पर आता है और टूट जाता है परन्तु कफका ज्वर यद्यपि टूटजाताहै परन्तु कुछ छिपा हुआ रहजाता है और जो दोष रगों के भीतर सड़जाता है उसका ज्वर हर समय रहताहै और टूटता नहीं है परन्तु कभी टूटजाताहै और कभी विशेष गर्मी और दुर्गन्धि भी सम्पूर्ण रगों में पहुंच जाती है अथवा उन रगों में जो दिल के समीप है तो ज्वर हर समय एकसा रहता है घटता बढ़ता नहीं परन्तु जबकि मवाद रगोंके भीतर भी सड़जाय और बाहर भी एकही प्रकार का अथवा विरुद्ध प्रकार का हो (लाभ) जो मवाद रगोंमें सड़जाता है वह शरीर में अधिक होताहै जैसा कि कफ तो उसका ज्वर प्रतिदिन आता है और जो मवाद शरीर में बहुत कम है जैसे बादी तो उसका ज्वर दो दिन अथवा विशेष छोड़कर आता है और जो मवाद की उत्पत्ति इन के और उसके मध्य में है जैसा कि पित्त तो उसका ज्वर एक दिन नागा देकर आता है परन्तु उस दशा में कफ उसमें मिलजाय अथवा पित्त शरीर में विशेष हो जैसे वह ज्वर जो एकांतर से आवे और जानना चाहिये कि जो मवाद रगों के बाहर सड़जाय और उसमें सूजन भी न उत्पन्न हो तो उसका ज्वर दौरे पर आता है क्योंकि सम्पूर्ण मवाद एकही जगह नहीं किन्तु जिस जगह बड़ा दोष सड़ा रहता है वहां थोड़ा २ आकर इकट्ठा होता है और वह मवाद जो गंदे दोष में आकर गिरता है उसके भाग भी थोड़े २ सड़जाते हैं यहां तक कि इतना इकट्ठा होता है कि उसकी भाफ के परमाणु दिल में आते हैं और वहां से आत्मा और दिल की रगों में इकट्ठे होते हैं और ज्वर में विशेष गर्मी होती है फिर जो असली गर्मी ज्वर की गर्मी से तेज होकर मवाद और उसकी गर्मी का नष्ट करने पर आरूढ़ होतीहै यहां तक कि बिल्कुल विकार चीज़ों को साफ कर डालती है और उस जगह पर पहुंचाता है जहां बड़ा दोषहै इस को इस कारण से कि वह विशेष उष्ण नाड़ा और पेचदार है [illegible] नहीं कर सक

पाये जाते है और असल में न यह है न वह और इसम बहुधा गला और ताळू और जीभ की जड के दोनों मांस सूज जाते है और श्वास तगी स आता है इसलिये कोई २ हकीम सौनूखस (खूनी ज्वर) को हुम्मये रिबू कहते हैं और रिबू का अर्थ श्वास का तग होना है और इस ज्वर में श्वास उस समय तग होता है जबकि जिगर और उसके आर पास बहुत गर्म होकर उबलने लगते है और उनकी भाफ के परमाणु फेंफडे और सीने में इकट्ठे होते हैं और श्वास को तग करते हैं और बहुधा तो इस ज्वर का बोहरान सातवें दिन होता है (लाभ) तकस्सुर (अर्थात् मनुष्य अपने शरीर में एक ऐसी दशा पावे कि जैसे इसके जोड और हड्डी को किसी भारी चीज से कूट दिया हो) फुरेरी और जुडी के अर्थ के वर्णन में है ।

तकस्सुर वह है कि देहसी टूट और यह शरीर पर रोमाञ्च हो आने का कारण है और फुरेरी एक ऐसी दशा है कि खाल में और शरीर की मछलियों में भिन्न २ सर्दी मालूम हो और शरीर के रोमाञ्च खडे होजांय और इसके पहले शरीर टूटता और फूटा हुआसा मालूम होता है और सर्दी मनुष्य को अपने अगों में मालूम होती है और कपकपी एक बिना चाही गति है जो प्रत्यक्ष भीतरी अगों में उत्पन्न होती है न कि फडकनेकी विधिपर और उसका रोकनायोग्यनहीं और जुडीकेकारणबहुतहैं एकतोयहहै कि मवाद अधिक और ठढा हो दूसरे यहहै कि तेजी और जलनहो तीसरे यहहै कि अगपरमवाद गिरताहै उसकी ज्ञानशक्ति चैतन्यहो चौथे यहहै कि उसअगकी दूरकरनेवाली शक्ति बलवान् और चेपदार हो और जैसा २ मवाद में गाढापन तथा पतलापन की न्यूनता और अधिकता होती है उसी के अनुसार रोग में कठोरता और मुलायमी और जल्दी और ढील होती है सो जहां कहीं कि मवाद गाढा ठंढा तथा पतला और गर्म होता है और दूर करने वाली शक्ति चैतन्य होती है तो कप कपी अधिक होती है और उसके विरुद्ध जो मवाद जलन उत्पन्न करने वाला गर्म हो जैसे कि एकांतरे ज्वर में यद्यपि अधिक कपकपी होती है परन्तु तुर्त जाती रहती है और जो गाढी और चेपदार होती है जैसे आदिक ज्वर तो देर में नष्ट होती है (इलाज) उसी समय अकहल और वासलीक रग की फसद खोलें और अधिक खून निकालें और जो कोई कार्य वर्जित न हो और ऋतु, वर्ष, आयु और स्वभाव के योग्य समझें तो इतना खून निकालें कि अचेतता के समीप पहुंच जाय [illegible] होजाय साथ

पाये जाते है और असल में न यह है न वह और इसम बहुधा गला और ताळू और जीभ की जड के दोनों मांस सूज जाते है और श्वास तगी स आता है इसलिये कोई २ हकीम सौनूखस (खूनी ज्वर) को हुम्मये रिबू कहते है और रिबू का अर्थ श्वास का तग होना है और इस ज्वर में श्वास उस समय तग होता है जबकि जिगर और उसके और पास बहुत गर्म होकर उबलने लगते है और उनकी भाफ के परमाणु फेंफडे और सीने में इकट्ठे होते है और श्वास को तग करते हैं और बहुधा तो इस ज्वर का बोहरान सातवें दिन होता है (लाभ) तकस्सुर (अर्थात् मनुष्य अपने शरीर में एक ऐसी दशा पावे कि जैसे इसके जोड और हड्डी को किसी भारी चीज से कूट दिया हो) फुरेरी और जूडी के अर्थ के वर्णन में है ।
तकस्सुर वह है कि देहसी टूट और यह शरीर पर रोमान्च हो आने का कारण है और फुरेरी एक ऐसी दशा है कि खाल में और शरीर की मछलियों में भिन्न २ सर्दी मालूम हो और शरीर के रोमाञ्च खडे होजांय और इसके पहले शरीर टूटता और फूटा हुआसा मालूम होता है और सर्दी मनुष्य को अपने अगों में मालूम होती है और कपकपी एक बिना चाही गति है जो प्रत्यक्ष भीतरी अगों में उत्पन्न होती है न कि फडकनेकी विधिपर और उसका रोकनायोग्यनहीं औरजूडीकेकारणबहुतहैं एकतोयहहै कि मवाद अधिक और ठढा हो दूसरी यहहै कि तेजी और जलनहो तीसरे यहहै कि अगपर मवाद गिरताहै उसकी ज्ञानशक्ति चैतन्यहो चौथे यहहै कि उसअगकी दूरकरनेवाली शक्ति बलवान् और चेपदार हो और जैसा २ मवाद में गाढापन तथा पतलापन की न्यूनता और अधिकता होती है उसी के अनुसार रोग में कठोरता और मुलायमी और जल्दी और ढील होती है सो जहां कहीं कि मवाद गाढा ठंढा तथा पतला और गर्म होता है और दूर करने वाली शक्ति चैतन्य होती है तो कप कपी अधिक होती है और उसके विरुद्ध जो मवाद जलन उत्पन्न करने वाला गर्म हो जैसे कि एकांतरे ज्वर में यद्यपि अधिक कपकपी होती है परन्तु सूर्त जाती रहती है और जो गाढी और चेपदार होती है जैसे आहिक ज्वर तो देर में नष्ट होती है (इलाज) उसी समय अकहल और बासलीक रग की फसद खोलें और अधिक खून निकालें और जो कोई कार्य वर्जित न हो और ऋतु, वर्ष, आयु और स्वभाव के योग्य समझें तो इतना खून निकालें कि अचेतता के समीप पहुंच जाय [illegible] होजाय [illegible] साथ

खून के सडजाने से उत्पन्नहो यह भी दो प्रकार पर है कि खून रगों के बाहर सड जाय और यह वह ज्वर है कि खूनी सूजनों से उत्पन्नहो और यह ज्वर उन ऊपरी ज्वरों में से होता है कि सूजन के कारण से उत्पन्न हो उसका इलाज यह है कि उसकी सूजन का इलाज करे और इसी प्रकरण के अंत में एक जुदी कहावत में ऊपरी ज्वरों का वर्णन आवेगा वहां देखें दूसरी यह है कि खून रगों के भीतर सड गया हो असली मुतबका यहीहै और जबकि खून के भाग थोडे अथवा विशेष सडजाते है इसलिये यह ज्वर तीन दशासे रहित नहीं और प्रत्येक दशा का एक नाम है एक तो यहहै कि प्रथम बहुत कडाहो और धीरे २ नर्म होजाय उसको मुतनाकसा और मुनहता कहते हैं अर्थात् घटनेवाली और इसके चिन्ह अधिक नहीं होते और बहुत आरोग्य और सरल है और इससे यह मालूम होता है कि जितने खून के भाग नष्ट होते है उसकी अपेक्षा और भाग कम सडते हैं । दूसरे यहहै कि हर घडी ज्वर विशेष और कडाहोता रहे और बहुधा सातवेंदिन बोहरान होता है और यह ज्वर बहुत ही बुरा है और उसका इलाज बहुतही कठिनता से होता है और इसको मुतजायद और जायदउलअफूनत अर्थात् बढनेवाला कहतेहै और इस बातको बताता है कि जितने खून के भाग नष्ट होते है उनकी अपेक्षा अधिक सडजाते है। तीसरे यह है कि प्रथम से अंत तक एकसा रहे और उसकी अधिकता और न्यूनता की दशा पहली और दूसरी दशा वाले ज्वर के मध्य में रहे और बहुधा ऐसा होता है कि सात दिन तक एक प्रकार पर रहे उसको हकीम लोग मुतशाबे और मुतसाविया और वाकिफ अर्थात् समान ज्वर कहते है और इसबात को बताता है कि खूनके भाग बराबर सडे होवे हं अर्थात् जितने नष्ट होते है उतनेही सड जाते है और जानना चाहिए कि सम्पूर्ण शरीर का खून जबही सडजाता है कि मृत्यु निकट हो अभिप्राय यह है कि जो ज्वर खूनके सडजाने से उत्पन्न हो और हरसमय रहे उसका यह चिन्ह है कि उक्त ज्वर सौनूखस (खूनी ज्वर) हो विशेष गर्म और उसके विरुद्ध होतीहै और मूत्र गदला होता है उसकी गन्धि अच्छी नहीं होती और दाचेर् कपकपी आजाय इसकारण से सदाहटका मवाद रगों से बाहर निकल आवे और यह तीनदर्जे जो ऊपर वर्णन होचुके है उसके अनुसार उसके चिन्हों की कठोरता अथवा कठोरता की अधिकता होती है और इस तरह पर खूनी ज्वर से और होती और मूत्र खूनी ज्वर में कभी नहीं सडता परन्तु जब

खून के सडजाने से उत्पन्नहो यह भी दो प्रकार पर है कि खून रगों के बाहर सड जाय और यह वह ज्वर है कि खूनी सूजनों से उत्पन्नहो और यह ज्वर उन ऊपरी ज्वरों में से होता है कि सूजन के कारण से उत्पन्न हो उसका इ-लाज यह है कि उसकी सूजन का इलाज करे और इसी प्रकरण के अंत में एक जुदी कहावत में ऊपरी ज्वरों का वर्णन आवेगा वहां देखें दूसरी यह है कि खून रगों के भीतर सड गया हो असली मुतबका यहीहै और जबकि खून के भाग थोडे अथवा विशेष सडजाते हैं इसलिये यह ज्वर तीन दशासे रहित नहीं और प्रत्येक दशा का एक नाम है एक तो यहहै कि प्रथम बहुत कडाहो और धीरे २ नर्म होजाय उसको मुतनाकसा और मुनहता कहते हैं अर्थात् घटनेवाली और उसके चिन्ह अधिक नहीं होते और बहुत आरोग्य और सरल है और इससे यह मालूम होता है कि जितने खून के भाग नष्ट होते हैं उसकी अपेक्षा और भाग कम सडते हैं । दूसरे यहहै कि हर घडी ज्वर विशेष और कडाहोता रहे और बहुधा सातवेंदिन बोहरान होता है और यह ज्वर बहुत ही बुरा है और उसका इलाज बहुतही कठिनता से होता है और इसको मु-तजायद और जायदउलअफूनत अर्थात् सडनेवाला कहतेहैं और इस बातको बता ता है कि जितने खून के भाग नष्ट होते हैं उनकी अपेक्षा अधिक सडजाते हैं । तीसरे यह है कि प्रथम से अंत तक एकसा रहे और उसकी अधिकता और न्यूनता की दशा पहली और दूसरी दशा वाले ज्वर के मध्य में रहै और बहुधा ऐसा होता है कि सात दिन तक एक प्रकार पर रहै उसको हकीम लोग मुतशावे और मुतसाविया और वाकिफ अर्थात् समान ज्वर कहते हैं और इसबात को बताता है कि खूनके भाग बराबर सडे होते हैं अर्थात् जितने नष्ट होते हैं उतनेही सड जाते हैं और जानना चाहिये कि सम्पूर्ण शरीर का खून जबही सडजाता है कि मृत्यु निकट हो अभिप्राय यह है कि जो ज्वर खूनके सडजाने से उत्पन्न हो और हरसमय रहै उसका यह चिन्ह है कि उक्त ज्वर सोनूखस (खूनी ज्वर) हो विशेष गर्म और उसके विरुद्ध होतीहै और मूत्र गदला होता है उसकी गन्धि अच्छी नहीं होती और दाफे कपकपी आजाय इसकारण से सडाहटका मवाद रगों से बाहर निकल आवे और वह तीनदर्जे जो ऊपर वर्णन होचुके हैं उसके अनुसार उसके चिन्हों की कठोरता अथवा कठोरता की अधिकता होती है और इस तरह पर खूनी ज्वर से अधिक होती और मूत्र खूनी ज्वर में कभी नहीं सडता परन्तु जब

के देने में भय नहीं इस दशा में जो कुछ पित्त जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो ममाण में कहा जायगा, काम में लावें और चाहिये कि ऐसी दशा में अर्थात् जब कि पित्त खून में मिला हो तो खून अधिक न निकाले क्योंकि हानि कारक है और पित्त को जोर देता है और हर जगह फसद के खोलने के समय रोगी की शक्ति की रक्षा योग्य समझें कि खून के निकालने में शक्ति पर भरोसा करना सबसे बडी बात है क्योंकि बहुत लोग फसद के खोलने से दुर्बल होकर मरगये हैं और शक्ति न होने का यह अर्थ है कि रोग की अधिकता और शरीर के खाली होने से और दोषों और आत्मा के नष्ट होने के कारण से शक्ति का असली मवाद नष्ट हो यह नहीं कि कोई मनुष्य गर्मी और दर्द की अधिकता से दुर्बल हो और जब मवाद के पकने के उपरान्त जुलावकी आवश्यकता होतो पीली हर्ड, पित्त पापडा और अमलतास के काढे में दें और जहां कहीं कि भीतरी अंगों में सूजन हो तो अमलतास का गूदा कासनी के पानी में तथा उन्नाव और आलूके काढे में घोलकर तुरजबीन मिलाकर पिलावें तो बहुत अच्छा है और बंशलोचन १॥। माशे, ईसबगोल के लुआब के साथ अधिक गर्मी और प्यास को बुझाता है (सूचना) जब कि वोहरान के उपरान्त ज्वर का बाकी मवाद रगों में रहजाय तो चाहिये कि हरी कासनी कूटकर ७० माशे तोल में उसका पानी लेकर औटावे और झाग उतार डालें और ५२॥ माशे सिकजबीन मिलाकर इसी विधि से पिलावें कि तीन दिन अथवा पांच दिन दे जिससे बाकी मवाद बिलकुल निकलजाय आकाशबेल का पानी सिकजबीन के साथ यही गुण करता है और पीले आलू और आलूका पानी तबियत को मुलायम करता है और धीरे २ रगों को पवित्र करता है और बहुतही लाभदायक है ।

पित्त ज्वरों का वर्णन

यह दो प्रकार पर है एक तो यह है कि मवाद रगों के भीतर सड़जाय और उसके कारण से ज्वर हर समय रहे उसको गिबलाजमा कहते हैं चाहे निर्मल हो वा न हो फिर यह मवाद जिगर और दिलके ओर पास में विशेष हो तो पित्त ज्वर कहते हैं । दूसरे यह है मवाद रगो के बाहर सड़जाय उस ज्वर [illegible] गिबदायरा कहते हैं और क्योंकि इसकी दशा विरुद्ध है इस लिये यह ती[illegible] प्रकार पर है एक तो उनमें से गिब खालिस है इसका यह अर्थ है कि मवाद [illegible] के बाहर सड़जाय इस ज्वर को गिबदायर भी कहते हैं, और

के देने में भय नहीं इस दशा में जो कुछ पित्त जिसका मवाद रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो प्रमाण में कहा जायगा, काम में लावें और चाहिये कि ऐसी दशा में अर्थात् जब कि पित्त खून में मिला हो तो खून अधिक न निकालें क्योंकि हानि कारक है और पित्त को जोर देता है और हर जगह फसद के खोलने के समय रोगी की शक्ति की रक्षा योग्य समझें कि खून के निकालने में शक्ति पर भरोसा करना सबसे बड़ी बात है क्योंकि बहुत लोग फसद के खोलने से दुर्बल होकर मरगये हैं और शक्ति न होने का यह अर्थ है कि रोग की अधिकता और शरीर के खाली होने से और दोषों और आत्मा के नष्ट होने के कारण से शक्ति का असली मवाद नष्ट हो यह नहीं कि कोई मनुष्य गर्मी और दर्द की अधिकता से दुर्बल हो और जब मवाद के पकने के उपरान्त जुलाबकी आवश्यकता होतो पीली हड़, पित्त पापड़ा और अमलतास के काढे में दें और जहां कहीं कि भीतरी अगों में सूजन हो तो अमलतास का गूदा कासनी के पानी में तथा उन्नाव और आलूके काढे में घोलकर तुरजबीन मिलाकर पिलावें तो बहुत अच्छा है और बंसलोचन १॥। माशे, ईसबगोल के लुआब के साथ अधिक गर्मी और प्यास को बुझाता है (सूचना) जब कि बोहरान के उपरान्त ज्वर का बाकी मवाद रगों में रहजाय तो चाहिये कि हरी कासनी कूटकर ७० माशे तोल में उसका पानी लेकर औटावे और झाग उतार डालें और ५२॥ माशे सिकजबीन मिलाकर इसी विधि से पिलावें कि तीन दिन अथवा पांच दिन दे जिससे बाकी मवाद बिल्कुल निकलजाय आकाशबेल का पानी सिकजबीन के साथ यही गुण करता है और पीले आलू और आलूका पानी तबियत को मुलायम करता है और धीरे २ रगों को पवित्र करता है और बहुतही लाभदायक है ।

पित्त ज्वरों का वर्णन

यह दो प्रकार पर है एक तो यह है कि मवाद रगों के भीतर सड़जाय और उसके कारण से ज्वर हर समय रहे उसको गिबलाजमा कहते हैं चाहे निर्मल हो वा न हो फिर यह मवाद जिगर और दिलके ओर पास में विशेष हो तो पित्त ज्वर कहते हैं । दूसरे यह है मवाद रगों के बाहर सड़जाय उस ज्वर को गिबदायरा कहते हैं और क्योंकि इसकी दशा विरुद्ध है इस लिये यह [illegible] पर है एक तो उनमें से गिब खालिस है इसका यह अर्थ है कि मवाद [illegible] के बाहर स[illegible] ज्वर को गिबदायर भी कहते हैं और

लिये दें और इसके दो घटे उपरान्त जौका पानी दें और श्रेष्ठ और मुलायम भोजन दे और आरम्भ में कम दस्त लानेवाली दवा दे और मूत्र के बहाने में परिश्रम करे और चाहिये कि विशेष दस्तावर दवा काम में न लावै और आरम्भ में दस्तावर दवा न देना चाहिये परतु बनफशा का शर्बत और मेवाओं के पानी जैसे आलू इमली और जुलाब विशेष मलके निकालने वाले की आवश्यकता नहीं परतु जुलाब के देने में डर नहीं। दूसरा भेद तपे मुहर्रका के वर्णन में। ऊपर वर्णन हो चुका है कि जब तेज मवाद रगामें इस तरहपर सड जाय कि दिल आमाशय और जिगर के और पास में अधिक हो तो मुहर्रका कहते हैं और उसका मवाद यातो पित्ती है या खारी कफ और यह विदितहै कि केवल पित्तहो अथवा पनीले कफके साथ सयोगिक हो और जानना चाहिये कि खारी कफ पित्तके समान होता है जैसा कि किताब वैद्यकगईदीके बनाने वाले ने कहा है कि खारी कफ पित्त के गुण के समान होता है जैसा दोषों के विवाद में वर्णन हुआ है सो जब दिल के समीप और दिल और जिगर की रगों में जो समीपहैं सड जाता है तो गर्म होकर इतना भडकता है जैसे कि पित्त की आगभडकतीहै। अभिप्राय यह है कि तपे मुहर्रका एककडा ज्वर है और उसके चिन्ह बलवान और बहुधा लडकों और जवानोंको उत्पन्न होता है और बुड्ढों को बहुत कम उत्पन्नहोता है और जो उत्पन्न होवा है तो मार डालता है क्योंकि कारण बलवान है इसलिये कि जबतक कारण बहुत बलवान नहीं होता तपे मुहर्रका बूढों को उत्पन्न नहीं होता और जबकि इन की शक्ति निर्बलहै कारणके बलवान होनेसे बराबरी नहीं करसकती। और इस ज्वरके कई चिन्ह है एक तो यहहै कि ज्वर बराबर रहै और मरयकसे भीतर जलन विशेष हो इस कारणसे अधिक प्यासहो। दूसरी यह है कि आरम्भ में कपकपी और फुरेरी और पसीना कुछ न हो और बौहरानके दिनहो और बौहरान के समय आरम्भ में फुरेरी उत्पन्न हो और अत में पसीनाभी आवे। तीसरे थोडी खांसी और फुरेरी कदाचित उत्पन्न हो और हकीम बुकरातने कहा है कि पित्तज्वर में खांसी उत्पन्न हो तो प्यास जाती रहे। चौथे यह है कि [illegible] की गर्मी गिवलाजमा से बहुत अधिक हो। पांचवें यह है कि जीभ काली [illegible] खुरी होती काली होना तो बहुत बुरा है और सुरखुरापन अच्छा है [illegible] रापन मध्यम है। छटे यह है कि बुरे चिह्न जैसे अधिक जागना और

है
ज्वर उठा
यह तो [illegible]
मवाद

लिये दें और इसके दो घटे उपरान्त जौका पानी दें और श्रेष्ठ और मुलायम भोजन दे और आरम्भ में कम दस्त लानेवाली दवा दे और मूत्र क बहाने में परिश्रम करै और चाहिये कि विशेष दस्तावर दवा काम में न लावै और आरम्भ में दस्तावर दवा न देना चाहिये परन्तु बनफशा का शर्बत और मेवाओं के पानी जैसे आलू इमली और जुलाब विशेष मलके निकालने वाले की आवश्यकता नहीं परन्तु जुलाव के देने में डर नहीं। दूसरा भेद तपे मुहर्रका के वर्णन में। ऊपर वर्णन हो चुका है कि जब तेज मवाद रगोंमें इसतरहपर सड जाय कि दिल आमाशय और जिगर के और पास में अधिक हो तो मुहर्रका कहते हैं और उसका मवाद यातो पित्ती है या खारी कफ और यह विदितहै कि केवल पित्तहो अथवा पनीले कफके साथ संयोगिक हो और जानना चाहिये कि खारी कफ पित्तके समान होता है जैसा कि किताव वैद्यकगर्दीजीके वनाने वाले ने कहा है कि खारी कफ पित्त के गुण के समान होता है जैसा दोषों के विवाद में वर्णन हुआ है सो जब दिल के समीप और दिल और जिगर की रगों में जो समीपहैं सड जाता है तो गर्म होकर इतना भड़कता है जैसे कि पित्त की आगभडकतीहै। अभिप्राय यह है कि तपे मुहर्रका एककड़ा ज्वर है और उसके चिन्ह वलवान और बहुधा लडकों और जवानोंको उत्पन्न होता है और बुड्ढों को बहुत कम उत्पन्नहोता है और जो उत्पन्न होवा है तो मार डालता है क्योंकि कारण बलवान है इसलिये कि जबतक कारण बहुत बलवान नहीं होता तपे मुहर्रका बूढों को उत्पन्न नहीं होता और जबकि इन की शक्ति निर्बलहै कारणके वलवान हानेसे बराबरी नहीं करसकती। और इस ज्वरके कई चिन्ह हैं एक तो यहहै कि ज्वर बराबर रहै और मत्यक्षसे भीतर जलन विशेष हो इस कारणसे अधिक प्यासहो। दूसरी यह है कि आरम्भ में कपकपी और फुरैरी और पसीना कुछ न हो और वौहरानके दिनहो और बौहरान के समय आरम्भ में फुरैरी उत्पन्न हो और अंत में पसीनाभी आवे। तीसरे थोडी खांसी और फुरैरी कदाचित उत्पन्न हो और हकीम बुकरातने कहा है कि पित्तज्वर में खांसी उत्पन्न हो तो प्यास जाती रहै। चौथे यह है कि [illegible] की गर्मी गिवलाजमा से बहुत अधिक हो। पांचवें यह है कि जीभ काली [illegible] खुरी होती काली होना तो बहुत बुरा है और खुरखुरापन अच्छा है [illegible] रापन मध्यम है। छटे यह है कि बुरे चिह्न जैसे अधिक जागना और

करता है और जहां कहीं कि भीतर के अगों में कोई विपत्ति अधिक नहीं तो ठंडा किया पानी अधिक लाभदायक है और जो कोई विपत्ति हो तो ठहराकर घूट २ देना कम हानि करता है जो गर्मी मवाद पर अधिक हो तो पहले उचित चीजों से उसको पकावें फिर दस्तावर दवा दें और अन्तमें गर्मी को कम करे और आरम्भ में दस्तावर दवा न देनी चाहिये और यह उपाय बुद्धिमान हकीम की सम्मति पर निर्भर है और तबियत के नर्म करने के लिये आलूका पानी और इमली का पानी आदि शीरखिस्त मिलाकर देना लाभदायक है और जो आवश्यकता पड़े तो अमलतास का गूदा भी इस पानी में कि जो मेवाओंका निकाला है बढा दें और जहां कहीं कि तबियत नर्म हो तो अनार का पानी बीज सहित कूटकर निकाले तो अधिक लाभदायक है और उचित भोजन तथा जो चीज प्रत्यक्ष में ठंडी हों उनको तबियत की नर्मी और अजीर्ण की रक्षा से लाभकारी है और जहां कहीं कि शक्ति भी गिरगई हो और ज्वर अधिक हो और भोजन की ओर रुचि न हो तो भोजन न देना चाहिये और फस्द खोलना पित्त ज्वर में योग्य है यदि मूत्र गाढा और लाल हो और नहीं तो फस्द खोलना न चाहिये क्योंकि पित्त बहुत तेज और ज्वर बहुत गर्म होजाता है और जब कि ज्वर कम होजाय तो न्हाने के समान स्थान और गुनगुने पानी में जो सर्दी लिये हो न्हाना योग्य है मुख्य कर जो ज्वर का कारण खारी कफ हो और जहां कहीं मवाद आमाशय के मुख के और पास में होता है तो जी मिचलाना और घबराहट की अधिकता होतीहै फिर जो वमन भी सरलता से आती हो तो आने दे क्योंकि मवाद निकलता है और जो वमन सुगमता से नहीं आती है तो शिकंजबीन और गुनगुना पानी पिवावें जिससे मवाद के निकालने में सहायता करे और जो मवाद गाढा हो या आमाशय के पुर्ते में गढा हुआ हो तो चाहिये कि यारजफय- करासे उसके मवाद को निकालें परन्तु इस यारज में घुला एलुआ गिरा हो अथवा एलुआ की गोली दें और मवाद के निकलने के उपरांत खट्टे मीठे अनार का पानी पिवावें जिससे यारज की गर्मी का उपाय करे और जो मवाद के निकलने के उपरांत भी वमन बाकी हो और अधिकता और निर्बलता लावें तो इसको बंद करसकते हैं और इसी चौहरानी मवादके निकलने को प्रथम न रोकना चाहिये परन्तु जबकि अधिक बदहजमी और निर्बलता का भय हो और इस ज्वर का चौहरान कभी पसीना या नकसीर से होता है तो

करता है और जहां कहीं कि भीतर के अंगों में कोई विपत्ति अधिक नहीं तो ठंडा किया पानी अधिक लाभदायक है और जो कोई विपत्ति हो तो ठहराकर घूंट २ देना कम हानि करता है जो गर्मी मवाद पर अधिक हो तो पहले उचित चीजों से उसको पकावें फिर दस्तावर दवा दें और अन्तमें गर्मी को कम करे और आरम्भ में दस्तावर दवा न देनी चाहिये और यह उपाय बुद्धिमान हकीम की सम्मति पर निर्भर है और तबियत के नर्म करने के लिये आलूका पानी और इमली का पानी आदि शीरखिस्त मिलाकर देना लाभदायक है और जो आवश्यकता पड़े तो अमलतास का गूदा भी इस पानी में कि जो मेवाओंका निकाला है बढा दें और जहां कहीं कि तबियत नर्म हो तो अनार का पानी बीज सहित कूटकर निकाले तो अधिक लाभदायक है और उचित भोजन तथा जो चीज प्रत्यक्ष में ठंडी हों उनको तबियत की नर्मी और अजीर्ण की रक्षा से लाभकारी है और जहां कहीं कि शक्ति भी गिरगई हो और ज्वर अधिक हो और भोजन की ओर रुचि न हो तो भोजन न देना चाहिये और फस्द खोलना पित्त ज्वर में योग्य है यदि मूत्र गाढा और लाल हो और नहीं तो फस्द खोलना न चाहिये क्योंकि पित्त बहुत तेज और ज्वर बहुत गर्म होजाता है और जब कि ज्वर कम होजाय तो न्हाने के समान स्नान और गुनगुने पानी में जो सर्दी लिये हो न्हाना योग्य है मुख्य कर जो ज्वर का कारण खारी कफ हो और जहां कहीं मवाद आमाशय के मुख के और पास में होता है तो जी मिचलाना और घबराहट की अधिकता होतीहै फिर जो वमन भी सरलता से आती हो तो आने दे क्योंकि मवाद निकलता है और जो वमन सुगमता से नहीं आती है तो शिकञ्जबीन और गुनगुना पानी पिवावें जिससे मवाद के निकलने में सहायता करे और जो मवाद गाढा हो या आमाशय के पर्तों में गढा हुआ हो तो चाहिये कि यारजफय-करासे उसके मवाद को निकालें परन्तु इस यारज में घुला एलुआ गिरा हो अथवा एलुवा की गोली दें और मवाद के निकलने के उपरांत खट्टे मीठे अनार का पानी पिवावें जिससे यारज की गर्मी का उपाय करे और जो मवाद के निकलने के उपरांत भी वमन बाकी हो और अधिकता और निर्बलता लावें तो इसको बंद करसकते हैं और इसी बोहरानी मवादके निकलने को प्रथम न रोकना चाहिये परन्तु जबकि अधिक दस्तआय और निर्बलता का भय हो और इस ज्वर का बोहरान कभी पसीना या नकसीर से होता है तो

करता है और जहां कहीं कि भीतर के अगों में कोई विपत्ति अधिक नहो तो ठढा किया पानी अधिक लाभदायक है और जो कोई विपत्ति हो तो ठहराकर घूट २ देना कम हानि करता है जो गर्मी मवाद पर अधिक हो तो पहले उचित चीजों से उसको पकावें फिर दस्तावर दवा दें और अन्तमें गर्मी को कम करे और आरम्भ में दस्तावर दवा न देनी चाहिये और यह उपाय बुद्धिमान हकीम की सम्मति पर निर्भर है और तबियत के नर्म करने के लिये आलूका पानी और इमली का पानी आदि शीरखिस्त मिलाकर देना लाभदायक है और जो आवश्यक्ता पडे तो अमलतास का गूदा भी इस पानी में कि जो मेवाओंका निकाला है बढा दें और जहां कहीं कि तबियत नर्म हो तो अनार का पानी बीज सहित कूटकर निकाले तो अधिक लाभदायक है और उचित भोजन तथा जो चीज प्रत्यक्ष में ठढी हों उनको तबियत की नर्मी और अजीर्ण की रक्षा से लाभकारी है और जहां कहीं कि शक्ति भी गिरगई हो और ज्वर अधिक हो और भोजन की ओर रुचि न हो तो भोजन न देना चाहिये और फस्द खोलना पित्त ज्वर में योग्य है यदि मूत्र गाढा और लाल हो और नहीं तो फस्द खोलना न चाहिये क्योंकि पित्त बहुत तेज और ज्वर बहुत गर्म होजाता है और जब कि ज्वर कम होजाय तो न्हाने के समान स्नान और गुनगुने पानी में जो सर्दी लिये हो न्हाना योग्य है मुख्य कर जो ज्वर का कारण खारी कफ हो और जहां कहीं मवाद आमाशय के मुख के और पास में होता है तो जी मिचलाना और घबराहट की अधिकता होतीहै फिर जो वमन भी सरलता से आती हो तो आने दे क्योंकि मवाद निकलता है और जो वमन सुगमता से नहीं आती है तो शिकञ्जबीन और गुनगुना पानी पिवाव जिससे मवाद के निकालने में सहायता करे और जो मवाद गाढा हो या आमाशय के पर्तों में गढा हुआ हो तो चाहिये कि यारजफय-कराके उसके मवाद को निकाले परन्तु इस यारज में घुला एलुआ गिरा हो अथवा एलुवा की गोली दें और मवाद के निकलने के उपरांत खट्टे मीठे अनार का पानी पिवावें जिससे यारज की गर्मी का उपाय करें और जो मवाद के निकलने के उपरांत भी वमन बाकी हो और अधिकता और निर्बलता लावे तो इसको बद करसकते हैं और इसी तौरपर मवादके निकलने को प्रथम न रोकना चाहिये परन्तु जबकि अधिक बढजाय और निर्बलता का भय हो और इस ज्वर का बोहरान कभी पसीना या नक्सीर से होता है तो

करता है और जहां कहीं कि भीतर के अंगों में कोई विपत्ति अधिक नहो तो ठंडा किया पानी अधिक लाभदायक है और जो कोई विपत्ति हो तो ठहराकर घूंट २ देना कम हानि करता है जो गर्मी मवाद पर अधिक हो तो पहले उचित चीजों से उसको पकावें फिर दस्तावर दवा दें और अन्तमें गर्मी को कम करे और आरम्भ में दस्तावर दवा न देनी चाहिये और यह उपाय बुद्धिमान हकीम की सम्मति पर निर्भर है और तबियत के नर्म करने के लिये आलूका पानी और इमली का पानी आदि शीरखिस्त मिलाकर देना लाभदायक है और जो आवश्यक्ता पड़े तो अमलतास का गूदा भी इस पानी में कि जो मेवाओंका निकाला है बढा दें और जहां कहीं कि तबियत नर्म हो तो अनार का पानी बीज सहित कूटकर निकाले तो अधिक लाभदायक है और उचित भोजन तथा जो चीज प्रत्यक्ष में ठंडी हों उनको तबियत की नर्मी और अजीर्ण की रक्षा से लाभकारी है और जहां कहीं कि शक्ति भी गिरगई हो और ज्वर अधिक हो और भोजन की ओर रुचि न हो तो भोजन न देना चाहिये और फस्द खोलना पित्त ज्वर में योग्य है यदि मूत्र गाढा और लाल हो और नहीं तो फस्द खोलना न चाहिये क्योंकि पित्त बहुत तेज और ज्वर बहुत गर्म होजाता है और जब कि ज्वर कम होजाय तो न्हाने के समान स्थान और गुनगुने पानी में जो सर्दी लिये हो न्हाना योग्य है मुख्य कर जो ज्वर का कारण खारी कफ हो और जहां कहीं मवाद आमाशय के मुख के ओर पास में होता है तो जी मिचलाना और घबराहट की अधिकता होतीहै फिर जो वमन भी सरलता से आती हो तो आने दे क्योंकि मवाद निकलता है और जो वमन सुगमता से नहीं आती है तो शिकञ्जबीन और गुनगुना पानी पिलावे जिससे मवाद के निकालने में सहायता करे और जो मवाद गाढा हो या आमाशय के पुर्त में गढा हुआ हो तो चाहिये कि यारजफय-कराके उसके मवाद को निकाले परन्तु इस यारज में घुला एलुआ गिरा हो अथवा एलुवा की गोली दें और मवाद के निकलने के उपरांत खट्टे मीठे अनार का पानी पिलावें जिसमें यारज की गर्मी का उपाय करे और जो मवाद के निकलने के उपरांत भी वमन बाकी हो और अधिकता और निर्बलता लावे तो इसको वद दरसयते हैं और इसी नौहगनी मवादके निकलने को प्रथम न रोकना चाहिये परन्तु जबकि अधिक बढ़जाय और निर्बलता का भय हो और इस ज्वर का बोहरान कभी पसीना या नक्सीर से होता है सो

भय है कि सरसाम उत्पन्न करै परन्तु जो भाफ पित्त की होतो तेल ठंडा पानी और दूध यह सब सिरपर काममें लाने से लाभकारी होते हैं और जब तर भाफ हो और नाक और मुखमें सुर्खी बहुत प्रगट होतो चाहिये कि नक्सीर खोलें या मवाद को पांवकी तरफ खींचे जिससे दिमाग को हानि न पहुचावै और जब पित्तज्वर में सूखे वायटे चढ़ें और अगकी मछलियों में आनेलगैं और श्वास तंग होने लगै तो चाहिये कि छाती और गर्दन पर बनफशे का तेल मोम के तेल में मिलाकर मलै और बनफशा और खितमी सूखी कूटछान कर मोम के तेल में मिलाकर काम में लावै तो अति उत्तम है और घीआ के छिलका और खुर्फा के पत्ता कूटकर गुलरोगन मिलाकर छाती और गर्दन पर लेपकरना लाभदायक है और कभी पित्तज्वर वाले को कुत्त कासा काम उत्पन्न होता है इस दशा में तुरजवीन, लौकीकेबीज की मिंगी और बादाम के तेल का हलुआ बनाकर खाना उसको नष्ट करता है और जबकि लगातार छींक आने लगै और इस के कारण से दिमाग में निर्बलता और शक्ति में निर्बलता उत्पन्न होतो उचित है कि रोगी की आंख नाक और माथा मलै और आज्ञा दें कि जोर से पुकारलें और उसकी गर्दन और हाथ पांवों को बहुत मलै मुख्यकर बनफशा के तेल से और जो बनफशा के तेल की फई यद गुनगुनी कान में डालें तो उत्तम है और नमदा के टुकडे गर्म करके गर्दन के पीछे रखना और गर्द धूआं से बचाना लाभदायक है और बहुधा ऐसा होता है कि जब पित्तज्वर में ज्वर बहुत तेज होजाता है तो अचेतता आजाती है क्योंकि पित्त आमाशय के मुखपर गिरता है और दिलको उससे कष्ट पहुचता है उस समय चाहिये कि उसी समय ठंडे पानी का मुख और छाती पर छींटा दें और गुलाब, चन्दन और कपूर सुघावें और रोगी को हवा सवारें और पेट मलें और हाथ पांव बांधदें जिससे मवाद उतर आवे और कभी इस बातकी आवश्यक्ता पड़ती है कि रोगी की नाक को कुछ देर तक बन्द करदें और हाथ उसके मुखपर रक्खें जिस से गर्मी भीतर की तरफ घुसजाय और शक्ति को उभारे और जो सिकञ्ज- बीन गर्म पानी में मिलाकर गले में डालें तो दो बातों में से एक बात होतीहै या तो मवाद आमाशय के मुख से मिलकर दस्तों के मार्ग से निकलजाता है अथवा वमन में निकलजाता है और यद्यपि यह योग्य न हो तो १० माशे,

भय है कि सरसाम उत्पन्न करै परन्तु जो भाफ पित्त की होतो तेल ठंढा पानी और दूध यह सब सिरपर काममें लाने से लाभकारी होते हैं और जब तर भाफ हो और नाक और मुखमें सुर्खी बहुत प्रगट होतो चाहिये कि नक्सीर खोलें या मवाद को पांवकी तरफ खींचे जिससे दिमाग को हानि न पहुचावे और जब पित्तज्वर में सूखे वायटे चढ़ें और अगकी मछलियों में आनेलगैं और श्वास तंग होने लगे तो चाहिये कि छाती और गर्दन पर बनफशे का तेल मोम के तेल में मिलाकर मलें और बनफशा और खितमी सूखी कूटछान कर मोम के तेल में मिलाकर काम में लावै तो अति उत्तम है और घीआ के छिलका और खुर्फा के पत्ता कूटकर गुलरोगन मिलाकर छाती और गर्दन पर लेपकरना लाभदायक है और कभी पित्तज्वर वाले को कुत्त कासा काम उत्पन्न होता है इस दशा में तुरंजबीन, लौकीकेबीज की मिंगी और बादाम के तेल का हलुआ बनाकर खाना उसको नष्ट करता है और जबकि लगातार छींक आने लगै और इस के कारण से दिमाग में निर्बलता और शक्ति में निर्बलता उत्पन्न होतो उचित है कि रोगी की आंख नाक और माथा मले और आज्ञा दें कि जोर से पुकारलें और उसकी गर्दन और हाथ पांवों को बहुत मले मुख्यकर बनफशा के तेल से और जो बनफशा के तेल की कई बंद गुनगुनी कान में डालें तो उत्तम है और नमदा के टुकड़े गर्म करके गर्दन के पीछे रखना और गर्द धूआं से बचाना लाभदायक है और बहुधा ऐसा होता है कि जब पित्तज्वर में ज्वर बहुत तेज होजाता है तो अचेतता आजाती है क्योंकि पित्त आमाशय के मुखपर गिरता है और दिलको उससे कष्ट पहुचता है उस समय चाहिये कि उसी समय ठंढे पानी का मुख और छाती पर छींटा दें और गुलाब, चन्दन और कपूर सुघावें और रोगी को हवा खवावें और पेट मलें और हाथ पांव बांधदें जिससे मवाद उतर आवे और कभी इस बातकी आवश्यक्ता पड़ती है कि रोगी की नाक को कुछ देर तक बन्द करदें और हाथ उसके मुखपर रक्खें जिस से गर्मी भीतर की तरफ घुसजाय और शक्ति को उभारे और जो सिकन्‌जबीन गर्म पानी में मिलाकर गले में डालें तो दो बातों में से एक बात होतीहै या तो मवाद आमाशय के मुख से मिलकर दस्तों के मार्ग से निकलजाता है अथवा वमन में निकलजाता है और यद्यपि यह योग्य न हो तो १० माशे,

निस्सन्देह बाबूना के काढे का भपारा दें। और हाथ पांव इस में रक्खें और हकीम जकरिया का बेटा कहता है कि जो रोगी ठंडे पानी और मेवाओं के औटे हुए अर्क के पीने की इच्छा करे तो उसको न रोकें और सर्दी और तरी पहुचाने में परिश्रम करें नहीं तो मरने का भय है और हकीम अहरन कहता है कि जो पित्तज्वर की दशा में सिकजबीन और जौ के पानी पीने की आवश्यकता हो तो आरम्भ सिकजबीन से करें और माउलजुब्न भी उसके समान है और पित्त के निकालने वाली दवा का जुलाब विशेष लाभदायक है।

❀ तीसरा भेद गिबखालसये दायरें का वर्णन ❀

इस ज्वर का कारण केवल पित्त है जो रगों के बाहर सड जाता है और इस ज्वर का प्रभाव है कि एक दिन के अन्तर से आता है परन्तु इस दशा में दो ज्वर हो तो फिर सर्वदा आता है जैसा हकीमों ने कहा है कि जब २ ज्वर इकट्ठे हो जांय तो उनका दौरा प्रति दिन होता है अथवा तीन ज्वर सयोगिक हों तो इस दशा में सर्वदा ज्वर आता है परन्तु एक दिन कम और दूसरे दिन विशेष हो जैसे शितुरुलगिब (अर्थात् वह ज्वर जिसका मवाद संयोगिक हो) आता है और उसका मवाद पित्त और कफ दायरा (पित्त ज्वर) के भेदों में से होता है और यह एक दिन के अन्तर से क्यों बढ जाता है इस का यह कारण है कि तीन ज्वर इकट्ठे हो जाते हैं एक दिन तो एक ज्वर की बारी होती है और दूसरे दिन दो ज्वरों की बारी और दो ज्वरों के इकट्ठे होने से चिन्ह अधिक होजाते हैं और इस ज्वर में और शितुरुलगिब में अन्तर चिन्हों के देखने से हो सकता है और गिब खालिस (पित्त ज्वर) के कई चिन्ह हैं प्रथम तो यह है कि जब आरम्भ होता हो तो पीठ में सर्दी उत्पन्न हो फिर कडी कपकपी उत्पन्न हो और ऐसा मालूम पडे कि सुई सी चुभती है और कपकपी जल्दी थम जाय। दूसरे यह है कि शरीर बहुत जल्दी गर्म हो जाय और इसकी गर्मी पित्त ज्वर के सिवाय सब ज्वरों से अधिक तेज हो और जब शरीर पर हाथ रक्खे तो ज्वर की तेजी से हाथ जलने लगे और जो देर तक उसी तरह रक्खे तो वहां की गर्मी कम हो जाय। तीसरे यह है कि मूत्र सुर्ख दुर्गन्धित और पतली हो और उचित है कि उस में थागमा दोष मूत्र के रोग में आवें और बहुधा एेसा ही जाता है कि पहले या तीसरे दिन मवाद के पकने का असर मूत्र में उत्पन्न करे। चौथे यह है कि बारी के आरम्भ में नाडी छोटी और निर्मल और विरुद्ध होता है और थोडी देर

निस्सन्देह बाबूना के काढे का भपारा दें। और हाथ पांव इस में रक्खें और हकीम जकरिया का बेटा कहता है कि जो रोगी ठंडे पानी और मेवाओं के औटे हुए अर्क के पीने की इच्छा करे तो उसको न रोकें और सर्दी और तरी पहुचाने में परिश्रम करें नहीं तो मरने का भय है और हकीम अहरन कहता है कि जो पित्तज्वर की दशा में सिकजबीन और जौ के पानी पीने की आवश्यकता हो तो आरम्भ सिकजबीन से करें और माउलजुब्न भी उसके समान है और पित्त के निकालने वाली दवा का जुलाब विशेष लाभदायक है।

❋ तीसरा भेद गिबखालसये दायरें का वर्णन ❋

इस ज्वर का कारण केवल पित्त है जो रगों के बाहर सड जाता है और इस ज्वर का प्रभाव है कि एक दिन के अन्तर से आता है परन्तु इस दशा में दो ज्वर हो तो फिर सर्वदा आता है जैसा हकीमों ने कहा है कि जब २ ज्वर इकट्ठे हो जांय तो उनका दौरा प्रति दिन होता है अथवा तीन ज्वर संयोगिक हों तो इस दशा में सर्वदा ज्वर आता है परन्तु एक दिन कम और दूसरे दिन विशेष हो जैसे *शितुरुलगिब (अर्थात् वह ज्वर जिसका मवाद संयोगिक हो)* आता है और उसका मवाद पित्त और कफ दायरा (पित्त ज्वर) के भेदों में से होता है और यह एक दिन के अन्तर से क्यों चढ जाता है इस का यह कारण है कि तीन ज्वर इकट्ठे हो जाते हैं एक दिन तो एक ज्वर की बारी होती है और दूसरे दिन दो ज्वरों की बारी और दो ज्वरों के इकट्ठे होने से चिन्ह अधिक होजाते हैं और इस ज्वर में और शितुरुलगिब में अन्तर चिन्हों के देखने से हो सकता है और गिब खालिस (पित्त ज्वर) के यह चिन्ह हैं प्रथम तो यह है कि जब आरम्भ होता हो तो पीठ में सर्दी उत्पन्न हो फिर कडी कपकपी उत्पन्न हो और ऐसा मालूम पडे कि सुई सी चुभती है और कपकपी जल्दी थम जाय। दूसरे यह है कि शरीर बहुत जल्दी गर्म हो जाय और इसकी गर्मी पित्त ज्वर के सिवाय सब ज्वरों से अधिक तेज हो और जब शरीर पर हाथ रक्खे तो ज्वर की तेजी से हाथ जलने लगे और जो देर तक उसी तरह रक्खे तो वहां की गर्मी कम हो जाय। तीसरे यह है कि मूत्र सुख दुर्गन्धित और पतली हो और उचित है कि उस में थोगमा दोष मूत्र के रोग में आवें और बहुधा एम ही जाता है कि पहले या तीसरे दिन मवाद के पकने का असर मूत्र में उत्पन्न करे। चौथे यह है कि बारी के आरम्भ में नाडी छोटी और निर्मल और विरुद्ध होता है और थोडी देर

कि मवाद कमहो और मवाद के पकने के उपरांत मवादको निकालना चाहिय और मवाद के निकालने में मवाद और तबियत के झुकाव की रक्षा करे और जो देखे कि तबियत अपने आप मवाद को जैसा कि चाहिये दूर करती है तो न छेड़े किन्तु जो प्रतिदिन तबियत को सरलता से एक वार तथा दो वार दस्तकी आवश्यकता होती है तो तबियत के मुलायम करने का उपाय करना कुछ आवश्यक नहीं है और नहीं तो आवश्यक है जैसा कि हकीमों ने कहा है कि जबतक शक्ति से काम चले तबतक प्रथम तबियत को नर्म न करे और जौ का घाट आदि कुछ न दें और जहां कहीं ज्वर के कारण सिरका दर्द और घबराहट हो तो हलकी दस्तावर दवाओं से या मुलायम बत्ती से तबियत का नर्म करना अति उत्तम है और मवाद के अनुसार मवाद को निकालना इस प्रकार पर होता है कि जो जी मिचलाता हो तो वमन करावे यदि कोई कार्य वर्जित न हो और वमन करना सहल हो और जो आंतों में अफरा और गुड़गुड़ाहट हो तो दस्त के लाने वाली दवाएं और जो मूत्रकी इच्छा होतीहै और मूत्र खुलकर नहीं आता तो मूत्रके लाने वाली दवा पिलावे और जो खाल पर तर भाफ प्रगट हो और पसीना अधिक न आवे तो पसीना लाने में परिश्रम करें और जो मवाद का झुकाव किसी तरफ को मालूम न हो और मवाद के निकालने की आवश्यकता हो तो दस्तावर दवाओं का देना योग्य समझें और इस ज्वर के उपाय में प्रयोजन यह है कि बारी के दिन जो चीज भोजन के समान हो जैसे जौ का घाट आदि कुछ न दें और खुरफा के बीज का पानी और सिकञ्जबीन तथा इमली का पानी और तरबूज आदि के पानी पर संतोष करे और जो अधिक बल-वान् हो तो थोड़ा बंसलोचन पीसकर इन चीजों में बढ़ावें और जब जाड़ा और कपकपी आरम्भ हो तो सिकञ्जबीन गर्म पानी में मिलाकर दें और कदाचित् वमन आजाय और पित्त का मवाद निकल जाय और यद्यपि वमन न आवे परन्तु जी मिचलाने की शक्ति से ज्वर का मवाद बह निकले । अभि-प्राय यह है कि प्रत्येक दशा में कपकपी को जल्द कम करे जबकि ज्वर उतर जाय तो पांव गर्म पानी में रक्खे और मलें जिससे ज्वर की गर्मी या शेष मवाद सिर में से खिंच आवे और उस समय में सिकञ्जबीन ही लाभदायक है और जो सिकञ्जबीन पांचवीं और छठी बारी के दिन दें वह चिरायी होनी

कि मवाद कमहो और मवाद के पकने के उपरांत मवादको निकालना चाहिए और मवाद के निकालने में मवाद और तबियत के झुकाव की रक्षा करे और जो देखे कि तबियत अपने आप मवाद को जैसा कि चाहिये दूर करती है तो न छेडें किन्तु जो प्रतिदिन तबियत को सरलता से एक वार तथा दो वार दस्तकी आवश्यकता होती है तो तबियत के मुलायम करने का उपाय करना कुछ आवश्यक नहीं है और नहीं तो आवश्यक है जैसा कि हकीमों ने कहा है कि जबतक शक्ति से काम चले तबतक प्रथम तबियत को नर्म न करे और जौ का घाट आदि कुछ न दें और जहां कहीं ज्वर के कारण सिरका दर्द और घबराहट हो तो हलकी दस्तावर दवाओं से या मुलायम बत्ती से तबियत का नर्म करना अति उत्तम है और मवाद के अनुसार मवाद को निकालना इस प्रकार पर होता है कि जो जी मिचलाता हो तो वमन करावे यदि कोई कार्य वर्जित न हो और वमन करना सहल हो और जो आंतों में अफरा और गुडगुडाहट हो तो दस्त के लाने वाली दवायें और जो मूत्रकी इच्छा होतीहै और मूत्र खुलकर नहीं आता तो मूत्रके लाने वाली दवा पिलावे और जो खाल पर तर भाफ प्रगट हो और पसीना अधिक न आवे तो पसीना लाने में परिश्रम करें और जो मवाद का झुकाव किसी तरफ को मालूम न हो और मवाद के निकालने की आवश्यकता हो तो दस्तावर दवाओं का देना योग्य समझें और इस ज्वर के उपाय में प्रयोजन यह है कि बारी के दिन जो चीज भोजन के समान हो जैसे जौ का घाट आदि कुछ न दें और खुरफा के बीज का पानी और सिकञ्जबीन तथा इमली का पानी और तरबूज आदि के पानी पर संतोष करे और जो अधिक बलवान् हो तो थोडा बसलोचन पीसकर इन चीजों में बढावें और जब जाडा और कपकपी आरम्भ हो तो सिकञ्जबीन गर्म पानी में मिलाकर दें और कदाचित् वमन आजाय और पित्त का मवाद निकल जाय और यद्यपि वमन न आवे परन्तु जी मिचलाने की शक्ति से ज्वर का मवाद बह निकले। अभिप्राय यह है कि प्रत्येक दशा में कपकपी को जल्द कम करे जबकि ज्वर उतर जाय तो पांव गर्म पानी में रक्खे और मलें जिससे ज्वर की गर्मी या शेष मवाद सिर में से खिंच आवे और उस समय में सिकञ्जबीन ही लाभदायक है और जो सिकञ्जबीन पांचवीं और छठी [illegible] के दिन दे वह चिकुरी होनी

निकलै और कोई चीज ग्रहण न करे। कोई २ हकीमों ने कहा है कि जिस दवा में गर्मी और कठोरता अर्थात् उसमें खुरखुरापन हो वहां उससे बचना योग्य है जिससे पित्तज्वर न होजाय और सरसाम उत्पन्न करे और अमलतास का गूदा इमली के साथ या कासनी के पानी में घोलकरके या जौ के दलिया के पानी में मिलाकर देना मलके निकालने में उत्तम है और थोड़ा बादाम का तेल और गुलरोगन भी बढाने तो आतों के लिये अति उत्तम है और गर्म ज्वरों में उत्तम यह है कि तुरंजबीन न दे और जो आवश्यकता पड़े तो बिना इमली और आलू के पानी के न दे और जो तुरंजबीन के बदले शीरखिस्त डालें तो बड़ी सावधानी की बात है क्योंकि तुरंजबीन भी लम्बी घीआ की तरह गर्म आमाशय में पित्त होजाती है जो खटाई से उसका न सम्भाले और हकीम मुहम्मद जकरिया कहता है कि जो शक्ति सहायक हो तो ७० माशे छिली हुई औटे हुए पानी में एक रात दिन तर रक्खें फिर मल कर और छानकर ७० माशे तुरंजबीन इसमें मिलाकर आराम के दिन प्रात कालके समय देना अति उत्तम है और सावधानी की बात है कि थोड़ा सा आलू का पानी अथवा इमली का पानी भी डालदें जैसा कि हम उसका कारण वर्णन करचुके हैं और जो शीरखिश्त उसके बदले में दें तो अति उत्तम है और जो बोहरान के उपरान्त कुछ गर्मी बाकी रहे तो सिकंजबीन, कासनी का शीरा, ककड़ी, खीराके बीज के शीरा के साथ दें और कुपथ्य न करे जबतक कि गर्मी बिल्कुल जाती रहे और नष्ट होनेके उपरान्त और तीन दिन तक उसी प्रकार पर देखते रहे फिर धीरे २ भोजन को बढाता २ स्वभाव पर आजाय और बाकी उपाय जैसे मुख की खुश्की और प्यास आदि का जाता रहना पुहर्रिकामें ब्यौरेवार वर्णन किया गया है उसको आवश्यकतानुसार वहां देख लेवे।

चौथा भेद गिब दायरा गैरखालिस का वर्णन।

यह ज्वर उस पित्त से उत्पन्न होता है जिस में तरी मिलीहो और इतनी मिल जाय कि दोनों में अन्तर न मालूम पड़े इस ज्वरके कई चिन्ह होते हैं एकतो यह है कि उसमें जाड़ा और कपकपी गिब खालिस के जाड़े से बहुत देर तक रहे और बहुधा ऐसा भी होता है कि कपकपी बहुत नहीं आती और गर्मी बहुत तेज नहीं होती और खालिस (ज्वर जिसके उत्पन्न होने के कारण निर्वल पित्त हो) की गर्मी से बहुत कम होता है दूसरे यह है कि बारी के समय

निकलै और कोई चीज ग्रहण न करे। कोई २ हकीमों ने कहा है कि जिस दवा में गर्मी और कठोरता अर्थात् उसमें खुरखुरापन हो वहां उससे बचना योग्य है जिससे पित्तज्वर न होजाय और सरसाम उत्पन्न करे और अमलतास का गूदा इमली के साथ या कासनी के पानी में घोलकरके या जौ के दलिया के पानी में मिलाकर देना मलके निकालने में उत्तम है और थोड़ा बादाम का तेल और गुलरोगन भी बढ़ावे तो आंतों के लिये अति उत्तम है और गर्म ज्वरों में उत्तम यह है कि तुरंजबीन न दें और जो आवश्यकता पड़े तो बिना इमली और आलू के पानी के न दें और जो तुरंजबीन के बदले शीरखिस्त डालें तो बड़ी सावधानी की बात है क्योंकि तुरंजबीन भी लम्बी घीआ की तरह गर्म आमाशय में पित्त होजाती है जो खटाई से उसका न सम्भालें और हकीम मुहम्मद जरिकया कहता है कि जो शक्ति सहायक हो तो ७० माशे छिल्ली हुई औटे हुए पानी में एक रात दिन तर रक्खें फिर मल कर और छानकर ७० माशे तुरंजबीन इसमें मिलाकर आराम के दिन प्रातःकालके समय देना अति उत्तम है और सावधानी की बात है कि थोड़ा सा आलू का पानी अथवा इमली का पानी भी डालदें जैसा कि हम उसका कारण वर्णन करचुके हैं और जो शीरखिश्त उसके बदले में दें तो अति उत्तम है और जो बौहरान के उपरान्त कुछ गर्मी बाकी रहै तो सिकंजबीन, कासनी का शीरा, ककड़ी, खीराके बीज के शीरा के साथ दें और कुपथ्य न करे जबतक कि गर्मी बिल्कुल जाती रहै और नष्ट होनेके उपरान्त और तीन दिन तक उसी प्रकार पर देखते रहै फिर धीरे २ भोजन को बढ़ाता २ स्वभाव पर आजाय और बाकी उपाय जैसे मुख की खुश्की और प्यास आदि का जाता रहना मुहर्रकामें ब्यौरेवार वर्णन किया गया है उसको आवश्यकतानुसार वहां देख लेवे।

चौथा भेद गिब दायरा गैरखालिस का वर्णन।

यह ज्वर उस पित्त से उत्पन्न होता है जिस में तरी मिलीहो और इतनी मिल जाय कि दोनों में अन्तर न मालूम पड़े इस ज्वरके कई चिह्न होते हैं एकतो यह है कि उसमें जाड़ा और कपकपी गिब खालिसा के जाड़े से बहुत देर तक रहै और बहुधा ऐसा भी होता है कि कपकपी बहुत नहीं आती और गर्मी बहुत तेज नहीं होती और खालिसा (ज्वर जिसके उत्पन्न होने के कारण निर्बल पित्त हो) की गर्मी से बहुत कम होता है दूसरे यह है कि बारी के समय

फस्त के खोलने को वर्जित हो तो तबियत के मुलायम करने के सिवाय और कोई उपाय नहीं और जब तक कि मवाद के पकने का असर प्रगट न हो तबतक बलवान दस्तावर दवा न दें किन्तु जो तरी विशेष हो तो हलकी दस्तावर दवा देना भी योग्य नहीं जब तक कि पकाव प्रगट न हो परन्तु उस दशा में कि दोष जगह बदलने लगे और घबराहट उत्पन्न करे इस दशा में लाचार दस्तावर दवा देने की आवश्यकता पड़ती है और जानलें कि इस ज्वर में ठंडे शर्बत और ठंडे भोजनों के देने में बहुत जल्दी न करे किंतु चाहिये कि मवाद के पकाव और दस्त और मूत्र के लाने और वमन और रोमांचों के खोलने और पसीना लाने और मवाद के निकालने में अधिक परिश्रम करे मुख्यकर जब तरी अधिक हो या पित्त के समान हो और इस विषय में उत्तम उपाय यह है कि दो तीन दिन के उपरान्त मुख्यकर बारी के आरम्भ में वमन करावें और जो मवाद कि अधिक हो उसका निकालना अधिक आवश्यक है और इसी प्रकार गर्मी की रक्षा और मवाद के प[illegible]करने की सहायता और दस्तावर दवाओं का उपाय आवश्यकता के अनुसार [illegible] करसकते हैं जैसे जो कभी उचित हो तो जो कुछ कि खालसा में है लाभदायक [illegible] होगा उसे आवश्यकतानुसार काम में लावे और सादा सिकंजबीन और ठंडी [illegible] नी लाभदायक है और जो तरी के मुलायम करने और मवाद के पकाने की आवश्यक[illegible] जो के दलिया में चना और सौंफ के बीज, सातर, जूफा, पोदीना और बालछड़ जो कुछ उचित हो औटाकर दे और जो जो और चना बराबर लेकर जौ का दलिया बनावें तो उत्तम है और सिकंजबीन बिज़ूरी रुचि अनुसार तथा गर्म अथवा गुलकन्द या सिकंजबीन मिलाकर और सौंफका पानी गुलकन्द मिलाकर मवाद के पकाने के लिये मुख्य है और जो शहद का बनाहुआ गुलकन्द सौंफ के काढ़े में या उसके अर्क में मलकर छानकर और सिर्का मिलाकर सिकंजबीन बनावे तो मवाद के मुलायम करने और पकाने में जल्दी गुणकरता है और जहां कहीं कि तरी विशेष हो और जहां तरी बराबर और कम हो तो चाहिये कि कन्दका बना गुलकन्द गर्म पानी में मले और थोड़े से सौंफ के बीज उस में औटा करके छानकर और सिर्का मिलाकर सिकंजबीन बनालें और जब मवाद के पकावका असर प्रगट हो और तबियत में अजीर्ण हो तो धीरे से जुल्लाब दें और यही सब से उत्तम यह जुलाब है—कि गुलकन्द सिकंजबीन में मिलावें और थोड़ा अमलतासका गूदा उसमें घोलकर दें और उचित है कि थोड़ी तुरंज भी उस में

फस्त के खोलने को वर्जित हो तो तबियत के मुलायम करने के सिवाय और कोई उपाय नहीं और जब तक कि मवाद के पकने का असर प्रगट न हो तबतक बलवान दस्तावर दवा न दें किंतु जो तरी विशेष हो तो हलकी दस्तावर दवा देना भी योग्य नहीं जब तक कि पकाव प्रगट न हो परन्तु उस दशा में कि दोष जगह बदलने लगे और घबराहट उत्पन्न करै इस दशा में लाचार दस्तावर दवा देने की आवश्यकता पड़ती है और जानलें कि इस ज्वर में ठंडे शर्बत और ठंडे भोजनों के देने में बहुत जल्दी न करे किंतु चाहिये कि मवाद के पकाव और दस्त और मूत्र के लाने और वमन और रोमांचों के खोलने और पसीना लाने और मवाद के निकालने में अधिक परिश्रम करै मुख्यकर जब तरी अधिक हो या पित्त के समान हो और इस विषय में उत्तम उपाय यह है कि दो तीन दिन के उपरान्त मुख्यकर बारी के आरम्भ में वमन करावें और जो मवाद कि अधिक हो उसका निकालना अधिक आवश्यक है और इसी प्रकार गर्मी की रक्षा और मवाद के पकाने की सहायता और दस्तावर दवाओं का उपाय आवश्यकता के अनुसार ... कर सकते हैं जैसे जो कभी उचित हो तो जो कुछ कि खालसा में है लाभदायक ... होगा वो आवश्यकतानुसार काम में लावे और सादा सिकञ्जबीन और ठंडी ... भी लाभदायक है और जो तरी के मुलायम करने और मवाद के पकाने की आवश्यकता हो तो जौ के दलिया में चना और सौंफ के बीज, सातर, जूफा, पोदीना और बालछड़ जो कुछ उचित हो औटाकर दे और जो जौ और चना बराबर लेकर जौ का दलिया बनावें तो उत्तम है और सिकञ्जबीन बिज़ूरी रुचि अनुसार तथा गर्म अथवा गुलकन्द या सिकञ्जबीन मिलाकर और सौंफ का पानी गुलकन्द मिलाकर मवाद के पकाने के लिये मुख्य है और जो शहद का बनाहुआ गुलकन्द सौंफ के काढ़े में या उसके अर्क में मलकर छानकर और मिश्री मिलाकर सिकञ्जबीन बनावै तो मवाद के मुलायम करने और पकाने में जल्दी गुणकरता है और जहां यहां कि तरी विशेष हो और जहां तरी बराबर और कम हो तो चाहिये कि कन्दका चना गुलकन्द गर्म पानी में मले और थोड़े से सौंफ के बीज उस में औटा करके छानकर और मिश्री मिलाकर सिकञ्जबीन बनालें और जब मवाद के पकाव का असर प्रगट हो और तबियत में अजीर्ण हो तो धीरे से जुल्लाब दें और यहां सब से उत्तम यह जुलाब है कि गुलकन्द सिकञ्जबीन में मिलावें और थोड़ा अमलतास का गूदा उसमें घोलकर दें और उचित है कि थोड़ी मुनक्का भी उस में

बच रहे तो साफ करे और हर एक दिन प्रातःकाल ४० माशे, लेकर ३ माशे, बरा मिला कर देवें जो ३॥ माशे, एलवा भी उसके साथ दें तो विशेष बलवान् होता है (अमलतास की माजून के बनाने की विधि) तुरुंद सफेद १४० माशे, बनफशा १०५ माशे, नमक हिन्दी, मुलहटी प्रत्येक २४ माशे, साफ, रूमी सौंफ, मस्तगी प्रत्येक १७ माशे, सकमूनिया ३५ माशे, अमलतास का सत्त ४५० माशे, बादाम का तेल १४० माशे, कन्द और शहद प्रत्येक ४५० माशे, अमलताश के सत्त को शहद और कन्द मिलाकर शेष दवा कूटछान कर बादाम के तेल से चिकना करें और उस में मिलावें इस की मात्रा २२॥ माशे, से ३१॥ माशे, तक है ॥

ॐ कुर्स गुल के बनाने की विधि ॐ

जहां कहीं कि पित्त तरी से अधिक हो वहां यह टिकिया लाभ कारी है गुलाब के फूल ३५ माशे, बालछड़ १०॥ माशे, काशनी के बीज, ककड़ी का गूदा, बादरज बोया प्रत्येक १४ माशे, मुलहटी १७॥ माशे, कूट छान-कर टिकिया बनावें मात्रा ४॥ माशे, है (दूसरा नुसखा) जो पित्त और कफ समान हो तो लाभकारी है गुलाब के फूल ३५ माशे, बालछड़ ७ माशे, काशनी के बीज १७॥ माशे, मस्तगी ३॥ माशे इसकी मात्रा ४॥ माशे है (सूचना) जितना अन्त का समय समीप होने लगे तो भोजन अधिक हलके दें और आराम के दिन शोरबा पक्षी अगर तीतर और बटेर और परेलू मुर्गी के बच्चे देने चाहिये और डोलना फिरना परिश्रम करना योग्य नहीं है और जो उचित हो तो बारी के दिन जौका दलिया और भोजन कुछ न दे और सिकंजबीन पर सतोष करें और जो उत्पन्न न होता ज्वर के अन्त में जौका पानी बूरा मिलाकर भुसीका पानी बादाम न होतो ज्वरके अन्तमें जौका पानी बूरा मिलाकर मुर्गी का पानी, बादाम का तेल और बूरा मिलाकर अथवा थोड़ा सा भुना हुआ गेहूं का चून ठंडे पानी में और बूरा मिलाकर दें सकते हैं और सर्गिरी रोटी का टुकड़ा उचित शर्बत के साथ देना मेरे समीप भुने चून से उत्तम है और प्रगट हो कि गिब और गालबा कभी छः महीने तक बाकी रहती है चाहे कितनाही अच्छा इलाज हो और इसी तरह उस में तिल्ली बढ़ जाती है और भर भराना और सुस्ती उत्पन्न होती है ॥

ॐ पांचवां भेद शितरुल गिब का वर्णन ॐ

यह ज्वर कफ और पित्त के संयोग से उत्पन्न होता है परन्तु प्रत्येक के मिलने का स्थान अलग अलग होता है और इन में अन्तर प्रगट होता है और

चच रहै तो साफ करे और हर एक दिन प्रात काल ४० माशे, लेकर ३ माशे, वरा मिला कर दें जो ३॥ माशे, एलवा भी उसके साथ दें तो विशेष वलवान् होता है (अमलतास की माजून के बनाने की विधि) तुरंद सफेद १४० माशे, वनफ़सा १०५ माशे, नमक हिन्दी, मुलहटी प्रत्येक २४ माशे, साफ़, रूमी सौंफ, मस्तगी प्रत्येक १७ माशे, सकमूनिया ३५ माशे, अमलतास का सत्त ४५० माशे, बादाम का तेल १४० माशे, कन्द और शहद प्रत्येक ४५० माशे, अमलताश के सत्त को शहद और कन्द मिलाकर शेष दवा कूटछान कर बादाम के तेल से चिकना करे और उस में मिलावें इस की मात्रा २२॥ माशे, से ३१॥ माशे, तक है ॥

कुर्स गुल के बनाने की विधि

जहां कहीं कि पित्त तरी से अधिक हो वहां यह टिकिया लाभ कारी है गुलाब के फूल ३५ माशे, वालछड १०॥ माशे, काशनी के बीज, ककड़ी का गूदा, वादरज वोया प्रत्येक १४ माशे, मुलहटी १७॥ माशे, कूट छान-कर टिकिया बनावें मात्रा ४॥ माशे, है (दूसरा नुसखा) जो पित्त और कफ समान हो तो लाभकारी है गुलाब के फूल ३५ माशे, वालछड ७ माशे, कासनी के बीज १७॥ माशे, मस्तगी ३॥ माशे इसकी मात्रा ४॥ माशे है (सूचना) जितना अन्त का समय समीप होने लगे तो भोजन अधिक हलके दें और आराम के दिन शोरवा पक्षी अर्थात् तीतर और बटेर और घरेलू मुर्गी के बच्चे देने चाहिये और डोलना फिरना परिश्रम करना योग्य नहीं है और जो उचित हो तो वारी के दिन जौका दलिया और भोजन कुछ न दे और गिज्जबीन पर संतोष करें और जो उत्पन्न न होता ज्वर के अन्त में जौका पानी बूरा मिलाकर भुसीका पानी बादाम न होतो ज्वरके अन्त में जौका पानी बूरा मिलाकर भुसी का पानी, बादाम का तेल और बूरा मिलाकर अथवा थोड़ा सा भुना हुआ गेहूं का चून ठंडे पानी में और बूरा मिलाकर दे सकते हैं और सागिर्दी रोटी का टुकड़ा उचित शर्वत के साथ देना मेरे समीप भुने फूल में उत्तम है और प्रगट हो कि गिर और गालमा कभी छ महीने तक बारी रहती है चाहे कि तनाही अच्छा इलाज हो और इसी तरह उस में तिल्ली बढ जाती है और भर भराना और सुस्ती उत्पन्न होती है ॥

पांचवा भेद शितरुल गिब का वर्णन

यह ज्वर कफ और पित्त के संयोग से उत्पन्न होता है परन्तु प्रत्येक के प्रगट जाने का स्थान अलग अलग होता है और इन में अन्तर प्रगट होता है और

से कफ की खारी बहुत हलकी होजाती है और बौहरान जल्द होता है अभिप्राय यह है कि संयोगिक ज्वर हर दशा में बहुत कड़े हैं और देर में अच्छे होते हैं और कभी शितुरुलगिब नौ महीने तक या अधिक रहता है कदाचित् हाद्द (वह ज्वर जिसमें विशेष तेजीहो और समय कमहो) अथवा दिक उत्पन्न होजाय जानना चाहिये कि जो इस ज्वर में कफ की अधिकता है तो रोग का समय बढ़जाता है जैसा कि किताब के बनाने वाले ने वर्णन किया है और जो पित्त की अधिकता के साथ खारी कफ की तरफ झुका हो तो हुम्मय हाद्द (अधिक तीव्र ज्वर) अथवा दिककी तरफ यह रोग लौटजाय और शितुरुल गिब के नाम रखने के कारण में विरुद्धता है और कोई कहता है कि जब पित्त और कफ इकट्ठे होकर एक दूसरे का साम्हना करें इस लिये जब कि कफ वालीदायमा और गिबवायरा अन्तर के साथ इकट्ठे हो तो एक की शक्ति दूसरी के साथ समान होगी इस कारण से थोड़ा सा पित्त बहुत से पित्त का साम्हना करता है फिर यह अर्थ होंगे कि वह ज्वर शितुरुलगिब खालसा है अर्थात् उसका आधा है और किसी २ ने शब्द ' शत्तर ' का आधे क अर्थ में कहा है (इलाज) दवा और भोजन का वही नियम है जो गैर खालसा में वर्णन हुआ है और उसी जगह समय की रक्षा और दोषों की अधिकता का ध्यान रखना वर्णन किया गया है और योग्य है कि गर्मी के ठहर जाने से मवाद के निकलने में अधिक परिश्रम करें और यह प्रगट है कि मवाद, दस्त वमन, मूत्र, अथवा पसीना के द्वारा निकाला हो परन्तु जब तक कि मवाद का पकना प्रगट न हो दस्तावर दवा से मवाद को न निकाले परन्तु जब कि तबियत में अजीर्ण हो तो मवाद के नर्म करने वाली दवा देसक्ते हैं यद्यपि मवाद का पकना प्रगट न हो तो तबियत के नर्म करने के लिये इश्क पेचा का पानी विशेष लाभदायक है और कफ अधिक हो तो गुलकन्द के साथ दे और जो पित्त अधिक हो तो तुरञ्जबीन या शीरखिश्त के साथ दें और जो दोनों समान हों तो अमलतास का गूदा और इमली का पानी और थोड़ासा तुरंज मिलाकर दें और पसीना और भोजन और मवाद का पकना और दस्तों के आने और मूत्र के लाने का वही उपाय है कि जो गैर खालसा में वर्णन हुआ है और हकीम जालीनूस कहता है कि जौ के पानी में थोड़ीसी काली मिर्च मिलाकर देना इस ज्वर में लाभदायक है मुख्यकर जो कफ अधिक हो तो फुर्सगुल कि जो इस ज्वर में लाभ करता है मुख्यकर जो पित्त अधिक हो तो

से कफ की बारी बहुत हलकी होजाती है और बोहरान जल्द होता है अभि- प्राय यह है कि संयोगिक ज्वर हर दशा में बहुत कड़े हैं और देर में अच्छे होते हैं और कभी शितुरुलगिब नौ महीने तक या अधिक रहता है यदाचित् हाद्द (वह ज्वर जिसमें विशेष तेजीहो और समय कमहो) अथवा दिक उत्पन्न होजाय जानना चाहिये कि जो इस ज्वर में कफ की अधिकता है तो रोग का समय बढ़जाता है जैसा कि किताब के बनाने वाले ने वर्णन किया है और जो पित्त की अधिकता के साथ बारी कफ की तरफ झुका हो तो हुम्मा हाद्द (अधिक तीव्र ज्वर) अथवा दिककी तरफ यह रोग लौटजाय और शितुरुल गिब के नाम रखने के कारण में विरुद्धता है और कोई कहता है कि जब पित्त और कफ इकट्ठ होकर एक दूसरे का साम्हना करें इस लिये जब कि कफ वालीदायमा और गिबवायरा अन्तर के साथ इकट्ठे हों तो एक की शक्ति दू- सरी के साथ समान होगी इस कारण से थोड़ा सा पित्त बहुत से पित्त का साम्हना करता है फिर यह अर्थ होंगे कि वह ज्वर शितुरुलगिब खालसा है अर्थात् उसका आधा है और किसी २ ने शब्द ' शत्तर ' का आधे के अर्थ में कहा है (इलाज) दवा और भोजन का वही नियम है जो गैर खालसा में वर्णन हुआ है और उसी जगह समय की रक्षा और दोषों की अधिकता का ध्यान रखना वर्णन किया गया है और योग्य है कि गर्मी के ठहर जाने से मवाद के निकलने में अधिक परिश्रम करें और यह प्रगट है कि मवाद, दस्त वमन, मूत्र, अथवा पसीना के द्वारा निकाला हो परन्तु जब तक कि मवाद का पकना प्रगट न हो दस्तावर दवा से मवाद को न निकाले परन्तु जब कि तबि- यत में अजीर्ण हो तो मवाद के नर्म करने वाली दवा देसक्ते हैं यद्यपि मवाद का पकना प्रगट न हो तो तबियत के नर्म करने के लिये इस्क पेचा का पानी विशेष लाभदायक है और कफ अधिक हो तो गुलकन्द के साथ दे और जो पित्त अधिक हो तो तुरञ्जबीन या शीरखिश्त के साथ दें और जो दानों स- मान हों तो अमलतास का गूदा और इमली का पानी और थोड़ासा तुरंद मिलाकर दें और पसीना और भोजन और मवाद का पकना और दस्तों के आने और मल के लाने का वही उपाय है कि जो गैर खालसा में वर्णन हुआ है और हकीम जालीनूस कहता है कि जो के पानी में थोड़ासी काली मिर्च मिलाकर देना इस ज्वर में लाभदायक है मुख्यकर जो कफ अधिक हो और दुर्मगुल कि जो इस ज्वर में लाभ करता है मुख्यकर जो पित्त अधिक हो तो

की वारी और दो गिव (ज्वरों) के इकठे होने से उस दिन ज्वरकी अधिकता होती है जैसा कि गिव में वर्णन किया है और जानना चाहिये कि गैर खालसा और शिवुरुल गिव के लक्षण और इलाज आदि सव वार्तों में समान हैं।

तीसरा भेद, अयोगिक कफज ज्वरों का वर्णन।

इस कारण से कि कफ कभी रगों के भीतर और कभी वाहर सडजाता है हम उसको दो भेदों में वर्णन करते हैं पहला यह है कि कफ रगों के वाहर सडजाय जैसे आमाशय, दिमाग और फेंफडे आदि अगों में जौनसा अग कि खाली हो उसको नायवा और मवाजवा कहते है क्योंकि इसकी वारी प्रति दिन होती है और कफ वाले ज्वर के कई चिन्ह हैं एक तो यह है कि मूत्र पतला सफेद और पानीसा हो परतु रोग के अत में लाल और तेज होजाता है दूसरे यह है कि नाडी निर्वल हलकी विरुद्ध हो और अन्तमें लगातार और अधिक विरुद्ध होजाय। तीसरे यह है कि प्यास न हो परतु जव कि कफ खारी हो तव प्यास हो क्योंकि प्यास उसमें योग्य है परतु पित्तकी प्यासके समान नहीं होसकी चौथे यह कि ज्वरके आरम्भमें बहुधा अचेतता होती है क्योंकि कफ वाला ज्वर किसी दशा में आमाशय की निर्वलता से रहित नहीं होता यही कारण है कि इसमें भोजन की रुचि नष्ट होजाती है किसी २ हकीम ने कहा है कि आमाशयकी निर्वलता इस ज्वर का योग्य प्रभाव है जैसा कि चौथैया में तिल्ली और शिर का दर्द होता है पांचवें यह है कि शरीर का रग ऐसा होजाय कि जैसे सीसे का होता है और मुख भरभराया हुआ हो और शरीर ढीला होजाय और बहुधा पसली में अफरा होता है और तिल्ली भी वढजाती है। छटे यह है कि मुख तर हो और कडवा न हो और मल नर्म और पतला आवे और कफ का वमन वा दस्त उत्पन्न हो। सातवे पसीना बहुत कम आवे और जो पसीना आवे तो कभी २ तर भाफ स्वालपर मालूम हो जैसे पसीना आनेवाला है और यह पसीनाकी न्यूनता आरम्भमें ही होती है और जव मवाद पक कर मुलायम होजाता है तो वहुत आता है। आठवें यहहै कि इसकी गर्मी पित्तके समान नहीं होती और इसकी वारी अठारह घटेसे अधिक होती है और आराम छ घटेमें होता है और यह ज्वर यद्यपि छूटजाता है परन्तु [illegible] अमर थोड़ [illegible] रहता है यहां तक कि फिर वढजाता है और [illegible] २ तर हो [illegible] हीनी रहा करता है। नवें यहहै कि जाडे और [illegible] आरम्भमें [illegible] प्रकार का कफ होता उसीके अनुसार जाड़ा [illegible] भी [illegible]

की वारी और दो गिब (ज्वरों) के इकट्ठे होने से उस दिन ज्वरकी अधिकता होती है जैसा कि गिब में वर्णन किया है और जानना चाहिये कि गैर खालसा और शितुरुल गिब के लक्षण और इलाज आदि सब बातों मेंसमानहै।

तीसरा भेद, अयोगिक कफज ज्वरों का वर्णन।

इस कारण से कि कफ कभी रगों के भीतर और कभी बाहर सड़जाता है हम उसको दो भेदों में वर्णन करते हैं पहला यह है कि कफ रगों के बाहर सड़जाय जैसे आमाशय, दिमाग और फेफड़े आदि अंगों में जौनसा अंग खिलाली हो उसको नायबा और मवाजबा कहते है क्योंकि इसकी वारी प्रति दिन होती हैं और कफ वाले ज्वर के कई चिन्हहैं एक तो यह है कि मूत्र पतला सफेद और पानीसा हो परन्तु रोग के अंत में लाल और तेज होजाताहै दूसरेयह है कि नाड़ी निर्बल हलकी विरुद्ध हो और अन्तमें लगातार और अधिक विरुद्ध होजाय, तीसरे यह है कि प्यास न हो परन्तु जब कि कफ खारी हो तब प्यास हो क्योंकि प्यास उसमें योग्य हैं परन्तु पित्तकी प्यासकेसमान नहीं होसकी चौथे यह कि ज्वरके आरम्भमें बहुधा अचेतता होती है क्योंकि कफ वाला ज्वर किसी दशा में आमाशय की निर्बलता से रहित नहीं होता यही कारण है कि इसमें भोजन की रुचि नष्ट होजाती है किसी २ हकीम ने कहा है कि आमाशयकी निर्बलता इस ज्वर का योग्य प्रभाव है जैसा कि चौथैया यों तिल्ली और शिर का दर्द होता है पांचवें यह है कि शरीर का रंग ऐसा होजाय कि जैसे सीसे का होता है और मुख भरभराया हुआ हो और शरीर ढीला होजाय और बहुधा पसली में अफरा होता है और तिल्ली भी बढ़जाती है। छटे यह है कि मुख तर हो और कड़वा न हो और मल नर्म और पतला आवे और कफ का वमन वा दस्त उत्पन्न हो। सातवें पसीना बहुत कम आवे और जो पसीना आवे तो कभी २ तर भाफ खालपर मालूमहो जैसे पसीना आनेवालाहै और यह पसीनाकी न्यूनता आरम्भमें ही होतीहै और जब मवाद पक कर मुन्तहमहोजाताहै तो बहुत आताहै। आठवें यहहै कि उसकी गर्मी पित्तके समान नहीं होती और उसकी वारी अठारह घंटेसे अधिक होतीहै और आराम छः घंटेमें होताहै और यह ज्वर यद्यपि छूटजाताहै परन्तु [illegible] असर थोड़ा [illegible] रहता है यहां तक कि फिर चढ़जाता है और [illegible] २ तर हो [illegible] ढीली रहा करता है। नवें यहहै कि जाड़े और [illegible] आरम्भमें [illegible] प्रकार का कफ होगा उसीके अनुसार जाड़ा [illegible] भी [illegible]।

पुष्टिताके लिये गुलकन्द में थोडी रूमीमोंफ मिलाकर खाना और पोदीना और मस्तगी चबाना और मुकका लेप आमाशयके मुखपर करना लाभदायकहै और जहां कहीं वमन अपने आप आतीहो तो उसको कभी न रोकना चाहिये मुख्य कर आरम्भ में परन्तु जब कि वमनकी अधिकता से निर्बलताका भयहो या खुश्की उत्पन्नहो और जब उसको बंद करना चाहे तो शर्बत पोदीना और विहीकी शराब योग्य है और आरम्भ में गुलकन्द और सिकञ्जबीन के सिवाय तबियतको मुलायम करने के लिये और कुछ योग्य नहीं परन्तु जब शक्ति बलवान और तबियतमें अजीर्णहो और सात दिन बीतजांय तो हर रात में दवा तुर्बुद देना अधिक लाभदायक है यद्यपि मवादका पकना प्रगट नहो और जिस रातमें दवाउत्तुर्बुद देना चाहिये कि उसके प्रात काल १७॥ मासे गुलकन्द खवावें और उसके उपरांत शहदकी बनी सिकञ्जबीन पिलावे और जो तबियत को प्रतिदिन दोबार सरलतासे अधोवायु निकलती हो तो यह दवा नहीं दसके जो उपाय कि शुतुरुलगिबमें वर्णन किया है उसपर अमल करे और जब तक १४ दिन न बीतजांय सिकञ्जबीन बिज़री और टिम्पिया न देना चाहिये (लाभ) जो इस ज्वरमें मूत्र रंगीन और गाढा हो और कोई कार्य्य वर्जित नहो तो फस्द खोलें और जिस प्रकार का कफ हो उसीके अनुसार दवा और भोजन ग्रहण करे जैसे जो खारी कफज्वरका मवाद है तो गर्म चीजें नदें किन्तु ठंडी दवाओंमें मिलाकरदें जैसे सर्दी बढी है क्योंकि खारी कफ पित्त के समान होता है और मीठा कफ हो तो ऐसी चीजेंदें कि गर्मी और नर्मी में समान हों जैसे गुल्कन्द सादा सिकञ्जबीन म मिलाकर और उसके समान देवे और जो कफ खट्टा या सफेद काचरा सा पिघला हो तो विशेष बलवान और गर्म और नर्म करनेवाली चीजें दें जैसे फलाफली माजून, और कम्मूनी आदिद और दस्तों और मूत्रके लानमें भी यही उपाय याद रक्खें । ऐसी दवाके बनानेकी विधि– जो कफ खून और पित्तके संयोगिक ज्वरोंको लाभदायक है । गिलोय, नीम, वंशलोचन, इलायची छोटीके दाने प्रत्येक आधा तोला मिश्री सफेद १॥ तोला इसकी मात्रा ४ मासे से ६ मासे तक देनी चाहिये । जानना चाहिये कि गिलोय मुख्य कर तर जो नीमके पेडपर लिपटती है हरप्रकारके ज्वरोंको लाभकारी है यहां तक कि तपेदिक्में भी इससे अधिक गुणकारी दवा नहीं किन्तु परीक्षाकी हुई है और दस्त और बिनादस्त दोनों दशाओं में देसके हैं और खांसी पर भी गुणकारी है और उसका सत बहुत हलका और शीघ्र गुण करता है और

पुष्टिताके लिये गुलकन्द में थोडी रूमीमोंफ मिलाकर खाना और पोदीना और मस्तगी चबाना और सुकका लेप आमाशयके मुखपर करना लाभदायकहै और जहां कहीं वमन अपने आप आतीहो तो उसको कभी न रोकना चाहिये मुख्य कर आरम्भ में परन्तु जब कि वमनकी अधिकता से निर्बलताका भयहो या सुस्की उत्पन्नहो और जब उसको बंद करना चाहै तो शर्बत पोदीना और बिहीकी शराब योग्य है और आरम्भ में गुलकन्द और सिकजबीन के सिवाय तबियतको मुलायम करने के लिये और कुछ योग्य नहीं परन्तु जब शक्ति बलवान और तबियतमें अजीर्णहो और सात दिन बीतजांय तो हर रात में दवा उत्तुर्बुद देना अधिक लाभदायक है यद्यपि मवादका पकना प्रगट नहो और जिस रातमें दवाउत्तुर्बुद देना चाहिये कि उसके प्रातःकाल १७॥ मासे गुलकन्द खवावैं और उसके उपरांत शहदकी बनी सिकञ्जबीन पिवावै और जो तबियत को प्रतिदिन दोबार सरलतासे अधोवायु निकलती हो तो यह दवा नहीं दसक्के जो उपाय कि शुतुरुलगिबमेंवर्णन किया है उसपर अमल करै और जब तक १४ दिन न बीतजांय सिकजबीन बिज़री और टिम्रिया न देना चाहिये (लाभ) जो इस ज्वरमें मूत्र रंगीन और गाढा हो और कोई कार्य्य वर्जित नहो तो फस्द खोलें और जिस प्रकार का कफ हो उसीके अनुसार दवा और भोजन ग्रहण करै जैसे जो खारी कफज्वरका मवाद है तो गर्म चीजें नदें किन्तु ठंढी दवाओंमें मिलाकरदें जैसे सर्दी बडी है क्योंकि खारी कफ पित्त के समान होता है और मीठा कफ हो तो ऐसी चीजेंदें कि गर्मी और नर्मी में समान हों जैसे गुल्कन्द सादा सिकजबीन में मिलाकर और उसके समान देवे और जो कफ खट्टा या सफेद कांचसा सा पिघला हो तो विशेष बलवान और गर्म और नर्म करनेवाली चीजें दें जैसे फलाफली माजून, और कम्मूनी आदिद और दस्तों और मूत्रके लानमें भी यही उपाय याद रक्खें। ऐसी दवाके बनानेकी विधि— जो कफ खून और पित्तके सयोगिक ज्वरोंको लाभदायक है । गिलाय, नीम, बंशलोचन, इलायची छोटीके दाने प्रत्येक आधा तोला मिश्री सफेद १॥ तोला इसकी मात्रा ४ माशेसे६ माशे तक देनी चाहिये । जानना चाहिये कि गिलोय मुख्य कर जो नीमके पेडपर लिपटती है हरप्रकारके ज्वरोंको लाभकारी है यहां तक कि तपेदिकमें भी इससे अधिक गुणकारी दवा नहीं किन्तु परीक्षायी हुई है और दस्त और बिनादस्त दोनों दशाओं में देसक्ते हैं और खांसी का भी गुणकारी है और उसका सत बहुत हलका और शीघ्र गुण करता है और

कुर्स गुल के बनाने की विधि ।

पुराने ज्वरों में कपकपी अधिक होती है और पांव की पीठ और मुख पर सूजन होजाती है ऐसे रोगों में यह लाभदायक है, रूमी सौंफ १४ माशे, तेजपात, तगर, अफसतीन, वालछड, कडवे वादाम की मिंगी प्रत्येक १०॥ माशे, एलवा १४ माशे, उसारे गाफिस १०॥ माशे, अजमोद के बीज ३॥ माशे कूट छान कर अजमोद के पानी में मिलाकर टिकिया बनावे सौंफ के पानी और सिकजवीन के साथ दें और जो अजमायन कूट छानकर शहद में मिलाकर १०॥ माशे के प्रमाण दें तो पुराने कफ वाले ज्वर को, जोर से हिलाती है और देर में गर्म होती है और जाती रहती है और गारीकून ३॥ माशे से ४॥ माशे, शहद में मिलाकर खाय तो इतना लाभ दे कि अचम्भा आवे और जो काली मिर्च और बडी इलायची के दाने और मिश्री बराबर लेकर कूट छानकर ३ माशे से लेकर६ माशे तक खवावें तो कफ वाला कपकपी का ज्वर दूर होजाता है (इलाज) जहां कहीं कि कफ वाले ज्वर में कोई कार्य दस्तावर दवाओं में वर्जित न हो तो पसीना लाने और मूत्र के बढ़ाने में बहुत परिश्रम करें परन्तु इससे पहले मवाद के पकाने वाली चीजें और नर्म करने और फैलाने वाली चीजों के ग्रहण करने से कफ में नर्मी और पकाव आजाय और नहीं तो हानिकारी है क्योंकि पतला निकल जाता है और गाढा बच रहता है ।

ॐ जडों के पानी के बनाने की विधि ॐ

यह मवाद के पकने के उपरांत लाभदायक है और मत्रफा बढ़ाता है—अजमोदबीजड सौंफबीजड । गन्दबेलबीजड । हमराज । रूमी सौंफ प्रत्येक एकमुट्ठी। मस्तगी । अजमोदबीज प्रत्येक ७ माशे । इनको सरभर पानी में औटावें जब आधारहै तो छानकर प्रतिदिन प्रात काल के समय १४० माशे लेकर गर्म करें और ३० माशे गुलकन्द उसमें मिलाकर फिर साफकरके दें और जहां कहीं कि मवाद विशेष गाढा और अधिक ठढा होतो अधिक मवादकानिशा टनेके उपरांत तिर्‍याक फारूक या मसरूदी तुम या तिरियाक अरबा दे सकते हैं यदि रोगी जवान और गर्मीकी ऋतु और खारी कफ नहो और नहीं तो इनमें से कुछ न देना चाहिये और सिकजबीन बिजूरी और गुलकन्द और मुसंगुक पर सतोष करना चाहिये । दूसरा भेद यह है कि कफ वाला मवाद रगोंके भीतर सडगया हो और यह दो प्रकार पर है एक तो यह है कि

कुर्स गुल के बनाने की विधि ।

पुराने ज्वरों में कपकपी अधिक होती है और पांव की पीठ और मुख पर सूजन होजाती है ऐसे रोगों में यह लाभदायक है, रूमी सौंफ १४ माशे, तेजपात, तगर, अफसतीन, बालछड, कड़वे बादाम की मिंगी प्रत्येक १०॥ माशे, एलवा १४ माशे, उस्सारे गाफिस १०॥ माशे, अजमोद के बीज ३॥ माशे कूट छान कर अजमोद के पानी में मिलाकर टिकिया बनावे सौंफ के पानी और सिकञ्जवीन के साथ दें और जो अजमायन कूट छानकर शहद में मिलाकर १०॥ माशे के प्रमाण दें तो पुराने कफ वाले ज्वर को, जोर से हिलाती है और देर में गर्म होती है और जाती रहती है और गारीकून ३॥ माशे से ४॥ माशे, शहद में मिलाकर खाय तो इतना लाभ दे कि अचम्भा आवे और जो काली मिर्चे और बड़ी इलायची के दाने और मिश्री बराबर लेकर कूट छानकर ३ माशे से लेकर ६ माशे तक खवावें तो कफ वाला कपकपी का ज्वर दूर होजाता है (इलाज) जहां कहीं कि कफ वाले ज्वर में कोई कार्य दस्तावर दवाओं में वर्जित न हो तो पसीना लाने और मूत्र के बढ़ाने में बहुत परिश्रम करें परन्तु इससे पहले मवाद के पकाने वाली चीजें और नर्म करने और फैलाने वाली चीजों के ग्रहण करने से कफ में नर्मी और पकाव आजाय और नहीं तो हानिकारी है क्योंकि पतला निकल जाता है और गाढ़ा बच रहता है ।

❀ जड़ों के पानी के बनाने की विधि ❀

यह मवाद के पकने के उपरांत लाभदायक है और मनफा बढ़ाता है—अजमोदबीजड सौंफबीजड । गन्दवेलबीजड । हमराज । रूमी सौंफ प्रत्येक एकमुट्ठी । मस्तगी । अजमोदकनीज प्रत्येक ७ माशे । इनको सरभर पानी में औटावें जब आधारहै तो छानकर प्रतिदिन प्रात काल के समय १४० माशे लेकर गर्म करें और ३० माशे गुलकन्द उसमें मिलाकर फिर साफकरदें और जहां कहीं कि मवाद विशेष गाढ़ा और अधिक ठंढा हो तो अधिक मवादकानिश ठनेके उपरांत तिरियाक फारूक या मसरूदीतूस या तिरियाक अरबा दे सक्ते हैं यदि रोगी जवान और गर्मी की ऋतु और खारी कफ रहो और नहीं तो इनमें से कुछ न देना चाहिए और सिकञ्जवीन विज़ूरी और गुलकन्द और मुसंगुफ पर सन्तोष करना चाहिये । दूसरा भेद यह है कि कफ वाला मवाद रगों के भीतर सड़गया हो और यह दो प्रकार पर है एक तो यह है कि

के उपरांत गर्मी फड़कती है और मवाद के भरे होने के चिन्ह बिलकुल प्रकट नहीं होते (इलाज) जो कुछ कि नायवा में वर्णन किया गया है वही यहां भी स्वीकार करें और जो खून भरा मालूम हो तो फस्द खोलें परन्तु मवाद के पकने वाली दवाएं और मवाद के फैलाने और नर्म करने के काम में जितना कि नायवा में जल्दी करते है यहां न चाहिये क्योंकि इस बात का भय है कि रोग की अधिकता में मवाद अधिक नर्म होकर दिमाग पर न आपड़े और सरसाम उत्पन्न न करे मुख्यकर जब कि सिर का दर्द अथवा दिमाग की निर्बलता इस के साथ हो परन्तु सिकंजबीन कि उस में थोड़ी सौंफ की जड़ या अजमोद का पानी औटा हुआ हो तथा जुलाब आमाशय की पुष्टता और मवाद नर्म करने के लिये लाभदायक है और जो दिमाग निर्बल हो तो सिकंजबीन न दें गुलकन्द दें चाहे केवल गुलकन्द चाहे सौंफ के अर्क में मिलाकर और उसके समान जैसा आवश्यकता देखें और अमलतास के गूदे से तबियत को नर्म करे और जो दिमाग बलवान् हो और सिर में दर्द न हो और ज्वर हलका हो तो कफ को उन गोलियों से निकालें जिन में इन्द्रायन का गूदा हो और मूत्र के बहाने के लिये जड़ों का पानी दें और मवाद को पकाने और मवाद और मूत्र के लाने की दवा देना चाहिये और गाफिस की टिकिया यहां लाभदायक है और मवाद के निकलने के उपरांत कुरसगुल लाभकारी है (लाभ) बहुधा अन्त में यह ज्वर जलधर उत्पन्न करता है सो जब उस के चिन्ह प्रकट हों तो उस के इलाज की तरफ आरूढ़ हो (जड़ों के पानी की विधि) यह मूत्र को बहाता है और प्रकृति को असली दशा पर लाता है सौंफ की जड़, मुलहटी की जड़, पीली हड़ प्रत्येक ३५ माशे, रूमी सौंफ १०॥ माशे, मस्तगी ७ माशे, गाफिस, अफसतीन, कालीहड़, गदबेल की जड़, प्रत्येक २४॥ माशे, बादावर्द १७॥ माशे, उटकटारा १४ माशे, मुनक्का दाने निकाली हुई ७० माशा, मामूल के अनुसार औटाकर ले (गाफिस की टिकिया बनाने की विधि) गाफिस १०॥ माशे, गुलाब के फूल २२१ माशे, बंशलोचन १४० माशे, इस की मात्रा ७ माशे है ॥

॥ दूसरा नुसखा ॥

उसारे गाफिस २१ माशे, गुलाब के फूल, बालछड़, बंशलोचन, गुलनार प्रत्येक ७ माशे, इस की मात्रा ४॥ माशे है ॥

(कुर्सगुल के बनाने की विधि) यह यहां बहुत लाभदायक है गुलाब के फूल २१ माशे, मुलहटी, बालछड़, प्रत्येक १४ माशा, मस्तगी कतरा,

के उपरांत गर्मी फड़कती है और मवाद के भरे होने के चिन्ह बिल्कुल प्रकट नहीं होते (इलाज) जो कुछ कि नायवा में वर्णन किया गया है वही यहां भी स्वीकार करें और जो खून भरा मालूम हो तो फस्द खोलें परन्तु मवाद के पकने वाली दवाएं और मवाद के फैलाने और नर्म करने के काम में जितना कि नायवा में जल्दी करते हैं यहां न चाहिये क्योंकि इस बात का भय है कि रोग की अधिकता में मवाद अधिक नर्म होकर दिमाग पर न आपड़े और सरसाम उत्पन्न न करें मुख्यकर जब कि सिर का दर्द अथवा दिमाग की निर्बलता इस के साथ हो परन्तु सिकञ्जबीन कि उस में थोड़ी सौंफ की जड़ या अजमोद का पानी औटा हुआ हो तथा जुलाब आमाशय की पुष्टता और मवाद नर्म करने के लिये लाभदायक है और जो दिमाग निर्बल हो तो सिकञ्जबीन में दें गुलकन्द दें चाहे केवल गुलकन्द चाहे सौंफ के अर्क में मिलाकर और उसके समान जैसा आवश्यकता देखें और अमलतास के गूदे से तबियत को नर्म करें और जो दिमाग बलवान् हो और सिर में दर्द न हो और ज्वर हलका हो तो कफ को उन गोलियों से निकालें जिन में इन्द्रायन का गूदा हो और मूत्र के बहाने के लिये जड़ों का पानी दें और मवाद को पकाने और मवाद और मूत्र के लाने की दवा देना चाहिये और गाफिस की टिकिया यहां लाभदायक है और मवाद के निकलने के उपरांत कुरसगुल लाभ कारी है (लाभ) बहुधा अन्त में यह ज्वर जलधर उत्पन्न करता है तो जब उस के चिन्ह प्रकट हों तो उस के इलाज की तरफ आरूढ़ हो (जड़ों के पानी की विधि) यह मूत्र को बहाता है और प्रकृति को असली दशा पर लाता है सौंफ की जड़, मुलहटी की जड़, पीली हड़ प्रत्येक ३५ माशे, रूमी सौंफ १०॥ माशे, मस्तगी ७ माशे, गाफिस, अफसतीन, काली हड़, गदबेल की जड़, प्रत्येक २४॥ माशे, बादावर्द १७॥ माशे, कटकटारा १४ माशे, मुनक्का दाने निकाली हुई ७० माशा, मामूल के अनुसार औटाकर ले (गाफिस की टिकिया बनाने की विधि) गाफिस १०॥ माशे, गुलाब के फूल २२१ माशे, बंशलोचन १४० माशे, इस की मात्रा ७ माशे है ॥

॥ दूसरा नुसखा ॥

उस्सारे गाफिस २१ माशे, गुलाब के फूल, वालछड़, बंशलोचन, तुरञ्जबीन प्रत्येक ७ माशे, इस की मात्रा ४॥ माशे है ॥

(कुर्सगुल के बनाने की विधि) यह यहां बहुत लाभदायक है गुलाब के फूल २१ माशे, मुलहटी, बालछड़, प्रत्येक १४ माशा, मस्तगी कतरा,

जवीन मिलाकर वमन करे और प्रतिदिन प्रात काल के समय २४॥ माशे, गुलकन्द खवावें और इस के उपरांत जब दो घटे बीतजाय तो ७० माशे, सिकजवीन सादा पिवावें और जहा कहीं जाडा बहुत जोर से हो तो शहद की बनी सिकजवीन और गुलकन्द देवे और हर दशा में ७ दिन के उपरांत दस्तावर दवादें और दस्तावर दवाओं के देने में और भोजन आदि के खाने में वही उपाय करें जो लिखका और नायवा में वर्णन किया गयाहै और गुलकन्द,मस्तगी,रूमीगोंफ मिलाकर सब कफ वाले ज्वरों में आमाशय की पुष्टता के लिये विशेष लाभदायक है और लीफूरिया गाढे पित्तसे उत्पन्न हो उसका इलाज कफ और पित्त की दवाओं से करे जैसा कि शितरुल गिब में वर्णन किया गया है और सिकजवीन गुलकन्द के साथ देना लाभदायक है और कफ वाले ज्वर का एक और भेद है कि उस में गर्मी और सर्दी बाहर और भीतर इकट्ठी मालूम होती है और उसका कारण कफ सडा हुआ विशेष भाफ वाला है कि जो बाहर और भीतर गर्म करता है और उसका इलाज भी वही है जो पहले भेदों में लिखाहै (लाभ) कभी सफेद पिघले कांच का सा कफ शरीर की गहराई में बहुत उत्पन्न हो जाता है परन्तु सडता नहीं उसका यह चिन्ह है कि केवल भीतर ही सर्दी मालूम हो और ऊपरी शरीर अपनी दशा पर रहे और कभी कफ सफेद पिघले कांच कासा शरीर में फैल जाता है और नहीं सडता उसका यह चिन्ह है कि बारी से शरीर में कपकपी हो और ज्वर और गर्मी बिलकुल नहो और कपकपी का यह कारण है कि मवाद शरीर के अंगों पर पडता है (इलाज) मवाद को नर्म और ठंढा करे और कफ को मुख्य कर वमन से निकाले और यहां मल के द्वारा निकलना और पसीना लाना न्हाने के स्थान और परिश्रम से दस्तों की अपेक्षा उत्तम है और एक अन्य भेद है उसको निहारी कहते है और उसका यह अर्थ है कि दिनको तारीप आता है और रातको कम हो जाताहै और एक और भेद है उसको लैली कहते हैं और यह इस प्रकार का होता है कि रात को आताहै और दिन में छोड जाता है और दोनों बहुत बुरे है पर निहारी तो बहुत बडा होता है इस कारण से कि उसका कारण बलवान है और इन दोनों ज्वरों में दिक का भयहै (इलाज) जो कुछ कि कफ वाले ज्वरों में वर्णन कियाहै उसी उपाय को काम में लावें और कभी ज्वर निहारी और लैली सफेद पिघले कांच के से कफ से शरीर में फैल जाता है और बहुत कम सडता है (इलाज) मवाद को नर्म और ठंढा करे और जो चीज कि बिलकुल कफ उतारा करे उस

जबीन मिलाकर वमन करे और प्रतिदिन प्रात काल के समय २४॥ माशे, गुलकन्द खवावें और इस के उपरांत जब दो घंटे वीतजाय तो ७० माशे, सिकजवीन सादा पिवावें और जहां कहीं जाड़ा बहुत जोर से हो तो शहद की बनी सिकजवीन और गुलकन्द देवे और हर दशा में ७ दिन के उपरांत दस्तावर दवादें और दस्तावर दवाओं के देने में और भोजन आदि के खाने में वही उपाय करें जो लिसका और नायवा में वर्णन किया गयाहै और गुलकंद,मस्तगी,रूमीगोंफ मिलाकर सब कफ वाले ज्वरों में आमाशय की पुष्टता के लिये विशेष लाभदायक है और लीफूरिया गाढे पित्तसे उत्पन्न हो उसका इलाज कफ और पित्त की दवाओं से करे जैसा कि शितरुल गिव में वर्णन किया गया है और सिकजबीन गुलकन्द के साथ देना लाभदायक है और कफ वाले ज्वर का एक और भेद है कि उस में गर्मी और सर्दी बाहर और भीतर इकट्ठी मालूम होती है और उसका कारण कफ सड़ा हुआ विशेष भाफ वाला है कि जो बाहर और भीतर गर्म करता है और उसका इलाज भी वही है जो पहले भेदों में लिखाहै (लाभ) कभी सफेद पिघले कांच का सा कफ शरीर की गहराई में बहुत उत्पन्न हो जाता है परन्तु सड़ता नहीं उसका यह चिन्ह है कि केवल भीतर ही सर्दी मालूम हो और ऊपरी शरीर अपनी दशा पर रहे और कभी कफ सफेद पिघले कांच कासा शरीर में फैल जाता है और नहीं सड़ता उसका यह चिन्ह है कि जाड़ी से शरीर में कपकपी हो और ज्वर और गर्मी बिलकुल नहो और कपकपी का यह कारण है कि मवाद शरीर के अंगों पर पड़ता है (इलाज) मवाद को नर्म और ठंढा करे और कफ को मुख्य कर वमन से निकाले और यहां मूत्र के द्वारा निकलना और पसीना लाना न्हाने के स्थान और परिश्रम से दस्तों की अपेक्षा उत्तम है और एक अन्य भेद है उसको निहारी कहते हैं और उसका यह अर्थ है कि दिनको तारीम आता है और रातको कम हो जाताहै और एक और भेद है उसको लैली कहते हैं और यह इस प्रकार का होता है कि रात को आताहै और दिन में छोड़ जाता है और दोनों बहुत बुरे हैं या निहारी तो बहुत बड़ा होता है इस कारण से कि उसका कारण बलवान है और इन दोनों ज्वरों में दिक का भयहै (इलाज) जो कुछ कि कफ वाले ज्वरों में वर्णन कियाहै उसी उपाय को काम में लावे और कभी ज्वर निहारी और लैली सफेद पिघले का च के स कफ से शरीर म फैलजाता है और बहुत कम सड़ता है (इलाज) मवाद को नर्म और ठंढा करे और जो चीज कि बिलकुल कफ उत्पन्न करे इस

प्रकारसे वर्णन करते हैं प्रगटहो कि चौथैया ज्वर यातो प्राकृतिक बादीके सड़ने से होताहै या अप्राकृतिक बादीके सड़ने से। अप्राकृतिक बादी या तो खूनके जलने से होती है या पित्तके जलने से या कफके जलने से वा सौदा (बादी) के जलने से जैसा कि हकीमों ने कहाहै कि दोष जलताहै वही बादी बनजाता है और दोषके जलनेका यह अर्थ नहींहै कि जलकर राख होजाय किन्तु यह अर्थ है कि उसके भागोंम से तरी नष्ट होकर शेष गाढा रहजाय सो इस बातका चिन्ह जो प्राकृतिक बादीके सड़जाने से उत्पन्नहो यहहै कि नाड़ी की गति हलकी हो और पहिले वह कारण प्रगट हों जिनसे बादी उत्पन्नहो जैसे मसूर और गौका मांस, कनेव, मछली, नोंन, और बिना नोंन आदिका खाना और बहुधा ढलती अवस्थामें और सर्द खुश्क प्रकृति में और खरीफ ऋतुमें उत्पन्न होता है इस ज्वरका चिन्ह जबकि खूनके जलने से उत्पन्नहो यहहै कि खूनकी अधिकता प्रगटहो और मूत्र लाल, मुख मीठा, और शरीरमें भारापन हो और यह बहुधा जवान और मोटे शरीरें वालों को और बसंत ऋतुके दिनोंमें उत्पन्न होताहै और इस चौथैया का चिन्ह पित्तके जलनेसे उत्पन्नहो यहहै कि बादी कमी से हो और प्यास अधिक और मुख कडवा पसीने की अधिकता नाड़ी में शीघ्रता और लगातार फड़कना और क्रोध का आना हो और आरम्भ में फुरेरी आदि जो पित्तकी अधिकता में अवश्य होतीहै और यह बहुधा जवान आदमीको होतीहै जिनकी प्रकृति गर्म और खुश्क होती है और जो भोजन और दवा गर्म खाते हैं और पित्ती ज्वरोंके उपरांत यह काम प्रगट होती है और इस चौथय्या ज्वर का चिन्ह जो कफ जलनेसे उत्पन्न हो यह है पहले मूत्र सफेद और गाढा हो और छूनेमें सर्दी और नाड़ी सुस्त और आलस्य हो और प्यासमें न्यूनता और नींद की अधिकता आदि जो कफके चिन्ह हैं प्रगट हों और कफ नामें ज्वरोंके उपरांत उत्पन्न हो और बहुधा तर प्रकृति वालों को प्रगट हो और इस ज्वरका चिन्ह जो बादी से उत्पन्न हो यह है कि बढे २ विचार और निकम्मे स्वप्न और विस्वास और शरीर की खाली स्याही और नीला रंग लिये होना और त्वचाका काला होना और भूखकी अधिकता और प्राकृत प्राकृतिक बादी के सड़ने में लिखाजापरा प्रगट हो (लाभ) चौथय्या के सब भेदों में प्रथम मूत्र सफेद पतला कच्चा और हरियाली लिये होना है और पीछे लाल और गाढा होता है इसीलिये कहते हैं कि बादीय ज्वरोंमें कपकपी और सर्दी का कमहोना और मूत्रका काला और गाढा होना ज्वार के पक-

प्रकारसे वर्णन करते हैं प्रगटहो कि चौथैया ज्वर यातो प्राकृतिक बादीके सड़ने से होताहै या अप्राकृतिक वादीके सड़ने से। अप्राकृतिक बादी या तो खूनके जलने से होती है या पित्तके जलने से या कफके जलने से वा सोदा (बादी) के जलने से जैसा कि हकीमों ने कहाहै कि दोष जलताहै वही बादी बनजाता है और दोषके जलनेका यह अर्थ नहींहै कि जलकर राख होजाय किन्तु यह अर्थ है कि उसके भागोंमे से तरी नष्ट होकर शेष गाढा रहजाय सो इस बातका चिन्ह जो प्राकृतिक बादीके सड़जाने से उत्पन्नहो यहहै कि नाड़ी की गति हलकी हो और पहिले वह कारण प्रगट हों जिनसे बादी उत्पन्नहो जैसे मसूर और गौका मांस, कनेश, मछली, नोंन, और बिना नोंन आदिका खाना और बहुधा ढलती अवस्थामें और सर्द खुश्क प्रकृति में और खरीफ ऋतुमें उत्पन्न होता है इस ज्वरका चिन्ह जबकि खूनके जलने से उत्पन्नहो यहहै कि खूनकी अधिकता प्रगटहो और मूत्र लाल, मुख मीठा, और शरीरमें भारापन हो और यह बहुधा जवान और मोटे शरीरें वालों को और बसंत ऋतुके दिनोंमें उत्पन्न होताहै और इस चौथैया का चिन्ह पित्तके जलनेसे उत्पन्नहो यहहै कि बादी कमी से हो और प्यास अधिक और मुख कड़वा पसीने की अधिकता नाड़ी में शीघ्रता और लगातार फटकना और क्रोध का आना हो और आरम्भ में फुरेरी आदि जो पित्तकी अधिकता में अवश्य होतीहै और यह बहुधा जवान आदमीको होतीहै जिनकी प्रकृति गर्म और खुश्क होती है और जो भोजन और दवा गर्म खाते हैं और पित्ती ज्वरोंके उपरांत यह काम प्रगट होती है और इस चौपइया ज्वर का चिन्ह जो कफ जलनेसे उत्पन्न हो यह है पहले मूत्र सफेद और गाढा हो और छूनेमें सर्दी और नाड़ी सुस्त और आलस्य हो और प्यासमें न्यूनता और नींद की अधिकता आदि जो कफके चिन्ह हैं प्रगट हों और कफ वाले ज्वरोंके उपरांत उत्पन्न हो और बहुधा तर प्रकृति वालों को प्रगट हो और इस ज्वरका चिन्ह जो बादी से उत्पन्न हो यह है कि बड़े २ विचार और निकम्मे स्वप्न और विस्वास और शरीर की लाली स्याही और नीला रंग लिये होना और त्वचाका काला होना और भूखकी अधिकता और प्राकृतिक बादी के सड़ने में लिखाजायगा प्रगट हो (लाभ) चौपइया के सब भेदों में प्रथम मूत्र सफ़ेद पतला कच्चा और हरियाली लिये होता है और पीछे काला और गाढा होता है इसीलिये कहते हैं कि बादीके ज्वरोंमें कच्ची और सर्दी का कमहोना और मूत्रका काला और गाढा होना प्रकार के पक-

दस्तों के द्वारा बादी निकल जाय और इसी तरह जो चीज कि बादी के निकालने वाली हो और विशेष गर्म न होने दें जैसे बनफशा, पित्तपापड़ा फाव-लीहर्द, निस्फायज, अमलतास का सत्त, तुरंजबीन का काढ़ा बना कर दें और मूत्र के लाने के लिये सिकंजबीन और जौ का पानी इसी विधि से देना कि जिनको वर्णन ऊपर आया है विशेष लाभदायक है और जहां कहीं कि अधिक गर्मी न हो और मवाद पक गया हो तो सिकंजबीन पर सौंफ के पानी के साथ देना बहुत गुणकारी है और जो भड़काव और गर्मी अधिक हो तो सिकंजबीन हरी कासनी के पानी में और तरबूज के पानी और सर्द तर चीजों में देना लाभदायक है और जो ज्वर का मवाद गाढ़ा हो और समय बीत चुका हो तो चाहिये कि आराम के दिनों में २२॥ माशे, गुलकन्द सिकंजबीन के शर्बत में मिलाकर गर्म पानी के साथ दें और जब रोग के आरम्भ से बीस दिन बीत चुके तो पित्तपापड़ा और हर्ड का काढ़ा दे सक्ते हैं और मूत्र और दस्तों के आने के उपरांत अधिक गुण करता है और जो बारी के उपरांत समान न्हाने के स्थान में ले जाय और इतनी देर रक्खें कि न्हाने के स्थान की तरी रोमों और अंगों में पहुंचजाय और पसीना आने से पहिले निकाल लावें इस उपाय से दोष नर्म होता है और पक जाता है और रोग के आरम्भ में जिगर और तिल्ली की तरफ ध्यान रक्खें कि उन में कठोरता न उत्पन्न हो और फस्द खोलने के उपरांत मुर्ग, बटेर, और जवान बकरी के मांस के शोरबे में छिले मूंग और आलूचले बना पकावे और कांजी, इमली का पानी और खट्टे मीठे अनार के पानी की खटाई लाभदायक है और जो चौथैया ज्वर पित्त के कारण से हो तो पहले सर्दी और तरी के पहुंचाने में अधिक परिश्रम करें और इस काम के लिए जौ का घाट का पानी और ककड़ी खीरा के बीज का शीरा सिकंजबीन आदि के साथ जैसा कुछ योग्य हो दें और आरम्भ में सन्निपात के दूर करने के लिये बनफशा, आलू, लिसोढ़ा, मुनक्का, मुलहटी, कासनी के बीज के काढ़े में अमलतास का गूदा मिलाकर देना योग्य है और ऐसे ही गुलाब का शर्बत इजारा मिला हुआ और शर्बत बनफशा और माउलजुब्न दवे और सब आरम्भ में रात में बीस दिन बीत जाय तो हर्ड का काढ़ा कि इस में सापारा-वल, सनाय, इमली, पित्तपापड़ा, और बनफशा पका हो लाभ देता है और यही न्हाने के स्थान में जाना मवाद के पकने के उपरांत लाभदायक है और सोसन शाहिर गुण करने अंगूर के साथ देना अति उत्तम है और जो बादी में मिश्रित है

दस्तों के द्वारा बादी निकल जाय और इसी तरह जो चीज कि बादी के निकालने वाली हो और विशेष गर्म न होने दें जैसे बनफशा, पित्तपापड़ा फाव-ज़ीहर्द, निस्फायज, अमलतास का सत्त, तुरंजबीन का काढा बना कर दें और मूत्र के लाने के लिये सिकंजबीन और जौ का पानी इसी विधि से देना कि जिनका वर्णन ऊपर आया है विशेष लाभदायक है और जहां कहीं कि अधिक गर्मी न हो और मवाद पक गया हो तो सिकंजबीन पर सौंफ के पानी के साथ देना बहुत गुणकारी है और जो भड़काव और गर्मी अधिक हो तो सिकंजबीन हरी कासनी के पानी में और तरबूज के पानी और सर्द तर चीजों में देना लाभदायक है और जो ज्वर का मवाद गाढा हो और समय बीत चुका हो तो चाहिये कि आराम के दिनों में २२॥ माशे, गुलकन्द सिकंजबीन के शर्बत में मिलाकर गर्म पानी के साथ दें और जब रोग के आरम्भ से बीस दिन बीत चुके तो पित्तपापड़ा और हर्ड का काढा दे सकते हैं और मूत्र और दस्तों के आने के उपरांत अधिक गुण करता है और जो बारी के उपरांत स्नान करने के स्थान में ले जाय और इतनी देर रक्खें कि न्हाने के स्थान की तरी रगों और अंगों में पहुंचजाय और पसीना आने से पहिले निकाल लावें इस उपाय से दोष नर्म होता है और पक जाता है और रोग के आरम्भ में जिगर और तिल्ली की तरफ ध्यान रक्खे कि उन में कठोरता न उपजे हो और फस्द खोल ने के उपरांत मुर्ग, चटेर, और जवान बकरी के मांस के शोरबे में छिले मूंग और आफूचले चना पकावे और कांजी, इमली का पानी और खट्टे मीठे अनार के पानी की खटाई लाभदायक है और जो चौथैया ज्वर पित्त के कारण से हो तो पहले सर्दी और तरी के पहुंचाने में अधिक परिश्रम करें और इस काम के लिये जौ का घाट का पानी और ककड़ी खीरा के बीज का शीरा सिकंजबीन आदि के साथ जैसा कुछ योग्य हो दें और आरम्भ में सविपत के मुलायम करने के लिये बनफशा, आलू, लिसोड़ा, मुनक्का, मुलहटी, कासनी के बीज के काढे में अमलतास का गूदा मिलाकर देना योग्य है और ऐसे ही गुलाब का शर्बत दुवारा मिला हुआ और शर्बत बनफशा और मावउलजुब्न दे और जब आरम्भ में रोग से बीस दिन बीत जांय तो हड़ का काढा कि इस में साफाश-मल, सनाय, इन्द्री, पित्तपापड़ा, और बनफशा पका हो लाभ देता है और पानी न्हाने के स्थान में जाना मवाद के पकने के उपरांत लाभदायक है और भोजन चौथिये गुण के पश्चे शगूर के साथ देना अति उत्तम है और जो खांसी में शिथिलता है

तिल्ली की पुष्टिता के लिये गाफिस देना चाहिये और जहां कहीं कि जाड़ा प्रतिदिन आता है तो ज्वारी के आरम्भ में बनफशा, बाबूना, गुलाब के फूल, खितमी के फूल के पानी में औटा कर गर्म पानी में रोगी के पास रक्खें और आज्ञादें कि एक चादरा सिरपर डालले जिससे इसकी भाफ बाहर न निकले और अधिक देर तक रक्खें।

दस्तके लाने वाले गुलकंद के बनाने की विधि।

तुर्बुद ३ माशे, सौंठ ३ रत्ती, बिस्फाइज १॥ माशे, गुलकन्द २९ माशे दवाको कूट कर गुलकंदमें मिलावें यह एक मात्राहै, (चूर्ण के बनाने की विधि) यह मवाद के पकनेके उपरांत प्रति सप्ताहमें एक वारदें काबली हर्डे, काली हडे प्र० २४॥ माशे बिस्फाइज आकाशबेल प्र० १०॥माशे,इनको कूटछानकर रक्खें इसकी मात्रा १०॥ माशे बूरेके साथ मिलाकरदें और इसपर गर्मपानी पिलावें और जब ज्वर को कुछ समय बीत जाय और जाडे की ऋतु होतो हींग की माजून और फला- फली माजून और दूसरी गर्म माजून लाभदायक है और मसरूदीतूस तथा ति- रियाक कबीर १॥ माशे प्रतिसप्ताह में देना विशेष गुणकारी है और वैद्यों की औषधि इस रोग में अधिक गुणकारी है जो आवश्यकता दखें तो काम में ला सकते हैं और जो चौथैया ज्वर बादी के कारण से उत्पन्न हो चाहे प्राकृतिक बादी के सड़ने से चाहे गलने से जिसको बादी कहते है जानलें किइसका उपाय कफ वाले चौथैया ज्वर के समान है और अधिक मवाद के निकालने वाली दवा मवाद के पकने से पहले न देना चाहिये और जब मवाद का पकना प्रगट हो और कपकपी कम होजाय तो अधिक दस्त के लाने वाली दवा और फस्द का खोलना और मूत्र के लाने वाली [illegible] का देना और मलना यह यो- ग्य है और इस म दस्त के लाने वाली [illegible] बार करते हैं [illegible] नि- कालने वाली दवाओं में शक्तिकी [illegible] बादीको [illegible] से निकलना है परंतु मवाद के निक[illegible] मवाद [illegible] चाहिये [illegible] और मवा[illegible] [illegible] औ[illegible]

तिल्ली की पुष्टिता के लिये गाफिस देना चाहिये और जहां कहीं कि जाड़ा प्रतिदिन आता है तो बारी के आरम्भ में बनफशा, बाबूना, गुलाब के फूल, खितमी के फूल के पानी में औटा कर गर्म पानी में रोगी के पास रक्खें और आज्ञादें कि एक चादरा सिरपर डालले जिससे इसकी भाफ बाहर न निकले और अधिक देर तक रक्खें।

दस्तके लाने वाने गुलकंद के बनाने की विधि।

तुर्बुद ३ माशे, सौंठ ३ रत्ती, विस्फाइज १॥ माशे, गुलकन्द २९ माशे दवाको कूट कर गुलकंदमें मिलावें यह एक मात्राहै, (चूर्ण के बनाने की विधि) यह मवाद के पकनेके उपरांत प्रति सप्ताहमें एक बारदें काबली हर्रे, काली हर्रे प्र० २४॥ माशे विस्फाइज आकाशवेल प्र० १०॥माशे, इनको कूटछानकर रक्खें इसकी मात्रा १०॥ माशे बूरेके साथ मिलाकरदें और इसपर गर्मपानी पिलावें और जब ज्वर को कुछ समय बीत जाय और जाड़े की ऋतु होतो हींग की माजून और फला- फली माजून और दूसरी गर्म माजून लाभदायक है और मसरूदीतूस तथा ति- रियाक कबीर १॥ माशे प्रतिसप्ताह में देना विशेष गुणकारी है और बैद्यों की औषधि इस रोग में अधिक गुणकारी है जो आवश्यकता देखें तो फस्द खोल सकते हैं और जो चौथिया ज्वर बादी के कारण से उत्पन्न हो चाहे माकृतिक बादी के सड़ने से चाहे गलने से जिसको बादी कहते हैं जानलें कि इसका उपाय कफ वाले चौथिया ज्वर के समान है और अधिक मवाद के निकालने वाली दवा मवाद के पकने से पहले न देना चाहिये और जब मवाद का पकना प्रगट हो और कपकपी कम होजाय तो अधिक दस्त के लाने वाली दवा और फस्द का खोलना और मूत्र के लाने वाली [illegible] का देना और मलना गरु यो- ग्य है और इस में दस्त के लाने वाली [illegible] बार करके दें [illegible] नि- कालने वाली दवाओं में शक्तिकी रक्षा [illegible] बादीका [illegible] मे निकलना है परंतु मवाद के निक[illegible] मवाद [illegible] चाहिये जिसमें शक्ति [illegible] और मवा[illegible] [illegible] निगर और [illegible] में [illegible] मध्य में [illegible] गाफिस [illegible] मवाद [illegible] किसी मवाद [illegible] नहीं [illegible] उपरांत जो [illegible] चाहिये और चा[illegible]

तरह जो बीचमें चार दिन छोडकर आवे तो उसको सदस कहते हैं और जो बीच में पांच दिन छोडकर आवे तो उसको सिवआ कहते हैं और जो ६ दिन छोडकर आवे तो समन और जो ७ दिन में आवे तो तिसआ और आठ दिन में आवे तो अशरा कहते हैं और इससे अधिक का बहुत कम काम पडता है और हकीम फिरेशी कहता है कि मैंने एक मनुष्य को देखा कि उस को ज्वर की बारी १८ दिन में एक बार आती थी और एक स्त्री को भी देखाहै जिसको १३ दिनके उपरान्त ज्वर आती थी और क्योंकि इस प्रकार के ज्वर बहुधा हकीमों की दृष्टि में आये हैं इन ज्वरों से हकीम जालीनूस का निषेध करना माननेके योग्य नहीं क्योंकि उसकी इस बातका कोई पूरा प्रमाण नहींहै अभिप्राय यह है कि इन ज्वरों का मवाद भी चौथइया ज्वर का मवाद है परन्तु अधिक गाढा और बहुत कम और यह ज्वर कफवाली बादी से बहुधा उत्पन्न होते हैं और हकीम बुकरात की कहावत के अनुसार जो ज्वर तीन दिन, बीच में छोडकर आता है वह सब से निकम्मा है क्योंकि कभी दिक और सिल के उत्पन्न होने का कारण होता है और कभी इसके उपरांत उत्पन्न होता है और हकीम बूअली सेना कहता है कि हकीम बुकरात का अर्थ केवल तीन दिन छोड कर जो ज्वर आताहै उससे नहीं किन्तु यह है कि तीन दिन छोडकर ज्वर आतेहैं वे ओरोंसे बुरे होतेहैं (इलाज) इन ज्वरोंका उपाय भी वही है जो चौथइयाका वर्णन हुआ है और इस कारणसे होताहै इनका मवाद विशेष गाढा है मवाद के नर्म करनेमें और उपायमें अधिक परिश्रम करे परन्तु बहुत गर्म चीज और अधिक दस्त लानेवाली दवा न दे सो जो रोगी मोटा और बहुत खानेवालाहै तो कफके निकालने में विशेष परिश्रमकरे और जो दुर्बलहो तो जली बादीको निकाले और मवादके पक- नेसे पहले किसी मवादको न निकाले और प्रकृतिकी नर्मी और मदारके अनुसार को जानदें जिस तरह पर कि वर्णन कियाहै और नौबतके दिन वमन अवश्य किया करें और गुलकन्द और सिकञ्जबीन कि जिसमें खटाई कम हो लाभदायक है इसकी कहावत इन संयोगिक ज्वरों के वर्णनमें है ज्यादा कोई भाव नहीं है क्योंकि ज्वरों के भेद बहुत हैं उनका लिखना कठिन है और जो विकल्प इन में पड़ती है उसकी गिनती नहीं कभी दो दो एक ज्वर मिलजातेहैं जिनमें आपस में बहुत अन्तर होता है जैसे दिक और अफूनी और कभी एक प्रकार के दो ज्वर उत्पन्न होते हैं जैसे अफूनी के साथ । मारे एक प्रकार का दो

तरह जो बीचमें चार दिन छोडकर आवे तो उसको सदस कहते हैं और जो बीच में पांच दिन छोडकर आवे तो उसको सिबआ कहते हैं और जो ६ दिन छोडकर आवे तो समन और जो ७ दिन में आवे तो तिसआ और आठ दिन में आवे तो अशरा कहते हैं और इससे अधिक का बहुत कम काम पडता है और हकीम फिरेशी कहता है कि मैंने एक मनुष्य को देखा कि उस को ज्वर की बारी १८ दिन में एक बार आती थी और एक स्त्री को भी देखाहै जिसको १३ दिनके उपरान्त ज्वर आती थी और क्याकि इस प्रकार के ज्वर बहुधा हकीमों की दृष्टि में आये हैं इन ज्वरों से हकीम जालीनूस का निषेध करना माननेके योग्य नहीं क्योंकि उसकी इस बातका कोई पूरा प्रमाण नहीं है अभिप्राय यह है कि इन ज्वरों का मवाद भी चौथइया ज्वर का मवाद है परन्तु अधिक गाढा और बहुत कम और यह ज्वर कफ़जली बादी से बहुधा उत्पन्न हो तेहैं और हकीम बुकरात की कहावत के अनुसार जो ज्वर तीन दिन, बीच में छोडकर आता है वह सब से निकम्मा है क्योंकि कभी दिक और सिल के उत्पन्न होने का कारण होता है और कभी इसके उपरांत उत्पन्न होता है और हकीम बूअली सेना कहता है कि हकीम बुकरात का अर्थ केवल तीन दिन छोड कर जो ज्वर आताहै उससे नहीं किन्तु यह है कि तीन दिन छोडकर ज्वर आ-तेहैं वे ओरोंसे बुरे होतेहैं (इलाज) इन ज्वरोंका उपाय भी वही है जो चौथइयाका वर्णन हुआ है और इस कारणसे होताहै इनका मवाद विशेष गाढा है मवाद के नर्म करनेमें और उपायमें अधिक परिश्रम करे परंतु बहुत गर्म तीक्ष्ण और अधिक दस्त लानेवाली दवा न दे सो जो रोगी मोटा और बहुत खानेवालाहै तो कफ निकालने में विशेष परिश्रमकरे और जो दुर्बलहो तो जली बादीको निकाले और मवादके पक-नेसे पहले किसी मवादको न निकाले और प्रकृतिकी नर्मी और मदारुल अनुसार भी जानहैं जिस तरह पर कि वर्णन कियाहै और बारीके दिन वमन अवश्य किया करें और गुलकन्द और सिकन्जबीन कि जिसमें खटाई कम हो लाभदायक है दूसरी कहावत इन संयोगिक ज्वरों के वर्णनमें है जिसका कोई नाम नहीं है संयोगिक ज्वरों के भेद बहुत हैं उनका लिखना कठिन है और जो चिकित्सा इन में पडती है उसकी गिन्ती नहीं कभी दो दो एक ज्वर मिलजातेहैं जिनके कारण में बहुत अन्तर होता है जैसे दिक और अफूनी और कभी एक प्रकार के दो ज्वर उत्पन्न होते हैं जैसे अफूनी के साथ। गाढे एक प्रकार का हो

ज्वर मिश्रित नहीं होते मानने के योग्य नहीं है (इलाज)बहुत ध्यानसेमिश्रितज्वर की दशा मालूम करें फिर समय और रोगीकी दशा के अनुसार अयौगिक ज्वरों में कहे हुए उपाय काम में लावे और जो ज्वर बहुत बलवान और भयानक हो औरोंकी अपेक्षा उसका नष्ट करना योग्य समझें और यह संक्षेपबातें विद्वान हकीमकी सम्मति पर निर्भर हैं जो कुछ योग्य जाने काम मेंलावे और मिश्रित चौथिया और पांचव दिनके ज्वरों में सर्वोत्तम यह है कि मवादको बहुत कम निकाले जिससे दोष कमनहो और गर्मी असली अंगोंमें न लगजाय और टिकन उत्पन्न करें और जहां कहीं कि ज्वर दोषोंके जलनेसे होतो कभी२मवादको निकालें और ठहराने में अधिक परिश्रम करें और शर्बत और भोजनोंमें से जो कुछ श्रेष्ठ और उत्तम है ग्रहणकरें जिससे दोष न जले और प्रत्येक दशामें जिगर और तिल्ली की पुष्टता उचित समझें और जितने उपाय कि ऊपर वर्णन किये गये हैं यहां भी उनकी रक्षा रक्खें (लाभ) मिश्रित ज्वरों में से शितरूलगिब है और गिबगर खालसा का वर्णन पहिली फसल में भिन्न २ वर्णन किया है और बहुधा लाभ जो सयोगिक ज्वरों के इलाज में योग्य है वहां वर्णन किये गये हैं और जब सयोगिक ज्वर का उपाय आवश्यक हो वहां देखगे हकीम खजन्दी लिखता है कि बहुत ध्यान से देखें कि मिश्रित ज्वर दायमा है अथवा दायरा वा सिलातिया अथवा दिकिया है और उचित है कि हेतु और लक्षणों का निश्चय करके दोनों का इलाज करें अथवा केवल इसीका इलाज करें कि जिसके जाते रहने से दूसरा ज्वर अपने आप जाता रहे और हकीम मुहम्मद जकरियाने कहा है कि सयोगिक ज्वरों के इलाज में जितने ज्वर सयोगिक हों सब का इलाज योग्य नहीं किन्तु इसमें प्रत्येक ज्वर का अलग अलग इलाज करे और इमली का शर्बत और सादासिकञ्जबीन कासनी के अर्क और गुलाब में मिलाकर दें और ३५ माशे, सिकंजबीन में ४॥ माशे, बगळीगनकी टिकिया मिलाकर दे और जो शक्ति बलवान हो तो हलकी दस्तावर दवाओं से दस्त लावे और जैसे सनाय, इमली, शीरखिस्त, तुरञ्जबीन, अमलतास, गुलकन्द, और ऐसेही अन्य चीजें दे और जो पिघलना आरम्भ होगया होगा खांसी हो तो कपूरकी टिकिया सकञ्जबी के शर्बत में मिलाकर दे और हकीम जुरजानी कहता है कि जब वादी में कफ और पित्तका मिले साथ तो इलाज भी मिश्रित करना चाहिये और हकीम को उचित है कि ध्यान दे कि कौन सा ज्वर बलवान है और किस मवाद से सयोगिक है इसीके अनुसार इलाज करें और मिश्रित चौथिया और पांचवें दिन के ज्वरों में उत्तम यह है कि

ज्वर मिश्रित नहीं होते मानने के योग्य नहीं है (इलाज) बहुत ध्यानसेमिश्रितज्वर की दशा मालूम करें फिर समय और रोगीकी दशा के अनुसार अयौगिक ज्वरों में कहे हुए उपाय काम में लावे और जो ज्वर बहुत बलवान और भयानक हो औरोंकी अपेक्षा उसका नष्ट करना योग्य समझें और यह सबेपबातें विद्वान हकीमकी सम्मति पर निर्भर हैं जो कुछ योग्य जाने काम में लावे और मिश्रित चौथैया और पांचव दिनके ज्वरों में सर्वोत्तम यह है कि मवादको बहुत कम० निकाले जिससे दोष कमनहो और गर्मी असली अंगोंमें न लगजाय और दिकन उत्पन्न करें और जहां कहीं कि ज्वर दोनोंके जलनेसे होतो कभीरमवादको निकालैं और ठहराने में अधिक परिश्रम करें और शर्बत और भोजनोंमें से जो कुछ श्रेष्ठ और उत्तम है ग्रहणकरें जिससे दोष न जले और प्रत्येक दशामें जिगर और तिल्ली की पुष्टता उचित समझें और जितने उपाय कि ऊपर वर्णन किये गये है यहां भी उनकी रक्षा रक्खें (लाभ) मिश्रित ज्वरों में से भिन्नकलगिव हैं और गिवंगर खालसा का वर्णन पहिली कहावत में भिन्न २ वर्णन किया है और बहुधा लाभ जो संयोगिक ज्वरों के इलाज में योग्य है वहां वर्णन किये गये है और जब संयोगिक ज्वर का उपाय आवश्यक हो वहां देखगे हकीम खजन्दी लिखता है कि बहुत ध्यान से देखें कि मिश्रित ज्वर दायमा है अथवा दायरा वा सिलातिया अथवा दिकिया है और उचित है कि हेतु और लक्षणों का निश्चय करके दोनों का इलाज करें अथवा केवल इसीका इलाज करें कि जिसके जाते रहने से दूसरा ज्वर अपने आप जाता रहे और हकीम मुहम्मद जकारियाने कहा है कि संयोगिक ज्वरों के इलाज में जितने ज्वर संयोगिक हों सब का इलाज योग्य नहीं किन्तु इसमें प्रत्येक ज्वर का अलग अलग इलाज करे और इमली का शर्बत और सादासिकजबीन कासनी के अर्क और गुलाब में मिलाकर दें और ३९ माशे, सिकंजबीन में ४॥ माशे, बगलोगनकी टिकिया मिलाकर दे और जो शक्ति बलवान हो वो हलकी दस्तावर दवाओं से दस्त लावे और जैसे सनाय, इमली, शीरखिश्त, तुरंजबीन, अनारदाना, गुलकन्द, और ऐसेही अन्य चीजें दे और जो पिघलना आरम्भ होगया हो या खांसी हो तो कपूरकी टिकिया खशखश के शर्बत में मिलाकर दे और हकीम जुरजानी कहता है कि जब बादी में कफ और पित्तज्वर मिल जाय तो इलाज भी मिश्रित करना चाहिये और हकीम को उचित है कि ध्यान दे कि कौनसा ज्वर बलवान है और किस मवाद से संयोगिक है इसीके अनुसार इलाज करें और मिश्रित चौथैया और पांचवें दिन के ज्वरों में उत्तम यह है कि

जाने की आज्ञा कुछ नहीं है और जहां कहीं कि सूजन खून के कारण अथवा पित्त के कारण से हो तो सुर्फा, काहू और तर धनिया के पानी में थोड़ा जौ का चून मिलाकर इस ज्वर में कपड़ा भरकर ठंडा करे और अंग पर जहां सूजन हो वहां रखते रहना उचित है ॥ *

॥ चौथी कहावत वबाई ज्वरों का वर्णन ॥

वबा का अर्थ हवा का बिगड़ जाना है और जानना चाहिये जैसा पानी एक जगह निशेष बंद रहने से अथवा किसी चीज के गलने से सड़ जाता है वैसे ही हवा भी देर तक पेड़ों में और गहराव में रहने से या बुरे भाफ के परमाणु और भाफों के मिलने से सड़ जाता है और जिस हवा में तरी अधिक होती है उस में सूखी हवा की अपेक्षा जल्दी दुर्गंधि आजाती है इसी लिये गर्मी की ऋतु में हवा गर्म और खुश्क होता है तब वबा बहुत कम होता है और प्रकट है कि शरीर और आत्मा में हवा का असर पूरा २ होता है फिर जब इन में सड़ाहट आती है तो दोष भी जल्दी सड़जाते हैं मुख्य कर वह दोष कि जो दिल के और पास हैं और हवा का बिगड़ना उस मनुष्य पर विशेष असर करता है जो संभोग बहुत करता है और उसके अंग निर्बल हों और अंग के रोमाञ्च खुले हों और शरीर में निकम्मे दोष भरे हों और वबा आने के चिन्ह यह हैं कि इस वर्ष की ऋतु अपनी असली दशा पर न हो और इस के सिवाय पुच्छल तारों की अधिकता और हवा में तरी और धरती में कीड़े मकोड़े की अधिकता, मेंह की न्यूनता और हवा में गदलापन जैसे एक दिन हवा में गुबार हो और एक दिन न हो और हमेशा बादल का सा न होना और दिन में गर्मी और रात में सर्दी धरती पर रहने वाले जीवों का भागना मूसे आदि का भाग आना यह सब वबा आने के चिन्ह हैं और बहुधा वबा गर्मी की ऋतु के अन्त में आती है और मृत्यु दायक ज्वर उत्पन्न करती है और वबाई ज्वर के जो चिन्ह हैं और यह चिन्ह कभी सब के सब एक मनुष्य में प्रकट होते हैं और कभी कोई २ चिन्ह होते हैं और उनके चिन्ह प्रकट होने की न्यूनता और अधिकता ज्वर के अनुसार होती है पहला चिन्ह यह है कि प्रत्यक्ष में शरीर बहुत गर्म न हो परन्तु दिल में चिन्ता, घबराहट और जाने कष्टात् हो। दूसरे यह है कि श्वास का आना जाना अपनी असली दशा से फिर जाय तो किसी किसी का श्वास तंग होजाता है और किसी का लगातार आने लगता है और किसी का ठंडा और किसी का दुर्गन्धित होता है और दुर्गन्धित श्वास मृत्यु का चिन्ह

जाने की आज्ञा कुछ नहीं है और जहां कहीं कि सूजन खून के कारण अथवा पित्त के कारण से हो तो सुर्फा, काहू और तर धनिया के पानी में थोड़ासा जौ का चून मिलाकर इस ज्वर में कपड़ा भरकर ठंडा करे और अंग पर जहां सूजन हो वहां रखते रहना उचित है ॥ *

॥ चौथी कहावत ववाई ज्वरों का वर्णन ॥

वबा का अर्थ हवा का बिगड़ जाना है और जानना चाहिये जैसा पानी एक जगह विशेष बंद रहने से अथवा किसी चीज के गलने से सड़ जाता है वैसे ही हवा भी देर तक पेड़ों में और गहराव में रहने से या बुरे भाफ के परमाणु और भाफों के मिलने से सड़ जाता है और जिस हवा में तरी अधिक होती है उस में सूखी हवा की अपेक्षा जल्दी दुर्गंधि आजाती है इसी लिये गर्मी की ऋतु में हवा गर्म और खुश्क होता है तब वबा बहुत कम होता है और प्रकट है कि शरीर और आत्मा में हवा का असर पूरा २ होता है फिर जब उन में सड़ाहट आती है तो दोष भी जल्दी सड़जाते हैं मुख्य कर वह दोष कि जो दिल के ओर पास हैं और हवा का बिगड़ना उस मनुष्य पर विशेष असर करता है जो संभोग बहुत करता है और उसके अंग निर्बल हों और अंग के रोमांच खुले हों और शरीर में निकम्मे दोष भरे हों और वबा आने के चिन्ह यह हैं कि इस वर्ष की ऋतु अपनी असली दशा पर न हो और इस के सिवाय पुच्छल तारों की अधिकता और हवा में तरी और धरती में कीड़े मकोड़े की अधिकता, मेह की न्यूनता और हवा में गदलापन जैसे एक दिन हवा में गुबार हो और एक दिन न हो और सवेरा बादल का सा न होना और दिन में गर्मी और रात में सर्दी धरती पर रहने वाले जीवों का रोग मूसे आदि का भाग जाना यह सब वबा आने के चिन्ह हैं और बहुधा वबा गर्मी की ऋतु के अन्त में आती है और मृत्यु दायक ज्वर उत्पन्न करती है और वबाई ज्वर के जो चिन्ह हैं और यह चिन्ह कभी सब के सब एक मनुष्य में प्रकट होते हैं और कभी कोई २ चिन्ह होते हैं और उसके चिन्ह प्रकट होने की न्यूनता और अधिकता मवाद के अनुसार होती है पहला चिन्ह यह है कि प्रत्यक्ष में, शरीर बहुत गर्म न हो परन्तु दिल में चिन्ता, घबराहट और जी में घबराहट हो। दूसरे यह है कि श्वास का आना जाना अपनी असली दशा से फिर जाय सो किसी किसी का श्वास तंग हो जाता है और किसी का लगातार आने लगता है और किसी का ठंढा और किसी का दुर्गंधित होता है और दुर्गन्धित श्वास मृत्यु का चिन्ह

के कपूरकी टिकिया मिलाकर पिवावें और जानलें कि बहुत ठंढा पानी एक बार प्यास भरके पिलाना फिर हर घडी घूट २ पिलाना अधिक लाभदायक है और भूखा प्यासा रहना विशेष हानिकारी है इसलिये हकीमोंने कहा है कि इस ज्वर में कई ग्रास उचित भोजनों के दें यद्यपि खानेकी इच्छा नहीं और जो भोजन कि जल्द पचजाते हैं और दुर्गन्धि को रोकतेहैं और शक्तियों को बलवान करते हैं उनको ग्रहण करे जैसे समाकिया और इज्जा सिया (वह भोजन जिसमें आलू बुखारा पड़ाहो) और हसरामिया (जिसमें कच्चा अगूर पडा हो) और जहां कहीं कि शक्ति निर्बल हो तो मुर्गी के बच्चे और दूसरे पक्षियों का मांस भी सुधार कर देसकते हैं और चदन, कपूर, अनार के छि-लका बेद के पत्ता, मोलसरी के पत्ता, आबनूस, झाऊ की लकड़ी और सेव से सदा धनी दें और चदन, कपूर, सिर्का और गुलाब छाती पर रखना और शीशे में डालकर हर घडी सूघना लाभदायक है परन्तु जबकि पेट फूला हो और हाथ पांव ठंढे होजांय और श्वास आनेके समय छाती उभरने लगे और नींद न आवे और बुद्धि बिगडजाय तो चाहिये कि ठंढ लेप छाती पर न ल-गावें और रोगी पर गर्म कपडा डालें जिससे भीतर से गर्मी ऊपर आवे और प्रगट हो कि इस रोगमें सम्पूर्ण उपायों से अधिक आवश्यक यह है कि दिल और दिमाग को पुष्टि करे और दुर्गन्धि को नष्ट करे और क्योंकि दुर्गंधि इस शरीर में अधिक गुण करती है कि जिसमें तरी अधिक होती है तो उचित है कि हर भोजन और हर दवा में भय करे और इसी प्रकार की बात है कि सदा घर में सुगन्धियों की धूनी देना विशेष लाभदायक है क्योंकि सु-गन्धित चीजों की धूनी हवा को सभालती है और इसके गुदकी भी लगी है और इसी तरह दिल और दिमाग को शान्ति देतीहै और शक्तियों को सुधारतीहै और दोषों की दुर्गंधि को नष्ट करती है परन्तु चाहिये कि अंगीठी अगर की अलग रहे और धूनी समान हो जैसे रोगी को इससे कोई हानि न पहुंचे और श्वास में तरी न हो (लाभ) ज्वर मिटजाने के पीछे साधारण मनुष्यों को उचित है कि जो शरीर में अधिक दोष हो तो उसको निकाल परन्तु बिना आवश्यकता दस्तों से कम करना अति उत्तम है क्योंकि बहुधा बिना आवश्यकता दस्त निकालना निर्बलता का करना है यद्यपि उदर शुद्ध दोष बदल उठते हैं और तबियत निर्बल होती जाती है और जो चीज कि शरीर के गंदापन को लाती है जैसे परिश्रम, जमाअ की अधिकता और

के कपूरकी टिकिया मिलाकर पिलावें और जानलें कि बहुत ठंढा पानी एक बार प्यास भरके पिलाना फिर हर घड़ी घूंट २ पिलाना अधिक लाभदायक है और भूखा प्यासा रहना विशेष हानिकारी है इसलिये हकीमोंने कहा है कि इस ज्वर में कई ग्रास उचित भोजनों के दें यद्यपि खानेकी इच्छा नहीं और जो भोजन कि जल्द पचजाते हैं और दुर्गन्धि को रोकतेहै और शक्तियों को बलवान करते हैं उनको ग्रहण करें जैसे समाकिया और इज्जा सिया (वह भोजन जिसमें आलू बुखारा पड़ाहो) और हमरासिया (जिसमें कच्चा अंगूर पड़ा हो) और जहां कहीं कि शक्ति निर्बल हो तो मुर्गी के बच्चे और दूसरे पक्षियों का मांस भी सुधार कर दसकते हैं और चंदन, कपूर, अनार के छिलका बेद के पत्ता, मौलसरी के पत्ता, आबनूस, झाऊ की लकड़ी और सेव से सदा धूनी दें और चंदन, कपूर, सिर्का और गुलाब छाती पर रखना और शीशे में डालकर हर घड़ी सूंघना लाभदायक है परन्तु जबकि पेट पका हो और हाथ पांव ठंढे होजांय और श्वास आनेके समय छाती उभरने लगे और नींद न आवे और बुद्धि बिगड़जाय तो चाहिये कि ठंढे लेप छाती पर न लगावें और रोगी पर गर्म कपड़ा डालें जिससे भीतर से गर्मी ऊपर आवे और प्रगट हो कि इस रोगमें सम्पूर्ण उपायों से अधिक आवश्यक यह है कि दिल और दिमाग को पुष्टि करें और दुर्गन्धि को नष्ट करें और क्योंकि दुर्गंधि इस शरीर में अधिक गुण करती है कि जितमें तरी अधिक होती है तो उचित है कि तर भोजन और तर हवा से बचा करें और इसी प्रकार की बात है कि सदा घर में सुगंधियों की धूनी देना विशेष लाभदायक है क्योंकि सुगंधित चीजों की धूनी हवा को सम्हालती है और इससे खुश्की भी होती है और इसी तरह दिल और दिमाग को शक्ति देतीहै और तरियों को सुखातीहै और दोषों की दुर्गंधि को नष्ट करती है परन्तु चाहिये कि अंगीठी आग की अलग रहे और धूनी समान हो जैसे रोगी को इससे कुछ हानि न पहुंचे और श्वास में तंगी न हो (लाभ) ज्वर मिटजाने के पीछे साधारण मनुष्यों को उचित है कि जो शरीर में अधिक दोष हों तो उनको निकाले परन्तु बिना आवश्यकता छाती न कम करना अति उत्तम है क्योंकि बहुधा बिना आवश्यकता दस्त निकालना किसीको न चाहिये क्योंकि उस हुए दोष बदल जाते हैं और तबियत निर्बल होजाती है और जो चीज कि शरीर के गंदांशों को हटाती है जैसे परिश्रम, स्नान की अधिकता और

के कपूरकी टिकिया मिलाकर पिवावें और जानलें कि बहुत ठंडा पानी एक बार प्यास भरके पिलाना फिर हर घडी घूट २ पिवाना अधिक लाभदायक है और भूखा प्यासा रहना विशेष हानिकारी है इसलिये हकीमोंने कहा है कि इस ज्वर में कई ग्रास उचित भोजनों के दें यद्यपि खानेकी इच्छा नहो और जो भोजन कि जल्द पचजाते हैं और दुर्गन्धि को रोकतेहैं और शक्तियों को बलवान करते हैं उनको ग्रहण करें जैसे समाकिया और इज्जा सिया (वह भोजन जिसमें आलू बुखारा पडाहो) और हसरामिया (जिसमें कच्चा अंगूर पड़ा हो) और जहां कहीं कि शक्ति निर्बल हो तो मुर्गी के बच्चे और दूसरे पक्षियों का मांस भी सुधार कर देसकते है और चदन, कपूर, अनार के छिलका वेद के पत्ता, मौलसरी के पत्ता, आवनूस, झाऊ की लकडी और सेव से सदा धूनी दें और चदन, कपूर, सिर्का और गुलाब छाती पर रखना और शीशे में डालकर हर घडी सूघना लाभदायक है परन्तु जबकि पेट कडा हो और हाथ पांव ठंडे होजाय और श्वास आनेके समय छाती उभरने लगे और नींद न आवे और बुद्धि बिगडजाय तो चाहिये कि ठंडे लेप छाती पर न लगावें और रोगी पर गर्म कपडा डाले जिससे भीतर से गर्मी ऊपर आवे और प्रगट हो कि इस रोगमें सम्पूर्ण उपायों से अधिक आवश्यक यह है कि दिल और दिमाग को पुष्टि करें और दुर्गन्धि को नष्ट करें और क्योंकि दुर्गंधि इस शरीर में अधिक गुण करती है कि जिसमें तरी अधिक होती है तो उचित है कि तर भोजन और तर हवा से भय करें और इसी प्रकार की बात है कि सदा घर में सुगंधियों की धूनी देना विशेष लाभदायक हैं क्योंकि सुगंधित चीजों की धूनी हवा को संभालती है और इसमें खुश्की भी लाती है और इसी तरह दिल और दिमाग को शक्ति देतीहै और तरियों को सुखातीहै और दोषों की दुर्गंधि को नष्ट करती है परन्तु चाहिये कि अगीठी अगर की अलग रहे और धूनी समान हो जैसे रोगी को इससे कोई हानि न पहुंचे और श्वास में तंगी न हो (लाभ) बवा मिटजाने के पीछे आरोग्य मनुष्यों को उचित है कि जो शरीर में अधिक दोष हो तो उसको निकाले परन्तु बिना आवश्यकता छोडने से कम करना अति उत्तम है क्योंकि बहुधा बिना आवश्यकता मवाद निकालना विपत्ति में डालता है क्योंकि ठहरे हुए दोष उबल उठते है और तबियत निर्बल होती जाती है और जो चीज कि शरीर के रोमाचों को खोलती है जैसे परिश्रम, सभोग की अधिकता और

के कपूरकी टिकिया मिलाकर पिावें और जानलें कि बहुत ठंढा पानी एक बार प्यास भरके पिलाना फिर हर घडी घूंट २ पिवाना अधिक लाभदायक है और भूखा प्यासा रहना विशेष हानिकारी है इसलिये हकीमोंने कहा है कि इस ज्वर में कई ग्रास उचित भोजनों के दें यद्यपि खानेकी इच्छा नहो और जो भोजन कि जल्द पचजाते हैं और दुर्गन्धि को रोकतेहै और शक्तियों को बलवान करते हैं उनको ग्रहण करै जैसे समाकिया और इज्जा सिया (वह भोजन जिसमें आलू बुखारा पड़ाहो) और हसरामिया (जिसमें कच्चा अंगूर पड़ा हो) और जहां कहीं कि शक्ति निर्बल हो तो मुर्गी के बच्चे और दूसरे पक्षियों का मांस भी सुधार कर देसकते है और चंदन, कपूर, अनार के छिलका वेद के पत्ता, मोलसरी के पत्ता, आवनूस, झाऊ की लकड़ी और सेव से सदां धूनी दें और चंदन, कपूर, सिर्का और गुलाब छाती पर रखना और शीशे में डालकर हर घडी सूंघना लाभदायक है परन्तु जबकि पेट कड़ा हो और हाथ पांव ठंडे होजाय और श्वास आनेके समय छाती उभरने लगे और नींद न आवे और बुद्धि बिगडजाय तो चाहिये कि ठंडे लेप छाती पर न लगावें और रोगी पर गर्म कपड़ा डालै जिससे भीतर से गर्मी ऊपर आवे और प्रगट हो कि इस रोगमें सम्पूर्ण उपायों से अधिक आवश्यक यह है कि दिल और दिमाग को पुष्टि करै और दुर्गन्धि को नष्ट करे और क्योंकि दुर्गंधि इस शरीर में अधिक गुण करती है कि जिसमें तरी अधिक होती है तो उचित है कि तर भोजन और तर हवा से भय करै और इसी प्रकार की बात है कि सदा घर में सुगन्धियों की धूनी देना विशेष लाभदायक हैं क्योंकि सुगंधित चीजों की धूनी हवा को संभालती है और इसमें सुरकी भी लाती है और इसी तरह दिल और दिमाग को शक्ति देतीहै और तरियों को सुखातीहै और दोषों की दुर्गंधि को नष्ट करती है परंतु चाहिये कि अंगीठी अगर की अलग रहै और धूनी समान हो जैसे रोगी को इससे कोई हानि न पहुंचे और श्वास में तंगी न हो (लाभ) बवा मिटजाने के पीछे आरोग्य मनुष्यों को उचित है कि जो शरीर में अधिक दोष हो तो उसको निकाले परंतु बिना आवश्यकता छोडने से कम करना अति उत्तम है क्योंकि बहुधा बिना आवश्यकता मवाद निकालना विपत्ति में डालता है क्योंकि ठहरे हुए दोष उबल उठते है और तबियत निर्बल होती जाती है और जो चीज कि शरीर के रोमांचों को खोलती है जैसे परिश्रम, संभोग की अधिकता और

से रोके और ठण्डे पानी से न्हाय और गर्म और मीठे भोजन से बचै ॥

॥ पांचवीं कहावत । चेचक और खसरे के ॥ ज्वरों का वर्णन

जानना चाहिये कि चेचक, और खसरे और फफोलों का वर्णन यद्यपि खाल के रोगों में अलग आवेगा परंतु इस जगह ज्वरोंका प्रकरण है जो ज्वर चेचक और खसरा मे होता है हकीमों ने उसका वर्णन करना उचित समझा है और यह दोनों खूनके उबलनेसे उत्पन्न होते है चाहे उसका उबाल तबियत के कारण से है जैसे कि लडकपनकी अवस्था में खूनके पकनेसे उत्पन्न होता है क्योंकि लडकपन में खून कच्चा और तर होता है और तर गर्म चीज का पकना और दशा बदलना विना इसबातके उचितनहीं कि उबलजाय और जब खून उबलने लगताहै तो बहुधा यह होताहै कि खाल में फुंसियां प्रगटहोती है और ऐसा कम होताहै कि जब खून उबलनेलगै और पकजाय तो खालपर कोई फुन्सी न निकले जैसा कि कुछ लडकों में देखाजाता है और चाहे जिसकेखूनका उबलना प्राकृतिक विधिपरहो जैसा कि बलवान शरीरमें बाहरी अथवा भीतरी कारणों से दोषोंका उबलना प्रगट होता है और यह दोनों बवाके रोगों में से है अर्थात् जब किसी देशमें प्रगट होते है तो इस ऋतुमें बहुत प्रजा इस रोगमें फंसी रहतीहै और इन दोनोंमें अन्तर यहहै कि चेचक जिसे माता कहते है इसका मवाद गर्म खून विशेष तरी लिये होताहै इसलिये उसका दाना बडा होता है जैसे मसूरका बडा दाना या इससे भी बडा दाना और शरीरसे उभरा होता है और जल्दी पीव लेआता है और आरम्भ में लाल होता है और मवाद के पकनेके समीप सफेदी लिये होताहै और कभी आरम्भमें ही सफेद या पीला निकलताहै और कम और फैलाहुआ होताहै और यह बहुत आरोग्य है मुख्य कर जो देहकी सब खालपर निकले और जल्द पकजाय और नोंकदार और आपसमें मिला हुआ और तोलमें अधिक होताहै और उसका रंगकाला और लाला लिये होताहै और पेटपर बहुत निकलते है और जो निकलने और पकनेमें देर लगाते है इनमें संदेह होताहै और ऐसाही जो मातासे खून टपके अथवा प्रथम फफोला निकले फिर ज्वर चढे तो बहुत बुराहै और इसी तरह जो फफोला निकलने के उपरांत ज्वर न उतरे तो अच्छा नहीं और कभी फफोला दुहेरा होताहै अर्थात् एक फुन्सीमें दूसरी फुन्सी होती है और खसरेका मवाद पित्ती खून बहुत निकम्मा सूखापन लिये होताहै और इसी

से रोके और ठण्डे पानी से न्हाय और गर्म और मीठे भोजन से बचे ॥

॥ पांचवीं कहावत । चेचक और खसरे के ॥ ज्वरों का वर्णन

जानना चाहिये कि चेचक, और खसरे और फफोलों का वर्णन यद्यपि खाल के रोगों में अलग आवेगा परन्तु इस जगह ज्वरोंका प्रकरण है जो ज्वर चेचक और खसरा मे होता है हकीमों ने उसका वर्णन करना उचित समझा है और यह दोनों खूनके उबलनेसे उत्पन्न होते है चाहे उसका उबाल तबियत के कारण से है जैसे कि लडकपनकी अवस्था में खूनके पकनेसे उत्पन्न होता है क्योंकि लडकपन में खून कच्चा और तर होता है और तर गर्म चीज का पकना और दशा बदलना बिना इसबातके उचितनहीं कि उबलजाय और जब खून उबलने लगताहै तो बहुधा यह होताहै कि खाल में फुंसियां प्रगटहोती हैं और ऐसा कम होताहै कि जब खून उबलनेलगै और पकजाय तो खालपर कोई फुन्सी न निकलै जैसा कि कुछ लडकों में देखाजाता है और चाहे जिसकेखूनका उबलना प्राकृतिक विधिपरहो जैसा कि बलवान शरीरमें बाहरी अथवा भीतरी कारणों से दोषोंका उबलना प्रगट होता है और यह दोनों ववाके रोगों में से है अर्थात् जब किसी देशमें प्रगट होते है तो इस ऋतुमें बहुत प्रजा इस रोगमें फंसी रहतीहै और इन दोनोंमें अन्तर यहहै कि चेचक जिसे माता कहते हैं इसका मवाद गर्म खून विशेष तरी लिये होताहै इसलिये उसका दाना बडा होता है जैसे मसूरका बडा दाना या इससे भी बडा दाना और शरीरसे उभरा होता है और जल्दी पीव लेआता है और आरम्भ में लाल होता है और मवाद के पकनेके समीप सफेदी लिये होताहै और कभी आरम्भमें ही सफेद या पीला निकलताहै और कम और फैलाहुआ होताहै और यह बहुत आरोग्य है मुख्य कर जो देहकी सब खालपर निकले और जल्द पकजाय और नोंकदार और आपसमें मिला हुआ और तोलमें अधिक होताहै और उसका रंगकाला और लाला लिये होताहै और पेटपर बहुत निकलते है और जो निकलने और पकनेमें देर लगाते है इनमें सन्देह होताहै और ऐसाही जो मातासे खून टपके अथवा प्रथम फफोला निकले फिर ज्वर चढे तो बहुत बुराहै और इसी तरह जो फफोला निकलने के उपरान्त ज्वर न उतरे तो अच्छा नहीं और कभी फफोला दुहेरा होताहै अर्थात् एक फुन्सीमें दूसरी फुन्सी होती है और खसरेका मवाद पित्ती खून बहुत निकम्मा रूखापन लिये होताहै और इसी

से कुछ पित्तको कम करें और जो तबियत नर्म न हो तो कम करने में आरूढ हों और फस्द न खोलें और बारह वर्ष से कम अवस्था वाले की फस्द न खोलनी चाहिये और इसी तरह जिसकी अवस्था एक वर्ष की न हो पछने न लगावे और जब खून निकले तो उसके उफान को देखें कि अधिक है या नहीं जो उफान अधिक है तो वे चीज खवावे जो खूनको गाढा करतीहै और उस में सर्दी पहुचती है और उफान को थामती है जिससे उसका उफान थोडासा दवै और जब खून में अधिक उफान नहीं आता तो गाढा करने और सर्दी पहुचाने की आवश्यकता नहीं किन्तु कोई २ माता और खसरे के ज्वरों में यद्यपि फुन्सियां प्रगट न हों किसी दशा में गाढा करन और सर्दी पहुचने की आज्ञा नहीं देते इस लिये कि जब खून उबलने लगता है तो तबियत उसके निकालने के लिये परिश्रम करती है ऐसे समय में गाढी और ठढी चीजों की तरफ आरूढ होना तबियत को मैल के दूर करने से और अपने काम से रोकती है जिस तरह पर कि हो ठढी चीजा के देने में अधिक परिश्रम न करना चाहिये मुख्यकर जो मवाद के निकलने का समय न हो और उत्तम यह है कि इस ज्वर में तबियत को नर्म न करै परन्तु खसरे के ज्वर में पित्त की बहुत अधिकता और तबियत में बहुत अजीर्ण हो अथवा फफोले के ज्वर में जो माता का भेद है अर्थात् शरीर में मवाद भरा मालूम हो परन्तु खाल का रग अधिक लाल न हो और ज्वर की अधिकता हो बहुत भडकाव हो और नाडी लहरदार हो इस दशा में तबियत का मुलायम करना अवश्य है किंतु माता के ज्वर में फस्द खोलने की आवश्यकता कमहोती है और दस्तों की विशेष और जो कुछ कि फस्द के खोले और ठढी चीजों के देने और खून के गाढा करने और तबियत को मुलायम करने का वर्णन आया है यह उस समय तक है कि फफोले और खसरा प्रगट न हो क्यों कि जब प्रगट होजाते हैं या ठढी चीजों और गाढा करने वाली और नर्म करने वाली चीजों से बचना योग्य है क्योंकि यह सम्पूर्ण उपाय तबियत कीइच्छा के विरुद्ध है और फस्द का खोलना और पछने का लगाना भी वार्जित है परन्तु जहां कहां कि खून अधिकहो और अवस्थाजवान और स्वभाव और दशा ठीकहो इसदशा में सिवाय इसके कि फुन्सियों प्रगटहों फस्दखोलना और कुछ खून निकालना योग्यहै जिससे रोग हलका होजाय और मवाद थोडा कम होजाय और जानना चाहिये कि जब फुन्सियां प्रगट हो तो चाहिये कि रोगी को नर्म और गर्म कपडा उढाये रहै और मकान की हवा को ठीक करै जिससे अग के रोमांच खुले और थोडासा पसीना

से कुछ पित्तको कम करें और जो तबियत नर्म न हो तो कम करने में आरूढ़ हों और फस्द न खोलें और बारह वर्ष से कम अवस्था वाले की फस्द न खोलनी चाहिये और इसी तरह जिसकी अवस्था एक वर्ष की न हो पछने न लगावे और जब खून निकले तो उसके उफान को देखें कि अधिक है या नहीं जो उफान अधिक है तो वे चीज खवावे जो खूनको गाढा करतीहै और उस में सर्दी पहुचती है और उफान को थामती है जिससे उसका उफान थोडासा दबै और जब खून में अधिक उफान नहीं आता तो गाढा करने और सर्दी पहुचाने की आवश्यकता नहीं किन्तु कोई २ माता और खसरे के ज्वरों में यद्यपि फुन्सियां प्रगट न हों किसी दशा में गाढा करने और सर्दी पहुचने की आज्ञा नहीं देते इस लिये कि जब खून उबलने लगता है तो तबियत उसके निकालने के लिये परिश्रम करती है ऐसे समय में गाढी और ठंडी चीजों की तरफ आरूढ होना तबियत को मैल के दूर करने से और अपने काम से रोकती है जिस तरह पर कि हो ठंडी चीजा के देने में अधिक परिश्रम न करना चाहिये मुख्यकर जो मवाद के निकलने का समय न हो और उत्तम यह है कि इस ज्वर में तबियत को नर्म न करे परन्तु खसरे के ज्वर में पित्त की बहुत अधिकता और तबियत में बहुत अजीर्ण हो अथवा फफोले के ज्वर में जो माता का भेद है अर्थात् शरीर में मवाद भरा मालूम हो परन्तु खाल का रंग अधिक लाल न हो और ज्वर की अधिकता हो बहुत भडकाव हो और नाडी लहरदार हो इस दशा में तबियत का मुलायम करना अवश्य है किंतु माता के ज्वर में फस्द खोलने की आवश्यकता कमहोती है और दस्तों की विशेष और जो कुछ कि फस्द के खोलने और ठंडी चीजों के देने और खून के गाढा करने और तबियत को मुलायम करने का वर्णन आया है यह उस समय तक है कि फफोले और खसरा प्रगट न हों क्यों कि जब प्रगट होजाते हैं या ठंडी चीजों और गाढा करने वाली और नर्म करने वाली चीजों से बचना योग्य है क्योंकि यह सम्पूर्ण उपाय तबियत कीइच्छा के विरुद्ध है और फस्द का खोलना और पछने का लगाना भी वार्जित है परन्तु जहां कहीं कि खून अधिकहो और अवस्थाजवान और स्वभाव और दशा ठीकहो इसदशा में सिवाय इसके कि फुन्सियों प्रगटहों फस्दखोलना और कुछ खून निकालना योग्यहै जिससे रोग हलका होजाय और मवाद थोडा कम होजाय और जानना चाहिये कि जब फुन्सियां प्रगट हो तो चाहिये कि रोगी को नर्म और गर्म कपडा उढाये रहै और मकान की हवा को ठीक करे जिससे अंग के रोमांच खुले और थोडासा पसीना

कपड़ा डालें और एक गाढ़ा कपड़ा गर्दन के नीचे से शरीर के और पास डाले जिस से उसकी भाफ सम्पूर्ण शरीर को लगे और मुख और सिर तक न पहुचे परन्तु जो नाड़ी और श्वास कठिन से आते हों और अचेतता और गर्मी अधिक और जीभ में कालापन प्रकट हो तो कोई गर्म चीज न दें और पहले उपायों पर समाप्त कर अर्थात् शरीर पर कपड़ा रक्खें और मकान की हवा समान करे और ठण्डा पानी घूट २ दें और ठण्डी सुगन्धि सुंघावे और जो इसी तरह गर्म पानी से पसीना लावे जिस प्रकार पर कि ऊपर वर्णन हुआ है तो उचित है परन्तु ऐसी तरह पर चाहिये कि घबराहट और श्वास में तंगी अधिक न हो और ऐसेही जब फुन्सियां प्रकट हो और फिर भीतर की तरफ दबने और छिपने लगे और छिप जाय तो बुरी है चाहिये कि तबियत को पुष्ट करें जिस से मवाद भीतर न जा सके और इस काम के लिये जो कुछ फुन्सियों के जल्द निकलने में कहा है लाभदायक है और तर सौंफ का शीरा या खसा और केवल अजमोद के बीज का शीरा या खसा तथा दोनों मिलाकर पिवाना लाभदायक है (लाभ) जब कि फफोले तथा खसरे में अधिक गर्मी हो और कपड़ा उढाने से निर्बलता तथा अचेतता उत्पन्न हो तो हवा ठण्डी करे और कपूर, चन्दन सुंघावे परन्तु शरीर को ढके रक्खे जिस से दोनों बात, प्राप्त हों अर्थात् ठंडी हवा के नाक में जाने से और ठंडी चीजों के कारण से भीतर की गर्मी को आराम हो और दिल गर्म न हो और शरीर पर गर्म कपडे के रहने से रोमांच बंद न हो और जो सिवाय इसके कि हवा को सुधारे और ठंडी सुगन्धि सुंघावे फिर भी आराम न पावे तो कभी कभी छाती और दिल की जगह पर कपड़ा हलका कर दें और सावधानी करे कि इस जगह के सिवाय और कहीं सर्दी न पहुचे और जब कि फफोले निकल आवें और घबड़ाहट और भीतर की गर्मी कम न हो और जीभ काली हो उन दशाओं के सिवाय फिर भी शरीर का गर्म रखना बहुत बड़ी भूल है और जब कि अचेतता आजाय तो दिल की रक्षा और अचेतता के इलाज के सिवाय और कुछ चिन्ता न करे और जब फफोला या खसरा बिल्कुल निकल आवे तो ठंडे शर्बत आवश्यकता के अनुसार दें और जब तक कि शक्ति की निर्बलता और गर्मी का गुण बाकी रहे तब तक पथ्य से रहे जिस से रोग फिर न आजाय और खाने पीने के उपाय अलग लाभ में लिखे जायगे और जानले कि खसरे के अन्त में दस्तों का बड़ा भय है सो जो फफाले और खसरे के अन्त में पेट नर्म हो तो इस्तुल्लास या

कपडा डालें और एक गाढा कपडा गर्दन के नीचे से शरीर के और पास डाले जिस से उसकी भाफ सम्पूर्ण शरीर को लगे और मुख और सिर तक न पहुचे परतु जो नाडी और श्वास कठिन से आते हों और अचेतता और गर्मी अधिक और जीभ में कालापन प्रकट हो तो कोई गर्म चीज न दें और पहले उपायों पर समाप्त कर अर्थात् शरीर पर कपडा रक्खें और मकान की हवा समान करे और ठण्डा पानी घूट २ दें और ठण्डी सुगन्धि सुघावे और जो इसी तरह गर्म पानी से पसीना लावे जिस प्रकार पर कि ऊपर वर्णन हुआ है तो उचित है परन्तु ऐसी तरह पर चाहिये कि घवराहट और श्वास में तगी अधिक न हो और ऐसेही जव फुन्सियां प्रकट हो और फिर भीतर की तरफ दवने और छिपने लगे और छिप जाय तो बुरी है चाहिये कि तबियत को पुष्ट करे जिस से मवाद भीतर न जा सके और इस काम के लिये जो कुछ फुन्सियों के जल्द निकलने में कहा है लाभदायक है और तर सौंफ का शीरा या खसा और केवल अजमोद के वीज का शीरा या खसा तथा दोनों मिलाकर पिवाना लाभदायक है (लाभ) जव कि फफोले तथा खसरे में अधिक गर्मी हो और कपडा उढाने से निर्बलता तथा अचेतता उत्पन्न हो तो हवा ठण्डी करे और कपूर, चन्दन सुघावे परतु शरीर को ढके रक्खे जिस से दोनों वात, प्राप्त हों अर्थात् ठडी हवा के नाक में जाने से और ठडी चीजों के कारण से भीतर की गर्मी को आराम हो और दिल गर्म न हो और शरीर पर गर्म कपडे के रहने से रोमांच वद न हो और जो सिवाय इसके कि हवा को सुधारे और ठडी सुगन्धि सुघावे फिर भी आराम न पावे तो कभी कभी छाती और दिल की जगह पर कपडा हलका कर दें और सावधानी करे कि इस जगह के सिवाय और कहीं सर्दी न पहुचे और जव कि फफोले निकल आवें और घवडाहट और भीतर की गर्मी कम न हो और जीभ काली हो उन दशाओं के सिवाय फिर भी शरीर का गर्म रखना बहुत वडी भूल है और जव कि अचेतता आजाय तो दिल की रक्षा और अचेतता के इलाज के सिवाय और कुछ चिन्ता न करे और जव फफोला या खसरा विल्कुल निकल आवे तो ठडे शर्वत आवश्यकता के अनुसार दें और जव तक कि शक्ति की निर्बलता और गर्मी का गुण वाकी रहे तब तक पथ्य से रहे जिस से रोग फिर न आजाय और खाने पीने के उपाय अलग लाभ में लिखे जायगे और जानले कि खसरे के अन्त में दस्तों का बडा भय है सो जो फफोले और खसरे के अन्त में पेट नर्म हो तो हब्बुल्लास या

प्रमाण से गद्दीपर रखकर पट्टी से बांधे जिससे आंखको दवाएँ रक्खे और कभी २ खोलें और फिर बांधलेंऔर नाककी रक्षा यहहै कि सिर्का और गुलाब अथवा केवल सिर्का लेकर हरघडी कई बूंदें नाकमें डालें अथवा रोगी अपने आप नाक में सुडकले और जो चन्दन और मामीसाकी सलाई, कचे अगूरके पानी में सलाई बनाकर उसको गुलाब तथा पानी में घिसकर नाक से सुडकै तथा नाकमें टपकावे सो लाभदायक है और गुलरोगन तथा मौलसरी का तेल थोडा कपूर मिलाकर डालना और नाकके भीतर मलना लाभदायक है और गलेकी रक्षा यह है कि जब फफोला प्रगटहो और खसरे वा माताके ज्वरका निर्णयहो तो तुर्त आज्ञादें कि अनारके दाने सहित चबावे और उसका अर्क हरघडी निगलता रहै और खरनूबके शर्बत से कुल्लाकरें और जो तुतरुग गुलाब के फूल,छिली मसूर, गुलाब में औटाकर छानकर इससे कुल्लेकरें तो अधिक उत्तम है और बहुत ठंढे पानी से कुल्ला करना अधिक लाभदायक है मुख्यकर जो इसमें गुलाब मिलावें और अनार का रुब्ब और शहतूतका रुब्ब लाभदायकहै और फेंफडेकी रक्षा यहहै कि जब फफोला शरीरमें प्रगटहों और छाती और शब्दमें खुरखुरापन और अधिक गर्मी प्रगट न हो और तबियत नर्म न हो तो थोडा २ मक्खन और बूरा चटावे यह बहुत लाभदायक है और गर्मी की अधिकताहो तो ईसबगोल और बिहीदाने का लुआब कन्द और बादामका तेल दें और बादाम कूटकर मुखमें रखना लाभ करता है और यह लऊक (चटनी) लाभदायक है (विधि) मीठी घीआके बीजकी मिंगी दो भाग, सफेद बादाम की मिंगी १ भाग, कन्द ३ भाग, कतीरा १ भाग कूट छानकर ईसबगोल का लुआब अथवा बिहीदानेका लुआब मिलाकर देवे और जो तबियत नर्महो तो बबूलका गोंद, भुने बादामकी मिंगी, ककडी खीरेके भुने हुए बीजों की मिंगी और भुनाहुआ नशास्ता लेकर भुनीहुई ईसबगोल के लुआब में चटनी बनावे और जोडोंकी रक्षा यहहै कि चन्दन और मामीसा की सलाई भुनी हुई गिलेइ-रमनी, सूखे गुलाबके फूल और थोडा कपूर गुलाबमें पीसलें और थोडा सिर्का इसपर बुरककर जोडकी जगह पर लेपकरें और जोडपर कोई बडा फोडा उत्पन्न हो तो जल्द छीलडाले जिससे उसका पीब निकलजाय फिर घावके भरनेका उपायकरें और आंतोंकी रक्षा यहहै कि मोरसरीकी शराब वंशलोचनकी टिकिया और बिहीका रुब्ब प्रतिदिन दियाकरें मुख्यकर जब कि फफोलेकी न्यूनताहो इसलिये जब फफोला ऊपरके शरीर में कम होते हैं तो कभी मवादका शेष आंतों

प्रमाण से गद्दीपर रखकर पट्टी से बांधये जिससे आंखको दवाएँ रक्खै और कभी २ खोलें और फिर बांधलेंऔर नाककी रक्षा यहहै कि सिर्का और गुलाव अथवा केवल सिर्का लेकर हरघड़ी कई बूंदें नाकमें डालें अथवा रोगी अपने आप नाक में सुड़कले और जो चन्दन और मामीसाकी सलाई, कच्चे अंगूरके पानी में सलाई बनाकर उसको गुलाब तथा पानी में घिसकर नाक से सुड़कै तथा नाकमें टपकावे तो लाभदायक है और गुलरोगन तथा मौलसरी का तेल थोड़ा कपूर मिलाकर डालना और नाकके भीतर मलना लाभदायक है और गलेकी रक्षा यह है कि जब फफोला प्रगटहो और खसरे वा माताके ज्वरका निर्णयहो तो तुर्त आज्ञावें कि अनारके दाने सहित चबावे और उसका अर्क हरघड़ी निगलता रहे और खरनूबके शर्बत से कुल्लाकरें और जो बुतरुग गुलाब के फूल,छिली मसूर, गुलाब में औटाकर छानकर इससे कुल्लेकरें तो अधिक उत्तम है और बहुत ठंढे पानी से कुल्ला करना अधिक लाभदायक है मुख्यकर जो इसमें गुलाब मिलावें और अनार का रुब्ब और शहतूतका रुब्ब लाभदा-यकहै और फेंफड़ेकी रक्षा यहहै कि जब फफोला शरीरमें प्रगटहों और छाती और शब्दमें खुरखुरापन और अधिक गर्मी प्रगट न हो और तबियत नर्म न हो तो थोड़ा २ मक्खन और बूरा चटावे यह बहुत लाभदायक है और गर्मी की अधिकताहो तो ईसबगोल और बिहीदाने का लुआब कन्द और बादामका तेल दें और बादाम कूटकर मुखमें रखना लाभ करता है और यह लऊक (चटनी) लाभदायक है (विधि) मीठी घीआके बीजकी मिंगी दो भाग, सफेद बादाम की मिंगी १ भाग, कन्द ३ भाग, कतीरा १ भाग कूट छानकर ईसबगोल का लुआब अथवा बिहीदानेका लुआब मिलाकर देवे और जो तबियत नर्महो तो बबूलका गोंद, भुने बादामकी मिंगी, ककड़ी खीरेके भुने हुए बीजों की मिंगी और भुनाहुआ नशास्ता लेकर भुनीहुई ईसबगोल के लुआब में चटनी बनावें और जोड़ोंकी रक्षा यहहै कि चन्दन और मामीसा की सलाई भुनी हुई गिलेइ-रमनी, सूखे गुलाबके फूल और थोड़ा कपूर गुलाबमें पीसलें और थोड़ा सिर्का इसपर बुरककर जोड़की जगह पर लेपकरें और जोड़पर कोई बड़ा फोड़ा उत्पन्न हो तो जल्द छीलडालें जिससे उसका पीव निकलजाय फिर घावके भरनेका उपायकरें और आंतोंकी रक्षा यहहै कि मोरसरीकी शराब वंशलोचनकी टिकिया और बिहीका रुब्ब प्रतिदिन दियाकरें मुख्यकर जब कि फफोलेकी न्यूनताहो इसलिये जब फफोला ऊपरके शरीर में कम होते हैं तो कभी प्रवादका शेष आंतों

उनके माता नहीं निकली उनकी फस्द खोलें और जो बारह वर्ष से कम हो उनके पछने लगावें अथवा जोंक लगावें और जो कुछ दवा की सावधानी में लिखा है काम में लावें और जानलें कि ठंढे भोजन जो ठंढी प्रकृतिके हों और ठंढे शर्बत जैसे उन्नाब का शर्बत और सिकंजबीन आदि ईसबगोल और बूरा आदि और गाजर का शर्बत और वंशलोचन की फक्की और कपूर की टिकिया आदि का खवाना अधिक लाभदायक है और योग्य है कि इन दिनों में लड़कों और जवानों को जिनके माता और खसरा न निकला हो दूध और मिठाई, शराब, मांस और बैंगन आदि गर्म भोजनों और गर्म मेवाओं से जो कि खून बढ़ाते हैं मुख्यकर छुआरा और खरबूजा और शहद अंजीर और अंगूर के खाने से वर्जित रक्खें और ऐसेही परिश्रम महनत संभोग, धूप, आग, की गर्मी और खाक धूलमें और बन्द पानी के पीने से बचे और कभी २ मेवाओं के पानी से तबियत को नर्म करें और तबियत में अजीर्ण न रक्खें और ठंढे साग और खट्टी चीजें लाभदायक हैं । और मांस को बिना खटाई हरे साग मिलाकर खाना न चाहिये (लाभ)बहुधा ऐसा होता है कि फफोला निकलकर अपने आप अच्छा होजाय और फफोलेके आर पकाने खुश्क करने और खुरन्ड गिराने की आवश्यकता न पड़े और कभी इन उपायों की आवश्यकता पड़ती है और पकाने सुखाने और खुरंड गिराने का उपाय फफोले के चिन्ह के नष्ट करने के उपाय सहित माता और खसरे की कहावत में वर्णन किया जायगा जहां कि मत्यक्ष रोगोंको लिखा है । छटी कहावत उस ज्वर के वर्णन में है जो अचेतता और निर्बलता उत्पन्न करता है वह दो प्रकार का होताहै । पहला वह है कि कच्चे कफसे उत्पन्नहो और यह इस प्रकार पर है कि कच्चा कफ शरीर में बढ़कर सड़जाय तब ज्वर के उत्पन्न होनेसे मवाद हिलकर थोड़ासा दिलकी तरफ और उसके आर पासम गिरै और आत्मको ठंढा कर इस कारण से शक्ति निर्बल होकर अचेतता उत्पन्न हो और कदाचित् आमाशयके मुखकी निर्बलता से अचेतता उत्पन्नहो और कफ वाले ज्वर आमाशयके मुखकी निर्बलतासे युक्त होते हैं और जहां कहीं आमाशयका मुखभी निर्बल होताहै और मवाद भी दिलपर गिरताहै तो ज्वर अधिक होता है क्योंकि दो कारण इकठ्ठ होजाते हैं और वह कफ वाला ज्वर जिसके कारण से अचेतता उत्पन्नहो उसका यह चिन्ह है कि शरीर ढीलाहो और मुख भरभरा हो और कफ वाले ज्वरकी बारी पर इसकी बारीहो और रोगी के

उनके माता नहीं निकली उनकी फस्द खोलें और जो बारह बर्ष से कम हो उनके पछने लगावें अथवा जोंक लगावें और जो कुछ दवा की सावधानी में लिखा है काम में लावें और जानलें कि ठंडे भोजन जो ठंडी प्रकृतिके हों और ठंडे शर्बत जैसे उन्नाब का शर्बत और सिकंजबीन आदि ईसबगोल और बूरा आदि और गाजर का शर्बत और बंशलोचन की फक्की और कपूर की टिकिया आदि का खवाना अधिक लाभदायक है और योग्य है कि इन दिनों में लड़कों और जवानों को जिनके माता और खसरा न निकला हो दूध और मिठाई, शराब, मांस और बैंगन आदि गर्म भोजनों और गर्म मेवाओं से जो कि खून बढ़ाते हैं मुख्यकर छुआरा और खरबूजा और शहद अजीर और अंगूर के खाने से वर्जित रक्खें और ऐसेही परिश्रम महनत संभोग, धूप, आग, की गर्मी और खाक धूलमें और बन्द पानी के पीने से बचे और कभी २ मेवाओं के पानी से तबियत को नर्म करें और तबियत में अजीर्ण न रक्खें और ठंडे साग और खट्टी चीजें लाभदायक हैं । और मांस को बिना खटाई हरे साग मिलाकर खाना न चाहिये (लाभ)बहुधा ऐसा होता है कि फफोला निकलकर अपने आप अच्छा होजाय और फफोलेक आर पकाने खुश्क करने और खुरण्ड गिराने की आवश्यकता न पड़े और कभी इन उपायों की आवश्यकता पड़ती है और पकाने सुखाने और खुरंड गिराने का उपाय फफोले के चिन्ह के नष्ट करने के उपाय सहित माता और खसरे की कहावत में वर्णन किया जायगा जहां कि मत्यक्ष रोगों को लिखा है । छटी कहावत उस ज्वर के वर्णन में है जो अचेतता और निर्बलता उत्पन्न करता है वह दो प्रकार का होताहै । पहला वह है कि कच्चे कफसे उत्पन्नहो और वह इस प्रकार पर है कि कच्चा कफ शरीर में बढ़कर सड़जाय तब ज्वर के उत्पन्न होनेमें मवाद हिलकर थोड़ासा दिलकी तरफ और उसके आर पासम गिरे और आत्म - को ठंडा कर इस कारण स शक्ति निर्बल होकर अचेतता उत्पन्न हो और कदाचित् आमाशयके मुखकी निर्बलता से अचेतता उत्पन्नहो और कफ वाले ज्वर आमाशयके मुखकी निर्बलतासे युक्त होते हैं और जहां कहीं आमाशयका मुखभी निर्बल होताहै और मवाद भी दिलपर गिरताहै तो ज्वर अधिक होता ह क्योंकि दो कारण इकठे होजाते हैं और वह कफ वाला ज्वर जिसके कारण से अचेतता उत्पन्नहो उसका यह चिन्ह है कि शरीर ढीलाहो और मुख भरभरा हो और कफ वाले ज्वरकी ,बारी पर इसकी बारीहो और रोगी के

कि मवाद की नर्मी हो और गर्म न होजाय और ऐसे भोजन तथा शर्बत दें जो मवाद के नर्म करने में और तेजी में कम हो और ऋतु और रोग और प्रकृति की गर्मी की न्यूनता और अधिकता देखकर उस के अनुसार मवाद के नर्म करने वाली चीजों की तेजी में न्यूनता कर सकते है और इस जगह उत्तम उपाय खुरखुरे हाथों से अथवा और कई तरह से मलना है जिस से दोष बिना कष्ट नर्म होजाय और जिस को बिना तेल मलना अच्छा न मालूम हो तो सैरा का तेल और ताजा तिली का तेल और इस के सिवाय जिस में अजीर्ण न हो और ठण्डा न हो जैसे जैतून का तेल और गुल रोगन मलना चाहिये और मलने की यह विधि है कि प्रथम पिण्डलियों को घुटने से पांवों तक मलैं फिर जांघों को ऊपर से नीचे की तरफ फिर हाथों को मूढों से हथेली तक उस के उपरांत पीठ और छाती को ऊपर से नीचे की तरफ फिर पांव का मलना आरम्भ करें इसी तरह से जो लिखा गया है वैसेही करते रहें यहां तक कि खाल लाल होजाय और रोगी के अचेत होने का भय हो और ऐसा चाहिये कि रोगी को आधा समय मलने में खर्च हो और आधा सोने में और इस को ऐसे स्थान न ठहरावे जो गर्मी और सर्दी में समान हो और जो हवा ठंडी हो तो गर्मी लिये करे और समान नींद लाभदायक है और जो अधिक हो तो हानि है और ठंडा पानी न देवें और जो उसको स्वाभाविक है और गर्म ऋतु है तो सिकजबीन ठंडे पानी में मिलाकर दें और जाड़ों में सिकजबीन गर्म पानी में और केवल गर्म पानी देना चाहिये और जब तक उचित हो किसी प्रकार का पानी सिकजबीन के सिवाय न दे और समान न्हाने का स्थान लाभदायक है और जिस को वमन सुगमता से आती है तो आज्ञा दें कि वमन विशेष गुणकारी है और शहद की बनी सिकजबीन ३॥ माशे अजमोद के बीज के साथ और शहद का पानी ३॥ माशे जूफा के साथ प्रति दिन प्रात काल के समय देना लाभदायक है और जो ऋतु बहुत गर्म न हो तो देवे (लाभ) इस रोग में फस्द खोलना किसी तरह योग्य नहीं क्यों-कि रोग का कारण कच्चा मवाद है और खून के निकलने से शरीर ठंडा हो-जाता है और दोष का कच्चापन अधिक होता है और पचाव नष्ट होजाता है (सूचना) जहां कहीं भीतर सूजन होतो अगूग वा मुसाह्लिस वा शराब वा वमन की आज्ञा नहीं किंतु कोई इलाज करना योग्य नहीं क्यों कि बचने की आशा नहीं रहती तथापि उसका उपाय हकीम की सम्मति पर निर्भर है और जो

कि मवाद की नर्मी हो और गर्म न होजाय और ऐसे भोजन तथा शर्बत दें जो मवाद के नर्म करने में और तेजी में कम हो और ऋतु और रोग और प्रकृति की गर्मी की न्यूनता और अधिकता देखकर उस के अनुसार मवाद के नर्म करने वाली चीजों की तेजी में न्यूनता कर सकते है और इस जगह उत्तम उपाय खुरखुरे हाथों से अथवा और कई तरह से मलना है जिस से दोष बिना कष्ट नर्म होजाय और जिस को बिना तेल मलना अच्छा न मालूम हो तो सैरा का तेल और ताजा तिली का तेल और इस के सिवाय जिस में अजीर्ण न हो और ठण्डा न हो जैसे जैतून का तेल और गुल रोगन मलना चाहिये और मलने की यह विधि है कि प्रथम पिण्डलियों को घुटने से पांवों तक मलैं फिर जाघों को ऊपर से नीचे की तरफ फिर हाथों को मूढों से हथेली तक उस के उपरांत पीठ और छाती को ऊपर से नीचे की तरफ फिर पांव का मलना आरम्भ करें इसी तरह से जो लिखा गया है वैसेही करते रहै यहा तक कि खाल लाल होजाय और रोगी के अचेत होने का भय हो और ऐसा चाहिये कि रोगी को आधा समय मलने में खर्च हो और आधा सोने में और इस को ऐसे स्थान न ठहरावे जो गर्मी और सर्दी में समान हो और जो हवा ठंडी हो तो गर्मी लिये करे और समान नींद लाभदायक है और जो अधिक हो तो हानि है और ठंडा पानी न देवें और जो उसको स्वाभाविक है और गर्म ऋतु है तो सिकजवीन ठंडे पानी में मिलाकर दें और जाड़ों में सिकजवीन गर्म पानी में और केवल गर्म पानी देना चाहिये और जब तक उचित हो किसी प्रकार का पानी सिकजवीन के सिवाय न दे और समान न्हाने का स्थान लाभदायक है और जिस को वमन सुगमता से आती है तो आज्ञा दें कि वमन विशेष गुणकारी है और शहद की बनी सिकजवीन ३॥ माशे अजमोद के बीज के साथ और शहद का पानी ३॥ माशे जूफा के साथ प्रति दिन प्रात काल के समय देना लाभदायक है और जो ऋतु बहुत गर्म न हो तो देवे (लाभ) इस रोग में फस्द खोलना किसी तरह योग्य नहीं क्यों-कि रोग का कारण कच्चा मवाद है और खून के निकलने से शरीर ठंडा हो-जाता है और दोष का कच्चापन अधिक होता है और पचाव नष्ट होजाता है (सूचना) जहां कहीं भीतर सूजन होतो अगूर वा मुसह्लिस वा शराब वा वमन की आज्ञा नहीं किंतु कोई इलाज करना योग्य नहीं क्यों कि बचने की आशा नहीं रहती तथापि उसका उपाय हकीम की सम्मति पर निर्भर है और जो

तीसरा प्रकरण विषम ज्वरका वर्णन ।

इस ज्वर का यह अर्थ है कि ऊपरी गर्मी पोषक अगों में मुख्यकर दिल में चिपट जाय और शरीर की तीनों तरियों को नष्ट करदें और जानना चाहिये कि मनुष्यके शरीर में तीन प्रकार की तरी है कि जब उनमें से एक खर्च होजाती है तब बिषम ज्वर उत्पन्न होता है और कोष में दिक का अर्थ ठहरने और नर्म होने का है और इस कारण से कि इस ज्वर की गर्मी ठहरने वाली और नर्म होती है और दुबला होना उचित है इसका यह नाम रक्खा गया है (लाभ) तीनों तरियों का वर्णन। पहली वह है कि ओस की तरह छोटी २ रगों में और सम्पूर्ण पोषक अगों में बिखरी हुई है और उसका यह लाभ है कि जब भोजन न मिलै तो वह पचे हुए भोजनका काम देने लगे दूसरी तरी वहहै कि अगोंमें प्रवेश करके वैसी ही बन गई है परन्तु अभी अधिक नहीं जमी और यह तरी अधिक गर्मी के पचने से और अधिक परिश्रम से गलती है और नष्ट होजाती है तीसरी तरी वहहै जिससे पोषक अगों का खमीर बनता है और शरीर के सम्पूर्ण अग इसी के कारण से मिले हुएह जब कि यह तरी नष्ट होजाती है तो सम्पूर्ण अगों का मिलाप नष्ट होजाता है और हकीम लोग पहली तरी को दीपक के तेल की उपमा देते हैं दूसरी तरी को उस तेलसे जो बत्ती ने खींच लिया है और तीसरी को उस तेल से जिस के कारण से बत्ती के भागों में मिलाप है सो जब कि तरी शरीर से कम होजाती है मुख्य कर दिल के और पास से तो ऐसा होता है कि जैसे दीपक का तेल बीतगया और प्रकाश की सहायता टूट गई अब यहां तक नौबत पहुची कि जो तेल बत्ती में है वहभी खर्च हुआ चाहताहै यह विषम ज्वर का पहला दर्जा है इसका जल्दी इलाज होसक्ता है परन्तु इस विषम ज्वर का पहचानना कठिन है क्योंकि विषम ज्वर इस दशा में हुम्मायलिसका (कफ वाला ज्वर जो हर समय रहै)के सामन होती है और इन दोनो में जो अन्तर है वह कफ वाले ज्वर में वर्णन हुआ है और जब दूसरी तरी खर्च होती है तो उसकी ऐसी उपमा है कि बत्ती का तेल खर्च होता है यह विषम ज्वर का दूसरा दर्जा है और इस समय में दिक (विषम ज्वर) को जबूल (पिघलना) कहते हैं और अगों का पिघलना सहज से मालूम होसक्ता है इस के तीन दर्जे होतेहैं प्रथम मध्यम और अन्तिम और जब दर्जा अन्तका होताहै तो इलाज नहीं होसक्ता है दूसरे और प्रथम में कठिन से अच्छा होता है जब

तीसरा प्रकरण विषम ज्वरका वर्णन ।

इस ज्वर का यह अर्थ है कि ऊपरी गर्मी पोपक अगों में घुसकर दिल में चिपट जाय और शरीर की तीनों तरियों को नष्ट करदें और जानना चाहिये कि मनुष्यके शरीर में तीन मकार की तरी है कि जब उनमें से एक खर्च होजाती है तब विपय ज्वर उत्पन्न होता है और कोप में दिक का अर्थ ठहरने और नर्म होने का है और इस कारण से कि इस ज्वर की गर्मी ठहरने वाली और नर्म होती है और दुवला होना उचित है इसका यह नाम रक्खा गया है (लाभ) तीनों तरियों का वर्णन। पहली वह है कि ओस की तरह छोटी २ रगों में और सम्पूर्ण पोपक अगों में बिखरी हुई है और उसका यह लाभ है कि जब भोजन न मिले तो वह पचे हुए भोजनका काम देने लगे दूसरी तरी वहहै कि अगोंमें प्रवेश करके वैसी ही बन गई है परन्तु अभी अधिक नहीं जमी और यह तरी अधिक गर्मी के पचने से और अधिक परिश्रम से गलती है और नष्ट होजाती है तीसरी तरी वहहै जिससे पोपक अगों का खमीर बनता है और शरीर के सम्पूर्ण अग इसी के कारण से मिले हुएह जब कि यह तरी नष्ट होजाती है तो सम्पूर्ण अगों का मिलाप नष्ट होजाता है और हकीम लोग पहली तरी को दीपक के तेल की उपमा देते है दूसरी तरी को उस तेलसे जो बत्ती ने खींच लिया है और तीसरी को उस तेल से जिस के कारण से बत्ती के भागों में मिलाप है सो जब कि तरी शरीर से कम होजाती है मुख्य कर दिल के ओर पास से तो ऐसा होता है कि जैसे दीपक का तेल बीतगया और मकाश की सहायता टूट गई अब यहां तक नौबत पहुची कि जो तेल बत्ती में है वहभी खर्च हुआ चाहताहै यह विपम ज्वर का पहला दर्जा है इसका जल्दी इलाज होसक्ता है परन्तु इस विपम ज्वर का पहचानना कठिन है क्योंकि विषम ज्वर इस दशा में हुम्मायलिसका (कफ वाला ज्वर जो हर समय रहे)के सामन होती है और इन दोनों में जो अन्तर है वह कफ वाले ज्वर में वर्णन हुआ है और जब दूसरी तरी खच होती है तो उसकी ऐसी उपमा है कि बत्ती का तेल खर्च होता है यह विपम ज्वर का दूसरा दजा है और इस समय में दिक (विपम ज्वर) को जबूल (पिघलना) कहते हैं और अगों का पिघलना सहज से मालूम होसका है इस के तीन दर्जे होतेहै प्रथम मध्यम और अन्तिम और जब दर्जा अन्तका होताहै तो इलाज नहीं होसक्ता है दूसरे और प्रथम में कठिन से अच्छा होता है जब

हट और छोटे २ भाग इसमें मालूमहों और सम्पूर्ण चिन्होंसे उत्तम चिन्ह यह है कि जब रोगी भोजन करे तो ज्वर अच्छी तरह प्रगट हो और नाडी बलवान होजाय और थोडा बढापन इसमें आजाय सो विषमज्वर वालों के लिये खाना ऐसा है जैसे दीपक में तेल डालनेसे प्रकाश अधिक होता है और बहुधा ऐसा होता है कि मूर्ख हकीम इस ध्यान से कि ज्वर भोजन से प्रगट होता है भोजन का निषेध करके रोगीको मारडालते हैं (सूचना) यद्यपि दूसरे ज्वरों में भोजन करने के उपरांत दशा बदलजाती है परन्तु विषमज्वर के बदल जानेमें और दूसरे ज्वरों के बदल जाने से बहुत अन्तर है और वह यह है कि दूसरे ज्वरों में भोजन देने के उपरांत फुरेरी,ज्वर की अधिकता, शरीर का टूटना, अंगों में भारापन, हाथ पांवों का ठंडा होना और नाडी में विरुद्धता अधिक होती है और विषमज्वर में इसबात के सिवाय कि विषमज्वर प्रगट होजाय और कोई नहीं होती यह यदि कोई दूसरा ज्वर उसके साथ न मिलाहो और मिले होने का यह चिन्हहै कि ज्वर हलका रहे और गर्म दोषी ज्वर की वारीपर बढजाय और फुरेरी या कपकपी से रहित नहो जो दुर्गंधित मवाद रगोंसे बाहर है और इसी तरह जिस ज्वरके साथ संयोगिक हो उसके चिन्हों से जान सक्तेहैं और जब कि पहली तरी खर्च होजाय और गर्मी दूसरी तरी में पहुचे तो विषमज्वर को उस समय पिघलना कहते हैं और पिघलने का यह चिन्ह है कि आंखें गढजांय और सूखी ढीढें उनमें आवें और सिर की हड्डी दिखाई देनेलगै और कनपटियां बैठजांय और माथे की खाल खिंच जाय और खाल में सुन्दरता और ताजगी न रहै और ऐसा मालूम हो कि राख भरी हुई है और भौंहें भारी और आंखें नींद की भरी हुई मालूम हो और नाक की नोंक और गर्दन महीन और कान हलके और छोटे होजांय और नसेरा और छाती की हड्डी निकल आवें और मूत्र में चिकनाहट और छोटे २ भाग बहुत मालूम हों और बाल बढ जांय और इन में जूआं पड जांय और कन्धा चढ जांय और फिर जब कि अंग का पिघलना पहले दर्जे में तो यह चिन्ह बहुत कम हो और इसी तरह बढ जांय यहां तक कि दूसरे दर्जे में पहुचे और जब कि दूसरे दर्जे से बदले और तीसरे दर्जे में आवें तो शरीर के बाल झडने लगें और नख टेढे होने लगें और खाल और हड्डी के सिवाय कुछ न बाकी रहै यह इस बात का चिन्ह है कि जल्दी मृत्यु को प्राप्त होने वाला है और तब तक कि मांस खून और ताजगी और शक्तिका शेष बाकी होता है और हड्डी पर मांस रहता है तो आशा रहती है कि बच जाय (सूचना) जब कि आन्हिक ज्वर तीन रात

हट और छोटे २ भाग इसमें मालूमहों और सम्पूर्ण चिन्होंसे उत्तम चिन्ह यह है कि जब रोगी भोजन करे तो ज्वर अच्छी तरह प्रगट हो और नाडी बलवान होजाय और थोडा बढापन इसमें आजाय सो विषमज्वर वालों के लिये खाना ऐसा है जैसे दीपक में तेल डालनेसे प्रकाश अधिक होता है और बहुधा ऐसा होता है कि मूर्ख हकीम इस ध्यान से कि ज्वर भोजन से प्रगट होता है भोजन का निषेध करके रोगीको मारडालते हैं (सूचना) यद्यपि दूसरे ज्वरों में भोजन करने के उपरांत दशा बदलजाती है परन्तु विषमज्वर के बदल जानेमें और दूसरे ज्वरों के बदल जाने से बहुत अन्तर है और वह यह है कि दूसरे ज्वरों में भोजन देने के उपरांत फुरेरी,ज्वर की अधिकता, शरीर का टूटना, अगों में भारापन, हाथ पांवों का ठढा होना और नाडी में बिरुद्धता अधिक होती है और विषमज्वर में इसबात के सिवाय कि विषमज्वर प्रगट होजाय और कोई नहीं होती यह यदि कोई दूसरा ज्वर उसके साथ न मिलाहो और मिले होने का यह चिन्हहै कि ज्वर हलका रहे और गर्म दोषी ज्वर की बारीपर बढजाय और फुरेरी या कपकपी से रहित नहो जो दुर्गंधित मवाद रगोंसे बाहर हैं और इसी तरह जिस ज्वरके साथ सयोगिक हो उसके चिन्हों से जान सक्तेहैं और जब कि पहली तरी खर्च होजाय और गर्मी दूसरी तरी में पहुचे तो विषमज्वर को उस समय पिघलना कहते हैं और पिघलने का यह चिन्ह है कि आंखें गढजांय और सूखी ढीडें उनमें आवें और सिर की हड्डी दिखाई देनेलगे और कनपटियां बैठजांय और माथे की खाल खिंच जाय और खाल में सुन्दरता और ताजगी न रहे और ऐसा मालूम हो कि राख भरी हुई है और भौंहें भारी और आंखें गींद की भरी हुई मालूम हो और नाक की नोंक और गर्दन महीन और कान हलके और छोटे होजांय और नसेरा और छाती की हड्डी निकल आवे और मूत्र में चिकनाहट और छोटे २ भाग बहुत मालूम हों और बाल बढ जांय और इन में जूआं पड जांय और कन्धा चढ जांय और फिर जब कि अग का पिघलना पहले दर्जे में तो यह चिन्ह बहुत कम हो और इसी तरह बढ जांय यहां तक कि दूसरे दर्जे में पहुचे और जब कि दूसरे दर्जे से बदले और तीसरे दर्जे में आवें तो शरीर के बाल झडने लगें और नख टेढे होने लगें और खाल और हड्डी के सिवाय कुछ न बाकी रहे यह इस बात का चिन्ह है कि जल्दी मृत्यु को प्राप्त होने वाला है और जब तक कि मांस खून और ताजगी और शक्तिका शेष बाकी होता है और हड्डी पर मांस रहता है तो आशा रहती है कि बच जाय (सूचना) जब कि आन्हिक ज्वर तीन रात

हो तो स्थान की हवा समान चाहिये और बिछौना धोये हुए नर्म टाट का जिसमें रुई विशेष हो उचित है और रोगी को वस्त्र ऋतु के अनुसार पहरावे जैसे गर्मियों में अलसी जाड़ों में टाट नर्म और धुला हुआ हो ॥

॥ हम्माम और भपारों का वर्णन ॥

हम्माम और भपारे उत्तम और गुनगुने होने चाहिये और पानी में इतनी गर्मी हो कि रोगी को अच्छा मालूम हो और न्हाने के स्थान की गर्मी इतनी न हो कि दिलको गर्म करै और श्वास में अन्तर उत्पन्न करै और पसीना आजाय और जो पानी में बनफशा, नीलोफर, घीआ के पत्ता, काहू के पत्ता, औटावे तो अधिक लाभदायक है और जो घीया काटकर और थोड़ासा जौ का पानी भपारे में पकावे तो भी लाभदायक है और जब कि हम्माम में जाने का विचार करै तो पहिले जौ का दलिया खवावे और दो घड़ी सन्तोष करके न्हाने के स्थान में लेजाय और भपारे में बैठावे और न्हाने के स्थान और भपारे में इतना ठहरावे कि खाल नर्म हो और उस में तरी आजाय और न्हाने के स्थान म लेजाने के उपरांत रोगी को ठण्डे पानी में गर्दन तक गोता दे और ऐसे ही झटपट निकालल पानी इसमें अधिक ठण्डा न हो जैसा कि गर्मी में होता है और न्हानेके स्थानमें लेजाने के उपरांत ठण्डे पानी में लाने का यह लाभ है कि न्हानेके स्थान की गर्मी नष्ट हो और शक्ति आजाय खुले हुए रोमांच समानता पर आजाय इस कारण से जो तरी कि न्हाने के स्थान और भपारे से उसके शरीर में पहुंची है नष्ट न हो और ठण्डे पानी से निकालने के उपरांत तरी पहुंचाने वाले तेल जैसे बनफशा का तेल, नीलोफर का तेल, घीया के बीज की मिंगी का तेल, बादाम की मिंगीका तेल मलै और चाहिये कि तेल को पानी में मिलाकर मलै (सूचना) न्हानेके स्थानके उपरांत ठण्डे पानी में गोता देना उस मनुष्यको योग्य है कि अभी कुछ मांस उसके शरीर पर हो और ठण्डे पानी में लाने की यह विधि है कि न्हानेके स्थानके उपरांत इस पानी में जो न्हाने के स्थान के पानी से गर्मी में कम हो लावें फिर इस पानी में कि जिसकी गर्मी इससे भी कमहो और इसी तरह धीरे २ सर्द पानी में लावे यहां तक कि ठण्डे पानी की बारी पहुंचे और लाभ बिना हानि प्राप्त हो और जब हम्माममें बैठचुके और ठण्डा पानी और तेल लगाचुके तो कोई नर्म चीज खवावे जैसे जौ के पानी के घाटका बनायाहुआ हरीरा बनावे अथवा ताजा मठा तथा अधभुने अण्डे की जर्दी और जो भोजन करने के उपरान्त जब-

हो तो स्थान की हवा समान चाहिये और बिछौना धोये हुए नर्म टाट का जिसमें रुई विशेष हो उचित है और रोगी को वस्त्र ऋतु के अनुसार पहरावे जैसे गर्मियों में अलसी जाड़ों में टाट नर्म और धुवा हुआ हो ॥

॥ हम्माम और भपारों का वर्णन ॥

हम्माम और भपारे उत्तम और गुनगुने होने चाहिये और पानी में इतनी गर्मी हो कि रोगी को अच्छा मालूम हो और न्हाने के स्थान की गर्मी इतनी न हो कि दिलको गर्म करे और श्वास में अन्तर उत्पन्न करे और पसीना आजाय और जो पानी में बनफ़शा, नीलोफ़र, घीआ के पत्ता, काहू के पत्ता, औटावे तो अधिक लाभदायक है और जो घीया काटकर और थोड़ासा जौ का पानी भपारे में पकावे तो भी लाभदायक है और जब कि हम्माम में जाने का विचार करे तो पहिले जौ का दलिया खवावे और दो घंटे संतोष करके न्हाने के स्थान में लेजाय और भपारे में बैठावे और न्हाने के स्थान और भपारे में इतना ठहरावे कि खाल नर्म हो और उस में तरी आजाय और न्हाने के स्थान म लेजाने के उपरांत रोगी को ठण्डे पानी में गर्दन तक गोता दे और ऐसे ही झटपट निकालल पानी इसमें अधिक ठण्डा न हो जैसा कि गर्मी में होता है और न्हानेके स्थानमें लेजाने के उपरांत ठण्डे पानी में लाने का यह लाभ है कि न्हानेके स्थान की गर्मी नष्ट हो और शक्ति आजाय खुले हुए रोमांच समानता पर आजाय इस कारण से जो तरी कि न्हाने के स्थान और भपारे से उसके शरीर में पहुची है नष्ट न हो और ठण्डे पानी से निकालने के उपरांत तरी पहुचाने वाले तेल जैसे बनफ़शा का तेल, नीलोफ़र का तेल, घीया के बीज की मिंगी का तेल, बादाम की मिंगीका तेल मले और चाहिये कि तेल को पानी में मिलाकर मले (सूचना) न्हानेके स्थानके उपरांत ठण्डे पानी में गोता देना उस मनुष्यको योग्य है कि अभी कुछ मांस उसके शरीर पर हो और ठण्डे पानी में लाने की यह विधि है कि न्हानेके स्थानके उपरांत इस पानी में जो न्हाने के स्थान के पानी से गर्मी में कम हो लावें फिर इस पानी में कि जिसकी गर्मी इससे भी कमहो और इसी तरह धीरे २ सर्द पानी में लावे यहां तक कि ठण्डे पानी की बारी पहुचे और लाभ बिना हानि प्राप्त हो और जब हम्माममें बैठचुके और ठण्डा पानी और तेल लगाचुके तो कोई नर्म चीज खवावे जैसे जौ के पानी के आटका बनायाहुआ हरीरा बनावे अथवा ताजा मठा तथा अधभुने अण्डे की जर्दी और जो भोजन करने के उपरान्त जब-

... में रखकर फिर उसमें दूध दोहें और दोहनेके उपरांत झटपट ... और ... दोनों बातोंकी रक्षा न करें तो हानिहोगी और जोदूध विषम ... रोगीको देवरें उसकी विधि यह है कि पहले दिन आधा गिलास दें और दूसरे दिन एक गिलास और प्रतिदिन इसीतरह से आधा गिलास बढावें सात दिन तक ऐसेसातवें दिन ३॥ गिलास आजाय फिर सात दिन तक इसी तरह ... न घटावें न बढावें इसके उपरांत प्रतिदिन आधा गिलास कमकरें और हकीम जालीनूस कहता है कि जब दूध पिवाने के उपरांत एक घंटा बीतजाय तो रोगी की नाडी देखें कि जो दूध पीनेसे पहले की अपेक्षा अधिक बलवान और बडी मालूम हो तो इस बात का चिन्ह है कि दूध अच्छा पचा और खराब नहीं हुआ फिर दूसरे दिन अधिक देना चाहिये और जो निर्बल या छोटी और लगा तार चलती हुई मालूम हो तो इस बातका चिन्ह है कि दूध विगड गया फिर दूध के पिवाने में देर करै और इसी तरह जब कभी, दूध पिलानें में गर्मी मालूम हो और ज्वर के चिन्ह मालूम हो तो दूध से वर्जित करना योग्य है और इसके बदले में ककडी का पानी, तरबूजका पानी, खुर्फा का पानी खुर्फा के बीज का पानी और कपूर की टिकिया दें (सूचना) जहां कहीं दूध पिवाने से दुर्गन्धि उत्पन्न हो तो शर्बत आलू वनफशा का शर्बत और मेवा के पानी से तवियत को नर्म करना योग्य है और इस बात की आवश्यकता है कि दूध आमाशय में जम न जाय इस लिये जितना देना योग्य हो कई बार करके दें और थोडा नोंन और शहद इस में मिलावें और कहते हैं कि बूरा शहद से उत्तम है और जहां कि तवियत नर्म होतो नमक न मिलावे और बूरभी बहुत कम डाले और जिस दिन कि दूध पिवावें तथा पिवाने का विचारहो तो मछली न दें और खटाई भी न दें और कुछ हकीमोंके समीप यह है कि एक भाग दूधमें दो भाग मेहका पानी मिलाकर औटावें जब आधा बच रहे तो बूरा मिलाकर देना अधिक लाभदायक है और जहां कहीं तवियत नर्म हो और निर्बलता उत्पन्न हो तो ... चाहिये और ... ताजा मठा मक्खन निकालकर लोहेसे ... अजीर्ण का ... वश लोचन अथवा तवासीर डालकर ... जिमसे ... जो तपेदिक (...) के साथ ... माशे ... मिला कर दें ... गोंद ... सिवा ... फ अजर ... ज्वर वाले ... विधि

...में ... रखकर फिर उसमें दूध दोहें और दोहनेके उपरांत झटपट ... और ... दोनों बातोंकी रक्षा न करें तो हानिहोगी और जोदूध विषम ... उसकी विधि यह है कि पहले दिन आधा गिलास दें और दूसरे दिन एक गिलास और प्रतिदिन इसीतरह से आधा गिलास बढावें सात दिन तक जैसेसातवें दिन ३॥ गिलास आजाय फिर सात दिन तक इसी तरह ... न घटावें न बढावें इसके उपरांत प्रतिदिन आधा गिलास कमकरें और हकीम जालीनूस कहता है कि जब दूध पिवाने के उपरांत एक घटा वीतजाय तो रोगी की नाडी देखें कि जो दूध पीनेसे पहले की अपेक्षा अधिक बलवान और बडी मालूम हो तो इस बात का चिन्ह है कि दूध अच्छा पचा और खराब नहीं हुआ फिर दूसरे दिन अधिक देना चाहिये और जो निर्बल या छोटी और लगा तार चलती हुई मालूम हो तो इस बातका चिन्ह है कि दूध बिगड गया फिर दूध के पिवाने में देर करे और इसी तरह जब कभी, दूध पिलाने में गर्मी मालूम हो और ज्वर के चिन्ह मालूम हो तो दूध से वर्जित करना योग्य है और इसके बदले में ककडी का पानी, तरबूजका पानी, खुर्फा का पानी खुर्फा के बीज का पानी और कपूर की टिकिया दें (सूचना) जहां कहीं दूध पिवाने से दुर्गन्धि उत्पन्न हो तो शर्बत आलू बनफशा का शर्बत और मेवा के पानी से तबियत को नर्म करना योग्य है और इस बात की आवश्यकता है कि दूध आमाशय में जम न जाय इस लिये जितना देना योग्य हो कई बार करके दें और थोडा नोंन और शहद इस में मिलावें और कहते हैं कि बूरा शहद से उत्तम है और जहां कि तबियत नर्म होतो नमक न मिलावे और बूगमी बहुत कम डाले और जिस दिन कि दूध पिवावें तथा पिवाने का विचारहो तो मछली न दें और खटाई भी न दें और कुछ हकीमोंके समीप यह है कि एक भाग दूधमें दो भाग मेहका पानी मिलाकर औटावें जब आधा बच रहे तो बूरा मिलाकर देना अधिक लाभदायक है और जहां कहीं तबियत नर्म हो और निर्बलता उत्पन्न हो तो ... चाहिये और ... ताजा मठा मक्खन निकालकर लोहेसे ... अजीर्ण का ... वश लोचन अथवा तरासीस डालकर ... जिससे ... जो तपेदिक ...) के साथ ... माशे ... मिला कर दें ... गोंद ... सिवा ... क अनुर ... ज्वर वाले ... विधि

चीनी का प्याला रखकर फिर उसमें दूध दोहें और दोहनेके उपरांत झटपट पिवावें और जोइन दोनों बातोंकी रक्षा न करें तो हानिहोगी और जोदूध विषम ज्वर वालेको पिलावें उसकी विधि यह है कि पहले दिन आधा गिलास दें और दूसरे दिन एक गिलास और प्रतिदिन इसीतरह से आधा गिलास बढावें सात दिन तक जैसेसातवें दिन ३॥ गिलास आजाय फिर सात दिन तक इसी तरह रक्खे न घटावे न बढावें इसके उपरांत प्रतिदिन आधा गिलास कमकरें और हकीम जालीनूस कहता है कि जब दूध पिवाने के उपरांत एक घटा बीतजाय तो रोगी की नाडी देखें कि जो दूध पीनेसे पहले की अपेक्षा अधिक बलवान और बडी मालूम हो तो इस बात का चिन्ह है कि दूध अच्छा पचा और खराब नहीं हुआ फिर दूसरे दिन अधिक देना चाहिये और जो निर्बल वा छोटी और लगा तार चलती हुई मालूम हो तो इस बातका चिन्ह है कि दूध बिगड गया फिर दूध के पिवाने में देर करै और इसी तरह जब कभी दूध पिलाने में गर्मी मालूम हो और ज्वर के चिन्ह मालूम हो तो दूध से वर्जित करना योग्य है और इसके बदले में ककडी का पानी, तरबूजका पानी, खुर्फा का पानी खुर्फा के बीज का पानी और कपूर की टिकिया दें (सूचना) जहां कहीं दूध पिवाने से दुर्गन्धि उत्पन्न हो तो शर्बत आलू बनफशा का शर्बत और मेवा के पानी से तबियत को नर्म करना योग्य है और इस बात की आवश्यकता है कि दूध आमाशय म जम न जाय इस लिये जितना देना योग्य हो कई बार करके दें और थोडा नोंन और शहद इस में मिलावें और कहते हैं कि बूरा शहद से उत्तम है और जहां कि तबियत नर्म होतो नमक न मिलावे और बूराभी बहुत कम डालें और जिस दिन कि दूध पिवावें तथा पिवाने का विचारहो तो मछली न दें और खटाई भी नदें और कुछ हकीमोंके समीप यह है कि एक भाग दूधमें दो भाग मेहका पानी मिलाकर औटावें जब आधा बच रहे तो बूरा मिलाकर देना अधिक लाभदायक है और जहां कहीं तबियत नर्म हो और निर्बलता उत्पन्न हो तो दूध न पिवाना चाहिये और इसके बदले ताजा मठा मक्खन निकालकर लोहसे बुझाकर और अजीर्ण कारक चीज जैसे वंशलोचन अथवा तबासीर डालकर देना चाहिये जिससे अजीर्ण करे और जो सपेदिक (विषमज्वर) के साथ खांसीहो तो ३॥ माशे कतीरा दूधमें बूरा मिलाकर दें और बबूलका गोंद मुखमें रक्खें और इसके सिवाय जो कुछ कि दशा के अनुसारहो । विषमज्वर वाले को मठाके देने की विधि इस प्रकार पर है कि

चीनी का प्याला रखकर फिर उसमें दूध दोहें और दोहनेके उपरांत झटपट पिवावें और जोइन दानों वातोंकी रक्षा न करें तो हानिहोगी और जोदूध विषम ज्वर वालेको पिवावें उसकी विधि यह है कि पहले दिन आधा गिलास दें और दूसरे दिन एक गिलास और प्रतिदिन इसीतरह से आधा गिलास बढावें सात दिन तक जैसेसातवें दिन ३॥ गिलास आजाय फिर सात दिन तक इसी तरह रक्खे न घटावे न बढावें इसके उपरांत प्रतिदिन आधा गिलास कमकरें और हकीम जालीनूस कहता है कि जब दूध पिवाने के उपरांत एक घंटा बीतजाय तो रोगी की नाडी देखें कि जो दूध पीनेसे पहले की अपेक्षा अधिक बलवान और बडी मालूम हो तो इस बात का चिन्ह है कि दूध अच्छा पचा और खराब नहीं हुआ फिर दूसरे दिन अधिक देना चाहिये और जो निर्बल या छोटी और लगा तार चलती हुई मालूम हो तो इस बातका चिन्ह है कि दूध बिगड गया फिर दूध के पिवाने में देर करें और इसी तरह जब कभी दूध पिलाने में गर्मी मालूम हो और ज्वर के चिन्ह मालूम हों तो दूध से वर्जित करना योग्य है और इसके बदले में ककड़ी का पानी, तरबूजका पानी, खुर्फा का पानी खुर्फा के बीज का पानी और कपूर की टिकिया दें (सूचना) जहां कहीं दूध पिवाने से दुर्गन्धि उत्पन्न हो तो शर्बत आलू बनफशा का शर्बत और मेवा के पानी से तबियत को नर्म करना योग्य है और इसबात की आ-वश्यकता है कि दूध आमाशय म जम न जाय इस लिये जितना देना योग्य हो कई बार करके दें और थोडा नोंन और शहद इस में मिलावें और कहते हैं कि बूरा शहद से उत्तम है और जहां कि तबियत नर्म होतो नमक न मिलावें और बूराभी बहुत कम डालें और जिस दिन कि दूध पिवावें तथा पिवाने का विचारहो तो मछली न दें और खटाई भी नदें और कुछ हकीमोंके समीप यह है कि एक भाग दूधमें दो भाग मेहका पानी मिलाकर औटावें जब आधा बच रहे तो बूरा मिलाकर देना अधिक लाभदायक है और जहां कहीं तबियत नर्म हो और निर्बलता उत्पन्न हो तो दूध न पिवाना चाहिये और इसके बदले ताजा मठा मक्खन निकालकर लोहसे बुझाकर और अजीर्ण कारक चीज जैसे वंश-लोचन अथवा तबासीर डालकर देना चाहिये जिससे अजीर्ण करे और जो सपेदिक (विषमज्वर) के साथ खांसीहो तो ३॥ माशे कतीरा दूधमें बूरा मिला कर दें और बबूलका गोंद मुखमें रक्खें और इसके सिवाय जो कुछ कि दशा के अनुसारहो । विषमज्वर वाले को मठाके देने की विधि इस प्रकार पर है कि

साथ तथा जुलाब के साथ दे और जब सूर्य उदय हो तो जो के पानी में भी-
कहा पड़ा हुआ मीठे अनार का पानी मिलाकर तथा जुलाब मिलाकर पिलावे
और जब जौका पानी देने के उपरांत ४ घण्टे बीत जांय तो उन्नाव का श
र्बत तथा खशखाश का शर्बत ७० माशे ठण्डे पानी में मिलाकर पिवावे और
सोने के समय ईसबगोल का लुआब और उन्नाव की शराब के साथ तथा
खुर्फा के बीज का पानी और बूरा और बादाम का तेल तथा बिहीदाने का
लुआब और जुलाब दे (सूचना) उक्त शर्बतों को उस समय दें जब आमाशय
निर्बल न हो और नहीं तो मीठे अनार के पानीके सिवाय कुछ नहीं दे सक्ते

॥ कशकाब सरतानी के बनानेकी विधि ॥

सरतान जिसको फारसी में सरचग और हिन्दी में कीकडा कहते हैं बहते
हुए मीठे पानीमें से मगाके उसके बाजू और पांवों को तोड डालें और उसको
नमक और आगसे कई बार मलकर धोवें जिससे उसको चिकनापन निकल
जाय फिर जौ के पानीमें डालकर पकावें जैसी कि विधि है और कीकडी अति
उत्तम है और कीकडी के होनेका यह चिन्ह है कि जो उसमें सुई चुभावे
तो सफेद तरी दूधकीसी निकले और जहां कहीं कीकडा न मिले तो उसके
बदले उन्नाव और खशखाश जौ के पानी में औटाकर बादाम का तेल डाल
कर खवावें और जौ का पानी अगके पिघलने में लाभदायक है लम्बी घीया
का पानी लेकर जौ का पानी और कीकडा इसमें पकावें और बादाम का
तेल तथा घीआ का तेल डालकर दें और जो तबियत नर्म हो तो खशखाश
की टिकिया दें ॥

॥ खशखाश की टिकिया बनानेकी विधि ॥

सफेद खशखाश के बीज, मीठीघीया के बीजकी मिंगी, खुर्फा के बीज,
ककडी खीरा के बीजकी मिंगी, बिहीदाने की मिंगी, प्रत्येक २१ माशे बबूल
का गोंद, वंशलोचन, लाल मिट्टी, मीठी घीया के बीज की मिंगी, खुर्फा के
बीज, प्रत्येक १०॥ माशे, नशास्ता ७ माशे, गुलाब के फूल १७॥ माशे, क
पूर ३॥ माशे, और बीज मिंगी और गोंद को भूनलें और महीन पीसकर टि-
किया बनावे प्रत्येक टिकिया तोलमें ७ माशे, और प्रतिदिन प्रातःकाल एक
टिकिया सेव तथा बिही तथा अमरूद को चना के पानी में मिलाकर दें और
भुने हुए जौ का दलिया बनावे और पकाते समय थोडासा हब्बुलास और
बिही के टुकडे करके डाले और पकनेके उपरांत गिलेअरमनी और बबूल का
गोंद महीन पीसकर थोडा इसमें मिलाकर खवावे ॥

साथ तथा जुलाब के साथ दे और जब सूर्य उदय हो तो जो के पानी में पी- कडा पड़ा हुआ मीठ अनार का पानी मिलाकर तथा जुलाब मिलाकर पिवावै और जब जौका पानी देने के उपरांत ४ घण्टे बीत जांय तो उन्नाव का श र्बत तथा खशखाश का शर्बत ७० माशे ठण्डे पानी में मिलाकर पिवावै और सौने के समय ईसबगोल का लुआब और उन्नाव की शराब के साथ तथा खुर्फा के बीज का पानी और बूरा और बादाम का तेल तथा बिहीदाने का लुआब और जुलाब दे (सूचना) उक्त शर्बतों को उस समय दें जब आमाशय निबल न हो और नहीं तो मीठे अनार के पानीके सिवाय कुछ नहीं दे सकते

॥ कशकाब सरतानी के बनानेकी विधि ॥

सरतान जिसको फारसी में खरचग और हिन्दी में कीकडा कहते हैं वहते हुए मीठे पानीमें से मगाके उसके बाजू और पांवों को तोड डालें और उसको नमक और आगसे कई बार मलकर धोवें जिससे उसको निकम्मापन निकल जाय फिर जौ के पानीमें डालकर पकावें जैसी कि विधि है और कीकडी अति उत्तम है और कीकडी के होनेका यह चिन्ह है कि जो उसमें सुई चुभावे तो सफेद तरी दूधकीसी निकले और जहां कहीं कीकडा न मिले तो उसके बदले उन्नाब और खशखाश जौ के पानी में औटाकर बादाम का तेल डाल कर खवावें और जौ का पानी अगके पिघलने में लाभदायक है लम्बी घीया का पानी लेकर जौ का पानी और कीकडा इसमें पकावें और बादाम का तेल तथा घीआ का तेल डालकर दें और जो तबियत नर्म हो तो खशखाश की टिकिया दें ॥

॥ खशखाश की टिकिया बनानेकी विधि ॥

सफेद खशखाश के बीज, मीठीघीया के बीजकी मिंगी, खुर्फा के बीज, ककडी खीरा के बीजकी मिंगी, बिहीदाने की मिंगी, प्रत्येक २१ माशे बबूल का गोंद, बंशलोचन, लाल मिट्टी, मीठी घीया के बीज की मिंगी, चूका के बीज, प्रत्येक १०॥ माशे, नशास्ता ७ माशे, गुलाब के फूल १७॥ माशे, कपूर ३॥ माशे, और बीज मिंगी और गोंद को भूनलें और महीन पीसकर टि- किया बनावें प्रत्येक टिकिया तोलमें ७ माशे, और प्रतिदिन प्रातःकाल एक टिकिया सेब तथा बिही तथा अमरूद को चना के पानी में मिलाकर दें और भुने हुए जौ का दलिया बनावें और पकाते समय थोडासा हब्बुल्लास और बिही के टुकडे करके डालें और पकनेके उपरांत गिलेरमनी और बबूल का गोंद महीन पीसकर थोडा इसमें मिलाकर खवावें ॥

ठंडा पानी देना विशेष हानि कारक है और असली गर्मी को नष्ट करता है अथवा बुढापे के विषम ज्वर में डालता है (सूचना) जब तक उचित हो सावधानी करें कि तबियत नर्म न हो और जब नर्म हो तो अबीरजरूर (एक घास है) और शाह बरलूत लाभदायक है और जब कि विषम ज्वर वाला निर्बल और शक्ति हीन हो और अचेत होने लगे तो मांस का पानी देना चाहिये ॥

॥ मांस के पानी के बनाने की विधि ॥

बकरे का मांस लेकर उस में से सफेदी अलग करें और लाली का कबाब बनाकर मजबूत हंडिया में डालें और थोडा गुलाब डालकर हंडिया का मुख ढक कर हलकी आंच पर रक्खें जिस से मांस से पानी अलग हो और अभी न पका हो कि उसका पानी लेवें और मांस को भी निचोड लें कि उस म तरी बिलकुल न बाकी रहे फिर इस पानी को हंडिया में डालकर औटावे जिस से पक कर अच्छा होजाय और थोडा नोंन सूखा धनियां मिलाकर खवावें तो ईश्वर की कृपा से शक्ति की रक्षा रहे (सूचना) जानना चाहिये कि जो विषम ज्वर पहले दर्जे में है तो सर्दी और तरी के पहुंचने की अधिक आवश्यकता नहीं पडती परंतु जब कि अंगके पिघलने की दशा [illegible] और तरी पहुंचाने वाली दवा ब्योरेवार वर्णन की गई आवश्य[illegible] किताब अक्सीर आजम मे [illegible] गधा के [illegible] मार [illegible] बून्द रुधिर की लेकर गेंद [illegible] सिवाय कुछ न द और [illegible] दिन [illegible] को [illegible] प्राप्त होती है और हकी[illegible] है कि [illegible] बढे उसका [illegible] दे तो [illegible] नष्ट [illegible] म से है औ[illegible] लोग [illegible] रविवार के [illegible] मे तो [illegible] उपरांत दूर्त [illegible] फिर यह [illegible] है कि यह [illegible] जानना चाहिये [illegible] का स्वभाव इस [illegible] प्राकृतिक विषम [illegible] क्यों कि इसरोग में मनु[illegible]

और हकीम कहते है कि बहुधा शहद का थोडा २ देना अच्छाहै और बकरी के बचे के शिर और पांवके मांससे हुकना बनाकर इस तरह सेवन करै कि तीन दिन बराबर देकर पांच दिन छोडदे फिरतीन दिन देकर पांचदिन रोकदें और इसी तरह कई बारदें और जब हुकना काम में लाया जाय तब नरगिस का तेल, सौसन का तेल और शब्बू का तेल अगोंपरमळना अधिक लाभदायक है और जब लाभ मालूमहो और शक्ति आजायतो बडी २ माजून जैसे दिवाल मुश्क, मसरूदीतूस, तरियाककबीर देना लाभ दायक है और सभोग करना किसी कारण से उचित नहीं है॥

ॐ उक्त हुकने के बनाने की विधि ॐ

बकरी के बचों के सिर और पांवका मांस साफ करके भून लें और जो का घाट गेहू का घाट चना एक मुट्ठी, सोया ३५ माशे, बाबूना २४॥ माशे, सस्फ २८ माशे, अजीर काली मोटी १० दाने इसको मिलाकर ५ सेर पानीमें औटावे जब तक तिहाई बचरहे तो साफ करै और २२७॥ माशे लेकर ३५ मा० गौ का घी और ३५ माशे ताजी तिली का तल११७॥ माशे, बकायन का तेल और ७ माशे सफेद मोम पिघला कर शोरबे में डालकर उक्त विधि से हुकना करे और हुकना करने के पीछे शरीर पर तेल मलना उचित समझे। हकीम शेखबूअली सेंना कहता है इस रोग के इलाज करने वाले को चाहिये कि जब तक रोग की दृढता न हो तो आरोग्यता की आशा पर इलाज करै और दृढ होने के उपरान्त इस आशा पर इलाज करै कि इस रोग के इलाज करने से मृत्यु देर में होगी। इस क इलाज की यह रीतिहै किगर्मी और तरी पहुचावे और तरी हम्माम में जाने से पहुचती है और इस काम को भोजन के पचने पर करे। क्योंकि जो भोजन करते ही करै तो शक्ति को नष्ट करता है और खाने पीने के अन्य उपाय भी इसी प्रकार पर करै। हकीम सजन्दी कहता है कि इस रोग से आरोग्य होने की आशा नहीं क्योंकि तरी पहुचाने से लाभ होता है और तरी का पहुचाना भोजनों से प्राप्त होता है और पचाव से सम्पूर्णता होती है परन्तु ऐसे रोगियों के पचाव सर्दी के कारण से निर्बल होता है और उत्तम गर्मी पहुचाना अभीष्ट है और गर्म चीजें बहुधा खुश्क करने वाली है किन्तु गर्मी पहुचाने वाली सबही चीज अधिक खुश्की उत्पन्न करने वाली है और हकीम लोग कहते हैं कि ऐसे रोगियो को जो मांसका भोजन दिया जाय तो उसके पचजाने के पीछे शराब पानी तथा गुलाब में मिलाकर

और हकीम कहते है कि बहुधा शहद का थोडा २ देना अच्छाहै और बकरी के बचे के शिर और पांवके मांससे हुकना बनाकर इस तरह सेवन करे कि तीन दिन बराबर देकर पांच दिन छोडदे फिरतीन दिन देकर पांचदिन रोकदे और इसी तरह कई बारदे और जब हुकना काम में लाया जाय तब नरगिस का तेल, सौसन का तेल और शब्बू का तेल अगोंपर मलना अधिक लाभदायक है और जब लाभ मालूमहो और शक्ति आजायतो बडी २ माजून जैसे दिवाल मुश्क, मसरूदीतूस, तरियाककबीर देना लाभ दायक है और संभोग करना किसी कारण से उचित नहीं है॥

ॐ उक्त हुकने के बनाने की विधि ॐ

बकरी के बच्चों के सिर और पांवका मांस साफ करके भून लें और जौ का घाट गेहू का घाट चना एक मुट्ठी, सोया ३९ माशे, बाबूना २४॥ माशे, सस्फ २८ माशे, अंजीर काली मोटी १० दाने इसको मिलाकर ५ सेर पानीमें औटावे जब तक तिहाई बचरहे तो साफ करे और २२७॥ माशे लेकर ३५ मा० गौ का घी और ३५ माशे ताजी तिली का तल११७॥ माशे, बकायन का तेल और ७ माशे सफेद मोम पिघला कर शोरबे में डालकर उक्त विधि से हुकना करे और हुकना करने के पीछे शरीर पर तेल मलना उचित समझे। हकीम शैखबूअली सेंना कहता है इस रोग के इलाज करने वाले को चाहिये कि जब तक रोग की दृढता न हो तो आरोग्यता की आशा पर इलाज करे और दृढ होने के उपरान्त इस आशा पर इलाज करे कि इस रोग के इलाज करने से मृत्यु देर में होगी। इस के इलाज की यह रीतिहै कि गर्मी और तरी पहुचावे और तरी हम्माम में जाने से पहुचती है और इस काम को भोजन के पचने पर करे। क्योंकि जो भोजन करते ही करे तो शक्ति को नष्ट करता है और खाने पीने के अन्य उपाय भी इसी प्रकार पर करे। हकीम खजन्दी कहता है कि इस रोग से आरोग्य होने की आशा नहीं क्योंकि तरी पहुचाने से लाभ होता है और तरी का पहुचाना भोजनों से प्राप्त होता है और पचाव से स-म्पूर्णता होती है परन्तु ऐसे रोगियों के पचाव सर्दी के कारण से निर्बल होता है और उत्तम गर्मी पहुचाना अभीष्ट है और गर्म चीजें बहुधा खुश्क करने वाली है किन्तु गर्मी पहुचाने वाली सबही चीज अधिक खुश्की उत्पन्न करने वाली है और हकीम लोग कहते हैं कि ऐसे रोगियों को जो मांसका भोजन दिये जाय तो उसके पचजाने के पीछे शराब पानी तथा गुलाब में मिलाकर

और हकीम कहते हैं कि बहुधा शहद का थोडा २ देना अच्छाहै और बकरी के बचे के शिर और पांवके मांससे हुकना बनाकर इस तरह सेवन करे कि तीन दिन बराबर देकर पांच दिन छोडदे फिरतीन दिन देकर पांचदिन रोकदें और इसी तरह कई बारदें और जब हुकना काम में लाया जाय तब नरगिस का तेल, सौसन का तेल और शब्बू का तेल अंगोंपर मलना अधिक लाभदायक है और जब लाभ मालूमहो और शक्ति आजायतो बडी २ माजून जैसे दिवाल मुश्क, मसरूदीतुस, तरियाककबीर देना लाभ दायक है और संभोग करना किसी कारण से उचित नहीं है॥

❀ उक्त हुकने के बनाने की विधि ❀

बकरी के बच्चों के सिर और पांवका मांस साफ करके भुन लें और जो का घाट गेहू का घाट चना एक मुट्ठी, सोया ३५ माशे, बाबूना २४॥ माशे, खत्मक २८ माशे, अंजीर काली मोटी १० दाने इनको मिलाकर ५ सेर पानीमें औटावे जब तक तिहाई बचरहै तो साफ करै और २२७॥ माशे लेकर ३५ मा० गौ का घी और ३५ माशे ताजी तिली का तेल१२७॥ माशे, बकायन का तेल और ७ माशे सफेद मोम पिघला कर शोरवे में डालकर उक्त विधि से हुकना करै और हुकना करने के पीछे शरीर पर तेल मलना उचित समझे। हकीम शैखबूअली सैना कहता है इस रोग के इलाज करने वाले को चाहिये कि जब तक रोग की दृढता न हो तो आरोग्यता की आशा पर इलाज करै और दृढ होने के उपरान्त इस आशा पर इलाज करै कि इस रोग के इलाज करने से मृत्यु देर में होगी। इस के इलाज की यह रीतिहै कि गर्मी और तरी पहुचावे और तरी हम्माम में जाने से पहुचती है और इस काम को भोजन के पचन पर करै। क्योंकि जो भोजन करते ही करै तो शक्ति को नष्ट करता है और खाने पीने के अन्य उपाय भी इसी प्रकार पर करै। हकीम खजन्दी कहता है कि इस रोग से आरोग्य होने की आशा नहीं क्योंकि तरी पहुचाने से लाभ होता है और तरी का पहुचाना भोजनों से प्राप्त होता है और पचाव से स-म्पूर्णता होती है परन्तु ऐसे रोगियों के पचाव सर्दी के कारण से निर्बल होता है और उत्तम गर्मी पहुचाना अभीष्ट है और गर्म चीजें बहुधा खुश्क करने वाली है किन्तु गर्मी पहुचाने वाली सबही चीज अधिक खुश्की उत्पन्न करन वाली है और हकीम लोग कहते हैं कि ऐसे रोगियों को जो मांसका भोजन दिय जाय तो उसके पचजाने के पीछे शराब पानी तथा गुलाब में मिलाकर

और हकीम कहते हैं कि बहुधा शहद का थोडा २ देना अच्छाहै और बकरी के बच्चे के शिर और पांवके मांससे हुकना बनाकर इस तरह सेवन करे कि तीन दिन बराबर देकर पांच दिन छोड़दे फिरतीन दिन देकर पांचदिन रोकदें और इसी तरह कई बारदें और जब हुकना काम में लाया जाय तब नरगिस का तेल, सौसन का तेल और शब्बू का तेल अगोंपर मलना अधिक लाभदायक है और जब लाभ मालूमहो और शक्ति आजायतो बडी २ माजून जैसे दिवाल मुश्क, मसरूदीतूस, तरियाककबीर देना लाभ दायक है और संभोग करना किसी कारण से उचित नहीं है॥

❀ उक्त हुकने के बनाने की विधि ❀

बकरी के बच्चों के सिर और पांवका मांस साफ करके भून लें और जौ का घाट गैहू का घाट चना एक मुट्ठी, सोया ३५ माशे, बाबूना २४॥ माशे, सम्फ २८ माशे, अंजीर काली मोटी १० दाने इनको मिलाकर ५ सेर पानीमें औटावे जब तक तिहाई बचरहे तो साफ करै और २२७॥ माशे लेकर ३५ मा० गौ का घी और ३५ माशे ताजी तिली का तेल११७॥ माशे, बकायन का तेल और ७ माशे सफेद मोम पिघला कर शोरवे में डालकर उक्त विधि से हुकना करे और हुकना करने के पीछे शरीर पर तेल मलना उचित समझे। हकीम शैलबूअली सेना कहता है इस रोग के इलाज करने वाले को चाहिये कि जब तक रोग की दृढता न हो तो आरोग्यता की आशा पर इलाज करै और दृढ होने के उपरान्त इस आशा पर इलाज करे कि इस रोग के इलाज करने से मृत्यु देर में होगी। इस के इलाज की यह रीतिहै कि गर्मी और तरी पहुचावे और तरी हम्माम में जाने से पहुचती है और इस काम को भोजन के पचन पर करे। क्योंकि जो भोजन करते ही करै तो शक्ति को नष्ट करता है और खाने पीने के अन्य उपाय भी इसी प्रकार पर करै। हकीम सजन्दी कहता है कि इस रोग से आरोग्य होने की आशा नहीं क्योंकि तरी पहुचाने से लाभ होता है और तरी का पहुचाना भोजनों से प्राप्त होता है और पचाव से सम्पूर्णता होती है परन्तु ऐसे रोगियों के पचाव सर्दी के कारण से निर्बल होता है और उत्तम गर्मी पहुचाना अभीष्ट है और गर्म चीजें बहुधा खुश्क करने वाली है किन्तु गर्मी पहुचाने वाली सबही चीज अधिक खुश्की उत्पन्न करन वाली है और हकीम लोग कहते हैं कि ऐसे रोगियों को जो मांसका भोजन दिया जाय तो उसके पचजाने के पीछे शराब पानी तथा गुलाब में मिलाकर

और जिगर से निकाल करके दूसरे अगोंपर डालती है उसको वौहरान इन्ति काली कहते हैं और उसके बहुत भेद है कुछ अच्छे और कुछ बुरे हैं अच्छे तो यह हैं जैसे पीलिया रोग, दाद, छीप और बुरे यह हैं जैसे सूचना, फोया दबीला, (बड़ी सूजन) महामारी नमला, आतशक, फफोला, दुर्गन्धित फोडा, गले में सूजन, सफेद दाग, वह कडा मांस जो खाल और मांस के मध्य में उत्पन्न होजाता है, हाथी के से पांवहोना, लकुआ पिंडली की रगों का मोटा और हरा होजाना, वायटे चूतड, पीठ और टकना में दर्द उत्पन्न हो। वौहरान जब इन रोगों की तरफ लौटता है तो उसको इस कारण से खराब कहते है कि यद्यपि असल रोग जाता रहता है परन्तु रोगी दूसरे ऐसे रोगों में फसजाता है कि इनमें से कुछ तो तेज है और कुछ पुराने और मृत्यु दायक। वौहरान उसी जगह होता है जहां मवाद गाढा हो और शक्ति निर्बल हो क्योंकि जो शक्ति बलवान और दोष समान तथा निकलने योग्य होता है तो वौहरान ताम उत्पन्न होता है और वौहरान के होने के सम्पूर्ण चिन्ह यह हैं कि करवटें बदलना और विशेष घवडाहट हो वौहरान के अधूरे होने का चिन्ह है कि उक्त कामों में न्यूनता हो। प्रत्येक अग में वौहरान होने का वर्णन इस लाभ के अन्त में आवेगा (सूचना) जिस रोग के अंत में आरोग्यता हो उसके चार दर्जे होते हैं जैसे आरम्भ, बढोतरी, अन्त और न्यनता और वौहरान ताम अन्तके समयके सिवाय नहीं होता और जो वौह-रान रोगके आरम्भमें होजाताहै वह मृत्यु कारक होजाताहै और जो अधिकता के समयमें होताहै यद्यपि वह अच्छाहै तो न्यूनताके साथ होगा और जो नि-कम्माहै तो रोगीकी उस दिन विशेष बुरीदशा होगी और जो अतमें होता है सो अच्छाहै तो रोगी शीघ्र अच्छा होजाता है और निकम्माहो तो एक साथ मर जाताहै परतु न्यनताके समय न वौहरान होताहै न मौत होती है और मृत्यु का समय आरम्भहै और अधिकता और दस्त तथा जो वौहरान कि वौहरान के दिन उत्पन्नहो तो आरोग्य होनेका चिन्हहै और जो इससे पहले हो तो इस बातको निर्णय कराताहै कि मवाद बुराहै और तबियत मे घबराहट होती है अभिप्राय यहहै कि अतके समय से पहले जो वौहरानकी गति होती है या तो उसका यह कारणहै कि रोगकी अधिकताहै और तबियत उसके आधीन हो-वाली है या क्रोध, चिन्ता, आनद, भय आदि कोई ऊपरी कारण है जिससे प्रकृतिमें गतिउत्पन्न होती है और जब ऐसाहो कि जिस दिन अच्छे दिय ज।

और जिगर से निकाल करके दूसरे अंगोंपर डालती हैं उसको बौहरान इन्ति काली कहते हैं और उसके बहुत भेद हैं कुछ अच्छे और कुछ बुरे हैं अच्छे तो यह है जैसे पीलिया रोग, दाद, छीप और बुरे यह हैं जैसे सूचना, फोड़ा दवीला, (बड़ी सूजन) महामारी नमला, आतशक, फफोला, दुर्गन्धित फोड़ा, गले में सूजन, सफेद दाग, वह कड़ा मांस जो खाल और मांस के मध्य में उत्पन्न होजाता है, हाथी के से पांवहोना, लकुआ पिंडली की रगों का मोटा और हरा होजाना, वायटे चूतड़, पीठ और टकना में दर्द उत्पन्न हो। बौहरान जब इन रोगों की तरफ लौटता है तो उसको इस कारण से खराब कहते हैं कि यद्यपि असल रोग जाता रहता है परन्तु रोगी दूसरे ऐसे रोगों में फसजाता है कि इनमें से कुछ तो तेज हैं और कुछ पुराने और मृत्यु दायक। बौहरान उसी जगह होता है जहां मवाद गाढ़ा हो और शक्ति निर्बल हो क्योंकि जो शक्ति बलवान और दोष समान तथा निकलने योग्य होता है तो बौहरान ताम उत्पन्न होता है और बौहरान के होने के सम्पूर्ण चिन्ह यह हैं कि करवटें बदलना और विशेष घबड़ाहट हो बौहरान के अधूरे होने का चिन्ह है कि उक्त कामों में न्यूनता हो। प्रत्येक अंग में बौहरान होने का वर्णन इस लाभ के अन्त में आवेगा (सूचना) जिस रोग के अंत में आरोग्यता हो उसके चार दर्जे होते हैं जैसे आरम्भ, बढ़ोतरी, अन्त और न्यूनता और बौहरान ताम अन्तके समयके सिवाय नहीं होता और जो बौह-रान रोगके आरम्भमें होजाताहै वह मृत्यु कारक होजाताहै और जो अधिकता के समयमें होताहै यद्यपि वह अच्छाहै तो न्यूनताके साथ होगा और जो नि-कम्माहै तो रोगीकी उस दिन विशेष बुरीदशा होगी और जो अंतमें होता है सो अच्छाहै तो रोगी शीघ्र अच्छा होजाता है और निकम्माहो तो एक साथ मर जाताहै परंतु न्यूनताके समय न बौहरान होताहै न मौत होती है और मृत्यु का समय आरम्भहै और अधिकता और दस्त तथा जो बौहरान कि बौहरान के दिन उत्पन्नहो तो आरोग्य होनेका चिन्हहै और जो इससे पहले हो तो इस बातको निर्णय करताहै कि मवाद बुराहै और तबियत में घबराहट होती है अभिप्राय यहहै कि अंतके समय से पहले जो बौहरानकी गति होती है या तो उसका यह कारणहै कि रोगकी अधिकताहै और तबियत उसके आधीन हो-वाली है या क्रोध, चिन्ता, आनंद, भय आदि कोई ऊपरी कारण है जिससे प्रकृतिमें गतिउत्पन्न होती है और जब ऐसाहो कि जिस दिन अच्छे दिय ज।

दिनों को बौहरान के दिनों में नहीं गिना है क्योंकि बीस २ दिन के बहुरानों की शक्ति एक सौ बीस दिन तक होती है अभिप्राय यह है कि बौहरान का दिन एक सौ बीस दिन के उपरांत अथवा सात महीने के उपरांत होगा तथा सात वर्ष के तथा चौदह वर्ष तथा इक्कीस वर्ष में होता है और जान लेना चाहिये कि चालीसवां दिन तेज रोगों में सब से पिछला है और पुराने रोगों में सब से पहला सो जो मवाद बहुत तेज है तो बौहरान चौथे दिन होगा और नहीं तो जितनी उसकी तेजी में न्यूनता होगी उतनाही देर में प्रकट होगा और पुराना रोग जितना अधिक पुराना होगा उसका बौहरान चालीसवें दिन से उतनाही दूर होगा और बौहरान के दिन का अनुमान यहां भी लिखा जाता है कि जब तेज रोगों में पहिले दिन मवाद के पकने का असर मालूम हो तो बौहरान चौथे दिन हो और जो रोग बहुत गर्म शीघ्र गति मान है तो तीसरे दिन बौहरान होगा और जो न्यूनता के साथ होगा तो चौथे दिन बौहरान होगा और जो चौथे दिन अटकल का हो और रोग गर्म है तो बौहरान सातवें दिन होगा और जो न्यूनता के साथ हुआ तो नवें दिन होगा और जो अटकल का दिन चौथा दिन है और बुरे चिन्ह मालूम होते हैं तो बौहरान छटे दिन होगा और जो नियमित दिन सातवां है तो बौहरान ग्यारहवें दिन या चौदहव दिन होगा और जो ग्यारहव दिन बारी जल्द आजाय और ज्वर बहुत गर्म हो और मवाद के पकने का चिन्ह प्रकट हो तो बौहरान चौदहवें दिन होगा और जो मवाद के पकने के चिन्ह चौदहवें दिन प्रकट हो तो बौहरान सत्रहवें अठारहवें बीसव अथवा इक्कीसवें दिन होगा और बीसवें दिन बहुधा होता है जैसे कि चौथा दिन, सातवें दिन की खबर देता है और ग्यारहवें और चौदहवें दिन की अटकल करता है वैसेही सत्तरहवां दिन बीसवें तथा इक्कीसवें दिन की खबर देता है और अठारहवें इक्कीसवें दिन की और बहुधा मवाद के पकने का असर सत्तरहवें दिन प्रकट होता है और निर्बल होता है और बौहरान इक्कीस से निकल कर चालीसवें दिन पर पहुंचता है और बीसवां चालीसवें का नियम करता है और ऐसामवाके फिज़ नसत में जब कि तीसरे दिन चिन्ह प्रकट हो तो बहुत बुरे हैं बौहरान छटे दिन होगा और पांचवां दिन नवें दिन का नियम करता है परन्तु जो बुरे चिन्ह हों तो बौहरान आठव दिन होगा (सूचना) तेज रोगों में बहुधा ऐसा होता है कि बौहरान के चिन्ह तीन दिन समान होते हैं अर्थात् बौहरान तीन दिन में बीत जाता है और जानना चाहिये

दिनों को बौहरान के दिनों में नहीं गिना है क्योंकि बीस २ दिन के बहुरानों की शक्ति एक सौ बीस दिन तक होती है अभिप्राय यह है कि बौहरान का दिन एक सौ बीस दिन के उपरांत अथवा सात महीने के उपरांत होगा तथा सात वर्ष के तथा चौदह वर्ष तथा इक्कीस वर्ष में होता है और जान लेना चाहिये कि चालीसवां दिन तेज रोगों में सब से पिछला है और पुराने रोगों में सब से पहला सो जो मवाद बहुत तेज है तो बौहरान चौथे दिन होगा और नहीं तो जितनी उसकी तेजी म न्यूनता होगी उतनाही देर म मकट होगा और पुराना रोग जितना अधिक पुराना होगा उसका बौहरान चालीसवें दिन से उतनाही दूर होगा और बौहरान के दिन का अनुमान यहां भी लिखा जाता है कि जब तेज रोगों में पहिले दिन मवाद के पकने का असर मालूम हो तो बौहरान चौथे दिन हो और जो रोग बहुत गर्म शीघ्र गति मान है तो तीसरे दिन बौहरान होगा और जो न्यूनता के साथ होगा तो चौथे दिन बौहरान होगा और जो चौथे दिन अटकल का हो और रोग गर्म है तो बौहरान सातवें दिन होगा और जो न्यूनता के साथ हुआ तो नवें दिन होगा और जो अटकल का दिन चौथा दिन है और बुरे चिन्ह मालूम होते हैं तो बौहरान छटे दिन होगा और जो नियमित दिन सातवां है तो बौहरान ग्यारहवें दिन या चौदहव दिन होगा और जो ग्यारहव दिन बारी जल्द आजाय और ज्वर बहुत गर्म हो और मवाद के पकने का चिन्ह मकट हो तो बौहरान चौदहवें दिन होगा और जो मवाद के पकन के चिन्ह चौदहवें दिन मकट हो तो बौहरान सत्रहवें अठारहवें बीसव अथवा इक्कीसवें दिन होगा और बीसवें दिन बहुधा होता है जैसे कि चौथा दिन, सातवें दिन की खबर देता है और ग्यारहवें और चौदहवें दिन की अटकल करता है वैसेही सत्तरहवां दिन बीसवें तथा इक्कीसवें दिन की खबर देता है और अठारहवें इक्कीसवें दिन की और बहुधा मवाद के पकने का असर सत्तरहवें दिन मकट होता है और निर्बल होता है और बौहरान इक्कीस से निकल कर चालीसवें दिन पर पहुचता है और बीसवां चालीसवें का नियम करता है और ऐसामवाके फिल नसत में जब कि तीसरे दिन चिन्ह प्रकट हो तो बहुत बुरे है बौहरान छटे दिन होगा और पांचवां दिन नवें दिन का नियम करता है परन्तु जो बुरे चिन्ह हों तो बौहरान आठव दिन होगा (सूचना) तेज रोगों में बहुधा ऐसा होता है कि बौहरान के चिन्ह तीन दिन समान होते है अर्थात् बौहरान तीन दिन में बीत जाता है और जानना चाहिये

साम्हने लाल लकीरें मालूम हों और मुख नाक और आखें लाल होजाय, और आंसू आंखमेंसे एक साथ आवे और नाक में खुजली चले और सिरकी रगोंमें टीस हो तो जानना चाहिये कि बौहरान नकसीर से होगा मुख्य कर जो रोग खूनी और रोगी जवान हो और पित्ती मवाद भी बहुधा नक्सीर का बौहरान करताहै और इसका यह चिन्ह है कि आंख के सामने पीले भुनगे मच्छर आदि उड़ते हुए दिखाई दें और तपे मुहर्रका और बौहरान के दिन ज्यादा मालूम होना और खाल में सुरखी का होना दोनों नक्सीर के चिन्ह हैं यदि आरोग्यताके दूसरे चिन्ह हों और नहीं तो मौत के चिन्ह हैं और सब से उत्तम नक्सीर वह है कि जिस तरफ में रोग का मवाद हो उसी तरफ से हो और मवाद का झुकाव नीचे की तरफ में होताहै सो इसके चिन्ह यह हैं कि रोगी को नीचे की तरफ में कष्ट और गर्मी मालूम हो और पेडू और चूतड में भारापन मालूम हो और जो कुछ ऊपर की तरफ मवाद का झुकाव हो तो मवाद के होने के चिन्ह हैं वह बिलकुल नहीं फिर जो लिंग के सिरे में जलन और मसाने में भारापन और मूत्र गाढा आवे और इसमें स्वभाव से अधिक तिलछट प्रगट हो और तबियत में अजीर्ण हो और पसीना कम आवे तो जानना चाहिये कि बौहरान मूत्र के बहने से होगा और मूत्र के बहने का बौहरान जाडों में और ऋतुओं से विशेष होता है और जो पेट में गुड गुडाहट हो और मल मूत्र हरापन लिये हुए हो और सम्पूर्ण शरीर में मुख्यकर ढुडी के नीचे मरोडा और भारापन मालूम होता है और नाडी छोटी बलवान और कठोर हो तो जानना चाहिये कि बौहरान दस्तों से होगा मुख्यकर जो पित्तज्वर में विशेष पानी पीने का काम पडे और मूत्र सफेद और पतला हो अथवा रोगी की ऐसी आदत होकि इसकी तबियत नर्म हुआ करती है और दूसरे मवाद बहुत कम निकले और जो रोगी स्त्री हो और कमर गर्भ स्थानमें भारापन उत्पन्न हो और दूसरे बौहरान का कोई चिन्ह मालूम न हो तो जानना चाहिये कि बौहरान रजस्वला से होगा मुख्यकर जो इसके स्वभाव का समय निकटहो और जो गुदामें दर्द और बोझ उत्पन्नहो और पीठ और कमरमें दर्द हो और नाडी कुछ बडी और शक्तिवान हो और दूसरे बौहरानों के चिन्ह प्रगट नहीं तो जानना चाहिये कि गुदा की रगों के खुलने से बौहरान होगा और जब मवाद का झुकाव पसीना की तरफ होताहै तो उसका यह चिन्ह है समान... उतर कम आवे और तबि... ...ी हो और मसोंमें खाल लाल

साम्हने लाल लकीरें मालूम हों और मुख नाक और आंखें लाल होजाय और आंसू आंखमेंसे एक साथ आवे और नाक में खुजली चले और सिरकी रगोंमें टीस हो तो जानना चाहिये कि बौहरान नक्सीर से होगा मुख्य कर जो रोग खूनी और रोगी जवान हो और पित्ती मवाद भी बहुधा नक्सीर का बौहरान करताहै और इसका यह चिन्ह है कि आंख के सामने पीले भुनगे मच्छर आदि उड़ते हुए दिखाई दें और तपे मुहर्रका और बौहरान के दिन जाड़ा मालूम होना और खाल में खुश्की का होना दोनों नक्सीर के चिन्ह हैं यदि आरोग्यताके दूसरे चिन्ह हों और नहीं तो मौत के चिन्ह हैं और सब से उत्तम नक्सीर वह है कि जिस तरफ में रोग का मवाद हो उसी तरफ से हो और मवाद का झुकाव नीचे की तरफ में होताहै सो इसके चिन्ह यह हैं कि रोगी को नीचे की तरफ में कष्ट और गर्मी मालूम हो और चड्डा और चूतड़ में भारापन मालूम हो और जो कुछ ऊपर की तरफ मवाद का झुकाव हो तो मवाद के होने के चिन्ह हैं वह बिलकुल नहीं फिर जो लिंग के सिरे में जलन और मसाने में भारापन और मूत्र गाढ़ा आवे और इसमें स्वभाव से अधिक तिलछट प्रगट हो और तबियत में अजीर्ण हो और पसीना कम आवे तो जानना चाहिये कि बौहरान मूत्र के बहने से होगा और मूत्र के बहने का बौहरान जाड़ों में और ऋतुओं से विशेष होता है और जो पेट में गुड़गुड़ाहट हो और मल मूत्र हरापन लिये हुए हो और सम्पूर्ण शरीर में मुख्यकर टुंडी के नीचे मरोड़ा और भारापन मालूम होता है और नाड़ी छोटी बलवान और कठोर हो तो जानना चाहिये कि बौहरान दस्तों से होगा मुख्यकर जो पित्तज्वर में विशेष पानी पीने का काम पड़े और मूत्र सफेद और पतला हो अथवा रोगी की ऐसी आदत होकि इसकी तबियत नर्म हुआ करती है और इसके मवाद बहुत कम निकले और जो रोगी स्त्री हो और इसके गर्भ स्थानमें भारापन उत्पन्न हो और दूसरे बौहरान का कोई चिन्ह मालूम न हो तो जानना चाहिये कि बौहरान रजस्वला से होगा मुख्यकर जो इसके स्वभाव का समय निकटहो और जो गुदामें दर्द और बोझ उत्पन्नहो और पीठ और कमरमें दर्द हो और नाड़ी कुछ बड़ी और शक्तिवान हो और दूसरे बौहरानों के चिन्ह प्रगट नहीं तो जानना चाहिये कि गुदा की रगों के खुलने से बौहरान होगा और जब मवाद का झुकाव पसीना की तरफ होताहै तो उसका यह चिन्ह है समान मूत्र बहुत कम आवे और त[illegible] भी हो और मसामों में खाल खुश्क

साम्हने लाल लकीरें मालूम हों और मुख नाक और आंखें लाल होजांय और आसू आंखमेंसे एक साथ आवे और नाक में खुजली चले और सिरकी रगोंमें टीस हो तो जानना चाहिये कि वौहरान नक्सीर से होगा मुख्य कर जो रोग खूनी और रोगी जवान हो और पित्ती मवाद भी बहुधा नक्सीर का वौहरान करताहै और इसका यह चिन्ह है कि आंख के सामने पीले भुनगे मच्छर आदि उड़ते हुए दिखाई दें और तपे मुहर्रका और वौहरान के दिन लाल मालूम होना और साल में सुरुकी का होना दोनों नक्सीर के चिन्ह हैं यदि आरोग्यताके दूसरे चिन्ह हों और नहीं तो मौत के चिन्ह हैं और सब से उत्तम नक्सीर वह है कि जिस तरफ में रोग का मवाद हो उसी तरफ से हो और मवाद का झुकाव नीचे की तरफ में होताहै तो इसके चिन्ह यह हैं कि रोगी को नीचे की तरफ में कष्ट और गर्मी मालूम हो और चूतड़ों और चूतड में भारापन मालूम हो और जो कुछ ऊपर की तरफ मवाद का झुकाव हो तो मवाद के होने के चिन्ह हैं वह बिलकुल नहीं फिर जो लिंग के सिरे में जलन और मसाने में भारापन और मूत्र गाढा आवे और इसमें स्वभाव से अधिक तिलछट प्रगट हो और तबियत में अजीर्ण हो और पसीना कम आवे तो जानना चाहिये कि वौहरान मूत्र के बहने से होगा और मूत्र के बहने का वौहरान जाड़ों में और ऋतुओं से विशेष होता है और जो पेट में गुड़ गुड़ाहट हो और मल मन हरापन लिये हुए हो और सम्पूर्ण शरीर में मुख्यकर ढुंडी के नीचे मरोड़ा और भारापन मालूम होता है और नाड़ी छोटी बलवान और कठोर हो तो जानना चाहिये कि वौहरान दस्तों से होगा मुख्यकर जो पित्तज्वर में विशेष पानी पीने का काम पड़े और मूत्र सफेद और पतला हो अथवा रोगी की ऐसी आदत हो कि इसकी तबियत नर्म हुआ करती है और दूसरे मवाद बहुत कम निकले और जो रोगी स्त्री हो और कमर गर्भ स्थानमें भारापन उत्पन्न हो और दूसरे वौहरान का कोई चिन्ह मालूम न हो तो जानना चाहिये कि वौहरान रजस्वला से होगा मुख्यकर जो इसके स्वभाव का समय निकटहो और जो गुदामें दर्द और बोझ उत्पन्नहो और पीठ और कमरमें दर्द हो और नाड़ी कुछ बड़ी और शक्तिवान हो और दूसरे वौहरानों के चिन्ह प्रगट नहीं तो जानना चाहिये कि गुदा की रगों के खुलने से वौहरान होगा (और जब मवाद का झुकाव पसीना की तरफ होताहै तो उसका यह चिन्ह है समान दस्त बहुत कम आवे और तबियत में खुश्की हो और प्रत्येक में लाल सुरुक

साम्हने लाल लकीरें मालूम हों और मुख नाक और आखें लाल होजांय और आख्ह आंखमेंसे एक साथ आवे और नाक में खुजली चले और सिरकी रगोंमें टीस हो तो जानना चाहिये कि वौहरान नक्सीर से होगा मुख्य कर जो रोग खूनी और रोगी जवान हो और पित्ती मवाद भी बहुधा नक्सीर का वौहरान करताहै और इसका यह चिन्ह है कि आंख के सामने पीले भुनगे मच्छर आदि उड़ते हुए दिखाई दें और तपे मुहर्रका और वौहरान के दिन ज्यादा मालूम होना और साल में खुश्की का होना दोनों नक्सीर के चिन्ह हैं यदि आरोग्यताके दूसरे चिन्ह हों और नहीं तो मौत के चिन्ह हैं और सब से उत्तम नक्सीर वह है कि जिस तरफ में रोग का मवाद हो उसी तरफ से हो और मवाद का झुकाव नीचे की तरफ में होताहै तो इसके चिन्ह यह हैं कि रोगी को नीचे की तरफ में कष्ट और गर्मी मालूम हो और चढ़ों और चूतड़ में भारापन मालूम हो और जो कुछ ऊपर की तरफ मवाद का झुकाव हो तो मवाद के होने के चिन्ह है वह बिलकुल नहीं फिर जो लिंग के सिरे में जलन और मसाने में भारापन और मूत्र गाढ़ा आवे और इसमें स्वाभाव से अधिक तिलछट प्रगट हो और तबियत में अजीर्ण हो और पसीना कम आवे तो जानना चाहिये कि वौहरान मूत्र के बहने से होगा और मूत्र के बहने का वौहरान जाड़ों में और ऋतुओं से विशेष होता है और जो पेट में गुड़ गुड़ाहट हो और मल मन हरापन लिये हुए हो और सम्पूर्ण शरीर में मुख्यकर टुंडी के नीचे मरोड़ा और भारापन मालूम होता है और नाड़ी छोटी बलवान और कठोर हो तो जानना चाहिये कि वौहरान दस्तों से होगा मुख्यकर जो पित्तज्वर में विशेष पानी पीने का काम पड़े और मूत्र सफेद और पतला हो अथवा रोगी की ऐसी आदत हो कि इसकी तबियत नर्म हुआ करती है और दूसरे मवाद बहुत कम निकले और जो रोगी स्त्री हो और कमर गर्भ स्थानमें भारापन उत्पन्न हो और दूसरे वौहरान का कोई चिन्ह मालूम न हो तो जानना चाहिये कि वौहरान रजस्वला से होगा मुख्यकर जो इसके स्वभाव का समय निकटहो और जो गुदामें दर्द और बोझ उत्पन्नहो और पीठ और कमरमें दर्द हो और नाड़ी कुछ बड़ी और शक्तिवान हो और दूसरे वौहरानों के चिन्ह प्रगट नहीं तो जानना चाहिये कि गुदा की रगों के खुलने से वौहरान होगा (और जब मवाद का झुकाव पसीना की तरफ होताहै तो उसका यह चिन्ह है समान दस्त बहुत कम आवें और तबियत में खुश्की हो और प्रत्येक में खाल सुर्ख

के लाने वाली चीजें दें जैसा कि सिर के बौहरानी दर्द में वर्णन कियागयाहै और इसी तरह जो मवाद के निकलने से बौहरान अधिक होजाय और निर्बलता का भयहो तो उसको तबियत के विरुद्ध समझें और इस को बन्द करें और जो बौह रान कि किसी मवाद के निकलने से हो तो उसे बिना आवश्यकता के बन्द न करना चाहिये (इस बात का वर्णन कि मवाद को एक अंग से फेरकर दूसरे अंग पर डालें) और यह कई प्रकार का होता है एक तो यहहै कि जो अंग उसके समान है इतना कड़ा बांधदें कि दर्द करने लगे जिससे कष्ट के कारण इस ओर मवाद फिर जाय दूसरा यह है कि जो अंग उसके समान है उसपर शीशा तथा सिंगी अथवा घीया के बारे लगावें अथवा गर्म और मवाद के खींचने वाली दवाओं का इसपर लेपकरें तीसरा यह है कि जो मवाद दाहिने हाथ में हो तो बांये हाथ से कोई कड़ा काम करें और कोई भारी चीज उठावें चौथा यह है कि जो मवाद सिर में या आंख में है तो चाहिये कि ऐसी दवा इस पर लगावें कि दर्द थमजाय और पांव को बहुत जोर से मलें और अथवा गर्म पानी में रक्खें अथवा पिंडलीसे तलुओं तक बहुत जोर से बांधदे जिसमें मवाद ऊपर से उतर आवे और इसी तरह जब कि मवाद भीतर पड़ना चाहे और आमाशय और छाती की तरफ आने वाला हो तो बाहु और जाघों को बहुत जोर से बांधदे जिससे हाथ पांवों की तरफ फिर जाय और मूत्र का बहना पसीना के आने से रुक जाता है और पसीना मूत्र के बहने और वमन और दस्तों से और दस्त वमन से अभिप्राय यह है कि जब मवाद को किसी अंग से फेरना चाहे तो विरुद्ध ओर में उतारना चाहिये चाहे दूर के अंग में हो चाहे निकट में जैसे किसी मनुष्य के तालू और मुख से खून आता है और जो पास वाली विरुद्ध ओर फेरना चाहै तो नाककी तरफ इसको फेर देना चाहिये और जो अंग में बहुत दूर फेरदेना चाहै तो नीचे के अंगों में से कोई रग खोलें इसी तरह जैसे एक स्त्री को बवासीर का रोग है औरसमीप के अंग में इसको फेर देना चाहे तो रजकी विधिपर फेर दें और उसको बहुत दूर के अंगों में फेर देना चाहे तो ऊपरकी आधी ओर में कोई रग खोलें जब यह चाहै कि अंग पर मवाद न आवे तो ठीक २ उपाय यह है कि पहिले दर्द को थमावे इस लिये कि तुरत मवाद को अपनी तरफ खींचता है फिर जब कि दर्द थम जायगा तो मवाद हटाना सहज और बेकष्ट होगा और किसी प्रकार से श्रेष्ठ अंग और अधिक प्रधान शक्ति वाले अंग में और कठोर अंग में मवाद न लाना चाहिये जबतक

के लाने वाली चीजें दें जैसा कि सिर के बौहरानी दर्द में वर्णन कियागयाहै और इसी तरह जो मवाद के निकलने से बौहरान अधिक होजाय और निर्बलता का भयहो तो उसको तबियत के विरुद्ध समझें और इस को बन्द करें और जो बौहरान कि किसी मवाद के निकलने से हो तो उसे विना आवश्यकता के बन्द न करना चाहिये (इस बात का वर्णन कि मवाद को एक अंग से फेरकर दूसरे अंग पर डालें) और यह कई प्रकार का होता है एक तो यहहै कि जो अंग उसके समान है इतना कड़ा बांधदें कि दर्द करने लगे जिससे कष्ट के कारण इस ओर मवाद फिर जाय दूसरा यह है कि जो अंग उसके समान है उसपर शीशा तथा सिंगी अथवा घीया के बारे लगावें अथवा गर्म और मवाद के खींचने वाली दवाओं का इसपर लेपकरें तीसरा यह है कि जो मवाद दाहिने हाथ में हो तो बांये हाथ से कोई कड़ा काम करें और कोई भारी चीज उठावें चौथा यह है कि जो मवाद सिर में या आंख में है तो चाहिये कि ऐसी दवा इस पर लगावें कि दर्द थमजाय और पाव को बहुत जोर से मलें और अथवा गर्म पानी में रक्खें अथवा पिंडलीसे तलुओं तक बहुत जोर से बांधदे जिसमे मवाद ऊपर से उतर आवे और इसी तरह जब कि मवाद भीतर पड़ना चाहे और आमाशय और छाती की तरफ आने वाला हो तो बाहु और जांघों को बहुत जोर से बांधदे जिससे हाथ पांवों की तरफ फिर जाय और मूत्र का बहना पसीना के आने से रुक जाता है और पसीना मूत्र के बहने और वमन और दस्तों से और दस्त वमन से अभिप्राय यह है कि जब मवाद को किसी अंग से फेरना चाहे तो विरुद्ध ओर में उतारना चाहिये चाहे दूर के अंग में हो चाहे निकट में जैसे किसी मनुष्य के तालू और मुख से खून आता है और जो पास वाली विरुद्ध ओर फेरना चाहे तो नाककी तरफ इसको फेर देना चाहिये और जो अंग में बहुत दूर फेरदेना चाहे तो नीचे के अंगों में से कोई रग खोले इसी तरह जैसे एक स्त्री को रक्तपित्त का रोग है और समीप के अंग में इसको फेर देना चाहे तो रजकी विधिपूर्व फेर दें और उसको बहुत दूर के अंगों में फेर देना चाहे तो ऊपरकी आधी ओर में कोई रग खोलें जब यह चाहे कि अंग पर मवाद न आवे तो ठीक २ उपाय यह है कि पहिले दर्द को थमावे इस लिये कि तुरत मवाद को अपनी तरफ खींचता है फिर जब कि दर्द थम जायगा तो मवाद हटाना सहज और बेकष्ट होगा और किसी प्रकार से श्रेष्ठ अंग और अधिक पचान शक्ति वाले अंग में और कठोर अंग में मवाद न लाना चाहिये जबतक

कि बडी और गाढी होती है इस जगह की रगों और दिल की रगों को दवा लेती है फिर हवा के मार्ग के बन्द होने और न पहुचने से उस अग की प्राकृतिक गर्मी नष्ट होती है और उसके खून में सडाहट आती है और अग का बिगाड कर काला कर देती है और इसका बिगाड उसके और पास में प्रवेश होजाता है और रोग के उत्पन्न होने के कारण को अग के बिगडने वाली सूजन कहते है जैसे दिमाग के रोगों में वर्णन किया है (इलाज) जो इस रोग का आरम्भ हो और इस दर्जे को न पहुचा हो कि प्राकृतिक गर्मी को नष्ट करे और अगों को सडा या काला कर दें तो तुर्त गहरे पछने लगावे जिस से मवाद निकम्मी जगह पहुचे इस लिये कि प्रयोजन इसी खराब खून के निकालने से है जिस से बिगाड होता है और हकीम जालीनूस ने कहा है कि यहां हलके पछनों का लगाना अग को निकम्मा करके रोगी को मार डालता है और गहरा लगाना सावधानी और असली दशा पर लाता है क्यों कि बिगडे हुए मवाद को निकालता है और जब पछने देकर खून निकाल दें तो इसी अग पर ऐसी चीज का लेप करे जो दुर्गन्धि को रोकने वाली हो और सडी हुई तरी को निकाल दें जैसे मटर का चून, सिकजबीन में मिलाकर तथा गिलेइरमनी, माजु, और फिटकरी महीन करके शहद में मिलाकर और जब अग काला होजाय और गर्मी नष्ट हो तो तुन उस अग को काट डाले जिस से इस का निकम्मापन दूसरे अगों में प्रवेश न होवे क्योंकि उस समय काटनेके सिवाय कोई इलाज नहा और काटना उचित न हो तो उसके और पास दाग दे जिस से उस के बिगड जाने से दूसरे अग बच रहे और काटने के उपरात घाव के भरने वाली दवाओं को काम में लावें (लाभ) जब यह जाने कि इस रोग का मवाद इकट्ठा होता है तो जल्द उसको पकावे और चीर डालें अगर मवाद के पकने के लिए मवाद के पकाने वाली और खाल को नर्म और रोमाञ्चित करने वाली दवा काम में लावे क्योंकि सूजन जब कठोर होजाती है तो बहुत कम इलाज ग्रहण करती है सो जो कुछ थोडी कठोरता उस में लगे तो कभी नर्म करने वाली दवा और कभी मवाद के पकाने वाली दवा काम में लावें जिस से बहुत कठोर न हो और अग को नष्ट न करे (सूचना) जो निकम्मी करी सूजन दिमाग की रगों में होती है उसका उपाय सिर की सूजन में बहुत से लाभों के साथ वर्णन हुआ है ॥

कि बडी और गाढी होती है इस जगह की रगों और दिल की रगों को दबा लेती है फिर हवा के मार्ग के बन्द होने और न पहुचने से उस अग की प्राकृतिक गर्मी नष्ट होती है और उसके खून में सडाहट आती है और अग का बिगाड कर काला कर देती है और इसका बिगाड उसके और पास में प्रवेश होजाता है और रोग के उत्पन्न होने के कारण को अग के बिगडने वाली सूजन कहते है जैसे दिमाग के रोगों में वर्णन किया है (इलाज) जो इस रोग का आरम्भ हो और इस दर्जे को न पहुचा हो कि प्राकृतिक गर्मी को नष्ट करें और अगों को सडा या काला कर दें तो तुर्त गहरे पछने लगावे जिस से मवाद निकम्मी जगह पहुचे इस लिये कि प्रयोजन इसी खराब खून के निकालने से है जिस से बिगाड होता है और हकीम जालीनूस ने कहा है कि यहां हलके पछनों का लगाना अग को निकम्मा करके रोगी को मार डालता है और गहरा लगाना सावधानी और असली दशा पर लाता है क्यों कि बिगडे हुए मवाद को निकालता है और जब पछने देकर खून निकाल दें तो इसी अग पर ऐसी चीज का लेप करे जो दुर्गन्धि को रोकने वाली हो और सडी हुई तरी को निकाल दें जैसे मटर का चून, सिकजबीन में मिलाकर तथा गिलेइरमनी, माजु, और फिटकरी महीन करके शहद में मिलाकर और जब अग काला होजाय और गर्मी नष्ट हो तो तुन उस अग को काट डाले जिस से इस का निकम्मापन दूसरे अगों में प्रवेश न होवे क्योंकि उस समय काटनेके सिवाय कोई इलाज नहा और काटना उचित न हो तो उसके और पास दाग दे जिस से उस के बिगड जाने से दूसरे अग बच रहे और काटने के उपरात घाव के भरने वाली दवाओं को काम में लावें (लाभ) जब यह जाने कि इस रोग का मवाद इकट्ठा होता है तो जल्द उसको पकावे और चीर डाले और मवाद के पकने के लिए मवाद के पकाने वाली और खाल को नर्म और रोमाञ्चित करने वाली दवा काम में लावे क्योंकि सूजन जब कठोर होजाती है तो बहुत कम इलाज ग्रहण करती है सो जो कुछ थोडी कठोरता उस में लगे तो कभी नर्म करने वाली दवा और कभी मवाद के पकाने वाली दवा काम में लावें जिस से बहुत कठोर न हो और अग को नष्ट न करे (सूचना) जो निकम्मी रद्दी सूजन दिमाग की रगों में होनी है उसका उपाय सिर की सूजन में बहुत से लाभों के साथ वर्णन हुआ है ॥

दाना शरीर में अधिक जगह घेरता है और मांस की गहराई में नहीं पहुंचता है और लाली अधिक होती है और दर्द भी विशेष होता है जैसा कि उस जगह चिनगारी रक्खी है इस लिये इसका यह नाम रक्खा गयाहै और उसका मवाद पीप नहीं होता किन्तु वैसाही अच्छा होजाताहै और खुरड होकर खाल उतर जातीहै और इसका कारण गाढा पित्त अधिक तेज और निकम्मा है कि मवाद में खून मिला होता है (इलाज) जो कुछ कि नमला (छोटी फुन्सियां) में वर्णन किया जायगा काम में लावे और कभी ऐसी आवश्यकता पड़ती है कि गहरे पछने लगावें जिससे निकम्मा खून जो अंग की गहराई में रुका हुआहै निकलजाय और फुन्सी के लेपमें कपूर भी डालदें और यह दवा आतशक को मुख्य हैं सिर्के की गाद लेकर गर्म धरती पर डाले जब कि उबलने लगे तो उठाकर उसमें कपूर मिलाकर लेप करे और जो गिलेइरमनी तथा मुलतानी बढावे तो अति उत्तमहै (दूसरा नुसखा) खट्टे अनार को चीरकर सिर्के में औटावें जब नर्म होजाय तो पीसकर एक कपड़े पर लगावें और इस जगह पर रक्खें और दिनमें दो बार और रात के समय एक बार ऐसाही करे और यह दवा आरम्भ से अंत तक लगावें परन्तु न्यूनता की दशा में नहीं और उपाय भी खून अथवा पित्त की अधिकता की रक्षा से काम में लावें जैसा कि उचित जाने (सूचना) और किसी २ के समीप यह है कि जो खून अधिक हो और कोई कार्य्य वर्जित नहो तो फस्द खोले और इतना खून निकालें कि अचेतता आजाय ॥

पांचवीं कहावत नमला (छोटी फुन्सी) का वर्णन ।

कभी तो एक फुंसी होतीहै और कभी छोटी २ फुंसियां एक दूसरे के समीप और आपसमें मिली हुई होतीहैं और जलन और विशेष भड़काव और खुजली इन में उचित है और उसकी जलन ऐसी होतीहै जैसे चींटीके काटनेसे होती है और कोई २ हकीम कहते हैं कि इसी कारण से इसका यह नाम रक्खा गया है और जानना चाहिये कि इन फुंसियों के और पास में भी सूजन हो जातीहै और अपनी जगह से [illegible] ना फुंसी [illegible] है और यह दो प्रकार की होती है एक का म[illegible] मि[illegible] उसको नमलवे साजिजा कहते हैं और साल[illegible]) केवल [illegible] में ही होता है दूसरी यह है कि इसका म[illegible] जले [illegible] उस फु[illegible] मुक़ाबिला ([illegible]

दाना शरीर में अधिक जगह घेरता है और मांस की गहराई में नहीं पहुंचता है और लाली अधिक होती है और दर्द भी विशेष होता है जैसा कि उस जगह चिनगारी रक्खी है इस लिये इसका यह नाम रक्खा गयाहै और उसका मवाद पीप नहीं होता किन्तु वैसाही अच्छा होजाताहै और खुरड होकर खाल उतर जातीहै और इसका कारण गाढा पित्त अधिक तेज और निकम्मा है कि मवाद में खून मिला होता है (इलाज) जो कुछ कि नमला (छोटी फुन्सियां) में वर्णन किया जायगा काम में लावे और कभी ऐसी आवश्यकता पड़ती है कि गहरे पछने लगावें जिससे निकम्मा खून जो अंग की गहराई में रुका हुआहै निकलजाय और फुन्सी के लेपमें कपूर भी डालदें और यह दवा आतशक को मुख्य हैं सिर्के की गाद लेकर गर्म धरती पर डाले जब कि उबलने लगे तो उठाकर उसमें कपूर मिलाकर लेप करे और जो गिलेइरमनी तथा मुलतानी चढावे तो अति उत्तमहै (दूसरा नुसखा) खट्टे अनार को चीरकर सिर्के में औटावें जब नर्म होजाय तो पीसकर एक कपडे पर लगावें और इस जगह पर रक्खें और दिनमें दो बार और रात के समय एक बार ऐसाही करे और यह दवा आरम्भ से अंत तक लगावें परन्तु न्यूनता की दशा में नहीं और उपाय भी खून अथवा पित्त की अधिकता की दशा से काम में लावें जैसा कि उचित जाने (सूचना) और किसी २ के समीप यह है कि जो खून अधिक हो और कोई कार्य्य वर्जित नहो तो फस्द खोले और इतना खून निकालें कि अचेतता आजाय ॥

पांचवीं कहावत नमला (छोटी फुन्सी) का वर्णन ।

कभी तो एक फुंसी होतीहै और कभी छोटी २ फुंसियां एक दूसरे के समीप और आपसमें मिली हुई होतीहैं और जलन और विशेष भड़काव और खुजली इन में उचित है और उसकी जलन ऐसी होतीहै जैसे चींटीके काटनेसे होती है और कोई २ हकीम कहते हैं कि इसी कारण से इसका यह नाम रक्खा गया है और जानना चाहिये कि इन फुंसियों के आस पास में भी सूजन हो जातीहै और अपनी जगह से [illegible] फुंसि[illegible] है और यह दो प्रकार की होती है एक का म[illegible] मि[illegible] उसको नमलये साजिजा कहते हैं और साल[illegible]) केवल [illegible] में ही होता है दूसरी यह है कि इसका म[illegible] जले [illegible]
उस फु[illegible] मुवाफिला ([illegible]

लताहै पीलीहड़े, इमली, मकोय अमरबेल के बीज कासनीके बीज प्रत्येक को आवश्यकतानुसार औटाकर साफकरें और जितना उचित समझें तुरंजबीन, सकमूनियां और तुर्बुद मिलाकर पिलावै ।

॥ सातवीं कहावत पानी की भरी फुन्सी का वर्णन ॥

वह एक पानी से भरी फुन्सी होती है और उसमें अधिक जलन और बहुतसी खुजली होतीहै और जब निकलतीहै तो बहुत जल्द सुरख्वक जाता है और इसका प्रभावहै कि जब निकलने लगेतो इससे पहले शरीरमें उसके निकलने की जगह मोर की सी लाल लकीरें प्रगट हों जैसे आगकी लौ होतीहै उसके उपरांत फुंसी प्रगटहों और इसको भी आतशक कहते है और कोई इसको आतशक का एक भेद जानते हैं और उसका यह चिन्ह है कि इसमें खुजली और जलन अधिक हो और फफोला की तरह जल्दी खुरंड ले आवे [इलाज] फस्द खोलें और सतोप और तबियत को नर्म करनेके लिये शर्बत उन्नाव और इमली या पानी खट्टे मीठे अनार का पानी जौ के घाटका पानी पीआय। पानी इसबगोल के लुआब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़े पर लगायर हरघड़ी गुलाब में रगड़ कर और कपूर मिलाकर लेपकरें और जो रसौत और कपूर इसबगोल गुलाब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़ापर लगा कर हरघड़ी अंगपर रक्खें तो अधिक लाभ दायक है और ऐसा ही बिगड़ा हुआ माजू और जब कि इन फुन्सियों में पानी भरजाय तो छेद करके उसका पानी निकाल डालें फिर सफेदा की मरहम लगावें और इसके और पास गिलेइरमनी मिया और गुलाब मलें और जहां कि पीव अधिक निकलती है तो रसौत हलदी और कपूर कासनी और सदा गुलाब के पानी में मिलाकर लेपकरें और जो मुर्ग आदि की आवश्यकता पड़े औरखांसी न हो तो कच्चे अंगूर के पानी से सम्भालकर देना चाहिये और इस उपायको सम्पूर्ण सूजनों में याद रक्खें ॥

॥ आठवीं कहावत नफातातका वर्णन ॥

यह ऐसी सूरत की फुन्सी है जैसे आग के जल जाने से उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि इस सूजन के भीतर बहुधा पतला पानी होता है और कभी पतला खून होता है और कभी चवल गाढ़ी हवा के सिवाय कुछ नहीं होता है और उसको नफातात कहते हैं [इलाज] फस्द खोलें और इसके गाढ़े

लताहै पीलीहड़, इमली, मकोय अमलेल के बीज कासनीके बीज प्रत्येक को आवश्यकतानुसार औटाकर साफकरें और जितना उचित समझें तुरजबीन, सकमूनियां और लुबूद मिलाकर पिलावे ।

॥ सातवीं कहावत पानी की भरी फुन्सी का वर्णन ॥

वह एक पानी से भरी फुसी होती है और उसमें अधिक जलन और बहुतसी खुजली होतीहै और जब निकलतीहै तो बहुत जल्द सुरख्रब जाता है और इसका प्रभावहै कि जब निकलने लगेतो इससे पहले शरीरमें उसके निकलने की जगह मोर की सी लाल लकीरें प्रगट हों जैसे आगकी लौ होतीहै उसके उपरांत फुसी प्रगटहों और इसको भी आतशक कहते है और कोई इसको आतशक का एक भेद जानते हैं और उसका यह चिन्ह है कि इसमें खुजली और जलन अधिक हो और फफोला की तरह जल्दी सुर्ख ले आवे [इलाज] फस्द खोलें और सतोप और तबियत को नर्म करनेके लिये शर्बत उन्नाव और इमली या पानी खट्टे मीठे अनार का पानी जौ के घाटका पानी पीआय। पानी इसबगोल के लुआब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपडे पर लगायकर हरघडी गुलाब में रगड कर और कपूर मिलाकर लेपकरें और जो रसौत और कपूर इसबगोल गुलाब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपडापर लगा कर हरघडी अगपर रक्खें तो अधिक लाभ दायक है और ऐसा ही बिगडा हुआ माजू और जब कि इन फुन्सियों में पानी भरजाय तो छेद करके उसका पानी निकाल डालें फिर सफेदा की मरहम लगावें और इसके और पास गिलेइरमनी सिका और गुलाब मलें और जहां कि पीव अधिक निकलती है तो रसौत हलदी और कपूर कासनी और सदा गुलाब के पानी में मिलाकर लेपकरें और जो मुर्ग आदि की आवश्यक्ता पड़े औरखांसी न हो तो कच्चे अंगूर के पानी से सम्भालकर देना चाहिये और इस उपायको सम्पूर्ण सूजनों में याद रक्खें ॥

॥ आठवीं कहावत नफातातका वर्णन ॥

यह ऐसी सूरत की फुन्सी है जैसे आग के जल जाने से उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि इस सूजन के भीतर बहुधा पतला पानी होता है और कभी पतला खून होता है और कभी यवल गाढी हवा के सिवाय कुछ नहीं होता है और उसको नफातात कहते है [इलाज] फस्द खोलें और इसके गाढे

लताहै पीलीहड़े, इमली, मकोय अमरबेल के बीज कासनीके बीज प्रत्येक को आवश्यकतानुसार औटाकर साफकरें और जितना उचित समझें तुरंजबीन, सकमूनियां और तुखम मिलाकर पिलावै।

॥ सातवीं कहावत पानी की भरी फुन्सी का वर्णन ॥

यह एक पानी से भरी फुंसी होती है और उसमें अधिक जलन और बहुतसी खुजली होतीहै और जब निकलतीहै तो बहुत जल्द सुरकबध जाता है और इसका प्रभावहै कि जब निकलने लगैतो इससे पहले शरीरम जराके निकलने की जगह मोर की सी लाल लकीरें प्रगट हों जैसे आगकी लौ होतीहै उसकेउपरांत फुंसी प्रगटहों और इसको भी आतशक कहते हैं और कोई उसको आतशक का एक अर्थ जानते ह और उसका यह चिन्ह है कि इसमें खुजली और जलन अधिक हो और फफोला की तरह जल्दी सुरख ले आवे [इलाज] फस्द खोलें और सतोष और तबियत को नर्म करनेके लिये शर्बत लुआव और इमली या पानी खट्टे मीठे अनार का पानी जौ के घाटका पानी धीआका पानी इसबगोल के लुआव और बारतंग के लुआव में घिसकर एक कपड़े पर लगाकर हरयदी गुलाब में रगड़ कर और कपूर मिलाकर लेपकरें और जो रसौत और कपूर ईसबगोल गुलाब और बारतंग के लुआव में घिसकर एक कपड़ापर लगा कर हरघड़ी अगपर रक्खें तो अधिक लाभ दायक है और ऐसा ही बिगड़ा हुआ माजू और जब कि इन फुन्सियों में पानी भरजाय तो छेद करके उसका पानी निकाल डालें फिर सफेदा की मरहम लगावै और इसके और पास गिलेइरमनी सिर्का और गुलाब मलै और जहां कि पीब अधिक निकलती है तो रसौत हल्दी और कपूर कासनी और सदा गुलाब के पानी में मिलाकर लेपकरै और जो मुर्ग आदि की आवश्यकता पड़े औरखांसी न हो तो कच्चे अंगूर के पानी से सम्भालकर देना चाहिये और इन उपायको सम्पूर्ण सूजनों में याद रक्खें ॥

॥ आठवीं कहावत नफ़ाखात्का वर्णन ॥

यह ऐसी सूरत की फुन्सी है जैसे आग के जल जाने से उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि इस सूजन के भीतर बहुधा पतला पानी होता है और कभी पतला खून होता है और कभी केवल गाढ़ी हवा के सिवाय कुछ नहीं होता है और उसको नफ़ाखात कहते हैं [इलाज] फस्द खोलें और खनक गाढ़-

लताहै पीलीहडै, इमली, मकोय अमरबेल के बीज कासनीके बीज प्रत्येक को आवश्यकतानुसार औटाकर साफकरें और जितना उचित समझें तुरंजबीन, सकमूनियां और तुबुंद मिलाकर पिलावै ।

॥ सातवीं कहावत पानी की भरी फुन्सी का वर्णन ॥

यह एक पानी से भरी फुसी होती है और उसमें अधिक जलन और बहुतसी खुजली होतीहै और जब निकलतीहै तो बहुत जल्द खुरडबंध जाता है और इसका प्रभावहै कि जब निकलने लगैतो इससे पहले शरीरम उसके निकलने की जगह मोर की सी लाल लकीरें प्रगट हों जैसे आगकी लौ होतीहै उसकेउपरांत फुसी प्रगटहों और इसको भी आतशक कहते हैं और कोई उसको आवशक का एक भेद जानते ह और उसका यह चिन्ह है कि इसमें खुजली और जलन अधिक हो और फफोला की तरह जल्दी खुरड ले आवे [इलाज] फस्द खोलें और सतोप और तबियत को नर्म करनेके लिये शर्बत उन्नाव और इमली या पानी खट्टे मीठे अनार का पानी जौ के काढ़ेका पानी पीआवा पानी इसबगोल के लुआब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़े पर लगावर हरयदी गुलाब में रगड़ कर और कपूर मिलाकर लेपकरें और जो रसौत और कपूर ईसबगोल गुलाब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़ेपर लगा कर हरयदी जगपर रक्खें तो अधिक लाभ दायक है और ऐसा ही बिगड़ा हुआ माजू और जब कि इन फुन्सियों में पानी भरजाय तो छेद करके उसका पानी निकाल डालें फिर सफेदा की मरहम लगावै और इसके और पास गिलेइरमनी सिर्का और गुलाब मलै और जहां कि पीव अधिक निकलती है तो रसौत हल्दी और कपूर कासनी और सदा गुलाब के पानी में मिलाकर लगावें और जो मुर्ग आदि की आवश्यकता पड़े औरखांसी न हो तो कच्चेअंगूर के पानी से सम्भालकर देना चाहिये और इन उपायको सम्पूर्ण यजनों में याद रक्खें ॥

॥ आठवीं कहावत नफ़ाताबका वर्णन ॥

यह ऐसी सूरत की फुन्सी है जैसे आग के जल जाने से उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि इस सूजन के भीतर बहुधा पतला पानी होता है और कभी पतला खून होता है और कभी केवल गाढ़ी हवा के सिवाय कुछ नहीं होता है और उसको नफ़ाखात कहते हैं [इलाज] फस्द खोलें और खनक गाढ़-

लतांदे पीलीहडें, इमली, मकोय अमरबेल के बीज कासनीके बीज प्रत्येक को आवश्यकतानुसार औटाकर साफकरें और जितना उचित समझें गुरजबीन, सकमूनियां और तुर्बुद मिलाकर पिलावे ।

॥ सातवीं कहावत पानी की भरी फुन्सी का वर्णन ॥

यह एक पानी से भरी फुंसी होती है और उसमें अधिक जलन और बहुतसी खुजली होतीहै और जब निकलतीहै तो बहुत जल्द सुरखबध जाता है और उसका प्रभावहै कि जब निकलने लगेतो इससे पहले शरीरमें उसके निकलने की जगह मोर की सी लाल लकीर प्रगट हों जैसे आगकी लौ होतीहै उसके उपरांत फुंसी प्रगटहों और इसको भी आतशक कहते हैं और कोई उसको आतशक का एक अंग जानते हैं और उसका यह चिन्ह है कि इसमें खुजली और जलन अधिक हो और फफोला की तरह जल्दी सुरख ले आवे [इलाज] फस्द खोलें और गतोप और तबियत को नर्म करनेके लिये शर्बत उन्नाव और इमली का पानी खट्टे मीठे अनार का पानी जौ के घाटका पानी खीआका पानी इसबगोल के लुआब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़े पर लगाकर हरघड़ी गुलाब में रगड़ कर और कपूर मिलाकर लेपकरें और जो रसौत और कपूर ईसबगोल गुलाब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़ापर लगा कर हरघड़ी अंगपर रक्खें तो अधिक लाभ दायक है और ऐसा ही त्रिगड़ा हुआ माजू और जब कि इन फुन्सियों में पानी भरजाय तो छेद करके उसका पानी निकाल डालें फिर सफेदा की मरहम लगावें और इसके और पास गिलेइरमनी सिर्का और गुलाब मले और जहां कि पीब अधिक निकलती है तो रसौत हलदी और कपूर कासनी और सदा गुलाब के पानी में मिलाकर लेपकरें और जो मुर्ग आदि की आवश्यकता पड़े औरखांसी न हो तो कच्चे अंगूर के पानी से सम्भालकर देना चाहिये और इस उपायको सम्पूर्ण सूजनों में याद रक्खें ॥

॥ आठवीं कहावत नफ़ातातका वर्णन ॥

यह ऐसी सूरत की फुन्सी है जैसे आग में जल जाने से उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि इस सूजन के भीतर बहुधा पतला पानी होता है और कभी पतला खून होता है और कभी केवल गाढ़ी हवा के सिवाय कुछ नहीं होता है और उसको नफ़ातात कहते हैं [इलाज] फस्द खोलें और उनके गाढ़-

लताहै पीलीहड़े, इमली, मकोय अमरबेल के बीज कासनीके बीज प्रत्येक को आवश्यकतानुसार औटाकर साफकरें और जितना उचित समझें तुरंजबीन, सकमूनियां और लुबुंद मिलाकर पिलावै ।

॥ सातवीं कहावत पानी की भरी फुन्सी का वर्णन ॥

यह एक पानी से भरी फुंसी होती है और उसमें अधिक जलन और बहुतसी खुजली होतीहै और जब निकलतीहै तो बहुत जल्द सुरखबध जाता है और इसका प्रभावहै कि जब निकलने लगैतो इससे पहले शरीरमें उसके निकलने की जगह मोर की सी लाल लकीर प्रगट हों जैसे आगकी लौ होतीहै उसके उपरांत फुंसी प्रगटहों और इसको भी आतशक कहते हैं और कोई इसको आतशक का एक भेद जानते हैं और उसका यह चिन्ह है कि इसमें खुजली और जलन अधिक हो और फफोला की तरह जल्दी सुरख हो आवे [इलाज] फस्द खोलें और गर्मी और तबियत को नर्म करनेके लिये शर्बत उन्नाव और इमली का पानी खट्टे मीठे अनार का पानी जौ के घाटका पानी घीआका पानी इसबगोल के लुआब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़े पर लगाकर हरघड़ी गुलाब में रसौत और कपूर मिलाकर लेपकरें और जो रसौत और कपूर इसबगोल गुलाब और बारतंग के लुआब में घिसकर एक कपड़ापर लगा कर हरघड़ी अंगपर रक्खें तो अधिक लाभ दायक है और ऐसा ही त्रिगदा हुआ माजू और जब कि इन फुन्सियों में पानी भरजाय तो छेद करके उसका पानी निकाल डालें फिर सफेदा की मरहम लगावें और इसके आस पास गिलेअरमनी सिर्का और गुलाब मलें और जहां कि पीब अधिक निकलती है तो रसौत हलदी और कपूर कासनी और सदा गुलाब के पानी में मिलाकर लेपकरें और जो गुर्म आदि की आवश्यकता पड़े औरखांसी न हो तो कच्चे अंगूर के पानी से सम्भालकर देना चाहिये और इस उपायको सम्पूर्ण सूजनों में याद रक्खें ॥

॥ आठवीं कहावत नफ़ातात्का वर्णन ॥

यह ऐसी सूरत की फुन्सी है जैसे आग से जल जाने से उत्पन्न हो और जानना चाहिये कि इस सूजन के भीतर बहुधा पतला पानी होता है और कभी पतला खून होता है और कभी केवल गाढ़ी हवा के सिवाय कुछ नहीं होता है और इसको नफ़ातात कहते हैं [इलाज] फस्द खोलें और इनके गाढ़-

॥ दसवीं कहावत माशरा का वर्णन ॥

माशरा सुरयानी कोप में उस सूजन को कहते हैं जो खून और पित्त से उत्पन्न होता है चाहे किसी जगह हो और पुराने हकीम कभी इस शब्द को उस फलगमूनी (खूनी सूजन) पर बोलते हैं जो मुख्य दिमाग में और उस की रगों में और सिर और मुख पर उत्पन्न हो जैसा किताब का मिकुस्सनाम्म के कर्त्ता ने इनदोनों का वर्णन लिखा है और हकीम शसउल रईस ने लिगर की पित्ती सूजन को भी माशराही कही है परन्तु पिछले हकीमों की सम्मति में उस सूजन का अर्थ है जो मुखपर उत्पन्न हो और उसका मवाद तेजपित्ती खून से मिला होता है और इस जगह यही अर्थ है और उसका चिन्ह यह है कि मुख अधिक लाल हो और दर्द करे और सिर कान नाक गाल और माथा फूलसा मालूम हो और दर्द और टीस उसमें होती है (इलाज) रग सराक की फस्द खोलें जो कोई कार्य वर्जित नहो और फसदेदें कि इतना खून निकालें कि अचेतता की दशा पहुंचे और जो फस्दका खोलना उचित न होतो पिंडलियोंपर पछने लगावें और जिस प्रकार पर कि होसके खून निकालने के उपरांत तबियतको मेवाओं के पानी से नर्म करे और जब नर्म करने वाली दवाओं को काम में लावें तो गले और छाती पर चदन सफेद और लाल, रसौत, गिले इरमनी तर धनिया इनको सुर्फा काहू तथा मकोय के पानी में मिलाकर लेप करे जिससे मवाद यहां न पड़े और जो एक फस्द को खोलने से प्रयोजन न प्राप्त हो और मवाद भरा हुआ रहे तो फिर दूसरे दिन या तीसरे दिन फस्द खोले और तबियत के मुलायम करने के उपरांत गुलाब और थोड़ा कपूर मुख पर मले जिससे सर्दी प्राप्त हो और शर्बतों और भोजनों में से जो कुछ ठंढ के पहुंचाने वाली और गाढा करने वाली हो उचित है जैसे मसूर, सूखा धनिया, अथवा जौका घाट उन्नाव, छिले मूग और उन्नाव ३० दाने लेकर औटावें और उस के पानी में सिकंजबीन मिलाकर दें तो अधिक लाभदायक है और यह रोग सिर के रोगों में भी वर्णन किया गया है

ग्यारहवीं कहावत महामारी का वर्णन ।

इस फुन्सी की सूजन कभी छोटी सी होती है जैसे बाकलाका दाना या उससे भी छोटी और कभी बहुत बड़ी अखरोट के बराबर अथवा उससे भी बड़ी होती है और जिस जगह पर कि हो फफोले और अधिक जलन उसमें होती है और ऐसा मालूम होता है जैसे आग रक्खी है और उसके गिर्द स्याही

॥ दसवीं कहावत माशरा का वर्णन ॥

माशरा सुरयानी कोप में उस सूजन को कहते हैं जो खून और पित्त से उत्पन्न होता है चाहे किसी जगह हो और पुराने हकीम कभी इस शब्द को उस फलगमूनी (खूनी सूजन) पर बोलते हैं जो मुख्य दिमाग में और उस की रगों में और सिर और मुख पर उत्पन्न हो जैसा किताब का मिकुस्सनाम्म के कर्त्ता ने इनदोनों का वर्णन लिखा है और हकीम शसउल रईस ने जिगर की पित्ती सूजन को भी माशराही कही है परन्तु पिछले हकीमों की सम्मति में उस सूजन का अर्थ है जो मुखपर उत्पन्न हो और उसका मवाद तेजपित्ती खून से मिला होता है और इस जगह यही अर्थ है और उसका चिन्ह यह है कि मुख अधिक लाल हो और दर्द करे और सिर कान नाक गाल और माथा फूलता मालूम हो और दर्द और टीस उसमें होती है (इलाज) रग सराख की फस्द खोलें जो कोई कार्य वर्जित नहो और कहतेहैं कि इतना खून निकालें कि अचेतता की दशा पहुंचे और जो फस्दका खोलना उचित न होतो पिंडलि योंपर पछने लगावें और जिस प्रकार पर कि होसके खून निकालने के उपरांत तबियतको मेवाओं के पानी से नर्म करे और जब नर्म करने वाली दवाओं को काम में लावें तो गले और छाती पर चंदन सफेद और लाल, रसौत, गिले इरमनी तर धनिया इनको खुर्फा काहू तथा मकोय के पानी में मिलाकर लेप करे जिससे मवाद यहां न पडे और जो एक फस्द को खोलने से प्रयोजन न प्राप्त हो और मवाद भरा हुआ रहे तो फिर दूसरे दिन या तीसरे दिन फस्द खोले और तबियत के मुलायम करने के उपरांत गुलाब और थोडा कपूर मुख पर मले जिससे सर्दी प्राप्त हो और शर्बतों और भोजनों में से जो कुछ ठंड के पहुंचाने वाली और गाढा करने वाली हो उचित है जैसे मसूर, खुसा धनिया, अथवा जौका घाट उन्नाव, छिले मूंग और उन्नाव ३० दाने लेकर औटावें और उस के पानी में सिकजवीन मिलाकर दें तो अधिक लाभदायक है और यह रोग सिर के रोगों में भी वर्णन किया गया है

ग्यारहवीं कहावत महामारी का वर्णन ।

इस फुन्सी की सूजन कभी छोटी सी होती है जैसे बाकलाका दाना या उससे भी छोटी और कभी बहुत बडी असरोट के बराबर अथवा उससे भी बडी होती है और जिस तरह पर कि हो फफकाव और अधिक जलन उसमें होती है और ऐसा मालूम होता है जैसे आग रक्खी है और उसके गिर्द स्याही

बाबूना का लेपकरें और बाबूना और सोया के काढे से सिकाव करें जिससे ठंडी हवा इस जगह पर न पहुंचे क्योंकि वर्णन की हुई सूजन पर सर्दी वर्जित है इस लिये कि सर्दी मवादको हटाती है इसी कारण से कहतेहैं कि पछने लगाने के उपरान्त जो खून अच्छी तरह से निकले तो आज्ञा दें कि उस जगह मुख लगाकर खून को थोड़ा २ चूसने की विधि पर खींचे और जब तक इस तरह काम निकले गर्म पानी नहीं डालसकते इसलिये कि मुख्य पानी यद्यपि छूनेसे गर्म मालूम होता है परन्तु प्रकृति की सर्दीसे रहित नहीं परन्तु इस दशा में कि गर्म दवाओं की शक्ति उसमें हो भोजन के लिये जो चीज कि खूनको ठंडा और गाढ़ा करती है देसकते हैं जैसे मगज़ और मुर्ग और बटरके मांसके पानीमें रखकर फिर सिर्कामें डाले और वह टिकिया जिसमें मुर्गीके बच्चोंका मांस तेलमें औटाया हुआहो उसमें ठंडे साग मिलाकर देना लाभदायक है (सूचना) हकीम लोग इस बातमें विरुद्धता रखते हैं कि ताऊन में फस्द खोलें अथवा न खोलें किसी २ के निकट तो यहहै कि न खोलना चाहिये जैसे कि सांप और बीछू के डंक मारने के लिये खोलना उचित नहीं क्योंकि विष सम्पूर्ण शरीर में फैलजायगा और कोई कहते हैं कि फस्द खोलें और खून बहुत सा निकालें जैसे बिच्छूके काटने के उपरान्त फस्द खोलते हैं इसलिये कि सही तरी विषैलेपनकी सहायक है मुख्यकर खूनकी सो जितनी कि तरी शरीर से कम होती है उतनी ही विषकी शक्ति भी कम होती है और तबियत बलवान होकर पोषक अंगोंकी अच्छी रक्षा रखती है अभिप्राय यहहै कि खून भरा हो और कोई कार्य वर्जित नहो तो ठीक बात यहहै कि फस्द अवश्य खोलें और खून विशेष निकालें और हकीम शैखउलरईस और हकीम सैयदके समीप भी यही बात ठीकहै और प्रगटहो कि यहां फस्द खोलना इस लिये नहीं है कि, जो विषैला मवाद मुख्य अंग में है वही निकले किंतु इस कारणसे है कि मवाद सड़ाहुआ जिसमें विषैलापन जल्द आसके निकलजाय और मवादकी सहायता जाती रहे (सूचना) जबकि फस्द खोलना चाहे तो उचित यहहै कि पांचों चीजों की रक्षा अवश्य समझे प्रथम तो यहहै कि पहले महामारी पर पछने लगावें इसलिये कि सब विषैला मवाद इसी जगहपर से निकलगया तो फस्द मे ~ ~फैलनेके समय यह भय बहुत कम होताहै कि विषैला मवाद शरीर में फैल होती है ~ ~रे यहहै कि फस्दके खोलने से पहले महामारीपर दवायें ठंडी और है और ऐसा ~ ~या लेपकरें जैसे रसौत, गिलेअरमनी और ~ ~ ~ मिस

थावूना का लेपकरें और बाबूना और सोया के काढे से सिकाव करें जिससे ठंढी हवा इस जगह पर न पहुचे क्योंकि वर्णन की हुई सूजन पर सर्दी वर्जित है इस लिये कि सर्दी मवादको रुकाती है इसी कारण से कहतेहैं कि पछने लगाने के उपरान्त जो खून अच्छी तरह से निकले तो आज्ञा दें कि उस जगह मुख लगाकर खून को थोडा २ चूसने की विधि पर खींचे और जब तक इस तरह काम निकले गर्म पानी नहीं डालसक्ते इसलिये कि मुख्य पानी यद्यपि छूनेसे गर्म मालूम होता है परन्तु प्रकृति की सर्दीसे रहित नहीं परन्तु इस दशा में कि गर्म दवाओं की शक्ति उसमें हो भोजन के लिये जो चीज कि खूनको ठंढा और गाढा करती है देसकते हैं जैसे मसूर और मुर्ग और बटरके मांसके पानीमें रांधकर फिर सिर्कामें डाले और वह टिकिया जिसमें मुर्गीके बच्चाका मांस तेलमें औटाया हुआहो उसमें ठंढे साग मिलाकर देना लाभदायक है (सूचना) हकीम लोग इस बातमें विरुद्धता रखते हैं कि ताऊन में फस्द खोलें अथवा न खोलें किसी २ के निकट तो यहहै कि न खोलना चाहियें जैसे कि सांप और बीछू के डङ्क मारने के लिये खोलना उचित नहीं क्योंकि विष सम्पूर्ण शरीर में फैलजायगा और कोई कहते हैं कि फस्द खोलें और खून बहुत सा निकालें जैसे बिच्छूके काटने के उपरान्त फस्द खोलते हैं इसलिये कि सही तरी विषैलेपनकी सहायक है मुख्यकर खूनकी सो जितनी कि तरी शरीर से कम होती है उतनी ही विषकी शक्ति भी कम होती है और तबियत बलवान होकर पोषक अङ्गोंकी अच्छी रक्षा रखती है अभिप्राय यहहै कि खून भरा हो और कोई कार्य वर्जित नहो तो ठीक बात यहहै कि फस्द अवश्य खोलें और खून विशेष निकालें और हकीम शेखउलरईस और हकीम सैयदके समीप भी यही बात ठीकहै और प्रगटहो कि यहां फस्द खोलना इस लिये नहीं है कि, जो विषैला मवाद मुख्य अङ्ग में है वही निकले किंतु इस कारणसे है कि मवाद सहाहुआ जिसमें विषैलापन जल्द आसके निकलजाय और मवादकी सहायता जाती रहे (सूचना) जबकि फस्द खोलना चाहे तो उचित यहहै कि पांचों चीजों की रक्षा अवश्य समझें प्रथम तो यहहै कि पहले महामारी पर पछने लगावें इसलिये कि सब विषैला मवाद इसी जगहपर से निकलगया तो फस्द मे[illegible] खोलनेके समय यह भय बहुत कम होताहै कि विषैला मवाद शरीर में फैल होती है [illegible] यहहै कि फस्दके खोलने से पहले महामारीकी दवायें ठंढी और है और ऐसा [illegible] लेपकरें जैसे रसौत, गिलेरमनी और [illegible] सिम

यहहै कि पोषक अंग मवादको कानके पीछे बगलके पीछे और चढ्ढों के पीछे की तरफ दूर करै क्योंकि बगल ऐसी जगह है कि उसमें दिलके मवाद का फाक पड़ता है और कानों के पीछे दिमाग का मवाद और चढ्ढा में जिगर का मवाद पड़ता है दूसरे यह है कि कोई घाव या कोई कष्ट पिंडली पाव या जांघ में उत्पन्न हो इस कारण से प्रकृति रक्षाकी रीति से कष्ट की जगह पर आरूढ़ हो और उसके कारण से खून और आत्माभी इस ओर झुकी हो फिर थोड़ासा मवाद चढ्ढों में रहजाय क्योंकि यह जगह चौड़ी और नर्म है और सूजन उत्पन्न करै। जो सूजन हाथ के घावके कारण से बगल में और सिर के घाव से कानों के पीछे उत्पन्न होती है वहभी इसी प्रकार की होती है क्योंकि ये सम्पूर्ण जगह नर्म पिलपिले मांसकी और चौड़ी तथा कोने में है जो मवाद उन अंगों से आता है उसमें से थोड़ा सा उन में रहजाता है और इन सूजनों को फारसी में घागरा कहते हैं और कभी वौहरान का मवाद बगल और कान के पीछे और चढ्ढों की तरफ चलाजाता है और कभी स्तन और उसके दोनों के भरजाने से उसजगह सूजन उत्पन्न होती है जैसा कि और स्थानों में हुआ करता है (इलाज) पहले फस्द और दस्तों के द्वारा शरीर का मवाद निकाले और भोजन कम दे और मवाद के नर्म करने का उपाय करै और आरम्भ ही में खाल के नर्म करने और रोमांचों के खोलने वाली दवा जैसे बनफशा, खितमी, कनचाके बीज बनफशा का तेल और सफेद मोम मिलाकर लेप करै और जानलो कि इन सूजनोंमें मवादके लौटानेवाली दवाओं का ग्रहण करना वर्जितहै मुख्य कर जो शरीर में बहुत मवादहो और न निकला हो और रोगकी बढ़ोतरी में भी केवल रोमांचों के खोलनेवाली और खाल के नर्म करने वाली दवाओं को ग्रहण करे और अन्त में मवाद के नष्ट करने वाली दवा भी डाले फिर जो मवाद नष्ट हो जाय तो अति उत्तम और जो इकट्ठा होने लगे तो पकाकर फोड़ डालें (लाभ) जब कि बगल में कानके पीछे और चढ्ढा में सूजन उस घाव के कारण से उत्पन्न हो कि जो नीचे के अंगों में हो तो बहुधा यह है कि दर्द में कमी होने के उपरान्त बिन दवा के लगाये सूजन जाती रहती है और जहां कहीं कि सूजनों में मवाद के लौटाने वाली दवाओं के लगाने का काम पड़े जैसे कि कोई हकीमों ने कहा है तो उचित है कि दिल और दिमाग और आमाशय के मुख्की शुद्धिमें परिश्रम करै जिससे मवाद कारज अंगोंकी तरफ उलटा न फिरे अभिप्राय

यहहै कि पोषक अंग मवादको कानके पीछे बगलके पीछे और चड्डों के पीछे की तरफ दूर करै क्योंकि बगल ऐसी जगह है कि उसमें दिलके मवाद का फाक पडता है और कानों के पीछे दिमाग का मवाद और चड्ढा में जिगर का मवाद पडता है दूसरे यह है कि कोई घाव या कोई कष्ट पिंडली पांव या जांघ में उत्पन्न हो इस कारण से प्रकृति रक्षाकी रीति से कष्ट की जगह पर आरूढ़हो और उसके कारण से खून और आत्माभी इस ओर झुकी हो फिर थोडासा मवाद चड्ढों में रहजाय क्योंकि वह जगह चौडी और नर्म है और सूजन उत्पन्न करै। जो सूजन हाथ के घावके कारण से बगल में और सिर के घाव से कानों के पीछे उत्पन्न होती है वहभी इसी प्रकार की होती है क्योंकि ये सम्पूर्ण जगह नर्म पिलपिले मांसकी और चौडी तथा कोने में है जो मवाद उन में से आता है उसमें से थोडा सा उन में रहजाता है और इन सूजनों को फारसी में बागरा कहते हैं और कभी बौहरान का मवाद बगल और कान के पीछे और चड्डों की तरफ चलाजाता है और कभी खून और उमरे दोनों के भरजाने से उसजगह सूजन उत्पन्न होती है जैसा कि और स्थानों में हुआ करता है (इलाज) पहले फस्द और दस्तों के द्वारा शरीर का मवाद निकाले और भोजन कम दे और मवाद के नर्म करने का उपाय करै और आरम्भ ही में खाल के नर्म करने और रोमांचों के खोलने वाली दवा जैसे बनफसा, खितमी, कमचाके बीज बनफशा का तेल और सफेद मोम मिलाकर लेपकरै और जानना कि इन सूजनोंमें मवादके लौटानेवाली दवाओं का ग्रहण करना वर्जितहै मुख्य कर जो शरीर में बहुत मवादहो और न निकला हो और रोगकी घटोतरी में भी केवल रोमांचों के खोलनेवाली और खाल के नर्म करने वाली दवाओं को ग्रहण करे और अन्त में मवाद के नष्ट करने वाली दवा भी डाले फिर जो मवाद नष्ट हो जाय तो अति उत्तम और जो इकट्ठा होने लगे तो पकाकर फोड डालें (लाभ) जब कि बगल में कानके पीछे और चड्डा में सूजन उस घाव के कारण से उत्पन्न हो कि जो नीचे के अंगों में हो तो बहुधा यह है कि दर्द में कमी होने के उपरांत बिन दवा के लगाये सूजन जाती रहती है और जहां कहीं कि सूजनों में मवाद के लौटाने वाली दवाओं के लेपका काम पडे जैसे कि कोई हकीमों ने कहा है तो उचित है कि दिल और दिमाग और आमाशय के मुखकी पुष्टिमा में परिश्रम करै जिससे मवाद प्रधान अंगोंकी तरफ उलटा न फिरे अभिप्राय

करे और उसकी सूरत बहुधा गाजर के समान होती है और कभी गोल अथवा दबीहुई होतीहै और उसका मवाद तेज खून है कि जो गाढी निकम्मी तरी म मिलगया है (इलाज) फस्द अथवा पछनों से शरीर का खून कम करे और दस्तावर दवा दें और जहां कहीं कि बडी लाल रंगकी फुन्सी हाथ पावों में हो तो वमन को विशेष लाभदायक समझे और भोजन कमदें और मांस और मीठी चीजें छोड दे और सिकजबीन पिलावे जिससे खून की तेजी थम जाय और गाढी तरीको काट दे और पहले दिनसे तीन दिन तक मवाद के लौटाने वाली दवाओं का लेप करे जैसे चन्दन, सुपारी, खुर्फा के पत्ता, ईसब गोल के पत्ता गुलाब में पीसकर लेप करे और तीसरे दिन पीछे ईसबगोल मुर्गी के अण्डे की सफेदी में मिलाकर लेपकरे जिससे तेजी थमजाय और बुरे मवाद इकठा हो और जब मवाद इकठा हो जाय तो उसपर मवाद के पकाने वाली दवा रक्खें और पकने के पीछे जो अपने आप फूटजाय तो अति उत्तम नहीं तो तोडने वाली दवाईं अथवा लोहे से खोल डालें और जब पीप निकल जाय और घाव साफ होजाय तो भरने का उपाय करे और जो तर घाव हो और मैल अधिक हो तो अनार के फूल, बूल, एलवा, माजू, और हलदी महीन पीसकर उस पर बुरक दे जिस से जल्दी साफ होजाय और तरी खुश्क जाय फिर घाव के भरने वाली मरहम लगावे और जान लेना चाहिये कि फोडा जिसको दुम्मुल कहते है दो प्रकार का होता है एक तो गाजर की सूरत का जो सरलता से फूट जाता है और जिस जगह उसका सिर ऊंचा हुआहै उसी जगह से उसकासिर फूट कर मवाद निकलता है दूसरे यह है कि गोल अथवा दबा हुआहो और यह अपने आप नहीं फूटता क्योंकि इसका मवाद गाढा है फोडने की इच्छा रखता है और कभी ऐसा होता है कि तीन जगह से अथवा विशेष फूट निकलता है ॥

॥ मवाद के पकाने वाली दवाओं का वर्णन ॥

अलक गोंद अनीर कूट कर लेप करे और कनुषा के बीज दूध और शहद में मिलाकर लगावें और गेहूं के आटे में थोडा सा नमक और अलसी के बीज का तेल मिलाकर रक्खें और कभी गुंदे हुए चून में शहद भी मिलावे और ज्वार का चून ४ भाग मेथी के बीज महीन करके १ भाग ऐलुवा आधा भाग तीनों चीजों को दही में औटावें कि गाढाहो जाय फिर गुनगुना करके फोडे पर रखकर पट्टी बांधे और दोना समय में बदलें यह बाण्य प्रणाम

करे और उसकी सूरत बहुधा गाजर के समान होती है और कभी गोल अथवा दबीहुई होतीहै और उसका मवाद तेज खून है कि जो गाढी निकम्मी तरी म मिलगया है (इलाज) फस्द अथवा पछनों से शरीर का खून कम करे और दस्तावर दवा दें और जहां कहीं कि बड़ी लाल रंगकी फुन्सी हाथ पावों में हो तो वमन को विशेष लाभदायक समझे और भोजन कमदें और मांस और मीठी चीजें छोड दे और सिकजवीन पिलावे जिससे खून की तेजी थम जाय और गाढी तरीको काट दे और पहले दिनमे तीन दिन तक मवाद के लौटाने वाली दवाओं का लेप करे जैसे चन्दन, सुपारी, खुर्फा के पत्ता, इसब गोल के पत्ता गुलाब में पीसकर लेप करे और तीसरे दिन पीछे ईसबगोल मुर्गी के अण्डे की सफेदी में मिलाकर लेपकरे जिससे तेजी थमजाय और तुर्त मवाद इकट्ठा हो और जब मवाद इकट्ठा हो जाय तो उसपर मवाद के पकाने वाली दवा रक्खें और पकने के पीछे जो अपने आप फूटजाय तो अति उत्तम नहीं तो तोड़ने वाली दवायें अथवा लोहे से खोल डालें और जब पीप निकल जाय और घाव साफ होजाय तो भरने का उपाय करें और जो तर घाव हो और मैल अधिक हो तो अनार के फूल, बूल, एलवा, माजू, और हल्दी महीन पीसकर उस पर बुरक दे जिस से जल्दी साफ होजाय और तरी खुश्क जाय फिर घाव के भरने वाली मरहम लगावे और जान लेना चाहिये कि फोडा जिसको दुम्मुल कहते हैं दो प्रकार का होता है एक तो गाजर की सूरत का जो सरलता से फूट जाता है और जिस जगह उसका सिर रुका हुआहै उसी जगह से उसकासिर फूट कर मवाद निकलता है दूसरे यह है कि गोल अथवा दबा हुआहो और यह अपने आप नहीं फूटता क्योंकि इसका मवाद गाढा है फोडने की इच्छा रखता है और कभी ऐसा होता है कि तीन जगह से अथवा विशेष फूट निकलता है ॥

॥ मवाद के पकाने वाली दवाओं का वर्णन ॥

अलरू गोंद अंजीर कूट कर लेप करे और कनूचा के बीज दूध और शहद में मिलाकर लगावें और गेहूं के आटे में थोडा सा नमक और अलसी के बीज का तेल मिलाकर रक्खें और कभी गुंदे हुये चून में शहद भी मिलावें और ज्वार का चून ४ भाग मेथी के बीज महीन करके १ भाग एलवा आधा भाग तीनों चीजों को दही में औटावें कि गाढाहो जाय फिर गुनगुना करके फोडे पर रखकर पट्टी बांधे और दोना समय में बदलें यह बाल्य प्राप्त

में अचेतता आजाती है और जब निकाले और साफ होजाय तो पुरानी रुई इस म भरदे जिससे शेष मवाद खिंचजाय और पीछे मरहमोंसे घावको भरे और फोडेका एक भेद और है बहुधा उसको दबीलपेमनकूसा कहते ह वह इस तरह परहै कि मवाद अगकी गहराई में इकट्ठा हो और खाल से बहुत दूर हो और पकावका असर प्रगट नहो और जब उसम चीरादे तो केवल खून के सिवाय कुछ न निकले परन्तु जब कि गहरा चीरा दें यहांतक कि हड्डी तक पहुंचे तो फिर पीव निकले और इसका रग विरुद्धहो जैसाकि वर्णन कियागया और यह बडी सूजन बहुधा मृत्यु कारक होती है (इलाज) इसका उपाय भी वहीहै जो वर्णन होचुकाहै परन्तु मवादके नर्म करने और पकाने में अधिक परिश्रमयहै इसलिये कि मवाद गहराई में है और जब मवादके पकनेका निश्चय होजाय तो चीरडालें और नश्तर गहरा लगावें जो हड्डी तक पहुंचे और गहराई में से मवाद निकले (लाभ) दबीलें जो भीतरके अगमें उत्पन्न होत हैं हर एक का वर्णन जुदा जुदा कियागया है और जानना चाहिय कि भीतर के अंगों की बडी सूजन का उपाय सम्पूर्ण मवाद का नष्ट करना और नर्म करना और फैलाना है और घातनाशक तिरियाकक्वीर और तिरियाकफारूक और मसरूदीतूस देवें तथा इसके दर्द को हलका और नष्ट करने वाली चीजें जैसे मनुचा के बीज सब्जी और खीरा आवश्यकतानुसार नर्म कूट कर बादाम का तेल मिलाकर सवेरे तरबूज का पानी या गऊ का दूध वा पलठी लेकर उसम मिलाकर पिलावें और जहां कहीं ज्वर नहो और यह काम करना चाहे कि भीतर के अगों की बडी सूजन जल्दी फूटजाय तो चाहिये कि प्रतिदिन एलवा १२ रत्ती और केसर ३ रत्ती गुलाब में अथवा शराब म दे और फूटने के उपरान्त जिस तरफ को उसका मुंहहो मूत्र के लाने वाली दवा अथवा मवाद के नर्म करने वाली दवाओं से मवाद के निकालने में परिश्रम करे और मवाद के निकलने के उपरान्त घाव के भरने का उपाय करे जैसाकि जिगर और आमाशयकी बडी सूजनमें वर्णन किया है।

सोलहवीं कहावत फोडा और सूजन का वर्णन ।

इस से सम्पूर्ण हकीमों की सम्मति में उस सूजन से प्रयोजन है कि पीप और रुवार पा र्ग चाहे गर्म हो चाहे ठंडी और यांह पद पडता है कि भाग तीनों चीजों मवाद इकट्ठा होने लगे चाहे गर्म सूजन हो चाहे ठंडी और फाडे पर रसन र कि जो सूजन चौबाई में बनी हो और उसके भीतर ऐसी

में अचेतता आजाती है और जब निकाले और साफ होजाय तो पुरानी रुई इस म भरदे जिससे शेष मवाद खिचजाय और पीछे मरहमोंसे घावको भरे और फोड़ेका एक भेद और है बहुधा उसको दवीलपेमनकूसा कहते ह वह इस तरह परहै कि मवाद अगकी गहराई में इकट्ठा हो और खाल से बहुत दूर हो और पकावका असर प्रगट नहो और जब उसम चीरादे तो केवल खून के सिवाय कुछ न निकले परन्तु जब कि गहरा चीरा दें यहांतक कि हड्डी तक पहुंचे तो फिर पीब निकले और इसका रग विरुद्धहो जैसाकि वर्णन कियागया और यह वही सूजन बहुधा मृत्यु कारक होती है (इलाज) इसका उपाय भी वहीहै जो वर्णन होचुकाहै परन्तु मवादके नर्म करने और पकाने में अधिक परिश्रमकरें इसलिये कि मवाद गहराई में है और जब मवादके पकनेका निश्चय होजाय तो चीरडालें और नश्तर गहरा लगावें जो हड्डी तक पहुंचे और गहराई में से मवाद निकले (लाभ) दबीले जो भीतरके अगमें उत्पन्न होते हैं हर एक का वर्णन जुदा जुदा कियागया है और जानना चाहिए कि भीतर के अंगों की वही सूजन का उपाय सम्पूर्ण मवाद का नष्ट करना और नर्म करना और फैलाना है और यातनाशक तिरियाकक्बीर और तिरियाकफारूक और मसरूदीतूस देवें तथा इसके दर्द को हलका और नष्ट करने वाली चीज जैसे मनूचा के बीज सब्जाजी और कतीरा आवश्यकतानुसार नर्म कूट कर बादाम का तेल मिलाकर सध्या सवेरे तरशकून का पानी या गधी का दूध दो फलछी लेकर उसम मिलाकर पिलावें और जहां यहां ज्वर नहो और यह काम करना चाहे कि भीतर के अगों की वही सूजन जल्दी फूटजाय तो चाहिये कि प्रतिदिन एलवा १२ रत्ती और केसर ३ रत्ती गुलाब में अथवा शराब म दे और फूटने के उपरान्त जिस तरफ को उसका भुखदो मूत्र के लाने वाली दवा अथवा मवाद के नर्म करने वाली दवाओं से मवाद के निकालने में परिश्रम करे और मवाद के निकलने के उपरान्त घाव के भरने का उपाय करे जैसाकि जिगर और आमाशयकी वही सूजनमें वर्णन किया है।

सोलहवीं कहावत फोड़ा और सूजन का वर्णन ।

इस से सम्पूर्ण हकीमों की सम्मति में उस सूजन से प्रयोजन है कि पीप और ज्वार का रोग चाहे गर्म हो चाहे ठंडी और थोड़े पद पड़ता है कि भाग तीनों चीजों मवाद इकट्ठा होने लगे चाहे गर्म सूजन हो चाहे ठंडी और फोड़े पर रसूर ०कि जो सूजन चीजों में बनी हो और उसके भीतर ऐसी

चाहिये और शरीर की लम्बाई में देना चाहिये जैसा कि किताब शरह अस्वा- ब के बनाने वाले ने कहा है कि जब सिलवट वाले अंग में चीरा देना चाहें जैसे बगल और चट्ठों में तो इस समय सिलवट के साथ ही चीरा दें परन्तु माथे में चीरा सिलवट के विरुद्ध और में दे इस लिये कि सिलवट तो चौड़ाई में है और रग लम्बाई में है सो जो चीरा देने में सिलवट का विचार करेंगे तो माथे की मछली भी और आसपर गिर पड़ेगी और जबकि सूजन में छेद होजाय सो जो मवाद बहुत है तो थोड़ा २ करके कई बार में निकालें कि निर्बलता न हो और निकालने के उपरान्त सम्पूर्ण पीप को पुरानी रुई से पोंछ कि मवाद बिल्- कुल साफ होजाय फिर घावके भरने का उपाय उक्त रीति से करें और इस बात में सफ़दा नीला थोथा, अनार के फूल, माजू हीरा दखी गोंद और अजरूत से बनी मरहम अधिक लाभदायक है और घाव को जल्दी भरलाती है ॥

सत्तरहवीं कहावत नर्म सूजन का वर्णन ।

यह एक नर्म सूजन सफेद रंग की है जिसमें भड़काव और दर्द न हो परन्तु ढीलापन और भारीपन होता है और जब उंगली से दबावें तो दबजाय और उस जगह पर तक उंगली का चिन्ह बाकी रहे और कभी उस सूजन में हलका सा दर्द भी मालूम होता है और यह सूजन दो कारण से उत्पन्न होती है एक तो यह है कि दुष्ट प्रकृति हो दूसरे यह है कि कफ अधिक हो जाय (इलाज) जो प्रकृति का उपद्रव उसका कारण होतो उसके सम्हालने का उपाय करे पीछे उस अंगपर गुलरोगन अथवा तिली का तेल [illegible] और सिरी मले और जो उसका कारण कफ है और यह मूत्र की सफेदी और गाढ़ेपन से मालूम हो सकता है तो चाहिये कि उसके पचाने वाली दवा दे पीछे पारे की गोली तथा रावन्दकी गोलीदें और कफका निकालने वाली दवा दें और तरी फैलाने वाली चीजों से रोके और नमक और [illegible] सूजन परमलना और पापड़ी नोंन और अगर के पेड़की राख या पानी [illegible] गुड सिरके में मिलाकर लेप करना और कपड़ा अगर के पेड़ की राख और गाय की राख के पानी में भिजो कर सूजन पर रखना लाभदायक है और पकौड़ा बहुत अच्छा है अगर के पेड़की राख गो या गाजर फिटकरी [illegible] [illegible] महीन पीसकर सिरके में मिलाकर लेप करे (दूसरा नुस्खा) [illegible] [illegible] अकाकिया [illegible] मामीरानी मलो, पपार

चाहिये और शरीर की लम्बाई में देना चाहिये जैसा कि कितार शरह अस्वाब के बनाने वाले ने कहा है कि जब सिलवट वाले अंग में चीरा देना चाहें जैसे बगल और चड्ढों में तो इस समय सिलवट के साथ ही चीरा दें परन्तु माथे में चीरा सिलवट के विरुद्ध ओर में दे इस लिये कि सिलवट तो चौड़ाई में है और रग लम्बाई में है सो जो चीरा देने में सिलवट का विचार करेंगे तो माथे की मछली भी और आंखपर गिर पड़ेगी और जबकि सूजन में छेद होजाय सो जो मवाद बहुत है तो थोड़ा २ करके कई बार में निकाले कि निर्बलता न हो और निकालने के उपरान्त सम्पूर्ण पीप को पुरानी रुई से पोंछ कि मवाद बिल्कुल साफ होजाय फिर घावके भरने का उपाय उक्त रीति से करे और इस बात में सफेदा नीला थोथा, अनार के फूल, माजू हीरा दखी गोंद और अजरूत से बनी मरहम अधिक लाभदायक है और घाव को जल्दी भरलाती है ॥

सत्रहवीं कहावत नर्म सूजन का वर्णन ।

यह एक नर्म सूजन सफेद रंग की है जिसमें भड़काव और दर्द न हो परन्तु कड़ापन और भारापन होता है और जब उंगली से दबावें तो दबजाय और उस जगह पर तक उंगली का चिन्ह बाकी रहै और कभी उस सूजन में हलका सा दर्द भी मालूम होता है और यह सूजन दो कारण से उत्पन्न होती है एक तो यह है कि दुष्ट प्रकृति हो दूसरे यह है कि कफ अधिक हो जाय (इलाज) जो प्रकृति का उपद्रव उसका कारण होतो उसके सम्हालने का उपाय करे पीछे उस अंगपर गुलरोगन अथवा तिली का तेल नोन और सिर्का मले और जो उसका कारण कफ है और यह मूत्र की सफेदी और गाढ़ेपन से मालूम हो सकता है तो चाहिये कि उसके पकाने वाली दवा दे पीछे पारे की गोली तथा रावन्दकी गोलीदें और कफका निकालने वाली दवा दे और तरी पहुंचाने वाली चीजों से रोके और नमक और रंग सूजन परमलना और पापड़ी नोंन और अगर के पेड़की राख का पानी और कुछ सिर्के में मिलाकर लेप करना और कपड़ा अगर के पेड़ की राख और गाय की राख के पानी में भिजो कर सूजन पर रखना लाभदायक है और पकोड़ा बहुत अच्छा है अगर के पेड़की राख जौ का आटा फिटकरी ए[illegible] गार बराबर लेकर महीन पीसकर सिर्के में मिलाकर लेप करे (दूसरा नुसखा) फलदा लूड अकाकिया नागरमोथा मामीसाजी मकोई, पवार

चाहिये और शरीर की लम्बाई में देना चाहिये जैसा कि किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले ने कहा है कि जब सिलवट वाले अंग में चीरा देना चाहे जैसे बगल और चढ्ढों में तो इस समय सिलवट के साथ ही चीरादें परन्तु माथेमें चीरा सिलवट के विरुद्ध ओर में दे इस लिये कि सिलवट तो चौडाई म है और रग लम्बाई में है सो जो चीरा देने में सिल्वट का विचार करेंगे तो माथे की मछली भौ और आखपर गिर पडेगी और जबकि सूजनमें छेद होजाय तो जो मवाद बहुत है तो थोडा २ करके कई बार में निकाल कि निर्बलता न हो और निकालने के उपरान्त सम्पूर्ण पीप को पुरानी रुई से पोंछले कि मवाद बिलकुल साफ होजाय फिर घावके भरने का उपाय उक्त रीति से करै और इस बात में सफेदा नीला थोथा, अनार के फूल, माजू हीरा दखी गोंद और अंजरूत से बनी मरहम अधिक लाभदायक है और घाव को जल्दी भरलाती है ॥

सत्तरहवीं कहावत नर्म सूजन का वर्णन ।

यह एक नर्म सूजन सफेद रग की है जिसमें भड़काव और दर्द न हो परन्तु कड़ापन और भारापन होता है और जब उगली से दबावें तो दबजाय और उस जगह दर वक्त उगली का चिन्ह बाकी रहे और कभी उस सूजन म हलका सा दर्द भी मालूम होता है और यह सूजन दो कारण से उत्पन्न होती है एक तो यह है कि दुष्ट प्रकृति हो दूसरे यह है कि कफ अधिक हो जाय (इलाज) जो प्रकृति का उपद्रव उसका कारण होतो उसके सम्हालने का उपाय करै पीछे उस अगपर गुलरोगन अथवा बिली का तेल नोन और सिर्का मलैं और जो उसका कारण कफ है और यह मूत्र की सफेदी और गाढेपन से मालूम हो सकता है तो चाहिये कि उसके पकाने वाली दवा दें पीछे पारे की गोली तथा रावन्दकी गोलीदें और कफको निकालने वाली दवा दवै और तरी पहुचाने वाली चीजों से रोकें और नमक और रेत सूजन परमलना और पापडी नोन और अगर के पेडकी राख का पानी और कुछ सिर्का में मिलाकर लेप करना और कपडा अगूर के पेड की राख और बालू की राख के पानी में भिजो कर सूजन पर रखना लाभदायक है और नहेला बहुत अच्छा है अगूर के पेडकी राख गौ का गोबर फिटकरी एलुआ सब बराबर लेकर महीन पीसकर सिर्के में मिलाकर लेप करै (दूसरा नुसखा) एलुआ बूल अक़ाकिया नागरमोथा मामीसाकी सलाई, केसर

चाहिये और शरीर की लम्बाई में देना चाहिये जैसा कि किताब शरह अस्वा-
व के बनाने वाले ने कहा है कि जब सिलवट वाले अंग में चीरा देना चाहे
जैसे बगल और चड्डों में तो इस समय सिलवट के साथ ही चीरादें परन्तुमाथेमें
चीरा सिलवट के विरुद्ध ओर में दे इस लिये कि सिलवट तो चौडाई म हैं और
रग लम्बाई में है सो जो चीरा देने में सिलवट का विचार करेंगे तो माथे की
मछली भौ और आसपर गिर पडेगी और जबकि सूजनमें छेद होजाय तो जो
मवाद बहुत है तो थोडा २ करके कई बार में निकाल कि निर्बलता न हो और
निकालने के उपरान्त सम्पूर्ण पीप को पुरानी रुई से पोंछले कि मवाद बिल-
कुल साफ होजाय फिर घावके भरने का उपाय उक्त रीति से करै और इस
बात में सफेदा नीला थोथा, अनार के फूल, माजू हीरा दखी गोंद और
अंजरूत से बनी मरहम अधिक लाभदायक है और घाव को जल्दी
भरलाती है ॥

सत्तरहवीं कहावत नर्म सूजन का वर्णन ।

यह एक नर्म सूजन सफेद रग की है जिसमें भडकाव और दर्द न हो
परन्तु कडापन और भारापन होता है और जब उगली से दबावें तो दबजाय
और उस जगह दर वक्त उगली का चिन्ह बाकी रहे और कभी उस सूजन
म हलका सा दर्द भी मालूम होता है और यह सूजन दो कारण से उत्पन्न
होती है एक तो यह है कि दुष्ट प्रकृति हो दूसरे यह है कि कफ अधिक हो
जाय (इलाज) जो प्रकृति का उपद्रव उसका कारण होतो उसके सम्हालने
का उपाय करै पीछे उस अगपर गुलरोगन अथवा तिली का तेल नोंन
और सिर्का मलैं और जो उसका कारण कफ है और यह मूत्र की सफेदी
और गाढेपन से मालूम हो सक्ता है तो चाहिये कि उसके पकाने वाली दवा
दें पीछे पारे की गोली तथा रावन्दकी गोलीदें और कफको निकालने वाली
दवा दवै और तरी पहुचाने वाली चीजों से रोकै और नमक और रेत
सूजन परमलना और पापडी नोंन और अगर के पेडकी राख का पानी
और कुछ सिर्का में मिलाकर लेप करना और कपडा अगूर के पेड की राख
और बालू की राख के पानी में भिजो कर सूजन पर रखना लाभदायक है
और नहलेना बहुत अच्छा है अगूर के पेडकी राख गौ का गोबर फिटकरी ए-
लुआ सब बराबर लेकर महीन पीसकर सिर्के में मिलाकर लेप करै (दूसरा
नुसखा) एलुआ बूल अकाकिया नागरमोथा मामीसाकी सलाई, केसर

पन शहद के समानहो) और आर्दे हालिया और शीराजियाहैं परन्तु शहमियाँ सखमें कड़ी है और इसका प्रभावहै कि दवाने से नहीं दवती और कुछ दर्द करती है और उसका रंग और गाढापन चर्बी के समान है इसीलिये शाहमियाँ कहते हैं और असलिया दवान से दवजाती है और फिर जल्दी समान होजा ती है क्योंकि इसका मवाद सबके मवाद से अधिक नर्म और पतला है और इसका रंग और गाढापन शहद के समान है इस कारण से असलिया बोलतेहैं और आर्दे हालिया स्याही लिये होता है और उसके मवाद का गाढापन ऐसा होता है जैसे गाढा हरीरा जिस को आर्देहाला कहते है इस लिये इसका यह नाम रक्खा गया और आर्देहाला फारसी के दो शब्दों से मिलकर बनाहै सो आर्दे तो चूनको कहतेहैं और हाला उस घीको कहतेहैं कि जो ताजा मक्खनसे बनताहै और शीराजियाका मवाद शीराज की सूरतका और गाढाहोताहै शीराज फारसी में उसे कहते हैं जो दूध से गाढे हरीरेकी तरह बनाया जाता है (इला ज) पहलेगाढे कफ को निकालें और सर्वदा नष्टकरने वाले दाखलीऊन आदि लेप काम में लावें जिससे वह मवाद नष्ट होजाय जो कदाचित् आरम्भ में इकट्ठा होगया है और जब बहुत दिन बीत जाने से गाढा होजाय तो नष्ट करनेवाली दवाओं के लगाने से लाभ न होगा उस समय दो कामों में से एक काम करना चाहिये याता वे दवा लगावें जो कठोर दोष को टुकड़े २ करके निकाल दें । छरीला, रास, कर्नेव के बीज, खून, साबुन, हरताल और गुलरौगन से बनाया हुआ लेप इस काम के लिये मुख्य है या चीर कर रसौली को निकाल लै और चीरा देने की यह विधि है कि उस के ऊपर की खाल चीमटी से खींच कर इस रीति से चीर डाले कि रसौली की थैली को कष्ट न पहुंचे और धीरे २ सम्पूर्ण खाल रसौली के ऊपर से हटावै फिर रसौली को उस झिल्ली सहित जो उस के और पास लगी हुई है ज्यों की त्यों निकाललें और उस झिल्ली में से खाल में कुछभी बाकी न रहने पावे क्यों कि जो कुछ भी झिल्ली खाल में बाकीरह जायगी तो रसौली कठिन से बाहर निकलती है और एसेही सूजन फिर होजाती है (लाभ) जिस रसौली को शहामिया कहते हैं वह नष्ट होने और सड़ने के योग्य नहीं है और निकालने के सिवाय उसका कोई इलाज नहीं क्यों कि उसका मवाद अधिक गाढा है ॥

बीसवी कहावत खाल और मांसके मध्य में गांठ पड़ने का वर्णन ।

मांसका लोथड़ा दो प्रकार का है एक तो प्राकृतिक जैसे जीभ की जड़का

पन शहद के समानहो) और आर्द हालिया और शीराजियाहैं परन्तु शहमियां सबमें कडी है और इसका प्रभावहै कि दबाने से नहीं दबती और कुछ दर्द करती है और उसका रंग और गाढापन चर्बी के समान है इसीलिये शाहमियां कहते हैं और असलिया दबाने से दबजाती है और फिर जल्दी समान होजा ती है क्योंकि इसका मवाद सबके मवाद से अधिक नर्म और पतला है और इसका रंग और गाढापन शहद के समान है इस कारण से असलिया बोलतेहैं और आर्द हालिया स्याही लिये होता है और उसके मवाद का गाढापन ऐसा होता है जैसे गाढा हरीरा जिस को आर्दहाला कहते है इस लिये इसका यह नाम रक्खा गया और आर्दहाला फारसी के दो शब्दों से मिलकर बनाहै सो आर्द तो चूनको कहतेहैं और हाला उस घीको कहतेहैं कि जो ताजा मक्खनसे बनताहै और शीराजियाका मवाद शीराज की सूरतका और गाढाहोताहै शीराज फारसी में उसे कहते हैं जो दूध से गाढे हरीरेकी तरह बनाया जाता है (इला ज) पहलेगाढे कफ को निकालें और सर्वदा नष्टकरने वाले दाखलीऊन आदि लेप काम में लावें जिससे वह मवाद नष्ट होजाय जो कदाचित् आरम्भ में इकट्ठा होगया है और जब बहुत दिन बीत जाने से गाढा होजाय तो नष्ट करनेवाली दवाओं के लगाने से लाभ न होगा उस समय दो कामों में से एक काम करना चाहिये याती वे दवा लगावें जो कठोर दोष को टुकडे २ करके निकाल दें । छरीला, रास, कर्नब के बीज, सून, साबुन, हरताल और गुलरौगन से बनाया हुआ लेप इस काम के लिये मुख्य है या चीर कर रसौली को निकाल लै और चीरा देने की यह विधि है कि उस के ऊपर की खाल चीमटी से खींच कर इस रीति से चीर डाले कि रसौली की थैली को कष्ट न पहुंचे और धीरे २ सम्पूर्ण खाल रसौली के ऊपर से हटावे फिर रसौली को उस झिल्ली सहित जो उस के और पास लगी हुई है ज्यों की त्यों निकाललें और उस झिल्ली में से खाल में कुछभी बाकी न रहने पावे क्यों कि जो कुछ भी झिल्ली खाल में बाकीरह जायगी तो रसौली कठिन सेबाहर निकलती है और एसेही सूजन फिर होजाती है (लाभ) जिस रसौली को शहमिया कहते हैं वह नष्ट होने और सडने के योग्य नहीं है और निकालने के सिवाय उसका कोई इलाज नहीं क्यों कि उसका मवाद अधिक गाढा है ॥

बीसवी कहावत खाल और मांसके मध्य में गांठ पडने का वर्णन ।

मांसका लोथडा दो प्रकार का है एक तो प्राकृतिक जैसे जीभ की जडका

और बालकों के मूत्र में मिलाकर कठमाला पर रखना उसको पकाता है और-फोड़ता है और कनुचा के बीज अलसी के बीज, मैथी के बीज शराब में पका-कर और कबूतर की बीट आवश्यकतानुसार उसमें मिलाकर लेप करना लाभ दायक है और जब फूटजाय तो फल्दफयन दीक बरदीक, काम में लावे जिससे निकम्मा मवाद बिल्कुल निकलजाय और इन तेज दवाओं के लगाने के उप-रांत तेल मलै जिससे जो कुछ फल्दफयून ने काटा हो वह गिरपड़े और जब घाव साफ होजाय तो मरहम जगार लगावें जिससे घाव भरजाय और एक प्रकार की कठमाला खाल पर फैली हुई होती है परन्तु बहुत ऊंची नहीं होती और क्योंकि इसका मवाद निकम्मा है जल्द घाव हो जाता है और ऐसा मालूम हुआ करता है जैसे फटा हुआ अजीर (इलाज) लोहे के औजार से इस तरह काटे कि उसके मवाद का असर कुछ बाकी न रहे इसके उपरांत दागदें जिससे फिर इकट्ठा न हो जाय और काटने में पास वाली रगें और पट्ठे न कट जाय और किताबों में लिखा है कि एक मनुष्य ने कठमाला को चीरा और पट्ठे की एक रग कटगई जिससे उसी समय रोगी की आवाज बैठगई इसी लिये हकीमों ने कहा है कि जिधर पट्ठे न हों उसमें चीरादें और बाकी को दवाओं से साफ करै जिससे कटभी जाय और हानि न पहुचे और ऐसी दशामें मरहम जगार लाभदायक है और कठमाला का एक और भेद है जिसका मवाद बादी की सूजन होता है और उसका उपाय यह है कि जब गर्म दवा उस के इलाज में लगावे तो उन में गुलरोगन मिलावे और जो उसमें गर्मी हो तो गेहू के चून और धनिये के पानी का लेप करे (लाभ) कुछ हकीमों ने कहा है कि ताजे सींग के भीतर एक चपनी हड्डीसी होती है उसकी राख करके प्रतिदिन प्रात कालके समय एक सप्ताह तक७माशेके प्रमाण से दें तो हर प्रकार की कठमाला दूरहोजाती है इतरीफल कडे मास के लोथड़े को लाभदायक है ।

तेईसवी कहावत कठोर सूजन का वर्णन ।

इसको यूनानी में सीकुरूस कहते हैं । यह तीनप्रकार की होती है एक का मवाद तो निर्मल बादी है और उसका यह चिन्ह है कि बहुत कड़ी और मैला रगहो हाथ को सर्द मालूम हो उसमें ज्ञान शक्ति नहो और दर्द न करै और कभी दर्द भी करती है और ज्ञानशक्ति भी होतीहै और दूसरी का मवाद कफ होता है इस सूजन का रंग शरीर के समान होताहै यह छूनेमें ठंडी और कड़ी कम होती है और यह सूजन विशेष करके उन सूजनों के पीछे

और वालकों के मूत्र में मिलाकर कठमाला पर रखना उसको पकाता है और-फोड़ता है और कनूचा के बीज अलसी के बीज, मैथी के बीज शराब में पकाकर और कबूतर की बीट आवश्यकतानुसार उसमें मिलाकर लेप करना लाभ दायक है और जब फूटजाय तो फल्दफयन दीक बरदीक, काम में लावै जिससे निकम्मा मवाद विल्कुल निकलजाय और इन तेज दवाओं के लगाने के उपरांत तेल मलै जिससे जो कुछ फल्दफयून ने कादा हो वह गिरपड़े और जब घाव साफ होजाय तो मरहम जगार लगावें जिससे घाव भरजाय और एक प्रकार की कठमाला खाल पर फैली हुई होती है परन्तु बहुत ऊंची नहीं होती और क्योंकि इसका मवाद निकम्मा है जल्द घाव हो जाता है और ऐसा मालूम हुआ करता है जैसे फटा हुआ अजीर (इलाज) लोहे के औजार से इस तरह काटै कि उसके मवाद का असर कुछ बाकी न रहै इसके उपरांत दागदें जिससे फिर इकट्ठा न हो जाय और काटने में पास वाली रगें और पट्ठे न कट जाय और किताबों में लिखा है कि एक मनुष्य ने कठमाला को चीरा और पट्ठे की एक रग कटगई जिससे उसी समय रोगी की आवाज बैठगई इसी लिये हकीमों ने कहा है कि जिधर पट्ठे न हों उसमें चीरादें और बाकी को दवाओं से साफ करै जिससे कटभी जाय और हानि न पहुंचे और ऐसी दशामें मरहम जगार लाभदायक है और कठमाला का एक और भेद है जिसका मवाद वादी की सूजन होता है और उसका उपाय यह है कि जब गर्म दवा उस के इलाज में लगावै तो उन में गुलरोगन मिलावै और जो उसमें गर्मी हो तो गेहूं के चून और धनिये के पानी का लेप करे (लाभ) कुछ हकीमों ने कहा है कि ताजे सींग के भीतर एक चपनी हड्डीसी होती है उसकी राख करके प्रतिदिन प्रात कालके समय एक सप्ताह तक७माशेके प्रमाण से दें तो हर प्रकार की कठमाला दूरहोजाती है इतरीफल कदे मास के लोथड़े को लाभदायक है ।

तेईसवी कहावत कठोर सूजन का वर्णन ।

इसको यूनानी में सीकुरूस कहते हैं । यह तीनप्रकार की होती है एक का मवाद तो निर्मल वादी है और उसका यह चिन्ह है कि बहुत कड़ी और मैला रगहो हाथ को सर्द मालूम हो उसमें ज्ञान शक्ति नहो और दर्द न करै और कभी दर्द भी करती है और ज्ञानशक्ति भी होतीहै और दूसरी का मवाद कफ होता है इस सूजन का रग शरीर के समान होताहै यह छूनेमें ठंडी और [illegible] कम होती है और यह सूजन विशेष करके उन सूजनों के पीछे

का ग्रहण न करे क्यों कि सूजनको हिलाती है और घावमें ऐसी चीज लगावें जो घावको भरलावें और दर्द तथा जलनको बढने न दे जैसे कांसे का सफेदा और धुला हुआ लीलाथोथा आदि गुलरोगनमें मिलाकर लगावे, यह मरहम लाभ दायक है काशगरी सफेदा, धुला लीलाथोथा, मुर्दासन, गिलेइरमनी प्रत्येक १ भाग, शादनज मगसूल, वारतग का पानी प्र०२भाग, नशास्ता, बबूल का गोंद प्रत्येक ३ भाग इन में से कूटने के योग्य दवाओं को कूटकर मोम और गुलरोगन में मरहम बनाकर उसके ओर पास गिलेइरमनी मकोयके पानी या धनिये के पानी में मिलाकर मलें और वादी वाली सूजन कदाचित् आरम्भ में उत्तम उपायों से अच्छी होजाती है और जो वादी की सूजन भीतर हो तो सावधानी की बात यह है कि उसका इलाज पथ्य की दुरुस्ती से करें और शर्वत बनफशा और शर्वत नीलोफर आदि इस सूजन में सम्पूर्ण शर्वतों से उत्तम है और जौ के घाट का पानी,मुर्ग,बकरी के बच्चेका मांस और पथरीले पानी की ताजी मछली उत्तम पथ्य है ॥

पचीसवीं कहावत नहरुआका वर्णन ।

इसको रिश्ता और नारूभी कहते हैं प्रथम एक फुन्सी उत्पन्नहोकर पककर फफोला होजाता है और एक छेद हो जाता है और इस में से एक बारीक रग सी निकलती है और उसका रग लाल स्याही लिये हो और यह चीज जो डोरे कीसी निकलती है जब बिलकुल निकलआती है तो एक बिलांद वा अधिक लम्बी होती है और बहुधा खालके नीचे कीडा सा चलता मालूम होता है और यह रोग गर्म खुश्क देशों में बहुधा उत्पन्न होता है और इस रोग का कारण निकम्मे फोक हैं जो गर्म बादी का खून अथवा जलेहुये कफ से रगों और मांस में होते हैं और गर्मी की अधिकता से भुन कर और सूखकर रगों में जमजाता है इसी लिये रगकी सूरत होती है और बहुधा पांव में और टूंडी के नीचे उत्पन्न होती है और अधिक मीठा खाने से भोजन के अच्छी तरह न पचने से और परिश्रम की अधिकता से यह रोग उत्पन्न होता है (इलाज) उस के प्रगट होते ही बासलीक और साफिन की फस्द विरुद्ध आर से खोलें और पीछे इस जगह जोक लगावें और मेवाओं का काढा, कोकाया की गोली और हरेंके काढेसे और छोटे इतरीफलसे जिस म समान, पित्तपापडा पडाहो तबियतकोनर्मकरें और तरी पहुंचाने वाले भोजन और हम्माम में जाना और तर तेलोंके मलनेसे प्रकृतिको तरी पहुंचावे और

का ग्रहण न करै क्यों कि सूजनको हिलाती है और घावमें ऐसी चीज लगावैं जो घावको भरलावें और दर्द तथा जलनको बढने न दे जैसे कांसे का सफेदा और धुला हुआ लीलाथोथा आदि गुलरोगनमें मिलाकर लगावें, यह मरहम लाभ दायक है काशगरी सफेदा, धुला लीलाथोथा, मुर्दासन, गिलेइरमनी प्रत्येक १ भाग, शादनज मगसूल, बारतंग का पानी प्र०२भाग, नशास्ता, बबूल का गोंद प्रत्येक ३ भाग इन में से कूटने के योग्य दवाओं को कूटकर मोम और गुलरोगन में मरहम बनाकर उसके ओर पास गिलेइरमनी मकोयके पानी या धनिये के पानी में मिलाकर मलें और बादी वाली सूजन कदाचित् आरम्भ में उत्तम उपायों से अच्छी होजाती है और जो बादी की सूजन भीतर हो तो सावधानी की बात यह है कि उसका इलाज पथ्य की दुरुस्ती से करैं और शर्बत बनफशा और शर्बत नीलोफर आदि इस सूजन में सम्पूर्ण शर्बतों से उत्तम है और जो के घाट का पानी,मुर्ग,बकरी के बच्चेका मांस और पथरीले पानी की ताजी मछली उत्तम पथ्य है॥

पचीसवीं कहावत नहरुआका वर्णन।

इसको रिश्ता और नारूभी कहते हैं प्रथम एक फुन्सी उत्पन्नहोकर पककर फफोला होजाता है और एक छेद हो जाता है और इस में से एक बारीक रग सी निकलती है और उसका रंग लाल स्याही लिये हो और यह चीज जो डोरे कीसी निकलती है जब बिलकुल निकलआती है तो एक बिलांद वा अधिक लम्बी होती है और बहुधा खालके नीचे कीडा सा चलता मालूम होता है और यह रोग गर्म खुश्क देशों में बहुधा उत्पन्न होता है और इस रोग का कारण निकम्मे फोक हैं जो गर्म बादी का खून अथवा जलेहुये कफ से रगों और मांस में होते हैं और गर्मी की अधिकता से भुन कर और सूखकर रगों में जमजाता है इसी लिये रगकी सूरत होती है और बहुधा पांव में और टूंडी के नीचे उत्पन्न होती हैं और अधिक मीठा खाने से भोजन के अच्छी तरह न पचने से और परिश्रम की अधिकता से यह रोग उत्पन्न होता है (इलाज) उस के प्रगट होते ही बासलीक और साफिन की फस्द विरुद्ध ओर से खोलें और पीछे इस जगह जोक लगावें और मेवाओं का काढा, कोकाया की गोली और हरेंके काढेसे और छोटे इतरीफलसे जिस प्र समान, पित्तपापडा पडाहो तबियतकोनर्मकरें और तरी पहुंचाने वाले भोजन और हम्माम में जाना और तर तेलोंके मलनेसे प्रकृतिको तरी पहुंचावे और

का ग्रहण न करे क्यों कि सूजनको हिलाती है और घावमें ऐसी चीज लगावै जो घावको भरलावें और दर्द तथा जलनको बढने न दें जैसे कासे का सफेदा और धुला हुआ लीलाथोथा आदि गुलरागनमें मिलाकर लगावे, यह मरहम लाभ दायक है काशगरी सफेदा, धुला लीलाथोथा, मुर्दासन, गिल्इरमनी प्रत्येक १ भाग, शादनज मगसूल, वारतग का पानी प्र०२भाग, नशास्ता, बवूल का गाद प्रत्येक ३ भाग इन में से कूटने के योग्य दवाओं को कूटकर मोम और गुलरोगन में मरहम बनाकर उसके ओर पास गिल्इरमनी मकोयके पानी या धनिये के पानी में मिलाकर मलें और बादी वाली सूजन कदाचित् आरम्भ में उत्तम उपायों से अच्छी होजाती है और जो बादी की सूजन भीतर हो तो सावधानी की बात यह है कि उसका इलाज पथ्य की दुरुस्ती से करे और शर्वत बनफशा और शर्वत नीलोफर आदि इस सूजन में सम्पूर्ण शर्वतों से उत्तम हैं और जो के घाट का पानी,मुर्ग,वकरी के बच्चेका मांस और पथरीले पानी की ताजी मछली उत्तम पथ्य है॥

पचीसवीं कहावत नहरुआका वर्णन ।

इसको रिश्ता और नारूभी कहते हैं प्रथम एक फुन्सी उत्पन्नहोकर पककर फफोला होजाता है और एक छेद हो जाता है और इस में से एक बारीक रग सी निकलती है और उसका रग लाल स्याही लिये हो और यह चीज जो डोरे कीसी निकलती है जब बिलकुल निकलआती है तो एक बिलांद वा अधिक लम्बी होती है और बहुधा खालके नीचे कीडा सा चलता मालूम होता है और यह रोग गर्म खुश्क देशों में बहुधा उत्पन्न होता है और इस रोग का कारण निकम्मे फोक हैं जो गर्म बादी का खून अथवा जलेहुये कफ से रगों और मांस में होते हैं और गर्मी की अधिकता से भुन कर और सूखकर रगों में जमजाता है इसी लिये रगकी सूरत होती है और बहुधा पांव में और टूडी के नीचे उत्पन्न होती है और अधिक मीठा खाने से भोजन के अच्छी तरह न पचने से और परिश्रम की अधिकता से यह रोग उत्पन्न होता है (इलाज) उस के प्रगट होते ही बासलीक और साफिन की फस्द विरुद्ध ओर से खोलें और पीछे इस जगह जोक लगावें और मेवाओं का काढ़ा, कोकाया की गोली और हरंके काढेसे और छोटे इतरीफलसे जिस में समाम, पित्तपापड़ा पड़ाहो तबियतकोनर्मकरे और तरी पहुचाने वाले भोजन और हम्माम में जाना और तर तेलोंके मलनेसे प्रकृतिको तरी पहुचावे और

का ग्रहण न करें क्यों कि सूजनको हिलाती है और घावमें ऐसी चीज लगावै जो घावको भरलावें और दर्द तथा जलनको बढने न दें जैसे कासे का सफेदा और धुला हुआ लीलाथोथा आदि गुलरागनमें मिलाकर लगावै, यह मरहम लाभ दायक है काशगरी सफेदा, धुला लीलाथोथा, मुर्दासन, गिल्इरमनी प्रत्येक १ भाग, शादनज मगसूल, वारतग का पानी प्र०२भाग, नशास्ता, बबूल का गाद प्रत्येक ३ भाग इन में से कूटने के योग्य दवाओं को कूटकर मोम और गुलरागन में मरहम बनाकर उसके ओर पास गिल्इरमनी मकोयके पानी या धनिये के पानी में मिलाकर मलैं और बादी वाली सूजन कदाचित् आरम्भ में उत्तम उपायों से अच्छी होजाती है और जो बादी की सूजन भीतर हो तो सावधानी की बात यह है कि उसका इलाज पथ्य की दुरुस्ती से करै और शर्वत बनफशा और शर्वत नीलोफर आदि इस सूजन में सम्पूर्ण शर्वतों से उत्तम हैं और जौ के घाट का पानी,मुर्ग,बकरी के बच्चेका मांस और पथरीले पानी की ताजी मछली उत्तम पथ्य है ॥

पचीसवीं कहावत नहरुआका बर्णन ।

इसको रिश्ता और नारुभी कहते हैं प्रथम एक फुन्सी उत्पन्नहोकर पककर फफोला होजाता है और एक छेद हो जाता है और इस में से एक बारीक रग सी निकलती है और उसका रग लाल स्याही लिये हो और यह चीज जो डोरे कीसी निकलती है जब बिलकुल निकलआती है तो एक बिलांद वा अधिक लम्बी होती है और बहुधा खालके नीचे कीडा सा चलता मालूम होता है और यह रोग गर्म खुश्क देशों में बहुधा उत्पन्न होता है और इस रोग का कारण निकम्मे फोक हैं जो गर्म बादी का खून अथवा जलेहुये कफ से रगों और मांस में होते हैं और गर्मी की अधिकता से भुन कर और सूखकर रगों मे जमजाता है इसी लिये रगकी सूरत होती है और बहुधा पांव में और टूंडी के नीचे उत्पन्न होती है और अधिक मीठा खाने से भोजन के अच्छी तरह न पचने से और परिश्रम की अधिकता से यह रोग उत्पन्न होता है (इलाज) उस के प्रगट होते ही बासलीक और साफिन की फस्द विरुद्ध ओर से खोलें और पीछे इस जगह जोक लगावें और मेवाओं का काढा, कोकाया की गोली और हरें के काढेसे और छोटे इतरीफलसे जिस में समाय, पित्तपापडा पडाहो तबियतकोनर्मकरै और तरी पहुंचाने वाले भोजन और हम्माम में जाना और तर तेलोंके मलनेसे प्रकृतिको तरी पहुंचावे और

छब्बीसवीं कहावत जुजाम (कच्चा कोढ) का वर्णन।

यह एक बहुत बडा रोग है यह अगकी प्रकृति और सूरत का बिगाड देता है और यह शरीर में एक ऐसी खिचावट और गांठ उत्पन्न करता है कि जिससे दशा बदल जाती है और अन्त में कभी अग खुश्की की अधिकता से फट जाते हैं और काले होकर गिर पडते हैं और घाव से दुर्गन्धित पीव रिसा करती है जैसे मुर्दे के शरीर में से निकला करती है और जब रोग पकजाता है तो अग गलकर गिरने लगते हैं और यह रोग अप्राकृतिक बादीके शरीरमें फैलने से उत्पन्न होता है और हकीम करेशीने कहा है कि जब बादी सपूर्ण शरीर में फैलकर सडजाती है फिर चौथैया ज्वर उत्पन्न करती है और जो खालकी तरफ गिरती है तो काला पीलिया आदि- उत्पन्न होते हैं और जो इकट्ठी होकर अच्छी तरह से जमजाय तो कच्चा कोढ उत्पन्न करती है और जानना चाहिये कि जिस बादी से कच्चा कोढ उत्पन्न होता है वह दो प्रकारकी होती है एकतो वह जो खून की गाद से उत्पन्न हो और इसका यह चिन्ह है कि अगों की ज्ञानशक्ति नष्ट होजाय और उनमें गाढापन और मोटापन आजाय और इसमें अग नहीं गिरते क्योंकि उसका मवाद उत्तम है और उसमें तेजी नहीं होती परन्तु यह बात आरम्भ में होती है क्योंकि जब रोग पकजाता है और बहुत दिन बीत जाते हैं तो इसमें भी अग गलकर घायल होजाते हैं और ऐसेही उसका यह चिन्ह है कि आवाज बैठजाय, नाक चपटी होजाय, आंखका ढेला गोल होजाय, बाल झडजांय और इसको दाउलअसद (यह रोग सिंहको होता है) भी कहते हैं इसलिये कि इसमें रोगी का मुख सिंहका सा होजाता है अथवा इस कारण से कि यह रोग बहुधा सिंह को उत्पन्न होता है और आरम्भ में इसका इलाज जल्दी हो जाता है और दूसरा वह है कि बादी निर्मल पित्त से उत्पन्न होकर कच्चा कोढ पैदा करे और यह किसी दशा में अगों के गलजाने और गिर पडने से रहित नहीं होती क्योंकि मवाद तेज है और कठिनता से इलाज से अच्छा होता है और किसी ने कहा है कि पहले की अपेक्षा जल्दी इलाज का गुण मानता है क्योंकि पित्त बादी से बहुत नर्म और हलका है और सदेह नहीं कि घायल होने से पहले आरम्भ में ऐसाही हो परन्तु घायल होने के उपरान्त उसके अच्छे होने में कुछ विरुद्धता नहा कच्चे कोढ के आरम्भ का यह चिन्ह है कि आख और मुख के रग में लाली स्याही लिये हो स्वास में तगी और

छब्बीसवीं कहावत जुजाम (कच्चा कोढ) का वर्णन।

यह एक बहुत बडा रोग है यह अगकी प्रकृति और सूरत का विगाड देता है और यह शरीर में एक ऐसी खिचावट और गांठ उत्पन्न करता है कि जिससे दशा बदल जाती है और अन्त में कभी अग खुश्की की अधिकता से फट जाते हैं और काले होकर गिर पडते हैं और घाव से दुर्गन्धित पीव रिसा करती है जैसे मुर्दे के शरीर में से निकला करती है और जब रोग पकजाता है तो अग गलकर गिरने लगते हैं और यह रोग अप्राकृतिक बादीके शरीरमें फैलने से उत्पन्न होता है और हकीम करेशीने कहा है कि जब बादी सपूर्ण शरीर में फैलकर सडजाती है फिर चौथैया ज्वर उत्पन्न करती है और जो खालकी तरफ गिरती है तो काला पीलिया आदि- उत्पन्न होते हैं और जो इकट्ठी होकर अच्छी तरह से जमजाय तो कच्चा कोढ उत्पन्न करती है और जानना चाहिये कि जिस बादी से कच्चा कोढ उत्पन्न होता है वह दो प्रकारकी होती है एकतो वह जो खून की गाद से उत्पन्न हो और इसका यह चिन्ह है कि अगों की ज्ञानशक्ति नष्ट होजाय और उनमें गाढापन और मोटापन आजाय और इसमें अग नहीं गिरते क्योंकि उसका मवाद उत्तम है और उसमें तेजी नहीं होती परन्तु यह बात आरम्भ में होती है क्योंकि जब रोग पकजाता है और बहुत दिन बीत जाते हैं तो इसमें भी अग गलकर घायल होजाते हैं और ऐसेही उसका यह चिन्ह है कि आवाज बैठजाय, नाक चपटी होजाय, आंखका ढेला गोल होजाय, बाल झडजाय और इसको दाउलअसद (यह रोग सिंहको होता है) भी कहते हैं इसलिये कि इसमें रोगी का मुख सिंहका सा होजाता है अथवा इस कारण से कि यह रोग बहुधा सिंह को उत्पन्न होता है और आरम्भ में इसका इलाज जल्दी हो जाता है और दूसरा वह है कि बादी निर्मल पित्त से उत्पन्न होकर कच्चा कोढ पैदा करै और यह किसी दशा में अगों के गलजाने और गिर पडने से रहित नहीं होती क्योंकि मवाद तेज है और कठिनता से इलाज से अच्छा होता है और किसी ने कहा है कि पहले की अपेक्षा जल्दी इलाज का गुण मानता है क्योंकि पित्त बादी से बहुत नर्म और हलका है और संदेह नहीं कि घायल होने से पहले आरम्भ में ऐसाही हो परन्तु घायल होने के उपरान्त उसके अच्छे होने में कुछ विरुद्धता नहीं कच्चे कोढ के आरम्भ का यह चिन्ह है कि आंख और मुख के रग में लाली स्याही लिये हो स्वास में तंगी और

कि आरम्भ में कही फुन्सी छोटी और अलग २ उत्पन्न होती है फिर घायल होकर लाल खुरन्ड उसपर उत्पन्न होता है जब अलग २ होजाते हैं तो उनको साफा (फुंसी और गज) कहते है और साफा (फुंसी) दो प्रकार की होती है पहली वह है कि इसमें से जो पीव टपकतीहै उसको साफये रतब और शेर पजा कहते है और उसका कारण सडे हुए फोक और निकम्मी तरिया हैं और बहुधा लडकों को इसी प्रकार की गज और फुन्सी उत्पन्न होती है (इलाज) रग सराऊकी फस्द खोलें उसके उपरात जो आवश्यकता हो तो माथे की फस्द खोलें और कहते हैं कि कानों के पीछेकी रग खोलकर उसका खून गजपर मलना अधिक लाभ दायक है और जहा कहीं कि फस्द के खोलने में कोई कार्य वर्जित हो जैसे जो रोगी लडका हो अथवा निर्बलहोतो पछनों अथवा जोकों से खून निकाले और खून निकालने के उपरांत हडे और पित्त पापडे से तबियत को नर्म करे और खूनके बिगाडने वाली वस्तुओं को त्यागदेवे और घीआ पालक का कलिया और मुर्गे के अडे की जर्दी खानेको दें और जब मवाद दूर होजाय तब नीचे लिखा हुआ लेप लगावे हल्दी, कडवा बादाम, अनार के फूल, रातीनज, जलाहुआ कागज माजू, अधीरा के पत्ता, लीली सौसन की जड, अकाकिया, कमीला यह सब दवा अथवा उनमें से जो कुछ मिलसके उन्हें महीन करके सिर्का तथा गुल-रौगन में मिलाकर लेपकरे (दूसरी विधि) यह आरम्भमें विशेष लाभदायक है मुख्यकर लडकों के लिये । हल्दी, अनार की छाल, मुर्दासन, हिना, महदी, महीन करके सिर्का और गुलरोगन में मिलाकर लेप करे जहां दूध पीता बालक इसमें फसा हो तो उसके कान के पीछे चीरा दकर उसका खून गज पर मले और दाई को हडे, सौंफ और बेर का चूर्ण खवावे और शरीर में मवाद भरा हो तो फस्द खोलें और यारज की गाली दें और सभोग से रोके । दूसरा भेद यहहै कि गज सूखी हो और शोरे के से सफेद छिलके उसके ऊपर से गिरें और उसका कारण वादी वाला दोष है जो खारी तरी में मिलकर खाल में आजाता है (इलाज) वादी के निकालने के लिये आकाश वेल, हडे और पित्त पापडे का काढादें और तर भोजन वा हम्माम में जाकर तरी पहुचाने वाले उपायों से प्रकृतिमें तरी पहुचावे और गर्म पानी अलगी खितमी के बीज का लुआब गज पर डालना और मोंम का तेल, मुर्गे और बतककी चर्बी, लम्बी घीआ का तेल, मीठे बादाम का तेल बनफशा

कि आरम्भ में वही फुन्सी छोटी और अलग २ उत्पन्न होती है फिर घायल होकर लाल खुरन्ड उसपर उत्पन्न होता है जब अलग २ होजाते हैं तो उनको साफा (फुंसी और गंज) कहते हैं और साफा (फुंसी) दो प्रकार की होती है पहली वह है कि इसमें से जो पीव टपकतीहै उसको साफये रतब और शेर पंजा कहते है और उसका कारण सडे हुए फोक और निकम्मी तरियां हैं और बहुधा लडकों को इसी प्रकार की गंज और फुन्सी उत्पन्न होती है (इलाज) रग सराऊकी फस्द खोलें उसके उपरांत जो आवश्यकता हो तो माथे की फस्द खोलें और कहते हैं कि कानों के पीछेकी रग खोलकर उसका खून गंजपर मलना अधिक लाभ दायक है और जहां कहीं कि फस्द के खोलने में कोई कार्य वर्जित हो जैसे जो रोगी लडका हो अथवा निर्वलहोतो पछनों अथवा जोकों से खून निकाले और खून निकालने के उपरांत हडे और पित्त पापडे से तबियत को नर्म करे और खूनके बिगाडने वाली वस्तुओं को त्यागदेवै और पीआ पालक का कलिया और मुर्गे के अंडे की जर्दी खानेको दें और जब मवाद दूर होजाय तब नीचे लिखा हुआ लेप लगावै हल्दी, कडवा बादाम, अनार के फूल, रातीनज, जलाहुआ कागज माजू, अधीरा के पत्ता, लीली सौसन की जड, अकाकिया, कमीला यह सब दवा अथवा उनमें से जो कुछ मिलसकै उन्हें महीन करके सिर्का तथा गुल-रौगन में मिलाकर लेपकरै (दूसरी विधि) यह आरम्भमें विशेष लाभदायक है मुख्यकर लडकों के लिये । हल्दी, अनार की छाल, मुर्दासन, हिना, महदी, महीन करके सिर्का और गुलरोगन में मिलाकर लेप करै जहां दूध पीता बालक इसमें फसा हो तो उसके कान के पीछे चीरा दकर उसका खून गंज पर मले और दाई को हडे, सौंफ और वेर का चूर्ण खवावै और शरीर में मवाद भरा हो तो फस्द खोलें और यारज की गोली दें और संभोग से रोकें । दूसरा भेद यहहै कि गंज सूखी हो और शोरे के से सफेद छिलके उसके ऊपर से गिरें और उसका कारण वादी वाला दोष है जो सारी तरी में मिलकर खाल में आजाता है (इलाज) वादी के निकालने के लिये आकाश बेल, हडे और पित्त पापडे का काढादें और तर भोजन वा हम्माम में जाकर तरी पहुचाने वाले उपायों से प्रकृतिमें तरी पहुचावे और गर्म पानी अलसी खितमी के बीज का छुआर गंज पर डालना और मौंम का तेल, मुर्गे और बतककी चर्बी, लम्बी पीआ का तेल, मीठे बादाम का तेल बनफशा

तेल बचरहे और एक और भेद है उसको उदज. कहते हैं इसमें से पीव नहीं आती है। (इलाज) जबतक उचित हो भूरा रक्खें और श्रेष्ट और नर्मभोजनद और अकलील, बाबूना, बरजास्फ के काढे से तरेडा दें और मवादका निकालना आवश्यक है और गांठके मुलायम करने से अचेत न रहे और एक अन्य भेदहै उस को तीनी (आंख में एकदाना होता है अजीर के समान) कहतेहैं और वह घाव गोल और कडे हैं कि जो ऊपरसे लाल होतेहै और उनके भीतर एक चीज अजीर की सी होती है और एक और भेद है जिससे छोटी फुन्सियां लाल रंग की निकलती है और उनकी सूरत ऐसी होती है जैसे कुच का सिर और उन में से एक ऐसी तरी निकलती है जैसे खून का पानी और यह दोनों कारण और इलाज में पहले भेदके समान है और एक अन्यभदहै उसको लालगंज कहते हैं वह इस प्रकारकी है कि जब सिरको मुडावै तो सिरकी खाल लाल हो जाय और उसकी लाली में कुछ कालापन मालूम हो और हाथ लगाने से दर्द करै हकीम जालीनूस कहता है कि जो इसमें घाव न होजायतो इलाज से अच्छा नहीं होता क्योंकि इसका मवाद गाढा और निकम्माहै (इलाज) रगसराढ की फस्द खोलें और दस्तों के लिये पित्त पापडा और आकाश बेलका काढा दे और कीरूती अर्थात् मौम का तेल, बनफशा का तेल, सफेद मौम से बना करै उसको वेद और खितमी और खब्बाजी के पानी में कई बार धोकर उस के उपरान्त कुछ समुद्रीझाग और जलीहुई सीप और अंडे की सफेदी उसमें मिला कर दवै क्योंकि विशेष लाभदायक है (लाभ) कभी यह गंज मुखपर उत्पन्न होती है और उसका इलाज भी यही है कि रग सराढ और माथे की रगकी फस्द खोलें और ऐसेही नाक के सिरे की रग खोलना और मनका और पिंडलियों पर पछने लगाना जोक लगाना हम्माम में जाना और गर्म पानी का भपारा देना अति उत्तम है इसमें खाल नर्म होजाती है इस रोगमें फस्द और दस्तों के पीछे पुष्टिकारक दवाओं का लेपकरै ॥

अट्ठाईसवी कहावत खुजली का वर्णन।

इस में छोटी २ फुन्सियां बहुत खुजली के साथ निकलती है और कभीउन में पीव पड जाती है और कभी नहीं और खुजली बहुधा हाथों बगलियों और जांघों में उत्पन्न होती है और कभी सम्पूर्ण शरीर में भी होजाती है यह रोग एकसे दूसरे को लग जाते है और उसकी उत्पत्ति का कारण यह है कि खून पित्त और जली हुई बादी और खारी कफ के मिलजाने से निकम्मा

तेल बचरहे और एक और भेद है उसको उदज, कहते हैं इसमें से पीव नहीं आती है। (इलाज) जबतक उचित हो भूखा रक्खें और श्रेष्ठ और नर्मभोजनद और अकलील, बाबूना, बरजास्फ के काढे से तरेडा दें और मवादका निकालना आवश्यक है और गांठके मुलायम करने से अचेत न रहै और एक अन्य भेदहै उस को तीनी (आंख में एकदाना होता है अजीर के समान) कहतेहैं और वह घाव गोल और कडे हैं कि जो ऊपरसे लाल होतेहैं और उनके भीतर एक चीज अजीर की सी होती है और एक और भेद है जिससे छोटी फुन्सियां लाल रंग की निकलती है और उनकी सूरत ऐसी होती है जैसे कुच का सिर और उन में से एक ऐसी तरी निकलती है जैसे खून का पानी और यह दोनों कारण और इलाज में पहले भेदके समान है और एक अन्य भदहै उसको लालगज कहते हैं वह इस प्रकारकी है कि जब सिरको मुडावें तो सिरकी खाल लाल हो जाय और उसकी लाली में कुछ कालापन मालूम हो और हाथ लगाने से दर्द करै हकीम जालीनूस कहता है कि जो इसमें घाव न होजायतो इलाज से अच्छा नहीं होता क्योंकि इसका मवाद गाढा और निकम्माहै (इलाज) रगसराऊ की फस्द खोलें और दस्तों के लिये पित्त पापडा और आकाश बेलका काढा दे और कीरूती अर्थात् मौम का तेल, बनफशा का तेल, सफेद मौम से बना करैं उसको बेद और खितमी और खब्बाजी के पानी में कई बार धोकर उस के उपरान्त कुछ समुद्रीझाग और जलीहुई सीप और अंडे की सफेदी उसमें मिला -कर दवै क्योंकि विशेष लाभदायक है (लाभ) कभी यह गज मुखपर उत्पन्न होती है और उसका इलाज भी यही है कि रग सराऊ और माथे की रगकी फस्द खोलें और ऐसेही नाक के सिरे की रग खोलना और मनका और पिंडलियों पर पछने लगाना जोक लगाना हम्माम में जाना और गर्म पानी का भपारा देना अति उत्तम है इसमें खाल नर्म होजाती है इस रोगमें फस्द और दस्तों के पीछे पुष्टिकारक दवाओं का लेपकरै॥

अठ्ठाईसवीं कहावत खुजली का वर्णन।

इस में छोटी २ फुन्सियां बहुत खुजली के साथ निकलती है और कभीउन में पीव पड जाती है और कभी नहीं और खुजली बहुधा हाथों उंगलियों और जांघों में उत्पन्न होती है और कभी सम्पूर्ण शरीर में भी होजाती है यह रोग एकसे दूसरे को लग जाते हैं और उसकी उत्पत्ति का कारण यह है कि खून पित्त और जली हुई बादी और खारी कफ के मिलजाने से निकम्मा

और तीन दिन तक न दें और फिर तीन दिन पिवावें और तीन दिन न पिवावें फिर तीन दिन और भी दें जिससे सब ३१॥ माशे अथवा ४०॥ माशे, एलवा दिया जाय और जो बादी की अधिकता हो तो आकाश बेलका काढा आदि पिवाकर वादी को निकालें और जो कफ अधिक होतो एलवा तुर्बुद गारीकून और इन्द्रायन के गूदे की गोलियां बनाकर उनसे शरीर का मवाद निकालें और मल के निकालने के उपरान्त मुर्दासन महदी के पत्ते इन्द्रायन का गूदा चांदी का मैल और छिली मसूर का चून और पारा सिर्का और गुलरोगन में मिलाकर लेप करै और कभी गर्म दवाओं का लेप न करै क्योंकि हानिकारक है और खाने के लिये वे चीज दें जो स्वाद रहित और सर्दी तथा तरी लिये हुऐ है परन्तु बैंगन नोंन और गर्म मसाले का मांस और शिकार का मांस और सभोग भी हानि कारक हैं परन्तु जिस मनुष्य के शरीर में वीर्य्य की अधिकता से यह रोग है उसको सम्भोग लाभ करता है ॥

❀ उन्तीसवीं कहावत सूखी खुजली का वर्णन ❀

इस में फुन्सियां नहीं होती और नमक गर्म मसालेका मांस नमकीन मछली और दही का तौड आदि खाने से यह रोग उत्पन्न होता है और ऐसेही स्त्री सगम के पीछे शरीर को अच्छी तरह मलकर स्नान न करने से इस रोगमें फस जावे है (इलाज) फस्द खोलें और माउलजुब्न और जौ का पानी दें जिससे शोपको तरी पहुचे और गाढापनें समान होजाय पीछे कोई ऐसा जुलाब दें जो जलेहुये दोषों को निकालें और हम्माम में जाकर गुलरोगन और सिर्के में कुछ थोडा सा अजमोद का पानी और पापडी नोंन मिलाकर शरीरपर मलें यह रोग बहुधा वृद्ध मनुष्यों को हुआ करता है क्योंकि उनकी खाल निर्बल होजाती है और भीतरकी गर्मी खालके नीचे की भाफ के परमाणुओं को नष्ट नहीं कर सकती है इसका यह उपाय है कि हितकारी पथ्य, स्नान, तेल मर्दन करता रहै (लाभ) जो खुजली नाक, गुदा गर्भस्थान और दिमाग आदि में उत्पन्न होती है उसका उपाय इन्हीं अगों के रोगों में वर्णन हुआ है और जो उगलियोंके मध्यम होती है उसका बर्णन करेंगे भग और गुदाकी खुजली के लिये यह दवा लाभदायक है भुनी फिटकरी और तेल प्र० बराबर नर्म करके ३॥ माशे कपडे में लगाकर बत्ती बनावें अथवा १॥माशे के बराबर शहद के पानी में मिलाकर कपडे में ल्हसेव कर गुदा तथा भग में रक्खें और मलें मेथी और अलसी के बीज शहद म ओटा कर और एक कपडा उसमें भिगो कर भग तथा गुदा में उठाना

और तीन दिन तक न दें और फिर तीन दिन पिवावें आर तीन दिन न पिवावें फिर तीन दिन और भी दें जिससे सब ३१॥ माशे अथवा ४०॥ माशे, एलवा दिया जाय और जो बादी की अधिकता हो तो आकाश वेलका काढा आदि पिवाकर वादी को निकालें और जो कफ अधिक होतो एलवा तुर्बुद गारीकून और इन्द्रायन के गूदे की गोलियां बनाकर उनसे शरीर का मवाद निकालें और मल के निकालने के उपरान्त मुर्दासन महदी के पत्ते इन्द्रायन का गूदा चांदी का मैल और छिली मसूर का चून और पारा सिर्को आर गुलरोगन में मिलाकर लेप करै और कभी गर्म दवाओं का लेप न करै क्योंकि हानिकारक है और खाने के लिये वे चीज दें जो स्वाद रहित और सर्दी तथा तरी लिये हुऐ है परन्तु बैंगन नोंन और गर्म मसाले का मांस और शिकार का मांस और सभोग भी हानि कारक हैं परन्तु जिस मनुष्य के शरीर में वीर्य्य की अधिकता से यह रोग है उसको सम्भोग लाभ करता है ॥

❁ उन्तीसवी कहावत सूखी खुजली का वर्णन ❁

इस में फुन्सियां नहीं होती और नमक गर्म मसालेका मांस नमकीन मछली और दही का तौड आदि खाने से यह रोग उत्पन्न होता है और ऐसेही स्त्री सगम के पीछे शरीर को अच्छी तरह मलकर स्नान न करने से इस रोगमें फस जाते है (इलाज) फस्द खोलें और माउलजुब्न और जौ का पानी दें जिससे शोपको तरी पहुचे और गाढापन समान होजाय पीछे कोई ऐसा जुलाब दें जो जलेहुये दोषों को निकालें और हम्माम में जाकर गुलरोगन और सिर्के में कुछ थोडा सा अजमोद का पानी और पापडी नोंन मिलाकर शरीरपर मलें यह रोग बहुधा वृद्ध मनुष्यों को हुआ करता है क्योंकि उनकी खाल निर्बल होजाती है और भीतरकी गर्मी खालके नीचे की भाफ के परमाणुओं को नष्ट नहीं कर सकती है इसका यह उपाय है कि हितकारी पथ्य, स्नान, तेल मर्दन करता रहै (लाभ) जो खुजली नाक, गुदा गर्भस्थान और दिमाग आदि में उत्पन्न होती है उसका उपाय इन्ही अगों के रोगों में बर्णन हुआ है और जो उगलियोंके मध्यम होती है उसका बर्णन करेंगे भग और गुदाकी खुजली के लिये यह दवा लाभदायक है भुनी फिटकरी और तेल प्र० बराबर नर्म करके ३॥ माशे कपडे में लगाकर वत्ती बनावें अथवा १॥ माशे के बराबर शहद के पानी में मिलाकर कपडे में ल्हसेब कर गुदा तथा भग में रक्खें और मलें मेथी और अलसी के बीज शहद म ओटा कर और एक कपडा उसमें भिगो कर भग तथा गुदा में उठाना

खाल में से ऐसे टुकडे गिरते है जैसे मछली के छिलके और कभी दाद से पीला पानी टपकता है और मवाद जैसा तेज निकम्मा मोटा वा नर्म होता है उसी के अनुसार यह सब काम प्रगट होते हैं अभिप्राय यह है कि लाल दाद जल्दी इलाज करने से अच्छा होजाता है और बहुत गाढा नहीं होता और काला देर में अच्छा होता है और वह मोटा और दलदार होता हैं। जानना चाहिये कि दादके तीन दर्जे होते हैं और प्रत्येक दर्जेका इलाज अलग२है पहला दर्जा तो वह है कि प्रथमही उत्पन्न हुआहो और उसने मांस में असर न कियाहो और दूसरा दर्जा वह है जो मांसमें कुछ असर करगया है तीसरा दर्जा वह है कि मांस में बहुत अच्छी तरह असर करगयाहो और विशेप गाढा हो (इलाज)पहले दर्जे का दाद हलके २ लेपोंसे नष्ट होजाता है जैसे गेहूका तेल, वा उपवास करने वाले के दांतोंका मैल वा उसके मुखकी लार तथा अधीरा सिर्के में अथवा मुर्गे और वतककी चर्वी मोमके तेलमें जिसमें कतीरा तथा एलुआ घोलकर लगावैं तथा आलूका गोंद आदि सिर्के में घिसकर तथा हर्ड सिर्के में रगडकर तथा रसौत सिर्क में मिलाकर इनमें से जो कुछ मिलजाय लगावै और दूसरे दर्जेका उपाय यह है कि जोक लगावैं और पहिले दर्जेकी अपेक्षा विशेप गुणकारी लेप लगावें जैसे छरीला सिर्के में रगडकर अथवा छरीला, नकछिकनी और हलदी पानी में मिलाकर पहाडी किर्वियां कूटकर सिर्का और गुलरोगन में मिलाकर अथवा जलामालू और बबूलका गोंद सिर्का में मिलाकर लेपकरें और तीसरे दर्जेका उपाय फस्द और दस्तहे दस्तों के लिये आकाश बेलका काढा माउलजुब्नमें मिलाकर दें और कईबार हम्माम में जाना विशेप लाभ दायक है और मवादके निकलने के उपरान्त उसपर जोक लगाना अथवा किसी कडवी और खुरखुरी चीजसे उसको छीलकर तेज दवाओंका लेपकरें जैसे जराबन्द, हरताल, छरीला, गूगल, राई और फिटकरी, गेहूके तेल और सिर्का में मिलाकर लेपकरें और जो दवासे अच्छा नहो और उचितहो तो उसको चीरडालें फिर तेज दवा उसपर लगावे जिससे अधिक मांसको जलादे पीछे सफेदेकी मरहम से घावको भरें और जो दाद अडकोष पर उत्पन्नहो तो चाहिये कि सफेदा २४॥ माशे गन्धक ७ माशे पहाडी पुनश्का ३॥माशे कूट छानकर उसपर बुरक दे और जो लडकोंके शरीरपर उत्पन्नहोतो उपवास करने वालेके मुख की लार अथवा ममगआलू और सिर्का और जो कुछ कि पहले दर्जे में वर्णन हुआ है लाभदायक है और जब दाद मिटजाय तो मवाद के लौटने वाली दवा दें

खाल में से ऐसे टुकडे गिरते है जैसे मछली के छिलके और कभी दाद से पीला पानी टपक्ता है और मवाद जैसा तेज निकम्मा मोटा वा नर्म होता है उसी के अनुसार यह सब काम प्रगट होते है अभिप्राय यह है कि लाल दाद जल्दी इलाज करने से अच्छा होजाता है और बहुत गाढा नहीं होता और काला देर में अच्छा होता है और वह मोटा और दलदार होता हैं । जानना चाहिय कि दादके तीन दर्जे होते हें और प्रत्येक दर्जेका इलाज अलग२हैं पहला दर्जा तो वह है कि प्रथमही उत्पन्न हुआहो और उसने मांस में असर न कियाहो और दूसरा दर्जा वह है जो मांसमें कुछ असर करगया है तीसरा दर्जा वह है कि मांस में बहुत अच्छी तरह असर करगयाहो और विशेप गाढा हो (इलाज)पहले दर्जे का दाद हलके २ लेपोंसे नष्ट होजाता है जैसे गेहूका तेल, वा उपवास करने वाले के दांतोंका मैल वा उसके मुखकी लार तथा अधीरा सिर्के में अथवा मुर्ग और बतककी चर्वी मोंमके तेलमें जिसमें कतीरा तथा एलुआ घोलकर लगावें तथा आलूका गोंद आदि सिर्के में घिसकर तथा हर्ड सिर्के में रगडकर तथा रसौत सिर्क में मिलाकर इनमें से जो कुछ मिलजाय लगावे और दूसरे दर्जेका उपाय यह है कि जोक लगावें और पहिले दर्जेकी अपेक्षा विशेप गुणकारी लेप लगावें जैसे छरीला सिर्के में रगडकर अथवा छरीला, नकछिकनी और हलदी पानी में मिलाकर पहाडी किवियां कूटकर सिर्का और गुलरौगन में मिलाकर अथवा जलाभाजू और बबूलका गोंद सिर्का में मिलाकर लेपकरें और तीसरे दर्जेका उपाय फस्द और दस्तहे दस्तों के लिये आकाश वेलका काढा माउल-जुब्नमें मिलाकर दें और कईवार हम्माम में जाना विशेप लाभ दायक है और मवादके निकलने के उपरान्त उसपर जोक लगाना अथवा किसी कडवी और खुरखुरी चीजसे उसको छीलकर तेज दवाओंका लेपकरें जैसे जरावन्द, हर-ताल, छरीला, गूगल, राई और फिटकरी, गेहूके तेल और सिर्का में मिलाकर लेपकरें और जो दवासे अच्छा नहो और उचितहो तो उसको चीरडालें फिर तेज दवा उसपर लगावे जिससे अधिक मांसको जलादे पीछे सफेदेकी मरहम से घावको भरें और जो दाद अडकोप पर उत्पन्नहो तो चाहिये कि सफेदा २४॥ माशे गन्धक ७ माशे पहाडी पुनक्का ३॥माशे कूट छानकर उसपर बुरक दें और जो लडकोंके शरीरपर उत्पन्नहोतो उपवास करने वालेके मुख की लार अथवा ममगआलू और सिर्का और जो कुछ कि पहले दर्जे में वर्णन हुआ है लाभदायक है और जब दाद मिटजांय तो मवाद के लौटने वाली दवा दें

तेल (इलाज) यारज की गोली से शरीर और दिमाग आदि का मवाद निकाले पीछे मुखको साफ करने वाली चीजों से धोवे जैसे मटर का चून, मुर्गीके अंडे का छिलका, जली हड्डी, खड़िपामिट्टी और बाकला का चून, और जा उनसे लाभ नहीं तो कुष्की सफेद दो भाग सोसन की जड एक भाग, सिर्के में मिलाकर लेप करें अथवा अलसी, गुलाब के फूल और कलौंजी सिर्के में मिलाकर लेप करे और जो विशेष बलवान् किया चाहे तो अगूर की लकडीकी राख सिर्के में मिलाकर लेप करे (लाम हकीम अलियास का बेटा कहता है कि शरीर का मवाद आकाश बेल के काढे अथवा गोली से निकालें और दिमाग की पवित्रता यारज की गोली से करे फिर वनफशा अकलीलुल मलिक, बाबूना और सोया पानी में औटाकर उससे मुखधोवे और जो यह इलाज गुणदायक नहो तो अगर की लकडीकी राख, कौडीकी राख प्र० १०॥ माशे, कलौंजी ३॥ माशे, छीले सौसन की जड २४॥ माशे, अलसी के बीज अनार के फूल, प्र० ७ माशे, सबको कूट पीसकर पुराने सिर्के में मिलाकर लेप करे।

चौतीसवीं कहावत खुजली और छोटी फुन्सियों का वर्णन ॥

ये छोटी फुन्सियां सर्दी और रातके समय होती है और खुजली और खुरखुरापन भी होता है। इनको खुजाने से यद्यपि कुछ देरतक खुजलीकम हाजाती है परन्तु पीछे दर्द हाने लगता है (इलाज) फस्द और दस्तों से शरीर का मवाद निकाले फिर तेल मलने और मालिश करने से रोमांच खोलैं और बाकी वही इलाज है जो सूखी खुजली में लिखा गयाहै और अजमोदका पानी और सिर्केकी गाद का मलना लाभदायक है।

पैंतीसवी कहावत मस्से का वर्णन।

ये फुन्सी बहुत कडी गोल और कई प्रकारकी होती है एक तो उलटी मांस में गढी हुई, दूसरी फटी हुई बडी और गोल होती है, तीसरी वहहै कि जिसका सिर मेखका सा होता है और जड में पतला और ऊपर मोटा उस को मिसमारी (मेखकासा) कहते हैं चौथे लम्बी और टेढी होती है उसको फरोना कहते हैं, पांचवीं पत्तिदार होती है और पीला पानी उसमें निकलता है उसको तरसूम कहते है और मस्से के उत्पन्न हाने का कारण कफका गाढा दोष है जा छोटी रगों में नष्ट होकर सूखजाता है अथवा बादी वा कफवात जिसको तबियत ने ऊपरी खाल में निकालदिया है (इलाज) जो मस्से और

तेल (इलाज) यारज की गोली से शरीर और दिमाग आदि का मवाद निकाले पीछे मुखको साफ करने वाली चीजों से धोवे जैसे मटर का चून, मुर्गीके अंडे का छिलका, जली हड्डी, खड़ियामिट्टी और बाकला का चून, और जो उनसे लाभ नहीं तो कुटकी सफेद दो भाग सौसन की जड एक भाग, सिर्के में मिलाकर लेप करैं अथवा अलसी, गुलाब के फूल और कलौंजी सिर्के में मिलाकर लेप करै और जो विशेष बलवान् किया चाहे तो अगूर की लकडीकी राख सिर्के में मिलाकर लेप करै (लाभ हकीम अलियास का बेटा कहता है कि शरीर का मवाद आकाश बेल के काढे अथवा गोली से निकालें और दिमाग की पवित्रता यारज की गोली से करै फिर बनफ़शा अकलीलुल मलिक, बाबूना और सोया पानी में औटाकर उससे मुखधोवै और जो यह इलाज गुणदायक नहो तो अगर की लकडीकी राख, कौडीकी राख म० १०॥ माशे, कलौंजी ३॥ माशे, छीले सौसन की जड २४॥ माशे, अलसी के बीज अनार के फूल, म० ७ माशे, सबको कूट पीसकर पुराने सिर्के में मिलाकर लेप करै ।

चौंतीसवीं कहावत खुजली और छोटी फुन्सियों का वर्णन ॥

ये छोटी फुन्सियां सर्दी और रातके समय होती है और खुजली और खुरखुरापन भी होता है । इनको खुजाने से यद्यपि कुछ देरतक खुजलीकम होजाती है परन्तु पीछे दर्द होने लगता है (इलाज) फस्द और दस्तों से शरीर का मवाद निकाले फिर तेल मलने और मालिश करने से रोमांच खोलैं और बाकी वही इलाज है जो सूखी खुजली में लिखा गयाहै और अजमोदका पानी और सिर्केकी गाद का मलना लाभदायक है ।

पैंतीसवी कहावत मस्से का वर्णन ।

ये फुन्सी बहुत कडी गोल और कई प्रकारकी होती है एक तो उलटी मांस में गडी हुई, दूसरी फटी हुई बडी और गोल होती है, तीसरी वहहै कि जिसका सिर मेखका सा होता है और जड में पतला और ऊपर मोटा उस को मिसमारी (मेखकासा) कहते हैं चौथे लम्बी और टेढी होती है उसको फरोना कहते हैं, पांचवीं पीपदार होती है और पीला पानी उसमें निकलता है उसको तरसुग कहते है और मस्से के उत्पन्न होने का कारण कफका गाढा दोष है जो छोटी रगों में नष्ट होकर सूखजाता है अथवा खाकी वा कफवात जिसको तबियत ने ऊपरी खाल में निकालदिया है (इलाज) जो मस्से और

मांस, मिठाई और तेज भोजनों से बचे और गूगल, जरावन्दमुद्हरींज, फिट किरी, जगार, सरनूब, और पहाडी मुनक्का, रातियाज सब बराबर लेकर कूट छानकर पुराने सिर्के और थोडासा जैतून का तेल और शहद मिलाकर मरहम बनाकर लेप करे और हकीम अन्साकी कहता है कि दिलकी गर्मी के दूरहोने से पसलियों की झिल्ली और छाती में घाव उत्पन्न होता है इसी कारण से अचेतता और धडकन उसके साथ होती है और रोग छाती के पर्देको खाकर रोगीको मारडालता है फिर जब कि ऊपर की तरफ लाल या काला होजाता है तो फिर इसका इलाज नहीं है ॥

सैंतीसवीं कहावत बतम (कालीफुन्सी) का वर्णन।

यह काली फुन्सी है जो पिण्डली में उत्पन्न होती है और इस में से पीला और काला पानी निकलता है और क्योंकि यह फुन्सी बुनकी मेवाके समान होती है इसलिये यह नाम रक्खा गया है और यह रोग बहुत दिनों मे अच्छा होता है क्योंकि इसका मवाद जली बादीहै कि जो सम्पूर्ण शरीरसे पिंडलियों पर गिरती है (इलाज) बासलीक रगकी फस्द खोल पीछे कईवार वमन करे फिर जोक और पछने लगावें जिससे मुख्य उसी अंगका मवाद निकलजाय और खून अधिक निकालें फिर फुन्सी का चीर डाले और उसमें पीव और निकम्मा खून निकालनेके उपरान्त गर्दनाकी राख और झाऊकी लकडी की राख, मामीरा जरावन्दतवील किब्रकी जडकी छाल, जली महदी सिर्का और थोडासा जैतून मिलाकर मरहम बनाकर लेप करे ॥

अडतीसवीं कहावत तूता का वर्णन।

वह एक फुन्सी है जो बहुधा गालाकी गहराई में उत्पन्नहो और कभी ऐसा होताहै कि गुदा और भगमें उत्पन्न हो और उसका कारण वह गाढा दोषहै कि जिसमें तेजी हो (इलाज) मरहम जगार और तेज दवाऐं लगावें जिससे घाव नष्ट होजाय जहां गर्मीहो वहां मरहम अहमरसे और जहां गर्मी नहो तो मरहम अस्वद से उसको भरें।

उन्तालीसवीं कहावत दाखिसका वर्णन।

यह गर्म सूजन नखकी जडमें उत्पन्न होती है और उसके साथ विशेष दर्द टीस और खिंचाव होता है और जो सूजन सम्पूर्ण नखकी जडमें होती है तो नख उखडजाता है और बहुधा दर्द की अधिकतासे ज्वर हो आताहै और उसका कारण खूनका गाढ़ा मवाद है जो उस जगहपर गिरता है (इलाज) फस्दखोलें

मांस, मिठाई और तेज भोजनों से बचे और गूगल, जरावन्दगुद्दारिंज, फिट किरी, जगार, सरनूब, और पहाडी मुनक्का, रातियाज सब बराबर लेकर कूट छानकर पुराने सिर्के और थोडासा जैतून का तेल और शहद मिलाकर मरहम बनाकर लेप करे और हकीम अन्ताकी कहता है कि दिलकी गर्मी के दूरहोने से पसलियों की झिल्ली और छाती में घाव उत्पन्न होता है इसी कारण से अचेतता और धडकन उसके साथ होती है और रोग छाती के पर्देको खाकर रोगीको मारडालता है फिर जब कि ऊपर की तरफ लाल या काला होजाता है तो फिर इसका इलाज नहीं है ॥

सैंतीसवी कहावत वतम (कालीफुन्सी) का वर्णन।

यह काली फुन्सी है जो पिण्डली में उत्पन्न होती है और इस में से पीला और काला पानी निकलता है और क्योंकि यह फुन्सी बुनकी मेवाके समान होती है इसलिये यह नाम रक्खा गया है और यह रोग बहुत दिनों मे अच्छा होता है क्योंकि इसका मवाद जली बादीहै कि जो सम्पूर्ण शरीरसे पिंडलियों पर गिरती है (इलाज) बासलीक रगकी फस्द खोल पीछे कईवार वमन करे फिर जोक और पछने लगावें जिससे मुख्य उसी अगका मवाद निकलजाय और खून अधिक निकालें फिर फुन्सी का चीर डाले और उसमें पीव और निकम्मा खून निकालनेके उपरान्त ग दनाकी राख और झाऊकी लकडी की राख, मामीरा जरावन्दतवील किब्रकी जडकी छाल, जली महदी सिर्का और थोडासा जैतून मिलाकर मरहम बनाकर लेप करे ॥

अडतीसवी कहावत तूता का वर्णन।

वह एक फुन्सी है जो बहुधा गालाकी गहराई में उत्पन्नहो और कभी ऐसा होताहै कि गुदा और भगमें उत्पन्न हो और उसका कारण वह गाढा दोषहै कि जिसमें तेजी हो (इलाज) मरहम जगार और तेज दवाऐं लगावें जिससे घाव नष्ट होजाय जहां गर्मीहो वहां मरहम अहमरसे और जहां गर्मी नहो तो मरहम अस्वद से उसको भरें ।

उन्तालीसवीं कहावत दाखिसका वर्णन।

यह गर्म सूजन नखकी जडमें उत्पन्न होती है और उसके साथ विशेष दर्द टीस और खिचाव होता है और जो सूजन सम्पूर्ण नखकी जडमें होती है तो नख उखडजाता है और बहुधा दर्द की अधिकतासे ज्वर हो आताहै और उसका कारण खूनका गाढ़ा मवाद है जो उस जगहपर गिरता है (इलाज) फस्दखोलैं

छोटी फुन्सी सफेद और जड में कडी हों- जैसे कडे मांस का लोथडा और सिर उभरा हुआ और दर्द कम हो और उनका पकना कठिन हो और फुन्सियों के सिर में से कुछ २ पीला पानी निकले उनको जातुल अस्ल कहते हैं और कभी ऐसा होता है कि जातुल अस्ल वढकर फोडे के समान होजाती है (इलाज) फस्द खोले और आकाशवेल का काढा पिलाकर तबियत को नर्मकरे और प्रकृति को तरी पहुचाने में परिश्रम करे और आरम्भ में सूजन पर ईसबगोल रक्खे जिससे मवाद इकट्ठा हो फिर पकाने वाली दवा जैसे कनूचा के बीज, ईसबगोल और कासनी की टहनी, चुकन्दर की डाली, वनफसा के तेल में मिलाकर लेप करे जिससे मवाद पक जाय और कासनी और चुकन्दर के डठल भूनकर ग्रहण करे और मवाद के पकने के उपरान्त सूजन को लोहे से अथवा छरीला और अडे की जर्दी के लेप से खोले । दूसरी वह है कि छोटी २ फुन्सिया लाल और कडी हों और उन म दर्द नहो और एक जगह निकल फिर बन्द होकर दूसरी जगह निकले और बहुत काल तक रहै (इलाज) जो कुछ खून वाली छोटी फुन्सियों में वर्णन किया गया है काम में लावे । तीसरी वह है कि कडी फुन्सी मुख और गालपर उत्पन्न हो और उसके और पास सूजन के समान लाल होजाय इन फुन्सियों को शैलम कहते है और उसका मवाद निकम्मा तेज खून होता है इसलिये जो उसके इलाज मे देर होती है तो यह फुन्सियां मांस में गढ जाती है और सब मुखको घेर लेती है और यह बहुत बुरी है (इलाज) फस्द खोलें और जुलाब दें और मवाद के निकलने के उपरान्त फुन्सियों को चीर डाले जिससे सम्पूर्ण मवाद निकल जाय और कभी चीरा देने से फुन्सी के भीतर जमा हुआ खून निकलता है और सब मवाद के निकल जाने पर सफेदा का मरहम और जले सीसे और सिर्को का मरहम लगावे । चौथा वह है कि वडी २ फुन्सी छोटे दाने के समान कनपटियों पर निकले और उनका प्रभाव है कि पकती नहीं परन्तु वारीक और लाल होजाती है और जो चीरा दे तो गाढे खून के सिवाय और कोई चीज नहीं निकलती और बहुधा उससे नासूर होजाता है (इलाज) सराख रगकी फस्द खोलें [illegible] सिरसे मवा[illegible] [illegible] और तिमिस वाकला, जौ और मटर के चून [illegible] के वी[illegible] और सोफ के पानी में मिलाकर लेपकरे जिससे [illegible] और [illegible] के मलने से जलन थम जाती है और कठोरता [illegible] है

छोटी फुन्सी सफेद और जड में कडी हों- जैसे कडे मांस का लोथडा और सिर उभरा हुआ और दर्द कम हो और उनका पकना कठिन हो और फुन्सियों के सिर में से कुछ २ पीला पानी निकले उनको जालुलें अस्ल कहते हैं और कभी ऐसा होता है कि जालुल अस्ल वढकर फोडे के समान होजाती है (इलाज) फस्द खोले और आकाशबेल का काढा पिलाकर तबियत को नर्मकरै और प्रकृति को तरी पहुचाने में परिश्रम करै और आरम्भ में सूजन पर ईसबगोल रक्खे जिससे मवाद इकट्ठा हो फिर पकाने वाली दवा जैसे कनूचा के बीज, ईसबगोल और कासनी की टहनी, चुकन्दर की डाली, बनफसा के तेल में मिलाकर लेप करै जिससे मवाद पक जाय और कासनी और चुकन्दर के डठल भूनकर ग्रहण करै और मवाद के पकने के उपरान्त सूजन को लोहे से अथवा छरीला और अडे की जर्दी के लेप से खोले। दूसरी वह है कि छोटी २ फुन्सिया लाल और कडी हों और उन म दर्द नहो और एक जगह निकल फिर बन्द होकर दूसरी जगह निकले और बहुत काल तक रहे (इलाज) जो कुछ खून वाली छोटी फुन्सियों में वर्णन किया गया है काम में लावे। तीसरी वह है कि कडी फुन्सी मुख और गालपर उत्पन्न हो और उसके आस पास सूजन के समान लाल होजाय इन फुन्सियों को शैलम कहते है और उसका मवाद निकम्मा तेज खून होता है इसलिये जो उसके इलाज में देर होती है तो यह फुन्सियां मांस में गड जाती है और सब मुखको घेर लेती है और यह बहुत बुरी है (इलाज) फस्द खोलें और जुलाब दें और मवाद के निकलने के उपरान्त फुन्सियों को चीर डाले जिससे सम्पूर्ण मवाद निकल जाय और कभी चीरा देने से फुन्सी के भितर जमा हुआ खून निकलता है और सब मवाद के निकल जाने पर सफेदा का मरहम और जले सीसे और सिर्का का मरहम लगावे। चौथा वह है कि बडी २ फुन्सी छोटे दाने के समान कनपटियों पर निकले और उनका प्रभाव है कि पकती नहीं परन्तु बारीक और लाल होजाती है और जो चीरा दे तो गाढे खून के सिवाय और कोई चीज नहीं निकलती और बहुधा उससे नासूर होजाता है (इलाज) सराक्ष रगकी फस्द खोलें [illegible] सिरसे मवा[illegible] [illegible]ले और तिमिस वाकला, जौ और मटर के चून [illegible] के बीज [illegible] और सौंफ के पानी में मिलाकर लेपकरै जिससे [illegible] और [illegible] के मलने से जलन थम जाती है और कठोरता [illegible] है

॥ सनाय के काढे के बनाने की विधि ॥

सनाय मक्की १४ माशे, पित्तपापडा १० माशे, इमली २० माशे, हर्ड का छिलका, बिन्नकी जड प्रत्येक ३॥ माशे, उन्नाव, और लिसौडा प्रत्येक १५ दाने मकोय, कासनी के बीज अध कुचले, गुलाब के फूल, खितमी के बीज प्रत्येक ५। माशे, इनको औटाकर आवश्यकतानुसार शीरखिस्त मिलाकर गर्म दूध पिवावें ।

॥ मरहम शादना के बनाने की विधि ॥

शादन या अदसी कुन्दरू गोंद, अजरूत, प्रत्येक ४॥ माशे, गुलरौगन ४२ माशे, मौमसफेद ५। माशे (जरूर अजरूत की विधि) अजरूत, शादनजअदसी अकाकिया, गुलाब के फूल, कु दरू गोंद, हीरादुखी गोंद, जरावन्द महीन रगड कर घाव पर बुर कें दूसरा भेद वह है कि पित्त से उत्पन्न हो और उसका यह चिन्ह है कि इससे मुख और शरीर दुबला होजाय और मुख में कडवापन और प्यास और नींदका न आना और नाक और जीभ में खुश्की हो और नाडी में शीघ्रता क्रोध और मूत्र लालहो और पीले भुनगे आदि उडते दिखाई दें और दानेका रग पीलापन लिये हुये हो और इस सूजनमें जलन होतीहै और इसमेंसे बहुत सा पीव निकलता है (इलाज) नारगी का शर्बतदें नीबूका शर्बत, खट्टे मीठे अनार का पानी, इमली का पानी और सिकजवीन जिससे पित्त ठीक होजाय इसके उपरान्त जो कोई कार्य्य वर्जित न होतो फस्द खोलै और नहो तो पछने लगावे। यह जुलाब इस जगह लाभदायक है पीली हर्डका छिलका सनाय मक्की, पित्तपापडा प्र० १७॥ माशे इमली, आलूबुखारा प्र० ५२॥ माशे, कासनी के बीज अधकुचले, खितमी के बीज, मकोय, जरावन्द अधकुचली, गुलाब के फूल प्रत्येक ३॥ माशे, उन्नाव, लिसोडा प्र० २० दाने, शीरखिस्त तथा तुरजवीन ७० माशे इनको औटाकर गर्म दूध पिलावे और जिस पानी में इमली को दोयार मिलाकर छानलिया हो छ रत्ती सकमूनियां के साथ पि लाना पहले पित्त को निकालता है और एलवा का खसादा जिसप्रकार खुजली में वर्णन किया गया है यहां भी गुणकारी है और पित्त पापडे की गाली लाभदायक है और जो दाना सिर और मुख में उत्पन्नहो तो गिलइरमनी ८ माशे, गिलमरतूम, ३॥ माशे, कपूर २ रत्ती, केसर ३ रत्ती, मुर्दासिंग ९ माशे, पानीमें ... गुलाब और सिरका मिलाकर लगावें कुन्दरूगोंद, गुल लालगोंद जलन पे ... सीगार के बुरकने से घाव जल्द सूख जाताहै और उसी समय घाव

॥ सनाय के काढे के बनाने की विधि ॥

सनाय मक्की १४ माशे, पित्तपापडा १० माशे, इमली २० माशे, हड़े का छिलका, बिल्लकी जड़ प्रत्येक ३॥ माशे, उन्नाव, और लिसौढा प्रत्येक १५ दाने मकोय, कासनी के बीज अध कुचले, गुलाब के फूल, खितमी के बीज प्रत्येक ५। माशे, इनको औटाकर आवश्यकतानुसार शीरखिस्त मिलाकर गर्म दूध पिवावें ।

॥ मरहम शादना के बनाने की विधि ॥

शादन या अदसी कुन्दरू गोंद, अजरूत, प्रत्येक ४॥ माशे, गुलरोगन ४२ माशे, मोमसफेद ५। माशे (जरूर अजरूत की विधि) अजरूत, शादनजअदसी अकाकिया, गुलाब के फूल, कुन्दरू गोंद, हीरादूखी गोंद, जरावन्द महीन रगड कर घाव पर बुरकें दूसरा भेद वह है कि पित्त से उत्पन्न हो और उसका यह चिन्ह है कि इससे मुख और शरीर दुबला होजाय और मुख में कडवापन और प्यास और नींदका न आना और नाक और जीभ में खुश्की हो और नाडी में शीघ्रता क्रोध और मूत्र लालहो और पीले भुनगे आदि उडते दिखाई दें और दानेका रंग पीलापन लिये हुये हो और इस सूजनमें जलन होतीहै और इसमेंसे बहुत सा पीव निकलता है (इलाज) नारंगी का शर्बत नीबूका शर्बत, खट्टे मीठे अनार का पानी, इमली का पानी और सिकंजबीन जिससे पित्त ठीक होजाय इसके उपरान्त जो कोई कार्य्य वर्जित न होतो फस्द खोले और नहो तो पछने लगावे। यह जुलाब इस जगह लाभदायक है पीली हर्डका छिलका सनाय मक्की, पित्तपापडा प्र० १७॥ माशे इमली, आलूबुखारा प्र० ५२॥ माशे, कासनी के बीज अधकुचले, खितमी के बीज, मकोय, जरावन्द अधकुचली, गुलाब के फूल प्रत्येक ३॥ माशे, उन्नाव, लिसोढा प्र० २० दाने, शीरखिस्त तथा तुरंजबीन ७० माशे इनको औटाकर गर्म दूध पिलावे और जिस पानी में इमली को दोबार मिलाकर छानलिया हो छ रत्ती सकमूनियां के साथ पि लाना पाले पित्त को निकालता है और एलवा का खेसादा जिसप्रकार खुजली में वर्णन किया गया है यहां भी गुणकारी है और पित्त पापडे की गाली लाभ- दायक है और जो दाना सिर और मुख में उत्पन्नहो तो गिलइरमनी ८ माशे, गिलमरतूम, ३॥ माशे, कपूर २ रत्ती, केसर ३ रत्ती, मुर्दासिंग ९ माशे, पानी...गुलाब और सिरका मिलाकर लपकें कुन्दरूगोंद, गुल लालगोंद जलन पे...सींगादे के बुरकने से घाव जल्द सूख जाताहै और इसी समय घाव

बादी के दोष से उत्पन्न हो उसका चिन्ह भारापन और मुख में खुश्की और नींद का आना और मुख और शरीर का रंग काला पड जाय और नाडी सुस्त हो और मूत्र सफेद और आंख और नाक में खुश्की हो और विचारांश और बुरी चिन्ता और घाव का रंग स्याही लिये होना और घावपर खुश्की का अधिक होना और यह रोग बहुत काल में अच्छा होता है (इलाज) आकाश बेल का काढा और बादी को निकालने वाली दस्तावर गोलियाँ दें और काढा और पित्तपापडे की माजूम और हर्डे का मुरब्बा लाभदायक है और शहद की बनी सिकंजबीन जिस में चित्र की जड की छाल हो अथवा यारज फयकरा जिस में इन्द्रायन का गूदा पडा हो शहद और गर्म पानी में मिलावें उन से कुल्ला करना लाभदायक है और यह लेप भी लाभदायक है। नकछिकनी, चांदी का मैल, मुर्दासिन प्रत्येक ९ माशे, पुराने चूल्हे की जली मट्टी १३॥ माशे, गन्धक ३॥ माशे, हलदी ३॥ माशे, जरावन्द ९ माशे, मरा पारा ७ माशे, नर्म कूटकर सिर्का और गुलरोगन में मिला कर न्हाने के स्थानमें मलें और जो घाव हो तो मुर्दासिन, कुंदरूगोंद, मुलतानी, लालमिट्टी और कीकर का गोंद महीन पीसकर घाव पर बुरकें (लाभ) जब तक हो सके तज दवा न मलें और शरीर के मवाद के निकालने में परिश्रम करे और जो रोगी लडका हो अथवा गर्भवती स्त्री और दवा न खाय तो यह माजून सर्वदा खाय बीस दिन में इसका मवाद ठहर जाता है यह परीक्षा किया गया है उसकी विधि काबली हर्डेका छिलका, बहेडे का छिलका, छिले आंवले, तुर्बुद, सोंठ, पित्तपापडा प्रत्येक २७॥ माशे, कमीला १८ माशे आकाशबेल १३॥ माशे, महीन कर के ५४० माशे पद अथवा किसमिस में जो दवाओं से दुगनी हो मिलाय और ७ माशे से लेकर ९ माशे तक खावें।

प्रगट होता है तो पहले लिंग पर फुन्सी उत्पन्न होती है और स्त्रियों की योनिके भीतर निकलती है और बहुत जल्द घायल हो जाती है और उसके उत्पन्न होने के कारणा में से बहुत बडा कारण मैथुन है मुख्यकर ऐसी स्त्री से कि उस रोग का कुछ असर उस में हो और उसकी प्रकृति गर्म और दोष अधिक खराबी पैदा करने वाले हो मुख्यकर जिस स्त्रीसे बहुत मर्द संगति करे इस लिये कि उसका मुख्य स्थान विरुद्ध वीर्य की अधिकता से सड जाता है फिर जब कि ऐसी स्त्री से विषय करे तो झट पट इस रोग में फसजाय और जो मर्द रोगी किसी आरोग्य स्त्री से सभोग करे तो स्त्री इस रोग में फसजाय और कभी इस प्रकार के रोगी के साथ भोजन करने और उठने बैठने और जिस जगह कि उसने मूत्र किया हो उस जगह मूत्र करने अथवा पाखाना फिरने से यह रोग दूसरे मनुष्य को भी होता है॥

वादी के दोष से उत्पन्न हो उसका चिन्ह भारापन और मुख में खुश्की और नींद का आना और मुख और शरीर का रंग काला पड़ जाए और नाडी सुस्त हो और मूत्र सफेद और आंख और नाक में खुश्की हो और विचारांश और बुरी चिन्ता और घाव का रंग स्याही लिये होना और घावपर खुश्की का अधिक होना और यह रोग बहुत काल में अच्छा होता है (इलाज) आकाश बेल का काढा और बादी को निकालने वाली दस्तावर गोलियां दे और काढा और पित्तपापडे की माजून और हर्डे का मुरब्बा लाभदायक है और शहद की बनी सिकजबीन जिस में कित्र की जड की छाल हो अथवा पारज फयकरा जिस में इन्द्रायन का गूदा पड़ा हो शहद और गर्म पानी में मिलावें उन से कुल्ला करना लाभदायक है और यह लेप भी लाभदायक है। नकछिकनी, चांदी का मैल, मुर्दासिंग प्रत्येक ९ माशे, पुराने चूल्हे की जली मट्टी १३॥ माशे, गन्धक ३॥ माशे, हलदी ३॥ माशे, जरावन्द ९ माशे, मरा पारा ७ माशे, नर्म कूटकर सिर्का और गुलरोगन में मिला कर न्हाने के स्थानमें मलें और जो घाव हो तो मुर्दासिंग, कुंदरूगोंद, मुलतानी, लालमिट्टी और कीकर का गोंद महीन पीसकर घाव पर बुरकें (लाभ) जब तक हो सके तब दवा न मलें और शरीर के मवाद के निकालने में परिश्रम करे और जो रोगी लड़का हो अथवा गर्भवती स्त्री और दवा न खाय तो यह माजून सर्वदा खाय वीस दिन में इसका मवाद ठहर जाता है यह परीक्षा किया गया है उसकी विधि कावली हर्डका छिलका, बहेडे का छिलका, छिले आंवले, तुर्बुद, सोंठ, पित्तपापड़ा प्रत्येक २०॥ माशे, कमीला १८ माशे आकाशबेल १३॥ माशे, महीन कर के ५४० माशे शहद अथवा किसमिस में जो दवाओं से दुगनी हो मिलाए और ७ माशे से लेकर ९ माशे तक खावें।

प्रगट होता है तो पहले लिंग पर फुन्सी उत्पन्न होती है और स्त्रियों की योनिके भीतर निकलती है और बहुत जल्द घायल हो जाती है और उसके उत्पन्न होने के कारणा में से बहुत बड़ा कारण मैथुन है मुख्यकर ऐसी स्त्री से कि उस रोग का दुष्ट असर उस में हो और उसकी प्रकृति गर्म और दोष अधिक सगर्मी पैदा करने वाले हों मुख्यकर जिस स्त्रीसे बहुत मर्द संगति करें इस लिये कि उसका मुख्य स्थान विरुद्ध वीर्य की अधिकता से सड जाता है फिर जब कि ऐसी स्त्री से विषय करे तो झट पट इस रोग में फसजाय और जो मर्द रोगी किसी आरोग्य स्त्री से संभोग करे तो स्त्री इस रोग में फसजाय और कभी इस प्रकार के रोगी के साथ भोजन करने और उठने बैठने और जिस जगह कि उसने मूत्र किया हो उस जगह मूत्र करने अथवा पाखाना फिरने से यह रोग दूसरे मनुष्य का भी होता है॥

आर बेचैनी कम होजाय और नाडी और श्वास अपनी असली दशापर आजाय और फफोलों के पकने में देर मालूमहो तो पकानेका उपायकरे और जो इसके सिवाय फफोला निकलआवे और फिरभी गर्मी और बचैनी कम नहो और नाडी और श्वास असली दशापर न आवे तो अच्छा चिन्ह नहीं है इसके पकानेका उपायकरे और पकानेकी यह विधिहै कि बाबूना, अकलीकुलमलिक तथा बनफशा और खितमी अथवा गेंहूकी भुसी जो कुछ मिसलके अथवा सब मिलाकर पानी में औटाकर रोगीके दामनके नीचे, आगे और पीछे रक्खे जिस से फफोला तर होकर पकजाय फिर सुखादेनेका उपाय करे।

फफोलों के सुखादेने का उपाय।

जब फफोले सात दिन तक न पकें तो इन में सबसे बडे को सोने अथवा तांबे की सुई से फोडदें और उसका पानी नर्म कपडे से सुखा कर सूखे गुलाब के फूल अथवा मोलसरी के पत्ता तथा सोसन के पत्ता कूट छान कर अथवा चंदन और झाऊ की लकडी घिसकर दामन के नीचे धूनी दे परन्तु गर्मियों में गुलाब के फूल, मौलसरी और चंदन अति उत्तम है और जाडों में सोसन के पत्ता और झाऊकी लकडीकी धूनी देना अति उत्तमहै और जो कोई जगह घायल होजाय तो गुलाब के फूल, कुंदरू गोंद, एलवा, कीकर का गोंद और हीरादुखी गोंद पीसकर घावपर बुरकदे और जो फफोला बडा हो तथा उसमें पानी अधिक है तो बूल के पत्ते पीस कर अथवा चना का तथा जौ का चून बिछौने पर डालकर रोगी को उस पर लिटावे और जो खाल छिलजाय तो सोसन के पत्तों को डाली से तोड कर उनपर रोगी को लिटावे और सूखे गुलाब के पत्ते और सूखी मोलसरी के पत्ते छिली जगह पर मलें और नर्म रेत पर लिटाना अच्छा है और एक दिन में उसका लाभ मालूम होजाता है और जो बहुत समय में सूखे तो नमक का पानी उचित है परन्तु जहां कि खाल में छिलन हो अथवा फफोला फूटजाय तो नमक का पानी निकट न लेजाय और जबकि बिलकुल न पके तो नमक दूररक्खे और अति उत्तम यहहै कि लाल मसूर और गुलाब के पत्ते और झाऊ की लकडी काढकर पानी में औटा कर फिर इस पानी में नमक डालें और नर्म और साफ रुई उस में भिजोकर फफोलों पर रक्खे और जो गर्मी की अधिकता हो तो थोडा कपूर और चंदन रिगड कर उस पानी में घोलकर बेर के पत्ते और जरूर के पत्ते और काशगरी सफेदा और मुर्दासन पीसकर बुरके और घायल फफोले में मपूर

आर बेचैनी कम होजाय और नाडी और श्वास अपनी असली दशापर आजांय और फफोलों के पकने में देर मालूमहो तो पकानेका उपायकरे और जो इसके सिवाय फफोला निकलआवे और फिरभी गर्मी और बेचैनी कम नहो और नाडी और श्वास असली दशापर न आवे तो अच्छा चिन्ह नहीं है इसके पकानेका उपायकरे और पकानेकी यह विधिहै कि बाबूना, अकलीलुलमलिक तथा बनफसा और खितमी अथवा गेंहूकी भुसी जो कुछ मिसलके अथवा सब मिलाकर पानी में औटाकर रोगीके दामनके नीचे, आगे और पीछे रक्खे जिस से फफोला तर होकर पकजाय फिर सुखादेनेका उपाय करे।

फफोलों के सुखादेने का उपाय।

जब फफोले सात दिन तक न पकें तो इन में सबसे बडे को सोने अथवा सोंने की सुई से फोडदें और उसका पानी नर्म कपडे से सुखा कर सूखे गुलाब के फूल अथवा मोलसरी के पत्ता तथा सोसन के पत्ता कूट छान कर अथवा चंदन और झाऊ की लकडी घिसकर दामन के नीचे धूनी दे परन्तु गर्मियों में गुलाब के फूल, मौलसरी और चंदन अति उत्तम है और जाडों में सोसन के पत्ता और झाऊकी लकडीकी धूनी देना अति उत्तमहै और जो कोई जगह घायल होजाय तो गुलाब के फूल, कुंदरू गोंद, एलवा, कीकर का गोंद और हीरादुखी गोंद पीसकर घावपर बुरकदे और जो फफोला बडा हो तथा उसमें पानी अधिक है तो बूल के पत्ते पीस कर अथवा चना का तथा जौ का चून बिछौने पर डालकर रोगी को उस पर लिटावे और जो खाल छिलजाय तो सोसन के पत्तों को डाली से तोड कर उनपर रोगी को लिटावे और सूखे गुलाब के पत्ते और सूखी मोलसरी के पत्ते छिली जगह पर मलें और नर्म रेत पर लिटाना अच्छा है और एक दिन में उसका लाभ मालूम होजाता है और जो बहुत समय में सूखे तो नमक का पानी उचित है परन्तु जहां कि खाल में छिलन हों अथवा फफोला फूटजाय तो नमक का पानी निकट न लेजाय और जबकि बिलकुल न पके तो नमक दूररक्खे और अति उत्तम यहहै कि लाल मसूर और गुलाब के पत्ते और झाऊ की लकडी काटकर पानी में औटा कर फिर इस पानी में नमक डालें और नर्म और साफ रुई उस में भिजोकर फफोलों पर रक्खे और जो गर्मी की अधिकता हो तो थोडा कपूर और चंदन घिसकर उस पानी में घोलकर बेर के पत्ते और जबर के पत्ते और काशगरी सफेदा और मुर्दासन पीसकर बुरके और घायल फफोले में कपूर

उपाय काममें लावे और जो फफोलेके चिन्ह शरीरमें गहरे होंगे तो मोटे होने पर जातेरहंगे और जो गहरे नहीं होते वे दवाओं से जाते रहते हैं और जो फफोलोंके चिन्ह सफेद होते हैं उनपर बतककी चर्बी और मरहम दासली ऊन का लेप करना लाभदायकहै मुर्दासिनको सफेद करके गुलरोगनमें मिलाकर लगाने से मुख और शरीरके चिन्ह जाते रहते हैं। (दूसरी विधि) मुर्दासिन सफेद कियाहुआ, चनाका चून, सफेद बांसकी जड़, पुरानी हड्डी, घृट, बकाइनके बीज, चांवलका चून, खरबूजाके बीज कूट छानकर खरबूजके पानी में अथवा मुलहटी और अलसीके लुआबमें मिलाकर लेपकरें (लाभ) मुर्दासिन को सफेद करके उन दवाओं में मिलाना चाहिये क्योंकि विना सफेद किये कालापन लाताहै और सफेद कियाहुआ सफाई करताहै और सफेद करने की विधि यह है—कि सेरभर मुर्दासिन और उसके बराबर नमक मिलाकर एक बर्तनमें रक्खें और उसमें पानी डालकर धूपमें रक्खें और जब पानी गर्म हो- जाय तो उसको नितारकर और नया पानी डालें इसी तरह पानीको बदलते रहें यहांतक कि मुर्दासिन सफेद होजाताहै ॥

॥ दूसरा प्रकरण ॥

॥ पहिली कहावत सफेद दाग का वर्णन ॥

यह एक गाढी सफेदीहै जो ऊपरी खालमें उत्पन्न होतीहै और कभी किसी२ अंग में और कभी सम्पूर्ण शरीर में फैल जाती है उसको बर्सामुतशिर कहते हैं इस रोग का इलाज कठिन है मुख्य कर जब कि पुरानाहो और बढता रहे परन्तु जो दाग मलने से लाल होजाय और उसमें खुरखुरापन हो और जो बाल कि उसमें निकलते हैं बहुत सफेद नहीं और जब उस जगह सुई चुभोवें तो खून निकलै अथवा तरी लाली लियेहुए हो और दृढ न हुआ हो तो जान ले कि इलाज हो सकता है और सफेद दाग तथा सीप में यह अंतर है कि दाग सफेद होता है और जब विशेष काल बीत जाता है तो मांस और खाल मे प्रवेश हो जाता है कहते हैं कि फपनेपर हड्डी म भी घुसजाता है और जो बाल वहां निकलते हैं सफेदी लिये होते हैं और अंत में बिलकुल सफेद निकला करते है और उस जगहकी खाल सम्पूर्ण शरीर की अपेक्षा नर्म तर और सुस्त होती है और अंतम सुई* चुभोनेसे एकनमें और सफेद तरी निकलती

*यह जो परीक्षा के लिये सुई चुभोते है चाहिये कि खाल को उठा कर सुई चुभोवें न कि मांस में और यहइस प्रकारकी होतीहै कि उस जगह की खालको अंगूठे और तर्जनी उंगली से पकड़ कर खींचें जिससे मांस से अलग होजाय फिर इस खाल में कि जो उठी हुई है सुई और जिससे मांस में न चुभै और खालकी असलियत मालूम हो जाय कि इस में खून है या नहीं ॥

उपाय काममें लावे और जो फफोलेके चिन्ह शरीरमें गहरे होंगे तो मोटे होने पर जातेरहग और जो गहरे नहीं होते वे दवाओं से जाते रहते हैं और जो फफोलोंके चिन्ह सफेद होते हैं उनपर बतककी चर्बी और मरहम दाखली ऊन का लेप करना लाभदायकहै मुर्दासिनको सफेद करके गुलरोगनमें मिलाकर लगाने से मुख और शरीरके चिन्ह जाते रहते हैं। (दूसरी विधि) मुर्दासिन सफेद कियाहुआ, चनाका चून, सफेद बांसकी जड़, पुरानी हड्डी, कूट, बका-इनके बीज, चांवलका चून, खरबूजाके बीज कूट छानकर खरबूजके पानी में अथवा मुलहटी और अलसीके लुआबमें मिलाकर लेपकरें (लाभ) मुर्दासिन को सफेद करके उन दवाओं में मिलाना चाहिये क्योंकि विना सफेद किये कालापन लाताहै और सफेद कियाहुआ सफाई करताहै और सफेद करने की विधि यह है–कि सेरभर मुर्दासिन और उसके बराबर नमक मिलाकर एक बर्तनमें रक्खें और उसमें पानी डालकर धूपमें रक्खें और जब पानी गर्म हो-जाय तो उसको नितारकर और नया पानी डालें इसी तरह पानीको बदलते रहें यहांतक कि मुर्दासिन सफेद होजाताहै ॥

॥ दूसरा प्रकरण ॥

॥ पहिली कहावत सफेद दाग का वर्णन ॥

यह एक गाढी सफेदीहै जो ऊपरी खालमें उत्पन्न होतीहै और कभी किसी२ अंग में और कभी सम्पूर्ण शरीर में फैल जाती है उसको बरसमुतशिर कहते हैं इस रोग का इलाज कठिन है मुख्य कर जब कि पुराना हो और बढता रहे परन्तु जो दाग मलने से लाल होजाय और उसमें खुरखुरापन हो और जो बाल कि उसमें निकलते हैं बहुत सफेद नहीं और जब उस जगह सुई चुभावे तो खून निकलै अथवा तरी लाली लियेहुए हो और दृढ़ न हुआ हो तो जान ले कि इलाज हो सकता है और सफेद दाग तथा सीप में यह अंतर है कि दाग सफेद होता है और जब विशेष काल बीत जाता है तो मांस और खाल में प्रवेश हो जाता है कहते हैं कि कपनेपर हड्डी में भी घुसजाता है और जो बाल वहां निकलते हैं सफेदी लिये होते हैं और अंत में बिलकुल सफेद निकला करते हैं और उस जगहकी खाल सम्पूर्ण शरीर की अपेक्षा नर्म तर और सुस्त होती है और अंतमें सुई* चुभोनेसे एकनर्म और सफेद तरी निकलती

*यह जो परीक्षा के लिये सुई चुभोते हैं चाहिये कि खाल को उठा कर सुई चु-भोवें न कि मांस में और यहइस प्रकारकी होतीहै कि उस जगह की खालको अंगूठे और तर्जनी उंगली से पकड़ कर खींचें जिससे मांस से अलग होजाय फिर इस खाल में कि नाउठी हुई दे सुई और जिससे मांस में न चुभे और खालकी असलियत मालूम हो जाय कि इस में खून है या नहीं ॥

हुई शराव । जब कि इन दवाओं से घाव पड जाय और सफेद दाग का मांस कट जाय तो घाव के भरने वाले मरहमों से घाव को भरें और यह उपाय उस दशा में है कि सफेद दाग कम हो और उस जगह घाव का भय न हो। तीसरे यह है कि सफेद दाग को रंगीन करै इस काम के लिये यह लेप मुख्य है। फिटकरी शोरा गुलाब की बनी शराब, मजीठ, गिलेइरमनी, चीता, लोहे का मैल और खिजावी तेल सिर्के में मिलाकर कई वार लेप करैं इसका रंग तीन सप्ताह वा एक महीने तक रहता है और जब उस दवा को लगाना चाहैं तो पहिले उस जगह को माजू के पानी से कई बार धोवै और फिर इस दवा का लेप करे और जब दवा सूख जाय तो सफेद फिटकरी के पानी से दवा को धोडालैं (लाभ) जहां सफेद दाग कम है और वह ऐसी जगह है कि जहां जब दाग देस-क्ते है तो लोहे से दाग दे तो निस्सन्देह आरोग्य होता है और दाग उस समय दिया जाता है जब घावकारी दवाओं से लाभ न हो (लाभ) कभी पछनेकी जगह पछने के चिन्हों में अथवा दागकी और घाव की जगह घाव भरने के पीछे सफेद दाग होजाता है और उसका यह इलाज है कि मजीठ और चीता जंगली खीरा का पानी, दौनामरुआ का पानी, पतंग का पानी मिलाकर लेप करे तो नष्ट होता है और मुर्दासन और मजीठ सिर्के में मिले हुए वैसेही गुणकारी है ॥

❀ दूसरी कहावत सफेद सीप का वर्णन ❀

वह एक पतली सफेदी है जो खाल के ऊपर गोल और एक साथ उत्पन्न हो-ती है और साफ करने वाली दवाओं से जल्दी जाती रहती है (इलाज) जो कुछ सफेद दाग के लिये लिखा गया है उससे हलकासा इलाज यहां लाभदायक है और कफ को मल के द्वारा निकालने के लिये तुर्बुद और इन्द्रायन का गूदा अथवा तुर्बुद और सोंठ दें और हर महीने में दो वार वमन करावै और पचाव के ठीक करने के लिये इतरीफल और शहद का बना गुलकंद सर्वदा खाय और हम्माम में पसीना लाना लाभदायक है और मवाद के पीछे तिमिस अथवा किन्नकी जड सिर्का में मिलाकर लेप करै और चीता, अकरकरा, मूली के बीज, नकछिकनी और राई कूट छानकर सिर्के में मिलाकर लेप करना लाभदायक है और यह दवा धूप में आग के निकट लगाना चाहिये और सूखने पर हाथसे मलकर कभी विना मवाद नि-कालेही लेपकी दवाओं से ठीक २ लाभ प्राप्त होता है और यह दवा परीक्षा

हुई शराब) जब कि इन दवाओं से घाव पड़ जाय और सफेद दाग का मांस कट जाय तो घाव के भरने वाले मरहमों से घाव को भरें और यह उपाय उस दशा में है कि सफेद दाग कम हो और उस जगह घाव का भय न हो। तीसरे वह है कि सफेद दाग को रंगीन करें इस काम के लिये यह लेप मुख्य है। फिटकरी शोरा गुलाब की बनी शराब, मजीठ, गिलेइरमनी, चीता, लोहे का मैल और खिजाबी तेल सिर्के में मिलाकर कई बार लेप करें इसका रंग तीन सप्ताह वा एक महीने तक रहता है और जब उस दवा को लगाना चाहैं तो पहिले उस जगह को माजू के पानी से कई बार धोवै और फिर इस दवा का लेप करें और जब दवा सूख जाय तो सफेद फिटकरी के पानी से दवा को धोडालैं (लाभ) जहां सफेद दाग कम है और वह ऐसी जगह है कि जहां जब दाग देसक्ते है तो लोहे से दाग दे तो निस्सन्देह आरोग्य होता है और दाग उस समय दिया जाता है जब घावकारी दवाओं से लाभ न हो (लाभ) कभी पछनेकी जगह पछने के चिन्हों में अथवा दागकी और घाव की जगह घाव भरने के पीछे सफेद दाग होजाता है और उसका यह इलाज है कि मजीठ और चीता जंगली खीरा का पानी, दौनामरुआ का पानी, पतंग का पानी मिलाकर लेप करे तो नष्ट होता है और मुर्दासन और मजीठ सिर्के में मिले हुए वैसेही गुणकारी है ॥

❋ दूसरी कहावत सफेद सीप का वर्णन ❋

वह एक पतली सफेदी है जो खाल के ऊपर गोल और एक साथ उत्पन्न होती है और साफ करने वाली दवाओं से जल्दी जाती रहती है (इलाज) जो कुछ सफेद दाग के लिये लिखा गया है उससे हलकासा इलाज यहां लाभदायक है और कफ को मल के द्वारा निकालने के लिये तुर्बुद और इन्द्रायन का गूदा अथवा तुर्बुद और सोंठ दें और हर महीने में दो बार वमन करावै और पचाव के ठीक करने के लिये इतरीफल और शहद का बना गुलकन्द सर्वदा खाय और हम्माम में पसीना लाना लाभदायक है और मवाद के पीछे तिमिस अथवा किन्नकी जड़ सिर्का में मिलाकर लेप करे और चीता, अकरकरा, मूली के बीज, नकछिकनी और राई कूट छानकर सिर्के में मिलाकर लेप करना लाभदायक है और यह दवा धूप में आग के निकट लगाना चाहिये और सूखने पर हाथसे मलकर कभी विना मवाद निकालेही लेपकी दवाओं से ठीक २ लाभ प्राप्त होता है और यह दवा परीक्षा

में यह है कि जो निन्दी का रंग लाली लिये है तो उसको नमश कहते हैं और जो स्याही लिये हुए है तो उसको वरश कहते हैं और जो कोई बूंदें आपस में मिलकर एक होजांय तो उनको कलफ (झाईं) कहते हैं (इलाज) इन सब रोगों में फस्द खोलै और आकाशबल के काढ़ गारीकून और माउल जुब्न आदिसे मवाद को निकालकर लेप लगावे जिससे फिर न हो जाय (लाभ) झाईं दो प्रकार की होती है एक तो इस तरह पर होती है कि आमाशय में बादी इकट्ठी हो और उसमेंसे जले हुए खून की भाफ के परमाणु उठ कर मुख की खाल में आवे और उसका चिन्ह आमाशय में विपत्तिका होना और झाईं का रंग हरा और पीलापन लिये होना और उसका आमाशय के मवाद का निकालना और पुष्टता है और इस दशा में बासलीक और उसैलम की फस्द खोलना लाभदायक है दूसरी इस प्रकार पर है कि खाल और मांस की पोल में खून बादी के मिलजाने से बिगड़ जाय और उसकी भाफ के परमाणु खालके ऊपर दीखें और यह रोग बहुधा उन लोगों को उत्पन्न होताहै जिनको चौथैया ज्वर बहुत काल से हो और ऐसेही गर्भवती स्त्रियों को और जिन स्त्रियों का रज बंद होजाता है उनको बहुधा उत्पन्न होती है और उसका चिह्न झाईंका रंग काला अथवा लाल कालापन लिये होताहै और उस का उपाय सम्पूर्ण शरीर का मवाद निकालना है जैसाकि ऊपर वर्णन हुआ है और यह फकी लाभदायक है आकाशबेल ३२॥ माशे, तुरबुद ४॥ माशे, गारीकून ४॥ माशे, दोबार शर्बत सिकंजबीन के साथ खावे यह बहुधा पांच दस्त लातीहै और जो चीज कि खूनको साफ करतीहै और बादी को निकालती है लाभदायक है पापड़ी लोन, कालीमिर्च, खरबूजाके बीज, तरातेज के बीज, तिमिस मूलीके बीज, नसाछिकनी, दालचीनी, कूट, सींगनी, कड़वे बादाम की सिंगी, पारे * की मिट्टी, हुब्बाउलिसा, सौसन की जड़, और राई इन सबको महीन पीसकर अजीरके शीरेमें मिलाकर अथवा अजीरके दूधमें मिलाकर लेप करें और जब इस दवाको लगावे तो चाहिये कि प्रथम उस जगहपर गर्म पानी से सिंकाव करें फिर दवाका लेपकरें जिससे जल्दी गुणकरें और उचित यह है

* तुरा बीजक एक मिट्टीहै जो पारेकी खानसे निकलतीहै उसका रंग ऐसा होताहै जैसे सिंदूर का रंग और अजीर के शीरा से यह अर्थ है कि सूखी अजीरको पानीमें औटावें जब नर्म होजाय तो छानकर फिर दुबारा औटावें जिससे गाढ़ी हो जाय और कोई कहते हैं कि पकेहुए अजीर का कूटकर उसका शीरा निचोड़ले यही अजीरका शीराहै और अजीरका दूध इस प्रकार पर निकलताहै कि तर अजीर लेकर उसको पानीमें औटाकरके उसी पानीमें भिजा रक्खे और उसका पानील और कहतेहैं कि एक सफेद चीज तरअजीरके तोडनेके समय कि जो अजीरके सिरमेंसे निकलतीहै वही अजीरका दूध होताहै चाहे काटनेसे निकले चाहे तोडनेसे निकले ॥

गें यह है कि जो बिन्दी का रंग लाली लिये है तो उसको नमश कहते हैं और जो स्याही लिये हुए है तो उसको बरश कहते हैं और जो कोई बूंदें आपस में मिलकर एक होजांय तो उनको कलफ (झाई) कहते हैं (इलाज) इन सब रोगों में फस्द खोलै और आकाशबल के काढ गारीकून और माउल जुब्न आदिसे मवाद को निकालकर लेप लगावै जिससे फिर न हो जाय (लाभ) झाईं दो प्रकार की होती है एक तो इस तरह पर होती है कि आमाशय में बादी इकट्ठी हो और उसमेंसे जले हुए खून की भाफ के परमाणु उठ कर मुख की खाल में आवें और उसका चिन्ह आमाशय में विपत्तिका होना और झाईं का रंग हरा और पीलापन लिये होना और उसका आमाशय के मवाद का निकालना और पुष्टता है और इस दशा में बासलीक और उसैलम की फस्द खोलना लाभदायक है दूसरी इस प्रकार पर है कि खाल और मांस की पोल में खून बादी के मिलजाने से बिगड जाय और उसकी भाफ के परमाणु खालके ऊपर दीखें और यह रोग बहुधा उन लोगों को उत्पन्न होताहै जिनको चौथैया ज्वर बहुत काल से हो और ऐसेही गर्भवती स्त्रियों को और जिन स्त्रियों का रज बंद होजाता है उनको बहुधा उत्पन्न होती है और उसका चिन्ह झाईंका रंग काला अथवा लाल कालापन लिये होताहै और उस का उपाय सम्पूर्ण शरीर का मवाद निकालना है जैसाकि ऊपर वर्णन हुआ है और यह फकी लाभदायक है आकाशबेल ३॥ माशे, तुर्बुद ४॥ माशे, गारीकून ४॥ माशे, दोबार शर्बत सिकंजबीन के साथ खावें यह बहुधा पांच दस्त लातीहै और जो चीज कि खूनको साफ करतीहै और बादी को निकालती है लाभदायक है पापडी लोन, कालीमिर्च, खरबूजाके बीज, तरातेज के बीज, तिमिस मूलीके बीज, नखछिकनी, दालचीनी, कूट, खीरनी, कडवे बादाम की मिंगी, पारे * की मिट्टी, हुब्बाविलसां, सौसन की जड, और राई इन सबको महीन पीसकर अजीरके शीरेमें मिलाकर अथवा अजीरके दूधमें मिलाकर लेप करें और जब इस दवाको लगावे तो चाहिये कि प्रथम उस जगहपर गर्म पानी से सिकाव करे फिर दवाका लेपकरें जिससे जल्दी गुणकरे और उचित यह है

* तुरा बीजक एक मिट्टीहै जो पारेकी खानसे निकलतीहै उसका रंग ऐसा होताहै जैसे सिंदूर का रंग और अजीर के शीरा से यह अर्थ है कि सूखी अजीरको पानीमें औटावें जब नर्म होजाय तो छानकर फिर दुबारा औटावें जिससे गाढी हो जाय और कोई कहते हैं कि पकेहुए अजीर का कूटकर उसका शीरा निचोडले यही अजीरका शीराहै और अजीरका दूध इस प्रकार पर निकलताहै कि तर अजीर लेकर उसको पानीमें औटाकरके उसी पानीमें भिजा रक्खे और उसका पानीले और कहतेहैं कि एक सफेद चीज अजीरके तोडनेके समय कि जो अजीरके सिरमेंसे निकलतीहै वही अजीरका दूध होताहै चाहे काटनेसे निकले चाहे तोडनेसे निकले ॥

॥ छटी कहावत खाल के हरेहोजाने का वर्णन ॥

कभी २ खाल के नीचे खून के ठिठर जाने से उसका रंग हराहो जाताहै जब किसी अंग में चोट अथवा धमाका पहुंचता है और उसके कारणसे कोई महीन रग वहां की खाल के नीचे फटजाती है तो उसमें से खून निकल कर जम जाताहै (इलाज) कर्नब के पत्ता अथवा मूलीके पत्ता तथा पोदीना तथा हरताल और छरीला तथा पापडी नोंन और सिर्का का लेप करे जिस से खून बहजाय और नष्ट होजाय और जो यह दवा लाभ दायक न हों तो देखें कि वह खून अभीतक जमगयाहै अथवा नहीं और जो नहीं जमा हो तो सुइयों से उसको कुरेदे जिस से खून निकल आवे और खूनको निकलते समय पोंछते रहैं कि सब बिलकुल बाहर आजाय और जो जमगया है और गलाने से नहीं बह सकता तो चाहिये कि खालकी तरफ में नश्तरसे चीर कर उठावें कि वह खून दिखाई देने लगै फिर उसको सूई की नोंकसे धीरे २ बाहर निकाल लावे फिर नोंन पीस कर उस जगह पर मले और पापडी लोन और गाद का लेप करे (लाभ) जो हरापन चोट के लगने के उपरान्त उत्पन्न होता है उसमें जबतक दर्द न हो कोई उपाय न करे ॥

॥ सातवीं कहावत गोदने का वर्णन ॥

इस से यह तात्पर्य है कि खाल को सूई से गोद कर सुर्मा अथवा लील उसमें भरदें अथवा स्याही तथा गन्दना का पानी आदि मलें जिस से अंग लीला अथवा हरा मालूम हो और यह कार्य पश्चिमके मुल्क और हिन्दुस्थान में प्रचलित है शोभा के कारण किया करते हैं और असल में बड़ी बुरी बातहै अभिप्राय यह है कि जो उसका खो देना उचित हो तो चाहिये कि प्रथम पापडी नोंन और गर्म पानी से मले उसके पीछे गोंद शहद में मिलाकर लेप करें और इसी तरह किये जाय जबतक कि उसका चिन्ह बिलकुल न मिट जाय और जो इस दवासे न मिटै तो चाहिये कि उस पर भिलावे का शहद लगावे उसके पीछे सुइयोंसे गोद जिससे भिलावेका गुण अच्छी तरह खालके भीतर हो और दूसरी घाव करने वाली दवा भी घायल होने के पीछे ऐसाही काम करती है और घाव होजाने और रंगीन खाल के जाते रहने पर घाव के भरने वाली मरहम लगावें जिस से नई खाल जम आवे ॥

॥ आठवीं कहावत मुखकी रक्तपित्तज सूजन का वर्णन ॥

वह एक लाली मैला रंग लियेहै कि जो मुख और [illegible] ।ती

॥ छटी कहावत खाल के हरेहोजाने का वर्णन ॥

कभी २ खाल के नीचे खून के ठिठर जाने से उसका रंग हराहो जाताहै जब किसी अंग में चोट अथवा धमाका पहुंचता है और उसके कारणसे कोई महीन रग वहां की खाल के नीचे फटजाती है तो उसमें से खून निकल कर जम जाताहै (इलाज) कनेर के पत्ता अथवा मूलीके पत्ता तथा पोदीना तथा हरताल और छरीला तथा पापड़ी नोंन और सिर्का का लेप करै जिस से खून बहजाय और नष्ट होजाय और जो यह दवा लाभ दायक न हो तो देखें कि वह खून अभीतक जमगयाहै अथवा नहीं और जो नहीं जमा हो तो सुइयों से उसको कुरेदे जिस से खून निकल आवे और खूनको निकलते समय पोंछते रहै कि सब बिलकुल बाहर आजाय और जो जमगया है और गलाने से नहीं बह सकता तो चाहिये कि खालकी तरफ में नश्तरसे चीर कर उठावें कि वह खून दिखाई देने लगै फिर उसको सूई की नोंकसे धीरे २ बाहर निकाल लावे फिर नोंन पीस कर उस जगह पर मले और पापड़ी लोन और गोंद का लेप करै (लाभ) जो हरापन चोट के लगने के उपरान्त उत्पन्न होता है उसमें जबतक दर्द न हो कोई उपाय न करै ॥

॥ सातवीं कहावत गोदने का वर्णन ॥

इस से यह तात्पर्य है कि खाल को सूई से गोद कर सुर्मा अथवा नील उसमें भरदें अथवा स्याही तथा गन्दना का पानी आदि मलें जिस से अंग नीला अथवा हरा मालूम हो और यह कार्य पश्चिमके मुल्क और हिन्दुस्थान में प्रचलित है शोभा के कारण किया करते हैं और असल में बड़ी बुरी बातहै अभिप्राय यह है कि जो उसका खो देना उचित हो तो चाहिये कि प्रथम पापड़ी नोंन और गर्म पानी से मलै उसके पीछे गोंद शहद में मिलाकर लेप करै और इसी तरह किये जाय जबतक कि उसका चिन्ह बिलकुल न मिट जावे और जो इस दवासे न मिटे तो चाहिये कि उस पर भिलावे का शहद लगावै उसके पीछे सुइयोंसे गोद जिससे भिलावेका गुण अच्छी तरह खालके भीतर हो और दूसरी घाव करने वाली दवा भी घायल होने के पीछे ऐसाही काम करती है और घाव होजाने और रंगीन खाल के जाते रहने पर घाव के भरने वाली मरहम लगावें जिस से नई खाल जम आवे ॥

॥ आठवीं कहावत मुखकी रक्तपित्तज सूजन का वर्णन ॥

यह एक लाली मैला रंग लियेहै कि जो मुख और [illegible]

॥ छटी कहावत खाल के हरेहोजा

कभी २ खाल के नीचे खून के ठिहर जाने से उ
जब किसी अंग में चोट अथवा धमाका पहुंचता है औ
महीन रग वहां की खाल के नीचे फटजाती है तो उ
जम जाताहै (इलाज) कनेर के पत्ता अथवा मूलीके
हरताल और छरीला तथा पापड़ी नोंन और सिर्का
बहजाय और नष्ट होजाय और जो यह दवा लाभ
वह खून अभीतक जमगयाहै अथवा नहीं और जो
उसको कुरेदे जिस से खून निकल आवे और खूनको
कि सब बिलकुल बाहर आजाय और जो जमगया है
सकता तो चाहिये कि खालकी तरफ में नश्तरसे चीर
दिखाई देने लगे फिर उसको सुई की नोंकसे धीरे २
नोंन पीस कर उस जगह पर मले और पापड़ी लोन
(लाभ) जो हरापन चोट के लगने के उपरान्त
दर्द न हो कोई उपाय न करे ॥

॥ सातवीं कहावत गोदने

इस से यह तात्पर्य है कि खाल को सुई से गो
उसमें भरदें अथवा स्याही तथा गन्दना का पानी
नीला अथवा हरा मालूम हो और यह कार्य पश्चिम
में प्रचलित है शोभा के कारण किया करते हैं और
अभिप्राय यह है कि जो उसका खो देना उचित हो
पड़ी नोंन और गर्म पानी से मले उसके पीछे गोंद
और इसी तरह किये जाय जबतक कि उसका
और जो इस दवासे न मिटै तो चाहिये कि उस पर
पीछे सूइयोंसे गादें जिससे भिलावेका गुण अच्छी त
दूसरी घाव करने वाली दवा भी घायल होने के पी
और घाव होजाने और रंगीन खाल के जाते रहने
मरहम लगावै जिस से नई खाल जम आवै ॥

॥ आठवीं कहावत मुखकी रक्तपित्तज

वह एक लाली मैला रंग लियेहै कि जो मुख अ

॥ छटी कहावत खाल के हरेहोजा

कभी २ खाल के नीचे खून के ठिठर जाने से उ
जब किसी अंग में चोट अथवा धमाका पहुंचता है औ
महीन रग वहां की खाल के नीचे फटजाती है तो उ
जम जाताहै (इलाज) कनेव के पत्ता अथवा मूलीके
हरताल और छरीला तथा पापडी नोंन और सिर्का
वहजाय और नष्ट होजाय और जो यह दवा लाभ
वह खून अभीतक जमगयाहै अथवा नहीं और जा
उसको कुरेदे जिस से खून निकल आवे और खूनको
कि सब बिलकुल बाहर आजाय और जो जमगया है
सकता तो चाहिये कि खालकी तरफ में नश्तरसे चीर
दिखाई देने लगे फिर उसको सूई की नोंकसे धीरे २
नोंन पीस कर उस जगह पर मले और पापडी लोन
(लाभ) जो हरापन चोट के लगने के उपरान्त
दर्द न हो कोई उपाय न करे ॥

॥ सातवीं कहावत गोदने

इस से यह तात्पर्य है कि खाल को सूई से गो
उसमें भरदें अथवा स्याही तथा गन्दना का पानी
लीला अथवा हरा मालूम हो और यह कार्य पश्चिम
में प्रचलित है शोभा के कारण किया करते हैं और
अभिप्राय यह है कि जो उसका खो देना उचित हो
पडी नोंन और गर्म पानी से मले उसके पीछे गोंद
और इसी तरह किये जाय जबतक कि उसका
और जो इस दवासे न मिटै तो चाहिये कि उस पर
पीछे सूइयोंसे गादें जिससे भिलावेका गुण अच्छी त
दूसरी घाव करने वाली दवा भी घायल होने के पी
और घाव होजाने और रंगीन खाल के जाते रहने
मरहम लगावे जिस से नई खाल जम आवे ॥

॥ आठवीं कहावत मुखकी रक्तपित्तज

वह एक लाली मैला रंग लियेहै कि जो मुख में

अलेकुल वतम, और बारह सिंघा का जला हुआ सींग इन सबको मिलाकर लेप करना अच्छा है और चाहिये कि अंडे के भीतर का छिलका उसपर ल- गावे जिससे दवाओं को सूखने न दे और देरतक रक्खे और केवल अंडे का छिलका भी होठपर रखना कष्टकारक फाड़ने वाले को दूर करता है और माजू महीन पिसा हुआ जैतूनके तेल और गोंद और बतककी चर्बी में मिला हुआ वैसाही गुण रखता है और हाथों के फटजाने में तिल और बनफशा म- हीन पीसकर तेल और चर्बी में मिला कर लेप करना अच्छा है और पांव के फटजाने में केवल हरताल या गोंद को जैतून में घोलले और जैतून की गाद और जंगली प्याज औटा कर लगाना अच्छा है और एडी के फटजानमें माजू कतीरा कूट छानकर भेडकी चर्बी में मिलाकर लेप करना और मलना बहुत लाभ दायक है और केवल बदरस, गोंद का तेल और गन्दा बिरोजा बकरी के पाये के तेल में मिलाकर और गौका गूदा मोम और बनफशा का तेल तीनों को मिलाकर उसमें थोड़ा सा मुर्दासिंग डालकर लगाना अच्छा है और जो फटने का असर मांस में पहुंचे तो यह दवा लाभ दायक है मुर्दासिंग महीन पीसकर जैतून के तेल में पकावे जबतक कि गाढा होजाय फिरकई बूंदें उसमें डाले और चाहिये किफटे हुएको पहले गर्म पानी में रक्खे जिससे नर्म होजाय औरसाफ करके उस के पीछे इलाज करे और उचित है कि पांवको गर्द और धूलसे बचावे और ठंढा पानी न लगावें और फटने में रेत, धूल और ठंढी हवा हानि करती है (इलाज) फस्द खोलें और जुलाब दें पीछे माजू और सिर्का औटाकर उसमें कुल्ले करें और इमली तथा खट्टे अनार का पानी में सुर्मा रगड़कर लेपकरे और जो घीआ का तेल, बादाम का तेल और मोम की टिकिया बनाकर खट्टे मीठे अनार और इमली के पानी में मिलाकर लेप करें तो लाभदायक है कभी पांवके नीचे मुख्यकर एडी में एक दर्द उत्पन्न होता है कि मनुष्य धरती पर पांव [illegible] । और उसका [illegible]ण पतला गर्म दोष है जो शरीर में से पांव पर [illegible] और गुल [illegible] और जो सूजजाय और पीव पडजाय तो [illegible] तेज दवा [illegible] ची- रकर घावको मुंह्चौड़ा करें जिससे पीव [illegible] गुल [illegible] और फिर मेहदी [illegible] सिर्के में मिला [illegible] और गुरुडज [illegible] न पके [illegible] उसपर बांधदे [illegible] र फूटजाय [illegible] देर लगती है [illegible] के इस —

अलेकुल वतम, और बारह सिंघा का जला हुआ सींग इन सबको मिलाकर लेप करना अच्छा है और चाहिये कि अंडे के भीतर का छिलका उसपर लगावे जिससे दवाओं को सूखने न दे और देरतक रक्खे और केवल अंडे का छिलका भी होठपर रखना कष्टकारक फाड़ने वाले को दूर करता है और माजू महीन पिसा हुआ जैतूनके तेल और गोंद और बतककी चर्बी में मिला हुआ वैसाही गुण रखता है और हाथों के फटजाने में तिल और बनफशा महीन पीसकर तेल और चर्बी में मिला कर लेप करना अच्छा है और पांव के फटजाने में केवल हरताल या गोंद को जैतून में घोललें और जैतून की गाद और जंगली प्याज औटा कर लगाना अच्छा है और एड़ी के फटजानमें माजू कतीरा कूट छानकर भेड़की चर्बी में मिलाकर लेप करना और मलना बहुत लाभ दायक है और केवल बदरस, गोंद का तेल और गन्दा बिरोजा बकरी के पाये के तेल में मिलाकर और गांका गूदा मोम और बनफशा का तेल तीनों को मिलाकर उसमें थोड़ा सा मुर्दासिंग डालकर लगाना अच्छा है और जो फटने का असर मांस में पहुंचे तो यह दवा लाभ दायक है मुर्दासिंग महीन पीसकर जैतून के तेल में पकावें जबतक कि गाढा होजाय फिरवह बूंदें उसमें डालें और चाहिये किफटे हुएको पहले गर्म पानी में रक्खे जिससे नर्म होजाय औरसाफ करके उस के पीछे इलाज करे और उचित है कि पांवको गर्द और धूलसे बचावे और ठंढा पानी न लगावें और फटने में रेत, धूल और ठंढी हवा हानि करती है (इलाज) फस्द खोलें और जुलाब दें पीछे माजू और सिर्का औटाकर उसमे कुल्ले करें और इमली तथा खट्टे अनार के पानी मे सुर्मा रगड़कर लेपकरे और जो घीका का तेल, बादाम का तेल और मोम की टिकिया बनाकर खट्टे मीठे अनार और इमली के पानी में मिलाकर लेप करें तो लाभदायक है कभी पांवके नीचे मुख्यकर एड़ी में एक दर्द उत्पन्न होता है कि मनुष्य धरती पर पांव [illegible] और उसका [illegible]ण पतला गर्म दोष है जो शरीर में से पांव पर [illegible] और गुल[illegible] और जो सूजजाय और पीव पड़जाय तो [illegible] तेज दवा [illegible] नी-श्तर घावका मुंहचौड़ा करें जिससे पी[illegible] [illegible] और फिर महदी [illegible] सिर्के में मिला [illegible] और गुरुड़ज [illegible] न पके [illegible] उसपर बांधदे [illegible] फूटजाय [illegible] देर लगती है [illegible] के इस [illegible]

अलेकुल बतम, और बारह सिघा का जला हुआ सींग इन सबको मिलाकर लेप करना अच्छा है और चाहिये कि अंडे के भीतर का छिलका उसपर लगावे जिससे दवाओं को सूखने न दे और देरतक रक्खे और केवल अंडे का छिलका भी होठपर रखना कुष्टकारक फाडने वाले को दूर करता है और माजू महीन पिसा हुआ जैतूनके तेल और गोंद और बतककी चर्बी में मिला हुआ वैसाही गुण रखता है और हाथों के फटजाने में तिल और बनफशा महीन पीसकर तेल और चर्बी में मिला कर लेप करना अच्छा है और पांव के फटजाने में केवल तरताल या गोंद को जैतून में घोललें और जैतून की गाद और जगली प्याज औटा कर लगाना अच्छा है और एडी के फटजानेमें माजू कतीरा कूट छानकर भेडकी चर्बी में मिलाकर लेप करना और मलना बहुत लाभ दायक है और केवल चदरस, गोंद का तेल और गन्दा विरोजा बकरी के पाये के तेल में मिलाकर और गोंका गूदा मोम और बनफशा का तेल तीनों को मिलाकर उसमें थोडा सा मुरदासिन डालकर लगाना अच्छा है और जो फटने का असर मास में पहुचे तो यह दवा लाभ दायक है मुरदासिन महीन पीसकर जैतून के तेल में पकावे जबतक कि गाढा होजाय फिरकई बूंदें उसमें डाले और चाहिये किफटे हुएको पहले गर्म पानी में रक्खें जिससे नर्म होजाय औरसाफ करके उस के पीछे इलाज करे और उचित है कि पांवको गर्द और धूरसे बचावे और ठंडा पानी न लगावें और फटने में रत, धूल और ठंढी हवा हानि करती है (इलाज) फस्द खोलें और जुलाब दें पीछे माजू और सिर्का औटाकर उससे कुरले करें और इमली तथा खट्टे अनार के पानी में सुर्मा रगडकर लेपकरे और जो घीआ का तल, बादाम का तेल और मोम की टिकिया बनाकर खट्टे मीठे अनार और इमली के पानी में मिलाकर लेप करें तो लाभदायक है कभी पांवके नीचे मुख्यकर एडी में एक दर्द उत्पन्न होता है कि मनुष्य धरती पर पांव नहीं रखसका और उसका कारण पतला गर्म दोष है जो शरीर में से पांव पर गिरता है और गुलरोगन मलें और जो सूजजाय और पीव पडजाय तो लोह अथवा तेज दवाओं से उसको चीरकर घावका मुखचौडा कर जिससे पीला पानी बिलकुल निकलजाय और फिर मेहदी और माजू सिर्के में मिलाकर उसपर बांधदें और खाल की दृढता और सुकडजाने के कारण जल्द न पके तो एक टुकडा हुम्मादी चक्कतीका लेकर उसपर बांधदे जिससे पककर फूटजाय और जो मवाद ठिहरजाने से फूटने में देर लगती है तो लोहा गर्म करके इस जगह गडरादागदे जिससे नष्टहोजाय।

अलेकुल वतम, और बारह सिघा का जला हुआ सींग इन सबको मिलाकर लेप करना अच्छा है और चाहिये कि अंडे के भीतर का छिलका उसपर लगावे जिससे दवाओं को सूखने न दे और देरतक रक्खे और केवल अंडे का छिलका भी होठपर रखना कुष्टकारक फाडने वाले को दूर करता है और माजू महीन पिसा हुआ जैतूनके तेल और गोंद और बतककी चर्बी में मिला हुआ वैसाही गुण रखता है और हाथों के फटजाने में तिल और बनफशा महीन पीसकर तेल और चर्बी में मिला कर लेप करना अच्छा है और पांव के फटजाने में केवल तरताल या गोंद को जैतून में घोललें और जैतून की गाद और जगली प्याज औटा कर लगाना अच्छा है और एडी के फटजानेमें माजू कतीरा कूट छानकर भेडकी चर्बी में मिलाकर लेप करना और मलना बहुत लाभ दायक है और केवल चदरस, गोंद का तेल और गन्दा विरोजा बकरी के पाये के तेल में मिलाकर और गोंका गूदा मोम और बनफशा का तेल तीनों को मिलाकर उसमें थोडा सा मुदासिन डालकर लगाना अच्छा है और जो फटने का असर मास में पहुचे तो यह दवा लाभ दायक है मुदासिन महीन पीसकर जैतून के तेल में पकावें जबतक कि गाढा होजाय फिरकई बूंदें उसमें डाले और चाहिये किफटे हुएको पहले गर्म पानी में रक्खें जिससे नर्म होजाय औरसाफ करके उस के पीछे इलाज करें और उचित है कि पांवको गर्द और धूलसे बचावें और ठंढा पानी न लगावें और फटने में रत, धूल और ठंढी हवा हानि करती है (इलाज) फस्द खोलें और जुलाब दें पीछे माजू और सिर्का औटाकर उससे कुरले करें और इमली तथा खट्टे अनार के पानी में सुर्मा रगडकर लेपकरे और जो घीआ का तल, बादाम का तेल और मोम की टिकिया बनाकर खट्टे मीठे अनार और इमली के पानी में मिलाकर लेप करें तो लाभदायक है कभी पांवके नीचे मुख्यकर एडा में एक दर्द उत्पन्न होता है कि मनुष्य धरती पर पांव नहीं रखसक्ता और उसका कारण पतला गर्म दोष है जो शरीर में से पांव पर गिरता है और गुलरोगन मलें और जो सूजजाय और पीप पडजाय तो लोह अथवा तेज दवाओं से उसको चीरकर घावका मुखचौडा कर जिससे पीला पानी बिलकुल निकलजाय और फिर महदी और माजू सिर्के में मिलाकर उसपर बांधदें और खाल की दृढता और सुकडजाने के कारण जल्द न पके तो एक टुकडा हुम्माही चरबीवालेका उसपर बांधदे जिससे पककर फूटजाय और जो मवाद ठिहरजाने से फूटने में देर लगती है तो लेदा गर्म करके इस जगह गहरादागद जिससे नष्टहोजाय।

भिक लाभदायक है और जलाहुआ सीसा छिली जगहपर डालना सर्दी और इकट्ठा करने में अद्भुत है मुख्यकर जहां कहीं कि मोजे और जूतेके कारण से छिलावहो और जूतेसे फफोला पडजाय तो रसौत तथा माजू गिलेइरमनी, अकाकिया, गोंद,पानी में रगड कर लेपकरें और जो सूजन होजाय तो भेडका फेफडा उसपर बांधदें और जो रस्सीके कारण से छिलजाय तो लुआब आदि वर्फमें ठंडा करके और बादामका तेल, बनफशा का तेल और थोडा कपूर मिलाकर छिलनपर रक्खें और जो सवारी के कारण से चतड छिलजाय तो सवारी छोडदें और नंगा करके ठंडी हवामें रक्खें अथवा अलसीका टुकडा तथा कोई कपडा गुलाब में ठंडा करके उसपर रक्खें और गुलाब में रिगडाहुआ मुर्दासन और सफेदा की मरहम लाभदायक है (लाभ) पेड़ और चढ्ढे छिल गये होंतो तेज मवाद को निकालकर मोमका तेल, महदी का तेल,चमीला और महदीकी राख लगाना लाभदायक है परन्तु महदीकी राख और दवाओं से कम मिलावे और सीसेका चूरा सफेदा मुर्दासिन और महदीके तेलकी टिकिया बनाकर काम में लाना वैसाही गुणकारी है और वूल, कुन्दरूगोंद, हीरादुखी-गोद और मुर्दासिन बराबर कूट छानकर उसपर बुरकना लाभदायक है।

पच्चीसवां अध्याय ॥

पहला प्रकरण।

बालों के गिरजाने का वर्णन।

यह रोग ऐसाहै जिसमें शरीरके बाल गिरतेहैं और खाल खराब होजातीहै यह रोग दो प्रकारका है प्रथम खाल घायल होनेवालीहै और बाल गिरतेहैं फिर पतली खाल भी सांपकी कांचली के समान इस जगहसे छुटजातीहै और दूसरे में खाल नहीं गिरती है ये दोनों रोग बहुधा सिर दाढी और मूछोंके बालों में ...र शरीर के बालोंमें भी उत्पन्न होतेहैं यह रोग निक-...खाल, बालों की जडा और रोमाओं में ठहरजातेहैं ...हैं इन रोगोंका मवाद या तो जला हुआ कफ या ... या निकम्मा गाढा खूनहै इसमें प्रत्येकका अलग ...पहिला कफसे उत्पन्न रोगों का वर्णन।

५ अ ... माह ... उसपर ... करना ... देर लगा...

भिक लाभदायक है और जलाहुआ धीमा छिली जगहपर डालना सर्दी और इकट्ठा करने में अद्भुत है मुरपकर जहां कहीं कि मोजे और जूतेके कारण से छिलावहो और जूतेसे फफोला पडजाय तो रसौत तथा माजू गिलेइरमनी, अकाकिया, गोंद,पानी में रगड कर लेपकरै और जो सूजन होजाय तो भेडका फेफडा उसपर बाधदें और जो रस्सीके कारण से छिलजाय तो लुआब आदि बर्फमें ठंडा करके और बादामका तेल, बनफशा का तेल और थोडा कपूर मिलाकर छिलनपर रक्खें और जो सवारी के कारण से चतड छिलजाय तो सवारी छोडदें और नंगा करके ठंडी हवामें रक्खें अथवा अलसीका टुकडा तथा कोई कपडा गुलाब में ठंडा करके उसपर रक्खें और गुलाब में रिगडाहुआ मुर्दासन और सफेदा की मरहम लाभदायक है (लाभ) पेडू और चढ्ढे छिल गये होंतो तेज मवाद को निकालकर मोमका तेल, महदी का तेल, चमेली और महदीकी राख लगाना लाभदायक है परन्तु महदीकी राख और दवाओं से कम मिलावे और सीसेका चूरा सफेदा मुर्दासिन और महदीके तेलकी टिकिया बनाकर काम में लाना बेगाही गुणकारी है और वुल, कुन्दरूगोंद, हीरादुखीगोंद और मुर्दासिन बराबर कूट छानकर उसपर बुरकना लाभदायक है।

पच्चीसवां अध्याय ॥

पहला प्रकरण।

बालों के गिरजाने का वर्णन।

यह रोग ऐसाहै जिसमें शरीरके बाल गिरतेहै और खाल खराब होजातीहै यह रोग दो प्रकारका है एकम खाल घायल होनेवालीहै और बाल गिरतेहैं फिर पतली खाल भी सांपकी कांचली के समान इस जगहसे छूटजातीहै और दूसरे में खाल नहीं गिरती है ये दोनों रोग बहुधा सिर डाढी और मूछोंके बालों में [illegible]र शरीर के बालोंमें भी उत्पन्न होतेहैं यह रोग निक[illegible]माल, बालो की जडा और रोमाञ्चों में ठहरजाताहै [illegible]है इन रोगोंका मवाद या तो जला हुआ कफ या [illegible] या निकम्मा गाढा खूनहै इसमें प्रत्यक्ष अलग [illegible]पहिला कफमे उत्पन्न रोगों का वर्णन।

फ अ... उसपर है ... माज ... कुना ...

से मलै और रीछकी चर्वी आदि से चिकना रक्खे और यह लेप लाभदायक है—गूगर्द, तुतली का गोंद, फरफयून, राई, बासकी जड, बकरी का जला हुआ खुर और यवरूजसनमी की * राख मुली के पानी और पुराने जैतून में मिलाकर लेप करे और सिर मुडाने के उपरान्त नारदैन का तेल और लादन का तेल मलना लाभ दायक है—चौथी यह है कि खून से उत्पन्न हो उस का चिन्ह इस जगह में लाली और खून के चिन्हों का प्रगट होनाहै (इलाज) फस्द खोले और पछने अथवा जोक लगावें और खून के सम्भालनेमें परिश्रम करै पीछे इस जगह को खुरखुरे कपडे से अथवा तरजूफा अथवा लहसन तथा जगली प्याज तथा राई से मले फिर तुतली का गोंद अथवा फरफयूनका लेप करे और जो कुछ पित्त में वर्णन किया गया है वह भी लाभदायक है ॥

॥ दूसरा प्रकरण ॥

॥ बालों के गिरने का वर्णन ॥

इसका यह तात्पर्यहै कि डाडी सिर और भौंओं के बाल गिरने लगते हैं और जानना चाहिये कि बालकी उत्पत्ति धुए की भाफ से है जो रोमाञ्चों में बन्द होजाती है सो जबकि भाफ के परमाणु के बन्द होजाने में अथवा सर्दी मवाद के पहुचने में न्यूनता और विपत्ति पडती है तो बाल खराब होजाते हैं इसके कारण बहुत है पहला यह है कि भोजन में हानि के कारण से वह भाफ के परमाणु उत्पन्नहो जिनमे बाल उत्पन्न होते है और बालोंकी सहायता नष्ट होने से बाल गिरने लगे जैसा विषम ज्वर वाले और फॅफडेके [illegible] और दुर्बल मनुष्यो में देखा जाता है और उसका यह चिन्ह है कि शो[illegible] श्क और दुबला हो और इससे पहले तेज रोग और भोजनकी न्यूनत[illegible] काम पडे (इलाज) अच्छे भोजन देवे नींद और आराम में रक्खे और ह[illegible]ाम म लेजाय और बनफशा, नीलोफर, आबी और कस्तूरी सुघावे और सध्या सवेरे खितमी, ईसबगोल और बेद के पत्ते के पानीसे उस जगहको धोवे और

* यवरूज सनमी सराजुल कुतरब का कहते हैं अर्थात् यह एक पान मनुष्य की सी सूरत की है जो हाथ पांव और सम्पूर्ण अग मनुष्य के से उस म होते हैं और उसके सिर के मध्य म पत्ते निकलते हैं और उसका सभाव है कि जो कोई उसको उखाडता है उसी समय मर जाता है और उस को इस बहाने से उखाडते है कि कुत्ता और कोई जानवर उस में बांध देते हैं और उस की जड को खाली करते है और खाली करने के उपरांत इस कुत्ते का किसी लालच और बहाने से बुलाते हैं सब वह जोर आता है तो वह बोटी जड से उखड जाती है और वह जानवर मर जाता है फिर उसको ले आते हैं ॥

से मलै और रीछकी चर्बी आदि से चिकना रक्खें और यह लेप लाभदायक है—गूगर्द, तुतली का गोंद, फरफयून, राई, बासकी जड, बकरी का जला हुआ खुर और यवरूजसनमी की * राख मुली के पानी और पुराने जैतून में मिलाकर लेप करै और सिर मुडाने के उपरान्त नारदैन का तेल और लादन का तेल मलना लाभ दायक है—चौथी यह है कि खून से उत्पन्न हो उस का चिन्ह इस जगह में लाली और खून के चिन्हों का प्रगट होनाहै (इलाज) फस्द खोले और पछने अथवा जोक लगावें और खून के सम्भालनेमें परिश्रम करै पीछे इस जगह को खुरखुरे कपडे से अथवा तरजूफा अथवा लहसन तथा जगली प्याज तथा राई से मले फिर तुतली का गोंद अथवा फरफयूनका लेप करै और जो कुछ पित्त में वर्णन किया गया है वह भी लाभदायक है ॥

॥ दूसरा प्रकरण ॥

॥ बालों के गिरने का वर्णन ॥

इसका यह तात्पर्यहै कि डाडी सिर और भौंओं के बाल गिरने लगते हैं और जानना चाहिये कि बालकी उत्पत्ति धूए की भाफ से है जो रोमाञ्चों में बन्द होजाती है सो जबकि भाफ के परमाणु के बन्द होजाने में अथवा सर्दी मवाद के पहुंचने में न्यूनता और विपत्ति पडती है तो बाल खराब होजाते हैं इसके कारण बहुत हैं पहला यह है कि भोजन में हानि के कारण से वह भाफ के परमाणु उत्पन्नहो जिनसे बाल उत्पन्न होते हैं और बालोंकी सहायता नष्ट होने से बाल गिरने लगें जैसा विषम ज्वर वाले और फेंफडेके [illegible] और दुर्बल मनुष्यों में देखा जाता है और उसका यह चिन्ह है कि शो[illegible] रुक और दुबला हो और इससे पहले तेज रोग और भोजनकी न्यूनता [illegible] काम पडे (इलाज) अच्छे भोजन देवे नींद और आराम में रक्खे और हम्माम में लेजाय और बनफशा, नीलोफर, आवी और कस्तूरी सुघावे और सध्या सबेरे खितमी, ईसबगोल और बेद के पत्ते के पानीमें उस जगहको धोवे और

* यवरूज सनमी सराजुल कुतरब का कहते हैं अर्थात् यह एक पान मनुष्य की सी सूरत की है जो हाथ पांव और सम्पूर्ण अग मनुष्य के से उस में होते हैं और उसके सिर के मध्य में पत्ते निकलते हैं और उसका प्रभाव है कि जो कोई उसको उखाडता है उसी समय मर जाता है और उस को इस बहाने से उखाडते हैं कि कुत्ता और कोई जानवर उस में बांध देते हैं और उस की जड को खाली करते हैं और खाली करने के उपरांत इस कुत्ते को किसी लालच और बहाने से बुलाते हैं जब वह उधर आता है तो वह बोटी जड से उखड जाती है और वह जानवर मर जाता है फिर उसको ले आते हैं ॥

के मरनें के पीछे रोमोंच्छ वन्द न हों क्योंकि जो रोमाञ्च निकम्मे होजांय और मुख्य खाल फटगई हो तो इसका इलाज नहीं है । बालके गिरन का एक और भेद है उसमें बालों के झडने के साथ सिरकी खाल ऐसी मालूम होती है जैसे पक्षियों की खाल बाल और परके नोचने से निकल आती है और बाल रेशम से नर्म होजांय और खालका रंग पीला मालूम हो और यह रोग तेज रोगोंके पीछे बहुधा हो सकता है (इलाज) उचित है कि जल्दी २ सिर मुड़ाया करै और अधीरों का तेल, आमले का तेल और लावन का तेल, हब्बुलगार का तेल सदा मलै । हब्बुलगार का तेल इस विधि से निकलता है कि उस गोली को थोड़े से पानी में औटावें उसके पीछे उतारकर कूटै और थोडा पानी उसपर डालै और पत्थर अथवा किसी दूसरी चीज पर रक्खें और कोई बोझ दार चीज उसपर रख कर दबावें जबतक कि तेल निकलआवै और दूसरी विधि यह है कि हब्बुलगार को कूटकर तिलके तेल में औटावें और निचोड़लै ॥

तीसरा प्रकरण ।

माथेके बालोंके उड़जाने का वर्णन ।

इसमें केवल सिरके बालउड़ते हैं और कनपटियाक रहे जाते हैं जो बुढापेमें ऐसा हो तो इसका इलाज नहीं है परन्तु जहां कहीं कि इस अवस्था से पहले यहरोग उत्पन्न हो तो इसका इलाज पहले दूसरे प्रकरणों में कही हुई रीति से करे और कभी सिरके बालोंके उड़जानेका यह कारण होता है ॥ कि सदा सिरपर भारी चीजोंके उठाने का काम पड़ाहो उसका यह इलाज है कि भारी चीजें न उठावै (लाभ) हकीम शैख़अलीसेनाने किताबशिफामें कहा है कि खियोंके सिरके बाल नहीं उड़ते क्योंकि उनकी प्रकृति में विशेष तरी है और नपुंसकोंके भी नहीं उड़ते क्योंकि उनकी प्रकृतिमें कुछ स्त्रीपुंसकता होतीहै और इनमें तरीनिष्ट नहीं होतीहै

चौथा प्रकरण ।

बालोंके फटजाने का वर्णन ।

इसमें बाल बढ़ने से रह जातेहैं और सुहावने नहीं मालूम होते और कदाचित् बाल झड़ने भी लगते हैं इसका कारण खुश्की की अधिकता होती है (इलाज) जो खुश्की कमहै और कोई बाल फटा होतो उसके लिये तर और नर्म करनें वाले सामान्य तेलों का मलना जैसे बादाम का तेल, बनफशा का तेल आदि और ऐसे रोमाञ्चों को फैलाने वाले लुआबों का मलना जैसे सितमी और खत्मी का लुआब आदि और जो खुश्की अधिक हो और इसका मवाद

के मरने के पीछे रोमाञ्च बन्द न हों क्योंकि जो रोमाञ्च निकम्मे होजांय और मुख्य खाल फटगई हो तो इसका इलाज नहीं है। बालके गिरने का एक और भेद है उसमें बालों के झड़ने के साथ सिरकी खाल ऐसी मालूम होती है जैसे पक्षियों की खाल बाल और परके नोचने से निकल आती है और बाल रेशम से नर्म होजांय और खालका रंग पीला मालूम हो और यह रोग तेज रोगोंके पीछे बहुधा हो सकता है (इलाज) उचित है कि जल्दी२ सिर मुंडाया करें और अधौरा का तेल, आमले का तेल और कायफल का तेल, हब्बुलगार का तेल सदा मले। हब्बुलगार का तेल इस विधि से निकलता है कि उस गोली को थोड़े से पानी में औटावें उसके पीछे उतारकर कूटें और थोड़ा पानी उसपर डाले और पत्थर अथवा किसी दूसरी चीज पर रक्खें और कोई बोझ दार चीज उसपर रख कर दबावें जबतक कि तेल निकलआवे और दूसरी विधि यह है कि हब्बुलगार को कूटकर तिलके तेल में औटावें और निचोडले॥

तीसरा प्रकरण।

माथेके बालोंके उड़जाने का वर्णन।

इसमें केवल सिरके बाल उड़ते हैं और कनपटियों के रहे आते हैं जो बुढ़ापेमें ऐसा हो तो इसका इलाज नहीं है परन्तु जहां कहीं कि इस अवस्था से पहले यहरोग उत्पन्न होतो इसका इलाज पहले दूसरे प्रकरणों में कही हुई रीति से करे और कभी सिरके बालोंके उड़जानेका यह कारण होता है॥ कि सदा सिरपर भारी चीजोंके उठाने का काम पड़ाहो उसका यह इलाज है कि भारी चीजें न उठा- वै (लाभ) हकीम शैख अलीसेनाने किताबशिफामें कहा है कि स्त्रियोंके सिरके बाल नहीं उड़ते क्योंकि उनकी प्रकृति में विशेष तरी है और नपुंसकोंके भी नहीं उड़ते क्योंकि उनकी प्रकृतिमें कुछ स्त्रीपुंसकता होतीहै और इनमें तरीनष्ट नहीं होतीहै

चौथा प्रकरण।

बालोंके फटजाने का वर्णन।

इसमें बाल बढ़ने से रह जातेहैं और सुहावने नहीं मालूम होते और कदाचित् बाल झड़ने भी लगते हैं इसका कारण खुश्की की अधिकता होती है (इलाज) जो खुश्की कमहै और कोई बाल फटा होतो उसके लिये तर और नर्म करने वाले सामान्य तेलों का मलना जैसे बादाम का तेल, बनफशा का तेल आदि और अंग रोमाञ्चों को फैलाने वाले लुआबों का मलना जैसे सितमी और खत्मी का लुआब आदि और जो खुश्की अधिक हो और इसका मवाद

की * माजून और हड़ै का मुरब्बा खाना इस विषय में अधिक लाभदायक है दूध, खटाई, मेवा, शराब, गुलाब, और कपूर इनके सेवन करने और ... तथा सोच की अधिकता से बाल जल्द सफेद होजाते हैं (बालों की सफेद को रोकने वाली माजून) काली हड़ै ३५ माशे, बहेड़ा, कुन्दरू गोंद ... १७॥ माशे मिर्च ८॥ माशे सोंठ गुलाब के फूल वच प्र० ५। माशे, ... चदन कासनी के बीज, प्र० १०॥ माशे, इन सब को कूटछान कर का... हड़ै के मुरब्बे के शीरे में मिलावै इस की मात्रा १०॥ माशे है ।

सातवां प्रकरण बालों की रक्षा का वर्णन ।

इस काम के लिये ऐसे तेलो का मलना उचित है जिनमे हलकी गर्मीऔर अजीर्ण हो जैसे लादन का तेल, मोंदे का तेल' दसराज का तेल लाले का तेल वालछड़ का तेल, मस्तगीका तेल, नागरमोथा का तेल,चुकन्दर के बीज,अजमोद के बीज, आमला और कीकर के गोंद,आदि का तेल,इनमे से भी मिलजाय लाभदायक है और लादन का तेल बहुत लाभ दायक है और जो माजू के पेड़ की छालजलाकर उक्त तेलों म मिलाकर लगावै तो अधिक लाभदायक है, (लादन के तेल के बनाने की विधि) लादन ४५ माशे महीन पीसकर एक प्याले भर मोंदे का तेल लेकर उसमें रातदिन तर रक्खें उसके उपरांत पानी के बर्तन में औटावै जब तक कि पानी की गर्मी से लादन इस बर्तन में पिघल जाय जैसे कि मस्तगी के तेल की विधि किताब करावादीनियों में वर्णन की गई है और सहज रीति यह है कि जो तर दवा हो तो उसका पानी निकाले और जो खुश्क हो तो पानी म औटावे फिर इस दवा का पानी मीठे तेल में मिलाकर औटावे जबतक कि तेल रहजाय और काली हड़ैका पानी चुकन्दरका पानी और तिर्मिस के पानी और आमले के पानी से बालों को धोना इनकी रक्षा करता है ।

आठवां प्रकरण बालके लम्बे होजाने का वर्णन ।

जो स्त्री अपने बालों को बहुत लम्बा करना चाहती है उनको सातवें प्रकरण की बातोंपर अवश्य ध्यान देना चाहिये अर्थात, गुलाब के फूल,

---

* भिलावे की माजून को माजून जाबदानी भी कहते हैं और इस कारण से कि इस माजून के पात्र को छ महीने जौ म दबाते हैं जब उसको दवाउशशयीर कहते हैं और किताब करावादीनियों में इनाकिरदिया के नामसे प्रसिद्ध है क्योंकि इन किरदिया भिलावे का नाम है और चूंकि इनाकिरदिया ... भिन्न २ नुसखे करावादीनों में वर्णन किये गये हैं ... हमने ... लिखा है ।

की * माजून और हर्ड का मुरब्बा खाना इस विषय में अधिक लाभदायक है दूध, खटाई, मेवा, शराव, गुलाव, और कपूर इनके सेवन करने और ... तथा सोच की अधिकता से वाल जल्द सफेद होजाते हैं (वालों की सफेद को रोकने वाली माजून) काली हर्ड ३५ माशे, वहेडा, कुन्दरू गोंद ... १७॥ माशे मिर्च ८॥ माशे सोंठ गुलाव के फूल वच प्र० ५। माशे, ... चदन कासनी के बीज, प्र० १०॥ माशे, इन सब को कूटछान कर का... हर्ड के मुरब्बे के शीरे में मिलावे इसकी मात्रा १०॥ माशे है।

सातवां प्रकरण बालों की रक्षा का वर्णन।

इस काम के लिये ऐसे तेलों का मलना उचित है जिनमें हलकी गर्मी और अजीर्ण हो जैसे लादन का तेल, मोंर्द का तेल' हंसराज का तेल लाले का तेल वालछड का तेल, मस्तगीका तेल, नागरमोथा का तेल, चुकन्दर के बीज, अजमोद के बीज, आमला और कीकर के गोंद, आदि का तेल, इनमें भी मिलजाय लाभदायक है और लादन का तेल बहुत लाभ दायक है और जो माजू के पेड़ की छाल जलाकर उक्त तेलों में मिलाकर लगावे तो अधिक लाभदायक है, (लादन के तेल के बनाने की विधि) लादन ४५ माशे महीन पीसकर एक प्याले भर मोंर्द का तेल लेकर उसमें रातदिन तर रक्खे उसके उपरान्त पानी के बर्तन में औटावे जब तक कि पानी की गर्मी से लादन इस बर्तन में पिघल जाय जैसे कि मस्तगी के तेल की विधि किताव करावादीनियों में वर्णन की गई है और सहज रीति यह है कि जो तर दवा हो तो उसका पानी निकाले और जो खुश्क हो तो पानी में औटावे फिर इस दवा का पानी मीठे तेल में मिलाकर औटावे जबतक कि तेल रहजाय और काली हर्डका पानी चुकन्दरका पानी और तिर्मिस के पानी और आमले के पानी से वालों को धोना इनकी रक्षा करता है।

आठवां प्रकरण वालके लम्बे होजाने का वर्णन।

जो स्त्री अपने बालों को बहुत लम्बा करना चाहती है उनको सातवें प्रकरण की बातोंपर अवश्य ध्यान देना चाहिये अर्थात, गुलाव के फूल,

* मिलाने की माजून को माजून जावदानी भी कहते हैं और इस कारण से कि इस माजून के पात्र को ७ महीने जौ में दवाते हैं जब उसको दवावशयीर कहते हैं और किताव करावादीनियों में इतरीफलों के नामसे प्रसिद्ध है क्योंकि इन फिरदिया मिलावे का नाम है और चूंकि इतरिफलों ... भिन्न २ नुसखे करावादीनों में वर्णन किये गये हैं ... हमने उनको ... लिखा है।

है और गुप्त बालों को छुरे से मूडना लिंग की मुटाई और कामशक्ति अधिकता करता है और अधिक लाभदायक है ॥

ग्यारहवां प्रकरण बालोंके न निकलनेका वर्णन ॥

जो चीज बालों के निकलने को रोकती है वह या तो शुष्क करने वाली या ठंढी करने वाली चीज होती है जैसे भाग, शुकरा, और अफीम सिर्के में मिलाकर दे अथवा रोमांचों को बन्द करदेती है जैसे कांती का सफेदा खड़िया मिट्टी, फिटकिरी, भांग के पानी में मिलाकर दें अथवा प्रकृतिके अनुसार बालों को निकालने से रोके जैसे कछुआ का खून, और चेंटी के अण्डे आदि (सूचना) जबकि इस प्रकार की दवा किसी अंगपर लगावें तो चाहिये कि प्रथम वहां के बालों को चीमटी से उखाड़े अथवा चून से दूर करके लेप करे और छुरे से न मूंडे ॥

बारहवां प्रकरण।

बालोंको मोडने और घुंघरवाले करनेका वर्णन ॥

इस काममें अजीर्णकारक दवा काम आती हैं जैसे बर, माजू, मुर्दासिंग, आमला, मेथीका चून, सदके पत्ता, झाऊ और नोन के झाग आदि और नमक के झाग नदीके किनारे की पथरीली धरती में इकट्ठे होते हैं ।

तेरहवां प्रकरण बालोंके महीन करनेका वर्णन ॥

चूनेमें अंगूरकी लकड़ी की राख मिलाकर गोलियां बनाकर जिस जगह चाहै कुछ देरतक फिरावे और एक जगहपर न रक्खें जिससे खाल न जलजाय फिर जो कुछ चूना अंगपर रहजाय तो पानी से धोडालें और जौका चून, बाकला का चून और खरबूजा के बीज मले जिससे महीन करनेमें सहायता करें और चूनेकी हानिकोभी नष्ट करै॥

चौदहवां प्रकरण बालोंके सीधाकरने और ढीला छोडनेका वर्णन ।

जो चीज कि बालोंको सीधाकरें और मुडने न दें यह तेलको पानी में खूब मिलाकर गुनगुना करके बालोंपर सदा मलाकरें और जब उसको लगावें तो कुछ देरके पीछे गर्म पानीमें अच्छी तरह मिलाकर गुनगुना मोंपा भी लाभदायकहै।

पन्द्रहवां प्रकरण सफेदबालोंके कालेकरनेका वर्णन ।

काला करनेवाली बहुतसी चीजें हैं जैसे लादनका तेल, आमलेका तेल और अफसन्तीनका तेल कि जो किताब कराबादीनियों में लिखेहुए हैं और अखरोट के पेड़की कली कूटकर चून उसमें मिलाकर लगावें और माजू गेरूभर भूनकर

है और गुप्त वालों को छुरे से मूडना लिंग की पुष्टाई और कामशक्ति अधिकता करता है और अधिक लाभदायक है ॥

ग्यारहवां प्रकरण वालोंके न निकलनेका वर्णन ॥

जो चीज वालों के निकलने को रोकती है वह या तो ग्रुष्क करनेवाली या ठंढी करने वाली चीज होती है जैसे भाग, शुकरा, और अफीम सिर्के में मिलाकर दे अथवा रोमांचों को बन्द करदेती है जैसे कांती का सफेदा खड़िया मिट्टी, फिटकिरी, भांग के पानी में मिलाकर दें अथवा प्रकृतिके अनुसार बालों को निकालने से रोके जैसे कछुआ का खून, और चेंटी के अण्डे आदि (सूचना) जबकि इस प्रकार की दवा किसी अंगपर लगावें तो चाहिये कि प्रथम वहां के वालों को चीमटी से उखाड़े अथवा चून से दूर करके लेप करे और छुरे से न मुंडे ॥

बारहवां प्रकरण ।

वालोंको मोडने और घुंघरवाले करनेका वर्णन ॥

इस कामनें अजीर्णकारक दवा काम आती हैं जैसे बेर, माजू, मुर्दासिंग, आमला, मेथीका चून, सर्दके पत्ता, झाऊ और नौन के झाग आदि और नमक के झाग नदीके किनारे की पथरीली धरती में इकट्ठे होते हैं ।

तेरहवां प्रकरण वालोंके महीन करनेका वर्णन ॥

चूनेमें अगुरकी लकडी की राख मिलाकर गोलियां बनाकर जिस जगह चाहे कुछ देरतक फिरावे और एक जगहपर न रक्खें जिससे खाल न जलजाय फिर जो कुछ चूना अंगपर रहजाय तो पानी से धोडालें और जौका चून, बाक्ला का चून और खरबूजा के बीज मले जिससे महीन करनेमें सहायता करे और चूनेकी हानिकोभी नष्ट करे॥

चौदहवां प्रकरण वालोंके सीधाकरने और ढीला छोडनेका वर्णन ।

जो चीज कि वालोंको सीधाकरे और मुडने न दे यह है तेलको पानी में खूब मिलाकर गुनगुना करके वालोंपर सदा मलाकरें और जब उसको लगावे तो कुछ देरके पीछे गर्म पानीमें अच्छी तरह मिलाकर गुनगुना सोपा भी लाभदायक है ।

पन्द्रहवां प्रकरण सफेदवालोंके कालेकरनेका वर्णन ।

काला करनेवाली बहुतसी चीज हैं जैसे लादनका तेल, आमलेका तेल और अफसन्तीनका तेल कि जो किताब करावादीनियों में लिखेहुए हैं और अखरोट के पेड़की कली कूटकर चून उसमें मिलाकर लगावे और माजू भरभर भूनकर

तिर्मिस, सर्द के फल सिर्के में मिलाकर अथवा सिर्के की गाद में मिलाकर
(तीसरा नुसखा) मैथी के बीज, अलसी के बीज कूट कर शहद म
लेप करे ॥

दूसरा प्रकरण नखों के पीले होजाने का वर्णन ।

नख के पीले होने का कारण खून की कमी और पित्त की अधिकता
(इलाज) तरातेजक के बीज और सिर्के का लेप करे और पित्त को कम करे

तीसरा प्रकरण नखों के दर्द का वर्णन ।

(इलाज) मौलसरी और सर्द के पत्तों को कूटकर अथवा कच्चा
शराब में औटाकर लेप करे ॥

चौथा प्रकरण जुजाम और नखों के मोटे होजाने का वर्णन ।

इस का यह अर्थ है कि नख मोटे २ होजांय मुख्य कर उनकी जड़ें
खुश्की से ऐसी होजांय जैसे निर्बल हड्डी और जब उनको खुजावें तो चूर
होने लगें और उसका कारण तेज बादी वाला दोष है जो पित्त के जलने
उत्पन्न हो (इलाज) बादी के निकालने के लिये फस्द खोलें और आकाश
बेल का काढा आदि दें और श्रेष्ठ और उत्तम भोजन दें जिन से अधिक खून
उत्पन्न हो और नर्म करने वाले तेल, गौ की पिंडली का गूदा, मोम का तेल
और मरहम दाखली कन का लेप करे और बहुधा ऐसा होता है कि नख
गिर पड़ता है और जब दुबारा [illegible] है और [illegible] से उसकी रक्षा
फिर [illegible] ऊपर रहजाये [illegible] है [illegible] है उसका
[illegible] का चूर्ण [illegible] क्यों [illegible] जिस से नर्म हो

तिर्मिस, सर्द के फल सिर्के में मिलाकर अथवा सिर्के की गाद में मिलाकर
(तीसरा नुसखा) मैथी के बीज, अलसी के बीज कूट कर शहद म
लेप करे ॥

दूसरा प्रकरण नखों के पीले होजाने का वर्णन ।

नख के पीले होने का कारण खून की कमी और पित्त की अधिकता
(इलाज) तरातेजक के बीज और सिर्के का लेप करे और पित्त को कम करे

तीसरा प्रकरण नखों के दर्द का वर्णन ।

(इलाज) मौलसरी और सर्द के पत्तों को कूटकर अथवा कच्चा
शराब में औटाकर लेप करे ॥

चौथा प्रकरण जुजाम और नखों के मोटे होजाने का वर्णन ।

इस का यह अर्थ है कि नख मोटे २ होजांय मुख्य कर उनकी जड़ें
सुरकी सं ऐसी होजांय जैसे निर्बल हड्डी और जब उनको खुजावें तो दर्द
होने लगे और उसका कारण तेज बादी वाला दोष है जो पित्त के जलने
उत्पन्न हो (इलाज) बादी के निकालने के लिये फस्द खोलें और आपाश
बेल का काढा आदि दें और श्रेष्ठ और उत्तम भोजन दें जिन से अधिक खून
उत्पन्न हो और नर्म करने वाले तेल, गौ की पिंडली का गूदा, मौम का तेल
और मरहम दासली कन का लेप करे और बहुधा ऐसा होता है कि नख
गिर पडता है और जब दुबारा [illegible] है और [illegible] से उसकी रक्षा
फिर [illegible] है [illegible] है उसका

आठवां प्रकरण नखोंके कुचलजाने का वर्णन ।

(इलाज) आरम्भमें अजीराके पत्तों और अनारके पत्तों का लेप करें और ५ जानेके उपरांत गेहूका चून और जैतून और बकरी की चर्बी थोडी करके मिला लेप करे (लाभ) जो घाव कि पांवकी उंगलियों के मध्यों में होजाता है उसका यह इलाजहै कि उसपर लीलाकपडा बांधकर भूतर्दे और कपडेको बघारसें और ऐसही फन्चा, कुन्दरूगोंद और अजरूत मर्दान पीसकर घावपर बुरखदेवे ॥

नखके उखाडने का वर्णन ।

जब घाव आदिके कारणसे नख बिगडजाय और उसको उखाडना चाहैं वो उचितहै कि हरताल, जावशीर और कडवे बादामके तेल का लेपकरें अथवा राल, गन्धक और हरतालका लेपकरें और जो पहले मरहम दासली कुन के लेपसे नखको नर्म करें फिर उखाडने वाली दवा रक्खें तो जल्दी उखडजाते और उखाडनेके पीछे नखको टेढे होनेसे बचावे ॥

नवां प्रकरण नखका अबरककी सूरत होजाने का वर्णन ।

यह एसा रोगहै कि नख अबरककेसे सफेद होजातेहैं इसका कारण मूनया कम होना और तरीका पथरानाहै (इलाज) जडोंपर पानी गुलकन्द और सिकंजबीन मीठेबादामके तेलमें मिलाकरदें जिसमे तरीनर्म होकर और पककर निकलजाय और मवादके पकने पर आकाशनेलके काटेमें मवादको निकालैं और तरफ़ा, सीवनी, मीठेबादाम और बकरीकी ताजा चर्बीका लेपकरें और भोजन लाभदायक हैं ॥

दसवां प्रकरण ।

नखके नीचे खून के भरजाने का वर्णन ।

इसमें नखपर चोट लगने से अथवा और किसी कारण से किसी रगका मुख नखके नीचे खुलजाता है (इलाज) जिफ्त का चन अथवा नदी के बीवाटे औटाकर लाल हरताल मिलाकर अथवा जगली अजमोद मयफयतत्त में मिलाकर लेप करें और प्रति दिन कई बार मुमल्लिस से धोवे कभी २ तरा तेजक के बीज और सिर्के का लेपकरे तो लाभदायक है और नखको बार २ मुलगे चसना लाभदायक है और किताब शरह अस्बाब के बनाने वालेने कहा है कि बार २ चूसने से भीतर का मवाद खिचता है और धुलकी लार उसको पकाकर नर्म करती हैं (अन्य दवा) मटरका चून जिफ्त और नदीके पीपट सिर्के में औटा कर लेपकरें और शगय तथा बबूल के काढे से धोकर तरा तजक क बीज सिर्केमें मिलाकर लेपकरें ।

आठवां प्रकरण नखोंके कुचलजाने का वर्णन ।

(इलाज) आरम्भमें अजीराके पत्तों और अनारके पत्तों का लेप करें और ५ जानेके उपरांत गेहूका चून और जैतून और बकरी की चर्बी थोडी फर्नेव मिला२ लेप करे (लाभ) जो घाव कि पांवकी उंगलियों के मध्यों में होजाता है उसका यह इलाजहै कि उसपर लीलाकपडा बांधकर मूतर्दे और कपडेको बधारसें और ऐसेही फन्चा, कुन्दरूगोंद और अजरूत महीन पीसकर घावपर बुरकदेवे ॥

नखके उखाडने का वर्णन ।

जब घाव आदिके कारणसे नख बिगडजाय और उसको उखाडना चाहैं तो चाहियेहै कि हरताल, जावशीर और कडवे बादामके तेल का लेपकरें अथवा राल, गन्धक और हरतालका लेपकरे और जो पहले मरहम दासली रून के लेपसे नखको नर्म करें फिर उखाडने वाली दवा रक्खें तो जल्दी उखडताहै और उखाडनेके पीछे नखको टेढे होनेसे बचावे ॥

नवां प्रकरण नखका अबरककी सूरत होजाने का वर्णन ।

यह ऐसा रोगहै कि नख अबरककेसे सफेद होजातेहै इसका कारण मूनया कम होना और तरीका पथरानाहै (इलाज) जडोंपर पानी गुलकन्द और सिकंजबीन मीठेबादामके तेलमें मिलाकरदें जिसमें तरीनर्म होकर और पककर निकलजाय और मवादके पकने पर आवाशतेलके कांटेमें मवादको निकालें और तरफा, सीवनी, मीठेबादाम और बकरीकी ताजा चर्बीका लेपकरें और भोजन लाभदायक हैं ॥

दसवां प्रकरण ।

नखके नीचे खून के भरजाने का वर्णन ।

इसमें नखपर चोट लगने से अथवा और किसी कारण से किसी रगका मुख नखके नीचे खुलजाता है (इलाज) जिफ्त या नन अथवा नदी के बीधाडे औटाकर लाल हरताल मिलाकर अथवा जगली अजमोद मयफयतन में मिलाकर लेप करें और प्रति दिन कई बार मुमक्लिस से धोवे कभी २ तग तेजक के बीज और मिर्चों का लेपकरे तो लाभदायक है और नखको बार २ मुलगे चसना लाभदायक है और किताब शरह असबाब के बनाने वालेने कहा है कि बार २ चूसने से भीतर का मवाद खिचता है और चूसकी लाग उसको पकाकर नर्म करती है (अन्य दवा) मटरका चून जिफ्त और नदीके बीधाडे सिर्के में औटा कर लेपकरें और शराब तथा बबूल के काढे से धोकर तरा तजक के बीज सिर्केमें मिलाकर लेपकरें ।

आठवां प्रकरण नखोंके कुचलजाने का वर्णन ।

(इलाज) आरम्भमें अशीराके पत्तों और अनारके पत्तों का लेप करें और जानेके उपरांत गेहूका चम और जैतून और बकरी की चर्बी थोडी करके लेप करें (लाभ) जो घाव कि पांवकी उगलियों के मध्यों में होजाता है उसका इलाजहै कि उसपर लीलाकपडा बांधकर मुतर्द और कपडेको बधारसें और कनूचा, कुन्दरूगोंद और अजरूत महीन पीसकर घावपर बुरकदेवे ॥

नखके उखाडने का वर्णन ।

जब घाव आदिके कारणसे नख बिगडजाय और उसको उखाडना चाहै तो उचितहै कि हरताल, जावशीर और कडवे बादामके तेल का लेपकरें अथवा राल, गन्धक और हरतालका लेपकरें और जो पहले मरहम दाखली रून के लेपसे नखको नर्म करें फिर उखाडने वाली दवा रक्खें तो जल्दी उखडताहै और उखाडनेके पीछे नखको टेढे होनेसे बचावें ॥

नवां प्रकरण नखका अबरककी सूरत होजाने का वर्णन ।

यह ऐसा रोगहै कि नख अबरकवेसे सफेद होजाताहै इसका कारण खूनका कम होना और तरीका पथरानाहै (इलाज) जटोंका पानी गुलकन्द और सिकजबीन मीठेबादामके तेलमें मिलाकरदें जिससे सरीनमें होकर और पकर निकलजाय और मवादके पकने पर आकाशबेलके काढेसे मवादको निकालै और तरफ़का, खीवनी, मीठेबादाम और बकरीकी ताजा चर्बीका लेपकरें और भोजन लाभदायक हैं ॥

दसवां प्रकरण ।

नखके नीचे खून के भरजाने का वर्णन ।

इसमें नखपर चोट लगने से अथवा और किसी कारण से किसी रगका मुख नखके नीचे गुलजाता है (इलाज) जिपत का खून अथवा नदी के कीकडे औटाकर लाल हरताल मिलाकर अथवा जगली अजमोद मयफपतज में मिलाकर लेप करें और प्रति दिन कई बार गुसलिम से धोवे कभी २ तरा सेनक के बीज और सिर्के का लेपकरें तो लाभदायक है और नखको बार २ मुखसे चसना लाभदायक है और किताब शरह अस्बाब के बनाने वाले ने कहा है कि बार २ चूसने से भीतर का मवाद निचता है और पुराणी लार उसको पकाकर नर्म करती है (अन्य दवा) मटरका चून जिपत और नदीके कीकडे सिर्क म औटा कर लेपकरें और शराब तथा बबूल के काढे स धोकर तरा मजक के बीज सिर्कमें मिलाकर लेपकरें ।

आठवां प्रकरण नखोंके कुचलजाने का वर्णन ।

(इलाज) आरम्भमें अभीराके पत्तों और अनारके पत्तों का लेप करें और जानेके उपरांत गेहूका चम और जैतून और बकरी की चर्बी थोडी करके लेप करें (लाभ) जो घाव कि पांवकी उंगलियों के मध्यों में होजाता है उसका इलाजहै कि उसपर लीलाकपडा बांधकर मुतर्दें और कपडेको बघारसें और कन्चा, कुन्दरुगोंद और अजरुत मर्दीन पीसकर घावपर बुरकदेवे ॥

नखके उखाडने का वर्णन ।

जब घाव आदिके कारणसे नख बिगडजाय और उसको उखाडना चाहैं तो उचितहै कि हरताल, जावशीर और कडवे बादामके तेल का लेपकरें अथवा राल, गन्धक और हरतालका लेपकरें और जो पहले मरहम दाखली छन के लेपमें नखको नर्म करें फिर उखाडने वाली दवा रक्खें तो जल्दी उखडताहै और उखाडनेके पीछे नखको टेढे होनेसे बचावे ॥

नवां प्रकरण नखका अबरककी सूरत होजाने का वर्णन ।

यह ऐसा रोगहै कि नख अबरकवत्से सफेद होजातेहैं इसका कारण खूनका कम होना और तरीका पथरानाहै (इलाज) जटोंका पानी गुलकन्द और सिफजबीन मीठेबादामके तेलमें मिलाकरदें जिससे तरीनर्म होकर और बाहर निकलजाय और मवादके पकने पर आकाशबेलके काढेसे मवादको निकालै और तरतूफा, सीवनी, मीठेबादाम और बकरीकी ताजा चर्बीका लेपकरें और भोजन लाभदायक हैं ॥

दसवां प्रकरण ।

नखके नीचे खून के भरजाने का वर्णन ।

इसमें नखपर चोट लगने से अथवा और किसी कारण से किसी रगका खून नखके नीचे इकट्ठाजाता है (इलाज) जिफत का चून अथवा नदी के कीचड़ ओटाकर लाल हरताल मिलाकर अथवा जंगली अजमोद मधकपतल में मिलाकर लेप करें और प्रति दिन कई बार मुसल्लिम से धोवे कभी २ तरा तेनफ के बीज और सिर्का का लेपकरें तो लाभदायक है और नखको बार २ मुखसे चसना लाभदायक है और किताब शरह अस्बाब के बनाने वालेने कहा है कि बार २ चूमने से भीतर का मवाद खिंचता है और मुखकी लार उसको पकाकर नर्म करती है (अन्य दवा) मटरका चून जिफत और नदीके कीचड़ सिर्के में ओटा कर लेपकरें और शराब तथा बबूल के काढे से धोकर तरा तेजक के बीज सिर्के में मिलाकर लेपकरें ।

वहुधा पसीना लानेवाले उपायों की आवश्यकता हुआ करती है इसलिये का वर्णन यहां किया जाताहै जो चीज रोमांचो के खोलनेवालीहै पसीना जैसे न्हाना परिश्रम और गर्म पानीका भपारा देना और एसेही गुलाब कुछ थोड़ासा सिर्का और गुलरोगन सबको मिलाकर शरीर मलना और ऐसेही केवल बाबूना का तेल, अथवा चुरऐइरमनी मिलाकर गार का तेल, बिल्सां का तेल, सोसन का तेल, और मूली का पानी के साथ काम में लाना पसीना लानेवाली चीजों में से है और उपाय यह है सादा सिकंजबीन अथवा सिकंजबीन बिजूरी कासनी के पानी मिलाकर पिलाना और शर्बत गुल और शर्बत बनफशा भी इसीतरह हैं और चना का पानी और जर्दक के फलिया का खाना भी है और गर्मियों में बहुत ठंडे पानी का पीना पसीना लाता है (लाभ) सईद कहता है कि जो पसीनों की अधिकतासे निबलता उत्पन्न हो और की अधिकता हो तो मोर्द का तेल और बिहीका तेल शरीर पर मलैं और परकाशगरी सफेदा का पानी बुरके और माजू, मोर्द, गिलइरमनी, गुदानिन फिटकिरी, गुलाब अथवा अधीरा के पानीमें भिगोकर शरीरपर मलैं और इन्ताकी कहताहै कि अधिक दोषके निकालने के पीछे प्रकृति को ठीक पर लाने के लिये शरीर को अजीर्णकारक चीजोंसे मलें जैसे मोर्द गुलाब फूल माजू और चन्दन सिर्कमें मिलाकर काम में लावें ॥

तीसरा प्रकरण पसीने में खून निकलने का वर्णन ।

इस रोगका यह कारण है कि खून पित्तके मिलने से तेज और पतला हो जाय अथवा सम्पूर्ण रोकनेवाली शक्ति निबलहो (इलाज) फस्द खोलैं और रोगीके बलके अनुसार दस्तावर दवा दें और कोई ऐसी चीज खिलावें जो खूनको रोककर उसकी तेजीको तोड़डालें जैसे जरिश्क, कासनी, धनिया, उन्नाव, शहतूत, पीले खट्टे आलू अनारदाने का सिमोदा आलूका शर्बत, उन्नाब का शर्बत, और तुरुंज आदिका शर्बत दें और जबकि मवाद निकलजाय और गर्मी जातीरहै तो अजीर्णकारक चीजें दें जैसे अनार की छाल, अधीरा, माजू के पत्ता, मर्दके फल, और जुलनल्लत लाटे के पानी में मिलाकर लेप करे जिससे रोमांच दृढ़ होजाय गाढ़े और ठंडे भोजन जिनका बहुधा वर्णन होचुका है काममें लावैं (लाभ) हकीम अलियास का बेटा लिखता है कि प्रतिदिन प्रात काल के समय सादा सिकंजबीन, माजुल हमुज और गुलाब मरयेर १६

बहुधा पसीना लानेवाले उपायों की आवश्यकता हुआ करती है इसलिये का वर्णन यहां किया जाताहै जो चीज रोमांचो के खोलनेवालीहै पसीना जैसे न्हाना परिश्रम और गर्म पानीका भपारा देना और एसेही गुलाब कुछ थोडासा सिर्का और गुलरोगन सबको मिलाकर शरीर मलना और ऐसेही केवल बाबूना का तेल, अथवा मुरऐइरमनी मिलाकर गार का तेल, बिल्सां का तेल, सोसन का तेल, और मूली का पानी के साथ काम में लाना पसीना लानेवाली चीजों में से है और उपाय यह है सादा सिकंजबीन अथवा सिकंजबीन बिजूरी कासनी के पानी मिलाकर पिलाना और शर्बत गुल और शर्बत बनफशा भी इसीतरह हैं और चना का पानी आर जर्दक के फलिया का खाना भी है और गर्मियों में बहुत ठंडे पानी का पीना पसीना लाता है (लाभ) सईद कहता है कि जो पसीनों की अधिकतासे निर्बलता उत्पन्न हो और की अधिकता हो तो मोर्द का तेल और बिहीका तेल शरीर पर मलैं और परकाशगरी सफेदा का पानी बुरकें और माजू, मोर्द, गिलइरमनी, गुदानिन फिटकिरी, गुलाब अथवा अधीरा के पानीमें भिगोकर शरीरपर मलें और इन्ताकी कहताहै कि अधिक दोषके निकालने के पीछे प्रकृति को ठीक पर लाने के लिये शरीर को अजीर्णकारक चीजोंसे मलें जैसे मार्द गुलाब फूल माजू और चन्दन सिर्कमें मिलाकर काम में लावें ॥

तीसरा प्रकरण पसीने में खून निकलने का वर्णन ।

इस रोगका यह कारण है कि खून पित्तके मिलने से तेज और पतला हो जाय अथवा सम्पूर्ण रोकनेवाली शक्ति निर्बलहो (इलाज) फस्द खोलें और रोगीके बलके अनुसार दस्तावर दवा दें और कोई ऐसी चीज खिलावें जो खूनको रोककर उसकी तेजीको तोडडालें जैसे जरिश्क, कासनी, धनियां, अनार, शहतूत, पीले खट्टे आलू अनारदाने का सिर्का आलूका शर्बत, अनार का शर्बत, और तुतुरुग आदिका शर्बत दें और जबकि मवाद निकलजाय और गर्मी जातीरहे तो अजीर्णकारक चीजें दें जैसे अनार की छाल, अधीरा, माजू के पत्ता, महंदी के फूल, और जुलनारुल्हत लाट के पानी में मिलाकर लेप करें जिससे रोमांच दृढ होजाय गाढे और ठंडे भोजन जिनका बहुधा वर्णन होचुका है काममें लावें (लाभ) हकीम अलिदास का बेटा लिखता है कि प्रतिदिन प्रात काल के समय सादा सिकंजबीन, साउल हमूज और गुलाब प्रत्येक १६

घावम भरद जिससे घाव मिल जाय जो लोहे की नोंक हड्डी म गढ कर वल खागयी हो तो उसको सीधा करें फिर उसको चीमटी से पकड कर जोर से खेंच और जो न खिचे तो चुम्बक पत्थर उस पर रक्खें और जहां कहीं कि घाव का मुख बन्द होजाय और भाल न दिखाई दे और चीमटी से उसको पकड न सकें तो घाव का मुख खोल जिससे चीमटी से उसको पकडलें और जो कांटा हड्डी और काच का टुकडा शरीर में घुसजाय तो उसको चीमटी से खींचे और जो बहुत छोटा है तो उसको सुई से कुरेद कर निकालें और जो इन उपायोंसे न निकले तो चाहिये कि रोमाच के चौडा करने आर नर्म करने वाली दवा जैसे प्याज, नार्गिस, छरीला शहद में मिला कर लेप करें जिससे घाव चौडा होजाय और कांटा आदि सरलता से निकल आवे और जो घाव को नर्म और चौडा करने के पीछे मवाद के खींचने वाली दवा जैसे राल, अलेकुल अम्बात, रातीनज जरावद का लेप कर तो जल्द खिंच आता है।

पन्द्रहवा प्रकरण पीववाले घावों का वर्णन।

करूह दमीत का वर्णन।

जो पीव वाला घाव भरने के चिन्हों से रहित नहो और जा तरी कमहो और पीव वाला घाव छोटा सा हो तो उसको शराब, सिर्के और शहद के पानी से धाव जिससे उसमें श्रेष्ठता और खुश्की आव फिर उसम पुरानी रुई गुलरोगन अथवा तिली के तेल म भर कर रक्खें जिसमे चिकनाई क कारण से घाव का मुख बन्द न हो जब तक कि भीतर स न भरजाय और प्रतिदिन उस तल से भरी हुई में न्यूनता करत रहें जिससे घाव जल्दी मिल जाय और ऐस हलके पीप वाले घाव म बहुत खरी दवा न लगाव क्योंकि असली तरी के नष्ट होने का ध्यान है और भरन का भी रोकती है और जो बडा पीप वाला घाव हो और मैल से भरा हो नर्म शरीर में हो तो मुर्दासिन और हल्दी दोनों को सिर्के और जैतून में मिला कर मरहम बना कर लगावें और इन म कोई अकेली दवा न लगाव क्योंकि हानि कारक है और जहां कहीं कि यह कठोर घाव शरीर हो तो जो चीज कि विशेष खुश्क है इस दवा में मिलावें जैसे माजू, अनार के फूल, फिटकिरी, चांदी का मैल, सोसन के पत्ते, और लीलाथोथा, बहुत कम मिळाव और कठे शरीर का उन लोगों से प्रयोजन है जो परिश्रम अधिक करते हो जैसे सुनार, लुहार, किसान, आदि और जो गहरा घाव है तो खुश्की में अधिक परिश्रम करे जिससे जो तरी उसकी गहराई में इकट्ठी है ग्रस्त जाय फिर गुप्फने की दवा और मांस के भरने वाले मरहम लगावें और

घावम भरद जिससे घाव मिल जाय जो लोहे की नोंक हड्डी म गढ कर वल खागयी हो तो उसको सीधा करें फिर उसको चीमटी से पकड कर जोर से खींच और जो न खिचे तो चुम्बक पत्थर उस पर रक्खें और जहा कहीं कि घाव का मुख बन्द होजाय और भाल न दिखाई दे और चीमटी से उसको पकड न सकें तो घाव का मुख खोल जिससे चीमटी से उसको पकडलें और जो कांटा हड्डी और काच का टुकडा शरीर में घुसजाय तो उसको चीमटी से खींचें और जो बहुत छोटा है तो उसको सुई से कुरेद कर निकालें और जो इन उपायोंसे न निकले तो चाहिये कि रोमाच के चौडा करने और नर्म करने वाली दवा जैसे प्याज, नार्गिस, छरीला शहद में मिला कर लेप करें जिससे घाव चौडा होजाय और कांटा आदि सरलता से निकल आवे और जो घाव को नर्म और चौडा करने के पीछे मवाद के खींचने वाली दवा जैसे राल, अलेकुल अम्बात, रातीनज जरावद का लेप कर तो जल्द खिंच आता है।

पंद्रहवा प्रकरण पीवयाले घावों का वर्णन।

करूह कमीत का वर्णन।

जो पीव वाला घाव भरने के चिन्हों से रहित नहो और जातरी कमहो और पीव वाला घाव छोटा सा हो तो उसको शराव, सिर्के और शहद के पानी से धाव जिससे उसमें श्रेष्ठता और खुश्की आवे फिर उसम पुरानी रुई गुलरोगन अथवा तिली के तेल म भर कर रक्खें जिससे चिकनाई क कारण से घाव का मुख बन्द न हो जब तक कि भीतर स न भरजाय और प्रतिदिन उस तल से भरी हुई में न्यूनता करत रहें जिससे घाव जल्दी मिल जाय और ऐसे हलके पीप वाले घाव म बहुत सूखी दवा न लगावे क्योंकि असली तरी के नष्ट हाने का ध्यान है और भरन का भी रोकती है और जा बडा पीप वाला घाव हो और मैल से भरा हो नर्म शरीर में हो तो मुर्दासिन और हल्दी दोनों का सिर्के और जैतून में मिला कर मरहम बना कर लगावें और इन म कोई अकेली दवा न लगावे क्यों- कि हानि कारक है और जहां कहीं कि यह कठोर घाव शरीर हो तो जो चीज कि विशेष खुश्क है इस दवा में मिलावें जैसे माजू, अनार के फूल, फिटकिरी, चांदी का मैल, सौसन के पत्ता, और लीलाथोथा, बहुत कम मिलावे और कडे शरीर का उन लोगों से मयोजन है जो परिश्रम अधिक करते हों जैसे सुनार, लुहार, किसान, आदि और जो गहरा घाव है तो खुश्की में अधिक परिश्रम करें जिससे जो तरी उसकी गहराई में इकट्ठी है ग्रस्त जाय फिर सुखने की दवा और मांस के भरन वाले मरहम लगावे और

कामबिगडजायगा और ऐसेही बहुतामें पानीसे सिकाव न करे क्योंकि जितना मवाद खिचकर आयाहै उससे अधिक नष्टहोजायगा और रक्तोत्पादक भोजन दे आरकाली मरहम जो राल,जैतून,रातीनज,बूरा और गौरी पिंडलीके मदेसे बनाया हो लगावे क्योंकि यह मरहम खूनकोखींचताहै। (२) निकम्मा खूनहा इसलिये उस से मांस उत्पन्न नहो और जो कुछ पीपवाले घाव के अंग का भाग है उसका पीप और मैल बन जाय और उसका यह चिन्हहै कि रंग और शरीरमें विपत्तिआगईही फिरजो खूनके बिगडजानेका यह कारणहै कि जिगरकी प्रकृति बिगडगई है तो शरीरकारंग जिगरकीगर्मी और सर्दी के अनुसार सफेद रांगरा अथवा पीलाहोगा और जो तिल्लीकी प्रकृतिका बदलजाना इसकी विपत्तिका कारण हुआहै तो शरीर का रंग स्याही लिये होगा। प्राय इसपर कालेदाग उत्पन्न होंगे (इलाज) प्रथम फस्दखोले जिससे निकम्मा खूननिकलजाय फिरतिल्ली और जिगरकी प्रकृति के सुधारनेका उपायकरै (३) दुष्टप्रकृति शरीरकी शक्तिको निर्बलकरदे इसका रणसे जो भोजन उस अंगमें पहुंचे अंगकीशक्ति उसमें सम्पूर्ण कार्य्य नकर सकें और उसका मांस न बनासकें और उसका चिन्ह घाव में लाली जलन और दर्द की अधिकताहै (इलाज) उसके अनुसार रंग खोलकर आवश्यकताके अनुसार रुधिर निकाले और शीतल उपाय काम में लावें और ठंढा मरहम लगावे जैसे सफेदाका मरहम और वह मरहम जो मुर्दासिन और हल्दीका बनता है घाव के आसपास लेपकरें और कपडी पर पिसाहुआ सन्दल सुपारी घाव पर रक्खें। (४) ठंढी दुष्ट प्रकृतिके कारण से रोगी के अंगकीशक्ति निर्बल हो जाय इसका यह चिन्हहै कि रंग काला पडजाय और गर्मीके चिन्ह नहों (इलाज) प्रकृतिके गर्मकरनेके लिये गर्मभोजन सदावें जैसे मांस का पानी गर्म मसाले के साथ और ऐसीही अन्य चीजें और मुनक्का और अंजीरका खाना लाभदायक है और अंगपर गर्म पानी से सिकाव करें और मरहम बासलीकून जो राल, रातीनज, गन्दाविरोजा, मोम और जैतून का बनाहुआ हो और कालामरहम जिसमें मुर्दासनको महीन पीसकर जैतूनमें पकावें जबतककि कालाहोजाय फिर दूसरी दवाएं महीन करके उसमें मिलाकर लगाना लाभदायक है (५) तर दुष्ट प्रकृति पीडित अंग की शक्ति का निर्बल कर डाले इसका चिन्ह यह है कि घाव का मांस नर्म होवे और उस में पीप और तरी विशेष हो (इलाज) हब्ब और बुर्बुद आदि से शरीर को साफ करें और सूक्ष्म भोजन जैसे सल में

कामबिगडजायगा और ऐसेही बहुतसमें पानीसे सिकाव न करे क्योंकि जितना मवाद खिचकर आयाहै उससे अधिक नष्टहोजायगा और रक्तोत्पादक भोजनदें और कालीं मरहम जो राल,जैतून,रातीनज,बूरा और गौरी पिंडलीके मदेसे बनाया हो लगावे क्योंकि यह मरहम खूनकोखींचताहै। (२) निकम्मा खूनहो इसलिये उस से मांस उत्पन्न नहो और जो कुछ पीपवाले घाव के अंग का भाग है उसका पीप और मैल बन जाय और उसका यह चिन्हहै कि रंग और शरीरमें विपरीतगर्द्दहो फिरजो खूनके विगडजानेका यह कारणहै कि जिगरकी प्रकृति विगडगई है तो शरीरकारंग जिगरकीगर्मी और सर्दी के अनुसार सफेद रंगका अथवा पीलाहोगा और जो तिल्लीकी प्रकृतिका बदलजाना इसकी विपरीतका कारण हुआहै तो शरीर का रंग स्याही लिये होगा। प्राय मुखपर कालेदाग उत्पन्न होंगे (इलाज) प्रथम फस्दखोले जिससे निकम्मा खूननिकलजाय फिरतिल्ली और जिगरकी प्रकृति के सुधारनेका उपायकरें (३) दुष्टप्रकृति शरीरकी शक्तिको निर्बलकरदे इसका रणसे जो भोजन उस अंगमें पहुचे अंगकीशक्ति उसमें सम्पूर्ण कार्य्य नकर सके और उसका मांस न बनासके और उसका चिन्ह घाव में लाली जलन और दर्द की अधिकताहै (इलाज) उसके अनुसार रग खोलकर आवश्यकताके अनुसार रुधिर निकाले और शीतल उपाय काम में लावें और ठंढा मरहम लगावें जैसे सफ़ेदाका मरहम और वह मरहम जो मुर्दासिन और हल्दीका बनता है घाव के आसपास लेपकरे और ककरी पर पिसाहुआ खसाचन्दन बुरककर घाव पर रक्खें। (४) ठंढी दुष्ट प्रकृतिके कारण से रोगी के अंगकीशक्ति निबल हो जाय इसका यह चिन्हहै कि रंग काला पड़जाय और गर्मीके चिन्ह नहों (इलाज) प्रकृतिके गर्मकरनेके लिये गर्मभोजन खवावें जैसे मांस का पानी गर्म मसाले के साथ और एसेही अन्य चीजें और मुनक्का और अंजीरका खाना लाभदायक है और अंगपर गर्म पानी से सिकाव करे और मरहम बासलीकून जो राल, रातीनज, गन्दाबिरोजा, मोम और जैतून का बनाहुआ हो और कालामरहम जिसमें मुर्दासनको महीन पीसकर जैतूनमें पकावें इतनाकि कालाहाजाय फिर दूसरी दवायें महीन करके उसमें मिलाकर लगाना लाभदायक है (५) तर दुष्ट प्रकृति पीडित अंग की शक्ति का निर्बल कर डाले इसका चिन्ह यह है कि घाव का मांस नर्म होवे और उस में पीप और तरी विशेष हो (इलाज) दस्त और वमन आदि से शरीर को साफ करे और सूक्ष्म भोजन जैसे सत्त में

किसी जानवरकी हड्डी ला र फिर चूर, कुन्दरूगोंद और एल्वा आदि डालें जिससे मास उत्पन्नहो (९) घाव सड़ाहुआ और निकम्माहो इस कारणसे जो खून उसके भागम आताहै निकम्मा होकर पीव बनजाय और गयाहुआ अग फिर न उत्पन्नहो इससे घाव काला और चौड़ा होजाता है और उसकी खराबी और दुर्गंधि समीपके अगोंमें शीघ्र प्रवेश होजाती है (इलाज) निकम्मे दोषके अनुसार शरीरका मवाद निकालें जब जो घाव में जलन और गर्मीहो और उस के आर पासकी जगह पीली पडजाय और पीलीतरी ज़खम से निकले तो पित्त का जुलाब दें और जो घावके आस पास स्याही और कठोरता हो और गर्मी की अधिकता नहो तो वादीके निकालने वाली दवादें और जो सफेदी लिए है और सफेद पीव बहताहो तो कफके निकालने वाली दवादें और जो उसमें दर्द और लाली है तो फस्द खोलें और फस्दका खोलना हरदशामें लाभदायक है क्योंकि खून दोषोंसे मिलाहुआ है उसके निकालने से प्रत्येक दोष निकलजाता है और निकम्मा मास गिरानेके लिये कासनीके पत्ते खिनमी क पत्ते और मकोय कूटकर और थोडासा घी और बनफशाका तेल उसमें मिलाकर लेपकरें और जो निकम्मा मांस गिरगयाहो तो लीलथोथेका मरहम और मक्खन लगावे जिससे बाकी निकम्मे भाग बिलकुल अलग होजांय और आरोग्य लाल मास निकलआवे फिर मांस जमाने वाले मरहमों स उसको अच्छा करे (१०) घाव ऐसे अगमें पडे कि वहां का मांस ढीला नर्म और बुराहो जैसे जलन्धर वाला का और तरी और मैल की अधिकता से उसमे खुश्की न आवे और घाव न भरे (इलाज) मांस को गलानेवाली दवा और मरहम घावपर रक्खें जिससे ढीला मांस गिरजाय और श्रेष्ठ और दृढ मांस उत्पन्न हो फिर घाव के भरने वाली दवाओं से अच्छा करे (११) घावपर कोई बडी नसहो जो घाव को सदा तर रक्खे इस कारण से न भरसके (इलाज) फस्द खोल और आकाशवेल के काढे से तबियत का नर्म करें और श्रेष्ठ भोजन दें और फस्द और दस्तके पीछे उस रगमें भीजो घावपर आतीहै फस्दखोलें [१२] दवा और मरहम घावकी प्रकृति के अनुकूल न हो जैसे गर्मी मे अधिकता करे इस कारण से बहुतसा मवाद उस अगकी तरफ आनेलगे और अगकी शक्ति उस में पाचन न कर सके और अधिक गर्मी के पहुंचने का यह चिन्ह है कि दवाओं के लगाने से लाली भडकाव और सूजन अधिक हो[इलाज] ठंढे मरहम लगावे अथवा सर्दी में अधिकता की जाय इस कारण से अंग

किसी जानवरकी हड्डी ला र फिर चूर, कुन्दरूगोंद और एलवा आदि डालें जिससे मास नरमहो (९) घाव सडाहुआ और निकम्माहो इस कारणसे जो खून उसके भागम आताहै निकम्मा होयर पीव बनजाय और गयाहुआ अग फिर न उत्पन्नहो इससे घाव काला और चौडा हाजाता है और उसकी खराबी और दुर्गंधि समीपके अगोंमें शीघ्र प्रवेश होजाती है (इलाज) निकम्मे दोषके अनुसार शरीरका मवाद निकालें जैसे जो घाव में जलन और गर्मीहो और उसके और पासकी जगह पीली पडजाय और पीलीतरी बसम से निकले तो पित्त का जुलाब दें और जो पावके और पास स्याही और कठारता हो और गर्मी की अधिकता नहो तो बादीके निकालने वाली दवाएं और जो सफेदी लिपहै और सफेद पीव बहताहो तो कफक निकालने वाली दवाएं और जो उसमें दर्द और लाली है तो फस्द खोलें और फस्दका खोलना हरदशामें लाभदायक है क्योंकि खून दोषोंसे मिलाहुआ है उसके निकालने से प्रत्येक दोष निकलजाता है और निकम्मा मास गिरानेके लिये कासनीके पत्ते खिनमी क पत्ते और मकोय कूटकर और थोडासा घी और बनफशाका तेल उसमें मिलाकर लेपकरें और जो निकम्मा मांस गिरगयाहो तो लीलयोथेका मरहम और मक्खन लगावे जिससे बाकी निकम्मे भाग बिलकुल अलग हाजांय और आरोग्य लाल मास निकलआवे फिर मांस जमाने वाले मरहमों स उसको अच्छा करे (१०) घाव ऐसे अगमें पडे कि वहां का मांस ढीला नमें और बुगदो जैसे जलन्धर वाला का और तरी और मैल की अधिकता से उसमें खुश्की न आवे और घाव न भरे (इलाज) मांस को गलानेवाली दवा और मरहम घावपर रक्खें जिससे ढीला मांस गिरजाय और श्रेष्ठ और दृढ मांस उत्पन्न हो फिर घाव के भरने वाली दवाओं से अच्छा करे (११) घावपर कोई नदी नसहो जो घाव को सदा तर रक्खे इस कारण से न भरसके (इलाज) फस्द खोल और आकाशबेल के काढे मे तबियत का नर्म करें और श्रेष्ठ भोजन दें और फस्द और दस्त के पीछे उस रगमें भीजो घावपर आतीहै फस्दखोलें[१२]दवा और मरहम घावकी प्रकृति क अनुकूल न हो जैसे गर्मी म अधिकता करे इस कारण स बहुतसा मवाद उस अगकी तरफ आनेलगे और अगकी शक्ति उस में पाये न कर सके और अधिक गर्मी के पहुंचने का यह चिन्ह है कि दवाओं के लगाने से लाली भडकाव और सूजन अधिक हो[इलाज] ठंढे मरहम लगावे अथवा सर्दी में अधिकता की जाय इस कारण से अंग

कभी तो सीधी होती है कभी टेढी होती है और ठिटरा होता है जैसी कि उसमें सलाई न जाय (लाभ) कभी नासर हड्डीतक पहुचता है और उसका चिन्ह यह है कि जब उसके भीतर सलाई डाले तो कठरता मालूम हो और तरी वहती है वह श्वेत पतली और पीलापन लिये हुए हो और कभी पट्ठे तक पहुचता है इसका यह चिन्ह है कि सलाई डालने से विशेष दर्द उठे और उसकी तरी पतली और साफ और सफेदी लिये हुए हो और कभी जोडों में पहुचताहै उसका यह चिन्ह है कि सलाई डालने से दर्द और कठोरता कुछ न मालूम हो और तरी सफेद और पतली वहती रहे और कभी जिगरकी रगम पहुंचताहै उसका यह चिन्ह है कि बहुतसा गाढा खून नासूर से आवे और कभी दिलकी रग म पहुचताहै उसका यह चिन्हहै कि खून पतला गर्म लाली और पिलाई लिये हुए वहै और आखके कोए का नासूर कभी ढेले म पहुचता है और छाती का नासूर कभी झिल्ली तक पहुचता है जैसा कि जालीनूस ने लिखाहै यह ऐसा रोग है कि जिस अग में होता है उसको निकम्मा करदेता है और कभी एक नासूर के कई मुख होते है सोजो नासूर एकहै और कईजगह से फूट निकलाहै अथवा प्रत्येक अलग अलग नासूरहै तो उसका यह चिन्हहै कि जो तरी प्रत्येक मुखसे निकलती है यदि उसका रग समानहै तो एकही नासूरहै और जो उसका रग विरुद्धहै जैसे एकमुखसे पीली और दूसरे मुखसे सफेद आती है तो जानलेना चाहिये कि प्रत्येक नासूर अलग है और प्रत्येक की जड अलग है (इलाज) प्रथम गुलाब में अगूर क पेडकी राख मिलाकर उसके घावको धोवे जिससे, पीला पानी दूर जाय और घाव मैलसे पवित्र होजाय और जो विशेष बलवान किया चाहतो खारी नदी अथवा साबुन के पानी से धाव जिसमें कुछ हरताल और नामादर मिला दिया हो फिर पुरानी रुई शराव में तर करे जहर अजफर अजरून एलवा, फूल, हीरादूखी गोंद, कुंदरू गोंद, अफीम और केसर से बनाकर इसमें भरकर घाव में रक्खें और इसी तरह किये जांय जबतक कि अच्छाहो औरइस उपाय से अच्छा नहो तो चीर डाले और जो निकम्मा मांस जाडस के ओरपास है उसको लोहेस अथवा तेज दवाओंसे दूरकरें यहांतक कि लालमांस निकलेफिरघाव के भरनेवालीदवा लगांवे और जानले कि नासूर का चीरनाबहुत कडाहै मुख्यकर जो पट्ठेक समीप अथवा श्रेष्ठ अगके समीप है (नासूर का भरने वाली दवा) ३५ मासे कुंदरुगोंद, गंदा विरोजा और जगार प्रत्यक ३॥ मासे महीन पीसकर शहद के साथ मिला कर लगावे । राजी ने कहा है कि नासूर और घाव जो इसमें अच्छे हो और जो घ व कि उनके अच्छे होने की आशा नहीं थी इसी

कभी तो सीधी होती है कभी टेढी होती है और ठिटरा होता है जैसी कितसमें सलाई न जाय (लाभ) कभी नासूर हड्डीतक पहुचता है और उसका चिन्ह यह है कि जब उसके भीतर सलाई डाले तो कठोरता मालूम हो और तरी बहती है वह श्रेउ पतली और पीलापन लिये हुए हो और कभी पट्ठे तक पहुचता है इसका यह चिन्ह है कि सलाई डालने से बिशेष दर्द उठै और उसकी तरी पतली और साफ और सफेदी लिये हुए हो और कभी जोडों में पहुचताहै उसका यह चिन्ह है कि सलाई डालने से दर्द और कठोरता कुछ न मालूम हो और तरी सफेद और पतली बहती रहै और कभी जिगरकी रगम पहुंचताहै उसपर यह चिन्ह है कि बहुतसा गाढा खून नासूर से आवे और कभी दिलकी रग म पहुचताहै उसका यह चिन्हहै कि खून पतला गर्म लाली और पिलाई लिये हुए बहै और आंखके कोए का नासूर कभी ढेले म पहुचता है और छाती का नासू र कभी झिल्ली तक पहुचता है जैसा कि जालीनूस ने लिखाहै यह ऐसा रोग है कि जिस अंग में होता है उसको निकम्मा करदेता है और कभी एक नासूर के कई मुख होते हैं सोजो नासूर एकहै और कईजगह से फूट निकलाहै अथवा प्रत्येक अलग अलग नासूरहैं तो उसका यह चिन्हहै कि जो तरी प्रत्येक मुखसे निकलती है यदि उसका रंग समानहै तो एकही नासूरहै और जो उसका रंग विरुद्धहै जैसे एकमुखसे पीली और दूसरे मुखसे सफेद आती है तो जानलेना चाहिये कि प्रत्येक नासूर अलग है और प्रत्येक की जड अलग है (इलाज) प्रथम गुलाब में अंगूर के पेडकी राख मिलाकर उसके घावको धोवे जिससे, पीला पानी खत्म जाय और घाव मैलसे पवित्र होजाय और जो विशेष बलवान किया चाहतो खारी नदी अथवा साबुन के पानी से धाव जिसमें कुछ हरताल और नामादर मिला दिया हो फिर पुरानी रुई शराब में तर करे जहर अजफर अजरून एलवा, धूल, हीरादूखी गोंद, कुंदरू गोंद, अफीम और केसर से बनाकर इसमें भरकर घाव में रक्खें और इसी तरह किये जांय जबतक कि अच्छाहो औरइस उपाय से अच्छा नहो तो चीर डालें और जो निकम्मा मांस जाउस के औरपास है उस को लोहेसे अथवा तेज दवाओंसे दूरकरें यहांतक कि लालमांस निकलेफिरघाव के भरनेवालीदवा लगावे और जानले कि नासूर का चीरनाबहुत कडाहै मुख्यकर जो पट्ठेके समीप अथवा श्रेष्ठ अंगके समीप है (नासूर का भरने वाली दवा) ३॥ मासे कुंदरूगोंद, गंदा बिरोजा और जंगार प्रत्येक ३॥ मासे महीन पीसकर शहद के साथ मिला कर लगावे । राजी ने कहा है कि नासूर और घाव जो दमें अच्छे हो और जो घ व कि उनके अच्छे होने की आशा नहीं थी इसी

वातदग्ध रुधिर से उत्पन्न घाव।

इसका यह चिन्ह है कि प्रथम वडी २ फुन्सियां उत्पन्न हों पीछे फूटकर उनमें पीला पानी होजाय और काला खुरड तथा मैला रग बध जाय जैसा कि दाग का खुरड होता है और इनमें दर्द बहुत कम होता है और मुसपर हो जाते हैं (इलाज) फस्द खोलें और आकाश वेलके काढे और गारीकून तथा माउलजुब से वादी को निकाले (वातनाशक चूर्ण) कावली हडे, अकाशवेल उस्तखद्दूस, विस्फाइज, गावजवां, देसी नोंन कूट छानकर चूर्ण बनावें और फस्द और दस्तों के पीछे जोंक लगावे जिससे जला हुआ खून उसी अग से निकालें फिर बहुत सुर्ख मरहम लगावे जो मुर्दासिन, हल्दी, सिर्के और जैतून से बनाई हो (लाभ) कभी सिरकी खाल में लाल फुन्सियां निकल आती हैं फिर घाव होजाता है और विशेष दर्द करता है जिससे आदमी बचन होजाताहै और उसका कारण जले हुए गाढे खून के भाफके परमाणु हैं जो खोपडी के ऊपर के पर्दे के नीचे रुककर अग्नि के तेज से पर्दे को जलाकर बाहर आते हैं (इलाज) मवाद के नर्म करने के लिये कासनी के डठल कूट कर तिलीके तेल मिलाकर लेप करें जिससे आगकी गाढीभाफके रुकेहुए परिमाणु सहजमें शीघ्र बाहर आजाव और दर्द न हो और जोइसलेपमें थोडा जौ का चून और खितमीका चून मिला लिपाजाय तो अति उत्तम है फिर कपूरका मरहम लगावे जिस से दर्द थमजाय और घाव भरजाय और मुर्दासन, नीला थोथा महदी के पत्ते कम्बील, गौ के घी में मिलाकर अच्छा मरहम होता है और हम्माम में जाना लाभदायक है इससे गाढे भाफ के परमाणु नष्ट होजाते हैं।

सोलहवां प्रकरण धमाके और चोट लगनेका वर्णन।

यह कई प्रकार पर है (१) उसमें गर्म सूजन, ज्वर और किसी अगका अपने स्थान से हटजाना और घाव आदि से खून बहना सम्बन्धित न हो (इलाज) जो चीज कि अग को दृढ करें जैसे मुगास, गिले इरमनी, अकाकिया, सर्वके पत्ते, एलवा, छिली मूग, जौ के काढ़के पानी में मिलाकर लेप करें जो इस जगह उसी समय सींगियों सहित पछने लगावें तो लाभदायक है। (२) गर्म सूजन और ज्वर भी उसमें सम्बन्धित हो (इलाज) फस्द खोलें और पछने लगावें और गुलाब के फूल, छिली मसूर, गिले इरमनी, सामीसा चन्दन और सुपारी का लेप करें और ज्वरकी गर्मी जितनी हो उसीके अनुसार ठंढी चीजें दें और भोजन मूग, मसूर चांवल और चना खोप और

वातदग्ध रुधिर से उत्पन्न घाव।

इसका यह चिन्ह है कि प्रथम वही २ फुन्सियां उत्पन्न हों पीछे फूटकर उनमें पीला पानी होजाय और काला खुरड तथा मैला रंग बंध जाय जैसा कि दाग का खुरड होता है और इनमें दर्द बहुत कम होता है और मुखपर हो जाते हैं (इलाज) फस्द खोलें और आकाश वेलके काढे और गारीकून तथा माउलजुब से वादी को निकालें (वातनाशक चूर्ण) कावली हडे, अकाशवेल उस्तसद्दूस, विस्फाइज, गावजवां, देसी नोंन कूट छानकर चूर्ण बनावें और फस्द और दस्तों के पीछे जोंक लगावे जिससे जला हुआ खून उसी अंग से निकालें फिर बहुत सुखे मरहम लगावे जो मुर्दासिन, हल्दी, सिर्के और जैतून से बनाई हो (लाभ) कभी सिरकी खाल में लाल फुन्सियां निकल आती हैं फिर घाव होजाता है और विशेष दर्द करता है जिससे आदमी बचन होजाताहै और उसका कारण जले हुए गाढे खून के भाफके परमाणु हैं जो खोपडी के ऊपर के पर्दे के नीचे रुककर अग्नि के तेज से पर्दे को जलाकर बाहर आते हैं (इलाज) मवाद के नर्म करने के लिये कासनी के डंठल कूट कर तिलीके तेल मिलाकर लेप करें जिससे आगकी गाढीभाफके रुकेहुए परिमाणु सहजमें शीघ्र बाहर आजावें और दर्द न हो और जोइसलेपमें थोडा जौ का चून और खितमीका चून मिला लिपाजाय ना अति उत्तम है फिर कपूरका मरहम लगावे जिस से दर्द थमजाय और घाव भरजाय और मुर्दासन, नीला थोथा मेहदी के पत्ते कम्बील, गौ के घी में मिलाकर अच्छा मरहम होता है और हम्माम में जाना लाभदायक है इनस गाढे भाफ के परमाणु नष्ट होजाते हैं।

सोलहवां प्रकरण धमाके और चोट लगनेका वर्णन।

यह कई प्रकार पर है (१) उसमें गर्म सूजन, ज्वर और किसी अंगका अपने स्थान से हटजाना और घाव आदि से खून बहना सम्बन्धित न हो (इलाज) जो चीज कि अंग को दृढ करें जैसे मुगास, गिले इरमनी, अकाकिया, सर्वके पत्ते, एलवा, छिली मूग, जौ के काढे पानी में मिलाकर लेप करें जो इस जगह उसी समय सींगियां सहित पछने लगावें तो लाभदायक है। (२) गर्म सूजन और ज्वर भी उसमें सम्बन्धित हो (इलाज) फस्द खोलें और पछने लगावें और गुलाब के फूल, छिली मसूर, गिले इरमनी, मामीसा चन्दन और सुपारी का लेप करें और ज्वरकी गर्मी जितनी हो उसीके अनुसार ठंढी चीजें दें और भोजन मूंग, मसूर चांवल और चना सोंफ और

दवाओंको मिलाकर लेपकरै और मुगाश, गिलेइरमनी, मोद सब भाग बराबर महीन पीसकर लेपकरें यह अतिउत्तम लेपहै और रेवदको जुलाबक साथ खाना बहुतही लाभदायकहै । (७) चोट अथवा धमाका अदलेपर आजाय और अदला अपनी जगहसे हटजाय (इलाज) जो मवाद के लौटानेवाली दवा वर्णन हुईहै प्रथम उनका लेपकरें पीछे जब खून गिरना बन्दहो तो बाबूना, अक्लीकुलमलिक, सरक, अलसीके बीज, सूखा जूफा, सितमीके पत्ते, पोदीना, दोना मरुआके काढेका तरेडाद और जौका चून, तरजूफा और पहाडी पोदीनाका लेपकरें (लाभ) अदले के हटजानेका यह अर्थहै कि अदला मध्यमें से हटजाय चाहै लम्बाई में चाहै चौडाई में चाहै एक जगह चाहै कई जगह (८) धमाका तथा चोट पडेपर पहुचे इस कारणसे उसके भाग एक दूसर से अलग होजाय मूगका चून ३५ माशे, गिलेइरमनी १३। माशे, एलवा, केसर, सुक प्रत्येक ५। माशे, मेह का पानी, गुलाब और थोड गुलरोगन अथवा सोसन के तेल में मिलाकर लेपकरै और जब मवाद का पडे पर आना बन्द होजाय तो ऐसी चीज लगावें कि नर्मी लावे जिससे वहाका मवाद नष्ट होजाय तो इस विषय में सितमी, बनफशा, अक्लीकुलमलिक लेप में काम आता है (९) चोट और धमाका जोडपर आवे और उसको सुस्त करडाले और हड्डी अपनी जगहसे हटजाय कुचलजाय और टेढी होजाय (इलाज) गुलरोगन जोडोंपर मलै और अधीरा महीन पीसकर उसपर डालें और पट्टियों से बांधे न तो बहुत कसकर न बहुत ढीला और दुबने की चकती और छुआरा दोनों कूटकर मिलाकर उसपर रखकर बांध देना इस विषय म बहुत लाभदायक है और जोड की कठोरता और थकावट को नष्ट करताहै [लाभ] कभी चोट और धमाके से पट्ठा हटजाताहै [इलाज] ऐसा लेपकरै जिसम पट्ठा न हटे और कठोरता में नर्मी आवै जैसे दालचीनी ऊन अथवा गुगल पानी म घोलकर अथवा सितमी के बीज और कनूचा के बीज मयफुक्तज में मिलाकर अथवा छगीला गन्दा बिरोजा, फरफयून और जैतून की गाद में मिलाकर प्रत्येक कठोरता की अधिकता और न्यूनता के अनुसार काम में आताहै हकीम खुजंदी कहता है कि जो चोट और धमाके के कारण से सूजन हो तो शर्बत उन्नाबमें १।।। माशे ज्वानरी मोमियाइ मिलाकर दें और यह चूर्ण लाभदायक है, खान की मोमियाइ, मर्दासंग गिलमख्तूम, लकमफमूल, प्रत्येक १।।। माशे, चने के रिसी देके मायद (दूसरा नुसखा) रेवदचीनी, मोमियाई प्रत्येक १।।। माशे, गुल-

दवाओंको मिलाकर लेपकरै और मुगाश, गिलेइरमनी, गोद सब भाग बराबर महीन पीसकर लेपकरैं यह अतिउत्तम लेपहै और रेवदको जुलावक साथ खाना बहुतही लाभदायकहै । (७) चोट अथवा धमाका अदलेपर आजाय और अदला अपनी जगहसे हटजाय (इलाज) जो मवाद के लौटानेवाली दवा वर्णन हुईहै प्रथम उनका लेपकरै पीछे जब खून गिरना बन्दहो तो बाबूना, अक्लीकुलमलिक, सरक, अलसीके बीज, खत्ता जूफा, खितमीके पत्ते, पोदीना, दोना मरुआके काढेका तरेडाद और जौका चून, तरजूफा और पहाडी पोदीनाका लेपकरैं (लाभ) अदले के हटजानेका यह अर्थहै कि अदला मध्यमें से हटजाय चाहै लम्बाई में चाहै चौडाई में चाहै एक जगह चाहै कई जगह (८) धमाका तथा चोट पट्ठेपर पहुचे इस कारणसे उसके भाग एक दूसर से अलग होजाय मूगका चून ३५ माशे, गिलेइरमनी १३। माशे, एलवा, केसर, सुक मरपक ५। माशे, मेंह का पानी, गुलाब और थोड गुलरोगन अथवा सोसन के तेल में मिलाकर लेपकरैं और जब मवाद का पट्ठे पर आना बन्द होजाय तो ऐसी चीज लगावैं कि नर्मी लावे जिससे वहाका मवाद नष्ट होजाय तो इस विषय में खितमी, बनफशा, अक्लीकुलमलिक लेप में काम आता है (९) चोट और धमाका जोडपर आवै और उसको सुस्त करडाले और हड्डी अपनी जगहसे हटजाय कुचलजाय और टेढी होजाय (इलाज) गुलरोगन जोडोंपर मलै और अंबीरा महीन पीसकर उसपर डालैं और पट्टियों से बांधे न तो बहुत कसकर न बहुत ढीला और दुवने की चकती और छुआरा दोनों कूटकर मिलाकर उसपर रखकर बांध देना इस विषय म बहुत लाभदायक है और जोड की कठोरता और थकावट को नष्ट करताहै [लाभ] कभी चोट और धमाके से पट्ठा हटजाताहै [इलाज] ऐसा लेपकरै जिसम पट्ठा न हटे और कठोरता में नर्मी आवै जैसे दालखी ऊन अथवा गुगल पानी म घोलकर अथवा खितमी के बीज और कनूचा के बीज मयफकतज में मिलाकर अथवा छगीला गन्दा बिरोजा, फरफयन और जैतून की गाद में मिलाकर प्रत्येक कठोरता की अधिकता और न्यूनता के अनुसार काम में आताहै हकीम खजदी कहता है कि जो चोट और धमाके के कारण से सूजन हो तो शर्बत उन्नाबमें १॥। माशे खानजी मौमियाइ मिलाकर दें और यह पूर्ण लाभदायक है, खाने की मौमियाइ, मर्जीउ गिलेअरमन, लकमफसूल, प्रत्येक १॥। माशे, कर्न के रिसी देके मागद (दूसरा नुसखा) खेवदर्यानी, मौमियाई प्रत्येक १॥। मारो, गुल-

पर तीन लपेटे देकर ऊपर की तरफ लपेटतेहुए जांय और दूसरी पट्टी लेकर फिर टूटने की जगह चार पेंच देकर वहां से नीचे की तरफ लपेटते हुए आवें और जो हड्डी लम्बाई में टूटी है तो तीसरी पट्टी भी इसतरह बांधे कि ऊपर की तरफ जहां पहली पट्टीकासिराहैवहां से लपेटना आरम्भ करे और नीच की तरफ जहां दूसरी पट्टीसमाप्त हुई है वहां करें और जहां टूटी है पट्टी को उसी जगह दृढबांधे और उसके सिवाय हलकी बांधे जिससे भोजन न रुकजाय और पट्टी ऊंची नीची नहो तथा उसकी चौडाई टूटे हुए अंग के समान चाहिये जैसे कि छाती और पसली की पट्टी १२ अंगुल चौडी, बाहु और पिंडलीकी पट्टी तीन अंगुल की होवे पट्टी बांधने के पीछे जिस जगह गढहा रहजाय वहां ऐसी प्रकार पर गद्दियां रक्खें कि सम्पूर्ण अंग बराबर होजाय और कहीं ऊंचा नीचा न रहे और पट्टी और गद्दी नर्म और पवित्र हो जिससे अंग को कष्ट न पहुंचे और गद्दियां रखकर तखता बांध दें ये तखते अनार वा बेद की लकडी के समान बनाये जाते हैं और बांस की खपची चारों तरफ बांध दें और जब खपच्ची बांधचुकें तो फस्द खोलें जो कोई कार्य वर्जित नहो जिससे सूजन नहो और हलके जुलाव से तबियत को नर्म करे और खाने को मुर्गे के बच्चे का शोरवा देवे और ४॥ माशे गिले इरमनी जुलाब के साथ खाना टूटी हड्डी को सीधा करता है और मोमयाई फारसी भी अधिक गुणकारी है। खपच्चियों को दो वा तीन दिनसे पहले न खोलें परन्तु जो दर्द विशेष हो पट्टीके नीचे लाली अथवा खुजली अधिक होतो उचित है कि चाहे जिस समय खोल डालें और कुछ देरतक हवा में रक्खें जिससे रोगी को चैन मालूम पडे और जो खुजली हो तो गुन गुना पानी उसपर डालें जिससे तेज तरी नष्ट होजाय फिर पट्टियों को गुलाब, गुलरोगन और सिर्के में भिगोकर बांधे इस से अंग दृढ होजाते हैं और जो फोकों से जलन और खुजली उत्पन्न हो अथवा खाल और मांस के रंग बदल-जाने और उभर आने से बन्धन खोलने की आवश्यकता होती है ऐसी दशा में खपच्चियां न बांधे केवल पट्टी और गद्दी बांधदें और सात दिनतक दर्द और कोई दूसरा रोग उत्पन्न नहो और ऊपरी गर्मी भी न हो तो पट्टी को पहले की अपेक्षा कुछ विशेष कसकर बांधे क्योंकि कसकर बांधना टूटे अंग को हटने नहीं देता जो खुजली और सूजन का भय नहो तो खपच्चियों को न खोलें परन्तु चार पांच दिन के पीछे टूटी हुई हड्डियों के जोडने वाले लेप लगावें और चेपदार गाढे भोजन देवे जिससे टूटा अंग दृढ होजाय

पर तीन लपेटे देकर ऊपर की तरफ लपेटतेहुए जाय और दूसरी पट्टी लेकर फिर टूटने की जगह चार पेच देकर वहां से नीचे की तरफ लपेटते हुए आवें और जो हड्डी लम्बाई में टूटी है तो तीसरी पट्टी भी इसतरह बांधे कि ऊपर की तरफ जहां पहली पट्टीकासिराहैवहां से लपेटना आरम्भ करे और नीच की तरफ जहां दूसरी पट्टीसमाप्त हुई है वहां करें और जहां टूटी है पट्टी को उसी जगह दृढ़बांधे और उसके सिवाय हलकी बांधे जिससे भोजन न रुकजाय और पट्टी कहीं नीची नहो तथा उसकी चौड़ाई टूटे हुए अग के समान चाहिये जैसे कि छाती और पसली की पट्टी १२ अंगुल चौड़ी, बाहु और पिंडलीकी पट्टी तीन अंगुल की होवे पट्टी बांधने के पीछे जिस जगह गढ्ढा रहजाय वहां ऐसी प्रकार पर गद्दियां रक्खें कि सम्पूर्ण अंग बराबर होजाय और कहीं ऊंचा नीचा न रहे और पट्टी और गद्दी नर्म और पवित्र हो जिससे अंग को कष्ट न पहुंचे और गद्दियां रखकर तखता बांध दें ये तखते अनार वा बेद की लकड़ी के समान बनाये जाते हैं और बांस की खपची चारों तरफ बांध दें और जब खपच्ची बांधचुकें तो फस्द खोलें जो कोई कार्य वर्जित नहो जिससे सूजन नहो और हलके जुलाब से तबियत को नर्म करें और खाने को मुर्गे के बच्चे का शोरवा देवें और ४॥ माशे गिले इरमनी जुलाब के साथ खाना टूटी हड्डी को सीधा करता है और मोमयाई फारसी भी अधिक गुणकारी है। खपच्चियों को दो वा तीन दिनमें पहले न खोलें परन्तु जो दर्द विशेष हो पट्टीके नीचे लाली अथवा खुजली अधिक होतो उचित है कि चाहे जिस समय खोल डालें और कुछ देरतक हवा में रक्खें जिससे रोगी को चैन मालूम पड़े और जो खुजली हो तो गुन गुना पानी उसपर डालें जिससे तेज तरी नष्ट होजाय फिर पट्टियों को गुलाब, गुलरोगन और सिर्के में भिगोकर बांधे इस से अंग दृढ़ होजाते हैं और जो फोकों मे जलन और खुजली उत्पन्न हो अथवा खाल और मांस के रंग बदल-जाने और उभर आने से बन्धन खोलने की आवश्यकता होती है ऐसी दशा में खपच्चियां न बांधे केवल पट्टी और गद्दी बांधदें और सात दिनतक दर्द और कोई दूसरा रोग उत्पन्न नहो और ऊपरी गर्मी भी न हो तो पट्टी को पहले की अपेक्षा कुछ विशेष कसकर बांधे क्योंकि कसकर बांधना टूटे अंग को हटने नहीं देता जो खुजली और सूजन का भय नहो तो खपच्चियों को नखोलें परन्तु चार पांच दिन के पीछे टूटी हुई हड्डियों के जोड़ने वाले लेप लगावें और चेपदार गाढ़े भोजन देवें जिससे टूटा अंग दृढ़ होजाय

के टूटजाने का उपाय है उसपर अमल करै और जहां हड्डी के टूटजानेके साथ मांसभी फुटजांय तो कुटेहुए मांसपर पछने देकर खून निकालें जिससे गलने न पावे और जो हड्डी की सूजन के साथ घाव हो तो उसको खुला रक्खें और उसके ओर पास पत्तियां और सपच्चियां बांधे शरह अस्बाब में लिखा है कि घावका मुख न ढकै किन्तु घाव के मुखमें ऊपर एक पट्टी बांधे और टढी करके नीचे की ओर लावे और दूसरी पट्टी नीचे के किनारेपर बांधे और मोडकर ऊपर लेजांय जिससे उसमें दवा पहुंचे और पीव निकलती रहै और पट्टी और गद्दी को बहुत कसकर न बांधे तथा घावके ऊपर पुरानी रुई प्रतिदिनरक्खें जिससे पीले पानीको खींचले और सूजन और हवासे भी बचावे और घाव को प्रतिदिन अथवा तीसरे दिन आवश्यकतानुसार खालीकरे और मरहम तथा बुरकने की दवाओं से घावका इलाज करें और जो सूजन उत्पन्न होने का भय होतो गद्दीको सिर्के और गुलाबमें भिगोकर घावके ओर पास रक्खें जिस से सूजन नहो और इस दशामें मरहम न लगावे मुख्यकर गर्मीमें जिससे सड़-जान का भय नहो और जो बड़ा घाव हो या कहीं ऐसी जगह है कि वहां सपच्चियों का रखना अवश्य है जो घावके दोनों तरफ गद्दी रखकर उसपर सपच्चियां ऐसी तरह पर रक्खें कि घाव का पट्ट न पहुंचे और मरहम उसमें लगके और पीला पानी और पीव उसमेंसे निकलसके फिर एक पट्टी सप-च्चियों पर लपेटदे जिससे मक्खी और ठंढी और गर्म हवा घावमें न लगे और जो घाव से खून बहता हो तो गुल, कुन्दरु गोंद, हीरादूखी गोंद और एलवा मर्दान पीसकर घावपर डालें और जो शरीरमें खून अधिक है तो विरुद्ध ओर में फस्द खोलें वा बन्द बांधदे जिससे खूनका मार्ग दूसरी ओर होजाय और दवा जल्द गुण करे और जो हड्डीके टूटकर टुकडे २ होजांय और खाल को फाडकर बाहर न निकले तथा नीचही रहै तो उसपर हाथ फेरने से ऐसा शब्द हो जैसे हाथके नीचे खशखश के दाने दिलते हैं और ऐसे टूट जाने का यह उपाय है कि प्रथम सरलता और नर्मी से उन टुकडों को उनकी जगह हाथसे बैठावें जिससे बहुत दर्द नहो और जो हड्डीका कोई टुकडा खडा होजाय और दर्दकी अधिकताहो और हाथके जोरसे अपनी जगह न बैठ तो चीरादे फिर जो यह टुकडा हड्डी से अलग होगयाहै तो बाहर निकालले और जो कुछ जुडाहो तो काटदे और जो हड्डीके टुकडे होगयेहैं तो उन सब टुकडोंको बाहर निकालले और फिरघाव और टूटे अंगका उपाय करे (टूटीहुई हड्डीका टुकडाकाटने

के टूटजाने का उपाय है उसपर अमल करे और जहां हड्डी के टूटजानेके सा मांसभी छुटजाय तो कुटेहुए मांसपर पछने देकर खून निकालें जिससे गलने पावे और जो हड्डी की सूजन के साथ घाव हो तो उसको खुला रक्खें औ उसके आर पास पट्टियां और सपच्चियां बांधे शरह अस्वाब में लिखा है कि घावका मुख न ढकें किन्तु घाव के मुखमें ऊपर एक पट्टी बांधे और टढी करके नीचे की ओर लावे और दूसरी पट्टी नीचे के किनारेपर बांधें और मोड़कर ऊपर लेजांय जिसमे उसमें दवा पहुंचे और पीव निकलती रहै और पट्टी और गद्दी को बहुत कसकर न बांधे तथा घावके ऊपर पुरानी रुई प्रतिदिनरक्खे जिससे पीले पानीको खींचले और सूजन और हवासे भी बचावें और घाव को प्रतिदिन अथवा तीसरे दिन आवश्यकतानुसार खालीकरे और मरहम तथा बुरकने की दवाओं से घावका इलाज करें और जो सूजन उत्पन्न होने का भय होतो गद्दीको सिकें और गुलावमें भिगोकर घावके और पास रक्खें जिस से सूजन नहो और इस दशामें मरहम न लगावे मुख्यकर गर्मीमें जिससे सड़जाने का भय नहो और जो बड़ा घाव हो या कहीं ऐसी जगह है कि वहां सपच्चियों का रखना अवश्य है जो घावके दोनों तरफ गद्दी रखकर उसपर सपच्चियां ऐसी तरह पर रक्खें कि घाव का कष्ट न पहुंचे और मरहम उसमें लगके और पीला पानी और पीव उसमेंसे निकलसके फिर एक पट्टी सपच्चियों पर लपेटदे जिससे मक्खी और ठंडी और गर्म हवा घावमें न लगे और जो घाव से खून बहता हो तो गूल, कुन्दरु गोंद, हीरादूखी गोंद और एलवा महीन पीसकर घावपर डालें और जो शरीरमें खून अधिक है तो विरुद्ध और में फस्द खोलें या बन्ध बांधदे जिससे खूनका मार्ग दूसरी ओर होजाय और दवा जल्द गुण करे और जो हड्डीके टूटकर टुकड़े २ होजांय और खाल को फाड़कर बाहर न निकले तथा नीचही रहे तो उसपर हाथ फेरने से ऐसा शब्द हो जैसे हाथके नीचे खशखश के दाने हिलते हैं और ऐसे टूट जाने का यह उपाय है कि प्रथम सरलता और नर्मी से उन टुकड़ों को उनकी जगह हाथसे बैठावें जिससे बहुत दर्द नहो और जो हड्डीका कोई टुकड़ा खड़ा होजाय और दर्दकी अधिकताहो और हाथके जोरसे अपनी जगह न बैठ तो चीरादे फिर जो यह टुकड़ा हड्डी से अलग होगयाहै तो बाहर निकाललें और जो कुछ जुड़ाहो तो काटदे और जो हड्डीके टुकड़े होगयेहैं तो उन सब टुकड़ोंको बाहर निकाललें और फिरघाव और टूटेअंगका उपाय करें (टूटीहुई हड्डीका टुकड़ाकाटने

चेपदार हो नियत कीगई है (लाभ) कभी ऐसा होता है कि टूटी हड्डी के जुड़जाने से हड्डीपर गांठ और कठोरता बाकी रहती है और इस गांठ से कष्ट होताहै और डोलने फिरने में बाधक होती है मुख्यकर जो जोड़ोंके निकट हो और जो उससे कष्ट न हो तब भी इस कारण से कि बुरा मालूम होता है उसका नष्ट करना अवश्य है (इलाज) जो वह गठीला और कठोर न हुआ हो और उसको उत्पन्न हुए थोड़ाही समय व्यतीत हुआ हो तो एक शीशे का पत्तर या अजीर्णकारक दवा उस पर रखकर और पट्टी कसकर बांधदें जिससे नष्ट होजाय और जो कठोर और बहुत दिनों का हो गया हो तो चर्बी, गूदा, तेल और मरहम कठोरता पर रक्खे जिससे गांठ नर्म होजाय और गर्म पानी से तरेड़ादे यह लेप नर्म करता है हुनगी, गन्दा बिरोजा, जावशीर, छरीला, गूगल, गर्म तेलों में मिलाकर बतक और मुर्गाबी चर्बी घोलकर नांदकी दशाम मिलाकर लगावे और तेलकी जगह उनकी गाद मिलावे तो अतिउत्तमहै मुख्यकर जैतूनकी गाद [लाभ] जो बांधने के समय हड्डी में मरोड़ रहजाय अथवा टेढ़ी होजाय और उसको सीधा बनाना चाहै तो यह उपाय है कि प्रथम नर्म दवा इस जगह मले जिससे नर्म होजाय और दुम्बेकी चकती जैतून की गाद को मलना और भपारे में बैठाना और दुम्बे की चकती पिघलाकर और पिस्ता की मिंगी, बादाम और बिनौला की मिंगी और बेद अंजीर के बीज की मिंगीका लेपकरना गांठको नर्म करता है जब नर्म होजाय तब हड्डी को तोड़ दे और सीधा करके बांध दे और जो घाव भी हो तो ऊपर की रीति से उसको भी रक्षा रक्खे। बहुधा ऐसा होता है कि जब अंग नर्म होजाय जैसाकि चाहिये तो खींचने पर अपने आप जगह पर आजाताहै और तोड़ना नहीं पड़ता और यह बहुत अच्छाहै और जबतक इस विधिसे हड्डी सीधी हो तोड़ने का इरादा न करे क्योंकि तोड़नेमें बड़ी विपत्ति है और जब तोड़कर बांधे तो सावधानी करे फिर टेढ़ी नहो।

हड्डी के अपनी जगह से हटजाने का वर्णन

यह ऐसा रोग है कि हड्डी जिस गढ़े में जोड़ के द्वारा दूसरी हड्डी से मिली हुई है उस में से बिलकुल निकल आवे। इस में अंग की सूरत बदल कर जोड़ों में गढ़ा पड़ जाता है और इस जोड़ की गति जाती रहती है परन्तु जो बाहु की हड्डी अपने जोड़ से हटजाय तो उसका यह जानना कठिन है क्योंकि इस में अच्छी तरह अन्तर मालूम नहीं होता क्योंकि जब बाहु का सिर जोड़ से

चेपदार हो निपत फीगई है (लाभ) कभी ऐसा होता है कि टूटी हड्डी के जुटजाने से हड्डीपर गांठ और कठोरता बाकी रहती है और इस गांठ से कष्ट होताहै और डोलने फिरने में बाधक होती है मुख्यकर जो जोड़ोंके निकट हो और जो उससे कष्ट न हो तब भी इस कारण से कि बुरा मालूम होता है उसका नष्ट करना अवश्य है (इलाज) जो वह गठीला और कठोर न हुआ हो और उसको उत्पन्न हुए थोड़ाही समय व्यतीत हुआ हो तो एक शीशे का पतर या अजीर्णकारक दवा उस पर रखकर और पट्टी कसकर बांधदें जिससे नष्ट नहो और जो कठोर और बहुत दिनों का हो गया हो तो चर्बी, गूदा, तेल और मरहम कठोरता पर रक्खें जिससे गांठ नर्म होजाय और गर्म पानी से तरेड़ादें यह लेप नर्म करता है कुनी, गन्दा बिरोजा, जावशीर, छरीला, गूगल, गर्म तेलों में मिलाकर बतक और मुर्गाबी चर्बी घोलकर नांदकी दशाम मिलाकर लगावे और तेलकी जगह उनकी गाद मिलावे तो अतिउत्तमहै मुख्यकर जैतूनकी गाद [लाभ] जो बांधने के समय हड्डी म मरोड रहजाय अथवा टेढ़ी होजाय और उसको सीधा बनाना चाहैं तो यह उपाय है कि प्रथम नर्म दवा इस जगह मलें जिससे नर्म होजाय और दुम्बेकी चकती जैतून की गाद को मलना और धूप में बैठाना और दुम्बे की चकती पिघलाकर और पिस्ता की मिंगी, बादाम और बिनौला की मिंगी और बेद अजीर के बीज की मिंगीका लेपकरना गांठको नर्म करता है जब नर्म होजाय तब हड्डी को तोड़ दें और सीधा करके बांध दें और जो घाव भी हो तो ऊपर की रीति से उसको भी रक्षा रक्खे। बहुधा ऐसा होता है कि जब अंग नर्म होजाय जैसाकि चाहिये तो खींचने पर अपने आप जगह पर आजाताहै और तोड़ना नहीं पड़ता और यह बहुत अच्छाहै और जबतक इस विधिसे हड्डी सीधी हो तोड़ने का इरादा न करें क्योंकि तोड़नेमें बड़ी विपत्ति है और जब तोड़कर चाहें तो सावधानी करें फिर टेढ़ी नहो।

हड्डी के अपनी जगह से हटजाने का वर्णन

यह ऐसा रोग है कि हड्डी जिस गढ़े म जोड़ के द्वारा दूसरी हड्डी से मिली हुई है उस में से बिलकुल निकल आवे। इस में अंग की सूरत बदल कर जोड़ों में गढ़ा पड़ जाता है और इस जोड़ की गति जाती रहती है परन्तु जो बाहु की हड्डी अपने जोड़ से हटजाय तो उसका यह जानना कठिन है क्योंकि इस में अच्छी तरह अन्तर प्रगट नहीं होता क्योंकि जब बाहु का सिर जोड़ म

जगहपर लाने में देर न करै लाभ जब कि हड्डी के टूटजाने की और अपने जोड के घट बढ जाने की दशा में मांस और खालभी अलग होजाय तो उस खुले मांस और खाल को पाट डाल और जैतुन का तेल गरम करके वहांडाल दें जिससे हड्डी को न बिगाडे ॥

❀ जावडे के उतर जाने का वर्णन ❀

इसका यह चिन्ह है कि मुख खुला रहजाय और दांत आपसमें न मिलें। (इलाज) एक मनुष्य रोगी का सिर पकडले और मुख यद्यपि खुला हुआहो परन्तु अधिक खोलें और जवडा सीधा खास हकीम जबडे को पकड कर धीरे २ हिलावें और दाहने बायें लाकर उसको जगह पर बैठावें और हकीम रोगी के पीछे बैठे और जावडे को अपनी तरफ खींचकर ऊपर लेजाय और उसकी जगह पर बैठावें और हम्माम में लेजाय और बनफशा का तेल या बादाम मलें और गरम पानी डालें जिससे वह अंग नरम होजाय फिर उसको उसकी जगह पर लावें।

❀ गले की हँसली के उतर जाने का वर्णन ❀

उसका यह चिन्ह है कि उस स्थान में गढहा पडजाय और हाथ शिर पर न पहुंच सकै इलाज हाथ से ठीक करके उसकी जगह पर बैठाकर बांधदें।

❀ मूढा के उतर जाने का वर्णन ❀

यह ऐसा जोड है कि उसका उतरआना और चढ जाना सहज होता है और चिन्ह यह है कि जो उसको ढूढ तो बगल में एक गोल चीज और उ-भरी हुई मालूम हो और कन्धे का शिर टेढा होजाय और दूसरे कन्धे के वि-रुद्ध दिखाई दे और उस हाथ की कोहनी पसली से दूर रहै और पसली तक न पहुचे न ऊपर की तरफ जासके (इलाज) हकीम उसके हाथ और भुजा को पकड कर दूसरे हाथ की दोनों बीचकी उंगलियां बगल में डा-लकर बाजू की हड्डी का जोर से उठावे कि जगह [illegible]

के बनातेही हिम्मत करके अपना हाथ [illegible] के द्वारा दूसरी हड्डी से मिला कर बैठावे तो तुरत जगह पर आजाता है [illegible] में अंग की सूरत बदल कर जोडों सोच पैदा होगया है तो हम्माम में लेजा[illegible] जाती रहती है परन्तु जो बाहु [illegible] जिससे नरम होजाय फिर उसको [illegible] यह जानना कठिन है क्योंकि हम म [illegible] का एक गोला [illegible] होता क्योंकि जब बाहु का शिर जोड से

जगहपर लाने में देर न करै लाभ जब कि हड्डी के टूटजाने की और अपन जोड़ के घट बढ जाने की दशा में मांस और खालभी अलग होजाय तो उस खुले मांस और खाल को याट डाल और जैतून का तेल गरम करके नहाराग दें जिससे हड्डी को न बिगाडे ॥

❀ जावडे के उतर जाने का वर्णन ❀

इसका यह चिन्ह है कि मुख खुला रहजाय और दांत आपसमें न मिलें। (इलाज) एक मनुष्य रोगी का सिर पकड़ले और मुख यद्यपि खुला हुआहो परन्तु अधिक खोलें और जबडा सीधा स्वस्थ हकीम जबडे को पकड़ कर धीरे २ हिलावें और दाहने बायें लाकर उसको जगह पर बैठावें और हकीम रोगी के पीछे बैठे और जावडे को अपनी तरफ खींचकर ऊपर लेजाय और उसकी जगह पर बैठावे और हम्माम में लेजाय और बनफशा का तेल या बादाम मलें और गरम पानी डालें जिससे वह अंग नरम होजाय फिर उसको उसकी जगह पर लावे।

❀ गले की हँसली के उतर जाने का वर्णन ❀

उसका यह चिन्ह है कि उस स्थान में गढहा पडजाय और हाथ शिर पर न पहुंच सके इलाज हाथ से ठीक करके उसकी जगह पर बैठाकर बांधें।

❀ मूढा के उतर जाने का वर्णन ❀

यह एसा जोड है कि उसका उतरआना और चढ जाना सहज होता है और चिन्ह यह है कि जो उसको टूंढ तो बगल में एक गोल चीज और उभरी हुई मालूम हो और कन्धे का शिर टेढा होजाय और दूसरे कन्धे के विरुद्ध दिखाई दे और उस हाथ की कोहनी पसली से दूर रहे और पसली तक न पहुचे न ऊपर की तरफ जासके (इलाज) हकीम उसके हाथ और भुजा को पकड कर दूसरे हाथ की दोनों बीचकी उंगलियां बगल म डा-ल्कर जोड की हड्डी का जोर म बठावे कि जगह [illegible]

के उनातेर हिम्मत करके अपना हाथ [illegible] के द्वारा दूसरी हड्डी से मिला पर बैठावे तो तुरत जगह पर आजाता [illegible] में अंग की सूरत बदल कर जोडों तोड का होगया है तो हम्माम में लेजा[illegible] जाती रहती है परन्तु जो बादू में। जिससे नरम होजाय फिर उसको [illegible] यह जानना कठिन है क्योंकि इस म मस्तू का एक गोला बन[illegible] होता क्योंकि जब बादू का गिर जाद में

और उस निवाड को पिंडली और जांघपर बांधे और दूसरा सिरा कन्धे पर रखकर पीठ की तरफ से बगल में लावें और बांधदें जिस से पांव न खिसे और जांघ का सिरा जगह से न हटे ॥

घुटने के उतर जाने का वर्णन ।

(इलाज) रोगी को कुरसी पर बिठा कर उस की जांघ पकड कर थामें और दूसरा आदमी उस की बगलों में हाथ डालकर ठहराये रहै और एक और आदमी उस की पिंडली को पकड कर खींचे और वह दोनों आदमी उस को पकड कर ऊपर की तरफ खींचते रहैं और जब हड्डी अपनी जगह पर बैठजाय तो उसी समय उस को बांध कर लेप करै ॥

टखने के उतर जाने का वर्णन

(इलाज) खींचकर जगह पर बैठावे और जो अपनी जगह न आसके तो एक खूटी धरती पर गाड दें और रोगी को एसी तरह पर चित लिटावें कि यह लकडी की खूटी दोनों जांघों के मध्य में रहे और उस लकडी पर कोई मोटासा कपडा लपट दें कि जब पांव को खीचने लगे तो उस लकडी से चढ्ढे में कष्ट न पहुंचे फिर उसका पांव पकडकर बहुत जोर से खींचे और एक आदमी उसकी टांग खीचे रहै जिससे जगह पर आजाय फिर लेप करके बांधदें पांव की उगलियां के जोड हाथकी उगलियों की तरह खींचकर अपनी जगह पर बैठाये जाते हैं ।

हड्डी के जोडसे निकलजाने का वर्णन

जहांसे हड्डी निकलतीहै वहां गडहा पडजाता है और दूसरी तरफ ऊंचा होजाता है (इलाज) जो हड्डी अपनी जगह से कम निकली है तो तेल मलैं और मौलसरी के पत्ते कूटकर उसपर बांधदे और मुगास, खितमी, अंड की जड़ में मिलाकर लेप करै और जो अधिक निकल आवे तो बलवान् दवाओं का लेप करै जैसे मोमज के पत्ता, मकू के पत्ता बेद के पत्ता, हुक, गुलाब के फूल, गिलेइरमनी, अकाकिया, खितमी, मूंग, अकलीलुलमलिक, चन्दनागर, और जो सूजन भी उत्पन्न हो तो मूंग, अनार के फूल' अकाकिया, सुपारी' मुगास और अंड की सफेदी में मिलाकर लेप करै ॥

हड्डी के सुस्त होने का वर्णन

इस रोग में हड्डी मोच, साल और मथन में दर्द हुआ करता है परन्तु हड्डी

और उस निवाड को पिंडली और जांघपर बांधे और दूसरा सिरा कन्धे पर रखकर पीठ की तरफ से बगल में लावें और बांधदें जिस से पांव न खिसे और जांघ का सिरा जगह से न हटे ॥

घुटने के उतर जाने का वर्णन ।

(इलाज) रोगी को कुरसी पर बिठा कर उस की जांघ पकड़ कर थामें और दूसरा आदमी उस की बगलों में हाथ डालकर ठहराये रहे और एक और आदमी उस की पिंडली को पकड़ कर खैंचे और वह दोनों आदमी उस को पकड़ कर ऊपर की तरफ खींचते रहें और जब हड्डी अपनी जगह पर बैठजाय तो उसी समय उस को बांध कर लेप करे ॥

टखने के उतर जाने का वर्णन

(इलाज) खींचकर जगह पर बैठावे और जो अपनी जगह न आसके तो एक खूंटी धरती पर गाड़ दें और रोगी को ऐसी तरह पर चित लिटावें कि वह लकड़ी की खूंटी दोनों जांघों के मध्य में रहे और उस लकड़ी पर कोई मोटासा कपड़ा लपेट दे कि जब पांव को खींचने लगे तो उस लकड़ी से चड्ढे में कष्ट न पहुंचे फिर उसका पांव पकड़कर बहुत जोर से खैंचे और एक आदमी उसकी टांग खींचे रहे जिससे जगह पर आजाय फिर लेप करके बांधदें पांव की उंगलियों के जोड़ हाथकी उंगलियों की तरह खींचकर अपनी जगह पर बैठाये जाते हैं ।

हड्डी के जोड़से निकलजाने का वर्णन

जहांसे हड्डी निकलतीहै वहां गढ़हा पड़जाता है और दूसरी तरफ ऊंचा होजाता है (इलाज) जो हड्डी अपनी जगह से कम निकली है तो तेल मलें और मौलसरी के पत्ते कूटकर उसपर बांधदें और मुमास, सितमी, अंडे की जर्दी में मिलाकर लेप करें और जो अधिक निकल आवें तो बलवान् दवाओं का लेप करें जैसे गोखरू के पत्ता, गेहूं के पत्ता बेर के पत्ता, सुक, गुलाब के फूल, गिलेइरमनी, अकाकिया, सितमी, मूंग, अकलीलुल्मलिक, सन्दलागाज, और जो सूजन भी उत्पन्न हो तो मूंग, अनार के फूल अकाकिया, सुपारी मुमास और अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करें ॥

हड्डी के सुस्त होने का वर्णन

इस रोग में हड्डी सोस, लाल और पवन में दर्द हुआ करता है परन्तु हड्डी

खावैं जिससे विशेष भोजन उस विष पर बलवान् हो और कदाचित् वमन हो जाय क्योंकि आमाशय भरा हुआ है और ये उक्त उपाय सब प्रकार के विषों में काम आते हैं और जब विष का भेद मालूम होजाय तो उसके विरुद्ध उपाय करें जो विष तीक्ष्ण हो तो कपूर गुलाब और धनियां आदि ठंढी चीजें दें और जो नशे का है तो गर्म चीजें जैसे हींग शराब में घुली हुई और लहसन आदि से इलाज करें इस बात को कि कौनसा विष खाया है कई रीतों से पहचान सकते हैं (१) मुखकी गन्ध पर ध्यान दें क्योंकि बहुधा ऐसा होता है कि उसकी गन्ध मुख से आया करती है (२) वमन को देखें अभिप्राय यह है कि जो कुछ खाया है और उसपर विशेष काल न व्यतीत हुआ हो तो वह वमन में निकल आता है और वमन की गन्ध से भी पाया जाता है (३) चिन्हों की तरफ देखें जैसे जो जलन, फटाव और मरोड़ा उत्पन्न हो तो जानना चाहिये कि हरताल अथवा माराहुआ पारा तथा उनके समान कोई तेज चीज है और जो भड़काव प्यास और मुखपर लाली और आंखों में और मुख में पीलापन और पसीना की अधिकता उत्पन्न हो तो जानलें कि कोई चीज गर्म और खुश्की खाई है जैसे फरफयून आदि और जो नींद आवें और अंगों में सुन्नता और शरीर ,जीभ और हाथ पावों में भारीपन मालूम हो तो कोई चीज सर्द छेदक सुस्त और नशे वाली है जैसे अफीम और भांग आदि और जो शक्ति नष्ट होजाय और अचेतता ठंढा पसीना, और श्वास में न्यूनता हो तो मालूम हो सक्ता है कि विष मृत्युकारक है उसका गुण मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध है (लाभ) जब रोगी अचेत होजाय और आंख का ढेला उलट जाय और आंख की स्याही विशेष होजाय तो उस समय बचने की आशा नहीं होती और दवा लाभ नहीं करती और ऐसेही जब कि आंखें लाल हों जीभ बाहर निकल आवे, नाड़ी जाती रहे और ठंढा पसीना बहे तो यह भी निकम्मी दशा है और जब तक यह दशा न हो तब तक इलाज करता रहे विष की विशेष हानि एक अंग में अधिक होती है इससे उसी पर विशेष ध्यान देवे जैसे जो पेट में नीचे की तरफ घबराहट मालूम हो तो सलाई अथवा जुलाब से तबियत को नर्म करदें और जो आमाशय में हो तो नर्म दवाओं से तबियत को हलका करें और जो धौलिया होजाय तो उचित दवा और शर्बत देवें और जो पागलपन तथा अचेतता हो तो जानलें कि दिल में हानि पहुंची है उसी का इलाज करें और जो वायटा आवे तो दिमाग में हानि है

वावें जिससे विशेष भोजन उस विष पर बलवान् हो और कदाचित् वमन हो जाय क्योंकि आमाशय भरा हुआ है और ये उक्त उपाय सब प्रकार के विषों में काम आते है और जब विष का भेद मालूम होजाय तो उसके विरुद्ध उपाय करें जो विष तीक्ष्ण हो तो कपूर गुलाब और धनियाँ आदि ठंढी चीजें दें और जो नशे का है तो गर्म चीजें जैसे हींग शराब में घुली हुई और लहसन आदि से इलाज करें इस बात को कि कौनसा विष खाया है कई रीतों से पहचान सकते है (१) मुखकी गन्ध पर ध्यान दें क्योंकि बहुधा ऐसा होता है कि उसकी गन्ध मुख से आया करती है (२) वमन को देखें अभिप्राय यह है कि जो कुछ खाया है और उसपर विशेष काल न व्यतीत हुआ हो तो वह वमन में निकल आता है और वमन की गन्ध से भी पाया जाता है (३) चिन्हों की तरफ देखें जैसे जो जलन, दबाव और मरोड़ा उत्पन्न हो तो जानना चाहिये कि हरताल अथवा मराहुआ पारा तथा उनके समान कोई तेज चीज है और जो भड़वाव प्यास और मुखपर लाली और आंखों में और मुख में पीलापन और पसीना की अधिकता उत्पन्न हो तो जानलें कि कोई चीज गर्म और रूखी खाई है जैसे फरफयून आदि और जो नींद आवे और अंगों में सुन्नता और शरीर जीभ और हाथ पावों में भारीपन मालूम हो तो कोई चीज सर्द रूक्ष खुश्क और नशे वाली है जैसे अफीम और भांग आदि और जो शक्ति नष्ट होजाय और अचेतता ठंढा पसीना, और श्वास में न्यूनता हो तो मालूम हो सक्ता है कि विष मृत्युकारक है उसका गुण मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध है (लाभ) जब रोगी अचेत होजाय और आंख का ढेला उलट जाय और आंख की स्याही विशेष होजाय तो उस समय बचने की आशा नहीं होती और दवा लाभ नहीं करती और ऐसेही जब कि आंखें लाल हों जीभ बाहर निकल आवे, नाड़ी जाती रहे और ठंढा पसीना बहे तो यह भी निकम्मी दशा है और जब तक यह दशा न हो तब तक इलाज करता रहे विष की विशेष हानि एक अंग में अधिक होती है इससे रोगी पर विशेष ध्यान देवे जैसे जो पेट में नीचे की तरफ घबराहट मालूम हो तो सलाई अथवा जुलाब से तबियत को नर्म करदें और जो आमाशय में हो तो नर्म दवाओं से तबियत को हलका करदें और जो पीलिया होजाय तो उचित दवा और शर्बत देव और जो पागलपन तथा अचेतता हो तो जानलें कि दिल में हानि पहुंची है उसी का इलाज करें और जो वायटा आवे तो दिमाग में हानि है

आमाशय में बोझ और मूत्र को बन्द करता है (इलाज) शहद का पानी और बूरा मिलाकर वमन करावे और उन्हीं से हुकना करे और १०॥ माशे मूठ शहद के पानी के साथ कई बार करके । दें सूष बुज्र का कुआब शराब और बल लाभदायक है और दिलकी पुष्टिता दवा और उचित भोजनों से योग्य है और जो कुछ मुर्दासन के खाने के विषय में वर्णन किया जायगा लाभदायक है और जीता पारा कान में चलाजाय तो वांयटे, खिचाव, सिरोप दर्द, हीन बुद्धि और उस ओर में विशेष बोझ उत्पन्न करता है और बहुधा सकता और मिर्गी भी होजाती है इसके निकालने का यह उपाय है रांगा कान में लेजाय जिससे पारा इसपर चिपटजाय फिर बाहर निकालले (डाम) तारीफ शरीफी में लिखा है कि जिस मनुष्यनें अधकच्चा पारा खाया हो और उसके शरीरमें फफोला और फुन्सियां प्रगटहों और कन्चेदोट व सिसिहा उत्पन्न हो तो एकपेड़ लौलकी ज्योंकात्यों जड़समेत उखाड़कर टुकड़े २ करके किसी बड़े बरतन में बहुत पानी के साथ औटावकर छानकर निरन गुरस एकप्याला पीवे फिर आधघड़ी पीछे एक प्याला और पीवे इसीतरह तृष्यानुसार पीतेरहैं और उसदिन भोजन कुछ न करे तो सब पारा पेशाब के मार्ग से निकल आवेगा यह इलाज एकही दिनमें लाभकारी है और जो दूसरे दिनभी आवश्यकता हो तो इसी तरह से करे और मूत्र कांसी अथवा मिट्टी तथा चीनी के बर्तन में करे जिस से पारा दिखाई दे । मुर्दासन के खाने से शरीर सूज जाताहै और मांस का दृढ लोथड़ा ऊपर उत्पन्न होता है और फालिज, मुखमें खुश्की और जीभ, आमाशय तथा आंतों में भारीपन उत्पन्न होताहै और कभी विशारदस्त, आते हैं जिनसे वांयटे और घाव आतेहैं (इलाज) अंजीर सोया और पापड़ी नोन के काढ़े से कईबार वमन करावे और दस्तावर जुवारिश देकर तबियत को नर्म कर इसमें शराब भी विशेष गुणकारी है और १०॥ माशे, हल और ७ माशे सालहड़ शहद अथवा शराब के साथ जारवाण देना लाभदायक है और सौंठका कुल्ला और हम्माम में जाना अथवा दवाओं से पसीना लाना और छारका बढ़ाना लाभदायक है और ३॥ माशे करफस और १॥ माशे हिंगु शराब के साथ दें तो पसीना आताहै और अजमोद के बीज, सन और अफ-सन्तीन प्रत्येक २ माशे लेकर अनारदाने के पानी के साथ देना अथवा शराब व माग देना गुणदायक है । गोग खाने से वही चिन्ह होते हैं जो मुर्दासन से होते हैं और उसका इलाज भी वैसाही है । (मफ्दा) इसके खाने से पेट में

आमाशय में बोझ और मून को बन्द करता है (इलाज) शहद का पानी और बूरा मिलाकर वमन करावे और उन्हीं से हुकना करे और १०॥ माशे मुठ शहद के पानी के साथ कई वार करके । दें दूध बुज़र का लुआब शराब और बल लाभदायक है और दिलकी पुष्टिता दवा और उचित भोजनों से योग्य है और जो कुछ मुर्दासन के खाने के विषय में वर्णन किया जायगा लाभदायक है और जीता पारा कान में चलाजाय तो वायंटे, सिवाय, विशेष दर्द, हीन बुद्धि और उस ओर में विशेष बोझ उत्पन्न करता है और बहुधा सक्ता और मिर्गी भी होजाती है इसके निकालने का यह उपाय है रांगा कान में लेजाय जिससे पारा इसपर चिपटजाय फिर बाहर निकालदे (लामें) तारीफ शरीफी में लिखा है कि जिस मनुष्यनें अधकच्चा पारा खाया हो और उसके शरीरमें फफोला और फुन्सियां प्रगटहों और कन्वेदोट व सिदिदा उत्पन्न हो तो एकपेड लीलका ज्योंकात्यों जडसउखाडकर टुकडे २ करके किसी बडे बरतन में बहुत पानी के साथ औटाकर छानकर निरन्तर एकप्याला पीवै फिर आधघडी पीछे एक प्याला और पीवैं इसीतरह सन्ध्यातक पीतेरहैं और उसदिन भोजन कुछ न करै तो सब पारा पेशाब के मार्ग से निकल आवेगा यह इलाज एकही दिनमें लाभकारी है और जो दूसरे दिनभी आवश्यकता हो तो इसी तरह से कर और मूत्र कांसी अथवा मिट्टी तथा चीनी के बर्तन में करे जिस से पारा दिखाई दे । मुर्दासन के खाने से शरीर सूज जाताहै और मांस का दृढ लोथडा उसपर उत्पन्न होता है और कूलंज, मुखमें खुश्की और जीभ, आमाशय तथा आंता में भारीपन उत्पन्न होताहै और कभी पिशाबदस्त, आते हैं जिनसे वायटे और घाव आतेहै (इलाज) अजीर सोया और पापडी नोन के काढे से कईवार वमन करावें और दस्तावर सनारिश देकर तबियत का नर्म कर इसमें शराब भी विशेष गुणकारी है और १०॥ माशे, हग और ७ माशे मालटह शहद अथवा शराब के साथ गरारा देना लाभदायक है और सोंठका कुल्ला और हम्माम में जाना अथवा दवाओं से पसीना लाना और हरकत बढाना लाभदायक है और ३॥ माशे एरफ्यून और १॥। माशे मिर्च शराब के साथ दें तो पसीना आताहै और अजमोद के बीज, मर और अफ-सन्तीन प्रत्येक ९ माशे लेकर अनार के पानी के साथ देना अथवा शराब व साग देना गुणकारक है । मीग खाने से वही चिन्ह होते हैं जो मुर्दासन से होते हैं और उनका इलाज भी वैसाही है । (सफेदा) इसके खाने से जीभ में

से वमन आवे फिर जौ का दलिया, गेहूं का दलिया और चांवल और तुख्म अलसी के शहद के साथ खवावे और सब्जाजी का पानी और शहद लाभ दायक है और पीछे ताजा दूध मक्खन स्नेहदार चीजें और चिकने रस देना लाभदायक है । सफेद फिटकिरी और लाल फिटकिरी के खाने से खांसी अधिक होती है कि जिससे फेफड़ा दुर्बल और घाव युक्त होजाता है (इलाज) दूध और मक्खन कन्द में मिलाकर दें और शर्बत बनफशा और जौ के आटे का पानी और बादाम का तेल मिलाकर पिवावे और मोटे मुर्गे के अंडे की जर्दी और पालक का कलिया खवावे ॥

विषैली वनस्पातियों का वर्णन ।

बीश (एक विषैली जड़है) तेज और मृत्युकारक है उसका खाना होठ, जीभ में सूजन, श्वास बेहोशी घुमेरी और मिर्गी उत्पन्न करता है और शक्ति को नष्ट करता है और जो मनुष्य इससे मरता है सो विषम ज्वर और फेंफड़े में घाव होजाता है (इलाज) शलगम के बीज से वमन करावे और शराब अधिक पिवावें और तेल बहुत सा दें और कई बार वमन करावे जिस से लाभ प्राप्त हो और शाहतरा का काढ़ा जिस में ३॥ माशे [illegible] अथवा केवल २ रत्ती कस्तूरी घोलें तो लाभदायक है और तिरिया[illegible] [illegible] मसरूदीतूस और फादजहर हैवानी परीक्षा की हुई है और [illegible] [illegible] नाशक यह है, जिसकी जड़ की छाल, और गौ का घी [illegible] [illegible] का मांस देवे (लाभ) कामिलुस्सानाओंमें लिखा है कि शलगम और उस के बीजको पानी में औटाकर घी, जैतून तथा तिली का तेल मिलाकर वमन करावें तो बहुत जल्द लाभदायक है फिर तिरियाक फारूक २। माशे, और शलगम के बीज का काढ़ा अथवा जंगली तुलसी का पानी जिसमें थोड़ा सा मसरूदीतूस मलिदयाहो गौ का घी मिलाकर दें और फादजहर निर्मल पानी में पिसकर और जिसकी जड़की छाल महीन पीसकर तुलसी के पानी के साथ दें । फरबीयून का खाना जीभ में स्याही और मूत्र के द्वारा खून निकालता है और मसाना के छिद्र खाता है (इलाज) जौ का पानी अथवा बनफशा का तेल मिलाकर वमन करावे और मवादके निकालेपीछे कपूर गुलाब के साथ और कपूर की टिकिया मला और कपूर के पानी के साथ [illegible] और खीरा ककड़ी का लुआब, ईसब गोल का लुआब, अनार का पानी [illegible] का शीरा बादाम का तेल, गुलरोगन, ठण्ढा पानी और मकोय का पानी [illegible]

से वमन आवे फिर जौ का दलिया, गेहूं का दलिया और चांवल और कुछ अलसी के शहद के साथ खवावे और सब्जाजी का पानी और शहद लाभ दायक है और पीछे ताजा दूध मक्खन रसदार चीजें और चिकने रस देना लाभदायक है। सफेद फिटकिरी और लाल फिटकिरी के खाने से खांसी अधिक होती है कि जिससे फेफड़ा दुर्बल और घाव युक्त होजाता है (इलाज) दूध और मक्खन कन्द में मिलाकर दें और शर्बत बनफशा और जौ के घाट का पानी और बादाम का तेल मिलाकर पिवावे और मोटे मुर्गे के अंडे की जर्दी और पालक का कलिया खवावे॥

विषैली वनस्पातियों का वर्णन।

बीश (एक विषैली जड़है) तेज और मृत्युकारक है उसका खाना होठ, जीभ में सूजन, श्वास बेहोशी घुमेरी और मिर्गी उत्पन्न करता है और शक्ति को नष्ट करता है और जो मनुष्य इससे मरता है तो विषम ज्वर और फेंफड़े में घाव होजाता है (इलाज) शलगम के बीज से वमन करावे और शराब अधिक पिवावें और तेल बहुत सा दें और कई बार वमन करावें जिस से लाभ प्राप्त हो और शाहदनक का काढ़ा निर्से में ३॥ माशे [illegible] अथवा केवल ३ रत्ती कस्तूरी घोलें तो लाभदायक है और तिरिया[illegible] मसरूदीतूस और फादजहर हैवानी परीक्षा की हुई है और [illegible] पनाशक यह है, जिसकी जड़ की छाल, और गौ का घी [illegible]र मांस का मांस देवे (लाभ) कामिलुस्सनाओंमें लिखा है कि शलगम और इस के बीजको पानी में औटाकर घी, जैतून तथा तिली का तेल पिलाकर वमन करावें तो बहुत जल्द लाभदायक है फिर तिरियाक फारूक ३। माशे, और शलगम के बीज का काढ़ा अथवा जंगली तुलसी का पानी जिसमें थोड़ा सा मसरूदीतूस मलठियाई गौ का घी मिलाकर दें और फादजहर निर्मल पानी में घिसकर और जिसकी जड़की छाल महीन पीसकर तुलसी के पानी के साथ दे। रूकनुस्सम्मल का खाना जीभ में स्याही और मुख के द्वारा खून निकालता है और मस्साम के छिद्र खाता है (इलाज) जौ का पानी अथवा बनफशा का तेल पिलाकर वमन करावे और मवादके निकालनेके पीछे कपूर गुलाब के साथ और कपूर की टिकिया मठा और कपूर के पानी के साथ [illegible] और बिहीदाने का लुआब, ईसब गोल का लुआब, अनार का पानी [illegible] का शीरा बादाम का तेल, गुलरोगन, मरजमका पानी और मकोय कासनी[illegible],

देताहै । मुनक्का पहाडी इसके चिन्ह जरागीह के समान होतेहैं। और इलाज भी यही काता है । तुलसीका खाना जलन मुभन और विषमज्वर उत्पन्न करताहै (इलाज) वमन और हुकने के पीछे तिरियाक लाभदायक है । तर्फसिपा [एक गांव है] और कनेर का खाना गले और आमाशय में जलन और मुखपर लाली और मूत्रको बन्द करदेता है और जीभ में सूजन और गुड-गुडाहट और पेट में अफरा और स्वासका वेग आना और अचेतना उत्पन्न करता है [इलाज] वमनके पीछे ताजे दूध से कुल्ला करें और जो फ दल्पिा में गुलरोगन मिलाकर पिवावें और जुन्दे बेदस्तर सिर्के और शहद में मिलाकर मज्ञवि के अनुसार लाभदायक है और दूध और मक्खन लाभदायकहै । कुटकी सफेद का खाना दस्त और गले में सूजन उत्पन्न करता है और बावलापन मरोडा मूत्र में जलन और पेट में रिहा उत्पन्न करता है [इलाज] दूध और मक्खन तेल और तर पनीर शहद के साथ वें और मोटे मुर्गेका शोरबा घी डालकर देवे और गर्म चना से पेट पर सिकाव करें और शराब लाभदा-यक है । काले जुन्देबेदस्तर का खाना सरसाम लाता है [इलाज] सोया और लिसोढे के काढ़ से वमन करावे और फिर नीबू की शराब और सहठा मठा और गाईका दूध, सेबका पानी, बिहीका पानी और फादजहरहै बिजौरा और नीबू उसके विषको दूर करताहै । जंगली प्याज का खाना भीतरी दर्द,छातीका दर्द और खूनके दस्त उत्पन्न करता है[इलाज,गुर्फस्तशीरा और अजीणगाज्यानखा-खोंका पानी और दूध लाह से बुझा हुआ और मुर्गीका अंडा अधभुनाद और बिही दाने का लुआब लाभदायक है । चांवल की भुसी का खाना जीभ में सूजन आमाशय और आंतों में दर्द उत्पन्न करता है [इलाज] जो कुछ ज-रागीह का उपाय लिखा है उस पर अमल करे । ग्वारपाठे के खाने से निरोध दस्त और घबराहट उत्पन्न होती है [इलाज] वमन करावे और ताजे दूध तथा मक्खन दें और मद तथा मिट्टी का रूप और ठंढे पानी से न्हाना तथा उसका सिर पर डालना तिरियाक कबीर और फादजहर लाभदायक हैं और बिगरे हुए तेल तथा भिंगियों के खाने से फुरहरी अपताना और गर्मी उत्पन्न होती है (इलाज) ताजा दूध मिलाकर वमन करावें और नीबू का शरबत और सिर्का का शीरा पिलावें । बिना कुछ खाए शराब पीना सिर का दर्द-चिन्ता, गलेरी झान और हीनबुद्धि उत्पन्न करताहै और यही शिराप और इठारभी हाजाता है (इलाज) फस्द खोले और वमन निराहार दें और

देताहै । मुनक्का पहाड़ी इसके चिन्ह जरारीह के समान होतेहैं। और इलाज भी उसी कासा है । बुतलीका खाना जलन सूजन और विषमज्वर उत्पन्न करताहै (इलाज) वमन और रुकने के पीछे तिरियाक लाभदायक है । तम्फसिया [एक गाँव है] और कनेर का खाना गले और आमाशय में जलन और मुखपर लाली और मूत्रको बन्द करदेता है और जीभ में सूजन और गुड़-गुड़ाहट और पेट में अफरा और स्वासका तंग आना और सपेतना उत्पन्न करता है [इलाज] वमनके पीछे ताजे दूध से कुल्ला करें और जो कदलिया में गुलरोगन मिलाकर पिलावें और जुन्देबेदस्तर सिर्के और शहद में मिलाकर प्रकृति के अनुसार लाभदायक है और दूध और मक्खन लाभदायकहै । कुटकी सफेद का खाना दस्त और गले में सूजन उत्पन्न करता है और बावलापन मरोड़ा मूत्र में जलन और पेट में रियाह उत्पन्न करता है [इलाज] दूध और मक्खन तेल और तर पनीर शहद के साथ में और मोटे मुर्गेका शोरवा घी डालकर देवे और गर्म चना से पेट पर सिकाव करें और शराब लाभदा-यक है । काले जुन्देबेदस्तर का खाना सरसाम लाता है [इलाज] सोया और लिसोढ़े के काढ़े से वमन करावें और फिर नींबू की शराब और खट्टा मठा और गदहीका दूध, सेवका पानी, बिहीका पानी और फायदा देवें बिजौरा और नींबू उसके विषको दूर करताहै । जंगली प्याज का खाना भीतरी दर्द,छातीका दर्द और खूनके दस्त उत्पन्न करता है[इलाज,सुर्ख़फाशीरा और अमीरबारसियावशा-वोंका पानी और दूध लोहे से बुझा हुआ और मुर्गोंका मठा अबधुनाद और बिही दाने का लुआब लाभदायक है । चांवल की भुसी का खाना जीभ में सूजन आमाशय और आंतों में दर्द उत्पन्न करता है [इलाज] जो कुछ ज-रारीह का उपाय लिखा है उस पर अमल करे । ग्वारपाठे के खाने से निरोध दस्त और घबराहट उत्पन्न होती है [इलाज] वमन करावें और ताजा दूध तथा मक्खन दें और मद तथा बिही का रुब्ब और ठंढे पानी से नहाना तथा उसका सिर पर डालना तिरियाक फारूक और फादजहर लाभदायक है और बिगड़े हुए तेल तथा मिंगियों के खाने से फुरहरी आवना और गर्मी उत्पन्न होती है (इलाज) ताजा दूध पिलाकर वमन करावें और नींबू का शर्बत और सफों का शीरा पिलावें । बिना कुछ खाये शराब पीना सिर का दर्द-चिन्ता, गलेरी छान और हीन बुद्धि उत्पन्न करताहै और बनी विचार और इसकी हालता है (इलाज) फस्द खोलें और वमन दिलावन दें और

और गुलाब में कुछ सिरका मिलाकर सिर पर रक्खें और अफसतीन औ सातर का काढा पिलावे और तिरियाक तथा दूध लाभदायक है और मां के खानेसे जीभमें ढीलापन, श्वासमें तगी, बुद्धिहीनता, बकबाद, तथा सु जल उत्पन्न होती है [इलाज] वमन कराके दूध और अजीर का काढा तथ बादाम का तेल और मक्खन तथा शराब और ठंढा तिरियाक मजीरनिया का अधिक खाना घुमेरी उठते बैठते आंखों के सामने अधेरा आवाज का बैठना, और गहरी नींद लाताहै और सम्पूर्ण शरीर में धनियों की गन्धि आती है पावभर धनियां अथवा उसका पानी १४० माशे सर्दी पहुचने के कारण मृत्युकारक है [इलाज] सोया के काढे में पापडी नोंन, जैतून का तेल अथवा सौसन का तेल करदें पीछे मुर्गोके अण्डे की अधभुनी जर्दी, मिर्च और नमक मिलाकर और मोटे मुर्गेका मांस दालचीनी और मिर्च मिलाकर खवावे और अगूरी शराब के साथ देना लाभदायक है [लाभ] जो तर धनियां दूसरे सागोंमें मिलाहुआ होता है तो हानि नहीं करता और जो विष में मिलता है तो उसी की तरह मवेश होताहै । ईसबगोल चिन्ता घबराहट, श्वासकी तगी शक्ति हीनता, मन्द नाडी, सुन्न, मूर्छा और खिचाव उत्पन्न करताहै और सब शरीर ठंढा होजाता है (इलाज) गर्म पानी और शहद अथवा सोया और पापडी नोंन का काढा पिवाकर वमन करावे और शराब तिरियाक और मुर्गी के अण्डेकी जर्दी और निर्विसी दें और खुर्फा का शीरा अखरोटकी मिंगी के साथ देना लाभदायकहै । मकोय के खानेसे जीभमें खुश्की हिचकी खूनकी वमन और रहट का सा दस्त उत्पन्न होता है [इलाज] वमन कराके दूध शहत रूमीसौंफ मिलाकर मोटे मुर्गेका मांस और कडवे बादाम का खाना लाभदायक है । कुम्भनी का विशेष खाना गलेमें सूजन और फूलज लाता है और उस के कई भेद है सफेद काली लीली हरी, लाल और सफेद के सिवाय सब बुरी होतीहै । कुम्भनीका खाना श्वास में तगी, ठंढा पसीना, आमाशय और पेटमें अफरा, मरोडा, हिचकी और अचेतता लाताहै (इलाज) मूलीका पानी या उसका काढा पापडीनोंन या साम्हर नोंन में मिलाकरदें जिससे वमन आ-जाय और नमक सिकजबीन में मिलाकर देना भी ऐसाही है और वमन के पीछे केवल शराबही अथवा कांजी अगूर की लकडी की राखके साथ अथवा अजीर गर्म पानीके साथदें और तिरियाक अरबा और सर्जीरनियां, फला-फली और कम्मूनी शराब अथवा तुलसी के साथ जो कुछ मिलजाए खवावें

और गुलाब में कुछ सिरका मिलाकर सिर पर रक्खें और अफसतीन और सातर का काढा पिलावे और तिरियाक तथा दूध लाभदायक है और *भांग* के खानेसे जीभमें ढीलापन, श्वासमें तंगी, बुद्धिहीनता, बकबाद, तथा खुजली उत्पन्न होती है [इलाज] वमन कराके दूध और अंजीर का काढा तथा बादाम का तेल और मक्खन तथा शराब और ठंडा तिरियाक *सजीरनियां* का अधिक खाना घुमेरी उठते बैठते आंखों के सामने अंधेरा आवाज का बैठना, और गहरी नींद लाताहै और सम्पूर्ण शरीर में धनियों की गन्धि आती है पावभर धनियां अथवा उसका पानी १४० माशे सर्दी पहुंचने के कारण मृत्युकारक है [इलाज] सोया के काढे में पापडी नोंन, जैतून का तेल अथवा सौसन का तेल करें पीछे मुर्गीके अण्डे की अधभुनी जर्दी, मिर्च और नमक मिलाकर और मोटे मुर्गेका मांस दालचीनी और मिर्च मिलाकर खवावे और अंगूरी शराब के साथ देना लाभदायक है [लाभ] जो तर धनियां दूसरे सागोंमें मिलाहुआ होता है तो हानि नहीं करता और जो विष में मिलता है तो उसी की तरह प्रवेश होताहै । *ईसबगोल* चिन्ता घबराहट, श्वासकी तंगी शक्ति हीनता, मन्द नाडी, सुन्न, मूर्छा और खिचाव उत्पन्न करताहै और सब शरीर ठंडा होजाता है (इलाज) गर्म पानी और शहद अथवा सोया और पापडी नोंन का काढा पिलाकर वमन करावे और शराब तिरियाक और मुर्गी के अण्डेकी जर्दी और निर्विसी दें और सुर्फा का शीरा अखरोटकी मिंगी के साथ देना लाभदायकहै । *मकोय* के खानेसे जीभमें खुश्की हिचकी खूनकी वमन और रहट का सा दस्त उत्पन्न होता है [इलाज] वमन कराके दूध शहत रूमीसोंफ मिलाकर मोटे मुर्गेका मांस और कडवे बादाम का खाना लाभदायक है । *कुम्भनी* का विशेष खाना गलेमें सूजन और फूलज लाता है और उस के कई भेद है सफेद काली लीली हरी, लाल और सफेद के सिवाय सब बुरी होतीहै । कुम्भनीका खाना श्वास में तंगी, ठंडा पसीना, आमाशय और पेटमें अफरा, मरोडा, हिचकी और अचेतता लाताहै (इलाज) मूलीका पानी या उसका काढा पापडीनोंन या साम्हर नोंन में मिलाकरदें जिससे वमन आजाय और नमक सिकंजबीन में मिलाकर देना भी ऐसाही है और वमन के पीछे केवल शराबही अथवा कांजी अंगूर की लकडी की राखके साथ अथवा अंजीर गर्म पानीके साथदें और तिरियाक अरबा और सजीरनियां, फलाफली और कम्मूनी शराब अथवा तुतली के साथ जो कुछ मिलजाय खवावें

को साफ करें और तिरियाक अफई अलेकुलनतम और रातियांज अथवा सला रस शहद और सनोबर का फल जैतून के तेल में मिलाकर देना लाभदायक है (मैंडक) का खाना शरीरमें सूजन रंगमें लीलापन और पीलापन तथा अचेतना लाता है और बालों और दांतोंको गिराताहै और भूखको नष्ट करता है (इलाज) गर्म पानी से वमन करावें और दस्तावर दवादें और शराब पीना परिश्रम, हम्माम में पसीना लाना, भपारे में बैठना और तेल मलना लाभदायक है और कस्तूरी, दवाउलकिरकम, नागरमोथा और बांसकी जड़ ९ माशे शरावके साथ देना लाभदायक है। पानीके कुत्तेका पित्ता मसूरके दानेके समान एक सप्ताहके पीछे मारडालता है (इलाज) तेल, ताजा दूध, पखान भेद, दालचीनी और खरगोश के पनीर के साथ पीना और बादाम का तेल शरीर में मलना लाभदायकहै। चीते के पित्ते के खाने से पीली और हरी वमन मुखमें कड़वापन और आंखोंमें पीलापन उत्पन्न होताहै (इलाज) तेल और गर्मपानी से वमन करें और यह विष के दूर करनेकी दवा दें गिले मखतूम, हब्बुलगार, तुलसीकेबीज सब भाग समान मूल आधा भाग कूटकर शहद में मिलाकर ४॥ माशे के समान दें और हैजेकासा इलाज करें। सांपके विषकाखाना अचेतता लाता है और इससे बचना कठिन है (इलाज) मक्खनका घी गर्मकरके और तिली का तेलदें फिर गर्म पानी पिलाकर वमनकरावें और विष नाशक तिरियाक कबीर और मसरूदीतूस खवावें और खानेको मासका पानी दें। जानवरोंका पसीना खाना घबराहट, मुखमें पीलापन और सूजन उत्पन्न करताहै और पसीना दुर्गंधित बहता है (इलाज) वमन करावें और तिरियाक तथा गिलेमख्तूम दें और जरावन्द और इन्द्रानी नमक प्रत्येक १॥ माशे गर्म पानीमें मिलाकर खवावै। गौकादूध कभी आमाशयमें निकम्मा और खट्टा होजाता है और अचेतता घुमेरी और आमाशयमें मरोड़ा उत्पन्न करता है और कदाचित् हैजा उत्पन्न करके मारडालता है (इलाज) शहदका पानी मिलाकर वमनकरावें और केवल शराब तथा फलाफली खाना और नार्दैन बादाम तथा मस्तगी का तेल आमाशयपर मलना तथा गुलकन्द और गुलाब लाभदायक है और कभी आमाशय में दूध जमकर बेहोशी और पसीना उत्पन्न करता है (इलाज) पनीर मायार। माशे देकर पुराने सिरके म अथवा बाकलाके दानेके समान हींग और पोदीना का पानी और सिकञ्जबीन अजमोदके बीज का काढ़ा शहदके पानीमें मिलाकर दें फिर शहदका पानी पिलाकर वमन करावें (लाभ) दूध के पहिले वा पीछे

को साफ करें और तिरियाक अफई अलेकुलन्नतम और रातियांज अथवा सला रस शहद और सनोवर का फल जैतून के तेल में मिलाकर देना लाभदायक है (मैंडक) का खाना शरीरमें सूजन रगमें लीलापन और पीलापन तथा अचे तना लाता है और बालों और दांतोंको गिराताहै और भूखको नष्ट करता है (इलाज) गर्म पानी से वमन करावें और दस्तावर दवादें और शराब पीना परिश्रम, हम्माम में पसीना लाना, भपारे में बैठना और तेल मलना लाभदायक है और कस्तूरी, दवाउलकिरकम, नागरमोथा और बांसकी जड़ ९ माशे श- रावके साथ देना लाभदायक है। पानीके कुत्तेका पित्ता मसूरके दानेके समान एक सप्ताहके पीछे मारडालता है (इलाज) तेल, ताजा दूध, पखान भेद, दा लचीनी और खरगोश के पनीर के साथ पीना और बादाम का तेल शरीर में मलना लाभदायक है। चीते के पित्ते के खाने से पीली और हरी वमन मुखमें कड़वापन और आंखोंमें पीलापन उत्पन्न होताहै (इलाज) तेल और गर्मपानी से वमन करें और यह विष के दूर करनेकी दवा दें गिले मखतूम, हब्बुलगार, तुतलीकेबीज सब भाग समान धूल आधा भाग कूटकर शहद में मिलाकर ४॥ माशे के समान दें और हैजेकासा इलाज करें। सांपके विषकाखाना अचेतता लाता है और इससे बचना कठिन है (इलाज) मक्खनका घी गर्मकरके और तिली का तेलदें फिर गर्म पानी पिलाकर वमन करावे और विष नाशक तिरियाक कबीर और मसरूदीतूस खवावें और खानेको मासका पानी दें। जानवरोंका पसीना खाना घबराहट, मुखमें पीलापन और सूजन उत्पन्न करताहै और पसीना दुर्गं- धित बहता है (इलाज) वमन करावें और तिरियाक तथा गिलेमखतूम दें और जरावन्द और इन्द्रानी नमक प्रत्येक १॥ माशे गर्म पानीमें मिलाकर खवावे। गौकादूध कभी आमाशयमें निकम्मा और खट्टा होजाता है और अचेतता घुमेरी और आमाशयमें मरोड़ा उत्पन्न करता है और कदाचित् हैजा उत्पन्न करके मारडालता है (इलाज) शहदका पानी मिलाकर वमन करावें और केवल शराब तथा फलाफली खाना और नार्देन बादाम तथा मन्नगी का तेल आमाशयपर मलना तथा गुलकन्द और गुलाब लाभदायक है और कभी आमाशय में दूध जमकर बेहोशी और पसीना उत्पन्न करता है (इलाज) पनीर मायार। माशे देकर पुराने निर्हिम अथवा बाकलाके दानेके समान हींग और पादीना का पानी और सिकंजबीन अजमोदके बीज का काढ़ा शहदके पानीमें मिलाकर दें फिर शहदका पानी पिलाकर वमन करावें (लाभ) दूध के पहिले वा पीछे

होता है और जो डंक रग पर लगता है तो अचेतता और जो पट्ठे पर लगता है तो मिर्गी और सिर में दर्द उत्पन्न करता है (इलाज) जहां डंक मारा है उसी समय उस जगह से ऊपर बन्ध लगावें और विष को मुखसे अथवा पछनों से खींचे और गर्म पानी से अथवा बाबूना, सूसी, खतमी लकड़ी और तुलसी के काढ़े से उस अंग को धोवें और रीठा मुखमें चबावें और खरल में रगड़ कर उस जगह पर रक्खें और पोदीना और जौं का चून तुलसी के पानी में अथवा गूगल, अलसी के बीज, नमक, अलेकुलवतम और जुन्द बेदस्तर अथवा लहसन कूटकर जैतून के तेल में मिलाकर लेप करें और फरफयून का तेल और अम्बक का तेल मलें और लहसन हींग और अक्कर करा शराब में मिला कर खवावें अथवा ४॥ माशे, हींग ३३॥ माशे, शराब में और तिरियाक अरबा सजरानिया लहसन और एसेही, अखरोट का रुब्ब थोड़ीसी शराब में मिलाकर देना लाभ दायक है और पसीना लाना और हम्माम में जाना लाभदायक है और जो कोई ऐसा उपाय हो कि जिस अगमें काटाहै उसीमें पसीना आवै तो अतिउत्तम है और हम्माम में शराब पीना लाभदायक है और थोड़ा सांभर नमक खाना परीक्षा किया हुआ है और कोई २ कहते हैं कि मूली और खीरा सदाखाय तो बीछूके काटे से हानि नहीं होती सो जहां बीछू अधिक हों वहां मूली और खीरा सदा खाय और जो चीज रोमांचों और मार्गों को खोलें उससे बचे जैसे अजमोद के बीज आदि। एक प्रकार का बीछू जिसको जरारा कहते हैं क्योंकि जब वह चलता है तो उसकी पूंछ धरती पर खिंचती हुई जाती है इसका विष गर्म होता है जिसदिन यह काटता है दर्द कम होता है और दूसरे तीसरे दिन दर्द बढ़जाता है, जीभ सूजजाती है और मूत के बदले खून आता है और अधिक कष्ट, अचेतता, बावलापन, पीलिया और अजीर्ण उत्पन्न करताहै और कदाचित् मारडालता है (इलाज) प्रथम पछनों से चूसे और दागदें फिर फस्द खोलें और जो दाग नहो सकें तो फरफ्यून और जुन्दबेदस्तर उस जगह पर रक्खें और इसके और पास गिलेइरमनी और सिरका का लेप करै और ताजा दूध पीना और सेबकारुब्ब बिहीकारुब्ब, शाहू का शीरा, कासनी का शीरा, ककड़ी खीरा का शीरा, रूमी पौआ का शीरा, और जौ का पानी तलशबून का पानी और सेब का सत्तू ठंडे पानी में मिलाकर और कपूर की टिकिया लाभदायक है और २। माशे, कपूर सेबके पानी के साथ देना बहुतही लाभदायक है औरजो दर्द विशेष हो तो मेवाओं का पानी ठंढा करके और खट्टा मठा दें और तलशबून

होता है और जो डक रग पर लगता है तो अचेतता और जो पठे पर लगता है तो मिर्गी और सिर में दर्द उत्पन्न करता है (इलाज) जहा डक मारा है उसी समय उस जगह से ऊपर बन्ध लगावें और विष को मुखसे अथवा पछनों से खीचे और गर्म पानी से अथवा बाबूना, सुसी, खगाली लकड़ी और तुलसी के काढ़े से उस अग को धोवें और रीठा मुखमें चबावें और खरल में रगड कर उस जगह पर रक्खें और पोदीना और जौं का चून तुलसी क पानी में अथवा गूगल, अलसी के बीज, नमक, अलेकुलवत्तम और जुन्दे बेदस्तर अथवा लहसन कूटकर जैतून के तेल में मिलाकर लेप करें और फरफयून का तेल और जम्बक का तेल मले और लहसन हींग और अकरकरा शराब में मिला कर खावें अथवा ४॥ माशे, हींग ३३॥ माशे, शराब में और तिरियाक अरबा सजरानिया लहसन और एसेही, अखरोट का रुब्ब थोडीसी शराब में मिलाकर देना लाभ दायक है और पसीना लाना और हम्माम में जाना लाभदायकहै और जो कोई एसा उपाय हो कि जिस अगमें काटाहै उसीमें पसीना आवै तो अतिउत्तम है और हम्माम में शराब पीना लाभदायक है और थोड़ा साभर नमक खाना परीक्षा किया हुआ है और कोई २ कहते हैं कि मूली और खीरा सदाखाय तो बीछूके काटे से हानि नहीं होती सो जहां बीछू अधिक हों वहां मूली और खीरा सदा खांय और जो चीज रोमांचों और मार्गों को खोलें उससे बचे जैसे अजमोद के बीज आदि। एक प्रकार का बीछू जिसको जरारा कहते हैं क्योंकि जब वह चलता है तो उसकी पूछ धरती पर खिचती हुई जाती है इसका विष गर्म होता है जिसदिन यह काटता है दर्द कम होता है और दूसरे तीसरे दिन दर्द बढ़जाता है, जीभ सूजजाती है और मूत के बदले खून आता है और अधिक कए, अचेतता, बावलापन, पीलिया और अजीर्ण उत्पन्न करताहै और कदाचित् मारडालता है (इलाज) प्रथम पछनों से चूसे और दागदें फिर फस्द खोलें और जो दाग नहो सकें तो फरफ्यून और जुन्देबेदस्तर उस जगह पर रक्खें और उसके और पास गिलेइरमनी और सिरकाका लेप करै और ताजा दूध पीना और सेवकारुब्ब बिहीकारुब्ब, शाहू का शीरा, कासनी का शीरा, ककड़ी खीरा का शीरा, लम्बी पोआ का शीरा, और जौका पानी तलखादून का पानी और सेव का सत्तू ठडे पानी में मिलाकर और कपूर की टिकिया लाभदायक है और २। माशे, कपूर सबके पानी के साथ देना बहुतही लाभदायक है औरजो दर्द विशेष हो तो मेवाओं का पानी ठंडा करके और खट्टा मठा दें और तमरहिन्द

शरीर में सर्दी और कपकपी आजाती है और जो सफेद काटताह तो दस्त दर्द और खुजली उत्पन्न होती है और जो लकीरदार काटती है तो सुन्नता और शरीर में सुस्ती होजाती है और पीले रंगका जिसपर रुआ होजाता है उसके काटने से विशेष दर्द कपकपी और ठंढा पसीना आता है और पेट फूल जाता है और रोगी मर भी जाता है (इलाज) प्रथम डंक के स्थान को मुख से अथवा पछने से चूसें जिससे विष खिंचआवे फिर गर्म पानी में रक्खें और नमकके पानी का लेप करें और हम्माम में जाना दर्दके ठहरानेमें अधिक लाभदायकहै और उचित यह है कि हरघडी गर्म पानी में रक्खे अथवा अंजीर की लकडी की राख चून और रांग महीन कूटकर गर्म पानी में मिलाकर लेप करें और थूल और नमक अच्छा लेप है और तिरियाकअरबा और सजीरनिया और कालेदाने तथा अजमोद केबीज का चूर्ण अथवा हींग गर्म पानी में मिली हुई लाभदायक है। एक प्रकार की और मकड़ी है जिसके काटने से हाथ पांव ठंडे होजाते हैं और शरीर में रोमांच लिंग में खिचाव और फैलाव तथा पेट में अफरा उत्पन्न होताहै (इलाज) तुतली, नागरमोथा, और कालादाना, शराब में मिलाकर खवावें और तिरियाक का खाना और न्हाने के स्थान में पसीना लाना लाभदायक है और एक और प्रकार की है जो काली होतीहै और उसके पांव छोटे २ होते हैं उसके काटने से खूनी ज्वर और सूजन उत्पन्न होती है और वह जगह काली होजाती है और उसका विष गर्म होता है । (इलाज) कईबार फस्द खोले और मेवाओं के काढ़े से तबियत को नर्म करें और निकम्मे मांस को काट दें फिर इलाज करें । मकड़ी का एक और भेद है जिसको फहद कहतेहैं उस के पांव छोटे २ तथा उसपर सफेद और स्याह बूंदें होती हैं और उसके काटने से खुजली होती है और ठंढा पसीना आता है (इलाज) रसोत, गुलरोगन और सिर्का जिस में अजमोद की जड़ औटाली हो लेप करें (लाभ) कूदने वाली मकड़ी जिसके हाथ पांव लम्बे होते हैं उसके काटने से आमाशय में दर्द तथा मलमूत्र कठिनता से आता है और यह बहुत बुरी और मृत्युकारक है इसका और रतीला का एक इलाज है और रतीला एक जानवर मकड़ी की सूरत का होता है (लाभ) करावादीन शादरी में लिखा है कि दवाउल हलतीत रतीला मकड़ी तथा विषैले जानवरों के काटने में शराब के साथ देवे (विधि) हींग, तुतली, पूक, मिर्च, सब तोल में बराबर कूट पीस कर शहद

शरीर में सर्दी और कपकपी आजाती है और जो सफेद काटतीहै तो दस्त दर्द और खुजली उत्पन्न होती है और जो लकीरदार काटती है तो सुन्नता और शरीर में सुस्ती होजाती है और पीले रंगका जिसपर रुआं होजाता है उसके काटने से विशेष दर्द कपकपी और ठंढा पसीना आता है और पेट फूल जाता है और रोगी मर भी जाता है (इलाज) प्रथम डंक के स्थान को मुख से अथवा पछने से चूसें जिससे विष खिंचआवै फिर गर्म पानी में रक्खें और नमकके पानी का लेप करें और हम्माम में जाना दर्दके ठहरानेमें अधिक लाभदायकहै और उचित यह है कि हरवडी गर्म पानी में रक्खे अथवा अंजीर की लकडी की राख धूल और रांग महीन कूटकर गर्म पानी में मिलाकर लेप करें और धूल और नमक अच्छा लेप है और तिरियाकअरबा और सजीरनिया और कालेदाने तथा अजमोद के बीज का चूर्ण अथवा हींग गर्म पानी में मिली हुई लाभदायक है। एक प्रकार की और मकड़ी है जिसके काटने से हाथ पांव ठंडे होजाते हैं और शरीर में रोमांच लिंग में खिंचाव और फैलाव तथा पेट में अफरा उत्पन्न होताहै (इलाज) तुतली, नागरमोथा, और कालादाना, शराब में मिलाकर खवावें और तिरियाक का खाना और न्हाने के स्थान में पसीना लाना लाभदायक है और एक और प्रकार की है जो काली होतीहै और उसके पांव छोटे २ होते हैं उसके काटने से खूनी ज्वर और सूजन उत्पन्न होती है और वह जगह काली होजाती है और उसका विष गर्म होता है । (इलाज) फईयार फस्द खोले और मेवाओं के काढ़े से तबियत को नर्म करें और निकम्मे मांस को काट दें फिर इलाज करै । मकड़ी का एक और भेद है जिसको फहद कहतेहैं उस के पांव छोटे २ तथा उसपर सफेद और स्याह बूंदें होती हैं और उसके काटने से खुजली होती है और ठंढा पसीना आता है (इलाज) रसोत, गुलरोगन और सिर्का जिस में अजमोद की जड़ औटाली हो लेप करे (लाभ) कूदने वाली मकड़ी जिसके हाथ पांव लम्बे होते हैं उसके काटने से आमाशय में दर्द तथा मलमूत्र कठिनता से आता है और यह बहुत बुरी और मृत्युकारक है इसका और रतीला का एक इलाज है और रतीला एक जानवर मकड़ी की सूरत का होता है (लाभ) करावादीन कादरी में लिखा है कि दवाउल हलतीत रतीला मकड़ी तथा विषैले जानवरों के काटने में शराब के साथ देवे (विधि) हींग, तुतली, धूल, मिर्चे, सब तोल में बराबर कूट पीस कर शहद

मनुष्य के काटने का वर्णन।

भूखे आदमी का काटना बहुत बुरा होता है (इलाज) जैतून और मौम पिघलाकर अथवा अंगूर की लकड़ी की राख सिर्के में मिलाकर अथवा सौसन की जड़ और सिर्का अथवा सौंफकी जड़ की छाल और शहद, अथवा काला मरहम जो गन्दाबिरोजा जैतून, मौम और मुर्गे की चर्बी से बना हो अथवा बाकला का चून और पानी और सिर्का और गुलरौगन तथा प्याज और नमक और शहद जो कुछ इनमें से मिलजाय लेपकरै और जो सूजजाय तो मुर्दासन का लेपकरना विशेष लाभदायक है और सोया के बीज जलाकर और महीन पीसकर अथवा कर्नब की राख और सिर्का और कुछ जैतून का तेल अथवा तिली के तेलका लेपकरना लाभदायक है (लाभ) जिस मनुष्य को बावला कुत्ताकाटै वह भी बावला होजाय तो उचित है कि उसके संग से बचै क्योंकि ऐसे मनुष्य के काटने से भी वही दशा प्राप्त होती है जो बावले कुत्ते के काटने से होती है उसका उपाय वही है जो बावले कुत्ते के लिये लिखा जायगा।

कुत्ते के काटने का वर्णन।

जो बावला नहो तो उसका (इलाज) वही है जो कुछ मनुष्यके काटने में वर्णन किया है प्याज, नमक, शहद पापड़ी नोंन, सिर्का अथवा नमक, प्याज तुलसी, बाकला, कड़वा बादाम और निर्मल शहदका अच्छा लेपहै और इस जगह पर सिर्का मलना अथवा ऊन सिर्के में भिगोकर रखना लाभदायक है और जो सिर्के में थोड़ासा गुलरौगन मिलावै तो अतिउत्तम है और थोड़ा सा पापड़ी नोंन सिर्के में मिलाकर वहां रखकर बांधना और तीन दिनके उपरान्त उसको बदलना और फिर उसी तरह लगाना अधिक लाभदायक है जो यह भयहो कि बावला कुत्ता होगा।

चीते और सिंह आदि का वर्णन।

इनके दांत और पंजे विषसे रहित नहींहैं इससे प्रथम घावकी जगह पछने लगावैं जिससे विषका मवाद बाहर आजाय फिर जरावन्द सौसन की जड़ और शहद का लेपकरै फिर घावको सिर्के से धोवैं और तांबेका चूरा, सौसन की जड़, चांदी का मैल, मोम और जैतून के तेलका मरहम बनाकर लगावैं और इसीसे घावका इलाज करें (लाभ) जो चाह को औटाकर उसके पानी से धोके घावको धोवैं तो उसीसमय अच्छा होजाता है।

नदीका कुत्ता, और मगर और काली मछली का वर्णन।

(इलाज) मवाद के साफ करने और निकालने वाली दवा लगावैं और

मनुष्य के काटने का वर्णन।

भूखे आदमी का काटना बहुत बुरा होता है (इलाज) जैतून और मोम पिघलाकर अथवा अंगूर की लकड़ी की राख सिर्के में मिलाकर अथवा सौसन की जड़ और सिर्का अथवा सौंफकी जड़ की छाल और शहद, अथवा काला मरहम जो गन्दाविरोजा जैतून, मोम और मुर्गे की चर्बी से बना हो अथवा बाकला का चून और पानी और सिर्का और गुलरौगन तथा प्याज और नमक और शहद जो कुछ इनमें से मिलजाय लेपकरै और जो सूजजाय तो मुर्दासन का लेपकरना विशेष लाभदायक है और सोया के बीज जलाकर और महीन पीसकर अथवा कनेव की राख और सिर्का और कुछ जैतून का तेल अथवा तिली के तेलका लेपकरना लाभदायक है (लाभ) जिस मनुष्य को बावला कुत्ताकाटे वह भी बावला होजाय तो उचित है कि उसके संग से बचै क्योंकि ऐसे मनुष्य के काटने से भी वही दशा प्राप्त होती है जो बावले कुत्ते के काटने से होती है उसका उपाय वही है जो बावले कुत्ते के लिये लिखा जायगा।

कुत्ते के काटने का वर्णन।

जो बावला नहो तो उसका (इलाज) वही है जो कुछ मनुष्यके काटने में वर्णन किया है प्याज, नमक, शहद पापड़ी नोन, सिर्का अथवा नमक, प्याज तुतली, बाकला, कड़वा बादाम और निर्मल शहदका अच्छा लेपहै और इस जगह पर सिर्का मलना अथवा उन सिर्के में भिगोकर रखना लाभदायक है और जो सिर्के में थोड़ासा गुलरौगन मिलावै तो अतिउत्तम है और थोड़ा सा पापड़ी नोन सिर्के में मिलाकर वहां रखकर बांधना और तीन दिनके उपरान्त उसको बदलना और फिर उसी तरह लगाना। अधिक लाभदायक है जो यह भयहो कि बावला कुत्ता होगा।

चीते और सिंह आदि का वर्णन।

इनके दांत और पंजे विषसे रहित नहीं हैं इससे प्रथम घावकी जगह पछने लगावैं जिससे विषका मवाद बाहर आजाय फिर जरावन्द सौसन की जड़ और शहद का लेपकरै फिर घावको सिर्के मे धोवैं और तांबेका चूरा, सौसन की जड़, चांदी का मैल, मोम और जैतून के तेलका मरहम बनाकर लगावैं और इसीसे घावका इलाज करैं (लाभ) जो चाह को औटाकर उसके पानी में तेरके घावको धोवें तो उसीसमय अच्छा होजाता है।

नदीका कुत्ता, और मगर और काली मछली का वर्णन।

(इलाज) मवाद के साफ करने और निकालने वाली दवा लगावैं और

को देखता है उसपर दूरसे कूदकर आता है और ... उसको फूकता है और उसके फूकने से भी बडी सूजन और मृत्यु (इलाज) तिरियाक कबीर दें और जो कुछ रतीले के इलाज में लिखा है काम में लावें नहरी और जंगली मेंढक के काटने से नर्म सूजन होती है और उसका तथा ठंढे विषों का एक इलाज है।

कानखजूरे के काटने का वर्णन.

इसके चवालीस पांव दोनों ओर में वाईस २ होते हैं और यह आगे पीछे दोनों ओर चलसकता है और चार अंगुल से बारह अंगुल तक लम्बा होता है। उसके काटने से विशेष दर्द, भय, श्वास में तंगी और मिठाई पर रुचि होती है (इलाज) इसी जानवर को कूटकर उस जगह पर रक्खें और जरावन्द तवील तथा पखान भेद, किवकी जडकी छाल, वटरका चून समान भाग लेकर शराव में अथवा शहद के पानी में मिलाकर खवावें और तिरियाक अरवा, दवाउल मिस्क सजीरनिया, नमक और सिर्केका लेप करना लाभदायक है (लाभ) (दवाउलमिस्क की विधि) रूमी अफसन्तीन, एलवा प्रत्येक २८ माशे रेवदचानी २१ माशे, अजमाइन, केसर, अजमोद, के वीज प्रत्येक १४ माशे, वालछड, कस्तूरी, तेजपात, फूल प्रत्येक७माश जुन्देवेदस्तर५॥ माशे, कच्चा शहद तिगुना दवाओं को कूट पीसकर शहद में मिलावें और केसर और कस्तूरी को केवडे के अर्क में घालकर ऊपरसे मिलाकर दवा उल-मिस्क बनावे इसकी मात्रा ४॥ माशे देवे ॥

मूसे के काटने का वर्णन

मूसे के काटने से अंग सूजकर घायल होजाता है और दर्द करता है और वह स्थान नीला अथवा काला होजाता है और निकम्मा होकर भीतर की तरफ फैलकर, दूसरे अगों को बिगाड देता है जैसे कि नासूर विगाड देता है (इलाज) विषको चूसने की तरह खींचे और जो उपाय विषके खाने में लिखे हैं उनको काममें लावें और जो इस जगह पछने लगाकर खून निकालें तो अतिउत्तम है और जो देर होने से विगडने लगे तो फस्द दस्त वमन, मूत्रकारक और विष नाशक दवा काम में लाता रहे।

बावले कुत्ते के काटने का वर्णन,

यह रोग कुत्ते भेडिया सिंह गीदड नौला लोमडी खिचर और घसेका होजाता है और उसको बावला करदेता है फिर यह बावला जिस जानवरको काटता है वह भी इसी विपत्ति में फस जाता है हकीम वैलवूअली सेना इस

को देखता है उसपर दूरसे कूदकर आता है और ... उसको फूकता है और उसके फूकने से भी वडी सूजन और ...
(इलाज) तिरियाक फारूक दें और जो कुछ रतीले के इलाज में लिखा है काम में लावें नहरी और जंगली मेंडक के काटने से नर्म सूजन होती है और उसका तथा ठंढे विषों का एक इलाज है।

कानखजूरे के काटने का वर्णन.

इसके चवालीस पांव दोनों ओर में बाईस २ होते हैं और यह आगे पीछे दोनों ओर चलसकता है और चार अंगुल से बारह अंगुल तक लम्बा होता है। उसके काटने से विशेष दर्द, भय, श्वास में तंगी और मिठाई पर रुचि होती है (इलाज) इसी जानवर को कूटकर उस जगह पर रक्खें और जरावन्द तवील तथा पखान भेद, किवकी जडकी छाल, मटरका चून समान भाग लेकर शराब में अथवा शहद के पानी में मिलाकर खवावें और तिरियाक अरबा, दवाउल मिस्क सजीरनिया, नमक और सिर्केका लेप करना लाभदायक है (लाभ) (दवाउलमिस्क की विधि) रूमी अफसन्तीन, एलवा प्रत्येक २८ माशे रेवदचीनी २१ माशे, अजवाइन, केसर, अजमोद, के बीज प्रत्येक १४ माशे, बालछड, कस्तूरी, तेजपात, पूल प्रत्येक ७माश जुन्देवेदस्तर ५॥ माशे, कच्चा शहद तिगुना दवाओं को कूट पीसकर शहद में मिलावें और केसर और कस्तूरी को केवडे के अर्क में घोलकर ऊपरसे मिलाकर दवा उलमिस्क बनावे इसकी मात्रा ४॥ माशे देवे ॥

मूसे के काटने का वर्णन

मूसे के काटने से अंग सूजकर घायल होजाता है और दर्द करता है और वह स्थान नीला अथवा काला होजाता है और निकम्मा होकर भीतर की तरफ फैलकर, दूसरे अंगों को बिगाड देता है जैसे कि नासूर बिगाड देता है (इलाज) विषको चूसने की तरह खींचे और जो उपाय विषके खाने में लिखे हैं उनको काममें लावें और जो इस जगह पछने लगाकर खून निकालें तो अतिउत्तम है और जो देर होने से बिगडने लगे तो फस्द दस्त वमन, मूत्रकारक और विष नाशक दवा काम में लाता रहे।

बावले कुत्ते के काटने का वर्णन,

यह रोग कुत्ते भेडिया सिंह गीदड नौला लोमडी खिचर और घरेका होजाता है और उसको बावला करदेता है फिर यह बावला जिस जानवरको काटता है वह भी इसी विपत्ति में फस जाता है हकीम जैलबूअली सेना इस

कुत्तेके काटनेकी दशा) जब बावलाकुत्ता या कोई और बावला जानवर काटखाय और कईदिन बीतजाय और उपाय न कियाजाय तो उसमनुष्यपर एकबड़ी निकम्मी और अमाकृतिक दशाहोती है जैसे बड़े २ सोच चिन्ता क्रोध हीन बुद्धि मुखमेंसूखापन प्यास और बुरे २ स्वप्नोंका देखना और उजालेसभागना और अकेलारहना और अंगोंकालाल होजाना और अन्तमें रोनेलगें और जबकि पानीयादिखे तो उसमेंकुत्ता ध्यानमेंआवै जिससे डरकरभाग और ठंडा पसीना आवै और अचतहोजाय और मरजाय और कदाचित इनकार्योंसे पहले ही मरजाय और कदाचित कुत्ताकी तरहशब्दकरै अथवा शब्दबन्दहोजाय और उसके मूत्रके द्वाराछोटासा जानवर पिल्लाकीसी मूरत निकले और उसका मूत्रपतला और कभीकालाहोता है और किसीरोगीका मूत्रबन्दहोजाता है और अजीर्णहोजाता है और मनुष्योंके काटनेकी इच्छाकरता है और जबकिअपना मुखकांचमें देखेतो न पहँचाने और कुत्ताकामुख इसमेंदेखे इसकारणसे कांचसे भी डरनेलगे (सूचना) बहुधा ऐसाहोता है कि जब बावला कुत्ताकाटता है तो सातादिनके उपरान्त दशा बदलजाती है और किसी २ की दशा छः महीने अथवा चालीसादिनके उपरान्त बदलती है और कोई यह कहता है कि सातवर्षके उपरान्तभी उसका गुणप्रगट होता है (सूचना) जिस मनुष्यको बावले कुत्तेने काटा हो और उसकी दशा बिगड़ गई हो वह जिसको काटखाय या जो उसका झूठा खाय उसको भी यही रोग होजाता है। जिसको बावला कुत्ताकाटे और वहांसे अपनेआप बहुतसा खून निकलतो अच्छीबात है और आशा है कि इलाजसे अच्छा होजाय, और ऐसेही जो उसको तिरियाक और मूत्रकारक दवादेतो पानीसे डरनेका भयनहीं रहता और कुत्तेका काटाहुआ मनुष्य जब पानीसे डरता है तो उसका इलाजनहीं होता।

बावले कुत्तेके काटनेका इलाज

इसरोगीको पैदल अथवा सवार करके दौड़ावै जिससे पसीना आवै और घाव यमसेकम चालीस दिन तक अच्छानहोंने पावै और घावके मुखपर पछनेलगाकर विषकोखींचे जिससे विष बाहर आजाय और जो घावको विशेष चौड़ाकरै तो अति उत्तम है जिससेतरी सरलतासे निकले और उसके साथमें विषभी बाहर आजाय और जहां कहींकि आरम्भमें भूलहो और घाव भरजाय तो उसको दो धार चीर डाले और घाव के भरने वाली दवा जैसे लहसन, जावशीर, कलौंजी, सिर्का अथवा लहसन, प्याज और नमक कूटकर लेपकरै जिससे घायल हो (घायल करने वाला मरहम) राल १ भाग, नमक और नौसादर प्रत्येक २ भाग जावशीर ३ भागले जावशीरको सिर्केमें डालकर सबदवा मिलाकर लगावै औरजो

कुत्तेके काटनेकी दशा) जब बावलाकुत्ता या कोई और बावला जानवर काटखाय और कईदिन बीतजाय और उपाय न कियाजाय तो उसमनुष्यपर एकबड़ी निकम्मी और अमाङ्गलिक दशाहोती है जैसे बड़े २ सोच चिन्ता क्रोध हीन बुद्धि मुखमेंसूखापन प्यास और बुरे २ स्वप्नोंका देखना और उजालेसेभागना और अकेलारहना और अगोंकालाल होजाना और अन्तमें रोनेलगें और जबकि पानीया देखे तो उसमेंकुत्ता ध्यानमेंआवे जिससे डरकरभाग और ठंडा पसीना आवे और अचतहोजाय और मरजाय और कदाचित इनकार्योंसे पहले ही मरजाय और कदाचित कुत्ताकी तरहशब्दकरे अथवा शब्दबन्दहोजाय और उसके मूत्रके द्वाराछोटासा जानवर पिल्लाकीसी मूरत निकले और उसका मूत्रपतला और कभीकालाहोता है और किसीरोगीका मूत्रबन्दहोजाता है और अजीर्णहोजाता है और मनुष्योंके काटनेकी इच्छाकरता है और जबकिअपना मुखकांचमें देखेतो न पहचाने और कुत्ताकामुख इसमेंदेखे इसकारणसे कांचसे भी डरनेलगै (सूचना) बहुधा ऐसाहोता है कि जब बावला कुत्ताकाटता है तो सातादिनके उपरान्त दशा बदलजाती है और किसी २ की दशा छः महीने अथवा चालीसादिनके उपरान्त बदलती है और कोई यह कहता है कि सातवर्षके उपरान्तभी उसका गुणप्रगट होता है (सूचना) जिस मनुष्यको बावले कुत्तेने काटा हो और उसकी दशा बिगड़ गई हो वह जिसको काटखाय या जो उसका झूठा खाय उसको भी यही रोग होजाता है। जिसको बावला कुत्ताकाटे और वहांसे अपनेआप बहुतसा खून निकलतो अच्छीबात है और आशा है कि इलाजसे अच्छा होजाय, और ऐसेही जो उसको तिरियाक और मूत्रकारक दवादेतो पानीसे डरनेका भयनहीं रहता और कुत्तेका काटाहुआ मनुष्य जब पानीसे डरता है तो उसका इलाजनहीं होता।

बावले कुत्तेके काटनेका इलाज

इसरोगीको पैदल अथवा सवार करके दौड़ावे जिससे पसीना आवे और घाव कमसेकम चालीस दिन तक अच्छानहोने पावे और घावके मुखपर पछनेलगाकर विषकोखींचें जिससे विष बाहर आजाय और जो घावको विशेष चौड़ाकरें तो अति उत्तम है जिससेतरी सरलतासे निकले और उसके साथमें विषभी बाहर आजाय और जहां कहींकि आरम्भमें भूलहो और घाव भरजाय तो उसको दो बार चीर डाले और घाव के भरने वाली दवा जैसे लहसन, जावशीर, कलोंजी, सिर्का अथवा लहसन, प्याज और नमक कूटकर लेपकरे जिससे घायल हो(घायल करने वाला मरहम)राळ१भाग,नमक और नौसादर प्रत्येक२भाग १३ भागले जावशीरको सिर्केमें डालकर सबदवा मिलाकर लगावे औरजो

परन्तु ऐसा न करना चाहिये कि इसीपर संतोष करै और असली इलाज कि जो लिखागया है उसको छोड दें और किसी के विचार में ऐसा है कि जब तक इस कुत्ते की हड्डियां पानी से न भीजें इसका विष असर नहीं करता और इसी प्रकार से कहते हैं कि जब बावला कुत्ता काटे तो उसको मारकर मिट्टी के बरतन में इतनामे बन्द करके धरती में एक गहरा गढ़ा खोदकर उस में रखकर मिट्टी से बन्द करें और दफ्न दें जिससे उसमें पानी न पहुंचे और कहते हैं कि प्रतिदिन एक मासे कस्तूरी छै महीने तक देना विशेष लाभदायक होती है और तीन महीने तक घाव को भरने न दे (लाभ)हकीम अलियासरा बेटा कहता है कि जब बावले कुत्ते के काटने पर सात दिन बीतजांय तो शरीर के मवादको अकाशबेल अथवा हड्डे के काढे से निकालें अथवा मवाद को निकालने के लिये यह गोलिया काममें लावें (विधि) सनायमकी १७॥माशे काबली हड्डे २७॥ माशे, आकाशबेल २। माशे, बसफ़ायज १॥। माशे, बिस फ़ाइज, हिजू इरमनी प्रत्येक ४॥ माशे, गारीकून बैलका भेजा प्र० १॥। माशे महीन पीसकर बिल्ली लोटन के पानी में मिलाकर गोलियां बनावें इसकी मात्रा ९ माशे है अथवा दस्तों के लिये आकाशबेल का काढा माउलजुब्न के साथ दें और वातनाशक दवा देता रहे और कुत्ते का जिगर भूनकर खाय और इसका खून पिलावें और उसका दांत लटकावें तो लाभदायक है और उसके एक दिनके पिल्ले का मांस जौकेचून के साथ पीसकर काम में लाना सर्वोत्तम है और १४ माशे रसौत चालीस दिनतक लगातार खाना इसके भय को दूर करता है। (अन्य ग्रन्थों से उद्धृत सर्पकी दवा)जो बड़ा विषैला सांप काटखाय तो तिरियाक फ़ारूक देवे और थोड़ीसी जदवार घास नींबूके पानी में घिसकर रोगी की आंख में लगावें और काटने की जगह पछने देकर खून निकल आनेपर थोड़ासा लेपकी रीति पर लगावे और थोड़ासा खिलाभी दें और जो विष ऐसा असर करगया हो कि रोगी में खानेकी शक्ति नहीं है परन्तु पछने लगाने से खून निकल आया तो केवल आंख में लगाना और घाव पर लेपकरना लाभदायक है और शरीर और दूसरे स्थानों में जैसे सिर भुजा और कन्धे पर पछने देकर जो खून निकल आवे उसको इसीजगह मलें उसके खिलाने से विशेष लाभ होता है क्योंकि विषकी वमन आती है और परमात्मा की कृपा से आरोग्य होजाता है यह दवा परीक्षा की हुई है किंतु फाद जहर और खानी तिरियाक भी अधिक गुणकारीहै जहांसर्प काट खाए प्रथम उसअंगको काटे और जो पीब और सरी पड़ने लगेतो सिंगी और पछने लगावे और प्रथम लगानेवाली दवाओंको काममेंलाना योग्य है और जो बुद्धिरोक और शरीर बलवान होतो मटरकी टिकिया जो मटर जंगली तुलसी हींग शराब लहसन और तिरियाकसे बनाई हो काममेंलावे यदि पहला उपाय काम

परन्तु ऐसा न करना चाहिये कि इसीपर संतोष करै और असली इलाज कि जो लिखागया है उसको छोड दें और किसी के विचार में ऐसा है कि जब तक इस कुत्ते की हड्डियां पानी से न भींजें इसका विष असर नहीं करता और इसी प्रकार से कहते हैं कि जब बावला कुत्ता काटे तो उसको मारकर मिट्टी के बरतन में हड्डियाँ बन्द करके धरती में एक गहरा गढा खोदकर उस में रखकर मिट्टी से बन्द करें और ढक दें जिससे उसमें पानी न पहुचे और कहते हैं कि प्रतिदिन एक मासे कस्तूरी छै महीने तक देना विशेष लाभदायक होती है और तीन महीने तक घाव को भरने न दे (लाभ)हकीम अलियासश वेदा कहता है कि जब बावले कुत्ते के काटने पर सात दिन बीतजांय तो शरीर के मवादको अकाशवेल अथवा हड्डे के काढे से निकालें अथवा मवाद को निकालने के लिये यह गोलियां काममें लावे (विधि) सनायमकी १७॥मासे बावली हड्डे २४॥ मासे, आकाशबेल २। मासे, अफतीमून १॥। मासे, बिस फाइज, हिजू इरमनी प्रत्येक ४॥ मासे, गारीकून बेलखर भेजा प्र० १॥। मासे महीन पीसकर बिल्ली लोटन के पानी में मिलाकर गोलियां बनावें इसकी मात्रा ९ मासे है अथवा दस्तों के लिये आकाशबेल का काढा माउलजुब्न के साथ दे और वातनाशक दवा देता रहे और कुत्ते का जिगर भूनकर खाय और इसका खून पिलावें और उसका दांत लटकावें तो लाभदायक है और उसके एक दिनके पिल्ले का मांस जोंकेचून के साथ पीसकर काम में लाना सर्वोत्तम है और १४ मासे रसौत चालीस दिनतक लगातार खाना इसके भय को दूर करता है। (अन्य ग्रन्थों से उद्धृत सर्पकी दवा)जो बड़ा विषैला सांप काटखाय तो तिरियाक फारूक देवे और थोडीसी जरबेल घास नींबूके पानी में घिसकर रोगी की आंख में लगावें और काटने की जगह पछने देकर खून निकल आनेपर थोडासा लेपकी रीति पर लगावे और थोडासा खिलाभी दें और जो विष ऐसा असर करगया हो कि रोगी में खानेकी शक्ति नहीं है परन्तु पछने लगाने से खून निकल आया तो केवल आंख में लगाना और घाव पर लेपकरना लाभदायक है और शरीर और दूसरे स्थानों में जैसे सिर भुजा और कन्धे पर पछने देकर जो खून निकल आवे उसको इसीजगह मलें उसके खिलाने से विशेष लाभ होता है क्योंकि विषकी वमन आती है और परमात्मा की कृपा से आरोग्य होजाता है यह दवा परीक्षा की हुई है किंतु फादजहर और खानी तिरियाक भी अधिक गुणकारी है जहांसर्प काट खाए प्रथम उसअंगको काटे और जो पीर और सरी बढ़ने लगेतो सिंगी और पछने लगावे और प्रथम लगानेवाली दवाओंको काममेंलाना योग्य है और जो बुद्धिरोधक और शरीर बलवान होतो मटरकी टिकिया जो मटर जंगली तुलसी हींग शराब लहसन और तिरियाकसे बनाई हो काममेंलावें यदि पहला उपाय काम

(मच्छरों का वर्णन) सनोवर की लकडी की भुसी की धूनी से और उसके छिलके के धूए से भागते है और ऐसेही छरीला और फिटकरी के धूआं से और जो सर्व के पत्ता और सर्व की लकडी बिछौने पर रक्खें तो मच्छर वहां से भाग जाते है और जो शरीर पर बादाम का तेल मले तो उनका कष्ट नहीं पहुच सकता (दीमक) चिनार के पत्तों की धुनी से वा खुटकबढैया की राख से दीमक भागती है और जिस घरमें खुटकबेढैया होतीहै वहां दीमक नहीं रहती (मक्खी) हरताल और नकछिकनी के धूआं से भागती है ओर पीली हरताल दूध में अथवा किसी बरतन में डाले तो सम्पूर्ण मक्खियां उस में गिर कर मर जाती हैं और काली कुटकी के काढे का भी यही गुण है । (न्योला) सुतली की गन्ध से भगता है (मूसा) फिटकिरी की गन्ध से भगता है और जो चूहे को पकडकर कुछ उसकी खाल उतारैं अथवा अण्डकोष निकाल कर छोड दें तो सब के सब भाग जाते हैं और जो मुर्दासन, कूट, सुक, लोहे का मैल, भांग के बीज, और केसर के चून में गोली बनाकर बिलों में डालें-तो इस के खाने से सब चूहे मरजाते है और सखिया चून मे मिला कर यही गुण करता है यदि इन का पानी न मिले । चींटियां के छेद में चुम्मक पत्थर रक्खें और तेल की धूनी देवें । अथवा बैल का पित्ता तथा राई और हींग उन के बिल में डाले तो भाग जाती है (बर्र) गन्धक के धुआ और रहसन से भागती है और खितमी का निचुडा हुआ पानी अथवा रव्वाजी या पानी और जैतून शरीर पर मले तो बर्र पास नहीं आसकती (खुन) यह एक कीडा है कि जो कपडों और किताबों म उत्पन्न होजाता है जो अफसंतीन फलौंजी और नहरी पोदीना और नीबू का छिलका कपडों के सन्दूक में रक्ख तो उस में वह कीडा उत्पन्न नहीं होता (लाभ) उचित है कि मकानों में लकलक, घतक, सेह, बारहसिंहा, और न्याला रक्ख और मकान के और पास शोह हींग, गार, कुटकी, पोदीना और दिरमना छिडक दें अथवा एक घडा अगोछा अगर के पेड की राख म अथवा एक रस्सी लेठ और हींग में भर कर घर में रक्खें जिस मे कीडा मकोडा न निकलें और अनार की लकडी और सौसन की जड और बे अनंद और सर्फ और मनुष्या के बाल और चौपाया के खुर के धूआं से और गल हींग और गार के पत्तों के धूआ से सम्पूर्ण कीडे मकोडे भागते हैं मुग्पकर अफीम, काला दाना, कद पहाडी बरी या सींग, और घक के धुआं से और रात के समय मोमबत्ती और दीपक अपने से बहुत दूर पर रक्खे जिस से कीडे मकोडे उसी तरफ जाय ॥

(मच्छरों का वर्णन) सनोवर की लकडी की भुसी की धूनी से और उसके छिलके के धूए से भागते है और ऐसेही छरीला और फिटकरी के धूआं से और जो सर्द के पत्ता और सर्द की लकडी बिछौने पर रक्खें तो मच्छर वहां से भाग जाते है और जो शरीर पर बादाम का तेल मले तो उनका कष्ट नहीं पहुच सकता (दीमक) चिनार के पत्तों की धूनी से वा खुटकर्बढेया की राख से दीमक भागती है और जिस घरमें खुटकबेढैया होतीहै वहां दीमक नहीं रहती (मक्खी) हरताल और नकछिकनी के धूआं से भागती है और पीली हरताल दूध में अथवा किसी बरतन में डाले तो सम्पूर्ण मक्खिया उस में गिर कर मर जाती हैं और काली कुटकी के काढे का भी यही गुण है । (न्योला) सुतली की गन्ध से भगता है (मूसा) फिटकिरी की गन्ध से भगता है और जो चूहे को पकडकर कुछ उसकी खाल उतारें अथवा अण्डकोष निकाल कर छोड दें तो सब के सब भाग जाते है और जो मुर्दासन, कूट, सुक, लोहे का मैल, भांग के बीज, और केसर के चून में गोली बनाकर बिलों में डालें-ता इस के खाने से सब चूहे मरजाते है और सखिया चून मे मिला कर यही गुण करता है यदि इन का पानी न मिले । चींटिया के छेद में चुम्बक पत्थर रक्खें और तेल की धूनी देवें । अथवा वैल का पित्ता तथा राई और हींग इन के विल में डाले तो भाग जाती है (जूं) गन्धक के धुआ और रहसन से भागती है और सितमी का निचुडा हुआ पानी अथवा सब्जाजी या पानी और जतून शरीर पर मले तो जूं पास नहीं आसकती (सुस) वह एक कीडा है कि जो कपडों और किताबों म उत्पन्न होजाता है जो अफसन्तीन सर्बाजी और नहरी पोदीना और नीबू का छिलका कपडों के सन्दूक में रक्खे तो उस में वह कीडा उत्पन्न नहीं होता (लाभ) उचित है कि मकानों में लकलक, बतक, सेह, बारहसिंहा, और न्योला रक्खें और मकान के ओर पास शीह हींग, गार, कुटकी, पोदीना और दिरमना छिडक दें अथवा एक घडा अगोखा अगर के पेड की राख म अथवा एक रस्सी तेल और हींग में भर कर घर में रक्खें जिस मे कीडा मकोडा न निकलें और अनार की लकडी और सोसन की जड और वे अर्नद और सर्फे और मनुष्य के बाल और चौपायों के खुर के धूआं से और गल हींग और गार के पत्तों के धूआं से सम्पूर्ण कीडे मकोडे भागते हैं मुग्यकर अफीम, काला दाना, कद्द पहाडी बकरी या सींग, और गन्धक के धूआं से और रात के समय मोमबत्ती और दीपक अपने से बहुत अ तर पर रक्खे जिस से कीडे मकोडे उसी तरफ जांय ॥

कानों के पीछे दे। सिरके दर्द और आधाशीशी के दाग की यह विधि है कि जहां पानीके उतर आनेका भयहो कनपटियों की बडी रगपर दागदें और कोई इसे काटते हैं और कोई हकीम कनपटी की खाल चीर कर रग को निकालकर फिर दाग देते हैं जिससे जलकर रग के सिरे भीतर की तरफ खिचजाय इससे उसमें तरी को मार्ग न मिलै और आधासीसी के दर्द और आंख में पानी के उतर आने में भी यही लिखा है (परवाल के दाग की विधि) प्रथम परवाल को चीमटी से पकडकर उखाड लें और एक महीन औजार को जो सुई के समान होता है गर्म करके इस बालकी जडपर रक्खें और कदाचित् दोदो बालों की जड में एक २ दाग वहां लाभकारी होताहै जहां बाल बहुत पास २ हों और नहीं तो प्रत्येक बालका दाग अलग २ चाहिये और कोई तेजावआदि दवाओंसे दागते हैं आंख की पीठपर जहां दाग देनाहो वहां दवाको एक दिन लगा रहने दें और दूसरे दिन धोकर साफ करें फिर तीसरे दिन दवा लगावे और इसी तरह एक दिन दवा लगावे और एक दिन न लगावे यहां तक कि उस जगह की खाल जलकर काली होजाय फिर अब्रमुर्दा गरम पानी में भिगोकर रक्खें जिससे जली हुई खाल गिरपडे फिर अकाकिया, माजू, फिटकिरी और लाल मिट्टी लगावें और जो पलक आपस में न मिले और खिचजायतो मरहम दाखिली रून और मोमके तेल का लेप करें और जलाने वाली दवा यह हैं-बिन बुझा चूना, साबुन, पपटी नोन, समान लेकर वल्लूत की लकडी और अजीर की लकडी की राख बालकों के मत्र में मिलाकर उक्त रीति से पलकपर लगावें (कोयके नासूर में दागकी विधि] नासूर को उस्तरे से छील डालें जिसमे हड्डी खुलजाय फिर देखें कि हड्डी ठीक है अथवा कुछ बिगड गई है जो बिगड गइ होतो इसमेंसे थोडी सी छील डाले पीछे महीन औजार से हड्डी के छेद में दाग दे और दाग देने से पहिले अब्र मुर्दा अथवा रुईका फोया ठंडे पानीमें भिजाकर आंखमें रक्खें जिससे दागकी गर्मी आंखमें न पहुचे और जो एक बार दाग का देना पूरा लाभदायक न हो तो दो अथवा तीनचार सलाइ गर्म करके छेद में रक्खें यहां तक कि इस दाग का छेद नाक के छेद में जा पहुचे और जो नाक के छेद की तरफ मार्ग खुलजाता है उसका यह चिन्ह है कि रोगी की नाक और उसका मुख बन्दकरें फिर इस छेद में से नाक की हवा निकलती है या नहीं जो निकले तो जानलें कि यह छेद नाक में जा मिलाहै फिर रुई का फोया लीला थाथा की मरहम में सानकर इस छेदमें रक्खें और एक दिन पश्चात् पुरानी रुई रक्खें जिससे घाव भरने लगें और वह फोया कि जो पसली के

कानों के पीछे दे। सिरके दर्द और आधाशीशी के दाग की यह विधि है कि जहां पानीके उतर आनेका भयहो कनपटियों की बडी रगपर दागदें और कोई इसे काटते हैं और कोई हकीम कनपटी की खाल चीर कर रग को निकालकर फिर दाग देते हैं जिससे जलकर रग के सिरे भीतर की तरफ खिचजाय इससे उसमें तरी को मार्ग न मिले और आधासीसी के दर्द और आंख में पानी के उतर आने में भी यही लिखा है (परवाल के दाग की विधि) प्रथम परवाल को चीमटी से पकडकर उखाड लें और एक महीन औजार को जो सुई के समान होता है नर्म करके इस बालकी जडपर रक्खें और कदाचित् दोदो बालों की जड में एक २ दाग वहां लाभकारी होताहै जहां बाल बहुत पास २ हों और नहींतो प्रत्येक बालका दाग अलग २ चाहिये और कोई तेजाबआदि दवाओंसे दागते हैं आंच की पीठपर जहां दाग देनाहो वहां दवाको एक दिन लगा रहने दें और दूसरे दिन धोकर साफ करें फिर तीसरे दिन दवा लगावे और इसी तरह एक दिन दवा लगांवे और एक दिन न लगावे यहां तक कि उस जगह की खाल जलकर काली होजाय फिर अब्रमुर्दा गरम पानी में भिगोकर रक्खें जिससे जली हुई खाल गिरपडे फिर अकाकिया, माजू, फिटकिरी और लाल मिट्टी लगावे और जो पलक आपस में न मिले और खिचजायतो मरहम दाखिली रून और मोमके तेल का लेप करें और जलाने वाली दवा यह है-बिन बुझा चूना, साबुन, पपटी नोन, समान लेकर वल्लूत की लकडी और अजीर की लकडी की राख बालकों क मत्र में मिलाकर उक्त रीति से पलकपर लगावें (कोयके नासूर में दागकी विधि] नासूर को उस्तरे से छील डालें जिससे हड्डी खुलजाय फिर देखें कि हड्डी ठीक है अथवा कुछ बिगड गई है जो बिगड गइ होतो इसमेंसे थोडी सी छील डाले पीछे महीन औजार से हड्डी के छेद में दाग दे और दाग देने से पहिले अब्र मुर्दा अथवा रुईका फोया ठंडे पानीमें भिजाकर आंखमें रक्खें जिससे दागकी गर्मी आंखमें न पहुंचे और जो एक बार दाग का देना पूरा लाभदायक न हो तो दो अथवा तीनचार सलाइ गर्म करके छेद में रक्खे यहां तक कि इस दाग का छेद नाक के छेद में जा पहुचे और जो नाक के छेद की तरफ मार्ग खुलजाता है उसका यह चिन्ह है कि रोगी की नाक और दूसरा मुख बन्दकरें फिर इस छेद में से नाक की हवा निकलती है या नहीं जो निकले तो जानलें कि यह छेद नाक में जा मिलाहै फिर रुई का फोया लीलां थाथा की मरहम में सानकर इस छेदमें रक्खें और एक दिन पहले पुरानी रुई रक्खें जिससे घाव भरने लगें और वह फोडा कि जो पसली के

उन में से सर्वदा तरी निकलैं (जलन्धर से दाग देने की विधि) जब दवासे लाभ नहो पाच जगह दागदें एक आमाशय के मुखपर। दूसरे जिगरपर। तीसरे तिल्ली पर। चौथे आमाशय की गहराई पर। पांचवें टूंडीके ऊपर (कन्धेके दाग की विधि) जव वाजू की हड्डी का सिरा कन्धे मेंसे निकलजाय तो प्रथम मनका को उसकी जगह वैठाकर इस तरह दागदें कि आरोग्य तरफ पर रोगी को लिटावे और जिस जगह से कि निकलगया है वहां की खाल चिमटिया से अथवा अगलियों से पकड कर उठावे जिससे दागका गुण वहां के पट्ठों और वन्धनों म न पहुचे फिर इस जगह के ओरपास दागदें औरयह दाग कम से कम चार दाग चौकोन के समान आवें और दाग ऐसा होवै कि खाल का सम्पूर्ण मोटापन जलजाय।

उन में से सर्वदा तरी निकलैं (जलन्धर से दाग देने की विधि) जब दवासे लाभ नहो पाच जगह दागदें एक आमाशय के मुखपर। दूसरे जिगरपर। तीसरे तिल्ली पर। चौथे आमाशय की गहराई पर। पांचवें टूंडीके ऊपर (कन्धेके दाग की विधि) जब बाजू की हड्डी का सिरा कन्धे मेंसे निकलजाय तो प्रथम मनका को उसकी जगह बैठाकर इस तरह दागदें कि आरोग्य तरफ पर रोगी को लिटावे और जिस जगह से कि निकलगया है वहां की खाल चिमटिया से अथवा अंगलियों से पकड़ कर उठावें जिससे दागका गुण वहां के पट्ठों और बन्धनों म न पहुचे फिर इस जगह के आर पास दागदें औरयह दाग कम से कम चार दाग चौकोन के समान आवें और दाग ऐसा होवै कि खाल का सम्पूर्ण मोटापन जलजाय।

समाप्तोऽयं ग्रंथः

शब्द	अर्थ
हफ्तअदाम	एक रगका नाम है जो तर्जनी के बराबर है
बासलीक	एक रगका नामहै जो अना-मिकाके बराबर है
उस्तखद्दूस	धातु
बिसफायज	तरवकाली एक लकडी है
शीरएखिश्त	एक ओसहै जो खुरासान इत्यादि में होतीहै
यारेज	दस्तावर गोली
यारेजरूफस	दस्तावर गोली
यारजेलोगाजिया	एक हकीमकी वना इहुईहै दस्तावर गोलियां
दरूनजअकरवी	एकजडहोतीहै बिच्छूकेसदृश
रेशम खाम	कच्चारेशम
मुन्जिज	दोषोंके पकानेवाली औषधि
इस्तमखीकून	एक सयुक्त नुसखा
नफखएमिराकिया	एक रोगका नामहै जो पेटकी झिल्लीके कारणसे उत्पन्न होता है
दाउलकल्ब	वह उनमाद जिसमें क्रोध खेल और कृपा मिली हो
मालीखोलिया	एक रोगहै जो मनुष्य को अच्छे विचारसे रोककर बुद्धिकोविरुद्ध रीतिपर चलावे
फालूदे	नशास्ता के हलुवेको कहते हैं जो बादामके तेल और पिस्ताके तेलसे मदा डालकर बनातेहै
कावूस	एक रोग है जिसमें रोगी को मालूम होता है कि कोई मनुष्य मुझको दबाता है
फौकाया	सयुक्तमालियों का नामहै
अजखर	कुन्दबेल
जखीरेख्वारज्मशाही	एक ग्रन्थ कानामहै
इस्तमखीकम	एक सयुक्त नुमखाह
सीसिल्यूस	वह पेड जिसकागोंदहींग है
एलुवा	घुदहिनी
उस्तखुदूस	धातु
स्त्रियालयूस	एक पड है जिसका गदद हींग ह
जराबन्दमुदहरिंज	एक कडवी जड का नाम है
ऊँदबिलसाँ	बिलसाँ दरख्त की डाली
यारज	दस्तावर गोली
खफकान	उन्माद
इस्फीदाज	काशगरी सफेदा
खुब्बाजी	खितमी की एक किस्म है
रुब्ब	पत्ती अथवा फलका पानी नि-चोडकर ओटाया जावे यहां तक कि राख हो जावे
तिरियाक	विषनाशक औषधी
हब्बुलगार	एक बीज कुन्दरूके बराबर
मिराकी	एक किस्म का माली खालिया है जो पेट की झिल्ली के कारण से उत्पन्न होता है

शब्द	अर्थ
हफ्तअदाम	एक रगका नाम है जो तर्जनी के बराबर है
वासलीक	एक रगका नामहै जो अनामिकाके बराबर है
उस्तखद्दूस	धारू
बिसफायज	तरवकाली एक लकडी है
शीरएखिश्त	एक ओसहै जो खुरासान इत्यादि में होतीहै
यारेज	दस्तावर गोली
यारेजरूफस	दस्तावर गोली
यारजेलोगाजिया	एक हकीमकी बना इहुई दस्तावर गोलियां
दरूनजअकरबी	एकजडहैबिच्छूकेसदृश
रेशम खाम	कच्चारेशम
मुन्जिज	दोषोंके पकानेवाली औषधि
इस्तमखीकून	एक संयुक्त नुसखा
नफखएमिराकिया	एक रोगका नामहै जो पेटकी झिल्लीके कारणसे उत्पन्न होता है
दाउलकलब	वह उनमाद जिसमें क्रोध खेल और कृपा मिली हो
मालीखोलिया	एक रोगहै जो मनुष्य को अच्छे विचारसे रोककर बुद्धिकोविरुद्ध रीतिपर चलावे
फाकूदे	नशास्ता के हलुवेको कहते हैं जो बादामके तेल और पिस्ताके तेलसे मदा डालकर बनातेहैं
फाबूस	एक रोग है जिसमें रोगी को मालूम होता है कि कोई मनुष्य मुझको दबाता है
फौकाया	सयुक्तगोलियों का नामहै
अजखर	कुन्दवेल
जवारिस्वारजमशाही	एक ग्रंथ कानामहै
इस्तमखीकम	एक संयुक्त नुसखाह
सीसिल्यूस	वह पेड जिसकागोंदहींग है
एलुवा	घुदहिनी
उस्तखुद्दूस	धारू
स्रियालयूस	एक पड है जिसका गाद हींग ह
जराबन्दमुदहरिज	एक कडवी जड का नाम है
ऊँदविलसाँ	बिलसाँ दरख्त की डाली
यारज	दस्तावर गोली
सफकान	उन्माद
इस्फीदाज	काशगरी सफेदा
खुब्बाजी	खितमी की एक किस्म है
रुब्ब	पत्ती अथवा फलका पानी निचोडकर औटाया जावे यहां तक कि रास हो जावे
तिरियाक	विषनाशक औषधी
हब्बुलगार	एक बीज कुन्दरूके बराबर
मिराकी	एक किस्म का मालीखोलिया है जो पेट की झिल्ली के कारण से उत्पन्न होता है

शब्द — अर्थ

गर्दन को आगे और पीछे दोनों ओर से खींचता है।
तमद्दुद—वायटा जो पट्ठोंको दोनोंओर से खींचता है।
तमद्दुदइम्तिलाई—वह वायटा जोकफ के कारण से उत्पन्न हो
हुब्बेशैतरज—चीते की गोली
तशन्नुजयाबिस—वह वांयटेजो खुश्की के कारण से उत्पन्न हों
तिरियाकेफारूक—विषनाशक औषधी
तसन्नुजयाबिस—खुश्क वांयटे
तमन्नुजइम्तलाई—तर वायटे
यारज—दस्तावर गोली
रतूबतबैजिया—आंख की रतूबत का नाम है
शुकवइनबिया—आंख के पद का छेद
इन्तशार—आंख की ज्योति काफैलना
मिरारात—कडवी दवा।
जावशीर—एक गोंद का नाम है
मखय्युलात—आंख के सामने भुनगे दिखाई देना।
असबयेमुनविफा—आंख का पोला पट्ठा
खयय्यलात—आंख के सामने भुनगे दिखाई देना।
जैवकी—पारे सम्बधी
जस्मी—गच सम्बधी
आस्मांगूनी—नीला
मुन्तशिररकीक—फैला हुआ

शब्द — अर्थ

जजाजी—आंख की रतूबत का नाम
अविपजवर्दी—वर्फ
कहोलेमुलतिफ—सुरमा
शियाफमिरारात—एक संयुक्तनुसखा है
माकअकबर—आंख का बडा कोया
हब्बुजहव—सोने की गोली
कन्तूरयून—एक घास का नाम है
कन्तूरयनदकीक—एक घास है
इस्तस्काय—जलन्धर
अकाकिया—कीकर का गोंद
मामीसा—एक घासहै खशखास के सदृश
लरिश्क—अम्बर वारीस
शियाफअबियज—ये एक आंखों का संयुक्त नुसखा है
जरूरेअबियज—पीस कर आंखों पर बुरकना।
रशुक—छबीला
जुफरा—नाखूना
सुकबीनज—कुन्दरू गोंद
शियाफेदीनारगू—संयुक्तनुसखेकानामहै
वासलीकूलअकबर—सुरमा
सलबिया-आंख का पर्दा
करनियां-आंख का सफेद पर्दा
वरदीनज आंख की सूजन
जरूरेअसफर-पीली दवा बुरकने की
शियाफेअहमरकरनियां---आंख का

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
गर्दन को आगे और पीछे दोनों ओर से खींचता है।	जजाजी– आंख की रतूबत का नाम
तमद्दुद–वायटा जो पट्ठोंको दोनोंओर से खींचता है।	अविपजवर्दी– वर्फ
तमद्दुदइम्तिलाई– वह वायटा जोकफ के कारण से उत्पन्न हो	कहीलेमुलत्तिफ– सुरमा
हुब्बेशैतरज– चीते की गोली	शियाफामिरारात– एक सयुक्तनुसखा है
तशन्नुजयाविस–वह वायटेजो खुश्की के कारण से उत्पन्न हों	माकअकबर– आंख का बडा कोया
तिरियाकेफारूक– विषनाशक औपधी	हब्बुजहव– सोन की गोली
तसन्नुजयाविस– शुष्क वायटे	कन्तूरयून– एक घास का नाम है
तमन्नुजइम्वलाई– तर वायटे	कन्तूरयनदकीय– एक घास है
यारज– दस्तावर गाली	इस्तस्काय–जलन्धर
रतूवतवैजिग्र– आंख की रतूवत का नाम है	अकाकिया–कीकर का गोंद
शुकवइनविया–आंख के पद का छेद	मामीसा–एक घासहै खशखास के सदृश
इन्तशार–आंख की ज्योति काफैलना	लारिश्क– अम्बर वारीन
मिरारात–कडवी दवा।	शियाफअविपज– ये एक आसों का सयुक्त नुसखा है
जावशीर–एक गाद का नाम है	जरूरेअवियज–पीस कर आंखों पर बुरकना।
मखय्युलात–आंख के सामन भुनग दिखाई देना।	उशुक– छबीला
असवपेशुनविफा–आंख का पोला पट्ठा	जुफरा–नाखूना
तरय्युलात–आंख के सामने भुनग दिखाई दना।	सुकवीनज–कुन्दरू गोंद
जैवकी–पारे सम्बधी	शियाफेदीनारगू–सयुक्तनुसखेकानामहै
जस्मी–गच सम्बधी	वासलीकूनअकबर–सुरमा
आस्मांगूनी–नीला	सलविया-आंख का पर्दा
मुत्वाशिररकीक–फैला हुआ	करनिया-आंख का सफेद पर्दा
	वरदीनज आंख की सूजन
	जरूरेअसफर-पीली दवा बुरकन की
	शियाफेअहमरकरनियां---आंख का

शब्द	अर्थ
शियाफेकुन्दरू	एक संयुक्त नुसखे का नामहै
शियाफेअहमरलय्यन	संयुक्तनुसखा है
शियाफकौहलेअगबर	संयुक्तनुसखा
शियाफेअसजर	आंखके नुसखे
कन्तूरयून	एक घासका नाम है
मोरसर्जइनबिया	आंखके पर्देका बाहर निकल आना
सादनजमगसूल	एक शुभ पत्थर
नितुएबिसमारी	बाहर निकल आना
नितूएअनबी	आंखके पर्देका बाहर निकल आना
अस्वमुज्जाब्बिफा	आंखकी ज्योति के रहनेका पोला पट्ठा
मुजाव्विफ	पाला
मजमेइन्नूर	आंखजोतिके इकट्ठे होने का स्थान
मरजजोश	दोनामरुवा
इकलील	टोपी
दस्तूरुलइलाज	एक ग्रन्थका नाम है
मयफकतज	अंगूर का औटाया हुआ पानी
दफाककुदर	कुन्दरू गोंदका चूरा
फलदफयूा	एक संयुक्त नुसखाहै
अजरूथ	लाईका गोंद
जालीनूस	एक हकीम का नाम है
हालून	एक दवा का नाम है
रातीनज	एक गोंदका नामहै
फतक	आंतों का उतरना
फीला	अण्डकोष का बढना
फीलखुररीह	फोतोंमें बादीका बढजाना
फतिलुलमाय	फोतोंमें पानी उतरआना
बासलीकून	सुरमा
शियाफअसफर	आंखका संयुक्तनुसखा
शियाफअखजर	आंखका नुसखा है
जगार	हरा
बख्दहसरमी	अंगूर
शियाफमिरारात	एक संयुक्तनुसखा है
अस्फहानी	एक देशका नाम है
हीरेगुलबरा	कठिनसे अच्छा होना
शियाफासिमाक	संयुक्त नुसखा
अहमरेलय्यन	आंख का संयुक्त नुसखा
अहमरेहाद	आंखका संयुक्त नुसखा
शियाफअस्वदमुलय्यन	एक संयुक्तनुसखाहै
अन्दरूमाखस	एक हकीमका नाम है
हजूज	आंखका धुलना
रतूबतजजाजिया	आंखकी रतूबतहै
अफसतीन	मजरी घासका नाम है
जुलेदिया	आंखकी रतूबतका नाम है
पर्देइनकबूतिया	आंखके पर्देका नाम है
रमद	आंखकी सूजन
शबकिया	आंखके पर्दे का नाम है

शब्द	अर्थ
शियाफेकुन्दरू	एक सयुक्त नुसखे का नामहै
शियाफेअहमरलय्यन	सयुक्तनुसखा है
शियाफकौहलेअगबर	संयुक्तनुसखा
शियाफेअसवजर	आंखके नुसखे
कन्तूरयून	एक घासका नाम है
मोरसर्जेइनबिया	आंखके पर्देका वाहर निकल आना
सादनजमगसूल	एक धुपा पत्थर
नितुएविसमारी	वाहर निकल आना
नितूएअनवी	आंखके पर्देका वाहर निकल आना
अस्वप्रुज्जध्विफा	आंखकी ज्योति के रहनेका पोला पट्ठा
मुजव्विफ	पाला
मजमेउन्नूर	आंखजोतिके इकट्ठे होने का स्थान
मरजजोश	दोनामरुवा
इकलील	टोपी
दस्तूरुलइलाज	एक ग्रन्थका नाम है
मपफकतज	अगूर का औटाया हुआ पानी
दकाककुदर	कुन्दरू गोंदका चूरा
फलदफधूा	एक सयुक्त नुसखाहै
अजरूध	लाईका गोंद
जालीनूस	एक हकीम का नाम है
हालून	एक दवा का नाम है
रातीनज	एक गोंदका नामहै
फतक	आंतों का उतरना
फीला	अण्डकोष का बढना
फीलहुररीह	फोतोंमें बादीका बढजाना
फीलतुलमाय	फोतोंमें पानी उतरआना
वासलीकून	छुरमा
शियाफअसफर	आंखका सयुक्तनुसखा
शियाफअसवजर	आंखका नुसखा है
जगार	हरा
वरूदहसरमी	अगूर
शियाफमिरारात	एक सयुक्तनुसखा है
अस्फहानी	एक देशका नाम है
हीरेवुलबरा	कठिनसे अच्छा होना
शियाफकासिमाक	सयुक्त नुसखा
अहमरेलय्यन	आंख का सयुक्त नुसखा
अहमरेहाद	आंखका सयुक्त नुसखा
शियाफअस्वदमुलय्यन	एक सयुक्तनुसखाहै
अन्दरूमाखस	एक हकीमका नाम है
हजूज	आंखका घुलना
रतूबतजजाजिया	आंखकी रतूबतहै
अफसतीन	मजरी घासका नाम है
जुलेदिया	आंखकी रतूबतका नाम है
पर्देइनकबूतिया	आंखके पर्देका नाम है
रमद	आंखकी सूजन
शबाकिया	आंखके पर्दे का नाम है

कठिन शब्दों का अर्थ ।

शब्द	अर्थ
फल्दफयून-	एक सयुक्त नुसखा
जरूरकाविज-	एक सयुक्त नुसखा है
मतवूस्वअपतीमून-	आकाश वेल का काढा
दम्मुलअखवेन-	हीराडूखी गोंद
जर्स-	डाढ
तिरियाक अरवा-	सयुक्त नुसखाहै
फलूनियां-	एक सयुक्त माजून है
जहाव-	सोना
शमामियां-	एक फल मरुड के सदृश
रुम्मानिया-	अनार सम्बन्धी वस्तु
फल्दफयून-	एक सयुक्त माजून का नामहै
हुब्बयारज	दस्तावरगोली
जराह-	घाव
तफर्रुकइत्तिसाल	किसी अगका अपनी जगह से हटजाना
जुफ्तवल्लूत-	वलूतका छिलका
हजरा-	नरखरा
लौजियतैन	जवानकी जडके दो मांस
वर्मइनवी	आंखकी सूजन
अहमदी-	उत्तमता
उस्तुवानी-	दृढता
दुहास्-	काग
मातनुलहयात-	माजून फलासफा
इदरूसासरर	एक हकीम का नामहै
फुस्ताल्व-	एक जडका नामहै
जुतयाना-	पखानभेद
मासकुलवौल	पेशाव के बन्द करने वाली शक्ति
मवीज-	मुन्नका
मोमयाई-	एक प्रसिद्ध दवाका नामहै
गजसूफगरुवावितररुवातासिग्यान-	हृदय कीरगें
वरीत	जिगरकी रगका नाम है
मवीजज-	मुन्नका
खवमुलहदीद-	लोहे का मैल
करावादीनकादरी-	एक ग्रन्थका नामहै
पजाविस्त-	एक दवा का नाम है
सादनजमगसूल-	धुलाहुआ पत्थर
रुम्मानिया	अनार सम्बधीवस्तु
हसरमियां-	अगूर सम्बधी वस्तु
अफावियां-	सुगधित औषधियां
वल्लूतवरनूच	एक पेडका नामहै
उसारेल्हेवुत्तीस-	जमीनमे मिलीहुई घास का निचुडा हुआ रस
तिरियाकफारुक-	विषनाशक औषधी
जरावदमुदहरिज-	एक सडी जडहै
फूह	सुगधित
जायावीतस-	वहरोग जिस में आदमी पानी पीता है वहपेशाव के रस्ते निकल जाताहै
फिलोनियां	एक माजून का नामहै
लफाही-	एक फल का नाम है

शब्द	अर्थ
फल्दफयून-	एक संयुक्त नुसखा
जरूरकाविज-	एक संयुक्त नुसखा है
मतवूखअपतीमून-	आकाश वेल का काढा
दम्मुलअखवैन-	हीराद्खी गोंद
जर्स-	डाढ
तिरियाक अरवा-	संयुक्त नुसखाहै
फकनियां-	एक संयुक्त माजून है
जहाव-	सोंना
शमाकिया-	एक फल मसूड के सदृश
रुम्मानिया-	अनार सम्बन्धी वस्तु
फल्दफयून-	एक संयुक्त माजून का नामहै
हुव्वपारज	दस्तावरगोली
वराह-	घाव
तफरुकइत्तिसाल	किसी अगका अपनी जगह से हटजाना
जुफतवल्कूत-	वर्लूतका छिलका
हजरा-	नरसरा
लौजियर्तन	जवानकी जडके दो मांस
वर्मेइनरी	आंखकी सूजन
अहमर्दी-	उत्तमता
उस्तुवानी-	दृढता
हुदाम-	फाग
मातनुलहयात-	माजून फलासफा
इदरूपासरा	एक हकीम का नामहै
फुस्ताल्स-	एक जडका नामहै

शब्द	अर्थ
जुतयाना-	पखानभेद
मासकुलवौल	पेशाब के बन्द करने वाली शक्ति
मवीज-	मुन्नका
मोमयाई-	एक प्रसिद्ध दवाका नामहै
मजसूफगरूवावितररुवातासिरयान-	हृदय कीरगें
वरीत	जिगरकी रगका नाम है
मवीजज-	मुन्नका
खवमुलहदीद-	लोहे का मैल
करावादीनकादरी-	एक ग्रन्थ का नामहै
पजाविश्त-	एक दवा का नाम है
सादनजमगसूल-	धुपाहुआ पत्थर
रुम्मानिया	अनार सम्बधीवस्तु
हसरमियां-	अंगूर सम्बधी वस्तु
अफाविया-	सुगधित औषधियां
खल्लूतखरनूब	एक पेडका नामहै
उसारेल्हेतुत्तीस-	जमीनमें मिलीहुई घास का निचुडा हुआ रस
तिरियाकफारुक-	विषनाशक औषधी
जरावन्दमुदहरिज-	एक तरही जडहै
फूह	सुगन्धित
जायावीतस-	वहरोग जिस में आदमी पानी पीता है वहपेशाब के रस्ते निकल जाताहै
फिलोनियां	एक माजून का नामहै
लफाहीं-	एक फल का नाम है

शब्द	अर्थ
सुकबीन	कुन्दरु गोंद
माजरयूनदब्बिर	एक दूधदारपेडकीपत्ती
उस्मारसअफसन्तीन	मजरां घास का निचुड़ा हुआ रस
इस्तस्काय	खुश्क जलन्धर
एलाऊस	गुदाके रास्ते पखानानिकलना
केकूस	आमाशयकी गिजा जो जौके घाटके सदृशहो
अफसतीन	एक घासका नामहै
मुजलकुलअमाय	अतड़ियोंके फिसलाने वाली दवा
किरोमाना	किरविया
मुगास	जंगली अनार की जड़
सरनूब	एक पेडका नामहै
कम्मूनी	जीरेकी जवारिश
हब्बुरुमा	अनारका दाना
सहेतुत्तीस	एक घास जमीनसेचिपटीका रस
मुजब्बिरात	वेगोश्तके शोरबे
मजगीघास	बालछड, हरा, तज,
अफसतीन	सम्बुल, असजर, सलीखा, जर्वोका पानी
माउलउसूल,हब्बोसिब्र	ऐलवाकीगोली
इलाजुलअमराज	एक ग्रथका नाम है
कैलूस	वह आमाशयका भोजन जो जौके घाटके सदृशहो
तिर्याकअर्बा	एक सयुक्त नुसखा है
सजरानिमा	तीक्ष्ण औषधिया
जारूर	एक घासका नाम है
दियासकूलीतूस	एक सयुक्तनुस ना है
इकलीलुलमलिक	इसपरकघासकानामहै
मर्जनजोश	दोनामरुवा
शराशीफ	पसलिया
माहबुलहयात	माजूनफलासफा
अमर्आ	मतली
मुम्तद	यढनेवाला
कमाफीतूम	करौंदा
अकरवीदरूनज	एक जड़है बिच्छूके सदृश
हुरमुल, अलकुलवतम	कालेबीज राईके बराबर अर्थात् बुनका गोंद
नफास	वह रक्त जो यच्चा होनेके उपरान्त निकलताहै
वखूर	धूनी
अलकुलवतम	वुनका गौंद
लौगाजिया	एक माजूनका नाम है
दवाउलकिरकम	केसर पडाहुआ सयुक्त नुसखा है
दवीलयेमनकूना	एक यनी हुई मूजन का नामहै
तिरियाककवीर	विषनाशक औषधी
तिरियाकइकार	विषनाशक औषधी
नफखा	एकबार फूकना नाकमे
असालिया	शहद सम्बन्धी
साफपत्तक	तरऔषधियों की पत्ती
रउस	मस्तक

कठिन शब्दों का अर्थ

शब्द — अर्थ

सुकबीन-- कुन्दरु गोंद
माजरयूनदाब्बिर एक दूधदारपेडकीपत्ती
उस्मारसअफसन्तीन- मजरा घास का निचुड़ा हुआ रस
इस्तस्काय खुश्क जलन्धर
एलाकस मुखके रास्ते पखानानिकलना
केकुस- आमाशयकी गिजा जो जौके घाटके सदृशहो
अफसतीन एक घासका नामहै
मुजलकुलअमाय अतडियोंके फिसलाने वाली दवा
फिरोमाना फिरबिया
मुगास जंगली अनार की जड
खरनूब एक पेडका नामहै
कम्मूनी जीरेकी जवारिश
हब्बुरुमा- अनारका दाना
स्हैतुत्तीस एक घास जमीनसेचिपटीका रस
मुजफ्फिरात- बेगोश्तके शोरबे
मजगीघास- बालछड, हरा, तज,
अफसतीन- सम्बुल, असजर, सलीखा, जडोंका पानी
माउलउसूल,हब्बोसिब्र ऐलवाकीगोली
इलाजुलअमराज- एक ग्रथका नाम है
कैलूस- वह आमाशयका भोजन जो जौके घाटके सदृशहो
तिर्याकअर्बा- एक सयुक्त नुसखा है
सजरानिया- तीक्ष्ण औषधिया

शब्द — अर्थ

जारूर- एक घासका नाम है
दियासकूलीतुस- एक सयुक्तनुसखा है
इकलीलुलमालिक- इसपरकेघासकानामहै
मर्जनजोश- दोनामरुवा
शराशीफ- पसलिया
माद्दुलहयात- माजूनफलासफा
अमआ- अतडी
मुम्तद- बढनेवाला
कमाफीतुस- करौंदा
अकरबीदरूनज-एक जडहै बिच्छूके सदृश
हुरमुल, अलकुलबतम- कालेबीज राईके बराबर अर्थात् बुनका गोंद
नफास वह रक्त जो बच्चा होनेके उपरान्त निकलताहै
बखूर- धूनी
अलकुलबतम- बुनका गोंद
लौगाजिया- एक माजूनका नाम है
दवाउलकिरकम- केसर पडाहुआ सयुक्त नुसखा है
दवीलयेमनकूसा- एक चरी टटी मूजन का नामहै
तिरियाककबीर- विषनाशक औषधी
तिरियाकइफाइ- विषनाशक औषधी
नफखा- एकबार फूकना नाकमे
असलिया- शहद सम्बन्धी
साफयनफ तरऔषधियों की बत्ती
रउस- मस्तक

शब्द अर्थ
दूसरे दिन आताहै
गिवलाजिमदायम वह ज्वर जो हर समय रहै
गिवखालस् एक दिन बीच में देकर आनेवाला ज्वर
मुहर्रका- वह ज्वर पित्त सम्बन्धी जिसका मादा रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो
गिवखालिस- तिजारी
गिवदायक- वह ज्वर हर रोज रहे
गिवलाजिमा- वह ज्वर जिस का मादा रगों के अन्दर प्रवेश होकर सड़जावे
गिवखालसा- वह ज्वर जो निर्मल पित्त के कारण से उत्पन्न हो
गैरखालसा- वह ज्वर जो पित्त औरकफ के कारण से उत्पन्न हो
यादरजवांया- बिल्ली लोटन
गिवदायरा- वह ज्वर जो एक रोज आवे और दूसरे रोज न आवे
शितुरिलगिब वह ज्वर जिसका मवाद सयुक्त हो
मुतवावला- वह ज्वर जो पहिले ज्वर के उतरने के उपरान्त हो जावे
शीरख्शित एक औषध का नाम है
उस्सारयेगाफिस- एक कांटेदार घासका निचड़ा हुआ रस
नायबा- वह ज्वर जिसकी वारी हर रोजहो

शब्द अर्थ
मवाजवा- वह ज्वर जिसकी वारी प्रत्यक दिनहो
हमजिया- जिस घासपर नमकीनी हो
तिरियाकफारूक- बिषनाशक औषधि
तिरियाकअरवा- ये एक सयुक्त नुसखे का नाम है
हुम्मयेबलिसफा- वह कफ सम्बन्धी ज्वर जो हरसमय रहै
अनकयाह्रस- ज्वर की एक किस्म है बाहर से शरीर शीतल और भीतर से ज्वर हो
हुम्मय- ज्वर
हुम्मयेलीकूरिया वह ज्वर जिसमें भीतर गर्मी हो और बाहर शीतलता हो
दायरा- वह ज्वर जिसका दौरा प्रत्येक दिनहो
लाजमा वह ज्वर जो हर समय रहे
हजरेअरमनी एक नीले रंगका पत्थरहै
जारुर- एक घास का नाम है
तहलील बाकी
जबूल दुर्बलता
हमरेपखाल्सा पित्त सम्बन्धी सूजन
नमलये- वह फुन्सी जिसका मादा पित्तहो
साजज- जो विन्ध मादे के हों
नवावात- वनास्पति
हीलतुलवरा- जो कठिन से आराम हो
तुलईल मिनारे

शब्द अर्थ

दूसरे दिन आताहै

गिवलाजिमदायम वह ज्वर जो हर समय रहै

गिवखालस् एक दिन बीच में देकर आनेवाला ज्वर

मुहर्रका- वह ज्वर पित्त सम्बन्धी जिसका मादा रगों के भीतर दिल और जिगर के समीप हो

गिवखालिस- तिजारी

गिवदायम- वह ज्वर हर रोज रहै

गिवलाजिमा- वह ज्वर जिस का मादा रगों के अन्दर प्रवेश होकर सडजावे

गिवखालसा- वह ज्वर जो निर्मल पित्त के कारण स उत्पन्न हो

गैरखालसा- वह ज्वर जो पित्त औरकफ के कारण से उत्पन्न हो

यादरजवाया- बिल्ली लोटन

गिवदायरा- वह ज्वर जो एक रोज आवे और दूसरे रोज न आवे

शितुरिलगिब वह ज्वर जिसका मवाद संयुक्त हो

मुतवावला- वह ज्वर जो पहिले ज्वर के उतरने के उपरान्त हो जावे

शीरखिश्त एक औषध का नाम है

उस्सारयेगाफिस- एक कांटेदार घासका निचडा हुआ रस

नायबा- वह ज्वर जिसकी बारी हर रोजहो

शब्द अर्थ

मवाजवा- वह ज्वर जिसकी बारी प्रत्यक दिनहो

हमजिया- जिस घासपर नमकीनी हो

तिरियाकफारूक- बिषनाशक औषधि

तिरियाकअरबा- ये एक संयुक्त नुसखे का नाम है

हुम्मयेलिसका- वह कफ सम्बन्धी ज्व जो हरसमय रहै

अनकयाकूस- ज्वर की एक किस्म बाहर से शरीर शीतल और भीतर ज्वर हो

हुम्मय- ज्वर

हुम्मयेलीफूरिया वह ज्वर जिसमें भीतर गर्मी हो और बाहर शी[illegible]तलता हो

दायरा- वह ज्वर जिसका द[illegible]रा प्रत्ये[illegible] दिनहो

लाजमा वह ज्वर जो हर सम[illegible]य रहै

हजरेअरमनी एक नीले रंगका [illegible] पत्थर

जारुर- एक घास का नाम है

तहलील बाकी

जबूल दुर्बलता

हमरयेखाल्सा पित्त सम्बन्धी [illegible] सूजन

नमलये- वह फुन्सी जिसका मा[illegible] पित्तहो

साजज- जो बिना मादे के हो

नबाबात- बनास्पति

हीलतुलबरा- जो कठिन से आरा[illegible]

तुल्लैल मिनारे

शब्द अर्थ
हुब्बतुलखिजरा-चुन।
यिही एक मेवा है।
फजनाश-भदरा।
हुब्बेकोकाया-एक सयुक्त नुसखा है।
हुब्बयारज-दस्तावर गोली।
जौजी-कान की हड्डी।
खबीस-बुरा।
फालूदा-पालूदा।
लौजीना-बादाम सम्बंधी चीजें।
अस्फहानी-एक देश का नाम है।
बकर-गाय।
जुउलबकर-एक रोग का नाम है।
सहवतकल्बी-खाने की इच्छा अधिक होना।
जस्मी-गन्ध सम्बधी।
जयाबीतुस-वहरोग जिसमें पानी पीतेही मूत्र द्वारा निकल जाय।
हमरमियात वह भोजन जिस में अगूर पड़े हों।

शब्द अर्थ
फलगमूनीय-एक सूजन का नाम है।
जरश्क-एक दवा का नाम है।
अफसन्तीन-एक मजरी घास है।
जसातु-डकार।
हय्युलआलम सदा गुलाब।
शिफाउलअमराज— एक ग्रन्थ का नाम हैं।
रतल आधसेर।
दिरम- ३॥ माशे।
रमाद राख।
फरानीस रक्त सम्बधी सन्निपाद।
इस्फीदाज-सफेदा।
मुकलियासा एक सयुक्त नुसखे का नाम है।
गलाज गाढापन।
माजूनसहरयारा— एक माजून का नाम है।
कमूनी जीरे की माजून।

इति

कठिनशब्दों का अर्थ समाप्त

शब्द	अर्थ
हुब्बतुलखिजरा-बुन ।	
यिही एक मेवा है ।	
फजनाश-मदरा ।	
हुब्बेकोकाया-एक संयुक्त नुसखा है ।	
हुब्बयारज-दस्तावर गोली ।	
जौजी-कान की हड्डी ।	
खबीस-बुरा ।	
फालूदा-पालूदा ।	
लौजीना-बादाम सम्बंधी चीजें ।	
अस्फहानी-एक देश का नाम है ।	
बकर-गाय ।	
जुउलबकर-एक रोग का नाम है ।	
सहवतकल्बी-खाने की इच्छा अधिक होना ।	
जस्मी-गच सम्बधी ।	
जयाबीतुस-वहरोग जिसमें पानी पीतेही मूत्र द्वारा निकल जाय ।	
हमरामियात वह भोजन जिस में अंगूर पड़े हों ।	

शब्द	अर्थ
फलगमूनीय-एक सूजन का नाम है ।	
जरशक-एक दवा का नाम है ।	
अफसन्तीन-एक मंजरी घास है ।	
जसातु-डकार ।	
हय्युलआलम सदा गुलाब ।	
शिफाउलअमराज— एक ग्रन्थ का नाम है ।	
रतल आधसेर ।	
दिरम-२॥ माशे ।	
रमाद राख ।	
फरानीस रक्त सम्बधी सन्निपात ।	
इस्फीदाज-सफेदा ।	
मुकलियासा एक संयुक्त नुसखे का नाम है ।	
गलाज गाढ़ापन ।	
माजूनसहरयारा— एक माजून का नाम है ।	
कमूनी जीरे की माजून ।	

इति

कठिनशब्दों का अर्थ समाप्त

और आर्यावर्त्त का गौरवस्वरूप है यदि आकाश के तारागण समुद्र की बालू के कण और मेघकेबिंदु किसी प्रकार गणना में आसक्ते हों तो इस ग्रन्थकेगुण भी गिनने में आसक्ते है इसकी प्रशंसा से पत्रको भरना वृथा है क्योंकि ऐसा कोई हिन्दू नहीं है जिसने इसका नाम न सुना हो इस्के निघंट भाग में ५०० द्रव्यों के अंग्रेजी, फारसी, अर्बी, बंगला, हिन्दी, गुजराती, मरहठी आदि भाषाओं के नामान्तर है जिससे सबको उपयोगी होगा ग्रंथ के प्रारम्भ में आयुर्वेदी इतिहास है जिस में चरक, सुश्रुतादि सम्पूर्ण आयुर्वेद के ग्रंथकारों का जीवन चरित्र भी है इसके विषियों की अनुक्रमणिका ८० पृष्ट में है इस तरह इस ग्रंथमें सब मिलाकर १२०० पृष्टहैं यह ग्रंथ३० पौंडके मोटे चिकने विलायती कागज पर मुंबई के अक्षरों में बहुत स्पष्ट छापागया है सुनहरी जिल्द मूल्य डाकव्यय सहित १०) रुपया है ॥

आनन्द वृन्दावन चम्पू

सुखवर्तनी टीका सहित ।

लीजिये लीजिये जो ग्रंथ अबतक मरुस्थल के जलकी भांति रसातल में छिप रहाथा वही ग्रंथ सम्पूर्ण टाईसां स्तनक में छपकर तयारहै कोई पंडितऔर विद्वान ऐसा नहीं है जिसने इसका नाम न सुना हो परन्तु इसके दर्शन दुर्लभ थे जिसकी हाथसे लिखवाने में पच्चीस तीस रुपया से कम नहीं लगते थे यही वैष्णवों का एक मात्र धन श्रीमद्भागवतादि ग्रंथों के वक्ताओं की हस्तपुष्टि विद्वानों की बुद्धि का परीक्षक भक्तिशून्यजनों में भक्तिप्रचारक और श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का महासागर छपकर तयार है इसकी श्लोक संख्या श्रीमद्भागवत के समान है यह बृहद्ग्रंथ ६२५ पृष्ट में सम्पूर्ण विलायती कागजपर मुंबई अक्षरों में छपा हुआ तयार है इसकी जिल्द बलायती कपड़े की बंधी हुई है श्लोकोंपर यत्रतत्र अन्वयाङ्क और कठिन स्थलोंपर टिप्पणी भी दीगई हैं इन सब बातों के होते भी इस्का मूल्य केवल ४) रु० है डाकव्यय॥)है लेना है तो ले लीजिये नहीं पीछे दाम बढ़जायगा ॥

पुस्तक मिलने का ठिकाना–

(१)किशनलाल द्वारकाप्रसाद (२)श्यामलाल अग्रवाल

ब्रजभूषण छापाखाना — मथुरा.

श्यामकाशी प्रेस — मथुरा.